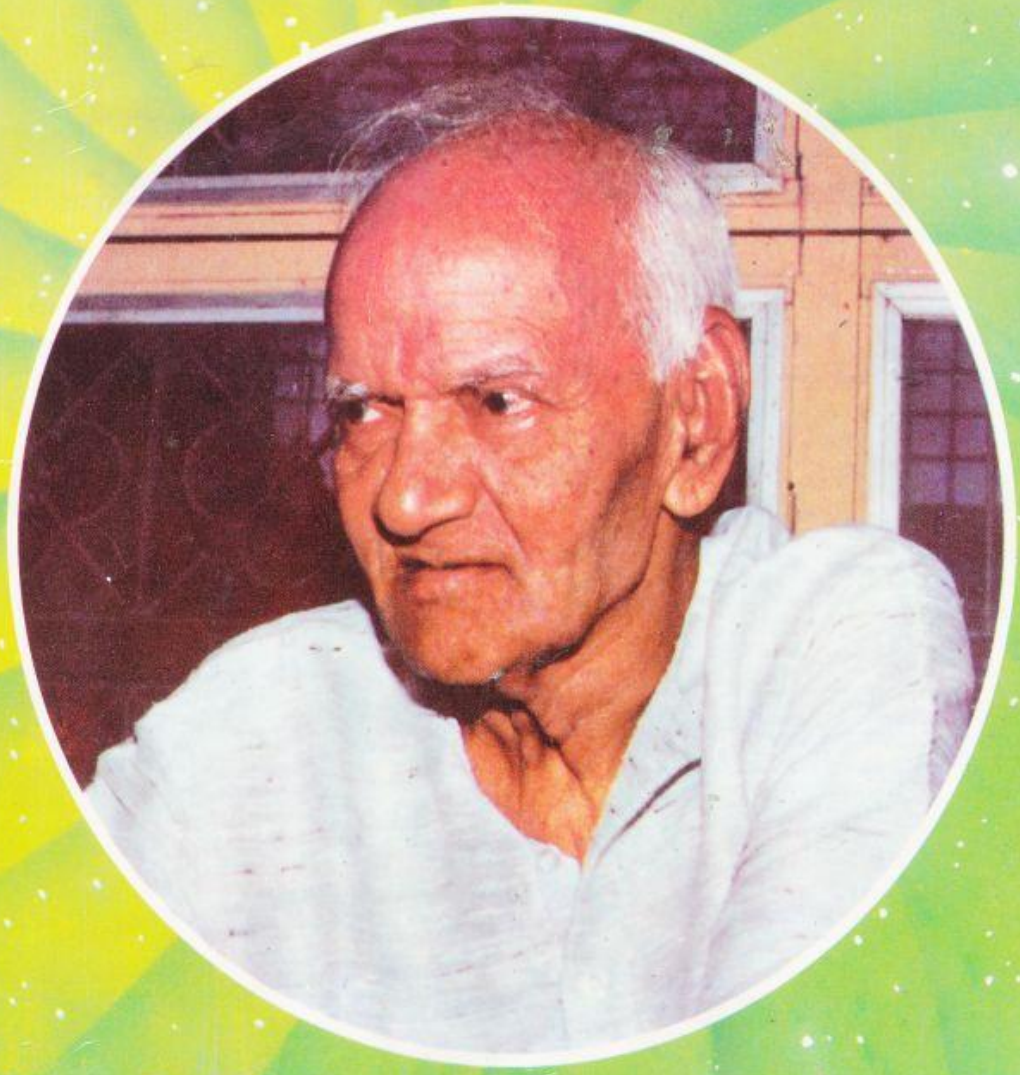
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया



www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ : एक समग्र उपचार-प्रक्रिया

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस



प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❐
प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा - २८१००३

❐
© सर्वाधिकार सुरक्षित

❐
द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



❐
मूल्य १२५)

❐
मुद्रक
जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ मातरं भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ।।

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ।।

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ।।

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ।।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

ऐसा कहा जाता है कि अग्नि प्रज्वलन इस सृष्टि के प्रथम मनुष्य ने अपौरुषेय वाणी के माध्यम से **''अग्नि मीडे पुरोहितं''** -ऋग्वेद की इस प्रथम ऋचा द्वारा सीखा । प्रकृति की सभी शक्तियाँ इसी के पश्चात मनुष्य के वश में आयीं । वस्तुतः अग्नि ने ही भौतिकी की, विज्ञान की प्रगति का मार्ग खोला । इसी कारण 'फायर वरशिप' अग्निपूजा प्रकारान्तर से हम सभी धर्म सम्प्रदायों में समान रूप से संपन्न होती देखते हैं ।

यज्ञ-प्रक्रिया को अपने संपूर्ण परिप्रेक्ष्य में प्रतिपादित कर वाङ्मय के इस खण्ड में परमपूज्य गुरुदेव ने बड़े विस्तार से यज्ञोपचार की प्रक्रिया की व्याख्या की है। यज्ञ एक सर्वांगपूर्ण उपचार पद्धति है- पर्यावरण संशोधन के लिए, सूक्ष्म जगत में संव्याप्त प्रदूषण मिटाने के लिए तथा मानव की स्थूल-सूक्ष्म-कारण हर स्तर पर चिकित्सा करने के लिए । सविता देवता की उपासना गायत्री महामंत्र का प्राण है एवं उसी सविता को समर्पित आहुतियाँ किस प्रकार अपनी मंत्र शक्ति एवं यज्ञ ऊर्जा के समन्वित स्वरूप के माध्यम से होता को लाभ पहुँचाती है, यही यज्ञोपचार प्रक्रिया है । आत्मसत्ता पर छाये कषाय-कल्मषों की सफाई से लेकर-गुणसूत्रों, क्रोमोसोम्स जीन्स तक पर यज्ञ प्रक्रिया प्रभाव डालती है एवं इसमें किस प्रकार यज्ञ कुण्ड एक यंत्र की भूमिका निभाकर बृहत सोम के अवतरण द्वारा सोम की-पर्जन्य की वर्षा में एक महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, इसका वैज्ञानिक आधार क्या है, ज्यामिती किस प्रकार यज्ञधूम्रों की बहुलीकरण प्रक्रिया को प्रभावित करती है, यह सारा प्रतिपादन इस खण्ड में हुआ है ।

यज्ञाग्नि व सामान्य अग्नि में अन्तर है । परमपूज्य गुरुदेव ने 'यज्ञोपैथी' के नाम से एक नूतन चिकित्सा पद्धति जो भविष्य की उपचार पद्धति बनने जा रही है, को जन्म देकर वस्तुतः वैदिक विज्ञान के मूल आधार को पुनर्जीवित किया है । यज्ञों से रोग निवारण में समिधाओं, शाकल्य तथा मंत्रों का चयन कैसे किया जाता है, यह पूरी प्रक्रिया अपने में एक समग्र विज्ञान है । परमपूज्य गुरुदेव लिखते हैं कि पृथ्वी तत्त्व का पंचभूतों से बनी इस काया में प्राधान्य है तथा पृथ्वी सदा वायु से गंधों का शोषण करती रहती है । यज्ञ द्वारा इसी गंध तत्व की प्रमुख क्षमता का उपयोग कर पृथ्वी पर पैदा होने वाली वनौषधियों द्वारा शरीर में संभावित कमी की पूर्ति तथा विकारों का शमन किया जाता है । ओजोन व ऋणात्मक आयन्स की मात्रा बढ़ाकर यज्ञ प्रक्रिया वस्तुतः साधक-याजक के चारों ओर का प्रभा मण्डल बदल कर रख देती है एवं रक्त संवहन द्वारा जो त्वचा व फेफड़ों द्वारा होता है, इन सभी तत्वों को पूरे शरीर में पहुँचाकर प्राणाग्नि को प्रज्वलित बनाये रखती है। प्राणाग्नि कुण्डलिनी ही है जो व्यक्ति की प्रतिरोधी सामर्थ्य को सतत् बढ़ाये रखती है। यज्ञाग्नि व प्राणाग्नि कैसे परस्पर संबद्ध हैं- यह समझना ही यज्ञोपचार के मूल मर्म को समझ लेना है । यज्ञोपचार वस्तुतः मानसोपचार के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा प्रक्रिया है । जहाँ तक किन्हीं भी ओषधियों की पहुँच नहीं है, वहाँ यज्ञ की वाष्पीभूत ऊर्जा पहुँचकर मनोरोगों-मनोविकारों का शमन करने में समर्थ है- यह व्याख्या पाठकगण इसमें पढ़ सकते हैं ।

न केवल मानव मात्र अपितु, संपूर्ण इकोसिस्टम की उपचार पद्धति है-यज्ञ । यज्ञ के लाभ देवदक्षिणा द्वारा व्यक्तित्व के परिष्कार के रूप में देवत्व के संवर्धन व आसुरी तत्वों के निवारण में तथा प्राणपर्जन्य की वर्षा द्वारा अयन मण्डल की सुव्यवस्था बनाने के रूप में मिलते हैं, यह भली भाँति इस खण्ड का मनन कर समझा जा सकता है । गीताकार ने कहा है- **अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न संभवः । यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः ।**

(३/१४)-अर्थात् ''संपूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है ।'' इसीलिए वह आगे कहते हैं- सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है । यज्ञ प्रक्रिया का यह पक्ष बड़े गूढ़ विवेचन के साथ प्रस्तुत किया गया है ।

तीन और प्रकरण इस खण्ड में वर्णित हैं (१) दैनिक बलिवैश्व प्रक्रिया द्वारा देवसत्ताओं की संतुष्टि देने की क्रिया को जीवित बनाये रखना (२) विचार क्रांति हेतु एक नूतन विधा-दीप यज्ञ प्रक्रिया जिसे आज सारे विश्व में सार्वभौम उपासना पद्धति की मान्यता प्राप्त हो चुकी है तथा (३) अश्वमेध यज्ञ प्रकरण । इन तीनों को ही युग ऋषि ने आज के समय की आवश्यकता के अनुरूप जन-जन के लिए सुगम बना दिया है । आज घर-घर में बलिवैश्व व दीपयज्ञ सम्पन्न हो रहे हैं । दीपयज्ञों द्वारा संस्कार भी सम्पन्न हो रहे हैं । अश्वमेध यज्ञ देव संस्कृति दिग्विजय के संदर्भ में परमपूज्य गुरुदेव के निर्देश पर आसुरी वृत्तियों को जड़ मूल से निरस्त करने के लिए परम वंदनीया माताजी द्वारा दो सहस्र वर्ष बाद एक अभूतपूर्व प्रयास के रूप में आरंभ किये गये । सौर शक्ति के संदोहन व तांत्रिक प्रक्रिया द्वारा देवाधिदेव महादेव की शक्ति का आह्वान कर विशिष्ट मंत्रों द्वारा राष्ट्र की एकता, समर्थता, सशक्तता के लिए ऐसे १०८ अनुष्ठानों का विधान रचा गया है जो २००१ तक पूरे होंगे । प्रस्तुत वाङ्मय के पाठकों के समक्ष आने तक ऐसे २२ विराट् यज्ञ जिनमें लाखों व्यक्तियों की भागीदारी रही भारत में तथा चार विदेश में सम्पन्न हो चुके । सत्ताईसवाँ अनुष्ठान प्रथम पूर्णाहुति के रूप में सम्पन्न हो रहा है । अश्वमेध प्रक्रिया की वैज्ञानिकता, प्रयाज-याज-अनुयाज तथा इसके चार चरणों की विशिष्ट व्याख्या इस खण्ड में है । व्यष्टि के उपचार से समष्टि के उपचार तक का पूरा विवरण इस खण्ड में पाठकगण पढ़ सकेंगे ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
अध्याय-१	
यज्ञ एक समग्र उपचार प्रक्रिया	१.१
यज्ञ में मन्त्र-शक्ति का महत्त्व	१.१
यज्ञ-ऊर्जा एवं मन्त्र विधा का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध	१.७
यज्ञाग्नि एवं शब्द-शक्ति का सूक्ष्मीकरण	१.९
वेदों में यज्ञ चिकित्सा	१.११
यज्ञ द्वारा रोग निवारण की प्रक्रिया	१.१९
यज्ञीय धूम की उपादेयता एवं महत्ता	१.२०
यज्ञीय वातावरण का स्वास्थ्य पर प्रभाव वैज्ञानिक साक्ष्य	१.२५
यज्ञ से सुख और समृद्धि का भौतिक विज्ञान	१.२९
यज्ञोपचार की स्वास्थ्य-संरक्षण प्रक्रिया	१.३३
यज्ञ से रोगनिवारण एवं बलसम्वर्धन के दो लाभ	१.३६
यज्ञ-चिकित्सा सरल भी, सर्वोपयोगी भी	१.४०
यज्ञ द्वारा रोगों की चिकित्सा	१.४४
यज्ञोपचार में प्रयुक्त समिधा एवं हवन सामग्री	१.४७
सभी रोगों में प्रयोग होने वाली हवन सामग्री	१.४८
विशेष रोगों की विशेष हवन सामग्री	१.४८
अध्याय- २	
यज्ञाग्नि एक उच्चस्तरीय ऊर्जा	२.४
यज्ञ ऊर्जा की अनुपम एवं अद्‌भुत सामर्थ्य	२.४
यज्ञाग्नि एवं सामान्य अग्नि का अन्तर	२.७
अग्निहोत्र और यज्ञाग्नि	२.१३
अग्निहोत्र और यज्ञ का अन्तर	२.१५
परोक्ष जगत का परिशोधन यज्ञों के माध्यम से	२.१८
अग्निहोत्र-प्राणोद्‌दीपन	२.२०
यज्ञ-अनुष्ठान में सन्निहित कुण्डलिनी विद्या	२.२२
पञ्च प्राणों की पाँच आहुतियाँ	२.२५
अग्निहोत्र है क्या ?	२.२८
अग्निहोत्र : कुछ जानने योग्य तथ्य	२.३२
अध्याय -३	
यज्ञ विधा: एक सर्वांगपूर्ण उपचार प्रक्रिया	३.७
सूक्ष्मीकरण पर आधारित यज्ञोपचारप्रक्रिया	३.१०
सूक्ष्मीकृत ओषधि की अद्‌भुत सामर्थ्य को भी परखें	३.१०
सूक्ष्मीकरण चिकित्सा का दर्शन एवं स्वरूप	३.१३
यज्ञोपचार से मनोरोगों का निवारण	३.१७
यज्ञ प्रक्रिया में गन्ध की उपादेयता एवं प्रभाव क्षमता	३.२०
एक सशक्त वैकल्पिक उपचार पद्धति यज्ञोपैथी	३.२४
यज्ञोपैथी: एक समग्र चिकित्सा पद्धति	३.३३
अग्निहोत्र से शरीर ही नहीं, मन का भी उपचार	३.४६
यज्ञावशिष्ट, पुरोडाश एवं चरु की महत्ता	३.४९
यज्ञ से अनेकानेक आधि-व्याधियों का निराकरण	३.५२
अध्याय-४	
यज्ञ ऊर्जा के बहुआयामी लाभ	४.१
देवत्व के सम्वर्धन-असुरता निवारण हेतु 'यज्ञ' अनिवार्य	४.१
यज्ञ से सन्धि पीड़ा का निराकरण	४.२
वातावरण परिष्कार एक अनिवार्य आवश्यकता	४.४
यज्ञ अग्निहोत्र से वायुमण्डल संशोधन	४.७
सूक्ष्म जगत के परिशोधन परिष्कार हेतु अध्यात्म उपचार	४.१२
यज्ञ द्वारा अमृतमयी वर्षा	४.१५
जब कामना करें, तभी वर्षा हो	४.१७
यज्ञ द्वारा प्राण पर्जन्य की वर्षा	४.२१
अयन-संवर्धन से जुड़ी विज्ञान सम्मत यज्ञ-प्रक्रिया	४.२५
प्राकृतिक प्रकोपों का कारण और निवारण	४.२८
वायु-प्रदूषण का समाधान यज्ञ	४.३१
अणुविकिरण की विभीषिका और यज्ञ	४.३५
यज्ञ से सूक्ष्म जगत एवं जनमानस परिष्कार महायज्ञों द्वारा वायुमण्डल और वातावरण का परिशोधन	४.४१ ४.४५
अध्याय-५	
अश्वमेध-यज्ञ	५.१
यज्ञ,महायज्ञ,अश्वमेध यज्ञ	५.१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय	पृष्ठ
अश्व की अवधारणा	५.४
'मेध' शब्द का अर्थ	५.५
अश्वमेध का व्यापक अर्थ	५.५
अश्वमेध के सन्दर्भ में शतपथ ब्राह्मण का मत	५.७
दो सहस्र वर्षों बाद एक अभूतपूर्व प्रयास	५.९
दशमावतार की अश्वमेध प्रक्रिया	५.१३
वातावरण अनुकूलन के लिए प्रचण्ड साधना-पुरुषार्थ की आवश्यकता	५.१६
सूक्ष्म जगत का परिशोधन, पराप्रकृति का अवगाहन	५.२१
अश्वमेध यज्ञ-सौर-शक्ति के सन्दोहन की प्रक्रिया	५.२४
अश्वमेध: सविता एवं गायत्री साधना	५.२८
अश्वमेध की प्राण-प्रक्रिया	५.२८
प्राण-संचारक सविता	५.२९
सविता और गायत्री	५.३०
महायज्ञों से महाप्राण-कुण्डलिनी का आलोढन	५.३४
प्रयाज-याज एवं अनुयाज	५.३७
यज्ञ प्रक्रिया, दिव्य अनुशासन एवं यज्ञ-संसद	५.३८
प्रतीकों की स्थापना	५.३९
अनुशासन की धुरी यज्ञ-संसद	५.३९
श्रद्धा की प्रमुखता	५.४०
यज्ञ बलि-देव दक्षिणा	५.४२
वैदिकी हिंसा,हिंसा न भवति- अर्थ निकालें, अनर्थ नहीं	५.४३
भाषा-ज्ञान का अपमान न करें	५.४४
अश्वमेध अर्थात्-अजेय राष्ट्र का सामर्थ्य सम्पादन	५.४६
'मेध' सम्बन्धी भ्रान्तियों का निराकरण	५.४९
मेघ को जो जगाये, वह है- अश्वमेध	५.५२
देव संस्कृति दिग्विजय अभियान बनाम देवासुर संग्राम	५.५५
राष्ट्र एवं दिग्विजय, राजनीतिक नहीं सांस्कृतिक शब्द हैं	५.५८
अश्वमेध दिग्विजय	५.५९
चार चरणों में सम्पन्न होने वाले अभिनव अश्ममेध यज्ञ	५.६०
अध्याय-६	
सर्वसुलभ यज्ञ प्रक्रिया-बलिवैश्व	**६.१**
सर्वसुलभ-यज्ञ प्रक्रिया बलिवैश्व	६.१
बलिवैश्व का तत्त्वदर्शन	६.३
दैनिक उपासना में बलिवैश्व	६.५
बलिवैश्व का सरल संक्षिप्त विधान	६.९
अध्याय-७	
दीप-यज्ञ	**७.१**
उद्देश्य और आधार	७.१
महिमा और महत्ता	७.६
दीप-यज्ञों की रूपरेखा और पृष्ठभूमि	७.९
दीप-यज्ञों के साथ जुड़े महान प्रयोजन	७.१२
दीप-यज्ञों की दीपमालिका और ज्योति-ज्वाला	७.१५
झंझट से बचें-आगे बढ़ें	७.१६
युगानुरूप सरल-सशक्त विधा	७.१७
नवयुग का स्वागत करें	७.१८
एक प्रखर आध्यात्मोपचार	७.१९
दीप-यज्ञों की विधि-व्यवस्था	७.२०
सरल एवं संक्षिप्त विधि-विधान	७.३०
पवित्रीकरण	७.३१
तिलक	७.३२
संकल्प सूत्र धारण	७.३२
कलश-स्थापन	७.३४
गुरु-वन्दना	७.३४
देव-नमस्कार	७.३५
पञ्चोपचार-पूजन	७.३६
अग्नि-स्थापना	७.३६
गायत्री-स्तवन	७.३७
गायत्री-स्तवन (पद्यानुवाद)	७.३८
दीपयज्ञ	७.३९
पूर्णाहुति	७.३९
आरती	७.४०
आरती गायत्री जी की	७.४१
यज्ञदेव की स्तुति	७.४१
हमारा युग निर्माण सत्संकल्प	७.४२
जयघोष	७.४२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय	पृष्ठ
विसर्जन	७.४२
शान्तिपाठ	७.४२
दीपयज्ञों से जुड़े अनुशासन	७.४२
दीपयज्ञ की देवदक्षिणा	७.४६
धर्मधारणा का जीवन्त सन्तुलित सदुपयोग	७.४७
दीपयज्ञ के साथ धर्मतन्त्र का सुनियोजन	७.४९
दीपयज्ञ के साथ जुड़े कुछ रचनात्मक कार्यक्रम (दीपयज्ञ के साथ परिवार निर्माण गोष्ठी)	७.५३
अंशदान एवं समयदान के संकल्प	७.५४
महान लक्ष्य- सुगम शुभारम्भ	७.५४
छोटी चिनगारी जो दावानल बनकर रहेगी	७.५७
श्रद्धा-सम्वर्धन: एक महान उपलब्धि	७.६०
दीपयज्ञ से जुड़े अगले संदर्भ	७.६२
साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से चलें	७.६५
बाल-संस्कारशालाएँ	७.६७
दीपयज्ञ के बाद बढ़े कदम	७.७०
शुभारम्भ अपनों से	७.७३
यह प्रयास भी अनिवार्य	७.७६
अध्याय -८	
सामूहिक यज्ञ-योजना	**८.१**
सामूहिक यज्ञ-योजना	८.१
यज्ञ के विशेष लाभ	८.१
सामूहिक यज्ञायोजनों की आवश्यकता एवं उपयोगिता	८.४
आवश्यक जानकारियाँ	८.६
अध्याय-९	
गायत्री यज्ञ अभियान	**९.१**
गायत्री यज्ञ-अभियान	९.१
अध्याय १०	
यज्ञ करने वाले इन बातों का ध्यान रखें	**१०.१**
यज्ञ करने वाले इन बातों का ध्यान रखें	१०.१
सात प्रतिबन्ध - जिनका यज्ञ आयोजनों के समय भवष्यि में कड़ाई के साथ पालन किया जाय	१०.३
गायत्री यज्ञों का तत्त्वदर्शन सभी को समझाएँ	१०.४
यज्ञायोजनों में इन तथ्यों को भी ध्यान में रखें	१०.१०
अग्नि से सुरक्षा	१०.१०
कार्यकर्त्ता स्वयं सेवक	१०.१२
याज्ञिक	१०.१२
मण्डप-निर्माण	१०.१३
जल-यात्रा	१०.१५
हवन-कुण्ड	१०.१५
पञ्चवेदियाँ	१०.१६
समिधाएँ	१०.१६
उच्चारण और निर्देश	१०.१७
चौक रंगोली	१०.१७
यज्ञायोजन	१०.१७
यज्ञशाला का निर्माण	१०.१७
पाँच वेदियों का सामान	१०.१८
पूजा एवं यज्ञ	१०.१८
विशेष	१०.१९
अतिथि	१०.१९
प्रसाद और भोजन	१०.२१
वर्तमान स्थिति और हमारे यज्ञायोजन	१०.२१
अपनी मर्यादाओं के प्रति हम अधिक जागरूक रहें	१०.२१
यज्ञों की पूर्णाहुति और वृक्षारोपण	१०.२४
गायत्री यज्ञों और युग-निर्माण सम्मेलनों की विस्तृत श्रृंखला	१०.२६
यज्ञ का तत्त्व-दर्शन	१०.३०
अध्याय-११	
यज्ञ क्यों करना चाहिए ?	**११.१**
यज्ञ क्यों करना चाहिए ?	११.१
यज्ञ के लाभ	११.५
यज्ञ का वैज्ञानिक आधार	११.७
स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर	११.११
यज्ञ की सफलता मन्त्र पर निर्भर है	११.१४
यज्ञ भावनामय होना चाहिए	११.१६
वेद भगवान की आज्ञा का पालन कीजिए	११.१८
अध्याय-१२	
यज्ञ-आयोजनों की उपयोगिता और आवश्यकता	**१२.१**
यज्ञ-आयोजनों की उपयोगिता और आवश्यकता	१२.१
युग-क्रान्ति में गायत्री यज्ञों की भूमिका	१२.३
गायत्री यज्ञों से विश्व-शान्ति	१२.६
नव निर्माण और गायत्री यज्ञ	१२.७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ एक समग्र उपचार प्रक्रिया

यज्ञ में मंत्र-शक्ति का महत्त्व

यज्ञ विज्ञान की समग्रता शब्द-ब्रह्म से यज्ञ प्रक्रिया के समन्वय पर निर्भर है । वेदों में वर्णित मंत्र-सूक्त जब विशिष्ट क्रम में गाये जाते हैं तो वांछित परिणाम उत्पन्न करते हैं । जितना महत्व यजन की जाने वाली ओषधि, अध्वर्यु-होता याजक-गणों एवं कर्म काण्डों का है, उससे कुछ अधिक ही गाये जाने वाले मंत्रों का है । वृष्टि यज्ञ, विशिष्ट रोगों के लिये विशेष यज्ञ-इन सभी में विभिन्नता एवं विशेषता शब्द-गुच्छकों की छन्द शास्त्र की ही रहती थी । यह एक तथ्य है ।

यज्ञों में मन्त्र विज्ञान की अपनी विशिष्ट भूमिका होती है । सामगान-जटापाठ आदि के रूप में उन की महत्ता गाई जाती रही है । यज्ञों में सामर्थ्य शब्दशक्ति से ही उत्पन्न होती है । इसे अब वैज्ञानिक स्तर पर सिद्ध करने के प्रयास भी चल पड़े हैं ।

वैज्ञानिक अनुसंधानों से अब यह सिद्ध हो गया है कि कम्पन से ध्वनि उत्पन्न होती है । वायु के बिना ध्वनि नहीं रह सकती । निर्वायु पात्र में बजती घण्टी को हम नहीं सुन सकते । शब्द तो घन, द्रव तथा अनिलों में चक्रमण करता है जिसे तरङ्ग कहते हैं । शब्द का वेग प्रायः सेकेण्ड में ११०० फुट का है । शब्द कम्पनों को मृदु वस्तुओं पर अङ्कित करते हैं । इस तरह का शब्दाङ्कन हमें फिल्म तथा रिकार्डों पर दिखाई देता है । शब्द को प्रकाश में भी परिवर्तित किया जा सकता है । उस प्रकाश से या शक्ति से शब्द सुनाया जा सकता है । यह सब आधुनिक विज्ञान की देन मानी जाती है । इसका यह मतलब है कि शब्द या मन्त्र दूसरे रूपों में परिवर्तित किये जा सकते हैं तथा मध्यवर्ती की सहायता से सफर भी करते हैं । वह स्थूल भी है और सूक्ष्म भी । स्थूल कार्य है और सूक्ष्म कारण । अतः शब्द से कार्य विधान निकलता है । ऋचा कहती है -

देवी वाचमजनयन्त देवास्तां
विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्देष्वमूर्गा दुहाना,
धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुवैतु ।।

वाक् देवी है, विश्वरूपा भी है । कार्यरूपिणी तो देवों की संतान है । पर वाक् ही देवों की जननी है । अतएव देवता मन्त्रात्मक ही है । मीमांसकों का सिद्धान्त, इसी विज्ञान से प्रतिष्ठित है । इसी धेनु रूपिणी वाक् से हम जीते हैं, उसी को हम बोलते हैं और समझते हैं ।

जो शब्द श्रव्य है तथा वाच्य हैं वह कार्य शब्द है, बैखरी शब्द है । जो शब्द सूक्ष्म है वह पश्यन्ती है । जो ज्ञेय है वही परावाक् कहलाती है । अतः वाक्-शक्ति ही ज्ञान इच्छा का रूप भी है, इच्छाशक्ति, ज्ञान-शक्ति तथा क्रिया शक्ति में वाक् ही ओत-प्रोत है । अन्तर्दर्शन या तप से हमें सूक्ष्म शब्द की गति मिलती है । जिस उद्देश्य से, जिस श्रद्धा से हम अन्तर्दर्शन करते हैं, तब उसी के अनुरूपिणी बुद्धि हमें मानसकुहर में मिलती है । इसी प्रक्रिया को हम मन्त्र कहते हैं-

पावका नः सरस्वती वागेभिर
वाजिनीवती, धीनामवित्र्यवतु ।

वाक् तप से पावन करती है, पुष्टि करती है, बुद्धि की प्रचोदना करती है । इसीसे घी का हवन भी-वागात्मक ही होकर मन्त्र-दर्शन कहलाता है । ब्रह्मर्षि विश्वामित्र के अन्तर्दशन से इस गायत्री का लाभ हुआ, जिसका स्थूल रूप हमें मालूम है, जिसे हम जपते हैं । स्थूल सूक्ष्म में तथा सूक्ष्म स्थूल में परिवर्तित किया जा सकता है । तप से यन्त्रदर्शन से सूक्ष्म से स्थूल को पाना है एवं जप से मंत्रसिद्धि पाना ही स्थूल को सूक्ष्म में परिवर्तन करना है । इस तरह यह जप-तप प्रक्रिया होती है । यही हमारे ऋषि-मुनियों का अनूठा आविष्कार है । उन्होंने यन्त्रसाध्य को भी मन्त्रसाध्य बनाया है और यन्त्र के असाध्य को भी मन्त्रसाध्य बनाया है ।

वाक् हृदयस्पर्शी होती है । वाक् स्पर्शानुभव भी देती है । वह रूपानुभव देती है । मन्त्र का रूपानुभव ही देवता का साक्षात्कार है । वह रूपदर्शन के द्वारा रसानुभव, इसके बाद गन्धानुभव कराती है । इस तरह एक ही वाक् बहुरूपिणी है, विश्वरूपिणी है । अतएव इसके वश में सारे देवता रहते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

देवता मन्त्र तथा एक विशिष्ट शक्ति के अभिमानी चेतन ही है । देव मूलतः एक ही है । वह प्रजापति है । देवमय तो अग्नि, तथा सूर्य हैं । इन गणों में बाकी देवता आ जाते हैं । अग्निगण भूदेव हैं । वायुगण के भुवः अथवा अन्तरिक्ष देव होते हैं और सूर्यगण के तो स्वः अर्थात् द्युलोक के देव होते हैं । अतः इन तीनों गणों के देवों के मन्त्राभिमान के कारण ये मन्त्र इन तीनों लोकों के माध्यम होते हैं । इस माध्यम से मन्त्रयोगी देवता का दर्शन करते हैं, उससे वार्तालाप करते हैं, तथा उसकी सुखानुभूति में स्वयं निमग्न हो जाते हैं । इस मन्त्र विज्ञान तथा देवता विज्ञान से वे तीनों लोकों की सहायता कर सकते हैं । ऐसे लोग कर्मयोगी भी हैं तथा तीनों लोकों का संग्रह भी कर सकते हैं ।

पहले यह कहा गया है कि मन्त्र यज्ञ की आत्मा है । अब यज्ञ की महत्ता स्वयं जानी जा सकती है जो यज्ञ ऐसी विशाल तथा विशद् आत्मा रखता है, वह क्या फल नहीं दे सकता है ? ऐहिक फल ही नहीं दैविक भी देते हैं । यह इतना ही नहीं. आत्म-साक्षात्कार में भी काम करता है । यह 'कूर्म पुराण' में इस तरह कहा गया है-

ब्राह्मण्याधाय कर्माणि निस्संग कामवर्जितः ।
प्रसन्नेनेव मनसा कुर्वाणो याति तत्पदम् ।।
ग्रीणातु भगवद्मानीशः कर्मणानेन शाश्वतः ।
इति यत्कुरुते बुध्या ब्रह्मार्पणमिदं परम् ।।
श्रद्धा फलानां सन्यासं प्रकुर्यात्परमेश्वरे ।
कर्मणामेतदप्याहुः ब्रह्मार्पणामिदं परम् ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन त्यक्त्वा कर्माणि तत्फलम् ।
अविद्वानपि कुर्वीत कर्मणाप्नोति-तत्फलम् ।।

इस तरह यज्ञ प्रवृत्ति पर भी होता है, निवृत्ति पर भी । साधक जो चाहता है वह पाता है । जो अनन्त का इच्छुक है वह अनन्त प्राप्त करता है और जो निष्काम ही यज्ञ दान तथा तप करता है वह अकाम हो जाता है । वाक्धेनु वत्स क्या नहीं पाता ?

क्या ऐसा यज्ञ वायु शुद्धि नहीं करता ? क्या इस यज्ञ से पर्जन्य की कृपा नहीं बरसती ? श्री भगवान् का 'यज्ञाद्भवति पर्जन्यः' वाक्य क्या अवैज्ञानिक तथा अश्रद्धेय है ? अवश्य यज्ञ से पर्जन्य प्राप्त करना वैज्ञानिक ही है । यह सिर्फ मिथ्या प्रतिज्ञा नहीं हो सकती । आधुनिक विज्ञानी लोग कृत्रिम वृष्टि के लिए जो वैज्ञानिक प्रयोग कर रहे हैं, सो सब जानते ही हैं । विमानों द्वारा लवण जल लेकर या अनुकूल बात का प्रयत्न कर मेघों को आकर्षित करना ही वह साधन है न ? अर्थात् विशिष्ट धूप का प्रसार अनुकूल वातावरण का निर्माण करेगा । क्या यह मन्त्रपूत, इच्छा शक्ति, विशिष्ट चर्वाज्य सामिद्ध तथा सुवासित होमधूप वृष्टिकारक नहीं हो सकता ? क्या अतिवृष्टि नहीं रोक सकता ? जहाँ आधुनिक प्रयोग विफल है वहाँ प्राचीन प्रयोग वैज्ञानिकों को अपनाना चाहिए । भारतीय वैज्ञानिकों का कर्तव्य है कि वे यज्ञ तथा मन्त्र की विद्या का अभ्यास करें और प्राचीन प्रयोगों पर अनुसन्धान और अनुशोधन करें ।

अतः कुछ अक्षरों के उच्चारण शरीर की कुछ खास नाड़ियों पर परिणाम करते हैं । इन उच्चारणों की सक्रियता से नाड़ी सम्पन्न होती है, और उनकी अक्रमता से विपन्न हो जाती है । इसी के कारण 'ग्लैण्ड' या ग्रन्थि पैदा होकर शरीर को दुर्बल बनाना पड़ता है । ओज की श्रीवृद्धि भी शब्दोच्चारण से प्राप्त होती है । ओज ही जीव धातु है, जीवाणु है । गुणाणु भी शब्दों से प्रभावित होते हैं । अतएव यह सिद्ध होता है कि शब्द या मन्त्र से स्वास्थ्य पाया जाता है तथा रोग भी । गायत्री का अनुलोम पाठ पोषक है पर विलोम पाठ नाशक है । उसी के विशिष्ट सम्पुटीकरण से वशीकरण तथा और किसी सम्पुट के लगाने से विवशीकरण किया जाता है । यह सब 'गायत्री महाविज्ञान' के पाठक भली-भाँति जानते ही हैं ।

मन्त्र जैसे व्यष्टि में अर्थात् पिण्ड में प्रभाव करता है उसी तरह ब्रह्माण्ड या समष्टि में भी । समष्टि के सब कुछ व्यष्टि में निहित है सूक्ष्मतया व्यष्टि का विराट् रूप ही ब्रह्माण्ड रूप है । यह तथ्य तो प्रत्येक पुराण से ज्ञात होता है और चिन्तन से भी । इससे यह सिद्ध होता है कि विश्व की शान्ति या अशान्ति मन्त्र से पैदा की जा सकती है । जहाँ लौकिक मन्त्र इसके प्रसिद्ध कारण हैं वहाँ वैदिक मन्त्र कैसे विफल या दुर्बल हो जाता है ? तस्मात् मन्त्र तथा मन्त्रात्मा यज्ञ पर विश्व-शान्ति निर्भर हो सकती है न ? यज्ञ शांतिकारक तथा पुष्टिकारक होता है सो सब कर्मकाण्डी जानते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस तरह मन्त्र शक्ति तो अघटित घटनापटीयसी है । ज्ञानी का मन्त्र जप दूसरों पर संवेग तथा अज्ञानी का मन्त्ररटन उन पर उद्वेग ही पैदा कर देता है । यह शक्ति अणु-शक्ति से कई गुनी बढ़कर है, यह अत्युक्ति या अन्धोक्ति नहीं है । माता श्रुति कहती है **विष्णुमुखा वै देवाइछन्दाभि रिमान्लोकानन पजय्यमप्यजपन्** ।

इन्हीं मन्त्रों से देवों ने न हराये जाने वाले लोकों को जीत लिया । वे देव विष्णुमुख हैं । अतः मन्त्र-शक्ति पर शङ्कित होना तो केवल मानसिक दुर्बलता है । अथवा उसकी विजिज्ञासा में रहती हुई अश्रद्धा है । वे अपनी विचार शक्ति की वञ्चना कर रहे हैं ।

पूर्णाहुति का एक मन्त्र कहता है-आज्य तो देवों की जिह्वा है, वह अमृत वाणी है । समुद्र से जो लहरें उठती हैं उन्हें वह अमृत बताते हैं । वह घृत भूतल तथा हृदयतल पर अमृत बरसाता है ।

मन्त्र अक्षरात्मक पदात्मक तथा वाक्यात्मक होते हैं । यह गद्य भी है, पद्य भी है । कुछ तो केवल साकेतिक रहते हैं । मन्त्रों के अक्षरों के बारे में कुछ कहा जाता है पद और वाक्यों को तो सब जानते ही हैं । अक्षर तथा पदों का जो क्रम होता है वह बड़ी ही महत्ता रखता है । वाक्यरचना भी मन्त्र में अपना खास प्रभाव मिलाती है । पद रूप मन्त्र तो छन्दोबद्ध होते हैं । इसी कारण से सारे वेद-खासकर ऋग्वेद-छन्द कहलाते हैं । छन्द में नाद की विशेषता होती है । जहाँ पद, वाक्य प्रभाव न डाल सकते हैं वहाँ केवल नाद ही असर डाल सकता है । यह विचार हर एक संगीताभिमानी भी जानता है । कोई गान या राग किसी काल में विशेष शक्तिशाली होता है, और कोई राग रोगशमन करता है । दूसरा कोई दीप जलाता है तो और एक पानी भी बरसाता है । या ऋचा से देवता का आह्वान करते हैं । गान या साम से देवता शक्ति का उपग्रहण किया जाता है । तब यजु से हवि अर्पित किया जाता है । गान संस्कार भी करता है जैसे कि सीमन्तोन्नयन में जो कि गर्भिणी का संस्कार है, वीणावादन कराया जाता है । वीणा पर मन्त्र का गान ही तो बताया जाता है ।

छन्द मन्त्र का मुख्य अवयव होता है । गायत्री छन्द से ब्राह्मण का जन्म होता है । त्रिष्टुप तो छन्द को जन्म देता है, और जगती वैश्व जननी है-यह श्रुति का कहना है । तंत्रों में जो मन्त्र हैं वे प्रायः सङ्केतात्मक तथा पदरूप होते हैं । इनमें भी छन्द हैं परमहंसों का मन्त्र प्राण है । प्रणव भी छन्दोमय है यह मन्त्रवेत्ता भली-भाँति जानते हैं ।

वैदिक धर्म में ही नहीं, दूसरे भारतीय धर्मों में भी छन्द की महत्ता होती है । जैन लोग मन्त्रों से अभिषेक करते हैं । बौद्ध लोग भी कुछ मन्त्रों से तारा की उपासना करते हैं । इसी तरह नवाज में भी मन्त्र हैं । मुसलमान कहते हैं कि कुरान की भाषा में जो स्वर हैं वे बड़े महत्वपूर्ण हैं । गिरजाघरों में भी छन्दगान सुनाई देता है । इस तरह छन्दोबद्ध मन्त्र का विज्ञान व उपयोग बड़ा व्यापक है ।

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः
दधीव चक्षुराततम् ॐ

यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले सभी तत्वों में मन्त्र की शक्ति सर्वोपरि है । इसलिये यज्ञ में मन्त्रों का प्रयोग पूर्ण सावधानी से ही किया जाना उचित है ।

यज्ञों में जो शक्ति सन्निहित है उसका प्रमुख आधार मन्त्र शक्ति है । मन्त्रों में चार प्रकार की शक्ति होती हैं । १-प्रामाण्य शक्ति (२) फल प्रदान शक्ति (३) बहुली करण शक्ति (४) आयातयामता शक्ति ।

महर्षि जैमिनि की पूर्व मीमांसा के अनुसार मन्त्रों में जो अर्थ शिक्षा, सम्बोधन, आदेश सन्निहित हैं, जिनके आधार पर मनुष्यों को अपने कर्तव्य का ज्ञान होता है और कर्तव्य की प्रेरणा मिलती है वह उनकी प्रामाण्य शक्ति है ।

कुशा, हवि, चरु, आज्य, कुण्ड, समिधि, पात्र पीठ आदि को अभिमन्त्रित करके उनको सूक्ष्म प्राण से प्राणवान् करने का विधान मन्त्रोच्चार ऋत्विजो को न्यासादि से मन्त्रावधारित करना एवं अमुक क्रिया पद्धतियों द्वारा अमुक आयोजन का विधि-विधान मन्त्र की फल प्रदायिनी शक्ति से सम्बन्धित है । सकाम यज्ञों में यही प्रक्रिया प्रधान रहती है । विष परिहार, रोग निवारण, शत्रुनाश, श्रीलाभ, युद्ध जय, दिव्य शस्त्रास्त्र, सन्तान लाभ आदि नाना प्रकार के काम्य उद्देश्य, मन्त्रों की इसी शक्ति के द्वारा प्राप्त करते हैं ।

मन्त्र की तीसरी शक्ति 'बहुलीकरण शक्ति' है । देव पूजन में जरा सा चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि चढ़ाये जाते हैं और हवन में दो पोरवों पर रखकर जरा-सी हवि देवता के लिए होमी जाती है । देवताओं का आकार विस्तार इतना बड़ा और यह पूजा पदार्थ इतने स्वल्प ? इनसे उनकी तृप्ति कैसे होती होगी ? इस प्रश्न का समाधान वही कर सकते हैं जिन्हें मन्त्र की 'बहुलीकरण शक्ति' का ज्ञान है । जिस प्रकार छोटे से परमाणु का विस्फोट अमुक प्रक्रिया के साथ करने पर वहाँ प्रचण्ड विद्युत शक्ति का परिस्तरण होता है उसी प्रकार अमुक मन्त्रों से, अमुक विधान के साथ, दी हुई थोड़ी-सी वस्तु भी सूक्ष्म जगत में इतनी मधुर, सुस्वादु तथा विपुल हो जाती है कि उसे देवता अमृत के समान उपभोग करते हुए तृप्तिलाभ करते हैं ।

मन्त्र की चौथी 'अयातयामता' शक्ति वह है जो किसी विशेष व्यक्ति द्वारा, विशेष स्थान पर, विशेष उपकरणों से पैदा होती है । विश्वामित्र ऋषि ने गायत्री तत्व की असाधारण तन्मयता के साथ असाधारण उपासना की, फलस्वरूप वे गायत्री के मन्त्र दृष्टा बने । कोई विशेष साधन जिस भूमि पर रहकर किया जाता है वह भूमि उस मन्त्र की शक्ति से असाधारण रूप से प्रभावित हो जाती है, ऐसे स्थान तीर्थ सिद्ध पीठ, शक्ति पीठ आदि के नाम से पुकारे जाते हैं । जिस माला से, जिन पूजा पात्रों से जो मन्त्र साधन किया जाता है वह पदार्थ उस तत्व से परिपूर्ण हो जाने के कारण निहित प्रयोजन की सिद्धि में विशेष रूप से सहायक होते हैं ।

प्राचीनकाल में इस 'अयातयामता' शक्ति को बहुत महत्व मानते थे और उसका पूरा-पूरा ध्यान रखते थे । कल्प सूत्रों में कार्यों की मर्यादा यह है कि निर्धारित कर्मकाण्ड समाप्त हो जाने पर उसका बचा हुआ परिद्रव्य, यातयाम निर्वीर्य हो जाता है । कारण यही है कि उन पदार्थों को जिस उद्देश्य से आमन्त्रित किया गया था वे उस उद्देश्य से भिन्न प्रयोजन के लिए उपयुक्त नहीं रहते । प्रेत कर्म कराने वाले श्राद्ध विशेषज्ञ कर्मकाण्डी अन्याय कर्मकाण्डों को अपने हाथ में नहीं लेते । इसी प्रकार अमुक यज्ञों की विशेषता जिन आचार्यों से प्राप्त करानी होती है उनके द्वारा ही वह कार्य ठीक प्रकार सम्पन्न हो पाते हैं । दशरथ के गुरु वशिष्ठ जी उच्च कोटि के वेदज्ञ थे, कोई भी क्रिया-कलाप उनसे छिपा न था, पर पुत्रेष्टि यज्ञ के उपयुक्त शृङ्गी ऋषि ही थे । दुर्गा, शिव देवताओं के जहाँ विशेष सिद्धपीठ हैं वहाँ उन मन्त्रों की अयातयामता शक्ति को विकसित होने में बड़ी सहायता मिलती है ।

मन्त्र विद्या के ज्ञाता सम्पूर्ण मन्त्र संहिता को पढ़ते तो हैं पर विशेष श्रम किसी विशेष यज्ञ भाग पर ही करते हैं । प्राचीन काल में वंश परम्परा से अमुक मंत्र भाग की साधना चलती थी । पीढ़ी दर पीढ़ी इस विशेषता को कायम रखा जाता था । अब तो एक ही पण्डित सम्पूर्ण प्रकार के कृत्य करा देने का साहस करता है । जिन यज्ञ पात्रों से विवाह का हवन करते है उन्हीं से अन्त्येष्टि भी होती है । परस्पर विरोधी प्रयोग से लाभ होना तो दूर उलटे निष्फलता एवं प्रत्यवाय की ही आशङ्का रहती है । मन्त्र की 'अयातयातमा' शक्ति से परिचित व्यक्ति सीमित मर्यादा से विशेष शक्ति उत्पादन करते हैं । तदनुसार उन्हें ही समुचित सफलता मिलती है ।

सूत्रकारों ने मन्त्र में सन्निहित शक्तियों का ध्यान रखते हुए अमुक प्रयोजन में अमुक मन्त्रों का उपयोग करने का विधान किया था । अब कुछ विद्वान् ऐसा करने लगे हैं कि जिस कार्य से जिस मन्त्र का अर्थ कुछ संगति खाता हो उसी का उस कार्य में उपयोग कर डाला जाय । यह मनमानी उचित नहीं । शास्त्र मर्यादाओं का उल्लंघन करके मन्त्रों की मनमानी घर जानी रीति खिलवाड़ नहीं की जानी चाहिए । जो विद्वान् जिस मन्त्र भाग के अधिकारी बनें-उन्हें उचित है कि प्रतिदिन निष्ठापूर्वक उन मन्त्रों को अपने में जाग्रत रखने के लिये पाठकी उपासना का क्रम जारी रखें । इसमें तनिक भी प्रमाद न होने दें ।

मान्त्रिकों को इन्द्रिय निग्रही तथा तपस्वी होना चाहिए । इसके लिये ब्रह्मचर्य आवश्यक है । महाभारत में कथा है कि जब अश्वत्थामा पाण्डवों को नष्ट करने के लिये मन्त्र चालित 'सन्धान अस्त्रं ' का प्रयोग करने लगा तब अर्जुन ने उसकी शान्ति के लिये अन्य दिव्य अस्त्र छोड़ा । उन दोनों अस्त्रों के प्रज्वलित होने पर सम्पूर्ण विश्व के नष्ट होने की स्थिति उत्पन्न हो गई । तब व्यास जी दोनों अस्त्रों के बीच प्रादुर्भूत हुए और उन्होंने उन अस्त्रों का शमन करने के लिये अर्जुन और अश्वत्थामा को कहा कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने-अपने अस्त्रों को शान्त करो । अर्जुन ब्रह्मचारी था इसलिए उसने अपने शस्त्र को शान्त कर दिया पर अश्वत्थामा असफल रहा क्योंकि वह दुर्योधन की पत्नी के प्रति अचिन्त्य चिन्तन कर चुका था । समस्त जीवन नहीं तो कम से कम मन्त्राराधन के समय तो तपस्वी और इन्द्रिय निग्रही रहना आवश्यक ही है । इसके बिना वह शक्ति उत्पन्न नहीं होती, जो अभीष्ट प्रयोजन की सफलता के लिए आवश्यक है ।

मन्त्र की शक्ति को समझना उसके रहस्य का साक्षात्कार करना और विशेष साधना द्वारा उसे सिद्ध करना, यही मन्त्र साधकों का परम लक्ष्य होता है । जो इस मार्ग का अवलम्बन करते हैं वे सफल मनोरथ होते हैं । यजुर्वेद में उपाख्यान है कि- ''नृमेध'' और ''यरुच्छेप'' नामक दो याज्ञिकों में विवाद हुआ कि देखें हम में से कौन सच्चा मन्त्र दृष्टा है । दोनों ने निश्चय किया कि जो गीले काठ में मन्त्र शक्ति से अग्नि उत्पन्न करदे वही निष्णात माना जाय । नृमेध ने मन्त्र प्रयोग किया तो गीले काठ में से धुआँ मात्र निकला पर यरुच्छेप के मन्त्रों से गीली लकड़ी प्रज्वलित हो गई । अस्तु वही निष्णात माना गया । अपनी सफलता का कारण बताते हुए यरुच्छेप ने कहा-हे नृमेध ! तू केवल मन्त्र के उच्चारण, अर्थ और विधान को ही जानता है पर मैंने तो उसके सारे रहस्य को जाना है । यह मेरी सफलता का कारण है ।

यज्ञ में मन्त्र पढ़ना अनिवार्य अङ्ग है इसलिए मन्त्र में क्या शक्ति है इस पर भी विचार करना आवश्यक होता है । योग दर्शन में जन्मौषधि मन्त्र की तप तथा समाधि द्वारा सिद्धि कही गई है । आजकल वे व्यक्ति मन्त्र सिद्धि पर विश्वास नहीं करते । उसे वे प्रकृति नियम से विरुद्ध नहीं मानते हैं, परन्तु मानुष ज्ञान अत्यन्त सीमित होता है । उनके पास प्रकृति नियमों की पूर्ण सूची नहीं है । लोहा पानी में डूबता है-यह प्राकृतिक नियम है, पर अन्य प्राकृतिक नियमों के आश्रय से लोहे का भारी जहाज पानी पर तैरता है, क्या साधारण लोग उन नियमों को जानते हैं, जिनके अनुसार वायुयान उड़ता है ? बिना ही तार के देश विदेश के साथ सम्वाद होता है इस जगत में निरन्तर शक्ति का संघर्ष हो रहा है । कभी एक शक्ति कभी दूसरी शक्ति दबी । जिसे जितनी शक्तियों का तथा उसके प्रचलन का जितना ज्ञान है, उसमें उतनी ही सिद्धि है । जब तक हम निश्चयपूर्वक कह सकें कि इस शक्ति के आगे किसी शक्ति का अस्तित्व नहीं है तब तक यह कहना कि अमुक सिद्धि असम्भव है, ठीक नहीं ।

क्रिश्चियन वैज्ञानिक रोगी की शैय्या के पास कुछ पाठ किया करते हैं । उससे वे बिना ही ओषधि के प्रयोग के उसको स्वस्थ कर देते हैं । यह भी एक मान्त्रिक सिद्धि हुआ करती है । प्रत्येक मन्त्र कई नियत ध्वनियों का समूह होता है । मन्त्र में अर्थ की आवश्यकता नहीं हुआ करती है । नहीं तो मन्त्र की शक्ति नष्ट हो जाती है । इसलिये उसमें शब्द को शुद्ध बोलने की आवश्यकता पड़ा करती है । इसलिये ही महाभाष्य के पस्पशाह्नि में कहा है-**याज्ञे कर्मणि (प्रयोग) नियमः** अर्थात् यज्ञ कर्म में अर्थ ज्ञान का नियम नहीं होता, किन्तु उस कर्म के प्रयोग का नियम मात्र होता है । विवाह संस्कार के मन्त्रों से कन्या सुसंस्कृत होती है । परन्तु उसके अनुवाद में वह शक्ति कैसे हो सकती है ।''

वेद मन्त्रों के संग्रह हैं । मन्त्र निरुक्त में नियत आनुपूर्वी वाले तथा नियत पद प्रयोग परिपाटी वाले भी कहे गये हैं । इसलिये काव्य प्रकाश में वेद को शब्द प्रधान माना गया है । कौत्स मुनि वेद मन्त्रों को अनर्थक मानते हैं । अनर्थक का यह भाव नहीं कि उनका कुछ भी अर्थ नहीं । इसका यह भाव है कि मन्त्र के उच्चारण विशेष में ही सामर्थ्य है । इस प्रकार प्रत्येक मन्त्र विशेष की शक्ति के विषय में भी जानना चाहिए । बीज मन्त्र अर्थहीन ही तो होते है । ऐं, ह्रीं, क्लीं आदि बीज मन्त्र कितना प्रभाव रखते हैं-यह जानना चाहते हों तो चिन्तामणि मन्त्र के उपासक श्री हर्ष का नैषधचरित तथा उसका १३ वाँ सर्ग देखना चाहिए । अमेरिका के वैज्ञानिक भी बीज मन्त्रों की शक्ति मानते हैं-यह बात श्री सातवलेकर प्रकाशित, 'सूर्य नमस्कार' पुस्तक में लिखी है ।

जब किसी वस्तु में किसी कारण से कम्पन होता है, तब उस कम्पन के कारण हमारी कर्णेन्द्रिय में विशेष प्रभाव पड़ता है जिसे 'ध्वनि'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा जाता है । प्रत्येक वस्तु के लिये एक कम्पन की संख्या नियत होती है, जो उसके गुरुत्व और आकार पर निर्भर होती है । यदि वह वस्तु कम्पन को प्राप्त होती है तो स्वर निकलता है । यदि उसके पास वह प्रतिध्वनित हो तो वह वस्तु भी कम्पित होगी । प्रयोगशालाओं में इनके अनेक प्रयोग होते हैं इसलिये ध्वनिमापक यंत्र बनाया जाता है ।

एक शीशे का गिलास लिया जाता है, उसका नियत स्वर उसके पास बजाया जाता है, उसके परिणाम में गति बद्धता से कम्पन के वेग से वह गिलास टूट जाता है । पर्याप्त गवेषणा से उपर्युक्त ध्वनियों के प्रयोग से अर्थात् मन्त्र विशेष के द्वारा बड़े किले व पर्वत गिराये जा सकते हैं । इङ्गलैण्ड के स्टोनहैब्ज में टुइडधर्मो का जो अवशेष है, उसमें पत्थर एक दूसरे पर इस प्रकार से तुले हुए हैं कि- उनके पास मध्यम स्वर के जाने से वे काँपते हैं, कुछ समय तक वैसा करने पर उनके गिरने की शङ्का भी हो सकती है । इस कारण वहाँ गाना निषिद्ध है । इस प्रकार वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि ध्वनि समूह के द्वारा बहुत से विचित्र कार्य किये जा सकते है ।

पशुओं और मनुष्यों पर ध्वनि का जो प्रभाव पड़ता है, उसे सब जानते हैं । ऋतु विशेष में और समय विशेष में जो ध्वनि समूह कार्य करते हैं वे ही हमारे राग-रागनियों के आधार हैं । रोगियों के ऊपर भी ध्वनियों का प्रभाव अनुभव सिद्ध है । उपर्युक्त ध्वनिराशि शरीर, मस्तिष्क और नसों के क्षोभ को शान्त करके उसमें पुनः साम्यावस्था ला सकता है जिसका परिणाम शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य है । इस प्रकार उपयोगी ध्वनियों की आवृत्ति से अर्थात् उपयोगी मन्त्रों के जप से मस्तिष्क के उपयोगी केन्द्र कम्पित किये जा सकते हैं । उनके द्वारा चित्त के चौथे स्तर, अचेतन नाम के अंश जगाये जा सकते हैं, जिससे योगी सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है ।

जबकि आजकल निरर्थक मन्त्र भी, मुसलमान आविकों के मन्त्र भी, साँप-बिच्छू आदि के दमन में सफल होते हुए दीखते हैं, तब जगद्गुरु भारतवर्ष के जगद्गुरु ब्राह्मणों से समाधि दृष्ट मन्त्र भला कैसे असत्य हो सकते हैं ? इसलिये महाभाष्य के पस्पशाह्निक में 'ज्ञान-कर्मणोर्धर्ताधिकरण' में कहा है-**'यथा वेदशब्दा नियमपूर्वकमधीताः फलवन्तो भवन्ति'** इससे वेदमन्त्रों के नियमित जप से फल प्रदान शक्ति सिद्ध होती है । इसलिये उनके प्रकम्पन का प्रभाव, बादलों पर पड़ता है, और पुत्रेष्टि यज्ञ में स्त्री के गर्भाशय पर भी पड़ता है, जिससे सन्तान भी हो जाती है । वेद के मन्त्र स्वयम्भू का वचन होने से साक्षात् प्रभावशाली होते हैं ।

अग्नि मानव समाज की एक विशेष विभूति है । प्राणियों में मनुष्य ही केवल अग्नि द्वारा काम लेते हैं । शेष तो अग्नि से दूर रहते हैं । वन में हिंसक जन्तुओं से अपनी रक्षा का उपाय ही यही है कि अपने चारों ओर अग्नि जलाकर रखी जाय । मनुष्य ही अग्नि द्वारा विविध कृत्यों को पूर्ण करता है । अग्नि द्वारा वह शक्ति उत्पन्न होती है, जिससे रेलगाड़ी चलती है, तार जाते हैं , विमान उड़ते हैं । अग्नि द्वारा ही पाक क्रिया सम्पन्न होती है जिससे मनुष्य जीवन धारण करता है । बहुत कहने से क्या गर्भाशय की अग्नि द्वारा ही मनुष्य आदि का शरीर पैदा होता है और पुष्ट होता है ।

महायुद्धों में जो भयङ्कर जनसंहार होता है, वह भी अग्नि के ही बल से । उसी के आश्रय से बन्दूक चलती है, तोप चलायी जाती हैं, सर्व संहारक अस्त्र चलते हैं, गैसें चलती हैं, बम डाले जाते हैं । जिस राजा के पास तेल, कोयला आदि अग्नि का भोजन नहीं होता वही अन्त में हारता है । इसी कारण आक्रमणकारी राजा दूसरे राष्ट्र के पेट्रोल और कोयले की खानें नष्ट करने की चेष्टा करते हैं, जिससे दूसरे की पराजय और अपनी विजय होवे ।

अग्नि के उत्पादन और उससे संहार के नवीन प्रकारों का उद्भव आज की साइन्स ने किया है, परन्तु प्राचीन युग में अग्नि द्वारा दिव्य शक्ति के उत्पादन का प्रकार ही अन्य था । जैसे आजकल विधान विशेष से अग्नि में पेट्रोल और कोयले की आहुति देकर भौतिक शक्ति पैदा की जाती है वैसे ही पुराण काल में प्राचीन ऋषि मुनि विधान एवं मन्त्र विशेष से द्रव्य विशेष की आहुति देकर दिव्य शक्ति उत्पन्न करके अपने तथा दूसरों के मनोरथों को पूर्ण करते थे । आजकल यद्यपि उसका प्रचार लुप्त प्रायः है तथापि सर्वथा अभाव नहीं हुआ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्वाचीन जड़ विज्ञान जिन बाधाओं को हटाने में सर्वथा असमर्थ है, प्राच्य विज्ञान उन बाधाओं को यज्ञ के द्वारा तथा उसके अङ्गभूत जपपाठ आदि से हटा सकता है । वेदों में यज्ञ विद्या भरी हुई है, कल्पसूत्र में उसके विनियोग दिखलाये गये हैं । अब उसके प्रयोगकर्ता चाहिए ।

यज्ञ ऊर्जा एवं मन्त्र विधा का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध

मन्त्र विद्या और यज्ञ विज्ञान का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है । मन्त्र विद्या में जप-अनुष्ठान आदि की महत्ता है, किन्तु उनकी पूर्णता यज्ञकृत्य द्वारा सम्पन्न होती है । गायत्री जप अनुष्ठान के सम्बन्ध में जिन्हें विस्तृत जानकारी है उन्हें यह भी विदित है कि अनुष्ठानों की पूर्णता के लिए यज्ञ कृत्य भी उसके साथ जोड़ना पड़ता है । मात्र जप ही करते रहा जाय और उसके साथ यज्ञ का समावेश न किया जाय, तो उतने भर से अभीष्ट शक्ति का उत्पादन न होगा, लक्ष्य की पूर्ति न होगी ।

जड़ शक्तियों में जिस प्रकार धन, बल, पद, शस्त्र आदि की क्षमताओं को बड़ी सामर्थ्य बताया गया है, उसी तरह चेतना के क्षेत्र में मन्त्र विद्या और यज्ञ विज्ञान की अपनी विशिष्ट महत्ता है । इनके समन्वित प्रयोग से ओजस, वर्चस का आत्मोत्कर्ष का लाभ हस्तगत होता है । यज्ञ विज्ञान के माध्यम से शक्ति प्राप्त होती है । भौतिक क्षेत्र में कृषि, व्यवसाय, यन्त्र यह सब विज्ञान के अन्तर्गत आते हैं । यंत्रों के द्वारा महत्वपूर्ण उत्पादन होते हैं । कल-कारखाने मनुष्य के लिए सम्पदा कमाते हैं । अस्त्र-शस्त्र भी विज्ञान की ही उत्पत्ति हैं । कोयला, भाप, बिजली, अणुशक्ति आदि वैज्ञानिक उत्पादन के लिए शक्ति उत्पन्न करते हैं । इस समस्त विज्ञान प्रक्रिया को 'यंत्र' उत्पादन कहते हैं ।

दूसरा क्षेत्र चेतना का है । चेतना की क्षमता ज्ञान परिधि में आती है । ज्ञान मंत्र है । मंत्र का उच्चारण वाणी से होता है । इसलिए उसे वाक्शक्ति भी कहा गया है । अध्ययन, अध्यापन, विचार-विमर्श यह मन्त्र पक्ष है । इसके द्वारा चेतना क्षेत्र को प्रभावित किया जाता है । वाक्शक्ति की महिमा असामान्य बताई गई है । साधारण बोलचाल के द्वारा ही नहीं, ऋषि प्रणीत मन्त्रों के अमुक विधि-विधान में प्रयोग करने का प्रतिफल भी असाधारण होते देखा गया है । मन्त्र भी एक महाविज्ञान है । उसकी एक पद्धति यौगिक दक्षिणपंथी है । दूसरी तांत्रिक वाममार्गी । तंत्र भी मन्त्र के समान ही विशिष्ट विज्ञान है । इनमें शाप-वरदान की दोनों स्तर की क्षमता है । प्राचीनकाल में वैज्ञानिक युद्ध भी लड़े जाते थे । उनमें मन्त्रों का प्रयोग होता था । सम्पदा उत्पादन में भी मन्त्रों का महान उपयोग है । असुर वाममार्गी तांत्रिक प्रयोग करते थे और देव सम्प्रदाय वाले भौतिक सुख-शान्ति की अभिवृद्धि के लिए तथा सूक्ष्म चेतना को बलवती बनाने के लिए यह प्रयोग करते थे । दोनों में ही वाक्शक्ति का प्रयोग होता था ।

विज्ञान में ताप, ध्वनि और प्रकाश को शक्ति की मूलभूत इकाई माना गया है । मन्त्र केवल ध्वनि है । शब्द की अपेक्षा ताप और प्रकाश की गति तीव्र है । मन्त्र को व्यापक बनाने के लिए उसके साथ ताप और प्रकाश को यज्ञ के रूप में जोड़ना पड़ता है, तभी वह अधिक शक्तिशाली और विश्वव्यापी बनता है ।

यज्ञ के सूक्ष्म आधारों की चर्चा न करके केवल भौतिक विज्ञान की दृष्टि से भी देखा जाय तो भी स्पष्ट होगा कि उसमें मन्त्र-ध्वनि और ताप की दोनों ही शक्ति धाराओं का उच्चस्तरीय उपयोग एवं समन्वय किया गया है । मन्त्रोच्चार में ध्वनि विज्ञान के रहस्यमय सिद्धान्तों का समावेश किया गया है, तो यज्ञ प्रक्रिया को ताप और प्रकाश शक्ति का विशिष्ट प्रयोग कहा जा सकता है । इन दोनों भौतिक शक्तियों का समन्वय करके अध्यात्म उद्देश्यों की पूर्ति के लिये लगा दिया जाय तो उसका सत्परिणाम वैसा ही होता है जैसा कि यज्ञ विज्ञान के जन्मदाता ऋषि-मनीषियों ने सुविस्तृत फलश्रुति के रूप में प्रस्तुत किया है ।

मन्त्र शक्ति अध्यात्म विज्ञान की अद्भुत उपलब्धि है । किन्तु सामान्यतः उसका लाभ साधक की अपनी सीमा तक ही सीमित रहता है । प्रसुप्त शक्तियों का जागरण, मनोनिग्रह, अन्तराल का उदात्तीकरण जैसे लाभ जपकर्ता को ही मिलते क्योंकि उस उपचार की हलचलें प्रयोक्ता के अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

शरीर मस्तिष्क तक ही प्रतिक्रिया उत्पन्न कर पाती हैं । यदि इस प्रयोग को व्यापक बनाना हो, अन्यान्यों को भी इसका लाभ देना हो तो उसके साथ विस्तृतीकरण का नया माध्यम संयुक्त करना होगा । मनुष्य के मुँह से हल्की-सी आवाज निकलती है । लाउडस्पीकर की बिजली साथ में जुड़ जाने से वह असंख्य गुनी बढ़ जाती है । जिसे मुश्किल से पचास सौ व्यक्ति सुन सकते थे उसे लाखों भली प्रकार सुन लेते हैं । यह आवाज के साथ विद्युत ऊर्जा के समावेश का चमत्कार है । इसी प्रकार रेडियो स्टेशनों पर लगे ट्रान्समीटर वक्ता की आवाज को क्षण भर में समस्त भूमण्डल में बखेर देते हैं । बेतार के तार की यह पद्धति कितनी अद्‌भुत है । उसके माध्यम से न केवल शब्द वरन् चित्र भी दूर-दूर तक भेजे जा सकते हैं । टेलीविजन पर यह चमत्कार भली प्रकार देखा जा सकता है ।

मन्त्रशक्ति का विस्तृतीकरण करने के लिए एम्पलीफायर-ट्रान्समीटर दोनों का काम यज्ञाग्नि के द्वारा सम्पन्न होता है । परिष्कृतवाणी से उत्पन्न की गई मन्त्र शक्ति को किसी विशेष व्यक्ति या व्यक्तियों के लिए भेजना हो तो मिसाइलों की तरह उसे लक्ष्य तक पहुँचाया जा सकता है । शब्द बेधी बाण इसी को कहते है । वह जिस तरकस से छोड़ा जाता है लक्ष्य बेधने के उपरान्त उसी स्थान पर वापस लौट आता है । ऐसी विशेषताओं वाले धनुष बाण तो कहीं नहीं देखे गये किन्तु शब्द विज्ञान की इस विशेषता के सम्बन्ध में वैज्ञानिक आश्वस्त हैं कि समर्थ विचार एवं शब्द ईथर के माध्यम से प्रकाश गति से दौड़ते हैं । लक्ष्य वेधन कर अन्ततः प्रेषक के पास ही वापस लौट आते हैं । मन्त्र शब्द को शब्दवेधी बाण की तरह प्रयोग करना हो तो यह कार्य उसके साथ यज्ञीय ऊर्जा का समावेश करने से ही सम्भव होता है । यज्ञायोजन में दिव्य अग्नि और मन्त्र शक्ति का समन्वय रहने से ऐसी विशिष्ट ऊर्जा उत्पन्न होती है जो समूचे वातावरण के प्रवाह को प्रभावित कर सके । फलतः उसका लाभ विपत्ति निवारण एवं समृद्धि सम्वर्धन के रूप में समस्त संसार को मिल सकता है ।

यज्ञ विज्ञान के संदर्भ में किये जा रहे शोध अनुसंधानों से जो तथ्य सामने आये हैं, उनने मंत्रोच्चार द्वारा उत्पन्न ध्वनियों को मानवी उपयोग के अनेक कार्यों में प्रयुक्त कर सकना संभव बना दिया है । कुछ सूक्ष्म ध्वनि प्रवाह सृष्टि की अन्यान्य हलचलों के कारण स्वयमेव उत्पन्न होते रहते हैं और उनके आधार पर प्रस्तुत परिस्थितियों एवं भावी संभावनाओं की बहुत कुछ जानकारी प्राप्त की जा सकती है । इस सम्बन्ध में अपनी शताब्दी का एक नया प्रयोग और जुड़ा है कि मंत्रशक्ति के साथ यज्ञ शक्ति का समन्वय करके अभीष्ट प्रयोजन के लिए अभीष्ट स्तर की श्रवणातीत ध्वनियाँ उत्पन्न की जा सकती हैं और उन स्वनिर्मित ब्रह्माण्डीय कम्पनों का आश्चर्यजनक लाभ उठाया जा सकता है । इस आधार पर न केवल वातावरण को शान्त एवं उत्तेजित करने, अनुकूल बनाने जैसे प्रयोजन सध सकते हैं, वरन् मानवी मस्तिष्क एवं अन्तराल को भी उपयुक्त दिशा में मोड़ा-मरोड़ा जाना संभव है । इन सूक्ष्म मन्त्र ध्वनियों में से कितनी ही इतनी अद्‌भुत और इतनी सक्षम हैं कि उनके स्वरूप की कल्पना मात्र से आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है । तापशक्ति के समावेश से तो वे और भी अधिक सशक्त एवं प्रभावोत्पादक बन जाती हैं ।

वैयक्तिक प्रयोजनों के लिए एवं सामूहिक प्रयोजनों के लिए दोनों ही प्रकार के कृत्यों में तदनुरूप यज्ञ किये जाते हैं । मन्त्र शक्ति का समन्वय भी उन्हीं के अनुरूप होता है । राजा दशरथ ने संतानोत्पत्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ किया था । यह व्यक्तिगत हुआ । लंकादमन और महाभारत के द्वारा असुरवध तो हो गया था, पर व्यापक वातावरण की शुद्धि शेष रह गई थी । उसके लिए भगवान राम ने दश अश्वमेध यज्ञ किये थे और कृष्ण के तत्वावधान में राजसूय यज्ञ हुआ था । रामराज्य के लिए जो वातावरण बनाया जाना था, उसकी भूमिका दश अश्वमेधों द्वारा सम्पन्न हुई थी । इसी प्रकार कौरवों के असुर दल का हनन होने के उपरान्त परीक्षित जनमेजय के नेतृत्व में भारतवर्ष को महान बनाने की जो योजना थी उसकी भूमिका बनाने के लिये विशाल काय राजसूय यज्ञ ही सम्पन्न कर सका ।

प्राचीनकाल में जहाँ वैयक्तिक, क्षेत्रीय उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पर्वों के अवसर पर मध्यवर्ती यज्ञ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होते रहते थे, वहाँ बड़े-बड़े कुम्भ जैसे अवसरों पर विशिष्ट अनुष्ठान और यज्ञ होते थे । यह सूक्ष्म जगत के संशोधन के निमित्त किये जाने वाले प्रयोग थे । इन्हें वातावरण संशोधन एवं प्रकृति अनुकूलन के व्यापक प्रयत्नों उपचारों के रूप में जाना जाता था ।

मन्त्र वाक्शक्ति है । उसकी छोटी सीमित शक्ति को व्यापक बनाने के लिए यज्ञ को संयुक्त करना आवश्यक है । ऐसे अनेकों आधार हैं जिनके सहारे यज्ञीय क्रिया-कृत्य में उच्चारण किये गये मन्त्रोच्चार से न केवल उपयोगी ध्वनि तरंगें उत्पन्न होतीं वरन् उस आयोजन में सम्मिलित होने वाले लोगों के लिए लाभदायक सत्परिणाम प्रस्तुत करती हैं । उसमें से बड़ी उपलब्धि श्रवणातीत सूक्ष्म ध्वनि तरंगों की है जो शब्द और ताप दोनों के समन्वय से उत्पन्न होती है और उनसे सुविस्तृत क्षेत्र का वातावरण प्रभावित होता है । फलतः प्राणवान पर्जन्यवर्षा से लेकर अन्यान्य कई प्रकार के ऐसे आधार खड़े होते हैं जो सर्वतोमुखी सुख-शान्ति में सहायता कर सकें सूक्ष्म वातावरण के परिशोधन और उसके फलस्वरूप सुख-शान्ति की परिस्थितियाँ उत्पन्न करने वाले वातावरण का सृजन भी मन्त्र विद्या और यज्ञ विज्ञान की समन्वित प्रक्रिया का अति महत्वपूर्ण प्रतिफल है । व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों ही उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अभीष्ट शक्ति का उत्पादन जप-अनुष्ठानों के साथ यज्ञ का समावेश करने पर ही होता है । इन्हीं कारणों को ध्यान में रखते हुए भारतीय धर्म में यज्ञ को उच्चकोटि का श्रेय-सम्मान दिया गया है ।

यज्ञ मात्र वनौषधियों को समिधाओं के सहारे अग्नि प्रज्वलित कर जला देने की क्रिया मात्र नहीं है । वरन् इसके साथ मन्त्रोच्चार की अनिवार्य विधा भी जुड़ी हुई है । वरन् इसके साथ तो लोग किसी अंगीठी में रखकर जड़ी-बूटियों को जला भर दिया करते और उसके धुएँ से वे लाभ उठा लेते जो यज्ञ अग्निहोत्र के साथ अति महत्त्वपूर्ण स्तर के बनकर जुड़े हुए हैं ।

यज्ञ कृत्य में वेद मंत्रों का समवेत स्वरों में उच्चारण होता है । वेद मन्त्रों में मात्र शिक्षा ही नहीं है, उनमें स्वर संगीत का भी समावेश है । सामवेद की शाखा-प्रशाखाएँ इसी निमित्त रची गई थीं कि उन्हीं मंत्रों को विभिन्न प्रयोजनों के लिए विभिन्न ध्वनियों में गाया और उनसे तदनुरूप परिणाम उपलब्ध किया जाय । यज्ञों में उद्गाता का महत्वपूर्ण पद इसलिए नियत था कि मन्त्रों को आवश्यकतानुरूप ध्वनियों में विधिपूर्वक गाया जा सके ।

यज्ञाग्नि एक प्रकार से विद्युत उत्पादक केन्द्र का काम करती है । उसके साथ निर्धारित ध्वनि का समावेश हो जाने पर उत्पादित शब्द शक्ति की क्षमता एवं उपयोगिता अनेक गुनी हो जाती है । रेडियो प्रसारणों में भी यही विधा काम में लायी जाती है । सामान्य रीति से उच्चारित स्वर विद्युत तरंगों के साथ जुड़कर इस योग्य बन जाते हैं कि एक बहुत व्यापक क्षेत्र तक जा सकें । अग्निहोत्र प्रक्रिया में उच्चारित वेदमन्त्रों का प्रवाह भी इसी स्तर का शक्तिशाली बन जाता है । यह मनुष्य ही नहीं, आस-पास के वातावरण को भी प्रभावित करता है । मनुष्य के स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण तीनों शरीरों का उपयोगी परिष्कार होता है । इसके अतिमहत्वपूर्ण सत्परिणाम देखने में आते हैं ।

यज्ञाग्नि एवं शब्द शक्ति का सूक्ष्मीकरण

गायत्री को देव संस्कृति की माता और यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता कहा गया है । दोनों का युग्म है । गायत्री, अनुष्ठान की पूर्ति, यज्ञ का शतांश पूरा करने पर हुई मानी जाती है । पूज्य गुरुदेव के चौबीस लक्ष पुरश्चरणों की पूर्णाहुति सन् १९५८ में सहस्रकुण्डी गायत्री यज्ञ के साथ ही सम्पन्न हुई थी । गायत्री साधना को उन्होंने अपनी तपश्चर्या का केन्द्र बनाया एवं चिर पुरातन काल में ब्रह्मर्षि विश्वामित्र द्वारा सम्पन्न पुरुषार्थ को आज के युग में साकार कर दिखाया, इसे जन सुलभ बनाने का प्रयास किया । शतपथ ब्राह्मण के अनुसार "**स यत्कृत्सनां गायत्री मन्वाह, तत् कृत्स्नं प्राणं दधाति**" अर्थात् 'जो व्यष्टिगत एवं समष्टिगत जगत की व्यवस्था बिठाती एवं सामंजस्य स्थापित करती है, वही गायत्री है ।' गायत्री मन्त्र का मनन करने वाले सिद्ध साधक इसी ऊँचे उद्देश्य के साथ भू:लोक से भुव: एवं स्व: लोक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

में ऊर्ध्वगमन करते एवं अपने सूक्ष्म किन्तु विराट् रूप द्वारा समष्टि का कल्याण करते हैं ।

गायत्री जहाँ त्रिपाद है वहाँ यज्ञ अपने भावार्थ के कारण त्रिष्टुप भी है । त्रिष्टुप का अर्थ है-"तीनों की स्तुति ।" योगत्रयी का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण यज्ञ है जिसमें मानवी व्यक्तित्व के उदात्तीकरण हेतु उसे कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीवित रहने की कामना की जाती है "**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छतम् समाः** (ईशोपनिषद्) कर्मयोग की इसी धारणा का परिपक्व करने हेतु मनीषी गणों ने अग्नि देवता की गतिशीलता, सक्रियता, ऊर्ध्वगमन की सहज वृत्ति को ही प्रधान माना एवं उसे श्रेष्ठतम कर्म की प्रेरणा देने वाले यजुर्वेद के साथ जोड़ दिया है ।

गायत्री साधना एवं यज्ञ के माध्यम से उसकी पूर्णता के मूल में दोनों के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों को अच्छी तरह समझना होगा । यज्ञ की समूची प्रक्रिया ही सूक्ष्मीकरण की प्रक्रिया है । गायत्री की पूर्णता भी सूक्ष्मीकरण के साथ ही सम्पन्न होती है । गायत्री स्थूल वहाँ तक है, जहाँ तक कि उसके साथ यज्ञोपवीत और शिखा धारण वाले द्विजत्व संस्कार का सम्बन्ध है । यह स्थूल पक्ष है जिसे धूमधाम के साथ मनाया जाता है पर गायत्री की दिव्यता इतने से सम्पन्न नहीं हो जाती । उसके माध्यम से देवत्व प्राप्त किया जाता है । देवत्व कैसे मिले ? इसके लिए मनु ने कहा है-"**महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मी यं क्रियते तुनः ।**" अर्थात्-महायज्ञों एवं यज्ञों के द्वारा ब्राह्मण बनाया जाता है । ब्राह्मण जन्म से ही पैदा नहीं होता । इसका अर्थ यह हुआ कि जो-जो कार्य गायत्री को करना चाहिए, वह उसके उत्तरार्ध यज्ञ के द्वारा सम्पन्न होता है । इस प्रकार गायत्री और यज्ञ देवत्व एवं द्विजत्व प्रदान कर एक दूसरे के पूरक अन्योन्याश्रित हो जाते हैं । महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं अव्रती की आहुति को देव ग्रहण नहीं करते एवं **अमानुष इव या एतद् भवति यदव्रतमुपैति** *शतपथ १/२/३/२३* के अनुसार "जो व्रत धारण करता है वह देव तुल्य बन जाता है ।" व्रत से तात्पर्य है गुण, कर्म एवं स्वभाव में श्रेष्ठता का सम्वर्धन एवं विचारों से अवांछनीयताओं का निष्कासन ।

गायत्री व यज्ञ दोनों सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद के समन्वित रूप के कारण परस्पर अविच्छिन्न रूप से जुड़े हैं । सामवेद में याज्ञिक कर्मकाण्ड की नहीं, सूक्ष्मता की महत्ता है । यहाँ स्थूल हवि के स्थान पर भावनात्मक धरातल पर सूक्ष्म शब्द ऊर्जा से अभिपूरित मानसिक हवि का प्रयोग होता है । तैत्तिरीय ब्राह्मण में शास्त्रकारों ने इस सूक्ष्मीकरण की बड़ी महत्वपूर्ण फलश्रुतियाँ बतायीं एवं गायत्री यज्ञ की महत्ता का प्रतिपादन इसी वैज्ञानिक रूप में किया है ।

यहाँ चर्चा यज्ञ की विधा के सूक्ष्मीकरण पर प्रकाश डालने की की जा रही है । यज्ञ अपने आप में एक सूक्ष्म विज्ञान है । अध्यात्म सूक्ष्म को, चेतना को कहते हैं । इसलिए उसका विज्ञान भी चेतनात्मक ही होना चाहिए । जड़ पदार्थ विज्ञान से तो सभी परिचित हैं । भौतिक विज्ञान को आजकल पाँचवीं कक्षा में पढ़ाया जाता है । उसे आवश्यक विषय माना गया है । यदि किसी को अध्यात्म विज्ञान को जानना हो तो उसकी शुरुआत यज्ञ से करनी होगी । यज्ञ में भौतिक विज्ञान के साथ-साथ जड़ का सूक्ष्मीकरण भी सम्मिलित है । इसलिये अध्यात्म विज्ञान को यज्ञ विज्ञान कहा जाय तो यह उचित ही होगा ।

यज्ञ प्रक्रिया के सूक्ष्म रूप की इसी अभिव्यक्ति को यजुर्वेद की इस ऋचा में देखा जा सकता है- "**यजमानः स्वर्ग लोकं याति**" अर्थात् यज्ञ से यजमान (श्रेष्ठ आत्मा) स्वर्ग लोक को (अमरत्व को) प्राप्त होता है । वस्तुतः जीव के शुभाशुभ कर्म एवं गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार ही आत्मा को फलोपभोग प्रदान करते हैं । अग्नि में यजन किया गया या नहीं, यह स्थूल कर्मकाण्ड हुआ या नहीं, इस पर नहीं, अपितु यजनकर्त्ताओं का व्यक्तित्व एवं यज्ञ का प्रयोजन, प्रयुक्त साधनों का संस्कारी करण एवं सामूहिकता द्वारा बहुलीकरण की भावना जब तक न हो, यज्ञ को सम्पन्न हुआ नहीं माना जाना चाहिए ।

यही बात मन्त्रों के सम्बन्धों में है । मन्त्र वही होते हैं जो प्रेस में कर्मचारियों द्वारा किताबों में छापे जाते हैं । उन छपे अक्षरों को कोई भी साक्षर संस्कृत वाला व्यक्ति पढ़ता चला जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किन्तु यदि सिद्ध मन्त्र बोलना है तो सिद्ध व्यक्तित्व सम्पन्न उद्गाता होना चाहिए । तब ही वह प्रभाव उत्पन्न हो सकेगा, जिसके बारे में शास्त्रों में शाप-वरदान इत्यादि सन्दर्भों के रूप में वर्णन मिलता है । न केवल उद्गाता वरन् ब्रह्मा, अध्वर्यु, आचार्य, उद्गाता की पूरी टीम सामर्थ्य सम्पन्न होनी चाहिए ताकि सूक्ष्मीकृत प्रभावोत्पादकता उत्पन्न हो । शब्द-शक्ति के परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी के चार रूप प्रख्यात हैं किन्तु प्रवक्ता के लिये जो दो शर्तें जरूरी है, जिनसे सचमुच वाक् सिद्धि हुई मानी जाती है वे हैं-काय कलेवर की तप संयम से परिष्कृत एवं व्यक्तित्व में निखारने योग्य शब्द ऊर्जा की उपलब्धि । शब्द-शक्ति वस्तुतः एक सूक्ष्मीकृत ईंधन है । अगले दिनों जिस प्रकार ऊर्जा संकट मानवता के लिये समस्या बनने जा रहा है, लगभग उसी प्रकार शब्द-शक्ति रूपी ईंधन का अभाव भी एक त्रासदी भरा संकट बनेगा । नवयुग सृजन प्रयोजनों में अगले दिनों अनेकों बहुमुखी उत्पादनों की आवश्यकता पड़ेगी ।

गायत्री व यज्ञ दोनों के ही सूक्ष्मीकृत रूपों की महत्ता उपादेयता शास्त्रों में वर्णित है । गायत्री मन्त्र से ही यज्ञ कर्म किये जाने को प्रधानता देते हुए इन ऋचाओं का स्वर कहता है-**''वागेव रिक् प्राणः समः'' (छान्दोग्य-१-५) एवं आगे कहा है-'ऋचं वाचं प्रपद्ये, मनोयजुः प्रपद्ये, साम प्राणं प्रपद्ये ।'** चौथा अथर्ववेद है जिसके मन्त्रों की प्रेरणा साधक को स्थित प्रज्ञ बनाकर आत्मशक्ति के उद्भव में सहायक भूमिका निभाती है । आत्म वचनों में सूक्ष्मीकरण का दर्शन निहित है, समग्र जीवन दर्शन को आत्मोत्कर्ष के स्वरूप एवं प्रक्रिया को इनमें पिरो दिया गया है ।

गायत्री साधना एवं यज्ञ विधान दोनों में ही स्थूल की नहीं सूक्ष्म की महत्ता है । वही उस प्रभाव के लिये उत्तरदायी मानी जा सकती है जो साधक को अदृश्य के अधिकाधिक निकट लाने, देवत्व एवं द्विजत्व प्रदान करने तथा उसे ऋषि महामानव स्तर के पद तक ऊँचा उठाने की महती भूमिका निभाती है ।

वेदों में यज्ञ चिकित्सा

अथर्ववेद १/२/३१, ३२, ४, ३७, ५/२३, २९ में अनेक प्रकार के रोगोत्पादन कृमियों का वर्णन आता है । वहाँ इन्हें यातुधान, क्रव्यात, पिशाच, रक्षः आदि नामों से स्मरण किया गया है । ये श्वाँसवायु भोजन, जल आदि द्वारा मनुष्य के शरीर में प्रविष्ट होकर या मनुष्य को काटकर उसके शरीर में रोग उत्पन्न करके उसे यातना पहुँचाते हैं, अतः ये 'यातुधान' हैं । शरीर के माँस को खा जाने के कारण ये 'क्रव्यात् या पिशाच' कहलाते हैं । इनसे मनुष्य को अपनी रक्षा करना आवश्यक होता है, इसलिये ये 'रक्षः' या राक्षस है । यज्ञ द्वारा अग्नि में कृमि-विनाशक ओषधियों की आहुति देकर इन रोग-कृमियों को विनष्ट कर रोगों से बचाया जा सकता है । अथर्व १/८ में कहा गया है-

इदं हविर्यातुधानान् नदी येनमिवावहत् ।
य इदं स्त्री पुमानकः इह स स्तुवतां जनः ।। १ ।।
यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुहा सतामत्रिणां जातवेदः ।
ताँस्त्वं ब्राह्मणा वावधानो जह्येषां शततहमग्ने ।। ४ ।।

'अग्नि में डाली हुई यह हवि रोग-कृमियों को उसी प्रकार दूर बहा ले जाती है, जिस प्रकार नदी पानी के झागों को । जो कोई स्त्री या पुरुष इस यज्ञ को करे उसे चाहिए कि वह हवि डालने के साथ मन्त्रोच्चारण द्वारा अग्नि का स्तवन भी करे । हे प्रकाश अग्ने ! गुप्त से गुप्त स्थानों में छिपे बैठे हुए भक्षक रोग-कृमियों के जन्मों को तू जानता है । वेदमन्त्रों के साथ बढ़ता हुआ तू उन रोग-कृमियों को सैकड़ों बन्धों का पात्र बना ।''

इस वर्णन से स्पष्ट है कि मकान के अन्धकारपूर्ण कोनों में, सन्दूक सीपे आदि सामान के पीछे, दीवार की दरारों में एवं गुप्त से गुप्त स्थानों में जो रोगकृमि छिपे बैठे रहते हैं, वे कृमिहर ओषधियों के यज्ञीय धूम्र से विनष्ट हो जाते हैं ।

अथर्व-५/२९ में इस विषय पर और भी अच्छा प्रकाश पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अक्ष्यौ निविध्य हृदयं निविध्य
जिह्वां नितृन्द्धि प्रदशातो मृणीही ।
पिशाचो अस्य यतमो जघास-
अग्ने यविष्ठ प्रति तँ शृणीही ।। ४ ।।

"हे यज्ञाग्ने ! जिस माँस भक्षक रोग कृमि ने इस मनुष्य को अपना ग्रास बनाया है, उसे तू विनष्ट कर दे । उसकी आँखें फोड़ दे, हृदय चीर दे, जीभ काट दे ।"

आमे सुपक्वे शबले विपक्क्वे,
यो मा पिशाचे अशने ददम्भ ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा,
वियातयन्तामगदो ऽ यमस्तु ।।
क्षीरे मा मन्थे यतमो ददम्भ-
अकृष्टपच्चे अशने धान्ये यः
अपां मा पाने यतमो ददम्भः
कृव्याद् यातुनां शयने शयानम् ।।
दिवा मा नक्तं यतमो ददम्भ
क्रव्याद् यातुनां शयने शयानम् ।
तदात्मना प्रजया पिशाचा,
वियातयन्तामगदोऽयमस्तु ।।

"कच्चे, पक्के, अधपके या तले हुए भोजन में प्रविष्ट होकर जिन माँस भक्षक रोग-कृमियों ने इस मनुष्य को हानि पहुँचाई है, वे सब रोग-कृमि, हे यज्ञाग्ने ! तेरे द्वारा सन्तति सहित विनष्ट हो जायें, जिससे कि यह निरोग हो । दूध में, मठे में, बिना खेती के पैदा हुए जङ्गली धान्य में, कृषिजन्य धान्य में पानी में, बिस्तर पर सोते हुए, दिन में या रात में जिन रोग-कृमियों ने इसे हानि पहुँचाई है, वे सब, हे यज्ञाग्ने ! तेरे द्वारा सन्तति सहित विनष्ट हो जायें, जिससे कि यह हमारा साथी निरोग हो ।"

इस तरह यज्ञ में आरोग्य वर्धक कृमिनाशक एवं रोग निवारक अद्भुत गुण हैं । जहाँ यज्ञ होते हैं वहाँ सामूहिक रोगों की निश्चित रूप से कमी होती है । जल वायु का परिमार्जन एवं संशोधन होने से उनके रोग कारण दोष हट जाते हैं और आरोग्य वर्धक गुण बढ़ते हैं । फल स्वरूप अनेक रोगों से जनता अपने आप मुक्त हो जाती है । यज्ञ करना एक बड़ा अस्पताल खोलने के समान है, जिससे अगणित रोग ग्रस्तों तथा भविष्य में बीमार पड़ने वाले लोगों का इलाज उनके घर बैठे ही हो जाता है । चिकित्सा पर जो धन, समय, श्रम, चिन्ता, काम में हानि आदि की कठिनाई होती है उससे अनेक रोग बच जाते हैं । इस प्रकार यज्ञ करना अस्पताल खोलने से भी अधिक उपयोगी सिद्ध होता है ।

यज्ञ के आरोग्य वर्धक और रोग निवारक गुणों का वर्णन करने वाले अनेकों मन्त्र वेदों में भरे पड़े हैं उनमें से कुछ यहाँ दिये जाते हैं-

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वरतु वयं त्वेन्धाना रतन्वं पुषेम ।

-अथर्व ५/३/१

हे अग्नि, हम आपको यज्ञ में प्रदीप्त करते हैं, आप हमारे शरीर को पुष्ट और तेज को प्रदीप्त करो ।

यज्ञ द्वारा रोग निवारण शास्त्रकारों की कोरी कल्पना या उड़ान मात्र नहीं है । प्राचीनकाल में रोग फैलने के समय में बड़े-बड़े यज्ञ किये जाते थे और जनता उनसे आरोग्य लाभ करती थी । उन्हें भैषज्य-यज्ञ कहते थे । गोपथ ब्राह्मण में लिखा है-

भैषज्ययज्ञाः वा एते यच्चातुमास्यानि । तस्माद् ऋतुसन्धिषु प्रयुज्यते । ऋतुसन्धिषु वै व्याधिजायते

-गो० ब्रा० उ० १/१९

"जो चातुर्मास्य यज्ञ हैं वे भैषज्य यज्ञ कहलाते हैं, क्योंकि वे रोगों को दूर करने के लिए होते हैं । ये ऋतु-सन्धियों में किये जाते हैं, क्योंकि ऋतु-सन्धियों में ही रोग फैलते हैं ।"

भैषज के सम्बन्ध में अनेकों सूत्र संकल्प शास्त्रों में उपलब्ध होते हैं ।

अग्निष्कृणोतु भैषजम् ।

-अथर्व ६/१०६/१

यज्ञाग्नि ओषधि का काम भी करती है ।

तनूपा अग्नेऽसितन्वं मे पाहि ।
आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि ।
वर्च्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ।
अग्ने यन्मे तन्वा अनं तन्म आपृण ।।

-यजु० ३/१७

अर्थात्-हे अग्नि ! तुम शरीर के रक्षक हो, मेरे शरीर की रक्षा करो । तुम दीर्घायु प्रदान करने वाले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो, मुझे दीर्घायु बनाओ । तुम तेजस्वी हो, हमें तेजस्विता प्रदान करो । मेरे शरीर की कमी और विपन्नता को दूर कर उसे पूर्ण बनाओ ।

यदि क्षितायुर्यदि वापरेतो यदि,
मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
तमा हरामि निऋंतेरुपस्था-
दस्यार्ष मेन शतशारदाय ।।

-अथर्व ३/११/२

अर्थात्-अग्निहोत्र के माध्यम से , आयु क्षीण हुए, जीवनी शक्ति नष्ट हुए तथा मृत्यु के समीप पहुँचे हुए व्यक्ति रोग के चंगुल से छूटते हैं । रोगी मृत्यु के मुख से पुनः आते हैं और १०० वर्ष जीवित रहने की शक्ति प्राप्त करते हैं ।

प्राचीनकाल में आरोग्य वृद्धि और रोग निवारण के लिये यज्ञ होते थे । उनको भैषज यज्ञ कहते थे । उनका ब्रह्मा कोई आरोग्य शास्त्र का मर्मज्ञ विद्वान होता था जो सूक्ष्म वैज्ञानिक परीक्षा द्वारा यह जान लेता था कि इस समर्थ वायुमण्डल में क्या विकार बढ़ जाने से कौन रोग फैला हुआ है और उसके निवारण के लिये किन ओषधियों का हवन करना चाहिए । व्यक्तिगत रोगों के लिए भी ऐसे हवनों का आयोजन किया जाता था । रोगी के शरीर में कौन सी व्याधि बढ़ी हुई है, कौन से तत्व घटबढ़ गये हैं उनकी पूर्ति करके एवं शरीर गत धातुओं का संतुलन ठीक करने के लिए किन ओषधियों की आवश्यकता है वह ऐसा निर्णय करता था और वन ओषधियों की सामग्री बनाकर, उसी प्रकृति के वेद मन्त्रों से आहुतियाँ दिलाकर, हवन कराया जाता था । वैसा ही पुरोडास एवं यज्ञावशिष्ट रोगी के लिए तैयार किया जाता था । रोगी यज्ञ धूम्र के वातावरण में रहता था और उसी वायु से सुवासित जल वायु एवं आहार ग्रहण करता था । तदनुसार वह कष्ट रोगों से छुटकारा पाता था । ऐसे भैषज यज्ञों के अनेक वर्णन ग्रन्थों में आते हैं ।

सन्तान न होने पर पुत्रेष्टि यज्ञ किए जाते थे । जो जन्म ले चुके उनकी स्वस्थता एवं प्रतिभा निखारने में भी यज्ञ का उपयोग है -

".....यएष एतत्करोति याश्य त्वेवास्य प्रजा जाता याश्चाजातास्ताउभयी रुद्रियात्प्रमुञ्चति अस्यानमीवाः अकिल्विषाः प्रजाः प्रजायन्ते तस्मा द्वाऽएष एतैर्यजते ।।

-शतपथ० २/६/२/२

अर्थात्-यह यज्ञ, उस सन्तान को जो उत्पन्न हो चुकी है और उस सन्तान को भी जो उत्पन्न नहीं हुई है-रोगमुक्त रखे रहता है ।

'भैषज यज्ञ' ऋतुओं के सन्धिकाल में होतें थे क्योंकि इसी समय व्यापक स्तर पर व्याधियों का प्रकोप होता था । शतपथ-ब्राह्मण में इनका उल्लेख 'भैषज यज्ञा वा एते' कहकर किया गया है ।

लगभग ऐसा ही प्रतिपादन छान्दोग्योपनिषद का भी है । वहाँ भैषज-यज्ञ के विषय में लिखा हुआ है **'भैषजकृतोह वा एष यज्ञो यत्रैवधिद् ब्रह्मा भवति ।'**

-छान्दो० ४/१७/१८

अर्थात्-आरोग्य शास्त्र का ज्ञाता, जिसमें ब्रह्मा होता है, उस यज्ञ को-भैषज यज्ञ कहा जाता है ।

वनस्पति ही मनुष्य का खाद्य है । उसी से शरीर बनता और बढ़ता है । यह वनस्पति अंश शरीर में न्यूनाधिक पड़ने में कई प्रकार के रोग उठते हैं । उनकी पूर्ति विशेष गुण वाली वनस्पतियाँ (जड़ी बूटियाँ) करती है और खोये आरोग्य को फिर से प्रदान करने का अवसर प्रदान करती है । यज्ञाग्नि में वनस्पतियों को होमने से वही लाभ मिलता है जो उनसे बनी हुई ओषधियाँ प्रदान करती हैं । यज्ञ प्रयोजन में प्रयुक्त होने वाली ओषधियों की अभ्यर्थना करते हुए कहा गया है ।

'शयिता नो वनस्पतिः' ।

-यजु० २१/२१

अर्थात्-वनस्पतियाँ हमें शान्ति-प्रदान करने वाली हैं ।' वे औषधियाँ से रोगों को दूर करके शक्ति प्रदान करने वाली होती है -

सहस्व मे अरातीः सहस्व पृतनायतः ।
सहस्व सर्वं पाप्नात थ्स सहमानास्योषधेः ।।

-यजु० १२/९९

अर्थात्-हे ओषधि (वनस्पति) तू रोगों को दूर करने वाली है, अतः मेरी शक्ति हरने वाले रोगों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूर कर । युद्ध की तरह शरीर में हलचल मचाने वाले सब रोगों को पराजित कर । दूर कर ।

भैषज यज्ञ में होमी गई वनस्पतियों में वैयक्तिक और सामूहिक आरोग्य रक्षा के उपरोक्त सूत्र संकेतों के अतिरिक्त और भी बड़ी बात यह है कि उस प्रयोग से मनोविकार दूर होते हैं । कषाय-कल्मष कटते हैं और व्यक्तियों में सत्प्रवृत्तियों को भर देने वाले उभार उमंगते हैं । ऐसी सर्वतोमुखी प्रखरता उपलब्ध होने का आश्वासन श्रुति देती है । प्रार्थना शैली वेदों की अपनी प्रतिपादन प्रक्रिया है । उसे मात्र मनुहार न माना जाय वरन् समझा जाय कि अमुक अवलम्बन अपनाने में अमुक लाभ प्राप्त करने का आश्वासन है । यज्ञ से समग्र व्यक्तित्व विकसित होने का एक आश्वासन इस प्रकार है-

'प्राणाश्च मेऽपानश्च मेऽव्यानश्च मेऽसुश्च मे
चित्तं च मे आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पताम् ।।

-यजु० १८/२

मेरा प्राण मेरा अपान, मेरा व्यान, मेरे अन्य प्राण, मेरा चित्त, मेरे विचार, मेरी वाणी, मेरा मन, मेरा नेत्र, मेरा कान, मेरी दक्षता और मेरा बल यज्ञ से सम्पन्न हों-यज्ञीय ऊर्जा से युक्त होकर अधिक प्रखर व प्रभावी हों ।

देव सविता प्रसुव यज्ञं प्रसुवयज्ञपतिं भगाय ।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतनः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं न ।।

-यजु० ३०-१

अर्थात्-मन, वाणी, बुद्धि की उन्नति तब होगी जब यज्ञ एवं यज्ञपति की उपासना की जाय ।

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ७ श्रोतं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पताम् ।।

अर्थात्-यज्ञ से आयु, यज्ञ से प्राण, यज्ञ से दर्शन शक्ति, यज्ञ से श्रवण-शक्ति, यज्ञ से वाक् शक्ति, यज्ञ से मन, तथा यज्ञ से आत्मा, बलवान् समर्थ व प्रखर बने ।

विपत्तियाँ मात्र शारीरिक रुग्णता के रूप में ही नहीं आती वरन् उनकी आधि भौतिक, आधि दैविक एवं आध्यात्मिक कारण एवं स्वरूप भी हैं । 'प्रारब्धजन्य, दुष्कृतों के फलस्वरूप न केवल रोग वरन् अन्य प्रकार के संकट भी उत्पन्न होते हैं । उनके निराकरण में यज्ञ विधि जितनी फलप्रद सिद्ध होती है उतनी और कोई नहीं । इस सन्दर्भ में कितने ही शासन वचन उपलब्ध होते हैं । जिनमें यज्ञानुष्ठान जैसे अन्य धर्मकृत्यों को अपनाने से रुग्णता तथा दूसरी व्याधाओं के निराकरण की बात कही गई है -

मन्त्रोषधि मणि मंगल, वत्युपहार होम,
प्रायश्चित्तोपवास, स्वस्त्यन, प्रणिपातगमनादि ।
युक्तिव्यपाश्रयं-पुनराहारौषधि द्रव्याणां योजना ।
सत्वानजयः पुनरहितेभ्योऽर्थे भ्योमनोनिग्रहः ।

अर्थात्-मन्त्र, यन्त्र, होम, यज्ञ, नियम प्रायश्चित्त, उपवास प्रणिपात (साष्टांग प्रणाम) तथा तीर्थाटन आदि के द्वारा इसमें कायिक, मानसिक महामारी रोगोपचार होता है ।

प्रशाभ्यत्यौषधैः पूर्वो दैवयुक्तिव्यपाश्रयैः ।
मानसोज्ञान विज्ञानधैर्यस्मृति समाधिभिः ।।

-चरक सूत्र १/१५/५६

अर्थात्-पूर्व जन्मार्जित भोग अथवा देव एवं ग्रह, जनित रोगोपचार के लिए जो यन्त्र, मन्त्र, हवन, दान पूजन एवं व्रतोपवास किया जाता है, आशु फलदायक होने के कारण इसे प्रथम कहा गया है ।

रसायन तपो जाप योग सिद्धैर्महात्मभिः ।
कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसै नरैः ।।

-चरक सूत्र १/६१

अर्थात्- रसायन महौषध, मृत्युञ्जय आदि जप-तप ब्रह्मचर्यादि एवं योग की सिद्धियों से काल-मृत्यु भी टल जाता है ।

इस प्रकार भैषज यज्ञ से आरोग्य लाभ होने की तरह ही अन्य समस्याओं के समाधान एवं उत्थान अभ्युदय के अनेक प्रयोजनों में यज्ञ का आश्रय लेने से भारी सहायता मिलती है ।

सहस्त्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ।
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्थ दुरितस्य पारम् ।

-अथर्व ३/११/३

हजारों शक्तियों से युक्त, सौ वर्ष की आयु देने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले इस हवन द्वारा रोगी को मौत के पंजे से बचाता हूँ । प्रभु इसे समस्त पापों तथा रोगों से मुक्त करें ।

जिस क्षय चिकित्सा में आधुनिक विज्ञान इतनी विवशता प्रकट करता है उसी की चिकित्सा का वेद भगवान आशापूर्ण शब्दों में आदेश देते हैं-

मुंचामि त्वा हविसा जीवनाय कमज्ञात,
मक्ष्यायुत राजक्ष्मात् ।
ग्राहिर्जग्राह यद्यैतदेव तस्या इन्द्राणि,
प्रभुमुक्तयेनम् ।। १ ।।

-अथर्व का० ३ सू १० मन्त्र

अर्थ-हे व्याधिग्रस्त । तुमको सुख के साथ चिरकाल तक जीने के लिए गुप्त यक्ष्मा रोग और सम्पूर्ण प्रकट राजयक्ष्मा रोग से आहुति द्वारा छुड़ाता है । जो इस समय में इस प्राणी का पीड़ा ने या पुराने रोग ने ग्रहण किया है, उससे वायु तथा अग्नि देवता इसको अवश्य छुड़ावें । इससे अगला मन्त्र इस प्रकार है-

विसवैते जामान्य जानं यतो जामान्य जायसे ।
कंथह तत्र त्वं हनो यस्य कृणयो हविगृहे ।।

अर्थ-"हे क्षय रोग ! तेरे उत्पन्न होने के विषय में हम निश्चय से जानते हैं कि तू जहाँ से उत्पन्न होता है वहाँ किस प्रकार हानि कर सकता है ? जिसके घर में हम विद्वान नाना ओषधियों से या रोग-नाशक हवि, चरु या अन्न द्वारा क्षय रोग को निकाल देते हैं, वहाँ से सब प्रकार से क्षय रोग दूर हो जाता है ।"

प्रयुक्तया यथा चेष्टया राजयक्ष्मा पुराजितां ।
तां वेद विहिता मिष्टमारोग्यार्थी प्रायोजयेत् ।।

"जिस यज्ञ के प्रयोग से प्राचीन काल में राजयक्ष्मा रोग नष्ट किया जाता था, आरोग्य चाहने वाले मनुष्य को उसी वेद-निहित यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए ।"

प्राकृतिक नियमों के साथ नित्य-प्रति नियम-पूर्वक हवन करने वाला कदापि रोगी नहीं हो सकता, यह वेदवर्णित सुनिश्चित मत है और क्षय रोग तो उसके घर के निकट आने से घबरायेगा क्योंकि श्रुति का आदेश है-

न यं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथं को अश्नुते ।
यं भेषजस्य गुग्गुलो, सुरभिर्गन्धो अश्नुते ।।
विष्यं चस्तस्मात् यक्ष्मा मृगाद्रश्ला द्रवेरते ।। आदि

-अथर्व० का० १९ सू० ३८ मन्त्र १२

अर्थ-"जिसके शरीर को रोगनाशक गूगल का उत्तम गन्ध व्यापता है, उसको राज-यक्ष्मा की रोग पीड़ा नहीं होती । दूसरे का शाप भी नहीं लगता । उससे सब प्रकार के यक्ष्मा रोग शीघ्रगामी हरिणों के समान काँपते हैं, डर कर भागते हैं ।"

यज्ञ प्रक्रिया में किस रोग में, किस विधान से किस मन्त्र एवं औषधि का उपयोग किया जाय, इसकी रहस्यमयी विद्या का सुविस्तृत उल्लेख वेदों में मिलता है । विभिन्न रोगों का शमन यज्ञोपचार में सन्निहित है,

ज्वर चिकित्सा

यज्ञाग्नि द्वारा ज्वर तथा ज्वर के सहकारी कास, शिर "पीड़ा, अङ्गों का टूटना आदि भी दूर हो सकते हैं यह अथर्व १/१२ तथा ५/२२ सूत्रों से ज्ञात होता है ।

अङ्गे अङ्गे शोचिषा शिश्रियाणम्,
नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम ।
अङ्कान्त्समङ्कान् हविषा विधेम ,
यो अग्रभीत् पर्वास्या ग्रभीता ।।

-अथर्व १/१२/२

"हे ज्वर ! अंग-अंग में ताप के साथ व्याप्त हुए तेरा हम हवि के द्वारा प्रतिकार करते हैं । अंगों को जकड़ने वाले जिस ज्वर ने इस रोगी के अंगों को जकड़ लिया है उसके लिए हवि के द्वारा हम प्राशों को तैयार करते हैं ।

मुंच शीर्षक्त्या उत कास एवं,
परुष्यरुराविवेशा यो अस्य ।
यो अग्रजा वातजा यश्च शुष्मो,
वनस्पतीन्त्सचतां पर्वतांश्च ।।

-अथर्व० १/१२/३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

"हे सूर्य ! हवि के साथ मिलकर तू इस रोगी को पीड़ा से मुक्त कर, जो इसे खाँसी ने सताया हुआ है उससे इसे छुड़ा । जो श्लेष्मजन्य, वातजन्य या पित्तजन्य ज्वर इसके अंग-अंग में व्याप्त हो गया है वह शरीर से निकलकर वृक्षों और पर्वतों से टक्कर खाता फिरे ।"

अग्निस्तक्मानमपवाघतामितः
सोमो ग्रावा वरुणः पूतदक्षा : ।
वेदिर्वर्हिः समिधः शोशुचाना,
अपद्वेषांस्थमुया भवन्तु ।।
अर्ययो विश्वान् हरितान्,
कृणेष्युच्छोचयन्नग्निरिवाभिदुन्वन् ।
अघाहि तक्मन्नरसो हिभूया,
अघान्यदण्डधरांग वा परेहि ।

-अथर्व० २२/१२

"यज्ञाग्नि यहाँ से ज्वर को दूर भगा देवे । सोमरस, यज्ञिय सिल-बट्टे, पवित्र बल को देने वाला सूर्य, वेदि, कुशा, प्रज्वलित समिधाएँ ये समस्त यज्ञांग ज्वर निवारण में सहायक हों । इस विधि से द्वेषकारी सब ज्वर जन्य उपद्रव दूर हो जायें । हे ज्वर! जो तू अपने ताप से तप्त करता हुआ, पीड़ित करता हुआ सबको पीले शरीर वाला कर देता है वह तू यज्ञाग्नि द्वारा निर्वीर्य हो जा, शरीर से बाहर निकल जा ।"

यत त्वंशोतोऽयो रूरः सह कासाऽवेपयः ।
भीमास्ते तवमन् हेतयस्ताभिः स्म परिवृडग्धि नः ।।
तृतीयकं वितृतीर्य सदन्दिमुत शारदम् ।
तस्मानं शीतं रूरं ग्रीष्मं नाशय वार्षिकम् ।।

-अथर्व ५/२२/१०/१३

"हे ज्वर! जो तू शीतरूप है, या उष्णरूप है, खाँसी से प्रकम्पित करता है, तेरे ये सब हथियार बड़े भयानक हैं उनसे तू हमें बचाये रख । हे यज्ञाग्ने! जो तीसरे दिन चढ़ने वाला, चौथे दिन चढ़ने वाला, प्रतिदिन चढ़ने वाला, ग्रीष्म में होने वाला, वर्षा में होने वाला शीत या उष्ण ज्वर है उसे तू नष्ट कर ।"

उन्माद चिकित्सा

अथर्व० ६/१११ में यज्ञाग्नि द्वारा उन्माद रोग की चिकित्सा का वर्णन मिलता है ।

इमं में अग्ने पुरुषं मुमुग्धि
अयं यो बद्धः सुमतो लालपीति ।
अतोऽधि ते कृणवद भागधेयं,
यदा ऽ नुन्मदितो ऽ सति ।। १ ।।

"हे यज्ञाग्ने ! यह जो उन्माद रोग से ग्रस्त पुरुष कस का बँधा हुआ असम्बद्ध प्रलाप कर रहा हैं उसे तू इस रोग से मुक्त कर दे । जब वह तेरी कृपा से इस रोग से छूट जाये तब भी वह तुझे तेरा हविर्भाग प्रदान करता रहे, जिससे कि फिर कभी उन्मत्त न हो ।"

अनिष्ट निशमयत्, यदि ते मन उद्युतम् ।
कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्यदितोऽसति ।। २ ।।

"हे मनुष्य ! यदि उन्माद के कारण तेरा मन उद्दीप्त हो गया है, तो यज्ञ चिकित्सा को जानने वाला मैं तेरा इलाज करता हूँ , जिससे कि तू उन्माद् रहित हो जाये ।"

इन मन्त्रों से यह ज्ञात होता है कि यदि कोई मनुष्य उन्मत्त हो जाये, उसकी अवस्था ऐसी बिगड़ जाये कि वह असम्बद्ध बातें बोलता रहे, काटने-मारने को दौड़ता हो, यहाँ तक कि उसे रस्सी से बाँध कर रखने की आवश्यकता पड़े, तो उस हालत में भी वह यज्ञ चिकित्सा से स्वस्थ हो सकता है । यज्ञाग्नि में डाली हुई ओषधियों की सुगन्ध उसके विकृत मस्तिष्क और उत्तेजित मन को ठीक कर सकती है । जो एक बार उन्माद रोग से ग्रस्त हो चुका होता उसके लिए आगे भी भय रहता है कि कहीं फिर उन्मत्त न हो जाये । पर यहाँ वेद ने यह उपाय बताया है कि ठीक होने के पश्चात् यदि वह इस रोग के लिए हितकर ओषधियों से नियमपूर्वक यज्ञ करता रहे तो भविष्य में फिर कभी इस रोग से ग्रस्त नहीं होगा ।

गण्डमाला चिकित्सा

अथर्व ६/८३ में गण्डमाला की चिकित्सा का वर्णन है । वहाँ सूर्य और चन्द्रमा की किरणों के सेवन तथा यज्ञाग्नि की आहुति द्वारा यह रोग दूर हो सकता है ऐसा कहा गया है ।

अपचितः प्र पतत सुप्रर्णो वसतेरिव ।
सूर्यः कृणोत भेषज चन्द्रमा वो ऽपोच्छतु ।एन्येको
एन्येको श्यन्येका कृष्णोका रोहणी द्वे ।
सर्वासामगूभं नाम-अवीरघ्नीरपेतन ।।
असूतिका रामायणी अपचित् प्र पतिष्यति ।
ग्लौरितः प्र पतिष्यति स गलुन्तो नशिष्यति ।।
वीहि स्वामाहुस्ति जुबाणो मनसा स्वाहा
मनसा यदिदं जुहोमि ।। १-४ ।।

"हे गण्डमाला की ग्रन्थियो! तुम इस रोगी के शरीर से निकल कर उड़ जाओ, जैसे बाज पक्षी

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने घोंसले से उड़ता है । सूर्य तुम्हारी चिकित्सा करे, चन्द्रमा तुम्हें दूर भगा दे । तुममें से एक कुछ कुछ लाल श्वेत वर्ण वाली है, एक सफेद है. एक काली है, दो लाल हैं । एक-एक करके तुम सबका मैं नाम लेता हूँ । इस वीर पुरुष का संहार न करती हुई तुम इसके शरीर से दूर हो जाओ । हे रोगी ! तू विश्वास रख, जिससे अभी पूर्णासुख होना आरम्भ नहीं हुआ है ऐसी तेरी यह गण्डमाला ग्रन्थि निश्चय ही गिर जायेगी । तेरी पीड़ा दूर हो जायेगी, व्रण नष्ट हो जायेगा । हे रोगी । तू मनोयोग के साथ इस आहुति का सेवन कर, जिसे मैं मनोयोग पूर्वक यज्ञाग्नि में डाल रहा हूँ ।''

इस वर्णन से स्पष्ट है कि गण्डमाला का रोगी यदि गण्डमाला ग्रन्थियों पर विशेष ओषधियों का यज्ञ धूम लेवे तो वे ग्रन्थियाँ नष्ट हो सकती हैं । साथ में सूर्य किरणों और चन्द्रकिरणों का सेवन भी सहायक चिकित्सा के रूप में करना चाहिए ।

अथर्व ७/७४ में भी गण्डमाला की चिकित्सा का वर्णन करते हुए अन्तिम मन्त्र में यज्ञाग्नि को स्मरण किया है ।

व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो,
विश्वाहा सुमना दीदिहीह ।
सं त्वा वयं जातवेदः समिद्धं,
प्रजावन्त उपसदेम सर्वे ।। ४ ।।

''हे व्रतपते जात वैद यज्ञाग्ने ! रोगनिवारण आदि व्रतों से युक्त तू प्रति दिन हमारे घरों में प्रज्वलित होता रहा । हम समिधाओं से प्रज्वलित तेरे समीप सब परिजनों सहित बैठा करें ।''

क्षयरोग या राजयक्ष्मा की चिकित्सा

अन्य रोगों की तो गणना ही क्या, यज्ञ द्वारा राजयक्ष्मा की भी चिकित्सा हो सकती है, यह वैदिक संदर्भों से प्रकट होता है । सर्व प्रथम हम *-अथर्व ७/७६* का प्रसंग लेते हैं ।

यः कीकसाः प्रशणाति तलीद्यमवतिष्ठति ।
निर्हास्तं सर्व जायान्यं यः कश्च ककुदि श्रितः ।। ३ ।।
पक्षी जायान्यःपतित स आविशति पूरुषम् ।
तदक्षितस्य भेषजमुभयोः सुक्षितस्य च ।। ४ ।।
विगृह वै ते जायन्य जानं यतो जायान्य जाय से ।
कथं ह तत्र त्वं हनो यस्य कृन्मो हविर्गृहि ।। ५ ।।

''जो क्षयरोग पसलियों को तोड़ डालता है, फेफड़ों में जाकर बैठ जाता है, पृष्ठवंश के उपरिभाग में स्थित हो जाता है उस अतिस्त्रीप्रसंग से उत्पन्न होने वाले क्षयरोग को हे यज्ञीय हवि! तू शरीर से बाहर निकाल दे । पक्षी की भाँति उड़ने वाला अर्थात् छूत द्वारा फैलने वाला यह रोग एक से दूसरे पुरुष में प्रविष्ट हो जाता है । चाहे उसने जड़ जमा ली हो, चाहे जड़ न जमायी हो, हविचिकित्सा दोनों की ही उत्तम चिकित्सा है । हे अतिस्त्रीप्रसंग से उत्पन्न होने वाले क्षय रोग! हम तेरे उत्पादक कारणों को जानते है पर जिस पुरुष के घर में हम हवन करते हैं उसे तू कैसे मार सकता है ।

इन मन्त्रों से क्षयरोग के निवारण में यज्ञ-हवन की महत्ता स्पष्ट है । इस विषय पर *अथर्ववेद (३/११/२०/९६)* तथा *ऋग्वेद (१०/१६१)* के कुछ अन्य मन्त्र और भी अच्छा प्रकाश डालते हैं । यज्ञ चिकित्सा करने वाला वैद्य कहता है -

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कम्
अज्ञाततक्ष्मादुत राजयक्ष्मात् ।
ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं
तस्या इन्द्राग्नी प्रमुमुक्तमेनम् ।।

''हे रोगी ! चाहे तेरे शरीर में क्षयरोग अज्ञात अवस्था में है, चाहे प्रकट अवस्था में है, हविद्वारा मैं तुझे उस रोग से मुक्त कर दूँगा जिससे कि तू चिरकाल तक जीवित रहे । हे वायु और अग्नि ! यदि यह रोगी पूरी तरह से क्षयरोग की पकड़ में आ गया है तो भी तुम इसे उससे छुड़ा दो ।''

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो
यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।
तमाहरामि निर्ऋतेरुपस्थाद्
अस्पार्यमेनं शतशारदाय ।।

''यदि इसकी आयु क्षीण हो चुकी है, यदि यह निराश हो चुका है, यदि यह मृत्यु के बिल्कुल समीप पहुँच चुका है तो भी हविचिकित्सा द्वारा मैं इसे मृत्यु की गोद से लौटा लाता हूँ । मैंने इसे सौ वर्ष जीने के लिए बल प्रदान कर दिया है ।''

सहस्त्राक्षेण शतशारदेन
शतायुषा हविषाऽऽहार्षमेनम् ।
शतं यथेमं शरदो नयाति
इन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम् ।।

''इन्द्रियों को सहस्त्रगुणित शक्ति देने वाली, सौ शरद् ऋतुएँ निर्विघ्न पार कराने वाली, सौ वर्ष की आयु देने वाली, हवि के द्वारा मैं इस पुरुष को क्षयरोग के चँगुल से छुड़ा लाया हूँ, जिससे कि आगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी (हविगन्ध से युक्त) वायु सौ वर्षों तक इसे सब रोग कष्टों से पार करता रहे ।''

शतं जीव शरदो वर्धमानः
शतं हेमन्ताभ्छतयुवसन्तान् ।
शतमिन्द्राग्नि सविता बृहस्पतिः
शतायुषा हविषेमं पुनर्दः ।।

''हे हविचिकित्सा द्वारा क्षय रोग से आरोग्य लाभ किये हुए मनुष्य ! तू दिनों दिन बढ़ता हुआ सौ शरदों तक, सौ हेमन्तों तक और सौ बसन्तों तक जीवित रह । वायु, अग्नि, सूर्य और वृहस्पति पर्जन्य ने सौ वर्ष की आयु देने वाली हवि की सहायता से पुनः तुझे सौ वर्ष की आयु प्राप्त करा दी है ।''

इन मन्त्रों से स्पष्ट है कि क्षयरोग चाहे प्रारम्भिक अवस्था में हो चाहे बहुत बढ़ गया हो, यहाँ तक कि उसके कारण रोगी बिल्कुल मरणासन्न हो गया हो, तो भी हवि चिकित्सा के द्वारा वह ठीक हो सकता है, और रोगी स्वस्थ होकर सौ वर्ष तक जीने योग्य हो सकता है । परन्तु हवि चिकित्सा के साथ-साथ शुद्ध वायु सेवन सूर्य किरण स्नान, शुद्ध जल का प्रयोग आदि हो तभी हवि चिकित्सा लाभदायक होती है यह भी प्रकट है ।

गर्भ दोष-निवारण

ऋग्वेद में अगले ही सूक्त १०/१६२ में यज्ञाग्नि द्वारा गर्भदोषों के निवारण का उल्लेख किया गया है, वह प्रकरण *अथर्ववेद* २०/९६ में भी है ।

ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः ।
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये ।।

''हे नारि ! जो तेरे गर्भ या योनि के अन्दर बुरे नाम वाला रोग या रोगकृमि प्रविष्ट हो गया है उसे वेदमन्त्रों से युक्त कृमिविनाशक यज्ञाग्नि वहाँ से निकाल देवे ।

यस्ते गर्भ ममीवा दुर्णामा योनिमाशये ।
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत् ।।

''जो तेरे गर्भ या योनि में बुरे नाम वाला रोगकृमि प्रविष्ट हो गया है उस मांस भक्षक कृमि को वेदमन्त्रों के साथ प्रयुक्त यज्ञाग्नि नष्ट कर देवे ।''

यस्ते हन्ति पतयंन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम् ।
जातं यस्ते जिघांसति तमित्तो नाशयामसि ।।

''जो रोग या रोगकृमि तेरे गर्भाशय में जाते हुए वीर्य की उत्पादकशक्ति को नष्ट करता है, जो अन्दर स्थित हुए गर्भ की हत्या करता है, जो गर्भाशय से बाहर आते हुए चंचल गर्भ की हत्या करता है जो पैदा हुए शिशु की हत्या करता है उसे हम यज्ञाग्नि द्वारा विनष्ट कर देते हैं ।''

इन मन्त्रों से यह द्योतित होता है कि यज्ञ-हवन द्वारा अनेक प्रकार के गर्भदोष भी दूर हो सकते हैं । जिन स्त्रियों में गर्भ ठहरने ही नहीं पाता, या ठहरने के बाद दो-चार महीनों में गिर जाता है, या पूरे नौ-दस महीने की अवधि तक स्थिर रहकर भी प्रसव ठीक नहीं हो पाता, या प्रसव हो भी जाये तो शिशु ऐसा रोगक्रान्त पैदा होता है कि शीघ्र ही मर जाता है ऐसी स्त्रियाँ हवि चिकित्सा से लाभ प्राप्त कर सकती हैं ऐसा वेद का आशय है ।

प्रसूतकर्म आसानी से हो जाने के लिए भी किन्हीं विशेष ओषधियों की यज्ञिय सुगन्ध उपयोगी हो सकती है । यह अथर्व १/११/१ के निम्न मन्त्र से प्रकट होता है-

वषट् ते पूषन्नस्मिन्सूतौ अर्यमा होता कृणोतु वेधाः ।
सिसुतां नारी-ऋतप्रजाता कि पर्वाणि विहतां सूतवाउ ।।

''हे पोषक गृहपते ! इस प्रसव के समय रोग शत्रुओं का नियमन करने वाला अर्यमा (अरीन नियच्छति । निरुक्त ११/२३ यज्ञ का विधाता (वेधाः होमनिष्पादक होता तेरे लिए अग्नि में हवि डालता हुआ वषट्कार करे । नारी बाहर की ओर किनछे और अपने अङ्गों को ढीला छोड़ दे, जिससे कि आसानी से प्रसूति हो जाये ।''

अन्य रोगों का निवारण

अब तक हमने ऐसे मन्त्र प्रस्तुत किये हैं जिनमें यज्ञ द्वारा किन्हीं विशेष रोगों के विनाश होने का वर्णन है । अब कुछ ऐसे मन्त्र उद्धृत करेंगे जिनमें किसी विशेष रोग का नाम न लेकर सामान्य रूप से यह कहा गया है कि यज्ञाग्नि से रोग दूर होते हैं ।

यथा वृत्र इमा आपस्तस्तम्भ विश्वधा यतीः ।
एवा ते अग्निना यक्ष्मं वश्वीनरेण नारये ।।

-अथर्व० ६/८५/३

जिस प्रकार वृत्र मेध की चारों ओर जाने वाले जलों की गति को रोक देता है, उसी प्रकार हे रोगी! सर्व जन हितकारी यज्ञाग्नि के द्वारा मैं तेरे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रोग को निवारण कर देता हूँ ।''

आ ते प्राणं सुवामसि परा यक्ष्म सुवामि ते ।
आयुनों विश्वतो दधदयमग्निर्वरिण्यः ।।

-अथर्व० ७/५३/६

''हे रोगी ! तेरे अन्दर हम प्राण को प्रेरित करते हैं, तेरे रोग को दूर कर देते हैं । यह वरणीय और श्रेष्ठ यज्ञाग्नि हम सबको सर्वत्र दीर्घायुष्य प्रदान करे ।''

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो
विराडाने क्षत्रभूद दीदिहीह ।
विश्वा अमीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः
शिवाभिरद्य परिपाहि नो गयम् ।।

-अथर्व ७/८४

''हे यज्ञाग्ने ! तू अनाधृष्य अर्थात् रोगादि शत्रुओं से अपराजेय है, तू उत्पन्न पदार्थों का प्रकाश है, तू अमर, तेजस्वी और बलपूर्वक होता हुआ हमारे घरों में प्रज्वलित हो । रोगों को छुड़ाता हुआ मनुष्य का कल्याण करने वाली रक्षाओं से हमारे घर की भली प्रकार रक्षा कर ।''

कविमग्निमुपस्तुहि सत्यर्माणमध्वरे ।
देवममीवचातनम् ।।

-ऋग्वेद १/१३/७

'हे मनुष्य! जो यज्ञाग्नि मेधावी के तुल्य सत्य धर्मों वाला, देदीप्यमान और रोगों को नष्ट करने वाला है उसका तू यज्ञ में स्तवन कर ।''

घृत्तस्य जूतिः समना सदेवा
संवत्सरं हविषा वर्धयन्तो ।
श्रोत्र चक्षु प्राणोऽच्छिन्नो नो अस्तु
अच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः ।।

-अथर्व १९/५८/१

''मनोयोग के साथ और चक्षु वाक् आदि इन्द्रिय देवों के व्यापार के साथ अग्नि में डाली हुई घृत की धारा अन्य ओषधियों की हवि के साथ वर्ष भर हमें बढ़ाती रहे । हमारे श्रोत्र चक्षु, प्राण रोगादि से छिन्न न होवे । हम आयु और तेज से छिन्न न होवें ।''

स घा यस्ते ददाशत समिधा जातवेद से ।
सो अग्ने धत्ते सुवीर्य स पुष्यति ।।

-ऋग्० ३/१०/३

''हे यज्ञाग्ने ! जो मनुष्य तुझ में विभिन्न ओषधियों की समिधाओं का आघात करता है उसे बल प्राप्त होता है वह परिपुष्ट होता है ।''

इन तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक मन्त्रों से यह स्पष्ट है कि विभिन्न ओषधि-वनस्पतियों के समित् पत्र पुष्प-फल-मूल निर्यास आदि को हवि से मनुष्य बल, पोषण, रोग, निरोधक शक्ति प्राप्त कर सकता है और प्राप्त तथा अप्राप्त विभिन्न रोगों से बच कर दीर्घायुष्य पा सकता है ।

यज्ञ द्वारा रोग निवारण की प्रक्रिया

अब हम वह देखेंगे कि यज्ञ द्वारा रोगनिवारण कैसे होता है । जब हम यज्ञाग्नि में घृत, अन्न, ओषधियों आदि की आहुति देते हैं तब उनकी रोगनिवारक गन्ध वायुमण्डल में फैल जाती है । उस वायु को श्वास द्वारा हम अपने फेफड़ों में भरते हैं । वहाँ उस वायु का रक्त से सीधा सम्पर्क होता है । वह वायु अपने विद्यमान रोग निवारक परमाणुओं को रक्त में पहुँचा देती है । उससे रक्त में जो रोगकृमि होते हैं वे मर जाते हैं । रक्त के अनेक दोष वायु में आ जाते हैं और जब हम वायु को बाहर निकालते हैं तब उसके साथ वे दोष भी हमारे शरीर से बाहर निकल जाते हैं । इस प्रकार यज्ञ द्वारा संस्कृत वायु में बार-बार श्वास लेने से शनैः-शनैः रोगी स्वस्थ हो जाता है । इसी प्रक्रिया को वेद में निम्न शब्दों में दर्शाया गया है-

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः ।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः ।।
आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः।।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ।।

-ऋग्० १०/१३७/२.३/अथर्व० ४/१३/२,३

''ये श्वास-निःश्वास रूपी दो वायु यें चलती हैं, एक बाहर के वायुमण्डल से फेफड़ों के रक्तसमुद्र तक, और दूसरी फेफड़ों से बाहर के वायुमण्डल तक । इनमें से पहली हे रोगी ! तुझे रोगनिवारक बल प्राप्त कराये, दूसरी रक्त में जो दोष हैं उसे अपने साथ बाहर ले जाये । हे वायु ! तू अपने साथ ओषध को ला । हे वायु ! तू रक्त में जो मल है उसे बाहर निकाल । तू सब रोगों की दवा है, तू देवों का दूत होकर विचरता है ।''

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे ।
प्रण आयूंषि तारिषत् ।।
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा ।'
स नो जीवातवे कृधि ।।
यददो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिहितः ।
ततो नो देहि जीवसे ।।

-ऋग्वेद१०/१८६/१/३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

"वायु हमारे शरीर के अन्दर औषध को ले जाये, जो कि हमारे हृदय के लिए शान्तिकर और सुखकर हो । हमारी आयु को बढ़ाये । हे वायु ! तू हमारा पितृतुल्य, भ्रातृतुल्य और मित्रतुल्य है, वह तू हमें जीवन प्रदान कर । हे वायु ! जो तेरे घर में अमृतमय औषध का भण्डार निहित है, उसमें से कुछ अंश हमें भी प्रदान कर, जिससे कि हम चिरंजीवी हों ।"

आयुर्वेद के विभिन्न ग्रन्थों में ऐसे अनेक प्रयोग लिखे हैं जिनमें अग्नि में ओषधियाँ डालकर उनकी धूनी लेने से रोगों को दूर करने का वर्णन है । इन्हें भी यज्ञचिकित्सा का ही रूप समझा जा सकता है । उदाहरण के लिए हम कुछ प्रयोग नीचे देते हैं ।

अगुरुघनसारसल्लकररुहनत नीरचन्दनैर्युक्तः ।
सर्जरसेन समेतो धूपो रुग्दाहकं हन्ति ।।

-बृहन्निघण्टु०

अगर, कपूर, लोबान, नखी, तगर, सुगन्धवाला, चन्दन और राल इनकी धूप देने से दाह शान्त होता है ।

अश्वगन्धोऽथ निर्गुन्डी वृहती पिप्पलीफलम् ।
धूपोऽयं स्पर्शमात्रेण ह्यर्शसां शमने ह्यलम् ।।

-वृ० नि०१०

असगन्ध निर्गुण्डी, बड़ी कटेली, पीपल-इनकी धूप से बवासीर की पीड़ा शान्त होती है ।

शिग्रुपल्लवनिर्यासः सुषिष्टस्ताम्रसम्पुटे ।
घृतेन धूपितो हन्ति शोथधर्षाश्रु वेदनः ।। *-वंगसेन*

सहजने के पत्तों के रस को ताम्रपात्र में डालकर ताँबे की मुसली से घोटें और उसे घी में मिला लें इसकी धूप देने से आँखों की पीड़ा, अश्रुस्राव, किरकिराहट और शोथ का नाश होता है ।

काकुभकुसुमविडङ्ग लाङ्गलिभल्लातक तथोशीरम् ।
श्रीवेष्टकसर्जरसं चन्दनमथ कुष्ठमष्टमं दद्यात् ।।
एष सुगन्धो धूपः सकृत कृमीणां विनाशकः प्रोक्तः ।
शय्यासु मत्कृणानं शिरसि च गात्रेसु यूकानाम् ।।

-योगरत्नाकर

अर्जुन के फूल, वायविडिंग, कलियारी की जड़ भिलावा, खस, धूप सरल, राल, चन्दन और कूट समान भाग लेकर बारीक कूट लें । इसकी धूप से कृमि नष्ट हो जाते हैं । यदि खाट को इसकी धूप दी जाये तो खटमलों का और शिर तथा अङ्गों को दी जाये तो जुओं का विनाश होता है ।

कामका चीफलैकेन घृतयुक्तेन बुद्धिमान् ।
धूपयेत् पिल्लरोगार्त पतन्ति कृमयोऽचिरात् ।।

-गदनिग्रह

मकोय के एक फल की घृत लगाकर उसे आग पर डालकर आँख में उसकी धूनी देने से तुरन्त आँख से कृमि निकल कर पिल्ल रोग नष्ट हो जाता है ।

निम्बपत्रं वचा कुष्ठं पथ्या सिद्धार्थकं घृतम् ।
विषमज्वरनाशाय गुग्गुलुश्रेति धूपनम् ।।

-वृ० नि० र०

नीम के पत्ते, बच, कूठ, हर्र, सफेद सरसों और गूगल के चूर्ण को घी में मिलाकर उसकी धूप देने से विषमज्वर नष्ट होता है ।

निम्बपत्रवचाहिंडगूसर्पिर्लवणसर्षपैः ।
धूपन कृमिरक्षोघ्नं व्रणकण्डूरुजापहम् ।।

-वृ० नि० र०

नीम के पत्ते, बच, हींग, सेंधा नमक और सरसों के समभाग मिश्रित चूर्ण को घी में मिला कर उसकी धूप देने से व्रण के कृमि, खाज और पीव नष्ट होती है ।

इस प्रकार के अनेक प्रयोग आयुर्वेद के ग्रन्थों में हैं । प्राचीन आयुर्वेदिक आचार्यों ने ये परीक्षण किये थे ।

यज्ञीय धूम की उपादेयता एवं महत्ता

महर्षि चरक ने ओषधियों की धूप देने की तरह ही मुख मार्ग से धूम सेवन करने का उल्लेख किया है । जिस तरह इन दिनों रोग विशेष की चिकित्सा के लिए ओषधि धूम्र का भी प्रयोग होता रहा है । जब तमाखू, गाँजा, चरस, मदक आदि के रूप में भीतर पहुँचाया हुआ धुँआ नशीली प्रतिक्रिया उत्पन्न कर सकता है-गले, फेफड़े, आदि के रोग उत्पन्न कर सकता है तो कोई कारण नहीं कि उपयोगी ओषधियों का धुँआ रोग निवारण के लिए प्रयुक्त न हो सके ।

धूम प्रयोग के सम्बन्ध में चरक के दो सूत्र प्रसिद्ध हैं -

"आत्मवान् धूमपो भवेत्"

अर्थात्-आत्मवान बनने के लिए धूम्रपान करें ।

"पीत मात्रे धूमे प्रशान्ति लभत जरास्य"

अर्थात्-धूम्रपान से मनुष्य शरीर के रोगों का शमन होता है ।

यहाँ धूम्रपान से मतलब तमाखू आदि नशीले पदार्थों का व्यसन रूप में उपयोग करने से नहीं

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वरन् ओषधि के धूम का चिकित्सक के अनुशासन में नियत अवधि तक उपचार की तरह सेवन करने से है । इसके लिए प्रायोगिकी-स्नैहकी-शिरोवैर चनिकी नामक तीन विधियों का उल्लेख है । इस उपचार के लाभों का वर्णन करते हुए महर्षि चरक कहते हैं-

गौरवं शिरसः शूलं पीन सार्धावभेदकौ ।
कर्णाक्षिशूलं कासश्च हिक्वाश्वासौगलग्रहः ।।
दन्तदौर्बल्यमास्रावः श्रोत्रघ्राणक्षिदोषजः ।
पूर्तिर्घ्राणास्य गन्धश्च दन्तशूल मरोचकः ।।
हनुमन्या ग्रहः कण्डू क्रिमयः पाण्डुता मुखे ।
श्लेष्मप्रसेको वैस्वर्यं गलशुण्ड्युपजिह्विका ।।
खालित्यं पिञ्जरत्वं च केशानां पतनं तथा ।
क्षवधुश्चातितन्द्रा च बुद्धे र्मोहोऽतिनिन्दिता ।
धूमपानात् प्रशाम्यन्ति बलं भवति चाधिकम् ।।

धूमपान द्वारा निम्न लिखित रोग शान्त हो जाते हैं तथा बल में वृद्धि हो जाती है-शिर का भारीपन, शिर शूल, पीनस, आधासीसी, कान और नेत्र का शूल, कास, हिचकी, दमा, गलग्रह, दाँतों की दुर्बलता, कान, नाक, नेत्रों से दोषजन्य स्राव का होना, नाक से दुर्गन्ध आना, आस्यगन्ध, दाँत का शूल, अरोचक, हनुग्रह, मन्याग्रह, कण्डु, कृमिरोग, मुख का पीला होना, कफ निकलना, स्वरभेद, गलभुंडी उपजिह्विका, स्वालित्य (अन्धापन) केशों का पीला होना व गिरना, छींक आना, अधिक तन्द्रा आना, बुद्धि का व्यामोह होना, निद्रा आना आदि - ये समस्त रोग प्रायोगिकी आदि विधियों से निर्मित धूम सेवन द्वारा शान्त हो जाते हैं ।

शिरोरुह कपाला नामिन्द्रियाणां स्वरस्य चं ।
न च वात कफात्मानो बलिनोऽप्यूर्ध्वजत्रु जाः ।।
धूमवक्त्रकपानस्य व्याधयः स्युः शिरोगताः ।

बाल, कपाल, इन्द्रियों, तथा स्वर का बल अधिक बढ़ता है । जो व्यक्ति धूम्रपान करता है, उसे जत्रु (गले की हड्डी) के ऊपरी भाग में होने वाले रोग विशेष कर शिरोभाग में बाल-कफ जन्य रोग नहीं होते ।

महर्षि सुश्रुत भी इस पद्धति के समर्थक रहे हैं उनने शरीर और मन के विकारों के निराकरण के लिए धूम सेवन विधि का समर्थन किया है-

'नरो धूमोपयोगाच्च प्रसन्नेन्द्रिय बाङ्मनाः ।'

-सुश्रुत

धूम के सेवन से मनुष्य प्रसन्न इन्द्रियों, वाणी व मन वाला हो जाता है ।

यह उपचार कैसे करना चाहिए । इसका विधि निषेध प्रायोगिकी कहा जाता है । उसका विधान चरक और सुश्रुत दोनों में मिलता है । यथा-

प्रयोगपाने तस्याष्टौ कालाः संपरिकीर्तिताः ।
वातश्लेष्मसमुत्केशः कालेष्वेषु हि लक्ष्यते ।।
स्नात्वा भुक्त्वा समुल्लिख्य क्षुत्वादंतान्निधृष्य च ।
नावनाञ्जन निद्रान्ते चात्मवान् धूमपो भवेत् ।।
तथावातकफात्मानो न भवन्यूर्ध्वजत्रुजाः ।
रोगास्तस्य तु पेयाः स्युरापानस्त्रिग्रस्त्रयः

-चरक

प्रायोगिक-धूमपान के निम्नलिखित आठ समय होते हैं क्योंकि इन्हीं समयों में वात और कफ का प्रकोप हुआ करता है । (१) स्नान के बाद (२) भोजन के बाद (३) वमन के बाद (४) छींक आने के बाद (५) दातौन के बाद (६) नस्य लेने के बाद (७)अञ्जन लगाने के बाद और (८) निद्रा से उठने के बाद । इस प्रकार धूम सेवन करने से (गले की हड्डी) के ऊपरी भाग में वात-कफ के रोग नहीं होते । इस प्रायोगिक धूम्र को एक बार में तीन घूँट पीना चाहिए तथा तीन बार अर्थात् कुल नौ घूँट पीना चाहिए ।

महर्षि सुश्रुत ने इसी प्रकार का विधान बताया है:-

आद्यास्त्रयोद्वादशम् कालेषु उपादेयाः तद्यथा क्षुद्र-दन्तप्रक्षालन-नस्य स्नान भोजन-दिवास्वप्न मैथुन छदि-मूत्रो चार रुधित-शस्त्रकर्मान्तेषु ।

-सुश्रुत

प्रायोगिक-धूमपान का सेवन निम्न बारह समयों में तीन-तीन घूँट के क्रम से करना चाहिए-छींक आने पर, दातौन करने पर, नस्य लेने पर, स्नान करने पर, दिन में सोने के बाद, स्त्री सहवास के बाद, वमन के बाद, मल व मूत्र के बाद, क्रोधावेश के बाद तथा शस्त्र कर्म के बाद ।

यदाचोलश्च कण्ठश्च शरश्च लघुतां व्रजेत् ।
कफश्च तनुतां प्राप्तः सुपीतं धूममादिशेत् ।।

उचित मात्रा में किये गये धूमपान से छाती, कण्ठ, और शिर हल्का हो जाता है, कफ पतला हो जाता है ।

हृत्कण्ठेन्द्रियसंशुद्धिर्लघुत्वं शिरसुः शमः ।
यथेरितानां दोषाणां सम्यक्पीतस्य लक्षणम् ।।

समुचित रीति से धूम सेवन के लक्षण हैं-हृदय, कण्ठ, ज्ञानेन्द्रियों की शुद्धि, सिर का हल्का होना, बढ़े हुए दोषों की शान्ति आदि ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जहाँ उपयोगी ओषधियों का विधि पूर्वक सेवन लाभदायक है वहाँ उनका अनुपयुक्त विधि से तमाखू आदि नशीली चीजों के पीने से हानि भी है । इस हानि की ओर संकेत करते हुए कहा गया है-

वाधिर्यमान्ध्यं मूकत्वं रक्तपित्तं शिरोभ्रमम् ।
अकाले चातिपीतश्च धूमः कुर्यादुपद्रवान् ।।

कुसमय में, आवश्यकता से अधिक धूमपान कर लेने से वधिरता, अन्धापन, मूकपन, रक्तपित्त और सिर में चक्कर आना आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं ।

अकाल पीतः कुरुते भ्रममूर्च्छा शिरोरुजः ।
घ्राणश्रोत्राक्षिजिह्वानामुपघातं च दारुणम् ।।

-सुश्रुत

असमय में धूम सेवन करने वाले को चक्कर मूर्च्छा, सिर में दर्द, नाक, कान, नेत्र, जिह्वा में घोर कष्ट आदि कठिनाइयाँ आती हैं ।

अविशुद्धः स्वरोयस्य कण्ठश्च सकफो भवेत् ।
स्तिमितो मस्तकश्चैवमपीतं धूममादिशेत् ।।

उचित मात्रा में धूमपान न करने से-रोगी का स्वर शुद्ध नहीं होता, कण्ठ में कफ भरा रहता है, और सिर जकड़ा रहता है ।

तालुमूर्धा च कण्ठश्च शुष्यते परितप्यते ।
तृष्यते मुह्यते जन्तू रक्तं च स्त्रवतेऽधिकम् ।।
शिरश्च भ्रमतेऽर्थं मूर्च्छा चास्योपजायते ।
इन्द्रियाण्युपतप्यन्ते धूमेऽव्यर्थं निषेविते ।।

धूम सेवन की अत्यधिक अनुचित मात्रा हो जाने पर-तालु, सिर और कण्ठ में शुष्कता और उनमें जलन, प्यास में वृद्धि, मोह, अधिक रक्त स्राव, अत्यधिक सिर चकराना, मूर्च्छा तथा सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों में विकलता होने लगती है ।

मुख की भाँति नासिका मार्ग से भी ओषधि धूम ग्रहण करने के लिए कहा गया है । विशेषतया इस प्रकार के प्रयोग सिरोरोगों के सन्दर्भ में बताये गये हैं । कहा गया है कि-

ऋज्वंग चक्षुस्तच्चेताः सूपविष्ट स्त्रिपर्ययम् ।
पिवेच्छिद्र विधायैकनासया धूममात्मवान् ।।

धूमपान करते समय-व्यक्ति को अपने अंग-प्रत्यंग और नेत्र को सीधा करके, धूम्रपान में मन लगाकर, सुख पूर्वक सीधे बैठकर, नासिका का एक छिद्र बन्द कर तीन बार नाक से धूमपान करना चाहिए ।

धूमयोग्यः पिवेच्छषे शिरोघ्राणाक्षिसंश्रये ।
घ्राणेनास्येन कण्ठस्थे सुखेन घ्राणपो वमेत् ।।
आस्येन धूमकवलान् पिवन् घ्राणेन नोद्वमेत् ।
प्रतिलोमं गतो ह्याशु धूमो हिस्याद्धि चक्षुषी ।।

'धूमसेवन' करने वाले व्यक्ति को (प्रायः) नासिका से धूम सेवन करना चाहिए । 'गले' में विकार हो तो 'मुख' से धूम सेवन करना चाहिए । नासिका से धूम ग्रहण करने पर उसे मुख से निकालना चाहिए, लेकिन मुख से पान किये जाने पर नासिका से कभी नहीं निकालना चाहिए क्योंकि गलत रास्ते से गया हुआ धूम नेत्रों को कष्ट देता है ।

ओषधि-धूमपान की विधि का उल्लेख करते हुए उसका प्रयोग इस प्रकार बताया गया है कि निर्धारित ओषधियों को कूट छानकर घृत शहद आदि की सहायता से लम्बी बत्ती बना लें । उसे थोड़ी कड़ी हो जाने दें । फिर चिलम, सिगरेट होल्डर जैसे किसी उपकरण में रख कर अग्नि की सहायता से धुँआ उत्पन्न करें और उसे मुख द्वारा चूसकर पेट में जाने देने का उपक्रम करें ।

हरेणुका प्रियङ्गु च पृथ्वीकां केशरं नखम् ।
ह्रीबेरं चन्दन पत्रं त्वगेलोशीरपममकम् ।।
ध्यामकं मधुकं मासी गुग्गुल्वगुरुशर्करम् ।
न्यग्रोधोदुम्वराश्वत्थ प्लक्षलोध्रत्वचः शुभाः ।।
वन्यं सजरसं मुस्तं शैलेयं कमलात्पले ।
श्रीवेष्टकं शल्लकीं च शुकवर्हमथापिच ।।
पिष्टवालिम्पेच्छरेषीकांतां वर्तिं यवसन्निभाम् ।
अंगुष्ठसम्मितां कुर्यादष्टांगुलसमा भिषक् ।।
शुष्कां विगर्भा तां वर्तिं धूम नेत्रार्पिनां नरः ।
स्नेहाक्तामग्नि सम्पलुष्टां पिवेत्प्रयोगिकी सुखम् ।।

'हरेणुका, प्रियंगु, बड़ी इलायची, केशर, नखी, सुगन्धित सफेद चन्दन, तेज पत्ता, दाल चीनी, छोटी इलायची, खस, पद्म काष्ठ, ध्यामक, मुलहटी, जटामांसी, गुग्गुलु, अगर, शर्करा, अच्छे बरगद की छाल, गूलर की छाल, पीपल की छाल, पाकड़ की छाल, और लोध की छाल, वन्य, सर्जरस, नागर मोथा, कमल, शैलेय, नीलकमल, श्रीवेष्टक, शल्लकी, शुकबई, इन सम्पूर्ण ओषधियों को पीसकर, शरकण्डे के ऊपर लपेट कर दो के आकार (प्रारम्भ, अन्त में पतली बीच में मोटी) की अंगूठे के बराबर मोटी आठ अंगुल की लम्बी वर्ति (बाती) बनानी चाहिए । इसके पश्चात् उसे छाया में सुखा करके, घी या तेल आदि स्नेह से गीला करके धूम-नेत्र उपकरण की सहायता से, इस सुखकारक प्रयोगिक धूम्र का सेवन करना चाहिए ।

श्वेता ज्योतिष्मती चैव हरिताल मनः शिला ।
गन्धाश्चा गुरुपत्राद्या धूमं मूर्धविरेचने ।।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शिरोविरेचनार्थ धूम सेवन के लिए- श्वेता (अपराजिता), ज्योतिष्मती (मालकंगनी), हरताल, मैनसिल, अगर, तेजपत्र आदि से वर्ति (बाती) का निर्माण करके उपयोग किया जाता है ।

औषधि धूम्र की गर्मी शरीर में बाहर से पहुँचाकर पसीना निकालने की विधि भी धूम्र सेवन विधान के ही अन्तर्गत आती है । मुख, नासिका मार्ग से धुँआ श्वांस मार्ग से शरीर में पहुँचाने का अपना लाभ है । इसी प्रयोग का दूसरा पक्ष यह है कि ओषधि वाष्प का प्रयोग पीड़ित अवयवों पर किया जाय, और उनके भीतर जमा हुए विकृत विजातीय द्रव्य को बाहर निकालने के लिए 'स्वेदन' कराया जाय । यह क्रिया अभी भी व्रण, सूजन, जकड़न, त्वचा रोग दूर करने के लिए गाँव-गाँव प्रयोग होती है । सुश्रुत और वाग भट्ट में इसका सुविस्तृत वर्णन है ।

चरक संहिता में 'अग्नि-स्वेदन' की १३ विधियों का वर्णन है, जो इस प्रकार है:-

संकरः प्रस्तरो नाडी परिषेकोऽर्वगाहनम् ।
जेन्ताकोऽश्मधन कर्षूः कुटी भूः कुम्भिकैवच ।
कूपो होलाक इत्येते स्वेदयन्ति त्रयोदश ।।

१.संकर स्वेद २. प्रस्तर स्वेद ३. नाड़ी स्वेद ४. परिषेक स्वेद ५. अवगाहन स्वेद ६. जेन्ताक स्वेद ७. अश्मधन स्वेद ८. कर्षू स्वेद ९. कुटी स्वेद १०. भूस्वेद ११. कुम्भी स्वेद १२. कूप स्वेद तथा १३. होलाक स्वेद इस प्रकार यह १३ स्वेद है ।

सुश्रुत के उपर्युक्त तीन स्वेदों में ही इनका अन्तर्भाव हो जाता है ।

बागभट्ट में कुछ उल्लेख इस प्रकार मिलते है-

'तापोऽग्नि तप्तवसनफाल हस्त तलादिभिः ।

-अ० ह० सू० अ० १७

अग्नि से तपाई वस्तु, रुई, धातुओं की पट्टी, ईंट, पत्थर, बालू,नमक की पोटली तथा निर्धूम अग्नि आदि के ताप से शरीर सेंकने को ताप स्वेद कहते हैं ।

चरक-संहिता में वर्णित-संकर व प्रस्तर स्वेद भी इसी के अन्तर्गत आ जाता है-

तत्र वस्त्रान्तरित तैरवस्त्रान्तरितैर्वा पिण्डैर्यथोक्तै रूपस्वेदनं सकरस्वेद इति विधात् ।।

अर्थात्-(पिण्डाकार में पत्थर या बालू, धूलि, धान की भूसी या लोहे के चूर को अग्नि से तप्त करके)इन द्रव्यों से पिण्ड बनाकर उन्हें वस्त्र में रख कर या बिना वस्त्र में रखे हुए-शरीर में ताप पहुँचाने की क्रिया को संकर स्वेद कहा जाता है ।

शूकशमी धान्य पुलाकानां बेशवारपायसकृश रोत्कारिकादीनां वा प्रस्तरे कौशेयाविकोत्तरप्रच्छेदे पञ्चागुलोरु बूकार्कपत्र प्रच्छेदे वा स्वप्यक्त सर्वगात्रस्य शयानस्योपस्वेदनं प्रस्तर स्वेद इति विद्यात् ।।

'प्रस्तर-स्वेद' उसे जानना चाहिए, जिसमें शूक धान्य (गेहूँ जौ आदि) शमी धान्य (उड़द मूँग धान्य आदि) पुलाक (क्षुद्र धान्य) इनको उबाल कर अथवा गर्म-गर्म वेशवार खिचड़ी हलुआ आदि को एक लम्बे पत्थर या अन्य किसी फलक पर उतने दूर तक फैलाया जाता है जितने दूर तक व्यक्ति आसानी से लेट सके, उसके ऊपर रेशम, ऊन या सफेद अथवा लाल रेंड (एरण्ड) पत्तों को वातनाशक तेल लगाकर ऊपर से रेशम या एरण्ड के पत्तों को ओढ़ ले, तो सोये हुए व्यक्ति का स्वेदन हो जाता है ।

भाप द्वारा सेक करने की विधि को ऊष्म-स्वेद कहा जाता है । चरक संहिता के १३ अग्नि स्वेदों में से नाड़ी जेन्ताक, अश्मधन, कर्षू, कुटी, भू, कुम्भी, कूप, होलाक-इन नौ स्वेदों का समावेश हो जाता है -

आ० सुश्रुत ने इसके विषय में लिखा है-

सुखापपिष्टं स्वभ्यक्तं गुरु प्रावरणावृतम् ।
हस्ति शुण्डिकया नाड्या स्वेदयेत् वातरोगिणम् ।।

'वायु-विकार' वाले व्यक्ति को सुखपूर्वक बैठे हुए (वात नाशक) तेल लगाकर, लम्बे से चद्दर द्वारा ढका हुआ, (तीन जगह से टेढ़ी) हाथी के सूँड़ के आकार की नाड़ी (नली) से स्वेदन करना चाहिए ।

चरक संहिता में भी इसी प्रकार की विधि व्यवस्था बताई गई है-

स्वेदनद्रव्याणां...वाष्पमनुद्रमन्त्यामुत्क्वथितानां नाड्या.....वातहरसिद्धस्नेहाभ्यक्तगात्रो वाष्पमुपहरेतु .....सुख स्देदयतीत नाड़ी स्वेदः ।'
खानयेच्छयनस्याधः कर्षूं स्थान विभागवित् ।
दीप्तैरधूमेरङ्गारैस्तां कर्षूं पूरयेत्ततः ।।
तस्यामुपरिशय्यायां स्वपन् स्विद्यतिना सुखम् ।।

'कर्षू स्वेद' की विधि यह है कि स्वेद योग्य व्यक्ति की खाट के नीचे एक गड्ढा खोदकर, उसमें धूम रहित अंगारों को भर दिया जाय । इस प्रकार उसे खाट पर सोये हुए व्यक्ति का सुखपूर्वक स्वेद हो जाता है ।

'कर्षू ' का तात्पर्य आधे घड़े के आकार वाले गड्ढे से होता है, जो नीचे अधिक चौड़ा ऊपर संकरे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मुख वाला होता है । यह गड्ढा इतना बड़ा होना चाहिए जिस पर खाट आसानी से बिछायी जा सके और गर्मी व्यक्ति के सम्पूर्ण शरीर में लग सके । पुनः उस पर बिछाकर या वातनाशक एरण्ड आदि की पत्ती बिछाकर शयन कराने से स्वेदन हो जाता है ।

कुम्भी स्वेद का चरक संहिता में इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है-

कुम्भी वात हर क्वाथपूर्णा भूमौ निखानयेत् ।
अर्धभाग विभाग वा शयनं तत्र चौपरि ।।
अथ कुम्भूयां सुसन्तप्तान् प्रक्षिपेदयसोगुडान् ।
प्राषाणान् वोष्मणातेन तत्स्थः स्विद्यति नासुखम् ।।

वातनाशक क्वाथ से भरे हुए घड़े को जमीन में आधा या तीन भाग गाड़ देना चाहिए । तत्पश्चात् अत्यधिक गर्म किये हुए लोहे के गोले को उसमें डाल देना चाहिए जिससे उसमें से भाप निकलने लगेगी, और तब उस घड़े के ऊपर खाट या मोढ़ा रखकर वातनाशक तेल का लेप करके व एक चद्दर ओढ़ कर लेट या बैठ जाना चाहिए, जिससे नीचे की भाप से स्वेदन हो जायेगा इसी को 'कुम्भी स्वेद' कहा जाता है ।

कूप स्वेद की विधि बताते हुए आ० चरक ने लिखा है-

कूप शयन विस्तारं द्विगणं चापि वेधतः ।
देशे निवाते शस्ते च कुर्यादन्तः सुमार्जितम् ।।
हस्त्यश्यगोखरोष्ट्रानां करीषैदग्धपूरिते ।
स्ववच्छन्नः सुसंस्तीर्णऽभ्यक्तः स्विद्यतिना सुखम् ।।

हवा के तीव्र प्रकोप से रहित, समतल भूमि में खाट की लम्बाई चौड़ाई के अनुसार एक गड्ढा (कुँआ) दूनी गहराई वाला खोदकर उसे साफ सुथरा बनाकर उसमें हाथी, घोड़ा गाय, गधा और ऊँट के गोबर को डालकर जला दें, जब वह जलकर धूम रहित हो जाय, तब उसके ऊपर खाट बिछाकर वातनाशक तेलों का मर्दन किया हुआ व्यक्ति एक चद्दर ओढ़कर लेट जाय तो स्वतः सुखपूर्वक स्वेदन हो जाता है-यही कूप स्वेद है ।

जब जल आदि द्रव पदार्थों को गर्म करके रोगी का स्वेदन किया जाता है, तो उसे द्रव-स्वेद कहा जाता है ।

चरक संहिता में इसके अन्तर्गत क. परिषेक व ख. अवगाहन दो स्वेदों का वर्णन है-

वातिकोत्तर वातिकानां पुनर्म् लादीनामुत्क्वार्थः सुखोष्णैः कुम्भीर्वर्षणिकाः प्रनाडीर्वा पूरयित्वा यथार्हसिद्ध स्नेहम्यक्त गात्रं वस्त्रावच्छन्नं परिषेचयेदिति परिषेकः ।

वात प्रधान व्यक्ति के लिए वातनाशक जड़ी-बूटियों का गर्म-गर्म क्वाथ बनाकर, छोटे-छोटे छिद्रों वाले एक घड़े में रखकर, वातनाशक तेल लगाकर, एक कपड़ा ओढ़कर ऊपर से उस क्वाथ को छिद्रों द्वारा गिराने से सुखपूर्वक स्वेदन हो जाता है, इस प्रक्रिया को परिषैचन (स्नान) करने के कारण परिषेक विधि कहते हैं ।

वातहरोत्क्वाथ क्षीर तैलघृतपिशितरसौष्ण सलिलकोष्ठकावगाहस्तु यथोक्त एवावगाहः ।।

टबबाथ की तरह से किसी पात्र में वातनाशक क्वाथ, दूध, तैल, घृत, मांस रस या गर्म जल भर कर उसमें प्रवेश करके स्वेदन करने को अवगाहन स्वेद कहते हैं ।

सुश्रुत में भी लगभग ऐसी ही विधि बतायी गयी है -

द्रवस्वेदस्तु वातहरद्रव्य क्वाथपूर्णे कोष्ठे कटाहे, द्रोण्या वाऽवगाह्य स्वेदयेत् ।

-सु० चि० अ० ३२

'वातनाशक' द्रव्यों के क्वाथ से परिपूर्ण कोष्ठ कड़ाह या द्रोण में अवगाहन (प्रवेश) करके स्वेदन करने को अवगाहन विधि कही जाती है ।

'चरक संहिता' में स्वेदन करने के लिए कई प्रकार के स्थानों का निर्देश हुआ है-

भूगृहेषु व जेन्तांकेपूष्णगर्भगृहेषु च ।
विषमाङ्गारतप्तेषु स्वभ्यक्तः स्विद्यते सुखम् ।।

अर्थात्-धूम रहित अँगारों से तपाये हुए भूग्रह (तहखाना) में, जेन्ताक में, उष्ण गर्भग्रह में, सम्पूर्ण शरीर में वातनाशक तेल का मर्दन करके सोने से सुखपूर्वक स्वेदन हो जाता है ।

ओषधियों को जौ, तीसी, गेहूँ आदि के साथ जल सहित पकाया जाय और उसकी पोटली बनाकर पीड़ित स्थान को सेका जाय उसे 'उपनाह' कहा गया है ।

प्राकृतिक चिकित्सा में वाष्प उपचार के अनेकों विधान हैं-आयुर्वेद में ओषधियों को पानी में उबालने और उसकी भाप से पीड़ित अंगों का सेक करने का उल्लेख है । पोटली से सेक भी इसी के अन्तर्गत आता है । गरम बर्तन में ओषधियाँ डालकर ओषधियों में गरम ईंट पत्थर धातु खण्ड आदि डालकर उसकी भाप का उपयोग करना आकार-प्रकार में भिन्न-भिन्न दीखते हैं पर उन सबका मूल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उद्देश्य एक ही है । भाप का शरीर के भीतर एवं बाहर प्रवेश कराना-उससे स्वेदन आदि की कई प्रतिक्रियायें होती हैं और उनसे रोग निवारण में सहायता मिलती है । इन सभी विधानों को यज्ञोपचार प्रक्रिया के अन्तर्गत ही सम्मिलित समझा जाना चाहिए । यज्ञोपचार में सूक्ष्मता की विज्ञान सम्मति पद्धति ही काम में लाई जाती है ।

यज्ञीय वातावरण का स्वास्थ्य पर प्रभाव

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं
हेमन्ताञ्छतमु वसस्तान् ।
शतं तइन्द्रो अग्निः सविता वृहस्पतिः
शतायुष हविषाहार्ष में नम् ।

-ऋग०

हे रोगी तू शत शरद, शत हेमन्त और शत बसन्तों तक दिन-दिन वृद्धि पाता हुआ जीवित रह । इन्द्र, अग्नि, सूर्य और वृहस्पति आदि सारे देव तेरे इस शरीर को सौ वर्षों तक जीवन धारण करने के लिये आहुतियों के बल पर मृत्यु-मुख से वापस ले आवें ।

ऋग्वेद की इस ऋचा पर ऋषि ने सूक्ति द्वारा रोगी को यज्ञ के आधार पर निरोग एवं शतायु होने का निर्देश किया है ।

यह निर्देश केवल यज्ञ की महिमा स्थापित करने अथवा यज्ञ-धर्म को प्रोत्साहित करने के लिये यों ही नहीं कर दिया गया है, बल्कि इसके पीछे एक आयुर्वेदिक तथ्य निहित है जो कि आधुनिक प्रयोगों पर खरा उतर कर विज्ञान सम्मत सिद्ध हो चुका है ।

शरीर रोगों पर यज्ञीय वातावरण का क्या प्रभाव हो सकता है और वह रोगों को रोकने अथवा उनका निराकरण करने में कहाँ तक सफल हो सकता है इसे देखने के लिये एक प्रयोग किया गया-

काँच की बारह शीशियों को वैज्ञानिक ढङ्ग से शुद्ध एवं स्वच्छ दो-दो शीशियों में दूध, मांस फलों का रस आदि छः प्रकार की वस्तुयें भरकर छः शीशियाँ उद्यान के उन्मुक्त वायु मण्डल में और छः शीशियाँ यज्ञीय वातावरण में रख दी गईं । कुछ समय बाद उद्यान के वायु मण्डल में रखी शीशियों की चीजों में सड़न पैदा होने लगी जब कि यज्ञीय वातावरण की शीशियों की वस्तुयें शुद्ध बनी रहीं । उनमें सड़न तब प्रारम्भ हुई जब उद्यानीय वातावरण में रखी शीशियों की सारी चीजें सड़-गल गईं । इस प्रयोग का परिणाम प्रकट करता है कि शुद्ध ओषजन युक्त वायु की अपेक्षा यज्ञीय वायु में रोग-रोधक शक्ति अधिक होती है ।

प्रायः देखा जा सकता है कि जो व्यक्ति नियम पूर्वक नित्य प्रति हवन किया करते हैं वे दूसरों की अपेक्षा अधिक निरोग रहा करते हैं इसका एक कारण जहाँ जीवन की नियमितता एवं भावना की पवित्रता है वहाँ एक वैज्ञानिक कारण यह भी है कि हवनकर्त्ता को नियमित रूप से यज्ञ-पूत वायु भी मिलती रहती है जो अपनी शक्ति से शरीरस्थ रोगाणुओं को नष्ट कर और नये जीवाणुओं को प्रवेश करने से रोकती रहती है । इन प्रयोगों तथा अनुभवों के आधार पर विश्वास किया जा सकता है कि अन्य उपचारों के साथ-साथ यदि यक्ष्मा आदि असहाय अथवा किसी अन्य प्रकार के जीर्ण रोगों से ग्रस्त व्यक्ति उपयुक्त ओषधियों द्वारा नित्य प्रति हवन भी करते रहें तो निश्चय ही वे रोग-मुक्त होकर आरोग्य लाभ कर सकते हैं ।

प्रायः जीर्ण रोगों से ग्रस्त लोग जल्दी ठीक नहीं होते । बहुत कुछ उपचार करने के बाद भी कोई लाभ नहीं होता । डाक्टर लोग जवाब दे देते हैं और कोई उपाय न देखकर रोगी जीवन से निराश हो जाते हैं । पुराने रोगों के ठीक न होने का एक विशेष कारण है कि रोग के सूक्ष्म कीटाणु शरीर के किसी अङ्ग की भीतरी पर्त में स्थायी रूप से बस जाते हैं और धीरे-धीरे रोगी की जीवनी शक्ति नष्ट करते रहते हैं । इन रोगाणुओं की सूक्ष्मता का इससे ही अनुमान लगाया जा सकता है कि एक खस-खस के दाने पर बीस अरब कृमि चढ़ जाते हैं । ऐसे सूक्ष्म कीटाणु शरीर की किसी भीतरी पर्त में निर्लिप्त घर बनाये अपना काम किया करते हैं । शरीर के उन भीतरी भागों में रक्त के भी बहुत ही सूक्ष्म कण कठिनता से पहुँच पाते हैं किन्तु दवा दी जाती है स्थूल रूप में । इससे उनका उन भीतरी भागों में सूक्ष्म कीटाणुओं तक पहुँच पाना सम्भव नहीं होता । रोगी दवा पीता-खाता रहता है । कोई लाभ नहीं होता । निदान उसे विवश होकर जीवन से निराश हो जाना पड़ता है ।

यह निश्चित है कि किसी स्थूल वस्तु की अपेक्षा उसके सूक्ष्म रूप का प्रभाव सैकड़ों गुना बढ़ जाता है । इन्जेक्शन ओषधि का सूक्ष्म रूप है । यही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण है कि पुराने और असाध्य रोगों में डाक्टर अधिकतर इंजेक्शनों की ही व्यवस्था किया करते हैं । इंजेक्शन स्थूल ओषधि की अपेक्षा अधिक प्रभाव उत्पन्न करता है । वैद्य लोग ओषधि की शक्ति बढ़ाने के लिये उसे महीनों खरल में घुटवाते अथवा उसको भस्म रूप में परिणित करवाया करते हैं । आयुर्वेद में इसी उद्देश्य से ओषधियों को फूँक कर भस्म बनाने का नियम है । होमियोपैथी के आविष्कर्त्ताओं ने ओषधि की शक्ति बढ़ाने के लिये ही उनकी "पोटेन्सी" तैयार करने का नियम बनाया है । उनका कहना है कि 'शुगर आफ मिल्क' अथवा 'स्प्रिट' में घोटने अथवा झटका देने से किसी ओषधि का जितना सूक्ष्म भाग किया जायेगा उसकी शक्ति उतनी ही बढ़ जायेगी । कारण यह है कि इस विधि से ओषधि की गुप्त ओषधियाँ उभर आती हैं । सभी जानते हैं कि ऊँची पोटेन्सी की होमियोपैथिक दवा की एक मात्रा कई-कई महीने अपना प्रभाव करती रहती है, जब कि कम पोटेन्सी की दवा की कई मात्राएँ एक दिन में दी जाती हैं । जीर्ण अथवा असाध्य रोगों में होमियोपैथिक की दवा ऊँची पोटेन्सी में ही दी जाने का विधान है । यह तो रही ओषधियों को घोटने आदि की बात । हम सब नित्य प्रति के व्यवहार में देख सकते हैं कि जिस भोजन को खूब चबा कर खाया जाता है वह अधिक लाभकर होता है । डाक्टरों का कहना है कि अच्छी तरह चबाने से जहाँ भोजन अन्य अनेक प्रकार के लाभ करता है वहाँ उसकी गुप्त प्राण-शक्ति उभर आती है जिससे थोड़ी मात्रा में किया हुआ भोजन भी अधिक बलदायक होता है । उसका अधिकांश भाग तत्व रूप में परिणित हो जाने से मल कम बनता है जिसके कारण शरीर स्वस्थ तथा निरोग रहता है । इस प्रकार जिस वस्तु को जितना ही सूक्ष्म किया जाता है उसकी शक्ति भी उतनी ही बढ़ जाती है । अणुओं की शक्ति इसी सूक्ष्मता के सिद्धान्त पर अमोघ एवं अपरमित हो जाया करती है ।

कोई भी ओषधि कितनी ही खरल में क्यों न घोटी-पीसी जाये या कितनी देर ही क्यों न उबाली जाये उसके परमाणु उतने सूक्ष्म नहीं हो सकते जितने कि हवन द्वारा अग्नि में जलाने से । उदाहरण के लिये एक मिर्च को ले लीजिये एक पूरी मिर्च एक आदमी आसानी से खा सकता है । उसका प्रभाव जो कुछ थोड़ा-बहुत होगा वह उस एक खाने वाले पर ही होगा । किन्तु जब उसी मिर्च को किसी चीज में कूटकर महीन किया जाता है तब उसका प्रभाव बढ़ जाता है और आस-पास के चार-छः आदमी प्रभावित हो उठते हैं । पर जब उसी मिर्च को आग में जलाया जाता है तो उसका प्रभाव इतना बढ़ जाता है कि आस-पास के घरों तक के लोग प्रभावित हो जाते हैं । इसी प्रकार जो ओषधि अग्नि में हवन की जाती है उसके तत्त्व सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होकर बहुत अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं । अग्नि में जलाये जाने से ओषधि के सूक्ष्म परमाणु न केवल रोगों के सूक्ष्म जीवाणुओं को ही नष्ट कर सकते हैं बल्कि वे हर उस स्थान पर पहुँच कर अपना प्रभाव डाल सकते हैं जहाँ पर रोगाणु शरीर के गुप्त से गुप्त भागों में अपना स्थान बनाकर मनुष्य को असाध्य रोगी बना दिया करते हैं । रोगों के कृमि कितने ही सूक्ष्म क्यों न हों पर वे वायु से सूक्ष्म कदापि नहीं हो सकते । शरीर के जिस भीतरी भाग में रोग के कीटाणु पहुँच सकते हैं उसमें वायु तो बिना किसी बाधा के जा ही सकती है । हवन की हुई ओषधियों के सूक्ष्म तत्त्व उसी की तरह सूक्ष्म होकर वायु में मिल जाते हैं जो श्वांस द्वारा शरीर में पहुँच कर रोगों का नाश करते हैं । यज्ञ से उत्पन्न ओषधियों के लाभकारी तत्त्व प्रभाव रूप में ही वायु के साथ शरीर में जाते और लाभ करते हैं । यही कारण है कि नित्य नियमित यज्ञ करने वाले लोग अन्यों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ एवं निरोग रहते हैं ।

क्षय रोग का रोगी जब असाध्य हो जाता है, उस पर कोई भी ओषधि किसी रूप में लाभ नहीं करती तो डाक्टर उसे पहाड़ पर जाने का परामर्श दिया करते हैं । इसका कारण यही होता है कि ओषधियों के प्रभाव से भरी हुई पहाड़ों की ओषजन वायु इतनी सूक्ष्म होती है कि वह शरीर के किसी भी सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग में जाकर रोगी को लाभ करती है । उद्यानों अथवा पहाड़ों की उन्मुक्त वायु को इसीलिये स्वास्थ्य दायक माना जाता है कि उसमें वनस्पतियों तथा ओषधियों का सूक्ष्म प्रभाव विद्यमान रहता है ।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के आधार पर सिद्ध हो चुका है कि क्षय जैसे अनेक घातक रोगों की सर्वोत्तम ओषधि ओषजन युक्त वायु ही है । ओषजन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वायु में जहाँ अन्य अनेक स्वास्थ्य दायक गुण होते हैं वहाँ उसमें एक सुखाने का भी गुण होता है । यह वायु रोगी के शरीर में जाकर जहाँ रोगाणुओं का नाश करती है वहाँ फेफड़ों आदि में पड़ गए घावों को सुखाती भी है ।

किन्तु प्रकृति की उन्मुक्त वायु में दिशाओं की गति के अनुसार भिन्नता भी होती है । पूर्व से आने वाली वायु जहाँ क्षत को सुखाती है वहाँ पश्चिमीय वायु उसे हरा कर देती है । बरसाती वायु तो हर प्रकार के क्षत के लिये हानिकारक मानी जाती है । इस भिन्नता तथा ऋतु वैभिन्य के कारण प्रकृति की ओषजन युक्त वायु भी हर समय हर प्रकार से लाभकारी नहीं हो सकती । उसके लाभ के लिये उसकी गति तथा ऋतुओं पर निर्भर रहना पड़ता है । एक यज्ञीय वातावरण ऐसा होता है जिस पर ऋतु अथवा दिशा का कोई प्रतिबन्ध नहीं रहता । वह हर समय हर प्रकार से लाभकारी ही होता है ।

साथ ही एक विशेषता और भी होती है-वह यह कि यज्ञ में हवन की हुई एक ही ओषधि अनेक रोगों पर लाभकारी सिद्ध होती है । ईश्वर ने एक ओषधि में एक ही गुण नहीं रखा उसमें अनेक गुण होते हैं । होमियोपैथिक के जानकार जानते हैं कि उसकी एक ही ओषधि अनेक रोगों की अवस्था विशेष में दी जाती है और वह काम करती है । पीसने-कूटने अथवा उबालने से ओषधि का एक स्थूल तत्त्व ही प्राप्त होता है वाकी सब फोकस अथवा छिलका के रूप में बेकार चला जाता है । हवन की हुई किसी ओषधि का कोई भी तत्त्व किसी प्रकार भी नष्ट नहीं होता । वे सारे के सारे अपनी पूरी शक्ति के साथ विस्फुरित होकर वायु मण्डल में मिल जाते हैं ।

इस प्रकार किसी भी रोग के रोगी यदि नित्य प्रति विशुद्ध ओषधियों के साथ यज्ञ करें तो कोई कारण नहीं कि वे शीघ्र ही स्वस्थ न हो जायें । केंसर, तपेदिक अथवा कारबंकल जैसे रोगों के रोगियों को चाहिये कि वे अन्य हवन सामग्री के साथ इन रोगों की ओषधि विशेष के साथ नित्य प्रति यज्ञ किया करें । इससे उनके रोग के सदा-सर्वदा के लिये ऋषि ने निरोग होने, स्वस्थ रहने तथा सौ साल तक जीवित रहने के लिये यज्ञ करने का निर्देश किया है ।

इस संदर्भ में रोगों, कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए यज्ञ धूम्र की शक्ति को प्राचीनकाल में भली प्रकार परखा गया था । इसके उल्लेख शास्त्रों में स्थान-स्थान पर उपलब्ध होते हैं । यथा-

दिवि विष्णु व्यक्तिस्त जागनेत छंदसा ।
ततो निर्भयाक्ता योऽस्यमान द्वेष्टि यंच वचं द्विष्मः ।
अन्तरिक्षे विष्णुव्यक्रंस्त त्रेप्टुते छन्दसा ।
सतो नर्भक्तो ।
पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्रस्तंगायणे छन्दसा ।
अस्यादन्नात् । अस्ये प्रतिष्ठान्ये । अगन्य स्वः संज्योतिषाभूम ।

-यजु. २/२५

अर्थ-अग्नि में प्रक्षिप्त जो रोगनाशक, पुष्टि प्रदायक और जलादि संशोधक हवन सामग्री है, वह भस्म होकर वायु द्वारा बहुत दूर तक पहुँचती है और वहाँ पहुँचकर रोगादिजनक वस्तु को नष्ट कर देती है । इस हेतु वेद में कहा जाता है, जो वस्तु हम लोगों से द्वेष करती है एवं जिससे हम लोग द्वेष करते हैं, वह वस्तु यज्ञ के द्वारा नष्ट हो जाती है । आगे भी यह भाव समझना चाहिए । अर्थात् यज्ञ से इहलौकिक और पारलौकिक दोनों कार्य सम्पन्न होते हैं ।

वातावरण में संव्याप्त विषाणुओं-वायरसों की दुनिया विचित्र है । संरचना और प्रकृति को देखकर आश्चर्य होता है कि यह पुच्छ जीवधारी कितने नगण्य किन्तु कितने सक्रिय और कितने सशक्त हैं । काया के अनुपात से इन क्षुद्र जीवों में जितनी क्रियाशीलता, दृढ़ता और द्रुतगामिता है उसी अनुपात से यदि मनुष्यों को भी ऐसी ही समर्थता मिली होती तो वे तथाकथित देव-दानवों की अपेक्षा कहीं अधिक बलवान और चमत्कारी दिखाई पड़ते ।

वैदिक साहित्य में इन्हीं विषाणुओं को असुर- या राक्षस कहा गया है । स्वस्थ जीवाणुओं पर आक्रमण करके उन्हें परास्त करना उनका रक्त-मांस खा जाना यही इनका काम है । स्वस्थ कणों को भी इस आक्रमण से सतर्क रहना पड़ता है और अवसर पड़ने पर उनके साथ डटकर लोहा लेना पड़ता है । यही पौराणिक उपाख्यानों में वर्णित देवासुर संग्राम है । 'यज्ञ' के महात्म्य प्रकरण में उसके द्वारा असुरों का संहार होने की बात स्थान-स्थान पर कही गई है । ऐसे अनेक रसायनों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वर्णन है जिन्हें देव संज्ञा दी गई है और कहा गया है कि उनके प्रभाव से इन असुर आक्रान्तों का अन्त होता है । इस सन्दर्भ में कई जड़ी-बूटियों को ऋषि एवं देव संज्ञा दी गई है । यज्ञ को असुरों को निरस्त करने वाली अत्यन्त प्रभावोत्पादक विद्या बताया गया है । विश्वामित्र का असुर विरोधी यज्ञ करना और उसका सहयोग संरक्षण करने के लिए राम-लक्ष्मण का पहुँचना बताता है कि ताड़का, सुबाहु, मारीच आदि को उस प्रयोग के द्वारा किस प्रकार निरस्त किया गया । असुर जातियों का यक्ष्मा, दमा, गठिया जैसे रोगों के रूप में अलंकारिक ढङ्ग से वर्णन किया गया है ।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में इन रोग कीटकों से बचने और मारने के उपाय बताये गये हैं वे आंशिक रूप से ही सफल हो सकते हैं । कारण कि यह रोग परिवार इतना सूक्ष्म और इतना व्यापक है कि उससे जूझना और जीतना टेढ़ी खीर है । यह कीटाणु हवा में, पानी में, धूल में भरे पड़े हैं । आहार और श्वांस के साथ वे बेरोक टोक शरीर के किसी भी कोने में पहुँच सकते हैं । कपड़ों में शरीर में कहीं न कहीं से आकर लग सकते हैं । आकाश में उनकी गति निर्वाध है । वे बिना पंखों के हवा पर सवार होकर कहीं भी पहुँच सकते हैं । इतनी बड़ी सुरक्षा पंक्ति कैसे बने कि इन दशों दिशाओं से बरसने वाले रोग कीटकों से सुनिश्चित बचाव हो सके ।

विषाणुओं से बचने के लिए रोगियों को न छूना उनकी प्रयोग की हुई वस्तुओं को काम में न लाना, खाद्य पदार्थों को पकाने एवं खाने में हाथ का प्रयोग न करना, पानी को उबालकर पीना-जैसी सावधानी के उपाय बताये जाते हैं । सिद्धान्तः इसमें किसी का विरोध नहीं हो सकता किन्तु व्यवहारतः इस प्रकार के बचाव के करने पर भी सुरक्षा की कोई गारण्टी नहीं है । एक द्वार बन्द कर देने पर भी उनके प्रवेश के लिये हजार द्वार खुले हुये हैं । शरीर को वस्त्रों से बचाया जा सकता और त्वचा सम्पर्क की रोकथाम हो सकती है किन्तु श्वांस के अन्न जल के ऊपर पहरा किस तरह बिठाया जाय ?

अशक्त रोगियों की सेवा सहायता परिचर्या, चिकित्सा स्वच्छता के लिये उन्हें छुए बिना भी काम नहीं चलता । मनुष्य इतना हृदयहीन हो ही नहीं सकता कि रोग कष्ट से पीड़ित स्वजनों के प्रति इतनी निष्ठुरता बरतें कि उनका स्पर्श तक न होने दें । अस्पताल के कर्मचारी भी तो आखिर मनुष्य ही ही हैं । उनको भी तो रोगियों के शरीर वस्त्र और मल-मूत्र की सफाई करनी ही पड़ती है । यह सब बिना छुए या समीप जाये बिना कहाँ पूरा होता है । घर वाले बच जाँय और अस्पताल वाले मर जाँय यह बात भी कुछ जँचती नही । साबुन से हाथ धोने जैसी सतर्कता बरतने से इतना ही हो सकता है कि वे कीटाणु हाथ के माध्यम से शरीर में प्रवेश न करने पायें किन्तु नाक, आँख आदि अन्य छिद्रों के माध्यमों से उन्हें प्रवेश करने से कैसे रोका जा सकेगा ?

टीका लगाने की सार्थकता भी संदिग्ध है । एक तो शरीरगत स्वस्थता टीका में रहने वाले विजातीय द्रव्य को सहन नहीं करती और उसे प्रवेश करते ही मार भगाने का प्राण-पण से प्रयत्न करती है फलतः उनका देर तक शरीर में टिक सकना सम्भव नहीं होता । दूसरे यदि वह कुछ समय टिक भी जाय तो जीवनी शक्ति को भी दुर्बल बनाती है । फलतः सामान्य स्वास्थ्य की जो क्षति पहुँचती है वह प्रकारान्तर से रोगों के आक्रमण जितनी ही मंहगी पड़ती है ।

इन कठिनाइयों को देखते हुए सुरक्षा और निष्कासन दोनों ही दृष्टियों से यज्ञोपचार अधिक सरल और सुनिश्चित बैठता है । उसके माध्यम से शक्ति विशेष का ही नहीं जितने क्षेत्र में यज्ञ ऊर्जा फैलती हो उस सारे वातावरण को रोग कीटकों के आक्रमण से सुरक्षा दुर्ग की स्थिति में रखा जा सकता है ।

लन्दन में सम्पन्न हुई कामन वैल्थ हैल्थ कान्फ्रेंस में क्षय विशेषज्ञ डा० वैंजमिन ने बताया था कि संसार में विशेषतया आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़े देशों में क्षय रोग का आक्रमण तेजी से बढ़ रहा है और अन्य रोगों से मरने वालों की तुलना में इसी के द्वारा होने वाली मृत्युयें ही सर्वाधिक हैं ।

बी. सी. जी. उपचार के विशेषज्ञ डॉ० एण्डरसन का कथन है कि प्रायः एक तिहाई मौतें क्षय के कीटाणुओं से होती हैं । यद्यपि उन रोगियों के शरीरों में उभरे हुए लक्षणों के अनुसार उन्हें किसी अन्य रोग का मरीज कहा जाता है पर वास्तविकता यह है कि क्षय के कीटाणु ही अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपद्रव सामान्य की अपेक्षा अन्य प्रकार के लक्षण उत्पन्न कर देते हैं फलतः चिकित्सक रोगी का उपचार क्षय की अपेक्षा किसी अन्य रोग का करते रहते हैं ।

बड़े शहरों की नगर पालिकाओं में जन्म-मरण निमित्त रखा जाने वाला लेखा-जोखा है कि क्षय से मरने वालों की संख्या अन्य सब रोगों से अधिक है । बाल रोग विशेषज्ञों ने बच्चों में अधिक सूखा रोग जिगर बढ़ना-जुकाम तथा पतले दस्तों की बीमारी का गहरा पर्यवेक्षण करने पर यह पाया है कि वह चिह्न प्रायः क्षय रोग के अथवा उनके सजातीय कीटाणुओं द्वारा ही उत्पन्न किये गये होते हैं ।

क्षय जैसे ढीठ रोगों के उपचार में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि उसके कीटाणु हलकी दवाओं से मरते नहीं । तेज दवाओं से उनका विनाश तो होता है पर साथ ही सामान्य-स्वास्थ्य सन्तुलन भी बुरी तरह डगमगा जाता है । इन दवाओं से स्वस्थ जीवाणुओं को भी भारी क्षति पहुँचती है और रोग निरोधक शक्ति घट जाने से कई विचित्र रोग इस प्रकार जड़ जमाकर बैठ जाते हैं कि अनेक उपचार करते रहने पर भी टस से मस नहीं होते ।

क्षय के कीटाणु-माइको वैक्टीरिया ट्यूबर क्यूलोसिस बहुत ही सूक्ष्म तथा सुदृढ़ होते हैं । उन्हें नष्ट करने में वही रसायन काम कर सकते हैं जिनके कण इतने कीटाणुओं से भी सूक्ष्म तथा सशक्त हैं । सशक्त मारक रसायन तो कई ढूँढ़ निकाले गये हैं पर उनमें दो कमियाँ बनी रहती हैं, एक तो यह कि उनके परमाणु उतने सूक्ष्म नहीं होते जितने कि विष कीटक । दूसरे उनकी मारक शक्ति विवेक रहित होती है । वह मित्र-शत्रु का भेद नहीं करती और विषाणुओं की तरह पोषक और रक्षक जीवाणुओं का भी समान रूप से संहार करती है । ऐसी दशा में रोग कीटकों का नष्ट होना तो निश्चित नहीं होता पर स्वस्थ कणों को हानि तो अवश्य ही पहुँच जाती है ।

वैज्ञानिक साक्ष्य

हानिकारक गैसों की जानकारी बहुचर्चित और सर्वविदित है । जहरीले धुयें से दम घुटने, बन्द कुँओं में भरी गैस में उतरने वालों के प्राण निकल जाने, दुर्गन्ध युक्त वायु में स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने की घटनायें आये दिन सुनने को मिलती रहती हैं । युद्धों के समय जलने वाली बारूद के धुएँ से महामारियाँ फैलती हैं । मारक गैसें युद्धास्त्र की तरह प्रयुक्त होती हैं । यह हानिकारक पक्ष है । उपयोगी गैसें वातावरण को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हितकर भी बना सकती हैं । यज्ञ से ऐसी ही प्राणवान गैसें उत्पन्न होती हैं ।

पुलिस द्वारा भीड़ को भगाने के लिए अश्रु गैस का प्रयोग किया जाता है । गैस विज्ञान में उसे 'लाक्री मैटरी' वर्ग का कहा जाता है । इसी से मिलती-जुलती वमन उत्पन्न करने वाली सरनुटेटर वर्ग की गैसें हैं उनमें सबसे तेज 'डीफेनिल क्लीअर सीनें' है जिससे प्रभावित लोग हैजा के बीमारों जैसी दयनीय स्थिति में जा पहुँचते हैं । सूखी उबकाई, उलटी तथा हिचकी जैसी इसकी कई प्रतिक्रियायें होती हैं और प्रभावित व्यक्ति अपने ही कष्ट से उद्विग्न हो जाता है । उसके लिए संकट से छूटने का उपाय सोचने के अतिरिक्त और कुछ करते-धरते नहीं बनता ।

चमड़ी में फफोले उत्पन्न करने वाली ब्लिस्टर गैसें रोम-कूपों में होकर मांस-पेशियों तक जा पहुँचती हैं और भीतर भारी जलन उत्पन्न करती हैं । त्वचा पर आग से जलने जैसे छाले उठ पड़ते हैं । साँस के साथ रक्त में मिलकर शरीर को हर दृष्टि से अशक्त बना देने वाली गैसों में 'सियेनाइड' मिला रहता है । दम घोटने वाली गैसों में 'एसफिक्टियेन्ट' का प्रयोग बहुत होता है । उसके प्रभाव से गला रुँध जाता है और ऐसी घुटन अनुभव होती है मानों साँस का आवागमन ही रुकने वाला हो ।

प्रथम महायुद्ध के अन्त में हुई अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध संधि का दस्तावेज बर्साई सन्धि पत्र कहा जाता है उसके अनुच्छेद १७१ में विषाक्त गैसों के निर्माण, आयात एवं प्रयोग पर प्रतिवन्ध लगाया गया था पर दूसरे महायुद्ध में उसे ठुकरा दिया गया । इटली के अधिनायक मुसोलिनी ने इथोपिया युद्ध में मस्टर्ड गैस का प्रयोग किया था । उससे हजारों व्यक्ति अशक्त और अपंग बने थे । मरने वालों की संख्या भी कम नहीं थी । दूसरे महायुद्ध में अन्य देश भी गैस अस्त्र का प्रयोग करने पर उतारू हो गये थे पर आत्म रक्षा का उपाय न सूझने पर उसका प्रहार होते-होते रुक गया ।

रोगों के विषाणुओं से भरी गैसें ऐसी हैं जो किसी क्षेत्र में हैजा दस्त, उल्टी, शिर दर्द, जलन, ज्वर, अपच आदि बीमारियाँ देखते-देखते फैला सकती हैं । पिछले दिनों नई गैसों का आविष्कार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हुआ है वे अन्य यवयवों की अपेक्षा मस्तिष्क को अधिक प्रभावित करती हैं । प्रभावित मनुष्य संज्ञा शून्य, अर्ध विक्षिप्त और भयभीत जैसी स्थिति में जा पहुँचता है । अब क्या करना चाहिए यह समझ में ही नहीं आता और ऐसे आचरण करता है जिसके करने की कोई उपयोगिता नहीं थी । सारकी वर्ग के रसायन मानसिक विक्षिप्तता उत्पन्न करने के लिए प्रसिद्ध हैं । 'मेजे लाइन' मेथेढाइन' लीस रजिक गैसें विषों के सम्मिश्रण से बनी यह गैसें सामयिक विक्षिप्तता तो उत्पन्न करती हैं भविष्य के लिए भी उन्हें मन्द बुद्धि बना देती हैं । इसी प्रकार की दूसरी गैसें भी हैं जो रक्तचाप पक्षाघात जैसी बीमारियाँ उत्पन्न करती हैं और त्वचा की स्पर्शानुभूति को नष्ट कर देती हैं ।

आज का विज्ञान हानिकारक गैसें बनाना ही सीख पाया है । विनाश की दिशा में चल रहे यह प्रयत्न उलटे भी जा सकते हैं और ऐसे वायुमण्डल का सृजन भी कर सकते हैं जिससे सुखद सम्भावनाओं का जन्म हो सके । तत्वज्ञानी ऋषियों ने यज्ञ-विज्ञान को अनेकों आध्यात्मिक लाभों के अतिरिक्त भौतिक दृष्टि से भी उपयोगी पाया और उसका महात्म्य बताया है ।

चिकित्सा विज्ञानियों का ध्यान अब इस ओर आकृष्ट हुआ है । फ्राँस के एक आरोग्य शास्त्री ने शकर व गुड़ के धुँए से फिनायल की तरह विषाणुओं को मारने में सफलता पाई है । डॉ. टिलेट ने सुखाये हुए मीठे फलों के धुएँ को टाइफाइड जैसे रोगों की चिकित्सा की दृष्टि से बहुत ही उपयुक्त पाया है । चेचक जैसे रोगों की चिकित्सा में कभी फ्रांसीसी डाक्टर हेफकिन ने चिकनाई के धुँए को बहुत ही प्रभावोत्पादक पाया था । संसार के विभिन्न भागों में चिकित्सा शास्त्री इस अनुसंधान पर अधिक ध्यान दे रहे हैं कि भाप और धुएँ के उपचार से रोग कीटाणुओं से जूझने के लिए किस प्रकार उपयुक्त माध्यम बनाया जाय । इस खोज में उन्हें आशाजनक सफलता भी मिल रही है ।

यज्ञीय वातावरण का स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इस सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध चिकित्सा विज्ञानी डॉ. कुन्दनलाल अग्निहोत्री ने गहन अनुसंधान किया है । उनका कहना है कि जब हम अपने प्राचीन साहित्य के पृष्ठ उलटते हैं तो अपने पूर्वजों के लम्बे-चौड़े नीरोग शरीरों और सैकड़ों वर्ष की आयु का उल्लेख पाते हैं । वे न डाक्टरी पास करने विलायत जाते थे न करोड़ों रुपये की विलायती ओषधियाँ मँगाते थे, न युवा पुरुषों की आँख पर चश्मा था, न ९९ प्रतिशत पाएरिया और मन्दाग्नि ***(Dyspepsia)*** आदि के रोगी थे । ऐसी दशा में हमें यही कहना पड़ता है कि हमारे रोगी होने का सब से बड़ा कारण अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन और नित्य कर्म की अवहेलना करना और पाश्चात्य संस्कृति का अपनाना है । हमारी प्राचीन संस्कृति में नित्य कर्म पर बड़ा बल दिया गया है, यहाँ तक बताया गया है कि संध्या हवन न करने वाला पापी है । नित्य कर्म से जो आध्यात्मिक लाभ है, वह तो वर्णनातीत है । पर स्वास्थ्य विषयक लाभ भी इतना होता है कि इनको नियम पूर्वक करने वाला सदाचारी कभी किसी कठिन रोग में नहीं फँस सकता । अन्य यज्ञों को छोड़ केवल हवन यज्ञ की ही वैज्ञानिक परीक्षा हमें इसी परिणाम पर पहुँचाती है । यही कारण था कि हमारे वैद्य जिनको रोगियों से धन प्राप्त करने की इच्छा नहीं थी उन गृहस्थों का जो अपनी स्वस्थ अवस्था में भेंट-पूजा के साथ वैद्य की सेवा में उपस्थित होते थे, वैदिक दिनचर्या का जिसमें हवन यज्ञ भी था उपदेश किया करते थे और गृहस्थ लोग नित्य प्रति प्रातः सायं यज्ञ करके जहाँ संसार के रोगों का नाश करते थे, दूसरे के उपकार के विचार से उत्तम पदार्थ घृत, मोहन भोग इत्यादि हवन में डाल अपने भीतर परोपकार की वृत्ति को जाग्रत कर, जगत् में शान्ति फैलाते थे, वहाँ वैज्ञानिक नियमों के आधार पर स्वयं भी स्वास्थ्य लाभ करते थे । वैज्ञानिक ढंग पर हवन यज्ञ कैसे लाभ पहुँचाता है वह यहाँ संक्षेप में बताते है -

१-पदार्थ विद्या का यह सिद्धान्त है कि किसी वस्तु का नाश नहीं होता, किन्तु उसका रूप बदल जाता है । हवन में चार प्रकार के पदार्थ डाले जाते हैं ।

(क) पुष्टिकारक (ख) रोग नाशक (ग) सुगन्धित (घ) मिष्ट । हवन करते समय दूर बैठे मनुष्य की नासिका में भी सुगन्धि पहुँचती है, इससे पदार्थ विद्या के उपरोक्त सिद्धान्त की सचाई प्रकट होती है और ज्ञात होता है, कि उन वस्तुओं के परमाणु वायु में फैल गए । यह परमाणु, जब श्वांस द्वारा हमारी नासिका में जावेंगे तो रोग नाशक ओषधियों के होने से रोग का नाश करेंगे ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिष्ट और पुष्टिकारक ओषधियों के परमाणु पुष्टि देवेंगे और सुगन्धित ओषधियों के चित्त को प्रसन्न करेंगे और जब नित्य प्रति प्रातः सायं ऐसा होता रहेगा तो हम कभी भी रोगी न हो सकेंगे । यह थोड़ी बात नहीं है ।

२-आग जलाने से रोग कीटाणुओं का नाश होता और वायु की शुद्धि होती है- इस सिद्धान्त को हमारे पूर्वज तो प्राचीन काल से जानते थे । प्रसूति गृह में सर्वदा आग बनाए रखना, रसोई घर में बैठकर भोजन करना आदि रिवाज इसके प्रमाण हैं । परन्तु अब थोड़े काल से इस साईन्स को आधुनिक विद्वान भी समझने लगे हैं । प्रोफेसर मैक्समूलर साहब की पुस्तक फिजिकल रिलीजन के पाठ से विदित होता है कि यवन देश के तत्ववेत्ता ल्पूयकी ने आग को वायु शोधक माना है और इस पर उक्त प्रोफेसर साहब लिखते हैं कि आग जलाने की रीति गत शताब्दी तक स्काटलैण्ड में पाई जाती थी, तथा आयरलैण्ड और दक्षिणी अमेरिका में महामारी में अग्नि जलाने की प्रथा प्रचलित रह चुकी है । यूरोपादि में जितने प्रकार आजकल वायु शुद्धि के प्रचलित हैं उन में प्रायः "फायरस्टौब" (अंगीठियाँ) का उपयोग किया जाता है अतः दूषित वायु उष्ण होकर फैले और हल्की होकर गृह की खिड़की अथवा भिन्न मार्गों से दूर निकल जावे और उस की जगह तात्कालिक ठंडी वायु नीचे के द्वारों से आ सकेगी । साधारण अग्नि जलाने के तो इतने लाभ हैं । अब हवन में जो ओषधियाँ लगाई गई हैं, वे रोग नाशक भी हैं । अतः उनसे सैकड़ों ऐसे रोगों का बीज उनके उत्पन्न होने से पूर्व ही नष्ट हो जावेगा जो यदि प्रकट हो जाते तो कष्ट के साथ हजारों रुपये डाक्टरों की भेंट कराते और कभी-कभी तो उनका परिणाम मृत्यु होता । इस प्रकार हवन यज्ञ रोग नाशक और आयुवर्धक भी है ।

३-रक्त की अशुद्धि अनेक रोगों का कारण है । रक्त शुद्धि के लिए रोगी अनेक उपाय करते हैं । डाक्टर लोग कड़वी ओषधि पिलाते हैं, स्वादिष्ट भोजन छुड़वा देते हैं । इंजेक्शन लगाते हैं । फिर भी रक्त शुद्ध नहीं होता । इतना करने पर भी रक्त दोष के रोग दिन प्रतिदिन बढ़ ही रहे हैं, हवन में डाली हुई सोमलता चिरायता इत्यादि के सूक्ष्म परमाणु प्रातः सायं श्वांस द्वारा फुस्फुसों में पहुँच कर रक्त के दोषों को नित्य ही दूर करते रहते हैं, जिससे हवन करने वाले का रक्त सर्वदा शुद्ध रहता है और वह कभी भी रक्त दोष के रोग में नहीं फँस सकता और यदि कभी किसी बड़े अपव्यय से रक्त दोष हो ही जावे तो बिना ओषधि के केवल हवन से शुद्ध हो जाता है ।

(४) तपेदिक इत्यादि जब कोई कठिन रोग हो जाता है जिसमें ओषधि भी काम नहीं देती तो डाक्टर लोग रोगी को पहाड़ व समुद्र पर जाने का परामर्श देते हैं, इस कारण कि वहाँ की वायु में न केवल शुद्ध ओषजन है किन्तु उससे भी उत्तम भाग ओजोन होता है जो बड़ी उपयोगी गैस है और एक प्रकार की तीव्र आक्सीजन है । निर्मल वायु में यह बहुत अधिक पाई जाती है और अशुद्ध वायु में बहुत कम । ओजोन की पहचान उसकी गन्ध है, जो बहुत तीव्र होती है । यहाँ तक कि यदि वायु के पच्चीस लाख भाग हों और उसमें ओजोन केवल एक भाग हो तब भी उसकी विद्यमानता प्रकट हो सकती है । जङ्गल, वाटिका अथवा समुद्र की खुली हवा में श्वांस लेने से जो आनन्द प्रतीत होता है, यह उसी की विद्यमानता का फल है । अँग्रेजी भाषा में जिसे ओजोन कहते हैं, उसी को हम अपनी भाषा में शुद्ध प्राणप्रद अथवा सुगन्धित वायु कह सकते हैं । हवन करने पर वही आनन्द और उससे अधिक सुगन्धि प्रत्यक्ष प्रतीत होती है । अतः हवन करने वाला नित्य प्रति कुछ देर उस वायु में श्वांस लेता है जो ओजोन का भण्डार है । फिर ऐसे व्यक्ति को तपेदिक इत्यादि भयानक रोग सता ही नहीं सकते और जो इन रोगों में फँस चुके हैं वह भी कुछ अन्य साधनों के साथ हवन यज्ञ करने से निरोग हो सकते हैं ।

(५) यह सब जानते है कि पुष्ट शरीर न केवल रोगों से सुरक्षित रहता है, प्रत्युत जीवन के सारे आनन्द पुष्ट शरीर वाला मनुष्य ही भोगता है । हवन में जो पुष्टिकारक पदार्थ डाले जाते हैं, उनके सूक्ष्म परमाणु शरीर में पहुँच उसे पुष्ट बनाते हैं । पुष्टिकारक पदार्थों का खाना भी बल देता है । अतः इन्हें अवश्य खाना चाहिए पर उससे अधिक उपयोगी इनका हवन में जलाना है । जलाने में दो गुण विशेष हैं, प्रथम यह कि खाने में सम्भव है आप पुष्टिकारक पदार्थ अपनी शक्ति से अधिक खाकर लाभ के स्थान में हानि उठावें ; पर हवन में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

यह खटका नहीं क्योंकि इसके परमाणु सीधे रक्त में पहुँचते हैं और पाचन शक्ति पर कोई बोझ नहीं डालते । तब ही तो पुत्रेष्टि यज्ञ में जब खाने के पदार्थों से वीर्य पुष्ट नहीं होता और अधिक खाने से पाचन शक्ति बिगड़ती है, उस समय हवन यज्ञ में डाले पुष्ट पदार्थों के सूक्ष्म परमाणु सीधे रक्त में पहुँच कर वीर्य पुष्ट करते हैं । दूसरे हवन की उष्णवायु से परमार्जित वस्तुओं की स्वच्छता एवं स्थिरता बढ़ जाती है । यह अनुभव में आई हुई बातें हैं कि यज्ञ धूम से सुवासित किये हुए ऊनी या रेशमी कपड़ों में कीड़े नहीं लगते । यदि बोतल में हवन की वायु भरकर उसमें जल या कोई द्रव पदार्थ रखें तो वह बहुत समय तक नहीं सड़ता । हवन के धुऐं से सुवासित जल से धोये जाने पर सड़े गले घाव और फोड़े अच्छे हो जाते हैं । वायु परिवर्तनार्थ कतिपय रोगी पहाड़ों पर जाते हैं डाक्टर बताते हैं कि अमुक पहाड़ की वायु अधिक प्राणप्रद है क्योंकि उसमें आक्सिजन एवं ओजोन तत्व अधिक रहता है । जो लोग पहाड़ पर नहीं जा सकते वे हवन द्वारा ही शुद्ध वायु का वह लाभ प्राप्त कर सकते हैं ।

यह कहना ठीक नही कि-आग जलाने से कार्बन डायआक्साइड निकलती है और वह फेफड़ों को हानिकर होती है, इस मोटी बात को आज के साइंटिस्ट ही जानते हैं और हमारे ऋषि मुनि इससे परिचित न थे सो बात नहीं है । उन्होंने प्रत्येक विज्ञान का-वायु विज्ञान का भी विशेष अन्वेषण किया था और यज्ञ द्वारा अनेकों सूक्ष्म लाभ उत्पन्न करने के साथ-साथ इस फेफड़ों को हानि पहुँचाने वाली बात का भी पूरा ध्यान था । समिधाएँ केवल उन्हीं वृक्षों की ली हैं जिनकी गैस फेफड़ों के लिए हानिकारक नहीं होती । हवन सामग्रियाँ भी ऐसी हैं जो इस हानिकर वायु को बहुत कम मात्रा में पैदा करती हैं और लाभ दायक तत्वों की प्रचुरता के कारण उस हानिकारक दोष को दबा देती हैं ।

यज्ञ के आस पास जल सिंचन के लिए नाली होती है जिसमें भरा हुआ पानी उस कार्बन को खींचता है । इसी प्रकार यज्ञ के निकट जो मिट्टी के कलश स्थापित किये जाते हैं उनमें भरा हुआ जल भी इस कार्बन को खींचता है । मिट्टी के कलश की विशेष उपयोगिता यह है कि उसके भीतर भरा हुआ जल घड़े के बाहरी भाग को भी आर्द्र बना देता है और वह नमी घड़े की सारी दीवार को चारों ओर कार्बन गैस को खीचने एवं सोखने वाली बना देती है । इस प्रकार हवन के समय जो थोड़ी कार्बन गैस निकलती भी है वह जल की नाली एवं जल भरे हुए मिट्टी के कलशों में खिंच आती है । उसका हानिकारक प्रभाव मनुष्य को हानि पहुँचाने के लिए शेष नहीं रहता ।

रोगनाश में हवन कितना सहायक एवं उपयोगी होता है इस सम्बन्ध में प्रो० टिलवर्ट, डा० हेफकिन की खोजें बहुत उत्साह वर्धक हैं । उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टि कोण से अनेक वस्तुओं के धुएँ बहुत ही उपयोगी सिद्ध किये हैं । इनका मत है कि फार्मलिन नामक पदार्थ जो कि कीटाणु नाशन एवं संरक्षण के काम में लाया जाता है, वह लकड़ियों को जलाकर बनाई हुई गैस का द्रव रूप ही है । साधारण लकड़ियों की गैस बनी फार्मेलिन जब इतनी उपयोगी है तो हवन में प्रयुक्त होने वाली विशेष गुण वाले वृक्षों की विशेष समिधाओं का यज्ञ धूम कितना उपयोगी होता होगा इसका अनुमान लगाना कुछ कठिन नहीं है । इस विषय में आयुर्वेद का मत है कि जिस यज्ञ के प्रयोग से प्राचीन काल में राजयक्ष्मा रोग नष्ट किया जाता था आरोग्यता चाहने वाले मनुष्य को उसी वेद विहित यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिये ।

चरक ने क्षय चिकित्सा में खाने की ओषधि तथा अवगाहन अर्थात् चिकित्सा इत्यादि के उपाय वर्णन करने के पश्चात् उपरोक्त श्लोक द्वारा यज्ञ का विधान बताकर क्षय-चिकित्सा का विषय समाप्त किया है । इसका अर्थ है कि क्षय रोग के लिये 'यज्ञ-चिकित्सा' को ऐसा महत्वपूर्ण उपाय समझा है कि इसके पश्चात् किसी अन्य उपाय की आवश्यकता नहीं रहती । यज्ञ को जहाँ धार्मिक दृष्टिकोण से अन्य ऋषियों ने नित्य कर्म के पंच यज्ञों में माना है वहाँ आयुर्वेद के लगभग सभी प्रमाणिक ग्रन्थों ने हवन को नित्य की दिनचर्या में सम्मिलित किया है । इसका वैज्ञानिक प्रभाव क्या और कैसे पड़ता है, यहाँ यह जानना भी जरूरी है ।

प्राचीन आयुर्वेद, ईश्वर वाणी वेद के आधार पर वेद का ही उपवेद है । अतः पूर्णतया प्राकृतिक नियमों पर आधारित है । उसका सिद्धान्त यह है कि जिस प्रकार समस्त विश्व भगवान् ने पंचतत्व (अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी) से बनाया इसी प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य का शरीर भी इन पंचतत्वों का सम्मिश्रण है जिससे वात, पित्त, कफ तीन दोष बनते हैं और जिनकी सम अवस्था में रहने से कोई रोग नहीं होता । त्रिदोष की विकृतावस्था ही रोग का कारण है । यह विकृतावस्था जहाँ खान, पान, व्यायाम, विषय भोग इत्यादि की अनियमितताओं से होती है वहाँ बाहर के वायुमण्डल, अत्यन्त सर्दी, गर्मी, वर्षा की अनियमितता भी इस पर बड़ा प्रभाव डालती है । गर्मी से पित्त, सर्दी से कफ, सुगन्धि और दुर्गन्धि से वायु विशेष प्रभावित होती है । सूर्य के आदान-कर्म अर्थात् पृथ्वी से जल खींचने की शक्ति और चन्द्रमा के विसर्ग अर्थात् रसों को पृथ्वी पर छोड़ने के कर्म तथा वायु के विक्षेप कर्म अर्थात् इधर उधर भ्रमण कर्म से संसार स्थित है और इन कर्मों में गड़बड़ होने से वायुमण्डल में ऋतु और मनुष्य शरीर में वात, पित्त और कफ बिगड़कर रोग उत्पन्न करते हैं । एक बात और है कि सूर्य प्राणशक्ति का पुञ्ज है । प्राण शक्ति सूर्य से ही वायु ग्रहण करती है । जिस प्रकार हमारे फेफड़े अशुद्ध रक्त को साफ करके शरीर में शुद्ध रक्त का संचार करते हैं उसी प्रकार संसार भर की अशुद्ध और दुर्गन्धित वायु में से नमी को खींच कर सूर्य भगवान् शुद्ध करके हमें प्राणशक्ति प्रदान करते हैं और चन्द्रमा को भी सूर्य भगवान् ही अमृत प्रदान करते हैं । फेफड़ों को यदि बड़ी मात्रा में ओषजन युक्त वायु मिले तो कम काम करना पड़ता है इससे वह पुष्ट होते हैं पर यदि दुर्गन्धित वायु अधिक पहुँचे तो कार्य भार अधिक होने पर वह निर्बल हो जाते हैं, इन सब नियमों को ध्यान में रखते हुये जरा गम्भीरता से विचार करें कि सृष्टि क्रम के अनुकूल सब पशु पक्षी कुछ दुर्गन्धि वायु में उत्पन्न करते हैं । अतः उसी के प्रतिकार करने को भगवान् ने उसी अनुताप से सुगन्धित फूल इत्यादि उत्पन्न कर दिये ताकि सूर्य भगवान् को कार्य अधिक न करना पड़े क्योंकि पशु पक्षी अपनी केवल भोग योनि होने के कारण स्वयं कोई सुगन्धि उत्पन्न नहीं कर सकते पर मनुष्य की कर्म और भोग दोनों प्रकार की योनि होने के कारण इसे कर्म करने में स्वतन्त्र किया है तथा बुद्धि और वेद ज्ञान देकर आज्ञा दी है कि तुम जो दुर्गन्धि उत्पन्न करते हो उसके निवारण तथा अपने जीवनोद्देश्य मुक्ति की प्राप्ति के निमित्त जगत के उपकार की दृष्टि से नित्य प्रति हवन यज्ञ किया करो ताकि तुम देवताओं के ऋणी न रहो । ऐसा करने से सूर्य भगवान् को जहाँ मनुष्यों से उत्पन्न हुई दुर्गन्ध की शुद्धि करनी पड़ती है वहाँ यज्ञ से उत्पन्न हुई सुगन्ध से वह तृप्त होकर प्राणशक्ति का अधिक संचार करते हैं जिससे हमारा स्वास्थ्य, बल तथा जीवन बढ़ता है । जब हम भगवान की इस आज्ञा का पालन नहीं करते तो आजकल की भाँति रोगों की वृद्धि होती है और वर्षा भी नियमानुकूल न होने से अकाल पड़ते हैं और वनस्पतियाँ शक्तिहीन हो जाती हैं जिससे और भी रोग बढ़ते हैं । इसी बात को गीता में भगवान कृष्ण ने इस प्रकार कहा है:-

प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रचकर कहा कि इस यज्ञ द्वारा तुम लोग वृद्धि को प्राप्त होवो और यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं का देने वाला होवे ।

अतः वेद, शास्त्र, युक्ति, प्रमाण, प्राचीन व नवीन सब ही प्रकार के विज्ञान तथा परीक्षण से सिद्ध है कि यज्ञ द्वारा रोग निवारण होता है जिनकी इच्छा हो स्वयं परीक्षण करके देख लें । प्राकृतिक नियमों के साथ नित्य प्रति नियमपूर्वक हवन करने वाला कदापि रोगी नहीं हो सकता यह हमारा दृढ़ मत है ।

यज्ञ से सुख और समृद्धि का भौतिक विज्ञान

एक बार ऋषि वृहस्पति के पास जाकर कुछ जिज्ञासुजनों ने पूछा-भगवन् ! हमारी प्रजा और भावी संतति यदि आप जैसा ज्ञान, बल, बुद्धि, सिद्धि, स्वर्ग और समृद्धि प्राप्त करना चाहेगी तो वह किस प्रकार प्राप्त करेगी ? उत्तर मिला-

यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम् ।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुमा तां सप्त रेभा अभि सं नयन्ते ।

-ऋग्वेद १०/७१/३

हे शिष्यो ! वह वाणी गायत्री आदि सात छन्दों में विभक्त होती है । अब और किसी भी काल में जो बुद्धिमान लोग उस वाणी के द्वारा यज्ञ करेंगे, उन्हें ऋषियों के अन्तःकरण में स्थापित ज्ञान मिलेगा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ऐसे छात्रगण उस ज्ञान को सभी प्रदेशों में विस्तार करेंगे और जब उस विद्या को गायत्री आदि छन्दों में बद्ध कर गीत रूप में फैलाते, कथा और काव्य रूप में उसका गुणगान करेंगे, तभी मनुष्य समाज में कल्याण की वृद्धि, अशांति का ह्रास, अन्याय का विनाश और यज्ञ-कर्त्ताओं को सुख, समृद्धि, धन-धान्य की प्राप्ति होगी ।

आज यज्ञ को शक्ति-वर्द्धक वस्तुयें जला देने वाला एक अन्ध-विश्वासी कर्म-कांड कहा जाता है किन्तु ऐसा कहने वाले यह भूल जाते हैं कि वर्तमान् विज्ञान उस स्थिति में आ गया है, जब यह बताया जा सके कि यज्ञ के जो भी लाभ वेद, उपनिषद्, शास्त्रों और पुराणों में बताये गये हैं, वह यथार्थ लाभों की तुलना में उतने ही छोटे और थोड़े हैं, जैसे अनन्त ब्रह्माण्ड की तुलना में यह अपनी पृथ्वी । प्रजापति ब्रह्मा के इस कथन को-"यह यज्ञ तुम्हारी हर कामना को संतुष्ट करेगा ।" अब विज्ञान की कसौटी पर सत्य उतारा जा रहा है ।

इस विज्ञान को समझने के लिये पृथ्वी और ब्रह्माण्ड की जिन शक्तियों के अध्ययन की आवश्यकता है, वह है-

(१) शब्द सामर्थ्य (मंत्रशक्ति) (२) अग्नि तत्व और उसका प्रकीर्णन (३) पदार्थ परिवर्तन के मौलिक सिद्धान्त (४) सूर्य और उसकी सहस्त्राशु शक्ति (गायत्री यज्ञों के परिप्रेक्ष्य में) और अन्तिम (५) भावना विज्ञान । इनमें से सम्पूर्ण या कुछ की आंशिक जानकारी से भी यज्ञ सम्बन्धी भारतीय दर्शन को अच्छी प्रकार समझा जा सकता है ।

शब्द की सामर्थ्य की माप कैलीफोर्निया विश्व-विद्यालय के एक भूगर्भतत्व वेत्ता डॉ० गैरी लेन ने की । उन्होंने स्फटिक के प्राकृतिक क्रिस्टल और स्फटिक की ही बहुत पतली पट्टिका के माध्यम से एक ऐसा यन्त्र बनाया जो ऐसी ध्वनियों के माध्यम से जो कानों को सुनाई भी नहीं देती थी ऐसी शक्ति का निर्माण किया जिसके द्वारा शल्य चिकित्सा, कीटाणुओं का विनाश, मोटी-मोटी इस्पात की चादरों को काटना, धुलाई, कटाई आदि भारी से भारी काम और नाजुक से नाजुक कार्य भी सम्पन्न करने में बड़ी सहायता मिली । आज पाश्चात्य देशों में ओद्योगिक क्षेत्रों में कर्णातीत ध्वनि के उपयोग ने क्रांति मचा दी है ।

शब्द की दूसरी विशेषता उनकी संवहनीयता है, वह ठोस माध्यम से भी चल सकता है और ईथर में तरङ्गों के रूप में सारे ब्रह्माण्ड का भ्रमण भी कर आता है, इन सब बातों का अर्थ होता है कि शब्द की शक्ति अपरिमेय होती है । पृथ्वी पर अनेक हलचलें शब्द के द्वारा ही होती हैं, फिर भारतीय शब्द शास्त्र तो और भी वैज्ञानिक है । उनसे एक प्रकार की ऐसी ध्वनि उत्पन्न होती है, जो किसी भी स्थान पर व्यापक चंचलता उत्पन्न कर सकती है ।

गायत्री मंत्र की ध्वनि शक्ति इन सबसे विलक्षण है । गायत्री यज्ञों में जब मंत्रोच्चारण किया जाता है तो वह अपने सामान्य सिद्धान्त के अनुसार कुण्डलाकार गति से ऊपर की ओर ईथर में तरंगें बनाता हुआ बढ़ता है । यज्ञों में प्रज्वलित अग्नि के इलेक्ट्रान्स उन तरङ्गों को वहन कर लेते हैं और उनकी पहली प्रतिक्रिया तो उस क्षेत्र में ही फैलती है, अर्थात् यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले घृत आदि पदार्थ स्थूल से गैस रूप में फैलते हैं । आग की गर्मी में उन ओषधियों के इलेक्ट्रॉन्स अपने-अपने पथों पर इतनी तेजी से दौड़ने लगते है कि आपस में लड़खड़ा जाते हैं और छितर कर स्थूल पदार्थों से अलग होकर वायु मण्डल में फैल जाते हैं, यज्ञ के समय फैलने वाली धूम्र-सुवास उसी का एक स्थूल रूप है । यज्ञ द्वारा प्रकृति में पहुँची हुई गैसें और कर्णातीत ध्वनि से अयन तथा ब्रह्माण्डीय शक्तियों के भीतर भारी हलचल उत्पन्न होती है ।

अग्निहोत्र और मन्त्रोच्चारण के साथ उससे भी सूक्ष्म-विज्ञान को समझने के लिये 'अयन-मण्डल' (आयनोस्फियर) का अध्ययन आवश्यक है । धरती की सतह से ३५ से ४५ मील तक की ऊँचाई के ऊपर वायु मण्डलीय भाग को 'अयन-मण्डल' कहते हैं । अपनी पृथ्वी वायु के समुद्र में डूबी हुई है, आयनोस्फियर उसका सबसे अधिक ऊँचा और विशाल क्षेत्र है, लेकिन वहाँ हवा की कुल मात्रा वायुमण्डल की तुलना में दो-सौवें भाग से भी कम है । यथार्थ में पृथ्वी पर प्राकृतिक परिवर्तनों और ब्रह्माण्ड के अदृश्य लोकों से सम्पर्क का मूल अध्याय यहीं से प्रारम्भ होता है । कुछ दिन तक अयन मण्डल वैज्ञानिकों के लिये एक पहेली थी, किन्तु छानवीन से पता चला है कि बहुत ऊँचाई पर हवा में ऐसे बहुत से गुण हैं, जो धरती की हवा में नहीं होते । उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव प्रकाश, प्रचण्ड चुम्बकीय आँधी, बेतार तरङ्गों के परावर्तन जैसी घटनायें आयनोस्फियर से ही आरम्भ होती है । सूर्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और चन्द्रमा आदि की अनेक नियमित प्रक्रियाओं का भी पता चला है और यह प्रकाश में आया कि इन प्रक्रियाओं के फलस्वरूप पृथ्वी के आकर्षण वृत्त में परिवर्तन होते हैं ।

यहाँ यह भी जान लेना आवश्यक है कि हवा में मिश्रित गैसें छोटे-छोटे अणुओं से बनी होती हैं । एक घन सेन्टीमीटर हवा में नाइट्रोजन, आक्सीजन और दूसरी गैसों के २७०००,०००,०००,०००,०००,००० कण होते हैं । यह अणु भी छोटे कणों में विभक्त होते हैं, इन्हें परमाणु कहते हैं, परमाणु भी विभक्त हो सकते हैं क्योंकि वे भी इलेक्ट्रॉन, न्यूट्रान और प्रोटान नामक और भी छोटे कणों से बने हैं, इन्हें तरंगें ही कहना चाहिये । परमाणु बहुत स्थायी होता है, क्योंकि इलेक्ट्रॉन और परमाणु के न्यूकिलयस आपस में आकर्षक विद्युत शक्ति द्वारा एक दूसरे से जुड़े रहते हैं । नाभिक धन विद्युत आवेशधारी और इलेक्ट्रॉन ऋण-विद्युत आवेशधारी होता है । इन्हीं विद्युत आवेशधारी अणु या परमाणुओं का नाम अयन है । इसे एक प्रकार का वैसा ही शक्ति प्रवाह कहना चाहिये, जिस तरह तालाब के पानी में तरंगें उठती और पानी में गति पैदा करती हैं । यह सूक्ष्म अयन मण्डल भी उसी प्रकार एक ओर तो पृथ्वी की जलवायु पर गैर्सीय स्थिति के अनुरूप अच्छे, खराब परिवर्तन करता है, दूसरी ओर पृथ्वी के शब्द प्रवाह को कर्णातीत बनाकर आकाश की ओर फेंकता रहता है ।

अणुओं और परमाणुओं के साथ इतनी मजबूती से जुड़े रहने के बाद भी इलेक्ट्रान कभी-कभी उनसे टूटकर अलग हो जाते हैं । पहले वैज्ञानिक इस पर आश्चर्यचकित थे पर अब वे जान गये हैं कि आयनोस्फियर में यह क्रिया सूर्य के विकिरण (रेडियेशन) से होती है । तात्पर्य यह कि सूर्य इस अयन को चुप नहीं रहने देता कुछ न कुछ परिवर्तन कराता ही रहता है, परिवर्तन की स्थिति अच्छी बुरी गैसों के अनुरूप होती है, इसलिये यज्ञ से जो प्राणप्रवाह उत्पन्न होता है, वह स्थूल दृष्टि से प्रकृति और जनस्वास्थ्य पर बड़ा अनुकूल प्रभाव डालता है ।

आज जो परमाणविक विस्फोट हो रहे हैं, उनसे तो अयन-मण्डल ऐसी खराब गैसों की धूलि (रेडियोएक्टिविटी) से भर गया है कि आने वाले समय में अनेकों नई बीमारियाँ पैदा होंगी और अकाल अनावृष्टि के विद्रूप उपस्थित होंगे । इस धूलि की जिन्दगी बड़ी लम्बी होती है । दूसरी ओर हर जीवित पदार्थ में कार्बन की मात्रा अधिक होती है जिससे किरण-सक्रिय धूलि बड़ी आसानी से उस पर अपना प्रभाव प्रारम्भ कर देती है । हर एक मेगाटन वाले परमाणविक अस्त्र से २० पौण्ड कार्बन १४ की उपलब्धि होती है ।

१९६१ तक के विस्फोटों का हिसाब लगाकर ही डॉ. लाइनस पार्लिंग ने बताया था कि भविष्य में ४ लाख विकलांग या मृत बच्चे जन्म लेंगे । कार्बन १४ के अतिरिक्त स्ट्राटियम ९०, आयोडीन १३१ और कैसियम १३७ जैसी कैन्सर, लूकेमियाँ, रक्त मंदता और पेचिश पैदा करने वाली गैसें पैदा होती हैं, उन्हें केवल प्राण-संयुक्त या अधिक शक्ति वाला यज्ञीय-विकिरण ही रोक सकता है और कोई नहीं । यज्ञ से हुई प्राण-वर्षा में ही वह शक्ति है, जो इन दुष्प्रभावों को रोक सके, इसलिये वर्तमान् युग में तो यज्ञों की अनिवार्यता असंदिग्ध ही है ।

प्रकृति के रूप में यज्ञ द्वारा पहुँची गैसें और कर्णातीत ध्वनि से अयन और ब्रह्माण्डीय शक्तियों के भीतर भारी हलचल उत्पन्न होती है और उस हलचल के फलस्वरूप ही पृथ्वी पर अनेक नये तत्वों का आकर्षण, वर्षा आदि की व्यवस्था होती है, मौसम में सुहावनापन और वातावरण में शक्ति वर्द्धक प्राण की बहुलता होती है, यह सब उसके स्थूल प्रभाव और प्रतिक्रियायें ही हैं । यजुर्वेद में कहा है-"ब्रह्म सूर्य सम ज्योति" २३/४२ वह सूर्य ब्रह्म तत्व ही है, उन्हीं की शक्ति और बाहरी महिमा से जीवन का विकास हो रहा है । पृथ्वी में आँधी तक सूर्य की इच्छा से आती है, इसे सूर्य की तापीय व्यवस्था कहें या प्राण-प्रक्रिया, पर निश्चित है कि यज्ञ और मन्त्र की कर्णातीत शक्ति उस प्राण या ऊष्मा में खलबली मचा कर अधिक मात्रा में जीवन तत्त्वों का विस्फोट अवश्य करा लेती है । जहाँ भी यज्ञ होते हैं वहाँ प्रकृति बहुत अनुकूल रहती है, इसमें किंचित मात्र भी सन्देह नहीं । स्मरण रहे पृथ्वी सूर्य से ही सर्वाधिक प्रभावित है ।

मन्त्र का भावना विज्ञान उससे भी विलक्षण शक्ति वाला है । गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है कि संसार में किसी भी वस्तु का अभाव नहीं है, भले ही हम उसे न जानते हों । परमात्मा की सृष्टि में वह सब कुछ है, जिसके बारे में हम जानते भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

नहीं हैं, उसे जानने और देखने के लिये अणु-आँखें, सूक्ष्म-दृष्टि को जाग्रत करना आवश्यक है अर्थात् जीव छोटे से छोटा होकर ही विश्व की अनन्तता और उसके भीतर की आणविक हलचलों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है । यह ज्ञान इतना समर्थ है कि संसार के किसी भी भूभाग में विलक्षण हलचल उत्पन्न कर सकता है ।

यज्ञों के माध्यम से प्रकट होने वाली भावना-शक्ति सामान्य भावों की अपेक्षा शब्द-शक्ति और अग्नि तत्त्व से प्रेरित होने के कारण तमाम ब्रह्माण्ड में फैलकर अपने अनुरूप शक्तियों को खींच लाती है । हम समझ नहीं पाते कि अदृश्य सहायता या इच्छापूर्ति कैसे हुई पर यह सब भावनाओं द्वारा एक प्रकार के तत्त्वों के अणुओं के आकर्षण की ही वैज्ञानिक पद्धति है, उसमें रहस्य जैसी कोई भी बात नहीं है ।

भावना वस्तुतः कर्णातीत ध्वनि का और भी सूक्ष्म स्परूप है, क्योंकि हम जो कुछ सोचते हैं, वह आत्मा या चेतन सत्ता द्वारा एक प्रकार का बोलना ही है, इसलिये कर्णातीत ध्वनि की समस्त शक्तियों से उसे ओत-प्रोत होना ही चाहिये । यज्ञ तो एक प्रकार से उस यन्त्र की तरह है जो अभीष्ट इच्छा के गन्तव्य तक उस शक्ति को पहुँचाने और वहाँ से आवश्यक परिस्थितियाँ खीच लाने में मदद करता है ।

हविष्यान्न का प्रतिफल अन्न आदि के उत्पादन अयन मण्डल में शक्ति तत्वों के विकास और जलवायु की अनुकूलता के रूप मे दिखाई देता है तो यज्ञ कर्त्ताओं की श्रद्धा भक्ति भावनात्मक स्तर पर मनोवांछित सफलता प्रदान करने वाली होती है । स्थूल की प्रतिक्रिया स्थूल तो सूक्ष्म की प्रतिक्रिया सूक्ष्म भी हाथों-हाथ देखने को मिलती है । यद्यपि यह दोनों ही बातें मिली-जुली हैं, इसलिये भावना को विज्ञान और विज्ञान को भावना के माध्यम से जाग्रत और प्राप्त किया जा सकता है ।

एक समय था जब अभीष्ट प्राकृतिक आवश्यकताओं, सामाजिक परिवर्तनों और व्यक्ति की निजी इच्छाओं के लिये प्रयुक्त होने वाले यज्ञों की बहुतायत से लोगों को जानकारी थी पर उस विद्या का लोप हो गया लगता है । प्रयोग और परीक्षण के तौर पर ही उन रहस्यों की पुनः जानकारी की जा सकती है । सूर्य की अदृश्य किरणों और अयन-मण्डल के सम्बन्ध में और अधिक जानकारियाँ मिलेंगी तब लोग यज्ञ की सूक्ष्म प्रतिक्रियाओं को और भी अच्छी तरह समझ सकेंगे । अभी प्राकृतिक परिवर्तनों में उसे सहायक के रूप में समझा जा सका तो इतना ही काफी होगा ।

यज्ञोपचार की स्वास्थ्य संरक्षण प्रक्रिया

ओषधियों को वाष्पी भूत बनाकर उन्हें अधिक सूक्ष्म एवं प्रभावशाली बनाने की प्रक्रिया आयुर्वेद के विज्ञानी चिरकाल से अपनाते रहे हैं । उसके द्वारा अपेक्षाकृत अधिक सफलता भी मिलती रही है । पाचन तंत्र माध्यम से अथवा रक्त प्रवाह में सम्मिलित करके ओषधि उपचार की पुरातन परिपाटी में जब वाष्पीकरण की नई पद्धति का समावेश हुआ तो उसके आश्चर्यजनक परिणाम निकले ।

यज्ञोपचार इसी स्तर की स्वास्थ्य संरक्षण प्रक्रिया है । उससे आत्मिक प्रगति के उच्चस्तरीय सत्परिणामों के अतिरिक्त प्रत्यक्ष एवं तात्कालिक लाभ रोग निवारण का भी मिलता है । इसमें कुछ विशेष नहीं करना पड़ता । रोग के अनुरूप ओषधियाँ हवन करने और उस उत्पादित ऊर्जा के निकट रोगी को बिठाने से काम चल जाता है । यज्ञ में न्यूनतम वस्त्र धारण करके बैठने का विधान है । आमतौर से कटिवस्त्र के रूप में धोती और वक्षस्थल ढका रहने के लिए दुपट्टा धारण करना ही पर्याप्त समझा जाता है । भारी मोटे कसे हुए वस्त्र पहिन कर यज्ञ कर्म में बैठने का निषेध है । कारण कि यज्ञीय ऊर्जा द्वारा शरीर के अवयवों को अधिक लाभान्वित होने का अवसर तभी मिल सकता है जब वे खुले रहें । वस्त्र धारण करना ही पड़े तो वह इतना झीना एवं हल्का होना चाहिए कि उपयोगी उपचार का काम लेने में त्वचा छिद्रों को किसी व्यवधान का सामना न करना पड़े ।

यज्ञ चिकित्सा में भी रोग निदान की वैसी ही आवश्यकता पड़ती है जैसी अन्य पद्धतियों में चिकित्सक को रोगों के कारण जानने के लिए निदान करना पड़ता है । शरीर में कुछ उपयोगी वस्तुएँ कम पड़ जाने एवं कुछ अनुपयोगी वस्तुएँ बढ़ जाने से रोग उत्पन्न होते हैं । इसी कमी को पूरा करने एवं विष संचय को बहिष्कृत करने के लिए सभी चिकित्सक अपने-अपने ढंग से उपाय करते हैं । यही यज्ञ चिकित्सा में भी करना पड़ता है । देखना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है कि शरीर की रोग निरोधक शक्ति को बढ़ाने के लिए समर्थता देने वाली क्या पुष्टाई आवश्यक है और उसे कितनी मात्रा में किन पदार्थों के द्वारा शरीर में पहुँचाया जा सकता है । देखना होता है किस अवयव में किस स्तर का कितना विष द्रव्य जमा हो गया है । उसे बाहर निकालने के लिए किस प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न की जाय और उसे उपयुक्त स्थान तक पहुँचाने के लिए किस उपाय का अवलम्बन किया जाय ।

हवन सामग्री किस रोगी के लिए किस स्तर की प्रयुक्त की जाय इसमें भिन्नता रखनी पड़ती है । सामान्य यज्ञ सबके लिए सामान्य रूप से उपयोगी है । माता के दूध की तरह हर बालक की तरह हर याजक समान रूप से उपयोग कर सकता है । उससे किसी प्रकार की हानि की सम्भावना नहीं है । हर स्तर की दुर्बलता एवं रुग्णता में उससे लाभ ही होता है । यह सामान्य सर्वजनीन-हर परिस्थितियों के अनुकूल उपचार हुआ । यहाँ तक यज्ञ विधान के साथ जुड़ा हुआ सामान्य संरक्षक विज्ञान ही काम करता है । इससे आगे का कदम सामयिक एवं विशिष्ट है । उसे रोगी की स्थिति को देखते हुए उठाना पड़ता है । हर रोगी को उनकी स्थिति के अनुरूप दवा दी जाती है उसी प्रकार रोग विशेष को ध्यान में रखते हुए रोगी की स्थिति का गहन पर्यवेक्षण करते हुए यह निर्णय करना होता है कि किस स्तर की ऊर्जा उत्पन्न की जाय और उसके उत्पादन के लिए किन पदार्थों का यजन किया जाय ।

इस दृष्टि से हर विशिष्ट रोगी के लिए विशिष्ट हविष्य का निर्धारण करना होता है । इसमें दोनों ही स्तर की हवन सामग्रियों का सन्तुलन बिठाया जाता है । बलवर्धक और रोग निवारक दोनों ही तत्वों का संतुलन रखना होता है । कुनैन का सेवन कराते समय रोगी को दूध की मात्रा बढ़ा लेने के लिए कहा जाता है । ताकि उसके कारण उत्पन्न होने वाली गर्मी का शमन करने का उद्देश्य पूरा हो सके । दुर्बल रोगियों को फलों का रस सुपाच्य पोषण से युक्त आहार का निर्देश किया जाता है । दुर्बलता बढ़ने न देना, सशक्तता बनाये रखना भी एक महत्वपूर्ण काम है । विजातीय द्रव्य के निवारण में मारक तत्वों का उपयोग करने की तरह ही इस पोषण की भी आवश्यकता पड़ती है । यज्ञ चिकित्सा के अनुसार रोगी को इन दोनों की आवश्यकता को पूरा कर सकने योग्य सामग्री का निर्धारण करना होता है । इसके लिए पदार्थों की रासायनिक संरचना का ज्ञान आवश्यक है । उसमें दूसरे तत्वों के साथ सम्मिश्रण के प्रभाव का भी ज्ञान होना चाहिए । प्रयोगशालाओं में टाइट्रेशन इसी के लिए होते हैं कि दो पदार्थों के मिलने की प्रक्रिया का सही ज्ञान हो सके । नीला व पीला रंग मिलाकर हरा रंग हो जाता है । मूल द्रव्य के लक्षण ही अन्तर्धान हो जाते हैं । यज्ञ चिकित्सक को हविष्य निर्धारण करते समय, चूर्ण बनाते समय मात्रा की भिन्नता, न्यूनाधिक्य तथा ओषधियों के सम्मिश्रण आदि का पूरा ध्यान रखना होता है, जिससे उसका रोगी की स्थिति देखते हुए लाभदायक उपयोग हो सके ।

हविष्य चार भागों में विभक्त है । (१) ओषधियों का सम्मिश्रण (२) घृत (३) समिधाएँ (४) पूर्णाहुति में होमे जाने वाले विशिष्ट पदार्थ । इन चारों के पृथक-पृथक गुण एवं प्रभाव हैं । आम तौर से गौघृत प्रयुक्त होता है, पर अन्य पशुओं के घृतों की भी विशिष्टता है और रोगी की स्थिति को देखते हुए घृतों में पाये जाने वाले रासायनिक पदार्थों की स्थिति का तालमेल बिठाते हुए यह निर्धारण करना होता है कि अमुक रोग में किस पशु का घृत लिया जाय ।

हविष्य में रोग विशेष के लिए प्रयुक्त होने वाली ओषधियों का आधार प्रायः वही रहता है जो रासायनिक विश्लेषणों के आधार पर चिकित्सा विज्ञानी चिरकाल से करते आये हैं । इस निर्धारण में नये संशोधनों का भी ध्यान रखना पड़ता है । जिस प्रकार संविधान कानून आदि में सामयिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन किए जाते हैं, प्रथा परम्पराओं में हेर-फेर होते हैं उसी प्रकार प्रयोग एवं अनुभव के आधार पर किसी ओषधि के प्रभाव के सम्बन्ध में भी यह उखाड़-पछाड़ होती रहती है । पूर्व निर्धारण में हेर-फेर तो नहीं करनी है, ऐसा होता भी है । प्राचीनकाल में जिस ओषधि का जो प्रभाव माना जाता था अब खोज ने पुरातन मान्यता को बदलने और नया निर्धारण करने की विवशता उत्पन्न की है । कुशल चिकित्सकों को, ओषधि निर्माताओं को इन नवीन परिवर्तनों को ध्यान में रखना होता है । इसी प्रकार यज्ञीय हविष्य में किन ओषधियों का समावेश किया जाय यह ध्यान में रखना होता है । ओषधि और अनुपान दोनों का अपना महत्व है । एक ओषधि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

को एक अनुपान के साथ सेवन करने का एक प्रभाव होता है किन्तु उसी का अनुपान बदल देने से दूसरा गुण उत्पन्न हो जाता है । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हविष्य में पोषक और निरोधक पदार्थों का चयन और मात्रा का निर्धारण करना होता है ।

समिधाएँ भी प्रकारान्तर से हविष्यान्न ही हैं । लकड़ी का जलना भी ओषधि यजन की तरह ही प्रभावोत्पादक होता है । लकड़ी में भी न्यूनाधिक मात्रा में उपयोगी अनुपयोगी रासायनिक पदार्थ रहते हैं । हविष्य में मात्र वनस्पतियों की पत्तियाँ, फुल-फल ही नहीं होते वरन् वृक्षों की लकड़ियाँ भी कूट-पीसकर मिलाई जाती हैं । चन्दन, देवदारू, अगर, तगर आदि की लकड़ियों का चूरा भी हवन सामग्री में मिलता है । इन का प्रभाव भी अन्य ओषधियों के समतुल्य ही होता है । अस्तु समिधाओं में कुछ नियत वृक्षों के काष्ठ उपयोग करने का ही विधान है । चाहे जिस पेड़ की लकड़ी हवन में प्रयुक्त नहीं हो सकती । चिकित्सक को इन सभी बातों का ध्यान रखना होता है और रोगी की स्थिति ध्यान में रखते हुए हविष्य के साथ-साथ समिधाओं का निर्धारण भी करना होता है ।

पूर्णाहुति में सामान्य हवन सामग्री का नहीं वरन् किन्हीं विशिष्ट वस्तुओं का प्रयोग करना पड़ता है । पूर्णाहुति तीन भागों में विभक्त है ।

(१) **स्विष्टकृत होम**- जिसमें मिष्ठान्न होमा जाता है । (२) **पूर्णाहुति**- जिसमें फल होमना होता है । (३) **वसोधारा**- जिसमें घृत की धारा छोड़ी जाती है । इन तीनों कृत्यों को मिलाकर पूर्णाहुति कही जाती है । इस विधान को प्रधान तथा पोषक प्रयोग के रूप में किया जाता है । निरोधक सामग्री तो हविष्य के रूप में इससे पूर्व ही यजन हो चुकी होती हैं । मिष्ठान क्यों दिया जाय ? उसे बनाने में क्या-क्या पदार्थ लिए जायें यह भी यज्ञीय विधान का एक अंग है । शक्कर, चीनी, मिश्री, मिठाई आदि का उपयोग सामान्य बात है । असामान्य रूप में विशिष्ट प्रकार के चरु बनाये जाते हैं । खीर, हलुआ, लड्डू आदि का हवन स्विष्टकृत होम की आहुति में होता है । इन्हें किन पदार्थों के सम्मिश्रण से बनाया जाय इस निर्धारण में यह ध्यान रखना होता है कि रोगी के शरीर में किन पोषक खाद्य पदार्थों की आवश्यकता है । पूर्णाहुति में आमतौर से नारियल, सुपाड़ी आदि सुगमता पूर्वक मिल सकने वाले पदार्थ ही बहु प्रचलित हैं । पर बात इतने तक ही सीमित नहीं हो सकती, उसमें सूखे मेवे या पके फलों के चयन में भी सूझ-बूझ का परिचय देना पड़ता है । वसोधारा में घृत की धार छोड़ी जाती है अर्थात् उसकी मात्रा बढ़ाई जाती है । इसका एक कारण यह भी है कि हवन कुण्ड में जहाँ-तहाँ शेष रहा कच्चा हविष्य तुरन्त ज्वलनशील हो सके । दूसरा कारण चिकनाई की वह मात्रा शरीर को मिल सके, जो सामाजिक परिस्थिति के अनुरूप आवश्यक हो रही है । शर्करा युक्त अन्न वर्ग को स्विष्टकृत में, काष्ठ वर्ग को पूर्णाहुति में, घृत वर्ग को वसोधारा में प्रयुक्त करके आहार की सन्तुलित मात्रा का रस निर्धारण किया जाता है कि यजनकर्त्ता को समुचित पोषण प्राप्त हो सके । वसोधारा घृत में कपूर केशर आदि मिलाने की भी आवश्यकता रहती है । इससे घृत, मात्र चिकनाई न रहकर एक विशिष्ट ओषधि बन जाती है ।

यज्ञावशिष्ट को कई रूपों में प्रयुक्त किया जाता है । स्विष्टकृत होम से बचे चरु को यजमान प्रसाद रूप में ग्रहण करते हैं । दशरथ की रानियों ने जिस चरु को सेवन करके सन्तान प्राप्त की थी वह यज्ञावशिष्ट ही था । पूर्णाहुति में प्रयुक्त होने वाले फलों में से कुछ यजमान को आशीर्वाद के प्रतीक के रूप में देते हैं और इसे घर जाकर रख लेने के लिए कहते हैं । आहुतियों में से बचा हुआ हविष्यान्न, वापसी के साथ टपका हुआ तथा वसोधारा से बचा हुआ घृत मुख, शिर आदि पर लगाने-सूँघने के लिए प्रयुक्त होता है । यह सभी यज्ञावशिष्ट हैं और स्थूल रूप में ग्रहण किए जाने पर भी प्रायः वैसे ही लाभप्रद होते हैं जैसे कि हविष्य की आहुतियों द्वारा हवन करके उत्पादित ऊर्जा द्वारा उपलब्ध होते हैं ।

धार्मिक हवन कर्त्ताओं को भी मनमानी वस्तुएँ खाते-फिरने की छूट नहीं मिलती । उस दिन उसे निर्धारित सात्विक पदार्थों पर निर्वाह करते हुए एक प्रकार से उपवास जैसे बन्धनों में प्रतिबन्धित रहना पड़ता है । विवाह यज्ञ में वर-वधू दोनों का आहार प्रायः उपवास जैसा रहता है । अन्य धार्मिक यज्ञों में भी यजमान उपवास करते हैं । याजकों के लिए भोजन सम्बन्धी प्रतिबन्ध रहते हैं और जहाँ तक सम्भव होता है वे निर्धारित द्रव्य से बना हुआ हविष्यान्न अमृतासन ही ग्रहण करते हैं । यज्ञोपचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में इस व्यवस्था पर भी ध्यान रखना पड़ता है । रोगी मात्र हवन करके ही कुछ विशिष्ट चिकित्सा पद्धति का लाभ नहीं उठा लेता वरन् उसके आहार में किन वस्तुओं का उपयोग किस मात्रा में करना है, इसका भी निर्धारण करना होता है । चिकित्सक मात्र ओषधि देकर ही बात को पूरी नहीं कर देते ।

धार्मिक यज्ञों में यज्ञशाला बनाने और आच्छादित करने का विधान है । इस थोड़े से सीमा बन्धन से यज्ञीय ऊर्जा के उस घेरे में कुछ समय ठहरने का प्रतिफल मिलता है । दूसरे उस क्षेत्र में बैठे हुए याजक दूरवर्ती लोगों की तुलना में अधिक लाभ उठा लेते हैं । खुले आकाश के नीचे हवन न करने की जो प्रथा चली आती है, उसके मूल में यही तथ्य है कि याजक थोड़े से अवरोध के कारण ऊर्जा से अधिक देर तक अधिक मात्रा में लाभ उठाते रह सकें । यज्ञशाला के ऊपर आच्छादन रखने की परम्परा भी इसी कारण है कि ऊष्मा का स्वभाव एवं स्वरूप ऊपर उठने का है । वह अग्नि कुण्ड से निकल कर तीर की तरह छूटती है और सीधी आकाश में उड़ती चली जाती है । आच्छादन रहने से उसके ऊर्ध्वगमन पर प्रतिबन्ध लगता है और यज्ञशाला के वातावरण में उसका प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक समय तक अधिक मात्रा में बना रहता है । पूर्व प्रतिबन्ध लगाकर बन्द कमरे में भी हवन किया जा सकता है, पर वह यज्ञ उस मूल भावना के अनुकूल नहीं होता जिसमें विश्व कल्याण के लिए त्याग-बलिदान करने के उद्देश्य को प्रधानता दी गई है । यदि अपने हवन का अकेले ही लाभ उठाया गया तो फिर वह अग्नि उपचार मात्र रह जायेगा । उसे यज्ञ के लोकोपयोगी पुनीत कर्म में न गिना जा सकेगा ।

रोगोपचार में यह आच्छादन व्यवस्था अपेक्षाकृत घनी रखी जा सकती है । यज्ञशाला के इर्द-गिर्द पर्दे लटकाये जा सकते हैं । ऐसे बन्द कमरे का भी उपयोग हो सकता है जिसमें बन्द खिड़कियाँ मौजूद हैं । बन्द कमरे में कार्बन गैस की मात्रा बढ़ जाने से हानि की संभावना रहेगी । आक्सीजन के आगमन और कार्बन के निष्कासन का क्रम तभी ठीक रहेगा जब खुलापन अधिक हो । कमरे को बन्द करके धूप, गुग्गुल, कपूर नीम के पत्ते आदि जला देने से उसकी सीलन सड़न हटायी जा सकती है । कृमि-कीटकों से पिण्ड छुड़ाया जा सकता है, पर कार्बन और आक्सीजन गैसों का संतुलन तभी रखा जा सकता है, जब यज्ञ प्रक्रिया के लिए उपयुक्त स्थान की व्यवस्था की जाय । उपयुक्त प्रयोजनों के लिए यज्ञशाला का, यज्ञ कुण्डों का निर्माण एक विशिष्ट कौशल से विधान विज्ञान में सम्मिलित रखा गया है । यह विद्या मात्र पुरातन परम्परा नहीं है उसके पीछे उपयुक्त कारणों और प्रयोजनों का समावेश है ।

यज्ञ का यह पदार्थ परक विवेचन हुआ उससे आगे की बात अति सूक्ष्म, कारण स्तर की है । मनुष्यों की तरह पदार्थों के भी तीन स्तर होते हैं । स्थूल, सूक्ष्म और कारण । मानवीय अस्तित्व में स्थूल शरीर वह है जो रक्त-मांस से बना है । खाता, पीता, चलता, फिरता और काम करता दीखता है । सूक्ष्म शरीर वह है जो सोचता, विचारता और शरीर पर शासन करता है । कारण शरीर वह है जिसमें आस्थाएँ, मान्यताएँ तथा आकांक्षाएँ जड़ जमाए रहती हैं । स्थूल से सूक्ष्म की और सूक्ष्म से कारण की सामर्थ्य अनेक गुना मानी जाती है । पदार्थों के सम्बन्ध में भी यही बात है । उनका स्थूल स्वरूप वह है जो दिखाई देता है स्पर्श किया जा सकता है । सूक्ष्म वह है जिसका पता रासायनिक विश्लेषण द्वारा प्रयोगशाला में जाना जाता है । गाय की अपेक्षा भैंस के दूध में मक्खन और स्वाद दोनों अधिक होते हैं, पर महत्व गाय के दूध से बने पंचगव्य को ही दिया जाता है । तुलसी, आँवले, पीपल के पौधे की अपेक्षा दूसरे पौधे अधिक लाभप्रद, आर्थिक एवं स्वाद की दृष्टि से हो सकते हैं, पर उनमें प्राप्त सूक्ष्म संस्कारों के आधार पर उन्हें जो देवोपम श्रद्धा दी जाती है वह अन्य वृक्षों को नहीं ।

यज्ञ प्रक्रिया में प्रायः पदार्थ की कारण शक्ति को उभारा जाता है । तभी वह यजन कर्त्ता के मन और अन्तःकरण में अभीष्ट परिवर्तन ला सकती है । यदि इस प्रकार के प्रयत्न न किए जायें तो फिर यह अग्नि होत्र अपना प्रभाव वाष्पीकरण स्तर का ही दिखा सकेगा । आग जलाने से भी कई तरह के लाभ उठाये जा सकते हैं । प्रायः वैसा ही कुछ यज्ञ धूम्र भी कर सकता है । हवा की विषाक्तता दूर करने, दुर्गन्ध हटाने, सुगन्ध फैलाने जैसे सामान्य प्रयोजन उससे पूरे हो सकते हैं । पसीना निकालने, विषाणु मारने जैसे प्रयोग भी पूरे हो सकते हैं । और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनका तदनुरूप आरोग्य लाभ भी मिल सकता है । पर है यह सामान्य बात ही । यज्ञ की विशिष्टता इसमें प्रयुक्त होने वाले पदार्थों की सूक्ष्म शक्ति पर निर्भर है । अमुक कष्ट का अमुक संकल्प का निषेध इसी आधार पर किया जाता है कि उनकी रासायनिक संरचना उस प्रयोजन के प्रतिकूल पड़ती है जो अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक है । विधि निषेध का ऊहापोह एवं अनुशासन यज्ञों में प्रयुक्त होने वाले पदार्थों के सम्बन्ध में जुड़ा है । यह न तो निरर्थक है और न दुराग्रह । इनके पीछे यही रहस्य काम करता है कि न केवल रहस्यों को वायुभूत बनाया जाय वरन् उसकी शक्ति का भी इस विधा के सहारे आरोग्य रक्षण जैसे अनेकों उपयोगी प्रयोजनों को पूरा किया जाय ।

कारण शक्ति का उत्पादन अभिवर्धन करने के लिए मंत्र विज्ञान का सहारा लिया जाता है । उद्गाता अध्वर्यु इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं कि निर्धारित विधि-विधान के लिए मंत्रों का जिस स्वर से उच्चारण एवं विनियोग करने की पद्धति प्रचलित है उसका उपयोग सही रीति से करना चाहिए, शब्द को ब्रह्म कहा गया है । उसकी शक्ति सामान्य जीवन में ज्ञान संवर्धन एवं वैचारिक आदान-प्रदान के लिए प्रयुक्त होती है किन्तु उच्चस्तरीय भूमिका में शब्द का शक्ति के रूप में परिवर्तन हो जाता है । मंत्र शास्त्र का समूचा आधार इसी पृष्ठभूमि पर खड़ा हुआ है कि शब्द गुच्छकों का चयन, गुन्थन एवं विनियोग ऐसी विशिष्ट क्रिया-प्रक्रिया के साथ संपन्न किया जाय कि उससे चेतना को विशिष्ट क्षमता सम्पन्न बनाने का चमत्कारी लाभ मिल सके ।

यज्ञ में नियत विधि व्यवस्था के अनुरूप मंत्रोच्चार का प्रयोग किया जाता है । इससे सम्बद्ध मनुष्यों को लाभ मिलता है । वातावरण में उपयोगी उत्तेजना उत्पन्न होती है और प्रयोग में आने वाले पदार्थों की कारण शक्ति को इतना उभारना सम्भव हो जाता है कि वे अपनी प्रभुत्व क्षमता का परिचय दे सकें । मंत्र पूत पदार्थों को आशीर्वाद रूप में देने पर वे ओषधियों से भी बढ़कर काम करते हैं । इससे प्रगट है कि यजन से पूर्व हविष्य की कारण शक्ति को उभारने से उच्चस्तर तक सफलता मिल जाती है किन्तु वे वस्तु की दृष्टि से सामान्य होते हुए भी विशिष्ट शक्ति की दृष्टि से असामान्य सिद्ध हो सकें । हविष्य यदि ऐसे ही आग में झोंक दिया जाय तो इससे गंध उत्पन्न करने जैसे हल्के लाभ ही मिल सकेंगे । वैसा कुछ संभव न हो सकेगा जैसा कि यज्ञायोजनों से अपेक्षा की जाती है ।

यज्ञ पात्रों से लेकर प्रयोग में आने वाले जल तक को मंत्र के माध्यम से पवित्र बनाया जाता है । इसके उपरान्त ही उसका उपयोग होता है । समिधायें प्राप्त करने, धोने-सुखाने और प्रयोग से पूर्व अभिमंत्रित करने का विधान है । ठीक इसी प्रकार कुण्डों को प्राणवान बनाने के लिए वेदीपूजन, यज्ञशाला पूजन आदि सम्पन्न किया जाता है ।

यज्ञ से रोग निवारण एवं बलसंवर्धन के दो लाभ

रोग उपचार की आवश्यकता पड़े ? इससे अच्छा यह है कि उनके उत्पन्न होने का अवसर ही न आये । इसके लिए सर्वोत्तम उपाय तो यही है कि आहार-विहार में सात्विकता की सुव्यवस्था का उपयुक्त समावेश रखा जाय । प्रकृति के अनुरूप आचरण करके सभी प्राणी शारीरिक आनन्द का लाभ उठाते हैं । रोग एक विकृति है जो जीवन-यापन की मर्यादाओं का उल्लंघन करने पर प्रकृति के दण्ड द्वारा मनुष्य के ऊपर आ बरसती है । शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का दुरुपयोग न किया जाए, उन्हें सही दिशा में नियोजित रहने दिया जाय तो न आधिव्याधियों के संकट शरीर मन को सहने पड़ेंगे और न कर्म विधायक कारणों से आये दिन त्रास देने वाली विपत्तियों का सामना किसी को करना पड़ेगा । हमारी अपनी दुर्बुद्धिजन्य उच्छृंखलता ही है जो उलटकर हमला करती है और इसी प्रत्याक्रमण के फलस्वरूप शरीर को पीड़ा, मन को क्षोभ और अन्तःकरण को आत्म-प्रताड़ना का त्रास सहना पड़ता है ।

इन विपत्तियों की जड़ काटने के लिए यज्ञीय तत्वज्ञान का वह पक्ष प्रस्तुत किया गया है, जिससे नीतिकर्म, सदाचार, स्नेह, सहयोग की रीति-नीति को हृदयंगम कराने का प्रयत्न किया जाता है । यज्ञ का तत्वज्ञान पवित्रता और उदारता का, चरित्रनिष्ठा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और समाज निष्ठा का प्रबल प्रतिपादन करता है, उसमें प्रयुक्त होने वाले सभी मंत्रों विधि-विधानों एवं कर्मकाण्डों में यही सन्देश, निर्देश आदि से अन्त तक भरा पड़ा है । दान, देव पूजन, संगतिकरण यह तीन अर्थ यज्ञ शब्द के होते हैं । इन्हें प्रकारान्तर से उदारता, उत्कृष्टता और सहकारिता की दिशा-धारा कहा जा सकता है । उन्हें अपनाने वाला, यज्ञीय दर्शन को हृदयंगम करने वाला, कोई भी व्यक्ति इसी जीवन में स्वस्थ, समृद्ध, समुन्नत एवं सुसंस्कृत रह सकता है । उसे आन्तरिक प्रसन्नता एवं बहिरंग सम्पन्नता की कमी नहीं रहती ।

यज्ञ कृत्य करने, कराने, उसमें किसी भी रूप में सम्मिलित रहने वालों को प्रत्येक विधि-विधान की व्याख्या करते हुए यह समझाया जाता है कि उसका चिन्तन एवं चरित्र, दृष्टिकोण एवं व्यवहार निरन्तर उत्कृष्टता की ओर बढ़ना चाहिए । यज्ञ कृत्य के उद्गाता यही गाते हैं, अध्वर्यु यही सिखाते हैं । ब्रह्मा इसी को मोड़ना बताते हैं और आचार्य को ऐसी व्यवस्था बनानी पड़ती है कि इसी प्रकार का भाव प्रवाह उस समुचे वातावरण पर छाया रहे । यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले हविष्य, मंत्रों एवं विधि-विधान का अपना स्वतंत्र महत्व है । उसमें वैज्ञानिक तथ्यों का भरपूर समावेश है, किन्तु उससे भी बड़ी बात यह नीति दर्शन है जो उस पुनीत धर्मानुष्ठान के साथ-साथ प्रत्येक याजक को समझाया हृदयंगम कराया जाता है । यह भावोपचार प्रकारान्तर से सर्वतोमुखी सुख-शान्ति का पथ प्रशस्त करता है जिसमें शारीरिक और मानसिक रोगों के सिद्धान्त भी सम्मिलित हैं ।

रोगोपचार का यह प्रथम चरण है । उसे जड़ काटने की प्रक्रिया कहा जा सकता है । नीतिवान को रुग्णता का दण्ड प्रायः नहीं भुगतना पड़ता । उसे निरोग, बलिष्ठ एवं दीर्घजीवी बनने का आनन्द अनायास ही उपलब्ध होता रहता है ।

द्वितीय चरण में वह उपचार प्रक्रिया आरम्भ होती है । जिसमें रोगों के उत्पन्न होने की सम्भावना के समय से पहिले ही रोकथाम कर ली जाती है । यज्ञीय ऊर्जा की निकटता से यह प्रयोजन भली प्रकार पूरा होता है । यज्ञशाला के वातावरण में रोग-निरोधक तत्व प्रचुर मात्रा में रहते हैं । जो उधर बैठते हैं उनके शरीर छिद्रों में होकर वह ऊर्जा भीतर प्रवेश करती है और जहाँ भी विजातीय, अनुपयुक्त, द्रव्यनिष्ठता है, उसे निरस्त करती है । रोकथाम का यह उपचार प्रायः वैसा ही समझा जाता है, जैसा कि विभिन्न रोगों के आक्रमण की आशंका होने पर सुरक्षात्मक टीके लगाये जाते हैं । बच्चों को चेचक के टीके सरकारी स्वास्थ्य-विभाग के कर्मचारियों द्वारा घर-घर पहुँच कर लगाये जाते हैं । मेले ठेलों में जाने वालों को अनिवार्य रूप से हैजे के टीके लगाये जाते हैं । अन्यान्य बीमारियाँ, महामारियाँ फैलने की आशंका होती है तो सामयिक टीके लगाने के लिए सरकारी स्तर पर दौड़-धूप की जाती है । मनुष्य की ही तरह पशुओं को भी बीमारियों के यह सुरक्षात्मक टीके लगाये जाते हैं । कुओं में दवा डालने, घरों में डी. डी. टी. छिड़कने, नालियों पर चूना डालने, फिनायल से धोने, जलाने, जैसे उपचार प्रायः इसी प्रयोजन के लिए काम में लाये जाते हैं । यज्ञ में यह सामर्थ्य असाधारण रूप से पाई जाती है । उसमें खाने, लगाने, छिड़कने आदि की कोई प्रत्यक्ष प्रक्रिया कार्यान्वित नहीं करनी पड़ती । वरन् उत्पादित ऊर्जा की प्रखरता ही उस वातावरण में बैठे हुए मनुष्यों को विशिष्ट रूप से और उस क्षेत्र में रहने वालों को सामान्य रूप से इतना लाभ पहुँचाती है कि उनकी काया में रोग निरोधक सामर्थ्य बढ़ी-चढ़ी मात्रा में उत्पन्न हो सके ।

यज्ञ प्रक्रिया को प्रत्येक पर्व पर सामूहिक रूप से सम्पन्न करने का विधान है । इसमें उसका प्रभाव क्षेत्र रोग-निरोधक सामर्थ्य से भर जाता है । प्रत्येक मनुष्य को सोलह बार व्यक्तिगत रूप से यज्ञ सान्निध्य से विशिष्ट लाभ उठाने की धर्म परम्परा प्रचलित है । इसे षोडश संस्कार पद्धति कहा जाता है । माता के गर्भ में पहुँचते-पहुँचते यह उपचार आरम्भ हो जाते हैं । सीमन्त और पुंसवन संस्कार गर्भवती और गर्भावस्था में रहने वाले भ्रूण के लिए सुरक्षात्मक उपचार समझे जाते हैं । विदेश जाने के समुद्री जहाज पर, वायुयान पर चढ़ने से पूर्व, कई प्रकार के टीके लगवाने पड़ते हैं, ताकि किसी देश के रोग ग्रस्त नागरिक दूसरे देश में पहुँच कर अपनी छूत न फैला सकें । गर्भावस्था एक देश है और बाहरी दुनियाँ दूसरा । इसे भी एक देश माना समझा जा सकता है । अपनी दुनियाँ में आने देने से पहले यदि मनुष्य लोक के निवासी नवागन्तुक को टीके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लगाकर आने के लिए कहते हैं तो उसमें कुछ भी अनुचित नहीं है । सीमन्त और पुंसवन संस्कारों का एक पक्ष यह भी है । यों इसके अतिरिक्त भी उसके बौद्धिक एवं भावनात्मक प्रयोजन और भी हैं ।

जन्म के बाद जात-कर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत आदि कई संस्कार हैं जो बचपन की आयु में जल्दी-जल्दी सम्पन्न किए जाते रहते हैं । इन सब में यज्ञ अनिवार्य है । इससे बालक को उसके निरन्तर सम्पर्क में आने वाले माता-पिता को सम्मिलित होना पड़ता है । इसे शारीरिक एवं मानसिक विकृतियों के उत्पन्न होने की आशंका का पूर्व निराकरण कहा जा सकता है ।

आयु बढ़ने के साथ-साथ मनुष्य की अपनी निज की समर्थता बढ़ती है । ऐसी दशा में सुरक्षात्मक उपचार उतनी जल्दी-जल्दी करने की अनिवार्यता नहीं रहती । फलतः आगे के संस्कारों का यह अन्तर बढ़ता जाता है । समापन, विवाह, वानप्रस्थ संस्कारों के बीच कई-कई वर्ष का अन्तर रहता है । इन सभी संस्कारों में न केवल संस्कारित बालक या व्यक्ति को यज्ञीय सुरक्षा पद्धति से प्रभावित किया जाता है वरन् समूचे परिवार को यह लाभ मिलता है । घरों में समय-समय पर यज्ञ-हवन होते रहने पर उनके हर कोठे कमरे में यज्ञ-धूम्र पहुँचता है और उससे जहाँ-तहाँ छिपे बैठे कृमि-कीटकों को निरस्त करने में भारी सहायता मिलती है ।

यज्ञ प्रक्रिया का स्वास्थ्य सम्बन्धित लाभ यह भी है कि उसकी ऊर्जा परिवार की स्वस्थता में मूल्यवान सहायता प्रस्तुत करती है । संस्कारों को पारिवारिक और पर्वों को सामूहिक स्वास्थ्य-सुरक्षा का एक उपयोगी उपाय माना गया है । कभी-कभी मनुष्यों और पशुओं में बीमारियाँ फैलती हैं, तो उनके निराकरण के लिए यज्ञ-आयोजन किए जाते हैं । इससे न केवल उस घर-मुहल्ले को वरन् उस क्षेत्र में निवास करने वाले मनुष्यों एवं अन्य प्राणियों को स्वास्थ्य संकट से बचने का लाभ मिलता है ।

होली का वार्षिक यज्ञ बड़े रूप में मनाने की परम्परा है । इसमें फसल को संस्कारित किया जाता है । खाद्य पदार्थों को गरम करके खाने की प्रथा इसलिए भी है कि उनमें कुछ विकृतियाँ जुड़ी हों तो उसका निराकरण हो सके । डाक्टर इन्जेक्शन की सुई, आपरेशन के औजार प्रयुक्त करने से पहिले उन्हें गरम कर लेते हैं । इसका उद्देश्य उसके साथ किसी प्रकार जुड़ गये विषाणुओं को हटाना है अन्यथा वे शरीर में पहुँचकर कोई नया संकट खड़ा कर सकते हैं । ठीक इसी प्रकार फसल पक कर आने पर नवान्न का उपयोग करने से पूर्व उसे यज्ञीय ऊर्जा से प्रभावित किया जाता है । इससे उसकी विशिष्टता बढ़ जाती है । कहीं कोई अनुपयुक्त तत्व इस अन्न के साथ मिले होंगे तो उन्हें सफलतापूर्वक हटाया जा सकेगा । यहाँ यह स्मरण रखा जाना चाहिए कि इन पंक्तियों में स्वास्थ्य प्रकरण की चर्चा हो रही है । इसलिए यज्ञ-प्रक्रिया के उन्हीं लाभों पर प्रकाश डाला जा रहा है, जो स्वास्थ्य से सीधे सम्बन्धित हैं । इसका तात्पर्य किसी को यह नहीं मान लेना चाहिए कि मात्र स्वास्थ्य संरक्षण ही यज्ञ का एक मात्र उद्देश्य है । उसके असंख्य लाभ हैं । उससे समूचे वातावरण में उत्कृष्टता के दैवी तत्वों का संवर्धन होता है । फलतः प्राणियों की सर्वतोमुखी प्रगति का पथ प्रशस्त होता है ।

रोग आने से पूर्व दुर्बलता का आगमन उसी प्रकार होता है जैसे सूर्य के निकलने से पूर्व ऊष्मा का उदय होता है । दुर्बलता अपने आप में एक विपत्ति है । उसके कारण भीतर से रुग्णता उपजती और बाहर से बरसती देखी जाती है । दुर्बलता का प्रदर्शन होने देना, होने पर उसे हटाने में जुट जाना रोगों से बचे रहने की सुनिश्चित गारण्टी है । दुर्बलता निवारण के लिए जो उपाय अपनाने पड़ते हैं उनमें से एक यज्ञीय माध्यम से पुष्टाई को सूक्ष्मीकरण विधि से शरीर के अन्तराल में पहुँचाना है । यज्ञ में मात्र रोगनाशक ओषधियाँ ही नहीं होमी जाती वरन् पौष्टिक शाकल्य का भी यजन होता है । घी, शक्कर, मेवा बलवर्धक ओषधियों का भी बहुत बड़ा भाग हविष्य में रहता है । इनकी ऊर्जा रोग निवारण का ही नहीं बलवर्धन का अतिरिक्त प्रयोजन भी पूरा करती है । यज्ञ सान्निध्य से बढ़ने वाली समर्थता शरीर को ओजस्वी, मस्तिष्क को मनस्वी और अन्तःकरण को तेजस्वी बनाती है । तीनों शरीरों का यह त्रिविध बलवर्धन है । जिस प्रकार नासिका से लेकर शरीर के अन्यान्य छिद्रों द्वारा शरीर में यज्ञ ऊर्जा पहुँच कर रोग निवारण करती है ठीक उसी प्रकार उस आधार पर यज्ञ माध्यम से पुष्टाई का सूक्ष्मीकरण शरीर में प्रवेश करता है तो उससे बहुमूल्य पौष्टिक पदार्थ खाने से कुछ अधिक ही लाभ मिल जाता है । अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसलिए कि उसके प्रवेश एवं पाचन में तनिक भी कठिनाई नहीं होती । पौष्टिक पदार्थों को खरीदने का ही नहीं पचाने का भी सवाल है । पेट की सामर्थ्य न हो तो गरिष्ट पौष्टिक पदार्थ पच नहीं सकेंगे । उल्टा अपच उत्पन्न करेंगे और उन्हें हटाने में शरीर हानि सहनी पड़ती है । पैसा ही खर्च नहीं होता वरन् शरीर पर अनावश्यक दबाव पड़ने से संचित सामर्थ्य से भी हाथ धोना पड़ता है ।

यज्ञ द्वारा शरीर में पुष्टाई पहुँचाने का तरीका जितना सरल है उतना ही प्रभावी भी । अत्यधिक दुर्बलता बढ़ जाने पर पाचन तंत्र काम नहीं करता, तब नस के माध्यम से ग्लूकोज शरीर में पहुँचाया जाता है । दूध पीने का अपना लाभ है पर छोटे से मिल्क इन्जेक्शन से वह काम अत्यधिक परिमाण में मिल जाता है । विटामिन खाद्य पदार्थों में घुले रहते हैं पर उन्हें प्रथक से निकाल कर तनिक-सी मात्रा में खाने पर प्राय: वैसा ही लाभ मिल जाता है । ढेरों फलों के खाने की अपेक्षा उनका रस पीने से पेट पर भार कम पड़ता है और लाभ उतना ही मिलता है । अन्यान्य पौष्टिक खाद्यान्नों का सार तत्व अब रसायनशालायें बनाने लगी हैं और उनसे दुर्बल पाचन तंत्र वाले अस्वस्थ असमर्थ व्यक्ति भी अपनी जीवनी शक्ति बनाये रहने का काम लेने लगे हैं । यज्ञ माध्यम से सूक्ष्मीकृत पुष्टाई को अपेक्षाकृत अधिक सरलतापूर्वक शरीर में पहुँचाया और पचाया जा सकता है ।

सूक्ष्मीकरण से शक्ति का विस्तार होता है । इस तथ्य को होम्योपैथी के पोटेन्सी विस्तार सिद्धान्त को पढ़कर अधिक अच्छी तरह समझा जा सकता है । डी. शेन की दवाओं में साधारण जड़ी-बूटियों को अधिक पिसाई करके उनकी आणविक ऊर्जा को उभारा जाता है और वे अपेक्षाकृत अधिक लाभदायक सिद्ध होती हैं । सूक्ष्मता का अपना एक स्वतंत्र दर्शन है जिसमें वस्तुओं की अदृश्य स्थिति का ही प्रतिपादन नहीं वरन् यह सिद्धान्त भी सम्मिलित है कि 'स्थूल' के अन्तराल में छिपा हुआ 'सूक्ष्म' किस प्रकार असंख्य गुना सामर्थ्यवान होता है । परमाणु और जीवाणु जैसी नगण्य इकाइयों के अन्तराल में काम करने वाली नाभिकीय क्षमता का आभास और मूल्यांकन बुद्धि को हतप्रभ बना देता है । स्थूल, ढेला और सूक्ष्म शरीर विस्तार की दृष्टि से बड़े भले ही हों पर उसकी वास्तविक सामर्थ्य देखनी हो तो उस अन्तरंग को कुरेदना पड़ेगा जो आँखों के लिए अदृश्य होते हुए भी सामर्थ्य की दृष्टि से नितान्त अद्‌भुत है । पुष्टाई के लिए प्रयुक्त होने वाले पदार्थों का रासायनिक विश्लेषण शोधनकर्त्ताओं ने बहुत पहले से ही जान लिया है । वह निष्कर्ष सर्व साधारण को उपलब्ध है । इनकी सूक्ष्म सामर्थ्य के क्षेत्र में प्रवेश किया जाय तो पता चलेगा कि उस अदृश्य का यदि उपयोग सम्भव हो सके तो अणु शक्ति की तरह ही खाद्य पदार्थों का स्तर भी हर दृष्टि से अद्‌भुत बन सकता है । सामान्य खाद्यों को सूक्ष्मता के आधार पर असाधारण-शक्ति सम्पन्न बनाया जा सकता है और उसका लाभ अब की अपेक्षा असंख्य गुना उठाया जा सकता है, तब सामान्य खाद्य पदार्थ भी उच्चस्तरीय ओषधि की भूमिका निभा सकते हैं ।

राजा दशरथ के यहाँ सम्पन्न हुए पुत्रेष्टि यज्ञ में चरु बनाया गया था । उस खीर के पहिले दो हिस्से किए गये । यज्ञ पुरोहित शृंगी ऋषि को जानकारी थी कि दो रानियाँ हैं इसलिए उनने चरु को दो हिस्सों में बाँट दिया, पीछे स्मरण दिलाया गया कि रानियाँ तीन हैं, तब उन्होंने भूल सुधारी और दो खण्डों में विभाजित खीर में से थोड़ा अंश निकाल कर तीसरा भाग बनाया । तीनों रानियों ने उसे सेवन किया छोटी सुमित्रा के हिस्से में वह दो भाग मिलाकर एक बनाया गया भाग आया । दो रानियों को एक-एक संतान हुई पर सुमित्रा को दो सन्तानें हुईं । यह चरु की सूक्ष्म विशेषता का विवरण है । उसे चमत्कारी ओषधि कहा जा सकता है । वैसे देखने में वह खीर भर थी । यज्ञ प्रक्रिया की सूक्ष्म क्षमता का समावेश हो जाने से वह सामान्य-सा खाद्य पदार्थ असाधारण शक्ति सम्पन्न बन गया था ।

यज्ञ भस्म यों अधिक से अधिक कोई मांगलिक पदार्थ माना जा सकता है, पर कई बार उसके उपयोग से बहुमूल्य औषधियों से भी अधिक प्रभाव परिणाम निकलता देखा गया है । उसे पौष्टिक खाद्य पदार्थ के रूप में स्वास्थ्य संवर्धन के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है । सूक्ष्म सामर्थ्य से सम्पन्न यज्ञ भस्म-चरु अथवा कोई भी पदार्थ इतने अधिक बलवर्धक हो सकते हैं कि उनकी तनिक भी मात्रा गाड़ी भर पौष्टिक खाद्य पदार्थों की समता कर सके । सघन वन प्रदेशों के निवासी, हिमाच्छादित गुफाओं में रहने वाले तपस्वी सिद्ध पुरुष अपने आहार की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समस्या पदार्थों की सूक्ष्म सामर्थ्य के सहारे ही हल करते हैं ।

यज्ञ विज्ञान आरोग्य साधन से सम्बन्धित दो भागों में विभक्त है । एक रोग निवारण दूसरा बलवर्धन । दोनों की उपयोगिता आवश्यकता महत्ता एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर है । दोनों के सम्बन्ध से ही स्वास्थ्य समस्या का समाधान होता है । अतएव हविष्य में रोग निवारक ओषधियाँ तथा बलवर्धक पुष्टाई का सन्तुलित रूप से समावेश किया जाता है । उसके प्रभाव से न केवल शारीरिक वरन् मानसिक समर्थता का भी संवर्धन होता है ।

उपरोक्त पंक्तियों में यज्ञ से आरोग्य की उभयपक्षीय आवश्यकताएँ पूरी होने के सामान्य उपक्रम पर प्रकाश डाला गया है । अमुक रोग में अमुक वस्तुओं के सहारे हवन करके तदनुरूप ऊर्जा उत्पन्न करना यह यज्ञ चिकित्सा का प्रकरण है । इस दिशा में पुरातन काल के तत्वदर्शी वैज्ञानिकों ने गम्भीर अनुसंधान किए थे और ऐसे विधि-विधान खोज निकाले थे जिनके सहारे व्यक्ति विशेष पर चिकित्सा के लिए तदनुरूप विशेष यज्ञ उपचार का प्रभाव हो सके । इस पद्धति का उपयोग ओषधि सेवन के साथ-साथ भी चलता रह सकता है ।

यज्ञ चिकित्सा का प्रचलन प्राचीनकाल में बहुत था । गुरुकुलों और आरण्यकों के साथ-साथ चिकित्सालय भी चलते थे जिनमें आहार-विहार के सामान्य विधि-विधान के साथ-साथ आरोग्य लाभ के लिए विशिष्ट ओषधियों का हविष्य, विशिष्ट समिधाओं का उपयोग, विशेष पशु का घृत, विशेष कर्मकाण्डों का समावेश करते हुए अमुक रोग की चिकित्सा की जाती थी और सफल भी होती थी । उस पद्धति का सर्वांगपूर्ण विधि-विधान तो इन दिनों उपलब्ध नहीं है, पर जहाँ-तहाँ मिलने वाले उल्लेखों से पता चलता है कि किसी समय यज्ञोपचार प्रौढ़ता की स्थिति में रहा होगा और उसके माध्यम से सर्वसाधारण को लाभ मिलता रहा होगा । सर्व विदित है कि मध्यकाल में आततायी आक्रामकों द्वारा बहुमूल्य ज्ञान सम्पदाओं के भण्डार पुस्तकालय होली बनाकर जलाये गये थे । सम्भवतः यज्ञोपचार का महत्वपूर्ण अंश उसी दावानल में कहीं जल गया होगा । जो हो अब उस संदर्भ में नये सिरे से खोज करने की आवश्यकता है । प्रयत्न किया जाय तो यह अनुसन्धान कुछ अधिक कष्ट साध्य नहीं होगा । कारण यह है कि इस सन्दर्भ में पहिले से ही बहुत कुछ किया जाता रहा है और प्रगति के ऊँचे शिखर पर पहुँचने का कार्य पहले से ही सम्पन्न हो चुका है । दो ही कार्य ऐसे हैं जो नये सिरे से होंगे । एक तो बीच-बीच की कड़ियाँ टूटकर लुप्त हो गई हैं, जहाँ तहाँ के टुकड़े ही उपलब्ध होते हैं । उन्हें नये क्रम से जमाना और जो कड़ियाँ गुम हो गई हैं उन्हें फिर से ढालना जमाना । दूसरा यह कि प्राचीनकाल की तुलना में इन दिनों मनुष्यों और वनस्पतियों की स्थिति में जो अन्तर आया है उसे ध्यान में रखते हुए ऐसे उपक्रम तैयार करना जो प्रस्तुत परिस्थितियों में अपनी प्रामाणिकता और सार्थकता सिद्ध कर सकें । इस दृष्टि से किए गये अनुसंधानों पर यदि गम्भीरतापूर्वक जुट जाया जाय तो निश्चित ही चिकित्सा की एक ऐसी सर्वांगपूर्ण पद्धति का विकास हो सकेगा जो प्रचलित सभी उपचार पद्धतियों को पीछे छोड़कर अपनी विशिष्टता सिद्ध कर सके ।

यज्ञ-चिकित्सा सरल भी-सर्वोपयोगी भी

इन दिनों अभी जितनी भी चिकित्सा पद्धतियाँ प्रचलित हैं , उन सब उपचारों के लिए मोटी काट-छाँट सफाई या मारकाट ही सम्पन्न होती है । ओषधियाँ चाहे मुँह के द्वारा दी जायें अथवा सुई द्वारा रक्त में पहुँचायी जाये, विषाणुओं के पेट में घुसकर उन्हें विनष्ट करने के लिए जिस सूक्ष्मता की आवश्यकता पड़ती है वह उनमें नहीं होती । यद्यपि शल्य चिकित्सा, रेडियो आइस्टोप, और विद्युत संचार जैसी पद्धतियाँ भी विकसित हुईं, पर रुग्णता मारने और स्वस्थता को बचा लेने की बात नहीं बन सकी । इस दिशा में होम्योपैथी ने ही कुछ सोचा और कदम बढ़ाया है, अन्यथा ऐण्टीवायटिक दवाओं के सारे रसायन मारक शक्ति से ही भरे होते हैं, उनमें पोषण की दृष्टि से कुछ नहीं होता । इसी प्रकार पोषण के लिए प्रयुक्त होने वाले टॉनिकों में मारक गुण नहीं होते । दोनों ही एकांगी रहते हैं । दोनों का सम्मिश्रण कर दिया जाय तो वे परस्पर आपस में ही लड़-भिड़ जाते हैं और शरीर पर प्रभाव डालने वाली क्षमता खो बैठते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस दृष्टि से यज्ञ चिकित्सा इतनी सरल और उपयोगी है कि उसके आधार पर मारक और पोषक दोनों ही तत्वों को शरीर में आसानी से पहुँचाया जा सकता है । यों यज्ञ विज्ञान के अनेक पक्ष हैं, उनमें एक रोगोपचार भी है । मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य की अभिवृद्धि के साथ ही शारीरिक रोगों के निवारण में भी इससे ठोस सहायता मिलती है ।

ओषधि उपचार में शरीर के विभिन्न अवयवों तक पदार्थ को पहुँचाने का माध्यम रक्त है । रक्त यदि दूषित, निर्बल हो तो वह प्रेषित उपचार, पदार्थ का ठीक तरह परिवहन नहीं कर सकता । फिर एक कठिनाई और भी है कि रक्त में रहने वाले स्वास्थ्य प्रहरी स्वेत-कण किसी विजातीय पदार्थ को सहन नहीं करते और उससे लड़ने मरने को उधार खाये बैठे रहते हैं । ओषधि जब तक रोग कीटाणुओं पर आक्रमण करने की स्थिति तक पहुँचे तब तक उसे इन स्वास्थ्य प्रहरियों से ही महाभारत करना पड़ता है । बीमारी पर आक्रमण होने पर प्रयुक्त ओषधि और स्वास्थ्य कण ही आपस में भिड़ जाते हैं, यह एक नया विग्रह और खड़ा हो जाता है । पेट की पाचन क्रिया रक्त में उन्हीं पदार्थों को सम्मिलित होने देती है, जो शरीर संरचना के साथ ताल मेल खाते हैं । इसके अतिरिक्त जो बच जाता है वह विजातीय कहा जाता है और उसे मल, मूत्र, स्वेद, कफ आदि के द्वारा निकाल बाहर किया जाता है । इस पद्धति को देखते हुए यह भी एक अति जटिल कार्य है कि ओषधियों में रहने वाले रसायन किस प्रकार विषाणुओं तक पहुँचें और किस तरह वहाँ जाकर अपना निवारक उपक्रम आरम्भ करके उसे सफलता के स्तर तक पहुँचायें ।

यज्ञ प्रक्रिया को चिकित्सा प्रयोजन के लिए प्रयुक्त करने पर इस कठिनाई का हल सहज ही सम्भव हो जाता है । ओषधि को पेट में पचकर, रक्त में मिलकर, श्वेत प्रहरियों से लड़ने के उपरान्त पीड़ित स्थान तक पहुँचने की लम्बी मंजिल पार नहीं करनी पड़ती, वरन् इन सारे जंजाल से बचकर, साँस द्वारा अभीष्ट स्थान तक पहुँचने का एक नया रास्ता मिल जाता है । शरीर शास्त्र के विद्यार्थी जानते हैं कि मात्र रक्त ही कोषों की खुराक पूरी नहीं करता वरन् सांस द्वारा भी शरीर में आहार पहुँचता है और वह इतना महत्वपूर्ण होता है कि उसकी गरिमा मुँह द्वारा खाये और पेट द्वारा पचाए गये आहार की तुलना में किसी भी प्रकार कम नहीं होती । रक्त की भाँति प्राण वायु भी ऑक्सिजन के रूप में समस्त शरीर में परिभ्रमण करती है । पोषण पहुँचाने और गंदगी को बुहारने में उसका बहुत बड़ा हाथ है । दृश्य रूप से जो कार्य पाचन और रक्ताभिशरण क्रिया द्वारा भी संपन्न होता है । यह दोनों ही पद्धतियाँ मिलकर दो पहियों की तरह जीवन रथ को गतिशील बनाये रहती हैं ।

स्वास्थ्य सुधार और रोग निवारण की आवश्यकता को पूरा करने के लिए श्वांसोच्छास प्रक्रिया को अवलम्बन बनाने पर उससे कहीं अधिक लाभ उठाया जा सकता है, जो रक्ताभिशरण पद्धति से आमतौर पर काम में लाया जाता है । यह कार्य यज्ञ चिकित्सा द्वारा सम्पन्न होता है । इस माध्यम से न केवल विषाणुओं से सफलता पूर्वक संघर्ष संभव हो सकता है, वरन् पोषण की आवश्यकता भी पूरी हो सकती है । यज्ञ द्वारा वायुभूत बनाई गई ओषधियाँ विषाणुओं से सूक्ष्म होने की विशेषता के कारण उन पर आक्रमण करके उन्हें सरलता पूर्वक परास्त कर सकती हैं । पाचन, परिवहन और प्रहरियों से उलझने जैसे झंझट मार्ग में नहीं हैं और न विलय का अवरोध ही है । साँस द्वारा अभीष्ट पदार्थों को शरीर के अंतरंग किसी भी अंग अवयव तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है ।

विषाणुओं का मारण जितना आवश्यक है उतना ही स्वस्थ कोषिकाओं में समर्थता की अभिवृद्धि भी आवश्यक है । अस्वस्थता का एकमात्र कारण विषाणुओं का आक्रमण ही नहीं होता, दूसरा हेतु यह भी है कि सामान्य जीवाणुओं की समर्थता और स्वास्थ्य संरक्षक श्वेत-कणों की प्रखरता गड़बड़ा जाती है । इसलिए वे रोगों के प्रवेश को रोकने और प्रविष्ट को निरस्त करने में सफल नहीं हो पाते । यदि जीवनी शक्ति की न्यूनता न हो, तो न विषाणुओं का शरीर के सुदृढ़ दुर्ग में सहज ही प्रवेश हो सकता है और न प्रवेश करने वालों को देर तक ठहरने की सुविधा ही मिल सकती है । दुर्बलता, क्षीणता यदि बढ़ती जाय तो आवश्यक नहीं कि बाहर से ही रोग प्रवेश करें । निरन्तर टूटते रहने वाले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपने ही जीवकोषों की लाशें बाहर ढोकर फेंकी न जाने पर स्वत: सड़ने लगती है और उन्हीं का स्वरूप विषाणुओं के रूप में प्रकट होता है ।

गहन अनुसंधानों के कारण अब यह मान्यता निराधार सिद्ध हो चुकी है कि विषाणु कहीं बाहर से आते हैं और उसके कारण मनुष्य बीमार पड़ता है । बाहर तो हवा, धूल पानी और खाद्य पदार्थों में सर्वत्र कितनी विषाक्तता भारी पड़ी है । शरीर को शरीर न छुए यह तो संभव है, पर नाक से निकली हुई साँस का एक दूसरे के शरीर में प्रवेश कर जाने पर प्रतिबंध कैसे लगाया जा सकता है । इस दृष्टि से तो किसी भी व्यक्ति का स्वस्थ रह पाना संभव नहीं होता । क्योंकि सभी एक ही, वायुमण्डल में श्वांस लेते हैं और हर किसी के आस-पास कोई न कोई बीमार व्यक्ति रहता है ।. रोगों की उत्पत्ति बाहर के विषाणुओं से ही नहीं होती, अपितु शरीर में निरंतर उत्पन्न होते रहने वाला मल ठीक तरह से बाहर नहीं निकल पाने पर उसी से विषाणु उत्पन्न होते जाते हैं ।

इस नये संशोधन के साथ रोगोपचार का एक पक्ष जहाँ विषाणुओं को मारना है वहीं दुर्बलता को दूर कर सफलता का परिपोषण करना भी है । आधुनिक चिकित्सा पद्धति का सारा ध्यान संहार उपचार पर ही केन्द्रित रहता है । यह एकांगीपन जब तक दूर नहीं किया जायगा तब तक चिकित्सा प्रक्रिया अधूरी ही बनी रहेगी ।

यज्ञ चिकित्सा में ये दोनों ही विशेषतायें विद्यमान हैं । उसके माध्यम से उपयोगी रासायनिक पदार्थों को इतना सूक्ष्म बना दिया जाता है कि वे अपने-अपने उपयुक्त प्रयोजनों को पूरा कर सकें । अणुओं में पाया जाने वाला चुंबकत्व अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए वातावरण में से अभीष्ट तत्व अनायास ही ग्रहण करता रहता है । यज्ञ प्रक्रिया के सहारे वायुभूत रासायनिक पदार्थ शरीर के समस्त भीतरी अवयवों में अनायास ही जा पहुँचते हैं और स्थानीय जीवाणुओं की आवश्यकता पूरी करते हैं । पेड़ आकाश में परिभ्रमण करने वाले बादलों को अपनी ओर खींचते हैं । सशक्त वायुभूत रसायन जब शरीर के भीतर पहुँचता है तो वहाँ की आवश्यकता सहज ही पूरी होने लगती है ।

प्रकृति एक ओर तो वस्तुओं का परिवर्तन करने के लिए विनाश व्यवस्था चलाती है और दूसरी ओर अनावश्यक क्षरण रोकने और क्षतिपूर्ति के साधन भी जुटाती है । इसी संतुलन के आधार पर सृष्टि-क्रम चल रहा है, अन्यथा विनाश या विकास में से एक के अत्यधिक उग्र हो जाने पर एकांगी स्थिति बन जाती और असंतुलन की अराजकता दिखाई देती है । रोग कीटक जिस प्रकार स्वस्थ जीवाणुओं पर आक्रमण करते हैं, उसी प्रकार उन्हें भी नियंत्रित करने के लिए वातावरण में आवश्यक तत्व बने रहते हैं । यज्ञ द्वारा उत्पन्न विशेष गैसों में यह विशेषता रहती है कि वे रोग कीटकों पर नभ सेना की तरह बरस पड़ें । रक्त के श्वेत कण जहाँ भूमिगत लड़ाई लड़ते और आमने-सामने की गुत्थम-गुत्था करते हैं, वहाँ यज्ञ की वायु, नभ मार्ग से बम गिराने की तरह शत्रु सेना को निरस्त करती है । यह उपचार प्राकृतिक परम्परा के अनुसार स्वत: ही सम्पन्न होता रहता है । गर्मी के दिनों में सूखी धरती की प्यास शीघ्र ही वर्षा ऋतु को घसीट लाती है । जिस साल गर्मी कम पड़ती है उस साल वर्षा भी कम होती है । यह प्रकृति चक्र है । बच्चा रोकर माता का ध्यान आकर्षित करता है और उससे अपनी क्षुधा के लिए पयपान का अनुदान प्राप्त कर लेता है । ठीक इसी प्रकार दुर्बलता ग्रस्त जीवाणु अपने लिए समर्थ परिपोषण की याचना करते हैं । इसकी पूर्ति वे रासायनिक पदार्थ करते हैं जो यज्ञ प्रक्रिया द्वारा वायुभूत होकर जीवाणुओं के निकट जा पहुँचते हैं । इस प्रकार सफाई और परिपोषण के, ध्वंस और निर्माण के दोनों ही प्रयोजन यज्ञ वायु के द्वारा पूरे होने लगते हैं और अस्वस्थता का बहुत हद तक समाधान होता है ।

सूक्ष्म जगत की क्षमताएँ विलक्षण हैं । लाख हस्त-कौशल अपनाया जाय अथवा कैसे भी यन्त्रों की सहायता ली जाय, पर फूलों से शहद पृथक नहीं किया जा सकता । किन्तु वही काम मधुमक्खी अपनी विशिष्ट क्षमता द्वारा बड़ी आसानी से कर लेती है । आटे में यदि चीनी मिली हो तो उसे अलग कर पाना सामान्यत: कठिन होता है, किन्तु चींटी उस सम्मिश्रण के रहते हुए भी चीनी के कणों को खाती रहती है और आटे वाला भाग छोड़ देती है । जीवाणुओं में यह विशेषता है कि यदि आस-पास के वातावरण में आवश्यक तत्व मौजूद हों तो वे पोषण एवं संरक्षण की आवश्यक सामग्री स्वयमेव खींच लेते हैं । सामान्य वायु जो सांस द्वारा ग्रहण की जाती है उसमें जीवन संचार बनाए रहने के कितने ही पदार्थ रहते हैं । रोगी की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकताएँ विशेष प्रकार की होती हैं । उसे विशेष मात्रा में विशेष पदार्थ चाहिए । इनकी पूर्ति यज्ञ विधि द्वारा विनिर्मित विशिष्ट प्रकार की प्राण वायु द्वारा सम्पन्न होती है ।

विष कीटकों को मारने के लिए अनेकानेक विशेषताओं से युक्त ओषधियाँ निरन्तर बनती और बढ़ती चली जा रही हैं । यह सभी ऐसी हैं जो प्रत्यक्ष स्पर्श के उपरान्त ही अपना प्रभाव आरम्भ करती हैं । इससे भी सरल तरीका यह है कि विषाणु मारक पदार्थों को वायुभूत बनाकर वहाँ पहुँचा दिया जाय, जहाँ संशोधन की आवश्यकता है । फ्रांस के रसायन शास्त्री डा० ट्रिलवर्ड तथा भारत के रसायनविद् डॉ० सत्यप्रकाश (स्वामी सत्यप्रकाशानन्द) ने अपने प्रयोगों से सिद्ध किया है कि लकड़ी जलाने से जो फार्मल्डीहाइड गैसें निकलती हैं, उनमें रोग कीटकों से निपटने की अद्‌भूत क्षमता रहती है । संभवत: भारतीय परम्परा में मृत शरीर को जलाने के पीछे यह दृष्टि भी रही होगी कि निर्जीव काया में उत्पन्न होने वाली सड़न से वातावरण को विषाक्त होने से रोकने के लिए उसे अग्नि संस्कार द्वारा समाप्त किया जाय ।

सामान्य स्वास्थ्य संवर्धन के लिये यज्ञाग्नि द्वारा वायुभूत बनाए गए पदार्थों का सेवन, मुँह द्वारा खाए गये और पेट द्वारा पचाए गए पौष्टिक पदार्थों की तुलना में कहीं अधिक लाभदायक सिद्ध होता है । इस प्रकार बीमारियों से लड़ने वाली जीवनी शक्ति को बढ़ाने तथा विषाणुओं के आक्रमण को निरस्त करने में भी यज्ञीय ऊर्जा का सफल उपयोग हो सकता है । स्वास्थ्य रक्षा के अतिरिक्त बल बढ़ाने और व्यक्तित्व को विकसित करने में समर्थ विचारणाओं तथा भावनाओं का संवर्धन इतना बड़ा लाभ है, जिसे स्वास्थ्य रक्षा से हजार गुना मूल्यवान और महत्वपूर्ण कहा जा सकता है । यज्ञ द्वारा रोग निवारण एवं बलवर्धन के अतिरिक्त इसमें शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक क्षेत्र की सभी विकृतियों के निराकरण की पूरी-पूरी सँभावना सन्निहित है ।

यज्ञ द्वारा रोगों की चिकित्सा

यज्ञ चिकित्सा का पूर्ण शास्त्रोक्त विधान अज्ञात होते हुए भी कुछ साधारण प्रयोग अनुभव में ऐसे आते रहते हैं, जिनके द्वारा रोगनिवारण का कार्य साधारण दवा दारू की अपेक्षा अधिक सरलता एवं सफलता पूर्वक हो सकता है ।

रोगियों की शारीरिक स्थिति अलग प्रकार की होती है । जिन्हें कई साधारण मन्द रोग होते हैं, उन्हें चलने-फिरने स्नान करने आदि साधारण कार्यों में कुछ कठिनाई नहीं होती वे हवन पर स्वयं बैठ सकते हैं । जिनको चलने-फिरने स्नान करने आदि में असुविधा है उन्हें आहुति आदि स्वयं तो नहीं देनी चाहिए पर हवन स्थान के निकट ही आराम के साथ बैठ जाना चाहिए । जो रोगी बिलकुल असमर्थ हैं उनकी रोग शैय्या के समीप ही हवन किया जा सकता है । वे रोगी हवन की ओर मुख किये हों ताकि हवन में होमी हुई आहुतियों की गन्ध उनके मुख और नासिका तक पहुँचती रहे । यदि वायु अथवा मौसम प्रतिकूल न हो तो रोगी के शरीर को जितना सम्भव हो उतना खुला रखकर या कम से कम व हलके-ढीले कपड़े पहनकर भी उस यज्ञ वायु को शरीर से स्पर्श करने का प्रयत्न करना चाहिए ।

ऐसे हवन देवाह्वान के लिए नहीं, चिकित्सा प्रयोजन के लिए होते हैं, इसलिए इनको देव पूजन आदि की सर्वाङ्गपूर्ण प्रक्रियायें न बन पड़ें तो चिन्ता की बात नहीं है । ताँबे के हवन कुण्ड में अथवा भूमि पर १२ अँगुल चौड़ी १२ अंगुल लम्बी, ३ अंगुल ऊँची, पीली मिट्टी या बालू की वेदी बना लेनी चाहिए । हवन करने वाले उसके आस-पास बैठें । यदि रोगी भी हवन पर बैठ सकता हो तो उसे पूर्व की ओर मुख कराके बिठाना चाहिए । शरीर-शुद्धि, मार्जन, शिखाबन्धन, आचमन, प्राणायाम, न्यास आदि गायत्री मन्त्र से करके कोई ईश्वर प्रार्थना हिन्दी या संस्कृत की करनी चाहिए । वेदी और यज्ञ का जल, अक्षत आदि से पूजन करके गायत्री मन्त्र के साथ हवन आरम्भ कर देना चाहिए । यदि कोई जानकार यज्ञकर्ता हो तो उन पद्धतियों में से जितना अधिक सम्भव हो विधि-विधान से प्रयोग करले । यदि रोगी के निकटवर्ती लोगों को उतनी जानकारी न हो तो एक लोटे में तथा कटोरी में रख कर हवन सामग्री से आहुतियाँ देनी आरम्भ कर देनी चाहिए ।

जिन रोगों में रोगी को लंघन हो रहे हों, उन में तिल, जौ तथा चावल स्वल्प मात्रा में ही डालना चाहिए । ऐसी स्थिति में जो घी हवन सामग्री में मिलाया गया है उतना ही पर्याप्त है । यदि रोगी खाता-पीता है तो हवन सामग्री में मिलाकर अथवा अलग से आहुति देकर घी का समुचित उपयोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया जाना ठीक है । कुछ ओषधियाँ, सामग्री प्रत्येक रोग में प्रयुक्त होती हैं । उनके साथ-साथ उस विशेष रोग में उपयुक्त विशेष ओषधियाँ भी मिला लेनी चाहिए । ओषधियाँ पुरानी, सड़ी, घुनी, हीनवीर्य न हों जितनी ताजी और अच्छी हवन ओषधियाँ होंगी उतना ही वे अधिक लाभ करेंगी । कम से कम २४ आहुतियाँ अवश्य देनी चाहिए । आवश्यकतानुसार पीछे भी दिन में तीन बार और रात को एक दो बार किसी पात्र में अग्नि रखकर थोड़ी-सी ओषधियाँ थोड़ी देर के लिये रोगी के निकट धूप की भाँति जलाई जा सकती हैं ।

यज्ञोपचार में प्रयुक्त समिधा एवं हवन सामग्री

हवन के लिए समिधा की लकड़ी आम, पीपल, गूलर, छोंकर, बेल, ढाक, आदि के पुराने पेड़ की खूब सूखी हुई लेनी चाहिए । चन्दन, देवदारु, सरीखी सुगंधित लकड़ियाँ भी थोड़ी बहुत मिला ली जाँय तो और भी अच्छा है ।

हवन सामग्री में निम्न वस्तुएँ होनी चाहिए- चन्दन, इलाइची, जायफल, जावित्री, केशर, गिलोच, अगर, तगर, असगंध, बंशलोचन, गूगल, लोंग, ब्राह्मी, पुनर्नवा, जीवन्ती, कचूर, छार छबीली, शतावरि, खस, कपूर-कचरी, कमलगट्टा, शीतल चीनी, तालीस पत्र, बच, नागकेशर, दालचीनी, राम्ना, आँवला, जटामासी, इन्द्र जौ, मुनक्का, छुहारा, नारियल की गिरी, चिरौंजी, किशमिश, पिस्ता, अखरोट । यह चीजें साधारणतः समान भाग होनी चाहिए पर केशर बंसलोचन जैसी अधिक मँहगी चीज आर्थिक कारणों से कम भी डाली जा सकती है । सामग्री नई, ताजी सूखी और साफ होनी चाहिए । सामग्री कूट कर उसमें तिल, जौ, चावल, उर्द, शक्कर और घी मिला लेना चाहिए । इस सामग्री का हवन करने से हवन के निकटस्थ लोगों को बल बर्धक, मानसिक शान्तिदायक और रोग नाशक तत्व प्राप्त होते हैं । फल स्वरूप उनके स्वास्थ्य की स्थिति उन्नत एव सन्तोष जनक होने लगती है ।

निघण्टु-भावप्रकाश एवं अन्य आयुर्वेद ग्रंथों में यज्ञोपचार में प्रयुक्त होने वाली ओषधियों की नामावली इस प्रकार है -

मंडूपर्णी, ब्राह्मी, इन्द्रायण की जड़, सतावरी, असगन्ध, विधारा, शालपर्णी, मकोय, अडूसा, गुलाब के फूल, तगर, राशना, वंशलोचन, क्षीरकाकोली, जटामासी, पण्डरी, गोखरू, तालमखाना, बादाम, मुनक्का, जायफल, बड़ी इलायची, बड़ी हरड़, आँवला, छोटी पीपल, जीवन्ती, पुनर्नवा, नगेन्द्रवामड़ी, चीड़का बुरादा, गिलोय, चन्दन, कपूर, केशर, अगर, तगर, गूगल, पानड़ी, मोथा, चीता, पित्तपापड़ा । यह सब ओषधियाँ सम भाग, इनका दसवां भाग शक्कर तथा आठवां भाग शहद डालकर गोघृत में लड्डू समान बनाकर हवन में प्रयुक्त की जाती है ।

सभी रोगों में प्रयोग होने वाली हवन सामग्री

अगर, तगर, देवदारू, चन्दन, रक्त चन्दन, गूगल, जायफल, लोंग, चिरायता, असगन्ध, यह दसों चीजें समान भाग में लेनी चाहिए । इसके साथ में विशेष रोग की विशेष ओषधियाँ भी मिला लेनी चाहिए । तैयार ओषधियों का दशवाँ भाग शर्करा और दशवां भाग घृत मिला लेना चाहिए ।

विशेष रोगों की विशेष हवन सामग्री

(१) **साधारण बुखारों में** तुलसी की लकड़ी, तुलसी के बीज, चिरायता, करंजे की गिरी ।

(२) **विषम ज्वर**- पाढ़ की जड़, नागरमोथा, लालचन्दन, नीम की गुठली , अपामार्ग ।

(३) **जीर्ण ज्वर**- केशर, काक सिंगी, नेत्रवाला, त्रायमाण, खिरेंटी, कूट, पोहकर मूल ।

(४) **शीत ज्वर**- पटोल पत्र, (नागरमोथा), कुटकी, नीम की छाल, गिलोय, कुडे की छाल, करञ्जा, नीम के पुष्प ।

(५) **उष्ण ज्वर**- इन्द्र जौ, पटोल पत्र, नीम की गुठली, नेत्र वाला, त्रायमात्र, काला जीरा, चौलाई की जड़, बड़ी इलायची ।

(६) **खांसी**- मुलहटी, पान, हल्दी, अनार, कटेरी, बहेड़ा, उन्नाव, अञ्जीर की छाल, अडूसा, काकड़ासेंगी, इलायची, कुलंजन ।

(७) **दस्त**- सफेद जीरा, दालचीनी, अजमोद, बेलगिरी, चित्रक, अतीस, सोंठ चव्य, ईसबगोल मोथस्स, मौलश्री की छाल, तालमखाना, छुआरा ।

(८) **अपच**- तालीसपत्र, तेजपात, पोदीना की जड़, हरड़, अमल तास की छाल, नाग केशर, काला जीरा, सफेद जीरा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

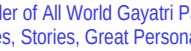
www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(९) **वमन**- वाय विडिग, पीपल, पीपला मूल, ढाक के बीज, निशोथ, नीबू की जड़, आम की गुठली, प्रियंगू ।
(१०) **श्वांस**- धाय के फूल, पोस्त के डौड़े, बबूल का बक्कल, मालकगिनी, बड़ी इलायची ।
(११) **हैजा**- धनियाँ, कासनी, सोंफ, कपूर, चित्रक ।
(१२) **अनिद्रा**- काकजंघा, पीपलामूल, भारगी ।
(१३) **उदर रोग**- चव्य, चित्रक, तालीस पत्र, दालचीनी, आलू बुखारा, पीपरि ।
(१४) **पेचिस**- मरोड़फली, अनारदाना, पोदीना, आम की गुठली, कतीरा ।
(१५) **दाँत के रोग**- शीतलचीनी, अकरकरा, बबूल की छाल, इलायची, चमेली की जड़ ।
(१६) **नेत्र रोग**- कपूर, लोंग, लालचन्दन, रसोत, हल्दी, लोध ।
(१७) **घाव**- पद्माख, दूब की जड़, बड़ की जटाएँ, तुलसी की जड़, तिल, नीम की गुठली, आवाहल्दी ।
(१८) **बन्ध्यत्व**- शिवलिंगी के बीज, जटामासी, कूट, शिलाजीत, नागरमोथा, पीपलवृक्ष के पके फल, गूलर के पके फल, बड़ वृक्ष के पके फल, भट कटाई (कंटकारी) ।
(१९) **अर्श**- नाग केशर, झाऊ बेर, धमासा, दारूहल्दी, नीम की गुठली का गूदा, मूली के बीज, जावित्री , कमल-केशर, गूलर के फूल ।
(२०) **उष्णता की अधिकता**- धनियाँ, कासनी, सौंफ, बनफ्सा, गुलाब के फूल, आँवला, खस, पोस्त के बीज ।
(२१) **जिगर-तिल्ली**- राई, पीपरामूल, पुनर्नवा, करेले की जड़, मकोय, सेमर के फूल, जामुन की छाल, अपामार्ग ।
(२२) **चेचक**- मेंहदी की जड़, नीम की छाल, हल्दी, कलोंजी, जावित्री, बाँस की लकड़ी, खैर की छाल, श्योनाक, धमासा, धनियाँ, चौलाई की जड़ ।
(२३) **जुकाम**- दूब, पोस्त, कासनी, अञ्जीर, सौंफ, उन्नाव, बहेड़े की गुठली का गूदा, धनियाँ, अनार के बीज, गुलाब के फूल, गुलबनफ्शा ।
(२४) **प्रमेह**- तालमखाना, मूसली सफेद, गोखरू बड़ा, कोंच के बीज, सुपाड़ी, बबूल के बीजों का गूदा, शतावर, इलायची छोटी, सालममिश्री, लाजवंती के बीज ।
(२५) **प्रदर**- कमल गट्टा, गूलर के फूल, अशोक की छाल, लौंग, कमल-केशर, माजूफल, सुगन्ध वाला, अर्जुन की छाल, सुपाड़ी, लोध्र ।
(२६) **बात व्याधि**- ग्वारपाठे की जड़, रास्ना, बालछड़, सहजन की छाल, मेंथी के बीज, पुनर्नवा, तेज पत्रज, धमासा, असगंध, विदारीकंद ।
(२७) **मन्दबुद्धि**- शतावरि, ब्राह्मी, ब्रह्मदण्डी, गोरखमुण्डी, शंखपुष्पी, मंडूकपर्णी, बच, मालकांगनी ।
(२८) **विष निवारण**- बन तुलसी के बीज, अपामार्ग, इन्द्रायण की जड़, करंजा की गिरी, दारुहल्दी, चौलाई के पत्ते, बिनौले की गिरी, लाल चन्दन ।
(२९) **रक्त विकार**- धमासा, सारवा, कुड़े की छाल, अडूसा, सरफोंका, मजीठ, कुटकी, रास्ना, हरड़ा, बाकुची, जवासा ।
(३०) **चर्मरोग**- शीतल चीनी, चोपचीनी, नीम के फूल, चमेली के पत्ते, दारूहल्दी, कपूर, मेथी के बीज, पद्माख ।
(३१) **मस्तिष्क रोग**- बेर की गुठली का गूदा, मौलसिरी की छाल, पीपल की कोंपलें, इमली के बीजों का गूदा, काकजंघा, बरगद के फूल, सिरैटी, गिलोय, गोरखमुडी, शंखपुष्पी, मालकांगनी, ब्राह्मी, बर्च, शतावरि, जटामांसी ।
(३२) **बच्चों की अस्वस्थता**- अतीस, काकड़ासिङ्गी, नागरमोथा, पीपल छोटी, धनियाँ, धाय के फूल, मुलहटी ।
(३३) **गर्भ पुष्टि**- सोंफ, कासनी, धनियाँ, गुलाब के फूल, खस, पोस्त के बीज, लाख, इन्द्र जौ ।
(३४) **क्षय**- मकोय, जीवन्ती, जटामासी, गिलोय, जावित्री, शालकपर्णी, आँवला ।

ऊपर की पंक्तियों में कुछ किस्मों के रोगों की हवन करने योग्य ओषधियों के अष्ट वर्ग लिखे हुए हैं । यह सभी प्रायः समान मात्रा में लेनी चाहिए । इनमें से कोई वस्तु न मिले तो दूसरी ओषधियाँ अधिक मात्रा में लेकर उसकी पूर्ति की जा सकती है । कोई वस्तु अधिक मँहगी हो और उतना खर्च करने की अपनी सामर्थ्य न हो तो उसे कम लेकर उसके स्थान पर दूसरी ओषधियाँ बढ़ा देनी चाहिए ।

हवन के अन्त में समीप रखे हुए जल पात्र में कुश, दूर्वा या पुष्प डुबो-डुबोकर गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए रोगी पर उस जप का मार्जन करे, यज्ञ की भस्म रोगी के मस्तक, हृदय, कण्ठ, पेट, नाभि तथा दोनों भुजाओं से लगावे । घृत पात्र में जो घृत बच जावे उसमें से कुछ बूँद लेकर रोगी के मस्तक तथा हृदय पर लगावे ।

इन सरल प्रयोगों को अनेक बार प्रयोग करके देखा गया है । साधारण ओषधि चिकित्सा की अपेक्षा इसका लाभ अधिक ही रहा है । इस पद्धति को अपनाकर चिकित्सक लोग रोगियों को अधिक लाभ पहुँचा सकते हैं और रोगी भी आत्मिक तथा शारीरिक दोनों ही प्रकार के लाभों से लाभान्वित हो सकते हैं ।



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञाग्नि एक उच्चस्तरीय ऊर्जा

भौतिक ऊर्जा और प्राण ऊर्जा के समन्वय से एक तीसरी शक्ति के आविर्भाव में पुरातन वैज्ञानिकों ने एक अद्‌भुत सफलता प्राप्त की उसे 'यज्ञाग्नि' नाम से पुकारा गया । यज्ञ भारतीय धर्म परम्परा में उपासनात्मक अनुष्ठानों में भी सम्मिलित रखा गया है और उसका प्रयोग एक सामर्थ्य विशेष के रूप में भी हुआ है ।

यज्ञ का भारतीय संस्कृति में अविछिन्न स्थान है । उसे यज्ञ संस्कृति भी कहा जाता रहा है । जन्म से लेकर मरण पर्यन्त षोडश संस्कारों के रूप में इस प्रक्रिया का सोलह बार प्रयोग करके उसके जीवन क्रम में से पशु प्रवृत्ति के निराकरण और देव प्रवृत्ति के अभिवर्धन की अपेक्षा की जाती रही है । प्रत्येक पर्व और शुभारम्भ में यज्ञ कृत्य की अनिवार्यता मानी गई है । होली वार्षिक सर्वजनीन यज्ञ है । पाँच आहुतियों का बलि-वैश्व यज्ञ दैनिक नित्य कर्म में सम्मिलित रखा गया है । भारतीय धर्मानुयायी का विवाह विधान दो आत्माओं को बैल्डिंग की तरह जोड़ने वाले यज्ञकृत्य के साथ ही सम्पन्न होता है । पार्थिव शरीर की पूर्णाहुति चिता जलाकर अन्त्येष्टि यज्ञ के रूप में ही सम्पन्न होती है । इन परम्पराओं पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि भारतीय जीवन चर्या में यज्ञ को कितनी गहराई तक घुला-मिलाकर रखा गया है ।

यज्ञ के भी गायत्री की तरह दो पक्ष हैं एक दार्शनिक दूसरा वैज्ञानिक । जीवन यज्ञ अथवा यज्ञीय जीवन एक दार्शनिक दृष्टिकोण है जिसके अनुसार पवित्रता और उदारता की रीतिनीति अपनाकर जिया जाना चाहिए । प्रथम और प्रमुख धर्मशास्त्र ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र के प्रथम चरण में यज्ञाग्नि को पुरोहित कहा गया है । पुरोहित अर्थात् मार्गदर्शक, यहाँ मार्गदर्शक का तात्पर्य जीवन की दिशा धारा का निर्धारक है । यज्ञाग्नि की पाँच विशेषताएँ बताई गई हैं (१) सदा गरम अर्थात् सक्रिय रहना (२) ज्योतित अर्थात् अनुकरणीय बनकर रहना, (३) सम्पर्क में आने वाले को अपने जैसा बना लेना (४) उपलब्धियों का संग्रह न करके वितरित करते रहना (५) लौ ऊँची रखना चिन्तन और स्वाभिमान को नीचे न गिरने देना । इन्हीं आदर्शों को पञ्चशील कहा गया है । जो विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रयोजनों के लिये विभिन्न प्रकार से प्रयुक्त होते हैं । पंचशील ही पंचदेव है । उपासना में इन्हीं पाँचों को मूर्धन्य माना गया है ।

यज्ञाग्नि का वैज्ञानिक रूप वह है जिसमें प्राण ऊर्जा से लेकर ब्रह्म ऊर्जा तक की प्रमुख पाँच अग्नियों को ज्वलन्त किया जाता है । कठोपनिषद् के यम-नचिकेता संवाद में पंचाग्नि विद्या का सुविस्तृत उल्लेख है । उस प्रक्रिया के सहारे शरीर के आधार भूत पंचतत्वों का नये सिरे से परिमार्जन करके कायाकल्प जैसी स्थिति उत्पन्न की जा सकती है । चेतना के भी पाँच आधार हैं जिन्हें पाँच-प्राण कहते हैं । इन पाँच घटकों का स्तर बढ़ाकर साधक की प्राणसत्ता को किस प्रकार उच्च स्तरीय बनाया जा सकता है यह भी एक रहस्य है जिसका आभास यम निर्देशित पंचाग्नि विद्या में मिलता है ।

जीव सत्ता को प्राण कहते हैं उसमें भौतिक और आत्मिक दोनों ही स्तर की ऊर्जा का समावेश है । इस प्राण को प्रखर एवं प्रचण्ड बनाने की विद्या प्राणायाम है । लम्बाई, चौड़ाई, गहराई के तीन आयाम डायमेन्शन सर्व विदित हैं इन्हीं के सहारे पदार्थों की मध्यवर्ती स्थिति एवं भिन्नता का बोध होता है । चौथा आयाम-डायमेन्शन है प्राण प्रखरता । इसी की उपलब्धि के लिये प्राणायाम किया जाता है । यों गहरी साँस लेना उसे तालबद्ध अनुशासन में नियंत्रित करना भी प्राणायाम है पर उसका विराट् रूप देखना हो तो प्राणाग्नि के रूप में देखा जा सकता है । यज्ञाग्नि और प्राणाग्नि के परस्पर सम्बन्ध में प्रश्नोपनिषद में सुविस्तृत प्रकाश डाला गया है ।

आध्यात्म विज्ञान के अनुसार कार्य सत्ता की पाँच परतें हैं, जिन्हें पंचकोश कहते हैं, अन्नमय, मनोमय, प्राणमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के नाम से इन्हें जाना जाता है । इन्हें आत्मिक प्रगति के पाँच दिव्य लोक भी कहते हैं यह सब कुछ अपने ही शरीर हैं किन्तु अभीष्ट ऊर्जा के अभाव में सब कुछ प्रसुप्त स्थिति में पड़ा रहता है । जागरण के लिये ऊर्जा चाहिये । अण्डा निजी पराक्रम से नहीं, बाहरी गर्मी से पकता है । काया के तत्वों और चेतना के पाँच प्राणों को प्रखर बनाने के लिये जिस अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है उसे पंचाग्नि विद्या, प्राणाग्नि विद्या के सहारे सम्पन्न किया जाता है । मनुस्मृति के अनुसार सामान्य काया को यज्ञ विद्या के सहारे ब्राह्मीय देवत्व सम्पन्न बनाया जाता है । कहा गया है कि ब्राह्मण वंश नहीं वरन् आत्म विकास का एक सोपान है, उसमें यज्ञोपचार का आश्रय लेना पड़ता है । यहाँ अध्यात्म यज्ञ का 'प्राण से प्राण के यजन' का संकेत है । फिर भी उस प्रक्रिया में अग्निहोत्र की अत्यधिक उपयोगिता मानी गयी है । संक्षेप में व्यक्तित्व में अन्तरंग और बहिरंग क्षेत्रों में प्रखरता भर देने के लिए योगाग्नि और यज्ञाग्नि की आवश्यकता तत्व दर्शियों ने समझी है ।

अग्निहोत्र का प्रचलन भारत में छोटे-बड़े रूप में सर्वत्र पाया जाता है । देवता के नाम पर ज्योति जगाने और गूगल चढ़ाने की परम्परा से पिछड़े वर्ग भी परिचित हैं । होली जलाने में बच्चों तक को उत्साह रहता है । अगरबत्ती, धूपदीप जलाने में इसी प्रयोजन की चिह्न पूजा है । अन्य धर्मावलम्बी भी इस प्रक्रिया को किसी न किसी रूप में धर्म प्रयोजनों के अवसर पर प्रयुक्त करते हैं । प्रश्न यह उठता है कि इतने व्यापक प्रचलन के पीछे कोई विशेष उद्देश्य है या ऐसे ही सुगन्धित धुआँ फैलाने जैसे छोटे प्रयोजन के लिये सब किया जाता है ।

वायु शोधन वाली बात का भी यों महत्व है पर समझा जाना चाहिए कि यज्ञ जैसा उच्चस्तरीय अनुष्ठान एवं अनुशासित विधि विधान मात्र इतने भर के लिये ही नहीं बना है, आज वायु प्रदूषण की सर्वत्र चर्चा है और अन्तरिक्ष के विषाक्तता से भरते जाने के कारण उत्पन्न संकट की विभीषिका ने सभी को चिन्तित किया है । कारखाने बन्द करने की भी हिम्मत नहीं पड़ती और प्रदूषण से निपटने की कोई तरकीब भी हाथ नहीं लगती । इस संदर्भ में यज्ञाग्नि द्वारा निस्सृत ऊर्जा से कचरे को माचिस से नष्ट करने की तरह नई आशा का नया केन्द्र बिन्दु मानकर इसे शोध का विषय बनाया जा सकता है ।

यज्ञ के फलस्वरूप 'पर्जन्य' बरसने का प्रतिफल बताया गया है । पर्जन्य का मोटा अर्थ बादल भी है और उससे अभीष्ट वर्षा होने की तुक बिठायी गयी है पर वास्तविकता यह है नहीं, पर्जन्य अन्तरिक्ष में घुमड़ने वाली प्राण परतों को कहते हैं जो जल ही नहीं पवन, अन्न एवं वनस्पतियों में सम्मिलित होकर प्राणियों की क्षमता एवं पदार्थों की उपयोगिता की अभिवृद्धि करता है । यज्ञ से इसी पर्जन्य की वर्षा होने और उससे सुखद परिस्थितियाँ विनिर्मित होने की बात कही गई है । विश्व वैभव के संवर्धन में यज्ञ प्रक्रिया का कितना बड़ा योगदान हो सकता है । इस तथ्य को अतीत के अध्यात्म विज्ञानियों ने भली प्रकार और इस उपचार से विश्व कल्याण का व्यापक वातावरण बनाया था । आज इस महाविज्ञान की खोई हुई कड़ियों को फिर से ढूँढ़ निकालने की आवश्यकता पड़ रही है । चिह्न पूजा के रूप में जो आधी-अधूरी लकीर पिटती रहती है उससे यज्ञ परम्परा का जन साधारण को परिचय भर मिलता है । वह प्रयोजन पूरा नहीं होता जिसके कारण इस पुण्य प्रक्रिया को उच्च स्तरीय ऊर्जा-शक्ति के रूप में मान्यता मिली थी ।

मनुष्य के शारीरिक और मानसिक रोगों की निवृत्ति में यज्ञाग्नि का उपयोग होता रहा है दोनों क्षेत्रों की समर्थता बढ़ाने में भी इस प्रक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका है । इसका परिचय इतिहास पुराणों की अनेकों आख्यायिकाएँ प्रस्तुत करती हैं । यज्ञोपचार से दशरथ के चार पुत्र, अश्वत्थामा, द्रौपदी आदि विशिष्ट आत्माओं के जन्म धारण करने की गाथाएँ बताती हैं कि इस ऊर्जा का प्रभाव मानवी सत्ता की कितनी गहरी परतों तक पहुँचता है । बात इससे कहीं बढ़ी चढ़ी है यह समस्त संसार एक 'विश्वपुरुषात्' है । उसे विराट् से उत्पन्न कहा गया है । इस विराट् के घटकों अवयवों में समस्त प्राणी और पदार्थ सम्मिलित हैं । यज्ञोपचार माना गया है और **'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा'**- मन्त्र में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विभूतियों के अजस्र अभिवर्धन की बात कही गई ! इसमें सृष्टि की सामान्य सम्पदा को असामान्य बना देने और प्राणियों तथा पदार्थों का स्तर ऊँचा उठा देने का संकेत है । इस प्रकार यज्ञ एक प्रकार से ईश्वरीय प्रयोजनों का पूरक बनकर सामने आता है । उससे सतयुग की देवलोक की संभावनाओं को मानवी प्रयत्नों द्वारा अवतरित विनिर्मित होने की बात कही गई है । प्राण और पदार्थ की संयुक्त ऊर्जा से जिस यज्ञाग्नि का आविर्भाव होता है वह प्रत्यक्षतः एक धर्मानुष्ठान मात्र प्रतीत होते हुए भी उसकी सामर्थ्य एवं परिणति असाधारण है । सृष्टि एवं समाज के बिगड़ते संतुलन को संभालने में समय-समय पर राजसूय और बाजपेय यज्ञों के विराट् आयोजन होते रहे हैं यदि वह विद्या हस्तगत रह सके तो किसी को थोड़ी सी हवन सामग्री के यजन से खाद्य पदार्थ जलाकर देश को क्षति पहुँचाने जैसे आक्षेप लगाने का साहस न हो । वस्तुतः यज्ञ एक दर्शन है, चिंतन प्रणाली है । इसके अग्निहोत्र वाले पक्ष के अलावा भी यज्ञ विज्ञान की परिधि में इतने विषय आते हैं कि उन्हें मिलाकर एक विश्वकोश तैयार किया जा सकता है ।

'यज्ञ' का शाब्दिक अर्थ है- उच्चस्तरीय परमार्थ प्रयोजन । ज्ञानयज्ञ, भूदानयज्ञ, नेत्रदानयज्ञ आदि प्रसंगों में 'यज्ञ' शब्द का उपयोग होता है । देवत्व यज्ञ से प्राप्त होता है । यजनकर्ता स्वर्ग जाते हैं- जैसे प्रतिपादनों में परमार्थरत पुण्यात्माओं की प्रगति-सद्गति की परिणति का समावेश है । सत्प्रवृत्ति का अधिकाधिक उपयोग करके अपने साथ ही समस्त समाज की सुख-शान्ति का संवर्धन आचरण यज्ञ है । इसके शिथिल होने पर संतुलन लड़खड़ाता है । यज्ञचर्या के साथ उत्थान और कृपणता के साथ पतन जुड़ा हुआ है । इस तथ्य को नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि के सहारे भली प्रकार सिद्ध किया जा सकता है । आज संचय, आधिपत्य, उपभोग की अनुदारता एवं अनियन्त्रित ललक ने किस प्रकार अव्यवस्था उत्पन्न की है इसे सभी जानते हैं । ब्रह्मवर्चस् की शोध द्वारा इस तथ्य के समर्थन में तर्क, तथ्य, प्रमाण, इतिहास, अनुभव की साक्षी प्रस्तुत की जाती है, जिससे जन-जन को परमार्थ के साथ जुड़ी हुई दूरदर्शिता को हृदयंगम कराया जा सके ।

यज्ञ का दूसरा क्षेत्र है- अर्न्तजगत में सन्निहित दिव्यता को आवश्यक ऊर्जा प्रदान करना और सुसुप्ति को जागृति में परिणत करना- इसके लिए अन्तराल को प्रभावित करने वाली अनेक साधनाओं का अवलम्बन अपनाना पड़ता है । गीता में 'प्राण को अपान में और अपान को प्राण में यजन करने' का संकेत है । यह अन्तःक्षेत्र की उखाड़-पछाड़ है । कुण्डलिनी जागरण, षटचक्र बेधन, ग्रन्थि वियोजन, ध्यान-धारणा समेत प्रत्याहार समाधि प्रकरण जैसी अनेक साधनायें इसी परिध में आती हैं । आत्मयज्ञ में बाहरी वस्तुओं की आवश्यकता नहीं पड़ती । कायसत्ता में विद्यमान साधन सामग्री से ही योगाग्नि उत्पन्न कर ली जाती है और वह प्रतिफल हस्तगत किया जाता है, जिसका माहात्म्य-विस्तार अध्यात्म विज्ञान की अनेकों साधनात्मक दिशा धाराओं में किया गया है ।

यज्ञाग्नि एक उच्चस्तरीय ऊर्जा है जो अंतः की प्रसुप्त सामर्थ्यों को जगाने में उपयुक्त होती है । मात्र यही नहीं यज्ञ विज्ञान अपने आप में एक समग्र समाज शिक्षण, उपचार प्रक्रिया है । स्थूल बुद्धि वाले, तर्कवादी यज्ञ व 'जलना' दोनों को पर्यायवाची मानते हैं । यह उनकी भूल है । इसे यज्ञ का भौतिकी वाला पक्ष स्पष्ट करता है, जो बताता है कि वायुभूत पदार्थ प्लाज्मा का चौथी स्थिति में, प्राण प्रवाह रूपी चौथे डायमेन्शन में पहुँचकर और भी सूक्ष्म एवं शक्तिशाली बन जाते हैं । यदि मात्र स्थूल उपलब्धियों पर ही ध्यान दिया जाये तो शारीरिक व मानसिक रुग्णता का उपचार, आत्मिक विकृतियों का निवारण, वातावरण संसोधन, सद्भावना विस्तार, पर्यावरण सन्तुलन, वनस्पति संवर्धन जैसे अनेकानेक पक्ष ऐसे हैं जो यज्ञ शब्द की समग्र सार्थकता सिद्ध करते हैं । वैज्ञानिक प्रयोग परीक्षणों द्वारा यदि मात्र यही बताया जा सके कि यज्ञ के पूर्व व उपरांत की प्रतिक्रियाएँ क्या होती हैं तो इन तार्किक प्रत्यक्षवादियों का सहज ही समाधान हो सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ ऊर्जा की अनुपम एवं अद्‌भुत सामर्थ्य

चेतना जगत की हलचलें जिस ऊर्जा के माध्यम से गतिशील रहती हैं वह है- शब्द । पदार्थ जगत की क्रियाशीलता के पीछे जिस ऊर्जा का उपयोग होता है वह है- ताप । धरती पर जिस स्तर का जीवन विद्यमान है और जिस प्रकार की हलचलें होती रहती हैं उनमें सूर्य ताप की प्रधान भूमिका है । सौर मण्डल के जिन ग्रह-उपग्रहों में सूर्य ताप की जहाँ असन्तुलित स्थिति है वहाँ आग के गोले जैसी या हिम खण्ड जैसी स्थिति बनी हुई है । धरती को जो सौभाग्य मिला है उनमें उसकी निजी संरचना का उतना महत्व नहीं जितना कि सौर ऊर्जा के सन्तुलित अनुदान का । इसलिए सूर्य को इस पदार्थ जगत की आत्मा कहा गया है- "सूर्य आत्मा जगतस्थुषश्च " ।

यों पदार्थ जगत संरचना में अन्य तत्वों का भी सम्मिश्रण है, पर जहाँ तक क्रियाशीलता का सम्बन्ध है वहाँ अग्नि को ही प्रधानता देनी पड़ेगी । ताप और क्रियाशीलता एक प्रकार से पर्यायवाची ही समझे जा सकते हैं । शरीर का तापमान समाप्त होते ही न कोई अंग अवयव काम करता है न उसमें जीवन के चिह्न ही शेष रह जाते हैं । अन्य जीवधारियों के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है । पदार्थ जगत की सबसे छोटी इकाई परमाणु मानी जाती है । अब उसके अन्तर्गत विद्यमान इलेक्ट्रान, प्रोटोन आदि की उपस्थिति एवं मध्यवर्ती 'न्यूक्लियस' के सम्बन्ध में भी विस्तृत जानकारी प्राप्त कर ली गई है और अणु विस्फोट के माध्यम से प्रचण्ड ऊर्जा उभारने में सफलता प्राप्त कर ली गई है । अणु क्षेत्र से आगे तरंग जगत है । पदार्थ की मूल प्रकृति अब परमाणु नहीं तरंग है । तरंगों के कितने ही भेद-उपभेद हैं । इनमें से चेतन क्षेत्र में जिस प्रकार शब्द की प्रमुखता है उसी प्रकार पदार्थ क्षेत्र में ताप को मूर्धन्य कहा जा सकता है । कहा जा चुका है कि ताप और हलचल उसी प्रकार आपस में सम्बद्ध है जिस प्रकार कि शब्द और चिन्तन परस्पर सम्बद्ध हैं । उसी प्रकार ताप और गति को भी अन्योन्याश्रित माना जा सकता है ।

यह सब स्मरण इसलिए दिलाया जा रहा है कि आत्मिकी के प्रयोग प्रयोजनों में जहाँ चेतनात्मक उत्कर्ष के लिए शब्द शक्ति का- गायत्री विद्या का महत्व समझाया जा रहा है उसी प्रकार सूक्ष्म विज्ञान में जहाँ कहीं पदार्थ साधनों का उपयोग करना पड़े वहाँ उसके गतिकेन्द्र 'ताप' का महत्व भी ध्यान में रखा जा सके । शब्द शक्ति गायत्री विद्या के माध्यम से अनेक प्रयोजनों के लिए अनेक प्रकार से प्रयुक्त होती है । इसी प्रकार ताप शक्ति का दिव्य प्रयोजनों के लिए जब भी उपयोग करना पड़े तब उसके लिए क्या करना होगा ? इस प्रसंग का पूर्व निर्धारण यही ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए कि इसके लिए अग्निहोत्र का माध्यम अपनाना पड़ेगा । जिस प्रकार प्रत्यक्ष प्रयोजनों में आग, बिजली, भाप, तेल आदि माध्यमों से ताप उत्पन्न करके दीपक जलाने, रसोई पकाने से लेकर बिजली घर, मिल, कारखाने, यान जैसे अगणित प्रयोजन पूरे किये जाते हैं उसी प्रकार अग्निहोत्र के माध्यम से ऐसी दिव्य ऊर्जा उत्पन्न की जाती है जो अध्यात्म विज्ञान के आधार पर भौतिक उद्देश्यों के काम आ सके ।

अध्यात्मवेत्ता साधना प्रयोजनों में अग्निहोत्र के अनेकानेक प्रयोगों का उपयोग एवं उल्लेख करते रहे हैं । उपासना उपचार में दीपक, अगरबत्ती, धूपबत्ती, अग्निहोत्र आदि के प्रयोग होते हैं । न केवल भारतीय धर्म में वरन् संसार भर के सभी धर्मों में अपने-अपने ढंग से यह प्रक्रिया काम में लाई जाती है । अगरबत्ती, धूपबत्ती, लोबान, धूनी जैसे उपचार मन्दिर, गिरजाघर, गुरुद्वारे, चैत्य आदि सभी जगह प्रयुक्त होते हैं । पारसी धर्म में तो यह मान्यता और भी अधिक है । उन्हें तो एक प्रकार से 'अग्निपूजक' ही माना जाता है । 'अग्यारी' का उस धर्म में देवता जैसा सम्मान है ।

भारतीय धर्म संस्कृति के साथ यज्ञ परम्परा अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है । जन्म से लेकर मरण पर्यन्त समय-समय पर होने वाले षोडश संस्कारों का विधान है । इन सभी में अग्निहोत्र अनिवार्य है । विवाह का प्रधान संस्कार परिक्रमा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है । यह उस अवसर पर किये जाने वाले यज्ञ की ही होती है । लाश को चिता में जलाने की प्रक्रिया मूलतः अग्निहोत्र का ही जल्दबाजी में किया गया औंधा-सीधा स्वरूप है । अन्यथा यदि उस कृत्य को विधिवत् किया जा सके तो फिर अन्त्येष्टि यज्ञ में ही भूत का शरीर का समापन करना पड़ेगा । होली वार्षिक यज्ञ का ही ध्वंसावशेष है । अन्यान्य त्यौहारों में भी अग्निहोत्र आवश्यक है भले ही उसे महिलाएँ चूल्हे से अग्नि निकालकर चिह्न पूजा के रूप में ही क्यों न कर लें । देवी, देवताओं में से एक भी ऐसा नहीं जिसकी पूजा प्रक्रिया में अग्निहोत्र का कोई न कोई छोटा- बड़ा रूप अपनाये बिना काम चल जाता हो । यहाँ तक कि भूत-पलीत, जादू-टोना, उच्चाटन-अभिचार में भी किसी न किसी रूप में अग्निहोत्र का समावेश करना पड़ता है । किसी भी मन्त्र की साधना अग्निहोत्र के रूप में पूर्णाहुति किये बिना सम्पन्न नहीं होती ।

गायत्री और यज्ञ को एक-दूसरे का पूरक माना गया है । एक भारतीय संस्कृति की माता और दूसरे को भारतीय धर्म का पिता कहा गया है । इस प्रतिपादन के आध्यात्मिक, नैतिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक पक्ष भी हैं और वे सभी विचारणा एवं भावना को उच्चस्तरीय बनाने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण भी हैं । इतने पर भी उसका प्रत्यक्ष स्वरूप-'अग्निहोत्र' उपयोगिता की दृष्टि से अपनी अतिरिक्त गरिमा विशेष रूप से बनाए रहेगा । गायत्री को प्रज्ञादर्शन कहा जाय तो यज्ञ को उसका सहयोगी वर्चस् कहा जाएगा । इस आध्यात्मिक वर्चस् के अन्तर्गत ही शारीरिक तेजस् और मानसिक ओजस् की ऊर्जा भी उभरती है । गायत्री अनुष्ठानों की पूर्णाहुति में 'अग्निहोत्र' को अनिवार्य माना गया है । प्रज्ञा को परमार्थ परायण बनाने का संकेत तो इसमें है ही, साथ ही यह वैज्ञानिक रहस्य भी समाहित है कि आत्मिक और भौतिक प्रगति के दोनों पक्ष परस्पर गुँथे हुए हैं। एक के बिना दूसरे की न तो साधना बनती है और न प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है । अतएव 'शब्द' के साथ 'ताप' शक्ति का समावेश भी होना चाहिए । अर्थात् गायत्री उपासना में अग्निहोत्र को भी जुड़ा रहना चाहिए । होता भी यही है । अनुष्ठानों की पूर्णाहुति यज्ञ कृत्य के साथ ही सम्पन्न होती है । उन दिनों जप के समय दीपक, धूपबत्ती जलाए रहते हैं । जहाँ श्रद्धा और सद्भावना है वहाँ अखण्ड अग्नि, अखण्ड धूनी, अखण्ड दीपक की भी स्थापना रहती है । नित्यकर्म में पंचयज्ञ, बलिवैश्व की परम्परा है, जिनसे बनता है वे उसे निबाहते भी हैं ।

अध्यात्म विज्ञान में पंचाग्नि विद्या का विशेष उल्लेख है । कठोपनिषद् के यम नचिकेता सम्वाद में इसकी सारगर्भित व्याख्या है । श्रोत्रिय अग्निहोत्री पाँच अग्नियों की स्थापना करके उनका विधिवत् यजन करते हैं । प्राण का अपान में यजन करने की रहस्यमय योगसाधना का संकेत गीता में हैं । जीवन रूपी समिधा को समाज रूपी यज्ञ में होम देने की कई स्तर की प्रेरणाएँ यज्ञ कृत्य के विभिन्न क्रिया-कृत्यों में कितने ही प्रकार से समाविष्ट हैं । ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र में यज्ञाग्नि को पुरोहित की संज्ञा दी है और वरण करने वाले को देवत्व की, विभूतियों की रत्नराशि उपलब्ध होने का आश्वासन दिया गया है । अध्यात्मदर्शन और विज्ञान के दोनों ही पक्षों में यज्ञ की जितनी चर्चा हुई है, जितनी व्यवस्था बताई, महिमा गाई गयी है उतना ऊहापोह कदाचित् ही किसी अन्य प्रसंग पर हुआ हो । यजुर्वेद, शतपथ ब्राह्मण तथा सूत्रों- ग्रन्थों में यज्ञ की चर्चा की प्रमुखता है । मीमांसा दर्शन एवं कर्मकाण्ड ग्रन्थों पर दृष्टि डालने से उनमें यज्ञ ही सर्वोपरि महत्व का प्रतिपादन दीखता है।

ब्राह्मणत्व की उपलब्धि किस प्रकार हो ? जन्मजात रूप से तो सभी अनपढ़ शूद्र होते हैं फिर मनुष्य शरीर में ब्राह्मण उदय कैसे हो ? इसी काया में देवत्व का उदय किस प्रकार सम्भव हो ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर मनुस्मृति में एक ही दिया गया है- "महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः" अर्थात् यज्ञों, महायज्ञों के माध्यम से इसी शरीर को ब्राह्मीय- ब्राह्मण स्तर का-बनाया जा सकता है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि अग्निहोत्र के माध्यम से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा सम्बद्ध व्यक्ति सत्ता का स्तर बदल सकती है । यह एक प्रकार का आध्यात्मिक उपचार हुआ । शरीर के लिए ओषधि उपचार,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शल्य कर्म आदि का जो महत्व है वही प्रकारान्तर से विचारणा एवं भावना तन्त्रों में सुधार परिष्कार करने के लिए यज्ञ उपचार द्वारा सम्भव हो सकता है ।

प्राणाग्नि को कुण्डलिनी के रूप में और योगाग्नि को ब्रह्मतेजस् के रूप में प्रतिपादित किया गया है । एक को भौतिक जगत की अधिष्ठात्री और दूसरी को चेतना परिसर की स्वामिनी कहा गया है । इन दोनों के उत्पादन में जो प्रयोग करने पड़ते हैं उनका स्वरूप यज्ञ स्तर का ही बनता है । सर्वतोमुखी ऊर्जा उत्पादन की इस प्रक्रिया के प्रत्यक्ष और परोक्ष, ज्वलनशील और ज्योतिर्मय दोनों ही पक्ष हैं । इतने पर भी उपरोक्त दोनों ही अग्नियों का प्रज्वलन जिस प्रकार होता है उसमें यज्ञ प्रक्रिया किसी न किसी रूप में सम्मिलित ही रहती है । ऐसे-ऐसे अनेकों प्रसंग है जिन पर प्रकाश डाला जा सके तो वे तथ्य उभर कर ऊपर आ सकेंगे जिनके आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकेगा कि मनुष्यों के बीच देवात्मा की तरह रहने वाले प्रज्ञा पारंगत ऋषियों ने किन कारणों से 'यज्ञ' को आत्मविज्ञान के प्रतिपादन निर्धारण में क्यों मूर्धन्य स्थान दिया ? आर्ष ग्रन्थों और आप्त वचनों के पीछे कल्पनाओं की मनगढ़न्त उड़ानें नहीं चिरकाल के प्रत्यक्ष अनुभवों का सार निष्कर्ष ही प्रस्तुत करने की परम्परा रही है । ऐसी दशा में यह मानना होगा कि यज्ञ तत्व के सम्बन्ध में जो कहा गया है वह सारगर्भित ही होना चाहिए ।

यह भूतकालीन देवयुग की चर्चा हुई । आज के परिप्रेक्ष्य में देखना यह होगा कि क्या वे प्रतिपादन आज की स्थिति में भी सही हैं । क्या इन दिनों भी उस प्रक्रिया का उपयोग पुरातन काल की तरह अर्वाचीन भी हो सकता है ? इस संदर्भ में नये सिरे से खोज करनी होगी । यह कारण है कि इन दिनों यज्ञ विद्या का एक प्रकार से लोप हो गया ही माना जा सकता है । मात्र आग जला देना और उसमें सुगन्धित सामग्री होम देना ही यज्ञ नहीं हो सकता । उसका प्रयोजन वायु को सुगन्धित करना भी नहीं है । यदि ऐसा ही होता तो उनमें मन्त्रोच्चार एवं अत्यन्त सतर्कतापूर्वक बरते जाने वाले विधि-विधानों एवं अनुबन्धों को उसके साथ न जोड़ा गया होता । आग में सभी सुगन्धित द्रव्य एक साथ ही झोंक देने से भी वह कार्य बिना किसी झंझट के अत्यन्त सरलतापूर्वक सम्भव हो सकता था । वस्तुतः 'यज्ञ' प्रक्रिया के अन्तर्गत उन अनेकानेक संस्कार उपचारों का समावेश है जो गर्मी, रोशनी भर देने वाली आग को दिव्य प्रयोजनों में काम आ सकने वाली उच्चस्तरीय ऊर्जा के रूप में परिणत कर सके । यह संस्कार प्रकरण ही यज्ञ का प्राण है । उसे न अपनाया जा सके तो अग्नि समारोह के माध्यम से प्राचीनकाल के राजसूय, अश्वमेध आयोजनों की तरह राजनैतिक न सही सामाजिक कार्यों के लिए समारोह स्तर की आवश्यकता ही पूरी हो सकती है । यज्ञ के साथ जुड़े हुए दिव्य प्रयोजन पूरे नहीं हो सकते। यज्ञाग्नि को दिव्य ऊर्जा में परिणत करने की विधि- व्यवस्था एक प्रकार से विलुप्त ही हो गई । कर्मकाण्ड की पुस्तकों में तो पूजा उपचार में प्रयुक्त होने वाले मन्त्रों एवं विधानों भर का उल्लेख है । उससे क्रिया-कृत्य तो विधिवत् हो सकता है किन्तु यज्ञाग्नि की प्राण प्रतिष्ठा के रहस्यों को भूल जाने के कारण कोई महत्वपूर्ण कार्य सधते नहीं । उस खोई हुई कड़ी को ढूँढ़ा न जा सका तो स्थिति ऐसी ही उपहासास्पद बनी रहेगी । जैसी कि आज विज्ञ समाज में उपेक्षा, अवहेलना एवं भर्त्सना के रूप में सर्वत्र उभरी दृष्टिगोचर होती है । आज तो उसे खाद्य पदार्थों की बर्बादी तथा समय, श्रम की होली जलाने की बात कहकर व्यंग्य वचनों की वर्षा ही सुशिक्षित वर्ग में होती दीखती है । परिस्थितियों की प्रतिक्रिया को देखते हुए इसे अनुचित भी नहीं ठहराया जा सकता ।

पूर्णता, अस्त-व्यस्तता और अव्यवस्था के रहते कोई भी प्रक्रिया अपना सही और समुचित परिणाम उत्पन्न नहीं कर सकती । फिर निहित स्वार्थों द्वारा लाभ संचय के लिए मूढ़-मान्यताओं की भरमार किए जाने पर तो रही बची भी समाप्त हो जाती है । खण्डहर भी यथावत् बने रहने पर पूर्व स्मृतियों का प्रतिनिधित्व करते और सम्मानास्पद बने रहते हैं, पर उन स्थानों पर दुष्प्रवृत्तियों के केन्द्र बनकर खड़े

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो जाएँ तो पुरातन इतिहास के आधार पर मिल सकने वाला गौरव भी हाथ से चला जायेगा। यही हो भी रहा है । यज्ञ एक समूचा विज्ञान सम्मत उपचार है ।

अन्य वैज्ञानिक प्रयोजन के खोज अन्वेषणों में विपुल धन राशि खर्च होती रहती है । यदि 'यज्ञ' विज्ञान की पुरातन गरिमा बनी रहती तो वह स्थिति न आती जो इन दिनों भर्त्सना के रूप में सुननी पड़ती है । सिक्का खोटा होने पर तो परखने वाले उसका तिरस्कार करेंगे ही ।

बात निन्दा-प्रशंसा की, मान्यता-अवहेलना की नहीं वरन् यह है कि जिस तथ्य की आत्म-विज्ञान में मूर्धन्य भूमिका रही और जिसकी प्रतिक्रिया मनुष्य समुदाय को हर दृष्टि से कृतकृत्य करती रही, उसकी अपने ही हाथों अन्त्येष्टि किस प्रकार कर दी जाय ? उस विद्या के महान आविष्कारकों को सनकियों या आडम्बरियों की संज्ञा में सम्मिलित किया जाना किस प्रकार स्वीकार कर लिया जाय ? आग, बिजली, पाक शास्त्र, संगीत, कला, शिक्षा, चिकित्सा आदि की जो उपलब्धियाँ अर्जित की गईं वे सुधार परिवर्तनों की प्रक्रिया से होकर गुजरते हुए भी निरन्तर उन्नतिशील बन रही हैं । फिर यज्ञ तत्व जैसी उपलब्धियाँ निरुपयोगी, बर्बादी समझे जाने की स्थिति में क्यों पड़ी रहें ? प्राचीनकाल में उससे जो लाभ उठाए जाते रहे इस प्रगतिशील एवं साधन सम्पन्न युग में उससे हर क्षेत्र की तरह इसमें भी उन्नति अभिवृद्धि होनी चाहिए थी । पर यदि ऐसा नहीं हो सका तो इसमें दोषी इन्हीं को ठहराया जायगा जो उस कृत्य को करते तो हैं पर लोक भर्त्सना से उसे बचाने के लिए कोई सुरक्षात्मक प्रयत्न नहीं करते । समय आ गया कि अब वस्तुस्थिति को तथ्यों की कसौटी पर खरे-खोटे की यथार्थता प्रकट होने का अवसर मिले। आवश्यक नहीं कि पुरातन के नाम पर अनुपयुक्तता को भी मान्यता मिलती रहे । यदि यज्ञ वस्तुतः निरुपयोगी है तो उसकी न केवल उपेक्षा भर्त्सना होनी चाहिए वरन् उसे बन्द करने कराने का भी उपक्रम चलना चाहिए । यदि वह वस्तुतः उपयोगी है तो फिर आवश्यकता इस बात की होगी कि अध्यात्म विज्ञान का पक्षधर विज्ञ समाज उसे उस स्तर पर पहँचाए, जिसमें उपयोगिता पर उँगली न उठ सके और लाभों को देखते हुए उसे अपनाने के लिए सहज उत्साह उठ पड़े ।

यज्ञाग्नि और सामान्य अग्नि का अन्तर

यज्ञ की सामान्य प्रक्रिया वायु को सुगन्धित करने के लिए किये गये अग्नि पूजन जैसी प्रतीत होती है और कम महत्व की लगती है किन्तु बात वैसी है नहीं, यज्ञ एक समूचा विज्ञान है । दूसरे शब्दों में इसी बात को यों भी कह सकते हैं कि अध्यात्म विज्ञान का प्रत्यक्ष माध्यम यज्ञ है । आत्म संयम की तपश्चर्या और भावनात्मक केन्द्रीकरण की योग साधना का समन्वय ब्रह्मविद्या कहलाता है । उसे अध्यात्म विज्ञान का भाव पक्ष कह सकते हैं । दूसरा क्रिया पक्ष है । क्रिया में हलचलें होती हैं और उसके लिए साधन जुटाने पड़ते हैं । यह यज्ञ प्रक्रिया में भी सम्पन्न किया जाता है । उपरोक्त दोनों पक्षों को मिलाने से समान आत्म विज्ञान बनता है । भक्ति भाव की तरह ही कृत्य को भी अध्यात्म विज्ञानियों ने समान महत्व दिया है और दोनों को एक दूसरे का पूरक कहा है ।

जड़ जगत के पदार्थ विज्ञान की उपलब्धियों से सभी परिचित हैं । प्रकृति के अन्तराल में छिपे हुए अनेकानेक शक्ति स्रोतों को मनुष्य ने जाना और उनमें से जो उपयोगी था उसे दुहा है । विश्व व्यवस्था में दूसरा चेतना जगत है । उसके विज्ञान को अध्यात्म कहा जाता है । इस विज्ञान की वरिष्ठता और भी अधिक है । पदार्थ की तुलना में प्राणी की सामर्थ्य अधिक है । उसी प्रकार पदार्थ विज्ञान की तुलना में अध्यात्म विज्ञान भी अधिक क्षमता सम्पन्न है । विश्व व्यवस्था में चेतना जगत की ही प्रमुख भूमिका है । भौतिकी तो उसका आहार भर जुटाती है । इसलिए संसार का सुख-दुःख भौतिक परिस्थितियों पर निर्भर जैसा लगता है । वास्तविकता इससे कहीं अधिक गहरी है । वह बताती है कि यह संसार चेतना शक्ति के सहारे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही संचालित, अनुप्राणित, नियन्त्रित और परिवर्तित होता रहता है ।

इस तथ्य को जिज्ञासु अपने ढंग से कवित्व जैसी भाषा में पूछता है और उसका उत्तर भी उसी लहजे में मिलता है :-

पृच्छामि यज्ञ भुवनस्य नाभिः ।

अर्थात्- इस विश्व का- नाभि केन्द्र- ध्रुव नाभिक- कहाँ है ? यह पूछता हूँ ।

मनीषी उत्तर देता है-

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।

अर्थात्- इस ब्रह्मण्ड की नाभि- ध्रुव केन्द्र जैसी- आधारभूत सत्ता यज्ञ में सन्निहित है ।

स्पष्ट है कि अग्नि पूजा यज्ञ का उपचार स्वरूप है किन्तु वह इतने तक ही सीमित नहीं है । वह अध्यात्म का चेतना जगत का अति प्रभावशाली ऊर्जा केन्द्र है जिसके सहारे व्यक्ति सूक्ष्म जगत से सम्पर्क साधने में समर्थ होता है ।

वैदिक काल में देवताओं की जब प्रतिमा पूजन की परम्परा नहीं थी, उन दिनों एक ही परब्रह्म की मान्यता थी और उसका प्रतीक अग्निदेव को माना जाता है । यों समय-समय पर होते रहने वाले यज्ञों में अग्नि स्थापन, प्रज्वलन, यजन और समापन की चारों प्रक्रियाएँ होती हैं उसी में आवाहन, विसर्जन की तात्कालिक आवश्यकता पूर्ण कर ली जाती है किन्तु जहाँ श्रद्धा और सुविधा होती थी वहाँ अखण्ड अग्नियों की भी स्थापना की जाती थी । उन्हें बुझने नहीं दिया जाता था । समाधियों की सहायता से उसकी ऊष्मा बराबर बनाये रखी जाती थी । इसके लिए विधिवत् वेदियाँ बनती थीं और उनमें प्रातः सायं नित्य अग्निहोत्र होता था । प्रकारान्तर से यही वैदिक काल की देव पूजा या देवालय स्थापना थी । श्रद्धावान्, धर्मनिष्ठ इन अग्नियों की विधिवत् स्थापना करते थे और नित्य भजन-पूजन करने के साथ-साथ उन्हें प्रतिष्ठित भी रखे रहते थे ताकि अन्य को यज्ञ करना हो तो इसी अग्नि का एक अंश से जाकर उसकी प्रतिष्ठापना करे । इस प्रकार की पूजित अग्नि की देवोपम मान्यता थी उसे सामान्य अग्नि के सदृश होते हुए भी भिन्न एवं पवित्र माना जाता था ।

सामान्य अग्नि पुरातन काल में अमुक प्रकार के पत्थरों एवं लौह खण्ड को टकराकर चिनगारी उत्पन्न की जाती और उसे रुई की सहायता से ज्वलनशील बना लिया जाता था । पर यज्ञ प्रयोजन के लिए पीपल, गूलर, वट जैसे काष्ठों के बने गोलकों में से एक को शंकुवान और दूसरे को उतना ही गहरा खोदा जाता था । ऊपर के गोलक की रई की तरह मथा जाता था फलतः नीचे वाले गोलक में अग्नि उत्पन्न हो जाती थी । इस प्रक्रिया को आरणि मंथन कहा जाता था और इस प्रकार उत्पन्न की गई अग्नि को यज्ञ प्रयोजनों में प्रयुक्त किया जाता था । हर हालत में यज्ञाग्नि का स्वरूप पवित्र एवं पूजार्थ रखा जाता था ताकि उसके साथ देव श्रद्धा जुड़ी रह सके । इन दिनों भी माचिस से यज्ञाग्नि उत्पन्न करने का कर्मकाण्ड ज्ञाता क्षेत्रों में निषेध है । अग्नि से अग्नि उत्पन्न करने की विधि को ही देव प्रयोजनों में प्रयुक्त किया जाता है ।

यज्ञीय प्रयोजनों के लिए काम आने वाली देवोपम अग्नियों के तीन स्वरूप और तीन नाम हैं- (१) गार्हपत्याग्नि (२) दक्षिणाग्नि (३) आह्वनीय अग्नि । इन तीनों की उन दिनों सद्गृहस्थों में वैसी ही अभ्यर्थना होती थी जैसी कि माता और गुरू की ।

इनकी स्थापना विवाह के उपरान्त नया गृहस्थ आरम्भ करते ही की जाती थी और उसका शुभारम्भ समारोह पूर्वक सम्पन्न होता था । उस कृत्य को 'अग्न्याधान' कहते थे । इस प्रकार स्थापित की गई अग्नियों की श्रद्धापूर्वक रक्षा की जाती थी । उन्हें अखण्ड रखा जाता था और नित्य प्रातः सायं अग्निहोत्र विधिवत् किया जाता था । ऐसे स्थिर अग्नि रखने वाली को 'अहिताग्नि' कहलाते थे । यह व्रत तभी तक निभता था जब तक गृहस्थ निभाता । पत्नी गृह व्यवस्था के साथ-साथ अग्नि को न बुझने देने का भी उत्तरदायित्व सम्भालती थी । पति आजीविका उपार्जन आदि बाहर रहकर किये जाने वाले कार्यों को करता रहता था । दहेज में माता अपनी पुत्री को यह त्रिमूर्ति अग्नि दहेज में देती थी । इस प्रकार यह उत्तराधिकार क्रम मातृ परम्परा से पुत्रियों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी चलता जाता था ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जीवन यज्ञ और विराट् यज्ञ के तीन पक्ष हैं- एक व्यक्ति । दूसरा परिवार । तीसरा समाज । इन दोनों को ही अग्निवत् पवित्र प्रखर रखने के लिए यज्ञाग्नि को तीन भागों में विभक्त किया गया है । व्यक्तिगत प्रखरता के लिए आह्वनीय, परिवार की उत्कृष्टता के लिए गार्हपत्य और सर्वजनीन प्रगति के लिए दक्षिणाग्नि की स्थापना होती है । इन्हें प्रतीक मानकर प्रेरणा ग्रहण की जाती और व्रतशीलता निभाई जाती है । इनमें निर्देशन, श्रद्धा सम्वेदन, एवं अनुकूलन के सूक्ष्म तत्व का समावेश रहने से अभीष्ट उद्देश्यों की पूर्ति में असाधारण रूप से सहायक भी होती है । देव प्रतिमा की तरह इन तीन ज्योति प्रतिमाओं की स्थापना में ब्रह्मा, विष्णु, महेश जैसा- गंगा, यमुना, सरस्वती जैसा मिलन संगम एक सर्वतोमुखी उत्कर्ष में क्षमता के रूप में उभरता है । इसलिए इस युग में सभी श्रद्धावान् याजक अपने घरों में उपरोक्त तीनों अग्नियों की प्राण प्रतिष्ठा करते और उनकी भावनात्मक एवं क्रिया परत अभ्यर्थना करने में निरत रहते थे ।

आह्वनीय अग्नि का गुण स्वरूप अनुदान उल्लेख करते हुए कहा गया है कि वह मनुष्य को ईश्वर भक्त, ऋषि कल्प, स्वर्ग निवासी देवोपम बनाती है ।

अहमाहवनीयोऽग्निराहोमाद् यस्य वै मुखे ।
पृथ्वीमन्तरिक्षं न दिवमृषिगणैः सह ।।
जयत्याह्वनीयं यो जुहुयाद् भक्तिमान् नरः ।
आभिमुख्येन होमस्तु यस्य यज्ञेषवर्तते ।।

-महा०, आश्व० पर्व (वैष्णव० पर्व) अध्याय ९२

अर्थात्- आह्वनीय अग्नि मैं स्वयं हूँ, जिसके मुख में आहुति डाली जाती है । जो मनुष्य भक्ति पूर्वक आह्वनीय अग्नि में हवन करता है, वह पृथ्वी, अन्तरिक्ष और स्वर्गलोक को ऋषियों के साथ प्राप्त कर लेता है ।

सा उद्क्रामत् सा आहवनीये न्यक्रामत् ।
यन्त्यस्य देवा देवदूति प्रियो देवानां भवति ।।

-अथर्व ८।१०।४

अर्थात्- उच्छृंखलता समाप्त हुई । अनुशासन पनपा । आह्वनीय प्रखर हुई और मनुष्य पर देवता का अनुग्रह बरसने लगा ।

गार्हपत्य के माध्यम से पारिवारिकता को क्रमशः अधिक सघन, उदात्त सरस बनाते हुए विश्व परिवार को बसुधैव कुटुम्बकम् की दिशा में अग्रसर होने की प्रेरणा एवं क्षमता मिलती है ।

सा उद्क्रामत् सा गार्हपत्ये न्यक्रामत् ।

-अथर्व ८।१०।३

अर्थात्- स्वेच्छाचार समाप्त हुआ और अनुशासित परिवार व्यवस्था पनपी ।

सभ्यञ्चो अग्नि सपर्य तारा नाभि भिवाभितः ।

-अथर्व ३।३०।६

अर्थात्- लोग रथ चक्र के अरों की तरह आपस में गुथे और परिवार बना ।

दक्षिणाग्नि में सामाजिकता का अनुबन्ध है । साथ ही अनगढ़ को सुगढ़ बनाने वाले उत्साह एवं श्रम संघर्ष का भी संकेत है ।

यजमानं तु यस्मात् तु दक्षिणां तु गति नयेत ।
दक्षिणाग्नि तमाहुसे दक्षिणा यतने द्विजाः ।।

-महा० अश्व०

अर्थात्- जो याजक को दाहिने सीधे मार्ग पर ले चलती है । उसे परमार्थ दक्षिणाग्नि कहते हैं ।

तीन प्रमुख अग्नियों के लिए जो वेदियाँ बनती थीं उनके आकार भिन्न-भिन्न प्रकार के होते थे- गार्हपत्य अग्नि के लिए वृत्ताकार- आह्वनीय के लिए वर्गाकार- दक्षिणाग्नि के लिए अर्ध वृत्ताकार वेदियाँ बनती थीं । मनुस्मृति ३। ३३। १ अनुसार गार्हपत्य को पिता- दक्षिणाग्नि को माता तथा आह्वनीय को आचार्य माना गया है ।

ऋग्वेद का भी ऐसा ही अभिमत है । उसकी एक ऋचा में कहा गया है ।

इमं प्रियं प्रजया मे समृध्यताम् ।
अस्मिन् गृहे गार्हपत्याय जागृहि ।।

-ऋग्वेद १०।८५।२७

अर्थात्- गार्हपत्याग्नि इस परिवार के परिजनों को समर्थ, समृद्ध एवं सद्भाव सम्पन्न रखे ।

यज्ञीय ऊर्जा के सम्बन्ध में ऋषि-मनीषियों का प्रतिपादन गम्भीरतापूर्वक समझा जाना चाहिए उनने 'अग्नि तत्व' को तीन भागों में विभाजित किया है और प्रत्येक का अलग-अलग महत्व एवं उपयोग बताया है । (१) पावक (२) पवमान और (३) शुचि । पावक वह है जो गर्मी उत्पन्न करती है चूल्हा जलने जैसे लौकिक कार्यों में प्रयुक्त होती है ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पवमान मनुष्य की काया में रहने वाली वह अग्नि है जो भोजन के पचाने से लेकर गतिशीलता के अनेक क्रिया- कलापों में काम आती है । तब संयम द्वारा इसी को बढ़ाया जाता है और व्यक्तित्व के हर पक्ष को प्रखर किया जाता है । तीसरी 'शुचि' वह है जिसके सहारे वातावरण को प्रभावित किया जाता है । अदृश्य जगत को अनुकूल बनाया जाता है, विश्व व्यवस्था को वही प्रभावित करती है ।

यज्ञ विज्ञान में अग्नि का प्रयोग तो चूल्हा जलने जैसे ईंधन डालकर ज्वाला जलाने की तरह ही होती है किन्तु यह प्रत्यक्षीकरण है । उसका मात्र वास्तविक स्वरूप पवमान और शुचि स्तर तक पहुँचने पर ही निखरता है और चमत्कारी सत्परिणामों का शुभारम्भ यहीं से गतिशील होता है ।

अग्निहोत्र के माध्यम से लौकिक प्रयोजनों में आने वाली ऊर्जा को विकृत होकर ऋतु प्रभावों और प्रकृति उपद्रवों को प्रेरक नहीं बनने दिया जाता और इस स्तर को देखा जाता है कि वह वर्षा से लेकर तूफानों तक की सभी प्रकृति हलचलों को जीव जगत के लिए उपयोगी बनाये रह सके 'पावक' यही है । यज्ञाग्नि का पावक पर भी प्रभाव रहता है ।

दूसरी अग्नि पवमान है इसे व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास के लिए प्रयुक्त किया जाता है । कषाय-कल्मषों की कुसंस्कारिकता भी इसी से दूर होती है । सद्गुणों, सत्प्रवृत्तियों एवं विभूतियों को इसी आधार पर पाया बढ़ाया जाता है । पवमान को साधना क्षेत्र की प्राण ऊर्जा कहा जा सकता है ।

तीसरी शुचि की समर्थता और व्यापकता अत्यधिक है उसके सहारे अदृश्य जगत के प्रवाह को निष्कृष्टता की विभीषिका उत्पन्न करने से रोका जा सकता है और सुखद सम्भावनाओं से भरा-पूरा सतयुग की स्थापना में योगदान लिया जा सकता है ।

संक्षेप में अग्नि के तीन क्षेत्र ऊर्जा, प्रखरता एवं विश्व नियामक शक्तियों के रूप में जाने जा सकते है । यज्ञाग्नि का स्वरूप ऐसा बनाया जाता है कि उसके द्वारा पवमान और शुद्धि की भूमिका सम्पन्न की जा सके ।

अग्नि का शब्दार्थ है- ऊर्ध्वगामी । (अंगति ऊर्ध्वं गच्छति, अङ्ग-निलोपश्च, अंग- नि और न का लोप) इस व्याकरणिक विश्लेषण से अग्नि शब्द से अग्नि तत्व में ऊर्ध्वगमन की विशेषता का संकेत मिलता है । वस्तुतः है भी वैसी बात अग्नि शिखा सदा ऊपर की ओर उठती है । उसके माध्यम से उठने वाला धुआँ भी ऊपर ही चलता है । भाप की दिशा भी वही है । हवा गरम होने पर न केवल फैलती है वरन् ऊपर की ओर भी बढ़ती है । वह क्रिया-कलाप चेतना को प्रभावित करने वाली 'यज्ञाग्नि' की भी है वह सम्पर्क साधने वालों को ऊँचा उठाती- आगे बढ़ाती है । उत्कर्ष की उमंगें उठाने और तदनुरूप साहस प्रदान करने में यज्ञाग्नि के माध्यम से असाधारण योगदान मिलता है।

पावक,पवमान और शुचि के अतिरिक्त प्रयोग एक प्रयोजन भेद से उसके और भी अनेकों नामकरण हुए हैं । जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

अग्नेस्तु मारुतो नाम गर्भाधाने विधीयते ।
पुंसवने चन्द्रनामा शङ्गणकर्मणि शोभनः।।
सीमन्ते मङ्गलो नाम प्रगल्भो जातकर्मणि ।
नाम्नि स्यात्पार्थिवो प्राशने च शुचिस्तथा ।।
सत्यनामाथ चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः ।
गोदाने सूर्यनामा च केशान्ते ह्यग्निरुच्यते ।।
वैश्वानरो विसर्गे तु विवाहे योजकः स्मृतः ।
चतुर्थ्यान्तु शिखी नाम धृतिरग्निस्तथा परे ।।
प्रायश्चिते विधुश्चैव पाकयज्ञे तु साहसः ।
लक्षहोमे वह्निःस्यात् कोटिहोमे हुताशनः ।।
पूर्णाहुत्यां मृडो नाम शान्तिके वरदस्तथा ।
पौष्टिके बलदश्चैव क्रोधाग्निश्चाभिचारके ।।
वश्यर्थे शमनो नाम वरदानेऽभिदूषकः ।
कोष्ठे तु जठरो नाम क्रव्यादो मृत भक्षणे ।।

-गोभिलपुत्रकृत संग्रह

गर्भाधान में अग्नि को 'मारुत' कहते हैं । पुंसवन में 'चन्द्रमा', शृंगाकर्म में 'शोभन', सीमान्त में 'मंगल' जातकर्म में 'प्रगल्भ', नामकरण में 'पार्थिव', अन्नप्राशन में 'शुचि', चूड़ाकर्म में 'सत्य', व्रतबन्ध (उपनयन) में 'समुद्भव', गोदान में 'सूर्य', केशान्त (समावर्तन) में अग्नि', विसर्ग (अर्थात् अग्निहोत्रदि क्रिया-कलाप) में 'वैश्वानर',

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विवाह में 'योजक', चतुर्थी में 'शिखी', धृति में 'अग्नि', प्रायश्चित (अर्थात् प्रायश्चित्तात्मक महा व्याहृति होम) में 'विधु', पाकयज्ञ (अर्थात् पाकांग होम, वृषोत्सर्ग, गृह प्रतिष्ठा आदि) में 'साहस', लक्ष होम में 'वह्नि', कोटि होम में 'हुताशन', पूर्णाहुति में 'मृड', शान्ति में 'वरद', पौष्टिक में 'बलद', आभिचारिक में 'क्रोधाग्नि', वशीकरण में 'शमन', वरदान में 'अभिदूषक', कोष्ठ में 'जठर' और मृत-भक्षण में 'क्रव्याद' कहा गया है ।

अनेक नामों से प्रख्यात यज्ञाग्नि के विभिन्न उद्देश्य हैं । इनमें से सभी कर्मकाण्डपरक नहीं कुछ भावपरक भी हैं । इस प्रकार अध्यात्म क्षेत्र को समस्त उत्कर्षपरक गतिविधयाँ यज्ञ तत्व की परिधि में आ जाती हैं ।

जैसा कि गीता में उल्लेख है-

द्रव्य यज्ञास्तपो यज्ञा योग यज्ञास्तथा परे ।
स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाश्च यतयः संशित व्रताः ।।

- गीता ४।२८

यज्ञों के अनेक प्रकार हैं- अग्निहोत्र, तप यज्ञ, योग यज्ञ, स्वाध्याय, ज्ञानयज्ञ आदि।

भगवान ने स्वयं भी कहा है-

यज्ञानां जप यज्ञोस्मि स्थावरणां हिमालयः।

-गीता १०।२५

यज्ञों में जप यज्ञ और पर्वतों में हिमालय मैं हूँ ।

नादयोग में शब्द को ब्रह्म माना गया है । इस साधना में शब्द ब्रह्म को इष्टदेव मानकर चला जाता है । इसके लिए अभीष्ट ऊर्जा कहाँ से प्राप्त होती है इस पर संस्कृत के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ संगीत दर्पण में प्रकाश डाला गया है और संगीत के मूल में- नाद ब्रह्म की साधना में अग्नि तत्व को ही आधारभूत कारण ठहराया गया है । इस प्रकार नाद ब्रह्म शब्द ब्रह्म-संगीत साधना का उद्गम स्रोत दिव्याग्नि में ही केन्द्रित माना गया है । संगीत दर्पण में इस तथ्य का उल्लेख इस प्रकार मिलता है:-

आत्मना प्रेरितं चित्तं वह्निमाहन्ति देहजम् ।
ब्रह्मग्रन्थिस्थितं प्राणं स प्रेरयति पावकः ।।
पावक प्रेरितः सोऽथ क्रमादूर्ध्वपये चरन् ।
अति सूक्ष्म ध्वनि नाभौ हृदि सूक्ष्म गले पुनः ।।
पुष्टं शीर्षे त्वपुष्टंच कृत्रिमं बदने तथा ।
आविर्भावयतीत्येवं पञ्चधा कीर्त्यते बुधैः ।।
नकारं प्राणानामानं दकारमनलं विदुं ।
जातः प्राणग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते ।।

अर्थात्- आत्मा के द्वारा प्रेरित चित्त देह में उत्पन्न अग्नि को आहत करता है । ब्रह्म में स्थित प्राणवायु को वह अग्नि प्रेरित करता है । अग्नि के द्वारा प्रेरित वह प्राण क्रम से ऊपर चलता हुआ नाभि में अत्यन्त सूक्ष्म ध्वनि करता है तथा गले व हृदय में भी सूक्ष्म ध्वनि करता है । सिर से पुष्ट और अपुष्ट तथा मुख में कृत्रिम ध्वनि करता है । इस प्रकार विद्वानों ने पाँच प्रकार का अग्नि बताया है । नकार प्राण का नाम है, दकार अग्नि का नाम है । प्राण और अग्नि के संयोग से नाद की उत्पत्ति होती है ।

योगाग्नि अथवा ज्ञानाग्नि के रूप में भी 'अग्नि' का प्रयोग होता है । गीता में कथन है ।

'ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ।
ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ।।'

आग को शरीर और यज्ञाग्नि को उसका दैवी प्राण तत्व कहा जा सकता है । शरीर और आत्मा मिलने से जिस प्रकार जीवनचर्या चलती है उसी प्रकार अग्नि प्रज्वलन की प्रत्यक्ष प्रयोग प्रक्रिया को 'यज्ञ' स्तर की तब बनाया जाता है जब उसके साथ उच्चस्तरीय भावनात्मक आधारों का समावेश हो । यज्ञ माहात्म्य के रूप में जो कुछ चमत्कारी वर्णन होता है उसे अग्नि प्रज्वलन की उपलब्धि में अत्यधिक विज्ञान के विशेष प्रयत्नों के आधार पर उत्पन्न की गई 'यज्ञाग्नि'' कहना चाहिए । यह पदार्थ जैसी दीखती भर है उसकी उच्चस्तरीय प्राण ऊर्जा का समावेश करना पड़ता है तभी वह चमत्कारी प्रतिकूलता उत्पन्न कर सकने में समर्थ होती है ।

स्मरण रहे यज्ञ प्रयोजनों को पवित्र यज्ञाग्नि ही अभीष्ट है । उसके साथ श्रद्धा समर्पण का जो अनवरत चलता रहता है उसी से वह प्राण प्रतिष्ठित पाषाण प्रतिमा की तरह देव संज्ञा में गिने जाने योग्य बनती है। तभी उसका अभीष्ट प्रतिफल भी होता है । यही कारण था कि प्राचीन काल में यज्ञ भगवान् की वेदानुमोदित उपासना करने वाले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभी अग्निहोत्री अपने यहाँ अखण्ड अग्नि की स्थापना रखते थे । जिस प्रकार मन्दिरों में भगवान् की मूर्ति स्थापित करके, समय-समय पर उसकी पूजा कार्यों की क्रियायें की जाती हैं और प्राण-प्रतिष्ठा के उपरान्त उस मूर्ति को मन्दिर में ही स्थापित रखा जाता है, उसी प्रकार यज्ञ उपासकों के लिए यज्ञशाला रूपी मन्दिर में अग्नि रूपी देव प्रतिमा को निरन्तर स्थापित रखने और उसकी देव अर्चना की भाँति प्रातः, सायं अग्निहोत्र द्वारा पूजा करने का विधान है । अग्निहोत्रियों के यहाँ पीढ़ी दर पीढ़ी यह अखण्ड अग्नि सुरक्षित रखी जाती थी । उसे बुझने न देने के लिए अग्निहोत्री परिवार के सभी लोग पूरा-पूरा ध्यान रखते थे । ये अग्नियाँ जिसके यहाँ जितनी पुरानी होती थी वे अपने को उतना ही साधना धन का धनी समझता है और संसार में अपनी निष्ठा के अनुरूप प्रतिष्ठा प्राप्त करता था ।

जिस प्रकार माता परिवार में अन्य कार्य करती हुए भी अपने नन्हें शिशु का सदा ध्यान रखती है उसे सभी अनिष्टों से बचाती हुई पाल-पोषकर बड़ा बनाती है उसी प्रकार अग्निहोत्री भी अपनी यज्ञाग्नि की सुरक्षा पर निरन्तर ध्यान रखकर एक प्रकार से प्रभु चिन्तन करने वाले योगी या मन्दिर में पूजा करने वाले सच्चे पुजारी की भाँति अपने जीवन क्षेत्र में यज्ञ भगवान की प्रतिष्ठा किए रहता है निरन्तर नियमित रूप से उपासना की हुई है यज्ञ की सूक्ष्म आध्यात्मिक विशेषता दिन-दिन प्रखर बढ़ती रहती है जैसे पौष्टिक पदार्थों का सेवन करती हुई दिन-दिन विकसित होती है यज्ञवान एवं परिपुष्ट युवती बनती जाती है उसी के यज्ञकुण्ड में विराजमान अग्नि भी प्रतिदिन मेवा, मिष्ठान्न हविष्यान्न तथा नाना प्रकार की औषधियाँ खा-खा कर प्रचण्ड शक्ति सम्पन्न करने का साक्षात् आकार ही बन जाती है । उसके माध्यम से अनेक अनिष्ट रोग, शोक, क्लेश, कलह, ताप, अनायास ही नष्ट होते हैं ।

जिस प्रकार सोने, चाँदी, हीरा, मोती आदि की अनेक रोगों को दूर करने में सामर्थ्य होती है जिस प्रकार यह 'यज्ञ भस्म' भी किसी बढ़िया सी ओषधि की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण नहीं होती, इसके उपयोग से जहाँ अनेक रोग दूर होते हैं वहाँ उन्माद, मन्द बुद्धि, क्लेश, कुबुद्धि आदि मानसिक रोगों का हरण होता है। अनेक रोगों में भी यह बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती है । मस्तक पर उसी का तिलक लगाने से आज्ञाचक्र, सहस्रारन्ध्र, सुषुम्णा संस्थान आदि आदि अनेकों सूक्ष्म आध्यात्मिक केन्द्रों का विकास होता है। हृदय पर यज्ञ को लगाने से सूर्यचक्र जागृत होता है और अन्तःकरण चतुष्ट्य में से तामस तत्व घटते एवं सात्विक तत्व बढ़ते स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं ।

लाठी चलाने वाले लोग अपनी लाठी को तेल में डुबो-डुबोकर उसको मजबूत बनाते हैं । कहते हैं जो लाठी जितना तेल पी जाती है वह उतनी ही मजबूत होती है । घी, दूध काम आने वाले मिट्टी के बर्तन जितनी चिकनाई पी जाते हैं उतने ही उपयोगी बन जाते हैं । यज्ञ की अग्नि भी जितना घी पी लेती है उतनी ही बलवान् बन जाती है । इसलिए यह विधान मिलता है कि किसी को अग्निहोत्र करना हो उसे किसी के यहाँ से चिर उपस्थित अग्नि लाकर उससे अपना हवन करना चाहिए ।

बालक और अधेड़ आयु के पुरुष में जो अन्तर होता है वही अन्तर तुरन्त उत्पन्न की गई और चिरसेवित अग्नि में ही रहता है । बालक को दिया हुआ दान उतना फलप्रद नहीं होता जितना वयोवृद्ध को, क्योंकि बच्चे की अपेक्षा वयोवृद्ध मनुष्य निश्चय ही दान के सदुपयोग की जिम्मेदारी को अधिक अच्छी तरह समझता है और वह उस दानदाता का अधिक उपकार करने में भी समर्थ होता है । यही कारण है कि नित्य का साधारण अग्निहोत्र ही नित्य प्रज्वलित की हुई अग्नि में कर लिया जाता है पर किन्हीं महान् आयोजनों के लिए चिरसे वित अखण्ड अग्नि की आवश्यकता पड़ती है । ऐसी अग्नि के मुख में दी हुई आहुति साधारण अग्नि की अपेक्षा अधिक सत्परिणाम उपस्थित करने में समर्थ होती है ।

अब लोग आलस्य और अस्वस्थता के कारण अखण्ड अग्नि का महत्व भूल गये हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फास्फोरस, गन्धक आदि दुर्गन्धित अशुद्ध पदार्थों से बनी हुई दियासलाई से जलाई हुई अग्नि से हवन कर लेते हैं, प्राचीनकाल में यज्ञप्रेमी लोग अरणि मंथन, सूर्यकान्तमणि आदि के द्वारा अग्नि प्रज्वलित करते थे। अखण्ड अग्नि की उपासना सनातन धर्म के अनुसार तो आवश्यक है ही । आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती भी इसकी उपयोगिता को मानते थे उनने प्रेरणा देकर शाहपुरा नरेश से अखण्ड अग्नि स्थापित कराई थी जो अब तक विधिवत् संपूजित हो रही है । देश में अभी अखण्ड अग्नि रखने वाले अग्निहोत्रियों का सर्वथा अभाव नहीं हुआ है । कुछ उसे विधिवत् रखते हैं पर इनकी संख्या उँगलियों पर गिनने लायक है ।

अखण्ड अग्नि की भाँति अखण्ड दीपक की भी महानता असाधारण है । घी से अखण्ड दीपक जलता रखने से एक प्रकार का वृत हवन निरन्तर अपने आप होता रहता है । ऐसा दीपक जिस स्थान पर प्रकाश करता है वह स्थान एक नित्य अदृश्य प्रकाश ज्योति से प्रदीप्त रहता है, उसके निकट बैठकर की हुई उपासना विशेष फलवती होती है । यों तो सामान्य अनुष्ठानों के समय भी घृत का दीपक जलता रखा जाता है पर विशेष अनुष्ठानों में तो उसे अखण्ड रखने की ही प्रतिष्ठा है । यह भी एक प्रकार से अखण्ड अग्नि की स्थापना ही है, वरन् उससे भी कुछ अधिक है । क्योंकि अखण्ड अग्नि तो केवल हवन के समय ही प्रज्वलित की जाती है पर दीपक तो निरन्तर प्रकाशवान रहकर वातावरण में दिव्य प्रकाश को भरता रहता है । अग्नि में दो ही बार हवन होता है पर दीपक में अहिर्निश हवन होता रहता है । अग्नि की अखण्डता में झंझट, खर्च और देखभाल साज-सम्भाल कम है, दीपक को अखण्ड रखने में यह सभी बातें अधिक करनी पड़ती हैं- साथ ही उसी झंझट एवं खर्च के अनुपात से उसका महत्व भी अधिक है ।

जन्म सूतक के समय आने वाली अनिष्ट कर आशंकाओं की निवृत्ति, एवं सुरक्षा प्रसूतिगृह में १० दिन अखण्ड अग्नि रखने से हो जाती है पर किसी की मृत्यु हो जाने पर उस मृत्यु स्थल पर अखण्ड दीपक ही जलाना पड़ता है क्योंकि मृत्यु के समय उस मृत शरीर में से निकले हुये शारीरिक रोग कीटाणु तथा मन की वेदना, पीड़ा, छटपटाहट,करुणा, मोह, शोक आदि के प्रभाव को नष्ट करने में अखण्ड दीपक की विशेष शक्ति की ही आवश्यकता पड़ती है । उसके बिना वह मृत सूतक का स्थान शुद्ध नहीं हो पाता ऐसी अशुद्धि वाले घरों में ही प्रायः भूत बाधा, भय, दुःख मृगी, उन्माद, अपस्मार आदि रोग बने रहते हैं और उस घर में रहने वालों पर शारीरिक एवं मानसिक उद्वेग आक्रमण करते रहते हैं । पितृ शान्ति कर्मों में दीपक अनिवार्य होता है । यज्ञ, कीर्ति, अनुष्ठान, ब्रह्मभोज की पाकशाला आदि में घृत दीपक जलाये जाते हैं । आरती में दीपक की आवश्यकता है । गंगा आदि नदियों के तट पर लोग दीपक जलाते हैं । दिवाली तो दीपों का त्यौहार है । व्यापक रूप से अखण्ड दीप का त्यौहार मनाकर हम दरिद्रता की व्यापक शक्ति को घटाने एवं लक्ष्मी शक्ति का बल बढ़ाने का पुनीत आयोजन करते हैं । यह उद्देश्य मोमबत्ती या बिजली जलाकर प्राप्त नहीं कर सकते । पारसी लोगों ने अखण्ड अग्नि की महत्ता को भली प्रकार समझा है उनके धर्म में 'अखण्ड अग्नियों' को देवमूर्ति की तरह स्थापित किया जाता है और बड़ी श्रद्धा एवं योजना के साथ स्थिर रखा जाता है ।

अखण्ड अग्नि और अखण्ड दीपक के लाभ अपरिमित हैं । उन्हें कोई भी व्यक्ति परीक्षा करके अनुभव कर सकता है । यज्ञ प्रेमियों के लिए यह आवश्यक प्रक्रिया है ।

अग्निहोत्र और यज्ञाग्नि

दृश्यमान अग्नि का कितना महत्व है, हम सभी जानते हैं । चूल्हा जलने, मिट्टी पकाने, धातुएँ शोधने एवं ढालने जैसे अनेकों कार्य उसी के सहारे होते हैं । छोटी-बड़ी मशीनों के पुर्जे ढालने के लिए अग्नि ऊर्जा ही काम आती है । यह मनुष्य द्वारा उत्पादित अग्नि की बात हुई । सौर ऊर्जा से वनस्पति उगती तथा पकती है । बादलों के बनने और बरसने का समूचा दायित्व सौर ऊर्जा ही वहन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करती है । सीलन और सड़न से उबारना उसी का काम है ।

इन प्रत्यक्ष अग्नियों के अतिरिक्त एक रासायनिक अग्नि भी है, जिससे वनस्पतियों में विभिन्न गुण और शरीरगत रसों की पाचन क्षमता का उत्पादन होता है । इसे शास्त्रों में वैश्वानर कहते हैं । शरीर में यह सन्तुलित मात्रा में रहती है । इसके घट या बढ़ जाने से मृत्यु निश्चित है । इसे जीवन भी कहते हैं और जीव ऊर्जा भी । शरीर में विभिन्न अनुपात के विभिन्न रसायनों की मात्रा भी विद्यमान है । उसे रासायनिक ऊर्जा भी कहते हैं, दूसरे शब्दों में उसे प्राण भी कहा गया है ।

रासायनिक अग्नि प्रायः जीवसत्ता को ही प्रभावित करती है । इससे विभिन्न उपयोगों द्वारा रोगोपचार किया जाता है और बलबर्धन भी । आरोग्य शास्त्र उसी की देन है । प्रकृति प्रदत्त शरीर शुक्राणु से लेकर भ्रूण स्थिति तक गतिशील रहता है । प्रसव के उपरान्त ठोस, द्रव और वायुभूत खाद्य पदार्थों द्वारा शरीर का अभिवर्धन होता है । नियत मात्रा में कमी आ जाने से कुपोषण स्तर की व्यथाएँ काया को सताने लगती हैं ।

इन सबका सार प्राण तत्व है । उसी के स्तर एवं अनुपात से मनुष्य में बलिष्ठता, सुन्दरता, जीवनी शक्ति, आदि का वर्चस्व बढ़ता है । इसी का एक पक्ष ओजस्, तेजस्, मनस् एवं वर्चस् कहलाता है । यह विश्वव्यापी दिव्य अग्नि है । वह पदार्थों को क्रियाशील रखती है और चेतना विभिन्न स्तर की भावनाओं का उद्भव करती है । इन्हीं को प्रेरणा भी कहते हैं । अन्तरंग की प्रेरणाएँ बहिरंग क्रिया-कलापों के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं ।

अग्नि, विद्युत, रसायन आदि के रूप में इस महातत्व का उपयोग करने का अवसर हमें अनायास ही प्राप्त होता रहता है और कौशलपूर्वक उसी को उपार्जित एवं धारण भी किया जाता है । मानस क्षेत्र में यही कल्पना, धारणा, आकांक्षा, प्रेरणा आदि के रूप में काम करती है । शरीर इसी का अनुशासन मानता है और निर्देशों का कार्यान्वयन करता है ।

सांसारिक कामों में अग्नि की प्रत्यक्ष ऊर्जा आभा ही काम आती है जबकि अध्यात्म प्रयोजनों में उसके साथ जैव चेतना का भी समावेश करना पड़ता है । जो चेतना को प्रभावित करे उसे यज्ञाग्नि कहते हैं । इसमें प्राण ऊर्जा जोड़नी पड़ती है । इसके दो आधार हैं । एक- मन्त्र के आधार पर उत्पन्न किया गया ध्वनि- प्रवाह। दूसरा- यज्ञ संचालकों की शारीरिक एवं मानसिक साधनाक्रम पवित्रता । यह संचालकों में ब्रह्मा, अध्वर्यु, उद्गाता, होता आदि व्यवस्थापक होते हैं । होता यजमान रूप में इन्हीं में से एक है । इस समूचे समुदाय को ब्रह्मचर्य, उपवास, स्नान, शुद्ध वस्त्र धारण, जप ध्यान आदि के द्वारा अपने आपको यज्ञाग्नि की समीपता का अधिकारी बनना पड़ता है । एक ओर पक्ष यह है कि अग्नि कहाँ से लाई गई । जिस प्रकार देव प्रयोजनों के लिए होता या पुरोहित को व्यक्तिशः पवित्र रहना पड़ता है, उसी प्रकार मन्त्रोच्चारण भी सही होना चाहिए । अन्यथा अशुद्ध उच्चारण से मन्त्र की वह शक्ति उभर नहीं पाती जो अभीष्ट प्रयोजनों के लिए आवश्यक है ।

यज्ञाग्नि को तीन प्रयोजनों हेतु प्रयुक्त किया जाता है (१) शारीरिक श्रम निवारण एवं समर्थता सम्वर्धन के लिए (२) मानसिक बुद्धिबल बढ़ाने तथा भावनाओं में उत्कृष्टता लाने के लिए (३) अदृश्य वातावरण एवं वायुमण्डल का संशोधन करने के लिए। इन तीन प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाली अग्नियों का प्रज्वलन काष्ठ विशेष की समिधाओं से किया जाता है । इन तीन अग्नियों को क्रमशः गार्हपत्याग्नि, आह्वनीयाग्नि एवं दक्षिणाग्नि कहते हैं, जो चूल्हे में जलने वाली आग से सर्वथा भिन्न है । यद्यपि आँख से दोनों का स्वरूप एक जैसा लगता है किन्तु स्तर की भिन्नता के आधार पर उनकी शक्ति सामर्थ्य में भारी अन्तर रहता है ।

इस तरह यज्ञाग्नि के तीन भेद हैं (१) दक्षिणाग्नि (२) गार्हपत्याग्नि (३) आह्वनीयाग्नि । कहीं-कहीं चौथी उत्तराग्नि का उल्लेख मिलता है । इन्हें क्रमशः ब्रह्मग्नि, देवाग्नि और प्राणि-अग्नि कहा गया है । चेतना के तीन स्तर हैं- (१) विश्व का आधार भूत सूक्ष्म- व्यापक नियामक- ब्रह्म(२)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्राण जगत की उच्चतम उत्कृष्टता- देव (३) शरीर धारियों में पाई जाने वाली चिन्तन तथा हलचल में प्रवृत्त- जीवात्मा । कहा गया है कि ब्रह्माग्नि का जड़ चेतन में संव्याप्त महत्त्व है । देवाग्नि का केन्द्र सविता है और प्राणि-अग्नि का उद्‌भव अग्नि से होता है । अन्न का तात्पर्य यहाँ समूचे वनस्पति जगत से है । इसके मूल में जीवाणुओं का समुदाय काम करता है । चौथी उत्तराग्नि को दैनिक व्यवहार से भिन्न ऊष्मा माना गया है जो स्थानीय न होकर संव्याप्त है । विद्युत, ईथर, अर्न्तग्रही कास्मिक आदि किरणें ।

यज्ञ विद्या द्वारा विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रायः तीन ही अग्नियों का प्रयोग किया जाता है । इसलिए वेदत्रयी- त्रिधा अग्नि जैसे वचनों का ही उपयोग होता है । चौथी अग्नि का तन्त्र पक्ष में प्रयोग होता है। उसका स्तर पदार्थ विज्ञान से जुड़े होने के कारण 'मख' रूप में प्रयोग होता है । यह कामनाओं की पूर्ति और विपत्ति निवारण के लिए विशेष रूप से प्रयुक्त होती है । अस्तु उसका उल्लेख बहुत कम है । परम्परागत जानकारी से ही विशेषज्ञ उसे काम में लाते हैं । दक्षिण मार्ग में प्रायः तीन ही अग्नियाँ काम में आती हैं ।

भू लोक- भुवः लोक और स्वर्ग लोक का गायत्री मन्त्र के साथ जुड़ी हुई तीन व्याहृतियों में उल्लेख हुआ है । यह उपरोक्त तीन अग्नियों का ही संकेत है । परमात्मा- देवात्मा और जीवात्मा के रूप में इन तीनों को अपने-अपने काम करते हुए देखा जा सकता है ।

अग्निहोत्र और यज्ञ का अन्तर

अग्निहोत्र पदार्थ को ठोस, द्रव के रूप में न रहने देकर वायुभूत वाष्पीकृत बना देने की प्रक्रिया है । वायु की व्यापकता एवं सूक्ष्मता अधिक है । श्वास मार्ग से वायु शरीर में प्रवेश करता और समूची काया के प्रत्येक घटक तक अपना प्रभाव छोड़ता है । आक्सीजन प्राप्त करता है और कार्बन को खींच निकालता है ।

मिर्च खाने पर जीभ पेट, पर ही खाने वाले को उसका प्रभाव अनुभव होता है पर यदि मिर्च को आग पर जलाया जाय तो उसका प्रभाव दूर-दूर तक पहुँचता है और उस क्षेत्र में बैठे हुए लोग खाँसने और छींकने लगते हैं । इसका तात्पर्य है वायु के माध्यम से पदार्थ की पहुँच दूर-दूर तक के क्षेत्र में होना । पुष्पोद्यान दूर-दूर तक महकते हैं । चन्दन वन में समूचा क्षेत्र सुरभित हो जाता है । इस प्रकार सड़े कचरे की गंध दूर-दूर तक दुर्गन्ध बिखेरती है । यह वायु की विशेषता है कि वह चलती है तो अपनी प्राकृतिक विशेषताएँ ही नहीं सम्पर्क में आने वाले पदार्थों का भी सूक्ष्म स्वरूप अपने में धारण कर लेती है । बन्द मकान में कोयले की जलती हुई अंगीठी रख कर सोया जाय तो सोने वाले सबेरे मरे हुए निकलते हैं । यह उस स्थिति में वायु के साथ विषाक्तता घुल जाने और फिर साँस द्वारा शरीर में जा पहुँचने का ही प्रभाव है ।

सुगन्ध की अनुकूलता, प्रियता से सभी परिचित हैं। इसके विपरीत दुर्गन्ध एवं सम्मिश्रित विषाक्तता के परिणामों से सभी परिचित हैं । यही कारण है कि कमरों को सुगन्धित करने के लिए अगरबत्तियाँ, धूपबत्तियाँ लोबान, धूप आदि जलाये जाते हैं । पशुओं के घेरे में जब उन्हें मच्छर काटते हैं, तब नीम इत्यादि के साथ घासफूस जैसी कीड़ें मकोड़े मारने वाली वस्तुओं को जलाकर दरवाजा बन्द कर देते हैं, ताकि उन हानिकारक कीटकों से छुटकारा मिले । तम्बाकू के धुएँ को पीने वाले अपने स्वास्थ्य की कैसी बर्बादी करते हैं, यह किसी से छिपी नहीं है । वे आयुष्य घटाते और कैंसर, दमा जैसे रोगों को इसी निमंत्रण द्वारा न्यौत बुलाते हैं ।

आयुर्वेद में धूम्र चिकित्सा के कितने ही प्रयोग आते है । बवासीर, दमा, यौनरोग, व्रण आदि की चिकित्सा में औषधियों का धुआँ देकर उपचार करने का विधान है । इससे सिद्ध है कि सामान्य धुआँ जहाँ आँखों को, फेफड़ों को खराब करता है, वहाँ औषधि युक्त धुआँ कई रोगों का निराकरण भी करता है । धूम्र के बारे में भी यही मान्यता है कि मनुष्यों, पशुओं के रोगों का उपयोगी उपचार है, पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह होना चाहिए गुणकारी ओषधियों द्वारा उत्पादित ।

वस्तुतः अग्निहोत्र से धुआँ नहीं, ऊर्जा का निस्सरण होता है । ऊर्जा युक्त वायु हलकी होती है और वह ऊपर को उठती है । नासिका द्वारा खींची जाती है और सर्वप्रथम मस्तिष्क, तदुपरान्त फेफड़ों में फिर सारे शरीर में फैलती है । उसके साथ ओषधियों के उपयोगी अंश होते हैं जो मस्तिष्क रोगों में अपना अद्‌भुत प्रभाव दिखाते हैं । सिर दर्द, आधासीसी, जुकाम से लेकर मन्द बुद्धि, सनक, अनिद्रा, आवेश जैसे रोगों में ये अपना प्रभाव दिखाते हैं । अविकसित मस्तिष्क जड़ता से छुटकारा प्राप्त करता है और बुद्धि-कौशल के अभाव की क्रमशः पूर्ति होती रहती है । फेफड़ों में बन गये क्षयजन्य घाव पूरे होते हैं । श्वास नली से सम्बन्धित खांसी, दमा, ब्राँकाइटिस जैसे रोगों में देखते-देखते लाभ पहुँचता है ।

अग्निहोत्र की निकटवर्ती ऊर्जा में बढ़ा हुआ तापमान होता है, वह त्वचा से स्पर्श करके रोम कूप खोलता है । स्वेद निकलता है और उस स्वेद के साथ ही रक्त तथा मांसपेशियों में जड़ जमाकर बैठे हुए रोग कीटको, विजातीय तत्वों का निष्कासन होता है । इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यज्ञ में न्यूनतम मात्रा में हल्के कपड़े पहनने का विधान है । कहा गया है कि कन्धे पर दुपट्टा मात्र धारण करके बैठा जाय, इससे चर्म रोग मिटते हैं और बालों तथा त्वचा की जड़ों में जो अदृश्य कृमिकीटक जड़ जमाये होते हैं, उनसे छुटकारा मिलने पर खाज, दाद, छाजन आदि भी मिटते हैं । रक्त में अग्निहोत्र ऊर्जा के साथ जुड़ी हुई उपयोगी रोगनाशक शक्ति बढ़ती है । इसे जीवनी शक्ति का अभिवर्धन भी कह सकते हैं । इस आधार पर उस मूल कारण की समाप्ति होती है जिससे भीतरी बाहरी अंगों में शिथिलता छाई रहती है । आलस्य, भय, घबराहट, धड़कन, अपच जैसे रोगों में अग्निहोत्र से सम्मिलित होना दूरदृष्टि से लाभदायक होता है । बल बर्धक औषधियाँ कई लोग सेवन करते हैं, पर उसमें एक कठिनाई रहती है, गरिष्ठता की बहुलता की । वे आसानी से पचती नहीं । पाचन न होने पर सामान्य अन्य सेवन को भी अपच में बदल देती है । आयुर्वेद में कितने ही पौष्टिक पाकों, अवलेहों, चूर्णों, गुटिकाओं का वर्णन है । उनमें प्रयुक्त होने वाली सभी ओषधियाँ बलबर्धक होती हैं । पर साथ ही गरिष्ठ भी। गरिष्ठता के कारण उनका पाचन ठीक तरह नहीं हो पाता । फलतः वह लाभ नहीं मिलता जो मिलना चाहिए ।

अग्निहोत्र इस कठिनाई को दूर करता है । उसमें पाचन का प्रश्न ही नहीं । सूक्ष्मीभूत होकर जो साँस के माध्यम से रक्त में दौड़ जाय, जीव कोशाओं को प्रभावित करे उसकी गुणवत्ता असंदिग्ध है । वह युवकों की तरह बाल, वृद्ध, नर, नारी का समान रूप से पोषण करता है ।

अग्निहोत्र चिकित्सा में विभिन्न रोगों के लिए विभिन्न औषधियों का उपचार भी है । अच्छाई यह है कि उन्हें न मुँह से खाना और पेट से पचाना पड़ता है । इंजेक्शन की तरह सुई चुभोकर रक्त में सम्मिश्रित नहीं करना पड़ता है । यह तो सरलता का एक ऐसा मार्ग है जिसमें रोगी को पता भी नहीं चलता और ओषधि वायुभूत होकर शरीर में प्रवेश कर जाती है । अपना कारगर काम करती और असीमित प्रभाव उत्पन्न करती है ।

भारतीय धर्म संस्कृति में प्रत्येक घरेलू संस्कार और सामूहिक पर्व त्यौहार के अवसर पर अग्निहोत्र करने का निर्देशन दिया गया है । इसके दो प्रयोजन हैं। एक तो यह कि किसी या किन्हीं के द्वारा किये गये प्रयास का उपस्थित सभी लोग लाभ उठायें । दूसरा यह है, कि चर्चा जहाँ तक पहँचे वहाँ तक इस विज्ञान की उपयोगिता तथा जानकारी बढ़े । इसे सीमित को असीमित बनाना भी कह सकते हैं ।

सामान्यतः अग्निहोत्र शारीरिक और मानसिक आधि-व्याधियों का निवारक निरोधक है । वह इन दोनों ही क्षेत्रों की क्षमता में अभिवृद्धि करता है, फलतः आरोग्य और मानसिक बल और योगापक्षीय सुयोग बनता है । इसे घरेलू उपचार भी कह सकते हैं । साथ ही रोग निवारक बलबर्धक सामयिक सूत्र भी । इतने कम खर्चे में इतने अधिक लोगों को लाभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पहुँचाने की दूसरी और कोई विधा बन पड़नी सम्भव नहीं ।

अग्निहोत्र एक विज्ञान है उसमें अग्नि को विशेष साधनों से, विशिष्ट विधिपूर्वक इस तरह प्रज्वलित किया जाता है जिसमें वह मात्र चूल्हा जलाने की अग्नि न रहे । ऐसी विशिष्टता बने जो आरोग्य समस्या के समस्त पक्षों पर अपना चमत्कारी प्रभाव दिखा सके । इसलिए इसका लाभ देखने वालों को पन्सारी की दुकान से कूड़ा करकट खरीद कर उसे आग में जला देने वाली उतावली मात्र से किसी बड़े लाभ की आशा न करनी चाहिए वरन् प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं की उत्कृष्टता का समुचित ध्यान रखना चाहिए । यह कार्य जिस-तिस के हाथों न सौंपककर ऐसे लोगों द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिए जो तद्विषयक श्रद्धा सर्तकता को भली प्रकार अपनाये रह सकें । इसमें उस कुशल चिकित्सक की दक्षता होनी चाहिए जो रस, भस्म, रसायन बनाने वालों द्वारा बरती जाती हैं । मोटे रूप में यह समझा जा सकता है कि अग्निहोत्र एक समग्र चिकित्सा विधान है जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामूहिक रोगों का निराकरण और शक्तिमत्ता का अभिवर्धन हो सकता है । अग्निहोत्र के साथ-साथ स्वच्छता का बहुमुखी प्रयोजन जुड़ा हुआ है ।

यज्ञ इससे आगे की बात है । उसकी अन्तः करण और अन्तर्मन तक, सुपरमन तक पहुँच है । वह व्यक्ति की विचारणा, आकांक्षा, भावना, श्रद्धा, निष्ठा, प्रज्ञा को प्रभावित करता है उसका परिशोधन और अभिवर्धन भी । शास्त्रकार का कथन है कि जननी के उदर से सभी मानव प्राणी प्रायः एक जैसी स्थिति के होते हैं, पर उन्हें यज्ञ और महायज्ञ कह प्रक्रिया द्वारा मानवी गरिमा के क्षेत्र से उठाते-उठाते ब्रह्म स्तर तक पहुँचाया जाता है ।

यहाँ स्मरण रखने योग्य बात यह है कि ब्राह्मण कोई जाति वंश नहीं, वरन् एक स्तर का नाम है । उस स्तर की उस तत्व ज्ञान के साथ जुड़ती है जो गुण, कर्म, स्वभाव में देवोपम वरिष्ठता का समावेश करता है । पृथ्वी के देवता-भूसुर-प्रकारान्तर से ब्राह्मण देवताओं के लिए प्रभावित किया गया है । क्योंकि वे कायिक दृष्टि से भी मनुष्य जीवधारी होते हैं उनकी अन्तर्रात्मा की मान्यताएँ भावनाएँ ऐसी होती हैं जो महामानवों, ऋषियों तपस्वियों से समता करती हैं । उनका दृष्टिकोण सर्वोपम और चरित्र देवोपम होता है। इस स्थिति को प्राप्त करने में कुछ सीमा तक ही पूर्व जन्मों के संचित संस्कार भी काम करते हैं पर अधिकांश प्रयास स्वयं ही करना पड़ता है । चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में इस प्रकार की शालीनता का समावेश करना होता है जिसे अभिनन्दनीय और अनुकरणीय कहा जा सके । यही स्थिति 'ब्राह्मणत्व' की कहलाती है । उसे उपलब्ध करने में यज्ञ का, महायज्ञ का आश्रय लेना पड़ता है ।

गीताकार ने अनेक प्रसंगों पर 'यज्ञ' शब्द का प्रयोग किया है वह अग्निहोत्र के लिए प्रयुक्त नहीं किया गया है । वरन् भावनात्मक, प्रेरणापरक है । वह एक ऐसी विद्या है, जो जीवन प्रवाह को उच्चस्तरीय धारा में बह चलने का उल्लास एवं साहस प्रदान करती है । यह आत्मज्ञ है, जिसमें अपने को पवित्र और प्रखर बनाया जाता है । अपने कषाय कल्मषों को कुसंस्कारों को तिल-तिल करके गलाया जाता है । यह सोने को कसौटी पर परखने और अंगीठी पर तपाने जैसी प्रक्रिया है । उसमें न केवल आदतें सुधारनी पड़ती हैं वरन् चिन्तन के प्रवाह को भी मोड़ना-मरोड़ना पड़ता है ।

इस निमित्त यज्ञीय कर्मकाण्ड को प्रतीक रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है, पर वस्तुतः वह है आन्तरिक कायाकल्प । जिसमें लिप्सा, लालसा, वासना, तृष्णा को विसर्जित करना पड़ता है और ऐसी ज्योति ज्वाला प्रचण्ड करनी पड़ती है, जिससे अन्तःक्षेत्र और बाह्य वातावरण में दिव्य ऊर्जा का आलोक उभर पड़े ।

भौतिक प्रयोजनों के लिए अग्निहोत्र और आत्म विकास के लिए यज्ञ का आश्रय लिया जाता है इस तथ्य को हमें भली भाँति समझ लेना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परोक्ष जगत का परिशोधन यज्ञों के माध्यम से

यज्ञ से अग्निहोत्र प्रक्रिया भिन्न है । अग्निहोत्र निर्धारित विधि व्यवस्था के अनुरूप कोई भी कर सकता है । शुद्ध शाकल्य, शुद्ध शरीर, शुद्ध वातावरण और शुद्ध विधि विधान का ध्यान रखकर उसे कोई भी गायत्री मन्त्रों में आहुतियाँ देते हुए कर सकता है । उसका तात्कालिक प्रभाव भी इन्द्रियों या यन्त्रों से देखा जा सकता है । समय स्वयं बताता है कि उसकी गुणवत्ता कितनी है ।

अग्निहोत्र हेतु ऐसे विधान भी हैं कि निर्धन वर्ग के लोग अति सस्ते में इस प्रक्रिया की पूर्ति कर सकें । अन्य कोई वस्तु न हो तो समिधा वाले काष्ठों की ही छोटी-छोटी तीली बनाकर उन्हें शाकल्य मानकर हवन किया जा सकता है । हवन सामग्री की अपेक्षा गुड़ और घी के सम्मिश्रण से बनी हुई गोलियाँ भी इस प्रयोजन के लिए प्रयुक्त की जा सकती हैं । उनमें चन्दन चूरा डालकर और भी सुगन्धित एवं सुव्यवथित बनाया जा सकता है ताकि वे आपस में चिपकें नहीं, अपना अस्तित्व अलग से बनाये रह सकें । शर्करा और घृत का अग्निहोत्र में विशेष महत्व है, पर इन्हें शुद्ध स्थिति में ही लेना चाहिए । चीनी की अपेक्षा गुड़ उन रसायनों से रहित होता है जो मिलों में उन्हें सफेद करने के लिए मिलाये जाते हैं । गौघृत मिलना अब सरल नहीं रहा है । मिलावट की सब ओर भरमार है। इसलिए गाय का थोड़ा सा शुद्ध दूध लेकर एकाध तोला मक्खन निकाला जा सकता है । उसे गुड़ में मिलाकर ऐसी सामग्री बन सकती है, जो सर्व सुलभ हो और जिसके लिए बहुत पैसा भी खर्च न करना पड़े। वनस्पतियों की बनी शुद्ध सामग्री मिल सके और भी अच्छा । गौ घृत अधिक मात्रा में मिल सके तो उसे सौभाग्य ही समझना चाहिए ।

यज्ञ शब्द वहाँ प्रयुक्त होता है जहाँ उसके साथ वेद मन्त्रों का शुद्ध समावेश हो । इसके लिए पहले से ही शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करके प्रवीणता प्राप्त करनी पड़ती है । किसी पारंगत वक्ता के स्वर में स्वर मिलाकर भी इस प्रयोजन की पूर्ति हो सकती है ।

यज्ञ में मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण का महत्व है पर जिनके द्वारा उनका उच्चारण किया जा रहा है, उनका व्यक्तित्व और चिन्तन-चरित्र भी उच्चस्तरीय होना चाहिए । उनका आहार -बिहार ऐसा होना चाहिए जिसे ऋषि कल्प कहा जा सके । अभक्ष्य खाने वाले, मादक द्रव्य पीने वाले, लम्पट, व्यसनी प्रकृति के व्यक्ति वेद मन्त्रों के उच्चारण में प्राण नहीं भर सकते । इन दिनों ऐसे ब्रह्म परायण मनःस्थिति और परिस्थिति को अपनाने वाले मिलते नहीं । सभी पर असंयम सवार रहता है । यही कारण है कि ऋषि की तरह शाप वरदान दे सकने वाले ब्रह्मवेत्ता कहीं दृष्टिगोचर नहीं होते । फलतः उनकी वाणी का कोई प्रभाव भी नहीं होता ।

यज्ञ व्यक्तिगत भी हो सकता है और सामूहिक भी । व्यक्तिगत यज्ञों में पति-पत्नी सम्मिलित होते हैं । घृत के लिए गाय पालते हैं । घर में देवालय स्तर की यज्ञशाला बनाकर रखते हैं जिसमें हर मौसम में बिना किसी कठिनाई के यज्ञ किया जाता रहे । यह दीर्घकालीन होता है, नियमित भी रहता है । ब्रह्मतेज की वृद्धि के लिए गायत्री मन्त्र से न्यूनतम २४ आहुतियाँ नित्य देने का विधान है । इससे अधिक बन पड़े तो और भी उत्तम । अधिक का अधिक फल होता ही है । यह दैनिक जप का दशांश नहीं हो तो न्यूनतम शतांश तो होना ही चाहिए । यदि अनुष्ठान के साथ व्रतपूर्वक जप चल रहा है तो ऐसा भी हो सकता है कि उसकी पूर्णाहुति का यज्ञ नित्य न बन पड़ने पर पूर्णाहुति के समय एक दिन ही सम्पन्न कर लिया जाय । उसमें अन्य कुटुम्बी भी सम्मिलित किये जा सकते हैं । अन्यथा नित्य यज्ञ का उद्देश्य आत्म शक्ति का अभिवर्धन ही होता है । ब्रह्मतेज उपलब्ध करने के लिए उसे किया जाता है । ब्राह्मण के छः कर्मों में यज्ञ स्वयं करना और दूसरों को करने की प्रेरणा देना यह दोनों ही पक्ष सम्मिलित हैं ।

यज्ञ सामूहिक भी होते हैं, पर उनका उद्देश्य वायुमण्डल शोधन जैसा भौतिकता भर तक सीमित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं रहता । यह प्रयोजन तो सामान्य है । बड़ी बात है वायुमंडल का संशोधन । वायुमंडल के वातावरण के अन्तर को अधिक अच्छी तरह समझा जाना चाहिए । वायु प्रदूषण का निराकरण और प्राण तत्व का अभिवर्धन अग्निहोत्र प्रक्रिया में हो सकता है किन्तु व्यक्तित्व का परिष्कार- ओजस्, तेजस् और वर्चस् का निखार आदि उच्चस्तरीय हैं, इसलिए इनके साथ अनेक अनुबन्ध भी जुड़े हुए हैं । अधिक सतर्कता और सात्विकता का समावेश करना होता है । यज्ञ कराने वाले ब्रह्मा, आचार्य, अध्वर्यु, उद्गाता चारों को यज्ञ काल से कहीं पूर्व से ही आहार शुद्धि, ब्रह्मचर्य साधना, नित्यकर्मों की कठोरता का प्रतिपालन नियमपूर्वक करना पड़ता है । आहुति देने वाले होता- यजमान भी यज्ञ के दिनों में तो व्रत धारण करते हैं, परिपूर्ण संयम भी बरतते हैं । यज्ञ के दिनों में स्वेच्छाचार बरतने की तनिक भी गुंजायश नहीं रहती । व्रतशील रहे बिना यज्ञ कृत्य फलप्रद नहीं होता । उसका उद्देश्य आत्मिक क्षेत्र की प्रगति है । इसके लिए संयमशीलता, तपश्चर्या जितने अधिक ऊँचे स्तर की निभ सके, उतना ही उत्तम है । यज्ञ में मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण का भी विशेष महत्व है । यह उच्चारण विधिवत् सीखा हुआ परीक्षा में खरा उतरा हुआ होना चाहिए ।

सामूहिक यज्ञों में दो प्रकार के यज्ञ प्रधान होते हैं-एक-राजसूय, दूसरे- बाजपेय । राजनीतिज्ञों- शासकों- दलों द्वारा जो राजनैतिक प्रयोजनों के लिए बड़े आयोजन सम्पन्न किये जाते हैं, उन्हें राजसूय यज्ञ कहते हैं । लंका विजय और कंस जरासंध वध के उपरान्त तत्कालीन मूर्धन्य राजनेताओं को आमंत्रित किया गया था और आहुतियों के अतिरिक्त भावी राजनीतिक विधि व्यवस्थाओं का भी निर्धारण किया गया था । इस प्रकार इन यज्ञों के रूप में समय-समय पर क्षेत्रीय-प्रान्तीय आयोजन भी होते रहते थे, उनमें विचार मंथन होता था और मूर्धन्यों की सलाह से एक निर्णय पर पहुँचा जाता था ताकि शासन सत्ता में स्वेच्छाचारिता का समावेश न होने पाये ।

बाजपेय यज्ञ धर्म पुरोहितों द्वारा आयोजित किये जाते थे और उनमें विद्वानों, मनीषियों, विचारकों, धर्माचार्यों को आमन्त्रित किया जाता था । इनमें तत्कालीन वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्याओं के कारण समझते हुए इसके निवारण का योजनाबद्ध हल निकाला जाता था । ऐसे आयोजन किन्हीं तीर्थों में, किन्हीं नियत तिथियों पर, तीर्थ स्थानों में निर्धारित रहते थे । सत्प्रवृत्तियों में निरत साधु ब्राह्मण उनमें बिना किसी के निमंत्रण की प्रतीक्षा किये स्वयंमेव जा पहुँचते थे । परस्पर भेट भी हो जाती थीं । क्षेत्रीय समस्याओं परिस्थितियों की जानकारी भी मिलती थी और स्थानीय तथा सर्वजनीन समाधानों का सिलसिला चलता था । कुंभ पर्व ढाई-ढाई वर्ष बाद देश के प्रमुख स्थानों पर होते थे । आज तो उनमें साज-सज्जा, स्नान, पूजन, भोजन भण्डारा आदि की विडम्बना ही शेष रह गई है, पर पुरातन काल में ऐसा नहीं होता था । तब लोग समय की समस्याओं और आवश्यकताओं पर विचार करते थे । अपने प्रयासों को उसी दिशा में मोड़ते थे । सुधार के निर्धारित लक्ष्य को पूरा करके रहते थे । प्रव्रज्या में निरत बिखरे हुए साधुजनों का एकत्रीकरण, विचार-विनिमय और निर्धारित का यह सुनिश्चित अवसर था । देश के अन्य क्षेत्रों में, तीर्थों में भी ऐसे ही समारोह एकता सम्मेलन होते रहते थे ।

विश्व का विचारपरक वातावरण जब तक उच्चस्तरीय रहता है तब तक सतयुगी परिस्थितियाँ बनी रहती हैं, पर जब उनमें दुर्बुद्धिजन्य दुर्गुणों का प्रभाव बढ़ने लगता है, तो उसकी प्रतिक्रिया सर्व साधारण में उदण्डता, आवेश, अनाचार भरती है । उनकी परिणित शोक संताप के रूप में सामने आती है । थोड़ी प्रतिभाएँ अनेकों को अपने साथ घसीट ले जाती हैं और शीतयुद्ध, गृहयुद्ध अपराधों का घटाटोप जैसे परिणाम बनकर सामने आती हैं । यह वातावरण का प्रदूषण है, जिसे वायुमंडलीय प्रदूषण से भी अधिक भयंकर माना जाता है । वायुमंडल की विषाक्तता रोग फैलाती और दुर्भिक्ष लाती है, किन्तु वातावरण में दुष्टता और भ्रष्टता के तत्व भर जाने से प्रकृति कुपित होकर ऐसे कहर बरसाती है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसे मनुष्यकृत 'कत्लेआम' से भी अधिक भयंकर समझा जा सकता है ।

इन दिनों परिस्थितियाँ ऐसी ही हैं । उन्हें विकृत् मन:स्थिति की देन माना जा सकता है । सभी जानते हैं कि कुमार्गगामिता अपनी चरम सीमा पर चल रही है । बढ़ती हुई जनसंख्या तथा उभरती दुष्प्रवृत्ति का विस्फोट इस प्रकार हो रहा है कि वह कभी भी नक्षत्र युद्ध या असाध्य महामारियों के रूप में फूट सकती है। विज्ञान और बुद्धिवाद का दुरुपयोग ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है, जिसमें मानवी सत्ता और सभ्यता का अन्त होने जैसी स्थिति आ पहुँचे ।

ऐसे भयंकर समय में भौतिक उपाय उपचार तो शासकों एवं धनाध्यक्षों द्वारा अपने-अपने ढंग से चल ही रहे हैं । अध्यात्म के मनस्वियों को इन दिनों दिव्य प्रतिकारों का आश्रय लेना चाहिए और व्यक्ति तथा समाज को नरक जैसे दल-दल में फंस जाने से पूर्व ही उबारना चाहिए । इसके लिए सर्वसुलभ उपचार यज्ञ प्रक्रिया को पुर्नजीवित करने के स्तर पर प्रयास करना चाहिए । इस आधार पर ही वातावरण का परिशोधन संभव हो सकता है । तपस्वियों के द्वारा किये गये ऐसे आयोजन अन्तरिक्ष में ऐसी उथल-पुथल कर सकते हों और विकास के नये आयाम आरम्भ हो सके ।

पदार्थ यजन के साथ-साथ मन्त्रोच्चार की स्वर विद्या, प्रयोक्ताओं की प्रखर पवित्रता का सम्मिश्रण होने से ही यज्ञीय विद्या उस स्थिति तक पहुँचती है, जिसमें प्रस्तुत आशंकाओं, आतंकों और अपराधों से लोहा ले सकना, उनके दावानल को बुझा सकना संभव हो सके । यज्ञ मात्र प्रतिकार ही नहीं है, उसके साथ परिष्कार भी जुड़ा हुआ है । अदृश्य का दृश्य जगत पर प्रभाव पड़ता है । अध्यात्म अदृश्य की विकृति से निपटने और सुखद संभावनाएँ भर सकने में समर्थ है । अध्यात्म का अभिवर्धन एवं अभिसरण योग और तप द्वारा हो सकता है, पर उसका प्रत्यक्ष रूप यज्ञ प्रक्रिया के रूप में कार्यान्वित होता है । ऐसी प्रक्रिया, जिसमें स्वर विज्ञान, पदार्थ विद्या और उच्चस्तरीय व्यक्तियों का शास्त्रीय विधि में समावेश हो ।

अग्निहोत्र-प्राणोद्दीपन

यज्ञ भारतीय धर्म और संस्कृति का पिता कहा गया है । अग्निहोत्र जो प्रधानत: यज्ञ का अग्निपरक क्रिया कलाप है, परम पवित्र, श्रेष्ठतम कर्मों में गिना जाता है । इससे वायु शुद्धि, रोग निवृत्ति, आत्मबल वृद्धि, प्राणवर्षा, वातावरण में सत् तत्व प्रवाह की बुद्धि जैसे अनेक लाभ भी हैं । पर यह यज्ञ का मात्र एक स्थूल रूप है । जिस ज्वलन्त अग्नि को हवन-कुण्ड में स्थापित कर पूजा जाता है, वह एक प्रतीकात्मक प्रक्रिया ही समझी जानी चाहिए ।

अग्नि में भगवान की स्थूल रूप की स्तुति हेतु मन्त्रों, श्रद्धायुक्त कर्मकाण्डों तथा दिव्य गुणों से युक्त वनौषधियों की आहुति दी जाती है । सूक्ष्म पूजन अग्निरूपी तेजस्विता को अन्त:करण में धारण करने से ही होता है । इन्हें आत्मसात करने से मनुष्य अग्निरूप बन जाता है । अग्नि भगवान से प्रार्थना की जाती है-

ॐ अयन्त इध्म आत्मा जातवेद स्तेन इध्मस्व वर्धस्य च इद्धयवर्धय ।

-आश्वलायन गृह्यसूत्र

"हे अग्निदेव ! आप प्रदीप्त होओ और हमें भी प्रदीप्त करो । जो गुण आपके अन्दर हैं, वे ही हम धारण करें ऐसी सामर्थ्य दो ।"

अग्नि का, यज्ञकुण्ड का सूक्ष्म दिव्य रूप मानवी पिण्ड में वैश्वानर के रूप में विद्यमान है । उसका केन्द्र है मूलाधार स्थित कुण्डलिनी शक्ति । यही अग्नि का सम्पर्क शरीर के अन्दर प्राणरूप में प्रवाहित होकर जीवन का संचार करता है । इस दिव्य ज्योति की आभा अन्त:करण में सदा जाज्वल्यमान रहती है । इस दिव्य अग्नि की साधना, अर्चना को ही अग्नि पूजा, यज्ञ प्रक्रिया का आध्यात्मिक स्वरूप कहते हैं ।

बाहर प्रज्वलित अग्नि (यज्ञ रूप में) तथा अन्त: में प्रतिष्ठित दिव्य-ज्योति के रूप में शरीर की सूक्ष्म संरचना से उसका सम्बन्ध शास्त्रकार इस सूत्र में प्रतिपादित करता है-

अविदन्ते अनिहितं यदासीन यज्ञस्य धाम परमं गुहायत् ।

-ऋग्वेद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ का वास्तविक स्थान हृदय रूपी गुफा में है । वह अत्यन्त गुप्त है । परन्तु ज्ञानी सत्पुरुष उसे प्राप्त कर लेते हैं ।

ब्रह्मरन्ध्र में अवस्थित सहस्रार चक्र को ब्रह्माण्ड अग्नि कहा गया है । इसे ही सोम की उपमा भी दी गयी है । चन्द्रमा की चर्चा इसके रूप में करके यह बताया जाता है कि यहाँ शान्ति और शीतलता का अमृत भरा पड़ा है । इसे शिव कहते हैं एवं कुण्डलिनी को शक्ति । कुण्डलिनी रूपी अग्नि मानवी काया में निरन्तर विद्यमान रहती है, पर जब तक सोमरूपी अमृत घृत का इस अग्नि में हवन नहीं किया जाता, तब तक वह जागृत नहीं होती- तथा यज्ञ का उद्देश्य पूरा नहीं होता । आत्मा रूपी अग्नि और सोम रूपी ब्रह्म का परस्पर समन्वय, एक-दूसरे में लय ही आत्म यज्ञ है । विश्व रूपी सोम तथा शक्ति रूपी अग्नि की संयोग प्रक्रिया ही कुण्डलिनी जागरण की साधना है । अग्निहोत्र प्रक्रिया के पीछे इसी सूक्ष्म दर्शन का संकेत मिलता है । मनुष्य की महत्ता के विस्तार के सारे आयाम यज्ञ दर्शन में सन्निहित हैं ।

शास्त्रकार कहते हैं-

द्वयं वा इदं न तृतीयमस्ति । आर्द्रंचवशुष्कं च यद्दार्द्र तत् सौम्यं यच्छुष्कं तदाग्नेयम् ।।

-शतपथ

यह संसार दो पदार्थों से मिलकर बना है । अग्नि और सोम । इनके अतिरिक्त तीसरा कुछ नहीं ।

यह अग्नि जब सूक्ष्म रूप में शरीर के प्राणकोषों की जैवविद्युत, मन की विचार तरंगों तथा आत्मा की सूक्ष्मतम सत्ता को प्रभावित करती है तो उन्हें अपने जैसा ही प्रकाशवान, देदीप्यमान बना लेती है । मनुष्य जीवन में नया प्रकाश पाता है । उसे घने अन्धेरे में भी सत्पथ दिखाई देने लगता है ।

शरीर-व्यापी अग्नि, विश्वव्यापी महा-अग्नि का ही एक स्फुलिंग है । ब्रह्माग्नि, देवाग्नि और प्राणि-अग्नि में चेतना के तीन स्तर हैं । ब्रह्माग्नि वह महत् तत्व है जो जड़-चेतन सबमें संव्याप्त है । देवाग्नि का केन्द्र सविता है एवं प्राणि-अग्नि का उद्भव अन्न अर्थात् समस्त वनस्पति जगत से होता है । यज्ञाग्नि में भी इन तीनों अग्नियों का प्रतीक लिया जाता है- दक्षिणाग्नि गार्हपत्याग्नि, आह्वनीयाग्नि । विश्व का आधारभूत सर्वव्यापक ब्रह्म प्राणिजगत की उत्कृष्टता-देवशक्ति तथा शरीरधारियों में विद्यमान हलचल-जीवात्मा का ये तीन अग्नियाँ क्रमशः प्रतिनिधित्व करती हैं ।

जीव को ईश्वर का अंश ही कहा जाता है । इस लघु घटक में उस महान के सारे तत्व विद्यमान है । इस ब्रह्माग्नि-आत्माग्नि की प्रार्थना उपासना, आराधना करने से साधक वह सब कुछ पा लेता है जो इस विश्व के राजकुमार के रूप में उसके लिए अभीष्ट है । इन्हीं तथ्यों के संकेत शास्त्रकार इस तरह देते हैं ।

अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः तमीमहे महागयम् ।

-ऋग्वेद

यह अग्नि- ऋषि है । पवित्र करने वाली है । पंचकोषों का मार्गदर्शन है । इस महाप्राण की हम शरण में जाते हैं ।

अग्ने विवस्वदुप सश्चित्रं राधो अमर्त्यी ।
आदाशुषे जातवेदो वहात्वमद्या देवां उषर्बुधः ।।

-ऋग्वेद

हे अग्नि ! मेरे जीवन की ऊषा बनकर प्रकटो । अज्ञान के अन्धकार को दूर करो । ऐसा आत्मबल प्रदान करो जिससे देवों का अनुग्रह खिंचा चला आये।

अग्नि से प्रार्थना कर ऋषि अपने अन्दर उदात्त भावनाऐं, साहस, उत्थान की प्रेरणा, पवित्रता, प्रतिभा आदि गुणों को विकसित करने की अभ्यर्थना करता है। जैसे-जैसे अन्दर यह अग्नि प्रखर होती जाती है, वैसे-वैसे उसका स्तर और पद बढ़ता जाता है । यह उन्नति ऋषि राजर्षि, ब्रह्मर्षि, देवर्षि के रूप में होती है, ब्रह्माग्नि के ये ही चार स्तर हैं जो पदार्थों और जीवों के उनकी पात्रता के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुपात में मिलते हैं । ऋगवेद इन चार स्वरूपों का वर्णन इस प्रकार करता है ।

त्वमग्ने वरुणो जायसे यत् । त्वं मित्रो भवति यत्समिद्धः । त्वे विश्वे सहस्त्रस्पुत्र देवा स्त्वनिन्द्रो दाशुषे भर्त्याय ।।

इस अग्नि के चार स्वरूप हैं । वह जब उत्पन्न होती है तो वरुण कहलाती है । जब प्रदीप्त होती है, तब उसे मित्र कहते हैं, जब प्रचण्ड होती है तब विश्वेदेवा तथा अन्त में इन्द्र बनकर होता के लिये परम ऐश्वर्य प्रदान करती है ।

अग्नि का शिक्षण तथा प्रेरणा हमें अग्निहोत्र के रूप में सतत् मिलता रहता है । यज्ञ के प्रधान देवता अग्नि के मुख में हवन सामग्री डालते समय परमात्मा की निकटता अनुभव की जाती है एवं उन विशेषताओं का स्मरण किया जाता है जिन्हें जीवन में उतारने का शिक्षण अग्नि देवता से मिलता है । यह शिक्षण है ऊष्णता का-अपने विचारों तथा कार्यों में तेजस्विता के समावेश का-अपनी विशेषताओं से अपने निकटवर्त्तियों को सद्गुणी बना लेने का-जीवन की नश्वरता को समझते हुए जीवन को उत्कृष्ट बनाने का । अग्नि की ज्वाला सदा ऊपर की ओर चलती है वह हमें उर्ध्वगामी दृष्टिकोण ऊँचे चिन्तन की ओर प्रेरित करती है । अग्नि में डाली गई वस्तुएँ सूक्ष्मतम घटकों में परिवर्तित होकर विस्तृत हो जाती हैं । उदारता, अपरिग्रह, स्वार्थ नहीं परमार्थ का सतत् शिक्षण देती हुई हव्य वस्तुएँ वायुभूत हो जाती हैं ।

जिस तरह अग्नि यज्ञ कुण्ड में प्रज्वलित होती है, वैसे ज्ञानाग्नि अन्तःकरण में, तपाग्नि इन्द्रियों में तथा कर्माग्नि देह में प्रज्वलित रहनी चाहिए यही यज्ञ का आध्यात्मिक स्वरूप है । अपनी संकीर्णता, अर्हता, स्वार्थपरता को जो इस दिव्य अग्नि में होम देता है, वह बदले में इतना प्राप्त करता है, जिससे नर को नारायण की पदवी मिल सके, यज्ञ कर्म के पीछे निहित इन शिक्षाओं का समर्थन एवं हृदयंगम किया जाना चाहिए । इस चिन्तन के अभाव में केवल स्थूल लाभ मात्र ही प्राप्त किये जा सकते हैं ।

यज्ञ अनुष्ठान में सन्निहित कुंडलिनी विद्या

ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र 'अग्निमीले पुरोहित' में अग्नि को पुरोहित कहा गया है । उसके ऋत्विज देवता बताए गए हैं और होताओं को रत्नराशि प्रदान करने वाला बताया गया है । भारतीय धर्म अग्नि उपासना प्रधान है । यज्ञानुष्ठानों को उपासना प्रक्रिया में सर्वोपरि स्थान मिला है । प्रतीकात्मक देवोपासना भी चल पड़ी किन्तु ऋषियुग में एक गायत्री उपासना का युग्म प्रसिद्ध था । ब्राह्मणत्व इस उपासना की शान पर चढ़कर और यज्ञाग्नि में तपने के उपरान्त ही प्राप्त होता था । 'मनु' के **महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्रह्मीयंक्रियते तनु** के कथन में यह तथ्य स्पष्ट है । ब्राह्मण के छह प्रधान कार्यों में यज्ञ करना और यज्ञ कराना यह दो कर्तव्य भी सम्मिलित हैं । उनकी कार्यपद्धति में एक तिहाई भाग यज्ञानुष्ठानों के लिए ही निर्धारित हुआ है ।

स्थूल अग्नि उपासना अग्निहोत्रों के कर्मकाण्डों द्वारा सम्पन्न होती है । यह दृश्य और श्रव्य रूप में अनुभव में आने वाला और चेतना को प्रभावित करने वाला प्रयोग है । लोक शिक्षण और वातावरण परिशोधन की दृष्टि से यह विधि-विधान भी महत्वपूर्ण है । इसके कितने ही भौतिक और आध्यात्मिक लाभ हैं । किन्तु बात इतने से ही पूरी नहीं हो जाती । उसका पुण्य प्रयोजन सर्वोपरि महत्व का है । आत्मिक यज्ञ ही वह सूक्ष्म और मुख्य चरण है, जिसके द्वारा अग्नि उपासना करने के लिए- जिसे प्रज्वलित करने के लिए अन्तःयज्ञ की साधनात्मक व्यवस्था बनानी पड़ती है ।

आत्मज्योति यदि प्रखर रहे तो सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त होगा और उसकी ऊर्जा से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रखरता बनी रहेगी । इसके मन्द पड़ते ही अभाव और अवसाद घेर लेते हैं तथा जीवन आकाश में आधि-व्याधियों की घटाएँ घुमड़ने लगती हैं । ईश्वर का अंश जीव अपने अंशों के समान ही ब्रह्माग्नि सम्पन्न है । कषाय-कल्मषों के आवरण चढ़ जाने से उसकी प्रखरता धूमिल होने लगती है और दीन दयनीय जैसी स्थिति बन जाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । इस अन्त:अग्नि को प्रदीप्त करना और श्रद्धापूर्वक उसके प्रज्वलन का प्रयत्न करना ही ब्रह्मयज्ञ है । यह ब्रह्मयज्ञ ही अग्निहोत्र का प्राण है । अग्नि उपासना के माध्यम से अन्त:ऊर्जा को- आत्मशक्ति को विकसित करने का प्रयास किया जाता है और इसी से आत्मोत्कर्ष की समस्त सम्भावनाएँ साकार होती हैं ।

योग शास्त्रों में कुण्डलिनी साधना को अन्त: अग्नि की उपासना कहा गया है तथा उसके निवास मूलाधार को अग्निकुण्ड बताया गया है । संक्षेप में उसे 'कुण्ड' या 'कुद' भी कहते है । समुद्र और शक्ति समुद्र के नाम से भी इस संस्थान का परिचय मिलता है । कुण्डलिनी स्वयं ही अग्नि है । सामान्यतया यह प्रसुप्त स्थिति में पड़ी रहती है । इसे जागृत करने के लिए विविध तरह के साधनात्मक उपचार करने पड़ते हैं । इन उपचारों में कई खतरे भी हैं । एक गायत्री उपासना ही ऐसा उपचार है, जिससे कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया निरापद रूप से सम्पन्न की जा सकती है । जब यह प्रसुप्त स्थिति से जागृत हो जाती है तो इसका स्वरूप अग्निशिखा जैसा ज्योतिर्मय बन जाता है और वह तड़फती हुई बिजली की तरह ब्रह्मलोक में-ब्रह्मरंध्र में सुविस्तृत संव्याप्त दीखने लगती है ।

अग्निशिखा ऊपर को उठती है । प्रज्वलित कुण्डलिनी भी मूलाधार मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र तक पहुँचने का प्रयत्न करती है । यज्ञ से वर्षा होने की मान्यता है । यह प्रयोग भौतिक क्षेत्र में भी किया जाता है किन्तु इस प्रतिपादन का आध्यात्मिक रहस्य यही है कि यज्ञाग्नि से अन्तरिक्ष की आर्द्रता समवेत होती है और साधक की भाव भूमिका पर अमृत वर्षा करने लगती है । स्वाँति बूँद से चातक की तृप्ति और सीप से मोती की उत्पत्ति जैसी मान्यताएँ इस अध्यात्म रहस्य की ओर इंगित करती हैं । प्रज्वलित यज्ञाग्नि अन्तरिक्ष के सोम को प्रभावित और आकर्षित करती है । दोनों मिलते हैं और उससे परमलक्ष्य की प्राप्ति होती है ।

इन प्रतीकों के माध्यम से आत्मा को अग्नि और परमात्मा को सोम कहा गया है । जीव चेतना के शरीर में निवास करने का प्रमुख स्थान, मूल आधार चक्र है। वहीं सुप्त सर्पिणी की तरह मूर्छित पड़ी हुई है आत्म शक्ति कुण्डलिनी । यह अग्निमयी होते हुए भी निष्क्रिय और निस्तेज अवस्था में ही पड़ी रहती है और जागृत करना ही अन्त:यज्ञ है । यही है यज्ञ उपासना का आध्यात्मिक स्वरूप । यह साधना जितनी प्रखर होती है, उतनी ही सोम सत्ता की अनुकम्पा अमृतवर्षा बनकर बरसती है और अग्नि की पिपासा को शांत करती है । यह सोम वर्षा ही भगवत कृपा है जो ब्रह्मलोक से दिव्य गंगा की तरह अवतरित होती है। काय कलेवर में, मानवीय सत्ता में यह ब्रह्मलोक ब्रह्मरन्ध्र में अवस्थित है । उसमें निवास करने वाली परमात्म सत्ता का प्रतिनिधित्व सहस्रार चक्र करता है। अस्तु, सहस्रार को सोम और ब्रह्मरन्ध्र को मूलाधार अग्नि कहा गया है । अग्नि और सोम के -मूलाधार और ब्रह्मरन्ध्र के समन्वय प्रयासों को अग्नि उपासना कहा गया है तथा कुण्डलिनी साधना भी यही है ।

ब्रह्मयज्ञ के वास्तविक स्वरूप का प्रतिपादन, वर्णन विवेचन करते हुए शास्त्रकारों ने आत्मशक्ति को प्रखर और परिष्कृत बनाने वाले साधनात्मक प्रयत्नों का निर्देश किया है । आत्मयज्ञ में संलग्न होने के लिए ही- पदार्थ यज्ञ की अग्निहोत्र की प्रक्रिया अपनाई जाती है । परमात्मा में आत्मा को होम देना, दोनों को एक रूप बना देना यही ब्रह्मयज्ञ है । कहा भी गया है-

यज्ञरूपधरं देव यजते स्वात्मनैव यः ।
ते न सर्वे कृता यज्ञा भवन्तीह महात्मना ।।

अर्थात- यज्ञ रूप परमात्मा में अपने आत्म रूप हवि से हवन करने का जिसने सम्बन्ध कर लिया है , वह वास्तव में समस्त यज्ञों का अनुष्ठान कर चुका ।

आत्म सत्ता में विद्यमान दिव्य ऊर्जा ही अग्नि तत्व है, उसी के विभिन्न स्वरूप देवशक्तियों के रूप में परिलक्षित होते हैं, पर वह मूलत है गायत्री ही जिसका देवता सविता अग्नितत्व का प्रतिनिधि है । आत्म चेतना में उस दिव्य अग्नि के प्रज्वलित होने पर जीवन यज्ञ बन जाता है और ऐसा व्यक्तित्व विभूतियों का अजस्र भण्डार भरा दीखता है ।

शरीरमिति कस्मात् । अग्नयोह्यत्र श्रियन्ते ज्ञानाग्निदर्शनमग्नि कोष्ठाग्निरिव । तत्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोष्ठाग्निर्नामाशतिपीतलेह्य चोष्यं पचति । दर्शनमती रूपाग्नि दर्शनं करोति । ज्ञानाग्निः शुभाशुभं च कर्म विदंति । त्रीणि स्थानानि भवंति मुखे आह्वनीयं उदरे गार्हपत्यो हृदि दक्षिणाग्निः आत्मा यजमानो मनोब्रह्मा लोभादयः पशवो धृतिर्दीक्षा संतोषश्च बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि हवीषि कर्मेन्द्रियाणि शिरः कपाल केशा दर्भा मुखमन्तर्वेदि ।

-गर्भोपनिषद्-६

अर्थात्- इस शरीर में ज्ञानाग्नि, दर्शनाग्नि और जठराग्नि इन तीन अग्नियों का निवास है । जो भोजन पचाता है वह जठराग्नि, जो दीखता है वह दर्शनाग्नि और जो शुभ -अशुभ का अन्तर बताता है वह ज्ञानाग्नि है । मुख में आह्वनीय अग्नि का निवास है। उदर में गार्हपत्याग्नि का और हृदय में दक्षिणाग्नि का। यह देह यज्ञ रूप है । इसमें आत्मा यजमान, मन ब्रह्मा, मनोविकार पशु, धैर्य दीक्षा, ज्ञानेन्द्रियाँ यज्ञपात्र और कर्मेन्द्रियाँ हैं । कपाल केश दर्भाएँ हैं ।

ऐतरेय-उपनिषद् (१।४) ऋगवेद (७।४।५, ५।३१) चतुर्वेदोपनिषद्, त्रिशिख ब्राह्मणोपनिषद्, यजुर्वेद आदि में भी अन्तःयज्ञ का यही स्वरूप समझाया गया है । कठोपनिषद् में यम और नचिकेता संवाद आता है । जिज्ञासु नचिकेता यम से अग्नि विद्या का स्वरूप पूछता है । यम उसे विस्तारपूर्वक उस ब्रह्मग्नि की विवेचना करते हुए समझाते हैं। यह चूल्हे पर जलने वाले अग्नि की नहीं वरन् आत्मज्ञानाग्नि का ही प्रसंग नचिकेता यम से पूछता है, भगवन् आप यम स्वर्ग लोक को प्राप्त करने वाली अग्नि को जानते हैं । आप मुझ श्रद्धावान जिज्ञासु को उसका मर्म समझाकर कहिए । ऐसा द्वितीय वर माँगता हूँ । तब यम कहते हैं-

प्रते ब्रवीमि ददुमे निबोध स्वर्ग्यग्नि नचिकेतः प्रजानन् । अनन्त लोकाहिमथो प्रतिष्ठां विद्धित्वमेतं निहितं गुहायां ।

-कठ १।१४

हे नचिकेता स्वर्ग को प्राप्त कराने वाली अग्नि विद्या को मैं भली प्रकार जानता हूँ । यह अग्नि सम्बन्धी ज्ञान अनन्त लोकों की उपलब्धि कराने वाला है परन्तु बुद्धिरूपी गुहा में छिपा है ।

और यम नचिकेता को अग्निविद्या का स्वरूप समझाते हैं । अग्नियाँ तीन प्रकार की बताई गई हैं । एक वह है जो ईंधन के सहारे जलती है उसे हम पार्थिव कहते हैं । दूसरी वह जो सूर्य ऊर्जा के साथ धरती पर अवतरित होती है और अग्नितत्व के रूप में ऊर्जावान होकर इस जगत में संव्याप्त होती है । उसे भौतिक अग्नि कहते हैं । तीसरी दिव्य अग्नि है जो प्राणियों में आत्मसत्ता और ब्रह्माण्ड में- ब्रह्मसत्ता, ब्रह्म चेतना बनकर काम करती है । ब्रह्मयज्ञ में इस दिव्य अग्नि की ही आराधना की जाती है । इन तीनों अग्नियों का परिचय लिंग पुराण में इस प्रकार मिलता है-

दिव्यस्य भौतिक स्याग्नेरथो पार्दिविस्य च ।
व्युष्टायां तु रजन्या च ब्रह्मणेऽव्यक्तं जन्मनः ।।

'वह अग्नि तीन प्रकार की होती, एक दिव्य अग्नि है, दूसरी भौतिक अग्नि है और तीसरी पार्थिव अग्नि है ।'

यह दिव्य अग्नि ही हमारी आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करती है । अग्नि उपासना के समस्त सन्दर्भ इसी दिव्य अग्नि की आराधना के लिए है । उसी में वह सामर्थ्य है कि आत्मा की आवश्यकताओं को पूर्ण करके अपने गौरव के अनुरूप विभूतियों से व्यक्तित्व को सुसम्पन्न कर सके। श्रुतियों में इन्हीं अग्निदेव की विभिन्न प्रार्थनाएँ मिलती हैं ।

यज्ञ के दो तत्व बताये गए हैं । एक अग्नि दूसरा हवि । दोनों के मिलन से ही यज्ञ प्रयोजन पूरा होता है। अग्नि हवि की याचना करती है और उसके मिलने पर प्रचण्ड बनती हैं । उसकी तृप्ति भी इसी हविष्य द्वारा सम्पन्न होती है । इस हवि को श्रुतियों में सोम कहा गया है । सोम की वर्षा से अग्नि का पोषण होता है । यज्ञ में घृत आहुतियाँ- पूर्णाहुति वसोधरा में घृत धारा की प्रक्रिया सोम वर्षा की प्रतीक है । सोम सहस्रार में रहता है । मूलाधार की प्रदीप्त अग्निशिखा अपनी ऊर्जा को ब्रह्मरंध्र तक पहुँचा कर सोम को आर्द्र बनाती है। वह पिघलकर नीचे उतरता है । अग्नि ऊपर चढ़ती है। दोनों के सुयोग्य संयोग से आत्मा और परमात्मा के मिलन की ब्रह्मानन्द की स्थिति बनती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अग्नि और सोम का संयोग प्रकारान्तर से मूलाधार और सहस्त्रार का संयोग समझा जा सकता है। कुण्डलिनी साधना द्वारा इसी प्रक्रिया को सम्पन्न किया जाता है । सोम और अग्नि के संयोग की आवश्यकता और महत्ता बताने वाले अनेकों शास्त्र वचन मिलते हैं दर्शनोपनिषद् में कहा गया है-

इडया कुण्डली स्थानं यदाप्राणः समागतः सोम ग्रहणमित्युक्तम् ।

इड़ा का स्थान कुण्डली है । जब वह प्राण के साथ मिलती है तो सोम ग्रहण होता है ।

अग्नि सीमात्मकं विश्वामित्याग्नि प्रचक्षते ।
सोम शक्त्यामृतमयः शक्तिपुंज भवत्तेन् ।
अमृतंवंत्प्रतिष्ठा सा तेजो विद्याकला स्वयम् ।
स्थूल सूक्ष्मेषु भूतेषु स एव रस तेजसि ।।

-वृहज्जाबालोपनिषद्

यह संसार अग्नि और सोम के संयोग से बना है । सोम अमृत है और अग्नि । सोम ऊर्जा के तेज से ही प्राणियों और पदार्थों का जीवन चल रहा है ।

अग्निर्वा अहः सेमौरात्रि रथ ।
यदन्तरेण तद् विष्णु ।।

-शतपथ

अग्नि और सोम के समन्वय का नाम ही विष्णु है । अग्नि और सोम का-मूलाधार और सहस्त्रार का अथवा यज्ञ में अग्नि और हवि का सम्मिलन ही आत्म शान्ति के जागरण की जागरण विद्या का संकेत है । मूलाधार अग्नि का जब सहस्त्रार के सोमरस से सम्बन्ध बनता है तो उससे जीव की तृप्ति ब्रह्मकी तुष्टि और विश्व व्यवस्था में प्रगति एवं शान्ति के आधार पर बनती हैं । वियोग को संयोग में बदलने वाली कुण्डलिनी साधना के सत्परिणाम सबके लिए सब प्रकार श्रेयस्कर ही होते हैं ।

पंचप्राणों की पाँच आहुतियाँ

छान्दोग्य उपनिषद् में पंच प्राणों की पाँच आहुतियों का वर्णन मिलता है । यह प्राण-ऊर्जा की ही पंचस्तरीय साधना के संकेत हैं । इसे देवयज्ञ कहा गया है । चेतना-ऊर्जाएँ ही देवसत्ताएँ हैं । अतः इन चेतना ऊर्जाओं की पंचस्तरीय सक्रियता ही पाँच आहुतियाँ हैं, जिनके सम्पन्न होने से देव यज्ञ सम्पन्न होता है ।

जीवन-चेतना जब द्रव्यगत रूपाकारों में ढलती है, तभी वह सामान्य प्राणियों के अनुभव में आती है । अपने शुद्ध रूप में निर्विकारी चेतना को सामान्यतः देखा-समझा नहीं जा सकता । चेतना-ऊर्जा या प्राण-ऊर्जा सर्वव्यापक है, सर्वसमर्थ है, किन्तु उसकी हलचल जब प्रकृति द्रव्य के संयोग के सामने आती है, तभी सृष्टि का क्रम प्रारम्भ होता है । भूत-द्रव्य और चेतना-ऊर्जा का संयोग ही सृष्टि चक्र के प्रवर्तन का आधार है । शास्त्रीय भाषाओं में इसे ही अन्न एवं प्राण का संयोग कहा गया है । बृहदारण्यक-उपनिषद् में यह संकेत स्पष्ट है-

अन्नं वै व्यन्ने हीमानि, सर्वाणि, भूतानि विष्टानि रमिति, प्राणो वैरं प्राण हीमानि सर्वाणि भूतानि रमन्ते..... ।

-बृ० ५।१२।१

अर्थात 'वि' ही अन्न है, जिसमें सब प्राणी विष्ट रहते है, वही (भूतद्रव्य) अन्न है तथा जिस (चेतना-ऊर्जा) के कारण सब प्राणी रमण करते हैं, गतिशील होते हैं वह 'रम' ही प्राण है ।

इस प्रकार सृष्टिगत जीवन का उदय अन्न और प्राण के भूतद्रव्य एवं चेतना के प्रकृति और पुरुष के संयोग सम्पर्क से होता है ।

यद्यपि मूलरूप में एकमेव ब्रह्मसत्ता ही विद्यमान है, तो भी उसके संकल्प से दो प्रधान सत्ताएँ अभिव्यक्त होती हैं, जिनमें से एक भौतिक द्रव्य का आधार बनती है, दूसरी चेतना-ऊर्जा का । इन्हें ही भिन्न-भिन्न नाम देकर प्रकृति-पुरुष, अन्न-प्राण, रयि प्राण आदि के रूप में विवेचित किया गया है । वस्तुतः यह संसार ब्रह्मसत्ता से प्रकट हुआ है । **स एकाकी न रमते** कहकर उस ब्रह्मसत्ता के सृष्टि-संकल्प का आधार खोजने की चेष्टा की गई है, जो मानवीय बुद्धि को सन्तुष्ट करने का प्रयास ही है, क्योंकि सवोच्च सत्ता के संकल्प का वास्तविक कारण अज्ञेय है । सत्ता का मूल स्वरूप ही आनन्दमय एव चिन्मय है । इसलिए उस आनन्दमय चेतना के एकाकी न रमने का प्रश्न ही नहीं है । हाँ, यह अवश्य निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि जगत की उत्पत्ति संकल्प से हुई ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रश्नोपनिषद् में इसी संकल्प की द्रव्य और चैतन्य-ऊर्जा के रूप में अभिव्यक्ति का वर्णन है-

स मिथुनमुत्पादयते । रमि च प्राणं चेत्येतौ मे बहुधा प्रजा करिष्यत् इति ।।

-प्रश्नो० १।४

अर्थात् उसने रमि और प्राण का जोड़ा बनाया । ताकि उन्हीं से बहुत प्रजाएँ उत्पन्न हो सकें । यहाँ रमि को द्रव्य या द्रव्य-ऊर्जा तथा प्राण को चेतना-ऊर्जा समझा जाना चाहिए ।

ऊर्जस्विता के स्तर-भेद से प्राणों के पाँच भेद हैं । ऊर्जा के सर्वोच्च रूप को प्राण, उसके बाद के दूसरे रूप को उदार, तृतीय स्तरीय ऊर्जा को व्यान, चतुर्थ को समान और पंचम को अपान कहते हैं । चेतना की बलिष्ठता को ही अध्यात्म-शास्त्र में प्राण कहा गया है ।

पाँच आहुतियों का औपनिषदिक वर्णन प्राण-ऊर्जा के पाँच स्तरों का तथा अमूर्त सूक्ष्म सत्ता के क्रमशः स्थूलतर रूप में अभिव्यक्त होने का वर्णन है - प्रथम आहुति का वर्णन यों है-

असौ वाव लोको गौतमाग्निस्तस्यादित्य एव समिदरश्मया धूमोऽहरर्चिश्चन्द्रमा अंगारा नक्षत्राणि विस्फुलिंगा ।।

-छा० ५।४।१

अर्थात्- राजा जैवालि ने ऋषि गौतम से कहा- हे गौतम ! यह प्रसिद्ध द्युलोक की अग्नि है । आदित्य ही उसका समिध है, किरणें धूम हैं, दिन ज्वाला है, चन्द्रमा अंगार है और नक्षत्र विस्फुलिंग, यानि चिनगारियाँ हैं ।

यह प्राण ऊर्जा की प्रथम-स्तरीय अभिव्यक्ति का वर्णन है । प्राण ऊर्जा के प्राथमिक कम्पनों से द्युलोक में जो हलचलें होती हैं, उनका ही यह वर्णन है । सर्वव्यापी चिदाकाश ही द्युलोक है । उसे ही सत्यलोक भी कहा जाता है । वहाँ संकल्प का ही साम्राज्य है, ऐसा छान्दोग्योपनिषद् में बताया गया है । भौतिकीय दृष्टि से जिन्हें गणितीय सत्य या वैज्ञानिक सत्य कहा जाता है, वे चिदाकाश के लिए या द्युलोक के लिए कोई अर्थ नहीं रखतीं । वह इनसे परे का लोक है । उसे मनोमय या संकल्पमय लोक कहा जाता है । मनोमय लोक वह है, जहाँ सामान्य गतिविज्ञान के नियम नहीं लागू होते । यहाँ पंचप्राण ऊर्जाएँ, आदित्य, रश्मि, दिवस, चन्द्रमा तथा नक्षत्र के रूप में प्रथम आहुति के उपरान्त अभिव्यक्त होती है । यह आहुति संकल्पमयी श्रद्धा के द्वारा दी जाती है- **तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा श्रद्धा जुह्वति तस्या आहुतेः सामो राजा सम्भवति ।** *(-छा० ५।४।२)* अर्थात् उस द्युलोक रूपी अग्नि में देवगण श्रद्धा का हवन करते हैं, जिससे सोम की उत्पत्ति होती है ।

यहाँ द्युलोक महत्तत्व का प्रतीक है । जो अभी तक आधुनिक भौतिकी द्वारा अविज्ञात है । उसी की इन पाँच प्राथमिक अभिव्यक्तियों की यहाँ मना है । चेतना का यह स्तर बुद्धि द्वारा नहीं, श्रद्धा द्वारा ही जाना जा सक्ता है । ऐसा श्रुति का स्पष्ट निर्देश है । अतः यहाँ वर्णित आदित्य, रश्मिदिवस, चन्द्रमा और नक्षत्र के सूक्ष्म अर्थों के आधुनिक भौतिक शास्त्रीय पर्याय नहीं बताये जा सकते । श्रद्धा द्वारा ही इन पाँच ऊर्जा स्तरों का ज्ञान सम्भव है । इस प्रथम आहुति से सोम उत्पन्न होता है ।

जो ज्योतिर्मय प्राण द्युलोक से प्राणियों पर बरसता है, उसका ही नाम सोम है । वह सविता देवता से बरसने वाला चेतना-आलोक है । गायत्री-साधना द्वारा इसी सोम को तीव्रता से आकर्षित किया जाता है ।

पंचप्राणों की दूसरी आहुति का वर्णन यह है-

पर्जन्या वाव गौतमाग्निस्तस्य वायुरेव समिद्भ्र धूमो, विद्युदर्चिकशनिरंगारा ह्रदिनयो विस्फुल्लिंगा । *(-छां० ५।५।१)* अर्थात् हे गौतम ! पर्जन्य ही अग्नि है, उसका वायु ही समिध है, बादल धूम है, विद्युत-ज्वाला है, वज्र अंगार है तथा गर्जन विस्फुल्लिंग है ।

यहाँ पर्जन्य उस प्राण-ऊर्जा का प्रतीक है, जो अनन्त अन्तरिक्ष से सर्वत्र निरन्तर बरस रहा है । यह सोम का पर्याय ही है । उस पर्जन्याग्नि में देवगण अर्थात् चेतना-ऊर्जाएँ सोम का हवन करती हैं, यानी जो सूक्ष्म ज्योतिर्मय प्राण इस सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है, उसे देवगण भिन्न-भिन्न रूपों में बदलते हैं- ये रूप है- वायु, अभ्र, विद्युत, वज्र और गर्जन । वायु उस शक्ति का नाम है, जो इस प्राण-ऊर्जा को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यथाक्रम वितरित करती है, जो वृहदारण्यक उपनिषद् में अमूर्त यत् और त्यत् अर्थात् अमूर्त गतिशील एवं अप्रत्यक्ष कही गई है । छान्दोग्य उपनिषद् में रैक्व ने संवर्गविद्या का वर्णन करते हुए कहा है कि जब अग्नि सूर्य, चन्द्र या आप अपने अस्तित्व से विमुक्त होते हैं, तो वे वायु में ही लीन होते हैं ।

वायुर्वाव संवर्गो यदा वा अग्निसद्वायति वायुमेवाप्येति, यदा । सूर्योऽस्तमेति वायुमेवाप्येति । यदा चन्द्रोऽस्तमेति वायुमेवाप्येति ।

-छां० ४।३।१

यह वायु वायुभूत से भिन्न है । वायुभूत इलेक्ट्रॉन-कण का शास्त्रीय नाम है, किन्तु यहाँ पंच प्राण-ऊर्जाओं की दूसरी आहुति से उत्पन्न वायु एक भिन्न ही शक्ति का द्योतक है । इलेक्ट्रॉन इसकी ही अपेक्षाकृत स्थूल अभिव्यक्ति है । बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य ने बताया है कि वायु ही वह सूत्र है, जिससे लोक, परलोक तथा सब भूत संग्रथित हैं ।

ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि लेप्टान-कणों का मूल उद्गम यह वायु-शक्ति ही है । शेष चार तत्वों में से अभ्र मसान-कणों की मूलभूत शक्ति का विद्युत फोटान-कणों के उद्गमस्रोत का, वज्र एल्फा कणों की उद्गम स्रोत शक्ति का तथा गर्जन घेरियान-कणों की प्रसविनी शक्ति का पर्याय है।

आहुति का तीसरा स्तर संवत्सर, आकाश, रात्रि, दिशाओं और अवान्तर दिशाओं से सम्बन्धित है ।

.....संवत्सर एव समिदाकाशो, धूमो रात्रिरचिदिशोऽहारा अवान्तरदिशो विस्फुलिंग ।।

-छां० ५।६।१

अर्थात् संवत्सर ही समिध है, आकाश धूम है, रात्रि ज्वाला है, दिशाएँ अंगार है, अवान्तर दिशाएँ विस्फुलिंग हैं ।

अभी तक के दो ऊर्जा-स्तर अति सूक्ष्म थे । जो दिक्कालातीत हैं । यह तीसरा स्तर देश-काल का टाइम और स्पेस का स्तर है । प्राण ऊर्जाएँ जब तीसरे स्तर पर सक्रिय होती हैं तो वे दिक्काल में अभिव्यक्त देखी जा सकती है । इसके पहले का क्षेत्र दिक्कालातीत चेतना से सम्बन्धित है । प्राण-ऊर्जाएँ जब तक चौथे एवं पाँचवे आयाम में सक्रिय रहती हैं, वे दिक्काल-सीमा से परे रहते हैं । तीसरा आयाम ही दिक्काल का आयाम है । त्रिआयामीय जगत् जो इन्द्रिय-बोधात्मक जगत है वह प्राण-ऊर्जाओं के इसी स्तर की अभिव्यक्ति है । तीसरी आहुति से ही अन्न का यानी पंच भूतात्मक दृश्य जगत का जन्म होता है । अगली दो आहुतियाँ इसी त्रिआयामीय जगत से सम्बन्धित हैं । चौथी आहुति का वर्णन यह है कि वाक् ही समिध है, प्राण धूम है, जिह्वा ज्वाला है, चक्षु अंगारे और श्रोत्र विस्फुल्लिंग हैं । इन्हें पंचतन्मात्रा के प्रतीक समझना चाहिए । शब्द, गंध, रस, रूप और स्पर्श की तन्मात्राएँ ही यहाँ अभिप्रेत हैं । इसी प्रकार पाँचवी आहुति में पंचमुखी क्रिया चेष्टाओं का वर्णन है ।

पंच प्राणों की पाँच आहुतियों का यह औपनिषदिक वर्णन भी विवेचन की भारतीय शैली के अनुसार त्रिस्तरीय है । आधिदैहिक दृष्टि से पाँचवी आहुति उस रति क्रिया का प्रतीक है, जिसको परिणाम स्वरूप जीव का जन्म होता है । इसी प्रकार चौथी आहुति आधिदैहिक दृष्टि से पाँच ज्ञानेन्द्रियों की अनुभूतियों का प्रतीक है तथा तीसरी आहुति मानसिक अनुभूतियों का प्रतीक । त्रिआयामीय जगत में ही देह, मन और चेतना की भिन्नता है । उससे ऊपर उठने पर तो अभेदता ही प्रकट होती है । इसीलिए प्रथम एवं द्वितीय आहुतियाँ सूक्ष्म चेतन-ऊर्जाओं के ही विवरण से सम्बन्धित है । आधिदैहिक दृष्टि से पाँचवी आहुति का शरीरस्थ पंचदेवताओं की पंचोपचार पूजा चेष्टाएँ समझा जा सकता है । चौथी आहुति पाँचों इन्द्रियों के अर्धांश पाँच देवताओं की साधना है और तीसरी आहुति चारों दिशाओं तथा तीनों काल में व्याप्त देवताओं की उपासना है ।

यत्पिण्डे तत् ब्राह्मण्डे यही भारतीय दर्शन विज्ञान का निष्कर्ष है । अत: पाँच प्राणों की पाँच आहुतियाँ जिस प्रकार ब्रह्माण्ड की अभिव्यक्ति का विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं उसी प्रकार वे मानवी काया में अन्तर्निहित पाँच चेतना-स्तरों पर भी प्रकाश डालती हैं। प्रथम स्तर आनन्दमय कोश का है, जो सर्वाधिक सूक्ष्म है । दूसरा स्तर विज्ञानमय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोश का है । तीसरा मनोमय, चौथा प्राणमय और पाँचवा स्तर अन्नमयकोश का है । सामान्य व्यक्ति अपने इसी पाँचवें बाह्य स्तर को ही अपना सर्वस्व समझते हैं और उसे भी ठीक से जानने समझने की ओर प्रवृत्त नहीं होते । किन्तु जागृत प्रबुद्ध आत्माएँ प्राण-तत्व के वास्तविक स्वरूप को जानने के लिए आकुल हो उठती हैं और प्राण-विज्ञान तथा प्राणदर्शन का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर आत्मसत्ता में अभिव्यक्त प्राण- ऊर्जा के पाँचों स्तरों का साक्षात्कार किये बिना नहीं रहतीं । मानवीय सत्ता की पाँच प्राणों की पाँच आहुतियाँ अहर्निश पड़ती रहती हैं । उसके बिना जीवन यज्ञ का चल पाना ही सम्भव नहीं है किन्तु उस जीवन-यज्ञ देवयज्ञ के वास्तविक स्वरूप को जान थोड़े ही लोग पाते हैं । शेष तो उस ओर से बेखबर उदासीन ही रहे जाते हैं और अपने ही भीतर विखरी पड़ी इस अनन्त वैभव की आदि स्रोत प्राण-शक्ति की उपेक्षा करते हुए बाहर उसी प्राण तत्व के यत्किंचित प्रकाश के प्रति आकर्षित होकर दौड़ते फिरते हैं । प्राणियों मे जहाँ जो कुछ भी जीवन है, चमक है, दीप्ति है, आकर्षण है, वह वस्तुतः प्राणांश के ही कारण है । प्राण-विद्युत की अधिकता ही व्यक्ति को तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी बनाती है । उस प्राण-ऊर्जा का अभिवर्धन ही गायत्री साधना का प्रयोजन है । अपने ही काय-कलेवर की यज्ञशाला में पाँच प्राणों का जो पंच कुंडी यज्ञ निरन्तर चलता रहता है, उस देवयज्ञ के प्रति जागृत होना उसके रहस्य को समझना और उसकी प्रेरणाओं को ग्रहण करना प्रत्येक मनुष्य का पुनीत कर्तव्य है ।

अग्निहोत्र- है क्या ?

'अग्निहोत्र' शब्द अग्नि के आह्वान का वाचक है । यह अग्नि यज्ञाग्नि, द्युलोकाग्नि, भौमाग्नि भेद से तीन प्रकार का है । यज्ञाग्नि में हवि का प्रक्षेप किया जाता है जिसके द्वारा वायु की शुद्धि होती है जल व आकाश में पवित्रता आती है । द्युलोकाग्नि का कार्य रसों का लेना व देना है । सूर्य या चन्द्र जल का आकर्षण करते हैं, तथा फिर उसके सहस्त्रधा बनाकर पृथ्वी को ही प्रदान कर देते हैं । इस दिव्य गुण के कारण ही सूर्य, चन्द्र आदि देव कहलाते हैं । देवों का कार्य परहित साधन है, यज्ञ शब्द का भी यही अर्थ है । यज्ञ के द्वारा देवताओं की पूजा की जाती है, पूजा का अर्थ रोली या चावल चढ़ाना ही नहीं किन्तु उस पदार्थ का सदुपयोग करना है । जल को मैला करना या जल में मल मूत्र का प्रक्षेप करना या विष आदि हानिकारक, रुधिर वसा आदि घृणास्पद वस्तुओं को जल में मिलाना जल की पूजा नहीं किन्तु जल की निन्दा है, इसी प्रकार अग्नि में मल, विष्ठा, केश, नख आदि का जलाना और उसका अपवित्र करना अग्नि की पूजा नहीं किन्तु अग्नि की निन्दा है । भौमाग्नि के द्वारा यन्त्रों का चलाना, भोजन का पकाना, लोहे को मुलायम करना, पिघलाना, सुखाना, जलाना आदि कर्म किये जाते हैं, इन कर्मों का यथावत् उपयोग लेना ही अग्नि की पूजा है । विपरीत उपयोग सब निन्दा है, जैसे-आत्महत्या, करने वाले 'आत्मघाती' कहलाते हैं इस प्रकार जो व्यक्ति आत्मा को बिना पहचाने इस लोक से प्रयाण करता है वह भी 'आत्मघाती' कहलाता है । उपनिषद् में लिखा है कि- **योवाऽविदित्वाऽऽत्मान मस्माल्लोकान् प्रयाति स आत्मा कृपणः ।।**

अर्थात्- जो व्यक्ति मनुष्य जन्म लेकर भी आत्मा पहिचानने का प्रयत्न नहीं करते वे आत्मघाती कहलाते हैं, गीता में भी लिखा है कि **आत्मैवह्यात्मनो बन्धु रात्मैवरिपुरात्मनः ।**
उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं आत्मानमवसादयेत् ।।

अर्थात् - मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है वह अपने को नीचे गिरा सकता है तथा ऊपर उठा सकता है उन्नति या अवनति करना मनुष्य के अपने हाथ की चीज है, इस आत्मोन्नति के साधनों में 'यज्ञ' एक विशेष महत्वपूर्ण साधन है । यज्ञ के तीन लाभ हैं शरीर को पवित्र करना-मन को पवित्र करना तथा आत्मा को पवित्र करना । इन तीनों उद्देश्यों की सिद्धि गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्नि नाम की तीन अग्नियों से की जाती है, गार्हपत्य शरीर को पुष्ट करती है क्योंकि यह शरीर को उत्तम-उत्तम भोजनों से पुष्ट करती हैं, आहवनीय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

के द्वारा मानसिक सद्गुणों का प्रवेश किया जाता है, इस शरीर या मन को यदि पुष्ट और प्रसन्न रखा जाय तो ऐहिक तथा परलौकिक सुखों की प्राप्ति हो सकती है, अन्य कुछ नहीं । सर्वोत्तम अग्नि दक्षिणाग्नि है जो दक्षिणा देना या त्याग करना इस दृष्टि से आत्म सुख का सर्वोत्तम साधन है । इस तरह अग्नि प्रधान क्रिया-कलाप अग्निहोत्र कहलाता है । उसका प्रभाव पदार्थों पर पड़ता है । शरीर के रोग निवारण में-जल वायु का प्रदूषण समाप्त करने मे भूमि अथवा मकान में संव्याप्त अशुद्धता को हटाने में अग्निहोत्र की प्रधानता देखी जा सकती है ।

अग्निहोत्र अपने आप में एक विज्ञान है । उसमें रसायनों को वायुभूत बना देने के कारण व्यापकता बढ़ जाती है । ठोस पदार्थ, एल्केलाइड्स व टर्पीन्स इत्यादि जहाँ के तहाँ रहते हैं । द्रव रूप में वे अपने फैलाव के अनुसार काम करते हैं । किन्तु यदि जलाकर वायुभूत बना दिया गया है तो उसका प्रभाव दूर-दूर तक पहुँचता है । अग्नि में लाल मिर्च, हींग आदि कोई भी तीक्ष्ण प्रकृति की वस्तु डाल दी जाय तो उसकी गन्ध जहाँ तक प्रभाव पहुँचाती है वहाँ तक बैठे हुए लोगों को छींके या खाँसी आने लगती है । यज्ञाग्नि में ऐसी तीक्ष्ण वस्तुएँ तो नहीं होमी जाती, पर जिनकी भी आहुतियाँ दी जाती हैं, उन सबका व्यापक क्षेत्र में प्रभाव पड़ता है । इस दृष्टि से यह विधा शारीरिक और मानसिक रोग निवारण के लिए उपयोगी है । यही वायु मण्डल में संव्याप्त विषाक्तता का भी निवारण करती है । छोटा प्रयोग छोटे क्षेत्र में काम करता है और ढाल जैसा काम देता है । यह भौतिक क्षेत्र की उपलब्धि हुई । सूक्ष्म वातावरण में युद्धोन्माद जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ भर जाती हैं तो उनका परिशोधन भी यज्ञ के अध्यात्म पक्ष द्वारा ही हो सकता है । उसमें प्राण पर्जन्य की भी वर्षा होती है जिससे स्वस्थ वातावरण ही नहीं बने, आकाश से बरसने वाले बादलों में प्राण पर्जन्य का समुचित समावेश रहने से सर्वत्र पौष्टिकता की अभिवृद्धि हो । व्यक्तित्व को उभारने और प्रतिभा को निखारने के लिए भी अग्निहोत्र से असाधारण लाभ मिलता है ।

आयुर्वेद शास्त्र में कितने ही रोगों में वनस्पतियों का धूम्र प्रयुक्त करने का विधान है । कारण यह है कि ओषधि स्थूल और द्रव्य पदार्थों की अपेक्षा वायुभूत स्थिति में अधिक सूक्ष्म बन जाती है और मात्र नासिका, मुँह आदि खुले छिद्रों से ही नहीं, रोमकूपों द्वारा भी शरीर के अन्तराल में प्रवेश करती है और गहराई में घुसी हुई विकृतियों तक का निराकरण करती है । नासिका द्वारा खींची हुई वायु मस्तिष्क के उन क्षेत्रों तक भी जा पहुँचती है, जहाँ अन्य उपायों से उस संस्थान का स्पर्श नहीं किया जा सकता ।

अग्निहोत्र के सम्बन्ध में वैज्ञानिक शोधों का सिलसिला अब विश्व भर में चल पड़ा है, क्योंकि वायुमण्डल के संशोधन और अवांछनीय तत्वों के निराकरण में इसका असाधारण योगदान देखा गया है । गम्भीर पर्यावेक्षण से इसका और भी अधिक लाभ प्रस्तुत कर सकने वाला तरीका हाथ लग सकता है ।

वस्तुत: अग्निहोत्र यज्ञविधान का तीसरा उच्चस्तरीय सोपान है । आमतौर से यज्ञ शब्द से अग्नि पूजा का ही अर्थ लिया जाता है । यह देखने में भौतिक विज्ञान की प्रक्रिया प्रतीत होती है पर वस्तुत: उनमें चेतन और पदार्थ की विशिष्टताओं का समान रूप से उपयोग होता है । अग्निहोत्र का महात्म्य भौतिक उपलब्धियों के रूप में किया जाता है फिर भी उसके साथ जुड़े हुए दिव्य परिणाम कम नहीं हैं । उसकी वैज्ञानिकता अद्वितीय है । अग्निहोत्र की वैज्ञानिकता के लिए निम्नलिखित पाँच कर्मों पर विचार किया जा सकता है । वे निम्नलिखित हैं-

१- यज्ञकुण्ड की आकृति की भिन्नता का कारण।

२- समिधाओं का चुनाव और उनका विशेष प्रकार से दहन ।

३- मन्त्रों का शुद्ध-शुद्ध उच्चारण ।

४- अग्निहोत्र का समय-विचार ।

५- सामग्री का गुण-विश्लेषण ।

१:- विभिन्न आकृतियों एवं परिमाणों की वेदियों में, समिधाओं एवं हवन सामग्री संयुक्त जो ताप, और प्रकाश उत्पन्न होते हैं, इससे परिणाम के

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूपों में भी विभिन्न परिवर्तन हो जाते हैं । इसे सूक्ष्म दृष्टि से देखा और प्रयोगसिद्ध किया गया है ।

२:- काष्ठ (समिधा) के चुनाव के कारण अग्नि के ताप की तीव्रता और गुणों में स्पष्ट ही भेद हो जाता है । उदाहरण के लिए पलाश और कीकर के काष्ठों में ताप और गुण की, मात्रा और विभेद, स्पष्ट किया जा सकता है ।

३:- मन्त्रों के शुद्ध-शुद्ध एवं संतुलित, नियमित उच्चारण के परिणामों की विभिन्न दिशायें हैं । अग्नि के तापों की तीव्रता को एक निश्चित स्तर पर बनाये रखने के लिए ठीक समय पर ही आहुतियाँ देनी पड़ती हैं, इसके लिए मन्त्रों का ठीक उच्चारण ही माध्यम बनता है ।

अक्षरों के अनुक्रम से ठीक-ठीक उच्चारित ध्वनि एक विशेष गति के द्वारा विशिष्ट परिणाम उत्पन्न करती है । ध्वनियों की गति और उसका परिणाम तो भौतिक विज्ञान द्वारा सिद्ध हो ही चुका है ।

मन्त्रों और अर्थों में सन्निहित हमारी भावना और विचार की शक्तियाँ भी आहुतियों के साथ एकीभूत होकर इस जगत में सब यज्ञीय क्रियाओं की अपेक्षा अधिक शक्तिशीलता से काम करती हैं और कल्याणकारी व्यापक परिणाम उत्पन्न करती हैं ।

४:- ऋतु-सन्धि तथा दिन-रात की सन्धि यज्ञ करने के लिए सर्वोपयुक्त काल है । सन्धिकाल, संक्रमणकाल होता है । इस समय प्रकाश ऋण, धन भागों में विभक्त हो जाता है, जो दुष्ट रोग-कीटाणुओं की वृद्धि के लिए बड़ा ही अनुकूल समय होता है और उसकी आक्रामक शक्ति भी इस समय बढ़ जाती है । संख्या और शक्ति बढ़ जाने से ये नीरोग शरीर को भी रोगी बनाने का साहस करने लगते हैं ।

५:- हवन सामग्री यह सर्वविदित नियम है कि ताप, पदार्थों में रसायनिक परिवर्तन किया करता है । पदार्थ साधारण घटकों में फट जाते हैं और फिर परस्पर मिलकर नयी-नयी रचनाओं को उपस्थित करते हैं । इस प्रकार मूल द्रव्यों के गुण-धर्म भी बदल जाते हैं । द्रव्यों के ज्वलन से नये पदार्थों की उत्पत्ति का यही रहस्य है । भिन्न-भिन्न द्रव्यों के ज्वलन से, भिन्न-भिन्न द्रव्यों को उत्पन्न करने के लिए, भिन्न-भिन्न तापमानों की आवश्यकता होती है ।

सामग्री में दो प्रकार के द्रव्य रहा करते हैं । एक वे पदार्थ हैं, जो प्रचण्ड से प्रचण्ड ताप से भी जलते नहीं, यानी उसमें परिवर्तन नहीं होता या उसका प्रभावोत्पादक अंश नष्ट नहीं होता । दूसरा वह है जो उत्तापों से दूसरे नये पदार्थों में बदल जाते हैं और अपना नया गुण-धर्म प्रगट करते हैं ।

पदार्थों के रसायनिक गुण-धर्म, उनकी भौतिक अवस्था पर आश्रित है । पदार्थों की स्वाभाविक अवस्था में उनके पृष्ठ पर रहने वाले मात्रिक घटक, पदार्थों की मात्राओं के परस्पर सम्बन्ध द्वारा रसायनिक प्रभाव उत्पन्न करने की क्रियाओं में भाग लिया करते हैं । पदार्थों की ठोस अवस्था की अपेक्षा सूक्ष्म अवस्था में ये मात्रिक घटक अत्यधिक संख्या में परस्पर मिलते हैं, इसलिये पदार्थों की वाष्पीय अवस्था में इन घटकों का सम्बन्ध बहुत अधिक बढ़ जाता है ।

यदि हम एक घन सेण्टीमीटर को सूक्ष्म कणों में विभक्त करें, जिनमें से प्रत्येक कण १/१०००० परिमाण का हो तो उसका क्षेत्रफल छः लाख वर्ग सेण्टीमीटर हो जाता है, परन्तु एक घन सेण्टीमीटर जल में इतने कण होते हैं, जिनमें प्रत्येक व्यास १/१०८ दस करोड़ वाँ भाग सेण्टीमीटर होता है । इसका पृष्ठफल इससे भी अत्यधिक सूक्ष्म परिणाम वाला होता है । इस प्रकार हम उनका पारस्परिक प्रभाव बहुत अधिक बढ़ा सकते हैं । इस भांति जो पदार्थ अपनी साधारण अवस्था में प्राणवायु से मिल सकने में असमर्थ होते है, वही अपनी वाष्पीय अवस्था में मिलने के योग्य बन जाते हैं । लोहा, सीसा आदि धातुओं को जब इस प्रकार सूक्ष्मता में परिणत कर वायु में छोड़ दिया जाता है तो बड़ी चमक के साथ जल पड़ते हैं और सुन्दर लाल चिनगारियाँ छूटती हैं । शक्कर, कोयला आदि जब बड़ी सूक्ष्म अवस्था में वायु से मिलते हैं, तो बारूद के समान धढ़ाके की आवाज उत्पन्न करते हैं । इस भांति यह स्पष्ट हो जाता है, कि किसी पदार्थ को सूक्ष्म अवस्था में परिणत कर उसके रसायनिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुणों को बहुत अधिक मात्रा में बढ़ाया जा सकता है ।

यह ध्यान रखने योग्य है कि सूक्ष्मकणों में वक्रता होती है । यह वक्रता जितनी ही कम हो जाती है, उतना ही उसका रसायनिक प्रभाव बढ़ता जाता है और सूक्ष्मता की परिवृद्धि के संग ही इसकी वक्रता घटती जाती है । ऐसे पदार्थों में जायफल, जावित्री, बड़ी इलायची आदि बड़ी ही उत्तमकोटि और प्रथम श्रेणी की सामग्री है ।

हवन सामग्री में जो सुरभित तैल होता है, यह शीघ्र ही ज्वाला को पकड़ लेता है और वाष्पीय रूप में परिणत होकर अत्यधिक विस्तार प्राप्त करता है और तदनुसार उसका प्रभाव भी व्यापक हो जाता है । वाष्प अवस्था में उड्यनशील उन तैलों के सूक्ष्म कणों का व्यास सैण्टोमीटर के एक लाखवें भाग से १० करोड़वें भाग तक पाया जाता है । उन हवन सामग्रियों से निकाला हुआ अर्क या तैल उतना प्रभावोत्पादक नहीं होता, जितना अत्यधिक उन्हीं सामग्रियों के हवन करने से होता है । यही यज्ञ या अग्निहोत्र की उपयोगिता और महत्ता है ।

अर्क या तैल निकालने पर अवशिष्ट भागों को तो फेंक दिया जाता है, पर हवन में तो उसका भी सदुपयोग हो जाता है । उन अवशिष्ट भागों के जलने से जो रसायनिक परिवर्तन होते हैं, वह अत्यन्त ही लाभकारी होते हैं ।

हवन सामग्री को जलाने से उसमें अनेक पदार्थ पाये जाते हैं, जैसे कि अल्डीक्लाइड, अमाइन्स, पिलीनोलिक, साइक्लिक, टरपेनिक, श्रेणी के पदार्थ पहचाने जा चुके हैं ।

हवन सामग्री में नमकीन पदार्थ नहीं होते, क्योंकि नमक (सोडियम क्लोराइड) फटकर के क्लोरीन गैस पैदा करता है, जो रोग कीटाणुओं के लिए जैसा हानिकारक है, वैसा ही मनुष्यों के लिए भी है ।

हवन को घृत को विशेष परिणाम में उपयोग किया जाता है । इसके दो लाभ हैं प्रथम यह अग्नि को प्रज्वलित करके उसके तापमानों को विविध मात्राओं में परिमित-मर्यादित करता है:- यथा १२०, २००, ३०० डिग्री से. ग्रे. आदि । दूसरा यह (घृत) वाष्परूप में परिणत होकर सामग्रियों के सूक्ष्मकणों को चारों ओर से घेर लेता है और उस पर विद्युत शक्ति का ऋणात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है ।

हवन का प्रथम लाभ वायु की परिशुद्धि है । अग्नि के उत्ताप से यज्ञ स्थान की वायु गर्म और हलकी होर ऊपर का उठती है, इससे चारों ओर से शुद्ध वायु अवकाश-रिक्तता को भरने के लिए खिची हुई आती है तथा अग्नि के ताप से रोगों के कीटाणु मर जाते हैं ।

सूर्य की किरणों में 'प्रकाशिनीरश्मि' होती है । समुद्र-पृष्ठों पर उन तरंगों की लम्बा २९६० ए० यू० होती है । प्रत्येक ८०० गज की ऊँचाई पर इन रश्मि तरंगों की लम्बरई १० ए० यू० घटती है । २९६० ए० यू० से कम लम्बाई की तरंगों वाली रश्मियाँ रोग-कीटाणुओं को नाश करने के लिए विशेष उपयोगी होती है । २९५० ए० यू० लम्बाई की तरंगों वाली रश्मियाँ वायु को ऋण-धनात्मक रूप में परिणत कर देती है, इससे वायु में जीवन और स्वास्थ्यप्रद तत्वों की वृद्धि हो जाती है ।

सूर्य की किरणों में भिन्न-भिन्न रंगों वाली रश्मियाँ होती हैं और उनकी लम्बाइयाँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं तथा रोग-कीटाणुओं पर उसका प्रभाव भी भिन्न-भिन्न होता है । उसका परीक्षण निम्नलिखित रूप में किया गया है ।

बहुत से टीन के कनस्टरों को अन्दर से भिन्न-भिन्न रंगों से रंग दिया गया और उसे एक ऐसे कमरे में रखा गया जहाँ असंख्य मच्छरों का निवास था । सूर्योदय के समय सभी कनस्टरों का मुख ढक दिया गया । एक-एक करके ढक्कन हटाकर देखने से पता चला कि नारंगी रंग के कनस्टरों में मच्छरों की संख्या सबसे कम थी । अग्नि का रंग भी नारंगी ही है, इससे अग्निहोत्र की उपयोगिता और उसका प्रभाव स्पष्ट हो जाता है ।

हवन की अग्नि से उत्पन्न हुई किरणें, भिन्न-भिन्न प्रकार के रोग कीटाणुओं पर पहुँचाने की दूसरी और कोई विधा बन पड़नी सम्भव नहीं । भिन्न-भिन्न घातक प्रभाव डालती है, इसे भी इसी भांति सिद्ध किया जा सकेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक रोगी के कमरे के रोगाणुओं की संख्या प्रथम गिन ली गयी और तदुपरान्त उस कमरे को बन्द कर उसमें हवन किया गया । फिर रोग के कीटाणुओं की गिनती की जाने पर उसकी संख्या बहुत ही कम पाई गयी । इससे भी हवन अग्निहोत्र से रोग-कीटाणुओं को नाश करने की शक्ति का स्पष्ट पता लग जाता है ।

अग्निहोत्रः कुछ जानने योग्य तथ्य

अग्निहोत्र ने केवल भारतीय संस्कृति का मान्य धर्म कृत्य है, वरन् उसके पीछे अनेक वैज्ञानिक तथ्यों का भी समावेश है । इस आधार पर वह जहाँ आत्मोकर्ष का प्रयोजन पूरा करता है, वहाँ उसकी भौतिक प्रतिक्रिया शारीरिक और मानसिक प्रयोजनों की भी पूर्ति करती है । खोया स्वास्थ्य वापस लौटता है । जीवनी शक्ति का चुकता भण्डार फिर से भरता है । रोग कीटाणुओं, विषाणुओं का आक्रमण घटता और निरस्त होता है ।

अग्निहोत्र दिव्य ओषधियों को वायुभूत बना देने की प्रक्रिया है । उसमें गुणकारक वनस्पतियों के अतिरिक्त समिधा रूप में प्रयुक्त सम्मिश्रण अपनी ओषधीय विशेषता के कारण संयुक्त ऊर्जा पैदा करता है, जिसमें दोनों के पृथक-पृथक गुणों का समावेश होता ही है, साथ ही मिश्रण से उत्पन्न ऊर्जा और भी अधिक बलवती होती है । गन्धक और पोटाश के अलग-अलग रहने पर कोई खास प्रतिक्रिया नहीं होती, किन्तु यदि उन दोनों को पीसकर संयुक्त किया जाय तो भड़कने वाली बारूद बन जाती है । गन्धक और पारे को मिलाकर पीसने से कजली बन जाती है । ऐसा ही रासायनिक हेर-फेर समिधाओं और हवन के सम्मिश्रण से होता है । उसके गुण और प्रतिफल ऐसे सामने आते हैं जैसे न समिधाओं में थे और न शाकल्य में । पीला और नीला रंग मिला देने से हरा रंग बन जाता है । यों हरे रंग का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व भी है, पर नीले पीले का सामंजस्य उस तथ्य की पृथक से भी पूर्ति कर देता है ।

यज्ञाग्नि प्रज्वलित करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि समिधायें सूखी प्रज्वलनशील हों । कृमि-कीटकों का समावेश न हो । बहुत दिनों की रखी हुई पुरानी सामग्री या समिधायें सड़ने-घुनने लगती हैं, तब अग्नि प्रज्वलन में उनका भी समावेश हो जाता है । ऐसी दशा में यज्ञ हिंसामय हो जाता है और उसके वास्तविक गुण चले जाते हैं ।

यज्ञ के लिए ओषधिओं का चयन उनकी प्राणावस्था में किया जाना चाहिए । इसके लिए शास्त्रकारों ने उल्लेख किया है कि किस नक्षत्र में कौन ओषधि परिपक्व स्थिति में रसवती होती है । उस अवधि से पूर्व यज्ञ पश्चात् उसकी स्थिति ऐसी नहीं रहती कि यज्ञ में जो गुण बताये गए हैं, उन्हें सही रूप में प्रदर्शित कर सके । प्रौढ़ होने से पूर्व वनस्पतियों की संज्ञा अबोध अविकसित जैसी मानी गई है । उसमें वे गुण पकने नहीं पाते, जिनका कि लाभ मिलना चाहिए । यही बात उनकी जराजीर्ण स्थिति में भी होती है । जब बीज आ जाते हैं, तो वनस्पति का गुण बीजों में खिंच जाता है और डंठल निःसत्व हो जाते हैं । यह बात अन्न फसल में भी है । जब उनकी बालें या भुट्टे कट जाते हैं, तो चारा सूख भी जाता है और गुणहीन हो जाता है । ठीक यही बात वनस्पतियों के सम्बन्ध में है । वे मध्यकाल में ही उपयुक्त रहती हैं । उनका यौवन काल ही ग्राह्य माना गया है । यज्ञ उसी के उपयोग से सार्थक होता है ।

दूरदर्शी चिकित्सक अपने जड़ी-बूटी उद्यान स्वयं लगाते हैं, ताकि उचित समय पर उनका संग्रह किया जा सके । साथ ही यह भी पता चल सके कि एक के बदले तो दूसरी पल्ले नहीं बँध गई । कितनी ही ओषधियाँ ऐसी होती हैं, जिनका बाह्य कलेवर आपस में मिलता-जुलता है । स्वाद और गंध में भी एकता होती है, पर रासायनिक विश्लेषण करने पर पता चलता है कि उनके रासायनिक स्वरूप में भारी अन्तर है । एक में एक प्रकार का गुण है, तो दूसरी में दूसरी का । यह अन्तर तभी समझा या निकाला जा सकता है जब अपना निजी का ओषधि उद्यान हो । उसकी परखी हुई ओषधियाँ ही लगाई जायँ । इसके उपरान्त उसे शुद्ध जल से भली प्रकार धो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिया जाय । अन्यथा पत्तों पर जमा रहने वाले धूलिकण ऐसे हो सकते हैं, जो ओषधि की गुणवत्ता में व्यतिरेक उत्पन्न करे और वह व्यतिरेक लाभ के स्थान पर हानि उत्पन्न करने लगे ।

यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली ओषधियों की छाया में रखा जाय । कड़ी धूप में सुखाने से उनका रस और तैलीय अंश भी वाष्प बनकर उड़ जाता है । इसलिए सतर्कता यह भी रखनी चाहिए कि ओषधि हवा में सूखे, मध्याह्न तीव्र धूप में उसका पाला न पड़े । इसे इस प्रकार कूट लेना चाहिए जिसे जौ-कुट कहा जा सके । बिल्कुल मैदा जैसी पीस लेने पर फिर वह ओषधि स्तर की बन जाती है । उसे सुरक्षित शीशियों में बन्द रखना पड़ता है, अन्यथा गंध बनकर भी उसकी क्षमता हवा में उड़ सकती है और अपेक्षाकृत जल्दी गुणहीन हो सकती है ।

शाकल्य में अन्नों का उपयोग करना उपयुक्त नहीं । नवान्न यज्ञ अलग होते हैं । नई फसल आने पर उसके अधपके बीज 'होला' कहलाते हैं और उनका होली के अवसर पर होलिका यज्ञ के रूप में प्रयोग होता है । यह एक प्रकार से परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन है, जिसके अनुग्रह से हमें यह जीवन सम्पदा प्राप्त हुई । ऐसा यज्ञ दिवाली पर भी हो सकता है । बरसाती-कार्तिकी फसल में भी कई प्रकार के अन्न पकते हैं । ज्वार, बाजरा, मक्का आदि उन्हीं दिनों में उपजते हैं । इसलिए वे अपने उपयुक्त अवसर दिवाली पर काम में आ सकते हैं ।

यज्ञों के लिए आदर्श उपयुक्त समय अमावस्या, पूर्णिमा बताया गया है । अमावस्या को 'दर्श' कहते हैं । पूर्णिमा तो प्रख्यात है । यज्ञ तो कभी भी किया जा सकता है । पर अमावस्या, पूर्णिमा उसके विशेष प्रयोजनों में काम आते हैं ।

अग्नि प्रज्वलन में समिधाओं को इस प्रकार रखा जाना चाहिए कि वेदी या कुण्ड की परिधि में ही वह रहें । अधिक छोटी बड़ी न हों । उनको इस प्रकार चुना जाय कि बीच-बीच में जम जाने की गुंजायश बनी रहे । यह झरोखेदार चुनाई होती है । इसमें समिधायें एक दूसरे से अग्नि पकड़ती हैं और आक्सीजन सब ओर मिलती रहने के कारण वे बुझने नहीं पातीं । लौ नीचे से भले ही चौड़ी हो, पर ऊपर जाकर उसकी स्थिति शंकु जैसी हो जानी चाहिए । समिधाएँ गीली न हों । अनगढ़पन से चिनने पर भी ऐसा हो जाता है कि वे धुआँ देने लगती हैं । धुएँ में लकड़ी के गीलेपन की भाप और अनुपयुक्त भाग का कार्बन होता है । यह यदि यज्ञ धूम्र में मिल जाय तो फिर अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती । अनुपयुक्त तत्व मिल जाने से वह उपयोगी प्रक्रिया निरुपयोगी बन जाती है । इसलिए यज्ञ कार्य में एक कुशल व्यक्ति की जिम्मेदारी इसलिए रहती है कि कोयला बाहर न गिरने दें । लकड़ियों को छितराने न दें । धुएँ की स्थिति बनती हो तो पंखा रखकर उसे ठीक करें । हर हालत में धुआँ रोका जाना चाहिए । जब तक वह रुके न तब तक यजन कृत्य बन्द रखना चाहिए । निर्धूम अग्नि में ही अग्निहोत्र करने का विधान है ।

यज्ञ में यदि कई व्यक्ति सम्मिलित हैं तो उनके द्वारा कुण्ड या वेदी पर अग्नि में डाली हुई सामग्री इतनी होनी चाहिए, जिसे प्रज्वलित अग्नि साथ ही साथ आत्मसात् करती चले । अधिक मात्रा में डाल देने पर वह इकट्ठी हो जाने पर पिण्ड जैसा बन जाती है और फिर प्रज्वलन में कठिनाई उत्पन्न करती है ।

सामान्य अग्निहोत्र सुगन्धित गुणकारी वनौषधियों का ही होता है फसल पर नवान्न की आहुति देने के लिए ही विशेष होलिका यज्ञ होते हैं । उनके पीछे ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का और जन साधारण के प्रति मिलजुलकर बाँट कर खाने का संकल्प रहता है । इसलिए होली, दिवाली के यज्ञों को विशेष मानकर उनमें अन्न की आहुतियाँ दी जाती हैं, पर यह अन्न सभी यज्ञों के लिए उपयुक्त नहीं ।

प्रचलन कुछ ऐसा चल पड़ा है कि शाकल्य में तिल, जौ, चावल मिलाये जाने लगे हैं । कई बार तो ऐसा होता है कि मात्र इन धान्यों से ही समूचा हवन कर लिया जाता है । इस प्रचलन के पीछे यज्ञ के साथ जुड़ी हुई वैज्ञानिकता का समावेश नहीं है ।

देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना के पक्वान्न, मिष्ठान्न आदि अर्पित करने की परम्परा है । कहीं-कहीं लड्डू, खीर आदि भी यजन किये जाते हैं, घी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होमा जाता है और मेवा, फल आदि चढ़ाये जाते हैं । यह देव पूजन हुआ । हो सकता है कि किसी की समझ में यह आया हो कि देवताओं को चढ़ाया गया भोग इन तक नहीं पहुँचता । पुजारी लोग बीच में ही उस पर अपना कब्जा जमा लेते हैं । ऐसी दशा में यह अधिक बुद्धि संगत है कि उनका हवन करके देवताओं को सुगन्ध लाभ लेने दिया जाय और पुजारियों को कमीशन में हाथ साफ कर लेने से रोक दिया जाय ।

जो हो, अग्निहोत्र की शास्त्रीय विधा में वनौषधियों का ही विधान है, उनके साथ शर्करा, और धृत के समावेश की ही छूट है । शर्करा में सबसे सुलभ गुड़ है । उससे आगे फलों की शर्करा खजूर, छुहारा, दाख, किसमिस आदि के रूप में हो सकती है । तेल अंश की पूर्ति नारियल, बादाम, अखरोट आदि से हो जाती है । सामग्री में उन्हें मिलाया जा सकता है या पूर्णाहुति के समय पर उन्हें अन्त में होमा जा सकता है, ताकि सामग्री का जो अंश कच्चा रह गया हो, तो उस चिकनाई के कारण भली प्रकार जल जाय ।

केवल अन्नों का हवन निषिद्ध है । उनमें खाद्य तत्व भर होते हैं । वे रसायन नहीं, जिनके कारण शरीरगत आरोग्य और मनोगत संतुलन को अक्षुण्ण रखने में सहायता मिले । अभाव की स्थिति होने पर उसके दूसरे विकल्प हो सकते हैं । मात्र समिधा प्रज्वलित करके छोटी समिधाओं को शाकल्य की तरह होमा जा सकता है । चन्दन, चूरा, अगर, तगर जैसे काष्ठ भी इस प्रयोजन में काम आ सकते हैं । समिधाओं में हर काष्ठ प्रयुक्त नहीं होता । वट, पीपल, पलाश, आम, छोंकर आदि ही उस प्रयोजन में काम आते हैं । नीम, बबूल आदि को प्रयुक्त नहीं किया जाता । गुड़ और घी मिलाकर उसकी गोलियाँ भी यजन कृत्य में काम आ सकती हैं । यह सस्ते उपचार हैं ताकि सर्वसाधारण को अभाव या अधिक कठिनाई के कारण हाथ न रोकना पड़े ।

दैनिक पंच महायज्ञों में रसोई में बने पहले ग्रासों को चूल्हे के समीप ही हवन कर देने का सुगम प्रचलन था । पिछले दिनों में प्रचलन रहा है । सम्भव है उसी अन्न यजन को अन्यत्र भी काम लेने के उद्देश्य से अन्न का यज्ञ करने की बात सोची गई हो । जो हो, इन दिनों जबकि खाद्य पदार्थों की सर्वत्र कमी है, हमें उस प्रचलन पर नये सिरे से विचार करना चाहिए और किसी यज्ञ में अन्न न जलाकर वनस्पतियों से ही यह प्रयोजन पूरा करना चाहिए ।

***

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञविधा एक सर्वांगपूर्ण उपचार प्रक्रिया

हमारे ऋषि-मुनि उच्चकोटि के वैज्ञानिक थे । पदार्थ विज्ञान से लेकर चेतना जगत के विभिन्न घटकों की गहन शोध उनके द्वारा सम्पन्न होती रही व निष्कर्ष के रूप में उनके प्रतिपादन दर्शन, मनोविज्ञान, चिकित्सा, विज्ञान तथा पदार्थ जगत सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण निर्धारणों के रूप में सामने हैं । परमपूज्य गुरुदेव के बहुआयामी व्यक्तित्व में एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं विलक्षण आयाम उनके वैज्ञानिक रूप का है । देव-संस्कृति के हर पक्ष, प्रतीक-कर्मकाण्ड,मंत्रोच्चार-यजन प्रक्रिया,अग्निहोत्र तथा जीवन यज्ञ को उनने सूक्ष्म प्रज्ञा द्वारा गहराई से विज्ञान सम्मत आधार पर विवेचन कर प्रतिपादित किया । परिणाम "ब्रह्म वर्चस् शोध संस्थान" की स्थापना के रूप में सामने आया । सन् १९७९ की गायत्री-जयंती पर विज्ञान व अध्यात्म की समन्वयात्मक शोध हेतु स्थापित यह संस्थान प्रायः चौदह वर्ष पूरे करने जा रहा है । इस अवधि में इसके द्वारा अन्वेषित प्रतिपादन अगले दिनों एक नये विज्ञान की विधा को जन्म देंगे, इसका बहुप्रतीक्षित आश्वासन इन पंक्तियों के माध्यम से दिया जा रहा है । चेतना की सत्ता एवं क्षमता, श्रद्धा की महत्ता व व्यावहारिक उपादेयता तथा अध्यात्म उपचारों की वैज्ञानिकता के तीन आधारों पर टिकी इस शोध को अब तक की सब शोधों से अलग प्रकार की एवं विलक्षण माना जाना चाहिए । अतीन्द्रिय क्षमताओं से लेकर परलोकवर्ती जीवन, योग साधनाओं से लेकर स्वप्न आदि के प्रयोगादि के क्रम तो विश्व भर में चले हैं किन्तु उनका आधार प्रत्यक्षवादी विज्ञान होने के कारण वे चेतना की गहराई तक नहीं पहुँच पाए । बस, यहीं पर ब्रह्मवर्चस अपनी अद्भुतता का प्रमाण देता है ।

ब्रह्मवर्चस् की शोध में जिस एक पक्ष ने सबका सर्वाधिक ध्यान आकृष्ट किया है, वह है यज्ञ-विज्ञान पर किया जा रहा अनुसंधान, जिसे परमपूज्य गुरुदेव ने एक सर्वांगपूर्ण उपचार पद्धति के रूप में यज्ञोपैथी नाम दिया है । मोटी दृष्टि से यह माना जा सकता है कि यज्ञ में बैठने मात्र से व्यक्ति निरोग हो जाता है, वह यज्ञोपैथी है, जब कि ऐसा नहीं है । यज्ञ-चिकित्सा एक सर्वांगपूर्ण जीवन पद्धति से जन्मी एक उपचार-प्रक्रिया है, जिसे जीवन का अंग बना लेने पर अभूतपूर्व भौतिक एवं आध्यात्मिक लाभ मिलते देखे जाते हैं । यज्ञ-विज्ञान को अपने संपूर्ण रूप में समझा जाना चाहिए । आहार संयम से लेकर तप तितिक्षाएँ, ध्यान यज्ञ से लेकर मंत्रोच्चार की विधि व्यवस्थाएँ, वनौषधि यजन की विशिष्टता से लेकर यज्ञ करने कराने वाले का व्यक्तित्व सभी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । शांतिकुंज का ब्रह्मवर्चस् इस मायने में विलक्षण है कि यज्ञ-प्रक्रिया के सर्वांगपूर्ण पक्षों पर शोध हेतु एक विज्ञान सम्मत विश्व में अकेली यहाँ ही ये प्रयोगशाला है । और कहीं ऐसी अवधारणा विकसित ही नहीं हुई । परम पूज्य गुरुदेव की युग ऋषि के रूप में यह एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन देव संस्कृति को है । अब इसके व्यावहारिक प्रस्तुतीकरण पर आएँ ।

यज्ञोपैथी में अनुसंधान का मूल स्थूल पक्ष है पदार्थ की वह सूक्ष्म सत्ता जो चेतना को प्रभावित करती है । आमतौर से यह समझा जाता है कि वस्तुएँ मात्र सुविधा-साधनों के रूप में प्रयुक्त होती हैं । यह उनका स्थूल उपयोग है, पर जानना यह भी चाहिए कि उनके भीतर सशक्त अदृश्य शक्ति भी काम करती है । परमाणु ऊर्जा उसका सर्वविदित स्वरूप है । इसके अतिरिक्त असंख्यों अदृश्य पक्ष भी है; जिन्हें भाप, बिजली, रेडियो, दूरदर्शन आदि के रूप में काम करते हुए देखा जाता है । इन्हीं में से एक विशिष्ट क्षेत्र है गैस (वाष्प) । गैस मात्र चूल्हे का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काम ही नहीं करती । उस में आक्सीजन जैसे प्राणधारक तत्त्व भी सम्मिलित रहते हैं । सर्वविदित है कि कोई पदार्थ नष्ट नहीं होता । वह ठोस द्रव और वाष्प के रूप में अदलता-बदलता रहता है । वनस्पतियों का आहार और ओषधि की तरह तो उपयोग होता ही है । इसके अतिरिक्त उन्हें गैस रूप में परिणत करके शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन एवं वातावरण परिशोधन के लिए भी काम में लाया जा सकता है । एक शब्द में इसे अग्निहोत्र प्रक्रिया कह सकते हैं । इतिहास साक्षी है कि इस आधार को अपनाकर अभीष्ट उपलब्धियों के प्राप्त करने के अतिरिक्त कारगर परिवर्तनों, अवतरणों उत्पादनों तक की आवश्यकता पूरी की जाती थी । दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ, कृष्ण का सर्वमेध यज्ञ, राम का अश्वमेध यज्ञ किन्हीं महाप्रयोजनों की पूर्ति के लिए ही सम्पन्न हुए थे । विश्वामित्र का वह युग-परिवर्तन यज्ञ प्रख्यात है, जिसकी सुरक्षा का दायित्व राम-लक्ष्मण ने स्वयं उठाया था ।

उस महाविद्या का अब लोप जैसा हो गया है । मात्र कर्मकाण्डों की ही थोथी लकीर पिटती है । ब्रह्मवर्चस् ने उस महान विज्ञान का नये सिरे से शोध कार्य आरम्भ किया है और इस आशा का संचार किया है कि समय की अनेकानेक समस्याओं के निराकरण में भी अग्निहोत्र-विज्ञान का प्रयोग किया जा सकता है ।

अग्निहोत्र द्वारा शरीरगत विकारों का शमन, मानसिक उत्कर्ष में योगदान, वातावरण परिशोधन का परोक्ष प्रयोजन जैसे अनेक उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण कार्य इस विद्या के माध्यम से किस प्रकार बन पड़ते हैं, इसे बहुमूल्य यंत्र-उपकरणों द्वारा यहाँ प्रत्यक्ष स्तर पर प्रस्तुत किया जाता है । पदार्थ की सूक्ष्म शक्ति का चेतना क्षेत्र में किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है और उससे क्या लाभ उठाया जा सकता है, यह इस शोध धारा का उद्देश्य है ।

अग्निहोत्र तब तक पूरा नहीं है, जब तक कि स्वर-विज्ञान, मंत्र-विज्ञान का उसमें समावेश नहीं है । उच्चारित मंत्रों की ध्वनि अग्नि की ज्वाला रूपी ऊर्जा समुच्चय से टकराकर वातावरण में कई गुना विस्तारित हो जाती हैं तब पदार्थ की कारण शक्ति का जागरण होता है । शब्द-शक्ति की प्रचण्डता को शास्त्रों में शब्द-ब्रह्म, नाद-ब्रह्म आदि नामों से इंगित किया गया है । शब्द-वेधी बाणों की चर्चा रही है । स्वर-शास्त्र इसी की एक शाखा है । सामगान से लेकर मंत्रोच्चार की विभिन्न शैलियाँ इसी के अन्तर्गत आती हैं । मंत्र-शक्ति की महिमा का बखान अध्यात्म तत्त्वज्ञान में सुविस्तृत रूप में विवेचित है, विशेषत: यज्ञ-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में ।

शब्द आमतौर से जानकारियों के आदान-प्रदान में प्रयुक्त होता है । उसके द्वारा किसी को प्रसन्न, रुष्ट भी किया जा सकता है । संगीत की मोहकता-मादकता अपने स्तर की है । मेघ-मल्हार दीपक राग आदि में उसका चमत्कार देखा गया है । यह इस सम्बन्ध में जाना गया सामान्य ज्ञान है । बीन की ध्वनि पर साँप लहराते देखे गये हैं । संगीत-प्रयोग से जीव-जन्तुओं की प्रजनन शक्ति बढ़ाई गई है । दुधारू पशुओं ने अधिक दूध दिया है । पेड़- पौधे तेजी के साथ बढ़े हैं । स्नायविक और मानसिक रोगों के निवारण में संगीत का प्रयोग बहुत सफल हुआ है । वेद मंत्रों को जब शक्ति रुप में प्रयुक्त किया जाता है तो वे सामगान के रूप में सस्वर गाये जाते हैं । इस गायन का उद्गाता, यजमान और श्रवण करने वालों पर दिव्य चेतना की वर्षा करता है । जप, कीर्तन, भजन आदि में स्वर-शक्ति के माध्यम से ही विशिष्ट लाभ मिलता है । तांत्रिक व वैदिक मंत्रों की अपनी-अपनी प्रयोजनानुसार विशिष्ट महत्ता है ।

ताल-लय की रिद्म अपना प्रभाव अलग ही छोड़ती है । पुलों पर से गुजरते हुए सैनिक को कदम मिला कर चलने की मनाई कर दी जाती है, क्योंकि उस सामूहिक ताल की शक्ति से वह पुल टूट कर गिर भी सकता है । यह शब्द-शक्ति का असाधारण प्रभाव है । धमाके की आवाज से हृदय की धड़कन बन्द हो सकती है । गर्भपात हो जाना सम्भव है । युद्ध के बिगुल बजने पर सैनिकों में जोश भर जाता है तथा शंख की ध्वनि से उस क्षेत्र के विषाणुओं का तेजी से विनाश होते देखा गया है । वस्तुत: शब्द भी बिजली, भाप-ऊर्जा स्तर की एक समर्थ शक्ति है । इसका किस प्रयोजन के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किस प्रकार क्या उपयोग किया जाये जिससे व्यक्तित्व के विकास और वातावरण के परिशोधन में अभीष्ट लाभ मिल सके तथा वाष्प ऊर्जा व शब्द ऊर्जा का समन्वित प्रभाव डालकर व्यक्ति को कैसे स्वस्थ-समर्थ बनाया जाय यह यज्ञोपैथी में आता है ।

अग्निहोत्र के माध्यम में सूक्ष्मीकृत ओषधि को प्रविष्ट कराने की प्रक्रिया को एक प्रकार से जीवनी शक्ति का अभिवर्धन भी कह सकते हैं । इस आधार पर उस मूल कारण की समाप्ति होती है, जिससे भीतरी बाहरी अंगों में शिथिलता छाई रहती है । आलस्य, भय, घबराहट, धड़कन, अपच जैसे रोगों में अग्निहोत्र में सम्मिलित होना दूर दृष्टि से लाभदायक होता है । बल-वर्धक ओषधियाँ कई लोग सेवन करते हैं, पर उसमें एक कठिनाई रहती है, गरिष्ठता की बहुलता की । वे आसानी से पचती नहीं । पाचन न होने पर सामान्य अन्न-सेवन को भी अपच में बदल देती हैं । आयुर्वेद में कितने ही पौष्टिक पाकों, अवलेहों, चूर्णो, गुटिकाओं का वर्णन है । उनमें प्रयुक्त होने वाली सभी औषधियाँ बलवर्धक होती हैं पर साथ ही गरिष्ठ भी । गरिष्ठता के कारण उनका पाचन ठीक तरह नहीं हो पाता फलतः वह लाभ नहीं मिलता, जो मिलना चाहिए ।

अग्निहोत्र इस कठिनाई को दूर करता है । उसमें पाचन का प्रश्न ही नहीं । सूक्ष्मीभूत होकर जो साँस के माध्यम से रक्त में दौड़ जाय, जीव कोशाओं को प्रभावित करे, उसकी गुणवत्ता असंदिग्ध है । वह युवकों की तरह बाल, वृद्ध, नर, नारी सभी का समान रूप से पोषण करता है ।

अग्निहोत्र-चिकित्सा में विभिन्न रोगों के लिए विभिन्न औषधियों का उपचार भी है । अच्छाई यह है कि उन्हें न मुँह से खाना और न पेट से पचाना पड़ता है । इंजेक्शन की तरह सुई चुभो कर रक्त में सम्मिश्रित करना पड़ता वरन् अति सरलता का एक ऐसा मार्ग मिल जाता है, जिसमें रोगी को पता भी नहीं चलता और ओषधि वायुभूत होकर शरीर में प्रवेश कर जाती है । अपना कारगर काम करती और असीमित प्रभाव उत्पन्न करती है ।

भारतीय धर्मसंस्कृति में प्रत्येक घरेलू संस्कार और सामूहिक पर्व त्यौहार के अवसर पर अग्निहोत्र करने का निर्देशन दिया गया है । इसके तीन प्रयोजन हैं । एक तो यह कि किसी या किन्हीं के द्वारा किये गये प्रयास का उपस्थित सभी लोग लाभ उठायें दूसरा यह है उसकी चर्चा जहाँ तक पहुँचे, वहाँ तक इस विज्ञान की उपयोगिता तथा जानकारी बढ़े । इसे सीमित को असीम बनाना भी कह सकते हैं । तीसरा यह कि प्रत्येक संस्कार पर्व में शरीर मन व आत्मसत्ता को प्रभावित करने वाले जीन्स तक पर प्रभाव डालने वाले वैज्ञानिक प्रयोग सम्पन्न हों ।

सामान्यतः अग्निहोत्र शारीरिक और मानसिक आधि-व्याधियों का निवारक-निरोधक है । वह इन दोनों ही क्षेत्रों की क्षमता में अभिवृद्धि करता है, फलतः आरोग्य और मानसिक बल बढ़ने का उभयपक्षीय सुयोग बनाता है । इसे घरेलू उपचार भी कह सकते हैं । साथ ही रोग-निवारक बलवर्धक सामयिक सूत्र भी । इतने कम खर्चे में इतने अधिक लोगों को लाभ पहुँचाने की दूसरी और कोई विधा बन पड़नी सम्भव नहीं ।

अग्निहोत्र एक विज्ञान है । उसमें अग्नि को विशेष साधनों से विशिष्ट विधिपूर्वक इस तरह प्रज्वलित किया जाता है, जिसमें वह मात्र चूल्हा जलाने की अग्नि न रहे । ऐसी विशिष्टता बने, जो आरोग्य समस्या के समस्त पक्षों पर अपना चमत्कारी प्रभाव दिखा सके । इसलिए इसका लाभ देखने वालों को पन्सारी की दुकान से कूड़ा-करकट खरीद कर उसे आग में देने वाली उतावली मात्र से किसी बड़े लाभ की आशा न करनी चाहिए वरन् प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं की उत्कृष्टता का समुचित ध्यान रखना चाहिए । यह कार्य जिस-तिस के हाथों न सौंप कर ऐसे लोगों द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिए जो तद्विषयक श्रद्धा और सतर्कता को भली प्रकार अपनाये रह सकें । इसमें उस कुशल चिकित्सक की दक्षता होनी चाहिए, जो रस, भस्में, रसायनें बनाने वालों द्वारा बरती जाती है । मोटे रूप में यह समझा जा सकता है कि अग्निहोत्र एक समग्र चिकित्सा-विज्ञान है, जिसमें शारीरिक मानसिक सामूहिक आदि रोगों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का निराकरण और शक्तिमत्ता का अभिवर्धन हो सकता है । अग्निहोत्र के साथ-साथ स्वच्छता का बहुमुखी प्रयोजन जुड़ा हुआ है ।

यज्ञ इससे आगे की बात है । उसकी अन्तः करण और अन्तर्मन तक, सुपरमन तक पहुँच है । वह व्यक्ति की विचारणा, आकांक्षा, भावना, श्रद्धा, निष्ठा, प्रज्ञा को प्रभावित करता है, उनका परिशोधन और अभिवर्धन भी । यज्ञ के संबंध में उसकी महायज्ञ, अवधारणा का विवेचन किया जा चुका है । यज्ञ वस्तुतः ''डीप साइकॉलाजी'' की एक महत्वपूर्ण विधा मानी जा सकती है, जिसमें मनसत्ता से लेकर संपूर्ण व्यक्तित्व के विभिन्न घटकों को इस माध्यम से अनुप्राणित-प्रभावित किया जाता है कि व्यष्टि व समष्टि सत्ता में तादात्म्य स्थापित हो सके । साथ ही व्यक्तित्व के परिष्कार, ग्रन्थियों के अनावरण व गहराई तक प्रवेश करने वाली आध्यात्मिक मनश्चिकित्सा का प्रभाव ऐसा कुछ पड़ सके कि आत्मबल संपन्न व्यक्ति तैयार किये जा सकें ।

यज्ञोपैथी पर चल रही वैज्ञानिक शोध इस संबंध में ब्रह्मवर्चस् का एक अभिनव निर्धारण है कि इस संदर्भ में पहले कभी इस स्तर का चिंतन किया ही नहीं गया । मोटी दृष्टि से यज्ञ का भौतिकीय व रसायन विश्लेषण वाला पक्ष यहाँ आने वालों को प्रधान दिखाई देता है । शोध-प्रयोगशाला में गैस, लिक्विड क्रोमोटोग्राफी से लेकर थिनलेयर क्रोमोटोग्राफी, ऊँची ऑप्टिकल क्षमता वाले स्टीरियो माइक्रोस्कोप से लेकर यज्ञ-धूम का शरीर, मन, वातावरण, जीवाणु पर प्रभाव दर्शाने वाले अनेक उपकरण हैं किन्तु इनका उपयोग सीमित ही है । ये केवल यह बता पाते हैं कि यज्ञ का अवलम्बन लेने वाले की पूर्व में क्या स्थिति थी व बाद में क्या परिवर्तन हुए ? विश्लेषण इसी आधार पर किया जा सकना संभव है किन्तु यही समग्र नहीं है । अग्निहोत्र व यज्ञ करने से, यज्ञीय जीवन को व्यवहार में उतारने से क्या व्यक्तित्व का कायाकल्प संभव है ? व्यक्ति के चिंतन आकांक्षाओं एवं आस्थाओं में परिवर्तन लाना संभव है, यही शोध का यज्ञोपैथी के माध्यम से लक्ष्य है ।

यज्ञोपैथी का ज्ञान-विज्ञान पक्ष

यज्ञ का सूक्ष्म विज्ञान किसी भी अणु, परमाणु और विराट् के रहस्यों से कम आश्चर्यजनक नहीं है । आधुनिक चिकित्सा पद्धति में यद्यपि दवा की टिकिया देकर रोग निदान का प्रतिशत सर्वाधिक है, तथापि रक्त में सीधी ओषधि पहुँचाने की इंजेक्शन प्रणाली को ज्यादा प्रभावशाली माना जाता है । यह एक विलक्षण सत्य है कि शरीर के क्रिया व्यापार को चलाने वाली वह रस-रक्त-स्राव सूक्ष्मतर प्राण चेतना प्रवाहित होती है । स्पष्ट है यदि विहीन नाडियाँ होती हैं जिनमें इनसे भी कोई ऐसी पद्धति हो जो स्नायु संस्थान को प्रभावित कर सकती हो तो उसे इंजेक्शन चिकित्सा से भी अधिक कारगर होना चाहिए । भारतीय आयुर्वेदाचार्यों, जैसे धन्वन्तरि, चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि सभी ने यज्ञ- चकित्सा को इसी कोटि का माना है । ऋषियों ने तो उसे आत्मोत्कर्ष का अमोघ साधन ही माना है, पर यदि उतनी गहराई में न जाएँ, मात्र भौतिक स्तर तक ही कल्पना करें तो यज्ञ की गरिमा अपार है । यज्ञ आरोग्य की दृष्टि से सर्वोपरि सफल चिकित्सा प्रणाली कही जा सकती है । यज्ञ 'आप्तकाम' कहे गये हैं । बंध्यात्व के निवारण से लेकर राजयक्ष्मा जैसे कठिन रोगों के निवारण में यज्ञ का असाधारण और समस्या रहित उपचार होता रहा है ।

यज्ञ के माध्यम से औषधि के गुणों को अत्यधिक सूक्ष्म बना दिया जाता है । इस सूक्ष्मता की शक्ति का कुछ आभास प्राप्त करने के लिये होम्योपैथी के औषधि विज्ञान की प्रक्रिया को देखा जा सकता है । उसका आविष्कार ही इस आधार पर हुआ है कि अधिक सूक्ष्म होने पर औषधि की शक्ति अनेक गुना अधिक बढ़ जाती है ।

हवन में स्वास्थ्य संवर्धन और रोग निवारण की जो अद्भुत शक्ति है उसका कारण पदार्थों को वाय-भूत बना कर उसका लाभ लेना ही है । वायुभूत बनी हुई औषधियाँ जितना काम करती हैं, उतना वे खाने-पीने से नहीं कर सकती । तपेदिक आदि रोगों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के रोगियों को डाक्टर लोग भुवाली, शिमला, मसूरी जैसे अच्छी वायु के स्थानों में जाकर रहने की सलाह देते हैं । कई अच्छे अस्पताल भी वहाँ बने हैं । डाक्टरों का कहना यह है कि ओषधि सेवन के साथ-साथ यदि उत्तम आक्सीजन मिली वायु सेवन की सुविधा हो तो रोग अच्छा होने में बहुत सहायता मिलेगी । निस्संदेह प्राण वायु-आक्सीजन भी एक दवा ही है । प्रातःकाल जब वायु में आक्सीजन की मात्रा अधिक होती है, टहलने जाना आरोग्य वर्धक माना जाता है । वायु में लाभदायक तत्व मिले हों तो उसकी उपयोगिता का लाभ स्वतः ही मिलेगा । हवन द्वारा यही प्रयोजन पूरा किया जाता है । उपयोगी औषधियों को वायुभूत बनाया जाय और उसका लाभ उस वातावरण के संपर्क में आने वालों को मिले, आरोग्य की दृष्टि से हवन का यह लाभ बहुत ही महत्वपूर्ण है । पौष्टिक पदार्थों के बारे में भी यही बात है । दुर्बल शरीर को बलवान बनाने के लिये पौष्टिक आहार की आवश्यकता अनुभव की जाती है, पर पौष्टिक पदार्थों को कमजोर देह और कमजोर पेट वाला व्यक्ति हजम कैसे करे यह समस्या सामने आती है । दुर्बल या रोगी व्यक्ति की पाचन क्रिया मंद हो जाती है । साधारण हलका भोजन थोड़ी मात्रा में लेने पर भी जब अपच, दस्त, उल्टी आदि की शिकायत शुरू हो जाती है तो अभीष्ट मात्रा में पौष्टिक भोजन कैसे हजम हो ? इसका सरल साधन हवन है । अग्निहोत्र में मेवा पदार्थ हवन किये जायें और उन्हें नाक,मुख या रोम कूपों द्वारा ग्रहण किया जाय तो वे शरीर में आसानी से प्रवेश कर सकते हैं और वायुभूत होने के कारण अपनी सुगमता के लिये आधार पर लाभदायक भी अधिक हो सकते हैं ।

यज्ञ का वैज्ञानिक आधार भी यही है कि अग्नि अपने में जलाई गई वस्तुओं को करोड़ों गुना अधिक सूक्ष्म बनाकर वायु में फैला देती है । एक छोटे से प्रयोग द्वारा स्वयं ही इस तथ्य को जाना और अनुभव किया जा सकता है । एक मिर्च उतनी तीखी नहीं होती, जितनी कि पीसने पर हो जाती है । पीसी हुई मिर्च का स्वाद या प्रभाव भी थोड़े ही लोगों पर होता है किन्तु उसे जला दिया जाय तो आसपास के दसियों फुट की परिधि में उसका असर फैल जाता है । वैज्ञानिक स्तर पर अग्नि की सूक्ष्मीकरण सामर्थ्य फ्रांस के डाक्टर हॉफकिन तथा मद्रास के डा. कर्नल सिंग ने प्रयोगों द्वारा प्रमाणित की है । उनका कहना है कि आग में घी जलाने से कोसों दूर के कीटाणु मर जाते हैं । घी, चावल, केसर आदि से धुआँ के विष का नाश हो जाता है और वायु में घुले जहर वर्षा के साथ जमीन में चले जाते हैं तथा खाद बनकर पृथ्वी की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं ।

हवन की गैस सड़न को रोकती है । शरीर के भीतर या बाहर जिन छोटे बड़े जख्मों के कारण पायेरिया, कोलाइटिस, तपेदिक, दमा, नासूर, कैंसर, संग्रहणी जुकाम आदि रोग होते हैं, उन्हें सुखाने के लिए हवन की गैस कितनी अधिक उपयोगी सिद्ध होती है, इसका प्रयोग कोई भी करके देख सकता है ।

हवन की वायु जहाँ रोग निवारक है वहाँ रोग निरोधक भी है । बीमारियों से बचने के लिए हैजा, चेचक, टी. वी. आदि के टीके लिये जाते हैं । इन टीकों से हलके रूप में वही रोग पैदा किया जाता है जिसके प्रतिरोध में टीका बना था । इस प्रकार पहले हलका रोग उत्पन्न करेंगे ताकि भविष्य में बड़े रोगों की चढ़ाई न हो । यह बुद्धिमानी की बात नहीं है । डाकू से लड़ने के लिये चोर को घर में बसा लेना यह तात्कालिक लाभ की दृष्टि से भले ही उपयोगी हो, पर दूरदर्शिता नहीं है, क्योंकि डाकू न आवे तो भी चोर तो अवसर मिलने पर नुकसान कर ही सकता है । ऐलोपैथिक रोग निवारक टीकों की अपेक्षा हवन की वायु अधिक विश्वसनीय और हानि रहित है । यज्ञ की ऊष्मा शरीर में प्रवेश कर केवल रोग जीवाणुओं को ही मारती है, स्वस्थ कोषों पर उसका तनिक भी बुरा प्रभाव नहीं पड़ता वरन् पुष्टि ही होती है । यह एक विज्ञान सम्मत प्रक्रिया है ।

शारीरिक रोगों के निवारण के अतिरिक्त हवन की वायु में मानसिक रोगों के निवारण की अपूर्व क्षमता है । अभी तक केवल पागलपन और विक्षिप्तता के ही इलाज ऐलोपैथी में निकले हैं । पूर्ण पागलों की अपेक्षा वर्तमान पागलों, अर्धविक्षिप्तों की संख्या शारीरिक रोगियों से भी अधिक है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनोविकारों से ग्रसित लोग अपने लिये तथा दूसरों के लिए अनेक समस्यायें पैदा करते हैं। शारीरिक रोगों की तो दवा-दारू भी है, पर मनोविकारों की कोई चिकित्सा अभी तक नहीं निकल सकी है । फलस्वरूप सनक, उद्वेग, आवेश, संदेह, कामुकता, अहंकार, अविश्वास, निराशा, आलस्य, विस्मृति आदि अनेक मनोविकारों से ग्रसित लोग स्वयं उद्विग्न रहते हैं, कलह करते हैं और संबन्धित सभी लोगों को खिन्न बनाये रहते हैं । इतना ही नहीं ऐसे व्यक्ति दूसरों की नजरों में गिर जाते हैं और सहयोग सद्भाव खो बैठते हैं । फलस्वरूप उनकी प्रगति ही नहीं रुक जाती, बदनामी और हानि भी उठानी पड़ती है । इन सभी मनोविकारों की एक मात्र चिकित्सा हवन है । हवन सामग्री की सुगन्ध के साथ-साथ दिव्य वेद मंत्रों के प्रभावशाली कम्पन मस्तिष्क स्थलों को छूते और प्रभावित करते हैं । फलतः मनोविकारों के निवारण में उनका बहुत प्रभाव पड़ता है । भारतीय संस्कृति में जन्म से लेकर मरण तक के षोडश संस्कारों में हवन को अनिवार्य रूप से जोड़ा गया है ताकि उसके प्रभाव से मनोविकारों की जड़ ही कटती रहें । मनुस्मृति में यज्ञ के संपर्क से ब्राह्मणत्व के उदय की बात इसीलिए कही गई है कि हवन की ऊष्मा से संपर्क स्थापित करने वाला व्यक्ति विचारवान और चरित्रवान दोनों ही विशेषताओं से युक्त बनता है । ऐसे ही लोगों को ब्राह्मण कहते हैं ।

रोग निरोधक और निवारक गुणों के अतिरिक्त यज्ञ-वायु में स्वास्थ्य संवर्धन का भी गुण है । जो पौष्टिक पदार्थ एवं ओषधि तत्व शरीर में प्रवेश करके रक्त में मिलते हैं वे जीवनी शक्ति बढ़ाने में सहायता करते हैं और जो कमी किसी विशेष अंग की शक्ति में आ गई थी उसे पूरा करते हैं । नपुंसकता, मधु-मेह, रक्तचाप, अनिद्रा, नाड़ी संस्थान की दुर्बलता आदि रोगों में हवन की निकटता का आश्चर्यजनक लाभ होता है । संतान उत्पन्न करने की क्षमता बढ़ती है । प्राचीन काल में पुत्रेष्टि यज्ञ इसी प्रयोजन के लिए होते थे । गर्भवती स्त्रियाँ हवन की समीपता का लाभ उत्तम संतान के रूप में देख सकती हैं और बन्ध्यात्वदोष दूर हो सकता है ।

यज्ञ-विज्ञान इन दिनों तो ऐसे ही धार्मिक कर्मकाण्ड प्रक्रिया तक सीमित रह गया है, पर उसमें उपयोगी पदार्थों को अग्नि के माध्यम से सूक्ष्मीकरण का रहस्यमय विज्ञान भी जुड़ा हुआ है, इसे बहुत कम लोग जानते हैं । थोड़ी सी हवन-सामग्री यों अपने स्थूल रूप में जरा सी जगह घेरती है और तनिक सा प्रभाव उत्पन्न करती है, पर जब वायु-भूत होकर सुदूर क्षेत्र में विस्तृत होती है तो उस परिधि में आने वाले सभी प्राणी और पदार्थ प्रभावित होते हैं । स्वल्प साधनों को अधिक शक्तिशाली और अधिक विस्तृत बना देने का प्रयोग यज्ञ -प्रक्रिया में किया जाता है । फलतः उसके प्रभाव क्षेत्र में आने वालों को शारीरिक व्याधियों से ही नहीं मानसिक आधियों से भी छुटकारा पाने का अवसर मिलता है ।

शरीर के अवयवों को प्रभावित करने के लिए औषधियों का लेप, खाना पीना या सुई लेने से उपचार हो सकता है । किन्तु मानसिक रोगों एवं मनोविकारों की निवृत्ति के लिए उपचार सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो मस्तिष्कीय कोषों तक पहुँचने और अपना प्रभाव उत्पन्न करने में समर्थ हो सके । यह कार्य यज्ञ से उत्पन्न हुई शक्तिशाली ऊर्जा से सम्पन्न हो सकता है । वह नासिका द्वारा, रोमकूपों एवं अन्यान्य छिद्रों द्वारा शरीर में प्रवेश करती है । विशेषतया मस्तिष्क के भीतरी कोषाणुओं तक प्रभाव पहुँचाने के लिये नासिका द्वारा खींची हुई वायु ही काम कर सकती है । यदि उसमें यज्ञ-प्रक्रिया द्वारा प्रभावशाली ओषधियों और मंत्र ध्वनियों का समावेश किया गया है तो उनका समन्वय विशेष शक्तिशाली बनेगा और मानसिक विकृतियों के निराकरण में अति महत्त्वपूर्ण उपचार की भूमिका सम्पन्न करेगा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्मीकरण पर आधारित यज्ञोपचार पद्धति

एक समय था जब विराट् को आश्चर्य भरी दृष्टि से देखा जाया करता था । किन्तु भौतिक विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ सूक्ष्मतम के बारे में विराट् से भी विलक्षण जानकारियाँ उपलब्ध हुईं । ''बिन्दु में सिन्धु'' और ''पिण्ड में ब्रह्माण्ड'' की कल्पना एक सचाई बनकर प्रस्तुत हो रही है ।

आर्गेनन सूत्र २६९,२७० में होम्यौपैथी चिकित्सा के आविष्कारक डा० हैनीमेन ने बताया है कि हौम्योपैथी औषधियों के निर्माण का सिद्वान्त यह है कि उनके अन्दर जो अदृश्य सूक्ष्म महाशक्ति है उसे जगाया जाये ताकि वह अदृश्य रोग शक्ति से ग्रसित जीवन शक्ति (वायटैलिटी) को रोग मुक्त करने में सहायक हो सके ।

पदार्थों के अन्दर यह जो अदृश्य सूक्ष्म शक्ति है, वह उसकी चेतना और संस्कार हैं । हम नहीं जानते पर यह सत्य है कि आज का रोग हमारे कल के मानसिक विकार का ही परिणाम होता है । रोग को ओषधियाँ तब तक ठीक नहीं कर सकतीं जब तक उन विकारों को नष्ट न किया जाये । ओषधियाँ तेजी से तात्कालिक आराम पहुँचा सकती हैं पर उनके स्थूल गुण रोग को ही दबा सकते हैं । दबे हुये दोष फिर नये रोगों के रूप में फूट पड़ते हैं और जब तक रोग शारीरिक कष्ट के रूप में ऊपर उभर कर न आयें तब तक मनुष्य के मन में अशान्ति उत्पन्न किया करते हैं ।

हौम्योपैथी के डाक्टरों ने विभिन्न पदार्थों के गुणों का विभिन्न देश, जाति, वर्ण और आयु के लोगों में प्रयोग किया और उनके गुणों का अध्ययन कर उन्हें ओषधि के रूप में प्रस्तुत किया । यह एक जटिल प्रणाली है तो भी उन ओषधियों के निर्माण की जो विधि और प्रभाव है उससे सूक्ष्म संस्कारों की महत्ता ही प्रतिपादित होती है ।

औरम मिटैलिकम, एनाकार्डियम, प्लैटिना, इग्नेशिया आदि औषधियाँ कई तरह के मानसिक लक्षण भेद की प्रतीक हैं । उसकी सूक्ष्म और नाभिकीय शक्तियों को जाग्रत करने के लिये होम्योपैथी ओषधि निर्माताओं को दीर्घ कालीन परिश्रम करना पड़ता है ।

उदाहरण के लिये औरम मेटैलिकम बनाते समय सोने का टुकड़ा लेते हैं । उसे अच्छी तरह खरल करके बहुत बारीक चूर्ण कर लेते हैं । चूर्ण बनाते समय उसमें दूध और शक्कर मिलाकर उसकी अच्छी तरह घोटाई की जाती है । उस विचूर्णित स्वर्ण की एक रत्ती मात्रा को ४०० बूँदें परिश्रत जल (डिस्टिल्ड वाटर) तथा १०० बूँदें रेक्टीफाइड अल्कोहल के साथ डालकर मिला लेते हैं । यह एक शक्ति पोटैंसी की औषधि हुई ।

तीनों वस्तुओं के घोल में १ रत्ती सोना था। अब उस पूरे घोल का कुल १ बूँद लिया । उसमें स्वर्ण की मात्रा १ रत्ती के सौगुने से भी कम होगी । उस एक बूँद में १०० बूँद अल्कोहल मिलाकर फिर हिलाते हैं । यह २ शक्ति पोटैंसी की औषधि हुई । इसमें से एक बूँद ओषधि १०० बूँद अल्कोहल लेकर फिर मिलाया यह तीन पोटेंसी हुई । इसी प्रकार ओषधि की सूक्ष्म शक्ति को कई लाख पोटैंसी तक ले जाते हैं और जब यह औषधि किसी रोगी व्यक्ति को दी जाती है तो उसमें तीव्र हलचल उत्पन्न कर देती है । पिछले दोषों को उभार देती है जैसे-जैसे रोग के लक्षण उभरते रहते हैं । तब तक अनुभूत औषधियाँ दी जाती हैं । समय तो लगता है पर उससे जीवनी शक्ति पर लगे जन्म-जन्मान्तरों के दोषों का शमन हो जाता है, ऐसा हर हौम्योपैथी चिकित्सक का विश्वास है ।

किसी भी होम्योपैथिक दवा के निर्माण को गणितीय ढंग से यदि देखा जाय, तो विस्मयजनक तथ्य हमारे सामने आते हैं । उदाहरण के लिए सल्फर-३० नामक ओषधि की निर्माण-प्रक्रिया पर विचार करें । इसके लिए एक ग्राम सल्फर (गन्धक) लिया जाता है और उसे ९९ ग्राम दुग्ध-शर्करा (मिल्क-सुगर) में घोटा जाता है । इससे बने चूर्ण को सल्फर-१ कहा जाता है । इस 'सल्फर-१' की मात्रा को पुनः ९९ ग्राम दुग्ध शर्करा (मिल्क-सुगर'') में घोंटने पर बनता है । 'सल्फर-२' तथा सल्फर-२ की एक ग्राम मात्रा को ९९ ग्राम दुग्ध-शर्करा में घोंटने पर बना चूर्ण ' 'सल्फर-३'' कहा जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'सल्फर-३' की एक ग्राम मात्रा की तब ८७ प्रतिशत अल्कोहल वाले ९९ ग्राम में अनेक बार में घोला जाता है अर्थात् थोड़े-थोड़े द्रव से एक ग्राम सल्फर-३ को क्रमशः रसार्द्र करते जाते व भली-भाँति घोंटते जाते हैं, इस प्रकार एक ग्राम 'सल्फर-३' को पूरे ९९ ग्राम अलकोहल-द्रव में कई चरणों में घोलते-घोंटते हैं । इस प्रक्रिया से तैयार 'टिन्चर' को सल्फर '४' कहते हैं । इस टिंक्चर की १ ग्राम मात्रा पुनः ८७ प्रतिशत अल्कोहल की मात्रा वाले ९९ ग्राम में भली-भाँति उपरोक्त विधि से मिश्रित की जाती है । इससे प्राप्त द्रव हुआ, सल्फर ५, । यही प्रक्रिया पुनः दुहराने पर 'सल्फर-६' तथा इसी तरह अगले क्रमांक का द्रव प्राप्त किया जाता है । 'सल्फर-६' को जब २४ बार और इसी क्रिया से गुजारा जाएगा, तब जाकर 'सल्फर-३०' प्राप्त होगा । मात्र 'सल्फर-३०' ही नहीं, लगभग सभी होम्योपैथिक दवाओं को तैयार करने की प्रक्रिया मूलतः ऐसी ही कुछ रहती है । जितनी अधिक 'पोटैन्सी' की दवा होगी, उसमें उतनी ही सूक्ष्मता होगी ।

इस प्रक्रिया को भौतिकी के सिद्धान्त पर परखने पर विस्मयकारक तथ्य उभरते हैं । हाइड्रोजन का परमाणु सर्वाधिक हल्का होता है और हाइड्रोजन की १ ग्राम मात्रा में हाइड्रोजन-अणुओं की संख्या होती है, ६.०२×(१०) २३ अर्थात् ६.०२ में १० की २३ घात का गुणा करने पर प्राप्त संख्या अर्थात् (६लाख २ सौ-शंख यूरेनियम का परमाणु हाइड्रोजन से २३८ गुना भारी होता है, अतः जितने परमाणु एक ग्राम हाइड्रोजन में होते हैं, उतने ही परमाणु २३८ ग्राम यूरेनियम में होंगे । गन्धक हाइड्रोजन से ३२ गुना भारी होता है, अतः ३२ ग्राम गन्धक में भी उतने ही परमाणु होंगे । ६.०२×१० (२३) यानी ६ लाख २ सौ शंख । सल्फर की १ ग्राम मात्रा में परमाणुओं की संख्या होगी इसका ३२ वाँ हिस्सा अर्थात् १८८१२।। शंख (१८ हजार ८ सौ साढ़े बारह शंख) । इतने ही अणु सल्फर-१ की १०० ग्राम मात्रा में होंगे, क्योंकि १०० ग्राम सल्फर-१ में सल्फर १ ग्राम ही विद्यमान रहता है, शेष तो दुग्ध -शर्करा (मिल्क-सुगर) होती है । सल्फर-२ की १० हजार ग्राम मात्रा में सल्फर-३० की (१००) ३० (सौ घाते तीस) ग्राम मात्रा में इतने ही अणु होंगे और सल्फर ३ की १० लाख ग्राम मात्रा में । इतने ही अणु होंगे, जिसका अर्थ हुआ कि १ ग्राम सल्फर-३० में (६ लाख २ सौ शंख) ३२ × (१ ००) ३० परमाणु ही गन्धक के हो सकते हैं किन्तु परमाणु का परमाणु-रूप में ही विभाजन असम्भव है । इसलिए मात्र यह कहा जा सकता है कि ५× (१०) ३७ शंख अर्थात् ५० शंख ग्राम सल्फर-३० में ही गन्धक का १ परमाणु विद्यमान होगा । शेष तो अलकोहल ही प्रमुख है । इसे यों कहा जा सकता है कि सल्फर-३० रासायनिक दृष्टि से तो शुद्ध 'अलकोहल' ही है, क्योंकि ५० शंख शंख ग्राम में गन्धक का मात्र १ परमाणु होना नगण्य ही है । ५० शंख शंख खुराक(प्रति ग्राम खुराक के हिसाब से) यदि सल्फर-३० की रोगियों को दी जाएँ, तो उसमें से किसी एक खुराक में गन्धक का एक परमाणु विद्यमान होगा । शेष किसी खुराक में नहीं । निष्कर्ष यही निकला कि 'सल्फर-३०' रासायनिक दृष्टि से विशुद्ध अलकोहल है । यही बात कार्बन-३० या कि ३० पोटैन्सी वाली किसी अन्य दवा के बारे में कही जा सकती है । फिर अधिक पोटैन्सी वाली औषधियों का तो कहना ही क्या ?

होम्योपैथी के जनक डा० हनीमैन ने अपने लेखों अनुभवों द्वारा इस बात को कहा कि होम्योपैथिक औषधियों की निर्माण-प्रक्रिया, औषधियों की 'स्पिरिट' को प्रखर एवं सक्रिय बना देती है । उधर आज आधुनिक भौतिकीविद् भी इसी निष्कर्ष पर पहुँच रहे हैं कि 'मेटर' की कोई मूलभूत सत्ता 'मेटर' रूप में नहीं है, वह ऊर्जा या अज्ञात तरंगों का ही रूपान्तरण मात्र है । क्या ये तरंगें चेतना-तरंगें है ? क्या 'मेटर' में चेतना निहित रहती है ? ये प्रश्न आज वैज्ञानिकों के सामने ज्वलन्त हैं ।

आयुर्वेद में रसायनों के अनेकों पुट लगाने और लगातार बहुत समय तक घोटने की विधि-व्यवस्था इसी सिद्धान्त के आधार पर की गई है कि ओषधि के गठित परमाणुओं का अधिकाधिक विघटन हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सके और उसकी मूल शक्ति का चिकित्सा प्रयोजन के लिए लाभ उठाया जा सके कारण स्पष्ट है, कोई पदार्थ अपने स्थूल रूप में जितना शक्तिशाली होता है, उसकी अपेक्षा वह सूक्ष्म रूप में अधिक प्रभावशाली एवं विस्तृत होता है । आयुर्वेदिक ग्रन्थों में लिखा है कि "बादाम में साबित खाने की अपेक्षा पीसकर खाने में अधिक गुण हैं । पीसने की अपेक्षा घिसकर खाना अधिक लाभदायक है ।" कारण स्पष्ट है जो वस्तु जितनी बारीक होती जाती है-सूक्ष्म बनती जाती है उतने ही उसके गुण बढ़ते जाते हैं । रोटी के ग्रास यों ही अधकुचले निगल लिये जायें तो वह भोजन उतना लाभ दायक न होगा जितना कि खूब चबा-चबाकर बारीक करके खाया हुआ भोजन । सोने या चाँदी का टुकड़ा किसी को खिलाया जाय तो उससे किसी लाभ की आशा नहीं किन्तु यदि वही सोने या चांदी को सूक्ष्म करके भस्म या बर्क बनाकर खिलाये जाते हैं तो उनका रोग निवारक एवं बल वर्धक प्रभाव पड़ता है । ओषधि विद्या के ज्ञाता जानते हैं कि किसी ओषधि को जितना बारीक किया जाता है, अधिक घोटा जाता है उतनी ही वह अधिक गुणकारी बनती जाती है कारण यही है कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म का गुण विशेष होता है । आयुर्वेद में चौंसठ प्रहरा पीपल का बहुत गुण माना गया है, वह अनुपान-भेद से सौ रोगों को अच्छा करती है, पीपल मामूली सी ओषधि है, साधारण गरम मसाले में काम आती है, पर उसे लगातार बिना रुके आठ दिन तक घोटते रहा जायगा तो उसके कण बहुत सूक्ष्म हो जाते हैं और उसी अनुपात से उसकी शक्ति भी बढ़ जाती है । डीशेन की प्रख्यात दवाएँ अपेक्षाकृत अधिक गुणकारी होती हैं । कारण यह है कि उनकी अधिकतम पिसाई-घुटाई की जाती है । ताकि उस दवा की सूक्ष्म शक्ति का पूरा विकास हो सके । होम्योपैथी में ओषधि निर्माण विद्या का आधार यही है । वे दवाओं का इतना सूक्ष्मीकरण करते हैं कि नगण्य-सी दवा इतनी प्रभावशाली बन जाती है कि एक खुराक का असर महीनों बना रहे । ऐलोपैथी में भी इन्जेक्शन निर्माण का आधार यही है कि ओषधि को इतनी सूक्ष्म स्थिति तक पहुँचा दिया जाता है कि उसे रक्त में पहुँचते ही समस्त शरीर में फैल जाने में विलम्ब न लगे । यज्ञ में भी हवि सामग्री को अग्नि द्वारा स्थूल से सूक्ष्म बनाया जाता है, फलस्वरूप उसकी शक्ति एवं उपयोगिता भी बहुत बढ़ जाती है ।

वजन की दृष्टि से कौन वस्तु भारी और कौन हलकी है, इस आधार पर उनकी गरिमा का मूल्यांकन नहीं हो सकता । चट्टान बहुत भारी है किन्तु उसका मूल्य हीरे के एक छोटे से टुकड़े के बराबर नहीं होता । सबसे हलका हाइड्रोजन अणु-अन्य भारी समझे जाने वाले अणुओं की तुलना में कम नहीं अधिक ही महत्व प्राप्त कर रहा है ।

ओषधि में सूक्ष्म मात्रा के महत्व प्रतिपादनकर्ता जर्मनी के चिकित्सा शास्त्री हैनिमैन ने जब अपने सिद्धान्त प्रकाशित किये तो तत्कालिक शरीर विज्ञानियों ने उसका विरोध किया और उपहास उडाया । सर जेम्स वाइ, सिम्पसन ने "होमियोपैथी इट्स टेनेन्ट्स् एण्ड टेन्डेन्सीज" पुस्तक लिखकर उस सूक्ष्मता के सिद्धांत का उपहास उड़ाया और खण्डन किया किन्तु यह उपहास बहुत दिन स्थिर न रह सका । ५० वर्ष के अन्दर ही अनेक मूर्धन्य विज्ञानी इस सिद्धान्त के समर्थक बन गये । डा० जी० डबल्यू० वैलफोर ने सूक्ष्मता की शक्ति को अकल्पनीय और अद्भुत बताया । आरम्भिक दिनों चिकित्सा शास्त्रियों ने सूक्ष्मता की शक्ति पर अविश्वास किया था और उसका उपहास उड़ाया था, पीछे जब गहराई को खोजा गया तो पाया गया कि सूक्ष्मता की शक्ति को अप्रामाणिक नहीं ठहराया जा सकता ।

कार्लवांन नागेली के चार ताँबे के पैसे उनकी बिना जानकारी में पानी के एक बर्तन में गिर पड़े, वह पानी सहज स्वभाव स्पाइरोगिरा के पौधों की जड़ में डाल दिया गया । पौधे कुछ ही घण्टे के भीतर मर गये । अकस्मात् ऐसा क्या हो गया । इस खोज में उनकी जड़ में डाले गये पानी की खोजबीन हुई और उसमें पड़े हुए ताँबे के पैसों की संगति मिलाई गई । पीछे गहरे अन्वेषण से पता चला कि ताँबे की इतनी स्वल्प मात्रा इतनी सशक्त होती है कि उनके द्वारा पौधों पर ऐसा अद्भुत प्रभाव पड़ सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्मीकृत ओषधि की अद्भुत सामर्थ्य को भी परखें

स्थूल की तुलना में सूक्ष्म की सामर्थ्य कहीं अधिक होने की बात विज्ञान की कसौटी पर कसी जा चुकी है । और यह सिद्ध हो चुका है कि रेडियोधर्मी पदार्थ का एक परमाणु अपनी सूक्ष्म शक्ति का जब परिचय देता है तो आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता हैं । अणु विस्फोट की भयंकरता का जिन्हें पता है, उन्हें यह समझने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि ओषधियों को यदि ऐसे ही मोटे रूप में कूटकर उनके प्राकृत स्वरूप में ग्रहण किया जाय तो उसकी तुलना में सूक्ष्म स्तर की औषधि का सेवन कितना अधिक लाभदायक हो सकता है ।

होम्योपैथी और यज्ञोपचार में ओषधि की सूक्ष्म शक्ति को समझने और उससे लाभान्वित होने का प्रयास किया जाता है । इस प्रकार सैद्धान्तिक दृष्टि से दोनों में असाधरण साम्य देखा जा सकता है । यज्ञ द्वारा शारीरिक एवं मानसिक रोगों के उपचार एवं होम्योपैथी में एक ही अन्तर है कि जहाँ यज्ञ में मुख्यत: पदार्थ के तीसरे रूप गैस का - पदार्थ के वायुभूत रूप का प्रयोग होता है, वहाँ होम्योपैथी में ठोस या द्रव्य रूप में सूक्ष्मीकृत ओषधियाँ खिलाई जाती हैं । पदार्थ-विज्ञान के आरम्भिक छात्र भी जानते हैं कि पदार्थ का-रूपान्तरण सॉलिड, लिक्विड एवं गैस रूपों में होता रहता है मूलभूत सत्ता यथावत् बनी रहती है लेकिन उनका रूपान्तर इन तीनों में होता रहता है एवं शक्ति सामर्थ्य भी उसी अनुपात में घटती-बढ़ती है ।

यज्ञ-चिकित्सा में यह आग्रह नहीं है कि उपचार वायुभूत भैषज से ही किया जाय । यज्ञ भस्म, चरु, औषधि क्वाथ, आचमन, मार्जन, मर्दन के माध्यम से ठोस एवं द्रव रूप दोनों के ही प्रयोगों का विधान है, इसी प्रकार होम्योपैथी में भी ओषधि को सुखाकर, उच्च पोटेन्सी में नासिका, मुखद्वार एवं आँखों की श्लेष्मा झिल्ली से द्रव्य को स्पर्श मात्र कराकर भी शरीर के भीतर पहुँचाया जाता है । इस प्रकार दोनों ही उपचार पद्धतियों में तीनों स्तर के उपचारों की व्यवस्था है । यह बात अलग है कि जहाँ प्रचलन होम्योपैथी में ठोस और द्रव्य रूप का अधिक है, वहाँ यज्ञ में वायुभूत आधार अपनाने की प्रमुखता दी गयी है । आधारभूत सिद्धान्तों की पुष्टि इतने अन्तर के बाद भी हो जाती है एवं यह स्पष्ट पाया जा सकता है कि पदार्थ का सूक्ष्मीकृत रूप हर दृष्टि से अधिक प्रभावशाली होता है ।

हैनिमेन के अनुसार सूक्ष्मीकरण से पदार्थ की शक्ति असंख्यों गुनी बढ़ जाती है एवं औषधि का वह शक्तिशाली अंश उभर आता है, जिसे कारण तत्व कहते हैं । स्थूल औषधि की तुलना में सूक्ष्म की सामर्थ्य का अनुपात अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा होता है । हैनिमेन ने जिन प्रयोगों को आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व स्वयं पर करके इस उपचार पद्धति की प्रमाणिकता सिद्ध की थी, पिछले दिनों डा० डब्ल्यू० ई० वॉयड एवं अन्य कुछ वैज्ञानिकों ने पदार्थ के अन्दर की आणविक शक्तियों पर होने वाली प्रतिक्रिया पर प्रयोगशाला में परीक्षण कर पुन: प्रमाणित किया है । उन्होंने प० जर्मनी के डाक्टर ओ० लीसर, के० जेनर एवं एच० शीलर आदि ने अपने कार्य द्वारा यह प्रमाणित किया है कि यदि किसी नमक को हैनिमेन द्वारा बताई गयी विधि के अनुसार लैक्टोस चूर्ण में मिलाकर पौर्टसीज बनाई जायें तो कुछ ही पोटैन्सीज बनने के बाद नमक एवं लैक्टोस दोनों ही यौगिकों के सामान्य गुण धर्म ढूँढने पर नहीं मिलते । एक्स-रेडिफ्रेक्शन तकनीक द्वारा जब इन लवणों को ढूँढ़ा गया तो पता चला कि उनकी लैटिस-संरचना टूट चुकी थी । इसे समझाते हुए वे आगे लिखते हैं कि किसी भी पदार्थ के अणु-परमाणुओं का त्रिआयामीय ज्यामितिय सम्बन्ध टूट जाने का अर्थ है-ऊर्जा का परिमाण बढ़ जाना ।

इन वैज्ञानिकों ने यह भी पाया कि ठोस पदार्थों की लैटिस संरचना टूटने के फलस्वरूप ऐसी विद्युतीय तरंगें निकलती हैं जिनकी दिशा निश्चित होती है, बेधक क्षमता तीव्र होती है तथा वे तन्त्रिका संस्थान, सिनेप्सों (मिलन-बिन्दु) एवं हारमोन स्राव केन्द्रों पर अपना सीधा प्रभाव डालती हैं । यह गुण, ठोस पदार्थ, चाहे वह काष्ठ रूप में हों अथवा धातु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

के टुकड़े के रूप में, मूलत: नहीं पाये जाते । इस प्रकार होम्योपैथी सिद्धान्त कहता है कि पदार्थ की शक्ति असंख्यों गुनी बढ़ाने के लिये, उसके सूक्ष्म पक्ष को उभारने के लिए उसे सूक्ष्मीकृत किया जाना चाहिए । इसे वे पोटेन्टाइजेशन कहते हैं ।

यज्ञ चिकित्सा के शास्त्र के प्रमाणित सिद्धान्तों पर दृष्टि दौड़ाने पर हम पाते हैं कि इसके प्रणेता पदार्थ के ठोस और द्रव रूप की तुलना में और भी अधिक सामर्थ्यवान वाष्प (गैस) पक्ष को महत्वपूर्ण मानते हैं । उनकी इस परिकल्पना को कुछ मोटे उदाहरणों से समझा जा सकता है । मिर्च अपने मूल रूप में छोटी परिधि में सीमित रहती है । उसे पीसकर पानी में घोल दिया जाय तो चटपटापन अधिक विस्तृत हो जाता है । यदि उसी मिर्च को जलाया जाय तो वायुभूत होने पर अपना दायरा एवं प्रभाव कहीं अधिक बढ़ा लेती है और प्रतिक्रिया तुरन्त आँखों से पानी आने, छींक व खाँसी उठने के रूप में देखी जा सकती है । तेल अपने पात्र में थोड़ा-सा स्थान घेरता है । हौज में फैला देने पर उसकी पतली परत पूरे विस्तार पर दीखने लगती है । उसी तेल को जलाने पर वह गन्ध दूर-दूर तक पहुँचती है व यह परिचय देती है कि कौन-सा पदार्थ वहाँ जलाया गया है । ये साक्षियाँ यही बताती है कि ठोस और द्रव की तुलना में गैस की परिधि एवं समर्थता बढ़ती ही है, घटती नहीं । जल की तुलना में भाप अधिक सामर्थ्यवान एवं व्यापक है । एक और अपरिमित मात्रा में जलराशि समुद्र में फैली पड़ी है तो दूसरी और उसका एक अंश ठोस रूप में उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों तथा अन्यान्य स्नोबेल्ट्स में पाया जाता है । वाष्पीकृत बादलों को इन्हीं दोनों रूपों का परिष्कृत एवं व्यापक स्वरूप समझा जा सकता है जो मानसून, समुद्री तूफान, झंझाबात रूप में आते व बरसते हैं पृथ्वी को जलमग्न कर देते हैं । यह सूक्ष्म की शक्ति का चमत्कार है ।

यज्ञोपचार में यही प्रयोग किया जाता है कि जिस रोग में जो दिये जाने का विधान है, उसे वायुभूत बनाकर रोगी के शरीर में विभिन्न मार्गों में पहुँचाया जाय । ये मार्ग नासिका रन्ध्रों से होकर फेंफडों के माध्यम से रक्त तक, त्वचा के रोम-कूपों से रक्तवाही नलिकाओं तक एवं गन्ध के माध्यम से सीधे मानस तक-इन रूपों में हो सकते हैं । यज्ञाग्नि के माध्यम से औषधि की सूक्ष्म शक्ति को उभारा जाता है और रोगी को अधिक से अधिक लाभ पहुँचाने की प्रक्रिया को सम्भव बनाने का प्रयास किया जाता है । यही प्रयोग होम्योपैथी में पोटेन्सी बढ़ा-कर औषधि दिये जाने के रूप में सम्पन्न होता है । खरल करके औषधि के कणों को सूक्ष्म बनाकर जहाँ तक सम्भव हो, उनकी प्रभाव क्षमता को उभारा जाता है ।

''फिफ्टी रीजन्स फॉर मायबिइंग होम्योपैथ'' नामक पुस्तक के लेखक डा० जे० सी० बर्नेट अपने समय में इंग्लैण्ड के ख्याति प्राप्त मूर्धन्य एलौपैथिक चिकित्सकों में से एक थे । इस पुस्तक में उन्होंने अनेकों ऐसे रोगियों का हवाला दिया है जो एलोपैथी से ठीक न हो पाये किन्तु होम्योपैथी से ठीक हो गए । डा० जेम्स टाइलर कैण्ट ने अपनी पुस्तक ''लेसर राइटिंग्स एण्ड क्लीनिकल केसेज'' में ऐसे अनेकों रोगियों का विवरण है जो विचित्र रोगों से पीड़ित थे या मरणासन्न थे लेकिन सूक्ष्मीकृत औषधियों के प्रयोग से ठीक हो गए ।

डा० एन० एम० चौधरी ने अपनी पुस्तक-''सिस्टेमेटिक मटेरिया मेडिका'' में तथा डा० नैश ने भी ऐसे अनेकों रोग प्रकरणों का वर्णन किया है जिनमें सामान्य तथा उपलब्ध काष्ठ ओषधियों के सूक्ष्मीकृत प्रयोगों से कई असाध्य रोग ठीक हो गए । ''ब्रिटिश होम्योपैथी जरनल'' एवं ''अमेरिकन केमीकल सोसायटी जनरल'' ने भी अपने शोध निष्कर्षों में ऐसे प्रमाण दिये हैं जिनसे सिद्ध होता है कि पदार्थ में छिपा अविज्ञात आयाम इस चिकित्सा प्रक्रिया में उभरकर आ जाता है ।

रसायन शास्त्र एवं भौतिकी के ज्ञात नियमों के आधार पर इस सिद्धान्त को नहीं समझा जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकता । सूक्ष्मीकरण की इस मान्यता को भारतीय दर्शन ने आदि काल से ही महत्व दिया है एवं अग्निहोत्र-यजन प्रक्रिया के रूप में उसकी स्थूल स्थापना की है । आप्त मान्यता है कि प्रत्येक पदार्थ अपने भौतिक एवं रासायनिक गुणों के अतिरिक्त भी कुछ विशेषताएँ रखता है जो उसके स्थूल दृश्यमान गुणों से कहीं अधिक समर्थ, सशक्त, एवं सामर्थ्य वाली है । उन्हें पदार्थ का सूक्ष्म शरीर कहा गया है व इनको निखारने की प्रक्रिया का सूक्ष्मीकरण । अथर्ववेद में स्थान-स्थान पर ऐसे सन्दर्भ मिलते हैं जिनसे इस मान्यता की पुष्टि होती है कि पदार्थ की सभी विशेषताओं का समुच्चय उसका शरीर ही है ।

होम्योपैथी ने प्रकारान्तर से इसी तथ्य को महत्व दिया है कि पदार्थ की सूक्ष्म शक्ति उसके रासायनिक गुणों पर आधारित नहीं है, अपितु उससे भिन्न व स्वतन्त्र है । सूक्ष्मीकरण करने पर जब दवा में अणुओं का अस्तित्व तक संदिग्ध हो जाता है, तब भी सूक्ष्म गुण उसमें विद्यमान रहते ही नहीं अपितु और भी अधिक प्रखर हो जाते हैं ।

होम्योपैथी व यज्ञोपचार का यह अद्‌भुत, मात्र यह प्रतिपादित करने के लिये दर्शाया गया है कि पदार्थ अपने सूक्ष्म रूप में कितना प्रभावशाली होता है । स्थूल रोगों-मनोविकारों के उद्‌गम केन्द्र तक मात्र सूक्ष्म की ही पहुँच हो सकती है । उस दृष्टि से यज्ञोपचार पद्धति पूर्णतः निरापद अत्यधिक प्रभावशाली है ।

वस्तुतः हवन में स्वास्थ्य सम्बर्धन और रोग निवारण की जो अद्‌भुत शक्ति है उसका कारण पदार्थों को वायुभूत बना कर उनकी कारणभूत सूक्ष्मशक्ति का लाभ लेना ही है । वायु रूप बनी हुई ओषधियाँ जितना काम करती हैं उतना वे खाने-पीने से नहीं कर सकतीं । तपेदिक आदि रोगों के रोगियों को डाक्टर लोग भुवाली, शिमला, मसूरी, जैसे अच्छी वायु के स्थानों में जाकर रहने की सलाह देते हैं । कई अच्छे अस्पताल भी वहाँ बने हैं । डाक्टरों का कहना यह है कि औषधि सेवन के साथ-साथ यदि उत्तम आक्सीजन मिली वायु सेवन की सुविधा हो तो रोग अच्छा होने में बहुत सहायता मिलेगी । निस्सन्देह प्राण-वायु (आक्सीजन) भी एक दवा ही है । प्रातःकाल जब वायु में आक्सीजन की मात्रा अधिक होती है, टहलने जाना आरोग्य वर्धक माना जाता है । वायु में लाभदायक तत्व मिले हों तो उसकी उपयोगिता का लाभ स्वतः ही मिलेगा । हवन द्वारा यही प्रयोजन पूरा किया जाता है । उपयोगी औषधियों को वायुभूत बनाया जाय और उसका लाभ उस वातावरण के सम्पर्क में आने वालों को मिले, आरोग्य की दृष्टि से हवन का यह लाभ बहुत ही महत्वपूर्ण है । पौष्टिक पदार्थों के बारे में भी यही बात है । दुर्बल शरीर को बलवान बनाने के लिये पौष्टिक आहार की आवश्यकता अनुभव की जाती है, पर पौष्टिक पदार्थों को कमजोर देह और कमजोर पेट वाला व्यक्ति हजम कैसे करे यह समस्या सामने आती है । दुर्बल या रोगी व्यक्ति की पाचन क्रिया मंद हो जाती है साधारण हलका भोजन थोड़ी मात्रा में लेने पर भी जब अपच दस्त उल्टी आदि की शिकायत शुरू हो जाती है तो अभीष्ट मात्रा में पौष्टिक भोजन कैसे हजम हो ? इसका सरल साधन हवन है । अग्निहोत्र में मेवा आदि पदार्थ हवन किये जायें और उन्हें नाक मुख या रोमकूपों द्वारा ग्रहण किया जाय तो वे शरीर में आसानी से प्रवेश कर सकते हैं और वायुभूत होने के कारण अपनी सुगमता के आधार पर लाभदायक भी अधिक हो सकते हैं ।

पुराने और कष्ट साध्य रोगों में अक्सर कहीं भीतर घाव हो जाते हैं और उनमें मवाद बनने लगता है । इसे सुखाने के लिए जो दवायें दी जाती हैं वे विकार के साथ-साथ शरीर के स्वस्थ जीवाणुओं का भी विनाश करती हैं फलस्वरूप रक्त की रोग निवारक शक्ति घट जाती हैं तब दवायें भी काम करना बंद कर देती हैं और रोग कीटाणुओं की तरह वह दवा भी उल्टी हानि करने लगती है । जब कोई उपाय नहीं रहता तो उस सड़न या जख्म को सुखाने के लिए 'रेडियम' का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपयोग किया जाता है । यह एक आग जैसी चीज है जो भीतर पहुँच कर जलाने का काम करती है । इस प्रयोग से भी कभी लाभ होता है कभी नहीं भी । इस प्रयोजन के लिए हवन की गैस काम में लाई जाय तो बहुत बार रेडियम अथवा एन्टीवायटिक दवाओं की अपेक्षा कहीं अधिक लाभ होता है और बिना अन्य औषधियाँ जैसी हानि की आशंका के कठिन और पुराने रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है ।

सूक्ष्मीकरण चिकित्सा का दर्शन एवं स्वरूप

रोगों में औषधि उपचार का क्रम सभ्यता के विकास काल से चला और समय गति के साथ आगे ही बढ़ता चला आया है । इन दिनों अन्य वस्तुओंके उपरांत मानवी आवश्यकताओं में शिक्षा से भी अधिक महत्व चिकित्सा का बना हुआ है । झाड़ फूंक से लेकर रेडियम चिकित्सा तक की अनेकानेक पद्धतियाँ इन दिनों प्रचलित हैं और अपनी-अपनी मनःस्थिति एवं परिस्थिति के अनुरूप उनका उपयोग करते हैं । ओषधि उपचार का मध्यवर्ती स्थान है । जड़ीबूटियाँ, रसायन, सूखे या गीले रूप में शरीर के अन्दर पहुँचाई जाती हैं । प्रायः मुख द्वारा ओषधि का सेवन किया जाता है । पर विकसित पद्धति के अनुसार सुई की सहायता से रक्त में प्रवेश करा दिया जाता है । शरीर में घुसे हुए विजातीय द्रव्य को हटाने, विषाणुओं को निरस्त करने एवं अवयवों की सक्रियता बढ़ाने की अपेक्षा इन ओषधियों से की जाती है ।

इस उपचार पद्धति में एक दोष यह है कि मुख द्वारा पेट में पहुँचाई गई औषधियाँ हजम होकर रस में सम्मिलित हो सकें तो ही वे अपना समुचित प्रभाव उत्पन्न कर पाती हैं अन्यथा वे मल मार्ग से होकर बाहर निकल जाती हैं और अपना प्रभाव नाम के लिये ही दिखा पाती हैं । होता यह है कि पेट की प्रकृति मात्र शरीर के आवश्यक पदार्थों को ही पचाने के लिये तैयार होती है । इस कसौटी से बाहर का कोई पदार्थ यदि भीतर जा पहुँचता है तो उसको पचाने के लिये पेट तैयार नहीं होता वरन् उसे बाहर निकाल फेंकने में जुट जाता है । औषधियों में से अधिकांश ऐसी होती हैं जो मानवी आहार का अंग नहीं होती । ऐसी चीजों को पचाने के लिये जिन रासायनिक पदार्थों की आवश्यकता होती है वे पेट में होती नहीं ऐसी दशा में उन औषधियों के नाम पर सेवन किये गये पदार्थों में से बहुत स्वल्प मात्रा में ही पचते और प्रभाव दिखाते हैं । अन्यथा उसका अधिकाँश भाग मल मूत्र द्वारा शरीर की मूल प्रकृति द्वारा बहिष्कृत ही कर दिया जाता है । उदाहरणार्थ विटामिन बी० की गोलियाँ खाने पर पेशाब पीला हो जाता हैं । बिन पचे इस पदार्थ को प्रकृति द्वारा तत्काल निकाल बाहर किया जाना ही इस पीलेपन का कारण है । जो अंश पचता होगा वह फैंके हुए भाग की तुलना में नगण्य ही समझा जा सकता है । यह बात अन्य ओषधियों के सम्बन्ध में भी है ।

इसके आगे की बात इन्जेक्शन मार्ग से पहुंचाई गई औषधियों के सम्बन्ध में है । पेट द्वारा पचाकर रक्त में सम्मिलित पदार्थ प्रायः इस स्थिति में पहुँच जाते हैं कि उन्हें शरीर में रहकर अपना प्रभाव दिखाने का अवसर मिल सके । इसी स्थिति का लाभ उठाने के लिये पाचन पद्धति की सहायता से बचा जाता है और सीधे रक्त में अभीष्ट औषधि का प्रवेश करने का चातुर्य बरता जाता है । पर यहाँ भी सोची गई सफलता का रास्ता बंद मिलता है । रक्त में रहने वाले श्वेत कीटाणु इस चोर दरवाजे से घुसे हुये औषधि पदार्थ को भी विजातीय स्तर का ही पाते हैं । और उसे अस्वीकार करके निकाल बाहर करने का प्रबल प्रयास करते हैं । अनावश्यक पदार्थों को बाहर निकालने की एक सुव्यवस्थित पद्धति-शरीर संरचना के साथ जुड़ी हुयी है । इसके पास कचरे को निकाल बाहर फैंकने के अनेक साधन हैं । त्वचा से लेकर मल-मूत्र छिद्रों तक के असंख्य द्वार इसलिये बने हैं कि उनके माध्यम से सफाई का कार्य होता रहे । रक्त में प्रविष्ट ओषधियों को इस पद्धति का सामना करना पड़ता है और वे अधिक समय तक भीतर नहीं ठहर पातीं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देखा गया है कि बाहर से चढ़ाये हुये रक्त को शरीर की मूल प्रकृति कठिनाई से ही थोड़ी मात्रा में स्वीकार कर पाती है । स्व उपार्जित रक्त की तुलना में बाहर से चढ़ाया हुआ रक्त न तो पूरे समय ठहर पाता है और न अपना प्रभाव दिखा पाता है । कठिनाई से ही अभीष्ट प्रयोजन थोड़ी मात्रा में उससे सधता है । प्रतिकूल वर्ग का रक्त तो भयानक प्रतिक्रिया उत्पन्न करके प्राण संकट तक खड़ा कर देता है । पर यदि वह अनुकूल वर्ग का है तो भी वह परिजन स्तर का नहीं मेहमान ही बना रहता है । पर उसे डेरा डालकर बैठने का अवसर नहीं मिलता ।

इस स्थिति को देखने से इस नतीजे पर पहुँचना पड़ता है कि मुख द्वारा पाचन तंत्र के माध्यम से अथवा सुई की सहायता से जो औषधियाँ शरीर में प्रविष्ट कराई जाती हैं स्वाभाविक खाद्य पदार्थ न होने के कारण विजातीय वर्ग की ही तरह मूल प्रकृति के अनुरूप न होने के कारण अस्वीकृत बहिष्कृत ही की जाती रहती हैं और उनका समुचित प्रभाव नहीं होता । और कष्ट साध्य प्रयत्नों का बहुत स्वल्प भाग ही उपचार की अभीष्ट आवश्यकता को पूरा कर पाता है । उनके निष्कासन का जो अतिरिक्त भार पड़ता है उसे देखते हुए लाभ कम और हानि अधिक का निष्कर्ष निकलता है । कुल मिला कर रोगी की आधार चिकित्सा पद्धति से अन्ततः घाटा ही रहता है । भले उनसे आपत्तिकालीन कठिनाई के निराकरण में थोड़ी सामयिक सहायता मिल जाय । औषधियों में से अधिकांश में दो विशेषतायें पाई जाती हैं (१) उत्तेजना उत्पन्न करना (२) मारक प्रतिक्रिया उत्पन्न करना । शरीर में ब्लड बढ़ाने के लिये अवयवों को अधिक काम करने के लिये लगभग उसी स्तर की उत्तेजना उत्पन्न की जाती है जैसे कि नशा पिलाकर किसी बीमार कमजोर सिपाही को युद्ध मोर्चे पर लड़ने के लिये भेज दिया जाय । इस आवेश में वह तत्काल कुछ पराक्रम दिखाता तो है पर पहिले से ही खाली पड़े शक्ति भण्डार में से उत्तेजना द्वारा जो अत्यधिक खर्च कराया जाता है उससे नशा उतरते ही उसकी दुर्बलता पहिले से भी अधिक बढ़ जाती है और प्रतीत होता है कि नशा पिला कर तत्काल कुछ काम करा लेना उस दुर्बल व्यक्ति के लिये भयानक संकट बनकर खड़ा हो गया ।

दूध को तेज आग पर चढ़ा देने से वह उफनता है और देखते-देखते उबालने का बर्तन खाली होते हुये भी पूरे का पूरा भर जाता है, यहाँ तक कि उससे बाहर निकलकर फैलने भी लगता है । देखने वाले को यह लगता है कि तेज आग ने दूध का परिमाण कई गुना अधिक बढ़ा दिया पर वस्तुतः वैसा होता नहीं । उबाल के बाद दूध की मात्रा घट जाती है और उसकी स्वाभाविकता में भी भारी कमी आ जाती है । थके हुए घोड़े को भी चाबुक मार-मार कर कुछ समय दौड़ाया जा सकता है । इससे यह अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए कि चाबुक में ऐसा कोई शक्ति का भण्डार भरा पड़ा है जिसने घोड़े में असाधारण सामर्थ्य भर दी । होता यह है कि चाबुक की पिटाई से उत्तेजित घोड़ा थोड़ी देर ही दौड़ पाता है । सामर्थ्य चुक जाने पर बुरी तरह गिर पड़ता है और ऐसी स्थिति में जा पहुँचता है कि पिटते रहने पर भी दौड़ना तो दूर उठ कर खड़े हो जाने की सामर्थ्य भी शेष नहीं रह जाती । आरम्भ में जो चाबुक वरदान लगता था वही अन्ततः अभिशाप सिद्ध होता है और घोड़े के लिए प्राण संकट खड़ा करता है ।

शक्ति सम्बर्धन के पोषक तत्वों का शरीर में पहुँचना एवं विश्राम का अवसर मिलना आवश्यक है । इसके विपरीत उत्तेजना का आवेश उत्पन्न करने की चतुरता कुछ ऐसा परिणाम उत्पन्न नहीं करती जिसे दूरदर्शिता पूर्ण या महत्वपूर्ण कहा जा सके । बल बर्धन के नाम पर प्रयुक्त किये जाने वाले टानिक अन्ततः हानिकारक ही सिद्ध होते हैं । रोग उपचार के निमित्त तत्काल लाभ उठाने के लिये इन तत्वों का उपयोग तो होता है पर उनसे कोई स्थाई समाधान नहीं निकलता वरन् वेचारा रोगी अन्ततः घाटे में ही रहता है ।

ओषधियों में दूसरी विशेषता उनकी मारक सामर्थ्य है । एन्टीवायोटिक्स ओषधियों का एक ही काम है आक्रमण । विषाणुओं को मारने के लिये ही चिकित्सकों द्वारा यह उपाय अपनाया जाता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वे सोचते हैं कि इस औषधि में अमुक वर्ग के विषाणुओं को मारने की क्षमता है । अत: वे बड़े उत्साह के साथ इन रोग कीटाणुओं के विरुद्ध उनका प्रयोग करते हैं इस निर्णय में एक भयंकर भूल यह होती है कि मारक रसायनों को कोई विचारशील प्राणी मान लिया जाता है जो मित्र और शत्रु का अन्तर करता है । शत्रुओं को मारते समय मित्रों को बचाने का ध्यान रख सकता है वस्तुत: वैसा है नहीं । मारक ओषधियाँ अपना काम करती हैं परन्तु वे मित्र शत्रु का अन्तर नहीं कर सकती । विषाणुओं को मारने से उनकी क्षमता का उपयोग जीवन रक्षक जीवाणुओं के ऊपर भी होता है । और वे भी उनकी संख्या के ही अनुपात में मरते हैं ।

माना जाय कि शरीर में १०० रोग कीट और १००० जीवन रक्षक कण हैं । गोलावारी में यदि कोई अन्धा व्यक्ति इन सब पर मशीनगन चला दे या विष गैस उड़ेल दे तो उसका परिणाम उन सभी को समान रूप से क्षति पहुँचने के रूप में सामने आवेगा शत्रु और मित्र दोनों ही मरेंगे । यदि मित्र अधिक हैं तो मरेंगे वे ही अधिक संख्या में । ऐसी दशा में यदि विषाणु मर भी गये तो रक्षक जीवाणुओं की संख्या घट जाने से जीवन शक्ति को बुरी तरह क्षति पहुँचेगी । और रोग के हटने न हटने की बात संदिग्ध रहते हुये भी दुर्बलता अपनी जड़ जमा लेगी । फलत: एक के बाद दूसरे के रोग उत्पन्न होते रहने का नया सिल-सिला चल पड़ेगा ।

इन कठिनाइयों को देखते हुए भी विवशता में औषधि उपचार की पद्धति काम में लानी पड़ती है, क्योंकि मोटे तौर पर अन्य कोई उपाय सूझता नहीं । प्राचीन काल में तत्वदर्शी ऋषियों ने एक उच्चस्तरीय चिकित्सा पद्धति का आविष्कार किया था । उसे यज्ञोपचार पद्धति कहा जाता था । इसके माध्यम से बलवर्धन और विषाणु मारण के दोनों ही उद्देश्य भली भाँति पूरे होते थे और उन सभी हानियों से बचा जा सकता था जो ओषधियों के कारण पैदा होती थीं । ओषधियों को वायुभूत बनाकर शरीर में पहुँचाने के लाभ अनेक हैं और हानि न के बराबर । यज्ञ में ओषधियों को वायुभूत बनाया जाता है । वे न तो गोली, चूर्ण, अवलेह, आसव जैसी पाचन तंत्र पर आश्रित रहते हैं और न रक्त के माध्यम से उन्हें शरीर में पहुँचाने की आवश्यकता पड़ती है । ओषधि का प्रभाव तभी देखा जा सकता है जब उनसे शरीर द्वारा उपचार को अपनाये जाने का सहयोग मिले । पर यह दो कारणों से कठिन होता है । एक तो यह कि पाचन तंत्र इतना समर्थ नहीं होता कि पूरी तरह इन चित्र-विचित्र ओषधियों को तुरन्त पचा सके । पाचन क्रम धीमे चलता है । खाये हुए पदार्थ से रक्त बनने की प्रक्रिया तब और भी लम्बी हो जाती है जब रुग्णता जन्य दुर्बलता के कारण पाचन तंत्र अपना काम ठीक तरह करने में असमर्थ हो जाता है । समय साध्य प्रतिफल की प्रतीक्षा में वह रोगी बैठा नहीं रह सकता, जिसे कष्ट के कारण कई तरह की यातनाऐं सहनी और आवश्यक कार्य में भारी अवरोध का सामना करने की दुहरी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है । उपचार के परिणाम में अनावश्यक विलम्ब होना भी ऐसी समस्या है जो रोगी की आतुर मन: स्थिति में कई बार उद्वेग भरता है और वह असहाय हो उठता है ।

इस सम्बन्ध में रक्त के माध्यम से पहुँचाई गई दवाऐं भी रक्ततंत्र की दुर्बलता या असहकारिता, अवरोध, प्रतिक्रिया के कारण उतना लाभ नहीं दे पाती, जितना कि परिमाण और समय की दृष्टि से अपेक्षित था । इस निराशा जनक स्थिति में यज्ञ-चिकित्सा का महत्व अनेक दृष्टियों से बढ़ जाता है ।

सर्व विदित है कि संसार का कोई पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता । जीव की तरह पदार्थ का मूल तत्व भी अमर है उसका रूपान्तर भर होता रहता है । पूर्णतया समाप्ति उसी तरह संभव नहीं जैसे कि आत्मा का अस्तित्व सर्वथा समाप्त नहीं हो जाता । परिस्थिति वश पदार्थ, ठोस, द्रव, एवं वायु के रूप में बदलता रहता है । पानी सामान्य तथा प्रवाही होता है । ठंड लगने से वर्फ के रूप में ठोस हो जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गर्मी के कारण भाप बनकर आकाश में परिभ्रमण करने लगता है । परिस्थिति वश और उलट -पुलट आये दिन होते रहने पर भी जल तत्व के मूल कणों के अस्तित्व में कोई अन्तर नहीं आता । वह अपनी वास्तविकता बराबर कायम रखता है । यह स्थिति अन्य सब पदार्थों के सम्बन्ध में भी समझी जा सकती है । अग्नि में अग्नि संस्कार होने से हव्य द्रव्य नष्ट नहीं होता वरन् वायुभूत होकर समीपवर्ती वातावरण में बिखर जाता है । लाल मिर्च को आग पर जलाने से उसका प्रभाव वायु द्वारा आस-पास फैल जाता है और वहाँ बैठे हुए लोगों को छींक एवं खाँसी आने लगती है । सुगन्ध, दुर्गन्ध का भी गर्मी के प्रभाव से दूर-दूर तक विस्तार होता है । यज्ञ में होमे हुए पदार्थ जलते तो हैं पर मूलत: नष्ट नहीं होते, वरन् वायुभूत होकर अधिक सूक्ष्म, अधिक गतिशील एवं अधिक प्रभावी बन जाते हैं । वायु-विश्लेषण कर्ता समीपवर्ती वातावरण की यदि जाँच पड़ताल करें तो प्रतीत होगा कि हवन किया हुआ पदार्थ गैस बनकर उसी क्षेत्र में परिभ्रमण कर रहा है । गर्मी वहाँ अधिक होती है जहाँ आग जलती है । इसके उपरान्त उस उत्पादित गर्मी का प्रभाव क्रमश: आगे बढ़ता और हलका पड़ता चला जाता है । ठीक इसी प्रकार हवन में प्रयुक्त हव्य पदार्थो का वाष्पीय अस्तित्व यज्ञशाला में तथा उसके इर्द गिर्द के क्षेत्र में अधिक रहता है और इसके उपरान्त वह अनन्त अन्तरिक्ष में विस्तृत होता चला जाता है । स्वभावत: उत्पादन केन्द्र में ऊर्जा अधिक रहती है, बाद में वह क्रमश: धीमी पड़ती चली जाती है । यही कारण है कि यज्ञ स्थल में बैठे हुए लोग उस यज्ञवाष्प से अधिक प्रभावित होते हैं, जो हविष्य के यजन द्वारा उत्पन्न होती है ।

साँस के द्वारा जो वायु ग्रहण की जाती है वह मात्र हिलने-जुलने वाला अदृश्य प्रवाह ही नहीं होता वरन् उसमें बहुमूल्य पदार्थ भरे होते हैं और वे इतने उपयोगी होते हैं कि आहार के दृश्य स्वरूप की तुलना में उन्हें कम नहीं, अधिक मूल्यवान ही माना जायगा । सभी जानते हैं कि वायु में रहने वाला आक्सीजन मनुष्य का प्रधान आहार है । उसमें कमी हो जाने से स्वास्थ्य संकट उत्पन्न हो जाता है । पहाड़ों की ऊँची चढ़ाई पर हवा हलकी पड़ती जाती है, फलत: साँस लेने में कठिनाई उत्पन्न होती है । पर्वतारोही आक्सीजन के थैलों को पीठ पर लाद कर चलते हैं और उसी के सहारे पूरी सांस लेते हुए अपना पर्वतारोहण जारी रखते हैं । वायु की विशिष्ठता से वे लोग परिचित होते हैं, जो सबेरे की हवा में वायु सेवन के लिए निकलते हैं, एवं स्वास्थ्य सुधारने के लिए अच्छी आवहवा वाले स्थानों में जाकर रहते है । सीलन, सड़न, दुर्गन्ध की हवा से स्वास्थ्य को कितनी क्षति पहुँचती है और अच्छे वायु मंडल वाले स्थानों के निवासी कितने स्वस्थ और दीर्घजीवी होते हैं इस प्रकट रहस्य से सभी परिचित हैं । यज्ञीय-यज्ञ प्रक्रिया से एक प्रकार विशिष्ट वायुमंडल बनता है । उसमें यजन किये गये पदार्थ प्रचुर परिमाण में परिभ्रमण करते रहते हैं । वे साँस द्वारा उपस्थित लोगों के शरीर में प्रवेश करते हैं और अपने प्रभाव से उन्हें प्रभावित करते हैं

शरीर में आहार पहुँचाने और कचरा निकालने के जितने भी माध्यम हैं उनमें श्वसन क्रिया का महत्व सर्वोपरि है । अन्न-जल मुख द्वारा लिया जाता है और उनका कचरा मल-मूत्र मार्ग एवं अन्यान्य छिद्रों में होकर बाहर निकलता रहता है । श्वाँस प्रक्रिया द्वारा उच्चस्तरीय आहार शरीर में पहुँचता है । आक्सीजन का नाम तो सभी ने सुना है और उसकी उपयोगिता से भी सभी परिचित हैं । इसके अतिरिक्त भी वायु में अनेकानेक पदार्थ घुले रहते हैं और वे साँस द्वारा शरीर में पहुँच कर जीवाणुओं को अपनी उपलब्धियों से लाभान्वित करते हैं । रक्त की तरह ही साँस की पहुँच प्रत्येक जीव कोश तक होती है । काया के कोने-कोने में वह पहुँचती है, अपने अनुदान बाँटती है और वापिसी में जहाँ भी कचरा मिलता है, उसे अपनी पीठ पर लाद कर बाहर निकालती रहती है । यह दोनों ही कार्य अदृश्य होने के कारण स्मृतिपटल पर भले ही अंकित न रहें, पर उनकी भूमिका पाचन तन्त्र एवं मल निष्कासन प्रक्रिया की तुलना में कम नहीं वरन् अनेक गुने अधिक महत्व की होती है । अन्न-जल के बिना तो मनुष्य कुछ दिन जीवित भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

रह सकता है, पर साँस रुक जाने पर तो कुछ मिनट भी जी सकना सम्भव नहीं होता । इससे स्पष्ट है कि जीवन निर्वाह में श्वास का कितना बड़ा योगदान है । अत्यधिक उपयोगी आहार को तत्काल काया के कण-कण तक पहुँचाने की दृष्टि से अकेला श्वास तन्त्र जितना काम करता है उतना ग्रहण करने और पचाने का समस्त तन्त्र भी मिलकर पूरा नहीं कर पाता ।

श्वास तन्त्र के सहारे बलवर्धक और रोग निवारक ओषधियों को अविलम्ब काया के कण-कण तक पहुँचाने का कार्य जितनी अच्छी तरह सम्पन्न हो सकता है उतना और किसी प्रकार नहीं । अस्तु यज्ञ चिकित्सा को शारीरिक ही नहीं, मानसिक रोगों के उपचार में भी प्रयुक्त किया जा सकता है । साधारणतया ओषधि चिकित्सा विधान में शरीरगत रोगों का ही उपचार है । मस्तिष्क तक उसकी पकड़ एवं पहुँच स्वल्प परिमाण में ही संभव हो पाती है । जुकाम, सिरदर्द जैसे रोगों के ही छुटपुट उपचार दवादारू से सम्भव हो पाते हैं । बहम, सनक, उद्वेग आवेश, असमंजस, अविश्वास, भ्रम, भय जैसे कितने ही अचिन्त्य चिन्तन बहुधा मनुष्यों की मनोभूमि में जड़ जमा कर बैठ जाते हैं और विक्षुब्ध बनाये रहते हैं । इस क्षति को शारीरिक पीड़ाओं से कम कष्टकारक एवं हानिकारक नहीं माना जा सकता । रुग्ण मनुष्य बिस्तर पर पड़े-पड़े भी सूझ-बूझ के माध्यम से अपना और दूसरों का असाधारण लाभ करता रह सकता है । किन्तु विक्षिप्त या अर्ध विक्षिप्त तो ऐसी विचित्र स्थिति में फँसा रहता है, जिसे शारीरिक दुर्बलता एवं रुग्णता से भी अधिक गई गुजरी कहा जा सकता है । उलझनें, समस्याएँ, विपत्तियाँ असंख्य हैं पर उनका उद्गम स्रोत एक ही है विकृत चिन्तन । पिछड़ापन, दरिद्रता, अपयश, उपेक्षा, तिरस्कार आदि के मूल में मानसिक रुग्णता ही काम करती है । यह ज्वर जूड़ी की तरह प्रत्यक्ष दीखता और कष्ट देता तो नहीं दिखता पर उसके द्वारा होने वाली हानि का वजन कहीं अधिक होता है ।

इन मनोरोगों की चिकित्सा का कोई ठोस आधार नहीं मिल सका है । अनिद्रा, पीड़ा मूर्छा जैसे संकटों में मस्तिष्क अर्ध निद्रित कर देने वाली दवाऐं तो बाज़ार में मिलती हैं पर ऐसे उपाय उपचार चिकित्सा विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में उभर कर नहीं आये हैं, जिनमें मनोविकारों के निराकरण की आशा बँध सके । इस असफलता को एक अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण दरिद्रता कह सकते हैं । निराशा के इन क्षेत्रों में आशा का प्रकाश मात्र यज्ञ चिकित्सा में ही सन्निहित दृष्टिगोचर होता है ।

शरीर के अवयवों को प्रभावित करने के लिए ओषधियों का लेप, खाना-पीना या सुई लेने से उपचार हो सकता है किन्तु मानसिक रोगों एवं मनोविकारों की निवृत्ति के लिए उपचार सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो मस्तिष्कीय कोषों तक पहुँचने और अपना प्रभाव उत्पन्न करने में समर्थ हो सके । यह कार्य यज्ञ से उत्पन्न हुई शक्तिशाली ऊर्जा से सम्पन्न हो सकता है । वह नासिका द्वारा, रोमकूपों एवं अन्यान्य छिद्रों द्वारा शरीर में प्रवेश करती है । विशेषतया मस्तिष्क के भीतरी जीवाणुओं तक प्रभाव पहुँचाने के लिए नासिका द्वारा खींची हुई वायु ही काम कर सकती है यदि उसमें यज्ञ-प्रक्रिया द्वारा प्रभावशाली ओषधियों और ध्वनियों का समावेश किया गया है तो उनका समन्वय विशेष शक्तिशाली बनेगा और मानसिक विकृतियों के निराकरण में अति महत्वपूर्ण उपचार की भूमिका सम्पन्न करेगा ।

यज्ञोपचार से मनोरोगों का निवारण

मानसिक रोगों में जो कार्य यज्ञ चिकित्सा कर सकती है वह अन्य किसी पद्धति के माध्यम से नहीं हो सकता । वायु भूत ओषधियों के शरीर में प्रवेश करने का राज मार्ग नासिका मार्ग ही है । नाक से साँस, फेफड़े में पहुँचती है, पर उसका रास्ता मस्तिष्क से होकर ही गुजरता है । इसलिए उसका प्रभाव भी पहले मस्तिष्क पर बाद में फेफड़ों पर और इसके उपरान्त शरीर के समस्त छोटे- बड़े घटकों तक पहुँचता है । ऐसी दशा में स्पष्ट है कि मस्तिष्क, श्वास नली और फेफड़ों पर इस उपचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का प्रथम प्रभाव पड़ेगा । फलतः अन्य अवयवों की तुलना में लाभ भी उन्हीं को अधिक मिलेगा ।

मस्तिष्कीय रोगों की चिकित्सा अभी बाल्यावस्था में चल रही है । जबकि बाहर वालों को न दीखने वाले किन्तु आक्रान्त को निरन्तर उद्विग्न रखने वाले मनोरोगों की संख्या शारीरिक व्याधियों की तुलना में कहीं अधिक है । सनकी, शंकालु, भयभीत, उत्तेजित, अधीर, दुराग्रही, क्रोधी, दिग्भ्रान्त, चिन्तित, लोभी, अहंकारी, उद्धत, स्तर के लोग शारीरिक रोगियों से भी अधिक कष्ट सहते और कष्ट देते हैं । इनका इलाज कहीं किसी चिकित्सा पद्धति में नहीं है । बहुत हुआ तो अनिद्रा जैसे रोगों में नींद की गोली जैसे कुछ जादुई इलाज चले हैं । सिर दर्द में संज्ञाशून्य करने वाली गोलियाँ, दर्द में सुन्न या बेहोश करने वाली कुछेक प्रकार की कानी कुबड़ी चिकित्साएँ हकीम डाक्टर करते हैं । पागलपन में बिजली के झटके मानसिक रोगों में कार्बन डाइआक्साइड का प्रयोग ट्यूमर आदि होने पर ऑपरेशन जैसी थोड़ी सी चिकित्साएँ सोची खोजी गई हैं जबकि उनका विस्तार शारीरिक रोगों की तुलना में कहीं अधिक है । अपेक्षाकृत हानि भी उन्हीं से अधिक उठानी पड़ती है । पिछड़े हुए अपराधी, कुसंस्कारी व्यक्ति न केवल अपने लिए वरन् समूचे समाज के लिए सिर दर्द बने रहते हैं जबकि शारीरिक रोगी स्वयं कष्ट भुगतते और घर वालों को थोड़ा परेशान करते हैं ।

सभी जानते हैं कि आक्सीजन मनुष्यों के लिए और कार्बन गैस पेड़-पौधों के लिए उपयोगी होती है । विज्ञान के आरम्भिक विद्यार्थी भी यह समझते हैं कि आग जलाने से उस क्षेत्र की आक्सीजन खर्च होती है और कार्बन बढ़ती है । सामान्य जानकारी के आधार पर अनावश्यक रूप से आग जलाना मानवी श्वास सम्पदा को हानि पहुँचाता है । इस दृष्टि से हवन-यज्ञ का भी विरोध किया जाता है और उसे हानिकारक बताया जाता है ।

पर यह मोटी दृष्टि भर है । बारीकी से पर्यवेक्षण करने पर नये तथ्य सामने आते हैं। विष साधारणतया मारक गुण वाला होता है पर उसे विशेष प्रकार से शोधित करके विशेष सम्मिश्रण विधान से तैयार करके देने पर असाध्य रोगों की चिकित्सा होती है और **''विषस्य विषमौषधम्''** की उक्ति चरितार्थ होती है । अग्निहोत्र के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है ।

साँस के साथ जो वायु भीतर जाती है उसमें प्रायः २० प्रतिशत आक्सीजन और ०.३ प्रतिशत कार्बन डाई-आक्साइड होती है । जब साँस छोड़ी जाती है तो उसमें ३ प्रतिशत कार्वन डाइ-आक्साइउ और १६ प्रतिशत आक्सीजन होती है ।

यदि किसी कारण शरीर को आक्सीजन कम मिले अशुद्ध वायुमण्डल में उसका अंश कम हो अथवा शरीर की भीतरी स्थिति उसे कम मात्रा में सोख सके तो शारीरिक बीमारियों के अतिरिक्त मानसिक विकृतियाँ भी खड़ी हो जायँगी । लड़खड़ा कर बोलना, आंत्रशोथ, चिड़चिड़ापन, थकावट, भय एवं आशंका समलिंगी मैथुन, अभिलाषा जैसे मनोविकारों और स्नायविक असन्तुलनों से ग्रसित वे लोग देखे गये हैं जिनके शरीर में आक्सीजन की कमी और कार्बन डाइ-आक्साइड की अतिरिक्त मात्रा पाई जाती है । कई बार आक्सीजन की अधिक मात्रा का शरीर द्वारा शोषण किया जाना भी हानिकारक होता है यद्यपि उसके लक्षण भिन्न प्रकार के होते हैं ।

वायु सन्तुलन की चिकित्सा पद्धति मानसिक रोगियों के लिए प्रयुक्त की जाती है । डा० लोवनहार्ट ने सन् १९२६ से यह प्रयोग आरम्भ किये थे । उन्होंने वैटेट्रेनिक शिजोफेनिया के रोगियों पर कार्बन डाइ-आक्साइड के उपचार किये और आशाजनक परिणाम प्राप्त किये । इन सफलताओं से प्रभावित होकर सन् १९४७ में वान मेन्डुना ने साइकोन्यूरोसिस के मरीजों पर कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा को उपचार का केन्द्र बिन्दु मानकर अपने प्रयोग किये । इसके सत्परिणामों को उन्होंने विस्तार पूर्वक सन् १९५० में निबन्ध रूप में प्रकाशित कराया ।

उन्होंने कई रोगियों को कार्बन डाइआक्साइड ३० प्रतिशत और आक्सीजन ७० प्रतिशत मिलाकर फेस माक्स उपकरण में भरी और उसमें साँस लेने की व्यवस्था की, रोगी २०-२५ बार इस प्रक्रिया से वायु में गहरी साँस लेते । एक दिन छोड़कर यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपचार किया जाता । उस समय तो रोगी को घुटन अनुभव होती और चेहरे तमतमा जाते, पर पीछे उन्हें राहत मिलती । ऐसे २५ उपचारों के बाद रोगियों को काफी राहत मिली और उनकी अधिकांश व्यथाएँ दूर हो गईं ।

आक्सीजन की समुचित मात्रा कोशिकाओं को किसी वजह से न मिले तो मस्तिष्कीय विकृतियाँ उत्पन्न होंगी । नवीनतम न्यूरोलाजी शोध तरह-तरह के मनोविकारों का शमन करने के लिए कार्बन डाइ-आक्साइड की विभिन्न मात्राएँ देते हैं और रोग निवारण में सफलता प्राप्त करते हैं । यज्ञ द्वारा उत्पन्न हुई गैसें ठीक इसी प्रकार का उपचार प्रस्तुत करती हैं जो अनेकानेक मानसिक व्याधियों के निराकरण में असाधारण रूप से सहायक सिद्ध होती हैं । स्पष्ट है कि सांस की नासिका मार्ग से फेंफड़े के केन्द्र संस्थान तक पहुँचाने की सड़क मस्तिष्क के विशाल क्षेत्र में होकर गुजरती है । इस प्रथम प्रयास में स्वभावत: अधिक सामर्थ्य रहती है । सांस में भरे हुए तत्वों का सर्वप्रथम सर्वाधिक प्रभाव मस्तिष्क पर ही होता है । ठण्ड लगने पर जुकाम, सिर दर्द होने के कारण यही हैं कि ठण्डी हवा मस्तिष्क को सर्वप्रथम प्रभावित करती है । धूलि में छींक आने, दुर्गन्ध में सिर दर्द होने लगने, क्लोरोफार्म सूँघने से बेहोश हो जाने जैसे उदाहरण यही बताते हैं कि साँस का पहला चरण मस्तिष्क को ही प्रभावित करता है । अत: यदि श्वास मार्ग से मस्तिष्क संस्थान को प्रभावित करने का काम लिया जाय तो उससे न केवल उन्माद, अपस्मार, सिर दर्द, जैसे प्रत्यक्ष रोगों का ही उपचार हो सकता है वरन् मन्द बुद्धि, स्मरण शक्ति की कमी जैसे असमर्थताओं और मनोविकारों की विक्षुब्धताओं के निराकरण का मार्ग खुल सकता है ।

इन दिनों मानसिक रोगों के अतिरिक्त फेंफड़े के, श्वास नली के रोगों का ही नम्बर आता है । तपैदिक--ब्रॉंकाइट्स दमा, जैसे रोग श्वसन तन्त्र से सम्बन्धित हैं । इनके उपचार पेट और और हृदय दोनों से दूर पड़ने के कारण ओषधि उपचार के सहारे कठिन पड़ते हैं । यज्ञ चिकित्सा इन सभी तन्त्रों को सीधे प्रभावित करने के कारण अपना लाभ स्वभावत: अधिक परिमाण में और कम समय में प्रस्तुत कर सकती है ।

ओषधि विज्ञान की मान्यता है कि रोग विषाणुओं से उत्पन्न होते हैं, इसलिए उन्हें मारने वाली प्रक्रिया अपनानी चाहिए । प्रयोग में अधिकांश दवाएँ मारक (एण्टीबायोटिक) स्तर की ही आती हैं । इस प्रयोग से जितने विषाणु मरते हैं उससे भी अधिक रक्षक स्वस्थ कोषों का सफाया होता है । जितने शत्रु मरते हैं उससे भी अधिक मित्रों को मरना पड़े तो ऐसा युद्ध लाभदायक-उत्साहवर्धक, सन्तोषजनक नहीं माना जा सकता । देखा जाता है कि औषध उपचार से रोग मुक्त होने के उपरान्त भी बेतरह क्लान्ति छाई रहती है और एक से निवृत होते ही दूसरे रोग की काली छाया झाँकने लगती है । यह कठिनाई यज्ञ चिकित्सा में नहीं है क्योंकि यजन कृत्य में जो हविष्य होमे जाते हैं उनमें एक मारक गुणवत्ता नहीं होती । सभी परिशोधन एवं परिपोषण प्रकृति के होते हैं । आत्मिकी का प्रतिपादन यह है कि रुग्णता दुर्बलता से उत्पन्न होती है । इसलिए दुर्बलों पर आक्रमण करने में सफल होते हैं । इसलिए उपचार होना चाहिए जिससे हर स्तर की दुर्बलता घटती और समर्थता बढ़ती चली जाय । यज्ञ चिकित्सा का आधार यही है । रोगियों के शरीर में जिस स्तर की दुर्बलता बढ़ गई होती है, उसे दूर करने के लिए उसी स्तर के पौष्टिक तत्व शरीर में पहुँचाये जाते हैं । इस प्रकार यज्ञ चिकित्सा को एक प्रकार से सर्वथा निर्दोष और रोग मुक्ति के साथ दुर्बलता निवारण का दुहरा प्रयोजन पूरा करने की प्रक्रिया कह सकते हैं ।

मानसिक रोगों में यज्ञीय ऊर्जा के साथ-साथ मन्त्र का प्रभाव अभीष्ट उपचार की पूर्ति करता है । रोगी को देव सान्निध्य की, प्रायश्चित की श्रद्धा अपनाने के लिए मनोविज्ञान सम्मत प्रक्रिया से लाभान्वित किया जाता है । देव अनुग्रह से प्रारब्ध रोग कटने एवं उस धर्मानुष्ठान से अन्तराल में जमी रोगों की जड़ कटने की बात यदि हृदयंगम कराई जा सके तो यज्ञ प्रक्रिया के साथ आत्म

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्वास भी बढ़ता है जो न केवल मनोरोगों के निराकरण में वरन् मनोबल की अभिवृद्धि में भी असाधारण रूप में सहायक होता है ।

इस प्रकार यज्ञ चिकित्सा में वे सभी आधार मौजूद हैं जिनसे शारीरिक व्याधियों एवं बीमारियों, मानसिक आधियों एवं विकृतियों का उपचार सम्भव हो सके । प्राचीनकाल में यज्ञ को भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति का आधार माना जाता था । अनेकानेक लोगों की सुविस्तृत महात्म्य शृंखला यज्ञ-प्रक्रिया के साथ जुड़ी हुयी है जिनमें से दो प्रत्यक्ष लाभे हैं जिनका जनसाधारण से सम्बन्ध है । उसे संकट मोचन का अमोध अस्त्र कहा जाता था । शारीरिक अस्वस्थ्यता एवं मानसिक अस्त व्यस्तता से निवृत्ति की दो समस्यायें ऐसी हैं यदि इन्हें सँभाला सुधारा जाता है तो समझना चाहिये कि मानव जाति की आधी कठिनाई का हल निकल आया । शरीर को स्वस्थ्य और मन को सन्तुलित बनाया जा सके तो समझना चाहिए कि मानवी जीवन को सुख सुविधाओं की अधिकांश उपलब्धि होगी । इतना सौभाग्य, जिन्हें प्राप्त है उन्हें अर्थ उपार्जन, जनसहयोग, यश या वर्चस्व सद्भाव-सम्मान जैसी लौकिक सफलताएँ उपलब्ध होने में कोई बड़ी कठिनाई शेष नहीं रह गयी ।

यज्ञ में मात्र अमुक पदार्थो को वायुभूत या सूक्ष्मीकृत बनाना ही प्रमुख प्रसंग नहीं है, वरन् याजकों की श्रद्धा, विशेष स्थिति, मंत्रों की स्वर शक्ति, व्यक्तियों की संयुक्त ऊर्जा जैसे अनेक कारणों के मिलने से एक विशिष्ट वातावरण बनता है ऐसा विशिष्ट जिसमें देवसत्ता की उपस्थिति का अनुभव किया जा सके । इस उत्पादन का न केवल उस प्रयोजन में भाग लेने वालों पर प्रभाव पड़ता है, वरन् व्यापक वातावरण पर उसकी उपयोगी प्रतिक्रिया होती है । पर्जन्य के रूप में प्राणऊर्जा, प्राणियों की समर्थता का संवर्धन, ऋतुओं की अनुकूलता, वनस्पतियों का विशिष्ट परिपोषण, रोग कीटाणुओं का शमन जैसे कितने ही भौतिक लाभ प्राचीनकाल में यज्ञों से मिलते रहे हैं । प्राण और पदार्थ की संयुक्त ऊर्जा से जिस यज्ञाग्नि का अविर्भाव होता है, उसकी सामर्थ्य एवं परिणति तो असाधारण ही कही जायगी ।

यज्ञ प्रक्रिया में गन्ध की उपादेयता एवं प्रभाव क्षमता

वैज्ञानिक तरीके से यह बात प्रमाणित हो चुकी है, कि सूक्ष्म वस्तु स्थूल में प्रवेश करती है, स्थूल सूक्ष्म में नहीं घुस सकती । आटे में मिली हुई शक्कर के सूक्ष्म-परमाणुओं को पृथक- पृथक करने में मनुष्य की अँगुली सर्वथा असमर्थ है, लेकिन चींटी का सूक्ष्म मुँह उसको पृथक - पृथक कर देता है । उसी प्रकार दुनिया के साइन्स-वेत्ताओं का मत है, कि तपेदिक का कीड़ा इतना सूक्ष्म होता है कि पच्चीस हजार कीड़े एक स्थान में समा जाते हैं तथा वजन में इतने हल्के होते हैं कि एक खसखस के दाने पर करोड़ों कीड़े चढ़ जाते हैं । बुद्धिमान इस बात को जानते हैं कि इतने सूक्ष्म से सूक्ष्म कीड़ों के पास स्थूल कणवाली औषधियों की बड़ी-बड़ी मात्राओं की पहुँच कैसे हो सकती है ? यही कारण है, कि लोग तपेदिक रोग को लाइलाज कह कर पुकारते हैं क्योंकि स्थूल पदार्थों का सूक्ष्म में प्रवेश सर्वथा असम्भव है और इलाज करते- करते ही रोगी परलोक धाम को सिधार जाता है । होम्योपैथिक चिकित्सा के आविष्कारकर्ता डा० हैनीमेन साहब लिखते हैं, कि अधिक निर्बल रोगियों को किसी भी प्रकार की औषधि खिलाने की अपेक्षा सुँघाना बहुत लाभदायक है । उनके अनुसार मेदे के अतिरिक्त जिह्वा और मुँह में ऐसे भाग हैं, जो ओषधि के प्रभाव को बड़ी शीघ्रता से ग्रहण करते हैं इसके अलावा नाक का भीतरी भाग ओषधि के गुण से अति शीघ्र प्रभावान्वित हो जाता है । ओषधि का सबसे अधिक प्रभाव सूँघने और श्वास लेने से होता है ।

प्रोफेसर मैक्समूलर फिजिकल रिलीजन में लिखते हैं कि सुगन्धयुक्त पदार्थों के आग में जलाने से अनेक प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं । आगे वे लिखते हैं, कि स्काटलैंड, आयरलैंड, दक्षिणी अमेरिका में महामारी जैसे रोग को दूर करने के लिए यह प्रथा प्रचलित रह चुकी है । जापान और चीन में होम को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

धोम कहते हैं और नित्य मन्दिरों में घृत के साथ सुगन्धित द्रव्य जलाकर भयंकर रोग दूर किये जाते हैं । जर्मनी में लवेन्डरी बत्ती जलाई जाती है । ईरान के पारसी लोग हवन यज्ञ को हिन्दुओं की तरह बड़ी उत्तमता से करते हैं । जर्नल किङ्ग आई० एम० एस० सेनेटरी कमिश्नर मद्रास ने "ब्यूबोनिक प्लेग" नाम की पुस्तक में लिखा है- "सुगन्धयुक्त रोगनाशक औषधियों के जलाने से महामारी प्लेग और अनेक प्रकार के विषयुक्त रोग दूर हो जाते हैं । इस प्रकार के हवन की क्रिया मेडीकल साइन्स के सर्वथा अनुकूल है । इसकी भूमिका डब्लू० एम० टैफकिन ने लिखी है । उन्होंने अनेकों प्रमाण देकर इस यज्ञ की क्रिया को प्रमाणित किया है ।

हवन करने से सुगन्धि फैलती है, जिसकी साक्षी प्रत्येक नासिका रखने वाला नीरोग मनुष्य दे सकता है, इस सुगन्धि के कारण वायु में "आक्सीजन" तथा ओजोन भर जाता है, जिसको पश्चिमी डाक्टरों की भाषा में ओजून कहा गया है उसको संस्कृत भाषा में सुगन्धित वायु अथवा शुद्ध वायु कहते हैं और 'आक्सीजन गैस' का 'प्राणवायु' नाम है । अत: यज्ञ में यजन किये जाने वाले पदार्थों का सेवन करने में ये भी दृष्टि रखी जानी चाहिए कि वे सुगन्धित हों । यों तो सुगन्धि प्राकृतिक रूप में भी उनसे निकलती ही रहती है किन्तु अग्नि द्वारा सूक्ष्मीकृत करने पर तो यह सुगन्धि बहुत अधिक फैल जाती है । सुगन्ध के रोग निवारक तथा स्वास्थ्य सम्बर्धक गुणों की चर्चा अनेक चिकित्सा पद्धतियों में मिलती हैं ।

ईसा से लगभग साढ़े चार हजार वर्ष पूर्व प्राचीन अरब में एक ऐसी चिकित्सा पद्धति प्रचलित थी जो पूर्ण रूप से सुगन्ध द्वारा उपचार करने पर आधारित थी । एनसाइक्लोपीडिया ऑफ आल्टरनेटिव मेडीसिन एण्ड सेल्फ हेल्प में ऐसी पद्धतियों का विवरण विस्तारपूर्वक दिया है । तिब्बत तथा चीन की परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों में सुगन्ध द्वारा चिकित्सा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । आयुर्वेदिक भैषज में प्रत्येक द्रव्य गुणों में रस का वर्णन है । रस का तात्पर्य उस पदार्थ के स्वाद तथा उसकी सुगन्ध से है ।

सामान्यतया हर व्यक्ति अपने प्रतिदिन के जीवन में सुगन्धित पदार्थों का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहता है । मनुष्य की प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि वह अच्छी सुगन्ध को सूँघकर अपने को प्रसन्न व शान्त अनुभव करता है । इसी आधार पर विभिन्न धार्मिक कृत्यों में सुगन्धित द्रव्यों का विशेष स्थान दिया गया है । कुछ सुगन्धें ऐसी भी हैं जिन्हें सूँघने पर व्यक्ति कामोत्तेजना अनुभव करता है । इनका प्रयोग विश्व के कितने ही वर्ग समुदायों में इस प्रयोजन के लिए प्रचलित है । कुछ गंध ऐसी भी हैं जो तीव्र व उत्तेजक होती हैं । नौसादर व अमोनिया आदि सुँघाकर किसी भी अचेत व्यक्ति को सचेत करने के उपाय का उल्लेख लगभग हर चिकित्सा पद्धति में मिलता ।

बीसवीं शताब्दी में फ्रांस में सुगन्ध द्वारा चिकित्सा किये जाने पर आधुनिकतम पद्धति से विस्तृत खोजें हुयी हैं । श्रीमती मागुरेट मोरी ने "दि सीक्रेट ऑफ लाइफ एण्ड यूथ" नामक पुस्तक प्रकाशित की । उनके मतानुसार सुगन्ध चिकित्सा द्वारा बुढ़ापा रोका जा सकता है । श्री रॉबर्ट बी०टिमरेड ने 'दि आर्ट ऑफ एरोमा थेरेपी' नामक पुस्तक इन्हीं दिनों प्रकाशित की है जिनमें अनेकों रोगों में सुगन्ध द्वारा चिकित्सा का प्रतिपादन किया है । जिन रोगों में सुगन्ध चिकित्सा विशेष लाभकारी सिद्ध हुयी है वे हैं मुँहासे झुर्रियाँ, सिबोरिया, चमड़ी के अनेक रोग, रक्त अभिसरण की शिथिलता, मोटापा, मांस-पेशियों की कमजोरी, रोमेटिज्म, साइन्यूसाइटिस तथा मानसिक उदासी ।

इन लेखकों के अनुसार सुगन्ध चिकित्सा के सफल होने का कारण यह है कि सुगन्धित पदार्थों में पौधों की ऊर्जा अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में विद्यमान होती है तथा सुगन्धित पदार्थों (ऐरोमेटिक इसेन्शियल आयल) उनका सार तत्व कहे जा सकते हैं और यही कारण है कि वे शरीर का पुनरुद्धार करने में समर्थ हैं । प्रसिद्ध भौतिकविद् रोमाने के अनुसार तो 'एक सुगन्धित अणु ही जीवित हार्मोन कहा जा सकता है ।'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रासायनिक दृष्टि से सुगन्धित पदार्थ वाष्पशील प्रकृति के होते हैं और इसी कारण वे बहुत सूक्ष्म मात्राओं में अपने आसपास के वातावरण में विस्तृत होते रहते हैं तथा श्वास द्वारा नाक की श्लेष्मा झिल्ली पर अपना प्रभाव डालते हैं । पौधों में पाये जाने वाले सुगन्धित पदार्थ उनके फूलों, तने, पत्तियों आदि में पाये जाते हैं । अधिकतर ये पदार्थ उत्पत तेल (एसेंशियल ऑयल) तथा 'रेजिन' प्रकृति के होते हैं । किसी भी पदार्थ की सुगन्ध उसमें विद्यमान मुक्त इलेक्ट्रानों पर आधारित होती है । मुक्त होने के कारण ये इलेक्ट्रान रासायनिक दृष्टि से बहुत सक्रिय होते हैं तथा अपना प्रभाव तुरन्त दिखाते हैं ।

उत्पत तेल शरीर में श्वास मार्ग के अतिरिक्त त्वचा में भी प्रवेश कर सकते हैं । त्वचा तथा अन्य ऊतकों में ये अपना प्रभाव रासायनिक सक्रियता के कारण दिखाते हैं । त्वचा तथा अन्य ऊतकों पर उतपत तैलों के सीधे रासायनिक प्रभाव का विशद वर्णन भी उपलब्ध है । शरीर की सूक्ष्म क्रिया प्रणाली पर उत्पत तैल व्यापक प्रभाव डालते देखे गये हैं। इनकी बहुत स्वल्प मात्रा भी लाभकारी होती है ।

सीधे भैषजीय प्रभाव के अतिरिक्त सुगन्धित पदार्थ का गन्ध तथा मस्तिष्क के माध्यम से होने वाला प्रभाव कहीं अधिक लाभकारी है । इस माध्यम से काम करने पर ये पदार्थ मनुष्य के शरीर और मन दोनों पर प्रभाव डालते हैं तथा भावनाओं को विशेष रूप से उल्लसित करते हैं ।

सभी जानते हैं कि दुर्गन्ध से सिर चकराने लगता है, कुरुचि उत्पन्न होती है और जी मिचलाने लगता है । लोग उससे बचना और हटना चाहते हैं । इसी प्रकार सुगन्धित वातावरण वाली पुष्प वाटिकाओं में-बाग-बागीचों में बैठने-टहलने से सभी को प्रसन्नता होती है । भौरे-तितलियाँ, कोयल जैसे प्राणी तो गन्ध-विभोर होकर उन्मत्त जैसे बन जाते हैं ।

देव-प्रयोजनों में सुगन्धित पूजा-उपचार सामग्री की भरमार रहती है । पुष्प, धूप, दीप, चन्दन कुमकुम आदि सभी देवस्थानों में प्रयुक्त होते हैं । स्वागत-समारोहों में इत्र, गुलाब जल आदि का खुलकर उपयोग होता है । मेले-उपहारों में हार - गुलदस्ते से लेकर, इत्र आदि भेंट करने की प्रथा है । पान-सुपाड़ी, लौंग-इलायची, सौफ, आदि मुखवास भी सुगन्ध प्रधान होते हैं ।

इस प्रचलन के पीछे विलासिता भी समझी जा सकती है किन्तु साथ ही उनके पीछे यह रहस्य भी है कि विभिन्न गन्धों के विभिन्न प्रभाव शरीर पर मुख्यतया मस्तिष्क पर पड़ते हैं । इतना ही नहीं कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोगों के निवारण की दृष्टि से भी उनकी उपयोगिता पाई गई है । औषधियों में जहाँ उनके रासायनिक पदार्थों की प्रभाव-शक्ति काम करती है वहाँ जड़ी-बूटियों, वृक्ष-वनस्पतियों के माध्यम से चिकित्सा करने वाले, ओषधि निर्धारण के समय उसमें रहने वाले रासायनिक पदार्थों की विशेषता एवं मात्रा का ध्यान रखते हैं, वरन् यह भी देखते हैं कि उस नुस्खे में रोगी के लिए आवश्यक गन्ध भी उसमें है या नहीं ।

यज्ञ प्रक्रिया से अनेकानेक भौतिक और आध्यात्मिक लाभ हैं । उन्हीं में से एक यह भी है कि सम्पर्क में आने वालों की शारीरिक -मानसिक आधि-व्याधियों का भी निराकरण हो सके । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए ही हविष्य निर्धारित किये जाते हैं । यजन सामग्री में रहने वाले पदार्थों का चयन करते समय उनकी सूक्ष्म-शक्ति के अतिरिक्त यह भी देखा जाता है कि उस सामग्री में उपयोगी सुगन्धित पदार्थ का तत्व है या नहीं । यह सुगन्धित तत्व भी यजनकर्ताओं के शरीर में प्रवेश करते हैं और उन्हें अन्य सत्परिणामों की तरह समान आरोग्य प्रदान करते हैं । इस संदर्भ में ६-७ अप्रैल सन् १९५५ ई० के अँग्रेजी पत्र लीडर में "न्यू क्योर फार टी० बी० आफ लँग्स शीर्षक से समाचार छपा है, जिसका साराँश यह है -

"बम्बई में एक अमेरिकन डाक्टर ने यह बताया है कि वैज्ञानिक लोग कई शताब्दियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

से इस बात की खोज में लगे थे कि सूँघने की गैस से फेंफड़े की टी० बी० को अच्छा किया जावे । अब हम लोग उस खोज में सफल हो गये हैं और अमरीका में इसका परिणाम सब चिकित्साओं की अपेक्षा असाधारण तौर पर अच्छा रहा है । गैस सूँघने से धीरे-धीरे रोगी बिल्कुल अच्छा होता है । इसका अर्थ यह है कि आज अमरीका भी इस यज्ञ की साइन्स को सब चिकित्साओं से बेहतर मानने लगा है, यद्यपि अभी उसे यह पता नहीं कि सूँघने में किस ओषधि का कौन सा ढङ्ग सबसे उत्तम है ।

यज्ञ में हवन किये हुए सुगन्धित पदार्थो से वातावरण में सुगन्ध के जो सूक्ष्म अणु विखर जाते हैं, उनका असाधारण प्रभाव वृक्ष-वनस्पतियों, अन्न, और यहाँ तक कि मिट्टी पर भी पड़ता है । शास्त्रों में कहा गया है :-

जिस प्रकार शरीर में पाप, आलस्य, विषय विकार, रोग आदि भरे रहते हैं और मन को मल आवरण विक्षेप एवं कशाय कल्मष दूषित करके उन्हें विकृत परिस्थितियों में डाले रहते हैं उसी प्रकार तामसी-आसुरी तक वनस्पति अन्न, फल आदि में प्रवेश कर जाते हैं । उन्हें खाने में पशु और मनुष्यों की प्रवृत्तियाँ दुष्ट हो जाती हैं । पशुओं के दुग्ध घृत आदि द्वारा वही वनस्पतियों के दूषण मनुष्यों को प्रभावित करते हैं वैसे भी अन्न, शाक आदि लोग खाते ही हैं । सूक्ष्म वातावरण का प्रभाव इस वनस्पति आहार को दूषित करके मनुष्यों के अन्तःकरण चतुष्टय में दुष्प्रवृत्तियाँ भर देता है और लोग अनायास ही कष्ट क्लेशों से भरे शोक सन्तापों में फँसते चले जाते हैं । इस तथ्य को शतपथ ब्राह्मण में इस प्रकार कहा गया है -

ततोऽसुरा उभयीरोषधीर्याश्च मनुष्या उपजीवन्ति याश्च पशवः कृत्ययेव त्वत् विषेणेव त्वत् प्रतिलिलिपु : उतैवं चिदेवानाभि - भवेमेति, ततो न मनुष्या आशुर्न पशव आलिलिशिरे ताहेमाः प्रजा अनाशकेन नोत्पराबभबु : । -. . . . . ते देवा होचुर्हन्तेद मासामपिजिघांसामेति, केनेति ? यज्ञे नैवेति - ।

-शतपथ २। ४,३।२-२

असुरों ने उन समस्त औषधियों को मारक तत्व अथषा विष से मानों लिप्त कर दिया, जिसका उपयोग कर समस्त मानव व पशु अपना जीवन निर्वाह करते हैं, ऐसा करके उन्होंने यह सोचा, कि इस प्रकार हम देवों को परास्त कर लेंगे, पर उन औषधियों को उस अवस्था में पशुओं ने न चुगा, उनका उपयोग न करने से समस्त प्रजा असुरों द्वारा पराजित न की जा सकी ।

इस अन्न वनस्पतियों में प्रविष्ट हुई स्थूल और सूक्ष्म असुरता की विकृति रुग्णता एवं दुष्टता का शमन करने के लिए यज्ञ अमोघ उपाय है । जिस प्रकार रुग्ण शरीर की चिकित्सा ओषधियों से और विकृत मन की चिकित्सा सत्सङ्ग समाधान से होती है उसी प्रकार इस वनस्पति जगत में प्रविष्ट हुई अवांछनीयता का निराकरण यज्ञ करता है । रक्त शोधक ओषधियों की तरह या विधान को भी बनस्पति जगत की शुद्धि और परिपुष्टि का आधार कहा गया है । शतपथ ब्राह्मण ने इस रहस्य का उल्लेख इस प्रकार किया ।

पृथ्वी का विषय गन्ध है । पृथ्वी सदा वायु से गन्धों का शोषण करके वायु को निर्गन्ध किया करती है । पृथ्वी के विकार रूप पशु, मनुष्य, वृक्षादि स्थिर अथवा चंचल वायु की गन्ध सदा खींचते रहते हैं । सुगन्ध वायु कुछ मीलों तक चलने पर स्वयं निर्गन्ध हो जाती है । गन्ध से भारी होने के कारण यह सदा पृथ्वी के धरातल पर ही बहता है । ऊपर आकाश की सूक्ष्म वायु निर्गन्ध होता है । इस प्रकार यज्ञ में हवन द्वारा बने अभीष्ट फलों के कारण बीजरूप वाष्प, धुँआ या गन्ध को यज्ञ प्रदेश वाली पृथ्वी शोषण कर लेती है । पुनः अभीष्ट अन्न, फल, दुग्ध, सुख, प्रसाद आदि उत्पन्न कर उस प्रदेश को अर्पण करता है ।

एतेन वै तज्ञेनेष्ट वोभयीनामोषधीनां याश्च मनुष्या उपजीवन्तियाश्च पशवः कृत्यामिव त्वत् विषमिवत्वत् उपजघ्नु तत आश्न मनुष्या आलिशन्त पशवः ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस यज्ञ द्वारा ही उन समस्त ओषधियों के स्वास्थ्यनाशक विष-प्रभाव को नष्ट कर दिया गया, जिनका उपयोग मनुष्य अथवा पशु करते हैं, परिणामस्वरूप मनुष्य उन अन्न आदि ओषधियों का उपयोग करने लगे और पशु भी चुगने लगे । यज्ञ के द्वारा वायु अथवा वातावरण को शुद्धि के लिए इससे अधिक और किस प्रमाण की आवश्यकता है ।

एक सशक्त वैकल्पिक उपचार पद्धति-यज्ञोपैथी

यज्ञ चिकित्सा इतनी सरल और उपयोगी है कि उनके आधार पर मारक और पोषक दोनों ही तत्वों को शरीर में आसानी से पहुँचाया जा सकता है । यों यज्ञ विज्ञान के अनेक पक्ष हैं । इनमें एक रोगोपचार भी है । मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य की अभिवृद्धि के साथ-साथ शारीरिक रोगों के निवारण में भी उससे ठोस सहायता मिलती हैं ।

ओषधि उपचार में शरीर के विभिन्न अवयवों तक पदार्थ को पहुँचाने का माध्यम रक्त है । रक्त यदि दूषित निर्बल हो तो यह प्रेषित उपचार पदार्थ का ठीक तरह परिवहन नहीं कर सकता । फिर एक कठिनाई और भी है कि रक्त में रहने वाले स्वास्थ्य प्रहरी-श्वेत कण किसी विजातीय पदार्थ को सहन नहीं करते उससे लड़ने-मरने को उधार खाये बैठे रहते हैं । औषधि जब तक रोग कीटाणुओं पर आक्रमण करने की स्थिति तक पहुँचे तब तक उसे इन स्वास्थ्य प्रहरियों से ही महाभारत करना पड़ता है । बीमारी पर आक्रमण होने पर प्रयुक्त ओषधि और स्वास्थ्य कण ही आपस में भिड़ जाते हैं और यह नया विग्रह और खड़ा हो जाता है । पेट की पाचन क्रिया रक्त में उन्हीं पदार्थों को सम्मिलित होने देती है जो शरीर संरचना के साथ तालमेल खाते हैं । इसके अतिरिक्त जो बच जाता है वह विजातीय कहा जाता है और उसे मल, मूत्र स्वेद, कफ आदि के द्वारा निकाल बाहर किया जाता रहता है । इस पद्धति को देखते हुए यह भी एक अति जटिल कार्य है कि औषधियों में रहने वाले रसायन किस प्रकार विषाणुओं तक पहुँचे और किस तरह वहाँ जाकर अपना निवारक उपक्रम आंरभ करके उसे सफलता के स्तर तक पहुँचायें ।

इस कठिनाई का हल यज्ञ प्रक्रिया के चिकित्सा के लिए प्रयुक्त करने पर सहज ही संभव हो जाता है । औषधि को पेट में पच कर रक्त में मिलकर श्वेतप्रहरियों से लड़ने के उपरांत पीड़ित स्थान तक पहुँचने की लंबी मंजिल पार नहीं करनी पड़ती । वरन् इस सारे जंजाल से बचकर एक नया ही रास्ता उसे मिल जाता है । शरीर शास्त्र के विद्यार्थी जानते हैं कि मात्र रक्त ही जीव कोशों की खुराक पूरी नहीं करता वरन् आहार सांस द्वारा भी शरीर में पहुँचता है और वह इतना महत्वपूर्ण होता है कि उसकी गरिमा मुँह द्वारा खाये और पेट द्वारा पचाये गये आहार की तुलना में किसी भी प्रकार कम नहीं होती । रक्त की भाँति प्राणवायु भी आक्सीजन के रूप में समस्त शरीर में परिभ्रमण करती है । पोषण पहुँचाने और गंदगी को बुहारने में उसका बहुत बड़ा हाथ है । दृश्य रूप से जो कार्य पाचन और रक्ताभिसरण पद्धति से होता है अदृश्य रूप से वही सारा कार्य श्वासोच्छ्वास क्रिया द्वारा भी संपन्न होता है । यह दोनों ही पद्धतियाँ मिलकर दो पहियों की गाड़ी की तरह जीवन रथ को गतिशील बनाये रहती हैं ।

स्वास्थ्य सुधार और रोग निवारण की आवश्यकता को पूरा करने के लिये श्वासोच्छ्वास प्रक्रिया को अवलंबन बनाने पर उससे कहीं अधिक लाभ उठाया जा सकता है जो रक्ताभिसरण पद्धति से आमतौर पर काम में लाया जाता है । यह कार्य यज्ञ-चिकित्सा द्वारा संपन्न होता है । इस माध्यम से न केवल विषाणुओं से सफलता पूर्वक संघर्ष संभव हो सकता है वरन् पोषण की आवश्यकता भी पूरी हो सकती है । यज्ञ द्वारा वायु भूत बनाई गई ओषधियाँ सूक्ष्मता की दृष्टि से इस स्तर पर पहुँच सकती हैं कि विषाणुओं से भी सूक्ष्म होने की विशेषता के कारण उन पर आक्रमण करके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सरलता पूर्वक परास्त कर सकें । पाचन, परिवहन और प्रहरियों से उलझनें जैसे झंझट इस मार्ग में नहीं हैं और विलय का अवरोध भी नहीं है । साँस द्वारा अभीष्ट पदार्थों को शरीर के अंतरंग किसी भी अंग अवयव तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है । इस चिकित्सा सिद्धांत के अनुसार विषाणुओं का मारण जितना आवश्यक समझा जाता है उससे कहीं अधिक स्वस्थ कोशिकाओं में समर्थता की अभिवृद्धि आवश्यक है । सामान्यतया रोगोपचार का एक पक्ष जहाँ विषाणुओं को मारना होता है वहीं दुर्बलता को दूर कर सबलता का परिपोषण करना भी होता है । आधुनिक चिकित्सा पद्धति का सारा ध्यान संहार उपचार पर ही केन्द्रित रहता है । यह एकांगीपन जब तक दूर नहीं किया जायगा तब तक चिकित्सा प्रक्रिया अधूरी ही बनी रहेगी ।

यज्ञ चिकित्सा में ये दोनों ही विशेषताएँ विद्यमान हैं । उसके माध्यम से उपयोगी रासायनिक पदार्थों को इतना सूक्ष्म बना दिया जाता है कि इस कारण वे अपने-अपने उपयुक्त प्रयोजनों को पूरा कर सकें । अणुओं में पाया जाने वाला चुम्बकत्व अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिये वातावरण में से अभीष्ट मात्रा अनायास ही ग्रहण करता रहता है । यज्ञ प्रक्रिया के सहारे वायु भूत रासायनिक पदार्थ शरीर संस्थान के समस्त भीत्तरी अवयवों में अनायास ही जा पहुँचते और स्थानीय जीवाणुओं की आवश्यकता पूरी करते हैं । पेड़ आकाश में परिभ्रमण करने वाले बादलों को अपनी ओर खींचते हैं । घास की पत्तियाँ हवा में रहने वाले जलांश को अपने ऊपर ओस के रूप मे बरसा लेती हैं । सशक्त वायुभूत रसायन जब शरीर के भीतर पहुँचता है तो वहाँ की आवश्यकता सहज ही पूरी होने लगती हैं ।

प्रकृति एक ओर तो वस्तुओं का परिवर्तन करने के लिये विनाश व्यवस्था चलाती है और दूसरी ओर अनावश्यक क्षरण रोकने और क्षतिपूर्ति के साधन भी जुटाती है । इस संतुलन के आधार पर सृष्टि क्रम चल रहा है अन्यथा विनाश या विकास में से एक के अत्यधिक उग्र हो जाने पर एकांगी स्थिति बन जाती और असंतुलन की अराजकता दिखाई देती है । रोग कीटक जिस प्रकार स्वस्थ जीवाणुओं पर आक्रमण करते हैं उसी प्रकार उन्हें भी नियंत्रित करने के लिये वातावरण में आवश्यक तत्व बने रहते हैं । यज्ञ द्वारा उत्पन्न विशेष गैस के सूक्ष्माणुओं में यह विशेषता रहती है कि वे रोग कीटकों पर नभसेना की तरह बरस पड़ें । रक्त के श्वेत कण जहाँ भूमि गत लड़ाई लड़ते और आमने-सामने की गुत्थम-गुत्था करते हैं, वहाँ यज्ञ की वायु, नभ मार्ग से बम गिराने की तरह शत्रु सेना को निरस्त करती है । यह उपचार प्राकृतिक परंपरा के अनुसार स्वत: ही संपन्न होता है । मनुष्यकृत उपायों का इसमें न्यूनतम भाग ही रहता है । जीवाणुओं की दुर्बलता के अंतराल में एक पुकार रहती है - परिपोषण प्राप्त करने की । बच्चा रोकर माता का ध्यान आकर्षित करता है और उससे अपनी क्षुधा के लिये पयपान का अनुदान प्राप्त कर लेता है । ठीक इसी प्रकार दुर्बलता ग्रस्त जीवाणु अपने लिए समर्थ परिपोषण की याचना करते हैं । इसकी पूर्ति वे रासायनिक पदार्थ करते हैं जो यज्ञ प्रक्रिया द्वारा वायुभूत होकर जीवाणुओं के निकट जा पहुँचते हैं । इस प्रकार सफाई और परिपोषण के ध्वंस और निर्माण के दोनों ही प्रयोजन यज्ञ वायु के द्वारा पूरे होने लगते हैं और अस्वस्थता का बहुत हद तक समाधान हो जाता है । सूक्ष्म जगत की क्षमताएँ विलक्षण हैं । लाख हस्तकौशल अपनाया जाय अथवा कैसे भी यंत्रों की सहायता ली जाय पर फूलों से शहद पृथक् नहीं किया जा सकता किंतु वही काम मधुमक्खी अपनी विशिष्ट क्षमता द्वारा बड़ी आसानी से कर लेती है । जीवाणुओं में यह विशेषता है कि यदि आसपास के वातावरण में आवश्यक तत्व मौजूद हों तो वे पोषण एवं संरक्षण की आवश्यक सामग्री स्वयमेव खींच लेते हैं । सामान्य वायु जो साँस द्वारा ग्रहण की जाती है उसमें सामान्य जीवन संचार बनाये रहने के कितने ही पदार्थ रहते हैं । रोगी की आवश्यकताएँ विशेष प्रकार की होती है । उसे विशेष मात्रा में विशेष पदार्थ चाहिए इनकी पूर्ति यदि विशिष्ट धूम्र द्वारा यज्ञविधि से की जा

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सके तो रोगोपचार का मूल उद्देश्य पूरा हो जाता है । इसे भैषज्य यज्ञ कहते हैं ।

विष कीटकों को मारने के लिए अनेकानेक विशेषताओं से युक्त औषधियाँ निरंतर बनती और बढ़ती चली जा रही हैं । यह सभी ऐसी हैं जो प्रत्यक्ष स्पर्श के उपरांत ही अपना प्रभाव आरम्भ करती हैं इससे भी सरल तरीका यह है कि औषधीय पदार्थों को वायुभूत बनाकर वहाँ पहुँचा दिया जाय जहाँ संशोधन की आवश्यकता है । संभवतः भारतीय परंपरा में मृत शरीर को जलाने के पीछे यह दृष्टि भी रही होगी कि निर्जीव काया में उत्पन्न होने वाली सड़न से वातावरण को विषाक्त होने से रोकने के लिए उसे अग्नि संस्कार द्वारा समाप्त किया जाय ।

सामान्य स्वास्थ्य संवर्धन के लिये यज्ञाग्नि द्वारा वायुभूत बनाये गए पदार्थों का सेवन, मुँह द्वारा खाये गये और पेट द्वारा पचाये गये पौष्टिक पदार्थों की तुलना में कहीं अधिक लाभदायक सिद्ध होता है । इस प्रकार बीमारियों से लड़ने वाली जीवन शक्ति को बढ़ाने तथा विषाणुओं के आक्रमण को निरस्त करने में भी यज्ञ-अग्निहोत्र का सफल उपयोग हो सकता है ।

यज्ञ में रोग निरोधक शक्ति है । उससे प्रभावित शरीरों पर सहज रोगों के आक्रमण नहीं होते । यज्ञाग्नि में जो जड़ी-बूटी, शाकल्य, आदि होमे जाते हैं वे अदृश्य तो हो जाते हैं पर नष्ट नहीं होते । सूक्ष्म बन कर वह वायु में मिल जाते हैं और व्यापक क्षेत्र में फैलकर रोगकारक कीटाणुओं का संहार करने लगते हैं । यज्ञ धूम की इस शक्ति को प्राचीन काल में भली प्रकार परखा गया था । इसके उल्लेख शास्त्रों में स्थान-स्थान पर उपलब्ध होते हैं । जैसे यजुर्वेद २-२५ में कहा गया है अग्नि में प्रक्षिप्त जो रोगनाशक, पुष्टि प्रदायक और जलादि संशोधक हवन सामग्री है, वह भस्म होकर वायु द्वारा बहुत दूर तक पहुँचती है और वहाँ पहुँचकर रोगादिजनक घटकों को नष्ट कर देती है । इसी तरह अथर्ववेद १/८ में कहा गया है- "अग्नि में डाली हुई यह हवि रोग कृमियों को उसी प्रकार दूर बहा ले जाती है, जिस प्रकार नदी पानी के झागों को । यह गुप्त से गुप्त स्थानों में छिपे हुए घातक रोग कारक जीवाणुओं को नष्ट कर देती है । तपेदिक जैसी जानलेवा बीमारियों की चिकित्सा यज्ञोपचार से किये जाने का उल्लेख चरक चि० स्थान अ० ८ श्लोक १२ में भी मिलता है । इस तथ्य की पुष्टि अब अनुसंधान कर्ता चिकित्सा वैज्ञानिकों ने भी कर दी है । रसायन शास्त्र के फ्रान्सीसी विज्ञान वेत्ता डाक्टर त्रिले ने 'अग्नि और धुऐं का वायु पर क्या प्रभाव पड़ता है इस सम्बन्ध में गहरी शोध की है । उन्होंने विभिन्न पदार्थों के जलाने से उत्पन्न धूमों के गुण दोषों की जांच करके पता लगाया है कि कतिपय वस्तुएँ ऐसी है जो अपने साधारण रूप की अपेक्षा जलने पर कहीं अधिक लाभदायक बन जाती हैं । उनका कहना है कि शक्कर जलाने 'फार्मिक एल्डीहाइड' नामक गैस बनती है जो वायु में छाये हुए हैजा, महामारी, क्षय, चेचक आदि के रोग कीटाणुओं को नष्ट करती है । गन्ने की साधारण खांड की अपेक्षा मुनक्का, छुहारा, किशमिश आदि मधुर पदार्थों से जो गैस उत्पन्न होती है उसमें कृमिनाश के अतिरिक्त पोषण का भी विशेष गुण है ।

इस संदर्भ में प्रसिद्ध चिकित्सा विज्ञानी डा० कुन्दनलाल अग्निहोत्री ने अपनी खोजपूर्ण कृति 'यज्ञ- चिकित्सा' में लिखा है-

(१) सब विद्वान जानते हैं कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक शक्तिशाली होता है तथा सूक्ष्म-सूक्ष्म में प्रवेश कर सकता है । आटे में मिले हुए बूरे के सूक्ष्म परमाणु पृथक करने को मनुष्य की स्थूल उङ्गलियाँ असमर्थ हैं पर चींटी का सूक्ष्म मुँह उसे सुगमता से प्रथक् कर सकता है । सोने का एक छोटा टुकड़ा मनुष्य खाले तो उस पर कोई प्रभाव न होगा पर उसी टुकड़े को सूक्ष्म करके वर्क बनाकर खावें तो प्रथम दिन से ही उसकी गर्मी अनुभव होगी और कुछ समय में चेहरे पर लाली और शरीर में शक्ति आ जावेगी ।

होम्योपैथिक चिकित्सा विधि से इसी नियम के आधार पर ओषधियों की प्रोटेन्सी तैयार की जाती है और ओषधि का भाग जितना सूक्ष्म होता जाता है उतनी ही उसकी शक्ति बढ़ती जाती है, यहाँ तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि जो ओषधि स्थूल रूप में दिन में बार-बार खाने से साधारण रोग दूर कर सकती है, वही औषधि बहुत सूक्ष्म रूप में केवल एक मात्रा खाने से बड़े-बड़े रोगों को दूर कर देती है ।

इस नियम पर दृष्टि रखते हुए विचार कीजिए कि क्षय कीटाणु की लम्बाई १ । १५००० इंच और चौड़ाई १ । १५००० इंच होती है इतनी सूक्ष्म चीज पर बड़े कण वाली औषधियों की पहुँच जब न हुई तब वैज्ञानिकों ने उसका सूक्ष्म रूप करने को इन्जेक्शन की प्रथा चलाई, पर यह सब जानते हैं कि अग्नि से अधिक पदार्थों को सूक्ष्म और कोई ढङ्ग नहीं कर सकता । हम नित्य ही देखते हैं कि एक लाल मिर्च को, घोंटने लगें तो पास बैठे अनेक लोगों को खाँसी आने लगेगी । अब यदि उसी मिर्च को आग में डाल दें तो उसकी धाँस का प्रभाव दूर-दूर तक बैठे मनुष्यों पर हो जावेगा । इसी प्रकार हवन-यज्ञ में डाली ओषधियों के परमाणु बहुत बारीक होकर श्वास द्वारा सीधे फेफड़ों में जाकर रोग-कृमियों को मारते और क्षतों को भरते हैं और रोम-छिद्रों द्वारा सीधे रक्त में प्रवेश करके रक्त को शुद्ध कर देते हैं । इसके वैज्ञानिक परीक्षण किये गये तो ज्ञात हुआ कि लौंग, जायफल जलाने पर गैस में तेलों के परमाणु १ । १०००० से १ । १००००००० तक सेन्टीमीटर तक व्यास वाले पाये गये । अत:यह रोग-कृमि से अधिक सूक्ष्म होने के कारण सुगमता से उनके भीतर प्रवेश कर सकते हैं और अपने वैज्ञानिक गुण के कारण उनको मार सकते हैं।

(२) यह पदार्थ विद्या से सिद्ध हो चुका है कि किसी पदार्थ का नाश नहीं होता केवल रूप बदल जाता है । अत: अग्नि में हवि जलाने से उसके परमाणु ही सूक्ष्म हो जाते हैं, उसका नाश नहीं होता । गूगल, घी, कपूर इत्यादि क्षत भरने का कार्य नही ले सकते पर अग्नि में जलाकर उनके सूक्ष्म परमाणु सुगमता और सरलता से फेफड़ों में पहुँचा सकते हैं ।

(३) यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के प्रथम मन्त्र में संसार को 'जगत्याम् जगत्' बताकर इस सिद्धान्त का ज्ञान प्रभु ने कराया है कि जगत् का प्रत्येक परमाणु गतिशील है । आज के वैज्ञानिक भी परीक्षण के पश्चात् इस सिद्धान्त को सत्य स्वीकार करते हैं और साथ ही यह भी बताते हैं कि यह गति ऊट-पटांग नहीं, किन्तु किसी नियम में बँधी हुई हैं । प्रत्येक परमाणु की गति एक सी नहीं होती । किंतु कहीं की गति एक समान होती है और कहीं की एक दूसरे के विपरीत । दो समान वस्तुयें एक दूसरे को अपनी ओर खींचती हैं और दो विरुद्ध वस्तुयें एक दूसरे को भगाती हैं, अत: जिन दो वस्तुओं के परमाणु एक-सी गति करते हैं उनमें परस्पर आकर्षण होता है और विरुद्ध गति वाले परस्पर एक दूसरे को भगाते हैं ।

इस नियम के आधार पर जो लोग शरीर में सड़न उत्पन्न करने वाले पदार्थ, मांस, तम्बाकू इत्यादि प्रयोग करते हैं उनके निकट जब क्षय कीटाणु पहुँचते हैं तो समानता के कारण उनका शरीर अपनी ओर उन्हें खींच लेता है । पर जो लौंग, गूगल, घी इत्यादि क्षयनाशक पदार्थों से हवन यज्ञ करके उनके सूक्ष्म परमाणु अपने शरीर में रखते हैं तो जब क्षय-कीटाणु उनके निकट आते हैं तब विरुद्ध गति होने के कारण वह दूर भाग जाते हैं । इसी कारण नित्यप्रति नियमपूर्वक यज्ञ करने वाले को कभी क्षय रोग नहीं हो सकता ।

(४) क्षय के सब विशेषज्ञ डाक्टर इस बात को स्वीकार करते हैं कि क्षय रोगी को अधिक मात्रा में ओषजनयुक्त वायु की आवश्यकता होती है । इसी कारण असाध्य रोगी को भी पहाड़ पर जाने की सम्मति दी जाती है और बहुत असाध्य दीखने वाले रोगी भी इस प्राकृतिक ढङ्ग से अच्छे भी हो जाते हैं, क्योंकि ओषजन फेफड़ों के और आंतों के क्षतों को शीघ्र सुखाने की शक्ति रखता है । साथ ही ओषजन की रगड़ से शरीर में अग्नि उत्पन्न होकर पाचन शक्ति को बढ़ाती है, जो क्षय रोगी में न्यून हो जाती है । इस ओषजन का एक सूक्ष्म भाग ओजोन होता है, जो बहुत धीमी सुगन्ध से शरीर में प्राण शक्ति का संचार करता है । जिस पहाड़ पर चीड़ के वृक्ष अधिक होते हैं उस पर ओजोन का यह भाग अधिक पाया जाता है । वैज्ञानिक ढङ्ग से परीक्षण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करके देख लिया गया हैं कि हवन-गैस में ओजोन का यह भाग बड़ी मात्रा में पाया जाता है ।

संसार के समस्त वैज्ञानिकों के पास कोई ऐसी ओषधि नहीं है कि जो क्षयरोगी को पौष्टिक पदार्थ अधिक मात्रा में पचा दे, पर हवन यज्ञ में हलवा, लड्डू, खीर, मेवा, घी इत्यादि सभी पदार्थ बड़ी मात्रा में जलाकर उनके सूक्ष्म परमाणु रोगी के रक्त मे पहुँचा सकते हैं जो नाश न होने वाले वैज्ञानिक सिद्धान्त से शरीर में पहुँचकर उसकी प्राणशक्ति को बढ़ावेंगे और अग्नि को मन्द करने के स्थान में अपने ओषजन के गुण से और तीव्र करेंगे । अनुभव से देखा गया है कि जो रात-दिन सुस्त पड़े रहकर मौत की प्रतीक्षा करते थे वही यज्ञ चिकित्सा करने पर कुछ दिनों में उत्साह और शक्ति का प्रदर्शन करने लगे ।

इसके पक्ष में अनेक युक्तियाँ दी जा सकती हैं पर विस्तार में न जाकर हम अब वैज्ञानिकों के कुछ परीक्षण लिखते हैं-

(१) मद्रास के अँग्रेजी राज्य के सिनेटरी कमिश्नर डॉ कर्नल किङ्ग आर० एम० एस० ने वहाँ प्लेग फैलने पर कालेज के विद्यार्थियों को उपदेश दिया कि घी, चावल और केशर मिलाकर जलाने से तुम रोग से सुरक्षित रहोगे ।

(२) फ्राँस के विज्ञानवेत्ता प्रोफेसर टिलवर्ट साहब कहते हैं कि जलती हुई खांड (शक्कर) के धुँए में वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति है । इससे हैजा, तपेदिक, चेचक इत्यादि का विष शीघ्र नष्ट हो जाता है ।

(३) डा० टाटलिट साहब ने मुनक्का, किशमिश इत्यादि सूखे फलों को जलाकर देखा है और मालूम किया हैं कि इनके धुँए से टाइफाइड ज्वर के कीटाणु केवल आधा घण्टे में और दूसरे रोगों के कीटाणु घण्टे-दो घण्टे में समाप्त हो जाते हैं ।

(४) फ्रांस के हेफकिन साहब, जिन्होंने चेचक के टीका का आविष्कार किया है, कहते हैं कि घी जलाने से रोग-कृमि का नाश हो जाता है ।

(५) कविराज पं० सीताराम शास्त्री अपनी पुस्तक में लिखते हैं- मैंने कई वर्षों की चिकित्सा के अनुभव से निश्चय किया है कि जो महारोग ओषधि-भक्षण करने से दूर नहीं होते, वह वेदोक्त यज्ञों द्वारा (अर्थात् यज्ञ-चिकित्सा से) दूर हो जाते हैं ।

(६) बरेली निवासी डॉ० कुन्दनलाल अग्निहोत्री ने अपनी उक्त पुस्तक में लिखा है- "मैं प्रथम २५ वर्ष तक खोज और परीक्षण के पश्चात् अब २६ वर्ष से क्षय-रोग की यज्ञ द्वारा चिकित्सा सैकड़ों रोगियों की कर चुका हूँ । उनमें ऐसे भी रोगी थे, जिनके क्षत (केविटी) कई-कई इंच लम्बे थे और जिनको वर्षों सेनिटोरियम और पहाड़ पर रहने पर भी अन्त में डाक्टरों ने असाध्य बता दिया पर वह यज्ञ-चिकित्सा से पूर्ण नीरोग होकर अब अपना कारोबार कर रहे हैं ।" यज्ञ चिकित्सा की प्रामाणिकता असंदिग्ध है । वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा अब यह सिद्ध हो गया है कि वासा तथा गूगल जैसी ओषधियों के हवन से उत्पन्न ऊर्जा तपेदिक जैसी घातक बीमारियों के जीवाणुओं को नष्ट कर देती हैं । अपराजिता नामक ओषधि के धूम्र ऊर्जा का उपयोग सभी प्रकार के कीटाणुओं-विषाणुओं को शमन करने में प्रयुक्त होता है । इसी प्रकार के गुण नीम नागरमोथा और बच में भी हैं । इनका अधिकतर उपयोग रक्त शोधन एवं व्रण आदि में किया जाता है । इसकी पुष्टि भावप्रकाश नामक प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रंथ में भी की गई है । परीक्षणोपरान्त निष्कर्ष निकाला गया है कि गूगल, लौंग, घी, शर्करा, चन्दनचूरा आदि का नित्य हवन करने वाले साधकों के शरीर में अग्नि तत्व की प्रधानता होती है । फलस्वरूप रोग प्रतिरोधी क्षमता में अभिवृद्धि एवं जीवनीशक्ति का विकास साथ-साथ होता है । इसी तरह जायफल, गूगल आदि का मिश्रण हव्य रूप में प्रयुक्त करने पर जो यज्ञीय ऊर्जा वातावरण में फैलती है, उससे प्राय: सभी प्रकार के रोग कारक जीवाणु-विषाणु नष्ट हो जाते हैं । रासायनिक विश्लेषण की दृष्टि से भी जायफल जावित्री, चंदन, अगर, नागरमोथा जैसे पदार्थों में मनुष्य शरीर में पाये जाने वाले रोगों का निराकरण करने की क्षमता बताई गई हैं। सुगन्धित तेल, गैसों का फेफड़ों की दृढ़ता पर अच्छा प्रभाव पड़ने की बात कही गई है । इसी तरह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अग्निहोत्र से जो प्रचंड ऊर्जा युक्त सुगंधित ऊष्मा उत्पन्न होती है उससे आसपास का वातावरण गरम हो जाता है और उससे एक प्रकार का फाइगोसाइटोसिस चक्र विनिर्मित होता है । एम्यूनिटी और फाइगोसाइटोसिस दोनों प्रक्रियायें यजनकर्ता को स्वास्थ्य संवर्धन का लाभ देती हैं ।

शरीर शास्त्रियों के अनुसार एक सामान्य युवा व्यक्ति के फेफड़ों में २३० वर्ग इंच वायु रहती है जिसमें से केवल ३० वर्ग इंच तक ही वायु सांस छोड़ने पर बाहर निकलती है । शेष फेफड़ों में ही जमी रहती है । पर यदि जोर से गहरी श्वास ली जाय तो १३० वर्ग इंच तक अंदर की दूषित वायु बाहर निकल सकती है । इस प्रकार जितनी अधिक मात्र में विषैली वायु बाहर निकलती है, श्वसन तंत्र में उतनी ही अधिक परिमाण में शुद्ध प्राणवायु भीतर भर जाती है । इस तरह अधिक मात्रा में प्रविष्ट हुई शुद्ध प्राणवायु उसी अनुपात से रक्त परिशोधन एवं शरीर का पोषण करती है । जीवनी शक्ति की अभिवृद्धि होती और अग्नि प्रदीप्त होकर रस और रक्त में संचित विषाक्तता को निष्कासित करती है । देखा गया है कि जहाँ यज्ञ आयोजन हो रहा होता है वहाँ के वातावरणमें यदि मनुष्य स्वाभाविक रूप से गहरी श्वास-प्रश्वास लें और अपने फेफड़ों को प्राणवायु से भरें, तो इसका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा एवं स्थाई प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता ।

इस संदर्भ में मूर्धन्य चिकित्सा विज्ञानी डॉ. त्रिले ने गहन खोजें की हैं । उनके अनुसार अग्निहोत्र में अग्नि के प्रज्वलन से वायु भार कम होता है और वह तीव्रगति से फैलता है । प्रकाश की अधिकता एवं तीव्र ताप के कारण सुगन्धित हव्य सामग्री शाकल्य: के परमाणु, वायु को शुद्ध करते हैं और श्वास तथा रोम कूपों द्वारा शरीर में प्रवेश कर स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं । पाया गया है कि वनौषधि और समिधाओं के जलने से जो उपयोगी वाष्पीभूत धूम्र एवं ताप ऊर्जा निकलती है, उससे सभी प्रकार के रोगोत्पादक जीवाणुओं का शमन होता है । साथ ही वातावरण में पर्जन्य की, प्राण ऊर्जा की सशक्त तरंगें प्रवाहित होने लगती हैं और काया से प्रवेश कर नव जीवन प्रदान करती प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाती एवं सामर्थ्य भरती हैं । यज्ञीय ऊर्जा से शारीरिक, मानसिक व्यथायें तो दूर होती ही हैं, मस्तिष्कीय क्षमताओं, विचारणाओं, भावनाओं में उच्चस्तरीय परिवर्तन का लाभ भी हस्तगत होता है ।

वस्तुत: यज्ञ एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक चिकित्सा विज्ञान है जिसमें औषधि के रूप में हव्य होमे जाते हैं । यह बिना नष्ट हुए रूपान्तरित होकर उच्चारित गायत्री महामंत्र की सम्मिलित एवं प्रभावपूर्ण स्वर शक्ति से परिपूरित होकर वातावरण में आध्यात्मिक तरंगे फैलाते हैं, जिनसे मानव मन में संव्याप्त विकृतियों, विद्वेष, दुर्भाव अनीति-अत्याचार, संकीर्ण स्वार्थपरता, कुटिलता आदि बुराइयों का शमन होता है तथा तनाव मिटता हैं । इस तथ्य का अन्वेषण प्राचीन काल में ऋषियों ने बहुत पहले कर लिया था और यज्ञ को जीवन का एक अभिन्न अंग मानकर उसे नित्यकर्म में सम्मिलित किया था ।

अथर्ववेद के सूत्र **इदं में अग्ने पुरुषां मुमुरध्वयं** में कहा गया है कि उन्माद-सनकी व्यक्ति भी इस यज्ञाग्नि के प्रभाव से रोगमुक्त हो जाते हैं । इस तथ्य की पुष्टि यज्ञ चिकित्सा क्षेत्र में हुए अधुनातन अनुसंधानों से भी हुई है । इस सम्बध में वैज्ञानिक अनुसंधानों का सिलसिला अब विश्व भर में चल पड़ा है । कैलीफोर्निया की अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी एवं सोलिसवर्ग (स्विटजरलैण्ड) की यूरोपियन रिसर्च यूनिवर्सिटी ने इस सम्बन्ध में गहरे अन्वेषण किये हैं और इसके परिणामों से विज्ञान क्षेत्र की प्रतिभाओं को अवगत कराया है । वर्जीनिया में एक अग्निहोत्र मन्दिर की ही स्थापना की गई है जिसमें विशेष स्तर की अग्नियों पर कुछ विशेष प्रकार के पदार्थ एवं वनस्पतियाँ हवन की जाती हैं, साथ ही खाद्य पदार्थ पकाये और रोगियों को खिलाये जाते हैं । यज्ञाग्नि से बची हुई भस्म का भी ओषधियों की तरह प्रयोग किया जाता है । इसी तरह के प्रयोग-परीक्षण चिली, पोलैण्ड तथा पश्चिम जर्मनी में भी चल रहे हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन प्रयोगों में न केवल अनेक वनौषधियाँ प्रयुक्त होती हैं, वरन् अनेक स्तर की समिधाओं का भी एक दूसरे से भिन्न प्रकार का प्रतिफल पाया गया है । अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि जिन क्षेत्रों में इस प्रकार के यज्ञ आयोजन हुए हैं वहाँ अपराधों की संख्या कम हुई है । नशेबाजी, घटना, हड़तालें कम होना, सड़क दुर्घटनाओं में कमी होना, मानसिक तनाव एवं पारस्परिक मनोमालिन्य में घटोत्तरी दीख पड़ना आदि यज्ञीय वातावरण की प्रत्यक्ष उपलब्धियाँ देखी गयी हैं। जिन परिवारों में अग्निहोत्र का प्रचलन हुआ है, उनमें बीमारी के प्रकोप एवं ओषधि व्यय में कमी हुई है । कैलीफोर्निया में सीनेटर राबर्ट वोडार्ड एवं अमेरिकी मनोवैज्ञानिक बेरी राथनेर ने इस दिशा में बहुत काम किया है ।

अमेरिका के रेन्डेल टाउन, मेरीलैण्ड स्थित लेडी लिण्डका का "अग्निहोत्र संस्थान" हवन चिकित्सा के लिए ख्याति प्राप्त कर रहा है । वहाँ नित्य नियमित रूप से यज्ञ होता है और रोगियों पर उसके प्रभाव-प्रतिफल की वैज्ञानिक जाँच पड़ताल की जाती है । अनुसंधान कर्ताओं का कहना है कि यज्ञीय धूम-ऊर्जा का लाभदायक परिणाम तो होता ही है, यज्ञ भस्म भी चमत्कारिक सत्परिणाम प्रस्तुत करता है । इसके प्रयोग से हर कोई लाभान्वित हो सकता है

यज्ञ भस्म-हवन कुण्ड में शेष बची हुई राख है । यों इसे अधिक से अधिक कोई मांगलिक पदार्थ माना जा सकता है, पर कई बार उसके उपयोग से बहुमूल्य ओषधियों से भी अधिक प्रभावी परिणाम निकलता देखा गया है । उसे पौष्टिक खाद्य पदार्थों के रूप में स्वास्थ्य संवर्धन के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है । सूक्ष्म सामर्थ्य से सम्पन्न यज्ञ भस्म-चरु अथवा कोई भी पदार्थ अधिक स्वास्थ्यवर्धक, बलवर्धक हो सकते हैं जिनकी तुलना मँहगी औषधियाँ एवं फल-मेवे भी नहीं कर सकते । पश्चिम जर्मनी के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक बर्ट होल्ड जैहल ने हवन की भस्म पर गहन अनुसंधान किया है । वे इस राख का विभिन्न बीमारियों पर नये-नये परीक्षण करने में निरत हैं । उनका कथन है कि हवन से बची अवशिष्ट राख रोगों के उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । होम्योपैथी दवाओं की तरह तथा आयुर्वेद की अनुपान भेद से रोगियों को देने की विधि द्वारा उसका परिणाम जाँचने परखने के बाद उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि सामान्य सी लगने वाली इस भस्म में असामान्य रोग निरोधक क्षमता विद्यमान होती है । होम्योपैथ एवं एलोपैथी दवाओं के प्रयोग से होने वाले साइड इफेक्ट का शमन करने की क्षमता इसमें विद्यमान है । अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने अब तक हवन-भस्म के खाने से मलहम लगाने, अग्निहोत्र आईड्राप, अग्निहोत्र शलाका, अग्निहोत्र क्रीम इत्यादि के निर्माण में सफलता पाई है ।

शारीरिक रोगों से अधिक इन दिनों मानसिक रोग फैले हैं । व्यक्तित्व को विकृत बनाने वाली सनकें तथा आदतें ऐसी मानसिक बीमारियाँ हैं जो मनुष्य को अर्ध विक्षिप्त बनाये रखती हैं । ऐसे व्यक्ति स्वयं दुख भोगते और साथियों को दुख देते हैं । उनका कारगर उपचार अन्य चिकित्सा पद्धतियाँ तो प्रस्तुत नहीं कर सकीं पर विश्वास है कि यज्ञोपचार से शारीरिक और मानसिक रोगों से उससे कहीं अधिक छुटकारा दिला सकेगा जितना कि अन्य सभी चिकित्सा पद्धतियाँ मिल-जुलकर दिलाती हैं ।

अग्निहोत्र से न केवल मनुष्य लाभान्वित होता है, वरन् अन्यान्य प्राणी स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन प्रक्रिया के अतिरिक्त अग्निहोत्र के अनेकानेक लाभ हैं । उनमें से एक यह भी है कि वायुमंडल में व्याप्त-विषाक्तता का अनुपात कम करने उसे निरस्त करने की उसमें अपूर्व क्षमता है । हवन की गैस में कार्बन मोनोऑक्साइड का अत्यल्प अंश रहने पर भी ओषधियाँ घृत आदि द्रव्य पदार्थों का वाष्पीय प्रभाव उसे नष्ट करके लाभकारी बना देता है । इसमें स्थित उड़नशील सुरभित पदार्थ निर्विघ्न रूप से लाभदायक परिणाम प्रस्तुत करते हैं । इसके अतिरिक्त हवन-गैस से स्थान, जल, मिट्टी आदि अनेक तत्वों की शुद्धि हो जाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है और पोषक अणुओं को बढ़ाने वाले आव-तत्व उसमें बढ़ जाते हैं । इसी कारण अग्निहोत्र धूम से पूरित पर्जन्य से युक्त मेघ अणु और ओषधियों को निर्मलता और पुष्टि प्रदान करते हैं ।

पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने रोग-कीटाणुओं के नाश के लिए दो पदार्थ खोज निकाले हैं-(१) एन्टी सेप्टिक (विष विरोधी) और (२) डिस इन्फैक्टैन्स (छूत के प्रभाव को रोकने वाले) । प्रथम श्रेणी के पदार्थ रोग-कीटाणुओं से मनुष्य की रक्षा करते हैं, मारते नहीं । इस श्रेणी में फेनायल, क्रियोजोट, हाइड्रोजन पदार्थ पर आक्साइड आदि की गणना की जाती है । दूसरी श्रेणी के रोगाणुओं को सीधे मार देते हैं । कुछ पदार्थो में गुण उसकी सघनता और विरलता की स्थिति के अनुसार पाये जाते हैं । पर इन तत्वों का सही प्रयोग एक कुशल वैज्ञानिक ही कर सकते हैं । साधारण लोग उसकी मात्रा का सही परिणाम नहीं कर सकने के कारण लाभ के स्थान पर हानि भी उठा सकते हैं और यह हानि तीव्र घातक होती है ।

हवन -गैस इस दोष से रहित है । कदाचित् कुछ विषैला अंश रहे भी तो घृत का वाष्पीय प्रभाव उसे नष्ट करके लाभकारी बना देता है । इसमें स्थित क्रियोजोट, एल्डीहाइड, फैनायल और दूसरे उड्डयनशील सुरभित पदार्थ वैसा ही लाभ देते हैं । जिससे सभी निर्विध्न रूप से लाभ उठा सकते हैं ।

वायु शुद्ध के अतिरिक्त हवन-गैस से स्थान, जल आदि अनेक तत्वों की शुद्धि भी हो जाती है, जिससे पर्जन्य के द्वारा अन्न और औषधियाँ भी निर्मल और परिपुष्ट हो जाती हैं । इससे मानव-शरीर, रोगाणु निरोधक और अणुओं से भरपूर हो जाता है । फिर उस पर रोगों का आक्रमण हो जाय तो कदाचित् सफल भी हो जाय तो उसके शरीर में स्थित शक्तिशाली रोग-विध्वंसक अणु उसे अधिक समय तक जीवित रहने नहीं देते - उनका शीघ्र ही विनाश कर देते हैं ।

खरगोश और चूहों पर ये परीक्षण करके हवन-गैस की रोग निरोधक और रोग विनाशक शक्तियाँ सिद्ध कर ली गयी हैं ।

परीक्षण के लिए रोग-कीटाणुओं का घोल तैयार किया गया है । उसे सबल-स्वस्थ जानवरों की देह में प्रवेश कराने से वह उस रोग से आक्रान्त हो जाता है । उसी के या दूसरे स्वस्थ जानवरों के शरीर में जब उस घोल में हवन-गैस मिश्रित कर प्रवेश कराया जाता है, तब वह रोगी नहीं होता । बारम्बार यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ है ।

कृषि में भी हवन-गैस की लाभदायकता सिद्ध हो चुकी है । मिट्टी में दो तरह के कीटाणु होते हैं एक तो उर्वरा शक्ति बढ़ाने वाले तथा दूसरे उसे नष्ट करने वाले । पाश्चात्य विज्ञान ने उर्वरा शक्ति नष्ट करने वाले कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए जो घातक द्रव्य तैयार किया है उसे मिट्टी में मिला देने से उर्वरा शक्ति-विनाशक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं, जिससे पोषक कीटाणुओं की प्रवृद्धि होकर उसकी उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है । पर उनमें दोष यह है कि उसे शीघ्र ही मिट्टी से अलग नहीं करने पर वह उर्वरा शक्ति-वर्धक कीटाणुओं का भी विनाश कर डालती है ।

इस संदर्भ में अमेरिका के वाशिंगटन शहर में एक अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी की स्थापना की गयी है इसे साईं परांजपे ने स्थापित किया है । वे यज्ञ द्वारा खेतों में फसल के बढ़ने का प्रतिपादन करते हैं । रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाओं से ऊबे अमेरिकनों को वे विकल्प के रूप में मंत्रोच्चार से दी गयी आहुतियों का मार्ग सुझाते हैं । विश्व विद्यालय की यह मान्यता है कि फसलों के सभी रोगों का रामबाण इलाज यज्ञ है । यज्ञ से फसल उत्पादन में वृद्धि की इस पद्धति को उन्होंने होम थेरेपी फार्मिंग नाम दिया है ।

खेतों में नियमित किये गये यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है एवं इससे पौधों में तेजी से बढ़ने व जमीन से अधिक शक्ति खींचने की सामर्थ्य आती हैं । इससे जो फसल होती है वह स्वादिष्ट होती है । २०० एकड़ तक के खेतों में बीचों-बीच किये गये यज्ञ से पौधों की जड़ों का स्वरूप ही बदल जाता है । लम्बाई में भले ही कोई फर्क न आये, उनकी जमीन से पोषक तत्व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खींचने की सामर्थ्य में निश्चित ही वृद्धि होती है । इसके लिये विश्वविद्यालय ने अपने खेतों पर ही प्रयोग किये हैं । निष्कर्ष यह निकाले गये हैं कि यज्ञ करने से जमीन में नमी ज्यादा बनी रहती है । यदि पानी की के साथ स्नेह, श्रद्धा का पुट हो एवं मंत्रोच्चार भी किया जाये तो परिणाम और भी अच्छे होते हैं । परांजपे के अनुसार पौधे स्नेह के भूखे हैं । यदि किसान अपनी फसल से प्यार करें, उन्हें पुचकारें तो वे बीमार नहीं होते, अच्छा उत्पादन देते हैं ।

यह सभी का अनुभव है कि पौधों की बीमारियों के लिये प्रयुक्त कीट नाशक दवाओं से जमीन कमजोर होती है एवं फसल का उत्पादन भले ही बढ़ जाये, गुणवत्ता की दृष्टि से वह गौण ही होती है । इसी कारण कीटनाशक दवाओंके उपयोग पर अब पुनर्विचार किया जा रहा है । अग्निहोत्र विश्व विद्यालय कीटाणुओं के नाश के लिये यज्ञ की राख एवं गोबर की खाद का प्रचार कर रहा है । पानी में राख मिलाकर उसकी सिचाई से पौधों की जीवनी शक्ति में वृद्धि होती है । जिससे वे कीटाणुओं से ठीक तरह लड़ पाते हैं । मंत्रोच्चार के साथ की गयी सिचाई पौधों की सामर्थ्य में और भी वृद्धि कर देती है । अग्निहोत्र विश्व विद्यालय के अनुसार ये मंत्र पौधों के लिये टॉनिक का काम करते हैं ।

आज की फसलों की गिरती गुणवत्ता के पीछे वे वातावरण प्रदूषण को मुख्य कारण मानते हैं । इसीलिए यज्ञ की महत्ता भी प्रतिपादित करते हैं जो वातावरण को शुद्ध करता है । धूमीकृत ओषधियाँ, घी, धान हवा में मिलकर उसे शुद्ध करती हैं एवं फिर वर्षा के माध्यम से जमीन में पहुँचकर जड़ों का पोषण करती हैं । उनके अनुसार यज्ञ का धुँआ पहले पूरब की ओर उड़ता है व फिर घड़ी की तरह घूमता है । इसका प्रभाव आठ किलोमीटर की परिधि में होता है । इससे उन्हें विश्वास है कि अमेरिका के दक्षिणी भाग में लगने वाले "अल्बीनो" नामक फसल नाशक कीड़े को समाप्त कर सकेंगे ।

वैज्ञानिकों द्वारा हवन गैस को कुछ समय तक मिट्टी पर डालकर देखा गया है और पाया गया हैं कि इससे उसकी उर्वरा शक्ति बहुत बढ़ जाती है और पोषक अणुओं को बढ़ाने वाली आवश्यक तत्व उसमें भर जाते हैं। उनका निष्कर्ष है कि इन्हीं तत्वों के कारण यज्ञीय-गैसों से पूरित पर्जन्य और बादल अन्न और औषधियों को निर्मलता और पुष्टि प्रदान करते हैं ।

बादलों को सात्विक गुणों वाले एवं निर्मल पुष्ट बनाने यज्ञ धूम के अणुओं का उसमें प्रविष्ट करना सर्वश्रेष्ठ है । इसीलिए जिस देश में अधिक अग्निहोत्र और यज्ञ कर्म होते हैं, वहाँ की वृष्टि सत्वगुणों से भरी होने के कारण अन्न और ओषधियों में भी वे गुण ओत-प्रोत हो जाते हैं । अन्न का सूक्ष्म अंश ही मन की पुष्टि करता हैं । अत:यज्ञीय देशों के निवासियों का मन भी सात्त्विक निर्मलता से अनुप्राणित होता रहता है । वहाँ के निवासियों के जीवन और गति में सात्विक तत्व संचारित होता है ।

आज सारे संसार में ही अग्निहोत्र करने की विशेष आवश्यकता है । गत महायुद्ध में भिन्न-भिन्न विषैली गैसों के कारण आकाश, वायु, बादल आदि सभी में वह विष भर रहा है । इसी से सर्वत्र विषैली राजसी-तामसी भावनाओं ने ही अन्न, वनस्पति सभी प्राणी और मनुष्यों में अपना आधिपत्य जमा रखा है । फलत: सर्वत्र रोग,पीड़ा, अशान्ति और संघर्ष फैला हुआ है । इसके निवारण का एक ही हल है । वह है, सभी देशों और स्थानों में शास्त्रीय विधि से किये गये विभिन्न अग्निहोत्र ।

अग्निहोत्र से जो वायु -मण्डल में घी और हवन सामिग्रियों के धुँए के अणु फैलते हैं, उनमें नेगेटिव चार्ज के विद्युत प्रवेश कर जाते हैं । यह आज के भौतिक विज्ञान द्वारा प्रयोग सिद्ध हो चुका हैं कि यह नेगेटिव चार्ज के विद्युत अणु वायुमण्डल में से नमी को खींच लेते हैं और धीरे-धीरे इसके आस-पास बादल के खण्ड बन जाते हैं । ये बादल यज्ञीय धूम अणुओं से ओत-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रोत रहते हैं । इनका विषैला अंश विनष्ट हो जाता है । ऐसी वृष्टि से भी केवल मनुष्य में ही नहीं प्राणी मात्र, वनस्पति और मिट्टी में भी सात्विक भावों का संचार हो जाता है ।

जर्मनी में वैज्ञानिकों द्वारा किये प्रयोगों से भी अब यह सिद्ध हो गया है कि रोग कीटाणुओं को मारने की जितनी शक्ति यज्ञ ऊर्जा में है उतनी सरल व्यापक और सस्ती पद्धति अभी तक नहीं खोजी जा सकी है । यज्ञ को प्राचीन काल में शारीरिक व्याधियों और मानसिक आधियों के शमन में सफलता पूर्वक प्रयुक्त किया जाता रहा है । यज्ञ चिकित्सा के खोये हुए पृष्ठ यदि फिर से ढूँढ़े जा सके और इस विज्ञान को नये सिरे से सुव्यवस्थित किया जा सके तो ऐसे सत्परिणामों की पूरी-पूरी सम्भावना है कि शारीरिक ही नहीं मानसिक रोगों का भी सफल उपचार किया जा सके । चिकित्सा पद्धतियों में यज्ञ चिकित्सा को इसलिए वरिष्ठता मिल सकती है कि ओषधियों को सूक्ष्मतम वायुभूत बनाकर शरीर में अत्यन्त सरलता से पहुँचाया जा सकताा है । ओषधि उपचार में स्थूल प्रक्रिया अपनाये जाने के कारण इतनी गहरी पैठ इतनी जल्दी नहीं हो सकती । आज की रुग्णता का पर्यवेक्षण करने से प्रतीत होता है कि शारीरिक रोगों से भी अधिक अर्ध विक्षिप्तता-सनकें, बुरी आदतें, अपराधी प्रवृत्तियाँ, उच्छृंखलता, आवेश ग्रस्तता, अचिन्त्य चिन्तन, दुर्भावना जैसी मानसिक व्याधायें मनुष्य को कहीं अधिक दुख दे रही हैं और विपत्ति का कारण बन रही हैं । इस संकट का निवारण यज्ञोपचार का सुव्यवस्थित रूप बन जाने पर भली प्रकार हो सकता है, जिस-तिस रूप में चल रही वर्तमान यज्ञ प्रक्रिया में किसी न किसी रूप में शारीरिक और मानसिक व्याधियों के समाधान में बहुत कुछ सहायता मिलती है ।

यज्ञोपचार प्रक्रिया में किस रोग में किस विधान से किस मंत्र एवं औषधि का उपयोग किया जाय, इसकी रहस्यमयी विद्या का मंथन आज फिर से किया जाना जरूरी है । शांतिकुंज के ब्रहम् वर्चस् शोध संस्थान में यज्ञ विद्या को विशेषतया अग्निहोत्र को अपनी शोध में सम्मिलित किया गया है । ब्रहमवर्चस् अग्निहोत्र प्रयोगशाला विश्व में अपने ढंग की अनोखी है । उसमें बहूमूल्य वैज्ञानिक यंत्रों द्वारा इस प्रक्रिया का समग्र विश्लेषण किया जा रहा है । एक विशाल वनौषधि उद्यान भी यहाँ लगाया गया है । इन प्रयोगों से जो प्रतिफल सामने आये हैं वे आशाजनक एवं उत्साह वर्धक हैं ।

यज्ञोपैथीः एक समग्र चिकित्सा पद्धति

मानवी काया सृष्टि की सर्वोपरि संरचना है । इसके रोम-रोम में विलक्षणता संव्याप्त है । शरीर की स्थूल गतिविधियों के मूल में अनेकानेक जादू भरी विशेषताएँ छिपी पड़ी हैं । पंचतत्वों से बनी इस काया का प्रकृतिपरक स्थूल अंश ही जब इतना अद्भुत है तो फिर उसकी स्थूल सत्ता की महत्ता तो अकल्पनीय है । सच तो यह है कि स्थूल- सूक्ष्म की कृपा पर ही निर्भर है । इस तथ्य का प्रतिपादन शरीर के महत्वपूर्ण घटक हरमोन्स करते हैं । कार्य-संरचना एवं व्यक्तित्व का निर्धारण तो ये करते ही हैं । जीवनी शक्ति, जिजीविषा, भावना, संवेदनाएँ, आवेग आदि महत्वपूर्ण अदृश्य सामर्थ्यों का विकास भी हारमोन्स की दया से ही होता है ।

उपरोक्त तथ्य दृश्यमान स्थूल के अन्तराल में छिपी सूक्ष्म सत्ता की महत्ता का प्रतिपादन करते हैं, पर मानव ने मात्र स्थूल जगत की क्रियाओं एवं स्वरूप को देखा है तथा उसी से प्रभावित भी हुआ है । अनेकों विभ्रम एवं रोग-शोकों का कारण यही बाह्य दृष्टि रही है । मात्र बाह्य सुख सुविधाओं पर ध्यान देने का दुष्परिणाम यह हुआ है कि अन्तः के स्रोत सूख गए हैं । अन्तःकरण की संवेदनाओं का स्तर ही शारीरिक स्वास्थ्य का निर्धारण करता है । वृक्ष का बाहरी स्वरूप तो फल -फूल पत्तियों के रूप में दिखाई देता है पर इस बाह्य ऐश्वर्य के मूल में जो सत्ता काम कर रही है वह उसकी जड़ में है यही बात, शारीरिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में भी है । अन्तःकरण की शुष्कता एवं मनोविकार

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बाहर से स्वस्थ दिखाई देने वाले व्यक्ति को भी आध्यात्मिक मान्यता के अनुसार अस्वस्थ ही ठहराते हैं । महत्ता यहाँ भी इन सूक्ष्म विकारों की है जो स्थूल चर्मचक्षुओं से दिखाई नहीं देते ।

विगत दिनों पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति का विकास बड़ी तेजी से हुआ है । विभिन्न व्याधियों के लिए प्राण रक्षक औषधियाँ खोज ली गई हैं । इसका लाभ पीड़ित मानवता को मिला है । वैज्ञानिकों ने पुरुषार्थ पूर्ण शोध कर चिकित्सा के ऐसे नये आयाम खोले हैं जिनकी जानकारी मानव को नहीं थी । मनुष्य शरीर का गहनतम अध्ययन किया गया है । एनाटामी एवं फिजियालॉजी की शोधों के माध्यम से शारीरिक संरचना एवं कार्य पद्धति की सांगोपांग जानकारी मनुष्य को हस्तगत हुई । रोगों के कारण उनसे होने वाली विकृति एवं तदनुरूप औषधि व्यवस्था का एक स्वरूप तैयार हुआ । सरएलेक्जेण्डर फ्लेर्मिंग द्वारा पेनिसिलिन के आविष्कार से लेकर आज के संक्रमणनाशक विभिन्न एण्टी-वायोटिक्स की खोजों ने विज्ञान की उपलब्धियों को सर्वोपरि स्थापित किया है । इन सब के बावजूद पदार्थ विज्ञानियों के इस पुरुषार्थ में एक मूल दोष रह गया । चाहे वह मुख से ली जाने वाली औषधि हो अथवा इंजेक्शन से, सूक्ष्म संस्थानों तक उसकी पहुँच नहीं हो पायी । मात्र विकृति निवारण ही इन दवाओं का उद्देश्य रह गया । इसी कारण स्थायी रोगोपचार की संभावना मात्र सर्जरी के कुछ पक्षों को छोड़कर पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति में कहीं नजर नहीं आती । सूक्ष्म की महत्ता न समझ पाने एवं उसकी सामर्थ्य के प्रमाण होते हुए भी भौतिक दृष्टि से उसे नकारने के कारण ही यह स्थिति बनी है । रोग निदान के आधुनिकतम साधनों के होते हुए भी आज रोगों का बाहुल्य है एक रोग मिटता है उसके लिए प्रयुक्त की गई ओषधि ही दूसरे रोग को जन्म दे देती है । इस तरह उपचार के नाम पर हताशा ही हताशा है ।

आवश्यकता आज ऐसी चिकित्सा पद्धति की है जो मानव का संपूर्ण उपचार कर सके, समग्र उपचार अर्थात् आस्थाओं का परिशोधन, मानसिक विकारों का निराकरण एवं शरीर गत अव्यवस्थाओं का सुगढ़ता पूर्ण संयोजन कर सके । इसी वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में आर्षमानवों ने यज्ञ चिकित्सा की परिकल्पना की थी, जिसे आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुनर्जीवित करने की आवश्यकता को देखते हुए शोध संस्थान की स्थापना की गयी हैं ।

मनुष्य के उन्नत स्वास्थ्य हेतु आत्मिक, मानसिक एवं शारीरिक व्याधियों के निराकरण एवं स्वास्थ्य सम्बर्धन के सन्दर्भों से आर्ष ग्रन्थ भरे पड़े हैं ऋषि गणों ने काय संरचना एवं गतिविधियों ,चिन्तन एवं भावनाओं, तथा मान्यताओं एवं आस्थाओं के पारस्परिक सामंजस्य को प्रधानता दी । यही कारण था कि तत्कलीन समाज व्यवस्था सतयुगी कहलाती थी । मानव समुदाय चिरस्थायी स्वास्थ्य का आनन्द भोगता था । यज्ञ ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा दिव्य संस्कारीय ओषधियों एवं पुष्टाई को सूक्ष्म संस्थानों तक पहुँचाया जा सकता है । सूक्ष्म विकारों की जड़ जिन स्थानों पर होती है, वहाँ तक अन्य ओषधियाँ नहीं पहुँच पातीं । परन्तु धूमीकृत औषधि विभिन्न मार्गों द्वारा पहुँचकर तत्काल अपना प्रभाव दिखाती है एवं मानव को कष्ट पीड़ा से मुक्ति दिलाती है । यह विज्ञान अपने चिरपुरातन समय में शिखर पर था एवं उस काल के वैज्ञानिकों ने इस पर शोध कर इस पद्धति को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया था । मध्यकालीन समय में अनेकानेक विकृतियाँ विसंगतियाँ इस क्षेत्र में भी प्रवेश कर गई । फलतः आस्थायुक्त कर्मकाण्डों द्वारा वनौषधि यजन की यह प्रक्रिया मात्र जलने की प्रक्रिया तक ही सीमित रह गयी । आज की विभीषिका को दृष्टिगत रख दैवी प्रेरणा हुई है कि आधुनिकतम वैज्ञानिक शोधों द्वारा इस चिरपुरातन चिकित्सा व्यवस्था को भी प्रयोग परीक्षण की कसौटी पर रखा जाय एवं समस्त मानवता को एक ऐसा उपहार दिया जाय जो आने वाले सहस्त्रों वर्षों तक समग्र स्वास्थ्य सम्बर्धन का एक स्वरूप बन सके ।

वस्तुतः रोग एक विकृति है जो जीवन यापन के सीमा बंधनों का उल्लघंन करने पर प्रकृति के दण्ड विधान द्वारा मनुष्य के ऊपर आ बरसती है । खान पान आहार बिहार का अपना प्रकृतिगत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वरूप है । समस्त खाद्य पदार्थ प्रकृति की मनुष्यको देन है । चाहे वे फल हैं या मिर्चमसाले । जीभ का असंयम एवं प्रकृति के विपरीत आचरण ही व्याधियों को आमंत्रित करता है । अमेरिका के सुप्रसिद्ध चिकित्सा शास्त्री एम० डी० पशीने का मत है कि "बीमारियों का कारण विजातीय द्रव्य अथवा कीटाणु नहीं अपितु जीवनी शक्ति का अभाव है । अत: रोग निवारण हेतु कीटाणुओं का नाश करना नहीं अपितु उन कारणों को दूर करना उद्देश्य होना चाहिये जो कीटाणु वृद्धि में सहायक हैं ।" यह हमारी दुर्बुद्धिजन्य उच्छृंखलता ही है, जो उलट कर हमले करती है और फलस्वरूप शरीर के पीड़ा, मन को क्षोभ और अंतरंग को आत्म प्रताड़ना का त्रास सहना पड़ता है । इसीलिए रोगोपचार से अधिक महत्व इस तथ्य को दिया जाना चाहिए कि उनके उत्पन्न होने का अवसर ही नहीं आए । चिरपुरातन यज्ञीय विज्ञान इस स्थिति से उबरने का मार्ग बताता है । यज्ञ को धर्म का पिता कहा गया है । यज्ञ के रोगोपचार, स्वास्थ्य सम्बर्धन, प्रकृति अनुकूलन, वनस्पति सम्बर्धन जैसे अनेकानेक पक्षों का वर्णन आर्षग्रंथ करते हैं । यज्ञ चिकित्सा के इस पक्ष को प्रयोग परीक्षण की कसौटी पर कसने एवं वर्णित माहात्म्य की शोध करने हेतु एक ऐसी ही प्रयोगशाला की आवश्यकता थी, जैसी कि ब्रह्मवर्चस में कार्यान्वित हो रही है ।

काय चिकित्सा की दृष्टि से तो अनेकानेक उपचार पद्धतियाँ प्रचलित हैं परन्तु मानसिक विकृतियों के निवारणार्थ कोई पद्धति ढूँढे नहीं मिलती । शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ तो कई व्यक्ति मिल सकते हैं परन्तु मानसिक दृष्टि से जिन्हें सन्तुलित, विचारशील, सज्जन, शालीन कहा जा सके, कम ही मिलेंगे । यज्ञ में उपयुक्त वनौषधियाँ, आस्थाओं से परिपूर्ण कर्मकाण्ड, मंत्रों की तरह स्वरलहरियाँ एवं अन्य अनेक पक्ष किस तरह रोग निवारण करते हैं एवं स्वास्थ्य के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं, यही इस प्ररिम्भक शोध का लक्ष्य है ।

प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों का उपयोग करने वाले चिकित्सक एवं रोगियों का कथन है कि उनका लाभ बताते हुए प्रतिफल की तुलना में मुश्किल से एक चौथाई ही मिल पाता है । शेष के सम्बन्ध में निराशा ही हाथ लगती है । तत्काल थोड़ा सा चमत्कार दिखाकर वे निष्फल सिद्ध होती हैं । उनकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप जीवनी शक्ति घुटने एवं विजातीय द्रव्य एकत्र हो जाने से शरीर में अनेकानेक रोग उठ खड़े होते हैं । रोग निवृत्ति का यह प्रयास अंतत: अस्वस्थता को ही चिरस्थायी बनाता है ।

यज्ञ चिकित्सा के आधार सुदृढ़ हैं । इससे ऐसी आशा की जा सकती है कि शारीरिक ही नहीं मानसिक रोगों को भी जड़ से काटा जा सके । यज्ञोपैथी का मूलदर्शन है रोग की जड़ तक ओषधियों की पहुँच । श्वास पर ही मानव जीवन आधारित है । श्वास प्रश्वास के माध्यम से प्राण वायु का रक्त में प्रवेश एवं विकारों का निष्कासन होता है । रक्त तक पहुँचने के लिए किसी भी वस्तु के लिए सर्वसुलभ मार्ग श्वास मार्ग है । क्लोरोफार्म, ईथर नाइट्रस -आक्साईड द्वारा मूर्छित कर आपरेशन करने की विधि यही-विचार कर निकाली गयी । दम घुटने पर अथवा मृत्यु के अन्तिम क्षणों में नाक मार्ग से आक्सीजन देकर ही रोगी को जीवित करने ही चेष्टा चिकित्सकों द्वारा की जाती है । स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छ वायु की महत्ता इसी कारण दी गयी है । पश्चिम में औद्योगीकरण से जो भौतिक सुख-समृद्धि आयी है, उसी के साथ पर्यावरण-प्रदूषण से अनेकानेक व्याधियों की बाढ़ भी । एक सर्वेक्षण बताता है कि लम्बी खाँसी एवं श्वास, रोग के मरीजों की सर्वाधिक संख्या ऐसे स्थानों पर है, वहाँ उद्योगों का बाहुल्य है । रेडियो धर्मिता की वातावरण में वृद्धि न्यूक्लियर क्लब के सदस्यों की बढ़ती जा रही संख्या के समानान्तर है । साराँश यह है कि प्राणवायु की स्वच्छता एवं श्वास मार्ग की उपयोगिता के बिना स्वस्थ रहने की कल्पना नहीं की जा सकती है । यज्ञोपचार द्वारा होने वाले विभिन्न लाभों में प्रदूषण का निवारण यदि एक पक्ष है तो औषधियों के रक्त में प्रवेश से विकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्रव्यों का निष्कासन एवं जीवनीशक्ति सम्बर्धन दूसरा पक्ष ।

यज्ञ शब्द के तीन अर्थ होते हैं । दान-देवपूजन--संगतिकरण । इन्हें प्रकारान्तर से उदारता, उत्कृष्टता एवं सहकारिता की दिशाधारा कहा जा सकता है । यज्ञीय दर्शन को जीवन में उतारने वाला कोई भी व्यक्ति इसी जीवन में स्वस्थ समृद्ध, समुन्नत एवं सुसंस्कृत रह सकता है । ऐसे व्यक्ति को आंतरिक प्रसन्नता एवं बाह्य प्रफुल्लता का अभाव नहीं रहता । यज्ञकृत्य कराने और सम्मिलित होने वालों को प्रत्येक विधि - विधान की व्याख्या करते हुए यह समझाया जाता है कि उनका चिन्तन और चरित्र; दृष्टिकोण एवं व्यवहार निरन्तर उत्कृष्टता की ओर बढ़ता रहे । उद्गाता यही गाते हैं । अध्वर्यु यही सिखाते हैं, ब्रह्मा इसी की योजना बनाते हैं और आचार्य को ऐसी व्यवस्था बनानी होती है कि इसी प्रकार भावप्रवाह उस समूचे वातावरण पर छाया रहे । रोगोपचार के पीछे यही तथ्य छिपा है कि नीतिवान नीरोग, बलिष्ठ एवं दीर्घजीवी होता है । यज्ञ के पुनीत अनुष्ठान के साथ ही इसी नीतिदर्शन को प्रत्येक याजक को समझाया जाता है ।

यज्ञ विज्ञान की अनुसंधान प्रक्रिया का शुभारम्भ जिन पक्षों से किया गया है वे हैं - यज्ञ से रोग निवारण, स्वास्थ्य सम्वर्धन, प्रकृति सन्तुलन एवं वनस्पति संवर्धन, दैवी अनुकूलन, समाज शिक्षण,शक्ति जागरण तथा यज्ञ की विकृतियाँ एवं विसंगतियाँ । शोध की परिधि असीम है । परन्तु प्रारम्भिक प्रयास के रूप में यज्ञ विज्ञान के इन्हीं प्रमुख आठ पक्षों को प्रयोग परीक्षण की कसौटी पर रखा गया है ।

यज्ञ प्रक्रिया की शोध के अनेकानेक आयाम हैं यथा हविष्य धूम्र, यज्ञावशिष्ट, यज्ञऊर्जा, मंत्रोच्चार में सन्निहित शब्दशक्ति, याजक गणों का व्यक्तित्व एवं उपवास,मौन प्रायश्चित, आदि धर्मानुष्ठानों से जुड़ी तपश्चर्याएँ । इन प्रयोजनों का शास्त्रों में उल्लेख तो है, पर उनके विधानों, अनुपातों और सतर्कताओं का वैसा उल्लेख नहीं मिलता, जिसके आधार पर समग्र उपचार बन पड़ने की निश्चिन्तता रह सके । यज्ञविद्या को सांगोपांग बनाने के लिए शास्त्रों के सांकेतिक विधानों को वैज्ञानिक एवं सर्वांगपूर्ण बनाना होगा । यह कार्य चिरपुरातन की इस आधुनिक शोध द्वारा सम्भव हैं

इस सम्बन्ध में जितना भी कुछ वर्णन अब तक वैज्ञानिकों को उपलब्ध हुआ है, उससे इन सभी प्रयोगों की प्रामाणिकता का पता चलता है। पौराणिक आख्यानों में इन प्रयोगों की वैज्ञानिकता का विस्तृत विवेचन तो नहीं हैं, परन्तु इस ओर संकेत अवश्य है । राम का जन्म, च्यवनऋषि का आयुष्य, अपाला का रोग निवारण यज्ञ-प्रक्रिया द्वारा ही सम्भव वर्णित किये गये हैं । चरक और सुश्रुत ने तो विधिवत् नस्य विभाग स्थापित किये थे । धन्वन्तरि ने जटिलतम रोगों को वाष्पीकरण की इस प्रक्रिया द्वारा ठीक किया, ऐसे वर्णन पढ़ने को मिलते है । वनौषधिओं को देवोपम महत्ता देकर उनका सदुपयोग का जैसा वर्णन आध्यात्म ग्रन्थों में किया गया है, उसे देखते हुए भारत के चिरपुरातन गौरव के प्रति नतमस्तक हो जाना पड़ता है । परन्तु जैसा कि कहा गया है आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इन समस्त प्रतिपादनों को बुद्धिगम्य बनाने एवं तर्क बुद्धि के गले उतारने के लिए एक ऐसे ही तंत्र की आवश्यकता थी, जैसा कि ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान की प्रयोगशाला में स्थापित किया गया है ।

यज्ञों में यजन हेतु विभिन्न हविष्य पदार्थ प्रयुक्त होते हैं । हविष्य का निर्धारण हर विशिष्ट रोगी के लिए अलग-अलग किया जाता है । बलवर्धक और रोग निवारक दोनों ही तत्वों को ध्यान में रखना होता है । यज्ञ चिकित्सा के मूलस्वरूप को समझने के लिए वाष्पीकरण सिद्धान्त की वैज्ञानिकता को समझना होगा ।

हविष्य के होमीकृत होने के पीछे 'सूक्ष्मता' का दर्शन छिपा पड़ा है । सूक्ष्मीकरण से शक्ति का विस्तार होता है । होम्योपैथी की दवाऐं इस सिद्धान्त पर कार्य करती हैं । दवाओं की सूक्ष्मता बढ़ाकर उनकी पोटेन्सी में वृद्धि की जाती है । 'डीशेन' की दवाओं में साधारण जड़ी बूटियों की अधिक पिसाई-कुटाई करके उसकी आंशविक ऊर्जा को उभारा जाता हैं । फलतः वे अधिक लाभदायक सिद्ध होती हैं । सूक्ष्मता का अपना स्वतन्त्र विज्ञान है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसमें वस्तुओं की अदृश्य स्थिति का ही प्रतिपादन नहीं है, वरन् यह सिद्धान्त भी सम्मिलित है कि स्थूल के अन्तराल में छिपा सूक्ष्म कितना अधिक सामर्थ्यवान है ।

ओषधियों का वाष्पीकरण दो प्रकार के प्रभाव छोड़ता है । प्रथम तो उसकी सामर्थ्य कई गुनी अधिक हो जाती है । दूसरे उसका प्रभाव निकटवर्ती व्यक्तियों, वातावरण, जीवजन्तुओं एवं वनस्पतियों पर पड़ता है । मुख द्वारा दी गई ओषधि पर आमाशय के विभिन्न पाचक रसों की प्रतिक्रिया होती है । तदुपरान्त व्यक्ति विशेष की सामर्थ्य के अनुसार उसका कुछ अंश रक्त में जाकर शेष मल-मूत्र मार्ग से बाहर उत्सर्जित कर दिया जाता है । इस प्रकार ओषधि का कुछ ही भाग इच्छित अवयवों तक पहुँच पाता है । रक्त में इंजेक्शन प्रक्रिया द्वारा पहुँचायी गयी ओषधि का प्रभाव निश्चत ही मुखमार्ग द्वारा दी गयी औषधि से अधिक और तुरन्त होता है । परन्तु उनके भी सूक्ष्म जीवकोषों-ऊतकों तक पहुँचने की पूरी सम्भावना सुनिश्चित नहीं है । वाष्पीकरण द्वारा धूमीकृत ओषंधि श्वास मार्ग से एवं रोमकूपों से शरीर में प्रविष्ट होती है । यज्ञ प्रक्रिया में नियन्त्रित ऊर्जा के माध्यम से ओषधि प्रवेश हेतु इसी मार्ग को प्रयुक्त किया जाता है ।

पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति में भी कई औषधियाँ श्वासमार्ग से दी जाती हैं । श्वास रोगी को शीघ्र आराम दिलाने हेतु ओषधि मस्तिष्क के ऊतक में प्राण - संचार हेतु आयजन एवं आपरेशन हेतु मूर्च्छित किये जाने के लिए औषधियाँ इसी मार्ग से दी जाती हैं । ऐसा इसलिए कि प्रभाव तुरन्त हो एवं सुनिश्चित हो । आयुर्वेद में भी धूम्रपान द्वारा चिकित्सा को महत्ता दी गयी है । नशीले पदार्थ (हशीश-चरस-गांजा) आदि के लिए जितना लोकप्रिय नस्य मार्ग है उतना मुखमार्ग नहीं । नासिका मार्ग को इसीलिए प्रधानता दी गयी हैं कि ओषधियाँ आंतरिक अवयवों एवं कोष्ठकों तक पहुँचकर अपना प्रभाव समग्र रूप में शीघ्र दर्शा सकें ।

शरीर विज्ञानियों के अनुसार प्रत्येक श्वास (अठारह बार प्रतिमिनट) के साथ प्राणवायु आक्सीजन का अन्दर प्रवेश होता है एवं वह सहस्त्रों वायुकोष्ठकों (एलविओलाय) के माध्यम से रक्त में मिलती हैं । इसके साथ ही रक्त द्वारा लाये गये ऊतकों के निष्कासित द्रव्य कार्बनडाइ आक्साइड गैस के रूप में बाहर निश्वास द्वारा फेंक दिये जाते हैं । प्रति ४ सैकण्ड में होने वाली इस प्रक्रिया द्वारा जो सम्पर्क आक्सीजन का रक्त से होता है । वह वायुकोष्ठकों की संरचना की अद्‌भुतता के कारण सहस्त्रों गुना होता है । इस तरह जिस ओषधि का सीमित मात्रा में उपयोग अन्य भागों द्वारा उसे शरीर के कुछ ही भागों तक पहुँचता, वह उसे कई गुने अनुपात में पूरे शरीर के विभिन्न कोष्ठकों तक पहुँचा कर अपना समर्थ प्रभाव दिखाने में सफल सिद्ध होता है ।

यज्ञ विज्ञान के मूलदर्शन को प्रयोग परीक्षण की कसौटी पर कसने के लिए निम्नांकित उन सभी पक्षों को लिया गया है जिनका प्रयोग विभिन्न रूपों में इस प्रक्रिया में होता है । ये हैं-

(१) वनौषधियों के पंचाङ्ग
(२) समिधायें
(३) घृत
(४) पूर्णाहुत में होमेजाने वाले पदार्थ
(५) यज्ञधूम
(६) यज्ञऊर्जा
(७) यज्ञावशिष्ट एवं भस्म
(८) चरु
(९) कलशजल
(१०) मंत्रशक्ति एवं कर्मकाण्ड
(११) याजकगण
(१२) धर्मानुष्ठानों से जुड़ी तपश्चर्याएँ

वनौषधि यज्ञ को वेदों में भैषज्य यज्ञ कहा है । **भैषजकृतो हवा एवं यज्ञो यत्रैवंविद ब्रह्मा भवति** अर्थात् उनमें वैद्यक शास्त्रज्ञ ब्रह्मा होता है, वे भैषज्य यज्ञ हैं । होली पर्व भी एक ऐसा ही सार्वजनिक भैषज्य यज्ञ है जो संवत्सर के अंत में किया जाता है । इसमें फसल को संस्कारित किया जाता है ।

यज्ञ में विभिन्न वनौषधियों के उपयोग का वर्णन किया गया है । विभिन्न ओषधियों के भिन्न-भिन्न रोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निवारक एवं स्वास्थ्य वर्धक प्रभाव बताये गये हैं । वर्तमान शोध प्रक्रिया में ऐसी ही कुछ चुनी हुई प्रामाणिक बनौषधियों को लिया गया है, जिनका उपयोग आयुर्वेद एवं एलोपैथी में विभिन्न रूपों में किया जाता है । क्वाथ एवं अवलेहादि के रूप में ये ओषधियाँ वैद्यों द्वारा व्याधि निवारण के लिए प्रयुक्त होती हैं । एलोपैथी में भी इन्हीं जड़ी-बूटियों का उपयोग विभिन्न उपयोगी ओषधियों के निर्माण में हुआ है । एकौषधिविज्ञान एवं डीशेन पद्धति में भी इन ओषधियों के प्रभावों का ही प्रतिपादन है । यज्ञ चिकित्सा में इन ओषधियों को होमीकृत कर उन्हें सूक्ष्मतम बनाना एवं उनके प्रभाव से व्यक्तियों, वातावरण एवं वनस्पतियों को विकारमुक्त करना ही प्रमुख उद्देश्य है । द्रव्य-गुण विज्ञानी अब तक कुछ वनौषधियों का रासायनिक विश्लेषण कर पाये हैं । मात्र वर्णित माहात्म्य के आधार पर उनका उपयोग विवेकसम्मत नहीं है । इसीलिए यहाँ इस समस्त ओषधि का विश्लेषण कराये जाने की व्यवस्था की गयी है । जिससे उसके विभिन्न भागों (पत्र, मूल, त्वक् , पुष्प, फल) की रासायनिक रचना एवं द्रव्यगुण परक प्रभाव को समझा एवं उपयोग में लाया जा सके ।

हविष्य में रोग विशेष के लिये प्रयुक्त होने वाली ओषधियों का आधार प्रायः वही रहता है जो रासायनिक विश्लेषण के आधार पर चिकित्सा विज्ञानी चिरकाल से करते चले आये हैं उनके परस्पर संयोग से विभिन्न प्रतिक्रियाऐं होती हैं एवं अलग-अलग प्रतिफल निकलते हैं उपयोगी वनस्पतियों का चुनाव विभिन्न रोगों के लिए उनकी रासायनिक विशेषताओं के आधार पर किया गया है । ऐसी व्यवस्था भी बनायी गयी है कि मुखमार्ग-रक्तमार्ग तथा श्वास मार्ग द्वारा ली जाने वाली ओषधि का अलग-अलग क्या प्रभाव पड़ता है यह मापा जा सके । पड़ने वाले प्रभावों के तुलनात्मक अध्ययन से कौन सा मार्ग उपचार की दृष्टि से सर्वोत्तम है यह निर्धारित किया जा सकेगा । आरंम्भिक चरण में जिन वनौषधियों का चयन किया गया है उनमें से कुछ है तुलसी, सर्पगन्धा, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, शतावरी, सोमवल्ली जटामांसी, अष्टवर्ग इत्यादि ।

समिधाऐं भी प्रकारान्तर से हविष्य ही हैं । कुछ विशिष्ट लकड़ियों का जलना भी न्यूनाधिक रूप से वनौषधियों के समान ही प्रभाव उत्पन्न करता है । यही कारण है कि हविष्य में वनस्पतियों की पत्तियों फूल-फल के साथ ही लकड़ियों का भी सम्मिश्रण किया जाता है । चंदन, देवदारु, अगर-तगर आदि लकड़ियों का चूरा हवन सामग्री में मिलाया जाता है । समिधाओं में कुछ नियत वृक्षों के काष्ठ के उपयोग का ही विधान है । चाहे जिस पेड़ की लकड़ी हवन में प्रयुक्त नही हो सकती । ऐसा करने से अनुपयोगी काष्ठ से प्रज्वलित अग्नि हानिकारक सिद्ध होती है। समिधाओं के चयन में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि रोगी की जैव रासायनिक संरचना की दृष्टि से हविष्य में किन-किन समिधाओं का प्रयोग किया जाय । प्रमुख समिधाओं में उपरोक्त वृक्षों के अलावा आम, शमी, गूलर, पीपल, देवदारु, अशोक, बिल्व, चित्रक आदि का भी प्रयोग किया जा रहा है ।

हविष्य (वनौषधि पंचाङ्ग एव समिधाओं) से शरीर में क्या-क्या रासायनिक परिवर्तन होते है-यह प्रयोगशाला में विभिन्न उपकरणों के माध्यम से परीक्षण किया जा रहा है । हृदय पर प्रभाव डालने वाली ओषधि की प्रतिक्रिया इलेक्ट्रो कार्डियोग्राम उपकरण द्वारा मापी जाती है । किस तरह से विभिन्न ओषधियाँ रक्त में प्रवेश कर हृदय पर परिवहन संस्थान के विभिन्न अवयवों पर प्रभाव डालती हैं यह हृदय की विद्युत का मापन करने वाले कार्डियोस्कोप के पर्दे पर प्रत्यक्ष एवं आटोरिकार्डर द्वारा ई. सी. जी. के रूप में मापा जाता है ।

रक्त में गैसों का अनुपात स्वस्थ एवं रोगी व्यक्ति में अलग-अलग होता है । आक्सीजन को ऊतकों जीवकोषों के लिए प्राणवायु माना गया है । कार्बनडाइआक्साइड गैस इन्ही अवयवों की चयापचय क्रिया की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न होती है । विकार युक्त द्रव्य इसी गैस के रूप में श्वास मार्ग से बाहर आते हैं । जब भी शरीर संस्थान के इस विशाल भवन की कार्यप्रणाली में व्यतिरेक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न होता है--कार्बनडाइआक्साइड गैस शरीर में एकत्र होने लगती है । रक्त में अम्लता की अभिवृद्धि इसी असंतुलन का परिचय देती है । चिकित्सक रक्त गैसों के विश्लेषण से रक्त की अम्लता जान कर कार्य प्रणाली के स्वस्थ-अस्वस्थ होने का निर्धारण करते हैं । यही व्यवस्था ब्रह्मवर्चस् में भी बनायी गई है । रक्तशोधक ओषधियों के उपयोग के पश्चात् अम्लता का मापन रक्तगैस विश्लेषक (ब्लडगैस एनालाइजर) एवं पी एच मीटर द्वारा किया जा रहा है ।

रक्त की शर्करा, यूरिया, कोलेस्ट्रल, क्रिएटिनीन एवं अन्य एंजाइम्स का मापन तथा विभिन्न ओषधियों के प्रयोग से सम्भावित परिवर्तन बायोकेमिस्ट्री कक्ष में मापा जाता है । इन्हीं ओषधियों के मूल रूप, धूमीकृतरूप एवं भस्मीभूत स्वरूप में जीवाणु नाशक क्षमता का पर्यवेषण बैक्टीरियालाजी कक्ष में कल्चर एवं मायकोस्कोपी द्वारा किया जाता है ।

यज्ञ दर्शन जैसा कि कहा गया है सूक्ष्मता, का दर्शन है । सूक्ष्म नाड़ी गुच्छकों एवं ग्रन्थियों के रूप में मानव शरीर में कई अवयव हैं । इनमें मुख्य हैं हारमोन्स । इनका रस सीधे रक्त में स्रावित होता है इसीलिए इन्हें एण्डोक्राइन्स अर्थात् नलिकाविहीन ग्रन्थियाँ कहा जाता है । यज्ञ से धूमीकृत ओषधि शरीर के विभिन्न अंगो तक पहुँचती है एवं अपना प्रभाव इन ग्रन्थि-समुदायों पर डालती है । किस वनौषधि समूह से इन पर क्या प्रभाव होता है, यह जानने के लिए रेडियो इम्यूनों ऐसे तकनीक द्वारा रक्त एवं अन्य द्रव्यों में हारमोन्स के स्तर का मापन किये जाने की व्यवस्था की गयी है ।

अपनी सूक्ष्मता की शक्ति के कारण ही मानसिक रोगों के निवारण हेतु तथा प्रसुप्त शक्तियों के जागरण के लिए विभिन्न वनौषधियों का यजन किया जाता है । इस प्रतिक्रिया का पालीग्राफ यंत्र द्वारा मस्तिष्कीय तरंगों की स्थिति जानकर मनोविश्लेषण द्वारा व्यक्तित्व के विभिन्न घटकों का मापन कर विश्लेषण किया जाता है । इससे एक लाभ यह भी है कि शरीर की अनेकानेक सूक्ष्म गतिविधियों पर क्या-क्या प्रभाव वनौषधि यजन की प्रक्रिया के फलस्वरूप संभावित हैं, यह विभिन्न चैनेल्स के माध्यम से अंकित किया जा सकता है ।

यज्ञ में आमतौर से गौघृत प्रयुक्त होता है पर अन्य पशुओं के घृतों में भी अपनी विशेषता है । रोगी की स्थिति को देखते हुए घृतों में पाये जाने वाले रासायनिक पदार्थो की स्थिति का तालमेल बिठाते हुए यह निर्धारण करना होता है कि अमुक रोग में किस पशु का घृत लिया जाय । चिर पुरांतन मान्यता है कि घृत को जलाने से जो उसका प्रभाव होता है, वह खाने से नहीं होता । इस तथ्य की वैज्ञानिकता की परीक्षा प्रयोगशाला स्तर पर ही की जानी चाहिए । गोघृत को ही क्यों श्रेष्ठ माना गया है, यह जानने के लिए एक तुलनात्मक विवेचन भी आवश्यक हो जाता है । इसीलिए ब्रह्मवर्चस् में विभिन्न घृतों के रासायनिक विश्लेषण एवं उनके द्वारा शरीर में जैव रासायनिक परिवर्तनों को मापे जाने की व्यवस्था की गयी है ।

पूर्णाहुति में सामान्य हवन सामग्री का नहीं वरन् किन्हीं विशिष्ट वस्तुओं का प्रयोग करना पड़ता है । पूर्णाहुति तीन भागों में विभक्त है ।

१. **स्विष्टकृत होम**-जिसमें मिष्ठान होमे जाते है।

२. **पूर्णाहुति**- जिसमें फल होमना होता है ।

३. **बसोधारा** जिसमें घी की धारा छोड़ी जाती है । इन तीनों कृत्यों को मिलाकर पूर्णाहुति कहा जाती है । इस विधान को प्रधानतया पोषक प्रयोग के रूप में लिया जाता है । निरोधक सामग्री तो हविष्य के रूप में इससे पूर्व ही यजन हो चुकी होती है ।

स्विष्टकृत होम के लिए मिष्ठान्न का चयन भी यज्ञीय विधान का ही एक अंग है । सामान्यतया शक्कर, मिश्री, मिठाई का उपयोग होता है । असामान्य रूप से विशेष प्रकार के चरु बनाये जाते हैं । खीर, हलुआ, लड्डू आदि का हवन स्विष्टकृत होम की आहुति में होता है । इन्हें किन पदार्थों के सम्मिश्रण से बनाया जाय, इस निर्धारण में यह ध्यान रखा जाता है कि रोगी के शरीर में किन पोषक खाद्य पदार्थों की आवश्यकता है । सामान्यतया उपयोग किये जाने वाले यज्ञीय धान्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं- चावल, जौ, जंगली धान, तिल, चना, गेहूँ । शर्करा वर्ग में गुड़वाली शक्कर, चीनी, शहद, फलों एवं सूखे मेवों का उपयोग होता है । इन सबके उपयोगों से क्या पोषक प्रभाव शरीर पर होता है-यह इस शोध द्वारा जानने का यत्न किया जा रहा है।

पूर्णाहुति में आमतौर से नारियल, सुपारी आदि सुगमतापूर्वक मिल सकने वाले पदार्थ प्रचलित हैं पर उसमें सूखे मेवे एवं पके फल भी प्रयुक्त हो सकते हैं । समिधाओं के निर्धारण की तरह पूर्णाहुति में फलों के चयन में भी सूझ-बूझ का परिचय देना पड़ता है ।

वसोधारा में घृत की धारा छोड़ी जाती है । अर्थात् उसकी मात्रा बढ़ाई जाती है । इसका एक कारण यह है कि हवन कुण्ड में जहाँ-तहाँ शेष रहा कच्चा हविष्य तुरन्त ज्वलनशील हो सके । दूसरे चिकनाई की वह मात्रा शरीर को मिल सके जो सामयिक परिस्थिति के अनुरूप आवश्यक है । शर्करा सहित अन्नवर्ग को स्विष्टकृत में फलवर्ग को पूर्णाहुति में घृतवर्ग को वसोधारा में प्रयुक्त करके आहार की संतुलित मात्रा का इस प्रकार निर्धारण किया जाता है कि यजनकर्ता को समुचित पोषण प्राप्त हो सके । वसोधारा घृत में कपूर केशर आदि मिलाने की भी व्यवस्था रहती है, जिससे घृतमात्र चिकनाई न रहकर एक विशिष्ट ओषधि बन जाती है ।

स्विष्टकृत होम, पूर्णाहुति एवं वसोधारा में उपयुक्त खाद्यान्नों एवं ओषधियों की टॉनिक जैसी उपयोगिता का वैज्ञानिक विवेचन आज के युग में आवश्यक है । यही विचार कर यज्ञोपैथी प्रयोगशाला को आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित किया गया है ।

यज्ञ द्वारा उपरोक्त माध्यम से पुष्टाई पहुँचाने का तरीका जितना सरल है उतना ही प्रभावशील भी । अत्यधिक दुर्बलता बढ़ जाने पर पाचन तंत्र काम नहीं करता । तब नस (इन्ट्रावीनस) के माध्यम से ग्लूकोज शरीर में पहुँचाते हैं । फलतः रोगी को खुराक मिलने जैसा लाभ मिल जाता है । दूध पीने का अपना लाभ है, परन्तु गरिष्ठ प्रोटीन समूह के रूप में जब हर्मीन का इंजेक्शन लिया जाता है तो लाभ अधिक परिणाम में मिल जाता है । ढेरों फलों को खाने की अपेक्षा उनका रस पी लेने से पेट पर भार कम पड़ता है । लाभ न्यूनाधिक रूप में वही मिलता है । अन्यान्य पौष्टिक खाद्यों का सारतत्व अब रसायनशालाएँ बनाने लगी हैं और उनसे दुर्बल पाचन तंत्र वाले अस्वस्थ व्यक्ति भी अपनी जीवनी शक्ति बनाये रखने का लाभ लेने लगे हैं । यज्ञ चिकित्सक यह मानते हैं कि सूक्ष्मीकृत पुष्टाई को अपेक्षाकृत अधिक सरलतापूर्वक शरीर में पहुँचाने और पचाने के लिए यज्ञ एक समर्थ माध्यम है ।

यज्ञ प्रक्रिया के फलस्वरूप ओषधियाँ वाष्पीकृत होती हैं एवं यज्ञ धूम के रूप में चारों और फैल जाती हैं । याजक गणों के शरीर में मुँह तथा श्वांस मार्गों एवं रोमकूपों से प्रविष्ट होकर ये धूम सूक्ष्मतम अवयवों तक जा पहुँचते हैं तथा वातावरण में भी चारों ओर व्याप्त हो जाते हैं । इनका विश्लेषण आर्सेट एवं ग्राह्य लारेंस गैस एनालायजर द्वारा करके यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि क्या-क्या गैसें किस अनुपात में होती हैं । कहा यह जाता है कि लकड़ी जलाने से धुआँ बनता है जो मात्र कार्बनडाइ या कार्बन मोनो आक्साइड गैस का सम्मिश्रण होता है । क्या यज्ञ धूमीकरण प्रक्रिया अन्य धुँओं से अलग होती है ? यह शोध का एक महत्वपूर्ण विषय है । इन धूम्रों को विशिष्ट विधि द्वारा सैम्पलिंग कर उनका रासायनिक विश्लेषण किया जाता है ।

अग्निहोत्र में तैलीय तत्व प्रधान समिधाएँ और हवन सामग्री दोनों का ही प्रयोग होता है । बहुत न्यून मात्रा में शक्कर एवं घी (शुद्ध न उपलब्ध होने की स्थिति में गाय का दूध) को भी सम्मिलित किया जाता है । समिधा के रूप में मान्य काष्ठ (जो विशिष्ट गुण सम्पन्न ओषधीय तत्व युक्त होते हैं ।) ही प्रयुक्त होते हैं । ऐसे काष्ठों में शारीरिक रोगों के निवारण की शक्ति पाई जाती है । आमतौर से आम, पीपल, वट, शमी, चन्दन, देवदारु, अगर, तगर, बिल्व जैसे वृक्षों की लकड़ियाँ ही इस निर्मित अग्नि प्रज्वलन के लिए काम में लाई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाती हैं । किस प्रजाति में क्या -क्या संघटक तत्व हैं, यह कैसे जाना जाय व किस आधार पर किसे प्रामाणिक माना जाय, यह चुनाव शान्ति कुंज के वैज्ञानिक कालम क्रोमेटो ग्राफी, थिनलेयर क्रोमेटोग्राफी तथा गैस लिक्विड क्रोमेटोग्राफी यंत्रों के माध्यम से करते हैं । गैस लिक्विड क्रोमेटोग्राफ पूरी तरह से कम्प्यूटराइज्ड एक जटिल यंत्र है जो ओषधियों के सान्द्र क्वाथ एवं वाष्पीभूत गैसों का परिपूर्ण विश्लेषण कर उनका एक ग्राफ पर अंकन करता जाता है । इससे यह जानकारी मिल जाती हैं कि ज्वलन के पूर्व ओषधि युक्त पौधे मे क्या-क्या कार्यकारी तत्व विद्यमान थे, एवं उस प्रक्रिया से गुजरने के उपरांत उनमें क्या परिवर्तन हुआ ? धूम्र में कहीं कार्बन के हानिकारक कण तो विद्यमान नहीं है, यह प्रामाणिक जानकारी भी जी. एल. सी. यंत्र दे देता है । एक विशिष्ट ओषधि होमीकृत होकर गैस रूप में जब परिणित होती है तो उसके रासायनिक घटक क्या क्या रूप ले लेते हैं, यह जाना जा सके तो एक बहुत बड़ी मंजिल पार कर ली जायेगी ।

जिस कुण्ड में हवन किया जाता हैं उसका ज्यामितीय आकार बहुत महत्व रखता हैं। यह उल्टे पिरामिड के आकार का होता है । नीचे संकरा, ऊपर चौड़ा । जितना आयतन होता है, उतनी ही समिधाएँ डाली जाती हैं व उतनी ही हवन सामग्री; ताकि संतुलित ऊर्जा उत्पन्न होती रहे, अग्नि प्रदीप्त रहे, धुआँ उत्पन्न न हो । तर्जनी उँगली पर जितनी हविष्य (जौकूट स्थिति में) आ जाती है वह लगभग तीन माशे के बराबर होती है । ताम्रपात्र या हवन कुण्ड इतनी दूर होता है कि याजक तो अधिक गर्मी अनुभव न करे । जो भी धूम्र बनें, वे श्वांस मार्ग से अन्दर जाते रहें । आधे घण्टे का औसत प्रयोग पर्याप्त माना जाता है । कितनी ऊष्मा यज्ञ प्रक्रिया के विभिन्न खण्डों में उत्पन्न हुई, इसका मापन "थर्मोकपल" यंत्र करता है प्रकाश की तीव्रता "लक्समीटर" मापता है तथा अग्नि लौ के स्पेक्ट्रम को स्पेक्ट्रोस्कोप द्वारा देखा जाता है । यज्ञ कुण्ड के चारों ओर कितनी व किस दूरी तक रेडियोधर्मिता विद्यमान है यह यहाँ के वैज्ञानिक "गीगर मुलर काउण्टर" द्वारा मापते हैं ।

वनौषधि यजन प्रक्रिया धूमों को व्यापक बनाकर, सुगंध फैला कर समूह चिकित्सा की विधा हैं, जो पूर्णतः विज्ञान सम्मत है । गंध प्रभाव के माध्यम से मस्तिष्क के प्रसुप्त केन्द्रों का उद्दीपन अन्दर के हारमोन रस द्रव्यों का रक्त में आ मिलना तथा श्वास द्वारा प्रमुख कार्यकारी ओषध घटकों का उन ऊतकों तक पहुँच पाना जो कि जीवनीशक्ति निर्धारण अथवा व्याधि निवारण हेतु उत्तरदायी है, ये कुछ ऐसी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं जो वनौषधि यजन अर्थात् अग्नि होत्र से प्राप्त होती हैं ।

इन यज्ञ धूमों की जीवाणुनाशक क्षमता की जाँच-पड़ताल हेतु बैक्टीरियालॉजी कक्ष में विभिन्न प्रयोगों की व्यवस्था की गई है । विभिन्न घातक जीवाणुओं को उपयुक्त वातावरण में उत्पन्न कर (कल्चर) उन पर इन धूमों का प्रभाव देखा जाता है । किसी भी एण्टीबायोटिक ओषधि का जीवाणुओं पर प्रभाव मापने हेतु कल्चर एवं सेंसीटिविटी के प्रयोग किये जाते हैं । इससे यह पता लगता है कि कौनसे जीवाणु किन ओषधियों के प्रभाव से सामर्थ्य खो देते हैं अथवा कौन से इसके विपरीत अपनी वंशवृद्धि कर लेते हैं । यही प्रयोग इस महत् उद्देश्य से इन आधुनिक उपकरणों द्वारा यज्ञचिकित्सा के शोधकार्य हेतु किये जा रहे हैं । विभिन्न क्षमताओं के इन्क्युबेटर्स कल्चर कक्ष में लगाए गये हैं, जिनसे निर्धारित अवधि में जीवाणुओं की ओषधि के प्रति सम्वेदनशीलता की परख हो सके ।

उपरोक्त घटकों के साथ ही एक अन्य महत्वपूर्ण शक्ति है यज्ञ ऊर्जा । ऊर्जा का नियन्त्रण यज्ञकुण्डों के आकार द्वारा किया जाता है । ज्यामितीय सिद्धान्तों के अनुसार ही इन कुण्डों का स्वरूप बनाया जाता है । जिससे उत्सर्जित ज्वाला एवं ऊर्जा का प्रभाव सारे वातावरण पर उचित अनुपात में पड़े । विभिन्न ओषधियाँ जलकर अलग-अलग ऊर्जा का स्वरूप देती हैं । ऊर्जास्तर के अनुपात से ही याजक के शरीर एवं मन पर ओषधि का वांछित प्रभाव पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैदिक काल में यज्ञकुण्डों का आकार निर्धारण रेखागणित के साध्यों के आधार पर होता था । इस तथ्य का वैज्ञानिक विवेचन यदि आज की भाषा में संभव हो सके तो शोध का नया आयाम ही खुल सकता है । यज्ञों में यज्ञशाला के ऊपर आच्छादन रखने की परम्परा है । वह इस कारण है कि उष्मा का स्वभाव एवं स्वरूप ऊपर उठने का है । वह अग्निकुंड से निकल कर तीर की तरह छूटती है और सीधी आकाश में उड़ती चली जाती है । आच्छादन रहने से उसके ऊर्ध्वगमन पर प्रतिबन्ध लगता है और यज्ञशाला के वातावरण में उसका प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक समय तक अधिक मात्रा में बना रहता है । यज्ञीय ऊर्जा की निकटता से वह प्रयोजन भली भाँति पूरा हो जाता है । जिससे रोगों की संभावना को समय से पहले ही निरस्त कर दिया जाय ।

शरीर के रोम छिद्रों से प्रवेश करने वाली यज्ञऊर्जा विजातीय द्रव्यों को निरस्त करती एवं शरीर के बाहर धकेलती जाती है । रोकथाम का यह उपचार कम न्यूनाधिक रूप में वैसा ही है जैसा कि विभिन्न रोगों के आक्रमण होने की आशंका होने पर सुरक्षात्मक टीके लगाए जाते हैं । यज्ञ से निकली ऊर्जा समीपवर्ती व्यक्तियों वातावरण एवं वनस्पतियों को असामान्यरूप से प्रभावित करती है । वनस्पतियों में पौष्टिक तत्वों एवं व्यक्तियों में जीवनीशक्ति की अभिवृद्धि होती है । फलतः काया में रोग निरोधक क्षमता बढ़ जाती है ।

जन्म के बाद जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन मुण्डन, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत आदि कई संस्कार होते हैं जो मनुष्य की बाल्यावस्था में जल्दी-जल्दी सम्पन्न किए जाते हैं । सबमें यज्ञ का अनिवार्य विधान है । इसमें बालक एवं उसके माता-पिता को निश्चित रूप से सम्मिलित होना पड़ता है । उससे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन का लाभ निरन्तर मिलता रहता है । बच्चे के समग्र शारीरिक एवं मानसिक विकास की पृष्ठभूमि बन जाती है । आयु बढ़ने के साथ रोगों के टीके जल्दी -जल्दी नहीं लगाए जाते क्योंकि मनुष्य की स्वयं की सामर्थ्य आयु बढ़ने के साथ बढ़ती है । फलस्वरूप आगे के संस्कारों एवं जुड़े यज्ञों में भी अन्तर बढ़ता जाता हैं । विवाह एवं वानप्रस्थ संस्कारों के बीच कई वर्षों का अन्तर होता है । यज्ञ संस्कारों से न केवल बालक लाभान्वित होता है वरन् परिवार के अन्यान्य सदस्यों को भी इसका अनायास लाभ मिलता रहता है । यज्ञधूमों से घर के वातावरण का परिशोधन होता है । कमरों में छिपे बैठे कृमि कीटकों को ये धूम्र मार भगाते हैं । होली पर्व पर नयी फसल को यज्ञ ऊर्जा से संस्कारित किया जाता है । फसल पक कर आने पर नवान्न का उपयोग करने से पूर्व उसे यज्ञीय ऊर्जा से प्रभावित सुवासित किया जाता है, जिससे इसकी रोग निरोधक शक्ति कई गुना बढ़ जाती है ।

यज्ञ प्रक्रिया अपने आप में एक समग्र विज्ञान है । इसका प्रत्येक पक्ष विशिष्ट है । यज्ञ समाप्त होने पर बचा अवशिष्ट, स्विष्टकृत के होम से बचा 'चरु' दिव्य प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है । आहुतियों से बचा 'इदन्नमम्' के साथ टपकाया हुआ तथा वसोधारा से बचा घी घृतअवघ्राण के रूप में मुख, सिर तथा हृदय आदि पर लगाया व सूंघा जाता है । होमीकृत ओषधियों एवं अन्य हव्य पदार्थों से संस्कारित भस्म को मस्तक तथा हृदय पर धारण किया जाता है । ये सभी पदार्थ उतना ही प्रभाव डालते हैं जितनी कि हविष्य की आहुतियों से उत्पादित ऊर्जा ।

चरु विशिष्ट खाद्यान्नों एवं मिष्टान्नों से बनाया जाता है । इसमें पौष्टिक तत्वों का समावेश प्रचुर मात्रा में होता है । इन तत्वों में प्रमुख हैं पोस्त के दाने, चावल, गेहूँ, घी, दूध, शक्कर तथा शहद ओषधियों का समावेश होने से, यज्ञ ऊर्जा से संस्कारित एवं मंत्रों से अभिमन्त्रित होने से उनका प्रभाव कई गुना अधिक हो जाता है । चरु से सूक्ष्मता की विशेषता है । राजा दशरथ के यहाँ सम्पन्न पुत्रेष्टि यज्ञ में चरु बनाया गया था । श्रृंगी ऋषि द्वारा बनाये गये चरु के दो भाग किये गए । पीछे स्मरण हुआ कि रानियाँ तो तीन है । भूल सुधारी गयी और दो भागों में बँटी खीर में से थोड़ा-थोड़ा भाग निकाल कर तीसरा भाग बनाया गया । तीनों रानियो ने खीर का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सेवन किया । सर्वविदित है कि सुमित्रा ने दोनों भागों से निकाल कर बनाये गये तीसरे भाग वाली खीर को ग्रहण किया था । फलस्वरूप दो रानियों को तो एक-एक संतान हुई पर सुमित्रा को दो संतानें हुईं यह चरु की सूक्ष्म विशेषताओं का ही चमत्कार था । यज्ञ की दिव्य ऊर्जा एवं क्षमता का समावेश हो जाने से वह सामान्य खाद्य पदार्थ भी असामान्य शक्ति सम्पन्न बन गया ।

यज्ञावशिष्ट से बचे घृत में यही सूक्ष्म विशेषता होती है । घृत में तो स्थूल रूप मात्र चिकनाई जैसा पदार्थ मालूम होता है , जिसमें कुछ पौष्टिक तत्वों की बहुलता होती है पर यही घृत यज्ञ द्वारा संस्कारित, ओषधियों से सुवासित एवं यज्ञ कुण्ड तक श्रुवा द्वारा ले जाकर पुनः प्रणीता के जल से सम्पर्क कराने पर सूक्ष्म शक्ति सम्पन्न मात्र माना जा सकता है, पर उसके उपयोग से कई बार दिखाई पड़ने वाले चमत्कारी परिणाम असामान्य शक्ति सम्पन्न होने का ही प्रतिपादन करते हैं ।

सूक्ष्म सामर्थ्य से सम्पन्न यज्ञ भस्म चरु अथवा अन्य पदार्थ इतने अधिक बलवर्धक होते हैं कि उनकी थोड़ी मात्रा भी, कई गुने सामर्थ्य वाले खाद्य पदार्थों की बराबरी करते हैं । इस वर्णित तथ्य को वैज्ञानिक प्रयोग परीक्षण द्वारा प्रत्यक्ष सिद्ध किया जाना इस शोध का उद्देश्य है ।

यज्ञ चिकित्सा में कलश में रखे जल का भी वैज्ञानिक महत्व है । यह जल यज्ञ प्रक्रिया में यज्ञ ऊर्जा से प्रभावित एवं वाष्पीकृत वनौषधियों के सूक्ष्म गुणों से युक्त होता रहता है । यूनानी चिकित्सा पद्धति द्वारा बनाये जाने वाले अर्क के पीछे भी यही सिद्धान्त है यह जल मंत्रोच्चार द्वारा अभिमन्त्रित किया जाता है । मंत्र की सामर्थ्य जल में होती हैं । इसके प्रयोग द्वारा विभिन्न साधकों एवं रोगियों पर पड़ने वाले प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जायेगा । यह तो यज्ञ का पदार्थपरक विवेचन रहा । आगे की बात अति सूक्ष्म-कारण स्तर की है । सामर्थ्यों की स्रोत कारण परत में है । मनुष्यों की तरह पदार्थ में भी तीन स्तर पदार्थ होते हैं स्थूल सूक्ष्म, और कारण । मानव शरीर का स्थूल अंश रक्त, मांस, पित्त से बना है जो खाता-पीता, चलता-फिरता दिखाई पड़ता है । सूक्ष्म शरीर वह है जो सोचता, विचारता और शरीर का संचालन करता है । कारण शरीर में आस्थाओं, मान्यताओं एवं आकांक्षाओं का जन्म होता है । यही मनुष्य के समग्र व्यक्तित्व के निर्माण का आधार होता है । तीनों शरीरों में सर्वाधिक शक्तिशाली कारण शरीर ही होता है ।

पदार्थों के सम्बन्ध में भी यही बात है उनका स्थूल स्वरूप वह है जो दिखाई देता है सूक्ष्म वह है जिसे रासायनिक विश्लेषण द्वारा प्रयोगशालाओं में पता लगाया जाता है । गाय की अपेक्षा भैंस के दूध में स्थूल सामर्थ्य अधिक होती है, पर सूक्ष्म सामर्थ्यों की दृष्टि से गाय के दूध का महत्व भैंस के दूध से कई गुना अधिक है । गौ दूध से बने पंचगव्य को ही प्रसाद रूप में ग्रहण किया जाता है । तुलसी, आँवले और पीपल के पौधों की तुलना में दूसरे पौधें अधिक फलप्रद हो सकते हैं, पर सूक्ष्म संस्कारों की दृष्टि से जो देवोपम श्रद्धा इनको दी जाती है,वह अन्य वृक्षों को नहीं । यह उनमें मन को प्रभावित करने वाले सात्विक अंश की अधिकता के कारण ही होता है ।

यज्ञ प्रक्रिया में प्रायः हर पदार्थ के कारण शक्ति को उभारा जाता है । तभी वह यजनकर्ता के मन और अन्तःकरण में अभीष्ट परिवर्तन ला सकती है । यज्ञ की विशिष्टता उसमें प्रयुक्त होने वाले पदार्थोंकी सूक्ष्म शक्ति पर निर्भर है । कारण शक्ति का उत्पादन अभिवर्धन करने के लिए मंत्रविज्ञान का सहारा लिया जाता है । उद्गाता इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि निर्धारित विधि विधान के लिये जिन मंत्रों का सस्वर उच्चारण एवं विनियोग करने की पद्धति प्रचलित है, उसका उपयोग सही रीति से हो । उदात्त अनुदात्त भावों के उतार-चढ़ाव वातावरण में कम्पन पैदा करते हैं एवं उनका प्रभाव शरीर की सूक्ष्म ग्रन्थियों एवं अन्य महत्वपूर्ण अवयत्रों पर होता है । शब्द को ब्रह्म कहा गया है । उसकी शक्ति सामान्य जीवन में ज्ञान सम्वर्धन एवं वैचारिक आदान-प्रदान के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए होती है । किन्तु उच्चस्तरीय भूमिका में शब्द का शक्ति के रूप में परिवर्तन हो जाता है । मंत्रशास्त्र का समूचा आधार इसी पृष्ठभूमि पर खड़ा है कि शब्द गुच्छकों का चयन-गुंथन एवं विनियोग ऐसी विशिष्ट क्रिया प्रक्रिया के साथ सम्पन्न किया जाय जिससे चेतना को विशिष्ट क्षमता सम्पन्न बनने का चमत्कारी लाभ मिल सके ।

हविष्य को यदि ऐसे ही आग में फेंक दिया जाय तो उससे गंध उत्पन्न होने जैसे हल्के लाभ ही मिलेंगे । वैसा कुछ न हो सकेगा जैसी कि यज्ञायोजनों से अपेक्षा की जाती है । यज्ञ में नियत विधि-व्यवस्थानुसार मंत्रोच्चार का प्रयोग होता है । इससे सम्बद्ध मनुष्यों को लाभ मिलता है एवं वातावरण में उत्तेजना उत्पन्न होती है विशिष्ट आस्थायुक्त वातावरण में जिस युगान्तरीय चेतना प्रवाह का निर्माण होता है, वह व्यक्ति विशेष एवं जन समुदाय के दिल दिमागों को झकझोरने की क्षमता रखता है । मानवी अन्तराल में छिपा श्रद्धा तत्व इसी प्रक्रिया से उभर कर आता है

मंत्रपूत पदार्थों को आशीर्वाद रूप में देने पर वे ओषधियों से भी अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं । इससे प्रकट है कि यजन से पूर्व हविष्य की कारण शक्ति को उभारने में इस स्तर तक सफलता मिल जाती है कि वह वस्तु स्थूलता की दृष्टि से सामान्य शक्ति की होते हुए भी विशिष्टता की दृष्टि से असामान्य सिद्ध हो सके । यज्ञ-पात्रों से लेकर प्रयोग में आने वाले जल तक को मंत्र के माध्यम से पवित्र बनाया जाता है । इसके उपरान्त ही उनका प्रयोग होता है । समिधाएँ प्राप्त करने, धोने सुखाने और प्रयोग से पूर्व अभिमंत्रित करने का विधान है । ठीक उसी प्रकार कुण्डों को प्राणवान बनाने के लिए वेदी--पूजन यज्ञशाला पूजन आदि किया जाता है ।

मंत्रोच्चार के शरीरगत एवं मानसिक प्रभावों पर शोध कार्य पहले भी हो चुके हैं । पर उनमें समग्रता का समावेश न था । नये परिवेश में श्रद्धा एवं आस्था का सम्बल देकर मंत्र विज्ञान पर शोध की जा रही है । मंत्रों का चयन ध्वनि विज्ञान के आधार पर किया जाता है । इस कसौटी पर गायत्री मंत्र की सामर्थ्य असामान्य आँकी गयी है । अर्थ की दृष्टि से तो यह मंत्र सामान्य है । उसमें भगवान से सद्बुद्धि की कामना भर की गयी है । पर मंत्र सृष्टाओं की दृष्टि में शब्दों का गुंथन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है । इस आधार पर गायत्री महामंत्र सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है । यज्ञ में प्रयुक्त अन्य वेद मंत्रों का महत्व भी कम नहीं है । वेदमंत्रों का उच्चारण उदात्त-अनुदात्त भावों एवं स्वरित क्रम से मध्यवर्ती उतार-चढ़ाव के साथ किया जाता है । ये सब विधान इस दृष्टि से बनाने पड़े हैं कि इन मंत्रों का जप अभीष्ट उद्देश्य पूरा कर सकने वाला और शक्ति प्रवाह उत्पन्न कर सके । मंत्र शक्ति की असीम सामर्थ्य के कारण शरीर में यत्र तत्र सन्निहित अनेकों चक्रों तथा उपत्यिकाओं-ग्रन्थियों में विशिष्ट स्तर का शक्ति संचार होता है ।

उपरोक्त इन सभी आध्यात्मिक उपचारों का प्रयोग स्तर पर परीक्षण करने के लिए उपकरणों की व्यवस्था की गयी है । ऑसीलोस्कोप यंत्र के माध्यम से मंत्र एवं संगीत जैसी ध्वनि के विभिन्न आयामों का मापन कर उनके चित्र लिए जाते हैं । मंत्रों के शरीरगत एवं मानसगत प्रभावों को मापने के लिए पूर्व वर्णित उपकरणों से विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में संभावित परिवर्तनों का अंकन किया जाता रहा है ।

यज्ञविज्ञान के विभिन्न पक्षों की शोध करते हुए अन्तिम क्रम आता है याजक गणों का । यज्ञ में अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा, होता, आचार्य एवं यजमान ये याजक गण होते हैं । इन छह के आचार विचार, व्यक्तित्व एवं चिन्तन को मिलाकर यज्ञ का समग्र स्वरूप तैयार होता है । इनकी वैयक्तिक ऊर्जा एवं मनोबल का संयुक्तीकरण ही यज्ञ की सफलता में सहायक होता है । हवनकर्ता को मनमानी वस्तुऐं खाने-पीने की छूट नहीं मिलती । उस दिन उसे निर्धारित सात्विक पदार्थों पर निर्वाह करते हुए उपवास जैसे बन्धनों से प्रतिबन्धित रहना पड़ता है । जहाँतक सम्भव हो यजमान भी निर्धारित विधि से बनाया हुआ हविष्य अमृताशन ही ग्रहण करते हैं । रोगी मात्र हवन करके ही विशिष्ट चिकित्सा पद्धति का लाभ नहीं उठा सकते हैं वरन् उनके आहार में किन वस्तुओं का उपयोग किस मात्रा में हों,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका भी सुनिश्चित निर्धारण किया जाता है । आहार के साथ ब्रह्मचर्य, मौन आदि तपश्चर्याऐं जुड़ी हैं । धर्मानुष्ठानों का समापन यज्ञ के साथ ही किया जाता है । प्रायश्चित प्रक्रिया का भी इसमें समावेश है जिसमें जाने-अनजाने किये गए दुष्कर्मों का परिशोधन किया जाता है एवं आयामी जीवन के लिए सत्प्रवृत्तियों को धारण किया जाता है ।

इस तरह यज्ञोपचार एक समग्र चिकित्सा विज्ञान है, जिसमें शरीर विज्ञान के अनगिनत आयाम, ओषधियों के गुण, धर्मो का विवेचन, सूक्ष्मीकरण का सिद्धान्त, मनोविज्ञान एवं मनश्चिकित्सा, ध्वनि विज्ञान एवं मंत्र चिकित्सा तथा आस्थाओं के जीवन में समावेश का एक अद्‌भुत समन्वय है । मनोविकारों से पीड़ित असंख्यों मानवों के लिए आज ऐसी ही एक चिकित्सा पद्धति की आवश्यकता है । इन अप्रत्यक्ष रोगों की चिकित्सा हेतु यदि इस चिर-पुरातन पद्धति को आधुनिक सन्दर्भ में पुनर्जीवित किया जा सके, तो पीड़ित मानवता की यह सर्वोपरि सेवा होगी ।

रोग निवारण हेतु वर्तमान में सीमित संख्या में शारीरिक एवं मानसिक रोगों को लिया गया है । इनके निदान की उचित व्यवस्था की गयी है । रोगों को स्थूल एवं सूक्ष्म दो वर्गो में विभाजित किया गया है । स्थूल में शारीरिक एवं मनोशारीरिक रोगों को लिया गया है । मानसिक विकृतियों एवं विकारों की शरीर गति प्रतिक्रियाओं को ही मनोशारीरिक व्याधि कहा जाता है । सूक्ष्म रोगों में आत्मिक तथा मानसिक व्याधियाँ एवं मनोविकारों को लिया गया है । यथा-अवसाद भ्रान्ति, सनक, उत्तेजना-आवेश, अपराधी-वृत्ति एवं संकीर्ण स्वार्थपरता । शोध संस्थान में मनःविश्लेषण की पाश्चात्य प्रक्रिया को एक विशिष्ट आध्यात्मिक मोड़ देकर व्यक्तित्व के समग्र विश्लेषण की व्यवस्था बनायी गयी है । तदनुरूप ही यज्ञ चिकित्सा का क्रम निर्धारित किया जाता है । प्रत्येक व्याधि-समूह के लिए रासायनिक विश्लेषण एवं गुण, धर्मो के आधार पर वनौषधियों का चयन किया गया है । इनका उपयोग हविष्य, समिधा, क्वाथ, धूम्र, भस्म के रूप में किया जा रहा है एवं इन विभिन्न रूपों की सम्भावित प्रतिक्रियाएँ नोट की जा रही हैं ।

रोग निवारण तो मात्र एक ही पक्ष हुआ । इससे भी महत्वपूर्ण एवं आवश्यक पक्ष हैं, रोग द्वारा उत्पन्न कमजोरी का निवारण एवं जीवनी शक्ति का सम्बर्धन । जिससे जीवाणुओं के आक्रमण की सम्भावना को टाला जा सके । स्वास्थ्य सम्बर्धन शारीरिक मात्र शरीर गत बलिष्ठता का पर्यायवाची पक्ष नहीं है । समग्र स्वास्थ्य सम्बर्धन बलिष्ठता, ज्ञान-सम्बर्धन, संकल्प बल एवं प्रवाह की वृद्धि, एवं दूर-दर्शिता विकास, उमंग तथा स्फूर्ति का प्रादुर्भाव, भावना में श्रद्धा तथा क्रिया में निष्ठा है । सम्वेदनाओं को जीवन में उचित स्थान दिये बिना उत्तम शारीरिक स्वास्थ्य एकांगी उपलब्धि ही मानी जायेगी । इसीलिए उदारता, करुणा, सेवाभाव का जीवन में समावेश स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक माना गया है । यज्ञोपचार की प्रक्रिया इन सातों पक्षों के समग्र विकास पर ध्यान देती है । दुर्बलता अपने आप में एक विपत्ति है । शरीर से बलिष्ठ होते हुए भी उमंग एवं उत्साह के अभाव में वह व्यक्ति परास्त हो जाता है । इसीलिए दुर्बलता-निराकरण हेतु यज्ञोपचार द्वारा जो उपाय अपनाये जाते हैं, उनमें सभी पक्षों का समुचित ध्यान रखा जाता है ।

यज्ञ से व्यक्ति, वनस्पति एवं जीव-जन्तु मात्र लाभान्वित नहीं होते, वरन् अभीष्ट वातावरण के निर्माण में भी असाधारण योगदान मिलता है । प्रकृति के असन्तुलनों, प्रकोपों के निवारण एवं अनुकूलन में भी यज्ञ प्रक्रिया बनती है । 'पर्जन्य' अर्थात् प्राणयुक्त वर्षा । इकॉलाजिकल सन्तुलन के निर्माण में इस पर्जन्य के कारण वैदिक युग में प्रकृति सहायक थी एवं जो भी खाद्यान्न इस धरती पर उगाये जाते थे, उनमें एक विशिष्टता समाहित रहती थी । यज्ञ-परम्परा ही इस विशिष्टता के मूल में निहित थी । आज भी भारतीय खाद्यान्न में जो स्वाद एवं मिठास देखने में आता है, वह अन्यत्र कहीं नहीं है । यह न्यूनाधिक रूप में विद्यमान अग्निहोत्र परम्परा का ही सत्परिणाम है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि विकिरण द्वारा बढ़ रही रेडियो धर्मिता एवं औद्योगिक प्रदूषणों से विषाक्त हो रहा वातावरण पर्यावरण के असन्तुलन को बढ़ाये एवं बनाये रखने में आज सक्रिय रूप से क्रियाशील है । आँधी-तूफान, चक्रवात्, भूकम्प,ज्वालामुखी का फटना, मौसम के शीघ्र होने वाले परिवर्तन, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ईति-भीति आदि महामारियाँ मानव द्वारा आमन्त्रित किये गये प्रकृतिजन्य प्रकोप हैं । प्रकृति के इन असन्तुलनों का निवारण करने से काम नहीं बनेगा । वनस्पति, सम्बर्धन एवं जीव-जन्तुओं के जीवनयापन हेतु जिस वातावरण की आवश्यकता है वह भी निर्मित करना जरूरी है । वृक्ष-वनस्पति, वायुमण्डल, पृथ्वी, जीव-जन्तु, कृमि-कीटक एवं मानव समुदाय का परस्पर सहयोग-सहभाव इसी आधार पर संभव है ।

यज्ञ मे सन्निहित विभिन्न प्रक्रियाओं की वनस्पति जगत पर क्या प्रतिक्रिया होती है, यह देखने के लिए प्लाण्ट फिजियोलॉजी के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है । इसमें उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है, उनसे पौधों के द्रवों पर प्रभाव, उनके सूक्ष्म अमीनों एसिड घटकों मे परिवर्तन एवं उनकी स्थूल वृद्धि का मापन किया जायेगा । इसी के साथ यज्ञधूम, भस्म तथा अवशिष्ट का पौधों का व्याधिग्रस्त करने वाले जीवाणु-फंगाई आदि पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसके लिए भी प्लाण्ट पैथोलाजी कक्ष में अनुसंधान की व्यवस्था बनाई गयी है । अग्निहोत्र की भस्म का उपयोग करने से पौधों की वृद्धि में क्या कुछ अन्तर आता हैं, यह भी पादप कायिकी के प्रयोग द्वारा जाना जाता है ।

जलवायु में परिवर्तन एवं प्रदूषण का मापन करने के लिए मेटेरियोलॉजी विभाग द्वारा विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है । इन्हीं की सहायता से यज्ञीय प्रक्रिया की मौसम पर प्रतिक्रिया जानने का यत्न किया जा रहा है । इसी तरह यज्ञ का पशुओं जीव-जन्तुओं के स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसे जानने के लिए प्रायोगिक जन्तुओं (गिनी पिग) पर ठीक वैसे ही प्रयोग अगले दिनों किये जायेगें , जैसे कि मनुष्य पर यज्ञ की प्रतिक्रिया देखने के लिए क्रियान्वित हो रहे हैं ।

सारा यज्ञ-विज्ञान अपने आप में एक विशद शोध का विषय है । जैसे-तैसे शोध प्रक्रिया विकसित होती जायेगी, साधन एवं सुयोग्य व्यक्ति उपलब्ध होते जायेंगे, एक-एक पक्ष अपने विस्तृत रूप में जन-मानस के सामने प्रकट होता चलेगा । इसी की आज आवश्यकता भी थी ।

यह तो यज्ञ -विज्ञान का वैज्ञानिक पक्ष रहा । यज्ञ का दार्शनिक पक्ष इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है । यज्ञ दर्शन में समाज का शिक्षण सन्निहित है । एक-एक कर्मकाण्ड अपने अन्दर कई शिक्षाएँ लिये हुए हैं । यज्ञीय प्रेरणाओं से मानवी व्यक्तित्व के विकास एवं सामाजिक उत्थान में मिलने वाले योगदान पर ध्यान देने पर यह तथ्य उभर कर आता है कि समग्र 'पैथी' इनको जोड़ने से ही बनती है । सामूहिकता, सहकारिता, अनुशासन, शोभा, सुसज्जा जैसी कई प्रवृत्तियों के अभिवर्धन का शिक्षण यज्ञ द्वारा समाज का किया जा सकता है । इस तरह रोग निवारण, स्वास्थ्य सम्बर्धन, वनस्पति सम्वर्धन, वातावरण निर्माण एवं संशोधन, दैवी अनुकूलन, शक्तिजागरण, समाज शिक्षण जैसे अनेकानेक पक्षों का समावेश यज्ञ-विज्ञान में है ।

अग्निहोत्र से शरीर ही नहीं, मन का भी उपचार

वनौषधियों के पंचांग को कूटकर खाने में उसे बड़ी मात्रा में निगलना कठिन पड़ता हैं । यही स्थिति ताजी स्थिति में कल्क बनाकर पीने में उत्पन्न होती है । इससे तो गोली या वटिका बना कर सेवन करने में मनुष्य को कम कठिनाई अनुभव होती है । सूखी स्थिति से भी क्वाथ अर्क, आसव, अरिष्ट अधिक सुविधा जनक रहते हैं और प्रभावी भी होते हैं । ठोस और द्रव की उपरोक्त दोनों विधाओं से बढ़कर वाष्पीकृत ओषधि की प्रभाव क्षमता अधिक व्यापक एवं गहरी होती है । नशा करने वाले मुँह से भी गोली या मादक द्रव्य लेते हैं व अपनी नसों में भी इन्जेक्शन लगाते हैं, पर इससे भी अधिक तीव्र व शीघ्र नशा उन्हें नाक से सूंघी हुई ओषधि या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धूमपान द्वारा आता है । यह इसलिए कि वाष्पीभूत मादक द्रव्य नासिका एवं फेफड़ों के माध्यम से अंदर पहुँचकर प्रभावी हो जाते हैं । इस प्रकार स्पष्ट है कि ठोस, द्रव और गैस के तीन रूपों में पाया जाने वाला पदार्थ एक के बाद दूसरे दूसरे की अपेक्षा तीसरे स्तर पर अधिक क्षमतावान होता चला जाता है ।

अग्निहोत्र विधा के साथ भी ऐसे ही अनेक कारण जुड़े हुए हैं, जिनके कारण उसे प्राचीन काल में उच्चकोटि की प्रतिष्ठा मिली थी । आज भी उस मान्यता को पुनः प्राण मिलने की स्थिति है । वनौषधियाँ वाष्पीकृत स्थिति में फेफड़ों से होती हुई मस्तिष्क आदि अवयवों में होकर शरीर के जीवकोषों तक पहुँचती व अपनी सीधी पहुँच के कारण ही प्रभाव दिखा पाने में सक्षम हो पाती है । ऐसा अनुमान है कि फेफड़ों में विद्यमान वायु कोष्ठकों का औसत क्षेत्रफल लगभग सौ वर्ग मीटर का तथा दस माइक्रोमीटर पतला होता है । एक बार में साधारण श्वास द्वारा वायु का ५०० मिली लीटर एवं गहरी श्वास द्वारा ९०० से ९५० मिलीलीटर आयतन अंदर प्रवेश कर इसके बदले कार्बनडायआक्साइड को बाहर भेज देता है । ऐसी श्वास प्रश्वास प्रक्रिया एक मिनट में १५ से अठारह बार होती है । इस प्रकार एक मिनट में, जब तक हृदय लगभग ७० से ८० बार धड़क चुका होता है, श्वास मार्ग द्वारा ७५५० मिलीलीटर वायु का एक्सचेंज हो चुका होता है । इन आँकड़ों से एक अनुमान इस सशक्त माध्यम का लगाया जा सकता है जिससे वनौषधि यजन प्रक्रिया द्वारा वाष्पीभूत धूम शरीर में प्रविष्ट कराया जाता हैं । यजन प्रक्रिया के अनेकानेक आध्यात्मिक लाभों के अतिरिक्त उसका प्रभाव शरीर और मन के सभी महत्वपूर्ण अवयवों तक पहुँचने की मान्यता का वस्तुतः तर्क पूर्ण आधार है ।

मस्तिष्कीय उपचार अपने आप में एक ऐसी विधा है, जिसकी आवश्यकता शरीरोपचार से भी अधिक समझी जानी चाहिए । इन दिनों मनोविकारों-मानसिक रोगों की भरमार शारीरिक बीमारियों से कहीं अधिक है । किन्तु इसे बिडम्बना ही कहना चाहिए कि समस्त चिकित्सा पद्धतियाँ मात्र शारीरिक व्यथाओं के इर्द-गिर्द ही अपने प्रयासों को सीमित रख रही हैं । संसार में अनेकानेक चिकित्सा पद्धतियों का प्रचलन है, किन्तु उनमें से एक भी ऐसी नहीं है जो मनोविकारों पर ध्यान देती और उनके समाधान खोजती हो । गेस्टाल्ट साइकोथेरेपी से लेकर विहेवियोरल साइकोथेरेपी तक अनेकानेक पद्धतियाँ प्रचलन में हैं, परन्तु वे मानस की स्थूल परत तक ही अपनी पैठ बिठा पाती हैं । भारतीय मनोविज्ञान में जिसे अन्तःकरण चतुष्टय कहकर संबोधित किया गया है, उसके उपचार का विधान मात्र अग्निहोत्र उपचार पद्धति में देखने को मिलता है । आत्महत्या की प्रवृति से लेकर विभिन्न भ्रान्तियों-सनक वाले रोगी जेल स्तर पर पागल खानों में कैद कर दिए जाते हैं, बहुसंख्यों को बिजली के झटके भी लगा दिए जाते है; किन्तु इस उपचार से कितने रोगी अच्छे हो पाते हैं, यह नहीं कहा जा सकता । शामक एवं मस्तिष्क को संज्ञा-शून्य करने वाली औषधियाँ ही प्रचलन में दिखाई पड़ती हैं । हो सकता है, इससे उन्माद में कुछ घट-बढ़ होता हो, पर जन समुदाय में से अधिकांश को जिन हल्के मनोरोगों का शिकार बनकर रहना पड़ रहा है, उनके निराकरण का कोई विकल्प नजर नहीं आता ।

इन दिनों अन्यान्य प्रदूषणों के साथ एक प्रदूषण और आ जुड़ा है वह है, चिन्तन का विचारणा भावना का एवं आस्थाओं का प्रदूषण । आशंका, अविश्वास, अकारण चिन्ता, भय, उत्तेजना, असंतुलन आदि से कितने ही लोग घिरे देखे जाते हैं । सोचने की सही पद्धति हाथ न लगने के कारण कितने ही लोग बौखलाये फिरते हैं । कईयों को निराशा, उदासी घेरे रहती है । मनोबल, संकल्प शक्ति का नितान्त अभाव दिखाई पड़ता है । कई कल्पनाएँ गढ़ते और उनमें उलझकर इस प्रकार रहते हैं मानों उन पर कोई विपत्ति का पहाड़ टूटने वाला हो । कुकल्पनायें चित्र - विचित्र मोड़ लेकर बहकाती रहती हैं । इन विकारों से व्यक्तित्व टूट जाते हैं । कईयों के परस्पर विरोधी, कई व्यक्तित्व उभर आते हैं । सोचते कुछ, कहते कुछ, और करते कुछ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं । अवास्तविक को वास्तविक मानते हैं । इनकी विक्षिप्तता स्वयं अपने को बेतुकी असमंजसों में डाले और हैरानियों में उलझाये रहती है । ऐसी सनकें न्यूनाधिक मात्रा में असंख्यों पर छाई रहती हैं । प्रत्यक्षत: दिखाई भले न पड़ती हों पर थोड़े से सम्पर्क से ही ये उभर कर सामने आ जाती हैं । जिन्हें विवेकशील और संतुलित व्यक्तित्व कहा जा सके, ऐसे कोई बिरले ही व्यक्तित्व दिखाई देते हैं ।

ब्रह्मवर्चस् के वैज्ञानिक गहन मनोवैज्ञानिक जाँच पड़ताल के बाद व्यक्तित्व संबधी इन विकृतियों का निदान करते हैं । आत्म-प्रत्यय, व्यक्तित्व विश्लेषण एवं विभिन्न मनो-आध्यात्मिक प्रश्नावलियों के माध्यम से उन प्रसुप्त मनोविकारों की जाँच पड़ताल की जाती है जो बहिरंग में नजर आ रहे लक्षणों-शारीरिक रोगों के मूल में निहित होते हैं । प्रायश्चित परम्परा के माध्यम से साधकों, परीक्षार्थियों से उनके विगत के चिन्तन-क्रिया कलाप वर्तमान मन:स्थिति तथा भविष्य के प्रति दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया जाता है । चिकित्सा तंत्र के प्रति आस्था एवं वातावरण में विद्यमान विशिष्टता उनकी गहरी से गहरी ग्रंथि खोलने में सहायक होती हैं । पॉलिग्राफ लाईडिटकटर नामक यंत्र इस प्रक्रिया में सहायता करता है । इसमें त्वचा का विद्युतीय प्रतिरोध, मांशपेशियों की विद्युत तथा मस्तिष्क की अल्फा वेव्स को भी मापे जाने एवं बायोफीडबैक यंत्र द्वारा परीक्षार्थिओं को क्रमश: ग्रंथिमुक्त होने का शिक्षण दिये जाने की भी व्यवस्था है । साधारण स्थिति में यही उपकरण व्यक्ति की ध्यान एकाग्रता में वृद्धि तथा मन: शक्ति संवर्धन द्वारा विद्युतीय त्वचा प्रतिरोध में अंतर के रूप में परीक्षण के काम आते हैं ।

इन दिनों उद्धत स्वभाव की तरह अपराधी कृत्यों की, आत्महत्याओं, बलात्कारों की बाढ़ आ रही है । अभक्ष्य भक्षण, नशेबाजी का दौर वे हिसाब चल रहा है । इन सब का भी जन मानस पर कम कुप्रभाव नहीं पड़ रहा है । चिन्तन और चरित्र की गिरावट का भी मनोविकारों की अभिवृद्धि में योग होना ही चाहिए । यही कारण है कि शारीरिक और मानसिक रोगों की व्यापकता और गहराई दोनों बढ़ती जा रही है । रोगों में रक्तचाप वृद्धि, पाचन तंत्र की विकृतियाँ, रक्तविकार, दमा, जननेन्द्रियों की बीमारियाँ तथा मानसिक तनाव आदि का बाहुल्य है । नई दवाएँ नित्य निकलती हैं, किन्तु कुछ ही दिनों में गुणहीन होने लगती हैं ।

ऐसी दशा में वनौषधियों की सूक्ष्म शक्ति का उपयोग आवश्यक हो गया है । वे वायुभूत बना लेने पर सांस के द्वारा मस्तिष्क के अनेक क्षमता क्षेत्रों और शरीर के अंतरंग अवयवों तक आसानी से पहुँचाई जा सकती हैं । उनकी प्रभाव क्षमता अधिक एवं स्थायी है । इन ओषधियों के कार्यकारी घटकों अंतरंग इसका परीक्षण अवयवों तक तुरन्त पहुँच जाने की सामर्थ्य एवं प्रभाव के रूप में किया जा सकता है । 'रेडियों इम्यूनो' एसे तथा 'स्पेक्ट्रोफोटोमेट्री' द्वारा यह देखा जा सकता है कि किस शीघ्रता से विभिन्न ओषधि संघटक जीवकोषों तक पहुँचते व अंत: स्रावों को सक्रिय करते हैं । यह प्रक्रिया ठोस-चूर्ण रूप एवं क्वाथ-द्रव रूप में प्रयोग किये जाने की अपेक्षा अधिक लाभदायक सिद्ध होती है ।

जिस अवयव में जिन रसायनों की, जिन ऊर्जा तत्वों की कमी पड़ती है, वह उपयुक्त सामग्री प्रस्तुत होने पर अग्निहोत्र वाष्प में से खींच ली जाती है और आवश्यकता पूर्ति हो जाती है । जो कुछ भी कमी रहती है, वह यज्ञावशिष्ट भस्म एवं चरु सेवन के माध्यम से पूरी हो जाती है । यही अग्निहोत्र प्रक्रिया अपनी उष्मा से वायुभूत तैलीय ओषधि तत्वों का फ्रेफड़ों से अवशोषण बढ़ा देती है । साथ-साथ अल्पमात्रा में त्वचा से होने वाली श्वसन प्रक्रिया की गति बढ़ा देती है । इसे वायटेलोग्राफ (स्पायरोमेट्री) द्वारा लंगफैक्शन्स तथा प्लेथिज्मो ग्राफी द्वारा रक्त का आयतन ज्ञात कर मापा जाता है । यह कार्य ब्रह्मवर्चस् की प्रयोगशाला में चल रहा है । अग्निहोत्र उपचार की यही विशेषता है कि शारीरिक एवं मानसिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

रोगों में जिन तत्वों की कमी पड़ जाती हैं, उन्हें धूम्र में से आसानी से खींच लिया जाता है । साथ ही प्रश्वास द्वारा भीतर घुसी अवांछनीयता को बाहर धकेल कर सफाई का आवश्यक प्रयोजन पूरा कर लिया जाता है । बहुमुखी संतुलन बिठाने का माध्यम हर प्रकार की विकृतियों का निराकरण करने में असंदिग्ध रूप में सफल होता है ।

अग्निहोत्र उपचार एक प्रकार की समूह चिकित्सा है, जिससे एक ही प्रकृति की विकृति वाले विभिन्न रोगी लाभान्वित हो सकते हैं । यह सुनिश्चित रूप में त्वरित लाभ पहुँचाने वाली, सबसे सुगम एवं सस्ती उपचार पद्धति है । जब वाष्पीभूत होने वाले ओषध तत्वों को साँस के साथ घोल दिया जाता हैं तो रक्तवाही संस्थान के रास्ते ही नहीं, कण-कण तक पहुँचने वाले वायु संचार के रूप में भी वहाँ जा पहुँचता है, जहाँ उसकी आवश्यकता है ।

यह बहुविदित तथ्य है कि हाइपॉक्सिया (कॉमा) के रोगी को अथवा वेण्टीलेशन में व्यतिक्रम आने पर, साँस लेने में कठिनाई उत्पन्न होने पर नलिका द्वारा नाक से ऑक्सीजन पहुँचाई जाती है । किन्तु इस आक्सीजन को शुद्ध रूप में नहीं दिया जाता, इसमें कार्बन डायऑक्साइड की लगभग पाँच प्रतिशत मात्रा का भी एक संतुलित अंश रहता है, ताकि मस्तिष्क के केन्द्रों को उत्तेजित कर श्वसन प्रक्रिया नियमित बनायी जा सके । अग्निहोत्र मे उत्पन्न वायु ऊर्जा में भी यही अनुपात गैसों के सम्मिश्रण का रहता है । विशिष्ट समिधाओं के प्रयुक्त होने से उत्पन्न ऊर्जा के सम्मिश्रण को उपयुक्त स्तर का बना देती है । किन समिधाओं व किन वनौषधियों की कितनी मात्रा ऊर्जा उत्पन्न करने हेतु प्रयुक्त की जाय, यह इस विधा के विशेषज्ञ जानते हैं एवं तदनुसार परिवर्तन करते रहते हैं ।

शारीरिक रोगों एवं मनोविकारों से उत्पन्न विपन्नता से छुटकारा पाने के लिये अग्निहोत्र से बढ़कर अन्य कोई उपयुक्त उपचार पद्धति है नहीं, यह अब सुनिश्चित होता जा रहा है । जिस गम्भीरता एवं मनोयोग से वर्तमान शोध प्रयत्न चल रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि निकट भविष्य में निश्चय ही एक ऐसी सर्वाङ्गपूर्ण चिकित्सा पद्धति का विकास हो सकेगा जो प्रचलित सभी उपचार पद्धतियों को पीछे छोड़कर अपनी विशिष्टता क्षेत्र की सभी विकृतियों के निराकरण की पूरी-पूरी सम्भावना है । ऐसी दशा में यज्ञोपचार पद्धति का प्रादुर्भाव मानवी भविष्य के लिए एक अभिनव उपलब्धि होगी ।

यज्ञावशिष्ट, पुरोडाश एवं चरु की महत्ता

यज्ञ का आश्चर्यजनक प्रभाव जहाँ मनुष्य जाति की आत्मा बुद्धि एवं शारीरिक मानसिक नीरोगता पर पड़ता है, वहाँ प्रजनन कोषों की शुद्धि भी होती है । याज्ञिकों को सुसंतति प्राप्त होती है । जिनके संतान होती है वे अपने भावी बालकों को यज्ञ भगवान के अनुग्रह से सुसंस्कारी, स्वस्थ, बुद्धिमान, सुन्दर और कुल की कीर्ति बढ़ाने वाला बना सकते हैं । जिन्हें संतान नहीं होती है, वे उन बाधाओं को हटा सकते हैं जिनके कारण वे संतान सुख से वंचित हैं । प्राचीन काल में संतान हीनों के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ सम्पन्न किये जाते थे । यज्ञ के अंत में पुरोडाश या चरु अर्थात् खीर का हवन किया जाता था और बचे हुए भाग को यज्ञ-शेष के रूप में स्त्री-पुरुष या दोनों में से एक को भक्षण कराया जाता था । इससे जहाँ यज्ञ में आहुति दी हुई ओषधियों की सुगंध एवं ऊर्जा नासिका तथा रोमकूपों द्वारा प्रविष्ट होकर शरीर में आवश्यक तत्वों की अभिवृद्धि में सहायक होती थी, वहीं उन ओषधियों के मिश्रण से बने पुरोडाश और चरु यज्ञावशिष्ट के रूप में खाने से याज्ञिकों में जीवनी शक्ति के अभिवर्धन के साथ ही संतानोत्पादक तत्वों की कमी की भी पूर्ति हो जाती थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ में श्रृंगी ऋषि ने कौशल्या आदि रानियों को साधारण चावल की खीर नहीं, प्रत्युत उपयुक्त गुणों से युक्त ओषधियों द्वारा निर्मित चरु या खीर का आस्वादन कराया था । इसलिए उन माताओं ने राम, लक्ष्मण जैसे धर्मात्मा , वीर-पराक्रमी पुत्रों को जन्म दिया था । इसी तरह भागवत् पुराण के छठे स्कंध के १४ वें अध्याय में उल्लेख है कि राजा चित्रकेतु ने अंगिरा ऋषि से प्रार्थना करके पुत्रेष्टि यज्ञ संपन्न किया था । यज्ञ समाप्त होने पर ऋषि ने सबसे बड़ी रानी कृताद्युति को यज्ञ-चरु का भोजन कराया था जिसके फल-स्वरूप उसने सुंदर श्रेष्ठ एवं तेजस्वी राजकुमार को जन्म दिया । मनु- पुत्री इला एवं भगवान वासुदेव के दस पुत्रों का जन्म, कौशल देश के देवदत्त ब्राह्मण को पुत्र की प्राप्ति यज्ञ के माध्यम से हुई थी । राजा द्रुपद ने द्रोणाचार्य को मारने के लिए उनसे भी अधिक बलिष्ठ और शस्त्रविद्या का ज्ञाता पुत्र प्राप्त करने के लिए यज्ञ कराया था । यज्ञ के अंत में जब पुत्रोत्पादक पुरोडाश बन कर तैयार हुई और जो अत्यंत स्वल्पकाल उसे खाने के लिए नियत था, उस समय दुर्भाग्यवश रानी जूठे मुँह थी । मुहुर्त व्यतीत होता देख यज्ञकर्ता ने उस खीर को यज्ञकुंड में ही पटक दिया । उसी समय धृष्टद्युम्न और द्रौपदी यज्ञकुंड में से निकले और अंत में उन्हीं से द्रोण की मृत्यु हुई । इस प्रकार की अनेकों घटनायें इतिहास-पुराणों में भरी पड़ी हैं जो यज्ञ और उसमें प्रयुक्त पुरोडाश एवं चरु की महत्ता का प्रतिपादन करते हैं ।

शतपथ ब्राह्मण १/६/२/५ के अनुसार 'पुरोडाश' उसे कहते हैं जो यज्ञ में पहले समर्पित किया जाता है । ऐतरेय ब्राह्मण २/१३ में भी उल्लेख है- **पुरो वा एतान् देवा अक्रत यत्पुरोडाशानां पुरोडाशत्वम्** अर्थात् चूँकि यज्ञ में देवों ने इसे पहले प्रयुक्त किया इसलिए इसे 'पुरोडाश' कहा जाता है । वस्तुतः पुरोडाश या चरु यज्ञाग्नि पर पकाये हुए ओषधीय हव्य पदार्थ को कहते हैं । पूर्णाहुति हो जाने के उपरांत हवन कुंड या वेदी पर जो अग्नि रहती है उस पर उपयुक्त ओषधियों के मिश्रण से युक्त निर्धारित आटे की बाटी सेंक ली जाती हैं । उसे पुरोडाश कहते हैं । प्रत्येक अन्न के गुण अलग-अलग होते हैं । उसी हिसाब से उसके आटे के गुण होते हैं । यह आटा अन्न को धोकर सुखा लेने के उपरांत धुली हुई चक्की पर अपने हाथ से पीसा जाता है । अन्न को धोना इसलिए आवश्यक है कि उसमें कोई मिश्रण न रहे । चक्की को भी धो लेना इसलिए जरूरी है कि इससे पिछली बार का कोई पिसा आटा उसमें मिश्रित न हो । यह शुद्धता की सावधानी है ।

चरु का तात्पर्य खीर से है । इसे स्थालीपाक भी कहते हैं । यज्ञ के अंत में ओषधि मिश्रित इस खीर को, चरु को याज्ञिक के हाथों उसकी स्विष्टकृत आहुति दिलवाने के पश्चात् शेष बचे चरु को यज्ञावशेष के रूप में उसे खिला देते हैं । इस प्रकार चरु उसे कहते हैं जो हवन कुंड या वेदी के ऊपर पतले तांबे या चाँदी के वर्तन में खीर बनायी जाती है । यह चावल की बनानी हो तो चावलों को पहले पानी में भिगो देना चाहिए ताकि अग्नि का तापमान कम हो तो भी वह पक सके । आम -तौर से मेवाओं की खीर-चरु पकायी जाती है जिस मेवा की खीर पकानी हो उसे अच्छी तरह धोकर चार घंटा पूर्व पानी में फूलने के लिए डाल देनी चाहिए ताकि कम तापमान में भी वह पक सके ।

वैदिक काल से पुरुषों के लिए 'पुरोडाश' और महिलाओं के लिए 'चरु' का प्रचलन रहा है । किये गये यज्ञ का सर्वोच्च प्रभाव इनमें समाविष्ट होना माना गया है । पुरोडाश या चरु दोनों में से एक ही यज्ञीय ऊर्जा से बन सकता है । इसलिए यह निर्णय पहले ही करना होता है कि किये गये यज्ञ का प्रमुख लाभ किसे मिले पुरुष या नारी को । पूर्णाहुति होने के उपरांत सामान्य यज्ञों में थोड़ा सा ही तापमान बचता है । इसलिए उसमें से एक ही पदार्थ बन सकता है । 'पुरोडाश' बना लेने के उपरांत इतनी अग्नि ऊर्जा नहीं बचती कि उस पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

'चरु' पकाया जा सके । यह कार्य तभी हो सकता है जब अधिक आहुतियों वाला बड़े कुण्डों वाला यज्ञ हो । उसके लिए न केवल शाकल्य एवं घृत भी उच्च श्रेणी का विशेष व्यवस्था एवं सावधानी के साथ बना हुआ होना चाहिए, वरन् यज्ञ विधा को पूर्ण रूप से जानने वाले अध्वर्यु, उद्गाता ब्रह्मा एवं आचार्य भी होने चाहिए । यजमान को एक सप्ताह का व्रत उपवास करना चाहिए । चारों पुरोहितों को एक मास पूर्व फलाहार पर रहना चाहिए तथा एक वर्ष से ब्रह्मचर्य पूर्वक संयम से रहना चाहिए । होता यजमान और आचार्य दोनों ही पक्ष उच्चस्तरीय साधनारत हों, तभी बड़े यज्ञों का विधान ठीक तरह संपन्न हो सकता हैं, जो वर्तमान परिस्थितियों में अत्यधिक कठिन है ।

निजी अनुभव एवं परामर्श से पाँच कुण्ड के तीन दिन में संपन्न होने वाले यज्ञ का विधान अनुकूल माना गया है । इसके लिए पाँच कुण्ड का यज्ञ करना पर्याप्त है । ऐसे यज्ञ से जो क्षमता उत्पन्न होती है, वह इतनी ही होती है कि एक व्यक्ति के लायक 'पुरोडाश' बना सके अथवा एक महिला के लिए 'चरु' उपलब्ध हो सके । दोनों के लिए बनाया जायगा तो शक्ति बँट जायगी और किसी को भी समुचित लाभ न मिल सकेगा । एक समय का पेट भर सके, इतनी मात्रा में चरु या पुरोडाश मिल सके, ऐसा प्रबंध करना चाहिए । वेदी पर तो इतनी मात्रा नहीं हो सकती, इसलिए जहाँ कुंड बनाकर यज्ञ किया गया हो, वहीं व्यवस्था की जानी चाहिए । पाँच कुण्डों में पाँच बाटी बन सकती हैं । इतने में एक मनुष्य का पूरे दिन का आहार मिल सकता है । यही बात 'चरु' के संबध में भी है । पाँच कुण्ड के यज्ञ में थोड़ी-थोड़ी मात्रा में खीर पकाई जाय तो उससे एक महिला २४ घंटे क्षुधा निवृत्ति हो सके, इतनी खीर मिल सकती है ।

यज्ञ की जीवनी शक्ति की ऊर्जा पुरोडाश या चरु में होती है । इसलिए यह व्यक्ति विशेष के धन या प्रयत्न से किया जाता है । सामूहिक या सार्वजनिक यज्ञ में यह नहीं बनाया जाना चाहिए, क्योंकि पैसा सबका लगे ओर लाभ एक उठावे, यह अनुचित है । सामूहिक यज्ञ में नवान्न को भूनकर उसका प्रसाद सबको बाँटा जाता है । होली के यज्ञ में यही होता है । जौ की बालें होली की अग्नि पर भूनते हैं और उसी में से थोड़ा-थोड़ा अन्न सभी को बाँट देते हैं । यह पुरोडाश प्रथा है कहीं-कहीं नारियल की गिरी या गोला होली की अग्नि पर भून कर उसका एक-एक छोटा टुकड़ा उपस्थित जनों में बाँट देते हैं । इसे प्रसाद कह सकते हैं । जैसे यज्ञ के घृत को हाथों से मलकर अग्नि पर तपा कर चेहरे में लगाते हैं । जैसे यज्ञ की भस्म को एक अंगुली से मस्तक, कंठ, आदि पर लगाते हैं, उसी प्रकार यज्ञाग्नि पर कच्चे जौ भूनकर प्रसाद रूप में बाँटे जा सकते हैं । जौ की ऋतु न हो तो ज्वार, बाजरा आदि जो कच्चा अन्न उपलब्ध हो, उसका पुरोडाश भूनकर उपस्थितजनों को प्रसाद रूप में बाँट देनी चाहिए । यह सामूहिक पुरोडाश वितरण की बात हुई । एकाकी पुरुष या नारी अथवा दंपत्ति के उपयोग के लिए पुरोडाश या चरु कुण्ड या वेदी पर ही विनिर्मित किया जाता है । सामूहिक रूप से इसका प्रचलन यज्ञ विधान में नहीं है ।

पुरोडाश या चरु का उपयोग केवल संतानोत्पादन तक ही सीमित नहीं है, वरन् यह शारीरिक और मानसिक जीवनी शक्ति की अभिवृद्धि में भी बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है । दुर्बल एवं रोगियों के लिए पुरोडाश एवं चरु देने से उनकी जीवनी-शक्ति -प्राण ऊर्जा बढ़ती है, किंतु जिनकी पाचन शक्ति ठीक हो उन्हीं को इसकी पूर्ण मात्रा देनी चाहिए । कारण एक तो जो खाद्य-पदार्थ पकाया गया है, वह स्वयं ही पौष्टिक होता है और वनौषधियों के मिश्रण तथा यज्ञ की ऊर्जा का उसमें समावेश हो जाने से तो जीवनी शक्ति और भी अधिक बढ़ जाती है । अस्तु, व्यक्ति की पाचन शक्ति को देखकर ही यह हविष्यान्न से बना हुआ चरु या पुरोडाश उसे देना चाहिए । इसके गुण २४ घंटे तक ही रहते हैं । इसके उपरांत गुण समाप्त हो जाते हैं, फिर वह यज्ञ प्रसाद न रहकर मात्र खाद्यान्न ही रह जाता है ।

पुरोडाश के लिए जौ सर्वोत्तम माना गया है । जौ के छिलके हटाकर उसके आटे से उसकी बाटी हवनकुंड की मंद अग्नि पर सेंकी जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हविष्यान्न का भी पुरोडाश बनता है । हविष्यान्न का अर्थ होता है-जौ, चावल, तिल । अनुपात इस प्रकार है - तीन छटांक अर्थात् १५० ग्राम जौ, दो छटाँक चावल और एक छटाँक तिल । चावल प्राकृतिक लेना चाहिए । आजकल बासमती सरीखे कितने ही शंकर जाति के चावल चल पड़े हैं । यज्ञ कार्यों में प्राकृतिक चावल ही लेने चाहिए । तिल का जहाँ भी यज्ञ कार्य में उल्लेख हुआ है, वहाँ काले तिल से अभिप्राय है । तिल काले और सफेद मिले हुए हों तो उन्हें छान लेना चाहिए । अकेला जौ अधिक बलिष्ठ और गरिष्ठ होता है । उसका पुरोडाश युवा व्यक्तियों के लिए ही बनाना चाहिए । बच्चों को, वृद्धों को, कमजोरों को हविष्यान्न की बाटी बनानी चाहिए, वह इतनी मोटी न हो जो बीच में कच्ची रहे ओर किनारे जल जायँ । इतनी पतली भी न हो ओर इतनी देर सेंकी भी न जाय कि वह कड़ी हो जाय और चबाने में कठिनाई उत्पन्न करे ।

चरु में दूध अनिवार्य रूप से गाय का ही लिया जाता है । भैंस, बकरी आदि का दूध निषिद्ध है । गाय में भी काली गौ अधिक श्रेष्ठ मानी गयी है । जिसके नीचे बछड़ा हो उसका दूध और अधिक अच्छा है । अभाव में किसी भी गाय का दूध लिया जा सकता है ।

चरु-खीर के लिए चावल प्राकृतिक लेने चाहिए । धान लगे न रह गये हों, इसलिए उन्हें अच्छी तरह बीन लेने चाहिए । प्राकृतिक चावलों में चैता, सांवा, मकरा, रामदाना आदि भी लिये जाते हैं । यह फलाहारी माने जाते हैं और पचने में चावलों की तुलना में सुपाच्य होते हैं । चरु में मेवा भी मिलाई जा सकती है । जल्दी पक जाने वाली मेवाओं में किशमिश, छुहारा, काजू, पिस्ता, चिलगोजा मुख्य हैं । इन्हें आग पर चढ़ाने से पूर्व चार घंटे पानी में भिगो लेना चाहिए । इससे वे चावलों के साथ अच्छी तरह घुल जाती हैं । पकाने में इस बात का ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि वह न तो कच्ची रहने पावें और इतनी अधिक पकें भी नहीं कि लेही-पेस्ट बन जाय या जलने की गंध आने लगे और पेंदे पर चिपक जाय । बर्तन तांबे का लेना चाहिए पर जिनके यहाँ चाँदी के बर्तन पकाने लायक हों वे उसका प्रयोग कर सकते हैं ।

आयुर्वेद में वर्णित जो वनौषाधियाँ जिस रोग के लिए गुणकारी मानी गयी हैं, उन्हें पुरोडाश या चरु के साथ मिलाकर हवनकुंड या वेदी पर पका लेने पर यज्ञीय ऊर्जा समाविष्ट हो जाने के कारण उनकी क्षमता अनेक गुनी अधिक बढ़ जाती है । यज्ञ की संपूर्ण जीवन दायिनी शक्ति पुरोडाश या चरु में सन्निहित होती है । अतः इसका उपयोग न केवल रुग्णता एवं अक्षमता-अशक्तता निवारण एवं शारीरिक, मानसिक जीवनी-शक्ति की अभिवृद्धि के निमित्त किया जा सकता है, वरन् इसके सेवन से ओजस्वी-तेजस्वी ओर मनस्वी भी बना जा सकता है । इतना ही नहीं गीता ३-१३ एवं ४-३१ के अनुसार तो यज्ञ से बना हुआ यज्ञावशिष्ट अर्थात् चरु या पुरोडाश खाने वाला सर्व पापों से छूट जाता है तथा सनातन ब्रह्म को प्राप्त करता है ।

यज्ञ से अनेकानेक आधि-व्याधियों का निराकरण

यज्ञ विज्ञान का प्रमुख उद्देश्य मानवी अन्तराल का परिष्कृतीकरण तथा अदृश्य वातावरण का अनुकूलन है । साथ ही उस माध्यम से कितने ही भौतिक प्रयोजन भी सिद्ध होते हैं । शरीरगत प्राण ऊर्जा से जीवन स्थिर रहता है और प्रकृतिगत ऊष्मा से कच्चे को पकाने के अनेकानेक प्रयोजन सम्पन्न होते रहते हैं । दोनों अग्नियाँ मूलतः एक हैं । चेतना क्षेत्र में काम करते समय उसे प्राणाग्नि और पदार्थों के साथ गुँथने पर उसे पावक कहते हैं । यज्ञ तत्व का मूल प्रयोजन चेतना प्रखरता भर देने के अतिरिक्त आरोग्य लाभ जैसे लौकिक लाभ भी जुड़े हुए हैं ।

श्रम अग्नि है । पराक्रम अग्नि है । साहस अग्नि है । प्रतिभा अग्नि है । उमंग अग्नि है । श्रद्धा अग्नि है । समर्पण अग्नि है । इन अर्थों की बोधक अनेकों ऋचाएँ उपलब्ध हैं । संक्षेप में मानवी सत्ता के अन्तर्गत जितनी पवित्रता और प्रखरता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दृष्टिगोचर होती है उसे दिव्याग्नि का अनुदान कह सकते हैं । ब्रह्म अर्थात् ब्रह्म सम्वन्ध अर्थात् तदनुरुप पराक्रम । दोनों के मिलने से ब्रह्मवर्चस् शब्द बनता है इस समन्वय को ब्रह्मयज्ञ या विश्व-यज्ञ कह सके हैं । यही ब्रह्मग्नि है । चाहें तो उसी को ब्रह्मण्डीय ऊर्जा भी कह सकते हैं । यज्ञ का वह विराट् स्वरूप है । अग्निहोत्र तो उसका प्रतीक प्रतिनिधि भर है ।

भौतिक प्रयोजनों के लिए यज्ञाग्नि के अनेक प्रयोगों में एक आरोग्य रक्षा के लिए किया जाने वाला प्रयास 'भैषज' यज्ञ के नाम से प्रख्यात है । व्यक्तिगत दुर्बलता एवं रुग्णता को निरस्त करने के लिए एवं वायुमण्डल की व्यापक विषाक्तता के कारण उत्पन्न होने वाले रोग उपद्रवों के शमन में ऐसे आयोजन का प्रयोग होता रहा है । यज्ञ की अनेक उपलब्धियों में एक आरोग्य उपचार विधि भी है । इसमें शारीरिक और मानसिक रोगों के निवारण की विधि व्यवस्था है । यज्ञ चिकित्सा की सीमा बन्धन मानवी रोग निवारण ही नहीं, मानसिक अस्त-व्यस्ताओं को दूर करना तथा अन्तरिक्ष में संव्याप्त विषाक्तता से उत्पन्न होने वाली विपत्तियों का निराकरण भी है । इस प्रकार यज्ञ चिकित्सा प्रचलित सभी चिकित्सा पद्धतियों की तुलना में अधिक व्यापक और अधिक श्रेष्ठतर ठहरती है ।

आज के चिकित्सक को यह भलीभाँति समझ में आ गया है कि आधुनिक युग में उपलब्ध ओषधियों से समग्र चिकित्सा सम्भव नहीं है । बड़ी ही जल्दी शरीर उन ओषधियों के प्रति इम्युनिटी विकसित कर लेता है, जिससे वे तकरीबन प्रभावहीन ही सिद्ध होती हैं । एक 'टर्मीनल इलनेस' नामक व्याधि समूह भी विकसित हो गया है, जिसमें चिकित्सक रोग का स्वरूप समझ नहीं पाता; पर उसे गम्भीरतम एवं शीघ्र ही मृत्यु के मुख में जाने का भविष्य जर्शन करा देता है । 'आएट्रोजेनिसिटी'' अर्थात् ओषधियों के दुष्प्रभावों से होने वाली व्याधियों का एक अलग ही विषय, विगत एक दशक में चिकित्सा विज्ञान के अंतर्गत आ चुका है ।

एक और क्षेत्र ऐसा है जिसमें वैज्ञानिक स्वयं को अन्धकार में पाता है । वह है पर्यावरण में बढ़ता जा रहा असन्तुलन । विशेषकर कास्मिक किरणों एवं अन्य माइक्रोवेव्स की धरती ग्रह पर बरस रही बाढ़ जिसने मानवजन्य प्रदूषण में और भी वृद्धि कर दी है ।

''मेटेरियो बायोलाजी'' एवं 'क्लीनिकल इकालाजी' जैसे विषयों पर शोध का क्षेत्र बढ़ता चला जा रहा है । जितनी व्याधियाँ हो रही हैं, उसमें प्रधान कारण वातावरण का बीमार होना है । जिस ग्रह पर मनुष्य रह रहा है, इसके एनर्जी सायकल (ऊर्जा चक्र) को यदि सुसंन्तुलित न किया गया, तो इसके दुष्परिणाम सभी को सामूहिकरूप से भुगतने होंगे ।

'होलिस्टीक हेल्थ' का जो नया स्वरूप अब उभर कर आ रहा है इसमें प्रधानता रोग निवारण मात्र को नहीं दी जायेगी । वरन् स्वास्थ्य सम्बर्धन के उस पक्ष को दी जायेगी जिससे समस्त दबावों, प्रतिकूलताओं से मोर्चा लेने की मानवी क्षमता में वृद्धि हो । स्वास्थ्य का अर्थ मात्र बीमारी से मुक्ति नहीं है । यह और भी ऊँचा विस्तृत शब्द है, जिसमें मानसिक उल्लास, स्फूर्ति, आत्मिक दृष्टि से उन्नत स्वास्थ्य एवं जीवन के प्रति विधेयात्मक दृष्टिकोण भी आ जाता है ।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान, रोग विकृति विज्ञान अधिक है एवं थेरेपी या उपचार विज्ञान कम । इससे निदान का स्वरूप तो उभर कर आया है, चिकित्सा की बात अधिक सशक्त ढंग से प्रस्तुत नहीं हो पायी है ।

कुछ व्याधियों में निरन्तर बढ़ोत्तरी हुई है । कैंसर से ग्रस्त व्यक्तियों की संख्या बढ़ती जा रही है । अब तो यह बच्चों में भी होने लगा है । बढ़ती ओद्योगिक समृद्धि ने सांस लेने वाली हवा में घटोतरी की है एवं एलर्जी तथा अशुद्ध हवा से होने वाली हवा ने बढ़ोत्तरी की है । एअर पोलुशन (वातावरण प्रदूषण) एवं कैंसर में अब सीधा सम्बन्ध माना जा रहा है ।

किसी भी गैस पाइजनिंग का पहला दुष्प्रभाव होता है सांस का उथलापन । गहरी साँस लेने में कष्ट होता है, इसलिए सांस ली जाती है एवं यह धीरे-धीरे सांस लेने में तकलीफ तक को जन्म देने लगती है । हल्की सांस एवं डिस्पनिया के भावी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुष्परिणाम होते हैं, दमे का हल्का व गम्भीर आक्रमण, मस्तिष्कीय माइग्रेन (सिरदर्द आधाशीशी) थकावट, अवसाद, मंदाग्नि, वजन में निरन्तर कमी, कोलाइटस एवं नरवस डायरिया तथा अन्य स्नावयिक कमजोरियाँ ।

प्रदूषण का प्रभाव, जन्म ले रहे बच्चों पर पड़ रहा है । अधिक संख्या में विकलांग अब जन्म ले रहे हैं । गर्भपात अब अधिक संख्या में हो रहे हैं ।

ऐसे में यज्ञ चिकित्सा एक ऐसा माध्यम हो सकती है जो स्नायविक अनियमितताओं से लेकर कैंसर की अन्तिम स्थिति तक को ठीक कर सके किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव से रहित यह थेरेपी किस प्रकार काम कर सकती है, इस पर वृहत् अनुसंधान की आवश्यकता है ।

गलत आदतों से होने वाली व्याधियों को किस प्रकार ठीक किया जाये, उन सभी सूक्ष्म घटकों का सुनियोजन किस प्रकार किया जाये, जो स्वास्थ्य को किसी सीमा तक प्रभावित करते हैं, यही यज्ञोपचार का प्राण है । साइकोथेरेपी में साइकिएट्रिस्ट का स्वयं का व्यक्तित्व, उसका ज्ञान एवं रोग की तह में जाने की उसकी सामर्थ्य महत्वपूर्ण होती है, पर यह पहुँच अन्तःस्थल तक नहीं हो पाती । इसके लिए आध्यात्मिक एनॉटामी एवं थेरेपी के ज्ञाता 'होलीस्टीक हीलर' की आवश्यकता होती है जो गहराई तक न केवल प्रवेश करें बल्कि परामर्श भी दें । यज्ञ प्रक्रिया से जुड़ी सारी क्रियाएँ इस पक्ष को भी साथ लेकर चलती हैं ।

अब हमें वैज्ञानिकों को उस धरातल पर ले जाना होगा जहाँ तर्क, तथ्य एवं प्रमाण की भाषा में वे यह समझा सकें कि वनौषधियों को यज्ञशाला की ज्वाला में होमीकृत करने से, कुछ नियम एवं अनुशासन का पालन करने से आहार विहार का संयम एवं कुछ चुने हुए मन्त्रों का श्रद्धापूर्वक उच्चारण करने से ब्राह्मी चेतना या 'समष्टि प्राण' में कुछ ऐसे परिवर्तन होते हैं जो सभी के मस्तिष्कों पर स्वास्थ्य वर्धक, तनावनाशक आनन्दवर्धक लाभ प्रभाव डालते हैं ।

न्यूटॉलाजी, वैक्टीरियालॉजी एवं मूर्च्छा विज्ञान पर इस शोध का क्षेत्र खुला पड़ा है ।

समष्टि में व्याप्त प्राण शक्ति एवं व्यष्टि की मनः शक्ति को ही एक ही सिक्के के दो पहलू मान सकते हैं । वातावरण में होने वाला परिवर्तन निश्चिततः शरीर के स्वास्थ्य का निर्धारण करने वाली प्राणशक्ति को प्रभावित करेगा ।

अग्नि की ऊर्जा के माध्यम से यज्ञ चिकित्सा में वातावरण को प्राण शक्ति से अभिपूरित किया जाता है तो शरीर की शक्ति को, मानसिक सामर्थ्य को, बायोटिज्म को लौटा कर प्रभावित करती हैं । इससे जो मनःऊर्जा व्यक्ति के समग्र स्वरूप से उत्सर्जित होती है, वह पर्यावरण में जो सन्तुलन लाती ही है, उसे भी शक्तिवान बनाती है । यही है यज्ञोपचार का आधार एवं सिद्धान्त जिसके सहारे लोक स्वास्थ्य को सुधारने की सम्भावना दिन-दिन समुज्वल होती चली जा रही है ।



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ ऊर्जा के बहुआयामी लाभ

देवत्व के संवर्धन-असुरता निवारण हेतु, 'यज्ञ' अनिवार्य

पुरातन काल में ऐसी कितनी ही परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं जिनमें वातावरण और वायुमण्डल के बिगड़ जाने से प्रजा जनों को असाधारण कष्ट उठाने पड़े । अराजकता की स्थिति फैल गई, अनाचार का सर्वत्र बोलबाला हो उठा फलस्वरूप प्रकृति भी रुष्ट हो गई, धनधान्य की, शान्ति सुरक्षा की कमी सभी को अखरने लगी । यही नहीं मनुष्य की दुष्प्रवृत्तियाँ स्वेच्छाचार स्तर तक पहुँच गई । अनाचार के अभ्यस्त लोग अपनों कां शोषण सरल सोचकर उसी रीति नीति को अपनाने लगे ।

शत्रु से लड़ने में जोखिम रहता है, प्रतिशोध की गुंजायश से भय बना रहता है, पर मित्रघात सरल लगता है । किसी का स्नेही बनकर उसे चंगुल में फँसाया जाना और शिकार बनाया जाना सरल पड़ता है । दुर्व्यसनों में, कुकर्मों में लाभ का लालच दिखाकर किसी को आसानी से उस ओर धकेला जा सकता है, और उसे सदा सर्वदा चूसते रहा जा सकता है । मित्रता के नाम पर शत्रुता बरतने का प्रचलन जिस युग में होने लगे, उसे विनाशकारी ही समझना चाहिए । गन्दी हवा में रहने वाले सभी लोग बीमार पड़ते हैं । इसी प्रकार गन्दे वातावरण में मानसिक पोषण पाने वाले साधारण जन भी अपनी सहज मानसिक स्वस्थता गवाँ बैठते हैं । उनका बौद्धिक सन्तुलन वैसा नहीं रहता जैसा कि सामान्य स्थिति में रहना चाहिए । शुद्ध आहार, जल और श्वाँस की तरह वातावरण में शालीनता, सत्प्रवृत्तियों का भी भरा होना आवश्यक है । उनके अभाव में, गन्दे वातावरण में गन्दे व्यक्तित्व ही पनपते हैं । सड़े कूड़े कचरे के बीच कुकुरमुत्ते ही उगते हैं । गन्दे वातावरण में जन्मने और पलने वाली पीढ़ियाँ इसी स्तर की बनती हैं, जो अपने लिए, सम्पर्क क्षेत्र के लिए, समाज के लिए संकट उत्पन्न करती रहें ।

प्राचीन काल में बार-बार ऐसा होता रहा है । रावण का प्रतापी व्यक्तित्व हेय मार्ग पर चल पड़ा । उसकी सन्तानें नाती-पोते सभी असुरता की दुष्प्रवृत्तियों से भर गये । इतना ही नहीं, उनके समर्थक, सम्बन्धी, कर्मचारी सभी ने असुरता अपना ली । सताये हुए लोग भी दमन-दबाव के भय और लालच के प्रभाव में आकर उसी रीति-नीति को अपनाने लगे । असुरता लंका से लेकर पंचवटी तक फैल गई । कुकर्म और अनर्थ से समूचा क्षेत्र भर गया । दुष्प्रवृत्तियाँ छूत की बीमारी की तरह फैली और विशाल भुखण्ड अनाचार का केन्द्र बन गया । प्रसिद्ध है कि सीता हरण के बाद राम रावण युद्ध हुआ, असुरता हारी और धर्म की विजय हुई ।

द्वापर में भी ऐसा ही कुछ हुआ । कंस, जरासंध, शिशुपाल, दुर्योधन आदि की आततायी गतिविधियों ने सब ओर हाहाकार मचा दिया । उनसे सम्बन्धित परिकर, देखते-देखते विशाल भूभाग पर अधिकार जमा बैठा । महाभारत हुआ, असुरता का संहार हुआ । कृष्ण के अनुशासन में पाण्डव जीते, धर्मराज सिंहासनारूढ़ हुए ।

इससे पूर्व युगों में हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, वृत्रासुर, महिषासुर, भस्मासुर आदि के आतंक समय-समय पर उभरते रहे । उन्होंने मनुष्यों को ही त्रस्त नहीं किया, देवताओं तक को पदच्युत करके पराजय के पाश में कस दिया था । परमसत्ता के सहयोग से पराभव उनका भी हुआ ।

असुरता का प्रत्यक्ष उन्मूलन तो इन सब प्रसंगों में हुआ । स्थूल जगत से उनका अस्तित्व मिट जाने पर भी लम्बे समय तक सक्रिय रहे दुर्विचारों और भ्रष्टाचारों के प्रभाव से, सूक्ष्म जगत में जो विकार जम जाते हैं, उन्हें दूर करना भी अनिवार्य हो जाता है । उन्हें न हटाया जा सकने पर स्थूल उपलब्धियाँ बहुत शीघ्र ही बिखरने लगती हैं । सूक्ष्म जगत के विकार अवसर पाते ही पुनःदुर्मति और दुर्गति के रूप में उभरने लगते हैं । कड़ी धूप में-गर्मी में, दूब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऊपर से सूख गई जैसी लगती है, परन्तु वर्षा आते ही वह पुनः हरी हो जाती है । इसी प्रकार दमन द्वारा दबायी गयी असुरता शीघ्र ही नये सिरे से फिर अपना प्रभाव-आंतक जमाने लगती है ।

असुरता पुनः न पनप सके इसके लिए आवश्यक है कि उसके स्थूल उन्मूलन को ही पर्याप्त न मान लिया जाय । सूक्ष्म वातावरण में जमें आसुरी कुसंस्कारों-विकारों का भी शमन आध्यात्मिक उपचारों द्वारा करना अनिवार्य हो जाता है । इस प्रसंग में आदिकाल से एक ही उपाय सामने आया है कि वातावरण में व्याप्त आसुरी भौतिक सशक्तता को आध्यात्मिक प्रचण्डता से ही निरस्त किया जा सकता है । इसके लिए जो उपचार विभिन्न तत्वदर्शियों ने खोजे हैं, उनमें गायत्री यज्ञों की महत्ता सर्वोपरि पायी गई है । उसमें सूक्ष्म वातावरण का परिमार्जन होता है और उसमें छिपकर बैठे हुए असुर तत्व का निराकरण होता है ।

यह प्रयोग पहले भी समय-समय पर अपनाये और सफल पाये गये हैं । त्रेता में लंका युद्ध के बाद भगवान राम ने अश्वमेध यज्ञों की श्रृंखला चलायी थी । काशी का दशाश्वमेध घाट उसी श्रृंखला में हुए दस यज्ञों का स्मरण दिलाता है । महाभारत के बाद भी भगवान कृष्ण ने पाण्डवों से राजसूय यज्ञ कराया था । सतयुग में महर्षि विश्वामित्र ने राजा हरिश्चन्द्र के सहयोग से बाजपेय यज्ञ किये थे । त्रेता में भी विकृत वातावरण के शोधन के लिए किए जा रहे विश्वामित्र जी के यज्ञानुष्ठानों की रक्षा के लिए राम-लक्ष्मण को पहुँचना पड़ा था । पुनीत यज्ञ कार्य में विघ्न उपस्थित करने वाले असुरों का निवारण किया गया था ।

यज्ञ की सूक्ष्म सामर्थ्य से देवत्व प्रबल होता है, असुरता क्षीण होती है । विचारों की उत्कृष्टता बलवती होती है और निष्कृष्टता का शमन होता है । ऋणिगण अपने-अपने ढंग से अपने-अपने क्षेत्रों में बाजपेय स्तर के यज्ञों-ज्ञान यज्ञों की व्यवस्था करते-कराते रहे हैं । इससे उनके धर्म प्रचार, लोकमंगल के कार्य-क्रमों को सूक्ष्म क्षेत्र का बल मिलता रहा है । जो कार्य मात्र लेखनी वाणी से पूरे नहीं हो सकते, उनकी पूर्ति यज्ञीय वातावरण संशोधन की प्रक्रिया द्वारा सहज सम्पन्न हो जाती है । इसीलिए ब्रह्मवेत्ता अपनी आत्म शक्ति बढ़ाने और जन कल्याण का दिव्य वातावरण बनाने के लिए, अपने कार्य-क्रमों में यज्ञ प्रक्रिया को अनिवार्य रूप से सम्मिलित रखते रहे हैं ।

मन्त्रों का शब्द प्रवाह अपना असाधारण प्रभाव छोड़ता है । उस ध्वनि प्रवाह से दूर-दूर तक का वातावरण परिष्कृत होता है । यज्ञाग्नि की शक्ति उस वेदवाणी में सम्मिलित होकर उसका प्रभाव और भी अनेक गुना बढ़ा देती है । सब मिलकर यज्ञ ऐसा उपचार बन जाता है जिससे वायुमण्डल और वातावरण की दोहरी शुद्धि होती है । साथ ही भौतिक जगत की प्रत्यक्ष तथा आत्मिक क्षेत्र की अदृश्य समस्याओं का समाधान होता है । यही कारण है कि शास्त्रकारों ने समय-समय पर यज्ञ करते रहने के लिए बढ़ चढ़ कर जोर दिया है और उस प्रक्रिया के प्रतिपादन में कुछ उठा नहीं रखा है । जीवन को यज्ञमय बनाने का भरपूर प्रयास किया है । जन्म से लेकर मरणोपरान्त तक के सभी संस्कारों और पर्वों पर यज्ञ को प्रमुखता दी गयी है ।

वर्तमान समय में यज्ञ प्रक्रिया को महँगा और जटिल बना दिया गया था । तमाम विधि निषेधों के चक्र और पंडितों की लम्बी चौड़ी दक्षिणाओं का भार लद जाने से लोग उससे बचने लगे और वह विधान लुप्तप्राय हो गया । पर यदि पूर्वकाल की तरह उसे सहज कर्म बनाया जाय, तो वनस्पतियों की आहुति, यजमानों द्वारा स्वयं मन्त्रोच्चार जैसे क्रम अपनाकर इस विधा को पुनः जीवन्त किया जा सकता है । थोड़े से प्रयास से ही देवत्व को समर्थ और असुरता को निरस्त करने वाली इस पुण्य प्रक्रिया को फिर से पुनर्जीवित किया जा सकता है

यज्ञ से संधि पीड़ा का निराकरण

शतपथ ब्राह्मण के प्रथम काण्ड के अन्तर्गत छठे अध्याय के तीसरे ब्राह्मण की ३५वीं, ३६वीं काण्डिका में उल्लेख मिलता है कि सर्वप्रथम जब प्रजापति को सृष्टि-संरचना का कार्य सौंपा गया तो बड़े प्रयत्न और पुरुषार्थ से उन्होंने अपना यह कार्य सम्पन्न किया । इस भारी गुरुतर कार्य करने से उनके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जोड़ों-सन्धियों में दर्द होने लगा । उन्हें उठने-बैठने में कष्ट होने लगा, जिसे देखकर देवों का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था । सोच-विचार के बाद देवताओं को एक उपाय सूझा । उन्होंने 'प्रजापति' के कष्ट निवारण के लिए एक यज्ञ किया । इस यज्ञ के प्रभाव से 'प्रजापति' का सन्धिगत कष्ट दूर हो गया और वे अपना सम्पूर्ण कार्य यथावत् करने में सक्षम हो गये ।

सन्धियों में दर्द क्यों हुआ ? शरीर के अन्य अवयवों को वैसी व्यथा क्यों उत्पन्न नहीं हुई ? इस अनायास ही उठने वाले प्रश्न का समाधान शतपथ ने आगे चलकर स्वयं ही कर दिया है ।

श्रम करने का दबाव सबसे अधिक हड्डियों के जोड़ों पर पड़ता है, वे ही चरमराते हैं । गठिया आदि के कारण उन्हीं में दर्द होता है । बुढ़ापे में वे ही अकड़ जाते हैं । यह सामान्य लोगों पर लागू होने वाली सामान्य बात हुई । फिर प्रजापति तो देवाधि देव ठहरे, उन्हें किस कारण सन्धिपात हो गया । यह कठिनाई जिस कारण उत्पन्न हुई उसका उल्लेख उसी काण्डिका में इस प्रकार किया गया है-

'प्रजापतेर्ह वै प्रजाः ससृजानस्य । पर्वाणि विसस्र ꣳ सुः स वै संवत्सर एव प्रजापतिस्तस्यैतानिपर्वाण्य हो रात्रयाः सन्धी पौर्णमासी चमावस्या चऽर्त्तुमुखानि ।'

'प्रजापति' जब प्रजा बना चुके तो उनके जोड़ सन्धिस्थल ढीले पड़ गये । संवत्सर 'प्रजापति' है और उस के जोड़ हैं, रात-दिन की सन्धियाँ, पूर्णमासी, अमावस्या और ऋतुओं का आरम्भ ।

'स विस्रस्तैः पर्वभिः । न शशाक स ꣳ हातं तमेतैर्हवियज्ञैर्देवा अभिषज्यन्नग्नि होत्रेणैवाहो रात्रयोः सन्धी तत्पर्वाभिषज्यंस्तत्समदधुः पौर्णमासेन चैवामावास्येन च पौर्णमासीचामावस्यां च तत्पर्वाभिषज्यंस्तत्स मदधुश्चातुर्मास्यैरेवऽर्त्तु मुखानि तत्पर्वाभिषज्यंस्तत्समदधु : ।'

'वह (प्रजापति) थके हुए सन्धि-स्थल होने से उठ नहीं सकते थे । देवों ने हवियों एवं यज्ञों द्वारा वह कष्ट दूर किया । अग्निहोत्र द्वारा उन्होंने रात-दिन की सन्धि वाले जोड़ को ठीक किया । पौर्णमास और अमावस्या के यज्ञ से पूर्णमासी और अमावस्या के जोड़ के कष्ट दूर किये और चातुर्मास यज्ञ से उन्होंने ऋतु के आरम्भ वाले जोड़ को निरोग बनाया ।'

यहाँ पर स्वयं ब्राह्मणकार ने 'प्रजापति' को एक संवत्सर-वर्ष-के रूप में कल्पित करके सर्दी-गर्मी और बरसात की ऋतुओं के सन्धिकाल को, ऋतु-सन्धि, प्रत्येक माह की पूर्णमासी और अमावस्या के सन्धिकाल को, पूर्णमासी और अमावस्या की सन्धि तथा रात-दिन के सन्धिकाल (प्रातःसायं की संध्या) को अहोरात्रि की सन्धि के रूप में कल्पित किया है । 'देवों' ने इन्हीं दिनों यज्ञ कार्य सम्पन्न करके अपने कार्य में सफलता प्राप्त की थी । इस कथन द्वारा मानव मात्र को इन्हीं सन्धिकालों में यज्ञ करने की प्रेरणा प्रदान की है ।

यह तथ्य सुविदित ही है कि ऋतुओं का सन्धिकाल, महीनों का सन्धिकाल तथा दिन-रात का सन्धिकाल विशेष महत्वपूर्ण होता है । इस समय के दिव्य ब्राह्मी-चेतना से लाभान्वित होने के उद्देश्य से ही ऋतुओं के सन्धिकाल के समय नवरात्रियों का, मासों के सन्धिकाल पूर्णमासी व अमावस्या के व्रतादिकों का तथा दिन-रात के सन्धिकाल प्रातः सायं सन्ध्या करने का विधान किया गया है ।

सन्धि दो वस्तुओं के जोड़ को कहते हैं । दिन और रात के दोनों मिलन प्रभात-संध्या एवं सुबह सायं के नाम से जाने और उपासना प्रयोजनों में प्रयुक्त किये जाते हैं । यही सन्धिकाल विग्रह, व्यथा एवं उथल-पुथल का समय होता है और बहुधा कष्ट कर असुविधा उत्पन्न करता है । जन्म के समय बालक तथा प्रसूता को कष्ट होने की मरण काल में प्राणी तथा सम्बन्धियों की छटपटाहट देखते ही बनती है । कन्या जब पितृ गृह को छोड़कर ससुराल जाती है तो उसका असमंजस भी विचित्र होता है । अफसरों की बदली होती है तो उठक-पठक का झंझट कितना असुविधाजनक लगता है । राज्य बदलने, कानून उलटने, व्यवस्था में परिवर्तन होने पर भी ऐसी ही कष्टकर अनुभूतियाँ होती हैं । भले ही वे लाभदायक हों या हानिकारक । उपयोगी हों या अनुपयोगी ।

सृष्टि निर्माण कार्य का पहला चरण पूरा करने के उपरान्त प्रजापति को दूसरे चरण में प्रवेश करना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था । व्यवस्था बनाने और नियन्त्रण रखने का तन्त्र खड़ा करना था । ढर्रे का काम समाप्त हुआ तो अभिनव संयोजन का उत्तरदायित्व कन्धे पर आ गया । यही परिवर्तन बेला सन्धिकाल कहलाती है और अनभ्यस्त होने के कारण असुविधा, चिन्ता भी उत्पन्न करती है और झंझट भरी कष्टकर भी लगती है । यह सभी के लिए होता है तो प्रजापति को क्यों न होता ? सन्धिकाल में उनकी सन्धियों में दर्द होने लगा है, जकड़न का माहौल बन गया हो तो इसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है । विश्व-व्यवस्था तो मनुष्यों की तरह देवताओं पर भी लागू होती है ।

समस्या का समाधान कैसे हुआ ? यह देखने ही योग्य है । देवताओं ने यज्ञ किया और उतने भर से उपयुक्त चिकित्सा हो गई । यहाँ यज्ञोपचार से रोग निवारण की सामर्थ्य होने का जहाँ संकेत है वहाँ यह भी प्रतिपादन है कि उथल-पुथल के परिवर्तन के अवसरों पर उत्पन्न हुआ असमंजस आदर्शवादी अवलम्ब स्वीकार करके किया जाना चाहिए । सुविधा को गौण और आदर्श अनुशासन को प्रमुख माना जाय तो इतने भर से अभ्यस्त ढर्रे को छोड़ने और नये क्षेत्र में प्रवेश करने की प्रक्रिया कष्टकर नहीं होती । उल्टे साहसिक पराक्रम की परीक्षा देने के लिए उत्साह भरती है । और असमंजस सहज ही दूर हो जाता है । प्रजापति की थकान प्रथम चरण पूरा करने पर दूसरे में प्रवेश करते समय विश्राम पाने, जैसे अवसाद की रही होगी और उसे देवजनों ने उत्तरदायित्व वहन करने के लिए आदर्शवादिता अपनाने का वातावरण बनाकर-यज्ञ आयोजन की व्यवस्था बनाकर दूर कर दिया होगा । यही बात ऐसी स्थिति वाले सभी असमंजसग्रस्त लोगों पर भी लागू होता है । शतपथ ब्राह्मण को उपरोक्त काण्डिका का यही सारगर्भित प्रतिपादन है ।

वातावरण परिष्कार एक अनिवार्य आवश्यकता

यह जानी मानी बात है कि जिस क्षेत्र में धुआँ उगलने वाली, कारखानों की चिमनियाँ बड़ी संख्या में होती हैं, वहाँ वायुमण्डल दूषित हो जाता है । उस इलाके में रहने वाले लोगों को दमा, जुकाम, चक्कर आने जैसी अनेकों बीमारियाँ घेर लेती हैं । जिन शहरों में कोलाहल अधिक रहता है, वहाँ के वातावरण में ऐसी अशान्ति भर जाती है कि जिससे कानों का बहरापन एवं अनिद्रा जैसे रोगों की भरमार रहने लगती है । वायुमण्डल का प्रदूषण श्वाँस द्वारा जिस किसी शरीर में पहुँच जाता है, वहीं अस्वस्थता के अनेक उपद्रव खड़ा कर देता है । मनुष्य ही नहीं, पशु पक्षी, जीव जन्तु, पेड़ पौधे भी उससे प्रभावित होते हैं ।

वायुमण्डल का दूसरा पक्ष है वातावरण । वातावरण मनुष्य के विचारों और कृत्यों से बनता है । वह भला भी हो सकता है और बुरा भी । जिस प्रकार के विचार, जिस क्षेत्र के होते हैं, उसी प्रकार की प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं, और वह अन्तरिक्ष में भर जाती है । यह वातावरण की तरंगें वायु की तुलना में सूक्ष्मतर होती हैं । दूषित वातावरण से मन उद्विग्न-अशान्त रहता है, घुटन अनुभव करता है, और न करने योग्य कल्पनाओं एवं क्रियाओं की ओर उन्मुख होता है । बुरे लोग बड़ी संख्या में जहाँ अपने चिन्तन और चेष्टाओं से पतनोन्मुख प्रवृत्तियाँ पैदा करते हैं, वहाँ वातावरण दूषित होता है । वातावरण से चिन्तन और चेष्टाएँ, तथा चिन्तन एवं चेष्टाओं से वातावरण प्रभावित-विनिर्मित होने के सत्य को नकारा नहीं जा सकता ।

वायुमण्डल की विषाक्तता कितनी हानिकारक होती है, इसे सभी जानते हैं । चूँकि वातावरण वायुमण्डल से सूक्ष्म होता है इसलिए इसका प्रभाव अधिक गंभीर होता है । कहा जा चुका है कि इसे इन्द्रियों से नहीं, अन्तःकरण से अनुभव किया जा सकता है । धूर्तों, दुष्टों, छलिया, अनाचारियों से घिर जाने पर मनुष्य का अन्तराल सशंकित होने लगता है । यद्यपि धूर्त लोग ऊपर से सामान्य लोगों की अपेक्षा अधिक मीठा व्यवहार करते हैं । फँसाने के लिए प्रलोभन देकर आकर्षित करना एक सामान्य विधि है । चिड़ियाँ, मछली, हिरन आदि इसी प्रकार फँसाये जाते हैं । छली व्यक्ति भी आमतौर पर प्रलोभन का ही सहारा लेते हैं । मोटे तौर पर वे सब प्रिय लगते हैं । किन्तु अन्तःकरण का अन्तःकरण से सम्पर्क बनता है । दोनों के बीच जो अव्यक्त सा आदान-प्रदान होता है, उससे आशंका का स्वरूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अपने आप बनने लगता है । वातावरण अंतरंग वास्तविकता को प्रकट करने का प्रमुख माध्यम बन जाता है ।

श्रेष्ठजनों का समुदाय जिस क्षेत्र में रहता है, वहाँ के वातावरण में सहज सात्विकता भर जाती है । सभी के मन को शान्ति मिलती है, अन्तस् को हल्कापन अनुभव होता है । जीव-जन्तु तक द्वेष छोड़कर मैत्री का व्यवहार करने लगते हैं । मनुष्य भी राग द्वेष भूलकर निश्चिन्तता और सद्भावना सुख पाने लगता है।

पहाड़ी स्थानों पर वायुमण्डल अधिक शुद्ध और प्राणवाण होता है, इसलिए वहाँ बने सैनीटोरियमों में निर्धारित उपचार से अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होता है । इसी प्रकार सज्जनों का सहवास, क्षेत्र विशेष की प्राण ऊर्जा को प्रभावित करता है और सम्पर्क साधने वालों को राहत प्रदान करता है । गर्मी के दिनों में सम्पन्न व्यक्ति शीतल वातावरण के लिए समय और धन खर्च करके ऊँचे स्थानों पर चले जाते हैं, और वहाँ अपनी जीवनी शक्ति की सुरक्षा अनुभव करते हैं । ठीक उसी प्रकार विचारशील लोग ऐसे स्थानों पर जाते रहते हैं जहाँ का वातावरण अधिक संख्या में सद्भावना सम्पन्न लोगों से प्रभावित होता रहता है । फूलों के बाग में जब तक रहा जाय, उतनी देर सुगन्ध का लाभ मिलता ही है । शान्तिदायी वातावरण में रहकर भले ही कुछ न किया जाय, तो भी उस क्षेत्र में छायी सद्भावनाएँ वहाँ के निवासिय-आगतुंक को प्रभावित किए बिना नहीं रहती।

बुरे व्यक्तियों के छोटे-छोटे समुदाय भी अपने स्तर के अनुरूप वातावरण विनिर्मित करते रहते हैं, और उस क्षेत्र में पहुँचने वाले व्यक्तियों को अनायास ही अपनी विशेषता से प्रभावित करते रहते हैं । परन्तु जब बड़े पैमाने पर दूर-दूर तक हीन प्रवृत्ति वालों की भरमार हो जाती है, तो व्यापक क्षेत्र उससे प्रभावित हो जाता है और सारे क्षेत्र को अपनी दुर्गन्ध-दुष्प्रवृत्तियों से भर देते हैं । सामान्य जन अनायास ही उसी प्रवाह में ढलने, उसी धारा में बहने लगते हैं । उन्हें पता ही नहीं चलता कि उन्हें बुराई की तरफ ठेलने के लिए, घसीटने के लिए कोई शक्तिशाली प्रयोग किया जा रहा है । परिणाम सामने आने पर ही होश आता है ।

सतयुग में देव मानव स्तर के व्यक्ति स्थान-स्थान पर होते थे । उनका उत्कृष्ट चिन्तन एवं आदर्श कर्तृत्व-चरित्र, चन्दन वृक्ष की तरह महकता रहता था । उसके प्रभाव से आस पास के पौधों-व्यक्तित्व भी सुवास से भर जाते थे । उन दिन अधिकांश लोग श्रेष्ठता से प्रभावित होकर उसी प्रवाह में अनायास बहते चले जाते थे । जब भावना, आकांक्षा, विचारणा और क्रिया पद्धति में श्रेष्ठता भरी होगी तो उसका प्रभाव सामान्य प्रचलन पर पड़ेगा ही । जहाँ सद्भावना कार्यान्वित होगी वहाँ परिस्थतियों में भी सद्भावनाएँ ही दृष्टिगोचर होंगी । प्रथा परम्परा, प्रचलन, व्यवहार, शिष्टाचार आदि सभी में सज्जनोचित रीति-नीति का ही बोलबाला रहेगा । सब परस्पर सहयोग करेंगे और ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने वाली गतिविधियों का बाहुल्य रहेगा । सभी सुख-शान्ति का जीवन यापन करेंगे । सतयुग इसी प्रकार अवतरित होता है, और तब तक चलता रहता है जब तक कि विशिष्ट जन अपने उच्च आदर्श उपस्थित करते हुए, सामान्य जन को उस ओर अनुगमन अनुकरण की प्रेरणा देते रहते हैं ।

बुरा युग 'कलियुग' भी कहीं आसमान से नहीं टपकता, मनुष्य का चिन्तन, आचरण ही उसे बनाता है। उसमें बड़ी भूमिका विभूतिवानों की होती है । बलवान, विद्वान, धनवान, प्रतिभावान, मनीषी, तपस्वी, विचारक, पुरोहित आदि अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र में बड़ी भूमिका निभा सकने में समर्थ होते हैं । छोटे चूल्हों में जलने वाली आग छोटे क्षेत्र को ही गरम कर पाती है । परन्तु जब बड़ी भट्टियाँ बड़ी मात्रा में ईंधन जलाती हैं, और वे पास-पास होती हैं तो उनमें उत्पन्न ऊर्जा भी बड़े क्षेत्र को प्रभावित करती है । कलियुग ऐसे समय को कहते हैं जिसमें लोग संकीर्ण स्वार्थपरता में ग्रस्त होकर दुष्कर्म और दुस्साहस अपनाने लगते हैं । कुप्रचलनों का प्रवाह पैदा होकर सामान्य जनों को उसी चुम्बकत्व से अपनी ओर घसीट कर, वैसी ही रीति-नीति अपनाने के लिए बाध्य कर देता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बहुसंख्यक लोग जब भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण पर उतारू हो जाते हैं, तब उनके क्रिया-कलाप मिलकर ऐसा माहौल बनाते हैं जिससे परिस्थितियाँ विपन्नता से भरने लगें, विग्रह फलने लगें और असज्जनवादी अनुशासनहीनता भयावह रूप धारण करने लगें, मनोमालिन्य बढ़े, अनावश्यक संदेह और भेद की परिस्थितियाँ बनने लगें । सब मिलाकर ऐसी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होने लगती हैं जिससे सभी को अशान्ति और प्रतिकूलता का आभास मिलने लगे । कलयुग जिस समय को कहते हैं, उसमें ऐसी ही अप्रिय, कष्टकारक उलझनों का बाहुल्य होता है ।

एक बार अदृश्य वातावरण का सशक्त प्रवाह चल पड़े तो उसके प्रतिरोध में किए जाने वाले सामान्य प्रयास टिक नहीं पाते । सब कुछ उसी प्रवाह के साथ बहने, उसी अन्धड़ के साथ उड़ने लगता है । इस प्रकार 'युग' बन जाता है । समझा यह जाता है कि युग दैवी शक्तियाँ बनाती हैं । ऐसा भी कभी-कभी होता है जब दैवी शक्तियों को भी हस्तक्षेप करना पड़ जाता है । परन्तु यथार्थता यह है कि अधिकतर, विभूतिवानों-प्रतिभावानों का समुदाय ही, अपने निजी स्तर एवं क्रिया-कलापों के संयोजन से वातावरण बनाता है । वह वातावरण अपने चुम्बकीय क्षेत्र में आने वाले सामान्य जनों को प्रभावित कर उसी धारा में घसीटने लगता है अधिकांश लोग जब उस प्रवाह की लपेट में आने लगते हैं तो वही प्रचण्ड वातावरण युग विशेष की संज्ञा पा लेता है । भले बुरे वायुमण्डल की तरह यह उत्कृष्ट या निकृष्ट वातावरण भी लोक मानस को भली या बुरी दिशा में उद्वेलित करता है ।

स्थूल वायुमण्डल का भला-बुरा प्रभाव स्थूल इन्द्रियों की पकड़ में आ जाता है । ताप, शब्द, प्रकाश आदि इन्द्रिय गम्य हैं । ताप को त्वचा से, शब्द को कान से, प्रकाश को आँख से, गन्ध को नाक से जाना जा सकता है । उनकी अनुकूलता का प्रभाव प्रत्यक्ष दिख जाता है । परन्तु वातावरण का प्रभाव 'काया' नहीं 'चेतना' ही अनुभव कर पाती है । जब उसकी स्थूल प्रतिक्रियाएँ बदलते स्वास्थ्य, मनोवृत्तियों, परिस्थितियों के रूप में दिखने लगती हैं, तब उसका प्रत्यक्ष ज्ञान हो पाता है । भावनाओं, विचारणाओं और चेष्टाओं के द्वारा विनिर्मित वातावरण सूक्ष्म होते हुए भी इतना सशक्त होता है कि स्थूल वायुमण्डल की अपेक्षा जनजीवन को अनेक गुना प्रभावित करता है ।

आज बिगड़ते पर्यावरण-स्थूल प्रदूषण की समस्या गहराई से समझी जा रही है । किन्तु सूक्ष्म वातावरण की प्रतिकूलता विषाक्तता और उससे होने वाले दुष्परिणामों की ओर किसी का ध्यान ही नहीं है । जब तक उस अदृश्य प्रवाह का अनुकूलन नहीं किया जाता है, तब तक पूरी शक्ति से किए जाने वाले सुधार के प्रयास निष्फल होते दिखते रहेंगे । जिस ओर प्राथमिकता देकर ध्यान दिया जाना चाहिए उस ओर से न जाने कौन दृष्टि हटा देता है ? करने योग्य कार्यों के लिए न जाने कहाँ से समयाभाव पैदा हो जाता है । अच्छी से अच्छी योजनाएँ क्रियान्वित होते होते न जाने कैसे कुछ का कुछ प्रभाव पैदा करने वाली बन जाती है । यह सारी विडम्बनाएँ उस अदृश्य, सूक्ष्म वातावरण के कारण खड़ी हो जाती हैं, जो मनुष्य के ही हीन चिन्तन और निकृष्ट चेष्टाओं के कारण बुरी तरह प्रदूषण से भर गया है । इसका परिशोधन मानवीय उज्जवल भविष्य के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है ।

प्रज्ञा अभियान के सूत्र संचालकों ने इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता को अनुभव करके, उस दिशा में प्रयास पुरुषार्थ को सर्वोपरि प्राथमिकता प्रदान की है । चिन्तन का परिष्कार 'गायत्री महाविद्या' से तथा चेष्टा का परिष्कार 'यज्ञीय महाविज्ञान' से करने की योजना बद्ध, व्यवहारिक परिपाटी बनाई है । किसी भी वर्ग, मत या स्तर के व्यक्ति, मनुष्य मात्र इस विधा को बिना झिझक अंगीकार कर सके ऐसी दार्शनिक पृष्ठभूमि तैयार कर ली गई है । सामान्य से सामान्य और व्यस्त से व्यस्त व्यक्ति भी उसे व्यवहार में ला सकें ऐसे सर्व सुलभ कार्यक्रम का स्वरूप बनाया गया है । ज्ञान यज्ञ और द्रव्य यज्ञ की संगति से, सूक्ष्म वातावरण में गिरते सचेतन के स्तर को सँभाला जाना, उसे उज्जवल भविष्य की संरचना के अनुकूल बनाना सहज ही संभव दिखने लगा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्म वातावरण के कारण स्थूल जगत भी प्रभावित परिवर्तित होता है । सचेतन के स्तर में गिरावट आने से प्रकृति विक्षुब्ध होती है । यह विक्षोभ ही अनावृष्टि, अकाल वृष्टि, भूकम्प, विस्फोट, महामारी जैसे उद्वेग के रूप में प्रकट होते हैं । अराजकता फैलने पर पूरे क्षेत्र को सामूहिक रूप से दण्डित किया जाता है । चरित्र चिन्तन की अराजकता से रुष्ट प्रकृति भी ऐसे ही सामूहिक दण्ड विधान रचती है । निर्दोष व्यक्ति भी दण्ड की चपेट में इसलिए लाये जाते हैं कि उन्होंने समय रहते सुधार उपचार का प्रयास क्यों नहीं किया ?

इन सबसे बचने के लिए गायत्री यज्ञाभियान 'संजीवनी बूटी' की तरह प्रयुक्त किया जा सकता है। जन जन द्वारा परमार्थ दृष्टि से यज्ञार्थ की गई साधना, भावनापूर्वक दी गई आहुतियाँ, तथा उसके साथ जुड़ी ज्ञान यज्ञों की परिपाटी, चिन्तन और चेष्टाओं को आदर्शनिष्ठ बनाकर, वातावरण को संस्कारित करने में सक्षम है । वायुमंडल प्रदूषण तथा प्रकृति विक्षोभ के समाधान के लिए भी अग्निहोत्र अमोघ ओषधि सिद्ध होते हैं । मनुष्य के शरीर, मन, अन्तःकरण, प्रकृतिगत वायुमण्डल एवं वातावरण तथा समाजगत वृत्तिय, परम्पराओं सभी को इस माध्यम से श्रेष्ठ दिशा देना, प्रगति पथ पर बढ़ा देना सम्भव है ।

यज्ञ-अग्निहोत्र से वायुमंडल संशोधन

इन दिनों प्रकृति का हर घटक भयावह प्रदूषण से भरता जा रहा है । कारखानों की भरमार, उनसे निरन्तर निकलने वाला धुआँ, रेल, मोटर आदि से निकलने वाली विषैली गैसें, परमाणु विकिरण, भूगर्भीय संसाधनों के दोहन से हुआ प्रदूषण, कोलाहल, जलाशयों में विषाक्त अवशेषों की भरमार आदि कारणों का सम्मिलित परिणाम यह हुआ है कि समूचा पर्यावरण विषाक्त हो गया है । इतना जहरीला कि उसमें साँस लेना भी सार्वजनिक स्वास्थ्य को निरन्तर गिराता जाता है । जब वर्षा होती है तो वह विष वायु से जल में मिलकर, अम्ल वर्षा के रूप में धरती पर आता है । जलाशयों को अशुद्धि से भरता है । पेड़ पौधे इस सम्मिश्रण से प्रभावित होते हैं और उपयोगिता की दृष्टि से गुणहीन घटिया होते जाते हैं । उनमें जीवनीशक्ति न रहने से उनका सेवन करने वालों का भी समुचित हित साधन नहीं हो पाता । इस प्रकार विषाक्त धूम्र का उत्पादन घुमा फिराकर मनुष्यों तथा पशुओं के शरीरों पर आघात करता है । उनकी जीवनी शक्ति घटती चली जाती है । दुधारू पशु उत्पादन की दृष्टि से अक्षम होते चले जाते हैं एवं मनुष्य जल्दी थकता, बेचैन होता तथा मनोविकारों-व्याधियों से ग्रस्त होता देखा जाता है ।

इस विपत्ति के निवारण हेतु विशेषज्ञगण सर्वविदित उपाय हरीतिमा संवर्धन का-वृक्षारोपण का बताते हैं । वृक्ष दूषित वायु को सोखते और शुद्ध प्राण-वायु को छोड़ते हैं, इसलिए वनक्षेत्र का अभिवर्धन वायुशोधन की दृष्टि से सर्वसम्मत एवं उपयुक्त माना जाता है । कहा जाता है कि जो विष हम प्रश्वांस द्वारा छोड़ते तथा चिमनियों से, कारखाने से उगलते हैं, वृक्ष बड़ी प्रसन्नता से पीकर नीलकण्ठ की भूमिका निभाते हुए अपनी भी अभिवृद्धि करते हैं एवं अधिक से अधिक मात्रा में आक्सीजन हमें प्रदान करते हैं । पर्यावरण चक्र का, सृष्टि का यह शाश्वत नियम क्रमशः जन सामान्य में जागरूकता बढ़ा रहा है एवं वृक्ष सम्पदा बढ़ाने के प्रति लोगों में उत्साह जगा है ।

जीवधारियों के लिए यह आवश्यक है कि जीवन को सुचारु रूप से चलाते रहने के लिए शुद्ध हवा मिलती रहे । हवा में जीवन पोषक तत्वों का बाहुल्य है । यों उसमें कई प्रकार की गैसें मिली रहती हैं, परन्तु जिसे प्राणवायु कहते हैं, वह आक्सीजन है । इसी के आधार पर शरीर में तथा संसार में तापमान सहज एवं आवश्यक मात्रा में बना रहता है । हमारे क्रिया-कलाप ऐसे होने चाहिए, जिससे वायु-संतुलन सही बना रहे ।

इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि वायुमंडल का महत्व उतना नहीं समझा जाता, जितना कि उसे समझना चाहिए । आहार और जल के संबंध में यथासंभव अपनी-अपनी मति के अनुसार शुद्ध रखने का प्रयत्न करते हैं । वे अलग-अलग रखे जाने के कारण अपेक्षाकृत अच्छी तरह संभाल कर रखे भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जा सकते हैं, पर वायु के संबंध में ऐसी बात नहीं । वह सार्वजनिक है । सर्वत्र संव्याप्त है । चलती-दौड़ती रहती है । कुछ ही क्षण में कहीं-से-कहीं जा पहुँचती है । इसलिए अपने घर-कमरे की हवा रोशनी आने-जाने कर प्रबन्ध रखते हुए भी यदि वायुमंडल में प्रदूषण की मात्रा बढ़ गई है, तो फिर उस पर नियंत्रण रखना कठिन है । पानी में यदि जहर घोल दिया जाय, तो उसमें रहने वाले सभी जल-जन्तु मरेंगे । इसी प्रकार यदि वायु प्रदूषण बढ़े, तो उसका परिणाम सावधान असावधान सभी को भुगतना पड़ेगा ।

इन दिनों मनुष्य का बुद्धि-कौशल ऐसे कारखाने चलाने, ऐसे रसायन बनाने में लगा है, जिनके कारण हवा में जहर घुलता है । यों साधारण क्रिया-कलापों से भी यह गंदगी बढ़ती है, जो वायु की शुद्धता पर आघात लगाती है । चूल्हे में जलने वाली आग-शरीर से निःसृत होने वाले मलमूत्र, स्वेद, श्वास-प्रश्वास द्वारा वायु प्रदूषण बढ़ता है, पर उसका संतुलन वृक्ष वनस्पतियों की बहुलता से बन जाता है । वृक्ष प्रायः कार्बन खाते हैं और आक्सीजन उगलते हैं । इसके ठीक विपरीत मनुष्य आक्सीजन खाता है और कार्बन उगलता है । इस प्रकार मनुष्य और वृक्ष वनस्पति मिलकर ऐसा तालमेल बिठा लेते हैं कि अनिवार्य रूप से आक्सीजन में होने वाली कमी की पूर्ति होती रहे । चिर अतीत से संतुलन का यही क्रम चलता आ रहा है ।

यह समय विचित्र युग है । मनुष्य की बुद्धि बढ़ी है साथ ही उपार्जन और विलास की ललक भी । वैज्ञानिक प्रगति को इसी कार्य में प्रयुक्त किया गया । कल कारखाने, बढ़ती हुई जनसंख्या, धूम्रपान एवं वृक्षों के अन्धाधुंध कटाव ने वायुमंडल में आक्सीजन की मात्रा घटा दी है और प्रदूषण का अनुपात बढ़ा दिया है । अणु विस्फोटों से उत्पन्न विकिरण भी इस विषाक्तता को बढ़ाता है । इस प्रकार हम क्रमशः ऐसे दल-दल में फँसते जा रहे हैं, जिसमें शुद्ध वायु का मिलना कठिन हो रहा है । यह उपक्रम जिस तेजी के साथ निर्बाध रूप से आगे बढ़ रहा है, उसे देखते हुए भविष्य अन्धकारमय दीखता है ।

यों शुद्धता तो अन्न-जल की भी आवश्यक है । पर वायु का नम्बर तो उनमें भी पहला है । जिस प्रकार क्लोरोफार्म को सुँघाकर मनुष्य क्षण भर में बेहोश किया जा सकता है या मारा जा सकता है, उसी प्रकार बढ़े हुए वायु प्रदूषण से भारी अहित हो सकता है । उससे सामान्य स्वास्थ्य बुरी तरह गड़बड़ा सकता है । मानसिक चेतना में कमी आ सकती है और लोगों के बीच सद्भाव मिटकर विग्रह खड़े हो सकते हैं । यह दुष्प्रभाव मनुष्य तक ही सीमित नहीं है । उसका प्रभाव पशु-पक्षियों सूक्ष्मजीवी कृमियों तथा अन्यान्य वर्गों के सभी प्राणियों पर पड़ता है, क्योंकि वायु पर सभी निर्भर है । यहाँ तक कि गहरे पानी में रहने वाले प्राणी भी अपने ढंग से जल में ही प्राण वायु प्राप्त कर लेते हैं ।

जन संख्या बढ़ने पर अधिक चूल्हे जलने और अधिक मलमूत्र, पसीना आदि छोड़े जाने से गंदगी बढ़ती है । इस अनुपात से वृक्ष भी बढ़ने चाहिए थे, ताकि संतुलन बना रहे, किन्तु समय पर दुहरी मार पड़ रही है । एक ओर गंदगी बढ़ रही है दूसरी ओर उसे शुद्ध करने के स्रोत सूख रहे हैं । हरीतिमा का सफाया होता जाता है । खुले मैदान घट रहे हैं। घिचपिच के वातावरण में सीलन, सड़न, कोलाहल आदि की भी बढ़ोत्तरी होती है । तंग गलियों में जहाँ सूर्य का प्रकाश और हवा का प्रवाह रुक-रुक कर धीमा-धीमा पहुँचे वहाँ गंदगी बढ़ेगी ही और उस अस्वच्छता से जीवन संकट में पड़ेगा ही ।

आवश्यक है कि समय रहते इस समस्या का समाधान सोचा जाय । इस संदर्भ में पूर्वजों के चिन्तन और सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित एक ही उपाय है-अग्निहोत्र । यदि उसे समुचित मात्रा में करते रहा जाय, तो हम इस प्रस्तुत विपत्ति से बच सकते हैं ।

दुर्गन्ध को सुगन्ध से मारने की विधा को सभी जानते हैं । गंदी नालियों में फिनायल छिड़की जाती है । सीलन भरे घरों में कोयले दहकाने का प्रचलन है । मच्छर भगाने के लिए कछुआ छाप बत्ती का प्रयोग अब बहुत जगह होने लगा है । डी०डी०टी०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की गंध कृमियों को भगाती है । कमरों में अच्छा वातावरण बनाने के लिए धूपबत्ती, अगरबत्ती, लोहबान, गूगल आदि जलाये जाते हैं । ग्रह दशा का अनिष्ट टालने और देवताओं को प्रसन्न करने के लिए सुगन्धित द्रव्यों की आहुति दी जाती है ।

अग्निहोत्र के अनेकानेक लाभ हैं । उनमें से एक यह भी है कि आकाश में संव्याप्त गंदगी की काट करने की उसमें अपूर्व क्षमता है । इस कथन से मूल प्रतिपादन में कोई अन्तर नहीं पड़ता कि अग्निहोत्र से उत्पन्न कार्बन फैली हुई कार्बन में सम्मिलित होकर उसे बढ़ायेगी ही, घटायेगी कैसे ?

यह ठीक है कि अग्नि जहाँ भी जलेगी, वहाँ ऑक्सीजन जलेगी और कार्बन उपजेगी । किन्तु यह नहीं मान लेना चाहिए कि गंदगी से उत्पन्न तथा सुगन्ध से उत्पन्न हुई कार्बन दोनों एक ही स्तर की हैं । उनमें जमीन आसमान जैसा अन्तर है । इतना ही नहीं ये परस्पर विरोधी भी हैं । उनमें काटने की ही नहीं बनाने की भी क्षमता है । तलवार आक्रमण के लिए ही काम नहीं आती, उससे आत्मरक्षा भी हो सकती है । सर्वमान्य सिद्धान्त है- **''विषस्य विषमौषधम् ।''** विष की काट दूसरा विष करता है। होम्योपैथी के सिद्धान्त में तो पूरी तरह इस तथ्य को अपनाया गया है । उसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण भी विष माना गया है और निवारण भी उसी को ओषधि के रूप में देकर किया गया है । यह बात अग्निहोत्र द्वारा कार्बन के उपाय द्वारा वायुमंडलीय विषाक्तता के शमन का प्रयोजन पूरा होते देखा गया है ।

बढ़ते हुए वायु प्रदूषण के साथ-साथ जल और आहार में भी विषाक्तता भर रही है । इन सभी का निराकरण अग्निहोत्र द्वारा होता देखा गया है । प्रदूषण का अनुपात नापकर यदि अग्निहोत्र किया जाय, तो पीछे उसका प्रभाव दूसरा ही देखा गया है । वह प्रदूषण उड़ जाता है और वायु की शुद्धता स्पष्ट प्रकट होती है । यदि बड़ी संख्या में यज्ञ हों और उनकी श्रृंखला बराबर चलती रहे, तो बढ़ा हुआ वायु प्रदूषण जो दमा, कैंसर, अनिद्रा, तनाव, हृदयरोग, मधुमेह उत्पन्न करता है, उस आधार पर शमित हो सकते हैं । विशाल अन्तरिक्ष के वायुमण्डल का परिशोधन करने के लिए छोटी मात्रा में किये गये अग्निहोत्र भी काम दे सकते हैं । आवश्यक नहीं कि उतनी बड़ी ही तैयारी की जाय । बीमारियाँ समूचे शरीर के प्रकट और अप्रकट अवयवों में समाई होती हैं । पर उनका निराकरण ओषधि की छोटी मात्रा ही कर सकती है । आवश्यक नहीं कि शरीर के भार या विस्तार जितनी ओषधि का ही प्रयोग हो । इसी प्रकार यह सोचना भी व्यर्थ है कि जब समूचा वायुमंडल विकृतियों से ग्रसित हो रहा है, तो थोड़ी मात्रा में अग्निहोत्र से शोधन कैसे हो सकेगा ?

वस्तुतः पेड़ पौधे वातावरण के स्थूल भाग के परिशोधन तक ही सीमित हैं । सूक्ष्म वातावरण के परिशोधन में यज्ञ-अग्निहोत्र सर्वाधिक सशक्त एवं महत्वपूर्ण दूसरा उपाय है । इससे निकलने वाली दिव्य ओषधियों की ऊर्जा, सूक्ष्मीकृत ओषधि धूम्र, अपने प्रभाव से, वायु प्रदूषण निवारण कर सकने में समर्थ हैं । मोटी बुद्धि वाले कहते सुने गए हैं कि धूम्र किसी प्रकार का हो, कार्बन डायआक्साइड गैस उत्पन्न करता है । प्राणवायु नष्ट करता है । पर यह बात सर्वथा ऐसी नहीं है । यह बात तभी सही मानी जाती है जब यज्ञ प्रक्रिया में भी कारखानों की चिमनियों जैसा विषैला धुआँ निकलता हो । यज्ञाग्नि को जिस वैज्ञानिक ढंग से निरन्तर प्रज्ज्वलित रखने का विधान है, उससे मात्र ऊर्जा निकलती है-धूम्र नहीं । सुगन्धित, पोषक, रोग नाशक ओषधियों द्वारा विनिर्मित यज्ञ ऊर्जा वायुमंडल के विपरीत प्रभाव को समाप्त करती है । दुर्गन्धित स्थानों में सुगंधित वस्तुएँ जलाकर उनका परिमार्जन किया जाता है । सभी धर्म स्थानों में किसी न किसी रूप में सुगन्धित पदार्थों का जलाना पूजा विधान का एक अंग माना जाता है । अगरबत्ती, धूपबत्ती, लोबान आदि जलाकर कमरे मन्दिर या अन्य पूजास्थल महकाये जाते हैं और सुगन्धित वातावरण में प्रवेश करने वाले प्रसन्नता अनुभव करते हैं, मानसिक उल्लास प्राप्त करते हैं ।

होम्योपैथी सिद्धान्त में भी **''विषस्य विषमौषधम्''** के सिद्धान्त को मान्यता दी जाती, विष को विष का मारक कहा जाता है । इस सिद्धान्त के अनुसार विषैले धुएँ से उत्पन्न विकृति का निराकरण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुगन्धित ऊर्जा-यज्ञ धूम के द्वारा होने की बात सहज ही समझी जा सकती है । ऐसे कई प्रमाण हैं जो बताते हैं कि यज्ञ से वायु की अशुद्धता बढ़ने संबंधी मान्यता सर्वथा मिथ्या है । सच्चाई यह है कि इससे वायु का संशोधन ही होता है, संव्याप्त विषाक्तता का निवारण ही होता है ।

एक औसत व्यक्ति प्रति घण्टे ६०० लीटर हवा फेफड़ों, वायुकोष्ठों एवं त्वचा के माध्यम से वातावरण से खींचता है । चौबीस घण्टों में यह मात्रा लगभग साढ़े चौदह हजार लीटर बैठती है । इस क्रम में प्रति मिनट मात्र ३०० मिली लीटर ऑक्सीजन अंदर जाती व ढाई सौ मिली लीटर कार्बन डायऑक्साइड बदले में बाहर निकलती है । यदि आबादी का सघन अनुपात हो, आस-पास जंगल न हो एवं ऊपर से प्रदूषण अतिरिक्त मात्रा में कारखानों के माध्यम से हो रहा है, तो कल्पना की जा सकती है, अंदर प्रविष्ट होने वाली ओषजन का हवा में अनुपात क्रमशः कम होता जायेगा एवं कार्बन डायऑक्साइड भी प्रचुर मात्रा में चारों ओर होगी । यह रक्त में अम्लता बढ़ाने, मानसिक असंतुलन एवं तनाव पैदा करने तथा वायुमंडल को सान्द्र बनाने, साँस घुटने जैसी स्थिति पैदा करेगी । लगभग यही आज शहरों व कस्बों में होता देखा जा सकता है, जहाँ हरीतिमा नाम मात्र को है एवं प्रदूषक तत्व अधिकाधिक मात्रा में । जब हरीतिमा बढ़ाने हेतु स्थान न हो तो विकल्प क्या हो ? इसका समाधान अग्निहोत्र प्रक्रिया देती है ।

अग्निहोत्र प्रक्रिया में जब समिधाओं को या हविष्य ओषधियों को होम किया जाता है तो प्राप्त यज्ञ धूम्र ओषधि मिश्रित होता है । उसमें कार्बन डायऑक्साइड बहुत अल्प मात्रा में उतनी रहती है जितनी कि याजक के मस्तिष्क के तंतुओं को उत्तेजना देने हेतु अनिवार्य है । होमी गयी ओषधियों के मुख्य तत्वों के अतिरिक्त क्रिओजोट, फिनॉल, एसीटिलिन, ओजोन आदि भी इस प्रक्रिया में निस्सृत होते हैं । यहाँ हमें यह समझना होगा कि यज्ञ की ज्वलन प्रक्रिया भट्टी में सम्पन्न होने वाली क्रियाओं से बहुत अर्थों में भिन्न है । भट्टी में तापमान अधिकतम सीमा तक ले जाया जाता है । ताकि ईंधन तेज गति से जलकर अधिकतम उष्मा दे सके । यज्ञ कुण्ड इस प्रकार बनते हैं कि उसकी अग्नि उद्दीपन- प्रज्वलन प्रक्रिया भट्टी से भिन्न होती है । अग्नि के समन्वय से-अग्निहोत्र प्रक्रिया में निमित्त उर्जा के कारण पदार्थ छोटे-छोटे कणों में विभक्त होता रहता है । यह एक प्रकार से रासायनिक विखण्डन की प्रक्रिया है । इससे दो परिणाम निकलते हैं- आवेशित कण को धारण किए सूक्ष्म ओषधि घटक या तो वाष्पीभूत हो जाते हैं अथवा अवशिष्ट भस्म का एक अंग बन जाते हैं । चूँकि प्रज्ज्वलन प्रक्रिया धीमी है, अतः जो धूम्र बनते हैं वे कार्बन डायऑक्साइड एवं मोनोआक्साइड रहित होते हैं । जो गैसों की मात्रा होती है उनमें भी इथीलिन आक्साइड, प्रॉपलीन आक्साइड, फार्मल्डीहाइड एवं बीटाप्रोपियो लेक्टेन तथा एसीटिलीन का अनुपात अधिक होता है । यह वायु शोधक सम्मिश्रण है जो वृक्ष वनस्पतियों की वृद्धि भी करता है । पर्यावरण का संशोधन-नियमन करके घातक जीवाणु-विषाणुओं की वृद्धि रोकता है । प्रयोग बताते हैं कि व्यापक स्तर पर किये गए ऐसे उपचार जब वायुमंडल में धूम्र के बादल बनकर पहुँचते हैं तो बादलों को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं । वायुदाब कम करके वर्षा तक उत्पन्न करने की सामर्थ्य इनमें होती है । पूना के फर्ग्युसन कॉलेज के वैज्ञानिकों ने प्रयोगोपरान्त पाया है कि ६×६×२.५ इंच गहराई के सामान्य ताम्र पात्र में आम की समिधाओं के माध्यम से, युग निर्माण योजना द्वारा प्रयुक्त सामान्य वनौषधि सम्मिश्रण से किया गया अग्निहोत्र एक बार की १०८ आहुतियों से ३६×२२×१० फीट के हाल की ९००० से भी अधिक घनफुट वायु में कृत्रिम रूप से विनिर्मित वायु प्रदूषण समाप्त करने में सफल रहा । नियमानुसार हवा के नमूने लेकर गैस लिक्वीड क्रोमेटोग्राफ पर जाँचकर देखा गया है कि परीक्षित वायु पूरी तरह शुद्ध हो गयी ।

यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि यदि कहीं कृत्रिम ढंग से कार्बन गैस उत्पन्न कर वायुमण्डल में छोड़ी जावे, तो वहाँ की ऊष्णता बढ़ जावेगी । यह नियम है कि जहाँ अधिक गर्मी होगी यदि वहाँ जल हो, तो वनस्पति की उपज अधिक होगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हवन से उपयोगी गैस उत्पन्न कर हम पर्जन्य की अभिवृद्धि करते हैं, जिससे अन्न, फल आदि की उत्पत्ति होती है । इसके प्रत्यक्ष उदाहरण विद्यमान हैं । ज्वालामुखी पर्वतों से यह वायु निकलती है । उनके आसपास वृक्ष तथा वनस्पति अधिक होती है । फ्रांस में यूबरीन में एक चश्मे से वह वायु निकली है जिससे वृक्ष आदि की वहाँ बहुतायत है । इसके अतिरिक्त यज्ञ-कुण्ड की वेदी के चारों ओर एक नाली सी बनी रहती है जिस में जल भर दिया जाता है कि कार्बन से उत्पन्न होने वाले शिकार जो कि पृथ्वी पर हो सकते हैं अपने भीतर समाविष्ट कर लेता है ।

वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि हवन से जो वायु बनती है उसमें अधिक भाग ओषजन होती है । इसका प्रमाण यह है कि हवन की वायु में सुगन्धित वायु अधिक मात्रा में होती है और ओषजन उक्त वायु का ही दूसरा नाम प्राण-प्रद वायु है ।

रसायन शास्त्र के ज्ञाता जानते हैं कि काष्ठादि पदार्थों के जलने और गर्म करने से सदा ही कार्बनद्विओषित नहीं बनता । कार्बन के विशुद्ध रूप कोयले को भी ऐसी विधि से आँच पर तपाया जा सकता है कि उससे कार्बनद्विओषित न बनकर अन्य अनेक उपयोगी पदार्थों की उपलब्धि हो । कोयले से कोलगैस बनाते समय जो काला कलूटा और दुर्गन्ध कोलतार मिलता है उसी से रसायनज्ञों ने अनेक प्रकार के रंग और सुगन्धियां निर्माण की हैं । वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि कोयले को खुली वायु में आक्सीजन की पर्याप्त मात्रा के साथ जलाने से जहाँ केवल कार्बनद्विओषित मिलती है, उसी कोयले को किसी वेद पात्र में वायु के नियमित सम्पर्क के साथ जलाने से अनेक अन्य ऐसे रासायनिक द्रव्य मिलते हैं जो हमारे बड़े काम आते हैं ।

हवन करते समय जो सावधानियाँ बरतने का विधान दिया जाता है उनके अनुसार आहुत हव्य पूर्णतया जलकर कार्बनद्विओषित नहीं बनाती, वरन उनका वाष्पीयन होकर उनमें ऐसे रासायनिक परिवर्तन होते हैं जिनके द्वारा अनेक उपयोगी पदार्थ अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा में उत्पन्न हो दिगदिगंत में व्याप्त हो प्राणियों का उपकार करते हैं । हवन करते समय समिधा को केवल बाहर की ओर लगाने का प्रयोजन यह है कि समिधा के जलने से जो ताप उत्पन्न होता है वह हव्य का केवल वाष्पीयन करे, जलाये नहीं । हवन कुंड का ऊपर से खुला होना और नीचे संकुचित होने का भी यही प्रयोजन है कि हव्य में अविज्ञजन मित मात्रा में पहुँचे । अधजले हव्य को कुरेद कर जलाने का निषेध भी यही प्रमाणित करता है कि हवन में हव्य को पूर्णतया जलने न देकर उसका वाष्पीयन किया जाता है, और उसमें ऐसे पदार्थों को ही डाला जाता है जिनके वाष्पीयन से उपयोगी द्रव्य वायुमण्डल में फैलकर प्राणियों का हित साधन करें ।

प्रातः ऊषाकाल में जो वायु चलती है वह सबसे अधिक प्राणप्रद मानी जाती है उसमें भी ओषजन ही अधिक होता है । अतः इससे सिद्ध होता है कि हवन-यज्ञ वायु को शुद्ध करता है और प्राणप्रद वर्षा भी करता है ।

वैज्ञानिक परीक्षणों से भी अब यह सिद्ध हो गया है कि वायु शोधन का विशेष गुण यज्ञ में है । दुर्गन्धित सीलन युक्त वायु में रोग कीटाणुओं का अड्डा होता है । वे उसी में छिपे हुए बैठते हैं और जिस भी अवयव में अनुकूलता पाते हैं, वहीं की स्थिति के अनुरूप रोग उत्पन्न करते हैं । इनके निवारण के लिए यज्ञ की ऊर्जा शोधन और मारण का काम करती है । यह ऐसा उपयोगी एण्टीबॉयोटिक है जिसमें उपयोगी कृमि-कीटकों, जीवाणुओं को पोषण मिलता और दमन हानिकारक विजातियों का ही होता है ।

गूगल, कपूर आदि पदार्थों के गुण सर्वविदित हैं । उन्हें रोग वाले स्थानों में जलाया जाता है । घृत दीपक में भी यही विशेषता है । गुड़, शक्कर जलने से भी मात्र रोगकारक जीवाणुओं-विषाणुओं का ही हनन होता है, सजातीय जीवाणु नहीं मरते, जब कि एण्टीबॉयोटिक ओषधियाँ सजातीय और विजातीय दोनों प्रकार के जीवाणुओं को मारकर नफा-नुकसान बराबर कर देती हैं ।

मलेरिया की सीलन भरी वायु का निराकरण करने के लिए नीम के सूखे पत्ते जलाये जाते हैं । यहाँ काँटे से काँटा निकालने का सिद्धान्त लागू होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । "**विषस्य विषमौषधम्**" का सिद्धान्त विशेषतया ऐसे प्रयोगों में ही काम में लाया जाता है जिनमें दूषित वायु का उपयोगी संशोधक वायु के द्वारा निराकरण किया जाता है ।

सूर्य किरणों में रोगनाशक गुण हैं । इसीलिए घरों में खिड़की खोलकर सूर्य किरणों के प्रवेश की व्यवस्था की जाती है । नित्य कपड़े धोकर उन्हें धूप में सुखाते हैं । बिस्तर आदि जो कपड़े नित्य नहीं धोये जा सकते उन्हें भी तेज धूप में सुखाते हैं । खाद्य-पदार्थों को धूप लगाते रहने की आवश्यकता समझी जाती है । आटा, दाल आदि को धूप लगाते रहते हैं । इससे स्पष्ट है कि धूप की गर्मी में रोगनिवारक विशेषतायें हैं । ठीक वही ऊर्जा यज्ञ ऊर्जा में पायी जाती है । सूर्य सम्पर्क से किसी को हानि नहीं होती, वरन् अन्न, शाक, फल आदि जो भी सूर्य के सम्पर्क में आते हैं, उनमें उपयोगी विटामिन 'डी' उत्पन्न हो जाता है । आहार विज्ञानी इसीलिये खाद्य पदार्थों को छिलके समेत सेवन करने की सलाह देते हैं, ताकि उनका सूर्य सम्पर्क वाला विटामिन 'डी' सेवन कर्त्ताओं को उपलब्ध होता रहे । मनुष्यों को भी प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार प्रातःकाल की धूप में नंगे शरीर बैठने की सलाह दी जाती है ताकि त्वचा पर उपयोगी प्रभाव पड़े और वह गर्मी शरीर के भीतर पहुँचकर भी रोग निरोधक क्षमता बढ़ाये ।

सूर्य ऊर्जा के सदृश ही यज्ञ ऊर्जा को भी सशक्त माना गया है । उसमें संरक्षण और परिशोधन के दोनों गुण हैं । वह हानि नहीं पहुँचाती । फागुन सुदी पूर्णिमा को होली जलाई जाती है, वह नवान्न यज्ञ है । पतझड़ के पत्ते, माघ की वर्षा की सीलन पाकर दुर्गन्धित और रोगोत्पादक प्रभाव उत्पन्न करते हैं । उसका सामूहिक उपचार बड़े रूप में अग्नि जलाकर किया जाता है । छोटी होली हर घर में जलाई जाती है । बड़े रूप में बड़े क्षेत्र की और छोटे रूप में घर की छोटी परिधि की वायुशोधन प्रक्रिया अग्नि जलाकर सम्पन्न की जाती है । वस्तुतः यह यज्ञ का ही एक अव्यवस्थित रूप है, जिससे हानिकारक तत्वों का निराकरण होता है ।

मनुष्य शरीर का अन्त हो जाने पर भारतीय परम्परा में उसका अग्नि संस्कार करने की प्रथा है । यह अन्त्येष्टि यज्ञ है । इसमें रोगनाशक सुगन्धित घृत, शक्कर आदि भी होमे जाते हैं ताकि शरीर जलाने पर उत्पन्न होने वाली दुर्गन्धित वायु का उस विधि से निराकरण हो जाये ।

वातावरण को प्रसन्नतावर्धक-आरोग्य समर्थक बनाने के लिए प्रत्येक शुभ कार्य को आरम्भ करते समय हवन किया जाता है । जिन लोगों में विधिवत् हवन करने की पद्धति का प्रचलन नहीं है, वे गूगल, कपूर, चन्दन आदि वस्तुएँ जलाकर सुगन्धित वायु उत्पन्न कर लेते हैं । इसे मांगलिक माना जाता है । शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक प्रसन्नता बढ़ाने की विशेषता भी इसमें है । यह सब यज्ञ के ही अस्त-व्यस्त रूप हैं । सिद्धान्त इनके पीछे यही है कि यज्ञीय ऊर्जा सूर्य किरणों के समतुल्य है और वह मनुष्य के लिए हर दृष्टि से उपयोगी है । दूषित वायु को सुगन्धित वायु में परिवर्तित करने के सिद्धान्त का इस प्रक्रिया में समावेश है । अतः संवर्धन एवं वातावरण परिशोधन दोनों के लिए किसी न किसी रूप में यज्ञ को दैनिक क्रिया में सम्मिलित किया ही जाना चाहिये ।

सूक्ष्म जगत के परिशोधन-परिष्कार हेतु अध्यात्म उपचार

यज्ञ को सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाला बताया गया है । पर्जन्य एवं दिव्य वातावरण की उत्पत्ति का मूल आधार यज्ञ ही है । यजुर्वेद ३/५३ में ऋषि कहते हैं "हे यज्ञ ! तू निश्चय ही कल्याणकारी है । स्वयंभू परमेश्वर तेरे पिता हैं । तेरे लिए नमस्कार है । तू हमारी रक्षा कर । दीर्घ जीवन, उत्तम अन्न, भरपूर जीवनीशक्ति ऐश्वर्य, समृद्धि, श्रेष्ठ सन्तति एवं मंगलोन्मुखी बल, पराक्रम के लिए हम श्रद्धा विश्वासपूर्वक तेरा सेवन करते हैं ।"

प्राचीनकाल में ऋषियों ने यज्ञ के इन लाभों को भली प्रकार समझा था, इसलिये वे उसे लोक-कल्याण का अतीव आवश्यक कार्य समझकर अपने जीवन का एक तिहाई समय यज्ञों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आयोजन में लगाते थे । स्वयं यज्ञ करना और दूसरों से यज्ञ कराना उनका प्रधान कर्म था । जब घर-घर में यज्ञ की प्रतिष्ठा थी, तब यह भारत भूमि स्वर्ण-सम्पदाओं की स्वानिनी एवं नर-रत्नों की खान थी, साथ ही समूचे विश्व में इसी कारण सुख-शान्ति का खुशहाली का वातावरण था । पर आज यज्ञ को त्याग देने का ही परिणाम है कि सर्वत्र पर्यावरण ही विषाक्त नहीं हुआ, वरन् सनकियों, उन्मादियों के कारण विश्व-वसुन्धरा का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है । मानवी सभ्यता के विलुप्त हो जाने का अंदेशा है ।

विश्व का विचार परक वातावरण जब तक उच्चस्तरीय रहता है, तब तक सतयुगी परिस्थितियाँ बनी रहती हैं । पर जब उसमें दुर्बुद्धिजन्य दुर्गुणों का प्रभाव भरने लगता है तो सर्व साधारण में उद्दंडता, आवेश, अनाचार का समावेश होने लगता है उनकी परिणति शोकसंताप के रूप में सामने आती है । थोड़े लोग अनेकों को अपने साथ घसीट ले जाते हैं और शीतयुद्ध, गृहयुद्ध, महायुद्ध का घटाटोप जैसा परिणाम बनकर सामने आता है । विश्व के राजनैतिक क्षितिज पर इन दिनों प्रत्यक्ष देखा भी जा सकता है । यह सूक्ष्म जगत का प्रदूषण है जिसे वायुमंडलीय प्रदूषण से भी अधिक भयंकर माना जा सकता है ।

वायु मंडल की विषाक्तता रोग फैलाती और दुर्भिक्ष लाती है, किन्तु वातावरण में दुष्टता और भ्रष्टता के तत्व भर जाने से प्रकृति कुपित होकर ऐसे कहर बरसाती है जिसे मनुष्यकृत 'कत्लेआम' से भी अधिक भयंकर समझा जा सकता है । बाढ़, भूकम्प, महामारी, उपलवृष्टि, ईति-भीति, दुर्भिक्ष, अपराध, युद्ध जैसी विपत्तियाँ टूटती हैं और उस सामूहिक विनाश का प्रकारान्तर से अगणित जनों पर दुष्प्रभाव पड़ता है । सूखे के साथ गीला भी जलता है । गेंहूँ के साथ घुन भी पिसता है । अनीति करने वाले की तरह उसे रोकने का पुरुषार्थ न करने वाला भी कायरता एवं उपेक्षा का व्यक्तिगत स्वार्थपरता में ही संलग्न रहने का दोषी समझा जाता है और कुपित प्रकृति व्यापक क्रोध बरसाती और एक ही डंडे से सबको हाँकती है ।

इन दिनों परिस्थितियाँ ऐसी हैं जिन्हें विकृत मनःस्थिति की देन माना जा सकता है । सभी जानते हैं कि इन दिनों कुमार्गगामिता अपनी चरम सीमा पर चल रही है । अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सशक्त राष्ट्र छोटे एवं निर्बल देशो को अपने अधीन कर मनमाने ढंग से उनका शोषण करने को समुद्यत हैं । बढ़ते हुए तनाव एवं अपराधी दुष्प्रवृत्ति का विस्फोट इस प्रकार हो रहा है कि वह कभी भी अणु युद्ध तथा असाध्य महामारियों के रूप में फूट सकता है । विज्ञान और बुद्धिवाद का दुरुपयोग ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है जिससे मानवी सत्ता और सभ्यता का अंत होने जैसी स्थिति आ पहुँचे ।

ऐसे भयंकर समय में भौतिक उपाय-उपचार तो शासकों, धनाध्यक्षों एवं राजनयिकों द्वारा अपने-अपने ढंग से चल ही रहे हैं । अध्यात्म क्षेत्र को भी इन दिनों दिव्य प्रतिकारों का आश्रय लेना चाहिए और व्यक्ति तथा समाज को मानवी सभ्यता को नरक जैसे दलदल में फँसने से पूर्व ही उबारना चाहिए । इसके लिए सर्वसुलभ उपाय-उपचार यज्ञ विधा को पुर्नजीवित करने के स्तर पर प्रयास करना चाहिए । इसी आधार पर संव्याप्त विषाक्तता का शमन और वातावरण का परिशोधन हो सकेगा । तपस्वियों के द्वारा किये गये ऐसे आयोजन अन्तरिक्ष में ऐसी उथल-पुथल कर सकते हैं जिससे विनाश की संभावनायें निरस्त हो जायँ और विकास के नये आयाम आरम्भ हो सकें ।

इस संदर्भ में युगान्तरीय चेतना ने पुरातन यज्ञीय परम्परा को पुनर्जीवित किया है और व्यापक स्तर पर व्यक्तिगत एवं सामूहिक यज्ञ आयोजनों की बहु आयामी श्रृंखला चलाई है । वायु प्रदूषण का निराकरण और वातावरण का परिमार्जन यज्ञ की अग्निहोत्र प्रक्रिया से हो सकता है । इसके लिए नवनिर्माण आन्दोलनों में गायत्री यज्ञों एवं दीपयज्ञों तथा युगनिर्माण सम्मेलनों के ज्ञान यज्ञों का समावेश किया जाता रहा है । परिजनों के मिलजुल कर श्रम सहयोग से यह आयोजन बड़ी सरलता से और स्वल्प लागत में सम्पन्न हो जाते हैं । जहाँ सुव्यवस्थित अग्निहोत्र की सुविधा नहीं है, वहाँ घृत दीप एवं धूपबत्ती जलाकर गायत्री महामंत्र का २४ बार उच्चारण करने से भी अति संक्षिप्त यज्ञ हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है । वस्तुतः इन पुरातन महान प्रचलनों को सर्व सुलभ व्यापक एवं पुनर्जीवन प्रदान करने के लिए इसे आन्दोलनों के रूप में अग्रगामी बनाया गया है ।

अदृश्य वातावरण को बदलने एवं वायुमंडल में भरी जा रही विषाक्तता के निराकरण के लिए यज्ञ प्रक्रिया को एक आन्दोलन का रूप देने के लिए बड़े आयोजनों वाली खर्चीली व्यवस्था के स्थान पर ऐसे सरल विधान निर्धारित किये गये हैं जिसे निर्धन वर्ग के लोग भी अति सस्ते में इस प्रक्रिया की पूर्ति कर सकें । हवन सामग्री उपलब्ध न हो तो गुड़ और घी के सम्मिश्रण से बनी हुई छोटी-छोटी गोलियों को शाकल्य मानकर हवन किया जा सकता है । उसमें चन्दन चूरा जैसा सुगन्धित द्रव्य भी मिलाया जा सकता है । शर्करा और घृत का अग्निहोत्र में विशेष महत्व है, पर इन्हें शुद्ध स्थिति में ही लेना चाहिए । गौघृत मिलना अब सरल नहीं है । मिलावट की सब ओर भरमार है । इसलिए गाय के दूध को गुड़ में मिलाकर ऐसी सामग्री बन सकती है जो सर्व सुलभ हो और जिसके लिए बहुत पैसा खर्च न करना पड़े । वनस्पतियों की बनी शुद्ध हवन सामग्री मिल सके तो और भी अच्छा है ।

पर इन दिनों शुद्ध घी और शुद्ध सामग्री मिलना कठिन ही है । वनौषधियों से विनिर्मित हवन सामग्री भी हर जगह उपलब्ध नहीं । ऐसी दशा में काला तिल हवन के काम में आ सकता है । घी आरम्भिक आज्याहुति होम के सात और अंत के तीन स्विष्टिकृत, पूर्णाहुति और वसोधारा के निमित्त काम में लाया जा सकता है । तिल में थोड़ा सा घी चिकनाई के लिए प्रयुक्त करने से काम चल जाता है । एक किलो गाय के दूध से निकाले गये मक्खन से प्रायः एक महीने का काम चल जाता है । सभी सामग्री शुद्ध रूप में उपलब्ध न हो तो काला तिल, चंदन चूरा, गुड़ या शर्करा, घी आदि मिलाकर भी सस्ता और शुद्ध शाकल्य बन सकता है । एक पेटी में हवन में काम आने वाली सभी वस्तुएँ सुरक्षित यथास्थान रखी रहें तो नित्य यज्ञ में कोई असुविधा नहीं होती है ।

कई जगह कमरों में भी धुआँ करने का निषेध है । वहाँ गैस या बिजली से ही भोजन तक बनता है । लकड़ी जलने से वे हानिकारक धुआँ होने की मान्यता रखते हैं । वहाँ उत्सवों पर धार्मिक प्रयोजन के लिए अगरबत्ती, धूपबत्ती, मोमबत्ती भर जलाने की छूट है । ऐसे स्थानों के लिए एक थाली में चंदन चूरे की पाँच अगरबत्ती तथा एक घी का दीपक जला लेने से प्रयोजन की पूर्ति हो जाती है । हवन सामग्री की पूर्ति अगरबत्ती से और घी होमने की आवश्यकता दीपक जलाने से पूरी हो जाती है । चौबीस बार उपस्थित लोग मिलजुल कर सामूहिक रूप से एक साथ एक मन और भावना से गायत्री मंत्र का उच्चारण कर लें तो उस उच्चारण को आहुति मंत्र समझा जा सकता है । जिन कमरों में कीमती कालीन बिछे हुए हैं और आग की चिनगारी से किसी प्रकार के नुकसान की आशंका है, वहाँ यह विधि बिना जोखिम की है । जहाँ मोजा उतारना असभ्यता में गिना जाता है वहाँ गायत्री मंत्र का मौन मानसिक जप हो सकता है और उपार्जित ऊर्जा को अदृश्य के परिशोधन हेतु बिखेर देने की भावना की जा सकती है । मौन जप किसी भी स्थिति में हो सकता है । उसके लिए स्नान या हाथ पैर धोने की भी अड़चन नहीं है ।

पदार्थ यजन के साथ-साथ मंत्रोच्चार की समस्वरता, प्रयोक्ताओं की प्रखर पवित्रता एवं प्रचण्ड भावना का सम्मिश्रण होने से ही यज्ञीय विधा उस स्थिति तक पहुँचती है जिसमें प्रस्तुत आशंकाओं, आतंकों और युद्ध विभीषिकाओं अपराधों से लोहा ले सकना उनके दावानल को बुझा सकना संभव हो सके । यज्ञ मात्र प्रतिकार ही नहीं है, उसके साथ परिष्कार भी जुड़ा हुआ है । यज्ञ प्रक्रिया परमार्थ प्रयोजनों के लिए की गयी एक आध्यात्मिक उपचार प्रक्रिया है । अदृश्य में संव्याप्त विकृतियों से निपटने व सुखद संभावनाएँ प्रस्तुत करने की इसमें अपार संभावनाएँ हैं । इन दिनों हर किसी के द्वारा इसे जनहितार्थाय अपनाया ही जाना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ द्वारा अमृतमयी वर्षा

यज्ञ से वर्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध है । इन दिनों मौसम विज्ञान द्वारा जब ऋतु और वर्षा पर नियंत्रण प्राप्त करने के तरह-तरह के अनुसंधान किये जा रहे हैं तो विशेषज्ञों का ध्यान यज्ञ द्वारा वर्षा की संभावना पर भी गया है । शास्त्रों में उल्लेख आता है कि यज्ञ से इन्द्रदेव प्रसन्न होते हैं और पर्याप्त वर्षा होती है । प्राचीन काल में जब इस पुण्य भूमि में स्थान-स्थान पर यज्ञ होते थे तो खूब वर्षा होती थी और अन्न वनस्पति, पशु, दूध आदि से यह देश सदा भरा पूरा रहता था । वर्षा का जल कृषि के लिए सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि उसमें आकाशस्थ अनेक खाद्य समिश्रित हो जाते हैं जिससे अन्न वनस्पति बढ़ते भी खूब हैं और उनमें पौष्टिक तत्व भी अधिक होते हैं । नहर आदि के पानी से सींचने पर पौधों की उतनी वृद्धि नहीं होती जितनी कि वर्षा के जल से होती है । इस प्रकार जो विटामिन क्षार एवं पौष्टिक तत्व वर्षा से सींचे हुए पेड़ के फल बीजों में होता है वह अन्य प्रकार की सिंचाई से नहीं होता । वर्षा का जल स्वच्छता की दृष्टि से बहुत उच्चकोटि का होने के कारण स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद होता है । वर्षा की नमी हवा में रहने से पशु पक्षी आदि भी प्रसन्न एवं परिपुष्ट होते हैं । इसी नम हवा से रज वीर्यों में प्रजनन शक्ति बढ़ती है । कुत्ते आदि अनेक पशु वर्षा के उपरान्त ही गर्भ धारण करते हैं । वर्षा की उपयोगिता अनेक दृष्टियों से है ।

वर्षा को देवाधीन समझा जाता है क्योंकि मनुष्य की इच्छा एवं क्रिया द्वारा उसको चाहे जब नहीं बरसाया जा सकता । वर्षा की इस अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिये ऋषियों ने प्रयत्न किये और अन्ततः यज्ञ द्वारा अभीष्ट वर्षा में सफलता प्राप्त की । यज्ञ द्वारा वर्षा करना और रोकना उनके लिए सरल था । अपनी इसी सफलता का उद्घोष करते हुए उन्होंने यज्ञ की महत्ता गाई और कहा :-

यज्ञेनाऽऽप्याग्यिता देवा बुष्टयुत्सर्गेण मानवाः ।
आप्यायनं वै कुर्वन्ति यज्ञाः कल्याण हेतवः ।।

-पद्मपुराण सृष्टि खण्ड ३।१२४

यज्ञ से देवता परिपुष्ट होते हैं । यज्ञ से वर्षा होती है और मनुष्य का पालन होता है । यज्ञ ही कल्याण का हेतु है ।

यज्ञैराप्यायिता देवा वृष्टयुत्सर्गेण वै प्रजाः ।
आप्यायन्ते तु धर्मज्ञ यज्ञाः कल्याण हेतवः ।।

-विष्णु पुराण ६।१८

यज्ञ से देवताओं का अभिवर्धन होता है । यज्ञ द्वारा वर्षा होने से प्रजा का पालन होता है । हे धर्मज्ञ यज्ञ ही कल्याण के हेतु हैं ।

अन्नाद्भवति भूतानि पर्जन्यादन्न सम्भवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञ कर्म समुद्भवः ।।

-गीता ३।१४

समस्त प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं और अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है वर्षा यज्ञ से होती है और वह यज्ञ कर्म से होता है ।

उपरोक्त मन्त्र में बताया गया है कि अग्नि में डाली हुई आहुति प्राणियों को प्राप्त होती है और वह वर्षा तथा अन्नोत्पत्ति का कारण बनती है । विज्ञान से सिद्ध है कि अग्नि जलने से कार्बन डायऑक्साइड गैस बनती है । इस गैस का पृथ्वी पर एक पर्त फैला रहता है जिसका काम यह है कि सूर्य की किरणों की गर्मी को पृथ्वी पर रोक कर रखे । यदि यह पर्त पतला होगा तो गर्मी ठहरेगी नहीं और भूमि की उर्बरा शक्ति नष्ट हो जायगी । रेगिस्तानों में यह पर्त पतला है फलस्वरूप दिन में कितनी ही धूप पड़े रात को वहाँ की जमीन तथा वायु ठण्डी होती है । ऐसी स्थिति में वहाँ कृषि एवं वृक्ष, वनस्पति नहीं उगते, वर्षा करने वाले बादलों को पकड़ने में भी उस प्रदेश का वायुमण्डल असमर्थ रहता है इसलिए वहाँ वर्षा की सदा कमी रहती है । जिन प्रदेशों में कार्बन डायऑक्साइड गैस का पर्त पृथ्वी की सतह पर मोटा होता है वहाँ सूर्य की किरणों द्वारा पृथ्वी पर आने वाली उर्वरा शक्ति एवं गर्मी सुरक्षित एवं संग्रहीत रहती है और उस भूमि में वृक्ष वनस्पति खूब होते हैं ।

काँच में यह गुण है कि सूर्य की किरणों की गर्मी को अपने में से भीतर आने देता है । पर उल्टी वापस नहीं निकलने देता । जिन कमरों में काँच के रोशन दान लगे होते हैं वहाँ थोड़ी सी धूप जाकर भी कमरे में अपना पूरा प्रभाव डाल सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किन्हीं-किन्हीं नर्सरियों में ऐसे पौधे होते हैं जिनको अधिक गर्मी चाहिए उनके लिए काँच के ढक्कनदार घर बना दिये जाते हैं जिनमें होकर धूप भीतर तो घुस जाय पर बाहर न निकले । फलस्वरूप उन पौधों को पर्याप्त गर्मी प्राप्त होती रहती है और वे उष्ण प्रदेश में ही जीवित रहने वाले पौधे शीत प्रदेशों में भी जीवित रहते हैं । सूर्य की किरणों की गर्मी को भीतर घुस जाने देना पर बाहर न निकलने देने का जो कार्य काँच करता है वही कार्य पृथ्वी पर फैला हुआ कार्बन डायऑक्साइड गैस का पर्त भी करता है । यह पर्त जितना ही मोटा और मजबूत होगा, पृथ्वी को सूर्य की बहुमूल्य उर्वरा शक्ति को अपने आप में धारण करने और सुरक्षित रखने में सुविधा होगी ।

ज्वालामुखी पहाड़ों से यह कार्बन गैस निकलती है । उस प्रदेश में उसका एक मोटा पर्त जमीन पर फैल जाता है, फलस्वरूप ज्वालामुखी पर्वतों के आस-पास वृक्ष वनस्पतियों का बाहुल्य रहता है और वहाँ वर्षा भी अधिक होती है । फ्रांस में यूबरीन नामक एक चश्मा है जिसमें से प्रायः कार्बन निकलती रहती है । इस चश्मे के आस-पास का क्षेत्र सदा हरियाली से हरा-भरा रहता है । इसलिए यह यज्ञ से उत्पन्न कार्बन पृथ्वी को उर्वरा बनाती है और अन्न, फल तथा वनस्पतियों से हमें भरा पूरा रखती है ।

यह सोचना ठीक नहीं कि अग्नि जलाने से ऑक्सीजन वायु खर्च होती है और कार्बन उत्पन्न होती है इसलिए हवन स्वास्थ्य के लिए अहितकर होगा । हवन में एक तो ऑक्सीजन खर्च ही कितनी होती है । उससे कहीं ज्यादा तो कल, कारखानों, रेल, मोटर आदि में हो जाती है । फिर यदि थोड़ी ऑक्सीजन जले और कार्बन बने भी तो उसकी पूर्ति उन वृक्षों, वनस्पतियों से हो जाती है जो हवन द्वारा उत्पन्न होती है । वृक्ष पौधों से दिन भर स्वच्छ प्राण प्रद वायु निकलती रहती है । हवन की कार्बन का हानिकारक तत्व नष्ट करने के लिए तो पहले से ही कलश आदि की स्थापना कर ली जाती है ।

वैज्ञानिक लोग बादलों पर बर्फ का चूरा हवाई जहाजों से छिड़ककर उड़ते हुए बादलों को भारी करते हैं और उससे वर्षा कराने का प्रयत्न करते हैं । कृत्रिम वर्षा का यह प्रयोग अभी सफल नहीं हो सका है । पर यज्ञ द्वारा वर्षा कराने के प्रयोग बहुधा सफल होते हैं ।

बादल जब पोले होते हैं तो हवा उनमें भीतर भर जाती है और उन्हें इधर से उधर उड़ा ले जाती है । यदि यह बादल अपेक्षाकृत सघन हो जाते हैं या कोई ऐसा कारण बन जाता है कि वायु उनके भीतर न घुस पावे तो यही बादल भारी होकर बरसने लगते हैं । हवन द्वारा यह आवश्यकता इस प्रकार पूरी होती है कि होम हुआ घी सूक्ष्म बनकर वायु द्वारा बादलों तक पहुँचता है और उसकी चिकनाई का एक पर्त बादलों के ऊपर चढ़ जाता है । जो वायु को उनके भीतर जाने से रोकता है फलस्वरूप बादल भारी होकर बरसने लगते हैं ।

पानी में चिकनाई डाली जाय तो वह उसके भीतर नहीं ठहरती वरन् ऊपर आकर पर्त की तरह फैल जाती है । यह हवन का धुआँ बादलों के ऊपर एक चिकनाई का पर्त चढ़ा देता है । हवा चिकनाई को पार नहीं कर पाती । देखा जाता है कि जाड़े के दिनों में बहुत से लोग चेहरे पर बैसलीन, मक्खन आदि मल लेते हैं जिससे ठण्डी वायु त्वचा तक नहीं पहुँचती और चेहरे की चमड़ी फटने की दिक्कत नहीं होती । जिस प्रकार बैसलीन चेहरे की त्वचा तक हवा को पहुँचने से रोकती है वैसे ही बादलों के ऊपर फैला हुआ हवन के धुएँ का पर्त ऐसी ढाल का काम करता है जो हवा को बादलों के भीतर घुसकर उन्हें उड़ा देने से रोकता है । यह रोक ही वर्षा का कारण बन जाती है ।

एक कटोरी में पानी, एक में घी भरकर आग पर गर्म किया जाय तो पानी में बुलबुले उठने लगेंगे घी यद्यपि जलेगा तो अवश्य, पर उसमें बुलबुले न उठेंगे । बुलबुले उठने का कारण यह है कि पानी गर्म होने पर हवा उसके अन्दर प्रवेश करती है, इसके विपरीत घी को भेद कर हवा कटोरी के पेंदे में नहीं पहुँच पाती और बुलबुले नहीं उठते । यह इस बात का प्रमाण है कि चिकनाई को पार करके हवा भीतर नहीं जाती । हवन द्वारा बादलों के ऊपर चिकनाई का आवरण चढ़ाकर उन्हें हवा द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इधर-उधर उड़ा दिये जाने से रोकता है और वर्षा होने लगती है । चिकनाई ठण्ड पाकर जमती है और अपने साथ पानी को भी जमा देती है । जाड़े के दिनों में जब घी जमता है तो उसका जलांश भी जम जाता है । हवन का घी बादलों को घना करता है, जमाता है और उन्हें बरसने के लिए विवश करता है ।

वर्षा कराने और रोकने में अतिवृष्टि और अनावृष्टि रोकने में यज्ञों की सामर्थ्य अद्‌भुत है ।

''निकामे निकामे पर्जन्यो वर्षतु''

इच्छानुसार वर्षा करना, वर्षा पर मानुषी आधिपत्य कराना यज्ञ भगवान् के हाथ में है । केवल जल वर्षा ही नहीं, यज्ञ से उस प्राण की वर्षा भी होती है जो समस्त प्राणियों को स्वस्थ, सजीव और चिरस्थाई बनाता है । उस प्राण से ही यह पृथ्वी स्थिर है । अमृत प्राण जो यज्ञ का प्रधान उपहार है इस धरती माता को हरी-भरी बनाये हुए है । इसी से कहा गया है-

''यज्ञाः पृथिवीं धारयन्ति''

-अथर्व०

'' यज्ञ ही इस पृथ्वी को धारण किये हुए है ।''

केवल ऋषि वाक्यों से ही नहीं, वैज्ञानिक प्रमाणों से भी यह सिद्ध हो गया है कि यज्ञों द्वारा जब चाहे वर्षा करा दी जा सकती है तथा अनावश्यक वृष्टि को रोका भी जा सकता है । ऋतुओं में अभीष्ट परिवर्तन एवं प्रकृति संतुलन के लिए यज्ञों की उपयोगिता असंदिग्ध है ।

जब कामना करें तभी वर्षा हो

बादल आकाश में जितने घुमड़ते हैं उतने बरसते नहीं । तेज धूप गर्मी के दिनों को छोड़कर वर्षा में प्रचुरता से और सर्दी में यदा-कदा उनका दर्शन होता है । पर इनमें से कितने बरसेंगे यह नहीं कहा जा सकता । पृथ्वी की आवश्यकता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पन्द्रह-पन्द्रह दिन के अन्तर से सर्वत्र क्राम चलाऊ वर्षा होती रहे तो हरियाली की अभिवृद्धि का क्रम बना रहे और पानी की बर्बादी तथा धरती के कटाव का संकट भी पैदा न हो । किन्तु बादल मनमौजी होते हैं । प्रकृति का कोई ऐसा नियम नहीं है कि भूमि की जरूरत देखकर पानी बरसायें । विशालकाय रेगिस्तान सूखे पड़े रहते हैं जबकि चेरापूंजी जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में अन्धाधुन्ध वर्षा होती है । तिहाई बादल तो समुद्र में से उठकर उसी में बरस जाते हैं ।

इच्छित वर्षा होने की लालसा लगाये तो मनुष्य बैठा रहता है । मनौती मनाता रहता है, फिर भी बात अधूरी ही रहती है । बादल किसी का कहना मान लेंगे यह आशा नहीं की जाती । भले ही इसके लिए मोर, पपीहे, दादुर कुहराम ही मचाते रहें ।

कुँओं, तालाबों, में पानी मूलतः वर्षा का ही होता है । यदि बारिश न हो तो वे सभी सूख जाते हैं । फिर सिंचाई के साधनों के लिए बर्फीले पर्वतों से निकलने वाली नदियों पर ही निर्भर रहना पड़ता है । उनकी पहुँच भी सर्वत्र नहीं है । फिर जाड़े के दिनों में बर्फ जमती है और ऊपर से उतरने वाली नदियों में भी प्रवाह नाम मात्र का रह जाता है । ऐसी दशा में सिंचाई के माध्यम सभी कठिन हो जाते हैं और कृषि उत्पादन में कमी पड़ने से लोगों को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता है ।

समुद्र जल को मीठा बनाने के प्रयत्न चल रहे हैं और ज्वार-भाटों से बिजली बनाने के सूर्यताप को एकत्रित करके उसे ईंधन की आवश्यकता पूरी करने की बात सोची जा रही है । बहते हुए पवन को रोककर पनचक्की और बहते जल प्रवाह को रोककर बिजली घर बनाने, बाँध खड़े करके नहरें निकालने के प्रयत्न चल रहे हैं और बहुत हद तक सफल भी हुए हैं । अब आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि बादलों पर भी नियन्त्रण स्थापित किया जाय और उन्हें बरसने को आवश्यकतानुसार बाधित किया जाय ।

बादल दो प्रकार के होते हैं । बहुत ऊँचे उड़ने वाले जिनका तापमान अधिक होता है वे छिर छिरे भी होते हैं । दूसरे प्रकार के वे जो भारी होते हैं, जिनमें जल का आधिक्य होता है और नीचे उड़ते हैं । हवा की गति तेजी पकड़ ले तो बात दूसरी है अन्यथा उनकी चाल भी धीमी होती है । इतने पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि कौन बादल कहाँ कितनी मात्रा में वर्षा करेगा ? कितनी देर टिकेगा ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस अनिश्चितता को निश्चितता में बदलने के लिए ऐसे उपाय सोचे जा रहे हैं, जिनसे वर्षा कराने के सम्बन्ध में कुछ निश्चित आश्वासन मिल सके और मनुष्य की आवश्यकता की एक बड़ी जटिलता हल हो सके ।

अभी तो स्थिति यह है कि मनुष्य पूर्णतया प्रकृति पर निर्भर है । उष्ण कटिबन्धीय प्रान्तों अर्थात् विषुवत रेखा (इक्वेडोर) के ५ अक्षांश उत्तर ५ दक्षिण के भाग में जहाँ सूर्य अत्यधिक ताप के कारण अग्नि वर्षा सी किया करता है वहाँ पर भयंकर चक्रवात (ट्रापिकल साइक्लोन्स) उठा करते हैं । इनकी प्रतिक्रिया अटलांटिक महासागर के निकटवर्ती क्षेत्रों में होती है और उससे वहाँ भी ''हरिकेन'' तथा ''टेरनेडो'' नाम के चक्रवात जैसे उठ खड़े होते हैं । प्रशान्त महासागर में उठने वाली आँधियां जिन्हें ''टाइफून'' कहा जाता है वह भी उष्ण कटिबन्धीय चक्रवातों का ही रूप है । कुछ दिन हुए इन तूफानों ने अमरीका, जापान, पाकिस्तान, श्रीलंका में आफत कर दी थी । पूर्वी बंगाल में हजारों लाखों लोग इस विनाश लीला में काम आये ।

गर्म प्रान्तों में चक्रवातों का एक नियम है । गर्मी के कारण वायुमंडल में तीव्र हलचल होती है और भारी भारहीनता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है । उस समय उस कमी को पूरी करने के लिए आस-पास की हवायें खिंचती हैं । यह गति इतनी तीव्र होती है कि हवा के खिंचाव में ही हजारों टन बादल और समुद्र का जल भी खिंचा चला आता है जिससे आँधियों के साथ तीव्र वर्षा भी होती है । अत्यधिक गर्म अफ्रीकी देशों में अत्यधिक वर्षा का कारण भी यही है । पृथ्वी के किसी भी क्षेत्र में हुई आग्नेय हलचल का समुद्री वातावरण में तुरन्त प्रभाव पड़ता है क्योंकि वहाँ के ऊपरी मौसम में नमी रहती है गर्मी के कारण वायु शून्यता को पूरा करने के लिये यह हवायें दौड़ें तो स्वाभाविक ही है कि अपने साथ समुद्री वातावरण के प्रभाव को जल को भी लेती जायें ।

१९२४ में कुइन्स लैण्ड (आस्ट्रेलिया) के लाँगदीच में हुई वर्षा में मेंढ़कों, मछलियों यहाँ तक कि चूहों तक की वर्षा हुई । मछलियाँ बड़ी नहीं थीं, डेढ़ से तीन इंच लम्बी थीं तथापि उनका जीवित होना और हवा के द्वारा बादलों में खिंचे चले आना कम आश्चर्यजनक नहीं था । यह मछलियाँ कैसे आ गईं वैज्ञानिकों ने इस पर खोज की तो पता चला कि तेज आँधी तथा ''जल बज्रा'' में वह शक्ति होती है कि छिछले पानी की मछली तथा मेंढ़कों को भी लेकर आकाश में उड़ जाती है यही वर्षा के साथ गिर जाते हैं । कई स्थानों में लाल रंग की वर्षा होती है वह कोई आश्चर्य नहीं वरन् उष्ण कटिबन्धीय प्रान्तों के वातावरण में वायु चक्रवातों की तीव्रता का ही फल होती है । यह समुद्र की ओर से इतनी तेजी से हवा खींचते हैं कि समुद्री भाप के साथ समुद्र में पाये जाने वाले दूसरे हलके तत्वों को भी खींच ले जाते हैं । आप्यका और किरीट वर्ग के जन्तु अपने शरीर से लाल तत्व निकालते हैं जिससे पानी लाल हो जाता है यही लाल पानी लाल रंग की भाप बनकर उड़ता और लाल वर्षा करता है ।

समुद्र में विकर्षण शक्ति ही नहीं होती आकर्षण शक्ति भी होती है । यह आकर्षण शक्ति ज्वार-भाटा उत्पन्न करने वाले सूर्य और चन्द्रमा के आकर्षण से मुक्त होती है । सन् १९२८ की बात है एक जापानी जहाजी बेड़ा ''ओरियन्ट'' से ''टाकोमा'' जा रहा था । रास्ते में बेड़े के कप्तान नेमरू ने समुद्र के ऊपर धूल भरी आँधी देखी तो आश्चर्यचकित रह गये समुद्र में धूल कहाँ ? धूल इतनी अधिक थी कि डेक पर गिरी धूल ही साफ की गई तो वह २ बाल्टी से भी अधिक निकली उसे परीक्षण और प्रमाण के लिए नाविक अपने साथ लेते आये । उत्तरी अटलांटिक में जस्टिन के कप्तान को भी ऐसी आँधी का सामना करना पड़ा । रूजवेल्ट लाइन स्टीमर का जैडेन जहाज जब कलकत्ता आया तो वह कोहरे की तरह लाल धूल और बालू से ढका हुआ था जो लाल समुद्र में आई आँधी से ऐसा हो गया था । नाविक बीगल्स ने ब्राजील के पोर्टोप्राया से कई पैकेट धूल इकट्ठी की थी । इस धूल का परीक्षण डा० स्टेनबर्ग ने किया तो पाया कि उस धूल में ६७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जैव पदार्थ थे जो अफ्रीका में पाये जाते थे । अफ्रीका की मिट्टी और इस मिट्टी में समानता थी और इसे बात का प्रमाण भी कि यह मिट्टी समुद्र की अपनी आकर्षण क्रिया द्वारा हवा के साथ अफ्रीका से उड़कर वहाँ पहुँच गयी ।

यह प्रमाण इसलिये प्रस्तुत किये जा रहे हैं ताकि यह ठीक तरह समझा जा सके कि वायुमंडल के हर परिवर्तन का प्रभाव समुद्र में पड़े बिना नहीं रहता । यज्ञों द्वारा वृष्टि इसी विज्ञान पर आधारित एक महत्वपूर्ण विज्ञान है जिसकी खोज आदिकाल में ऋषि ही कर सके थे । महर्षि अंगिरा का कथन है-**"यज्ञ महायज्ञौ व्यष्टि समष्टिबन्धात्"** अर्थात यज्ञ व्यष्टि (एक व्यक्ति) को समष्टि (सारे विश्व ब्रह्माण्ड) से जोड़ता है । कल्कि पुराण में लिखा है-

अन्नेन भूता जीवन्ति यज्ञे सर्व प्रतिष्ठितम् ।
पर्जन्यो जायते यज्ञात्सर्व यज्ञामयं ततः ।।
-३२।८

अर्थात्-जिस अन्न से समस्त प्राणी जीवित रहते हैं वह बादलों द्वारा उत्पन्न होता है और बादलों की उत्पत्ति यज्ञ से होती है यह सम्पूर्ण जगत यज्ञमय है ।

अग्नि में कुछ वस्तुएँ मन्त्रोच्चारण के साथ आहुति करने की क्रिया को लोग साधारण कह सकते हैं किन्तु उस सिद्धान्त को उपरोक्त वायुमण्डल में परिवर्तन, समुद्र की आकर्षण विकर्षण क्रिया के संदर्भ में विश्लेषण करें तो वह क्रिया साधारण से असाधारण प्रतीत होगी । आस्ट्रेलिया और अमेरिका में कृत्रिम वर्षा के प्रयोग हुए हैं हवाई जहाज से बादलों में खुश्क बर्फ छिड़की गई उससे बादलों का तापांश कम हुआ और क्षणिक वर्षा हुई । ऐसे प्रयोग भारतवर्ष में भी हुये । इस संदर्भ में वैज्ञानिकों का दावा है कि बादलों में रहने वाले छितराव को यदि घनीभूत कर दिया जाय तो वे भारी भी हो जाते हैं । नीचे भी उतरते हैं और पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उन्हें नीचे घसीट लेती है । फलतः वर्षा होने लगती है । यह दबाव जितना अधिक होता है, उतने ही घेरे में उतना ही अधिक जल बरसता है ।

उक्त प्रयोगों में सूखी कार्बन डाइऑक्साइड का प्रयोग किया गया था । वायुयानों में बर्फ के चूरे के पिंजड़े लटका कर बादलों के बीच उड़ाये गये थे । इस ठण्डक वितरण का अच्छा प्रभाव देखा गया और पाया गया कि इसी रीति से भी वर्षा कराई जा सकती है । फिर भी यह अनिश्चित ही रहा कि कितने बादलों को किस हद तक ठण्डा किया जा सकता है और उसके कितनी देर परिमाण में वर्षा हो सकती है । वे प्रयोग अभी भी बन्द नहीं हुए हैं, पर यह नहीं निश्चय हुआ कि छुट-पुट कौतुहल देखने के अतिरिक्त और कोई व्यापक या बड़ा प्रयोजन भारी मात्रा में भी हो सकता है या नहीं ?

इसके उपरान्त डा० लेंगमूर ने एक नया प्रयोग प्रस्तुत किया नमक का । उनने अपने प्रयोगों में यह कर दिखाया कि नमक का छिड़काव भी छितराये जल कणों को सघन बना सकता है । भाप बूँदों के रूप में घनीभूत होकर नीचे की ओर उतरने के लिए बाधित हो सकती है ।

एक तीसरा प्रयोग और प्रस्तुत किया गया । वह था सिल्वर आयोडाइड का । इसे धरती से ऊपर उड़ाया जा सकता है और बादलों तक पहुँचाया जा सकता है । इसे जलाया कैसे जाय ? आग से उसके कण हवा में बिखर जाते हैं । इसलिए एस्ट्रा फ्यूल नाम ज्वलनशील के द्वारा सिल्वर आयोडिन को जलने और उसे निश्चित दिशा में फेंकने वाले पम्प के सहारे बादलों तक पहुँचाने का प्रयोग अधिक सफल पाया गया उसमें वायुयान उड़ाने का खर्च और जोखिम दोनों ही बनते थे ।

भारत की वैज्ञानिक और औद्योगिक परिषद ने देश के विभिन्न भागों में इस प्रकार के प्रयोग, परीक्षण किये कि बादलों की उपस्थिति वर्षा के काम आये और वह बे सिलसिले की उड़ानें न भरते फिरें । कृत्रिम वर्षा के प्रयोगों में रासायनिक उपयोग का प्रतिफल सीमित रहा । उससे सिद्धान्त की पुष्टि भर हुई । पर वह उपाय न निकला जिससे अभीष्ट आवश्यकता की पूर्ति हो सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ का योगदान इस विषय में शास्त्र सम्मत है । इस सिद्धान्त को ऋग्वेद के दृष्टा कहीं ज्यादा अच्छा जानते थे-

अध्न् वृत्रमृचीषम और्णवाभ महिशुवम् ।
हर्मना विध्यद बुर्दम् ।।

-ऋग्वेद ८।३२।२

अर्थात्- चमक दमक के साथ सर्प की भाँति रेंगते छाये इन बादलों को विद्युत (इन्द्र) फाड़ता है और उन्हें बर्फ (ठण्डक) के द्वारा बीधता है जिससे वे वृष्टि करते हैं । अनावृष्टि रोकने का आज तक कोई भी वैज्ञानिक उपाय सफल नहीं हुआ । मौसम पर नियन्त्रण के अनुसंधान चल रहे हैं पर ऋषियों ने यज्ञ के द्वारा अनावृष्टि को भी मार भगाया था-

''विष्टम्भेन वृष्टया वृष्टिं जिन्व'' *-यजुर्वेद १५।६*

अर्थात् अनावृष्टि को जीतो और सुवृष्टि को यज्ञ द्वारा पृथ्वी पर उतारो'' ''हारमोनिकल मैन'' के लेखक प्रसिद्ध अमरीकी वैज्ञानिक डा० एण्डरो जैक्सन डेविस ने पृष्ठ ३१ से १३१ तक मेंह वृष्टि विज्ञान दिया है उसके सिद्धान्त लगभग यज्ञ सिद्धान्तों जैसे ही हैं ।

वातावरण के ताप का ही मौसम और वृष्टि पर असर नहीं होता पृथ्वी में ऋतु परिवर्तन के लिये उत्तरदायी अयन मण्डल को सूर्य संचालित करता है । यज्ञ का सीधा प्रभाव सूर्य पर पड़ता है । विज्ञान का विद्यार्थी जानता है कि गुरुत्वाकर्षण केवल भार वाली पार्थिक वस्तुओं पर प्रभाव डालता है प्रकाश के अणु (फोटोन्स) और अग्नि स्फुल्लिग उससे मुक्त होते हैं । सादृश्य और आन्तर्य का सिद्धान्त अखण्ड-ज्योति में वर्णन किया जा चुका है । उसी के अनुसार यज्ञ द्वारा उठी हुई लौ अपने साथ पदार्थों का सूक्ष्म अंश लेकर आकाश में उड़ जाता है और लाखों मील की दूरी पार करके सूर्य तक जा पहुँचता है । **''यज्ञेनाप्यायिता देवा''** (पद्म पुराण सृष्टि खण्ड ३।१२४) यज्ञों से देवता सन्तुष्ट होते हैं-

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्य मुप तिष्ठते ।
आदित्याज्जायते वृष्टि वृष्टेरन्न ततः प्रजा ।।

-मनुस्मृति ३।७६

अर्थात-अग्नि में विधि-विधान के साथ दी गई आहुतियाँ सूर्य देव को प्राप्त होती हैं उससे वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न होता है और उससे प्रजा की उत्पत्ति होती है ।

सूर्य वायुमण्डल को प्रभावित करता है, सूर्य समुद्र को भी प्रभावित करता है (ज्वार-भाटा सूर्य और चन्द्रमा की ही आकर्षण शक्ति के कारण आते हैं) सूर्य को यज्ञ प्रभावित करता है यह बात साफ हो गई है कि सूर्य में उठने वाली चौंध पृथ्वी पर व्यापक प्रभाव डालती है । यज्ञ की लपटें सूर्य में उसी प्रकार चौंध कर हलचल उत्पन्न करती हैं जैसे कोई आग को लकड़ी से हिलाये डुलाये तो उसकी गर्मी और ज्वलनशीलता तीव्र हो उठती है कि सूर्य की हलचल पृथ्वी के वातावरण और समुद्र को प्रभावित करती है । ताप और समुद्र के आकर्षण-विकर्षण सूर्य द्वारा वायुमण्डल में हस्तक्षेप-यह दोनों ही बातें यज्ञ से सम्बन्धित हैं अतएव यज्ञ को न केवल वृष्टि वरन् ऋतु में हस्तक्षेप का एक जबरदस्त वैज्ञानिक आधार माना जाना चाहिए ।

वैज्ञानिक ग्रैहम ने अपने नाम से गैसीय व्यापनशीलता (ग्रैहम्स लॉ आफ डिफ्यूजन ऑफ गैसेज) का सिद्धान्त दिया है-निश्चित ताप और दाब पर गैसों की व्यापन गति उस गैस के घनत्व के वर्गमूल के विपरीत अनुपाती होती है (ऐट सरटेन टेम्परेचर एण्ड प्रेसर दि रेट्स आफ डिफ्यूजन आफ गैसेज आर इनवर्सली प्रप्रोर्शनल टु दि स्कवैयर रूटस आफ देयर डेन्सिटीज) अर्थात् गैस जितनी हल्की होगी उतनी ही शीघ्र वायु में मिलकर प्रतिक्रिया उत्पन्न करेगी । विभिन्न काम्य प्रयोजनों के लिए चुनी गई ओषधियाँ इसी सिद्धान्त पर काम करती हैं । वृष्टि के लिए प्रयुक्त की जाने वाली ओषधियाँ, समिधायें हल्के परमाणुओं वाली होने से वे वातावरण में शीघ्र प्रभाव डालती हैं ।

यज्ञाग्नि में तो शाकल्य यजन किये जाते हैं उनमें कुछ भस्म में रह जाते हैं । जो भारी होते हैं वे उड़ नहीं पाते । किन्तु जो विटामिन स्तर के हल्के क्षार होते हैं वे तैलीय, जलीय भागों के साथ मिलकर ऊपर अन्तरिक्ष में उड़ जाते हैं । उनका जब बादल वाष्प से संयोग होता है तो दूसरे ढंग से वही प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है जो शुष्क बर्फ या सिल्वर ऑक्साइड के द्वारा होती है । अन्ततः विरल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वाष्प बूँदों के रूप में तभी परिणत होती है जब किसी ओर से दबाव या खिंचाव पड़ता है । यह वायु दबाव से मानसूनों की हलचलों से प्रकृतितः भी होती है और स्वाभाविक वर्षा का क्रम चलता है । किन्तु इसमें मानवी बुद्धि सर्वथा असहाय हो ऐसी बात भी नहीं है । वह कृत्रिम प्रयत्नों से भी प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल सकती है । बादलों की बरसने वाली परिस्थितियाँ पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति वायु का दबाव अन्तरिक्ष का तापमान उत्पन्न करता है । हम भी उन्हें बरसने के लिए आमंत्रित करते हैं । यज्ञ यदि विधिवत किया जाय तो उसका परिणाम भी वैसा ही होता है ।

पिछले दिनों वृष्टि के लिए किये गये इस तरह के यज्ञ परीक्षण अधिकांश सफल हुए हैं वह भी इस तरह की खोजों के लिये प्रेरणा देते हैं । १९६१ में ४ से १५ जून तक नाँगलोई (दिल्ली) में वृष्टि के लिए यज्ञ कराया गया उसका खर्च श्री मुल्कराज जी भल्ला, मैनेजिंग डाइरेक्टर हिन्दुस्तान जनरल इन्डस्ट्रीज दिल्ली ने दिया था इस परीक्षण के दौरान ८ जून को वहाँ दूर-दूर तक वर्षा हुई ।

वर्षा ऋतु न होने पर भी २६ जून से २१ जुलाई तक प्रसिद्ध हकीम वीरूमल आर्यप्रेमी ने १९६५ में अजमेर में यज्ञ कराया । यज्ञ के दिनों में ही ४.५ इंच वर्षा हुई । १९६६ में कांग्रेस अधिवेशन जयपुर के लिए ८ से १२ फरवरी तक वृष्टि यज्ञ हुआ । १० फरवरी से ऐसी तीव्र वर्षा हुई कि कांग्रेस अधिवेशन ही स्थगित करना पड़ा था । १९६६ में सारे देश को सूखे का सामना करना पड़ा । खंडवा में एक बूँद पानी नहीं गिरा तब वहाँ यज्ञ कराया गया । ११ को यज्ञ समाप्त होते ही वर्षा प्रारम्भ हुई और ४ इंच से भी अधिक वर्षा हुई । ऐसे सैकड़ों प्रयोग हुए हैं जिनसे इच्छा वृष्टि हुई है यह देखकर ऋषियों का दिया सूक्त याद आता है-"निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु" जब हम कामना करें तभी वर्षा हो । यज्ञ मानव जीवन की सुख-शान्ति समृद्धि का आधार है उसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये । मानव जाति की सुख-शान्ति यज्ञों पर आधारित है, इसलिये यज्ञ को अनिवार्य आवश्यकता मानकर उसका प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए ।

यज्ञ द्वारा प्राण पर्जन्य की वर्षा

गीता में यज्ञ से पर्जन्य बरसने, पर्जन्य से अन्न उत्पन्न होने और अन्न के बाहुल्य से सुख सम्पदा उपलब्ध होने का तथ्य प्रकाश में लाया गया है ।

यहाँ पर्जन्य का अर्थ आमतौर से बादल किया जाता है और यज्ञ का माहात्म्य वर्षा होना बताया जाता है । यह तात्पर्य सही नहीं है । यदि यज्ञ करने से वर्षा हो जाया करती तो कहीं कभी सूखा के कारण दुर्भिक्ष न पड़ता और जिन देशों में हवन का प्रचलन है वहाँ वर्षा की कमी न रहती । अन्य देशों की बात जाने दें अकेले भारत को ही लें । देश के किसी न किसी भाग में वर्षा कम पड़ जाती है और उस दुर्भिक्ष में मनुष्यों तथा पशुओं को भारी कष्ट सहना पड़ता है । यदि उस आपत्ति का निवारण इतना सस्ता होता कि हवन करते ही पानी बरसने लगे तो इससे अधिक प्रसन्नता की बात क्या हो सकती है ? जो लोग ऐसा अर्थ या दावा करते हैं वे सिद्ध चमत्कारी समझे जाते हैं । उन पर यश की वर्षा होती है और जितना व्यय उस यज्ञ पर आता उसे जनता प्रसन्नतापूर्वक वहन कर लेती । रेगिस्तान हरे-भरे हो जाते और संसार भर में सुख-सुविधाओं का अन्त न रहता । पर ऐसा होता कहाँ है ? अर्थ या दावा करने वाले भी इस चुनौती को स्वीकार करने में समर्थ नहीं हो पाते । कर लेते तो तेल वाले देशों में जहाँ मीठे पानी के लिए लोग तरसते हैं, यज्ञ का बोलबाला होता और उस विज्ञान को सबसे ऊँचा विज्ञान माना जाता । ऐसे वैज्ञानिकों के प्रति सारी दुनिया कृतज्ञ बनकर रहती । बात सही सिद्ध न होने पर उपहास भी कम न होता और झूठे कथन के लिए लाँछन कम नहीं लगता ।

वस्तुतः पर्जन्य का तात्पर्य अन्तरिक्ष से प्राण वर्षा होने का है । जिस प्रकार भूमि में रासायनिक खाद लगा देने से उत्पादन कहीं अधिक बढ़ जाता है, उसी प्रकार यह प्राण शक्ति बादलों के साथ या बिना बादलों के भी धरती पर बरसती है तो उसका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लाभ वनस्पतियों, जीवधारियों, विशेषकर मनुष्य को मिलता है ।

प्राण, वायु के साथ मिला होता है । गहरी साँस खींचकर संकल्प शक्ति के चुम्बकत्व द्वारा इसी को प्राणायाम द्वारा खींचा और धारण किया जाता है । प्राणशक्ति का मनुष्य के लिए कितना महत्व है, इसका वर्णन शास्त्रों में भरा पड़ा है । प्रश्नोपनिषद में तो इस विद्या पर अत्यधिक गम्भीर प्रकाश डाला और महत्व बताया गया है ।

पाश्चात्य शरीर शास्त्री गहरी साँस का महत्व मानते हैं और प्राणायाम की विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा रोग निवारण का दावा करते हैं । इतना ही नहीं इसे मानसिक विकास और साहस सम्वर्धन की दृष्टि से भी उपयोगी मानते हैं । भारत में कभी इस विद्या का इतना विकास हुआ था कि प्राणों को ब्रह्मरन्ध्र में रोक कर मृत्यु को जीवन और परकाया प्रवेश जैसे असम्भव समझे जाने वाले कार्यों को सम्भव कर दिखाया जाता था । आद्य शंकराचार्य द्वारा भारती देवी के साथ शास्त्रार्थ करने के प्रसंग में इस विद्या का उपयोग किया गया था ।

मैस्मरेजम के उपचारों में एक व्यक्ति दूसरे के शरीर में अपनी प्राण शक्ति का प्रवेश करके रोगी को कष्टमुक्त करता है । भारत में सम्पर्क सान्निध्य की घनिष्ठता स्थापित करने के सम्बन्ध में कितने ही अनुबन्ध-प्रतिबन्ध लगाये गये हैं । क्योंकि इसमें एक व्यक्ति का प्राण दूसरे की चेतना में हस्तान्तरित होता है । मानवी शरीर की विद्युत के सम्बन्ध में अब किसी को शंका नहीं रही है । साथ ही यह भी एक प्रामाणिक मान्यता है कि अनन्त अन्तरिक्ष से प्राणशक्ति जीवनी विद्युत के रूप में प्रचुर परिमाण में भरी पड़ी है । उसे यदि धरातल पर अवतीर्ण किया जा सके तो वे क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक सुविकसित और सुसम्पन्न हो सकते हैं । मनुष्यों के शरीरों के सम्बन्ध में भी यही बात है । वंशानुगत विशेषताओं के कारण, प्रकृति के विशेष प्रवाह के कारण या मानवी प्रयत्नों द्वारा इस शक्ति का जिन शरीरों में अधिक अवतरण होता है, उनका शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक साहस अपेक्षाकृत अधिक बढ़ा-चढ़ा पाया जाता है ।

यह प्राणशक्ति किसी क्षेत्र में प्रयत्नपूर्वक अधिक मात्रा में बरसाई जा सकती है और उसमें से जो जितना अवधारण कर पाते हैं वे उतने ही अधिक लाभान्वित होते हैं ।

एक किलो दूध पीने का शरीर पर उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना कि ५ सी० सी० लैक्टोस का इन्जेक्शन लगा देने पर उसकी उपयोगी प्रतिक्रिया तत्काल दृष्टिगोचर होती है । यही बात अनन्त अन्तरिक्ष में से किसी स्थान, क्षेत्र, समूह या व्यक्ति पर बरसाने के रूप में अग्निहोत्र के माध्यम से ऐसा प्रयोग सम्भव हो सकता है, जिससे उस क्षेत्र में छायी हुई उदासी या रुग्णता, अशक्तता का निवारण हो सके ।

यह पर्जन्य है । इसी को प्राण वर्षा कहते हैं । प्राण सचेतन और विश्वव्यापी है इसलिए उसका अस्तित्व प्रत्यक्ष तो नहीं देखा जा सकता पर उसके कारण उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रिया का सहज अनुमान लगाया जा सकता है ।

अन्तरिक्षीय प्राण की वर्षा बादलों के पानी के साथ आसानी से होती रह सकती है और उसका प्रभाव प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । उस जल को पीने वाले अधिक परिपुष्ट होते हैं । जिस घास में प्राण तत्व अधिक घुला होता है, उसे खाकर खाने वालों की पौष्टिकता कई गुना बढ़ जाती है । अन्न में उसकी मात्रा बढ़ी-चढ़ी होने से खाने वाले मनुष्य सुदृढ़, निरोग एवं दीर्घजीवी होते हैं । यहाँ तक कि बुद्धिमत्ता और साहसिकता की अभिवृद्धि भी होती देखी गई है । यह अन्तर यज्ञ सम्पन्न होने वाले क्षेत्रों में-और न होने वाले क्षेत्रों का अन्तर देखते हुए सहज ही जाना जा सकता है ।

इस प्रकार के प्रयोग शान्ति-कुन्ज के ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान में बहुत दिनों से चल रहे हैं । काम करने वाले वैज्ञानिक प्रयोगशाला के बहुमूल्य उपकरणों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं कि यज्ञ प्रक्रिया द्वारा सामान्य वायु और यज्ञ ऊर्जा सम्मिलित साँस में क्या अन्तर पड़ता है, तथा यह भी देखा जाता है कि उस क्षेत्र में पेड़-पौधों की उत्पत्ति पर क्या असर पड़ता है । जल जीवों पर भी यह प्रयोग सफल रहा है । रोगियों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रोग निवारण और अस्वस्थ व्यक्तियों के शारीरिक एवं मानसिक रोगों के निवारण में कितना चमत्कारी लाभ होता है ?

मानसिक विकृतियों और सनकों के निवारण के लिए अभी तक कोई कारगर उपचार चिकित्सकों को हस्तगत नहीं हुआ था । मात्र पागलों के लिए बिजली के झटके दिमाग में लगाने जैसे प्रयोग चलते थे और उनका ही आधा अधूरा लाभ उठाने की स्थिति थी । किन्तु अर्ध विक्षिप्तों, सनकियों, एवं आवेशग्रस्तों, तनाव पीड़ितों के लिए कोई ओषधि या ''थैरेपी'' हस्तगत नहीं हुई थी । यज्ञ चिकित्सा का ऐसे लोगों पर भी आश्चर्यजनक प्रभाव देखा गया है । इन लाभों के मूल में प्राण पर्जन्य को अन्तरिक्ष से आकर्षित करना और विविध प्रयोजनों के लिए सफल प्रयोग की सम्भावना इसी कारण बनी है । इस प्राण पर्जन्य को स्तर एवं मात्रा के अनुरूप बरसाना, आकाश से जमीन पर खींच लाना ही यज्ञोपचार का स्थूल लाभ है । ।

वस्तुतः जहाँ पर्जन्य शब्द आता है वहाँ उसे प्राण वर्षा, इकॉलाजिकल बेलेन्स समझना चाहिए । यह प्राण शक्ति बादलों के साथ या बादलों के बिना भी धरती पर बरस सकती है । यह न केवल संव्याप्त प्रदूषण को मिटा सकती है, वरन् धरती की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ा सकती है । आर्ष वैज्ञानिकों के अनुसार अनन्त अन्तरिक्ष में प्राण शक्ति-जीवन विद्युत के रूप में प्रचुर परिमाण में भरी पड़ी है । इसे यदि धरातल पर अवतीर्ण-आकर्षित किया जा सके तो खाद्यान्न, वनस्पति एवं जीवधारी अपेक्षाकृत अधिक सुविकसित और सुसम्पन्न हो सकते हैं । यह प्राणशक्ति अग्निहोत्र उपचार द्वारा किसी भी क्षेत्र में प्रयत्नपूर्वक अधिक मात्रा में बरसाई जा सकती है । जो जड़ व चेतन घटक उसका जितना अवधारण कर पाते हैं, वे उतना ही लाभ उठाते हैं । अन्तरिक्षीय प्राण पर्जन्य की वर्षा जब ऐसे बादलों के साथ बरसती है तो उसका प्रभाव प्रत्यक्ष देखा जा सकता है । उस जल को पीने वाले अधिक परिपुष्ट होते हैं । जिस घास में प्राण तत्व अधिक घुला है, उसे खाने वाले जीवधारियों की पौष्टिकता कई गुना बढ़ जाती है । ऐसे अन्न को खाने वाले मनुष्य सुदृढ़, निरोग, एवं दीर्घजीवी होते हैं । पौष्टिक प्राणवर्धक ओषधियाँ मानव एवं जीवधारियों को, पर्जन्य के रूप में किस तरह प्रभावित करती हैं, व कृषि चक्र को संतुलित करने किस विधि से पृथ्वी में पहुँचती हैं, इसके लिए आर्ष वाङ्मय में एक सूत्र आता है- ''**कृषि यज्ञेन कल्पन्ताम्**'' (अर्थात् कृषि यज्ञ से अनुप्राणित हो) । वस्तुतः यज्ञ से उद्भूत प्राण पर्जन्य (जो अंतरिक्ष में संव्याप्त हो जाता है) ही पृथ्वी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता, शक्ति सम्पन्न कृषि सम्पदा उपलब्ध कराता व अधिकाधिक मात्रा में प्राणवायु उपलब्ध कराके वायुमंडल का परिशोधन करता है । यही है यज्ञ से वायुमंडल संशोधन एवं पर्जन्य वर्षण का मूलभूत दर्शन, जिसे पूर्णतः विज्ञान सम्मत भाषा में ही समझा जाना चाहिए ।

यज्ञ का वायुशोधन मारक पक्ष है और उसका क्रिया पक्ष है-प्राण पर्जन्य की वर्षा । बादलों के साथ जो पानी बरसता है वह जमीन पर फैला हुआ जल ही भाप बनकर आसमान में उड़ता है और जहाँ उसे उपयुक्त-सा वातावरण मिल जाता है, वहीं बरस पड़ता है । वृक्षों की सघनता वर्षा को विशेष रूप से आमंत्रित करती है । इतना होते हुए भी यह बरसने वाला जल सामान्य ही होता है । उसे पीने, सिंचाई, धुलाई आदि के सामान्य कामों में ही लाया जा सकता है ।

जल को विशेष शक्तिशाली बनाने के लिए उसमें कुछ उच्चस्तरीय तत्व मिला देने की योजना भारतीय वैज्ञानिकों ने बनाई है । अग्निहोत्र की ऊर्जा जब आकाश में फैलती है, तो वह किसी एक क्षेत्र में नहीं रहती, वरन् व्यापक बन जाती है । थोड़ा सा तेल यदि पानी के बड़े पात्र में डाला जाय तो उसकी एक पतली परत समूचे जल पर छा जाती है । ठीक इसी प्रकार अंतरिक्ष में अग्निहोत्र की विशिष्टता एक आवरण बना लेती है । उस आवरण को एक विशेष प्रकार का प्राण माना गया है । उसे समेटते हुए जो वर्षा होती है उसमें प्राण पर्जन्य घुला होता है । इसे एक प्रकार से जीवनी शक्ति ही कहना चाहिए । उस पानी की सिंचाई से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो घास, वृक्ष या अन्न, शाक, फल आदि पैदा होते हैं, उन सभी में अपेक्षाकृत अधिक जीवनी शक्ति होती है । उपभोक्ता पर वह तुरन्त अपना प्रभाव दिखाती है । उस विशिष्ट वर्षा से उत्पन्न घास को सेवन करके पशु अधिक बलिष्ठ होते हैं और उनमें से जो दुधारू हैं वे अधिक दूध देते हैं । दूध भी हलका नहीं होता, वरन् उस दूध, दही, घी में ऐसे रसायनों की अधिक मात्रा होती है, जो निरोग एवं बलिष्ठ बनाने में समर्थ हैं । इस विशिष्ट जल के आधार पर उत्पन्न हुए अन्न या शाक भी सामान्य के स्थान पर अधिक गुणकारी होते हैं और उपभोक्ताओं की जीवनी शक्ति बढ़ाते हैं । उस जल से उत्पन्न हुई ओषधियों में पोषक एवं निवारक गुण अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में होते हैं । दूध पीने से तो तनिक-सा ही गुण करता है, पर यदि मिल्क इंजेक्शन के रूप में थोड़ी मात्रा में भी दूध को रक्त में सम्मिश्रित कर दिया जाय, तो उसका परिणाम तत्काल आवेश उत्पन्न करने के रूप में होता है । भाप से बनाई शराब में अलकोहल होता है और उसके नशे में मनुष्य उत्तेजित हो उठता है । प्राण पर्जन्य में भी ऐसी ही विशेषताएँ भरी होती हैं । उसकी वर्षा का पानी पीने से तथा उसके माध्यम से उपजे पदार्थों में ऐसी विशेषताएँ होती हैं कि मात्रा में सीमित होते हुए भी गुणों की दृष्टि से असाधारण एवं असीम होती हैं ।

इस तरह यज्ञ से पर्जन्य का बरसना तो सही है, पर पानी बरसना नहीं है । तो क्या पानी के अतिरिक्त और कोई वस्तु भी बरसती है ? इसका उत्तर हाँ में दिया जा सकता है और उस बरसने वाली वस्तु को ही 'पर्जन्य' कहा जाता है । यह पानी से भिन्न है । यह 'प्राण' है । प्राण कहते हैं जीवनी शक्ति को । जीवनी शक्ति वह वस्तु है जो पुष्टिबल, समर्थता प्रदान करती है । जिनके शरीर में जीवनी शक्ति होती है, वह दुबले होते हुए भी बलिष्ठ होते हैं । गाँधी जी मरने के दिनों में प्राय: ८० वर्ष के थे । वे कहा करते थे कि मैं १२० वर्ष जीना चाहता हूँ । यदि दुर्घटना न हुई होती तो संभव है उन्हें इच्छा मृत्यु मिलती । जीवनी शक्ति न केवल शरीर को बलिष्ठ, निरोग एवं दीर्घजीवी बनाती है, वरन् मनोबल की भी अधिष्ठात्री है । उससे ओजस्, तेजस् और वर्चस् की विभूतियाँ हस्तगत होती हैं, इसे प्रतिभा भी कह सकते हैं ।

प्रतिभा का स्रोत अन्तरिक्ष है । अन्तरिक्ष से जीवन भी बरसता है । सूर्य किरणों को जीवनदात्री कहा गया है । उससे वर्षा भी होती है । वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि उससे वर्षा के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ बरसता है । वर्षा के पानी में उत्पादक शक्ति होती है । कभी-कभी उसकी न्यूनता भी रहती है । इन परिस्थितियों में वनस्पतियाँ उत्पन्न तो होती हैं, पर वे निर्जीव रहती हैं । विश्लेषणकर्त्ताओं के अनुसार उनमें रासायनिक पदार्थ स्वल्प मात्रा में पाये जाते हैं । फलत: उनके पल्लव, फूल, फल स्वल्प मात्रा में होते हैं । उन्हें खाने वाले पशु-पक्षी भी दुर्बल ही रहते हैं । दूध कम देते हैं । बच्चे कमजोर रहते हैं ।

पर्जन्य का अर्थ प्रकारान्तर से जीवनीशक्ति है जो वर्षा के साथ बरस सकती है और प्राणवायु में भी घुली हो सकती है । हवा में प्राणवायु कम हो तो उसमें साँस तो ली जा सकती है, पर वह विशेषता नहीं होती जिसके लिए जलवायु बदलने और स्वास्थ्य संवर्धन करने के लिए जाते हैं । वनस्पति की प्रखरता प्राणवान जल के ऊपर निर्भर रहती है । प्राणियों का जीवन प्राण पर निर्भर है । प्राण के ऊपर ही आयुष्य अवलम्बित है ।

इस सम्बन्ध में अनुसंधान कर रहे मूर्धन्य वैज्ञानिकों का कहना है कि आमतौर से लोग आहार-विहार को ही दीर्घ जीवन का कारण मानते हैं, पर उन लोगों में ऐसी कोई विशिष्टता नहीं पाई जाती । तलाश करने पर विदित हुआ कि उनमें प्राणशक्ति का बाहुल्य होता है । यह प्राण वहाँ की प्राणवायु की अधिकता से होता है । खाद्य पदार्थ देखने में अन्यत्र जैसे होते हुए भी उनमें पुष्टाई की मात्रा अधिक रहती है और यह शक्ति जल के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ आकाश से ही बरसती है । जहाँ का अन्नजल प्राणवायु की दृष्टि से कमजोर होता है, वहाँ के निवासी अनायास ही दुर्बल होते हैं । अनेकों नमी वाले क्षेत्रों के लोग जवानी आते-आते वृद्ध हो जाते हैं । मलेरिया, फाइलेरिया आदि से घिरे रहते हैं और अल्पायु में ही काल के गाल में चले जाते हैं । वस्तुतः प्राण के रूप में जीवनीशक्ति ही उस क्षेत्र में कम बरसती है । उस अभाव की पूर्ति यज्ञ के अतिरिक्त और किसी प्रकार संभव नहीं ।

यज्ञ एक प्रकार से अन्तरिक्ष की उर्वरता बढ़ाने का एक साधन है । जमीन में खाद पड़ने से फसल की पैदावार अधिक होती है । यज्ञ की यह विशेषता है कि उसकी ऊर्जा अन्तरिक्ष में ऐसे तत्व भर देती है जो प्राणियों, मनुष्यों, वनस्पतियों सभी को पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में प्रदान करती है । यह पोषण ही पर्जन्य है । गीता में यज्ञ से पर्जन्य वर्षा का जो उल्लेख है, उसका तात्पर्य यही है कि अग्निहोत्र से अन्तरिक्ष में ऐसी विशेष हलचलें उत्पन्न होती हैं जो समस्त जीवधारियों का पोषण करती हैं ।

इस तरह यज्ञ प्रक्रिया का समष्टिगत व्यापक प्रभाव पर्जन्य वर्षा के रूप में होता है जिसका मोटा अर्थ होता है-बादल । सूक्ष्म अर्थ होता है-प्राण वर्षण । प्राचीन काल के यज्ञ युग में सर्वत्र विपुल वर्षायें होती थीं । इससे यज्ञ कर्म और मेघ वर्षा की परस्पर संगति बैठती है । जब जब दुर्भिक्ष निवारण के लिए मेघ वर्षा के निमित्त विशिष्ट अग्निहोत्रों के प्रयोग हुए हैं और बहुत बार सफल भी रहे हैं । पर वस्तुतः पर्जन्य, इससे आगे का वह प्राण तत्व है जो यज्ञ के माध्यम से आकाश में उत्पन्न होता है और पवन तथा बादलों के माध्यम से धरती पर बरसता है । इस पर्जन्य प्राण वर्षा से सृष्टि के समस्त जड़ चेतनों को नव जीवन एवं समर्थ उल्लास प्राप्त होता है । घास-पात ओषधियाँ-जल, अन्न, वायु, दूध आदि के पर्जन्य से विशिष्ट परिपोषण मिलता है । उनका सामर्थ्य स्तर कहीं अधिक बढ़ जाता है । फलतः उन्हें जो भी पशु या मनुष्य प्रयोग करते हैं उनकी प्रखरता कहीं अधिक बढ़ जाती है । यह उपलब्धि सर्वतोमुखी प्रगति में हर दृष्टि से सहायक सिद्ध होती है ।

अयन-संवर्धन से जुड़ी विज्ञान सम्मत यज्ञ प्रक्रिया

शहरी इलाकों में व्यक्ति सम्पूर्ण सुविधा, समुचित साधन और उपयुक्त उपचार के बावजूद देरी से स्वस्थ होते देखे जाते हैं, जबकि सैनिटोरियमों में आवश्यक वस्तुओं के अभाव में भी स्वास्थ्य लाभ तीव्रता से होता है । ग्रामीण वातावरण में आरोग्यता शीघ्रता से प्राप्त होती है, जबकि औद्योगिक क्षेत्रों में इसमें विलम्ब होता दृष्टिगोचर होता है इसका कारण क्या है ?

विशेषज्ञों का इस सम्बन्ध में सुनिश्चित मत है कि यह वातावरण ही है, जो व्यक्ति को सबल-स्वस्थ अथवा निर्बल-निरीह बनाकर बीमार कर देता है । यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि आखिर वातावरण में ऐसी क्या विशेषता है कि कहीं वह स्वास्थ्य के लिए अनुकूल और आरोग्यवर्धक साबित होता है तो कहीं प्रतिकूल ? विज्ञानवेत्ता इसके लिए "आयन" को जिम्मेदार बताते हैं । उल्लेखनीय है कि हम हवा के विशाल समुद्र में रहते हैं । सर्वसाधारण जिसे हवा के नाम से पुकारता है, वह वस्तुतः कई गैसों का सम्मिश्रण है । इन गैसों का जब कभी अत्यधिक ऊर्जा से आमना-सामना होता है, तो उनके अणु-परमाणु आयनीकृत हो जाते हैं और ऋण एवं धन प्रकृति के कणों को जन्म देते हैं । यही कण अपनी संख्या एवं स्वभाव के आधार पर भली-बुरी जलवायु का निर्माण करते हैं । वैज्ञानिकों का कहना है कि धनायन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं, जबकि ऋणायन लाभकारी । जहाँ धनायनों की संख्या किन्हीं कारणों से सामान्य से अधिक हो जाती है, उन-उन स्थानों में रहने वाले लोगों का स्वास्थ्य इनसे प्रभावित होता और लड़खड़ाने लगता है, अथवा दूसरे शब्दों में कहें, तो वहाँ की आबोहवा स्वस्थता की दृष्टि से प्रतिकूल बन जाती है । विश्व में ऐसी कितनी ही हवाएँ अनेक स्थानों पर बहती हुई पायी गई हैं, जो अपने दुष्प्रभाव के लिए कुख्यात हैं । इनमें दक्षिणी कैलिफोर्निया की ' 'सान्ता एना विंड्स" कनाडा की "चिनुक विंड्स"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फ्राँस की ''मिस्ट्रल विंड्स'' आर्जेण्टीना की "जोण्डा विंड्स'' इटली की ''सिरोक्को विंड्स'' एवं इजराइल और आस-पास के क्षेत्रों की ''शाराव अथवा चैमसिन विंड्स'' प्रमुख हैं । इन स्थानों में जब ये हवाएँ चलती हैं, तो वहाँ के निवासियों का शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य बुरी तरह बिगड़ने लगता है । उदाहरण के लिए इजराइल से होकर बहने वाली हवा ''चैमसिन विंड्स'' को लिया जा सकता है । इस हवा के चलने से ठीक दो दिन पूर्व उस क्षेत्र के लोगों का, मूत्र में, सेरोटोनिन स्राव अचानक बहुत बढ़ जाता है । स्राव का अकस्मात बढ़ जाना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि व्यक्ति मानसिक रूप से अत्यधिक तनाव से गुजर रहा है । इसके अतिरिक्त जो प्रकट लक्षण दिखाई पड़ते हैं, वे हैं-उन्माद, अनिद्रा, आधासीसी, मिचली, उलटी, दृष्टि क्षीणता, एवं सूजन । हवा बहने से पूर्व ही ऐसे प्रतिकूल शारीरिक, मानसिक लक्षण क्यों परिलक्षित होने लगते हैं ? जब इस संदर्भ में वैज्ञानिकों ने अध्ययन किया, तो पता चला कि उस दौरान किन्हीं अज्ञात कारणों से उक्त क्षेत्र में धनायनों की संख्या असाधारण रूप से बढ़ जाती है । इसी की परिणति शरीर-मन की असामान्यता के रूप में सामने आती है ।

परिणामों को और अधिक सुनिश्चित एवं परिपुष्ट करने के लिए मूर्धन्य विज्ञानी अल्बर्ट क्रुजर एवं सहयोगियों ने चूहों पर एक प्रयोग किया । उन्होंने जब उन्हें धनायनयुक्त वातावरण में रखा, तो रक्त सेरोटोनिन में स्पष्ट अभिवृद्धि देखी गई । इसके विपरीत ऋणायनों की अधिकता वाले परिवेश में सेरोटोनिन स्तर में गिरावट आती पायी गई । इतना ही नहीं, इसमें घाव एवं दूसरे प्रकार की शारीरिक व्यथाओं से जल्दी छुटकारा पाते देखा गया । इस प्रकार आयनों का शारीरिक मानसिक प्रभाव ज्ञात हो जाने के उपरान्त इस प्रश्न का भी संतोषजनक उत्तर ढूँढ लिया गया कि क्यों जल-प्रपातों, समुद्री किनारों एवं वन्य प्रान्तों का वातावरण स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभकारी होता है ? शोध-अनुसंधानों के दौरान इन स्थानों में ऋणायनों की संख्या सामान्य से काफी अधिक पायी गई । इस प्रकार स्वास्थ्य सम्बन्धी ऋणायनों के सत्परिणामों की सुनिश्चित पुष्टि हो जाने के पश्चात् वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशालाओं एवं घरों में ऐसे प्राकृतिक वातावरण विनिर्मित करने में सफल हो गये, जो उन्हें शरीर-मन से स्वस्थ और शान्त बनाये रख सकें । ऐसे वैज्ञानिकों में अग्रणी हैं, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कले के डा० अल्बर्ट क्रूजर । उन्होंने अपनी यूनिवर्सिटी की अनुसंधानशाला में ऐसे अनेक फिल्टर लगा रखे हैं, जो हवा को धूलकणों और प्रदूषण कारक तत्वों से मुक्त करते रहते हैं । इसके अतिरिक्त ऐसे जेनरेटर भी हैं, जो प्रयोगशाला के अंदर की हवा को आवश्यक परिमाण में ऋणायनों की आपूर्ति करते रहें । इन विशेषताओं के कारण उनकी शोधशाला के भीतर प्रवेश करते ही ऐसा महसूस होता है, जैसे व्यक्ति किसी वन्य प्रदेश के स्वच्छ, शांतिदायक वातावरण में पहुँच गया हो ।

साँस के लिए केवल ऑक्सीजन ही काफी नहीं-हवा में रहने वाले धूलिकणों का विद्युत आवेश ऋणात्मक होना भी आवश्यक है । सर्वविदित है कि वायु में छोटे-छोटे धूलिकण भरे रहते हैं । इन आवेश कणों को 'अयन' कहा जाता है । धनात्मक आवेश वाले स्वास्थ्य पर बुरा असर डालते हैं और ऋणात्मक कण श्रेयस्कर सिद्ध होते हैं । जिस प्रकार स्वास्थ्य वर्धक जलवायु प्राप्त करने की व्यवस्था स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक समझी जाती है, उसी प्रकार अब विशेषज्ञ लोग यह भी सुझाव देते हैं कि ऐसी जगह रहना चाहिए जहाँ वायु में रहने वाले धूलिकण ऋणात्मक विद्युत से आवेशित हों । प्रयास यह किया जा रहा है कि वायु में आवेश नियंत्रित करके बिगड़े स्वास्थ्य को सुधारने की, रोगों के निवारण की व्यवस्था की जाय । इस संदर्भ में काफी खोजें हुई हैं और अभीष्ट आवेश उत्पन्न करने की एक नई प्रक्रिया ''आयनिक थैरेपी'' और भी सम्मिलित कर ली गई है । फेंफड़ों से सम्बन्धित श्वांस रोगों पर तथा रक्त संचार प्रक्रिया में दोष होने के कारण उत्पन्न हुए रोगों के उपचार में इस पद्धति का आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिल रहा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह आधुनिक विज्ञान के अभिनव प्रयोग हैं । उपलब्धि की दृष्टि से इन्हें सराहनीय तो कहा जा सकता है, पर ऐसा नहीं जो बड़े प्रदेश को व्यापक स्तर पर प्रभावित-परिष्कृत कर सकें । वस्तुत: यह वैयक्तिक प्रयोग हैं । इनका असर घर-परिवार के छोटे क्षेत्र तक सीमित रहता है और अर्थ की दृष्टि से खर्चीला भी है । ऐसी स्थिति में आज के विश्व-व्यापी प्रदूषण को दूर करने के लिए इनकी उपयोगिता न सिर्फ समाप्त हो जाती है, वरन् विवेक की दृष्टि से असंगत भी साबित होती है । रोग जब हिमालय जितना विशाल व व्यापक हो और उपचार किसी एक अवयव का किया जा रहा हो, तो इसे बुद्धि का दिवालियापन ही कहना चाहिए । जहाँ लक्ष्य सम्पूर्ण भूमण्डल के पर्यावरण को परिशोधित करना हो , वहाँ उपाय भी उसी स्तर का विस्तृत, विराट और प्रभावकारी होना चाहिए, जिसे सस्ते में हर कोई सरलतापूर्वक संपन्न कर सके । ऐसे में ध्यान ऋषियों के, जिस सूक्ष्म वैज्ञानिक प्रयोग की ओर बरबस जाता है, वह है-अग्निहोत्र अथवा यज्ञ ।

यों पिछले दिनों तक यज्ञ को एक धार्मिक कर्मकाण्ड भर माना जाता रहा था, पर अब जैसे-जैसे विज्ञान का ध्यान इस ओर जा रहा है, इसकी वैज्ञानिकता उसे सुस्पष्ट नजर आने लगी है । वैज्ञानिक ज्यों-ज्यों इसकी गहराई में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे हैं, त्यों-त्यों नित नये तथ्यों का उद्घाटन होता जा रहा है । इन्हीं में से एक नवीन तथ्य है ऋणायनों का उत्पादन और संकेन्द्रण । ज्ञातव्य है कि जहाँ नियमित रूप से बराबर यज्ञ होता है वहाँ ऋणायनों की संख्या उसी सीमा में पायी गई, जो समुद्र तटीय अथवा वन प्रान्तरों में रहती है, अर्थात् २००-४०० आयन प्रति घन सें० मी० हवा में । उपरोक्त स्थलों में इसकी घनीभूत संख्या से सम्बन्धित प्रक्रिया के बारे में तो सही-सही कुछ भी नहीं जाना जा सका, पर यज्ञीय स्थलों में इनके निर्माण का समुचित कारण विद्यमान है ।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है आयनीकरण की क्रिया अत्यधिक ऊर्जा की उपस्थिति में संपन्न होती है । यह मुख्यत: दो प्रकार की है-रेडियोधर्मी पदार्थों से उत्सर्जित ऊर्जा और ब्रह्माण्डीय विकिरणों के रूप में होने वाली निरन्तर बौछार । प्राकृतिक आयनीकरण में इन्हीं दो शक्तियों का प्रमुख हाथ है, किन्तु इनके अतिरिक्त भी एक अन्य ऊर्जा है, जो आयन-निर्माण को सम्पन्न कर सकता है । यह है-तापीय-प्रभाव । यज्ञ के दौरान इसी प्रभाव से आयन-उत्पादन निष्पन्न होता है और आस-पास के इलाकों में घनीभूत होकर वहाँ के वातावरण को परिशोधित करता एवं स्वास्थ्यवर्धक बनाता है । इसके अतिरिक्त यज्ञ प्रक्रिया से ऐसे सूक्ष्म तत्वों का भी निर्माण सम्पादित होता रहता है, जो उक्त क्षेत्र में संव्याप्त विषैले कणों से प्रतिक्रिया कर उन्हें निरस्त करते हैं । इसकी पुष्टि इस बात से सुनिश्चित हो जाती है कि ऐसे आवेशित कणों की रचना नैसर्गिक रूप से सदा सर्वत्र होती तो रहती है, किन्तु अन्य स्थानों में वे स्थानीय विषैले तत्वों से प्रतिक्रिया कर निष्क्रिय बड़े आयनों में परिवर्तित हो जाते हैं और आरोग्यकारी लघु आयन अत्यल्प संख्या में ही रह जाते हैं ।

प्रख्यात मौसम विज्ञानी बी० मैक्जिन्सकी ने सन् १९७१ में (इण्टरनेशनल जरनल ऑफ बायोमिटियरो लॉजी खण्ड १५ पृ० ११) एक ऐसे ऑफिस का चौदह दिवसीय सर्वेक्षण किया, जिसमें मात्र चार कर्मचारी थे । जाँच से विदित हुआ कि दिन ढलने के साथ-साथ छोटे आयनों की सघनता घटती जाती है । चौदह दिनों में इनकी औसतम संख्या शाम के समय ३४ धनायन एवं २० ऋणायन प्रति घन सें० मी० पायी गई । जे० सी० बेकेट द्वारा सेन फ्रांसिसको के औद्योगिक क्षेत्र में अन्य पड़ताल के दौरान आवेशित लघु कणों की संख्या ८० आयन घन सें० मी० से भी कम देखी गई । इन दोनों ही अध्ययनों में निष्क्रिय एवं बड़े आयनों की तादाद असाधारण रूप से बढ़ी-चढ़ी प्राप्त हुई, जबकि यज्ञीय वातावरण में तथ्य सर्वथा विपरीत दृष्टिगोचर होता है । वहाँ छोटे सक्रिय ऋणायनों की सघनता ही सर्वाधिक थी । इससे उपरोक्त दोनों ही बातें प्रमाणित हो जाती हैं । प्रथम यह कि यज्ञ से आरोग्यवर्धक ऋणावेशित कणों का निश्चित निर्माण होता है, दूसरे इससे प्रदूषण का भी सतत् शमन होता रहता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतना जान लेने के उपरान्त यज्ञ की वैज्ञानिकता में संदेह करने का कोई कारण शेष रह नहीं जाता । संभव है अगले दिनों इससे सम्बन्धित और नवीन तथ्यों की जानकारी मिले । जड़ी-बूटियों का यजन अपने आप में महत्वपूर्ण है । इससे स्थानीय वातावरण औषधियुक्त बनता है और उसका अनायास लाभ वहाँ के निवासियों के सुगंधि, स्फूर्ति और शांति के रूप में मिलता रहता है । इतने पर भी जो इस सूक्ष्म विज्ञान के सम्बन्ध में यह आक्षेप लगाते हैं कि इससे प्रदूषण बढ़ता है, उनके लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इससे अदृश्य परिशोधन कई गुना बड़ा होता है । कारण कि अग्नि में जलाई गई वस्तुयें नष्ट नहीं होतीं वरन् व्यापक हो जाती हैं और समूचे वायुमण्डल में प्रभाव डालती हैं । यह प्रभाव ऋतु परिवर्तन तक ही सीमित नहीं रहता, हर व्यक्ति के मस्तिष्क में पोला स्थान (वेन्ट्रिकिल्स) होते हैं । इनमें वायु भरा रहता है हमारे आस-पास का गन्दा, दूषित, बुरे विचारों से जैसा भी कुछ वातावरण होगा वही हमारे मस्तिष्क में भी होगा । कैसी भी अच्छी परिस्थितियों में जन्मा बालक अपने जीवन का निर्धारण जितना पूर्व संस्कारों द्वारा नहीं करता उससे अधिक यह परिस्थितियाँ उसे प्रभावित करतीं और प्रेरणायें देती हैं । जब वायुमण्डल दूषित हो जाता है तो मानसिक दुष्प्रवृत्तियाँ भी बढ़ जाती हैं । यज्ञ द्वारा वायुमण्डल के शोधन एवं अयन संवर्धन का सबसे बड़ा लाभ लोगों की मानसिक सात्विकता, उर्वरता और प्रखरता को बनाये रखना है । आज की परिस्थितियों का यह सर्वोत्तम लाभ है किन्तु यदि कोई चाहे तो इसे काम्य प्रयोजनों के लिए विज्ञान की भाँति भी प्रयुक्त कर सकता है ।

प्राकृतिक प्रकोपों का कारण और निवारण

पिछले तीन दशक में संसार को प्राकृतिक प्रकोपों के बीच से अधिक गुजरना पड़ा है । सूखा, बाढ़, भूकम्प की घटनाओं में तीन-चार वर्षों से जितनी वृद्धि हुई है उतना पहले कभी नहीं देखा गया । मौसम में इतना अप्रत्याशित परिवर्तन शायद ही कभी हुआ हो । वातावरण इतना असन्तुलित हो गया है कि यह ठीक पता नहीं कि मौसम में कब क्या परिवर्तन हो जाय । कहीं ठण्ड बढ़ी है तो कहीं गर्मी, अभी हाल में प्रकाशित समाचार के अनुसार सहारा के रेगिस्तान में ओले पड़े तथा भयंकर बारिस हुई है । उस रेगिस्तानी इलाके में ओले पड़ना एक आश्चर्य जनक, अद्भुत एवं अप्रत्याशित घटना है । प्रकृति को इतना क्रुद्ध पहले कभी नहीं देखा गया है । मौसम की विचित्रता, प्राकृतिक असन्तुलन को देखने से लगता है कि कहीं हम प्रलय काल के निकट तो नहीं हैं जिसकी कल्पना प्रस्तुत करते हुए ऋषि कहता है-

यत्र तत्र भूस्खलनं च कदाचित् भूकम्पनम् ।
क्वचित् वृष्टिरनावृष्टिः जायते तस्मिन् क्षणे ।।

-मत्स्य पुराण

उस समय सर्वत्र भूस्खलन और भूकम्प आते हैं । कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि होती है ।

तथ्य चाहे जो भी हो प्रकृति के असन्तुलन की बात से इन्कार नहीं किया जा सकता । अप्रत्याशित प्रकृति प्रकोप यह सोचने को बाध्य करते हैं कि इस असन्तुलन का कारण क्या है ? दैवीय प्रकोप या मनुष्य की स्वयं विनिर्मित परिस्थितियाँ । अध्यात्म तत्व दर्शन के अनुसार इस प्रकार के प्रकृति प्रकोप को दैवी आक्रोश समझा जा सकता है और उसका कारण मनुष्य की उस संकीर्ण स्वार्थपरता को माना जा सकता है जिसके कारण देवता रुष्ट होते हैं । ऐसे प्रसङ्ग न आने पायें उसके लिए मनुष्यों और देवों के बीच परस्पर सद्भाव सम्पन्न आदान-प्रदान बना रहना चाहिए । यह कार्य यज्ञ परम्परा को प्रखर बनाये रहने से ही सम्पन्न हो सकता है । गीता का कथन है-

देवान्यावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।

तुम सब यज्ञीय कर्मों द्वारा देवताओं को प्रसन्न करो । देवता प्रसन्न होकर अपने अनुग्रह की वर्षा करेंगे ।

देवताओं को प्रसन्न रखने से अभिप्राय यहाँ प्रकृति को सन्तुलित एवं व्यवस्थित रखने से भी है । प्रकृति दैवीय शक्तियों की क्रीड़ा भूमि है । उसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुदानों से ही विश्व वसुन्धरा पुष्पित-पल्लवित होती तथा समुन्नत बनती है । विभिन्न दैवीय शक्तियाँ ही अपना स्थूल परिचय प्रकृति की हलचल बन कर देती है । जिनका अलंकारिक वर्णन पौराणिक उपाख्यानों में आता है । इनमें वर्णन है कि देवता मनुष्य के सत्कर्मो से प्रसन्न होकर अनुदान बखेरते हैं । इन देवताओं के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए इन्हें प्रसन्न रखना होता है । प्रसन्न रखने का अभिप्राय यहाँ उन्हें प्रसाद, उपहार देने से नहीं है, न उनकी आवश्यकता ही देवी-देवताओं को है । वे शक्तियाँ मात्र अनुनय-विनय पर प्रसन्न नहीं होती । मानवी मर्यादा के नियमों पर चलकर तथा आदर्शवादी परम्परा अपनाकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है ।

बिजली प्राप्त करने के लिए धनऋण तारों की व्यवस्थित तार-लाइन बनानी पड़ती है । उसका सम्बन्ध पावर हाउस से जोड़ना पड़ता है। विद्युत संचार की प्रक्रिया तब कहीं जाकर आरम्भ होती है और बल्ब में चमकती, पंखे में चलती तथा हीटर को गर्म करती देखी जाती है । इसे चाहे दैवीय अनुग्रह माना जाय अथवा नियम मर्यादाओं के पालन का प्रतिफल ।

प्रकृति के अनुग्रह को भी इसी प्रकार समझा जा सकता है । यह अनुदान उच्चस्तरीय नियम-व्यवस्था के अधीन चलते रहने से ही मिलता रहता है । जिस प्रकार बिजली के नंगे तारों को छूने वाले उसके प्रकोप के भाजन बनते, दुर्घटना ग्रस्त होकर मरते देखे जाते हैं उसी प्रकार प्राकृतिक व्यवस्था में अवरोध पैदा करने वाले, उसके कोप का भाजन बनते हैं । चाहे उसे प्राकृतिक प्रकोप कहा जाय चाहे मानवी कृत्य अथवा दैवी आक्रोश ।

प्रकृति के प्रकोपों में यह बढ़ोत्तरी कुछ वर्षों से ही आयी है । यह बढ़ोत्तरी विघातक अनुसंधानों, परमाणु परीक्षणों के साथ बढ़ी है । औद्योगीकरण से प्रदूषण के संकट का अभी हल नहीं निकल पाया था कि परमाणु परीक्षण की विभीषिका भी आकर जुट गई । इस दोहरे प्रहार ने सारी प्राकृतिक व्यवस्था को ही चरमरा दिया ।

न्यूटन का प्रतिपादन है- ''प्रत्येक क्रिया के बराबर और विपरीत प्रतिक्रिया होती है । इस विपरीत प्रक्रिया के वेग एवं मात्रा में ही समानता नहीं होती बल्कि उसके स्वरूप एवं प्रतिफल में भी एकरूपता होती है ।''

अच्छे कर्म का फल अच्छा और बुरे का बुरा सर्वविदित है । कहने को तो यह सिद्धान्त पुराना पड़ गया किन्तु इसके पीछे तथ्य सनातन है । यह सिद्धान्त सृष्टि के कण-कण में कार्य कर रहा है । गेहूँ का बीज पृथ्वी में पड़कर असंख्यों बीज के रूप में फलित होता है । अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ अपने अनुरूप प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करती हैं ।

शास्त्रों में वर्णन है कि मनुष्य जितनी गंदगी फैलाता है उसकी स्वच्छता के लिए तथा वातावरण को परिशोधित करने के लिए यज्ञ कृत्य करने चाहिए । यज्ञ देवता वातावरण को परिशोधित करते तथा संतुलित रखते हैं । उसके प्रभाव से ऋतुएँ समय पर आती हैं । संतुलित वातावरण मानवी सुख-समृद्धि का आधार बनता है । पौष्टिक अन्न, वनस्पतियाँ उपजाती हैं । मनुष्य स्वस्थ एवं निरोग बनता है । यज्ञ प्रयोगों के सत्परिणामों से सभी परिचित हैं । अतीत में जब तक यज्ञ प्रक्रिया चलती रही प्रकृति का संतुलन बना रहा । कहते हैं कि भारत में कभी दूध-दही की नदियाँ बहती थीं । आध्यात्मिक ही नहीं भौतिक अनुदानों से भी भारत ने विश्व-मानव को तृप्त किया था । कालान्तर में यही प्रक्रिया बन्द हो गई । मनुष्य का भ्रष्ट चिन्तन तथा दुष्ट कर्तृत्व वातावरण में ऐसे प्रदूषण भरने लगा जो वायुमण्डल में बढ़ती जाने वाली विषाक्तता से भी अधिक भयंकर है ।

निस्सन्देह प्राकृतिक असन्तुलन का दोषी मनुष्य स्वयं है । दोषारोपण चाहे भगवान पर किया जाय अथवा देवी-देवताओं पर, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं । परिणामों को तो भुगतना ही होगा । इन प्राकृतिक प्रकोपों ने अपार सम्पत्ति को तो नष्ट किया ही, नर संहार भी कम नहीं हुआ । समस्त प्राणियों को उसका थाप सहना पड़ा । इस क्षति का लेखा-जोखा तैयार किया जाय तो प्रतीत होगा कि प्रकृति एक हाथ से बेकर दूसरे हाथ से लौटाने पर उतारू हो गई है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूकम्प, बाढ़, भूस्खलन जैसे प्राकृतिक प्रकोपों के कारणों पर भी विचार किया जाय तो इस संदर्भ में आँखें खोल देने वाले तथ्य सामने उपस्थित होते हैं । भूकम्प के बारे में 'इलास्टिक रिबाउण्ड सिद्धान्त' सर्वविदित है । इसके अनुसार अनेक स्थानों पर पृथ्वी काँपती है जिससे टूट-फूट होती है । बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ पलभर में धराशायी हो जाती हैं । विपुल धन-शक्ति एवं जन-शक्ति नष्ट होती है । वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार पृथ्वी एक गर्म पिघलता हुआ गोला है जिसकी ऊपरी परत पर मिट्टी की एक हल्की एवं ठण्डी परत जमी है । कई स्थानों पर यह पपड़ी कमजोर है । बनावट में असमानता होने तथा असमान फैलाव-सिकुड़न के कारण पृथ्वी के भीतर स्थित चट्टानें कहीं-कहीं तनी हुई रहती हैं । जब तनाव किसी प्रकार बढ़ जाता है अथवा किसी बाहरी दबाव से झटका लगता है तब वे टूट जाती हैं । यही प्रक्रिया भूकम्प का कारण बनती है । पृथ्वी की वह पपड़ी जहाँ-जहाँ कमजोर है प्रायः भूकम्प का झटका वहाँ महसूस किया जाता है ।

परमाणु विस्फोट के समय उस स्थान की पृथ्वी में कम्पन होता है । यह कम्पन कमजोर एवं तनावपूर्ण चट्टानों को झटका देकर तोड़ देती है । यह आवश्यक नहीं कि जिस स्थान पर परमाणु परीक्षण हो रहा है वहीं की चट्टानें टूटें बल्कि दूरवर्ती पृथ्वी की कमजोर चट्टानों को भी तोड़ सकती हैं । भूकम्प का झटका इन स्थानों पर महसूस किया जाता है ।

अनेक स्थानों पर भूकम्प का झटका अनुभव होने का कारण है भूकम्प से उठी कम्पन तरंगों का पृथ्वी के एक स्थान से दूसरे स्थान तक चलना । ये तरंगें दो प्रकार की होती हैं । एक तरंग तो पृथ्वी के ऊपरी पृष्ठ से होकर चलती है जिसे पृष्ठीय तरंग कहते हैं । दूसरी तरंग पृथ्वी के भीतर जाकर दो भागों में बट जाती है । एक को एस० तथा दूसरी को पी० तरंगें कहते हैं । विभिन्न गति से चलती हुई ये तरंगें पृथ्वी के अधिक घने केन्द्रीय भाग से टकराकर लौटती हैं । जहाँ दोनों तरंगें एक दूसरे को प्रवलित करती हैं, वहाँ भूकम्प का झटका तीव्र महसूस किया जाता है । वैज्ञानिकों का मत है कि बहुत समय पूर्व उत्तरकाशी के पास हुए भूस्खलन जिसके फलस्वरूप हिमालय की विशाल चट्टानें टूटकर गिर पड़ी थीं, के पीछे उपरोक्त प्रक्रिया ही कारण थी ।

परमाणु परीक्षणों से उत्पन्न होने वाली भूगर्भीय तरंगों से भूकम्पों की संख्या में अभिवृद्धि हुई है । अनुनाद प्रक्रिया द्वारा ये तरंगें पृथ्वी की मजबूत चट्टानों को भी तोड़ने में समर्थ हैं । इनकी गति यदि पृथ्वी में चट्टानों की प्राकृतिक कम्पन के समान है तो चट्टानों के टूटने की सम्भावना और भी बढ़ जाती है । रिजोनेन्स की शक्ति से हर कोई परिचित है । पुल पार करते हुए सिपाहियों के कदम मार्च को तोड़ दिया जाता है । एक साथ, एक गति एक ताल के क्रम से ध्वनि के रिजोनेन्स से पुल टूटने की सम्भावना रहती है । इस प्रकार स्पष्ट है कि एक स्थान के परमाणु परीक्षणों से किसी अन्य स्थान पर कभी भी, बहुत समय बाद भी भूकम्प आ सकता है ।

समुद्री तूफानों के आने में भी इस प्रकार के परीक्षणों की बात वैज्ञानिक स्वीकार करने लगे हैं । सामान्य लहरों की अपेक्षा कभी-कभी तो इन तूफानों में लहरों की ऊँचाई अप्रत्याशित रूप से डेढ़ सौ फीट तक पहुँच जाती है । इसका वेग दो सौ मील प्रति घण्टा तक देखा गया है । पिछले दिनों आन्ध्रप्रदेश में आये भयंकर तूफान में उन लहरों की विनाशकारी शक्ति देखने में आयी । विश्वास किया जाता है समुद्री तूफानी लहरों का सम्बन्ध ज्वार लहरों से है । किन्तु वैज्ञानिकों का कहना है कि इन तूफानी लहरों का कारण पृथ्वी की सतह अथवा समुद्र के भीतर आये भूकम्प भी होते हैं ।

बाढ़ की घटनाओं में असामान्य वृद्धि कुछ वर्षों से देखी जा रही है । अभी पिछले वर्ष की भयंकर बाढ़ ने करोड़ों व्यक्तियों को बेघर कर दिया । असंख्यों लोग मरे न केवल भारत बल्कि अन्य देशों को भी भयंकर बाढ़ का सामना करना पड़ा है । बाढ़ के कारणों का पता लगाने पर जो तथ्य सामने आये हैं वे बताते हैं कि यह स्वयं मनुष्य की क्रियाएँ हैं जो प्रतिक्रिया स्वरूप इस प्रकार की विभीषिकाएँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

खड़ी करती हैं । सामान्यतया वर्षा की प्रक्रिया में समुद्र का पानी सूर्य की गर्मी से भाप बनकर उड़ता रहता है । वही ठण्डा होकर जल की बूँदों में बदल जाता है । इन्हीं बूँद समूहों को बादल कहते हैं । ये बूँदें हल्की होने के कारण हवा में तैरती रहती तथा नीचे नहीं गिरतीं । इन बूँदों का आकार अतिरिक्त भाप के ठण्डा होते रहने से बढ़ जाता है । बड़ी बूँदें भार बढ़ने के कारण पृथ्वी पर गिरने लगती हैं । यह वर्षा की सामान्य प्रक्रिया सन्तुलित रूप से चलती रहती है । असन्तुलन की स्थिति तब बनती है जब वायुमण्डल में स्थित ऑक्सीजन, नाइट्रोजन तथा कार्बन डाईऑक्साइड आवेश युक्त हो जाती है । परमाणु परीक्षण से यही प्रक्रिया सम्पन्न होती है । विस्फोट से उत्पन्न रेडियो धर्मी पदार्थ ऊपर वायुमण्डल में जाकर ऑक्सीजन, नाइट्रोजन और कार्बन डाईऑक्साइड को आवेशित करते हैं । 'आयन' की स्थिति में आने पर इन पर पानी की बूँदें अधिक जमा होने लगती हैं । बूँदों का अतिरिक्त जमाब अधिक वर्षा का कारण बनता है ।

नदियों में आई बाढ़ का एक कारण परमाणु-परीक्षणों से उत्पन्न अधिक ताप से पहाड़ों पर जमी बर्फ का पिघलना भी है । इसके साथ वर्षा का संयोग जुट जाने से स्थिति और भी संकट पूर्ण हो जाती है ।

प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है । परिणाम सामने है-विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक विक्षोभ । निस्संदेह वर्तमान संकट पूर्ण परिस्थितियों के लिये उत्तरदायी मनुष्य स्वयं है । इस विषाक्तता के परिशोधन की व्यवस्था तो बनाई ही जानी चाहिए । नये परमाणु परीक्षणों पर सख्ती से रोक लगनी चाहिए । साथ ही अधिक उत्पादन के लिये विशालकाय उद्योगों की स्थापना की होड़ सभी देशों में चल रही है, इस अविवेकपूर्ण उत्साह को बन्द किया जाय । बड़े उद्योगों से उत्पादन तो बढ़ेगा किन्तु उनसे उत्पन्न होने वाली विषाक्तता का यदि लेखा जोखा लिया जाय तो उत्पादन की अपेक्षा कहीं अधिक मँहगा पड़ेगा । प्रदूषण की वृद्धि रोकने के लिए बड़े उद्योगों का कुटीर उद्योगों में परिवर्तन किया जाय । उससे उत्पादन में कमी हो सकती है । किन्तु दूरगामी परिणामों की दृष्टि से देखा जाय तो बड़े उद्योगों से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण जितनी क्षति पहुँचाते हैं उसकी तुलना में यह हानि अल्प होगी । वस्तुओं का उत्पादन कम हो तो भी गुजारा किया जा सकता है । आवश्यकताओं में कटौती करके काम चलाया जा सकता है, किन्तु उद्योगों के प्रदूषण की प्रतिक्रिया-स्वरूप होने वाले प्राकृतिक विक्षोभों को सहन करना असह्य है ।

वातावरण की विषाक्तता के परिशोधन में यह उपचार की सनातन परम्परा ही सफल हो सकती है । यज्ञीन-दर्शन को जन-सामान्य के चिन्तन में उतारा जा सके तो सत्प्रवृत्तियों के विकास में असामान्य योगदान मिलेगा । चिन्तन की भ्रष्टता एवं कर्तृत्व की निकृष्टता का परिष्कार भी इसी प्रकार सम्भव है । इस बात से कोई भी विचारशील इन्कार नहीं कर सकता कि भ्रष्ट चिन्तन एवं निकृष्ट कर्तृत्व वातावरण को उसी प्रकार दूषित कर रहे हैं जिस प्रकार परमाणुविक परीक्षण ।

यज्ञ-देवता की प्रतिष्ठापना इस युग की मांग है। सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन यज्ञीय प्रवृत्तियों के प्रसार से ही सम्भव है। वातावरण की सन्तुलन परिशोधन तथा प्राकृतिक प्रकोपों के रोकथाम के लिए यज्ञानुष्ठान का प्रचलन व्यापक स्तर पर करना होगा ।

वायु प्रदूषण का एक मात्र समाधान यज्ञ

एक सामान्य व्यक्ति एक दिन में लगभग ३५ पौण्ड वायु का सेवन करता है । यह मात्रा सारे दिन में ग्रहण किये गये अन्न और जल की मात्रा से ६ गुनी अधिक होती है । इससे प्रतीत होता है कि मनुष्य के जीवन में खाद्य से भी अधिक महत्व वायु का है । वायु न मिले तो मनुष्य कुछ क्षण भी जीवित नहीं रह सकता, अन्न के अभाव में तो वह महीनों जीवित बना रह सकता है ।

मनुष्य ही नहीं, वायु संसार के सभी जीवित प्राणियों वृक्ष वनस्पतियों के लिये भी आवश्यक तत्व है । सम्भवत: इसी लिये प्रकृति ने समस्त पृथ्वी मंडल को वायु से आच्छादित कर रखा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गन्दा और सड़ा भोजन कर लेने से जी मिचलाने लगता है और तत्काल मृत्यु हो जाती है । कुछ विषैले खाद्यान्न शरीर में धीरे-धीरे घुलते रहते हैं और अपनी दूषित प्रतिक्रिया कुछ समय बाद किसी शारीरिक व्याधि-रोग शोक और भयंकर बीमारी के रूप में प्रकट करते हैं । ६ गुनी कम मात्रा वाले अन्न के प्रदूषण से मनुष्य जब इतना प्रभावित हो सकता है, तब दूषित वायु उसके स्वास्थ्य पर कितना घातक दुष्प्रभाव डालती होगी उसकी कल्पना करना भी कठिन है । इसे मानवीय बुद्धि का विद्रूप और विडम्बना ही कहेंगे कि इतना सब जानते और समझते हुये भी आज का प्रबुद्ध कहलाने वाला मनुष्य यान्त्रिक सभ्यता के पीछे बुरी तरह पड़ा हुआ है । वह यह देख नहीं पा रहा है कि इससे जो वायु प्रदूषण हो रहा है उसके परिणाम कितने घातक हो सकते हैं ।

अमेरिका में प्रत्येक वर्ष लगभग २००,००००० टन दूषित तत्व वायु में मिलते रहते हैं । जर्मनी, फ्रांस, इटली, रूस, ब्रिटेन आदि भी अमेरिका से पीछे नहीं । इन देशों में बढ़ रहे वायु में विषैले तत्वों की मात्रा इतनी अधिक बढ़ रही है कि उससे सारी पृथ्वी के भयंकर रूप से गर्म होकर जल जाने अथवा धुयें से घुटकर नष्ट हो जाने का संकट पैदा हो गया है ।

वायु कई गैसों का सम्मिश्रण है (१) नाइट्रोजन (२) ऑक्सीजन इनमें प्रमुख है । यह अदृश्य, स्वाद और गन्ध रहित होती है, और मनुष्य एवं पशु वनस्पति सबके लिये बहुत आवश्यक है । पर जब अप्राकृतिक रूप से मनुष्य उसमें गन्दगी मिलाने लगता है तो यही वायु मनुष्य के अस्तित्व के लिये कष्टदायक हो जाती है ।

इन दिनों वायु प्रदूषण के कारण संसार के वातावरण में कितनी विषाक्तता फैल गई है, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता । इस तथ्य को व्यक्त करने वाली घटनाएँ आये दिन सामने आती रहती हैं और उन्हीं से कल्पना की जा सकती है कि यह वायुमंडल जिसमें चारों ओर भरे हुए विष के भीतर मनुष्य का साँस ले पाना और स्वच्छ वायु फेफड़ों में भर पाना भी असंभव प्राय लगता है । पिछले दिनों अमेरिका के दोनोरा के नगर में यकायक इतना धुआँ बढ़ गया कि नगरवासियों को प्रातः दस बजे तक सूर्य के दर्शन ही नहीं हुए । लोगों की सासें घुटने लगीं । वहीं के एक डॉक्टर जॉन डी० राबर्ट ने उस समय जो कुछ अनुभव किया उसे इन शब्दों में कहा, ''मेरी सोचने की शक्ति समाप्त हो गई । यह क्या हो रहा है, इस पर चकित होने के लिए बुद्धि शेष नहीं थी । कार चलाना कठिन हो गया, किसी तरह कार से उतरा तो लगा सीने पर कोई दैत्य चढ़ बैठा है और उसने भीतर से जकड़ लिया है, खांसी आने लगी । मुश्किल से कार्यालय पहुँच सका । टेलीफोन की घंटियां बज रही थीं और मुर्दे की नाईं पास में कूड़े के ढेर की तरह पड़ा रहा था । इस दिन एक भी टेलीफोन का उत्तर नहीं दे सका ।''

यह स्थिति चार दिन तक बनी रही । इस बीच भी कल कारखाने, कार मोटरें और भट्टियाँ १००० टन धुआँ प्रति घन्टे की औसत से बराबर उगलती रहीं । सारा शहर लगभग मृत्यु की अवस्था में पहुँच गया । लोगों की लगभग ऐसी ही स्थिति हो गई जैसी उपरोक्त वक्तव्य में उल्लेखित की है और लगभग एक सप्ताह में जब वह धुआँ थोड़ा बहुत छटने लगा, आसमान साफ हुआ तो १८ हजार की जनसंख्या वाले दोनोरा नगर में ६ हजार लोग बुरी तरह बीमार पड़ चुके थे और सैकड़ों व्यक्ति मर चुके थे । मनुष्य कृत यांत्रिक सभ्यता के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुई यह विभीषिका भी भगवान की कृपा से ही टली कही जा सकती है । क्योंकि सप्ताहांत में यदि वर्षा न हुई होती तो कहा नहीं जा सकता है कि वह कुहरा कब तक छाया रहता और कितने लोग इस वातावरण में घुटकर अपने प्राण गंवा बैठते ।

कुछ वर्ष पूर्व न्यूयार्क में ''थैंक्स गिविंग'' दिवस पर भी यही दशा हुई । इस दिन आस-पास के देहातों में रहने वाले हजारों लोग भी अपने मित्रों परिचितों से मिलने और उन्हें धन्यवाद देने के लिए इस महानगरी में आये थे । होटलों, नृत्य गृहों, सिनेमा घरों और मनोरंजन गृहों में मौज मना रहे हजारों लोग बढ़ते हुए धुंआ के कारण इतनी अधिक घुटन अनुभव करने लगे कि अधिकांश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोगों को अस्पताल की शरण लेनी पड़ी । १७०० व्यक्ति तो तत्काल मर गये और सैकड़ों लोगों ने बाद में घुट-घुट कर अपनी इहलीला को बीच में ही छोड़ दिया । सन् १९५२ में भी इस शहर में ऐसी ही एक दुर्घटना हुई थी, जिसके कारण २०० से भी अधिक लोग मर गये थे ।

लन्दन में सन् १९५६ में इसी प्रकार की स्थिति उत्पन्न हुई और करीब १००० लोग बढ़ते हुए धुएँ के कारण मरे थे । करोड़ों रुपये लगाकर सरकार ने भविष्य में इस तरह की स्थिति दुबारा उत्पन्न न होने देने के प्रयत्न किये पर छह वर्ष बाद ही फिर वैसा ही धुंआ छा गया और ४०० व्यक्ति कुछ ही घण्टों में काल के गाल में समा गये । अभी कुछ समय पहले अमेरिका के मैक्सिको प्रान्त में रोजाटिका स्थान पर बने एक कारखाने में आग लग गई । इस कारखाने में गैस तैयार की जाती थी । आग लग जाने के कारण हमेशा नियंत्रण में रखी जाने वाली हाइड्रोजन सल्फाइड गैस इतनी विपुल मात्रा में छा गई कि इस पर काबू करने में करीब आधा घण्टा लगा । इस अवधि में ही प्रतिमिनट १ व्यक्ति की औसत से करीब ३० व्यक्तियों ने कारखाने में ही दम तोड़ दिया और लगभग ४०० व्यक्तियों को अस्पताल जाना पड़ा ।

यह तो कतिपय दुर्घटनाओं का विवरण है । लेकिन मोटरों, कारखानों, भट्टियों और चिमनियों से निरंतर निकलते रहने वाले धुंएँ से धीरे-धीरे पूरी पृथ्वी पर एक दिन ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जायगी कि उसमें किसी व्यक्ति का स्वच्छ वायु में साँस ले पाना भी दूभर हो ज़ायगा । इन दिनों एक ओर तेजी से जनसंख्या बढ़ती जा रही है, दूसरी ओर इसी अनुपात से कल कारखाने भी बढ़ते जा रहे हैं । जिस गति से इन दिनों जनसंख्या बढ़ रही है, उसी गति से बढ़ती रही तो अनुमान है कि सन् २००० तक वर्तमान जनसंख्या दस गुना बढ़ जायगी । इस आबादी का ८५ प्रतिशत शहरों में रहेगा । स्पष्ट है कि तब कल कारखाने और अन्य धुंआ उगलने वाले उपकरण, संयत्र भी बढ़ेंगे ।

कल कारखानों से निकल रहे धुयें की हानियों और भविष्य में हो सकने वाली भयंकरता का चित्रण करते हुये कैलिफोर्नियाँ के टेक्नालॉजी संस्थान के भू रसायन शास्त्री डा० क्लेअर-सी-पैटरसन और जन-स्वास्थ्य सेवा के निर्देशक डा० राबर्ट ई० कैरोल ने लिखा है कि "टेक्नालॉजी के विस्तार से वायु में कार्बन और सीसे के कणों की मात्रा इतनी अधिक बढ़ जायेगी कि अमेरिका का हर व्यक्ति हृदय तंत्रिका संस्थान (नर्वस सिरि सिस्टम) के रोग से पीड़ित अर्थात् लोग लगभग पागलों जैसी स्थिति में पहुँच जायेंगे ।"

अमेरिका में वायु प्रदूषण से होने वाली हानियों और उनकी रोकथाम के लिए आवश्यक उपायों की खोजबीन करने वाली संस्था यूसवार्स (यूनिवर्सिटी स्टेट वाइड एयर पालूजन रिसर्च सेंटर) के डायरेक्टर जी० टी० मिडिल्टन के अनुसार सन् २००० तक संसार में इतनी अधिक कार मोटरें बन कर तैयार हो जायेंगी कि उन्हें रखने के लिए जगह नहीं मिलेगी । मिडिल्टन के अनुसार एक कार सामान्य रूप से वर्ष भर में कम से कम ९०० मील तो चलती ही है । औसतन २५ मील प्रतिदिन चलने वाली कार ६.५ पौंड धुआँ वायुमंडल में उगलती है । इन दिनों विश्व भर में जितने मोटर, वाहन बनते हैं, उनसे निकली करोड़ों टन जहरीली गैसें और धुआँ वायुमण्डल में भर जाता है । इसकी मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है । यही स्थिति वायुयानों से निकलने वाले विषैले धुएँ की है ।

सामान्यतः दिखाई ऐसा पड़ता है कि मोटर गाड़ियाँ आगे की ओर भागती हैं तथा धुआँ पीछे छूटता जाता है । इसलिए उनमें बैठी हुई सवारियां धुआँ से बच जाती हैं परन्तु वस्तुतः ऐसा होता नहीं । दृश्यरूप धुआँ भले ही पीछे छूटता दिखाई दे, लेकिन वह सामूहिक रूप से धरती के समूचे वातावरण में अपना विषैला प्रभाव छोड़ता है । सर्व विदित है कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है और इसके साथ ही वह अपनी धुरी पर भी चक्कर काटती रहती है । उसके साथ हवाएँ भी बहती हैं, वायुमंडल भी घूमता है, हवाओं में घुलकर यह धुआँ सारी पृथ्वी के वायुमंडल को प्रभावित करता है अर्थात् पूरे वायुमंडल को दूषित करता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अभी तक तो कार मोटरों द्वारा होने वाले वायु प्रदूषण की ही चर्चा की गई । कल कारखानों से निकलने वाली धुआँ भी कम हानिकारक नहीं है और उसकी मात्रा भी कार मोटरों से कम नहीं है । कल कारखानों से निकल कर वायुमंडल में घुल जाने वाले धुएँ की भयंकरता का चित्रण करते हुए कैलिफोर्निया के टैक्नोलॉजी संस्थान के डा० क्लेअर सी० पैटरसन और जनस्वास्थ्य सेवा के निर्देशक डा० राबर्ट कैरोल ने लिखा है कि कल कारखानों के विस्तार के साथ-साथ वायुमंडल में कार्बन और सीसे की मात्रा इतनी अधिक बढ़ जायेगी कि हर व्यक्ति का हृदय और तांत्रिक संस्थान रोगाक्रांत हो जायगा । महानगरों में रहने वाले लोग ग्रामीणों की अपेक्षा अधिक तनावपूर्ण जीवन जीते हैं, इसका एक कारण वहाँ के वायुमंडल में सुबह से शाम तक छाया रहने वाला धुआँ भी है ।

अनुमान है कि सन् २००० तक कल कारखानों के कारण होने वाला वायु प्रदूषण अब की अपेक्षा पाँच गुना बढ़ जायेगा । इस बढ़ोत्तरी को न तो ऑक्सीजन का उत्पादन रोक सकेगा और न ही पेड़ पौधे । क्योंकि यह स्वयं भी विषैले तत्वों के सम्पर्क में आकर विषैले हो जायेंगे और नये-नये विष पैदा करने लगेंगे । वैज्ञानिक इस स्थिति और समस्या को लेकर चिंतित हैं कि यांत्रिक सभ्यता के कारण उत्पन्न होने जा रही इस दु:स्थिति से कैसे निबटा जाय ।

वायु प्रदूषण बढ़ने के अनुपात से सुरक्षात्मक प्रयत्नों में खर्च की वृद्धि भी होगी तो भी उसे रोक सकना सम्भव नहीं होगा । कैलिफोर्निया के कृषि-विभाग, सेवा योजन विभाग के प्रोग्राम लीडर डा० पी० ओस्टरली ने भविष्यवाणी की है कि अमेरिका में वायु गन्दगी के कारण जो नुकसान होने वाला है वह बहुत भयंकर है और उसमें सुधार की कोई सम्भावना नहीं है । अगले कुछ दिनों में धुआँ इतना अधिक हो जायेगा कि प्रात:काल चिड़ियों का चहचहाना तक बन्द हो जायेगा क्योंकि उन्हें सबेरे-सबेरे सामान्य साँस लेने में ही कठिनाई होने लगेगी, चहचहाने में तो श्वाँस-प्रश्वाँस की क्रिया बढ़ जाती है । इस स्थिति में उन्हें चुपचाप रहने में ही सुविधा होगी ।

न्यूयार्क का हिल्टन होटल औद्योगिक बस्ती के बीच बना हुआ है । इस होटल की दीवारों, शीशों और फर्नीचर आदि पर धुयें और कार्बन कणों का ३ १/२ वर्ष की अवधि में ही इतना बुरा प्रभाव पड़ा कि उसका सारा रंग उड़ गया, दीवारें खस्ता पड़ गईं उसकी दुबारा ओवरहालिंग करानी पड़ी जिसमें पचास हजार डालर्स (लगभग ४ लाख रुपये) का खर्च आया । यह तो रही एक सामान्य बिल्डिंग की बात । सारे विश्व के-जन स्वास्थ्य, कृषि और कृषि में सहयोगी पशुओं, धातुओं, भवनों आदि पर हुये इसके दुष्प्रभाव की हानि की कुल लागत की कल्पना भी नहीं की जा सकती । न्यूयार्क के सेंटल्यूक्स अस्पताल का गुम्बद संगमरमर और टेराकोटा का बना हुआ है । सल्फर डाई ऑक्साइड युक्त विषैले धुयें ने उसे इस तरह कमजोर किया कि कोई भी लड़का वहाँ पहुँच कर उसे चुटकियों से ऐसे खोद लेता है जैसे मिट्टी, उसकी तहें हाथ से मसल दी जातीं तो आटे की तरह चूर-चूर हो जातीं । गुम्बद इतना खस्ता हो गया कि उसे बदलना पड़ा और उस पर सीधी छत डालनी पड़ी । पत्थर और क्राँक्रीट की बिल्डिंगों का यह हाल हो तो मनुष्य और प्रकृति के कोमल भागों पर उसके दुष्प्रभाव की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती ।

इस स्थिति का समाधान भारतीय अध्यात्म दर्शन के पास है । यद्यपि इन दिनों वायु प्रदूषण को रोकने के लिए विश्व भर के देश प्रतिवर्ष अरबों रुपये खर्च करते हैं परन्तु इनका कोई संतोषजनक परिणाम देखने में नहीं आता । निदान इस बात की ओर ध्यान गया है कि वायु प्रदूषण की हानियों से बचने के लिए धुआँ के विषैलपन को आकाश में ही नष्ट कर दिया जाना चाहिए । वर्तमान स्थिति में कल कारखानों का विस्तार रुके, यह कदापि संभव नहीं लगता । कल कारखानें रुकेंगे नहीं, बन्द नहीं होंगे, तो धुआँ पैदा होना भी बन्द नहीं होगा और धुआँ उत्पन्न होता रहेगा तो मानव जाति पर संकट की छाया भी गहराती रहेगी । अस्तु लोहे से लोहे को काटने की तरह आकाश को स्वच्छ रखने के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषैले धुएँ को स्वच्छ धूम्र से आच्छादित कर नष्ट करना होगा और इसके लिये यज्ञों की शोध तथा उनके प्रचलन का विस्तार करना होगा ।

इसी तरह २००० तक विद्युत का उपयोग पाँच गुना बढ़ जायेगा जिसके कारण वायु प्रदूषण ५ गुना बढ़ जायेगा । जनसंख्या वृद्धि का अर्थ रहन-सहन की वस्तुओं में वृद्धि होगी और उससे कूड़े की मात्रा भी नि:सन्देह बढ़ेगी । उस बढ़ोत्तरी को न तो ऑक्सीजन का उत्पादन रोक सकेगा न पेड़-पौधे, क्योंकि यह स्वयं भी तो विषैले तत्वों के सम्पर्क में आकर विषैले होंगे और दूसरे नये-नये विष पैदा करने में मदद करेंगे । ऐसी स्थिति में यांत्रिक सभ्यता को रोकने और वायु शुद्ध करने के लिए सारे विश्व में यज्ञ-परम्परा डालने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं रह जाता । यज्ञों में ही वह सामर्थ्य है जो वायु प्रदूषण को समानान्तर गति से रोक सकती है ।

बन्दूक धारी को बन्दूक धारी ही मार सकता है । डाकू को पकड़ना हो तो बन्दूक चलाने से लेकर खाई खंदक में छुपकर बचाव करने तक के तरीके जानने वाला सिपाही ही इस काम में लगाया जा सकता है । गाँव का निहत्था किसान डाकुओं का मुकाबला नहीं कर सकता । रोग के संवाहक कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए उनके शत्रु कीटाणु ही दवा के रूप में शरीर में प्रविष्ट कराने पड़ते हैं । इसी तरह हवन में जलाई गई ओषधियाँ भी धुआँ के रूप में, प्रकाश वर्षा के रूप में उठती हैं और धुआँ के विषैले प्रभाव को नष्ट करती हुई मनुष्य शरीर, पशु पक्षियों तथा वनस्पतियों को जीवन देती चलती हैं ।

इस दिशा में अभी तक जो प्रयोग अनुसंधान किये गये हैं, वे आश्चर्यजनक परिणाम प्रस्तुत करने वाले रहे हैं । फ्रांस, जर्मनी एवं अमेरिका के वैज्ञानिकों ने परीक्षणोपरान्त निष्कर्ष निकाला है कि सुगन्धित हव्य सामग्री जलाने से न केवल बीमारियों के कीटाणु-विषाणु नष्ट होते हैं, वरन् उनसे निकलने वाले धुएँ के सूक्ष्म परमाणु प्रदूषित कार्बन के परमाणुओं में प्रवेश कर उन्हें शुद्ध तत्वों में बदल देते हैं । यज्ञ का वैज्ञानिक आधार ही यह है कि अग्नि अपने में जलाई गई वस्तुओं को करोड़ों गुना अधिक सूक्ष्म बनाकर वायु में फैला देती है । वैज्ञानिक स्तर पर अग्नि की इस सूक्ष्मीकरण सामर्थ्य को फ्रांस के डॉक्टर हॉफकिन तथा मद्रास के डा० कर्नल सिंह ने प्रयोगों द्वारा प्रमाणित कर दिखाया है । उनका कहना है कि आग में घी जलाने से कोसों दूर के कीटाणु मर जाते हैं । घी, चावल, केसर आदि से धुआँ के विष का नाश हो जाता है और वायु में घुले जहर वर्षा के साथ जमीन में चले जाते हैं तथा खाद बनकर पृथ्वी की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं ।

यज्ञ के अनन्त लाभ हैं । उसके द्वारा मन और आत्मा पर पड़ने वाले प्रभाव को न भी मानें तो भी अनुसंधान के द्वारा यह तथ्य तो प्रकाश में लाये ही जा सकते हैं कि यज्ञीय धूम्र में वायु के विषैले तत्वों को नष्ट करने की विलक्षण क्षमता है । ऋषि इस बात को अच्छी तरह जानते थे । अथर्ववेद में कहा गया है **"वायु: अंतरिक्ष स्याधिपति"** (५।२४।८) अर्थात् वायु अंतरिक्ष का अधिपति है । **वायुर्यजर्विद**-अर्थात् वायु ज्ञान से सम्बन्धित विज्ञान ही यजुर्वेद है । वेद शास्त्रों में स्थान-स्थान पर इस बात का उल्लेख किया गया है कि यज्ञ वायु का शोधन करने वाला मनुष्य का प्राणदाता है और वायु को शुद्ध रखने के लिए यज्ञ आवश्यक है । यज्ञ में आहुति की गई ओषधियाँ केवल दूषित तत्वों, कृमि कीटकों को ही नहीं मार भगाते वरन् पौष्टिक तत्वों का अभिवर्धन भी करते हैं । अस्तु, वायुमंडल को दूषित होने से बचाने और जीवधारियों एवं वृक्ष वनस्पतियों की जीवन रक्षा के लिए यज्ञ ही एक मात्र साधन है ।

अणु विकिरण की विभीषिका और यज्ञ

अमेरिका के प्रसिद्ध परमाणु-शास्त्री श्री एडवर्ड टेलर और अल्वर्ट एल० लेटर द्वारा लिखित पुस्तक 'हमारा परमाणु केन्द्रिक भविष्य ' (आवर न्यूक्लियर फ्यूचर) नामक पुस्तक में, यह बताने का प्रयास किया गया है कि परमाणु-बमों (एटम बम) के विस्फोट से जो विषैली गैसों की तत्व वर्षा (फाल-आउट) होती है, उससे जीव जगत् और आकाश किस प्रकार प्रभावित होते हैं । यद्यपि दोनों वैज्ञानिकों ने यह प्रयत्न किया है कि परमाणु-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विभीषिका का कम से कम आतंक लोगों पर पड़े इसलिये उन्होंने बहुत हाथ साध कर लिखा है, पर जितना कुछ लिखा है, उतने से ही यह निश्चित हो गया है कि परीक्षण के तौर पर भी यदि परमाणु-विस्फोटों का सिलसिला जारी रहा तो मानव का अस्तित्व रहेगा या नहीं इस सम्बन्ध में कोई निश्चित राय दे सकना असम्भव होगा । उस स्थिति की पूर्व सुरक्षा के यदि कोई समर्थ साधन हैं तो वह यज्ञ ही होंगे, इसलिए यज्ञ परम्परा का जितना अधिक विस्तार होगा, विश्व संस्कृति की सुरक्षा की सम्भावनायें उतनी ही तीव्र होंगी ।

पुस्तक के ११ वें अध्याय- 'मिट्टी से मनुष्य तक' (फ्रॉम अर्थ टु मेन) में उन्होंने बताया है कि बम विस्फोट के बाद रेडियो सक्रिय उत्पादनों में इस प्रकार के परिवर्तन बड़े आश्चर्यजनक होते हैं । इसमें मेसन के इलेक्ट्रान तो ब्रह्माण्डीय विकरण में भाग लेते हैं, इसलिये उनका विवरण न कर केवल धरती और मनुष्य समाज को प्रभावित करने वाली विषैली तत्व वर्षा का ही वर्णन करेंगे । सर्वप्रथम गामा किरणों (गामा-रेज) की सक्रियता है, जिसका प्रभाव विस्फोट के बाद १ वर्ष तक बना रहता है । विषैली सक्रियता स्थूल आँखों से नहीं देखी जा सकती, पर इससे विशेष सुरक्षा के द्वारा ही बचाव सम्भव है, कपड़े और मकान भी उससे शरीर की रक्षा नहीं कर सकते । किरणों एवं गैसों से बचाने वाले परिधान जन-साधारण को उपलब्ध नहीं हो सकते, इसलिये उसके प्रभाव से तो कोई भी नहीं बच सकता ।

इसके बाद गैसों का नम्बर आता है । सबसे विषैली गैस स्ट्रानटियम-९० है, वह बीटा किरणें छोड़ती है और उसकी नैष्ठिक सक्रियता का समय ५६ वर्ष का होता है । इसी तरह दूसरा तत्व है, सेसियम-१३७ जो ६० वर्ष तक मनुष्य के जीवन को विषैले प्रभाव में रखती है । स्ट्रानटियम कैल्शियम की तरह होता है और उससे खाद्य पदार्थ विषैले हो जाते हैं । यह तत्व शरीर में आसानी से प्रविष्ट हो जाता है और काफी समय हड्डियों में जमा रहता है, यह क्षय रोग पैदा करता है । विघटन-प्रक्रिया में आयोडीन १३१ सबसे अधिक मात्रा में भाग लेता है पर उसका आइसोटोप केवल १६ दिन तक रहता है, इसलिये वह शीघ्रता से चरागाहों को और वनस्पति को दूषित बनाकर समाप्त हो जाता है । यह मनुष्य शरीर में टेंटुये (एडम्स एपिल) के पास की थायरायड ग्रन्थि (थायरायड ग्लैण्ड) को विषैला बना देती है । इसी ग्रन्थि से भोजन पचाने और चित्त-वृत्तियों को नियन्त्रित करने वाले रासायनिक द्रव्य पैदा होते हैं, इसलिए आयोडीन-१३१ थोड़े समय में ही जहाँ स्तनधारी पशुओं के शरीर विषैला बनाता है, वहाँ वह मनुष्य की पाचन क्षमता को भी कमजोर कर देता है और चित्त-वृत्तियों में चिड़चिड़ापन, क्रोध और अप्रसन्नता जैसी दुर्भावनायें पैदा कर देता है । वर्तमान युग ऐसी परेशानियों से ग्रस्त होता जा रहा है, हम समझ नहीं पाते कि कारण क्या है, पर यह सब अब तक जो बम विस्फोट हो चुके या हो रहे हैं, उनके कारण ही हो रहा है ।

कुछ रेडियो सक्रिय आइसोटोप वे होते हैं, जो बमों में प्रयुक्त ईंधन से बनते हैं, जैसे यूरेनियम-२३५, प्लुटोनियम-२३९ । यूरेनियम-२३५ का प्रभाव १४२ करोड़ वर्ष और प्लुटोनियम का ४२ हजार वर्ष-पर उससे अल्फा किरणें पैदा होती हैं, इसलिये उससे जीवन को अधिक खतरा रहता है । अल्फा किरणें यद्यपि त्वचा का भेदन नहीं कर सकतीं जैसा कि बीटा और गामा किरणें, पर यदि इनकी थोड़ी-सी मात्रा शरीर में पहुँच जाये तो उससे मनुष्य के शरीर में विषैला प्रभाव तेजी से बढ़ जाता है । अल्फा किरणों की और सूक्ष्म भेदन की जानकारी वैज्ञानिक नहीं पा सके, इसलिये उसके दीर्घकालीन दुष्प्रभाव से चिन्तित होना स्वाभाविक ही है ।

शरीर में कुल वजन का दस प्रतिशत भाग हड्डियों का होता है, इसलिये इन विषैले तत्वों की दस प्रतिशत मात्रा तो स्थायी रूप से शरीरों में बनी रहती है और उसके कारण शरीर के आनुवांशिक विकास में बाधा पड़ती है, अर्थात् आने वाली सन्तानें उत्तरोत्तर कमजोर और बीमार होती चली जायेंगी । हड्डियाँ शरीर की रासायनिक क्रिया में कम भाग लेती हैं, इसलिये उनका विषैला प्रभाव शीघ्र नहीं धुल पाता । यह विष प्रजनन कोशों और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

समीपवर्ती मज्जा को भी क्षतिग्रस्त करते हैं । अब तक जो परीक्षण हो चुके हैं, उनसे ही १०० पौण्ड से भी अधिक स्ट्रानटियम-९० का उत्पादन हो चुका है जो अब भी धरती पर व्याप्त है, और १०० पौण्ड भाग लगभग मेघ के रूप में विघटित होकर धरती की सतह पर वापस आ गया है । यह अंश अमेरिका में सबसे अधिक है और यदि सचमुच कहें तो आज मानसिक और शारीरिक दृष्टि से सर्वाधिक रोगी कोई देश है तो वह अमेरिका ही है । यह दूषित पदार्थ जब मिट्टी में मिल जाते हैं, तो अन्न और वनस्पति की जड़ों से चुसकर शरीर में पहुँच जाते हैं, इस तरह अब जो हम अन्न खा रहे हैं, वह भी रेडियो-धर्मी विष के प्रभाव से मुक्त नहीं हैं ।

इससे पूर्व किसी लेख में हम बता चुके हैं कि बम-विस्फोटों के विषैले दबाव में 'रोएन्टजन' इकाई से माप की जाती है । ऐसे ४० रोएन्टजन की मात्रा मनुष्य शरीर को लगभग अर्द्ध-मृत कर देती है, तात्पर्य यह कि यह मात्रा जितनी बढ़ती जायेगी, जीवन-शक्ति का उतनी ही तेजी से अन्त होता चला जायेगा । स्पष्टवादी वैज्ञानिकों का कहना है कि अब तक जो परीक्षण हो चुके हैं, उनसे ही विश्व भर में ५० हजार व्यक्ति अकाल मृत्यु के शिकार होंगे । यदि एक हजार रोएन्टजनों के सम्पर्क में मनुष्य शरीर को रखा जाये तो उससे उस मनुष्य को तीव्र बुखार की सी स्थिति बनी रहेगी और ३० वें दिन उसकी निश्चित मृत्यु हो जायेगी । अब जितनी मात्रा से वर्तमान जीवन प्रभावित है, उससे कुछ न कुछ बुखार की सी स्थिति तो सब की बनी रहेगी और उस स्थिति में बीमार की जो मानसिक स्थिति होती है, वैसी ही लोगों में विकसित होती चली जायेगी । तात्पर्य यह कि लोगों के मन और शरीर दोनों में ही चिन्ता-परेशानी, रोग और बीमारियाँ अकारण पैदा होती रहेंगी ।

इन वैज्ञानिकों ने हिरोशिमा और नागासाकी में गिराये बमों के बाद जीवित लोगों पर जाँच के आँकड़े देते समय यह बताने में संकोच नहीं किया कि उसका अध्ययन करने वाले रेडियोलोजिस्ट भी विषैली तत्व-वर्षा के प्रभाव से बच नहीं सके । उनमें से भी अनेक को गले की गिल्टियाँ हुईं । ऐन्किलोजिंग स्पांडिलाइटिस जो रीढ़ के जोड़ों की बड़ी कष्टसाध्य बीमारी है, कुछ उससे भी पीड़ित हुये । इस तत्व वर्षा से धरती के किसी भी कोने में रहने वाले व्यक्ति स्ट्रानटियम-९० के प्रति वर्ष ०.००२ रोएन्टजन से प्रभावित होते रहते हैं । इससे निःसन्देह लोगों में हड्डी के कैंसर, ल्यूकोमिया एवं क्षय रोगों की वृद्धि होगी । डा० हार्डिन जोन्स ने आयु-ह्रास सम्बन्धी आँकड़ों में यद्यपि सिगरेट आदि के धुयें से ९ वर्ष की आयु कम होना बताया है, वहाँ इस विषैले तत्व से कुल ५ या १२ दिन बताया है, पर वायुमण्डल को दूषित करने और शरीरों की रोग क्षमता बढ़ाने में तो यह दोनों ही एक सा काम करते हैं । सिगरेट, बीड़ियों से जो धुआँ फूँका जा रहा है, वह भी इसी कोटि का है और उससे वह लोग भी निश्चित रूप से प्रभावित हो रहे हैं, जिनका न तो बम विस्फोट से कोई मतलब है और न ही जो धूम्रपान करते हैं ।

रेडियो-धर्मी धूल का सबसे बुरा प्रभाव आने वाली संतानों पर पड़ेगा, यह स्वयं टेलर और लेटर दोनों ने स्वीकार किया है और यह कहा है कि उसका यथार्थ प्रभाव हमारे बच्चों के भी बच्चों में देखने में आयेगा । वे लिखते हैं कि ऐसा इसलिये होगा कि नवजात प्राणी माता-पिता के क्रोमोसोम (गुण सूत्रों) से अपने शरीर का विकास करता है । बच्चे माता-पिता से २४-२४ या २३-२३ क्रोमोसोम प्राप्त करते हैं । इनमें जो जीन्स होते हैं, वह तत्व-वाहक होते हैं और उनमें मनुष्य के आचरण सम्बन्धी रासायनिक संकेत होते हैं । यह वह बिन्दु है, जहाँ स्थूल और भाव दोनों मिलते हैं, रेडियो-धर्मी धूल में बीटा और गामा किरणों की सक्रियता उन्हें टेढ़ा-कूबरा-भेंड़ा और विषैला बनाती है, जिससे सम्भव है, आगे आने वाली पीढ़ी ऐसे में अष्टावक्र और मानसिक दृष्टि से प्रचण्ड, दुर्द्धर्ष, उद्दण्ड और अमानुषिक स्वभाव वाले हों, जिन्हें पूर्ण असुर ही कहा जा सके । यद्यपि वैज्ञानिक दबी जबान से ही स्वीकार करते हैं कि कोई भी 'जीम' परिवर्तन हो सकता है, पर यह निश्चित है कि वर्तमान अणु विस्फोटों की प्रतिक्रिया से भावी पीढ़ी को बचाया नहीं जा सकता । तात्पर्य यह कि हमने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जानबूझ कर अपनी संतान के शरीर और मन दुर्भाग्यपूर्ण बनाने का कुचक्र रच डाला है, उससे छुटकारा नहीं मिल सकता, हम धरती में पूर्ण असुरत्व के विकास के मददगार हैं, भले ही वह धीरे-धीरे देखने में आ रहा हो ।

वैज्ञानिक अनुसंधानों ने अब यह सिद्ध कर दिया है कि विकिरण का सबसे बुरा प्रभाव प्रजनन और भावी पीढ़ी के अनुवांशिक गुणों पर पड़ता है । सन् १९२७ में प्रसिद्ध जीव शास्त्री मुलर ने "एक्स किरणों" की बौछार ड्रोसोफिला मक्खियों पर की और यह पाया कि उससे उन मक्खियों के "जीन्स" ही बदल जाते हैं । "जीन्स" शरीर बनाने वाले कोशों के "अमर संस्कारों" को कहते हैं । शरीर कैसा बनेगा, रंग गोरा होगा या काला, आँखें नीली होंगी या काली या भूरी, हाथ में पाँच उँगलियाँ होंगी या छः। हड्डी पतली होगी या मोटी यह सब "जीन्स" पर आधारित होता है । माता-पिता के "जीन्स" ही बच्चे के शरीर का निर्माण करते हैं । सामान्यतः किसी तीखी दवा से भी इन्हें परिवर्तित करना सम्भव नहीं होता पर मुलर ने यह सिद्ध कर दिया कि रेडियो विकिरण (किसी तत्व को जब अत्यधिक गति से किसी माध्यम से प्रवेश कराया जाता है तो उससे तीव्र चौंध पैदा होती है इसे गैस की आगे की अवस्था या प्लाज्मा कहते हैं । वेल्डिंग के काम आने वाली चमक यह प्लाज्मा या विकिरण ही है) जीन्स तक को प्रभावित कर सकते हैं । उसने विविध प्रयोगों द्वारा इच्छानुसार एक ही ड्रोसोफिला को सन्तानों को कभी नीली आँखों वाला तो उसी को भूरी आँखों वाला करके दिखा दिया । किसी की हड्डी मोटी कर दी, किसी की पतली, किसी को सीधा बनाया तो किसी को अष्टावक्र करके १९४६ में नोबुल पुरस्कार प्राप्त किया । अब अनुवांशिक विज्ञानों (जेनेटीसिस्ट) पूरी तरह सहमत हैं कि विकिरण की थोड़ी-सी मात्रा भी प्रजनन कोशिकाओं (स्त्री के अण्डाणु या शोणित तथा पुरुष के शुक्राणु) पर बुरा प्रभाव डालती है और उससे भावी पीढ़ियाँ खतरे में पड़ सकती हैं । आगे होने वाले अधिकांश मृत प्रसव, गर्भपात, जन्मजात अपंगतायें इसी दूषित विकिरण के ही परिणाम होंगे । और वह बड़े भयंकर रूप से सामने आयेंगे । यदि आज की सभ्यता, आज के विज्ञान को इसी तरह चलते फलते व फूलते रहने दिया जाता है तो एक दिन वह आयेगा जब संसार अन्धे, बहरे, लँगड़े-लूले, गूँगे, कुरूप, टेढ़े-मेढ़े, हकले, विक्षिप्त तथा पागलों से भर जायेगा ।

'जीन' एक अत्यधिक सुचारु और सार रूप में गठित पदार्थ है और इतना आश्चर्यजनक है कि अपने आप में सभी जातिगत गुणों को वहन कर ले जाता है । इसमें बाहरी रेडियो हस्तक्षेप हर बार इस व्यवस्था को नष्ट करेगा, जो हानिकारक भी होगा और प्राणघातक भी । क्योंकि रडियो-परीक्षणों से मालूम हुआ है कि प्रजनन कोशों में ०.००१ या ०.००२ रोएन्टजन वर्ष भर में प्रवेश होता है, अर्थात् एक पीढ़ी ०.०५ रोएन्टजन विष सोख (आब्जार्व) लेगी । यह अधिकांश सैसियम-१३७ होगा, जो गामा किरणों से पैदा होता है और जो धरती में तथा शरीरों में मिल चुकी है । यह विवरण देते समय दोनों वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है कि हम यह अध्ययन करते समय यह निश्चित नहीं कर सकते कि अपनी भावी प्रजा को शरीर रचना और मनोगत सम्बन्ध के बीच इस दुष्प्रभाव से किस प्रकार बचा सकते हैं । यह गम्भीर कठिनाइयाँ हैं, जिनका हमारे पास कोई उत्तर नहीं है ।

इसका उत्तर पाना है तो भारतीय संस्कृति की भी वैसी ही खोज करनी पड़ेगी जैसी वैज्ञानिकों ने रेडियो-सक्रियता की (रेडियो एक्टिविटीज) की है । यज्ञों से पैदा होने वाले अग्नि-प्रवाह और ध्वनि-संतरण से होने वाले भावनात्मक परिवर्तन, दैवी शक्तियों से सम्बन्ध और प्राकृतिक परिवर्तनों की बात यज्ञों की चर्चा करते हुये पहले किया जा चुका है, यहाँ तो केवल उस वैज्ञानिक तथ्य का प्रतिपादन किया जा रहा है जो यज्ञों के माध्यम से मानवीय शरीर को और मन को स्वस्थ एवं बलवान बनाता है । अब हम इस स्थिति में हैं कि यज्ञों द्वारा होने वाली सूक्ष्म प्राण वर्षा का वैज्ञानिक विश्लेषण कर सकें और लोगों से कह सकें कि यज्ञों में जलाई जाने वाली वनस्पतियाँ, अन्न और घृत निरर्थक नहीं जाते वरन् उनकी भी उतनी ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रक्षा करते हैं, जो उनकी आलोचना करते हैं । जिस तरह रेडियो-धर्मिता हर अनिच्छुक का भी अपकार करती है, उसी प्रकार यज्ञों की ही शक्ति होगी, जो मानव संस्कृति की रक्षा करेगी । यज्ञों के वैज्ञानिक आधार को भी छोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि उससे आने वाली प्रजा की सुरक्षा है । उन्हें वैज्ञानिक अभिशाप से बचाने के लिये इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है कि सारी धरती को रेडियो-धर्मिता से उन्मुक्त करने के लिये यज्ञों की धूम मचा दी जाये ।

अणु विकिरण की इस भयावह समस्या पर विचार करने पर ध्यान सहज ही भारत के स्वर्णिम काल की ओर चला जाता है जब यह देश ज्ञान विज्ञान क्षेत्र में शिखर पर था । उस काल की वैज्ञानिक प्रगति के अवलोकन से पता चलता है कि परमाणु की जानकारी एवं शक्ति का उपयोग उस समय के लोग भी करते थे । वैशेषिक दर्शन 'परमाणुवाद' की ही व्याख्या करता है । परमाणु शक्ति का उपयोग निश्चित ही पूर्वकाल में भी किया जाता रहा है फिर रेडियो सक्रियता का संकट उस काल में क्यों नहीं उत्पन्न हुआ, यह प्रश्न सहज ही उभरने लगता है । निश्चित ही कोई न कोई वैज्ञानिक प्रक्रिया रही होगी जिससे इस संकट से वे बचे रहे ।

शास्त्रों, धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन से यज्ञीय परम्परा की ओर ध्यान आकर्षित होता है । पर्वों, उत्सवों, संस्कारों एवं अन्य सामूहिक आयोजनों में यज्ञ का कार्यक्रम निश्चित रूप से जुड़ा रहता था, जिसका उल्लेख शास्त्रों में विभिन्न स्थानों पर किया गया है । यज्ञ के ज्ञान एवं विज्ञान के सिद्धान्त की अवधारणा से ही स्वर्गीय परिस्थितियों का सृजन कर सकना सम्भव हो सका था ।

आज जब रेडियो-धर्मी धूल की मारक शक्ति बड़ी गम्भीर समस्या बनकर संसार के सामने खड़ी है, तब उसे यज्ञ जैसे महान् अनुष्ठान से ही सुधारा जा सकता है, ताप और दाब को नियंत्रित रखने के साथ आकाश को इन दूषित तत्वों से बचाने के लिये कोई ओषधि या उपचार काम न करेगा । इन गम्भीर परिस्थितियों में हमें एक बार पुनः ऋषियों की इस मंत्रणा की ओर लौटना पड़ेगा-

मुंचामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात् । ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इंद्राग्नी प्रमुमुक्त मेनम् ॥

-अथर्ववेद ३।११

अर्थात्- मेरी सन्तानों, तुझे अज्ञात और क्षय रोगों से मुक्ति दिलाने के लिए इन्द्राग्नि, विद्युत, अग्नि, वायु सूर्य ही समर्थ हैं (अर्थात् शुद्ध वायुमण्डल से ही तू स्वस्थ रह सकता है) इसलिये तू हवन कर, इन शक्तियों को जागृत कर और निरोग बन ।

यह अग्नि (किरणें) वायु (गैसें) मिलकर वही रेडियो गति (रेडियो एक्टिविटी) पैदा करती हैं, जो बमों से होती है पर उसमें प्रयुक्त पदार्थों के सभी आइसोटोप विषैले और दूषित होते हैं, जब कि यज्ञों में प्रयुक्त होने वाले हविष्यान्न का प्रत्येक भाग पुष्टिवर्द्धक, रोग निरोधक और प्राण-वर्षक होता है । यह वायु और गन्ध भी इतनी सूक्ष्म और प्रतिक्रियावादी होती है कि कुछ ही समय में सारे वायुमण्डल में फैलकर जीव, मनुष्य और वनस्पति सबको प्रभावित करते हैं । इस विज्ञान को अब समझे बिना भावी संस्कृति को बचाया नहीं जा सकता ।

भारतीय यज्ञ-प्रणाली की ओर अब वैज्ञानिकों का ध्यान एक किये गये सर्वेक्षण के उपरान्त विशेष रूप से आकर्षित हुआ है । संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में विश्व के २४ बड़े शहरों का पिछले दिनों वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया गया । प्राप्त आँकड़ों के अनुसार अफ्रीका में प्रति ४४ बच्चों में एक विकलाँग, आस्ट्रेलिया में ५३ में से एक, ब्राजील में ६२ में एक, स्पेन में ७५ में एक, मिस्र में ८६ में एक तथा मलेशिया में ९५ में एक बच्चा विकलाँग पैदा होता है । भारत में किये गये सर्वेक्षण में ११६ में से मात्र एक बच्चा विकलाँग पाया गया । इस सर्वेक्षण ने विज्ञान वेत्ताओं को भारतीय वायुमण्डल की विशेषताओं के अध्ययन के लिए बाध्य किया । वायुमण्डलीय तत्वों के विश्लेषण पर पाया गया कि अन्य देशों की तुलना में यहाँ के वायुमण्डल में रेडियो सक्रियता का प्रभाव कम है तथा यहाँ का वायुमण्डल अधिक शुद्ध है । इसका कारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिकों ने प्राचीन समय से अभी तक होते रहने वाले 'यज्ञों' को बताया । उनका कहना है कि 'जीन्स' को वही परमाणु प्रभावित कर सकते हैं जो इतने सूक्ष्म हों जो रेडियो सक्रिय पदार्थों के परमाणुओं से भी सूक्ष्म हो । यह गुण केवल यज्ञीय ऊर्जा में ही सन्निहित है जो केवल मनुष्य की तत्काल प्रसन्नता को ही नहीं बढ़ाते, वरन् 'जीन्स' में होने वाले विषैले दबाव को भी वहीं रोक देते हैं ।

इस तथ्य की पुष्टि अब विभिन्न वैज्ञानिक परीक्षणों से भी हो चुकी है । 'कैमिकल प्रापरटीज' संस्था ने उस पर विस्तृत अध्ययन किया है । जायफल, जावित्री, बड़ी इलायची, सूखा चन्दन जलाकर पाया कि उनका तैल गैस बनकर हवा में फैलता है, आग उन्हें जलाकर गैस कर देती है, उसके परमाणु बहुत सूक्ष्म होते हैं, सूक्ष्म-दर्शक यन्त्र से नाप की गई तो यह परमाणु १/१०००० से १/१००००००० सेंटीमीटर व्यास तक के छोटे पाये गये । डा० ''हाफकीन'' चेचक के टीके के आविष्कारक के रूप में प्रख्यात हैं । अपने परीक्षणों के उपरान्त उन्होंने भी कहा है कि ''यज्ञों में जलाई जाने वाली विभिन्न पौष्टिक वस्तुओं से जो धुआँ वायुमण्डल में मिलता है, वह रोग कीटाणुओं को नष्ट कर देता है तथा विशेष स्वास्थ्य वर्धक होता है । यज्ञ की सूक्ष्मतम गैस अवस्था अणु विकिरणों को प्रभावहीन करती है ।''

यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली सामग्री को एक अनावश्यक व्यय कुछ तथा-कथित व्यक्तियों द्वारा कहा जाता रहा है । यज्ञीय प्रक्रिया के सूक्ष्म वैज्ञानिक प्रभावों को न समझ सकने के कारण ही यह मान्यता बनायी गयी, किन्तु आधुनिक वैज्ञानिक हवन की महत्वपूर्ण एवं उपयोगी प्रक्रिया को मानव मात्र के लिए उपयोगी बताते हैं । डा० 'टायलिट' ने एक प्रयोग किया । किसमिश, घृत एवं शक्कर को जलाने के उपरान्त निकलने वाले यज्ञीय धूम्र को एक नलिका द्वारा टाइफाइड से भरी परखनली में प्रभावित किया । परीक्षण के उपरान्त देखा कि टाइफाइड के सभी कीटाणु मर गये हैं । डा० टायलिट ने कहा कि, ''विश्व के समक्ष आणविक परीक्षणों से उत्पन्न रेडियो सक्रियता से मानवीय अस्तित्व के लिये जो संकट पैदा हो गया है उसके निवाराणार्थ भारतीय हवन पद्धति में पूरी सम्भावना है । इस क्षेत्र में गहन अध्ययन एवं शोध की आवश्यकता है ।

यज्ञ का विज्ञान जितना सूक्ष्म है, उतना ही महत्वपूर्ण है । वेद मन्त्रों में प्रयुक्त-**'अग्ने नय सुपथा राये'** अर्थात् जिस पथ से अग्नि गमन करते हैं, इससे यह पता चलता है कि अग्नि तत्व अपने सूक्ष्म रूप से पृथ्वी से उठकर सुदूर अन्तरिक्ष की देव-शक्तियों को प्रभावित करता है । जिस तरह सूर्य के विक्षोभ (फिलामेंट) पृथ्वी को प्रभावित करते हैं उसी प्रकार अग्नि तत्व की यह धारायें शब्द तरंगों के द्वारा आकाश की शक्तियों को प्रभावित कर उनकी उल्टी प्रतिक्रिया जो पृथ्वी वासियों के लिये बड़ी लाभदायक होती है, खींच लाती है । अग्नि को वेदमन्त्रों का दूत कहा गया है, उसका अर्थ ही है कि उस माध्यम से हमारी वाणी, हमारे भावों के कम्पन वैज्ञानिक तरीके से ऊपर पहुँचते हैं । यज्ञों से केवल पृथ्वी के बादल ही प्रभावित होते हैं ऐसा नहीं, सुदूर ब्रह्माण्ड में भी वह शक्तियां विद्यमान हैं । पिछले दिनों साइन्स पत्रिका ने एक रिपोर्ट दी कि अमेरिकी वैज्ञानिकों के एक दल ने जिनमें नोबुल पुरस्कार विजेता चार्ल्स टाउन्स भी सम्मिलित हैं, तारों के बीच में विक्षुब्ध जलवाष्प बादलों के विशाल खण्डों का पता लगाया है । इस प्रकार पहली बार सौर मण्डल के अत्यन्त दूरवर्ती ग्रहों में जल का अस्तित्व देखा गया है । इसका पता भी तीव्र रेडियो ध्वनियों से चला है । जिन बादलों का पता चला है, वे प्रत्येक हमारे सौर मण्डल से बड़े हैं और उनकी पृथ्वी से दूरी १० हजार से ५० हजार किलोमीटर आँकी गई है ।

इन वैज्ञानिक खोजों से यज्ञों की महत्ता पर और भी प्रकाश पड़ा है कि यज्ञों में जलाई गई ओषधियाँ भी विकिरण पैदा करती हैं, पर यह न केवल पौष्टिक एवं स्वास्थ्य वर्धक पदार्थों का विकिरण होता है जिसमें ''जीन्स'' को शुद्ध संस्कारवान् और स्वस्थ बनाने की उतनी ही प्रबल क्षमता होती है जितने विषैले तत्वों में संदूषण उत्पन्न करने की क्षमता, वरन् मन्त्रों की ध्वनियाँ उस वायुभूत शुद्धता को तरंगित करके सारे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आकाश में फैला देती है । इसलिये यज्ञ का लाभ कम या अधिक सारे संसार को उसी प्रकार मिलता है जिस प्रकार बमों का विकिरण सारे संसार को पीड़ा और पागलपन की ओर धकेलता है ।

भारतीय संस्कृति में यज्ञीय परम्परा के पीछे समग्र वैज्ञानिक आधार है । इसका प्रमाण अब वैज्ञानिक परीक्षणों से मिल रहा है । इस पुरातन परम्परा का शुभारम्भ पुनः किया जा सके तो वातावरण परिशोधन के साथ ही रेडियो सक्रियता जैसी विभीषिकाओं से बचने की पूरी-पूरी सम्भावना है । यज्ञ-विज्ञान पर आज गहन वैज्ञानिक शोध की आवश्यकता है ।

यज्ञ आयोजनों से सूक्ष्म जगत एवं जनमानस का परिष्कार

यज्ञ का ज्ञान पक्ष यह है कि मनुष्य व्यक्तिगत जीवन में पवित्र और सामाजिक जीवन में उदार बनकर रहें । सामूहिकता, जागरूकता, अनुशासन जैसी सत्प्रवृत्तियों का अभ्यास बढ़ाया और इस तरह का वातावरण बनाया जाय । यह दोनों ही पक्ष ऐसे हैं जिनका सही रीति से कार्यान्वयन करने से व्यक्ति और समाज की सर्वतोमुखी प्रगति का द्वार खुलता है । देखने में यज्ञ एक कृत्य मालूम पड़ता है पर वस्तुतः वह चेतना का एक प्रवाह है । उसे सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय भी कह सकते हैं । शास्त्रकार ने सच ही कहा है यज्ञ में देवत्व का परिपोषण होता है और उस पुष्टि प्रक्रिया का प्रतिफल सर्वजनीन सम्पन्नता और प्रसन्नता की परिस्थितियाँ उत्पन्न होने के रूप में मिलता है ।

गायत्री उपासना में यों प्रेरणा तो सामूहिक सद्बुद्धि के विकास परिष्कार की है पर उसकी क्रिया प्रायः एकाकी जप ध्यान के रूप में ही सम्पन्न होती है । सामूहिक अनुष्ठानों में भी सब लोग साथ-साथ बैठते तो हैं पर जप ध्यान एकाकी ही करते हैं ।

यज्ञ विशुद्ध रूप से सामूहिक है । उसके एकाकी प्रयोग को निरुत्साहित किया गया है । कम से कम पति-पत्नी दो तो हों ही । इससे कम में काम नहीं चलता । घृत और चरु होमने के लिए दो तो होने ही चाहिए । दैनिक बलि-वैश्व अकेले भी किया जा सकता है पर उसका प्रयोजन भी अनेकों को लाभ पहुँचाना होता है । यज्ञीय प्रवृत्ति यह है कि उपयोगी पदार्थों को निज के लिए प्रयोग करने से बचाया जाय और उन्हें सार्वजनिक हित के लिए वायुभूत बनाकर बखेर दिया जाय । वसोधारा में समष्टि में व्यष्टि के समर्पण की ही भावाभिव्यक्ति है ।

पदार्थों की तीन गति हैं ठोस-द्रव और वायुर्भूत । यज्ञ में पदार्थों को यज्ञ की सहायता से वायुर्भूत बनाकर उपयोगी पदार्थों को साँस द्वारा सबके लिए उपलब्ध कराया जाता है । यह परमार्थ परायणता की-जन कल्याण की प्रवृत्ति है । यज्ञ कृत्य के प्रायः सभी क्रिया-कलाप ऐसे हैं जिनमें अनेकों के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है । पवित्र जलाशयों का जल, पवित्र वनस्पतियों का संग्रह, कुण्ड, मण्डप निर्माण, स्वस्ति वाचन, विसर्जन आदि में आरम्भ से अन्त तक होने वाले सभी क्रिया कृत्यों में सामूहिकता एवं सहकारिता की आवश्यकता पड़ती है । मन्त्रोच्चार से लेकर आहुति दान, परिक्रमा जैसे सभी कृत्यों में सामूहिक क्रिया-कृत्य सम्पन्न होते हैं और एकरूपता समस्वरता का अनुशासन पालन होता है ।

यज्ञ के इस समस्त क्रिया-कलाप का गम्भीर पर्यवेक्षण करने पर उसे समाज निष्ठा के प्रशिक्षण का एक उपयोगी ध्रुव केन्द्र माना जा सकता है । राष्ट्रीय झण्डाभिवादन में देश भक्ति की भावनाओं को उभारना उद्देश्य है । यज्ञ कृत्य की प्रमुख उपयोगिता देखी जाय तो उसमें सामूहिकता, पवित्रता, उदारता जैसी सत्प्रवृत्तियों के भाव तत्वों का, अति महत्वपूर्ण समावेश मिलेगा । इन प्रवृत्तियों की स्थिरता और अभिवृद्धि से ही सर्वतोमुखी प्रगति की आशा की जा सकती है ।

यह तो हुआ यज्ञ का शिक्षण पक्ष । इसके अलावा यज्ञ का वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्व है । आधुनिक विज्ञान द्वारा भी यज्ञ की उपयोगिता तथा महत्ता प्रमाणित की जा चुकी है । यज्ञ कृत्य का मोटा वैज्ञानिक नाम वायु शोधन है । यज्ञ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वायुशोधन की, दुर्गन्ध को सुगन्ध से दबाने की यह प्रक्रिया मनुष्य की सबसे बड़ी खुराक शुद्ध वायु, ऑक्सीजन के परिशोधन में महत्वपूर्ण योगदान करती है । आज जब वायु प्रदूषण की समस्या विश्व संकट का रूप धारण करती जा रही है तो परिशोधन के प्रमुख अस्त्र यज्ञोपचार को फिर से प्रखर बनाना होगा ।

यज्ञ का सूक्ष्म विज्ञान भी है । उसके तत्वज्ञान और विधि-विधान में ऐसे तत्व विद्यमान हैं जो सूक्ष्म जगत के अदृश्य वातावरण में देवत्व की मात्रा बढ़ाते हैं । उससे सर्वजनीन सुख-शांति में अदृश्य सहायता मिलती है । वायु शोधन को यज्ञ का प्रधान उद्देश्य समझा जाता है । यों उपयोगिता उसकी भी है पर वास्तविकता दूसरी ही है । वायुशोधन नहीं वातावरण का निर्माण यज्ञों का प्रमुख प्रयोजन है । पवित्र वेदमन्त्रों का सस्वर उच्चारण-विश्व चेतना में पवित्रता के तत्व भरने वाले दिव्य कम्पन उत्पन्न करता है । सामान्य आग को यज्ञाग्नि-देवाग्नि बनाने का कार्य अध्वर्यु उद्गाता जैसे विशिष्ट याजकों की श्रद्धा और संकल्प शक्ति करती है । पवित्र हवन द्रव्यों के जलने से उत्पन्न हुई ऊर्जा से सूक्ष्म जगत में उपयोगी परिवर्तन होते हैं । एकरूपता, समस्वरता, सहक्रिया की विशिष्ट शक्ति सर्वत्र स्वीकारी जाती है । यज्ञ में ऐसे-ऐसे अनेकानेक आधारों का समन्वय है जिनका सम्मिलित प्रभाव वातावरण में ऐसे उपयोगी तत्वों का समावेश करता है जो अविज्ञात रूप से विश्व-कल्याण की भूमिका सम्पन्न कर सकें ।

आज तो वायु प्रदूषण की ही विभीषिका पर चर्चा होती है । अणु विकिरण, वायु में विषाक्तता, कोलाहल की प्रतिक्रिया पर ही चिन्ता व्यक्त की जाती है । तत्वदर्शी मनीषियों को सूक्ष्म वातावरण की चिन्ता इससे भी अधिक रहती है । वे जानते हैं कि वातावरण का प्रवाह मानवी तूफानों से भी अधिक सशक्त होता है । सामान्य जन चेतना उसी प्रवाह में बहती रहती है । किसी समय में युद्धोन्माद उभरते हैं तो हर आदमी पर लड़ाई के प्रति उत्साह छाया रहता है । किसी समय विलासिता की ऐसी लहर आती है कि सर्वत्र राग रंग के ही नजारे दीखने लगते हैं । तरह-तरह के फैशन और व्यसन भी किसी समय एक ही स्तर के उभरते हैं और जन मानस को अपने साथ घसीटते हैं । इन दिनों व्यक्तिवादी संकीर्णता और प्रत्यक्षवादी भौतिकता का रंग हर किसी पर चढ़ा हुआ है । इसमें विचारशीलता का नहीं वातावरण के प्रभाव की ही प्रधानता है । जर्मनी और रूस के अधिनायकों ने अपने-अपने देशों में पिछले दिनों अपनी रुचि का वातावरण बनाया था । लोक रुचि उसी में ढलती चली गई थी । स्थूल प्रयत्नों द्वारा प्रचार, प्रलोभन एवं दबाव के आधार पर भी वातावरण बनता है पर उसमें उत्कृष्टता की मात्रा भरने के लिए आध्यात्म स्तर के उपाय उपचार अपनाने पड़ते हैं । ऐसे प्रयत्नों में यज्ञ की गरिमा सर्वोपरि मानी गई है । उसका प्रत्यक्ष प्रभाव लोक शिक्षण, आरोग्य संवर्धन, पर्जन्य अभिवर्षण आदि के रूप में दृष्टिगोचर होता है । परोक्ष लाभ इससे कहीं अधिक महत्व का है । वातावरण के परिष्कार की महत्ता यदि समझी जा सके तो उसकी क्षमता और उपयोगिता इतनी बढ़ी-चढ़ी है कि उसका अनुमान लग सकना भी कठिन है । प्रत्यक्ष प्रयास का प्रतिफल सीमित क्षेत्र में, स्वल्प मात्रा में और अल्प स्थायी होता है । किन्तु यदि वातावरण अनुकूल हो सके तो सब कुछ स्वल्प प्रयत्नों से ही सरल और सफल होता चला जाता है । हवा के रुख पर नाव चलने, वर्षा आते ही हरियाली उग पड़ने, वसन्त में मादकता छाने जैसे असंख्य उदाहरण वातावरण के प्रभाव का परिचय देते हैं ।

वर्तमान युग में जिस तरह की परिस्थितियाँ हैं उनमें सुधार लाने और अभीष्ट परिवर्तन के लिए अवरोधक कारणों को दूर करने में भी यज्ञ प्रक्रिया बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है । युग की परिस्थितियों में प्रत्यक्ष कारणों का भी बहुत कुछ हाथ होता है । सामयिक समस्याओं का उपचार भौतिक प्रयत्नों से भी किया जाता है । इतने पर भी यह मानना होगा कि सूक्ष्म वातावरण की अपनी सामर्थ्य होती है और वह सर्दी-गर्मी की तरह हर किसी को प्रभावित करती है । तत्ववेत्ता जानते हैं कि सत्प्रवृत्तियाँ और दुष्प्रवृत्तियाँ कभी-कभी छूत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की बीमारियों की तरह फैलती हैं । घटाओं की तरह घुमड़ती हैं । तूफानों की तरह उछलती हैं और लोक मानस को अपने साथ इधर से उधर घसीटे फिरती हैं । यह प्रचण्डता जब दुष्प्रवृत्तियों के रूप में उभरती हैं तो सामान्य उपाय उपचारों से रोके नहीं रुकतीं । नेताओं के उद्‌बोधन-कानूनी प्रतिबन्ध, सुधार के लिए किये गये प्रयत्न एक कोने पर रखे रह जाते हैं और विकृतियाँ अपनी गति से दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती चली जाती हैं । इसी प्रकार जिन दिनों आदर्शवादी सत्प्रवृत्तियों का जोर होता है उन दिनों बिना किसी विशेष प्रयत्न के उत्कृष्टता की गतिविधियाँ बिना किसी बहुत बड़ी तैयारी और योजना के अनायास ही बढ़ती पनपती चली जाती हैं । बुद्ध युग में-गाँधी युग में जो कुछ अद्‌भुत देखने को मिला उसके पीछे मानवी प्रयत्नों को उतना श्रेय नहीं है जितना कि अदृश्य वातावरण में काम कर रहे प्रचण्ड प्रवाह को ।

युग निर्माण अभियान को चरम लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए जहाँ प्रचारात्मक, रचनात्मक-सुधारात्मक उपाय अपनाने और सरंजाम खड़े करने होंगे वहाँ यह भी ध्यान में रखना होगा कि सूक्ष्म जगत की अनुकूलता के लिए प्रयत्न करना इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है । अन्यथा मात्र भौतिक प्रयत्नों से ही अवांछनीयता के वर्तमान तूफान को रोक सकना कठिन हो जायगा । यों सुधार उपचार करने में शासन तन्त्र अपनी सामर्थ्य भर बहुत कुछ करता है । सार्वजनिक संस्थायें और समर्थ व्यक्तियों के निजी प्रयास भी कम उत्साहवर्धक नहीं हैं । पंचवर्षीय योजनाओं को देखते हुए लगता है प्रगति और समृद्धि के दिन दूर नहीं । इतने पर भी परिणाम निराशाजनक ही सामने आते हैं । कानून, पुलिस, अदालत, जेल आदि का समर्थ और खर्चीला तन्त्र अपराधों की बाढ़ को रोक सकने में सफल नहीं हो रहा है । इस निराशा की छाया में यह विचार करने के लिए विवश होना पड़ता है कि कहीं कोई मौलिक कमी रह गई है जिसके कारण सामर्थ्य का इतना बड़ा नियोजन भी निराशा जनक परिणाम उत्पन्न कर रहा है ।

यहाँ फिर वातावरण की बात ही सामने आती है और सूझता है कि इसके लिए प्रोपेगण्डा-प्रदर्शनों पर आधारित आन्दोलनों से ही समस्याओं का हल नहीं हो सकेगा । उनकी भी पानी के बुलबुलों जैसी दुर्गति होती पग-पग पर देखी जाती है । स्थायी उपायों के रूप में आध्यात्म पर आधारित ऐसे उपचारों को हाथ में लेना होगा जो सूक्ष्म जगत में शालीनता और सृजनशीलता का प्रवाह उत्पन्न कर सकें । ऐसे उपयोगों में सामूहिक धर्मानुष्ठानों का पक्ष सामने आता है । सामूहिक गायत्री महा पुरश्चरणों जैसे प्रयत्नों को बड़े परिमाण में करने की आवश्यकता अनुभव होती है । इस सन्दर्भ में 'यज्ञ' का विज्ञान और विधान अपनी महत्ता का बार-बार स्मरण दिलाता है । कहना न होगा कि यज्ञ का गायत्री के साथ अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है । दोनों अविछिन्न हैं । विशेष परिस्थितियों में विशेष यज्ञ विधानों की भी उपयोगिता हो सकती है किन्तु वातावरण के परिशोधन जैसे महान और व्यापक प्रयास के लिए तो गायत्री यज्ञ के अतिरिक्त और कुछ सोचा भी नहीं जा सकता ।

प्राचीन काल में भी आज की तरह ही वातावरण में विषाक्तता भर जाने और दुष्प्रवृत्तियों के विस्तार से आतंक छा जाने का संकट उत्पन्न था । उसके निवारण के लिए भौतिक प्रयत्न भी चलते रहे किन्तु अध्यात्म उपचारों को विस्मृत नहीं किया गया । उस क्षेत्र के जानकारों ने ऐसे सूक्ष्म प्रयत्न भी जारी रखे जो वातावरण में अनुकूलता उत्पन्न करें और भौतिक सुधार उपायों की सफलता में परोक्ष अनुदान प्रस्तुत करें ।

रावण कालीन असुरता से निपटने योग्य वातावरण बनाने के लिए गायत्री के दृष्टा महर्षि विश्वामित्र ने सुविस्तृत यज्ञ किया था । उसकी सफलता एवं सुरक्षा का उत्तरदायित्व भगवान राम लक्ष्मण ने निबाहा था । उन्हीं दोनों ने भौतिक प्रयत्न के रूप में लंका विजय का पराक्रम भी किया, उस सफलता का श्रेय किन्हें मिला, महत्व इस बात का नहीं वरन् उसका है कि उस परिवर्तन में सूक्ष्म प्रयासों का कितना योगदान रहा । ऋषियों का रक्त घट संचय वस्तुत: उनकी सामूहिक साधना का अलंकारिक वर्णन है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लंका विजय के उपरान्त भी तत्वदर्शियों ने देखा कि वातावरण में विषाक्तता अभी भी मौजूद है और उस घटा के फिर से बरस पड़ने की सम्भावना है । इसका निराकरण करने के लिए महर्षि वशिष्ठ के नेतृत्व में सप्त ऋषियों के सहयोग से दस अश्वमेधों की सुनिश्चित श्रृंखला चलाई गई थी । राम लक्ष्मण इसके भी यजमान थे । उन यज्ञों की स्मृति में गंगा तट पर अभी भी दशाश्वमेध घाट बना हुआ है । सूक्ष्म वातावरण का परिशोधन कृत्य भी लंका विजय के पराक्रम का पूरक माना गया था । उसके लिए भी विपुल साधन जुटाये गये थे ।

भगवान कृष्ण को भी यही करना पड़ा था । महाभारत से प्रत्यक्ष दुष्टता का तो शमन हो गया था पर सूक्ष्म जगत में उसका अस्तित्व फिर भी बना रहा । आवश्यक समझा गया कि उसका भी उन्मूलन किया जाय । भगवान कृष्ण के नेतृत्व में पाण्डवों ने सुविस्तृत राजसूय यज्ञ का आयोजन किया था । लंका युद्ध, महाभारत जैसे विक्षोभ उत्पन्न करने वाले कटु कृत्यों की भी प्रतिक्रिया होती है । असंख्यों का चीत्कार अन्तरिक्ष में भरता है तो उससे अनेकों प्रकार के संकट उत्पन्न होते और विनाश के बादल गरजते हैं । इस विपत्ति की निवृत्ति के लिए इतिहास प्रसिद्ध युद्धों के उपरान्त आत्म विज्ञानियों ने शोधनात्मक उपचारों के रूप में सामूहिक धर्मानुष्ठान किये हैं और उनमें यज्ञ प्रक्रिया को प्रधानता दी है । पिछले साठ वर्षों में दो विनाशकारी विश्वयुद्ध हो चुके हैं । हंगरी, इजराइल, कोरिया, वियतनाम जैसे छुटपुट युद्ध इस बीच कितने ही हो चुके हैं । भारत विभाजन के समय हुए नर संहार और जापान पर गिराये अणु बम जैसे क्रूर कर्म भी इसी अवधि में होते रहे हैं । इन सबकी संयुक्त विषाक्तता अभी भी वातावरण में छाई हुई है । प्रदूषण और क्रन्दन दोनों ही युद्धों से उपजते हैं और अन्तरिक्ष में विनाश की घटाऐं बनकर घुमड़ते हैं । अपने समय के अनेकानेक संकटों के पीछे इस विषाक्तता का बड़ा हाथ होने की बात तत्वदर्शी कहते हैं । उस कथन में सच्चाई भी है ।

ऐसे समय में ऐतिहासिक प्रयत्नों के पुनरावर्तन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है और उसी प्रकार के परिशोधन प्रयत्नों की योजना बन रही हो तो उसका औचित्य ही माना जायगा । प्रत्यक्ष जगत में छाये हुए संकटों की निवारक योजना बनाने की भाँति ही अन्तरिक्ष के परिशोधन पर ध्यान दिये जाने का औचित्य है । इसके लिए सूक्ष्म जगत को असाधारण रूप से प्रभावित करने वाली यज्ञ परम्परा का प्रयोग चल रहा हो तो उसे महा-मनीषियों के मार्गदर्शन का अनुगमन ही कहा जायगा । युग निर्माण योजना के तत्वावधान में चल रही गायत्री यज्ञों की पुण्य प्रक्रिया को ऐसे सामयिक प्रयत्नों में गिना जा सकता है ।

संव्याप्त विकृतियों के निराकरण का एकमात्र उपाय 'दमन' ही नहीं है, दूसरा उपाय शमन भी है । शमन अर्थात् समझाया जाना-समाधान । दमन के लिए दण्ड विधानों का आश्रय लेना पड़ता है और शमन के लिए लोक शिक्षण का-जन-जागरण का उपाय अपनाना होता है । संसार के शक्तिशाली तन्त्र दो ही हैं एक धर्म दूसरा शासन । दोनों ही क्षेत्रों में सामयिक समाधान के लिए अपने-अपने क्षेत्रों के प्रतिभाशाली लोगों का सम्मेलन बुलाया जाता था और उसमें विचार-विनिमय के माध्यम से ऐसा निर्धारण किया जाता था जो सुधार की आवश्यकता पूरी कर सके । ऐसे आयोजनों को विशिष्ट यज्ञ कहा जाता था । इनमें धर्म क्षेत्र के आयोजनों को बाजपेय यज्ञ और शासन क्षेत्र के सम्मेलनों को राजसूय यज्ञ कहते थे । राजसूय यज्ञों में अश्वमेध की प्रधानता थी । बाजपेय यज्ञों में गायत्री यज्ञों की । सामयिक समस्याओं के समाधान में इनका असाधारण योगदान रहता था । अपने गायत्री यज्ञों एवं अश्वमेध श्रृंखला के साथ जुड़े रहने वाले युग निर्माण सम्मेलनों-प्रज्ञा आयोजनों का संयुक्त धर्मानुष्ठान एक प्रकार से प्राचीन काल की राजसूय एवं बाजपेय परम्परा के अन्तर्गत ही आता है ।

क्रान्तियाँ तोड़-फोड़ को-बदलाव परिवर्तन को कहते हैं । उसमें उखाड़-पछाड़ का ध्वंसात्मक पक्ष आगे रहता है । यह मौलिक पक्ष हुआ । आत्मिक पक्ष में सृजन को प्रधान रखना होता है ताकि ध्वंस की आवश्यकता ही न पड़े । अन्धेरे को पीटने की अपेक्षा यह अधिक बुद्धिमत्ता पूर्ण है कि प्रकाश की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

व्यवस्था बनायी जाय । जिस युग क्रान्ति के लिए इन दिनों जो उच्चस्तरीय प्रयास चल रहे हैं उनमें समावेश तो प्रत्यक्षत: रचनात्मक कार्यक्रमों का भी रहेगा पर मूलत: उसे वातावरण परिशोधन की सूक्ष्म प्रक्रिया ही समझा जाना चाहिए । इसमें सृजन मुख्य है ध्वंस गौण । सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन का अनुपात जिस क्रम से बढ़ेगा उसी प्रकार दुष्प्रवृत्तियाँ घटती चली जायेंगी । दुष्प्रवृत्तियाँ तोड़ने भर में आवश्यक नहीं कि सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ ही जाँय । रिक्तता भी आ सकती है । किन्तु सृजनात्मक प्रयोगों का सत्परिणाम सुनिश्चित है, उससे विघातक तत्वों का सहज निराकरण होता चला जायगा और युग क्रान्ति का उद्देश्य सुगमता पूर्वक पूरा होता चलेगा ।

गायत्री यज्ञों की श्रृंखला में युग क्रान्ति के स्थूल और सूक्ष्म स्तर के उन सभी तत्वों का समावेश है जो जन-मानस को-व्यापक वातावरण को परिष्कृत करके उज्ज्वल भविष्य की संरचना कर सकते हैं । इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इन दिनों समर्थ ऊर्जा उत्पन्न करने वाले यज्ञों की सुव्यवस्थित श्रृंखला बनायी गयी है और अनेक स्थानों पर यज्ञ आयोजित किये जा रहे हैं ।

महायज्ञों द्वारा वायुमण्डल और वातावरण का परिशोधन

यज्ञ से आत्मोत्कर्ष तब होता है, जब उसमें जीवन को यज्ञमय बनाने की भावना एवं योजना भी सम्मिलित रहे । यज्ञ से वातावरण का संशोधन होता है, पर यह क्रिया बहिरंग ही न रहे, उसे अन्तरंग में भी गहराई तक प्रवेश होने दिया जाय । चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में जो भूलें होती रही हैं, उन्हें यज्ञाग्नि में होम देना चाहिए । अपने आप को अग्नि में तपे सोने की तरह खरा बनाना चाहिए । यज्ञ में ऋषित्व और देवत्व प्राप्त करने की प्रक्रिया इसी आधार पर सम्पन्न होती है । स्वर्ग और मुक्ति मिलने का, देवताओं का अनुग्रह बरसने का जो माहात्म्य शास्त्रों में बताया गया है, उसमें ज्ञान और कर्म के समन्वय का तत्वज्ञान छिपा हुआ है । यज्ञ एक कृत्य है, जिसका एक अविच्छिन्न अंग अग्निहोत्र है, पर वह उतने तक ही सीमित नहीं है । याज्ञिक को अपनी क्षुद्रताओं का-दुष्प्रवृत्तियों का-समापन करना पड़ता है और उस स्थान को खाली न रहने देकर सत्प्रवृत्तियों का संस्थापन एवं अभिवर्धन करने के लिए प्रयत्नरत होना पड़ता है । यह न किया जाय और कर्मकाण्ड भर को सब कुछ मान लिया जाय तो उससे आत्मिक प्रगति का सुयोग न बनेगा । कृत्य के आधार पर रोग, चिकित्सा, वायुमण्डल का परिशोधन, पर्जन्य वर्षा, संकट-निवारण जैसे बहिरंग प्रयोजन ही पूरे होकर रह जायेंगे ।

यज्ञ का एक स्वरूप समारोह सत्संग सम्मेलन भी है । उच्च उद्देश्यों के लिए जो कार्य किये जाते हैं और उनके साथ देवाराधना के रूप में अग्निहोत्र भी जुड़ा रहता है तो वह प्रयास भी ज्ञान यज्ञ के रूप में अभिनंदित किये जाते हैं ।

इस प्रकार के आयोजन पूर्वकाल में दो प्रकार के थे । एक बाजपेय, दूसरे राजसूय । बाजपेय धर्म प्रयोजनों में सुधार अभिवर्धन करने के लिए और राजसूय राजनैतिक, आर्थिक, समर्थता, संवर्धन जैसे प्रयोजनों को ध्यान में रख कर किये जाते थे ।

पुराने समय में संचार साधन सरल नहीं थे । आवागमन भी कष्ट साध्य था । इसलिए तीर्थ स्थानों में नियत निर्धारित तिथि पर बाजपेय यज्ञ होते थे । देश के हर विभाग की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रयाग, उज्जैन, नासिक एवं हरिद्वार में कुम्भ आयोजनों की व्यवस्था की गई थी । छोटे कुम्भ तीन-तीन वर्ष बाद और बड़े कुम्भ बारह वर्षों बाद उपर्युक्त स्थानों पर सम्पन्न होते थे । उनमें देश के मूर्धन्य धर्माचार्य भी आते थे और जनता के वरिष्ठ लोग भी काम छोड़कर उनमें सम्मिलित होते थे । जलाशय का स्नान और मन्दिरों का प्रतिमादर्शन तो साधारण उपचार था । मूल उद्देश्य सामयिक समस्याओं के लिए विचार मंथन और उनके संदर्भ में जनता का मार्ग-दर्शन होता था । आगन्तुक जन समुदाय इसी प्रयोजन में लगा रहता था । पर्यटन तो ऐसी प्रक्रिया है जिससे इतिहास ज्ञान होता है और पुरातन-काल में घटित हुई घटनाओं से प्रेरणा लेने का लाभ भी साथ-साथ पूरा होता रहता है । वह कभी भी किया जा सकता है । पर तीर्थों में होने वाले आयोजन विशेष रूप से जन मानस को

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिष्कृत करने, प्रचलित कुप्रथाओं में सुधार करने के लिए ही होते थे । आगन्तुक उद्देश्य को समझते भी थे और उसी में दत्तचित्त भी रहते थे ।

राजसूय यज्ञों को इस प्रकार का समझा जाना चाहिए जैसा कि आजकल विभिन्न राजनैतिक दलों के अपने-अपने वार्षिकोत्सव होते हैं । प्राचीनकाल में बिखराव के स्थान पर एकीकरण की उपयोगिता समझी जाती थी, इसलिए राजनैतिक क्षेत्र की बिखराव की एक केन्द्र पर केन्द्रीभूत करने के लिए अश्वमेध सरीखे यज्ञ होते थे । अश्व इसलिए छोड़ा जाता था कि प्रदेशों के शासक एक केन्द्र का चक्रवर्ती अनुशासन स्वीकार करें । जो विरोध करते थे उनके साथ केन्द्र की लड़ाई ठनती थी । संगठन पूर्ण हो जाने पर एक केन्द्रीय यज्ञ होता था ।

यह धर्मतन्त्र और राजतन्त्र को समर्थ एवं समुज्ज्वल बनाने की योजना थी, जो समय-समय पर बाजपेय और राजसूय यज्ञों के नाम से सम्पन्न होती रहती थी ।

एक विशेष प्रकार के यज्ञ वैज्ञानिक विधा के अनुरूप होते हैं । इन भेषज यज्ञों का विशेष उद्देश्य वायुमण्डल और वातावरण का परिशोधन होता था । वायुमण्डल में प्रदूषण भर जाने से प्रकृति संतुलन डगमगाता था । दुर्भिक्ष, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, महामारियों का उद्रेक भूकम्प जैसी दुर्घटनाओं से प्रकृति का बिगड़ा हुआ संतुलन जन साधारण को अनेकानेक त्रास देता था । हानिकारक कृमि कीटक उपज पड़ते थे । अकाल मृत्युएँ होने लगती थीं । इन त्रासों को मिटाने के लिए वायुमण्डल के परिशोधन आवश्यक होते थे और उन्हें बड़े रूप में सम्पन्न किया जाता था ।

वायुमण्डल प्रत्यक्ष होता है । वातावरण परोक्ष । परोक्ष अर्थात् सचेतन, बौद्धिक भावनात्मक । दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ चलने से उसका प्रभाव भी छूत की तरह फैलता है और एक का अनुकरण दूसरा करता है । दुष्प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में यह बात विशेष रूप से लागू होती है । पानी ढलान की ओर बहता है और मन भी दूसरों की दुष्प्रवृत्तियों को अपनाने अनुकरण करने के लिए सहमत, उत्साहित हो जाता है, जबकि ऊँचा उठाने के लिए विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं । वातावरण के प्रदूषण में मनुष्यों का चिन्तन निकृष्टताएँ अपनाता है, चरित्र दुष्ट-दुर्जनों जैसा हो जाता है और व्यवहार में हिंस्र पशुओं जैसी आक्रामकता भर जाती है । इसका संशोधन हुए बिना मनुष्य छोटी-छोटी बातों को लेकर विग्रह पर उतारू हो जाते हैं और अपना, पराया सभी का सर्वनाश करते हैं ।

वायुमण्डल की तरह वातावरण की विषाक्तता को भी यज्ञ कृत्यों द्वारा परिशोधन करना पड़ता है ।

लंका दमन के उपरान्त असुर दमन तो हो गया था । पर उस युद्ध की तथा इससे पहले तो असुरता की दुष्प्रवृत्तियाँ वातावरण में भरी थीं । यदि उनका संशोधन न होता तो नये असुर पैदा होते और जड़ें हरी रहने पर नये अंकुर फूट पड़ते । इस तथ्य पर ऋषियों से विचार करके भगवान राम ने काशी दशाश्वमेध घाट पर दस अश्वमेधों का आयोजन किया था ।

ऐसा ही भगवान कृष्ण को भी करना पड़ा था । महाभारत में हुए हत्याकाण्ड और इससे पूर्व कंस, जरासंध, शिशुपाल आदि द्वारा फैलाये गये अनाचारों से वातावरण में इतनी दुष्प्रवृत्तियाँ भर गई थीं कि युद्ध विजय के उपरान्त भी वे दुष्प्रवृत्तियाँ पनप सकती थीं । इस तथ्य पर विचार किया गया और उसका समाधान पाण्डवों द्वारा विशालकाय यज्ञ आयोजन के रूप में हुआ । अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में यह सहायक भी हुआ ।

इससे पूर्व विश्वामित्र, वातावरण में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए एक विशेष यज्ञ आयोजन कर रहे थे । विश्वामित्र को वैदिक वाङ्मय में गायत्री का दृष्टा माना गया है । उनका यज्ञ भी गायत्री यज्ञ था । ऐसे आयोजनों को निर्विघ्न न होने देने के लिए आसुरी शक्तियाँ विघ्न फैलाती हैं । कृष्ण के ऊपर बचपन से ही आक्रमण आरम्भ हो गये थे, फिर विश्वामित्र का यज्ञ भी असुरता की जड़ें खोदने वाला होने के कारण निर्विघ्न पूर्ण कैसे होने दिया जाता ? ताड़का, मारीच, सुबाहु अपनी सेना समेत उसे ध्वंस करने के लिए दौड़ पड़े । विश्वामित्र को दशरथ राजकुमारों को यज्ञ रक्षा के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए ले जाना पड़ा । उनने वह संरक्षण कार्य तो किया ही । साथ ही विश्वामित्र से बला और अतिबला विद्याएँ भी सीखीं । बला कहते हैं सावित्री को, अतिबला कहते हैं गायत्री को । दोनों विद्याएँ सीखने के उपरान्त ही वे शिवधनुष तोड़ने, सिया स्वयंवर वरने, लंका को ध्वंस करने एवं राम राज्य की स्थापना में समर्थ हुए । ऐसा ही प्रशिक्षण भगवान कृष्ण को भी उज्जयिनी के संदीपन आश्रम में प्राप्त हुआ था ।

पिछले दिनों दो महायुद्ध होकर चुके हैं । वे द्वापर, त्रेता के युद्धों से भी भयंकर थे । उसमें पर्वतों जितनी बारूद जली है और करोड़ों की संख्या में लोग हताहत हुए हैं । तब से लेकर अब तक छुट-पुट क्षेत्रीय युद्ध चलते ही रहे हैं और वायुमण्डल तथा वातावरण में विष भरते रहे हैं । मद्य, मांस, अनाचार, व्यभिचार आदि दुष्कृतों की भी गगनचुम्बी अभिवृद्धि हुई है । नास्तिकता के कुचक्र में आधी दुनिया आ गई है । विश्व के मूर्धन्य राजनेता, जल, भूगर्भ तथा वायुमण्डल में आणविक विस्फोट कर अणु-युद्ध, अन्तरिक्ष-युद्ध आदि की ऐसी तैयारियाँ कर रहे हैं जिससे धरती पर से मनुष्य का अस्तित्व ही उठ जाय ।

ऐसी विषम वेला में आवश्यक था कि किन्हीं बड़े हाथों, बड़े संगठनों, बड़े साधनों से सहयोगपूर्वक बड़ा द्रव्य यज्ञ तथा ज्ञान यज्ञ किया जाता । पर बिखराव की, अहंता की, क्षुद्रता की, दुष्प्रवृत्ति समूचे वातावरण पर छा जाने से वैसा न बन सका । इतने पर भी गायत्री परिवार ने हिम्मत नहीं हारी है और अपने स्वल्प साधनों को समग्र रूप में झोंककर वह कदम उठाया है, जो भूतकाल में बड़े लोगों ने बड़े आयोजनों के रूप में उठाये थे । अन्तर इतना ही है कि वे एक स्थान पर एक संयोजन के रूप में हुए थे और इन्हें विकेन्द्रित रूप में किया गया है ।

मथुरा में हुआ सन् ५८ का सहस्रकुण्डी गायत्री महायज्ञ जिसमें चार लाख लोग सम्मिलित हुए थे, हजारों वर्षों तक याद किया जाता रहेगा, क्योंकि वह हर दृष्टि से अपने ढंग का अनोखा था । इसके उपरान्त ३६०० गायत्री शक्ति पीठों और १० हजार प्रज्ञा संस्थानों द्वारा उस कार्य को अपनी सामर्थ्यानुसार बराबर जारी रखा गया है । हरिद्वार और मथुरा में तो नित्य गायत्री जप और हवन होता है ।

इन दिनों २४ लाख गायत्री परिजनों द्वारा एक माला नित्य के हिसाब से २४ करोड़ नित्य गायत्री जप का अनुष्ठान चल रहा है । जो युग संधि के अन्त तक वर्षों तक लगातार चलता रहेगा ।

शान्तिकुंज की नौ कुण्डी यज्ञशाला में नित्य गायत्री यज्ञ होता है, उसी प्रकार गायत्री तपोभूमि मथुरा में भी । शक्तिपीठों में से अधिकांश ऐसी हैं, जो दैनिक या साप्ताहिक यज्ञ क्रम चलाती हैं ।

प्रचारक मण्डलियाँ देशव्यापी दौरे पर जाती हैं और हर आयोजन में सामूहिक यज्ञ होता है । शतकुण्डी यज्ञायोजन पिछले दिनों देश भर में स्थान-स्थान पर हुए हैं । यह विकेन्द्रीकृत योजना है । इसी को यदि केन्द्रीकृत और दस पाँच दिन के आयोजन के रूप में किया जाता तो त्रेता और द्वापर के यज्ञों की ही समता में जा बैठता, किन्तु परिस्थितियों के साथ आवश्यकता का तालमेल बिठाते हुए वातावरण एवं वायुमण्डल संशोधन की प्रक्रिया अपनाई गई है और अश्वमेध यज्ञों की युगानुरूप नयी शृंखला प्रारम्भ की गयी है ।

***

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अश्वमेध - यज्ञ

यज्ञ, महायज्ञ, अश्वमेध यज्ञ

यज्ञों को तीन चरणों में विभक्त किया गया है । व्यक्तिगत जीवन के उत्कर्ष में यज्ञों की भूमिका और सामाजिक जीवन में परिष्कार के लिए महायज्ञ सम्पन्न किए जाते रहे हैं । पर जब समूचे राष्ट्र और वातावरण के आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव होती थी तब सार्वभौम स्तर में अश्वमेधों की ही परम्परा रही है । उनका प्रतिफल भी उसी तरह क्रमशः बृहत्तर है ।

श्री मद्भागवत् में यज्ञ की महत्ता का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है । अनेकों ऐसे प्रसंगों का भागवत में वर्णन है जिससे यज्ञ की महाशक्ति का पूरा परिचय मिलता है । सृष्टि का आरम्भ यज्ञ से ही हुआ, इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है ।

जिज्ञासा के अनुसार उत्तर रूप में ब्रह्माजी विराट् भगवान के स्वरूप का वर्णन करते हैं-

''यदास्य नाभ्यां.....चतुर्होत्रं च सप्तम् ।।''

-भाग .- स्क .-२. अ. ६. श्लो .- २२, २३, २४

अर्थात्-- जिस समय व्यापक ब्रह्मा की नाभि से मैं उत्पन्न हुआ, तब पुरुष के अवयव को छोड़कर यज्ञ की कुछ भी सामग्री नहीं देखी ।

उनके यज्ञ के पशु, वनस्पति, कुशा और देवताओं के यज्ञ करने योग्य भूमि और जिसमें बहुत से गुण भरे हों, ऐसे समय की रचना की । सब पात्रादि रचे, ओषधि, घृतादिक, मधुरादिक, स्वर्णादि धातु, मृत्तिका, जल, ऋक् ,यजु, साम एवं अथर्ववेद, चार ब्राह्मण और जिससे हवन किया जाय, ऐसे कर्मों की भी सृष्टि की ।

ब्र. पु. पूर्वभाग-प्रक्रियावाद अ. १, श्लोक ५--६-७ उल्लेख है कि कल्प के आरंभकाल में जिस समय सृष्टि की रचना की जा रही थी, उस समय अति पुण्यमय महायज्ञ का अनुष्ठान सहस्र संवत्सर के लिए हुआ था । इस महायज्ञ के अनुष्ठाता स्वयं ब्रह्मा जी थे और उनकी पत्नी इला वहाँ उपस्थित थीं । शमित्रका का काम स्वयं बुद्धिमान, तेजस्वी मृत्युदेव ने किया था ।

राजा दक्ष ने अपने यज्ञ का विध्वंश होने तथा सुपुत्री सती के निधन के उपरान्त बहुत दुख माना और शिवजी से क्षमा माँगने के पश्चात् अपनी भूल के प्रायश्चित रूप में ही विशद यज्ञ को पूरा किया । इसका वर्णन भागवत के चतुर्थ स्कन्ध के सातवें अध्याय श्लोक १६-१८ में इस प्रकार हैं -

'इस भाँति दक्ष ने अपना अपराध क्षमा कराया और ब्रह्माजी से सम्मति लेकर उपाध्याय, ऋत्विज, अग्नि सहित यज्ञकर्म आदि का सुन्दरता सहित विस्तार किया । तीन कपाल का पुरोडाश, विष्णु के निमित्त, यज्ञ सम्पूर्ण करने के हेतु प्रथमादिक वीरों की शुद्धि के लिए श्रेष्ठ ब्राह्माणों को दिया । अध्वर्यु ने जब हवि हाथ में लेकर यजमान सहित विशुद्ध बुद्धिपूर्वक हवनकर भगवान का ध्यान किया उसी समय उसे विराट् पुरुष के दर्शन हुए ।

तीर्थो की स्थापना वहाँ-वहाँ ही हुई जहाँ-जहाँ बड़े महायज्ञ हुए । 'प्रयाग' शब्द में 'प्र' उपसर्ग को हटा देने पर 'याग' शब्द रह जाता है । याग-यज्ञ की प्रचुरता रहने के कारण ही यह स्थान तीर्थराज बना । काशी, वाराणसी, के दशाश्वमेध घाट-इस बात के साक्षी हैं कि इन स्थानों पर दस बड़े-बड़े यज्ञ हुए हैं । और उसी के प्रभाव से इन स्थानों को इतनी प्रमुखता मिली । स्कन्द पुराण ख ४, उ. सं. अ. ५२ श्लोक ६८-६९ में कहा गया है कि काशीराज दिवोदास ने काशी नगरी में दस अश्वमेध नामक यज्ञों से महायज्ञेश्वर भगवान का यजन किया । उस दिन से दशाश्वमेध नाम से वह तीर्थ प्रख्यात हुआ । पहले उसका नाम रुद्रसरोवर था । दस अश्वमेध करने से ही उस काशी का नाम दशाश्वमेध तीर्थ हुआ ।

ऋषियों ने सूत जी से प्रारम्भिक महायज्ञ के स्थान, समय प्रकार आदि के सम्बन्ध में प्रश्न किया ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसके उत्तर में सूत जी ने कहा वह वायु पुराण प्र. पा. द्वि. अध्याय में इस प्रकार वर्णित है--

जहाँ विश्व की सृष्टि की इच्छा से सृष्टि के आदिकाल में स्रष्टाओं ने हजारों वर्ष पर्यन्त पवित्र यज्ञ किया था । जिस यज्ञ में स्वयं तप ही यजमान और ब्रह्मा ही ब्रह्मा बने थे । महान आत्माओं के इस दीर्घ एवं विशाल यज्ञ में धर्म की नेमि घूमतेघूमते विशीर्ण हो गयी थी इसलिए ऋषि-मुनि पूजित, उस प्रदेश का नाम नैमिषारण्य पड़ गया । उसके उपरान्त--

''नैमिषेऽ निमिषिक्षेत्रे ऋषयः शौनकादयः ।
सत्र स्वर्गाय लोकाय सहस्त्र सममासत ।।''

--भाग. प्र. स्क. प्र. अ. श्लोक ४

अर्थात्--एक बार शौनक आदि ८८०००ऋषियों ने स्वर्ग प्राप्ति हेतु नैमिषारण्य के पवित्र क्षेत्र में दस हजार वर्ष तक लगातार दीर्घ महायज्ञ करने का संकल्प किया । उन्हीं यज्ञादि के पवित्र प्रभावों से आज भी वह क्षेत्र पवित्र बना हुआ है ।

अयोध्या के सम्बन्ध में उल्लेख है कि अयोध्यापुरी में सूर्यवंशी राजा वैवस्वत मनु चक्रवर्ती नरेश के पद पर प्रतिष्ठित थे । वे सदा महायज्ञ और दान में लगे रहते थे । इससे उनके शासनकाल में अयोध्यापुरी के भीतर मृत्यु रोग और वृद्धावस्था का कष्ट किसी को भी नहीं होता था ।

अश्वमेध यज्ञों की फलश्रुतियाँ तो और भी अधिक विशद् हैं । मध्ययुग में अश्वमेध का नाम लेते ही युद्ध का सा बोध होने लगा था जब कि यह लोक कल्याण की दृष्टि से सम्पन्न किए गए विशिष्ट महायज्ञ हुआ करते थे । इन अश्वमेध यज्ञों की महिमा से वेद, उपनिषद्, दर्शन एवं पुराणों के पन्ने भरे पड़े हैं । प्राचीनकाल में वह प्रकृति संतुलन, देव अनुग्रह और राष्ट्र संगठन के रूप में सम्पन्न किये जाते रहे हैं । शास्त्रकार का कथन है अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने से गया जाने का पुण्यफल, गंगा यमुना स्नान का पुण्यफल तथा कोटि होम का पुण्यफल मिलता है *-मत्स्य पुराण*

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ।
आदित्यैरिन्द्र सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजाकरत् ।
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सहसीषधाति ।।

-यजु.२५-४६

(अश्वमेध यज्ञ से) ये सम्पूर्ण भुवन निश्चय ही सुख प्राप्त करते हैं । गण के सहित इन्द्र और सम्पूर्ण देवता, बारह आदित्य, उनचास मरुतों के साथ ओषधि को हितकारी करते हैं । (पर्यावरण संतुलन) ऐश्वर्यवान् इन्द्रयज्ञ, शरीर और सन्तानों को श्रेष्ठ गुण सम्पन्न बनाते हैं --

-महीधर भाष्य

सर्वान् वैकामान् आप्नोति ।
यो अश्वमेधेन यजते ।।

-शतपथ १३/४/१/१

जो अश्वमेध का यजन करते हैं उनकी सभी कामनायें पूर्ण होती हैं ।

यज्ञेनाश्वमेधेनायुः कल्पताम्.....।।

अश्वमेध यज्ञ से आयु की वृद्धि होती है ।

महीधर भाष्य २२-२३

हे तात ! जिस अश्वमेध यज्ञ के निमित्त पधारे ऋत्विजों के जूठे जल में लोटने से नकुल (नेवले) का शरीर स्वर्णमय हो गया, उसमें भाग लेने का पुण्यफल तो अतुलनीय है ।

राष्ट्रं वा अश्वमेधः । वीर्यं वा अश्वः

-शतपथ ब्राह्मण १३/१/६

देववासियों के वीर्य व बल की वृद्धि करना और राष्ट्र को समर्थ बनाना ही अश्वमेध का उद्देश्य होता है ।

महाराज वसु ने अश्वमेध सम्पन्न किया । वृहस्पति उपाध्याय उसके होता थे । प्रजापति के तीन पुत्र, ऋषियों में श्रेष्ठ कपिल, कंठ, तैत्तिरि, कण्वादि उसके ऋत्विक थे । यह सर्वथा हिंसा रहित पवित्र यज्ञ था **''न तत्र पशुघातोऽभूत''** उसमें किसी तरह की जीव हिंसा नहीं हुई ।

-महाभारत शान्तिपर्व ३/३३६

-भागवत महापुराण च. स्क. अ. १४ में उल्लेख है- राजा वेन ने अपने राज्य में यज्ञादि करने की मनाही कर दी । उसने कहा-राजा में सभी देवों का निवास होता है, अतः केवल मेरा भजन और पूजन करो । इस पर ऋषिगण राजा वेन ही को समझाते हुए कहते हैं -

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"हे राजन् ! सर्वलोक और देवता यज्ञ में निवास करते हैं । उन वेदत्रयीमय, द्रव्यमय एवं तपोमय ईश्वर को विप्रगण आपके कल्याण तथा प्रजा की समृद्धि के लिए नाना विधि-विधानों से, चित्र-विचित्र यज्ञों द्वारा यजन करते हैं और आप तो ऐसे यज्ञों में सहायता देने योग्य हैं । हे वीर । आपके राज्य में लोगों के यज्ञ करने से श्री नारायण के कलारूप सभी देवगण संतुष्ट होकर सभी को मनोवांछित फल देंगें । इसलिए आपको इन यज्ञों की अवहेलना नहीं करनी चाहिए ।"

जब उसने बहुत समझाने पर भी नहीं माना और यज्ञ बन्द करने के दुराग्रह पर अड़ा ही रहा तो ऋषियों ने शाप देकर राजा वेन को मृत्यु की गोद में सुला दिया । तदुपरान्त उनकी भुजाओं का मंथन किया, जिससे राजा पृथु का जन्म हुआ ।

"अथादीक्षत राजा तु हयमेध शतेन सः ।
ब्रह्मावर्त मनः क्षेत्रे यत्र प्राची सरस्वती ।।"

अर्थात् फिर पृथु ने एक सौ अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया । जहाँ पश्चिम वाहिनी सरस्वती है-ब्रह्मा और मनु ब्रह्मावर्त्त क्षेत्र है । वहीं अश्वमेध सम्पन्न हुए ।

यह एक दुःखद प्रसंग है कि मध्य युग में कुछ तो विदेशी आक्रमणों के कारण तथा वैदिक संस्कृति शनैः शनैः विलुप्त होने के कारण इन यज्ञों में हिंसा होने का भ्रम पैदा कर दिया गया । इस सम्बन्ध में पं. बेनीराम जी की यज्ञ मीमांसा तथा महामना सातवलेकर जी ने बहुत व्यापक अध्ययन किया और सही स्पष्टीकरण प्रस्तुत किए । अपनी पुस्तक में महाप्राज्ञ सातवलेकर जी ने लिखा है --

"मनुष्य शरीर में सद्चिन्तन के देवता और दुष्प्रवृत्ति के दानव पशु दोनों विद्यमान होते हैं । मनुष्य शरीर में तो यह निराकार होते हैं, पर वे जब साकार हो जाते हैं, तो ये बाहर दिखाई देने वाले पशु बन जाते हैं । अर्थात्-बाहर के पशु भाव ही जीव को साकार पशु योनि में ले जाते हैं । श्येन (बाज) घमंड का रूप है । गिद्ध लोभ का प्रतिनिधि, चापलूसी से कुत्ते की पशु योनि मिलती है, अज्ञानग्रस्त जीव उल्लू या गधे के रूप में जाना जाता है । पशु प्रवृत्तियाँ जब घोड़े जैसे शक्तिशाली और सर्वव्यापी हो जाती हैं । तब अश्वमेध आयोजन किए जाते हैं । जिनमें इन पशु प्रवृत्तियों की बलि देने का विधान ही अश्वमेध है ।

अश्वमेधों की तैयारियों के जो संदर्भ और प्रकरण आर्षग्रन्थों में मिलते हैं उनकी पवित्रता भी इस तथ्य को खंडित करती है कि इन यज्ञों में किसी तरह की जीव हिंसा होती थी ।

हिन्दू धर्म कोश का कथन है :-

अश्वमेध का घोड़ा जिस दिन से चतुर्दिक भ्रमण के लिए छोड़ा जाता था, उसी दिन से प्रतिदिन प्रातः मध्याह्न एवं सायं सविता के लिए तीन इष्टियां की जाया करती थीं । सविता को प्रातः सत्यप्रसव के नाम से, मध्याह्न में प्रसविता के नाम से तथा सायंकाल में आसविता के नाम से पूजित किया जाता था । यह तथ्य आश्वलायन श्रौतसूत्र के १०/६/८ के लाट्यायन श्रौतसूत्र के ९/९/१० में तथा कात्यायन श्रौतसूत्र के २०/२/६ में वर्णित है । अर्थात्-गायत्री उपासना पूरे वर्ष भर तक चलती थी । उसके बाद तीन-दिन तक अश्वमेध यज्ञ चलता था । स्पष्ट है कि जिस यज्ञ को " भुवनस्य नाभिः" ब्रह्माण्ड का नाभिक कहा गया है, वह श्रेष्ठतम कर्म दिव्य पुरुषार्थ के रूप में प्रत्येक क्षेत्र में संव्याप्त है । प्रथम यज्ञीय पुरुषार्थ सृष्टि की रचना के समय ही हुआ था ।

कथा सर्वविदित है -विष्णु की नाभि से कमलनाल निकली । उसके विकास से कमल खिला । उस कमल में सृष्टिकर्ता ब्रह्मा प्रकट हुए और सृष्टि क्रम चल पड़ा । यह एक आलंकारिक वर्णन है, जिसमें प्रथम यज्ञीय पुरुषार्थ का आभास कराया गया है ।

"यज्ञो वै विष्णुः"- यज्ञ ही विष्णु हैं, एवं यज्ञ को 'भुवनस्य' नाभि कहने से स्पष्ट हो जाता है कि जिसमें से कमल एवं सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई वह दिव्य नाभि यज्ञ ही है । यज्ञीय पुरुषार्थ की कर्मवल्लरी आगे बढ़ी, उसके अंगोपांग कमल की पंखुड़ियों के रूप में विकसित हुए । उस विकास प्रक्रिया से जो कल्याणकारी यज्ञीय सृजन शक्ति उभरी उसे सृष्टा ब्रह्मा की संज्ञा दी गयी । इस प्रकार प्रकट हुई यज्ञीय सृष्टि के संतुलन और विकास के लिए यज्ञीय अनुशासन एवं पुरुषार्थ को जाग्रत -

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विकसित बनाये रखने की बात कही गयी ।

इस निर्देश का पालन हुआ । सूर्य, चन्द्र, वायु अग्नि, जल, पृथ्वी सभी यज्ञीय क्रम अपना कर सृष्टि का पोषण, रक्षण एवं विकास करने लगे । समुद्र, मेघ, पर्वत, नदियाँ, वनस्पतियाँ, वृक्षादि सभी यज्ञीय अनुशासन के अनुगामी हुए । पशु, पक्षी, कृमि-कीटक भी अपनी-अपनी क्षमतानुसार प्रकृति के सहयोग (संगतिकरण) रूप यज्ञीय क्रम में लग गये ।

सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य ने भी दिव्य अनुशासन का अनुगमन (देव पूजन रूप में) किया । परस्पर प्रेम-सहयोगपूर्वक रहकर संगतिकरण को सिद्ध किया । अपने करुणामूलक प्रयासों से जीवदया-दानादि का क्रम चलाया । इस प्रकार यज्ञीय जीवन क्रम फलश्रुति के रूप में सतयुगी वातावरण का दिव्य अनुदान उसे लम्बे समय तक मिलता रहा ।

काल प्रवाह में मनुष्य यज्ञीय अनुशासन से विचलित होने लगा, तो यज्ञीय अनुशासन के प्रशिक्षण एवं अभ्यास को बनाये रखने के लिए अनेक यज्ञीय कर्मकाण्डों का विकास हुआ है । विचलित जनमानस एवं विश्रृंखलित समाज को पुनः यज्ञीय अनुशासन में लाने के अनेक सफल प्रयोग समयानुरूप होते रहे । जैसे -

देव-वृत्तियों के विकास के लिए देवयज्ञ, मनुष्यों, अतिथियों को स्नेह-सम्मान देने के लिए 'नृयज्ञ' अगणित जीव-जन्तुओं के पोषण के लिए भूत यज्ञ-बलिवैश्व यज्ञादि का क्रम चला ।

-पोषक प्रवृत्तियों के विकास के लिए विष्णु यज्ञ, मन्यु जागरण के लिए रुद्रयज्ञ, अनाचार दमन के लिए 'चण्डी यज्ञ' आदि किए जाते रहे हैं ।

-उपयोगी पशुधन के संवर्धन के लिए गो मेध, अजमेध आदि प्रयोग होते थे । बाद में मेध शब्द का कुटिलतापूर्ण दुरुपयोग किया जाने लगा । वैसे 'मेध' यज्ञ का ही पर्याय है । इस सम्बन्ध में विशेष स्पष्टीकरण अगले लेखों में दिए जा रहे हैं ।

-व्यापक रूप से यज्ञीय प्रयोगों में समाज में सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन के लिए वाजपेय यज्ञ, राजनीतिक अनुशासन स्थापित करने के लिए 'राजसूय यज्ञ ' तथा समग्र राष्ट्र को संगठित, सशक्त एवं प्रगतिशील बनाने के लिए 'अश्वमेध' आदि यज्ञों का वर्णन मिलता है । अश्वमेध को इन यज्ञों में सर्वश्रेष्ठ-यज्ञों का राजा कहा गया है ।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि यह अश्वमेध यज्ञानुष्ठान कोई सामान्य कर्मकाण्ड नहीं है । यह किसी राजा की राज्यलिप्सा की पूर्ति करने के लिए किया गया अहंकारी कृत्य भी नहीं हो सकता । इस महान यज्ञीय अनुष्ठान का स्वरूप तो ऋषियों की दृष्टि का अनुगमन करके ही समझा जा सकता है । यहाँ उस संदर्भ में एक-एक बिन्दु पर विचार किया जा रहा है ।

अश्व की अवधारणा

अश्व का प्रचलित अर्थ 'घोड़ा' ले लिया जाता है । सांसारिक अर्थों में यह ठीक भी है । किन्तु यज्ञीय विशिष्ट संदर्भ में तो उसकी मौलिक व्याख्या तक जाना ही पड़ेगा ।

अश्व की शब्द व्युत्पति पर ध्यान दें- **अश+क्वन् अश्नुते अध्वानम्, अश्नुत व्याप्नोति,** अर्थात्- तीव्रगति वाला मार्ग पर व्याप्त हो जाने वाला

महाशनो भवति वा अश्वः, बहु अश्नातीति इति अश्वः के अनुसार अधिक मात्रा में आहार करने वाला अश्व है ।

उक्त गुणों के कारण घोड़े को अश्व संज्ञा दी गयी है । घोड़े के लिए प्रयुक्त अन्य संज्ञाओं में भी ऐसे ही अर्थ सन्निहित हैं, जैसे -**अत्य-अतति गच्छति गतिशील । हयः-हयति - गच्छति, अर्वा गमनशील चंचल** आदि ।

अश्व - को गुणवाचक संबोधन के रूप में ही शास्त्रों ने लिया है, जाति वाचक संज्ञा तक उसे सीमित नहीं रखा है । नीचे दिये गये उद्धरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है ।

'इन्द्रो वै अश्वः' कौषीतकि ब्रा. १५/४ के अनुसार इन्द्र ही अश्व है ।

'सौर्य्यो व्व अश्वः' गोपथ ब्रा. ३-३/१९ के अनुसार सूर्य का सूर्यत्व (तेज) ही अश्व है ।

वेदों में अनेक स्थानों पर यज्ञाग्नि को अश्व कहा गया है । ऋग्वेद मंत्र १/१६/३/२ में कहा है -

'गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात् सूरादश्वं वसवो निरतष्ट ।

अर्थात् -अश्व सूर्य का प्रतीक है । वसुओं ने यज्ञीय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अश्व (अग्नि को) सूर्य से प्रकट किया है । **'वीर्यं वै अश्व:'** शौर्य ही अश्व है, तथा श्रीर्वै अश्व: सम्पदा ही अश्व है कहा है **'अग्निर्वा अश्व: आज्यं मेध:** के अनुसार अग्नि ही अश्व एवं घृत ही मेध है ।

शतपथ ब्राह्मण के ही १३/३/३/५ मंत्र की व्याख्या करते हुए ऋषि दयानन्द ने ईश्वर को अश्व माना है । - 'अश्वतो यत ईश्वरो वा अश्व, अश्नुते व्याप्नोति सर्वं जगत्सोऽश्व ईश्वर: । अर्थात् सारे संसार में संचरित होकर संव्याप्त होने वाला अश्व 'ईश्वर' है ।

उक्त शास्त्रीय उद्धरणों पर ध्यान देने से पता चलता है कि 'अश्व' शब्द का अर्थ केवल घोड़ा मान लेना अपने अज्ञान के कारण ही संभव होता है । इसी पूर्वाग्रहयुक्त मान्यता के कारण अनेक भ्रान्तियाँ उत्पन्न होती हैं ।

'मेध' शब्द का अर्थ

'मेध' शब्द यज्ञ का पर्यायवाची है । उसका एक अर्थ 'वध' भी होता तो है, किन्तु शास्त्रों ने उस अर्थ में उसका प्रयोग वर्जित किया है । अगले लेख में उस संदर्भ में पर्याप्त स्पष्टीकरण दिये गये हैं । यहाँ तो 'अश्वमेध' जैसे महान प्रयोग की गरिमा के अनुरूप उसके अर्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं । द्वेष, हिंसा, क्रूरता आदि को शास्त्रों ने 'अयज्ञीय' कहा है, अस्तु यज्ञीय संदर्भ में इनका प्रयोग नहीं किया जा सकता ।

'मेध' का अर्थ 'हिंसा' अमान्य कर देने पर उसका यथार्थ अर्थ मेधा संवर्धन तथा संगम-संगतिकरण ही रह जाता है ।

''मेध शब्द की व्युत्पत्ति में उसे मिथ्, मिद् मेथ्, मेद्, आदि धातुओं से सम्बद्ध माना है । इनका अर्थ मिलना, जोड़ना, जानना, प्रेम करना, पकड़ना आदि होता है । मेध के अर्थ बुद्धि, शक्ति-बल, बुद्धिबल, यज्ञ आदि कहे गये हैं । इसे यज्ञ, अर्पण, रस, सार, पूज्य, पवित्र आदि अर्थों में भी प्रयुक्त किया जाता है ।

वाजसनेयी संहिता के बत्तीसवें अध्याय 'सर्वमेध' प्रकरण में मेध का अर्थ उपर्युक्त संदर्भों में ही किये जाने का आग्रह भाष्यकारों ने किया है ।

अश्वमेध का व्यापक अर्थ

ऊपर लिखे शास्त्रीय अर्थों को समझने के बाद 'अश्वमेध' का उसकी गरिमा के अनुरूप अर्थ आसानी से समझ में आ सकता है ।

अश्व गतिशीलता का, शौर्य का, पराक्रम का और मेध मेधाशक्ति, श्रेष्ठ बुद्धिमत्ता का प्रतीक होने से अश्वमेध का सहज अर्थ होता है 'शौर्य पराक्रम तथा कल्याणकारी मेधाशक्ति का संयोग संगम ।

अश्व को क्षात्र शक्ति एवं मेध को ब्रह्म वृत्ति का प्रतीक मानने से उनका संयोग एक पवित्र एवं महान यज्ञ कर्म बनता है ।

उत्कृष्ट विचार शक्ति एवं श्रेष्ठ प्रयोजनों के लिए समर्पित पुरुषार्थ के योग से ही आदर्श समाज एवं राष्ट्र की रचना हो सकती है । इसीलिए राष्ट्र निर्माण को अश्वमेध कहा गया है । देखें --

राष्ट्रं वा अश्वमेध: (शत. १३/१/६/३) अर्थात्--राष्ट्र (का गठन) ही अश्वमेध है ।

इसी संदर्भ में आगे कहा गया है ।

राष्ट्रं वै अश्वमेध, तस्माद्राष्ट्री अश्वमेधेन यजेत् । अर्थात् राष्ट्र ही अश्वमेध है, इसलिए अश्वमेध के माध्यम से राष्ट्र का यजन (संगतिकरण संगठन) करें ।

शतपथ ब्राह्मण में बार-बार **अश्वमेधेन यजेत्** वाक्य का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ होता है अश्वमेध से यजन करें । यह गूढ़ार्थक प्रयोग है यथा शौर्य एवं मेधाशक्ति के संयोग से यजन करें ।

श्रेष्ठ यज्ञीय भाव से राष्ट्र का संगठन जागरण किया जाय । पुरुष सूक्त में कहा गया है **''यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त देवा:''** देवताओं ने यज्ञ से यज्ञ का यजन किया । स्पष्ट है कि श्रेष्ठ कर्म के लिए उद्देश्य भी यज्ञीय होने चाहिए, साधन भी सुसंस्कारवान यज्ञीय होने चाहिए, उसकी क्रिया भी यज्ञीय अनुशासन में होनी चाहिए, तथा करने वाले का भाव-संकल्प भी यज्ञीय देवतुल्य होना चाहिए ।

इसीलिए शतपथ ब्राह्मण १३/२/२/१ में यजमान को भी 'अश्वमेध' की संज्ञा दी है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चेतना (मेधा) को ब्रह्माण्ड में गतिशील (अश्वानुरूप) बनाने के क्रम को लक्ष्य करके शतपथ ब्राह्मण के मंत्र १३/४/२/१८ तथा १३/५/१/५ में सूर्य को 'अश्वमेध' कहा गया है । इसी प्रकार मंत्र क्र. ११/२/५/१ में चन्द्रमा को अश्वमेध कहा गया है ।

अश्वमेध की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुए शास्त्रकारों ने इसे परम पुरुषार्थ कहा है । सामान्य पुरुषार्थ का दायरा भौतिक स्तर तक सीमित है । इसे नियंत्रित करने वाली दैवी शक्तियाँ, प्रारब्ध विधान यदि अनुकूल न हो तो सारे प्रयास मिट्टी में मिल जाते हैं । परिणाम में निराशा, असफलता-उद्विग्नता ही पल्ले पड़ती है । यही कारण है सूक्ष्मदर्शी ऋषियों ने पुरुषार्थ जैसी अमोघ प्रक्रिया को आधिभौतिक पिंजड़े में नहीं बाँधा । उन्होंने दैवी शक्तियों को अनुकूल बनाने में सक्षम तप साधनाओं, नया भाग्य विधान गढ़ने में समर्थ आध्यात्मिक प्रक्रियाओं की रचना की और उन्हें उच्चतर पुरुषार्थ, परम पुरुषार्थ कहा ।

अश्वमेध की प्रक्रिया कुछ ऐसी ही अलौकिक और अनुपम है ? इसमें अगणित प्रकार के आधिभौतिक आधिदैविक, आध्यात्मिक पुण्यफल भरे हैं । जिनकी प्रभाव सामर्थ्य जहाँ सामूहिक स्तर पर अशुभ प्रभावों का निवारण करती है, वहीं भागीदारी लेने वाले याजकों के व्यक्तिगत जीवन में ढेर का ढेर अनुदान वरदान उड़ेलने वाली सिद्ध होती है । अत्रि स्मृति में इसी कारण अश्वमेध को 'सर्व कामधुक' अर्थात् सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला कहा गया है । इसका कारण बताते हुए स्मृतिकार का कहना है-

अश्वमेधेन हविषा तृप्ति मायान्ति देवताः ।
तस्तुमा स्पर्धयत्येन नरस्तुमः समृद्धिभिः ।।

अर्थात्--अश्वमेध में हवि का हवन करने से देवताओं की तृप्ति होती है । तृप्त होकर देवता मनुष्य को इच्छित समृद्धि प्रदान कर संतुष्ट करते हैं ।

विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार अश्वमेध यज्ञ में अग्नि को संस्कारित कर उसमें श्रद्धा, भावना के साथ जो भी आहुति दी जाती है । उसे देवता ग्रहण करते हैं । देवताओं का मुख अग्नि है, इसलिए देवता यज्ञ से प्रसन्न होकर यज्ञकर्ता की कामनाओं की पूर्ति करते हैं । विष्णु धर्मोत्तर पुराण में हंस जी हवन विधि का वर्णन करते हुए ऋषियों से कहते हैं --

अग्निर्मुख देवतानां सर्वभूतपरायणम् ।
तस्यशुश्रुणादेव सर्वाकामान्समश्नुते ।।

अर्थात् सर्वभूत परायण देवताओं का मुख अग्नि है । देवताओं की सेवा-सुश्रुषा करने से ही सब कामनाओं की प्राप्ति होती है ।

आपस्तम्ब स्मृति के अनुसार जिस स्थान पर अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न होता है, वहाँ समस्त देवता सारे तीर्थों की चेतना पुंजीभूत होती है । इसलिए वहाँ जाने मात्र से गंगा, यमुना, कावेरी, कृष्णा, गोदावरी आदि नदियों के स्नान का पुण्य, और गया, काशी, द्वारका आदि तीर्थों में जाने का प्रतिफल प्राप्त होता है । महाभारत में व्यास जी युधिष्ठिर को इसका माहात्म्य समझाते हुए कहते हैं--

अश्वमेधो हि राजेन्द्र पावनः सर्व पाप्मनाम् ।
तेनेष्टव त्वं विपाप्मा वै भविता नात्र संशय ।।

-अश्वमेध पर्व (६१) १६

हे राजन्- अश्वमेध यज्ञ समस्त पापों का नाश करके यजमानों को पवित्र बनाने वाला है, उसका अनुष्ठान करके तुम पाप मुक्त हो जाओगे ।

आश्वलायन (१६/६१) के अनुसार सभी पदार्थों के इच्छुकों, सभी विजयों के अभिलाषियों तथा अतुल समृद्धि के आकांक्षियों को अश्वमेध का यजन अवश्य करना चाहिए । ऋषि गोभिल ने 'श्री वै अश्वमेध' कहकर अश्वमेध को ऐश्वर्य प्रदाता कहा है । नारदीय पुराण के अनुसार अश्वमेध यज्ञ में हवन की जाने वाली दिव्य ओषधियों, दिव्य मंत्रों के सम्मिलित प्रभाव से याजकों में मेधा-प्रतिभा का जागरण होता है । रोगों का नाश होकर आयु बढ़ती है । पुराणकार के अनुसार उन्नत प्रतिभा और उत्तम स्वास्थ्य के आकांक्षियों को इसका यजन अवश्य करना चाहिए । महर्षि कात्यायन ने अश्वमेध के यजन को सुसन्तति, चिरस्थाई समृद्धि प्रदान करने वाले के साथ स्वर्ग तक आत्मा को पहुँचाने वाला वाहन कहा है । इसका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माहात्म्य बताते हुए पद्मपुराण सृष्टि खण्ड में कहा गया है-

अश्वमेधाप्यायिता देवां वृष्ठयुत्यर्गेण मानवः।
आप्यायनं वै कुर्वन्ति यज्ञाः कल्याण हेतवः।।

अर्थात् अश्वमेध में प्रसन्न हुए देवता मनुष्यों पर कल्याण की वर्षा करते हैं ।

सर्वान् कामनाप्स्यन् सर्वा विजीतीर्विजिगीजमाणः।
सर्वा व्युष्टीर्व्याशेवयन्नश्वमेधेन यजेत ।।

अश्वमेध यज्ञ करने से सभी कामनाओं की प्राप्ति होती है तथा सर्वत्र विजय होती है-

-आश्वलायन गृह्यसूत्र-१०/६/१

काम्य यज्ञों, जिनसे सभी प्रकार की कामनायें पूरी होती हैं, इस प्रकार के अगणित प्रयोगों के वर्णन-विवरण शास्त्रों में स्थान-स्थान पर बिखरे पड़े हैं । परन्तु अपनी सारी सार्थकता, उपादेयता के बावजूद इनसे सिर्फ व्यक्तिगत स्तर के लाभों से लाभान्वित हुआ जा सकना सम्भव है । लेकिन जब एक व्यक्ति नहीं-समूचे देश, अखिल विश्व में समायी मानवजाति को स्वस्थ समृद्ध, विचारशील सद्गुण सम्पन्न बनाने के लिए पुकार उठ खड़ी हो तब ? ऐसी स्थिति में शास्त्रकार-तत्ववेत्ता ऋषि-एक स्वर से कहते हैं- "सर्वम् अश्वमेधः।"

-शत. १३/३/१/४

इतना सब ध्यान में रखने पर यह बात समझ में आ सकती है कि अश्वमेध क्यों इतना महान एवं दुष्कर प्रयोग कहा गया है ? इसे क्यों सब प्रकार के फल देने वाला, यज्ञों का राजा कहा गया है ?

अश्वमेध के संदर्भ में शतपथ ब्राह्मण का मत

वेद दिव्य अनुभूतियों के आधार पर प्रकट हुआ है, इसलिए इसे सर्वश्रेष्ठ एवं प्रामाणिक माना जाता है । वेद के चार विभाग कहे गये हैं (१) संहिता, (२) ब्राह्मण (३) आरण्यक एवं (४) उपनिषद् । यह चारों विभाग वेदज्ञान को प्रकट करते हैं । अश्वमेध के सम्बन्ध में शतपथ ब्राह्मण में जो लिखा है, वह भी वेद वचन ही है । उसे उसी प्रामाणिकता के साथ लिया जाना चाहिए ।

शतपथ ब्राह्मण के तेरहवें काण्ड में अश्वमेध का बहुत महिमामय वर्णन किया गया है । उसे यज्ञों में सर्वोपरि कहा गया है -

'राजा वाऽएष यज्ञानां यदश्वमेधः । '

अर्थात्-इन यज्ञों का राजा यह अश्वमेध है ।

-श. १३/२/२/१

मंत्र १३/१/९/-१० इस यज्ञ का प्रभाव बतलाते हुए उल्लेख है-

निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु

अर्थात् - इस यज्ञ के प्रभाव से इच्छानुसार आवश्यकता के अनुरूप पर्जन्य की वर्षा होती है । अश्वमेध बहुत व्यापक प्रयोग है । उसके प्रभाव से प्रकृति का अनुकूलन व्यापक स्तर पर होता है । ऋतुचक्र (इकॉलाजिकल साइकिल) व्यवस्थित रहने से वर्षा का समय पर होना स्वाभाविक है ।

'पर्जन्य-उत्पादकता (प्रॉडक्टिविटी) को कहते हैं । **'यज्ञात् भवतु पर्जन्यो** के अनुसार यज्ञ से उत्पादकता में वृद्धि होती है ।

शतपथ के उसी मंत्र में आगे कहा गया है-

"फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम् ।"

अर्थात् -यज्ञ के प्रभाव से हमारी ओषधियाँ वनस्पतियाँ परिपक्व होकर फलवती होती हैं ।

यज्ञ से पर्जन्य की वृद्धि और उसके कारण प्राकृतिक उत्पादन प्राणवान होते हैं-प्रभावपूर्ण होते हैं । आज प्राकृतिक उत्पादों मे पोषक क्षमता की कमी पर्जन्य की कमी के कारण ही है, उसी क्रम में आगे कहा गया है-

'योग क्षेमो नः कल्पताम्'

अर्थात्-हम सब योग (अप्राप्त की प्राप्ति) तथा क्षेम (प्राप्त की स्थिरता) से सम्पन्न बनते हैं । यज्ञीय प्रभाव से प्रचुर साधन प्राप्त होते हैं तथा प्रजा यज्ञीय भाव से प्रेमपूर्वक सकुशल रहती है ।

ऊपर की उक्तियों के अनुसार जिस क्षेत्र में अश्वमेध होता है, उस सारे क्षेत्र को प्राकृतिक स्तर पर लाभ प्राप्त होते हैं । आगे यजन करने वालों के लिए कुछ विशेष लाभ कहे गये हैं-

योऽश्वमेधेन यजते सर्वऽएव भवति सर्वस्य
वाऽएषा प्रायश्चित्तः सर्वस्य भेषजम् ।

-श.-१३/३/१/१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात् 'जो अश्वमेध का यजन करता है वह पूर्णांग (इन्द्रियों सहित स्वस्थ) हो जाता है । यह (यज्ञ) सबका प्रायश्चित रूप भूलों को विरत करने वाला एवं सबका उपचार भूलों के कारण जो रोग हो गये हों, उन्हें ठीक करने वाला भी है । शारीरिक लाभ से भी आगे उसका फल बतलाते हुए उल्लेख है-

'सर्व पाप्मानं तरति यो अश्वमेधेन यजते '।

.अर्थात्- अश्वमेध यजन करने वाला सभी प्रकार के पापों से पार हो जाता है ।

पापों को दुर्धर्ष कहा गया है किन्तु इस यज्ञानुष्ठान के प्रभाव से साधक पापों से अप्रभावित होकर लक्ष्य की ओर बढ़ने की क्षमता प्राप्त करता है ।

आगे चलकर ऋषि उसे सर्वफलदायक घोषित करते है-

सर्वमश्वमेधः सर्वस्याप्त्यै सर्वस्यावरुद्ध्यै ।

-श. १३/३/१/६

सब कुछ प्राप्त करने के लिए एवं सब प्रकार के अवरोधों के निवारण के लिए अश्वमेध सब कुछ(सर्व समर्थ) है । इससे सब कुछ प्राप्त होने का उल्लेख (इस अंक के प्रथम पृष्ठ पर शत. १३/४/१/१ के अंतर्गत) किया जा चुका है । इससे स्पष्ट होता है कि अश्वमेध मूलतः सृष्टि संचालन व्यवस्था रूप दिव्य यज्ञ का ही प्रारूप है । यह दिव्य पुरुषार्थ किसी दिव्य संकल्प के आधार पर दिव्य संरक्षण एवं मार्गदर्शन में ही किया जाना संभव है । यही कारण है कि यह यज्ञानुष्ठान सदैव से ही दुर्लभ दुःसाध्य माना गया है । ऋषिगण इसके अनुष्ठान के लिए अनुमति, संरक्षण एवं सहयोग का आश्वासन सहजता से नहीं देते थे ।

शतपथ ब्राह्मण में आगे चलकर अश्वमेध के लिए प्रयुक्त अनेक संज्ञाओं - नामों का उल्लेख करते हुए उनके अनुरूप लाभ उस क्षेत्र में सभी को मिलने की बात कहते हैं, जहाँ यह यज्ञानुष्ठान सम्पन्न किया जाता है । १३/३/७/१ से लेकर १२ तक - बारह इष्टियों में यह महिमा गायी गयी है ।

एष वै प्रभूर्नाम यज्ञः ।
यत्रैतेनयज्ञेनयजंते सर्वमेवप्रभूतं भवति ।। १।।

इस यज्ञ का नाम प्रभु है । जहाँ यह यज्ञानुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, वहाँ सब कुछ उत्पन्न हो जाता है, सब लोग प्रभुता सम्पन्न हो जाते हैं ।। १ ।।

एष वै विभूर्नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव विभूतं भवति ।। २ ।।

-इस यज्ञ का नाम 'विभु' है । जहाँ यह यज्ञानुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, वहाँ सभी लोग विभूतिवान बनते हैं ।। २ ।।

एष वै व्यष्टिर्नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजंते सर्वमेव व्यष्टं भवति ।। ३ ।।

-इस यज्ञ का नाम 'व्यष्टि ' है । जहाँ इस यज्ञ का अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, वहाँ सभी लोग (इष्ट उद्देश्यों में) सफलता प्राप्त करते हैं ।। ३ ।।

एष वै विधृतिर्नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव विधृतं भवति ।। ४ ।।

-इस यज्ञ का नाम 'विधृति' है । जहाँ यह यज्ञानुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, वहाँ सभी लोग कीर्तिवान होते हैं ।। ४ ।।

एष वै व्यावृत्तिर्नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव व्यावृतं भवति ।।५।।

-इस यज्ञ.का नाम व्यावृत्ति है । जहाँ इस यज्ञ का अनुष्ठान सम्पन्न होता है, वहाँ सभी सुरक्षित हो जाते हैं ।।५ ।।

एष वाऽऊर्जस्वान्नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमैवोर्जस्वद्भवति ।। ६।।

-इस यज्ञ का नाम ऊर्जस्वान् (दिव्य ऊर्जा प्रदान करने वाला) है, जहाँ यह यज्ञानुष्ठान सम्पन्न होता है, वहाँ सभी लोग ऊर्जस्वी (प्राणवान) हो जाते हैं ।। ६ ।।

एष वै पयस्वान्नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव
पयस्वद्भवति ।। ७ ।।

-इस यज्ञ का नाम 'पयस्वान्' है । जहाँ यह यज्ञ सम्पन्न होता है, वहाँ सभी लोग 'पयस्वी'- दिव्य रसों के भागीदार होते हैं ।। ७ ।।

एष वै ब्रह्मवर्चसी नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्तऽआ ब्रह्मणो
ब्रह्मवर्चसी जायते ।। ८ ।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस यज्ञ का नाम 'ब्रह्मवर्चसी' (ब्रह्मवर्चस् प्रदायक) है । इस यज्ञानुष्ठान में भाग लेने वालों को 'ब्रह्मवर्चस्' की प्रप्ति होती है ।। ८ ।।

एष अतिव्याधी नाम यज्ञः ।।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्तऽआ राजन्योऽति
व्याधी जायते ।। ९ ।।

-इस यज्ञ का नाम 'अतिव्याधी' है । जहाँ यह यज्ञ अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, वहाँ क्षात्र धर्म का पालन करने वाले अपने लक्ष्यवेध में समर्थ होते हैं ।। ९ ।।

एष वै दीर्घो नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्तऽआ दीर्घारण्यं जायते ।। १० ।।

-इस यज्ञ का नाम 'दीर्घ' है । जहाँ इस यज्ञ का अनुष्ठान होता है, वहाँ पुण्य वन-सम्पदा की वृद्धि होती है ।।१०।।

एष वै क्लृप्तिर्नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव क्लृप्तं भवति ।। ११ ।।

-इस यज्ञ का नाम 'क्लृप्ति' है जहां यह यज्ञानुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, वहाँ सभी लोगों की कर्म - कुशलता में वृद्धि होती है ।। ११ ।।

एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ।। १२ ।।

- इस यज्ञ का नाम 'प्रतिष्ठा' है । जहाँ यह यज्ञानुष्ठान सम्पन्न होता है, वहाँ सभी को पावन प्रतिष्ठा प्राप्त होती है ।। १२।।

शतपथ ब्राह्मण में ही समस्त कामनाओं की पूर्ति के लिए "प्रजापति" द्वारा अश्वमेध यज्ञानुष्ठान किए जाने का उल्लेख इस प्रकार है -

"प्रजापतिरकामयत । सर्वान्कामानाप्नुया ६ सर्वाव्यष्टीर्व्यश्नुवीयेति सऽएतमश्वमेधं त्रिरात्रं यज्ञक्रतुमपश्यत्तमाहरत्तेनायजत तेनेष्ट्वा सर्वान्कामानाप्नोत्सर्वा वयष्टीर्व्यासुत सर्वान्ह वै कामानाप्नोति सर्वाव्यष्टीर्व्यश्नुते योऽश्वमेधेन यजते ।"

-शत. १३/४/९/१/१

प्रजापति नें इच्छा की कि मेरी सभी कामनायें पूरी हो जायें, मुझे सभी पदार्थ मिलें । उसने इस त्रिरात्र (तीन रात वाले) यज्ञक्रतु, अश्वमेध को देखा । उसको ले आया । उससे यज्ञ किया । इस यज्ञ को करके सब कामनाओं को पूरा किया । सब पदार्थो को प्राप्त किया । जो अश्वमेध यज्ञ करता है, उसकी सभी कामनाओं की पूर्ति होती है । वह सभी पदार्थो को प्राप्त कर लेता है ।

यह सब महत्व समझने के बाद एक बात सहज रूप से मस्तिष्क में आती है कि जिसका इतना प्रमाण है, वह अश्वमेध कोई सामान्य कर्मकाण्ड नहीं कोई व्यापक अनुष्ठान ही हो सकता है । इस अनुमान की पुष्टि निम्नांकित प्रसंग से भी होती है-

प्रजापति ने अन्य यज्ञों को तो दूसरे देवताओं को दे दिया था, परन्तु अश्वमेध को अपने लिये रख लिया था ।

प्रजापतिः देवेभ्यो यज्ञान्यायदिशत् ।
आत्मन्नश्वमेधमधत्त ते देवाः प्रजापतिं
मनुवत्रेष वै यज्ञो यदश्वमेधोऽपि नोऽत्रास्तु
भाग इति ..... ।

-शतपथ १३/२/१/१

उक्त उपाख्यान से स्पष्ट होता है कि अन्य यज्ञों की अपेक्षा अश्वमेध अधिक दुष्कर प्रयोग है प्रजापति ने यज्ञ सहित सृष्टि की रचना की यह श्री मद्भगवत्गीता का मत है । उन्होंने यज्ञ के विस्तार की प्रार्थना भी अपनी प्रजा से की किन्तु अश्वमेध प्रयोग सबके लिए साध्य न समझकर उसे देवताओं को नहीं सौंपा । बाद में विशेष आश्वासन दिए जाने पर उसमें उनकी भागीदारी भी सुनिश्चित की ।

दो सहस्त्र वर्षों बाद एक अभूतपूर्व प्रयास

देव भूमि भारत के स्वर्णिम अतीत के निर्माण में जो प्रक्रियाएँ क्रियाशील रही हैं - अश्वमेध उनमें से विशिष्टतम है । इसी की उपलब्धियों - सत्परिणामों की गौरवानुभूति देश-वासियों को जगतगुरु एवम् ज्ञान-विज्ञान के चक्रवर्ती के रूप में हो सकी थी । देव संस्कृति के अध्ययन एवं अन्वेषण के लिए समर्पित पश्चिमी इतिहासकार ए. एल. बाशम के ग्रन्थ 'द वन्डर दैट वाज इण्डिया' (भारत-जो आश्चर्य था) के पृष्ठ बताते हैं कि संसार के विभिन्न भू भागों के निवासियों में, यदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहीं के लोगों ने अपने राष्ट्र को देवता और उपास्य माना है-तो वह देश भारत है । एमिल बेनवेनिस्ते के शोध अध्ययन ''वैदिक इण्डिया'' के अनुसार अश्वमेध राष्ट्रीय-उपासना की वैदिक पद्धति के रूप में प्रचलित थी । इसे एक अनुष्ठान का रूप दिया गया था जिसे शासक श्रोत्रिय (मनीषी) और जन-समूह सभी मिल-जुल कर सम्पन्न करते थे ।

कतिपय इतिहासकारों ने अश्वमेध को-राजनीतिक एकीकरण की प्रक्रिया माना है । इतिहासविद् सी. ए. ब्रौंसके अपने अध्ययन ''ए हिस्ट्री ऑफ हिस्टोरिकल राइटिंग'' में इस मान्यता को इतिहासकार की उथली दृष्टि करार देते हैं । उनके मुताबिक राष्ट्र और विश्व के राजनीतिक एकीकरण के प्रयास वर्तमान युग में भी किए गए हैं, किए जा रहे हैं । पर उनके सुखद परिणामों की वैसी अनुभूति कभी नहीं हुई जैसी वैदिक भारत के निवासी अश्वमेध अनुष्ठान में किया करते थे । यूनान ओर रोम के विजय अभियान राजनीतिक एकता की दौड़ के सिवा और क्या थे ? ब्रह्म परायण चाणक्य से करारी मात खाने वाले सिकन्दर और सेल्यूकस के मन इन्हीं राजनीतिक कल्पनाओं में रँगे थे । 'विश्व को एक करूँगा' हिटलर ने इसी संकल्प की आड़ में अपना ताना बाना बुना था । बीसवीं सदी के दूसरे दशक में मार्क्स के साम्यवाद का नारा देकर स्टालिन ने रूस में छोटे पैमाने पर यही करतब दिखाने की कोशिशें कीं । लेकिन ये ढेरों प्रयास पुरुषार्थ अपनी चरम परिणति में अश्वमेध से उतना ही दूर रहे जितना आकाश से धरती ।

इतिहासविद् ब्रौंसके के अनुसार - अश्वमेध अनुष्ठान राजनीतिक दिग्विजय अभियान न होकर सांस्कृतिक दिग्विजय अभियान थे । इतिहासवेत्ता ए. बार्थ के अनुसार इनके सांस्कृतिक स्वरूप का सबसे बड़ा प्रमाण इन यज्ञों में पुरोहित द्वारा किया जाने वाला नेतृत्व है । मनीषी बार्थ के अनुसार शासक इन यज्ञों का व्यवस्थापक भर होता था जबकि पुरोहित की भूमिका-संचालक की थी । इन महान यज्ञों का उद्देश्य राष्ट्र देवता के प्रति, जीवनमूल्यों के प्रति, विश्वास जाग्रत करना, जिन्दगी जीने की विधियों का शिक्षण देना था ।

ये सांस्कृतिक एकता के लिए किए गए प्रयास-राष्ट्र को राजनीतिक,भौगोलिक एवं भावनात्मक स्तर पर समर्थ, सशक्त और दृढ़तम बनाया करते थे । इन्हीं तथ्यों को स्वीकृत करते हुए शतपथ ब्राह्मण में राष्ट्र और अश्वमेध को परस्पर अभिन्न माना है -

श्रीर्वै राष्ट्रं । राष्ट्रं वै अश्वमेधः ।
तस्मात् राष्ट्री अश्वमेधेन यजेत् ।
सर्वा वै देवताः अश्वमेधे अन्वायत्ता ।
तस्मात् अश्वमेध याजी सर्व दिशो अभिजयति ।

-शतपथ ब्राह्मण १३/१/२/९/३

अर्थात्- समृद्धि ही राष्ट्र है । राष्ट्र ही अश्वमेध है । राष्ट्र परायण अश्वमेध करें । देवगण यज्ञ में सम्मिलित होते हैं । अश्वमेध का संयोजक सर्वजयी होता है ।

प्राचीन भारत के इतिहास में ऐसे अनेक सर्वजयी नरेशों - लोकनायकों का विवरण प्राप्त होता है जिन्होंने अपने सत्प्रयत्नों द्वारा न केवल देव संस्कृति की गरिमा का विस्तार किया बल्कि राष्ट्र वासियों में देवत्व उदय करने में सफल हुए । महाभारत के आश्वमेधिक पर्व में सुवर्च्चा के पुत्र अविक्षित का विवरण मिलता है । धर्मानुरागी, धैर्यवान और जितेन्द्रिय नरेश अविक्षित - जिनका एक नाम कारंधम भी था, सौ अश्वमेध सम्पन्न किए । महाभारतकार उनके पराक्रम की- **'य इजेहयमेधानां शतेन विधिवत्प्रभुः'** कहकर प्रशंसा करते हैं । अविक्षित की भाँति पुराणों में मरुत-मान्धाता के अश्वमेधों की विस्तार से चर्चा की गई है ।

श्रीमद्भागवत महापुराण में पृथ्वी को उपजाऊ बनाने की नवीन तकनीकों पर शोध करने वाले-महाराज प्रथु के सौ अश्वमेधों के संकल्प और उसके सत्परिणामों का विवरण मिलता है । भागवत्कार के अनुसार -

अथादीक्षित राजा तु हयमेध शतेन सः ।
ब्रह्मवर्ते मनोः क्षेत्रे यत्र प्राची सरस्वती ।।

-भागवत च. स्क. अ. २९/१

फिर प्रथु ने एक सौ अश्वमेध यज्ञ करने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संकल्प किया जहाँ पश्चिम वाहिनी सरस्वती है ब्रह्मा और मनु का ब्रह्मावर्त क्षेत्र है ।

पृथु की भाँति ऋषभदेव के पुत्र भरत जिनके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा, पूर्ण विधि के साथ सौ-सौ बार अश्वमेध सम्पन्न किए उनके वे सब यज्ञ साधारण नहीं हुए ।

द्रव्यदेश कालवय-श्शुद्धत्विग्विधोद्देशोपचितः
सर्वैरपि क्रतोभिर्यथोपदेशं शतकृत्व इयाज ।

बल्कि द्रव्य देश-काल यौवन श्रद्धा ऋत्विक इत्यादि द्वारा अतिशय बढ़-चढ़कर सम्पन्न हुए थे ।

-भागवत ५/४/१६

राजा होकर भी अश्वमेध अनुष्ठान द्वारा ऋषित्व की उपलब्धि करने वाले अम्बरीष का जिक्र करते हुए पुराणकार का कथन है -

ईजे ऽश्वमेधैरधि यज्ञमीश्वरम्
महाविभूत्योपचितांग दक्षिणैः ।
ततैर्वशिष्ठासितगौतमादिभि
छन्विन्यमिस्त्रोतम सौ सरस्वतीम् ।।
यस्य क्रतुषु गीर्वाणैः सदस्या ऋत्विजो जनाः।
तुल्य रूपाश्चा निमिषा व्यदृश्यन्त सुवाससः
स्वर्गो न प्रार्थितो यस्य मनुजैरम प्रियः ।
शृण्वद्वि रुपगायद्भिरुत्तम श्लोक चेष्टितम्।।

-भागवत ४/२२-२३-२४

अर्थ- राजर्षि और प्रसिद्ध भक्त अम्बरीष अनेक अश्वमेधादि महायज्ञों द्वारा यज्ञपति भगवान की आराधना किया करते थे । वे यज्ञ, यज्ञ के अंग और दक्षिणा आदि में सम्पत्ति व्यय करते थे । इनके यज्ञ के प्रधान ऋत्विक्, वशिष्ठ असित, गौतम आदि महर्षि गण थे । धन्वदेश जहाँ सरस्वती की धारा बहती है, उसी पुण्य क्षेत्र में अम्बरीष यज्ञ किया करते थे । उनके यज्ञ में ऋत्विज और सदस्यों की कान्ति देवताओं के समान ही दिव्य होती थी । यज्ञाराधन में तल्लीन रहने के कारण उनके पलक भी नहीं गिरते थे । यज्ञ द्वारा उत्पादित पवित्रता के प्रवाह से अम्बरीष की प्रजा में भी स्वर्ग सुख भोग की वासना नहीं रह गयी थी । सभी केवल निष्काम भाव से यज्ञ द्वारा यज्ञेश्वर भगवान की अर्चना, भक्ति में प्रवृत्त रहते थे ।

राजा बलि के अश्वमेध अनुष्ठानों की चर्चा करते हुए श्री शुकदेव मुनि परीक्षित से कहते हैं-

देवेष्थ निलीनेषु बलिवैरोचनः पुरीम् ।
देवधानीमधिष्ठाय वशं निन्ये जगत्रयम् ।।
तं विश्वजयिनं शिष्यं भृगवः शिष्यवत्सलाः ।
शतेन हय मेधानामनुव्रतमयाजयन् ।।

-भागवत ८/१५/३३-३४

यज्ञोत्पन्न तेज से युक्त राजा बलि को देख जब सभी देव अन्तर्द्धान हो गए या पलायन कर गए तब विरोचन पुत्र राजा बलि स्वर्ग के सिंहासन पर विराजमान हुए । तीनों लोक उनके अधीन हो गए । इसके उपरान्त शिष्यों पर अति स्नेह करने वाले भृगुवंशी ब्राह्मणों ने विश्व विजयी राजा बलि के इन्द्रत्व को चिरस्थाई बनाने के लिए उनसे एक सौ अश्वमेध कराए । बलि के यज्ञ का वर्णन नारद पुराण में भी मिलता है-

बुभुजे व्याहतैश्वर्य, पबृद्ध श्रीर्महाबलः ।
इयाज चाश्वमेधैः स प्रीणन् तत्परः ।।

-नारद पु. १०/३१

विश्वजित यज्ञ करके बलि अव्याहत ऐश्वर्य, बढ़ी हुई लक्ष्मी और महान बल से सम्पन्न होकर त्रिभुवन का राज्य भोगने लगे । फिर उन्होंने भगवान की प्राप्ति के लिए तत्पर होकर अनेक अश्वमेध-यज्ञ किए ।

महाराज बाहु ने सातों द्वीपों में सात अश्वमेध यज्ञ किए । उनके राज्य काल में यज्ञ की महिमा से पृथ्वी अन्न-फल-फूलों से भरी रहती थी । देवराज इन्द्र समयानुसार वर्षा करते थे । पापाचारियों का अन्त होने के कारण, वहाँ की प्रजा धर्म से रक्षित रहती थी ।

रावण के आतंक को धूलिधूसरित कर धरती पर स्वर्ग का अवतरण करने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम को अश्वमेध का यजन करने की सलाह देते हुए लक्ष्मण ने कहा-

अश्वमेधो महायज्ञः पावनः सर्व पावनाम्
पावनस्तव दुर्धर्षो रोचतां रघुनन्दन ।।

-बा. रा. उत्तरकाण्ड ८४/२,३

हे रघुनन्दन ! सम्पूर्ण पापों से पवित्र करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वाला अश्वमेध यज्ञ है । हे दुर्धर्ष ! यदि आपकी इच्छा हो तो वही यज्ञ कीजिए ।

जब भगवान राम ने अपने अश्वमेध यज्ञ के बारे में वामदेव - जाबाल कश्यप आदि ऋषिगणों से चर्चा की तो-

तेपिरामस्य तच्छ्रुत्वा नमस्कृत्वा वृषध्वज ।
अश्वमेधं द्विजा सर्वे पूजयन्तिस्यसर्वशः ।।

-वा. राम उत्तराकाण्ड ९४/७

वे ऋषि रामचन्द्र जी की वाणी का श्रवण कर भगवान शिव को प्रणाम कर, अश्वमेध यज्ञ की प्रशंसा करते कहते हैं ।

कुरु कुरु महाभाग धर्मारण्ये त्वमुत्तमम् ।
दिने-दिने कोटि गुणं यावद्वर्ष शतं भवेत् ।

-स्क. पु. ३/३५/१४

हे महाभाग रामचन्द्र जी ! आप इस धर्मारण्य में उत्तम यज्ञानुष्ठान कीजिए । इस यज्ञ के प्रभाव से स्थल की पवित्रता सौ वर्ष तक बढ़ती चली जायगी, जो मनुष्यों में कोटि-कोटि कोटि सद्गुणों का विकास और वृद्धि करती रहेगी ।

काशिराज दिवोदास ने ब्रह्माजी के कथन को स्वीकार कर यज्ञ सामग्री इकट्ठी की । जिसकी सहायता से ब्रह्माजी ने अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किए -

तीर्थ दशाश्वमेधारण्तं प्रथितं जगती तले ।
तदाप्रभूति तत्रासीद्वाराणस्यां शुभप्रदम् ।।
पुरा रुद्र सरोनाम तीर्थ कलशोद्भव ।
दशाश्वमेधकं पश्चाज्जातं विधि परिग्रहात् ।।

-स्क. पु. ४/५२/६८/६९

उस दिन से वाराणसी में दशाश्वमेध नाम से वह तीर्थ प्रख्यात हुआ । पहले उसका नाम रुद्र सरोवर था । दस अश्वमेध करने से ही उसका नाम दशाश्वमेध तीर्थ हुआ ।

गर्ग संहिता अश्वमेध खण्ड १०/७ में भगवान कृष्ण द्वारा उग्रसेन से अश्वमेध सम्पन्न कराने का वृतान्त मिलता है । उन्हीं की प्रेरणा व व्यास के कथन के उपरान्त सम्राट युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध सम्पन्न किए जाने के विवरण महाभारत अश्वमेधिक पर्व ७१/१४ में मिलता है । इस विवरण के अनुसार युधिष्ठिर ने तीन अश्वमेध सम्पन्न किए । युधिष्ठिर की इस महान परम्परा का निर्वाह उनके उत्तराधिकारी परीक्षित (१/१६/३) और जनमेजय ने किया ।

जनमेजय द्वारा अश्वमेध सम्पन्न किये जाने के बाद से अश्वमेध की परम्परा अस्त व्यस्त हो गई । इसी अस्त-व्यस्तता के परिणाम राष्ट्र की राजनीतिक विशृंखलता, समृद्धि ह्रास, जीवन मूल्यों के पतन के रूप में दिखाई देने लगे । स्थिति की गम्भीरता समझ कर सेनानी पुष्यमित्र ने ईसा से १८५ ई. पूर्व अश्वमेध अनुष्ठान सम्पन्न कर नए सिरे से राष्ट्र की समर्थता का आयोजन किया । उनके इस यज्ञ का वर्णन 'इपीग्राफिया इण्डिका' में विस्तार से मिलता है ।

पुष्यमित्र के बाद भारत की दृढ़ स्थिति अग्निमित्र वसुमित्र तक बनी रही । बाद में काल प्रवाह में इसकी कड़ियां बिखरीं जिन्हें सँजोने सँवारने का अश्वमेध पराक्रम सम्राट चन्द्र गुप्त प्रथम के पुत्र तथा गुप्त वंश के द्वितीय सम्राट समुद्र गुप्त ने किया । उन्होंने अश्वमेध अनुष्ठान के द्वारा समतट, डुवाक, कामरूप, नेपाल, कर्तपुर , पूर्वी एवं मध्य पंजाब, मालवा, तथा पश्चिमी भारत के गण राज्यों, कुषाणों और शकों को एकता का शिक्षण दिया । अश्वमेध के प्रभाव से समूचा दक्षिण एकता सूत्र में बँधे बिना न रह सका । उनके शौर्य से अभिभूत होकर पश्चिमी इतिहासकार उन्हें नैपोलियन की उपाधि से सम्बोधित करते हैं । उनके द्वारा किए अश्वमेध की स्मृति का नवीकरण कुमारगुप्त का विलसंद अभिलेख, पढ़कर तथा 'इपीग्राफिया इण्डिका' के पृष्ठों को उलट-पुलट कर किया जा सकता है ।

समुद्रगुप्त के बाद जिन राजाओं द्वारा अश्वमेध सम्पन्न करने के विवरण मिलते हैं, वह वस्तुतः चिन्ह पूजा मात्र हैं । उनमें न तो सांस्कृतिक वैभव है न भावनात्मक विस्तार और न जन-जीवन को जीवन बोध करा सकने की सामर्थ्य । दशमावतार की वर्तमान आश्वमेधिक श्रृंखला सम्राट समुद्र गुप्त के बाद किया गया पहला वास्तविक और सफल प्रयास समझा जा सकता है । इन महायज्ञों के द्वारा न केवल अतीत भारत की ऐतिहासिक घटनाएँ स्वयं को दुहराएँगी बल्कि इनके सत्परिणामों के रूप में सतयुग का उदय, समृद्धि, ज्ञान, विज्ञान का विस्तार,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्वराष्ट्र का उदय, वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव विस्तार जैसी चमत्कारी उपलब्धियों की प्रत्यक्ष अनुभूति हुए बिना न रहेगी ।

दशमावतार की अश्वमेध प्रक्रिया

कौन करेगा ? कैसे होगा ? इक्कीसवीं सदी में उज्ज्वल-भविष्य आने की घोषणा ? सुनने वालों के मन में ऐसे न जाने कितने सवालों का उठना स्वाभाविक है । भौतिक क्षेत्र में जहाँ विपत्तियों की बाढ़ है वहाँ आत्मिक क्षेत्र में विकृतियों का अंधकार छाया हुआ है । समस्याएँ दो-चार हों तो समाधान सोचे जायँ । स्थिति कुछ ऐसी बन पड़ी है कि समस्याओं की गिनती करने में ही इनसानी बुद्धि का दिवाला निकल चुका है । घर-परिवार के छोटे दायरे से लेकर राष्ट्र - विश्व की व्यापक परिधि तक करुण कराहों का कुहराम मचा है । मूर्धन्यों से लेकर जनसाधारण तक सभी इस पर एक मत हो चले हैं कि परिस्थितियाँ मनुष्य के बूते के बाहर हैं ।

लेकिन मनुष्य का बल है ही कितना ? विशाल ब्रह्माण्ड में गतिशील हलचलों और परिस्थितियों में उसका स्थान नगण्य सा है । सिर पर खड़े पानी से लदे बादल तक को वह बरसा नहीं सकता । मौत-बुढ़ापे तक को रोकने में असमर्थ है । अपनी यह असमर्थता जिस दिन उसे समझ में आ जाती है, उसी क्षण वह सामर्थ्य अवतरित होने लगती है-जो धरती से लाखों गुना भारी भरकम ग्रह-नक्षत्रों को उनकी कक्षाओं में ऐसे आसानी से घुमाती है जैसे कोई बालक गेंद घुमाता है । यह वही सामर्थ्य हैं जिसके संकेत मात्र पर प्रकृति सामान्य नदी की तरह अपना करतब दिखाने के लिए विवश है । यह सृष्टि उसी की रचना है और उसे अपनी इस सुरम्य रचना का दुःखद अन्त कदापि सहन नहीं ।

सृष्टि के इतिहास में जब कभी विनाश की घटाएँ-गहराई हैं, तब उसी का समाधान करने के लिए सूक्ष्म-जगत में एक दिव्य चेतना प्रादुर्भूत होती रही है । इस दिव्य चेतना को ही भगवान का अवतार कहा जाता रहा है । समय की आवश्यकता के अनुसार ही वह अपना स्वरूप प्रकट करते रहे हैं । युग की समस्याओं से उत्पन्न असन्तुलन को सही करने और युग प्रवाह को उलटने के लिए भगवान उसी क्रम में लीला रचते रहे हैं ।

सृष्टि के आरम्भ में सर्वत्र जल ही जल था । प्राणि जगत में जलचरों की ही प्रधानता थी, तब उस असन्तुलन को मत्स्यावतार ने साधा सन्तुलित किया । जब जल और थल पर प्राणियों की हलचलें बढ़ीं तो उसके अनुरूप कच्छप काया ने सन्तुलन बनाया । उन्हीं के नेतृत्व में समुद्र मंथन के रूप में प्रकृति दोहन का पुरुषार्थ सम्पन्न हुआ । हिरण्याक्ष ने समुद्र में छिपी सम्पदा को ढूँढकर उसे अपने ही एकाधिकार में कर लिया तो भगवान का वाराह रूप ही उसका दमन करने में समर्थ सक्षम हो सका ।

जब मनुष्य अपनी आवश्यकता से अधिक कमा सकने में समर्थ हो गया तो संकीर्ण स्वार्थपरता से प्रेरित संचय की प्रवृत्ति भी बढ़ी । संचय और उपभोग की पशु प्रवृत्ति को उदारता में परिणत करने के लिए भगवान वामन के रूप में छोटे-बौने और पिछड़े लोग उठ खड़े हुए और बलि जैसे सम्पन्न व्यक्तियों को स्वेच्छापूर्वक उदारता अपनाने के लिए सहमत कर लिया ।

उच्छृंखलता जब उद्धत और उद्दंड हो जाती है तो शालीनता से उसका शमन नहीं हो सकता-प्रत्याक्रमण द्वारा ही उसका दमन करना पड़ता है । ऐसे अवसरों पर नृसिंहों की आवश्यकता पड़ती है और उन्हीं का पराक्रम अग्रणी रहता है । उन परिस्थितियों में भगवान ने नर और व्याघ्र का समन्वय आवश्यक समझा ताकि नृसिंह अवतार के रूप में दुष्टता के दमन एवं सज्जनता के संरक्षण का आश्वासन पूरा हुआ ।

स्वरूप कुछ भी क्यों न रहा हो, भगवान के अवतरण की प्रतिज्ञा एक ही रही है - 'दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन, सत्प्रवृत्तियों का सम्वर्धन । मनुष्य के क्षात्रबल, ब्रह्मतेज, शौर्य और भावना को उमगा-उकसाकर अवतार चेतना अपना संकल्प पूरा करती रही है । ऐसा नहीं है कि मनुष्य में शौर्य और भावना का सर्वथा अभाव रहता हो । पर अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एकांगीपन के कारण भावना विहीन शौर्य विनाश के उन्मादी ठहाके लगाया करता है और शौर्य विहीन भावना अकर्मण्यता की बेड़ियों से कसी-बँधी आँसू बहाया करती है । अवतार का लीला संदोह मनुष्य की इन दोनों विभूतियों के बीच सामंजस्य पैदा कर इन्हें सही दिशा में सुनियोजित कर देता है ।

अपनी इस अलौकिक सामर्थ्य और क्रियापद्धति की विशेषताओं के कारण 'यज्ञ' को भी भगवान का स्वरूप और अवतार माना गया है । शास्त्रकारों ने - **''यस्य राष्ट्रे पुरे चैव भगवान यज्ञ पुरुषः ।**
इज्यते स्वेन धर्मेण जनैः वर्णाश्रमान्विते ।।''
कहकर इसका माहात्म्य बताते हुए भगवान यज्ञ पुरुष की संज्ञा दी है । हो भी क्यों न ? देवपूजन, संगतिकरण और दान यज्ञ से निष्फल ये तीनों प्रवृत्तियाँ व्यक्ति और समाज के उत्कर्ष की तीन धाराएँ ही हैं । देवपूजन का अर्थ है परिष्कृत व्यक्तित्व-दैवी सद्गुणों का अनुगमन । संगतिकरण अर्थात् एकता-सहकारिता संघबद्धता, दान अर्थात् समाज परायणता, विश्व कौटुम्बिकता उदार सहृदयता । यही वे तीन शाश्वत सूत्र हैं जिनसे मानव और सृष्टि की प्रत्येक समस्या का समाधान सहज संभव है । इनकी शिक्षण प्रणाली को अवतार चेतना का नाम देना यथार्थ ही है ।

अंशावतार होते हैं कलावतार भी । पूर्णावतार होने की बात भी दिव्यदृष्टा ऋषियों ने कही है । अपने विभिन्न स्वरूपों और अनेकों प्रकारों में अंश और कला की अभिव्यक्ति करते हुए यज्ञ जहाँ अपनी पूर्णता प्राप्त करता है-वह-अश्वमेध है । इसे पहली बार भली प्रकार विकसित करने और पूर्णता देने वाले महाराज पृथु को चौबीस अवतारों में गिना गया । पृथु द्वारा किए गए अश्वमेध का वर्णन करते हुए भागवतकार कहता है-

अथादीक्षत राजा तुहयमेधेन शतेन च ।
ब्रह्मावर्ते मनोः क्षेत्रे यत्र प्राची सरस्वती ।।

-भागवत ४/१९/

''मैत्रेय जी कहते हैं कि हे विदुर जी! महाराज मनु के ब्रह्मावर्त क्षेत्र में, जहाँ सरस्वती नदी पूर्वमुखी होकर बहती हैं, राजा पृथु ने सौ अश्व मेधोंकी दीक्षा ली ''''फिर पृथु ने एक सौ अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया जहाँ पश्चिम वाहिनी सरस्वती है ब्रह्मा और मनु का ब्रह्मावर्त क्षेत्र है ।

पृथु के बाद अवतार और अश्वमेध जैसे परस्पर घुल-मिल गए । अवतार अश्वमेध हो गया और अश्वमेध अवतार । 'अश्वमेध' के अर्थ गाम्भीर्य पर विचार करें तो रहस्य समझ में आ जाता है । मेध शब्द का प्रयोग जब बलि के अर्थों में किया जाता है तो उसका तात्पर्य है-दुष्प्रवृत्तियों का विनाश, क्रूरता, पशुता, नृशंसता उन्मूलन, विच्छेदन, हनन । मेध का प्रयोग मेधा के अर्थों में प्रधानतः लिया जाता है । इसके द्वारा मनुष्य के ब्रह्मवर्चस् सोई संवेदना, विचार-शक्ति सत्प्रवृत्तियों का जागरण-पोषण, अभिवर्धन, संकल्प मूर्त होता है । अश्व की शब्द व्युत्पत्ति पर ध्यान दें-
''अश् - क्वन् अश्नुते अछानम् अश्नुते व्यापनोति'' अर्थात् तीव्र गति वाला, मार्ग पर व्याप्त हो जाने वाला । इन अर्थों में अश्वमेध-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन का तीव्रतम सर्वव्यापी होने वाला प्रयास है ।

इन सभी का अवतरण बढ़ते हुए अनाचरण के प्रतिरोध और सदाचरण के समर्थन - पोषण के उद्देश्य के लिए हुआ । परशुराम ने **''अग्रतः चतुरो वेदाः पृष्ठः सशरो धनुः''** का स्वरूप धारण कर सामन्तवादी निरंकुश आधिपत्य को समाप्त कर ब्रह्म विद्या का प्रचार विस्तार किया । राम ने मर्यादाओं के पालन पर जोर दिया तो कृष्ण ने धूर्तता और छल छद्म से घिरी परिस्थितियों का शमन **''विषस्य विषमौषधम्''** की नीति अपनाकर किया ।

धर्म क्षेत्र में विकृतियाँ बढ़ीं तो उसका स्वरूप साबुन से भी गन्दगी फैलने जैसा हो गया । मद्य-मांस मीन-मुद्रा और मैथुन के पंचमकार धर्म की आड़ में लोक व्यवस्था को तहस-नहस करने लगे और जन-जीवन में अस्त-व्यस्तता आने लगी । ऐसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थिति में बुद्ध ने धर्म व्यवस्था के लिए सज्जनों को संगठित कर विवेक को सर्वोपरि स्थान पर प्रतिष्ठित किया । "**धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि, बुद्धं शरणं गच्छामि,** ही बुद्ध का लीला संदोह है । इसका शंखनाद सुनकर बुद्ध के आवाहन पर लाखों परिव्राजक सांस्कृतिक दिग्विजय के लिए निकल पड़े

परिस्थितियाँ बदलती रही हैं । इसके लिए भगवान को भी अपना आधार बदलते रहना पड़ा है । अश्वमेध अभियान भी तदनुरूप अपने नए स्वरूप और नई विशिष्टताओं के साथ आयोजित हुए हैं । विकास क्रम की व्यवस्था के अनुरूप भगवान के अवतार का स्वरूप स्तर तथा कार्यक्षेत्र भी विस्तृत होता चला गया । मनुष्य जब तक साधन प्रधान और काय प्रधान था तब तक शस्त्रों और साधनों से काम चलता रहा । लेकिन वर्तमान में परिस्थितियाँ भिन्न हैं ।

इस समय बुद्धि-तत्व चतुर्दिक छाया हुआ है । महत्वाकांक्षाओं के क्षेत्र में अनात्म-तत्व की भरमार होने के कारण सम्पन्नता और समर्थता का दुरुपयोग ही बन पड़ रहा है । इस विकृति का क्षेत्र सीमित नहीं रहा वरन समूची मानव जाति को ही इसने जकड़ रखा है । विज्ञान की उपलब्धियों से दुनिया बहुत छोटी हो गई । गतिशील तेजी से सिमटती और द्रुत गति से भागती दुनिया में भगवान का अवतार युगान्तरीय चेतना के रूप में ही हो सकता है । इसी रूप में जनमानस के सुविस्तृत क्षेत्र में अवतार का संकल्प मूर्त होना सम्भव है ।

पूर्वार्ध में बुद्ध ने धर्म-चक्र का प्रवर्तन किया था । सांस्कृतिक विजय की वैजयन्ती फहराई थी । लाखों व्यक्तियों ने इस प्रक्रिया में अपना योगदान सम्पन्न किया । आनन्द जैसे मनीषी, बिम्बिसार जैसे श्रीमंत, अम्बपाली जैसे कलाकार और अंगुलिमाल जैसे दुस्साहसी, पराक्रमी प्रतिभाशाली लोग बड़ी संख्या में अपने तरह के अनूठे उस अश्वमेध अभियान के अंग बने थे । बुद्ध के पहले हुए अवतारों का कार्यक्षेत्र सीमित था । उनके समय की समस्याएँ छोटी और स्थानीय थीं । बुद्धकाल तक समाज विस्तार बड़े क्षेत्र में हो गया था । इसलिए बुद्ध का कार्य भी भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं रहा । उन दिनों जितने व्यापक प्रयास सम्भव थे वे सभी अपनाए गए । इसका प्रभाव भी पूरे एशिया में फैला । उससे भी आगे बढ़कर अन्य महाद्वीपों तक अपना आलोक पहुँचाया ।

बुद्धावतार का उत्तरार्ध कल्कि अवतार (प्रज्ञावतार) है, जो इन दिनों सम्पन्न हुआ है । भविष्य पुराण में किए गए अलंकारिक चित्रण में कल्कि भगवान को घोड़े पर सवार हाथ में तलवार लिए चित्रित किया गया है । यह और कुछ नहीं उनके द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले अश्वमेध अभियान का संकेत भर है । बुद्धि प्रधान इस युग में समस्याएँ भी चिन्तन प्रधान हैं । मनुष्य की प्रेरणाओं का केन्द्र मान्यताएँ-विचारणाएँ, इच्छाएँ होती हैं । उन्हीं के प्रवाह में समाज बहता है । ऐसे समय में अवतार का स्वरूप भी तदनुरूप ही हो सकता है । समाधान भी अश्वमेध में छुपे अर्थ गाम्भीर्य को प्रकट करने पर ही सम्भव है ।

लोकमानस में घुस पड़ी विकृतियों को उलटने तथा अवांछनीयता, अनैतिकता एवं मूढ़ मान्यताओं को निरस्त करने में अश्वमेधिक - सांस्कृतिक दिग्विजय अभियान ही सफल हो सकता है । मानवी चेतना को उत्कृष्टता की दिशा में घसीट ले जाने वाला और सामाजिक क्षेत्रों को समान रूप से प्रभावित करने वाला प्रवाह ही अपने समय का अवतार हो सकता है और वही हो भी रहा है । कल्कि अवतार और उसके विश्वव्यापी अश्वमेध अभियान को इसी रूप में देखा समझा जा सकता है ।

अवतार का आवेश दिव्य आत्माओं पर उतरता और उसे जो अभीष्ट होता है करा लेता है । दिव्य आत्माएँ उसकी प्रक्रिया निमित्त मात्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनती हैं । महाकाल किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, वह केवल जागृत् आत्माओं और साथ देने वालों पर प्रकट होता और अनुग्रह करता है । परमपूज्य गुरुदेव ने महाप्रयाण से पूर्व ही यह घोषणा की थी कि जो कार्य स्थूल शरीर से संभव नहीं हुआ उससे लाखों गुना कार्य कारण सत्ता करेगी । अब तक जो हो चुका था वही क्या कुछ कम था ? आगे की तो घोषणा की थी कि जो कार्य स्थूल शरीर से संभव नहीं हुआ उससे लाखों गुना कार्य कारण सत्ता करेगी । अब तक जो हो चुका था वही क्या कुछ कम था ? आगे की तो कल्पना कर सकना संभव नहीं था । करोड़ों व्यक्ति इस तथ्य के साक्षी हैं कि श्रद्धांजलि देवसंस्कृति को जन-जन तक पहुँचाने, असुर संस्कृति को मार भगाने के लिए एक जुट हुए देवत्व का शपथ समारोह कितना बृहद और व्यापक था ? जिस तरह प्राचीन काल में भगवती हारे हुए देवताओं की रक्षा का उद्घोष करती रही हैं, उसी तरह शपथ समारोह के अवसर पर परम वन्दनीया माताजी ने देव संस्कृति दिग्विजय दशाश्वमेधों की घोषणा की । यहाँ से महाकाल के दशमावतार के युग - निर्माण संकल्प का उत्तरार्द्ध प्रारम्भ हुआ ।

तब यह समझ में नहीं आ रहा था कि अश्वमेध स्तर के आयोजन सुने तो गये हैं, पर उनके स्वरूप का किसी को भी पता नहीं है महाकाल ने उँगली पकड़ कर जिस स्थिति तक पहुँचा दिया है, वह स्वतः में किसी अदृश्य सत्ता के चमत्कार से कम नहीं है । अब तो सर्वत्र एक ही स्वर, एक ही सृष्टि, एक ही सृजन गूँज रहा है, जिसका नाम है- ''देवसंस्कृति दिग्विजय'' ।

यह तुमुल उद्घोष अब इतना विराट हो गया है कि धरती के कोने-कोने तक जा पहुँचा है । जिधर कान लगाओ उधर एक ही आवाज सुनाई देती है, युग परिवर्तन, देव संस्कृति दिग्विजय और अश्वमेध, अश्वमेध, अश्वमेध । प्राचीन काल के इतिहास की मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण की किस तरह पुनरावृत्ति होने जा रही है, लोग यह स्पष्ट अपनी इन्हीं आँखों से देख सकेंगे । यह इस युग की असाधारण कृति है ।

वातावरण अनुकूलन के लिए प्रचण्ड साधना-पुरुषार्थ की आवश्यकता

इन्द्रियों की पकड़ में प्रयास ही आता है । मोटी बुद्धि पदार्थों को ही देखती और उतने को ही सब कुछ समझती है । यही कारण है कि मनुष्य अपने आप को शरीर मान बैठता है और सुविधा साधनों के सहारे आमोद मनाता ओर पुरुषार्थ प्रकट करता रहता है । इस पर भी यह मान कर नहीं चलना चाहिए कि प्रत्यक्ष ही सब कुछ है । परोक्ष अदृश्य जगत का वैभव उससे कहीं अधिक व्यापक एवं समर्थ है जितना कि चर्म चक्षुओं से दृष्टिगोचर होता है ।

जल थल दीखते हैं । आकाश शून्य प्रतीत होता है । किन्तु वास्तविकता भिन्न है । ठोस और द्रव पदार्थ सीमित और वाष्पी भूत द्रव्य उससे असंख्य गुना अधिक ही नहीं सामर्थ्यवान भी है । सूर्य द्वारा निसृत ऊर्जा का भंडार आकाश में इतनी बड़ी मात्रा में ज्वलन्त है जिसकी तुलना में पृथ्वी पर ईंधन के माध्यम से जलने वाली ताप शक्ति नगण्य जितनी ठहरती है । इस विश्व में जितनी पदार्थ सम्पदा है उसका ठोस और द्रव स्वरूप तो ५ प्रतिशत मात्र है शेष ९५ प्रतिशत वायु भूत होकर अनन्त आकाश में अदृश्य रूप में भरा रहता है । ताप प्रकाश और ध्वनि तरंगें आकाश में परिभ्रमण करती हैं । रेडियो तरंगें, लेसर किरणें, जैसी अनेक अदृश्य शक्तियों का यह आकाश एक प्रकार से भंडार ही है । पवन की प्राणशक्ति अन्न, जल से भी अधिक महत्वपूर्ण है । यह समस्त वैभव अन्तरिक्ष में ही उड़ता फिरता है ।

शरीर त्यागने के उपरान्त प्राणियों की जीवात्मा वायु भूत होकर इसी आकाश में अपना अस्तित्व रखे रहती है । प्रेत, पितर, देव, दानव, अशरीर आत्माएँ धरातल पर रहने वाले प्राणियों की तुलना में असंख्य गुनी अधिक हैं । उनका निवास आश्रय इस अन्तरिक्ष में ही है । अदृश्य जगत की हलचलों से यह दृश्य जंजाल प्रभावित होता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऋतु परिवर्तनों की पृष्ठ भूमि आकाश में ही बनती है । यदि उस क्षेत्र में प्रतिकूलता पनपे तो अनावृष्टि हिम युग 'उपल वृष्टि, ताप दाह, महामारी तूफान जैसी अनेक विपत्तियां धरती पर बरस सकती हैं । और प्राणियों के पुरुषार्थ को धूलि में मिलाकर रख सकती हैं ।

धरती का वैभव मात्र उसका अपना नहीं है । अन्तर्ग्रही अनुदान मिलने से ही वह ऐसी सुन्दर समुन्नत दृष्टिगोचर होती है । यह सौभाग्य जिन ग्रहों को नहीं मिला वे अनगढ़ रह गये । उत्तरी ध्रुव से धरती अन्तर्ग्रही अनुदानों को खींचती है । उपयोगी हजम करने के बाद जो कचरा बचता है उसे दक्षिण ध्रुव मार्ग से अन्तरिक्षीय खत्ते में पटक देती है । सूर्य से पृथ्वी की दूरी एवं स्थिति ऐसी है जिससे उचित मात्रा में प्रकाश ताप का अनुग्रह बरसता रहे । यदि अन्तरिक्षीय असंतुलन की शिकार रही होती तो पृथ्वी भी बुध की तरह अग्नि पिण्ड बन कर रहती या प्लूटों की तरह उसमें असहाय शीत होता । देवलोक, स्वर्ग लोक और अन्तरिक्ष की संगति ठीक प्रकार बैठ जाती है । उसमें सुखद का बाहुल्य है साथ ही ऐसा घातक भी कम नहीं है जिसकी तुलना नरक से की जा सके ।

वैज्ञानिकों ने अपने इसी विश्व ब्रह्माण्ड के साथ गुथे हुए एक प्रतिद्वन्द्वी विश्व का अस्तित्व ढूँढ निकाला है । उसकी चर्चा इन दिनों-एन्टी युनिवर्सल एन्टी मैटर के रूप में जोरों से हो रही है और कहा जा रहा है कि यदि इन दोनों के बीच कभी कारण वश अनबन ठन जाय तो अधिक शक्तिशाली होने के कारण प्रति विश्व इस प्रत्यक्ष विश्व को देखते-देखते निगल जायगा ।

यह अदृश्य चर्चा यहाँ इसलिए की जा रही है कि व्यक्ति और समाज के सामने उपस्थित असंख्यों समस्याओं को मात्र प्रत्यक्ष परिस्थितियाँ के साथ ही नहीं जोड़ना चाहिए वरन् यह भी देखना चाहिए कि अदृश्य के साथ उसका कोई सूत्र तो नहीं जुड़ा हुआ है । कठपुतली के इस अभिनय के पीछे कहीं कोई अदृश्य तार तो गतिशील नहीं हो रहे हैं । तथ्य इस संभावना के समर्थन वाली साक्षी देते हैं ।

जिस प्रकार वायु प्रदूषण कोलाहल, विकिरण, चक्रवात, तूफान जैसे कारणों से अन्तरिक्ष गड़बड़ा जाता है और दैवी प्रकोपों की ऐसी अनेक दुर्घटनाएँ घटित होने लगती है जिनके कारण धन-जन की असाधारण हानि होने लगे । प्रागैतिहासिक काल में अनेक बार समुद्र उमड़े और थल को उदरस्थ करके इस धरातल को दल-दल में बदल गये । अनेकों हिम युग आये हैं जिनमें पृथ्वी पर बर्फ की मोटी परत जमने से प्राणियों का निर्वाह संभव न रहा । जो मुट्ठी भर जहाँ तहाँ बच गये उन्हीं से फिर नई प्रजा उत्पन्न हुई अग्नि वर्षा की भी अनेक बार पुनरावृत्ति हुई । जिसने हरीतिमा एवं जल के दर्शन दुर्लभ कर दिये । ऐसे असंतुलन प्राकृतिक कारणों से भी होते हैं पर कई बार मनुष्य कृत उद्दण्डता भी कम भयानक प्रक्रिया उत्पन्न नहीं करती । प्रस्तुत वायु प्रदूषण और अणु विकरण से उत्पन्न विभीषिका की कल्पना मात्र से लोगों के कलेजे हिल रहे हैं ।

वायु मण्डल पदार्थ परक है । वातावरण चेतना परक । मानवी सत्प्रवृत्तियों एवं दुष्प्रवृत्तियों की घट बढ़ से वातावरण प्रभावित होता है और उस कारण प्राणियों की प्रकृति में उथल पुथल उत्पन्न होती है । मनः स्थिति का परिस्थिति पर पड़ने वाला प्रभाव सर्वविदित है । सतयुग में जब सत्प्रवृत्तियों का बाहुल्य था तो प्रकृति की अनुकूलता से सभी सुखी थे । अब जब लोक मानस में निकृष्टता बढ़ने से दुष्ट भ्रष्ट आचरण बढ़ चले तो प्रकृति की प्रतिकूलता भी अपनी भयानकता दर्शाने लगी । अदृश्य वातावरण में विकृतियाँ भरने से लोक चिन्तन में पतनोन्मुख उद्दंडता असुरता के तत्व बढ़ते हैं । फलतः दुर्बुद्धि जन्य दुर्गतिका पग-पग पर परिचय मिलता है ।

ऋतु परिवर्तन का मनुष्य सहित सभी प्रणियों की मनःस्थिति में अन्तर आता है । वसन्त में सर्वत्र उल्लास उमंगता है । वर्षा की सजलता एवं हरीतिमा मनोभूमि को भी तरंगित करती है । गर्मी में सभी हँसते-काँपते जान बचाते, छिपते छिपाते फिरते हैं । वायु मंडल में भरने वाली सुषमा एवं विषाक्तता अपने अपने प्रभाव छोड़ती है । ठीक इसी प्रकार वातावरण में यदि असुरता भर चले तो समझना चाहिए उस प्रवाह में हल्के-फुलके तिनके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पत्ते सहज ही उड़ने बहने लगेंगे । युद्धोन्माद कभी जन मानस पर छाता है तो तनिक तनिक सी बात पर तलवारें खिंचती हैं । कामुकता का उफान आता है तो समर्थ असमर्थ उचित अनुचित का विचार छोड़ कर अश्लील आचरण करने लगते हैं । इसी प्रकार अन्यान्य भली बुरी प्रवृत्तियाँ भी ऋतु प्रभाव की तरह ही उतरती और अपना प्रभाव दिखाती है ।

सृष्टा ने वायु मण्डल और वातावरण की संरचना अनुकूलताओं और उपयुक्तताओं से भरी पूरी बनाई है । इन्हें विकृत तो मनुष्य की दुष्प्रवृत्तियाँ ही करती हैं । धुआँ, घुटन, वायु प्रदूषण, कोलाहल, विकरण उसी की देन है । वृक्षों को धराशायी उसी ने बनाया है । इसी प्रकार भ्रष्ट चिन्तन दुष्ट आचरण और निकृष्ट व्यवहार से उत्पन्न विषाक्तता अदृश्य वातावरण को बिगाड़ती है उसी के फल स्वरूप प्रकृति प्रकोप उभरते और दुष्प्रवृत्तियों के प्रवाह उफनते हैं । इससे बीज से वृक्ष, वृक्ष से बीज का चक्र घूमने लगता है । दुष्टता से अदृश्य जगत में संव्याप्त वातावरण विक्षुब्ध होता है । वातावरण के विक्षोभ से अवांछनीयताओं की बाढ़ आती और विनाश विभीषिकाओं की बिजली कड़कती है । इन दिनों यही हो रहा है । न केवल प्रत्यक्ष विग्रहों संकटों की भरमार है वरन् अदृश्य से बरसने वाली विभिन्नता भी विनाश संकट बढ़ाने का निमित्त कारण बनती जा रही है ।

उपाय दोनों ही क्षेत्रों के होने चाहिए । प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने के लिए समाज के सभी मूर्धन्य तत्वों को इसके लिए अपने-अपने ढंग से प्रयत्न करने चाहिए । अनाचार दमन में शासन की कारगर भूमिका हो सकती है । साहित्य कला, व्यवसाय, लोक सेवा के क्षेत्र सृजन और सुधार में अपने-अपने उत्तरदायित्व निबाहें । जन मानस के परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्धन का उत्तरदायित्व विशेषतया प्रज्ञा परिवार ने आगे बढ़ कर अपने कंधों पर उठाया है । उन प्रयासों में लोक मंगल में रुचि रखने वाले सभी विचार शील सहयोग कर रहे हैं और करेंगे । इसका प्रभाव परिणाम तो उत्तम ही होगा । शुभ का बीजारोपण मंगलमयी फसल ही उत्पन्न करता है ।

यह प्रत्यक्ष की चर्चा हुई । प्रसंग अप्रत्यक्ष का अभी भी शेष रह जाता है । संशोधन परिमार्जन अदृश्य का भी होना चाहिए । अन्यथा प्रत्यक्ष उपाय उपचारों से अपूर्णता ही बनी रहेगी । चिरस्थायी समाधान न मिल सकेगा । रामायण काल में लंकाकाण्ड के अन्तर्गत असुरों का संहार हुआ था और सीता को वापिस लाया गया था । इतने भर से दृश्य समाधान ही हाथ लगा । राम राज्य स्थापना के लिए-सतयुग की वापिसी के लिए जिस अदृश्य अनुकूलता की आवश्यकता थी वह कहीं दृष्टि गोचर नहीं हो रही थी । असुरों के शरीर ही मरे थे । संव्याप्त असुरता की अदृश्य घटाएँ इस बात का संकेत कर रही थीं कि आतंक की फिर नये सिरे से नये स्वरूप में उभरने की पूरी-पूरी आशंका है । अदृश्य के परिशोधन हेतु दशाश्वमेधों की योजना बनी और सम्पन्न हुई । काशी का दशाश्वमेध घाट अभी भी उस महान नियोजन की साक्षी देता है जिसने अदृश्य क्षेत्र में दूसरी लंका विजय सम्पन्न की थी ।

कृष्णावतार के समय भी ऐसा ही हुआ था । कंस और जरासंध आदि का संहार करने के बाद राजसूय यज्ञ किया गया । महाभारत जीतने के उपरान्त भी अदृश्य क्षेत्र का अवरोध यथावत् बना रहा । आशंका इस बात की थी कि अदृश्य में घुमड़ती असुरता फिर नये संकट खड़े करेगी और विशाल भारत की अभिनव संरचना का लक्ष्य पूरा न होने देगी । अस्तु भगवान ने अध्यात्म उपचार की व्यवस्था के रूप में पुनः यज्ञायोजनो एवं विशाल धर्मानुष्ठान सम्पन्न किये ।

प्राचीन काल में शासकों एवं विभूतिवानों द्वारा प्रत्यक्ष क्षेत्र की सम्पदा सुरक्षा के लिए प्रयत्न किये जाते थे । अदृश्य क्षेत्र में अनुकूलता बनाये रखने की जिम्मेदारी ऋषि वर्ग तत्व दर्शी संभालते थे । और वे इसके लिए सामूहिक धर्मानुष्ठानों के छोटे बड़े आयोजन सामयिक स्थानीय एवं क्षेत्रीय आधार पर सुनिश्चित व्यवस्था बना कर उस महान आवश्यकता की पूर्ति करते रहते थे । तीर्थ स्थानों में नियत पर्वों पर ऐसे धर्मानुष्ठानों की क्रम बद्ध

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रृंखला बनाई और परम्परा चलाई जाती थी । हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक के कुम्भ आयोजन उसी निर्धारण के स्मारक हैं । देश भर में अभी भी हजारों धार्मिक मेले तीर्थ स्थानों में विशेष पर्वों पर सम्पन्न होते हैं । अब तो उनका स्वरूप, व्यवसाय, पर्यटन, मनोरंजन अथवा प्रचलन मात्र रह गया है । पर किसी समय उनमें सामूहिक धर्मानुष्ठान सम्पन्न होते थे और सामयिक समस्याओं के संदर्भ में समाधान निर्धारण की व्यवस्था बनती थी । उपस्थित धर्म प्रेमी उस निर्धारण को अपने-अपने क्षेत्रों में कार्यान्वित करने का उत्तरदायित्व लेकर वापिस लौटते थे । यह अदृश्य वातावरण के परिशोधन की रहस्यमयी प्रक्रिया थी जिसके कारण सतयुगी वातावरण चिरकाल तक सुस्थिर बना ।

सामूहिक प्रयत्नों का अपना महत्व है । बूँद-बूँद से घट भरने की, धागे-धागे से कपड़ा बनने की, तिनकों से रस्सा बटने की, सींकों से बुहारी बनने की बात सभी को विदित है । मजदूर किसी बड़े वजन को उठाते धकेलते समय एक साथ जोर लगाते और हल्ला बोलते है । यह सामूहिक श्रम का चमत्कार है । युद्धों का सैन्य संगठन साधुओं की जमातें संयुक्त शक्ति का उद्‌भव करती हैं । ऋषियों ने बूँद-बूँद रक्त एकत्रित करके सीता को उत्पन्न कर सकने में समर्थ घड़ा भरा था । एक का सिर काट कर भी उतना रक्त भरा जा सकता था पर उतने भर में अनेकों प्राण शक्ति के समन्वय से उत्पन्न होने वाली क्षमता का सुयोग कहाँ बनता, देवता जब जब हारे हैं तब तब संयुक्त रूप से प्रजापति से सहायता मांगने गये हैं । अकेले प्रयत्नों को सफलता न मिलने से ही उन्हें संयुक्त प्रयास की बात सोचनी पड़ी । देवताओं की थोड़ी - थोड़ी शक्ति का संचय करके प्रजापति ने दुर्गा का सृजन किया था । सामूहिक धर्मानुष्ठानों में यह तथ्य पूरी तरह काम करता है ।

पुल के ऊपर यदि ताल बद्ध कदम बढ़ाते हुए सैनिक चलें तो वह टूट कर नीचे गिर सकता है । पायल की समवेतस्वर में झंकार से हाल की छत बैठ जाने और पेन्डुलम के क्रम बद्ध होने पर लोहे का गार्डर थरथराने लगने के वैज्ञानिक परीक्षणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि एक क्रम से एक समय एक जैसे लोगों द्वारा किये गये प्रयत्न कितने चमत्कारी परिणाम उत्पन्न करते हैं ।

यह चर्चा सामूहिक धर्मानुष्ठानों की साधना पुरुषार्थ से अदृश्य वातावरण का परिशोधन सम्पन्न करने के संदर्भ में की जा रही है । आज की परिस्थितियों में भी इन सूक्ष्म प्रयत्नों की वैसी ही आवश्यकता आ पड़ी है जैसी कि पहले कभी थी ।

वर्तमान अश्वमेध यज्ञानुष्ठान इसी तरह का एक दिव्य पुरुषार्थ है । कोई भी श्रेष्ठ पुरुषार्थ श्रेष्ठ भावना एवं श्रेष्ठ विचारणा के बिना सम्पन्न नहीं हो सकता । यज्ञीय पुरुषार्थ के लिए व्यापक स्तर पर यज्ञीय भावना का विकास-विस्तार अनिवार्य होता है ।

''देव संस्कृति दिग्विजय अभियान'' भावभरी प्रेरणा है और देश के विभिन्न भागों में सम्पन्न होने वाले दशाश्वमेध यज्ञ उसके स्थूल कर्मकाण्ड मात्र हैं । यह भाव श्रद्धा महाकाल के प्रचण्ड संकल्प का प्रतीक है । विश्वास किया जाना चाहिए, उसके प्रतिफल भी अभूतपूर्व होंगे । इस श्रृंखला के सम्पन्न होने पर मिलने वाले देव अनुग्रह को लोग आश्चर्यचकित नेत्रों से देखेंगे, विश्वास नहीं कर पायेंगे कि प्रचण्ड राष्ट्रीय समर्थता का यह चमत्कार हो कैसे गया । राष्ट्रीय समर्थता का लाभ अन्ततः उसके नागरिकों को ही मिलता है, सांसारिक सिद्धियों के रूप में भी, आध्यात्मिक ऋद्धियों के रूप में भी ।

अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए खेत तैयार करने, बीज बोने, खादपानी एवं निराई-गुड़ाई का पुरुषार्थ किया जाना भी अनिवार्य है, किन्तु इन सबके साथ-साथ ऋतु की अनुकूलता भी तो चाहिए । यदि वह न हो तो अकेला स्थूल पुरुषार्थ, कैसे फलित हो सकता है ? इसी प्रकार यज्ञ को फलित करने के लिए किसान स्तर के पुरुषार्थ भी करने पड़ते हैं और सूक्ष्म जगत के शक्तिप्रवाहों की अनुकूलता का भी अनुसरण करना पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्म जगत की अनुकूलता के दो स्रोत शास्त्रों में कहे गये हैं (१) देव अनुग्रह (२) साधनात्मक पुरुषार्थ । इन दोनों में से साधनात्मक पुरुषार्थ ही मनुष्य के अधिकार क्षेत्र में है । यों अगर यह पुरुषार्थ व्यापक स्तर पर किया जाय, तो देव अनुग्रह भी उसके साथ स्वभावतः जुड़ जाता है । इसलिए यज्ञीय प्रयोजनों के लिए स्थूल व्यवस्था से भी अधिक साधना पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है ।

महाकाल के संकल्प के फलस्वरूप देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान के साथ-साथ अश्वमेध यज्ञों की श्रृंखला बन गयी । उसमें क्रमशः और अधिक वृद्धि होनी स्वाभाविक है । घोषणा के साथ ही उस दिशा में तत्परतापूर्वक कार्य चल पड़े हैं । यज्ञशाला के वेद सम्मत स्वरूप और अनुशासनों का निर्धारण भी हो गया है । यज्ञ और देव पूजन का भव्य स्वरूप भी सुनिश्चित हो गया है । समूचे राष्ट्र में एक अश्वमेधीय लहर जाग्रत हो गई है । सूत्रधार की इस महाशक्ति को पहचानने वाले गद्-गद् अन्तःकरण से दिग्विजय प्रव्रज्या और आयोजन की तैयारियों में जुट गये हैं । इसे सफलता का शुभ शकुन माना जा सकता है । किन्तु इन सब सफलताओं के बीच साधनात्मक पुरुषार्थ पर से ध्यान हटने नहीं दिया जा सकता । यज्ञ को फलित करने के लिए, सूक्ष्म जगत में अनुकूल शक्ति प्रवाह उत्पन्न करने के लिए साधनात्मक प्रयोगों को व्यापक और प्रखर बनाया जाना आवश्यक है ।

यज्ञ के समस्त उपकरण उपलब्ध हों, पर अरणि मंथन न किया जाये, तो यज्ञाग्नि प्रकट कैसे हो ? गाड़ी एम्बैसडर दो-ढाई लाख की, पर उसमें दस रुपये लीटर वाला पैट्रोल-ईंधन न डाला जाये, तो ऊर्जा कैसे पैदा हो ? इतने बड़े यज्ञ कृत्य के रक्षा कवच के लिए शास्त्रकारों ने जिस ऊष्मा की आवश्यकता अनुभव की, उसके लिए व्यापक सावित्री (सविता) अर्थात्-गायत्री उपासना और विशेष अनुष्ठानों का प्रावधान किया गया है । इस निर्धारण को ध्यान में रखकर अधिकाधिक व्यक्तियों को यज्ञ के निमित्त गायत्री उपासना-सविता साधना के लिए प्रेरित किया जा रहा है ।

यह सर्वविदित है, कि यज्ञ के फल का अंश जप-तप साधना के अनुपात में मिलता है । जो साधकगण दिग्विजय अभियान अथवा यज्ञीय व्यवस्था क्रम में श्रम कर रहे हैं, उनको इस तप साधना का लाभ स्वाभाविक रूप से मिलेगा ही, भले ही वे जप साधना कम कर पायें । जो इस तप साधना में भागीदारी नहीं ले पा रहे हैं उन्हें जप साधना में अधिकाधिक मनोयोग एवं समय लगाने का प्रयास करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ।

सूक्ष्म जगत के शोधन अनूकूलन के लिए शास्त्रों ने गायत्री मंत्र को अत्याधिक प्रभावकारी माना । थियोसॉफिकल सोसाइटी के सर्वमान्य दिव्यदृष्टि सम्पन्न (ऑकल्टिस्ट) पादरी लैडलिटर का भी मत भारतीय शास्त्रों के अनुरूप ही है । उन्होंने सूक्ष्म जगत में होने वाली हलचलों का अध्ययन करके इस मंत्र को सर्वाधिक प्रभावशाली माना है । पाश्चात्य विद्वान आर्थर कोस्लर ने तो इसे परमाणु शक्ति से भी प्रबल एवं प्रभावकारी कहा है ।

पदार्थ परक तकनीक के आधार पर अंतरिक्ष में विचरण कर रहे यानों को पदार्थगत सूक्ष्म तरंगों से नियंत्रित किया जाता है । मंत्रशक्ति के माध्यम से यज्ञीय भावना एवं चिन्तन को अंतरिक्ष में संप्रेषित करके विराट प्रकृतिगत चेतना को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है । यह विराट प्रकृति स्वयं यज्ञीय अनुशासन में रहकर प्राणिमात्र के कल्याण में संलग्न है, उसी स्तर की यज्ञीय भावना एवं विचारणात्मक तरंगों से उसका तादात्म्य सहज ही हो जाता है । अभी भी करोड़ों नर-नारी गायत्री उपासना में संलग्न हैं, इस अभियान से तो उनकी संख्या अरबों तक सहज ही जा पहुँची है । करोड़ों साधकों की एकनिष्ठ भावभरी साधना आसमान को हिला सकती है ।

इस महान अनुष्ठान में भाग लेने से रोका किसी को नहीं गया है, प्रेरित हर भावनाशील को किया गया है । मानव मात्र के लिए उज्ज्वल भविष्य की कामना से परमात्मा से भावभरी प्रार्थना सभी को करनी चाहिए । जो गायत्री मंत्र जप सकें, वे कम से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कम एक माला (१०८ मंत्रों) का जप नित्य करें । उसे कम से कम अपने क्षेत्र में होने वाले अश्वमेध यज्ञ तक अवश्य चालू रखें । जो मंत्र जप न कर सकें वे नित्य कम से कम २४ मंत्रों का लेखन करें । वह भी न बन पड़े तो कम से कम गायत्री चालीसा का एक पाठ नित्य करें ।

यह तो न्यूनतम साधना की बात हुई । नये जुड़ने वाले नर-नारियों के लिए इतना भी पर्याप्त है । किन्तु श्रद्धावान साधकों की भी इस देश में कमी नहीं है । जगह-जगह नैष्ठिकों ने यज्ञार्थ छोटे-बड़े गायत्री जप अनुष्ठान प्रारंभ किये हैं । सबेरे से शाम तक अखण्ड जप के सामूहिक आयोजन गाँव-गाँव मुहल्ले - मुहल्ले इसी निमित्त किए जाने लगे हैं । प्रत्येक अश्वमेध यज्ञ के लिए निर्धारित क्षेत्रों में प्राणवान परिजनों के द्वारा यह साधनात्मक लहर तीव्रतर की जा चुकी है ।

शान्तिकुंज में इस संदर्भ में विशेष अनुष्ठान सत्रों की शृंखला प्रारम्भ की गयी है । आश्वमेधिक अनुष्ठान शृंखला कहा गया है । जो इस शृंखला के किसी एक सत्र में अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं उन्हें अश्वमेध यज्ञ का प्रायोजक ऋत्विज माना जाता है । वे जिस अश्वमेध यज्ञ में यजन करना चाहते हैं उसके लिए उन्हें विशेष अनुमति पत्र दिया जाता है । उनके लिए यज्ञशाला में विशिष्ट अभ्यागतों के अनुरूप ही विशेष स्थान भी सुरक्षित रखा जाता है ।

प्राचीन काल में तो उस के लिए एक वर्ष का समय निर्धारित होता था । इस अनुष्ठान में पति पत्नि (यदि हैं तो) दोनों का भाग लेना आवश्यक था । वे एक वर्ष तक किन्हीं विशिष्ट तीर्थस्थलों में-पर्णकुटियों में रह कर ब्रह्मचर्यपूर्वक नियत अनुष्ठान सम्पन्न करते थे । आज लोगों में न तो वह मनोबल है और न शारीरिक क्षमता । व्यस्तता भी आज इस स्तर तक बढ़ गई है कि एक वर्ष या एक माह का समय निकाल पाना भी असंभव हो गया है । अतएव नौ-नौ दिन के कुटी प्रवेश आश्वमेधिक अनुष्ठान की व्यवस्था की गयी है । यह पुरश्चरण आश्विन नवरात्रि से प्रारंभ हुए और चैत्र नवरात्रि तक चलते रहते हैं । इस श्रृंखला को लगातार सन् २००० तक इसी क्रम से आश्विन नवरात्रि से चैत्र नवरात्रि तक चलाया जाता रहेगा ।

सूक्ष्म जगत का परिशोधन-पराप्रकृति का अवगाहन

अश्वमेध यज्ञ के समस्त क्रिया-कलापों का गम्भीर पर्यवेक्षण करने पर इसे सूक्ष्म-जगत के परिशोधन और जनमानस के परिष्कार का बहुमूल्य प्रयोग माना जा सकता है । यज्ञ के भौतिक विज्ञान की ही तरह इसका सूक्ष्म विज्ञान भी है । उसके तत्वज्ञान और विधि-विधान में ऐसे तत्व विद्यमान हैं, जो सूक्ष्म जगत के अदृश्य वातावरण में देवत्व की मात्रा बढ़ाते हैं । उससे सर्वजनीन सुख-शांति में अदृश्य सहायता मिलती है । इनसे, वायुशोधन की उपयोगिता अपने स्थान पर है पर वास्तविकता दूसरी ही है । वायुशोधन की अपेक्षा वातावरण का निर्माण इनका प्रमुख प्रयोजन है । पवित्र वेद मंत्रों का सस्वर उच्चारण विश्वचेतना में पवित्रता के तत्व भरने वाले दिव्य कम्पन करता है । सामान्य आग को यज्ञाग्नि-देवाग्नि बनाने का काम अध्वर्यु-उद्गाता जैसे विशिष्ट याजकों की श्रद्धा और संकल्पशक्ति करती है । पवित्र हवन द्रव्यों के जलने से उत्पन्न हुई ऊर्जा से सूक्ष्म-जगत में उपयोगी परिवर्तन होते हैं । अश्वमेध प्रयोग में ऐसे-ऐसे अनेक आधारों का समन्वय है जिनका सम्मिलित प्रभाव वातावरण में ऐसे उपयोगी तत्वों का समावेश करता है जो अविज्ञात रूप से विश्वकल्याण की भूमिका सम्पन्न कर सकें ।

आज तो वायु प्रदूषण की ही विभीषका पर चर्चा होती है । अणु विकिरण में विषाक्तता, कोलाहल की प्रतिक्रिया पर ही चिन्ता व्यक्त की जाती है । तत्वदर्शी मनीषियों को सूक्ष्म वातावरण की चिन्ता इससे भी अधिक रहती है, वे जानते हैं कि वातावरण का प्रवाह मानवी तूफानों से भी अधिक सशक्त होता है । वातावरण के साँचे में व्यक्तियों का समूह खिलौने की तरह ढलता चला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है । अनेक देशों की क्षेत्रों की परिस्थितियाँ, प्रथाएँ, और मान्यताएँ रुचियाँ और संस्कृतियाँ भिन्न-भिन्न हैं । उनमें जो बालक उत्पन्न होते हैं वे वातावरण के प्रभाव से उसी प्रकार की मनोवृत्ति प्रकृति अपनाते चले जाते हैं । उनके चिन्तन, स्वभाव और क्रियाकलाप लगभग वैसे ही होते हैं, जैसे कि उस प्रदेश में रहने वाले लोगों के समय का प्रभाव-युग का प्रवाह इसी को कहते हैं । सर्दी-गर्मी का मौसम बदलने पर प्राणियों के, वनस्पतियों के तथा पदार्थों के रंग-ढंग ही बदल जाते हैं । गतिविधियों में ऋतु के अनुकूल बहुत कुछ परिवर्तन होते हैं ।

विज्ञानवेत्ता जानते हैं कि पृथ्वी पर जो कुछ विद्यमान है और उत्पन्न उपलब्ध होता है, वह सब अनायास नहीं है और न उन सबको मानवी उपार्जन कह सकते हैं । यहाँ ऐसा बहुत कुछ होता है, जिनमें मनुष्य का नहीं सूक्ष्म शक्तियों का हाथ होता है । सूर्य पर दीखने वाले धब्बे उसकी स्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं । उस परिवर्तन का पृथ्वी पर भारी असर पड़ता है । उनसे पदार्थों की स्थिति और प्राणियों की परिस्थिति में आश्चर्यजनक हेर-फेर होते हैं । विकिरण, चुम्बकीय तूफान, अन्धड़, चक्रवात किस प्रकार सामान्य परिस्थितियों को असामान्य बनाते हैं । यह सभी जानते हैं । अन्तरिक्षीय अदृश्य शक्ति वर्षा से कई बार धरती हिमयुग आए हैं । जलप्लावन, समुद्री परिवर्तन और खण्ड प्रलय के दृश्य उपस्थित हुए हैं । भविष्य में जो पृथ्वी के पदार्थों अथवा प्राणियों, मनुष्यों की स्थिति में जो असाधारण परिवर्तन होने वाला है उसका निमित्त कारण सामान्य घटनाक्रमों में नहीं वरन् अन्तरिक्षीय अदृश्य हलचलों में ही पाया जा सकता है ।

यों व्यक्ति अपने निजी जीवन में सर्वथा स्वतंत्र और सशक्त है । इतना होते हुए भी विशाल ब्रह्माण्ड में गतिशील हलचलों और परिस्थितियों में उसका स्थान नगण्य है । सिर पर खड़े पानी से लदे बादल तक को वह बरसा नहीं सकता । मौत-बुढ़ापे को रोकने तक में असमर्थ है । परिस्थितियों पर उसका अधिकार नगण्य है । प्रवाहों में वह अपना यत्किंचित बचाव ही कर पाता है । सर्दी उसके बूते रुकती नहीं, कपड़े लादकर, आग ताप कर आत्म रक्षा भर में आंशिक सफलता पा लेता है ।

यहाँ एक प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या मनुष्य वातावरण के सामने सर्वथा असहाय-असमर्थ है ? इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि सूक्ष्म प्रवाहों को प्रभावित करने-बदलने और अनुकूल करने की मानवी चेतना में समर्थता विद्यमान है । जीव ईश्वर का अंश है । मानवी चेतना, ब्रह्माण्डव्यापी चेतना का एक भाग है अंश में अंशी की सारी विशेषताएँ मूल रूप से विद्यमान रहती हैं और प्रयत्नपूर्वक वे मूलसत्ता के समान स्तर तक विकसित हो सकती हैं । बीज तुच्छ है किन्तु वह जिस पेड़ का अंश है उसी स्तर तक विकसित होने की सम्भावनाएं उसमें पूरी तरह विद्यमान हैं । बीज को अवसर मिले तो वह अपनी मूलसत्ता वृक्ष के समान फिर विकसित हो सकता है । जीवात्मा की प्रखरता बढ़ती रहे तो उसकी विकास प्रक्रिया उसे महात्मा-देवात्मा एवं परमात्मा बनने की स्थिति तक पहुँचा सकती है ।

जड़ प्रकृति का वैभव विस्तार बहुत है । फिर भी उस पर नियंत्रण चेतना का ही है । शरीर का अस्तित्व एवं क्रियाकलाप तभी तक है, जब तक कि उसमें प्राण सत्ता काम करती है । यह दृश्य-संसार ब्राह्मी चेतना का कलेवर है । प्रकृति ब्रह्म की छाया मात्र है । ब्रह्म जगत ही वास्तविक जगत है । प्रकृति जगत की जड़ता पर चेतना की ब्रह्मसत्ता का ही नियंत्रण है । विकसित जीवात्मा ब्रह्म-जगत से अपने को सम्बद्ध ही नहीं करती वरन् उसके साथ एकाकार होकर इतनी सक्षम भी बन जाती है, कि प्रकृति प्रवाह में आवश्यक हेर-फेर कर सके । वातावरण को प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदल सके ।

चेतना के संघात से वातावरण में वांछित परिवर्तन किए जाने सम्भव हैं । अदृश्य जगत में कई बार ऐसी प्रेरणाएँ उभरती हैं जिनके आँधी-तूफानों में मनुष्यों के मस्तिष्क पत्तों और तिनकों की तरह उड़ने लगते हैं । युद्धोन्माद ऐसे ही उभरते हैं । उन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिनों अधिंकाश लोग लड़ने की आवश्यकता अनुभव करते और उसके लिए उतारू दिखते हैं । एक अजीब सा आवेश छाया रहता है । कहने की आवश्यकता पड़ती है न समझाने की । हवा में तेजी और गर्मी ही कुछ ऐसी होती है जिसके कारण सामान्य मस्तिष्क एक प्रकार से सम्मोहक स्थिति में रहता और प्रवाह में बहता दिखाई पड़ता है । बड़े युद्धोन्माद एवं स्थानीय दंगों, फिसादों में वातावरण किस प्रकार उत्तेजित आतंकित होता है, उसे जन-मनोवृत्ति शास्त्र के अध्येता भली प्रकार जानते हैं । कुछ इसी तरह समय-समय पर दूसरे सूक्ष्म प्रवाह भी अपने-अपने सगय पर उभरते रहे हैं और असंख्य मस्तिष्कों को बहा ले जाने में आँधी-तूफान का काम करते रहे हैं ।

प्रजातंत्र की लहर एक समय चली और उसने राजतंत्र को संसार भर से उखाड़ फेंकने और उसके स्थान पर जनवाद सरकार बनाने का चमत्कार उत्पन्न कर ही दिया । एक लहर साम्यवाद की उभरी, उठी-फैली और विलीन होने लगी । लहर-लहर ही है । ज्वार-भाटा की भयंकरता, समुद्रतटवासी समय-समय पर देखते हैं, कई तरह के विचार प्रवाह भी कई बार ऐसे आते हैं जो अपने साथ असंख्यों को समेटते-घसीटकर कहीं से कहीं उठा कर उड़ा कर ले जाते हैं ।

महात्मा बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन साधन प्रधान नहीं प्रवाह प्रधान था । साधनों से प्रवाह उत्पन्न नहीं किया गया था, प्रवाह ने साधन खड़े कर दिए थे । बुद्ध ने हवा गरम की और उसकी गरमी से लाखों सुविज्ञ सुयोग्य, और सुसम्पन्न व्यक्ति अपनी आत्माहुति देते हुए धर्म सैनिकों की पंक्ति में अनायास ही आ खड़े हुए । धर्म प्रवर्तकों में से प्रत्येक ने अपने-अपने समय में अपने-अपने ढंग से वातावरण को गरम करने परिशोधित करने वाली भाव तरंगें उत्पन्न की हैं और उस प्रवाह में असंख्य व्यक्ति बहते चले गए । अदृश्य और सूक्ष्म वातावरण के तथ्य तथा रहस्य को जो लोग जानते हैं, वे समझते हैं कि इस प्रकार के प्रवाह कितने सामर्थ्यवान होते हैं उनकी तूफानी शक्ति की तुलना संसार की किसी और शक्ति से नहीं हो सकती ।

अश्वमेध महायज्ञों की श्रृंखला का एक पक्ष-व्यक्तित्व परिष्कार-समाजनिष्ठा के प्रशिक्षण का है । चरित्रनिष्ठा और समाजनिष्ठा की गरिमा और उपयोगिता को इन महायज्ञों के साथ जुड़े हुए विशिष्ट कर्मकाण्डों की व्याख्या और विवेचना में ढूँढा-खोजा, सीखा-समझाया जा सकता है । इस कसौटी पर कसने पर इसे ऐसा श्रद्धासिक्त-उपचार कह सकते हैं जिसके माध्यम से उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व का धर्म शिक्षण सर्वसुलभ बनता है । अश्वमेध के इस ज्ञान पक्ष की उपयोगिता का जितना महात्म्य कहा जाय उतना ही कम है ।

लेकिन इस पक्ष से कहीं अधिक महत्वपूर्ण और समर्थ इसका दूसरा पक्ष है, जिसके द्वारा सूक्ष्म वातावरण में आवश्यक गर्मी और तेजी पैदा की जाती है । साथ ही दृश्यजगत में वह आधार भूमि तैयार करनी है, जिस पर अदृश्य शक्तियाँ क्रियाशील हो सकें । सूक्ष्म प्रवाह के सहयोगी बनने से अभीष्ट प्रयोजन में सफलता प्राप्त करने की संभावना सुनिश्चित हो जाती है । हवा का रुख पीठ पीछे से हो तो जलयानों से लेकर पैदल चलने वाले को बहुत सुविधा हो जाती है और मार्ग जल्दी-जल्दी सरलता से पूरा हो जाता है । युग परिवर्तन के लिए हमें वातावरण के अनुकूलन के लिए कुछ ऐसे ही प्रचण्ड प्रयास करने हैं । अश्वमेध आयोजन इसी प्रयोजन के लिए सम्पन्न किया जा रहा दिव्य प्रयोग है ।

विशिष्ट आध्यात्मिक उपचारों की प्रचण्ड ऊर्जा उत्पन्न करके वातावरण में व्यापक फेर-बदल की जानी है । प्रखर प्रतिभाएँ अपनी प्राण शक्ति से युग को बदलती हैं । अवतारी महामानव समय के प्रवाह को उलटते हैं । ठीक इसी प्रकार अश्वमेध प्रयोग से पैदा हुई चेतनात्मक प्रचण्ड ऊर्जा सूक्ष्म-जगत को परिष्कृत करके उसे इस योग्य बना देगी कि सुख शांति की परिस्थितियाँ उत्पन्न होने लगें और उज्जवल भविष्य की सम्भावनाएँ दैवी अनुग्रह की तरह उमड़ती-उभरती चली आयें ।

सूक्ष्म वातावरण का परिशोधन करने के लिए, पहले भी अध्यात्म विज्ञानियों द्वारा कतिपय दिव्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपचार समय-समय पर किये गए हैं । इसके प्रमाण शास्त्रों में जगह-जगह पर मिलते हैं । लंकादहन एवं रावणबध के पश्चात तथा कंस, जरासंध, दुर्योधन जैसे असुरों के विनाश के बाद वातावरण में संव्याप्त विक्षोभ को शांत करने के लिए वृहद यज्ञ रचे गये थे । ये सभी अपने समय की बड़ी क्रान्तियाँ थीं । यों साधारण अर्थों में क्रान्तियाँ तोड़-फोड़ बदलाव परिवर्तन को कहते हैं । उसमें उखाड़-पछाड़ का ध्वंसात्मक पक्ष आगे रहता है । यह मौलिक पक्ष हुआ । आत्मिक पक्ष में सृजन को प्रधान रखना होता है, ताकि ध्वंस की स्थिति ही न आयें । अन्धेरे को पीटने की अपेक्षा यह अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण है कि प्रकाश की व्यवस्था बनाई जाय । अश्वमेध प्रयोग के द्वारा जो उच्चस्तरीय प्रयास इन दिनों किया जा रहा है उसमें प्रत्यक्षत: समावेश तो रचनात्मक कार्यक्रमों का रहेगा, पर मूलत: उसे वातावरण परिशोधन की प्रक्रिया ही समझा जाना चाहिए । जिससे पराप्रकृति को द्रवित कर मनोवांछित प्रतिफल प्राप्त किये जायेंगे ।

इसे ऐतिहासिक प्रयत्नों के पुनरावर्तन के रूप में भी अनुभव किया जा सकता है, जिसके द्वारा अन्तरिक्ष में प्रदूषण क्रन्दन और विनाश की विषाक्तता परिशोधित हो सकेगी । सूक्ष्म-जगत को असाधारण रूप से प्रभावित परिमार्जित करने वाले इस महा-अभियान को वैदिक ऋषियों-सतयुग के महामनीषियों के मार्गदर्शन का अनुगमन ही कहा जाएगा । इसके द्वारा सत्प्रवृत्तियों का अनुपात जिस क्रम से बढ़ेगा-दुष्प्रवृत्तियाँ उसी क्रम से घटती चली जाएँगी । विघातक तत्वों का सहज निराकरण होता चला जाएगा और युगक्रान्ति का उद्देश्य सुगमतापूर्वक पूरा हो सकेगा ।

इन यज्ञों की श्रृंखला में युगक्रान्ति के स्थूल ओर सूक्ष्म स्तर के उन सभी तत्वों का समावेश है जो जनमानस को-व्यापक वातावरण को परिष्कार करके इक्कीसवीं सदी को उज्जवल भविष्य के रूप में बदल सकें ।

अश्वमेध यज्ञ सौर शक्ति के संदोहन की प्रक्रिया

अगर हम यह जानना चाहें कि सूर्य का मानव जीवन से क्या सम्बन्ध है ? तो विज्ञान की भौतिक उपलब्धियों को ही देखकर सन्तुष्ट नहीं रह जाना होगा वरन् उस संदर्भ में भारतीय अध्यात्म पर भी विचार करना जरूरी है । पाश्चात्य देशों में उसे जलवायु, वनस्पति और दृश्य जगत में परिवर्तनों के लिए प्रमुख उत्तरदायी माना जाता है । किन्तु साधना विज्ञान के आचार्यो का मत है कि मनुष्य की भावनाओं का भी सूर्य से घनिष्टतम सम्बन्ध है । गेलीलियो ने इसी सूक्ष्म विज्ञान पर प्रकाश डालते हुए कहा था-दिखाई देने वाला सूर्य सम्पूर्ण है ही नहीं । वास्तविक सूर्य तो एक प्रकार की चेतना है, जो सौर मण्डल के प्रत्येक परमाणु में प्रतिभासित है । यही नहीं परमाणुओं में पाए जाने वाले सौर बीज उतने ही शक्तिशाली और समर्थ हैं जितना स्वयं सूर्य । उस समय तो इन बातों की उपेक्षा की गई पर बाद में वैज्ञानिकों ने विस्तृत अध्ययन किया और अब तक जो कुछ जाना गया है, उससे यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मनुष्य पूर्णतया सूर्य पर ही आश्रित है । उससे मानसिक सम्बन्ध स्थापित करके अनेक प्राकृतिक रहस्य और शक्तियाँ प्राप्त करने एवं आत्म विकास में प्रकाश पाने की विस्तृत खोज इस देश में गायत्री विद्या के नाम से हुई ।

मनुष्य का शरीर, सूर्य और पृथ्वी के तत्वों के सम्मिश्रण से बना है, इसलिए शारीरिक और मानसिक दृष्टि से शरीर पृथ्वी से ही प्रभावित नहीं होते वरन् उन पर सूर्य का भी प्रचण्ड हस्तक्षेप रहता है । हम यदि शरीर पर विचार करें तो प्रतीत होगा कि अन्न-जल आदि पृथ्वी का रस सेवन करने से हमारे शरीर में आक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन, लोहा, गन्धक, आदि तत्व उत्पन्न होते हैं, वहाँ उसमें इन तत्वों से भी सूक्ष्म प्राण शक्तियाँ क्रियाशील हैं । प्राण के द्वारा ही हमारे शरीर में स्पन्दन है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छींकना , जम्हाई लेना, निद्रा, पलक झपकाना आदि क्रियाएँ प्राण के द्वारा ही सम्भव हैं । यह क्रियाएँ जड़तत्व नहीं कर सकते । प्राण इन सब तत्वों से अधिक सूक्ष्म है । इसलिए वह पहचान में नहीं आता पर गायत्री विज्ञान के द्वारा इसे आसानी से समझा जा सकता है ।

खगोल शास्त्रियों के मतानुसार सूर्य में मूलतः दो ही तत्व हैं- एक हाइड्रोजन, दूसरा हीलियम । सूर्य हाइड्रोजन का आहार करके उसे हीलियम में बदल देता है । इसी से उसमें शक्ति आती है ताप व प्रकाश उत्पन्न होता है । यदि यह क्रिया न होती तो सूर्य दिखाई भी न देता , दिखाई केवल उतना हिस्सा देता है, जहाँ यह क्रिया होती है । अन्यथा सूर्य सर्वव्यापी और सर्वान्तर्यामी तत्व है । अब चाहे उसे आत्मा कहें, प्राण पुंज कह लें, या हाइड्रोजन का जलता हुआ गोला कह लें । यदि किसी को यह भ्रान्ति हो कि सूर्य आग का जलता हुआ गोला है, तो उसे दूरदर्शी से सूर्य का अध्ययन करना चाहिए । उससे पता चलेगा कि सूर्य में यज्ञ कुण्ड के समान लपटें ही नहीं फूटती वरन् उसमें से ऊर्जा भँवर जो कि प्रकाश गर्मी और विद्युत का सम्मिश्रण है । फूटता रहता है ।

कुछ इसी तरह की क्रिया हमारे शरीरों में होती है । विचारों के रूप में इसी तरह की ऊर्जा हमारे शरीरों में विद्यमान है, यह केवल स्पन्दन जैसी क्रिया है इसीलिए दिखाई नहीं देती पर हमारे शरीर की अधिकांश शक्ति इसी तरह अभिव्यक्ति होती है । यदि मनुष्य को विभिन्न स्थूल तत्वों वाला प्राणी कहें तो सूर्य को भी उन्हीं शक्तियों का सूक्ष्म गैसीय स्थिति का विचारशील प्राणी मानना पड़ेगा । उसकी शक्ति चूँकि अनन्त और विशाल है वह निरन्तर देता रहता है, इसलिए उन्हें देवता नामक आदर सूचक शब्द से सम्बोधन करने की परम्परा रही है । सूर्य को यदि इस अर्थ में भावनाओं और विचारों की केन्द्रीभूत शक्ति मानकर उसके संदोहन की प्रक्रिया अपनाई जा सके तो किसी के लिए भी उससे शारीरिक-मानसिक, सामाजिक, औद्योगिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक वरदान प्राप्त कर सकना सम्भव है । गायत्री मंत्र द्वारा इसी विद्या का उद्घाटन पृथ्वी पर किया गया है ।

इस महामंत्र के २४ अक्षरों के कम्पन समान तत्वों वाले मनुष्य और सूर्य में मानसिक सम्बन्ध स्थापित करने का काम करते हैं । सूर्य और मनुष्य में तात्विक एकता है । शास्त्रकार का कथन है-

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च- सूर्य जगत की आत्मा है । जबकि हमारी चेतना हमारे शरीर जगत की आत्मा है । इन दो चेतनाओं को समानगति से कम्पित और सम्बन्ध स्थापित कर सकने की सामर्थ्य उन २४ अक्षरों में है, जिन्हें गायत्री महामंत्र कहते हैं ।

यही कारण है कि उपासना के तत्व को जानने वालों ने गायत्री माता का ध्यान सदा उदय कालीन सूर्य मण्डल के मध्य में करने की सलाह दी है । शास्त्र वचनों के अनुसार -

गायत्रीं भावयेद देवीं सूर्यासारकृताश्रयाम् ।
प्रातर्मध्याह्ने ध्यानं कृत्वा जपेत्सुधी ।।

-शाकानन्द तरंगिणी ३/४/१

अर्थात्- बुद्धिमान मनुष्य को सूर्य के रूप में स्थित गायत्री देवी का प्रातः मध्याह्न और सायं त्रिकाल ध्यान करके जप करना चाहिए ।

सूर्य और गायत्री सर्वथा अभेद हैं । इनकी एकता उसी तरह है जैसे अग्नि और ऊष्मा की । इनकी इसी एकता को बताते हुए ऋषि कहते हैं-

नमस्ते सूर्य संकारो सूर्य गायत्रिकेऽमले, ।
ब्रह्मविद्ये महाविद्ये वेदमाता नमोऽस्तुते ।।

हे सूर्य के समान रूप वाली ! हे गायत्री ! हे अमले ! आप ब्रह्मविद्या हैं, आप महाविद्या हैं तथा वेद माता हैं । आपको मेरा प्रणाम है ।

इस महामंत्र की साधना करने वाले में सूर्य शक्ति का प्रवाह आने लगता है । विज्ञान का नियम है कि उच्चतर या अधिक शक्ति का प्रवाह निम्न स्तर अथवा कम शक्ति वाले केन्द्र की ओर तब तक बहता है, जब तक दोनों समान न हो जायँ । गायत्री से प्राप्त सिद्धियाँ इसी तादात्म्य की परिपक्व अवस्था ही है । तब मनुष्य इसी भौतिक शरीर में सूर्य चेतना के समान सर्वव्यापी, सर्वदर्शी और सर्व समर्थ हो जाता है । वह न केवल जलवायु, लोगों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के स्वास्थ्य, मन की बातें जान लेने की सामर्थ्य पा लेता है, बल्कि इससे भी अधिक सूक्ष्म से सूक्ष्म गतिविधियों और शक्तियों का स्वामी हो जाता है । इन सामर्थ्यों की व्यापकता इतनी अधिक है जिसका विवरण कुछ पंक्तियों में दे पाना सम्भव नहीं । उसमें उन्हीं सी करुणा, सद्बुद्धि परार्थ उत्सर्ग की भावना विकसित होने लगती है । दूसरे शब्दों में गायत्री उपासक उपासना के साथ-साथ अपने सद्गुण, सद्विचारों को अधिक से अधिक सत्कर्मों में लगाने लगता है ।

कोई व्यक्ति जब शान्त और प्रसन्न हो, उस समय उसके पास भावनापूर्वक निवेदन करने पर उससे आशातीत समर्थन पा सकना सहज संभव है । कोई तालाब स्वच्छ और शान्त हो तो उस पर एक छोटा सा कंकड़ फेंक कर ही तरंगों का उत्पादन किया जा सकता है । यह भाव और विज्ञान दोनों का मिलाजुला रूप है । भारतीय आचार्यों ने जो आचार संहिताएँ और वैज्ञानिक प्रयोग किए हैं, वह उक्त सिद्धान्त को दृष्टि में रखकर ही हैं । परम पूज्य गुरुदेव ने इसी सूक्ष्म दर्शन को दृष्टि में रख समय-समय पर कुछ विलक्षण प्रयोग किए हैं । साधनातत्व के मर्मज्ञों के अनुसार कुछ विशिष्ट अवसरों पर विशिष्ट रीति से गायत्री उपासनाएँ ओर यज्ञादि प्रक्रियाएँ सम्पन्न की जाएँ तो उनसे सूर्य देव की आध्यात्मिक शक्तियों को विशेष रूप से प्रभावित एवं आकर्षित किया जा सकता है । उनसे न केवल अपने लिए वरन् सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए सुख समृद्धि और शान्ति का अनुदान उपलब्ध किया जा सकता है ।

अक्टूबर १९५८ का सहस्र कुण्डीय यज्ञ एक ऐसा ही प्रयोग था । पीछे मौसम वैज्ञानिकों ने भी इस मान्यता की पुष्टि कर दी । १ जुलाई १९५७ से ३१ दिसम्बर १९५८ तक खगोल शास्त्रियों ने अन्तर्राष्ट्रीय शांत सूर्य वर्ष, (इन्टर नेशनल इयर ऑव क्वायेट सन्) 'इक्वसी' मनाया । इन वर्षों में सूर्य बिल्कुल शान्त रहा और वैज्ञानिकों को उस पर अनेक प्रयोग और अध्ययन करने के अवसर मिले । इन्हीं दिनों पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में साधकों ने गायत्री की विशेष साधनाएँ सम्पन्न कीं और अक्टूबर १९५८ में ४ दिन का यज्ञ कर शरदपूर्णिमा के दिन पूर्णाहुति दी । इस प्रयोग के बाद उनके प्रयोगों की श्रृंखला मंद नहीं पड़ी । प्रज्ञा पुरश्चरण सूर्य ध्यान, कल्प साधनाएँ महायज्ञों की देशव्यापी श्रृंखला ऐसे ही अध्ययन और प्रयोग का परिणाम रहे हैं । इनका उद्देश्य उन उपलब्धियों से सारे विश्व समाज को लाभान्वित कराना है जो ऐसे अवसरों पर देव शक्तियों से सुविधापूर्वक अर्जित की जा सकती है ।

इन प्रयोगों के साथ ही विश्व गतिविधियों में भारी हेर-फेर उथल-पुथल हुई है । न केवल प्रकृति अपने विधान बदल रही है, बल्कि लोगों की भावनाएँ और विचार भी बदल रहे हैं । पश्चिम जगत की विलासिता प्रिय ओर भौतिकतावादी जनसमुदाय भी अध्यात्म का आश्रय पाने के लिए आतुर-आकुल है । भारतवर्ष तो विश्व परिवर्तन की धुरी है । इसको केन्द्र बनाकर विश्व परिवर्तन की जो हलचलें सूक्ष्म जगत में चल रही हैं, उन्हें साधना शक्ति सम्पन्न सहज में देख समझ सकते हैं । इसका प्रत्यक्ष दर्शन १९९९ के बाद सभी कर सकेंगे । अपने दैनिक जीवन में सूर्य की शांत स्थिति प्रातः और सन्ध्या के समय होती है । नवरात्रि भी इसी तथ्य को अपने में संजोए है । इन अवसरों पर साधना करने का विज्ञान-विधान सूर्य की भौतिक प्रकृति की खोज का फल है, जो पूर्णतया विज्ञान सम्मत है ।

दीर्घकालीन कालचक्र के अनुसार इन दिनों महाक्रान्ति सम्पन्न होना है । अन्तर्राष्ट्रीय शांत सूर्य वर्ष समिति ने १ जनवरी ६४ से दिसम्बर ६५ तक दूसरा शांत सूर्य वर्ष मनाया है और यह बताया कि सूर्य में कुछ विशेष स्पन्दन (फैक्यूले) उत्पन्न हो रहे हैं । उसके बाद ही सौर कलंक दिखाई देते हैं और उसके कारण पृथ्वी की जलवायु में विशेष हलचल उत्पन्न होती है । यों सौर कलंकों के कारण पृथ्वी में प्राकृतिक परिवर्तनों का क्रम ११ वर्ष बाद आता है । पर महाकाल की योजना के अनुरूप शीघ्रतिशीघ्र विश्व को परिवर्तित कर डालने के उद्देश्य से यह क्रम अस्त-व्यस्त हो गया है । इस अस्त-व्यस्तता के परिणाम अतिवृष्टि, अनावृष्टि,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युद्धमहामारियों के रूप में आएँगे । इन प्रकोपों से उन्हीं की रक्षा होगी जो सूर्य शक्ति से सम्बन्ध जोड़े रहेंगे ।

भारत वर्ष को गुलामी के बन्धन में लगभग १५०० वर्ष जकड़े रहना पड़ा । इसके दुष्प्रभाव अभी भी हैं । गायत्रीतत्व के मर्मज्ञों के अनुसार इन दुष्प्रभावों का अन्त इसी सदी के साथ हो जाएगा । ग्रहगणित के अनुसार पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करने में नौ करोड़ तीस लाख मील की यात्रा करनी पड़ती है । इस यात्रा को पृथ्वी लगभग ६७ हजार मील प्रति घण्टा की गति से चलकर ३६५.२५ दिनों में पूरा करती है । प्रत्येक चक्कर में १/४ दिन बढ़ जाता है । एक नया पूरा वर्ष होकर पृथ्वी को पुनः उसी कक्षा में आने के लिए ३६५.२५ × ४ = १४६१ वर्ष लग जाते हैं ।

इन १४६१ वर्षों का क्रम इसी शताब्दी के अंत में पूरा होने को है । इस बीच सूर्य की प्रचण्ड शक्तियों का पृथ्वी पर आविर्भाव होगा और उनसे वह तमाम शक्तियाँ नष्ट-भ्रष्ट हो जाएँगी जो मानसिक दृष्टि से अध्यात्मवादी न होंगी । गायत्री उपासक इन परिवर्तनों को कौतूहलपूर्वक देखेंगे और उन कठिनाइयों में भी स्थिर बुद्धि बने रहने का साहस उसी प्रकार प्राप्त करेंगे जिस प्रकार माँ का प्यारा बच्चा माता के क्रुद्ध होने पर भी उससे भयभीत नहीं होता वरन् अपनी प्रार्थना से उसे शान्त कर लेता है ।

इन दिनों प्रारम्भ की गई भारत भूमि व पूरे विश्व में संपन्न होने वाली अश्वमेध महायज्ञ की योजना पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से प्रारम्भ किया गया विलक्षण प्रयोग है । इसे १९५८ में हुए सहस्रकुण्डीय महायज्ञ का संशोधित-परिवर्धित संस्करण कहा जा सकता है । अश्वमेध प्रक्रिया का गायत्री और सूर्य से गहरा सम्बन्ध है । शतपथ ब्राह्मण के अनुसार-

सविता वै प्रसविता सविता मऽइमं यज्ञं प्रसुवादिति ।

-शतपथ १३/४/२/६ अश्वमेध प्रकरण

अर्थात् सविता प्रेरक है सविता मेरे इस यज्ञ की प्रेरणा करे । इसी प्रकार-गायत्र्ये जुहोति कहकर गायत्री महामंत्र से आहुति देने का विधान है । इस प्रक्रिया द्वारा निश्चित रूप से मानव जाति को सूर्य शक्ति से जोड़कर समूचे विश्व को अनेकानेक अनुदानों-वरदानों से लाभान्वित किया जा सकेगा ।

अन्तरिक्ष किरणों उत्तरी ज्योति, पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र आयनोस्फियर पर सूर्य के प्रभावों का अध्ययन करने के बाद वैज्ञानिकों ने यह बताया कि सूर्य अपने-आप उत्तेजित होता रहता है । उत्तेजित सूर्य अपने सौरमण्डल (पृथ्वी सहित) का मन्थन करता है । उस-समय उससे ज्वालाएँ फूटती और सूक्ष्मकणों की वर्षा होती है । यह कण बाद में कहाँ विलीन हो जाते हैं यह पता तो वैज्ञानिक नहीं लगा पाए; पर आत्मविद्या के आचार्यों के अनुसार सृष्टि के प्रत्येक अणु-अणु में यह उत्तेजित कण ही हलचल पैदा करते हैं । उससे स्थूल प्रकृति ही नहीं मनुष्य की सूक्ष्म प्रकृति भी प्रभावित होती है । विचार, भावनाएँ संकल्प और विश्वास भी परिवर्तित होते हैं, इस परिवर्तन का आकलन यद्यपि वैज्ञानिकों के बूते का नहीं है लेकिन सामूहिक रूप से विश्व की राजनीति, उद्योग, व्यापार श्रम, रोजगार, युद्ध और सामाजिक गतिविधियों पर उसके प्रभाव को देखकर वस्तुस्थिति को समझा जा सकता है ।

साधना गम्य इन रहस्यों की जो अनुभूति कर सकेंगे उन्हें अश्वमेध प्रक्रिया के प्रयोजन और सत्परिणाम अविदित नहीं रहेंगे । वे तेजी से गायत्री विद्या के अन्तराल में प्रविष्ट होंगे । साधना ज्ञानार्जन और संयम में उनकी वृत्ति बढ़ेगी, ऐसे लोग ही आगे चलकर विश्व का मार्गदर्शन करेंगे ।

गायत्रीतत्व मर्मज्ञों के अनुसार विश्व रचना में दो ही तत्व हैं देव या प्राण, भूत या पदार्थ । प्राण के बिना पदार्थ गतिशील नहीं होता । पंचभूतों से बना मनुष्य का शरीर-गायत्री का शब्द भाग है । जिस तरह उच्चारण के बाद गायत्री के अक्षर वायु में विलीन हो जाते हैं । उसी तरह मनुष्य शरीर भी उत्पन्न होकर विलीन हो जाता है । उसका दूसरा चरण प्राण सविता का अधिष्ठान है । उसका दृश्य भाग भौतिक होने पर भी अदृश्य मनोमय है । इस रूप में सूर्य सर्वाधिक शक्तिशाली है । ऋषियों ने सूर्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

को त्रयी विद्या कहा है । अर्थात्-उसमें स्थूल तत्व(जिसमें शरीर बनते हैं) प्राण (जिनसे चेतना आती है) और मन (जो चेष्टाएँ करता है) तीनों तत्व विद्यमान हैं । गायत्री मंत्र साधना के माध्यम से जब सूर्य के साथ स्वयं को जोड़ते हैं तो हमें उसके आध्यात्मिक लाभ-स्वास्थ्य, तेजिस्वता, मनस्विता के रूप में मिलते हैं । अश्वमेध प्रक्रिया का एक महान प्रयोजन मानव समाज को इस विद्या का ठीक-ठीक ज्ञान देना है । ताकि धरती पर सुख-शांति और समृद्धि का कोई अभाव न रहे ।

अश्वमेध : सविता एवं गायत्री साधना

अश्वमेध का पहला यजन प्रयोग प्रजापति(समस्त प्रजाओं के स्वामी परमात्मा) ने किया था । शतपथ ब्राह्मण के तेरहवें काण्ड में इस आलंकारिक प्रसंग का वर्णन किया गया है । उस संदर्भ से स्पष्ट हो जाता है कि सृष्टि की संरचना एवं व्यवस्था रूप यज्ञ को ऋषि ने 'अश्वमेध यज्ञ' कहा है ।

वेदों में उस प्रथम यज्ञ का वर्णन ऋग्वेद के १० वें मण्डल के ९० वें सूक्त में तथा यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय में मिलता है । प्रथम यज्ञ के अधिष्ठाता पुरुष (परमात्मा) को यज्ञ रूप होने के कारण उसे'यज्ञ पुरुष' भी कहा गया है । उक्त यज्ञीय पुरुषार्थ का वर्णन होने के कारण ही यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय के १ से १६ तक के मंत्रों को पुरुष सूक्त कहा गया है ।

उस सर्वप्रथम यज्ञ में यज्ञकर्ता, यज्ञाग्नि, यज्ञहवि आदि सभी रूपों में उसी यज्ञपुरुष-परमात्मा की भूमिका रही इसीलिए ये यजु.३१/१६ में **'यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त देवाः** अर्थात्-देवों ने यज्ञ से ही यज्ञ का यजन किया ऐसा कहा गया है ।

अश्वमेध की प्राण प्रक्रिया-

सृष्टि रचना के संदर्भ में शास्त्रों में वर्णन है कि परमात्मा ने देखा कि सभी पदार्थ निश्चेष्ट हैं तो उन्हें सक्रिय बनाने के लिए उन्होंने स्वयं प्राणरूप होकर उनमें प्रवेश किया । सभी जगह संव्याप्त होने की सामर्थ्य के कारण इस प्राण रूप परमतत्व को 'अश्व' कहा गया । वह यज्ञीय भाव से हर पदार्थ में आहुति की तरह प्रविष्ट हुआ । इसलिए यह क्रिया 'मेध' कहलायी । यही प्रथम अश्वमेध था । इसी भाव को यजु. ३१/१५ में इस प्रकार व्यक्त किया गया है ।

'देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ।'

अर्थात् - देव जिस यज्ञ का विस्तार कर रहे थे, उससे यज्ञ पुरुष ही पशुरूप में सम्बद्ध हुआ । 'पशु' का एक अर्थ होता है देखने वाला । परमात्मा सबको देखने वाला है । उसने सृष्टि को देखा तथा उसे सक्रिय करने के लिए स्वयं को प्राणरूप में प्रत्येक घटक के साथ आबद्ध किया । यही प्राण सर्वत्र व्याप्त हो उठा, इसलिए **'अशु व्याप्नोति'** के अनुसार वह अश्व भी कहलाया । जिस प्रकार आहुति यज्ञाग्नि के साथ एकाकार हो जाती है, उसी प्रकार यह प्राणचेतना सृष्टि के विभिन्न घटकों के साथ एकरूप हो गयी, यह यज्ञीय प्रक्रिया 'मेध' कहलायी । इस प्रकार सृष्टि में प्राण संचार की प्रक्रिया को प्रजापति द्वारा किया गया प्रथम अश्वमेध कहा गया ।

मेध का अर्थ क्रिया रूप में लिया जाय तो मेरे द्वारा धारण किया गया (मे-धा) भी होता है । परमात्म चेतना सर्वत्र अश्वरूप में संचरित हो रही है । इसे जब किसी पदार्थ अथवा प्राणी द्वारा धारण किया जाता है तो वह क्रिया 'मेध' कहलाती है । प्राणियों में सक्रिय'मेधा' शक्ति इसी दिव्य मेध प्रक्रिया की अभिव्यक्ति कही जा सकती है । इस प्रकार यह अश्वमेध प्रक्रिया सृष्टि के विकास की यज्ञीय प्रक्रिया बनी ।

पुरुष सूक्त में कहा गया है कि यह जो सृष्टि है वह इसी यज्ञ पुरुष की महिमा से संचालित है:-

'पुरुषएवेद छ सर्वं' यद्भूतंयच्चभाव्यम्,
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात्- जो अब तक हो चुका है और जो आगे संभावित है, वह यह पुरुष ही है । यही पुरुष अमरता का नियंत्रक-स्वामी है तथा अन्य कर्तृत्ववानों के साथ रहता है ।

इस प्राण प्रसारक यज्ञीय प्रक्रिया का विस्तार हुआ तो दूसरे चरण में दिव्य चेतना को धारण और उसका प्रसारण करने वाले सूर्य-चन्द्र आदि की उत्पत्ति हुई -

'चन्द्रमा मनसोजातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

-यजु ३१/१२

उस यज्ञ पुरुष के मन से चन्द्रमा तथा आँखों से सूर्य की उत्पत्ति हुई । और-

''तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे' ।

-यजु. ३१/७

उसी सर्वहुत यज्ञ के कारण ऋग्वेद सामवेदादि की उत्पत्ति हुई । इस प्रकार सृष्टि का क्रम आगे बढ़ता गया तीसरे चरण में इस विश्व की प्रकृति का विकास हुआ -

'यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धवि : ।।

अर्थात्- जब देवों ने विराट् पुरुष की हवि से यज्ञ प्रारंभ किया, तो उस यज्ञ में से वसन्तऋतु ने घी, ग्रीष्म ऋतु ने समिधा - ईंधन तथा शरद ऋतु ने हविष्यान्न की भूमिका निभायी । इसी अन्तरिक्षीय यज्ञ के प्रभाव से भूमण्डल पर प्राणियों की सृष्टि एवं उनके पोषण का क्रम चला ।

चौथा चरण पृथ्वी पर चलता रहता है-

त्रिपाद्र्ध्व उदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विषवड्. व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।।

अर्थात् - ऊर्ध्वलोकों में तीनचरण वाले पुरुष का एक चरण यहाँ हुआ । यह (यज्ञीय प्रक्रिया) अन्नाहार करने वाले (पशु पक्षी आदि) तथा न करने वाले (वृक्ष वनस्पति आदि) सभी को चारों ओर से व्याप्त करके स्थित है ।

स्पष्ट है कि प्राण चेतना का संचार प्रकृति में सतत हो रहा है, उसका 'मेध' हर क्षेत्र, हर घटक में चल रहा है । इस दिव्य प्राण संचरण प्रक्रिया रूप अश्वमेध पर ही यह सृष्टि का क्रम निर्भर करता है ।

प्राण संचारक 'सविता'

सविता चेतनशक्ति का आदि स्रोत माना गया है । द्युलोक एवं अन्तरिक्ष के लिए 'सविता' की भूमिका का प्रतिनिधित्व कोई और करता होगा, किन्तु भूमण्डल के लिए तो 'सविता' की भूमिका 'सूर्य' ही निभा रहा है । वही प्रकृति का अश्वमेध चला रहा है -

'असौ वाऽदित्य ऽएकविंश्शः सोऽश्वमेधः

शतपथ - १३/३/३/३

अर्थात्- यह आदित्य ही सर्वश्रेष्ठ है वही अश्वमेध है ।

पृथ्वी पर प्राणचेतना का संचार सूर्य द्वारा होने के तथ्य का प्रकटीकरण अनेक शास्त्रों ने स्पष्ट शब्दों में किया है:-

उद्यन्नु खलु वा आदित्य सर्वाणि भूतानि,
प्रणयति तस्मादेनं प्राण इत्याचक्षते ।

ऐत. ब्राह्मण ५/३१

अर्थात् निश्चित रूप से आदित्य देवता सूर्य उदित होते हुए सभी (प्राणियों) में नवचेतना का संचार करते हैं, इसलिए इन्हें प्राण स्वरूप कहा जाता है ।

ऐतरेय ब्राह्मण मंत्र १/१९ में **प्राणो वै सविता**

अर्थात् - सविता ही प्राण है कहकर उक्त मान्यता की पुष्टि की गयी है । और भी -

आदित्यो हवै प्राणः *-प्रश्नोपनिषद १/ ५*

अर्थात्-आदित्य ही निश्चित रूप से प्राण है ।

प्रश्नोनिषद् के ही मंत्र १/८ में इस बात को बहुत स्पष्ट करते हुए लिखा गया है:-

विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं,
परायणं ज्योतिरेकं तपन्तम् ।
सहस्त्र रश्मिः शतधा वर्तमानः,
प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्य : ।।

अर्थात् - समस्त जगत का प्राणरूप सूर्य एक ही है । इस जगत में इसके समान कोई दूसरी जीवनी शक्ति नहीं है । संसार में उष्णता प्रकाश, जीवन प्रदान, ऋतु परिवर्तन आदि आवश्यकताओं को पूर्ण करता हुआ सम्पूर्ण सृष्टि का जीवनदाता प्राण ही सूर्य के रूप में उदित होता है ।

सूर्य द्वारा इस प्रकार जगत में प्राण चेतना का संचार करते रहने के कारण उसे **'सोऽश्वमेधः'**

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वही अश्वमेध है, ऐसा कहा गया । यही नहीं अश्वमेध यज्ञ में सविता साधना तथा उसके प्रति आहुति प्रदान करने का भी विधान है । शतपथ ब्राह्मण का वह प्रकरण यहाँ दिया जा रहा है ।

अथ सावित्रीमिष्टिं निर्वपति । सविते प्रसवित्रे. . .सविता वै प्रसविता सविता मऽइमं यज्ञं प्रसुवादिति ।''

-१३/४/२/६

''अब सविता की इष्टि (आहुति) दी जाती है -सविता प्रसविता के लिए । सविता प्रेरक है अर्थात् सविता मेरे इस यज्ञ की प्रेरणा करें ।''

''अथ द्वितीयां निर्वपति । सवित्रऽआसवित्रे सविता वाऽआसविता सविता मऽइमं यज्ञमासुवादिति ।''

-१३/४/२/९

''अब दूसरी आहुति सविता आसविता के लिए दी जाती है । सविता आसविता है । इसलिए सविता देव, हमारे यज्ञ में प्रेरणा करें ।''

''अथ तृतीयां निर्वपति। सवित्रे सत्यप्रसवाय . . . .हवै सत्य प्रसवो यः सवितुः सत्येन मे प्रसवेनेमं यज्ञै प्रसुवादिति । ''

-१३/४/२/१२

''अब तीसरी आहुति सविता सत्य का प्रसव करता है, के लिए है । यह 'सविता' सत्य प्रसव है । वह सत्य-प्रसव शक्ति द्वारा इस यज्ञ की प्रेरणा करे । ''

उक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि अश्वमेध मूलतः प्राण प्रक्रिया के विस्तार का ही पर्याय रहा है और इस भूमंडल में सूर्य ही प्राण संचार का केन्द्र है । इसीलिए राष्ट्रीय प्रयोजन से किए जाने वाले अश्वमेध यज्ञ में भी सविता की साधना एवं उसके निमित्त आहुतियों को ही प्रधानता दी जाती है ।

सविता और गायत्री

सर्वविदित है कि गायत्री महामंत्र का देवता सविता है । सविता शक्ति के विशिष्ट-वांछित प्रयोग के लिए गायत्री साधना का ही उल्लेख शास्त्रों में मिलता है । सूर्य प्राण रूप है, तो गायत्री प्राणों का त्राण करने वाली दिव्य प्राण विधा है । शास्त्र मतानुसार गायत्री और सविता को परस्पर पूरक माना गया है ।

सा हैषा गायांस्तत्रे । प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे तद् यद् गयांस्तत्रे तस्मात् गायत्री नाम स यामेवाम्मन्वाहैषैव सा स यस्माऽअन्वाह तस्य प्राणांस्त्रायते ।

-शतपथ ब्रा. -१४/८/१५/७

गायत्री इसीलिये कहते हैं कि वह 'गयों' का त्राण (रक्षा) करती है । 'गय' कहते हैं प्राण को । वह प्राणों की रक्षा करती है । आचार्य जिस सावित्री का उपदेश करता है वह यही गायत्री है । यह उसके प्राणों की रक्षा करती है, जिसको सिखाई जाती है ।

अथर्ववेद में गायत्री विद्या की स्तुति **'स्तुता मया वरदा. . . . . (१९/७१/१)** प्रसिद्ध है । उसमें उसे **'वेदमाता प्रचोदयान्ताम् '**

अर्थात् - सही दिशा में प्रेरणा देने वाली कहा गया है । सविता को भी प्रसविता प्रेरणा-प्रदायक - उत्पत्तिकर्ता कहा गया है । सविता एवं गायत्री के लिए प्रयुक्त यह विशेषण भी समानार्थक ही है ।

अथर्ववेद के उसी मंत्र में गायत्री को ब्रह्मवर्चस् प्रदायिनी कहा गया है । शतपथ ब्राह्मण ने सूर्य को भी ब्रह्मवर्चस् कहा है-

असौवाऽआदित्यऽएकाकी चरत्येष ब्रह्मवर्चसम्

- १३/२/६/१०

यह सूर्य एकाकी चलता रहता है, यह ब्रह्मवर्चस् है ।

ऊपर के प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि अश्वमेध भी मूलतः प्राणसंचार प्रक्रिया के रूप में प्रजापति द्वारा किया गया था । सूर्य विश्व में प्राण संचार करने वाला है तथा गायत्री भी प्राण विद्या ही है । इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण के तेरहवें काण्ड के अलग -अलग मंत्रों में अश्वमेध एवं सूर्य दोनों के लिए ब्रह्मवर्चस् संबोधनों का प्रयोग किया गया है । इस प्रकरण के अन्तर्गत उल्लेख आता है -

एषवाऽऊर्जस्वात्राम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेवोर्जस्वद् भवति ।।

-१३//७/६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात् ''इस यज्ञ का नाम ऊर्जस्वान (दिव्य ऊर्जा प्रदान करने वाला) है । जहाँ यह यज्ञानुष्ठान संपन्न होता है, वहाँ सभी ऊर्जस्वी (प्राणवान) बन जाते हैं । '' थोड़ा इस अर्थ को गहराई से समझने का प्रयास करें । लौकिक अर्थों में ऊर्जा वह है जो कैलोरी के रूप में ग्रहण की जाती है । आहार से विभिन्न पोषक द्रव्यों को लेने से शरीर में जो ताकत आती है, वह ऊर्जा उत्पन्न करती है एवं जब यह ऊर्जा काया के अवसान के पश्चात् पलायन कर जाती है तो व्यक्ति निष्प्राण या मृत कहलाता है । स्थूल दृष्टि से ऊर्जा का यही अर्थ भौतिकी व जैविकी की विधाओं के अन्तर्गत आता है । यदि प्राणवान शब्द से इसी ऊर्जा से अभिपूरित व्यक्ति की चर्चा की जा रही है, तो इस धरती का एक-एक प्राणी इस परिभाषा में आ जाता है । स्थूल अंग-अवयव संरचना की दृष्टि से वह कैसा भी हो, इन इन्द्रियों का नियोजन वह चाहे जिस दिशा में करता हो, उसे इस परिभाषा के अनुसार तो प्राणवान ही रहना चाहिए । नरपशु जो शिश्नोदर परायण होते हैं तथा पशु जो मूक हैं, अपनी भावना विचारणा वाणी द्वारा व्यक्त नहीं कर सकते किन्तु प्राणतत्व जिनके रोम-रोम में स्पन्दन कर रहा है, इसी दायरे में आ जाने चाहिए किन्तु ऐसा है नहीं ।

जब हम ऋषियों की अभिव्यक्ति की निराली शैली का गहरा विवेचन करते हैं तो हम पाते हैं कि वे व्यक्ति को इस यज्ञ के द्वारा ''ऊर्जस्वान'' बनाने की बात करते हैं प्राण वे जो दिव्य ऊर्जा के पर्याय हैं लौकिक नहीं । एक ग्राम पानी को जो एक सेण्टीग्रेड तापमान तक ऊष्मायुक्त कर दे, वह इकाई ऊर्जा की एक कैलोरी कहलाती है । यह लौकिक परिधि वाली ऊर्जा है किन्तु अश्वमेध यज्ञ जिस ऊर्जा से याजक को-साधक को अभिपूरित करता है, वह अत्यन्त विलक्षण है । वह सामान्य ऊर्जा को दिव्य ऊर्जा में बदलकर व्यक्ति को सामान्य न रहने देकर असामान्य रूप से प्राणदान- शक्ति संपन्न आत्मबल संपन्न ओजस्वी ऊर्जस्वी बना देता है । जिसकी ऊर्जा ऊर्ध्वमुखी हो, वह ऊर्जस्वी है । जो उसे असंयम के छिद्रों से नित्य के जीवन व्यवहार में अपनी जीवन जीने की अपव्यय प्रधान शैली से प्राणतत्व को गँवाता रहता है, वह तो मुर्दों में गिने जाने योग्य-निष्प्राण-निस्तेज जीवनी शक्ति विहीन एक रोगी व्यक्ति है । ऐसे बेहोशी में जीने वाले अगणित व्यक्ति समाज में हैं जिन्हें पीड़ित मानवता की पुकार भाव संवेदना रूपी अध्यात्म ज्ञान समाज-राष्ट्र को क्षीण-दुर्बल बनाने वाली हलचलों से कोई मतलब नहीं । वे शरीर से ऊपर उठ नहीं पाते । अनगढ़ता प्रधान जीवन जीते हुए ''हम शरीर हैं, इसका पोषण करना व इसे सँवारना चाहिए इससे जुड़े हैं, वे मेरे हैं, औरों से मुझे क्या मतलब ?'' इस मान्यता में प्रायः अपनी सारी जीवन सम्पदा होम कर देते हैं । ऐसे व्यक्तियों का अनुपात जिस समाज में अधिक रहता है, वह समाज दुर्बल-अशक्त होता है व जब जिसके मन में आता है अपनी शक्ति के बलबूते उन पर आधिपत्य स्थापित कर लेता है । निर्वीय ऐसे ही समाज के व्यक्ति कहे जाते हैं क्योंकि प्राण की हलचलें काया में दीख पड़ते हुए भी उनमें पौरुष-पराक्रम कहीं हिलोरें लेता दिखाई नहीं देता ।

ऋषि कहते हैं- जो व्यक्ति शरीर से उठकर मन में तथा मन की दुर्बलताओं से मुक्त होकर चित्त में विद्यमान संस्कारों का भी साक्षीभाव से दर्शन-परिमार्जन कर जब शुद्ध अहंतत्व को प्राप्त होता है तो वास्तविक रूप से प्राणवान बनने की दिशा में अग्रगामी होता है । चेतना की एनाटामी का अंतः करण चतुष्टय का यह पाठ पढ़ने के लिए किसी भी साधक को किसी मेडीकल कॉलेज या ऋषि आरण्यक की नहीं, अंतः की गुहा में प्रवेश कर इस तत्व की अनुभूति करने की आवश्यकता पड़ती है कि वह शुद्ध रूप में क्या है । आत्मसत्ता पर छाए धुँधलेपन को मिटाता हुआ जो पवित्रता के रूप में योग की उच्चतम सिद्धि को प्राप्त कर लेता है तथा अपनी शक्तियों को ऊर्ध्वमुखी बनाता हुआ अपनी ईश्वर प्रदत्त ऊर्जा को लौकिक से दिव्य ऊर्जा में बदल लेता है, वह निश्चित ही प्राणवान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहलाता है- प्राणमयकोष की सिद्धि का अधिष्ठाता बनता है तथा अपनी ऊर्जास्विता से सारे समुदाय के मनोबल को ऊँचा उठाता हुआ अध्यात्म की श्रेष्ठतम उपाधियों को प्राप्त करते हुए समाज व राष्ट्र की सर्वांगीण प्रगति का निमित्त कारण बनता है ।

वैदिक काल को ऊर्जास्विता प्रधान व्यक्तियों का काल कहा जाता है । गायत्री रूपी वह रसायन जो अनगढ़ को भी ब्राह्मण बना देता है तथा यज्ञ रूपी वह तप साधना विधान जो आत्मतत्व का परिशोधन-परिष्कार करने की, आदर्शों को कर्तृत्व में समाहित करने की शिक्षा देता है, देव संस्कृति के दो मूल आधार रहे हैं । उसमें भी यदि अश्वमेधी स्तर का गायत्री महायज्ञ समाज में समय पर संपन्न हो रहा है, आत्मबल संपन्न ऋषिगण-राष्ट्र को तेजस्वी-पराक्रमी बनाने के उद्देश्य से क्षात्रबल अपनाने वाले राष्ट्राधिपति उसे संपन्न करा रहे हैं तो निश्चित ही यह मानकर चलना चाहिए कि असुरता से मोर्चा ले, मानसिक दुर्बलताओं से जूझते हुए जन-जन को ऊर्जस्वी ओजस्वी, प्राणशक्ति संपन्न बनाने की प्रक्रिया संपन्न हो रही है । यदि कहीं इस पुरुषार्थ में व्यतिक्रम आ रहा है तो यह समझ लेना चाहिए कि धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड की चिह्न-पूजा तो संपन्न हो रही है किन्तु इसमें वह अध्यात्म तत्व नहीं है जिसका मूल प्रयोजन ही देवशक्तियों और उनके अधिष्ठाता परमात्मा में सामंजस्य स्थापित करना है । अध्यात्म घनीभूत संवेदनाओं को जीवन में देने की प्रक्रिया का नाम है तथा वह सबसे पहले व्यक्ति को शूरवीर, प्राणवान तथा शक्ति संपन्न बनाने का कार्य संपन्न करता है । ऋषियुग में यही सब होने से प्राणवान व्यक्तियों का मनीषियों का-शूरवीरों का कभी अकाल नहीं था ।

आज यदि कोई सबसे बड़ा संकट है तो वह है प्राणों का, मनोबल का, ओजस्विता की जीवनी शक्ति का । कहीं कोई प्राणवान, तेजस्वी, मनस्वी दिखाई ही नहीं देते जिन्हें समाज का कीर्ति-स्तम्भ कहा जा सके व यह आशा मन में रखी जा सके कि वे मानव मात्र का मार्गदर्शन कर राष्ट्र व विश्व को संगठित-शक्तिशाली बना सकें । अशक्ति को दुखों का सबसे बड़ा कारण बताया गया है तो असुरता के पैर जमने के लिए भी वही निमित्त कारण बनती है, किसी पोषक तत्व की कमी या व्याधि जन्य दुर्बलता से नहीं । हाँ, यह आवश्यक है कि शरीर व मन में रोगों के आ घुस पड़ने, घर में पैर जमा लेने तथा समाज में असुरक्षा को जन्म देने वाले अनेकानेक कारण उत्पन्न करने में अशक्ति की मुख्य भूमिका होती है । तनाव आज बाहर के कारणों से जितना नहीं है, उतना व्यक्ति की स्वयं की प्राण शक्ति की कमी के कारण है । सामंजस्य के अभाव के कारण है तथा आत्मबल की कमी के कारण है । जब समाज व राष्ट्र की इकाई ही कमजोर होगी तो कैसे एक सशक्त राष्ट्र रूपी भवन की आशा इन घटकों से लगायी जाय । यह आज का सबसे अहं प्रश्न है, जिसका उत्तर इक्कीसवीं सदी में कदम रखने वाली नयी पीढ़ी हम से माँगती है ।

सारी समस्याओं का समाधान अध्यात्म है, यह युगऋषि परमपूज्य गुरुदेव का मत है । अध्यात्म अर्थात् पशु प्रवृत्तियों को-एनीमल इंस्टींक्ट्स को देव आस्थाओं में बदल देने वाली एक सशक्त प्रक्रिया जो व्यक्ति को प्रसुप्त से जाग्रति में ले जाती है । निर्वीय -अशक्त निस्तेज व्यक्ति प्राणों से युक्त तो है किन्तु उस कला से अनभिज्ञ है जो उन प्राणों का ऊर्ध्वगमन कर उसे वीर्यवान-शक्तिवान-तेजवान बनाना सिखाती है । अध्यात्म इसी उच्चतम स्तर का पराक्रम है तथा अश्वमेधीय प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति को प्राणवान बनाता हुआ उस मूलभूत समस्या से जूझता है जो आज के आस्था संकट की धुरी है । वैदिककाल का ऋषि अपनी विलक्षण शैली में इसी तथ्य को पुनः प्रतिपादित करता हुआ शतपथ ब्राह्मण में १३-३-७-८ में यह कहता है-

"एष वै ब्रह्मवर्चसी नाम यज्ञः ।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्तऽआ ब्रह्माणो ब्रह्मवर्चसी जायते ।"

अर्थात्-"इस यज्ञ का नाम "ब्रह्मवर्चसी " है अर्थात् ब्रह्मवर्चस प्रदायक । इस यज्ञानुष्ठान में भाग लेने वालों को "ब्रह्मवर्चस्" की प्राप्ति होती है ।

यह "ब्रह्मवर्चस्" क्या है । अथर्ववेद में गायत्री महासत्ता से- वेदमाता से स्तुति करते हुए इह लोक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के सात तथा परलोक में परमपद की प्राप्ति रूपी आठवें लाभ की प्राप्ति रूपी सूक्त में यही माँगा गया है ।

''स्तुतामया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ताम् ।
पावमानी द्विजानां आयुः प्राणं प्रजां ।।
पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् ।
मह्यम दत्वा व्रजत ब्रह्मलोक ।। '' -१९/७/१

ब्रह्मवर्चस् -अर्थात् वह बल वह वर्चस् जो आत्मसत्ता को ब्रह्म के समकक्ष बनाता हो । आत्मबल संपन्न व्यक्ति ही ब्रह्मवर्चस् संपन्न कहा गया है । ऐसा व्यक्ति किसी से डरता नहीं सिवा भगवान के । किसी चीज का लोभ नहीं रखता न लौकिक वस्तुओं का न जीवन्मुक्ति का, मोक्ष का, । उस का लक्ष्य एक ही होता है कि अपनी आत्मसत्ता के बलबूते वह मल्लाह की तरह अपनी नैया में बिठाकर मजबूत, मांसल, पराक्रमी भुजाओं के सहारे डाँड़ चलाता हुआ वह अगणित व्यक्तियों को मझधार में इससे उस पार पहुँचा दे । अकेले नहीं, अपितु समूचे समूह-समाज या राष्ट्र का दायित्व जिस पर हो जो सही अर्थों में 'ग्रुपलीडर' लोकनायक हो तथा अगणित व्यक्तियों में प्राण फूँकने की सामर्थ्य रखता हो, ऐसा वर्चस्वी व्यक्ति ही ऋषियों को अश्वमेध रूपी महायज्ञीय पराक्रम से अभीष्ट है । ऐसे व्यक्ति जब समाज में अधिकाधिक संख्या में गढ़े जाने लगते हैं तो समाज निर्भय, सुरक्षित व संगठित हो प्रगति की दिशा में अग्रसर होता चला जाता है ।

ब्रह्मवर्चस के दो पक्ष शब्दार्थ की दृष्टि से स्पष्ट किए जा सकते हैं । एक ''ब्रह्मविद्या'' अर्थात् चिंतन का, दृष्टिकोण का परिष्कार तथा ''वर्चस्'' अर्थात् प्रसुप्त अंतःशक्तियों का जागरण, तेजस् का वर्धन-प्रतिभा का जागरण । यह प्रज्ञा और पराक्रम का युग्म है जो ब्रह्मवर्चस से स्पष्ट होता है । गायत्री व सावित्री दोनों का इस शब्द में समन्वय है । जहाँ गायत्री मेधा संवर्धन करती प्रसुप्ति का जागरण कर जीवन्मुक्ति का, शान्ति का, मोक्ष का पथ प्रशस्त करती है वहाँ सावित्री सर्वतोमुखी समर्थता, प्रखरता, पराक्रमशीलता मन्यु उभारने वाली प्रक्रिया है । एक प्राणाग्नि का जागरण करती है तो दूसरी ब्रह्माग्नि का । ब्रह्मज्ञान व ब्रह्मतेज के समन्वित जागरण से साधक का ब्रह्मवर्चस जागता है एवं यही अश्वमेधीय पराक्रम संपन्न होता शतपथ ब्राह्मण के ऋषि ने दर्शाया है ।

सभी जानते हैं कि गायत्री का महामंत्र देवता सविता है । सविता प्राण रूप है तो गायत्री प्राणों का त्राण करने वाली ब्रह्मवर्चस् वर्धक दिव्य प्राण विधा है । सविता को भी प्रसविता, प्रेरणादायक, उत्पत्तिकर्ता रचयिता कहा गया है । ''वेदरहस्य'' में श्री अरविंद कहते हैं कि साधक की प्राणशक्ति के जागरण की प्रक्रिया सविता की प्रेरणा से ही संपन्न होती है । सविता की परिभाषा करते हुए वे लिखते हैं - ''जो रचयिता है, सत्य के रूप में स्तुत्य है, मनुष्य का पोषक है, मनुष्य को अहंभाव से निकालकर विश्वव्यापी बना सीमित से असीम कर देता है वही सविता है ।'' वे लिखते हैं कि सूर्य सविता है अपने रचनात्मक प्रकाशक सौर रूपों वाली दिव्य सत्ता के रूप में । सूर्य विप्र है - प्रकाशमान, विशाल, स्पष्ट विचार वाला तथा ज्ञानधिपति है । ऋग्वेद के पाँचवें मण्डल के ८१ वें सूक्त के पहले श्लोक में बड़ी विलक्षण स्तुति सविता की आयी है । भाव है महान उस सविता देव की व्यापक स्तुतिः,का **(मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः)** जो तीन प्रकाश मान लोकों में जाता है और सूर्य की किरणों द्वारा पूरी तरह से अभिव्यक्त होता है ।

अश्वमेध महायज्ञ एक विलक्षण अनुष्ठान रूपी प्रयोग है जो राष्ट्र के ब्रह्मवर्चस् पराक्रम शौर्य के जागरण के लिए इन दिनों भारत व विश्वभर में संपन्न हो रहा है । शतपथ ब्राह्मण के १३ वें काण्ड में अश्वमेध व सूर्य दोनों के लिए ''ब्रह्मवर्चस्'' संबोधन का प्रयोग हुआ है जबकि गायत्री महाविद्या भी ब्रह्मवर्चस् प्रदायक है जैसा कि अथर्ववेद में उल्लेख है । ''**एष वै तेजस्वी नाम यज्ञः**'' इस प्रसंग में भी यह अश्वमेध यज्ञ तेजस्विता प्रदान करने वाला है, यह कहा गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महायज्ञों से महाप्राण कुंडलिनी का आलोड़न

'यज्ञ' तत्व जितना व्यापक है, उतना ही सूक्ष्म । इसे समझने और अनुभव करने वाले तत्वदर्शी ऋषियों ने घोषित किया, कि यज्ञ प्रक्रिया न केवल यज्ञ वेदियों बल्कि सृष्टि के प्रत्येक अणु, हर शरीर, यहाँ तक कि हर ब्रह्माण्ड में अबाध गति से संचालित है । इस महायज्ञ का मुख्य अग्रणी, पुरोहित, संचालक देव अग्नि परमात्मा ही है । क्योंकि उसी से इस विश्व में रूप है, दर्शन है और प्रकाश है । इसी कारण ऋग्वेद का प्रथम मंत्र भी उसी प्रधान अग्रणी देव अग्नि की ही स्तुति से शुरू होता है । इतना ही नहीं वेद की सबसे अधिक ऋचाएँ इन्हीं अग्नि देव की ही स्तुति में हैं ।

सामान्य दृष्टि भी अग्नि को प्रकाश, ऊर्जा एवं ऊर्ध्वगमन आदि गुणों से भरा पूरा देख सकती है । इसी की स्थापना एवं विधिवत पूजा सेवा, विधिवत प्रयोग यजन से इस विश्व के कर्म सम्पादित हो रहे हैं । यज्ञ द्वारा अग्नि में द्रव्यों को डालकर ऊर्ध्वगामी बना दिया जाता है । अर्थात् उनको पूर्णावस्था में स्थापित कर दिया जाता है । जब यह कार्य सृष्टि के तत्वों तक ही सीमित रहता है या सृष्टि के तत्वों के लिए ही किया जाता है, तो ये यज्ञ द्रव्य यज्ञ ही रह जाते हैं ओर जब इन द्रव्यों के यज्ञ के साथ अपनी उन्नति के लिए कर्म किए जाते हैं, तो उनके साथ हमें अपना संकल्प, क्रिया का उद्देश्य एवं अभिप्राय भी खोलना जरूरी ही हो जाता है । उद्देश्य विहीन असंगत कर्मों का यज्ञ में कोई स्थान नहीं ।

प्राचीन समय में शारीरिक, सामाजिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए अनेक प्रकार के यज्ञ प्रचलित थे । जिस निमित्त जो यज्ञ होते थे, उनमें उसका चित्रण या रूपक रूप से आभास प्रकट किया जाता था। भौतिक तत्वों में अग्नि देव आयु को विशेष क्रियाशील करके मनोकामना पूर्ण करने में सहायक होते हैं । उसी प्रकार आत्मिक यज्ञों में आत्मा रूपी अग्नि प्राण आदि शरीर में स्थिति वायुओं द्वारा अलौकिक अनुभूतियाँ-विभूतियाँ प्रकट करने में समर्थ होती हैं । यही कारण है तत्ववेत्ता ऋषियों ने प्राणविद्या को समझ कर, यज्ञ की उस सूक्ष्मता को अपनाने पर जोर दिया है ।

प्राणविद्या की बरीकियाँ समझने के लिए जरूरी है कि जिज्ञासु, शरीर में नासिका द्वारा निकाले गए एवं ग्रहण किये गए वायु के बारे में ज्ञान प्राप्त करें । दाहिने और बायें नासा छिद्रों से जो वायु ग्रहण की एवं त्यागी जाती है, उनमें बायें नासाछिद्र की क्रिया इड़ा नाड़ी से और दाहिने नासाछिद्र की क्रिया पिंगला नाड़ी से होती है । इन दोनों नाड़ियों का सम्बन्ध अग्नि और सोमतत्वों से है । विश्व में इन दोनों तत्वों के प्रतिनिधि सूर्य चन्द्र हैं । इसी कारण इड़ा और पिंगला नाड़ी को सूर्य और चन्द्र नाड़ी भी कहते हैं । इसी रहस्य को बताने के लिए दर्श और पौर्णमास्येष्टियों का विधान है । जिसने ये इष्टियाँ नहीं की वह आगे के यज्ञ कैसे करेगा ? यज्ञ की अग्नि को विधिवत् स्थापित-रक्षित एवं संवर्धित करने के लिए इन इष्टियों का करना आवश्यक माना जाता था । इसका तात्पर्य यह था कि साधक को सबसे पहले प्राणविद्या के अनिवार्य तत्वों को समझकर उन पर अभ्यास करना चाहिए । इसी सिद्धांत के प्रतिपादन के लिए यज्ञ के प्रारम्भ में ही दोनों दर्श और पौर्णमास इष्टियाँ हैं । यही पिंगला और इड़ा सूर्य एवं चन्द्र होने से विश्व में अग्नि और सोमरूप से तथा उष्ण एवं शीतरूप से सर्वत्र विद्यमान हैं ।

उपरोक्त दोनों यज्ञों द्वारा प्राण विद्या का व्रत ले लेने पर पशुबन्ध यज्ञ किया जाता था । क्योंकि जब तक पाशविक वृत्तियों पर अंकुश नहीं लगेगा, साधक का अभ्यास आगे बढ़ेगा नहीं । पशुबन्ध अपनी आसुरी प्रवृत्तियों को बाँधने का रूपक है । जब तक पंच ज्ञानेन्द्रिय एवं छठे मन-इस प्रकार छहों को बाँधा नहीं जाता, प्राणविद्या की उन्नति, ब्रह्मवर्चस् काम, ऊर्ध्व रेतस् एवं अमृतत्व प्राप्ति कदापि सम्भव नहीं । इसी इन्द्रिय रूपी छः पशुओं के बन्धन का चित्रण पशुबन्ध यज्ञ है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब साधक प्राणों की अलग-अलग स्थिति जानकर उन पर इन्द्रियों के संयम द्वारा आधिपत्य स्थापित कर लेता है तभी वह अग्निष्टोम यज्ञ अर्थात्-सूर्य एवं चन्द्र नाड़ी इन दोनों से संयुक्त यज्ञ अग्नि+सोम यज्ञ कर सकेगा । इन्द्रियों का बाहरी संयम करने के बाद साधक की आन्तरिक वासनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ बाधक न बनें इसके लिए उनका पूरी तरह से बध आवश्यक है । अग्नि-सोम यज्ञ, प्राणापानाहुति यज्ञ इसी प्राण-अपान में समत्व बिठाने के लिए है । प्राण अपान के समत्व में अथवा इड़ा-पिंगला दोनों स्वरों के समभाव में चलने पर सुषुम्ना नाड़ी में प्राण का संचार होने से साधक कहीं अधिक उन्नत स्थिति प्राप्त कर पाता है । तभी उसके द्वारा सोमयज्ञ और वाजपेय यज्ञ कर पाना संभव है ।

प्राणों को सुषुम्नानाड़ी के मार्ग द्वारा ऊर्ध्वगामी करने पर उसके साथ शरीर में बल और ओज बढ़ाने वाले वीर्य को प्राणों की ऊष्मा के द्वारा सोमरूप शान्त एवं सूक्ष्म तथा अदृश्य बनाकर उसको ऊपर उड़ा ले जाना या उनका हरण कर लेना और उसको शरीर के 'द्यु' स्थान अर्थात्-मूर्धा में ले जाकर इस स्थान के देवताओं-इन्द्रियों को उस सोम का पान कराना, बल से सम्पन्न कराना वाजपेय यज्ञ है । वाज का तात्पर्य बल और ओज ही है । इस प्रकार पुनः पुनः यज्ञ करने से शतक्रतु अर्थात्-इन्द्र पद प्राप्त कर लेता है । उसके आधीन सभी देव-इन्द्रियाँ हो जाती हैं, क्योंकि बार-बार वह उन्हें तृप्त करता है । यही साधक का राजसूय यज्ञ है । इस प्रकार साधक का राजसूय यज्ञ के द्वारा जो राजा बन जाता है, वही अपने आत्मा रूपी राष्ट्र या विश्व की समृद्धि के लिए अश्वमेध रच पाता है ।

आध्यात्मिक प्राणविद्या के ये यज्ञ अपने अलंकारिक रूप में हैं । समझाने हेतु उनका चित्रणपूर्वक प्रदर्शन करने के लिए कर्मकाण्डमय यज्ञों को किया जाता है । जिस कर्मकाण्ड के पीछे आध्यात्मिक उन्नति का पाठ नहीं है, उसे निष्प्राण ही कहा जाएगा । वैदिक श्रौत यज्ञों का आत्मिक उन्नति के लिए यह उत्तम क्रम था । कालान्तर में रूढ़िवाद में पड़ कर ये यज्ञ प्राण विद्या से शून्य हो गए और इन यज्ञों द्वारा उन्नति का क्रम गायब हो गया । इतना ही नहीं अनाचारियों ने सिर्फ शब्द पढ़कर स्वयं को ज्ञानी समझने वालों ने यज्ञ में अश्लील कार्यों, पशुबध, मांसाहार आदि हेय कर्मों को भी समाविष्ट कर दिया ।

बाहरी तौर पर प्रचलित हुए ये यज्ञ वास्तव में आंतरिक स्थितियों के ही परिचायक होते थे । इनमें प्रयोग किए जाने वाले शब्दों और कर्मों में अनेकों गूढ़ रहस्य छिपे होते थे । सामान्यतया इन यज्ञों में कुछ आधार भूत कर्म होते थे । उनमें से कुछ दक्षिणाग्नि में, कुछ गार्हपत्याग्नि में कुछ आवहनीयाग्नि में कुछ उत्तराग्नि में सम्पन्न होते थे । आहुति के लिए आज्य (घृत) तथा हवि प्रयोग में लाया जाता था । यज्ञशाला में एक स्तम्भ जिसे यूप कहते हैं गाढ़ा जाता था । इससे यजमान-पत्नी को बाँधा जाता था । दीक्षा ग्रहण करने वाले यजमान को व्रतशील रहना पड़ता था । इसमें पशु बन्धन भी होता था ।

यज्ञों में होने वाले ये सभी कर्म आध्यात्मिक उन्नति के चित्रण के लिए ही थे । यजमान की श्रद्धा ही वास्तव में बाह्य यज्ञ में पत्नी रूप से है । इसी आधार पर श्रद्धा को मनु की पत्नी का रूप दिया गया । 'पत्युर्नयज्ञ संयोगे' पत्नी के बिना यज्ञ नहीं पाणिनि के इस सूत्र का अर्थ इतना ही है, श्रद्धा के बिना यज्ञ नहीं । यजमान का लक्ष्य ही यज्ञ स्तम्भ 'यूप' रूप में प्रकट किया जाता है । यूप से यजमान पत्नी को बाँधने का मतलब है श्रद्धा-लक्ष्य से बँधी होनी चाहिए । ताकि श्रद्धा अविचलित रह सके और यज्ञ पूर्णश्रद्धा से सम्पन्न हो ।

इन यज्ञों द्वारा शरीर के आन्तरिक स्थानों का चित्रण भी किया जाता है । अनेक कार्यों का चित्रण एक ही रूपक में प्रकट कर देना यज्ञ की गंभीर एवं विशद विचार प्रणाली का द्योतक है । 'यूप से बँधी हुई यजमान पत्नी का रहस्य है इड़ा और पिंगला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के विधिवत् होम में मेरूदण्ड का प्रतीक यूप रखा जाना । इसी मेरुदण्ड में सुषुम्ना नाड़ी के नीचे वाले भाग में साढ़े तीन फेरे लिए लिपटी कुण्डलिनी शक्ति-की प्रतीक यूप से बँधी यजमान पत्नी है ।

यज्ञों में पशु बंधन और वध का अर्थ- पाशविक वृत्तियों पर नियन्त्रण और उनका समापन ही समझा जाना चाहिए । 'अजैर्यष्टव्यम्'- आदि वाक्यों के वास्तविक अर्थ न समझने से यज्ञ का सौन्दर्य नष्ट हो गया । मनुष्यों में जो कामवासना की प्रवृत्ति है, उसको संयमादि द्वारा नियंत्रित करना ही अज अर्थात् काम का हनन है इसी प्रकार 'अवि हनन से तात्पर्य भेड़ मारना नहीं बल्कि सूर्य मार्ग का भेदन करना है । श्रुति वाक्यों के अनुसार 'सूर्य द्वारेण ते विरजा प्रयान्ति' मोक्ष की कामना करने वाले सूर्य द्वार-द्वारा जाते हैं । परन्तु जब अध्यात्म विद्या से शून्य मनुष्यों के हाथ में कर्मकाण्ड आया, तो अजबध, अविवध का शब्दार्थ लेकर बकरे और भेड़ें मारी जाने लगी ।

उपरोक्त दोनों प्राणियों के अतिरिक्त यज्ञ में गौ और अश्व के वध प्रारम्भ हो गए । जब कि गौ का तात्पर्य वाणी है, वाणी ही कामधेनु है । इसी से संसार के इच्छित कर्म हो रहे हैं । वेद में कहा गया है **'वाचो मे विश्वभेषज'** अर्थात्- मेरी वाणी विश्व की ओषधि है । ओषधि बनने के लिए उसे कूटा-पीसा, तपाया भस्म किया जाता है । इतना ही नहीं उसमें अनेक रसों का पुट देने की बात भी विख्यात है । जब संसार की महौषधि तैयार करनी हो तब कितनी बार रगड़ना, मारना, तपाना पड़ेगा ? वाणी पर कठोर संयम एवं उसे मृदु भाषी बनाना गोमेध है ।

यदि इस अर्थ को त्याग कर गोमेध से गो पशु का बध किया जाय तो 'स्वर्ग कामोजयेत ' कभी चरितार्थ न होगा । जब कि जिह्वा में 'मधुत्तमा' के आदर्श पर चलने से इसी जीवन में स्वर्ग की प्राप्ति निश्चित है । इसी प्रकार राष्ट्र की प्रजा में से आसुरी प्रवृत्तियों का नाश करना और प्रजा में स्वर्ग स्थापित करना ही अश्वमेध है ।

सोमरस का विवरण भी कुछ इसी तरह आलंकारिक है । वेद में आता है **'अथ वै सोमो वृष्णी अश्वस्यरेतः'** अर्थात्-वर्षणशील सूर्य की ऊष्मा से पृथ्वी स्थिति जल का जो सूक्ष्म रूप होकर अन्तरिक्ष में विचरना है- वही सोमवल्ली है । यही सूर्य का रेत है । इसी प्रकार शरीर स्थित प्राण रूपी सूर्य की ऊष्मा से अधोगामी रेत (वीर्य) को सूक्ष्म और ऊर्ध्वगामी बनाकर ऊर्ध्वरेता बन सोमपान है । इस सोमपान के लिए इन्द्र को बुलाना पड़ता है । बिना इन्द्र के सोमपान नहीं हो सकता । अर्थात्- प्राणरूपी इन्द्र ही इस सोमपान को पान करके मृत्यु को पारकर अमृतत्व को पा लेता है । तभी **'अथ मृत्योऽमृतो भवति,'** सार्थक होता है । आध्यात्मिक यज्ञों में सोमपान का महत्व होने से प्रतीकात्मक यज्ञों में उसका रूपक ओषधियों के रस को ग्रहण करने से लिया गया है ।

दक्षिणाग्नि तो देह की जठराग्नि का ही रूपक है । गार्हपत्याग्नि की स्थापना और उसमें हवि प्रदान करना हृदयस्थ अग्नि में प्राणदान की आहुति का रूपक है । इन दोनों के द्वारा शरीर रसयुक्त, तथा प्राण से संयुक्त रहता है । आह्वनीयाग्नि एवं उत्तराग्नि का सम्बन्ध ज्ञानाग्नि से है, जो मूर्धा में है । जिसमें सप्त होता यजन करते हैं । अथवा देवरूपी इन्द्रियाँ अपना-अपना काम कर रही हैं । इन्हीं चारों अग्नियों से जरामर्य सत्र रूपी यज्ञ हो रहा है । इस प्रकार के आध्यात्मिक यज्ञों में आत्मा का परमानन्द स्वरूप परमात्मा में जो बार-बार गोता लगाता है वही बाह्य यज्ञों में अवभृथ स्नान के रूप में रखा गया है । अवभृथ स्नान, यज्ञ के अन्त में किया जाने वाला स्नान है क्योंकि परमानन्द प्राप्ति ही अध्यात्म यज्ञों का लक्ष्य होता है । यहीं पर उसकी समाप्ति है । अतः यज्ञान्त स्नान को यह स्थान प्राप्त हुआ !

इस तरह सम्पूर्ण प्राण विद्या का चित्रण इन श्रौत यज्ञों में प्रकट हो रहा है । यों तो ये सभी यज्ञ अपने आप में अनेकों रहस्य छुपाए हुए-अपने प्रक्रिया और परिणाम में मनुष्य के समक्ष उसके अन्तराल बहुमूल्य शक्तियों सिद्धियों को उजागर करने वाले हैं; पर अश्वमेध यज्ञ की बात ही निराली है, इसके रहस्य को जानने अनुभव करने वाले को त्रिभुवन विजयी कहना अतिशयोक्ति न होगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अश्वमेध यज्ञ की स्थिति में जब योगी होता है, तब वह अपने प्राण रूपी अश्व को शरीर की समस्त नाड़ियों में ध्यान की विजय के लिए भेजता है । शरीर रूपी राष्ट्र की नाड़ियाँ ही प्राण रूपी अश्व के विचरण का क्षेत्र है । इसमें यदि कहीं विकार होगा तो प्राणरूपी अश्व का मार्ग अवरुद्ध हो जाएगा । अथवा इस राष्ट्र में कहीं भी विकार रूपी शत्रु होगा वह तो प्राणरूपी अश्व को बाँध लेगा । ऐसी स्थिति में अश्वमेध कर्त्ता को उसके निवारणार्थ जो कोशिशें करनी पड़ेंगी वे ही युद्ध हैं । इस युद्ध में यदि प्राणरूपी अश्व विकार रूपी शत्रुओं द्वारा बँधा रहे तो अश्वमेध की असफलता है । यदि विकारों को जीतकर निर्विघ्न प्राणों का संचार समस्त नाड़ियों में किया जा सके- विकारों को परास्त किया जा सके तो ऐसी स्थिति में शरीर की नस नाड़ियों की पूर्ण शुद्धि प्राण को भली प्रकार अपने वश में करने के रूप में हो सकेगी । इसके परिणाम अतीन्द्रिय क्षमताओं लोक-लोकान्तर में गमन आत्मबोध, तत्व विवेक के रूप में अनुभव किए जा सकते हैं ।

जिस प्रकार बिना नक्शे के भवन नहीं बनता, उसी प्रकार बिना आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के कोई यज्ञ नहीं हो सकता है । अश्वमेध की इस आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का चित्रण-शांतिकुंज द्वारा संचालित अश्वमेध महायज्ञों की भव्य श्रृंखला के रूप में हो रहा है । इसे साधकों-आत्मविद्या के पिपासुओं के समक्ष प्राण विद्या के रहस्योद्घाटन की प्रक्रिया के रूप में समझना चाहिए । जो क्रिया व्यक्ति रूपी राष्ट्र में है, वे ही समष्टि राष्ट्र में हैं । 'राष्ट्र वा अश्वमेधः' में यही रहस्य निहित है । अश्वमेध याजकों को अपनी इन्द्रियों पर और दुष्प्रवृत्तियों पर विजय पाना है । ऐसा करने पर ही अश्वमेध के आध्यात्मिक फलितार्थ प्राणविद्या के रहस्यात्मक पक्ष जीवन में जगमगाते दीख पड़ते हैं ।

प्रयाज
याज एवं अनुयाज

विशिष्ट प्रयोजनों लिए किये जाने वाले यज्ञों को तीन चरणों में बाँटा जाता है, (१) प्रयाज (२) याज एवं (३) अनुयाज ।

(१) **प्रयाज** के अंतर्गत यज्ञ की घोषणा होने से लेकर यज्ञ प्रारंभ होने तक की सारी प्रक्रियाएँ आती हैं । यज्ञ स्थल का चुनाव, उसके विभिन्न संस्कार यज्ञ की अनिवार्य व्यवस्थाएँ जुटाना, उसके लिए आवश्यक आध्यात्मिक ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए जप-तप के विधान, यज्ञशाला निर्माण, आदि सभी कार्यों का समावेश उसमें होता है ।

(२) **याज** यज्ञीय कर्मकाण्ड को कहते हैं । इसमें आचार्य-ब्रह्मा अध्वर्यु, उद्गाता आदि की यज्ञ संसद की स्थापना से लेकर देवपूजन, आहुतियाँ, सामगान पूर्णाहुति आदि विभिन्न कर्म आते हैं, प्रयोजनों के अनुरूप यज्ञ निर्धारित अवधि तक चलाये जाने का निर्देश शास्त्रों में हैं ।

(३) **अनुयाजः** यज्ञ पूर्णाहुति के बाद भागीदारों को संतुष्ट करना, सभी वस्तुओं को यथा स्थान पहुँचाना, यज्ञ से उत्पन्न ऊर्जा को लोक-कल्याण के प्रयोजनों में नियोजित करना इस प्रक्रिया के अंतर्गत आते हैं ।

वर्तमान अश्वमेध यज्ञों के लिए इन तीनों चरणों को क्रियान्वित करने की रूपरेखा एवं व्यवस्था बनायी गयी है । अश्वमेध यज्ञ के लिए प्रयाज के रूप में दिग्विजय यात्रा की जाती है । जिन - जिन क्षेत्रों के अश्वमेध घोषित किये जाते हैं, उन सभी क्षेत्रों में देवसंस्कृति दिग्विजय यात्राओं की व्यवस्था बना दी जाती है । यज्ञ की सफलता के लिए विशेष रूप से गायत्री उपासना-साधना करने वाले व्यक्ति लाखों की संख्या में तैयार किये जाते हैं ।

शास्त्रीय विधि से यज्ञशाला निर्माण से लेकर संस्कारवान् भावनाशीलों के सहयोग से साधन सामग्री जुटाने एवं व्यवस्था बनाने का क्रम चलता है ।

यज्ञ के लिए आध्यात्मिक ऊर्जा तो परम पूज्य गुरुदेव एवं वन्दनीया माताजी द्वारा प्रचुर मात्रा में सूक्ष्म रूप से उत्पादित की जा रही है । अनुयाज प्रक्रिया भी बहुत व्यापक है ही यज्ञ के माध्यम से सूक्ष्म जगत तथा साधकों-याजकों में दिव्य प्रवाह-दिव्य ऊर्जा संचरित होगी । उसका उपयोग मनुष्य मात्र के लिए उज्जवल भविष्य के निर्माणार्थ किया जाना है । जन-जन के मनों में एवं स्वभाव में संव्याप्त कुसंस्कारों का उच्छेदन करना, बेशरम बेल की तरह समाज में फैली कुरीतियों, अनाचार आदि को निरस्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करके उनके स्थान पर श्रेष्ठ सतयुगी परम्पराओं की स्थापना करना आदि व्यापक लक्ष्य अनुयाज के निमित्त रखे गये हैं ।

यह सब करने के लिए जिन संकल्पवान, तेजस्वी व्यक्तित्वों की आवश्यकता पड़ेगी उनके निर्माण का कार्य, दिव्य चेतना स्तर पर तो चल ही रहा है, मानवी पुरुषार्थ भी उस दिशा में नियोजित किया गया है । व्यक्तित्वों को खोजने, उभारने, विकसित करने, प्रयुक्त करने आदि में मानवी बुद्धि एवं परिश्रम को भी नियोजित किया गया है ।

यह प्रक्रिया देशव्यापी स्तर पर तो चल ही रही है, विश्वव्यापी स्तर तक भी पहुँच गयी है । अब सप्तद्वीपा वसुंधरा पर रहने वाले मनुष्यों का भविष्य एक दूसरे के साथ जुड़ गया है । किसी एक क्षेत्र के लिए उज्जवल भविष्य तथा दूसरे के लिए पतन-पराभव की रूपरेखा अब नहीं बन सकती । सांस्कृतिक चेतना का संचार सभी में करना होगा । संकीर्ण स्वार्थ भरी आपाधापी से सभी को विरत होना होगा ।

उक्त सभी प्रयोजनों को ध्यान में रखकर इस अभूतपूर्व अश्वमेध श्रृंखला के लिए ऊपर वर्णित प्रयाज, याज एवं अनुयाज आदि प्रक्रियाओं के योजनाबद्ध ताने-बाने बुने गये हैं और सफल भी हो रहे हैं ।

यज्ञ प्रक्रिया, दिव्य अनुशासन एवं यज्ञ-संसद

यज्ञ को भाव विज्ञान, मनोविज्ञान, मंत्र विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, एवं क्रिया विज्ञान का एक अद्‌भुत संगम कहा जा सकता है । दिव्य चेतना, सृष्टिगत परमात्म चेतना के साथ आदान-प्रदान की क्षमता के कारण यज्ञ को दिव्य द्वार भी कहा गया है । इसीलिए इसकी हर क्रिया एवं भावना आदि के साथ दिव्य अनुशासन जोड़ कर रखे जाते हैं । उन दिव्य अनुशासनों का स्मरण बनाये रखने के लिए यज्ञशाला में उनके प्रतीक स्थापित किए जाते हैं, तथा अनुशासित क्रम से सारी प्रक्रिया के संचालनार्थ यज्ञ संसद भी नियुक्त की जाती है ।

वर्तमान प्रसंग में अश्वमेध यज्ञों के साथ सभी आवश्यक दिव्यानुशासन जोड़े गये हैं । सूक्ष्म स्तर की व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है । दृश्य प्रतीकात्मक स्वरूप बनाने में भी देशकाल के अनुरूप शास्त्रीय प्रक्रिया अपनायी गयी है ।

प्रतीकों की स्थापना

अश्वमेध की सहस्रकुण्डीय यज्ञशाला को दिव्य चिन्हों, चक्रों एवं देव विग्रहों से अलंकृत किया जा रहा है । कुछ महत्वपूर्ण स्थापनाएँ इस प्रकार हैं -

यज्ञशाला की चारों दिशाओं में चार दिव्य द्वार बनाये जाते हैं । यह केवल देव प्रयोजनों के लिए होते हैं, जनोपयोग के लिए नहीं । इनमें तोरण, शूल, एवं शंख, चक्र, गदा, पद्‌म आदि चिन्ह अंकित रहते हैं । पूर्व में लाल रंग में शंख, दक्षिण में काले रंग में चक्र, पश्चिम में सफेद रंग में गदा तथा उत्तर में पीले रंग में पद्‌म अंकित होता है । इन चारों द्वारों पर आठ देव प्रहरी, जयविजय, भद्रक-सुभद्रक, आनन्द-विश्वरूप एवं ध्रुव-सुप्रसन्न अंकित होते हैं ।

आठों दिशाओं में विभिन्न देवशक्तियों की प्रतीक पताकाएँ स्थापित की जाती हैं । उन पर संबन्धित देवशक्तियों के वाहन अंकित होते हैं -

पूर्व में इन्द्र देवता का वाहन हाथी सफेद रंग से अंकित होता है । अग्नि कोण में अग्निदेव का वाहन अज सफेद रंग से अंकित होता है । दक्षिण में यम देवता का वाहन महिष लाल रंग में- नैर्ऋत्य में दुर्गा का वाहन सिंह सफेद रंग में, पश्चिम में वसु का वाहन मकर धूम्र रंग में, वायव्य में चन्द्र का वाहन हरिण काले रंग में, उत्तर में सूर्य का वाहन अश्व स्वर्णिम रंग में तथा ईशान में शिव का वाहन वृषभ सफेद रंग में अंकित होता है ।

इसी प्रकार ईशान एवं पूर्व के मध्य में ब्रह्मा का वाहन हंस और नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच अनन्त देव का वाहन गरुड़ अंकित पताकाएँ स्थापित की जाती हैं ।

आठों दिशाओं में आठ दिग्पालों के प्रतीक हाथी स्थापित किये जाते हैं । आकाश एवं पाताल दिशा के दिग्पालों की स्थापना अदृश्य होती है ।

विभिन्न दिशाओं में विभिन्न आकृति वाले यज्ञ कुण्डों की रचना का विधान पूर्व लेखों में दिया जा चुका है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आठ दिशाओं में सप्त ऋषि तथा आठवीं अरुन्धती की मूर्तियों का निर्धारण है । उत्तर में गौतम, ईशान में भारद्वाज, पूर्व में विश्वामित्र, आग्नेय में कश्यप, दक्षिण में जमदग्नि, नैर्ऋत्य में वशिष्ठ, पश्चिम में अत्रि तथा वायव्य में अरुन्धती की स्थापना की जाती है ।

यज्ञशाला में देव वेदियों की स्थापना का क्रम भी निर्धारित है । सर्वतोभद्र प्रमुख देवमंच के सामने पूर्व दिशा में । उसके दोनों ओर षोडश मातृका एवं द्वादश विनायक चक्र ।

तत्व वेदियों में आकाश तत्व का प्रतीक स्वास्तिक देवमंच के पास रखा जाता है । अग्नि कोण में अग्नितत्व, नैर्ऋत्य में पृथ्वी तत्व, वायव्य में वायु तत्व तथा ईशान में जल तत्व की वेदियों की स्थापना होती है ।

यज्ञशाला के मध्य में नवग्रह चक्र, ईशान में पंचोंकार वेदी, वायव्य में क्षेत्रपाल चक्र, अग्नि कोण में योगिनी चक्र, नैर्ऋत्य में वास्तुवेदिका की स्थापना की जाती है ।

यह सभी स्थापनाएँ मात्र शृंगार नहीं हैं, इनमें सन्निहित प्रेरणाओं एवं शक्तियों को यज्ञीय कर्मकाण्ड के बीच उभारा जाता है । यज्ञीय कर्म और याजकों के मनोभाव-विचार आदि उसी के अनुरूप गढ़े जाते हैं ।

अनुशासन की धुरी यज्ञ संसद

यज्ञ का संचालन स्थूल एवं सूक्ष्म अनुशासनों का निर्वाह करते हुए हो, इसके लिए सक्षम विशेषज्ञ नियुक्त किए जाते हैं । उस व्यवस्था को यज्ञ संसद की संज्ञा दी जाती है । यज्ञ संसद के प्रमुख दायित्व इस प्रकार होते हैं ।

यज्ञाचार्य - आचार्य को, रुद्रयामल में यज्ञ का सर्वाध्यक्ष कहा गया है । किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति किये जाने वाले यज्ञ के लिए तदनुकूल क्षमता सम्पन्न आचार्य की खोज की जाती थी । आचार्य को यज्ञीय कर्मकाण्ड की सभी धाराओं का ज्ञान तो होता ही था, कार्य की गंभीरता के अनुरूप तप-शक्ति का भंडार भी होता था । तप शक्ति के आधार पर ही देव शक्तियों को आकर्षित-आवाहित करके उद्देश्य के अनुरूप सूक्ष्म प्रवाह पैदा करना संभव होता था ।

राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ की कथा सर्व विदित है । महर्षि वशिष्ठ उन दिनों ऋषियों में सर्वाधिक सम्माननीय थे, किन्तु उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयुक्त तपशक्ति सम्पन्न युवा शृंग ऋषि को उन्होंने उस यज्ञ का आचार्य बनाया था । उनकी तपशक्ति के संयोग से ही वह यज्ञ इतना श्रेष्ठ फलदायी बन सका था ।

आचार्य में ब्रह्माण्डीय दिव्यधाराओं के साथ संगति बिठाने की क्षमता होती थी । वे जिस देवता का आवाहन करते थे, वे देवता यज्ञ में उपस्थित होते थे, जिनके लिए आहुति समर्पित करते थे, वह उन तक पहुँचती थी और स्वीकार होती थी । जनमेजय के सर्प यज्ञ में आत्मरक्षा के लिए तक्षक इन्द्रासन से जा लिपटा था । यह पता लगने पर इन्द्र सहित तक्षक की आहुतियाँ डाली गयीं । आहुतियों के प्रभाव से इन्द्रासन सहित तक्षक उस ओर खिंच चला । तब इन्द्र ने उसे अपने आसन से बलपूर्वक अलग किया था ।

यज्ञ में आचार्य का वरण बहुत विचारपूर्वक किया जाता रहा है । वर्तमान यज्ञ वशिष्ठ, अरुन्धती की तरह सक्षम ऋषियुग्म पूज्य गुरुदेव एवं वन्दनीया माताजी के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में हो रहे हैं और होते रहेंगे ।

ब्रह्मा- यह आचार्य के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण पद होता है ऋत्विक् एवं यजमानादि के समस्त कार्यकलापों का निरीक्षण तथा उन्हें भली प्रकार चलाने का दायित्व ब्रह्मा का होता है । उनके तीन सहायक होते हैं -

(१) **ब्रह्मणाच्छांसी** (निर्देशों का पालन कराने वाला) (२) **आग्नीध्र** (यज्ञाग्नि तथा आहुति आदि का संयोजक) (३) **पोता** (स्वच्छता-पवित्रता का दायित्व वहन करने वाला)

होता- देवताओं का आवाहन करने वाले प्रधान पुरोहित स्वागताध्यक्ष । इनके भी तीन सहायक प्रशास्ता, अच्छावाक् एवं ग्रावस्तुत होते हैं ।

अध्वर्यु- यज्ञीय क्रियाओं का सुसंचालन करने वाला, सम्पूर्ण यज्ञीय विधि-विधान का ज्ञाता । इनके तीन सहयोगी प्रतिप्रस्थाता, नेष्टा एवं उन्नेता कहे जाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उद्गाता- यज्ञ में देव स्तुतियों, गेय मंत्रों के विशेषज्ञ । इन के तीन सहयोगी प्रस्तोता, प्रतिहर्ता एवं सुब्रह्मण्य होते हैं।

सदस्य- विभिन्न वेदियों के निकट बैठकर यज्ञीय कार्य का निरीक्षण करते हुए याजकों द्वारा होने वाली चूकों का निवारण करने का दायित्व इनका होता है ।

याजक- साधना द्वारा अंत:करण में यज्ञीय भाव जाग्रत करने वाले भावनापूर्वक आहुतियों समर्पित करने वाले याजक होते हैं ।

श्रद्धा की प्रमुखता

• यज्ञ कर्म में श्रद्धा सहित ही हर कार्य किया जाने का निर्देश शास्त्रों ने दिया है उसके बिना-यज्ञ कर्म निष्प्राण हो जाता है ।

'श्रद्धया सत्यमाप्यते' श्रद्धा से ही सत्य की प्राप्ति होती है, कहकर शास्त्रों ने श्रद्धा सहित कर्म का आदेश दिया है। गीताकार का कथन है: -

अश्रद्धया हुतं द्रव्यं तपस्तप्तंकृतं चतत् ।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नोइह ।।

अर्थात्- 'अश्रद्धा से हवन, दान, तप अथवा जो कुछ कर्म किया जाता है उसे 'असत्' कहते हैं । हे पार्थ ! असत्कर्म का फल न तो परलोक में और न इहलोक में ही हितकर होता है ।'

अत्रिस्मृति (१४६) में कहा गया है कि-

अश्रद्धया च यद्दत्तं विप्रेऽग्नौ दैविकेक्रतौ ।
न देवास्तृप्तिमायान्ति दातुर्भवति निष्फलम् ।।

'इष्ट देवता की प्रीति के लिये अनुष्ठित यज्ञ में ब्राह्मण रूपी अग्नि के लिए (ब्राह्मण और अग्नि के लिए) जो दक्षिणा आदि अश्रद्धा से अर्पण की जाती है उससे देवता को तृप्ति नहीं होती । दाता का वह दक्षिणा आदि द्रव्य निरर्थक ही जाता है ।'

मतस्य पुराण- के अनुसार श्रद्धाहीन यज्ञों से राजा और राष्ट्र दोनों की भयंकर क्षति होती है यथा -

शान्ति मंगल होमेषु नास्तिक्यं यत्र जायते ।
राजा वा म्रियते तत्र संदेशो वा विनश्यति

-३९-११

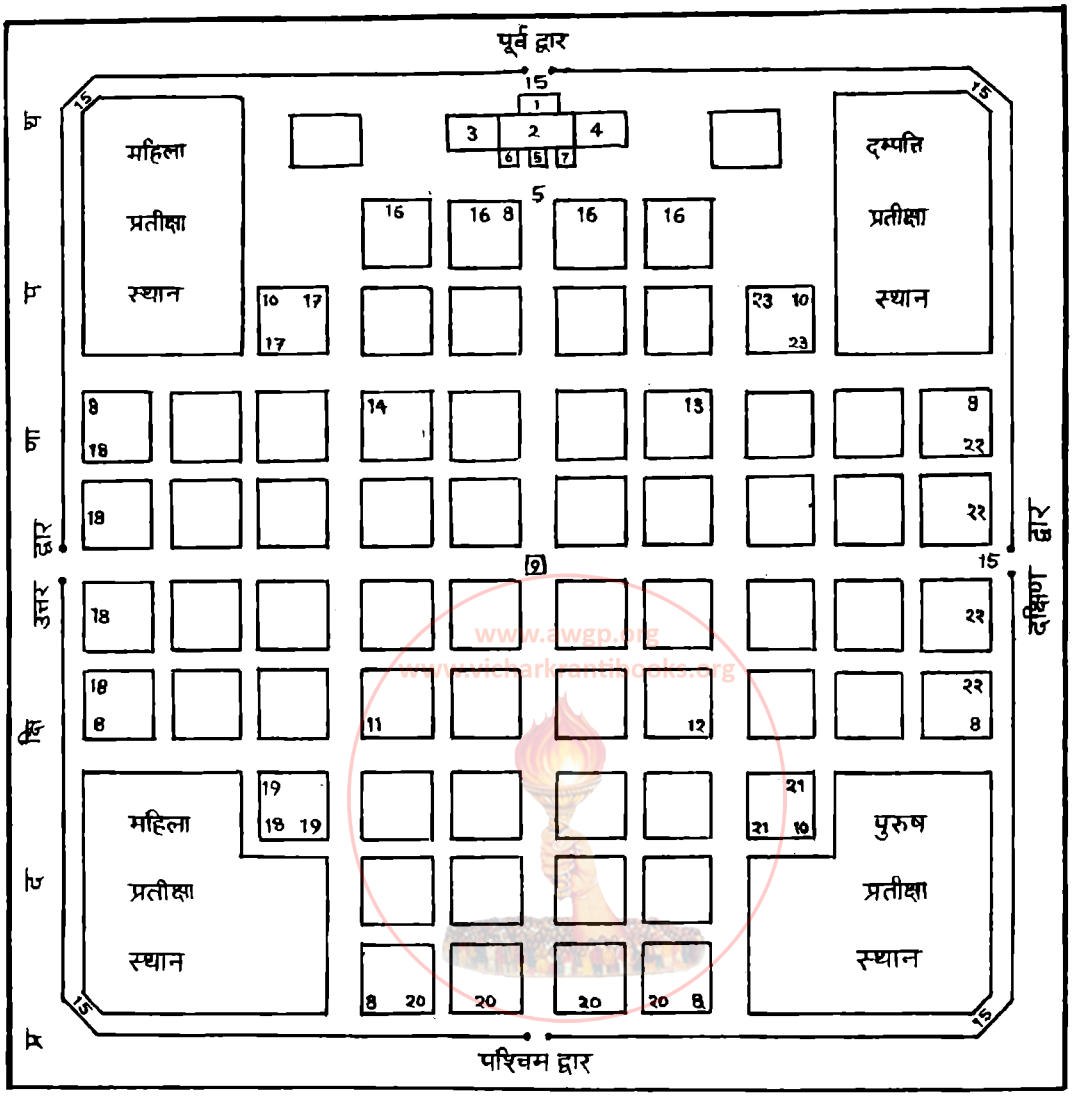
शांति मंगल तथा होम कार्यों में जहाँ पर श्रद्धाहीनता से उत्पन्न नास्तिकता का साम्राज्य रहता है, वहाँ के राजा तथा उस देश का विनाश होता है । यही कारण है कि यज्ञ के पूर्व याजकों की श्रद्धा का परिष्कार एवं संवर्धन करने वाली साधनाएँ करायी जाती हैं । यज्ञ के समय उन प्रतीकों की स्थापना जगह-जगह की जाती है, जिसे देखकर याजकों की श्रद्धा उमड़े । यज्ञ संसद भी अनुशासन एवं संचालन में श्रद्धा को लक्ष्य करके ही सारे कार्यों का सम्पादन करते-कराते हैं ।



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आश्वमेधिक यज्ञ-शाला



— विवरण —

१- आचार्य मंच
२- देवमंच
३- ब्रह्मा ऋत्विज, अध्वर्यु
४- उद्गाता, होता
५- सर्वतोभद्र
६- द्वादश विनायक चक्र
७- षोडश मातृका चक्र
८- सप्तर्षि स्थान
९- नवग्रह स्थान
१०-तत्ववेदी स्थान
११- क्षेत्रपाल चक्र
१२- वास्तुचक्र
१३- योगिनी चक्र
१४- पंच ओंकर चक्र
१५-दिक्पाल स्थान
१६- पूर्व दिशा के विशिष्ट कुण्ड
१७- ईशान दिशा के विशिष्ट कुण्ड
१८-उत्तर दिशा के वि. कुण्ड
१९-वायव्य दिशा के वि. कुण्ड
२०-पश्चिम दिशा के वि. कुण्ड
२१-नैऋति दिशा के वि. कुण्ड
२२-दक्षिण दिशा के वि. कुण्ड
२३- आग्नेयी दिशा के वि. कुण्ड

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ बलि- देव दक्षिणा

यज्ञ के साथ 'स्वाहा ' एवं स्वधा प्रयोगों का निर्देश शास्त्रों ने दिया है ।

यज्ञ रूप परमात्मा की स्तुति में कहा गया है 'त्वमेकं शरण्यं' एक मात्र (तुम्हीं शरण में जाने योग्य, समर्पण योग्य) 'त्वमेकं, वरेण्यं' (तुम ही एक मात्र वरण करने योग्य धारण करने योग्य) हो ।

यज्ञाराधना में 'स्वाहा' समर्पित होने की तथा 'स्वधा' स्वयं में धारण करने की विधा रूप है । स्वाहा के तीन अर्थ किये गये हैं -

(१) सुसुष्ठुआह-सु-आह अर्थात्-सुन्दर कथन ।

(२) स्व वाक् आह इति-

अपनी वाणी, अपनी सहमति से कहा गया वाक्य

(३) स्व आहुतं हविर्जुहोति वा । हवि की या अपनी क्षमता-प्रतिभा-भावना की आहुति देना ।

स्वाहाकार तो यज्ञ के साथ-साथ चलता ही रहता है । यज्ञ संचालक याजकों की भावनाओं को उक्त नियमों के अनुकूल बनाये रखते हैं । किन्तु इतने मात्र से यज्ञ को पूरा नहीं माना जाता । उसके साथ स्वधा प्रयोग किया जाता है, तभी यज्ञ की पूर्णता मानी जाती है ।

स्वधा के भी तीन प्रकार के अर्थ किये गये हैं-

(१) अपना निजी स्वभाव या निश्चय-संकल्प धारण करना

(२) स्वादपूर्वक - रूचिपूर्वक प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करने की क्रिया ।

(३) पितरों के निमित्त दी गयी भेंट-आहुति पितृकर्म में 'स्वधा नमः' वाक्य का प्रयोग बहुत होता है । इसका भाव है, कि पितृगण प्रसन्नतापूर्वक यह ग्रहण करें और तृप्त हों ।

यज्ञ में यज्ञ भगवान को तृप्त करने, आहूत देवताओं को तुष्ट करने, यज्ञ में सहयोगी विशेषज्ञों को संतुष्ट करने का निर्देश है । इसके बिना यज्ञ को पूरा हुआ नहीं माना जाता । यह यज्ञ का स्वधा प्रयोग कहा जाता है ।

इस प्रसंग में यज्ञ-बलि, एवं देवदक्षिणा प्रक्रिया की जाती है ।

बलि के संदर्भ में पूर्व लेखों में स्पष्ट किया जा चुका है कि यज्ञ प्रयोजनों में उसका अर्थ हिंसापरक नहीं कहा जा सकता । श्रद्धापूर्वक भोज्य पदार्थ-अन्नादि अर्पित करने को ही कर्मकाण्ड में बलि कहा जाता है, श्राद्धकर्म में देवबलि, गौबलि काकबलि आदि एवं बलिवैश्वदेव का उल्लेख करके यह बात समझायी जा चुकी है ।

अस्तु, यज्ञ में यज्ञ पुरुष तथा आहूत सभी देव शक्तियों को भोजन अर्पित करके तृप्त किया जाता है, उसे बलि कहा जाता है । कार्य समाप्त होने पर भी श्रद्धा की अभिव्यक्ति करने से देव शक्तियाँ तुष्ट होती हैं ।

यज्ञ मीमांसा में स्पष्ट लिखा हुआ है-

बलिस्तु त्रिविधो ज्ञेयस्तान्त्रिकः स्मार्त एव च ।
वैदिकश्चेति ..... ॥
वैदिकं तु बलिं दद्यादोदनं स्विन्नमाषवत् ।
सरोचनमतिक्रूर दैवते वटकान्वितम् ॥

'बलि तीन प्रकार की होती है- तान्त्रिक, स्मार्त्त, और वैदिक । पकाये हुए माष अर्थात् -उड़द से युक्त ओदन (भात) वैदिक बलि कही जाती है । अतिक्रूर देवता के लिए सिंदूर और वटक (बड़ा) से युक्त ओदन की बलि देनी चाहिए । '

स्पष्ट है कि आहार रूप में देवताओं को शुद्ध सात्विक पदार्थ ही प्रिय होते हैं किन्तु देवताओं को भोजन भेंट करके तृप्त करना भी प्रतीकात्मक ही है । पदार्थ तो सारे उन्हीं ने हमें दिये हैं, उन्हें कमी किस बात की है ? किन्तु उनके दिए में से उनके निमित्त अंश निकालकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त की जाती है । अर्पित सामग्री अपने लिए प्रयुक्त न करके परमार्थ भाव से वितरित कर दी जाती है । इस परमार्थ वृत्ति युक्त कृत्य से देवता निश्चित रूप से बहुत तुष्ट होते हैं ।

देवताओं को प्रसन्न करने, तुष्ट करने के लिए देव दक्षिणा का विधान कहा गया है । देवता तब तुष्ट होते हैं, जब वे देखते हैं कि आवाहनकर्ता की श्रद्धा वास्तविक है । वास्तविक श्रद्धा में सम्मान के साथ अनुगमन की वृत्ति भी होती है ।

गीता का कथन है-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योयच्छ्रद्धस एवसः अर्थात् - 'जो जैसी श्रद्धा रखता है, वस्तुतः वह वैसा ही है ।' श्रद्धास्पद के अनुरूप बन जाना ही श्रद्धा की सचाई का प्रमाण है । देवताओं को अपनी श्रद्धा की सत्यता का प्रमाण देकर ही वास्तव में तुष्ट किया जा सकता है । अस्तु, उनको दक्षिणा रूप में ऐसे संकल्प-ऐसें व्रत देने चाहिए, जिससे अपने अंदर देवत्व का विकास हो ।

देवत्व के विकास के दो क्रम हैं (१) देवों के प्रतिकूल, दुष्प्रवृत्तियों, विकारों को घटाना तथा (२)देवों के अनुकूल सत्प्रवृत्तियों सत्कर्मों को जीवन में बढ़ाना ।

सामान्य रूप से प्रत्येक विचारशील व्यक्ति अपने अंदर से विकारों को हटाने तथा संस्कारों को अपनाने के बारे में सोचता, प्रयास करता है । किन्तु आज के युग में अयज्ञीय प्रवृत्तियों का इतना जोर है कि सामान्य संकल्प तो उनके आगे टिक ही नहीं पाते । इसीलिए यज्ञीय वातावरण में देवशक्तियों के संरक्षण में आत्मपरिष्कार आत्मनिर्माण- आत्म विकास के संकल्प करना अधिक कारगर होता है ।

अश्वमेध प्रयोग देवसंस्कृति को जन जीवन में पुनः प्रतिष्ठित करने के निमित्त किये जा रहे हैं । उसी उद्देश्य से देवशक्तियों तथा ऋषि सत्ता का सहयोग माँगा जाता है । वे प्रसन्नतापूर्वक सहयोग के लिए प्रस्तुत भी होते हैं । अपनी क्षमता से अनुदानों-वरदानों की वर्षा का सुयोग रचते हैं । किन्तु एक प्रश्न सामने आ कड़ा होता है । वे किसे दें ? क्यों दें ? निश्चित निर्धारित उद्देश्य के लिए वे देंगे और प्रामाणिक व्यक्तियों को वे देंगे । श्रेष्ठ उद्देश्य की घोषणा तो यज्ञानुष्ठान के साथ ही हो जाती है । उसमें श्रद्धापूर्वक भाग लेने वाले व्यक्ति उसी उद्देश्य के लिए यजन करते हैं ।

अब बात आती है, प्रामाणिकता की । वह व्यक्तिगत प्रश्न है । इनाम पाने के लिए सभी बालक-सभी विद्यार्थी आतुर होते हैं । वे अपने अभिभावक या शिक्षक को भरोसा दिलाने का प्रयास करते हैं कि वे उनके अनुग्रह के पात्र हैं । ऐसे अवसरों पर शब्दों को नहीं आचरण को ही कसौटी माना जाता है । कहा जाता है करके दिखलाओ ।

देव दक्षिणा प्रसंग में भी देवशक्तियों को अपनी प्रामाणिकता का प्रमाण दिया जाता है । छोटे-छोटे ही सही किन्तु देवत्व की दिशा में बढ़ाने वाले सुनिश्चित संकल्प किए जाते हैं । अपने साथ जुड़े छोटे-छोटे दिखने वाले व्यसनों का त्याग-आलस्य प्रमाद, आदि दुर्गुणों का त्याग किया जाता है । इसी प्रकार अपने अंदर नये गुणों के विकास के संकल्प लिये जाते हैं । नियमित उपासना, नियमित स्वाध्याय एवं लोक मंगल आराधना के लिए अपने समय साधन, प्रतिभा का एक अंश लगाते रहना ऐसे नियम हैं जिन्हें रत्नों की खदान कहा जा सकता है । इन्हें अथवा सेवा-साधना के छोटे-छोटे लक्ष्य स्वीकार करने की नैष्ठिक घोषणा देव दक्षिणा के अंतर्गत आती है ।

यज्ञ के बाद अनुयाज प्रक्रिया चलती है । यज्ञ से उत्पन्न ऊर्जा का सुनियोजन उसके अंतर्गत किया जाता है । यह यज्ञ देवसंस्कृति के उन्नयन, राष्ट्र संगठन के उद्देश्य से किये गये हैं । देव संस्कृति के सूत्रों को अपने जीवन में गरिमापूर्वक स्वीकार करना तथा जन-जन को उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित उत्साहित करना इस संदर्भ में देव दक्षिणा प्रक्रिया के अनुरूप पुरुषार्थ कहे जा सकते हैं ।

वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति अर्थ निकालें, अनर्थ नहीं

इस उक्ति का अर्थ निहित स्वार्थ अथवा पूर्वाग्रह के कारण अटपटा निकाल लिया गया है । यज्ञों में पशुओं की हिंसा करते हुए कहा गया कि "यह हिंसा वेदोक्त है, इसलिए इसमें कोई दोष नहीं है ।" यह अर्थ किसी भी प्रकार बुद्धि - विवेक संगत नहीं है । सही अर्थ समझने के लिए पूर्वाग्रहों से हटकर विचार करना आवश्यक है ।

पहला विचारणीय शब्द है 'वैदिकी' । भौतिकी का अर्थ होता है भौतिक पदार्थों से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बद्ध विज्ञान अथवा अनुशासन । नैतिकी का अर्थ होता है नीति विज्ञान या नीतिगत अनुशासन । इसी प्रकार आत्मिकी का अर्थ होता है आत्म विज्ञान अथवा आत्म चेतना से सम्बद्ध अनुशासन । इसी क्रम में वैदिकी का अर्थ होता है वेद विज्ञान अथवा वेद विहित अनुशासन ।

वेद शब्द का अर्थ ज्ञान होता है । वेद को ज्ञान का सर्वोच्च स्तर भी कहा गया है । यह कोई अतिशयोक्ति या पक्षपात पूर्ण उक्ति नहीं है । बहुत समझ बूझकर कही गयी प्रामाणिक बात है

वेद वह ज्ञान है जिसे ऋषियों ने आत्मानुभूति के आधार पर अवतरित किया । अनुभूति जन्य-अनुभव जन्य ज्ञान सर्वश्रेष्ठ कहा भी जाता है । फिर यह अनुभूति भी बहुत उच्च स्तरीय है । आत्म चेतना ने ब्राह्मी चेतना की गहराइयों अथवा ऊँचाइयों तक पहुंचकर जिनसे मौलिक तथ्यों की अनुभूति की गई हैं उसे श्रेष्ठतम कहा जाना उचित ही है ।

कोई भी सामान्य विचारशील व्यक्ति भी विवेक का उपयोग करे तो उसे जीव हिंसा अनुचित लगने लगती है । सामान्य संवेदना भी जिसमें है वह भावनाशील व्यक्ति भी किसी की हिंसा करना तो दूर उसे देखना भी पसन्द नहीं कर सकता । ऐसी स्थिति में बहुत स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि सामान्य विचारशीलता एवं भावनाशीलता के रहते जो कर्म अनुचित लगता है, उसे उच्चतम विचार और उच्चतम भावना से सम्पन्न व्यक्ति कैसे उचित ठहरा सकता है? निश्चित रूप से उक्त वाक्य का अर्थ हिंसा के समर्थन में नहीं हो सकता ।

सही अर्थ है, वैदिक संदर्भ में यदि कहीं ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिसका एक अर्थ हिंसापरक भी होता है, तो उसे हिंसा के अर्थों में प्रयुक्त न किया जाय ।

सभी जानते हैं, कि लगभग सभी भाषाओं में अनेकार्थी शब्द होते हैं । काव्य में उनका अलंकारिक प्रयोग भी किया जाता है और सहज स्वाभाविक रूप से भी वे भाषा में प्रयुक्त होते रहते हैं । उनका संदर्भ के अनुरूप कोई एक अर्थ ही निकाला जाता है । अन्य अर्थ निकालना अपने अज्ञान अथवा भाषा के प्रति अन्याय का प्रमाण होता है ।

भाषा ज्ञान का अपमान न करें

भाषा भावनाओं एवं विचारणाओं को ठीक प्रकार व्यक्त करने के लिए होती है । उसका उपयोग मनोरंजन के स्तर पर हास-परिहास के रूप में किया जा सकता है, किन्तु उनका अनर्थ मूलक-उलटा-पुलटा उपयोग तो नहीं ही किया जाना चाहिए ।

जैसे महिषी शब्द का अर्थ रानी भी होता है तथा भैंस भी । कोई सूचनार्थ कहे महाराज राज्य सभा में जाने से पूर्व राजमहिषी से मिलकर जाते हैं । यहाँ राजमहिषी का अर्थ राजरानी ही किया जाना चाहिए । यदि राज्य द्वारा पोषित भैंस इसका अर्थ किया जाय तो अर्थ करने वाले की बुद्धि पर तरस ही आ सकता है ।

वेदों में स्वाभाविक रूप से 'मेध' 'बलि' 'आलभन' आदि शब्द बहुतायत से आये हैं । इनमें से प्रत्येक के अनेक अर्थ हैं । उनमें एक अर्थ हिंसा परक भी होता है किन्तु युक्ति संगत अनेक अर्थों की उपेक्षा करके अविवेकपूर्ण एक अर्थ पर ही आग्रह टिका देना किसी भी विचारशील को शोभा नहीं देता । एक-एक शब्द के अर्थ एवं उनके प्रचलित उपयोग पर विचार करने से बात और अधिक स्पष्ट हो जायेगी ।

मेध-व्याकरण के अनुसार सूत्र है -

मेधृ-मेधा, हिंसनयोः संगमे च ।

अर्थात्-मेध के तीन अर्थ होते हैं (१) मेधा-बुद्धि का संवर्धन (२) हिंसा (३) संगम, संगतिकरण, एकीकरण-संगठन ।

मेध, यज्ञ का भी पर्यायवाची है । यज्ञ के लिए भी इसका प्रयोग होता है । इसीलिए भ्रम वश लोग यज्ञ में हिंसा का औचित्य मानने लगे । किन्तु यज्ञ विज्ञान में हिंसा के लिए कोई गुंजाइश नहीं है । निघण्टु में यज्ञ के १५ नाम-सम्बोधन दिए हैं, उन पर उनके अर्थों पर एक दृष्टि डालें तो बात स्पष्ट होगी । वे नाम हैं-

(१) **यज्ञः**- यह यज् धातु से बना है यज् देवपूजा- संगतिकरण-दानेषु- यह सूत्र है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(क) देवों का पूजन-अर्थात् श्रेष्ठ प्रवृत्ति वालों का सम्मान एवं अनुसरण करना (ख) संगतिकरण अर्थात्-प्रेमपूर्वक हिलमिल कर, सहकारिता के भाव से रहना (ग) दान-अर्थात् करुणा भाव से अभाव दूर करने तथा श्रेष्ठ प्रवृत्तियों के पोषण के लिए अनुदान देना । यह कर्म यज्ञ है ।

(२) **वेन** - वेन - गति ज्ञान-चिन्ता -निशामन वादित्रगृहणेषु, यह सूत्र है । अर्थात्-यह गति देने, जानने, चिंतन करने, देखने, वाद्य बजाने तथा ग्रहण करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

(३) **अध्वर** - का सूत्र है **'ध्वरति वधकर्मा' 'नध्वर इति अध्वर '**-

अर्थात् हिंसा का निषेध करने वाला । इस सम्बोधन से भी स्पष्ट होता है कि हिंसा का निषेध करने वाले कर्म के किसी अन्य नाम का अर्थ हिंसापरक नहीं हो सकता । सभी जानते हैं कि यज्ञ कर्म में भूल से कोई क्रमि-कीटक भी अग्नि के संसर्ग में मर न जाये इसके लिए अनेक सावधानियाँ बरती जाती हैं ।

(४) **मेध** -इसके तीन अर्थ पहले ही दिए जा चुके हैं । यह अध्वर का पर्यायवाची संबोधन है इसलिए यज्ञीय संदर्भ में इसका अर्थ हिंसा परक नहीं, लिया जा सकता ।

(५) **विद्ध**-विद्-ज्ञाने सत्तायाम्, लाभे, विचारणे, चेतना- आख्यान-निवासेषु, के अनुसार इसका प्रयोग ज्ञान, अस्तित्व, लाभ, विचार, चेतना, व्याख्यान एवं निवास के अर्थों में होता है ।

(६) **नार्यः**- **नारी**- **'नृ-नये'** मनुष्यों के नेतृत्व के लिए, उन्हें श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने के अर्थ में इसका उपयोग होता है ।

(७) **सवनम्** -**सु-प्रसवे- एश्वर्यो**: इसका तात्पर्य हुआ प्रेरणा देना, उत्पन्न करना और प्रभुत्व प्राप्त करना ।

(८) **होत्रा-हु-दान-आदानयो**— अदने च सूत्र के अनुसार सहायता देना, आदान-प्रदान करना एवं भोजन कराना इसके भाव हैं ।

(९) **इष्टि** -इसका अर्थ 'यज्ञ' जैसा ही है इच्छा तथा अवस्था के अर्थों में भी यह प्रयुक्त होता है ।

मह धातु से

(१०) **मख** -इसका अर्थ पूजा-सत्कार, वृद्धि करना तथा भाषा होता है । **'मंखगतौ'** से इसका अर्थ पूज्य, सचेतन, चंचल, आनन्ददायक एवं तेजस्वी भी होता है ।

(११) **देव-ताता** - इसका अर्थ देवत्व का विस्तार करना, श्रेष्ठ प्रवृत्तियों का संवर्धन होता है ।

(१२) **विष्णु - विष्लृ व्याप्तौ** अर्थात् - व्यापक कर्म इसका भाव है । स्वार्थगत कर्म 'संकीर्ण कर्म' कहे जाते हैं । सर्व भूतहित से किए जाने वाले कार्य व्यापक कर्म कहे जाते हैं ।

(१३) **इन्दु - 'उन्दी - क्लेदने'** धातु के अनुसार इसका अर्थ गीला करना, शान्त करना होता है । चन्द्र एवं सोम इसके शान्ति बोधक पर्याय हैं ।

(१४) **प्रजापति** - अर्थात्-प्रजा, सारी जनता का पालन करने वाला ।

(१५) **धर्म** - गर्मी, उष्णता, ऊर्जा इसके अर्थ होते हैं । उक्त सभी संबोधनों के अर्थ देखने से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि यज्ञ में हिंसक प्रयोगों का समावेश नहीं होना चाहिए । किन्तु मेध जैसे शब्दों का एक अर्थ हिंसापरक भी निकलता है इसलिए वैदिकी संदर्भ में हिंसापरक शब्दों का प्रयोग हिंसा के लिए न करने का स्पष्ट निर्देश दिया गया ।

यहाँ थोड़ा विचार आलभन एवं बलि शब्दों पर भी कर लेना उचित होगा ।

आलभन - का अर्थ स्पर्श, प्राप्त करना तथा वध करना होता है । किन्तु वैदिक संदर्भ में इसका अर्थ वध के संदर्भ में नहीं किया जाना चाहिए , जैसे:- .

ब्राह्मणे ब्राह्मणं आलभेत् ।
क्षत्राय राजन्यं आलभेत् ।।

इसका सीधा सही अर्थ होता है 'ब्राह्मणत्व के लिए ब्राह्मण को प्राप्त करे, उसकी संगति करे और शौर्य के लिए क्षत्रिय को प्राप्त करे-उसकी संगति करे ।

अब यदि आलभेत का अर्थ वध लिया जाय तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बेतुका अर्थ बनता है 'ब्राह्मणत्व के लिए ब्राह्मण तथा शौर्य के लिए क्षत्रिय का वध करे । ऐसे अर्थों से बचने के लिए ही कहा गया कि वैदिक संदर्भ में शब्दों के हिंसापरक अर्थ न किए जायँ ।

बलिः- इस शब्द का अर्थ बध के संदर्भ में निकाला जाने लगा है । वास्तव में सूत्र है बलि-बल्+इन् । इसका अर्थ है (१) आहुति, भेंट, चढ़ावा तथा (२) भोज्य पदार्थ अर्पित करना ।

प्राचीन प्रचलन को देखें तो गृहस्थ के नित्यकर्मों में 'बलि वैश्व देवयज्ञ' का भी विधान है । इसमें भोजन का एक अंश निकाल कर उसे अग्नि को अर्पित किया जाता है । कुछ अंश लेकर पशुपक्षियों एवं क्रमियों के लिए भी डाला जाता है । बलि कहलाने वाली इस क्रिया में किसी जीव के वध का तो प्रश्न नहीं उठता, दुर्बल जीवों को पोषण देने का विधान ही है ।

उदाहरणार्थः- मृच्छकाटिकम् (महाकवि शूद्रक के नाटक) में एक पात्र आर्य चारुदत्त अपने मित्र से कहते हैं :-

''यासां बलिः सपदि मद्गृहदेहलीनां हंसैश्च, सारस गणैश्च विलुप्त पूर्वः ।

अर्थात् - मेरे घर की देहलियों पर समर्पित 'बलि' को हंस एवं सारस आदि पक्षीगण खा जाया करते थे । ''

स्पष्ट है कि 'बलि' बलि वैश्व के रूप में अर्पित अन्नादि ही है ।

बलि का अर्थ 'कर, -'टैक्स' भी होता है ।

रघुवंश महाकाव्य में राजा दिलीप की शासन व्यवस्था का वर्णन करते हुए कहा गया है-

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत ।
सहस्त्रगुणमुत्स्त्रष्टुं आदत्ते हि रसं रविः, ।।

अर्थात्- वे प्रजा के कल्याण के लिए 'बलि' 'कर' ग्रहण करते थे, उसी प्रकार जैसे सूर्य पानी का शोषण करता है किन्तु उसे हजार गुना करके बरसा देता है ।

यहाँ भी बलि का प्रचलित अर्थ किया जाय तो क्या बात बनेगी ?

संस्कृत कोष (वामन शिवराम आप्टे कृत) में बलि के अर्थ इस प्रकार हैं-

(१) आहुति, भेंट, (२) दैनिक आहार प्रदान करना (३) पूजा-आराधना (४) उच्छिष्ट (५) देवमूर्ति पर चढ़ाया गया नैवेद्य (६) शुल्क, कर, चुंगी (७) चवर का डंडा (८) राजा 'बलि' (प्रहलाद के पौत्र)

श्राद्धकर्म में गोबलि, कुक्कुम बलि, काकबलि, पिपीलिकादि बलि आदि का विधान है, उसमें कोई गौ, कुत्ता, कौआ या चींटी आदि का वध नहीं करता, उनके लिए श्रद्धापूर्वक भोज्यपदार्थ अर्पित किया जाता है ।

हिन्दू धर्म कोश (डॉ. राजबलि पाण्डेय) में बलि को एक कन्नड़ भाषा का शब्द कहा है । इसे तमिल में 'बरि'तथा तेलुगु में 'बेदगु' कहते हैं । यह एक जाति विशेष के लिए प्रयुक्त संबोधन है । उस वन्य जाति के लोग किसी पशु-पक्षी, अथवा जलचर का चिन्ह धारण किए रहते हैं । यह चिन्ह उनके समुदायों की पहचान कराता है । जो समुदाय जिस प्राणी का चिन्ह धारण करता है उसके संरक्षण को अपना विशेष दायित्व मानता है । यहाँ भी 'बलि' संबोधन रक्षा करने वालों के लिए प्रयुक्त होता है, वध कर्ता के लिए नहीं ।

यज्ञ में पूर्णाहुति के समय देवताओं एवं यज्ञ भगवान को भोज्य पदार्थ भेंट करने का विधान है । उसे 'बलि' ही कहा जाता है । उसमें सात्विक भोजन ही दिए जाते हैं । मांसाहार प्रेमियों ने सामिष भोजन अर्पित करना प्रारंभ कर दिया होगा और इस प्रकार बलि का हिंसक अर्थ प्रचलित कर दिया गया । किन्तु वस्तुतः वैदिकी-यज्ञीय संदर्भ में हिंसक प्रयोग वर्जित माने गये हैं ।

अश्वमेध अर्थात्-अजेय राष्ट्र का सामर्थ्य सम्पादन

इन दिनों हर किसी की आँख राष्ट्र को बिखराव के तूफानों से घिरा देख रही हैं । इस आँधी में एकता के तिनके समेटे जा सकेंगे-किसी को कल्पना तक नहीं उठती । पंजाब-कश्मीर आसाम आँधी के इन्हीं हिचकोलों में झूल रहे हैं । अलगाव में तत्पर आंतक फैलाने में जुटे संगठनों की फेहरिस्त बनाई जाय तो एक पुस्तक के पृष्ठों का कलेवर शायद छोटा पड़ जाय । इन विपन्नताओं विषमताओं का कारण एक ही है राष्ट्रीय भावना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का अभाव । इसके विकसित हुए बिना नागरिकों में संवेदना और साहस कदापि नहीं पैदा हो सकता, जिसके वशीभूत हो वे अपने स्वार्थों को "**इदं राष्ट्रीय इदं न मम्** " कहते हुए राष्ट्र देवता के लिए न्योछावर कर सकें ।

देश की प्राचीन स्वर्णयुगीन परिस्थितियों के पीछे नागरिकों की यही भावना थी । विख्यात इतिहासकार ए. एल. बाशम ने अपनी पुस्तक "द वन्डर देट-वाज इण्डिया" (भारत जो आश्चर्य था) में लिखा है यदि कहीं के निवासियों ने अपने राष्ट्र को जीवन्त जाग्रत और उपास्य माना है-तो वह भारत है । उनके अनुसार 'अश्वमेध' राष्ट्र उपासना की सर्वाधिक प्रचलित प्रक्रिया थी । जिसका अनुष्ठान शासक श्रोत्रिय (मनीषी) एवं जन समूह सभी मिलजुल कर करते थे । इसी के द्वारा न केवल राजनीतिक क्षितिज पर बल्कि आर्थिक बौद्धिक और सामाजिक दायरों में विकास के मापदण्ड स्थापित किए गए ।

शतपथ ब्राह्मण १२/१/२/९/३ में अश्वमेध के इसी स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा गया है-

"श्री वै राष्ट्रं । राष्ट्रं वै अश्वमेधः । तस्मात् राष्ट्री अश्वमेधेन यजेत् । सर्षाः वै देवताः । अश्वमेधे अवयताः । तस्मात् अश्वमेध थाजी सर्व दिशो अभिजयन्ति ।"

अर्थात् वर्चस्व ही राष्ट्र है । राष्ट्र ही अश्वमेध है । राष्ट्र परायण अश्वमेध करें देवगण यज्ञ में सम्मिलित होते हैं । अश्वमेध का संयोजक सर्व विजयी होता है ।

यजुर्वेद संहिता के १८ वें अध्याय के २२ वें मण्डल के मंत्र-अग्निश्च में **अश्वेधेनश्चमे ..... यज्ञेन कल्पन्ताम् ।** में राष्ट्र को अखण्डित होकर रहने की बात कही गई है । इसके अनुसार अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान राष्ट्र की अखण्डता के लिये किया जाता था ।

इतिहास के पन्ने इस बात की हामी भरते हैं कि जब-जब राष्ट्र परायण लोकहित में समर्पित शूरवीरों, भावनाशीलों के मन में राष्ट्र को संगठित-समर्थ बनाने की ललक जगी-अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किए जाते रहे । पृथु, अम्बरीष, नहुष, दिलीप, रघु आदि शासकों, वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, देवल आदि श्रोत्रियों द्वारा अश्वमेध सम्पन्न करने के विवरण इतिहास पुराणों में मिलते हैं । रावण के आतंक को समाप्त करने वाले भगवान राम द्वारा अश्वमेध रचाने के वर्णन से वाल्मीकीय रामायण के उत्तर काण्ड के ९१ और ९२ सर्ग भरे हैं । युधिष्ठिर-जनमेजय आदि के अश्वमेध पराक्रम का विवरण महाभारत में देखा जा सकता है । इन सभी प्रयासों में 'राष्ट्रं वा अश्वमेध : । वीर्यंवा अश्व :

-शतपथ

ब्राह्मण १३/१/६ अर्थात्-पराक्रम ही अश्व है, राष्ट्र को संगठित - समर्थ बनाना ही अश्वमेध है । उक्ति चरितार्थ होती दिखती है ।

महाभारत काल के बाद अश्वमेध की प्रक्रिया उतनी सघन और व्यापक नहीं रही । परिणाम में राष्ट्र भी बिखरता-टूटता-बँटता चला गया । ईसा के १८५ वर्ष पहले राष्ट्र की इस दुर्दशा ने महर्षि पतंजलि को व्याकुल किया । उनके निर्देश से पुष्यमित्र का शौर्य जगा । संगठित राष्ट्र ने अश्वमेध का यजन किया । पुष्यमित्र शुंग के बाद गुप्त वंश के द्वितीय सम्राट समुद्र गुप्त द्वारा ३३० ईसवी में अश्वमेध में सम्पन्न करने का उल्लेख इतिहास में मिलता है । अश्वमेध यज्ञ का पूर्णाहुति के अवसर पर यशस्वी सम्राट ने ऋग्वेद के मंत्र

अहंराष्ट्री संगमनी वसूनां
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्
तां मां देवा वंयदधुः
पुरुत्राभूरिस्थानां भूयविशयम् नतीम्-

- ऋग्वेद १०/१०/१२५

"मैं राष्ट्र की अधीश्वरी (भारत माता) समृद्धियों का संगम परब्रह्म से अभिन्न तथा सभी देवताओं में प्रधान हूँ । पूरे परिवेश में मैं ही स्थित हूँ । नानास्थानों में रहने वाले देवता जो भी करते हैं मुझे जानकर करते हैं" को राष्ट्र मंत्र घोषित किया ।

हिन्दू धर्म कोष के लेखक डा. राजवली पाण्डेय ने अपने ग्रंथ के अश्वमेध

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसके स्वरूप और महत्व पर प्रकाश डालने वाले ढेरों शास्त्र प्रमाणों को उद्धृत किया है । आपस्तम्ब स्मृति के अनुसार सांस्कृतिक दिग्विजय के लिए लगभग चार सौ वीरों की वाहिनी निकलती थी । इसकी पूर्णाहुति के रूप में तीन दिन चलने वाला अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न होता था । यज्ञ में सम्मिलित होने वाले याजक सविता देव को अपनी भावांजलि समर्पित करने वाले सूर्योपासक होते थे । ऐतरेय ब्राह्मण ८-२० में भी इस यज्ञ को सम्पन्न करने वाले महापुरुषों का विवरण मिलता है ।

मध्ययुगीन अन्धकार और परतंत्रता की त्रासदी के दिनों में न केवल वैदिक प्रक्रियाएँ विलुप्त हुईं बल्कि उनके अर्थ के अनर्थ निकाले गए । इन्हीं में से एक मेध का अर्थ हत्या या हिंसा किया जा सकता है । जबकि वेद के मर्मज्ञ विद्वान पं. दामोदर सातवलेकर ने मेध को-मेधृ धातु से निष्पन्न 'मेध' शब्द के लोगों में मेधा, एकता और प्रेम बढ़ाने के अर्थों में प्रयुक्त किया है । भाष्यकार महीधर ने यजुर्वेद २३-४० का भाष्य करते हुए कहा है- **तेष्वारण्याः सर्वे उत्त्वष्टव्या न तु हिंसया** "अर्थात्- याज्ञिक क्रियाओं को सम्पादित कर पशुओं को जंगल में छोड़ दिया जाता था उनकी हिंसा नहीं की जाती ।

यज्ञ का एक नाम है 'अध्वर' जिसका अर्थ होता है हिंसा रहित कृत्य । उसमें अग्नि का उपयोग तो होता है पर साथ ही पुरोहितों और याजकों में से प्रत्येक को भी ध्यान रखना पड़ता है कहीं समिधाओं या शाकल्य में कृमि-कीटक तो नहीं हैं और उस गर्मी से चींटी आदि प्राणियों की जीवन हानि तो नहीं हो रही । जहाँ इतनी सतर्कता के निर्देश हों वहाँ प्राणिवध की तो कल्पना संभव नहीं । वेद भगवान का तो स्पष्ट आदेश है- **"पशूनां पाहि गां मा हिंसी, अजा मा हिंसी ।**
अपिमा हिंसी, इमं मा हिंसी द्विपाद पशुं ।।
मां हिंसी रेकशंक पशुं मां हिंस्यात सर्वभूतानि "
अर्थात् पशुओं की रक्षा करो, गाय को मत मारो, बकरी को मत मारो, भेड़ को मत मारो, दो पैर वाले (मनुष्य, पक्षी) को मत मारो । एक खुर वाले पशुओं (घोड़ा गधा) को मत मारो, किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो ।

पशुओं की हिंसा करना अच्छे मनुष्य का लक्षण नहीं है । इसी तथ्य को पंचतंत्रकार ने स्वीकार किया है-

एतेऽपि ये याज्ञिका यज्ञकर्मणि पशून व्यापादयन्ति ते मूर्खा : परमार्थं श्रुतेर्न जानन्ति । तत्र किलैतयुक्तम् अजैर्यज्ञेषु यष्टव्यमिति अजास्तावद् ब्रीह्यःसाप्तवार्षिकाः कथ्यन्ते न पुनः पशु विशेषाः । उक्तंच-
'वृक्षान् क्षित्वा पशूनहत्वा कृत्वारुधिर कर्दमम्
यद्येवं गम्यते स्वर्ग, नरकं केन् गम्यते ।। '

अर्थात्- जो याज्ञिक यज्ञ में पशुओं की हत्या करते हैं, वे मूर्ख हैं । वे वस्तुतः श्रुति (वेद) के तात्पर्य को नहीं जानते । वहाँ जो अजों से यज्ञ करना चाहिए, उसमें अज से तात्पर्य व्रीह या पुराने अनाज विशेष से है न कि बकरे से ।" आप्तकथन भी है यदि पशुओं की हिंसा करके उनकी रुधिर की धारा बहा कर स्वर्ग में जाया जा सकता है तो नरक में जाने का मार्ग कौन सा है?

अश्वमेध के हिंसा रहित होने का प्रमाण महाभारत शान्तिपर्व के अध्याय-३-३३६ में देखा जा सकता है । इसमें वसु महाराज द्वारा अश्वमेध करने का रोचक वृतान्त इसमें आचार्य बृहस्पति के अतिरिक्त कपिल, कठ, कण्व, तैत्तिरि आदि ऋत्विक थे । महाभारतकाल के अनुसार यहाँ **न तत्र पशुघातोऽभूत्"** पशुओं की किसी तरह की हत्या नहीं की गई । यों तो यज्ञ में किसी तरह की हिंसा वर्जित है, फिर अश्वमेध के अश्व को तो- स्तुत्य ठहराया गया है । आचार्य महीधर के शब्दों में **हे अश्व यस्त्वमाभिधा असि । अभिधीयते स्तूयत् इत्याभिधाः ।** अर्थात्- हे अश्वमेध के अश्व आप स्तुत्य हैं - *महीधर यजुर्वेद २२/३*

वैदिकयज्ञों में अश्वमेध का महत्वपूर्ण स्थान है । इसे महाक्रतु कहा गया है । इसकी ऐतिहासिकता सर्वथा असंदिग्ध है । राष्ट्रहित के लिए-दैवी शक्तियों के आह्वान और मानवीय सामर्थ्य को नियोजन करने वाली इस प्रक्रिया में किसी भ्रान्ति की रत्तीभर गुंजाइश नहीं । ऋग्वेद में इससे सम्बधित दो मंत्र हैं । यजुर्वेद में २२ से २५ अध्याय में इसका विधि-विधान दिया गया है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शतपथ ब्राह्मण (१३ काण्ड) में इसका विशद वर्णन है । तैत्तरीय ब्राह्मण (३-८९) कात्यानीय श्रौतसूत्र (२०) आपस्तम्ब (२०) आश्वलान (१०,६) शंखायन(१६) आदि में इसके स्वरूप और महात्म्य के विस्तृत विवरण मिलते हैं ।

इन सबका गहराई से अध्ययन करने वाले डॉ. ब्लूमफील्ड ने न केवल इसे राष्ट्रीय उपासना की संज्ञा दी बल्कि अपने ग्रंथ ''आइडियाज एण्ड इंस्ट्रिटूयशन्स इन वैदिक इण्डिया'' में यह भी कहा- क्या ही सुखद हो यदि विश्व के सभी राष्ट्र, राष्ट्र उपासना की इस पद्धति को अपना कर अपनी संगठन सामर्थ्य और चरित्रबल की वृद्धि करें । अश्वमेध आयोजनों की वर्तमान श्रृंखला पर विचार करके यही कहा जा सकता है कि मनीषी ब्लूमफील्ड की आकांक्षा पूर्ति का समय आ गया है । राष्ट्रीय और मानवीय भावनाओं को विकसित करने वाली यह योजना न केवल भारत् वरन् समूचे विश्व को नया रंग, वातावरण, एक उच्चतर भावना, एक बड़ा उद्देश्य प्रदान करेगी । इसके परिणाम में यदि 'राष्ट्र' शब्द विश्व राष्ट्र का व्यापक बोध कराने लगे तो किसी को आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए ।

'मेध' सम्बन्धी भ्रान्तियों का निराकरण

यज्ञ प्रकरण में मेध-यज्ञों का स्थान महत्वपूर्ण है । समय-समय पर उनकी अलग-अलग ढंग से व्याख्या की जाती रही है । मध्यकाल में मेध की संगति बलि से जोड़कर अधर्मियों ने अपना स्वार्थ ही नहीं सिद्ध किया, वरन् यज्ञों पर भी कलंक की छाप डाली । वेद विद्या के मर्म को जान सकने में असमर्थ जन सामान्य का इन भ्रान्त व्याख्याओं से भ्रमित हो जाना स्वाभाविक है । विवेक प्रधान इस युग में अनिवार्य हो गया है, कि मेध यज्ञों के उस दर्शन और स्वरूप को स्पष्ट किया जाय-जो इनके अनुसंधानकर्ता ऋषियों को अभीष्ट रहा है ।

इस क्रम में विचार करने पर पाते हैं कि 'मेध' शब्द उसके साथ जुड़ी संज्ञा से सन्दर्भित है । वैदिक वाङ्मय में चार प्रकार के मेध यज्ञ बहु प्रचलित हैं-सर्वमेध, नरमेध, अश्वमेध और गोमेध । इनमें से सर्वमेध का तात्पर्य हैं- निजी सम्पदा, प्रतिभा एवं आयुष्य को समष्टिगत सत्प्रयोजनों के लिए समर्पित कर देना । निजी सम्पत्ति के रूप में कुछ देना । निजी सम्पत्ति के रूप में कुछ भी संग्रह, परिग्रह पास न रखना । वाजश्रवा, हरिश्चन्द्र आदि ने अपने समय की माँग पूरा करने के लिए ऐसे ही सर्वमेध सम्पन्न किये हैं ।

नर मेध का अर्थ है-तपस्वी जीवन । अभ्यस्त लोभ, मोह, अहंता के कुसंस्कारों का परित्याग । पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा की कामना अभिलाषाओं से विमुख होना । गतिविधियाँ तपश्चर्या युक्त बनाना । चिन्तन में उदारता, आत्मीयता का अधिकाधिक समावेश करना । अन्तराल में सदाशयता के प्रतिश्रद्धा को प्रागाढ़ परिपक्व करना ।

अश्वमेध-सामर्थ्यों को राष्ट्र निर्माण के लिए हठपूर्वक नियोजित करने की प्रक्रिया है । संचित कुसंस्कारिता क्षुद्र प्रयोजनों में निरत रहने के लिए ललचाती रहती है । कुत्साओं से घिरा हुआ लोक प्रवाह तथा स्वजनों का आग्रह भी ऐसे ही दबाव डालता रहता है । इन समस्त अवरोधों को चीरते हुए उपलब्ध सामर्थ्य में से निर्वाह के लिए न्यूनतम रखने के उपरान्त शेष को राष्ट्रहित समाजहित में लगा देने की व्रतशीलता, अश्वमेध है ।

गोमेध का अर्थ है प्रसुप्त सत्प्रवृत्तियों के जागरण में स्वाध्याय शिक्षण, कौशल आदि का विस्तार । दैवी सम्पदाओं से व्यक्ति और समाज को सुसंपन्न बनाना । समग्र यज्ञ प्रक्रिया इन दर्शन सिद्धान्तों पर ही अवलम्बित रही है । यजन प्रक्रिया तो उसका स्थूल दृश्यमान पक्ष भर है । उपरोक्त प्रयोजनों के लिए कई बार व्यक्ति विशेष द्वारा इन चार में से जिसका निश्चय किया हो, उसकी सार्वजनिक घोषणा के लिए यह आयोजन सम्पन्न किया जाता था । कई बार मूर्धन्य पुरोहितों द्वारा व्यापक समूह को इन महत्वपूर्ण प्रयोजनों की दीक्षा देने के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सार्वजनिक समारोह बुलाए जाते थे ।

मनीषी, चार्ल्स ड्रेकमायर के ग्रंथ "प्रि बुद्धिस्ट इण्डिया" के अनुसार अश्वमेध की एक विशेष प्रक्रिया राजसूय स्तर की भी सम्पन्न होती रही है । सामन्तवादी उच्छृंखलता के कारण शासकों के अनाचार प्रजा पीड़क न बनने पाएँ इसलिए उन्हें सर्वतन्त्र स्वतंत्र नहीं रहने दिया जाता था । उन्हें किसी केन्द्रीय नियन्त्रण के अंतर्गत रखने के लिए समय-समय पर ऐसे आयोजन होते रहते थे । जो स्वेच्छाचारिता का आग्रह करते थे, उन्हें बलपूर्वक वैसा करने से रोका जाता था । ड्रेकमायर के अनुसार इसका एक अन्य स्वरूप वाजपेय स्तर का भी सम्पन्न किया जाता रहा है । विचारों की स्वेच्छा चारिता को आदर्शवादी दिशाधारा के अन्तर्गत रखने के लिए समर्थ आत्मवेत्ता 'दिग्विजय' के लिए निकलते थे । शास्त्रार्थ जैसे विचार युद्ध ऐसे ही प्रयोजनों के लिए होते थे । जो हारता था उसे पृथकतावादी आग्रह छोड़कर संयुक्त प्रवाह में बहने के लिए विवश किया जाता था ।

मेध यज्ञों के प्रसंग में एक बड़ी विडम्बना न जाने कहाँ से आई और सरल सौम्य प्रक्रिया में एक अवांछनीय झंझट खड़ा कर दिया । यजन कृत्य के हविष्य का निर्धारण करने वाले प्रसंग में कुछ शब्द ऐसे आ गए जिन्हें साहित्यकला की दृष्टि से जान बूझकर अथवा संयोगवश ऐसे ही प्रयुक्त कर दिया गया, जिनके दो अर्थ होते थे । ऐसे प्रसंगों में कौतुहल अथवा हास-विलास तो होता है, पर कोई भ्रमित नहीं होता । पहेली में शब्द तो अटपटे होते हैं, पर समझदार लोग उसका सही अर्थ बिना किसी कठिनाई के सामान्य बुद्धि से ही जान लेते हैं । शब्दों के अटपटेपन के कारण कोई अर्थ का अनर्थ नहीं करता । किन्तु इस प्रसंग में कुछ ऐसा अर्थ लगाया जाने लगा जो मूल तथ्यों के साथ किसी भी प्रकार संगति नहीं खाता ।

यज्ञ विवेचना में अश्वमेध, गोमेध, नरमेध, यज्ञों की चर्चा हुई है । इनमें प्रयुक्त हुए दोनों शब्दों के अर्थ का अनर्थ किया गया है । मेध का अर्थ समर्पण या संगठन होता है, साथ ही एक अर्थ बध भी होता है । औचित्य कहाँ है ? संगति कहाँ बैठती है, उस पर विचार करते ही तात्पर्य समझने वालों को समर्पण आदि-अर्थ करने चाहिए, न कि हत्याकाण्ड । इस पहेली में अश्व, गौ, नर नामक प्राणियों को मार-काट कर होम देने जैसे अर्थ निकाले जाने की गुंजाइश है, किन्तु अश्व-शक्ति वैभव को, गौ-इन्द्रियों को और नर अर्थात्-व्यक्तित्व को पवित्र बनाने संयमित एवं ईश्वरार्पण करना ही यहाँ इसका वास्तविक तात्पर्य है ।

इसी प्रसंग में कहीं-कहीं एक और शब्द आ धमका 'आलभन' । जिसका एक अर्थ होता है-स्पर्श, दूसरा अर्थ होता है मार डालना । देखना यह चाहिए जब यज्ञ का नाम ही अध्वर है । अध्वर अर्थात् - हिंसा रहित कर्म । जब उस प्रक्रिया में रक्तपात की कहीं गुंजाइश नहीं है । ऐसी दशा में पशुओं या मनुष्यों को मारकर अग्नि में होम देने की बात किस प्रकार बुद्धि संगत ठहराई जा सकती है ।

किन्तु मध्य काल में अनहोनी को होनी कर दिखाने में कुशल कुछ विदूषकों ने उपाहासास्पद प्रयत्न किया और 'उलटवासी' का शब्दार्थ कुछ का कुछ करके यज्ञ के मत्थे 'प्राणिबध' का कलंक मढ़ने की कोशिश कर डाली । कुछ ऐसी ही घटनाओं को पनपते देखकर उन दिनों महात्मा बुद्ध और भगवान महावीर जैसी आत्माएँ सामने आईं और विकृति को अंकुरित होते-होते ही पैरों तले कुचलकर फेंक दिया । फलतः यज्ञ विधा पर जिस ग्रहण की काली छाया पड़नी शुरू हुई थी, वह समय रहते अपनी थोड़ी सी करतूत दिखाकर ही पलायन कर गई ।

यज्ञ में प्राणिहिंसा की बात किसी भी शास्त्रानुमोदित नहीं हो सकती । शास्त्रकार तो- **अध्वर इति यज्ञनाम-ध्वरतिहिंसाकर्माः तत्प्रतिषेधः निरुक्त २/७ श.** अर्थात्- 'अध्वर' यह यज्ञ का नाम है जिसका अर्थ हिंसा रहित कर्म है का उद्घोष करते हैं । वैदिक वाङ्मय में इस तरह के अनगिनत कथन हैं । यथा-

अग्ने ये यज्ञमध्वरं विश्वतः परि भूरसि ।
स इद् देवेषु गच्छति ।। **-ऋक् १/१/४**

अर्थात्- हे ज्ञान स्वरूप परमेश्वर ! तू हिंसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहित यज्ञों में ही व्याप्त होता है और ऐसे ही यज्ञों को सत्यनिष्ठ विद्वान लोग सदा स्वीकार करते हैं ।

यजन्तमध्वराणां गोपाभृतस्य दीदिविम् ।
वर्धमान स्वेदमे ।। *-ऋक् १/१/८*

यहाँ भी परमेश्वर को अध्वरों अर्थात्-हिंसा रहित सब कर्मो में विराजमान बताया गया है । ऋग्वेद में ही एक अन्य स्थान पर कहा गया है -

स सुक्रतुः पुरोहितो दमे दमेऽग्निर्यज्ञस्या ध्वरस्य
चेतति क्रत्वा यज्ञस्य चेत्ति *-ऋक् १/ १२/ ४*

अर्थात्- परमेश्वर और वेदविद् पुरोहित हिंसा यज्ञ का ही मनुष्यों को सदा उपदेश देते हैं । अत्रिस्मृति के अनुसार यज्ञ में अग्नि का उपयोग तो किया जाता है पर साथ ही पुरोहितों और याजकों में से प्रत्येक को यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं समिधाओं या शाकल्य में कृमि कीटक तो नहीं है और उस गर्मी से किन्हीं चींटी जैसे प्राणियों की जीवन हानि तो नहीं हो रही । जहाँ इतनी सतर्कता का निर्देश हो वहाँ प्राणिबध की तो कल्पना तक नहीं की जा सकती ।

दो अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग जहाँ होता हो वहाँ बुद्धिमत्ता यही कहती है कि प्रसंग की पूर्वा पर संगति भी बिठाई जाय और यह ध्यान भी रखा जाय कि प्रस्तुत करने वालों का मन्तव्य या उद्देश्य क्या रहा है ? औचित्य का ध्यान रखे बिना दो अर्थ वाले शब्दों का अर्थ कुछ से कुछ मूल मान्यता से सर्वथा विपरीत कर देना- अनर्थ ही कहा जाएगा । ऐसी ही दुर्भाग्य पूर्ण विडम्बना किसी-किसी उद्धत अर्थ करने वाले मेध शब्द का तात्पर्य एवं स्वरूप प्रस्तुत करने में की है । इतने पर भी मूल मन्तव्य को समझने वाले शास्त्रकारों, वेद मर्मज्ञों की कमी नहीं रही । वे वेदोक्त 'मेध' शब्द का सही अर्थ ही प्रस्तुत करते रहे हैं ।

वेद मनीषी पं. दामोदर सातवलेकर ने युजुर्वेद भाष्य (अध्याय३०) के संदर्भ में मेधशब्द के अर्थ(१) मिलना (२) परस्पर मित्रता करना (३) ऐक्य करना (४) एक दूसरे को जानना (५) जोड़ना (६) प्रेम करना (७) धारणा बुद्धि का बल और तेज बढ़ाना (८) पवित्रता करना (९) सत्व-बल और उत्साह बढ़ाना, लिए हैं । धातु पाठ में 'मेधृ' धातु का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा गया है -

" मेधृ-मेधासंगमनयोर्हिंसायां च "

अर्थात् 'मेधृ' धातु से निष्पन्न मेध शब्द के मेधा लोगों में एकता व प्रेम बढ़ाना तथा हिंसा ये तीन अर्थ होते हैं । जब मेध शब्द के अन्य अर्थ होते हैं तो हिंसा वाले अर्थ के प्रति इतना दुराग्रह क्यों किया जाय, जबकि उन-उन स्थलों में उनका हिंसा से भिन्न तात्पर्य ही अभीष्ट है । ये कुछ दृष्टांत दृष्टव्य हैं-

पुरुष मेध, पुरुषयज्ञ और नृयज्ञ-ये तीनों शब्द प्राय: एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते रहे हैं ।

इनमें से नृयज्ञ का तात्पर्य बोध कराते हुए मनुस्मृतिकार ने लिखा है-

नृयज्ञोऽतथि पूजनम् ।

अर्थात्-अतिथियों का स्वागत सत्कार ही नृयज्ञ है । अजमेध को बकरे की बलि यज्ञ से अर्थ लगाने वाले को 'महाभारत' में कड़ी चेतावनी दी गई है-

अजैर्यज्ञेषु यष्टव्यम् इतिवै वैदकी श्रुतिः ।
अज संज्ञानि बीजानि छागान्नो हन्तुमर्हथ ।
नैषाधर्म सतां देवाः यत्र वध्यते पशु ।।

- शान्तिपर्व अ. ३/३७

अर्थात् -वेद में अज से यज्ञ करना चाहिए ऐसा वध से नहीं लगाना चाहिए । पशुओं का बध करना अच्छे मनुष्यों का धर्म नहीं है । इसी तरह अश्वमेध का तात्पर्य घोड़े की बलि देने वाला यज्ञ नहीं लगाया जाना चाहिए ।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार-

राष्ट्रं वा अश्वमेधः । वीर्यं वा अश्वः ।'

-शतपथ १३/९/६

अर्थात्-पराक्रम ही अश्व है, राष्ट्र का अच्छी प्रकार संचालन ही अश्वमेध है ।

हिंसा तो किसी भी यज्ञ कर्म में निषिद्ध है, फिर अश्वमेध के प्रयोजन तो बहुत ही उच्चस्तरीय हैं । इस तथ्य को स्वीकारते हुएं पंचतंत्रकार का मत है-

'एतेऽपिये याज्ञिका यज्ञकर्मणे पशून्
व्यापादयन्ति ते मूर्खाः परमार्थं श्रुतेर्न जानन्ति
तत्र किलैतयुक्तम् अजैर्यज्ञेषु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यष्टव्यमिति अजास्तावद् ब्रीह्यःसाप्तवार्षिकाः
कथ्यन्ते न पुनः पशु विशेषाः । उक्तं च-
वृक्षान् छित्वा पशूनहत्वा कृत्वा रुधिर कर्दमम्
यद्येवं गम्यते स्वर्गं, नरकं केन गम्यते ।।

अर्थात्-जो याज्ञिक, यज्ञ में पशुओं की हत्या करते हैं, वे मूर्ख हैं, वे वस्तुतः श्रुति के तात्पर्य को नहीं जानते । वहाँ जो अजों से यज्ञ करना चाहिए उसमें अज से तात्पर्य व्रीह (पुराना अनाज विशेष) से है । आप्त कथन भी है- 'यदि पशुओं की हिंसा करके उनकी रुधिर की धारा बहाकर स्वर्ग में जाया जा सकता है, तो नरक में जाने का मार्ग कौन सा है ?

यजुर्वेद में आलभते शब्द प्रयोग में आया है । उसका अर्थ निकाला गया 'वध करना चाहिए । जबकि यह अर्थ यहाँ किसी प्रकार युक्ति संगत नहीं । 'आङ्' पूर्वक लभधातु से निष्पन्न इस शब्द का अर्थ 'स्पर्श' करना होता है । उदाहरण के लिए-

वत्सस्य समीप आनयनार्थम् आलम्भः स्पर्शो भवतीति

-सुबोधिनी टीका मीमांसादर्शन-२/३/१७

यहाँ आलम्भ धातु का अर्थ स्पर्श करना ही किया गया है । अतएव यज्ञों में आलम्भ के प्रयोग से हिंसा का सअर्थ लेना नितान्त भ्रान्तिपूर्ण है ।

तथ्य का अध्ययन अन्वेषण की गहनता क स्पर्श करके यही कहा जा सकता है मेध यज्ञ सर्वथा निर्भ्रान्त है । इनके सम्बन्ध में किसी भ्रान्ति की राई-रत्ती भर गुंजाइश नहीं है । फिर अश्वमेध के प्रयोजन-तो और अधिक उच्चस्तरीय हैं । पश्चिमी मनीषी ब्लूमफील्ड ने अपने शोध अध्ययन "अर्ली हिस्ट्री ऑव वैदिक इण्डिया" में इसे राष्ट्रीय उपासना की अनुकरणीय पद्धति कहा है । वेदों ने इसे महाक्रतु कहकर सराहा है । ऋग्वेद में इससे सम्बन्धित दो मंत्र हैं । शतपथ ब्राह्मण (१३) में इसका विशद वर्णन प्राप्त होता है । तैत्तरीय ब्राह्मण (३, ८, ९) कात्यायनीय श्रौतसूत्र (२०) आपस्तम्ब (२०)आश्वलायन (१०६) शांखायन (१६) तथा दूसरे सम्मान्य ग्रंथों में इसका वर्णन मिलता है । इन सुप्रसिद्ध-शास्त्रों के विवरण यही स्पष्ट करते हैं- कि अश्वमेध प्रक्रिया राष्ट्र को संगठित समर्थ बनाने, व्यक्ति में समझदारी पैदा करने, मेधा वर्धन करने, तथा देवशक्तियों के अनुग्रह अवतरण हेतु आधार भूमि तैयार करने वाला विराट प्रयोग है ।

मेधा को जो जगाये, वह है-अश्वमेध

अथर्ववेद में एक मंत्र आता है-

अग्ने समिध महर्षि बृहते जातवेदसे
स मे श्रद्धां मेधां च जातवेदः प्रयच्छतु ।।

-१९/६४/१५

अर्थात्- 'हे यज्ञाग्ने ! तू महान और सब उत्तम पदार्थों को प्राप्त कराने वाला है । अतः मैं तेरे अंदर श्रद्धापूर्वक समिधा प्रदान करता हूँ । तू कृपाकर मुझे श्रद्धा और मेधा प्रदान कर । " इसी प्रकार ऋग्वेद का ऋषि एक स्थान पर कहता है-

"**इमं यज्ञं मेधावन्तं कृधी** " (प्रभो! हमारे इस यज्ञ को मेधावान बना दो) तथा **जातवेदो मेधां अस्मासु धेहि** (हे यज्ञाग्ने ! तू हमारे अन्दर मेधा को धारण करा)

उपरोक्त श्रुति वचनों का अर्थ यह है कि विराट अश्वमेध स्तर के यज्ञों का एक महत्वपूर्ण प्रयोजन एक व्यापक स्तर पर प्रसुप्त पड़ी प्रतिभा के मेधा के जागरण के लिए भी होता है । यह मनुष्य की प्रतिभा ही है, जिसने उसे अन्य जीवधारियों से भिन्न बनाया है । इसी के बलबूते वह वैज्ञानिक के रूप में प्रकृति का रहस्योद्घाटन करने और प्राणी जगत का भाग्यविधाता होने का दावा करता है । अनेकानेक प्रकार के तत्वदर्शन के सिद्धान्त गढ़ने से लेकर शासन और समाज की संरचना तथा साहित्य का अक्षय भण्डार खड़ा कर देना एवं पृथ्वी को अनगढ़ता की स्थिति में सुगढ़ सुविकसित स्थिति में पहुँचा देने का पराक्रम मानवी मेधा प्रतिभा का ही चमत्कार है । संभवतः इसी कारण ऋषि कहते आए हैं - **न मानुषात् हि श्रेष्ठतरं किंचित,** (मनुष्य से श्रेष्ठ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस दुनिया में कोई अन्य नहीं है) ।

इतना सब होते हुए भी विडम्बना वही सामने आ कर खड़ी हो जाती है कि प्रतिभा का विपुल भण्डार अंतः सत्ता में भरा होते हुए भी उसे उभरने प्रकट होने का असर उन दबावों के कारण नहीं आ पाता जो कषाय कल्मषों के रूप में आत्मसत्ता के ऊपर स्वेच्छापूर्वक लाद लिए गये हैं । लकड़ी सामान्यतया पानी पर तैरती रहती है, किन्तु यदि उस पर भारी चट्टानें बाँध दी जायें तो वह अपना स्वाभाविक गुण तैरना भूलकर डूब जाती है । विभूतियों से अभिभूषित होने के बावजूद मनुष्य निकृष्टता की चट्टान सिर पर लाद लेने के उपरान्त अपना वास्तविक स्वरूप दिखापाने की स्थिति में रह ही नहीं जाता । आज के समाज का जो भी स्वरूप हमारे समक्ष है, वह इसी विडम्बना के कारण ऐसा दृष्टिगोचर होता है । संव्याप्त अवांछनीयताओं से जूझकर उन्हें परास्त करना तथा नवयुग की सृजन व्यवस्था को कार्यान्वित करने की समर्थता इस कारण नहीं संभव बन पा रही है कि ये दोनों ही कार्य तेजस्वी, मेधावान, जाग्रत, प्रतिभाशालियों के बलबूते ही संभव हो सकते हैं । आड़े समय में से ऐसे ही व्यक्ति आगे आते व संस्कृति समाज की नौका को उफनते समुद्र में खेते हुए ले जाते हैं । इस प्रतिभा को समाज, राष्ट्र ही नहीं विश्व के समष्टि के स्तर पर जगाने के लिए जिस पराक्रम की आवश्यकता है, वह भौतिक नहीं, अध्यात्म जगत से उपजने वाला तथा सुनियोजित ढंग से किया जाने वाला धर्मानुष्ठान स्तर का होने पर ही अभीष्ट उपलब्धियाँ संभव हैं ।

परम पूज्य गुरुदेव का जीवन तिलतिलकर अपने जीवन का एक-एक क्षण संस्कृति की सेवा में होमकर देने वाले एक महायाज्ञिक का जीवन है । एक खुली किताब के रूप में उनके अस्सी वर्ष के जीवन के घटनाक्रम प्रमाण देते हैं कि किस तरह से वे प्रतिभा जागरण के उद्देश्य को लेकर सतत् पुरुषार्थरत रहे । संधिकाल की इस विषमवेला में, जहाँ महाविनाश का प्रलयंकर तूफान अपनी प्रचण्डता का परिचय दे रहा है, उनने जन-जन के मन में सतयुगी नवसृजन की उमंगें किस तरह जगा दीं । आज जब कोई भी उज्ज्वल भविष्य की बात करता नहीं दीखता, तब उनने सघन तमिस्रा के साम्राज्य में भी ब्रह्ममुहूर्त्त का आभास प्राची में उदीयमान होते दीख पड़ने तथा इक्कीसवीं सदी उज्जवल भविष्य का उद्घोष खुले रूप में सबके समक्ष किया ।

सरस्वती उपनिषद् में एक स्थान पर आया है- **"यज्ञं दधे सरस्वती "** (यज्ञ से ही सरस्वती प्रसन्न होती है) संभवतः उपनिषद की इस उक्ति के वैज्ञानिक परीक्षण हेतु ही परम पूज्य गुरुदेव ने जून १९५५ में गायत्री तपोभूमि मथुरा में एक सरस्वती यज्ञ गायत्री जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित किया था । अपने चौबीस महापुरुश्चरणों की महापूर्णाहुति वे गायत्री तपोभूमि में चौबीस कुण्डीयज्ञ में अखण्ड अग्नि की स्थापना दो वर्ष पूर्व ही कर चुके थे । नवम्बर १९५८ के सहस्रकुण्डी महायज्ञ से पूर्व यज्ञ संबंधी कई प्रयोग साधक स्तर के व्यक्तियों व जनसामान्य पर किये गये । इन सबका मूल उद्देश्य था प्रतिभा संवर्धन में यज्ञ प्रक्रिया किस प्रकार फलदायी होती है, यह जाना जाय । परम पूज्य गुरुदेव के यह शोधप्रयास अनेक विस्मयकारी परिणाम लेकर आए । उनने इन सभी विवरणों को दो यज्ञांकों के रूप में जुलाई-अगस्त १९५५ की अखण्ड-ज्योति में प्रकाशित किया । उसमें वे विष्णु धर्मोत्तर पुराण की साक्षी देते हुए अश्वमेध के संबंध में लिखते हैं कि-"मनुष्य इस यज्ञ को करने से मेधा को प्राप्त होते हैं तथा उनके पापों का नाश होता है । वांछित मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा परमपद की प्राप्ति सत्याचरण के कारण निश्चित ही होती है ।"

इसी यज्ञ के विषय में आगे वे लिखते हैं, कि एक वर्ष तक गायत्री महायज्ञ, रुद्रयज्ञ, महामृत्युंजययज्ञ, विष्णुयज्ञ, शतचंडीयज्ञ, नवग्रहयज्ञ, यजुर्वेदयज्ञ, ऋग्वेदयज्ञ, अथर्ववेदयज्ञ, सामवेदयज्ञ की निरनतर श्रृंखला द्वारा वे अश्वमेध स्तर की महायज्ञ प्रक्रिया पूरी कर उन कार्यकर्ताओं का उत्पादन करेंगे जिन्हें सूर्य की अशांत स्थिति वाले बुरे समय में सारे विश्व के कल्याण का संकल्प लेना है । क्रमशः ये यज्ञ संपन्न हुए भागीदारों जप-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुष्ठान संपन्न कराये गए । उनका पत्राचार पाठ्यक्रम से शिक्षण चला तथा प्रतिभा परिष्कार हेतु विभिन्न प्रयोगों हेतु परम पूज्य गुरुदेव ने व्यक्तिगत चर्चा द्वारा उन्हें ध्यान साधना से लेकर यज्ञ प्रक्रिया में भागीदारी का सुयोग्य प्रशिक्षण भी दिया । वे लिखते हैं कि यज्ञ में प्रयुक्त मंत्रोच्चार की प्रक्रिया ही अश्वमेध की सफलता का प्रमाण है ।

पावकाः नः सरस्वती वाजेभि,
वाजिनीवती, यज्ञं वष्टु धिया वसुः ।

अथर्ववेद के इस मंत्र द्वारा ऋषि कहते हैं कि "वाक् तप से पावन करती है, पुष्टि करती है तथा बुद्धि की प्रचोदना करती है।" शतपथ ब्राह्मण के काण्ड तेरहवें के अध्याय एक (ब्रह्म १८) में एक मंत्र आता है- "**सरवतत्यै स्वाहा, सरस्वत्यै पावका यै स्वाहा, सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा**" (वाणी सरस्वती है, यज्ञ उसे उभारता है) इस विशेषता के कारण ही अश्वमेध को यज्ञों का राजा कहा गया है-

राजा वाऽएष यज्ञानां यदश्वमेधः ।

-१/२/२/१३

'मेध शब्द जो अश्वमेध में प्रयुक्त होता आया है, उसका अर्थ वस्तुतः 'अग्निहोत्र' नहीं, विद्युत से है । इसी से 'मेधा' शब्द बना है । संसार में मेध अर्थात्- मेधा जिस परिमाण में मनुष्य में है, उतना और किसी वस्तु में नहीं है । मनुष्यों में भी जिसमें इसकी मात्रा सर्वाधिक देखी पायी जाती है, वे 'मेधावी' कहलाते हैं । यह मेधा ही है जो बिजली के रूप में नसों-माँसपेशियों में उछलती कूदती तथा मस्तिष्कीय प्रखरता के रूप में अनेकानेक गुत्थियों का समाधान निकालती देखी जाती है । ओजस्विता, मनस्विता, तेजस्विता के रूप में इसी का गुणगान होता है । होती तो यह सभी मनुष्यों में है पर व्यक्ति-व्यक्ति में इसका परिमाण भिन्न-भिन्न मात्रा में होता है । मस्तिष्कीय विद्युत आवेश का प्रायः ८३ प्रतिशत निरर्थक ही पड़ा रह जाता है । दैनन्दिन जीवन के क्रियाकलापों में उनका उपयोग न हो पाने के कारण बहुमूल्य क्षमताएँ, दैवी विभूतियाँ, ऋद्धि-सिद्धियाँ, प्रसुप्त स्थिति में ही किसी कोने में पड़ी रह जाती हैं । जो कुछ भी मेधावी-मनस्वी में उभरता-उफनता देखा जाता है । वह यही उफनकर ऊपर आया हुआ विद्युत प्रवाह ही होता है ।

उच्चस्तरीय प्रतिभा ही ब्रह्मतेज है । यही ब्रह्मवर्चस् है । अश्वमेधों में इसी प्रतिभा को उभारा परिमार्जित किया जाता है, वह भी समष्टिगत स्तर पर । यज्ञ कैसे इस प्रक्रिया को संपन्न कराता है, इस संबंध में शास्त्र विवेचन हमारा समाधान करते हैं । ऋषियों ने देखा कि मानवी मेधा तो स्थायी नहीं है क्योंकि मृत्यु पश्चात् यह तिरोहित हो जाती है और शरीर सड़ने लगता है । अस्तु पशुओं में अश्व का निरीक्षण किया गया । वह सबसे चंचल और द्रुतगामी भी है । उसमें भी वही त्रुटि पायी गयी । फिर गाय की जाँच पड़ताल की गयी । इस प्रकार ऋषियों ने अन्वेषण से पता लगाया कि मृत्यु पश्चात् सबसे पहले मानव शरीर में सड़न आरंभ होती है तत्पश्चात् घोड़े में, फिर गौ व उसके बाद बकरी में । कलेवर का सड़ना गलना तब आरंभ होता है जब कायविद्युत निकल जाती है । यह मनुष्य की विशेषता है कि उसमें जितनी जल्दी जितनी बड़ी मात्रा में बिजली एकत्रित होती है, उतनी ही जल्दी मरणोपरांत पलायन भी कर जाती है । स्थायी मेधा किसी में भी नहीं है । तब ऋषियों ने मृत्तिका का निरीक्षण किया । पता चला कि उसमें मेधा तो है, पर सूक्ष्म व बिखरी हुई । तब विचार किया गया कि इससे जो वनस्पतियाँ एवं धान्य उत्पन्न होते हैं, वह मृतिका से ही मेधा प्राप्त करते रहे होंगे जिन्हें खाकर हम मेधा संपन्न बनते हैं । इस प्रकार पादपों की जाँच-पड़ताल प्रारंभ हुई । इस उपक्रम में जौ ही ऐसा धान्य साबित हुआ, जिसमें सर्वाधिक परिमाण में मेधा मिली । अस्तु यज्ञ में जौ का प्रयोग प्रारंभ हुआ । इसी मेधा को अन्यान्य अश्वमेधों में जौ की आहुतियाँ द्वारा इसी मेधा को अन्यान्य सूक्ष्म ऊर्जाओं समेत ग्रहण व धारण किया जाता है ।

पद्मपुराण की उक्ति सही ही है-

'हयमेधं' चरित्वा समेधां समृद्धि प्राप्नोति ।

अर्थात्- "अश्वमेध करने वाला मेधा और समृद्धि को पाता है" वस्तुतः देखा जाय तो मेधा ही मनुष्य को अभीष्ट है । बुद्धि तो दैवी अनुदान स्वरूप उसे प्राप्त है किन्तु कितने हैं जो सद्बुद्धि का प्रयोग कर जीवन को धन्य बनाते हैं ? बुद्धि तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भाँति-भाँति के तर्क-जंजाल बुनती हुई अपनी स्वार्थपूर्ति की राह पर ही मनुष्य को चलाती है । यदि सारी धरित्री का वातावरण बदलना है तो उस सूक्ष्म जगत में आमूल चूल परिवर्तन लाना होगा । जो समष्टिगत मन की चेतना के मिलने पर (कलेक्टिव कांशसनेस) विनिर्मित होता है । यज्ञ जो अश्वमेध स्तर के होते हैं, यही कार्य करते हैं । यज्ञ वस्तुतः भौतिक ऊर्जा व प्राण ऊर्जा के सम्मिलित प्रयोगों के रूप में संपन्न होते हैं । इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप लोगों के मनों में मनस्विता का प्रतिभाशीलता का जागरण होता है । यह जाग्रत प्रतिभा सूक्ष्म में हलचल पैदा कर वातावरण का बदलती है तथा श्रेष्ठ चिंतन तरंगों को जन्म देती है ।

इन दिनों अनौचित्य की बाढ़ रोकने और दलदल को मधुवन बनाने जैसी समय की चुनौती हम सबके समक्ष है । विनाश का ताण्डव रोकना और विकास का सरंजाम जुटाना ऐसा ही है, जैसे खाई को पाटना भर ही नहीं, वरन् उस स्थान पर ऊँची मीनार खड़ी करने जैसा दुहरा पराक्रम । इसे प्रवाह को उलटना ही नहीं, उलटे को उलटकर सीधा करने की प्रक्रिया कह सकते हैं । हमेशा ऐसा समय जब आया है, सृष्टा के प्रेरणा से धरती पर ऐसे विलक्षण प्रयोग हुए हैं और व्यापक स्तर पर असंभव को संभव कर दिखाने वाली प्रतिभाएँ जन्मी हैं । युगपरिवर्तन की यह विषमवेला ऐसी है जो बड़ी प्रतीक्षा के बाद युग-युगान्तरों के बाद आयी है । इन दिनों ऐसा कुछ होने जा रहा है जो दुहरे प्रयोजन वाला असंभव माना जाने वाला इति और अथ के समन्वित सन्धिकाल के बाद नये युग का सूत्रपात करने जा रहा है । ऐसे में अश्वमेध यज्ञ की प्रेरणा इसी निमित्त सूक्ष्म जगत से उभरी है कि संव्याप्त दुष्प्रवृत्तियों से जूझने हेतु एक विराट जनसमुदाय मनस्वी प्रतिभा सम्पन्न समूह के रूप में जन्म ले । भारत व विश्व भर की भूमि पर संपन्न हो रहे अश्वमेधों की फलश्रुतियों को इसी संदर्भ में देखा-समझा जा सकता है ।

देव संस्कृति दिग्विजय अभियान बनाम देवासुर संग्राम

मानवीय जीवन में पीड़ा, पाप और पतन की जो सर्वव्यापी परिस्थितियाँ आज दिखाई दे रही हैं, वे पहले न रहीं हों ऐसा नहीं है । पाप को कलियुग की नियति मान लेने से बढ़कर भ्रान्ति और कुछ नहीं हो सकती । वस्तुतः आज का दुराचरण पिछले युगों की पुनरावृत्ति मात्र है । आज का दिन कल की पुनरावृत्ति, अब की वर्षा ऋतु पिछले वर्ष की पुनरावृत्ति मात्र होती है । इसी तरह युगों का कालचक्र भी न्यूनाधिक एक जैसी धुरी पर चलता आया है । दुष्प्रवृत्तियाँ सतयुग में भी शक्तिशाली रूप में उभरी थीं । द्वापर और त्रेता युग में भी, उन सबका निवारण भी एक ही तरह से हुआ । प्राचीन काल में उसे देवासुर संग्राम कहा जाता रहा है । हर बार सशक्त असुरता को संगठित देव शक्तियों के सहारे परास्त किया जाता रहा है और देवत्व की स्थापना होती रही है ।

मार्कण्डेय पुराण के अध्याय ७३ से लेकर अध्याय ८५ तक इस तथ्य का बहुत भाव-पूर्ण और अलंकारिक वर्णन हुआ है । हर बार असुरों की पराजय का श्रेय ''देवी'' या भगवती दुर्गा को मिला है । इसे ''महाशक्ति'' भी कहा गया है जिसका आविर्भाव देवताओं की शक्तियों के एकीकरण से हुआ है । जिस प्रकार ऋषियों के रक्त की एक-एक बूँद से रावण के विनाश का कारण, भगवती सीता का प्रादुर्भाव हुआ, उसी तरह महाशक्ति सदैव देवत्व की संगठित शक्ति के रूप में उदित होती रही है । उसका एक अर्थ मूल मानवीय चेतना प्राण सत्ता भी है उसे ही प्राणों की गंगोत्री-गायत्री अथवा देवत्व का बीज एवं अधिष्ठात्री वेदमाता देवमाता भी कहा है दर्शन और विस्तार दोनों ही पक्ष समानार्थी हैं ।

इस महाशक्ति का प्रथम प्राकट्य सृष्टि के आविर्भाव काल में हुआ । तब भगवान् विष्णु सो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहे थे । उनकी नाभि से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई । विष्णु के कान के मैल से मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस पैदा हो गये, वे ब्रह्मा जी को ही मारने को उतारू हो गए । असहाय ब्रह्मा ने परब्रह्मा की आदि शक्ति महामाया की स्तुति की । उन्होंने विराट् पुरुष को जगाया । भगवान विष्णु ने पाँच हजार वर्ष तक उन राक्षसों से युद्ध किया पर वे बड़े मायावी थे । जीत संभव नहीं हुई । तब महामाया ने उन असुरों को मोहित कर भगवान विष्णु से वर माँगने को उकसाया । विष्णु ने सीधे-सीधे उनसे उन्हीं की मृत्यु का वरदान माँग कर उन्हें नष्ट किया ।

स्पष्ट है- भगवान न कहीं सोता है और न किसी व्यक्ति के कान से कोई जन्म लेता है । परमात्मा को श्रद्धा और विश्वास की संज्ञा दी गई है । जब मनुष्य की श्रद्धा और विश्वास ध्वस्त हो जाते हैं तो सामाजिक जीवन में अनास्था पैदा होती है । व्यक्ति उद्धत और अहंकारी होता चला जाता है । यहीं से अपराध बढ़ते हैं । भगवान् को अपनी सृष्टि प्यारी है वे उसे स्नेह से ठीक करना चाहते हैं, ज्ञान से ठीक करना चाहते हैं, पर बच्चा जब बिगड़ जाता है तो उपदेश कम काम करते हैं । पिता पीछे हट जाता है । मां थोड़ी पिटाई कर देती हैं, बच्चा सही रास्ते पर आ जाता है यही परमात्मा की महामाया है । विजय के समय सभी ने उन महाशक्ति की परम ज्योति महाप्राण, आद्याशक्ति सर्वकारण रूप आदि सम्बोधनों से अभ्यर्थना की है, यह सब भगवती गायत्री के ही विशेषण हैं । परमात्मा का नारी स्वरूप, माता स्वरूप उन्हें ही कहा जाता है ।

दूसरी बारी असुर महिष ने आक्रमण कर देवताओं के राजा इन्द्र को हराकर सम्पूर्ण देवलोक पर अधिकार कर लिया । दुखी देवता ब्रह्मा जी को आगे लेकर भगवान विष्णु और महादेव के पास गये । अपनी व्यथा कही । दोनों क्रुद्ध हो उठे, उनके मुख से तेज फूटा सब देवताओं के शरीर से भी तेज निकला और उससे एक महाशक्ति का जन्म हुआ । उस महाशक्ति की हुंकार सुनकर तीनों लोक काँप गये । महिषासुर ने गर्जना सुनी तो पहले अपने सेनापतियों में से चिक्षुर (कीड़ों जैसा संकीर्ण जीवन जीने वाले) चामर, (चमड़ी शारीरिक सौन्दर्य को महत्व देने वाले) उदग्र, (उदर परायण) महाहनु (कुछ भी मारकर खा जाने वाले) असिलोमा (जिनके रोम-रोम में हिंसा भरी थी) वाष्कल (दूसरों को तड़पता देखकर प्रसन्न होने वाले हृदय हीन) तथा विडालाक्ष (बिल्ली की सी चोर दृष्टि वाले) को युद्ध में भेजा । वे सब मारे गये तब दुर्धर (आततायी) दुर्मुख (कुटिल) अपने समीपवर्ती अंग रक्षकों को भेजा । वे भी मारे गए तब महिषासुर (अर्थात् पृथ्वी आदि तत्वों से बना मन- जो संवेदनशील न होकर राक्षस बन गया हो) स्वयं गया । राक्षस बड़ा मायावी था । तरह-तरह के विकराल रूप धारण कर रहा था, तब क्रोध में भर कर देवी ने अपने वाहन शेर से उछलकर राक्षस को अपने पैरों से दबोच लिया और तलवार से उसका सिर काट डाला ।

कथा यह बताती है, कि भौतिक लिप्सायें जब अत्यधिक और अनियंत्रित हो जाती हैं, तो मनुष्य कोई भी अपराध करने से डरना छोड़ देता है । इस युग में मिलावट, रिश्वत, चोर बाजारी, मांसाहार, जीव हिंसा, अपराधों की बाढ़ इसी तथ्य का पर्याय है । इस स्थिति में परमात्मा की कल्याणी सत्ता देवताओं को संगठित करतीं है । उनकी समवेत प्राण सत्ता जब निर्भय होकर युद्ध करने के लिए खड़ी हो जाती है, तो सारी आसुरी प्रवृत्तियों का एक-एक कर विनाश होने लगता है । देवताओं की विजय होती है और फिर से सर्वत्र सुख शांति छा जाती है । यहाँ भी मन को सुसंस्कृत बनाने के लिए तेजस् शक्ति भगवती गायत्री को ही महामाया कहा गया है, उन्हीं की आराधना से कुसंस्कारों के असुरों से पीछा छूटता है । महिषासुर, देवी की दिव्य ज्योति में समा जाता है अर्थात् आत्मबोध की स्थिति तक पहुँचने के लिए मार्ग के सारे अवरोध ही उस सेना की तरह होते हैं, जिनसे अन्तःकरण के देवत्व को युद्ध करना पड़ता है, पर यदि उन्हें साहस पूर्वक पछाड़ दिया जाये तो व्यक्ति अपने अलौकिक और आध्यात्मिक स्वरूप को स्वतः

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझ लेता है, उस स्थिति में परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो भी पाप से वैसे ही घृणा होगी जैसे गन्दगी से । उपरोक्त कथानक इस तथ्य का अलंकार मात्र है । इस युद्ध के बाद भी देवी की वही स्तुति देवताओं ने गाई है, जो पहली विजय के समय गाई थी ।

देवताओं की स्तुति यहाँ भी बड़ी अर्थपूर्ण है । उसमें कहा है- "आपकी शक्ति ही समस्त विश्व में व्याप्त हो रही है । त्रिदेव भी आपके रहस्य को नहीं जान सकते । आप ही जगत की कारण प्रकृति देवताओं और पितरों की स्वाहा और स्वधा हैं । वेदों की शब्दमयी मूर्ति, सम्पूर्ण जगत की रक्षक, ज्ञान और विवेक प्रदान करने वाली, उद्धारक दुर्गा, लक्ष्मी और गौरी आप ही हैं । आपकी शक्ति और बल अपार है ।" यह समस्त अर्थ गायत्री में सन्निहित है ।

तीसरी बार की कथा में शुंभ-निशुंभ राक्षस आते हैं । उन्होंने समूचे देवत्व को परास्त करके रख दिया । देवता पुनः देवी की शरण में गए । उस समय भगवती पार्वती की देह से अम्बिका के रूप में प्रकट होकर असुरों से युद्ध को तैयार हुईं । उनका रूप बड़ा मनोभावन था । राक्षस शुंभ ने प्रणय प्रस्ताव भेजा, तो भवानी ने कहा जो मुझे युद्ध में जीत सकता है, मैं उसी का वरण करती हूँ । राक्षस ने पहले धूम्रलोचन फिर चण्डमुण्ड को भेजा । देवी काली ने उनका बध कर डाला तब राक्षस रक्तबीज लड़ने आया । उसकी विशेषता थी कि जब भी उसका एक बूँद रक्त पृथ्वी में गिरता, तभी नया रक्तबीज पैदा हो जाता । तब भगवती ने काली से कहा मैं इस पर प्रहार करती हूँ तुम इसका रक्त भूमि पर मत गिरने देना ऊपर ही ऊपर पी जाना । तब रक्तबीज का बध हुआ ।

रक्तबीज की मृत्यु का समाचार सुन कर शुंभ निशुंभ सेना लेकर रणक्षेत्र में उपस्थित हुए । पहले निशुंभ मारा गया फिर शुंभ सामने आया । उसने देवी की सहायक मातृका शक्तियों ब्रह्माणी, माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी, वाराही, नारसिंही और ऐन्द्री की ओर संकेत करके कहा तुम दूसरों का आश्रय लेकर युद्ध करती हो, अपने पराक्रम का झूठ-मूठ अभिमान करती हो इस पर देवी ने अपनी शक्तियों को अपने अन्दर समेट लिया और कहा कि यह सब मेरी विभिन्न शक्तियाँ हैं जो मेरी इच्छा से प्रकट होती हैं, अब मैं अकेली ही तेरा बध करती हूँ । इस तरह असुरों और देवों का सबसे घोर संग्राम हुआ और राक्षस का बध हुआ । देवताओं ने आद्यशक्ति देवी की प्रार्थना की -

"हे महामाया ! आप ही विपत्ति ग्रस्त लोगों की रक्षा करती हैं, आप ही इस संसार की जननी और ईश्वरी हैं । सम्पूर्ण विद्यायें और दैवी शक्तियाँ आपके ही रूप मे हैं । माँ के रूप में हम आपकी वंदना करते हैं ।"

स्तुति से प्रसन्न होकर भगवती ने वरदान सहित आश्वासन दिया-"जब-जब पृथ्वी पर असुरों की उत्पत्ति बढ़ेगी मैं विभिन्न रूपों में जन्म लेकर उनका विनाश और तुम्हारी रक्षा करूँगी ।"

दुर्गा सप्तशती नाम से विख्यात मार्कण्डेय पुराण का यह उद्धरण इस तथ्य का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आद्यशक्ति गायत्री ही विगत तीन कालों में देवत्व की स्थापना में समर्थ हुई हैं । उसी महाविद्या से इस युग की दुर्दम्य आसुरी प्रवृत्तियों की गाथा अब तक विप्रगण करोड़ों बार दोहरा चुके हैं, वह मिथ्या नहीं हो सकती ।

अपनी परा प्रकृति के रूप में वह अदृश्य महासत्ता संकल्प श्रद्धांजलि समारोह में देव पुत्रों की पीड़ा और पुकार सुनकर प्रकट हुई । शपथ समारोह का दुर्गा स्वरूप उनके ही वरदान का प्रत्यक्ष प्रमाण था । उससे उल्लसित होकर ही देव समुदाय ने- देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान की घोषणा की । यह प्राचीन अश्वमेधों की परम्परा में प्रारम्भ किया गया ऐसा अभियान है जो तांत्रिक दृष्टि से भी सूर्य चक्र में केन्द्रित है, उपासना की दृष्टि से भी सविता प्रधान है । रक्तबीज की तरह उसे जन-जन तक पहुँच कर उनके पापों को नष्ट करना है । अश्वमेध आयोजनों की समूची विधि व्यवस्था, संगठन, कर्मकाण्ड और विस्तार इस देवासुर संग्राम की परिधि में है । उसके प्रतिफल लोग प्रत्यक्ष आँखों से देख सकेंगे ।

अश्वमेध वस्तुतः सांस्कृतिक अभियान हुआ करते थे, जो समूचे राष्ट्र को संगठित और एक सूत्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में बाँधें रखते थे । समूचा राष्ट्र इस दृष्टि से एक था । राज्य और राजा तो तब भी अनेक हुआ करते थे । देव संस्कृति का अर्थ कोई धर्म विशेष नहीं अपितु सद्चिन्तन, सत्कर्म, और सद्व्यवहार (जो समस्त मानवीय प्रगति का मूलाधार है) का नाम ही देव-संस्कृति है । अश्वमेध आयोजनों की वर्तमान श्रृंखला प्राचीन देव संस्कृति दिग्विजय का ही अभिनव संस्करण है । इसमें देवत्व की विजय सुनिश्चित है । महामाया ने उसके लिए समूचा सरंजाम एकत्र कर लिया है । कलियुग में पाप की अनिवार्यता को अब न केवल भूल जाना चाहिए, अपितु जहाँ भी देवत्व है उसे इस देव संस्कृति दिग्विजय के झंडे के नीचे आकर असुरता के विनाश में संलग्न हो जाना चाहिए ।

राष्ट्र एवं दिग्विजय, राजनीतिक नहीं सांस्कृतिक शब्द हैं

अश्वमेध में राष्ट्र का संगठन तथा दिग्विजय यात्रा, यह दो कार्य अनिवार्य माने गये हैं । लम्बे समय तक हम यज्ञीय-सांस्कृतिक परिभाषाओं से अलग-थलग पड़ गये थे, इसलिए मस्तिष्क में उसके अनुरूप प्रवाह कठिनाई से उठते हैं । राजनीतिक संदर्भ में हम उक्त दोनों शब्दों को लेने लगते हैं तो अनेक शंका-कुशंकाएँ मन में उठने लगती हैं । अश्वमेध प्रयोजन के लिए उन्हें व उनके वास्तविक सांस्कृतिक संदर्भों में समझना एवं प्रयुक्त करना आवश्यक है

क्या है राष्ट्र -

भारत में 'राष्ट्र' सदैव एक सांस्कृतिक शब्द रहा है, राजनीतिक नहीं । पश्चिमी देशों में राष्ट्र को राज्य 'नेशन या स्टेट' के रूपों में ही लिया जाता है । वहाँ राष्ट्र एवं राज्य समानार्थी माने जाते हैं । उसका अस्तित्व राज्य सत्ता पर निर्भर करता है । अब उसे तकनीकी-आर्थिक(टैक्नो इकॉनॉमिकल) इकाई भी माना जाने लगा है । यही कारण है वहाँ सभी ओर स्वार्थपूर्ण स्पर्धा, संघर्ष वातावरण ही पनपता रहता है ।

भारत में राष्ट्र सदैव से एक सांस्कृतिक इकाई है । राष्ट्र उपास्य है, इष्ट है । सैकड़ों राज्यों विभिन्न उपासना पद्धतियों, विभिन्न भाषाओं एवं विभिन्न वेष-भूषाओं के होते हुए भी भारत ' एक राष्ट्र' रहा है । हमारे ऋषियों ने संसार की प्रकृति प्रदत्त विविधताओं को बहुत सहज भाव से स्वीकार किया । किन्तु मनुष्य के अंत:करण में स्थिर परिष्कृत चेतना को लक्ष्य करके सांस्कृतिक एकता के भाव भरे सूत्रों को विकसित एवं प्रतिष्ठित करने में सफलता पायी ।

'मानवीय चेतना विज्ञान के मर्मज्ञ ऋषियों ने अनुभव किया कि केवल भौतिक आधारों पर बनाये गये सम्बन्ध टिकाऊ-चिरजीवी नहीं हो सकते । भौतिक आधारों को प्रधानता देकर चलने से स्वार्थ, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष, शोषण आदि का समावेश देर सबेर हो ही जाता है । इसीलिए उन्होंने राष्ट्रीय अवधारणा को कालजयी बनाने के लिए सांस्कृतिक आधारों को ही प्राथमिकता दी सांस्कृतिक सूत्रों को उन्होंने जन-जन के भावनात्मक स्तर तक गहराई से बिठाने में सफलता पायी । यही कारण है कि हम गर्व से कह पाते हैं । कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ''भले ही सदियों तक 'दौरे जहाँ' (सांसारिक राजनीतिक चक्र) हमारा दुश्मन रहा है ।

'भारतभूमि' निर्जीव भूखंड नहीं है, एक चेतन सत्ता है, स्वर्गादपि गरीयसी है । वह तप शक्ति एवं सद्भावनाओं को अपने अंदर धारण करने में, उन्हें बीजों की तरह फलित विकसित करने में समर्थ है । सन्तों के-ऋषियों के तप को धारण करने के कारण इस भूमि में जगह-जगह तीर्थ बन गये हैं । उनके प्रति जन, श्रद्धा क्षेत्र एवं भाषा भेद से ऊपर उठकर, सतत् प्रवाहमान है । सांस्कृतिक अवधारणा हर भारतीय की रगों में रक्त की तरह सतत् प्रवाहित है ।

अयोध्या में जन्मे राम कन्याकुमारी में रामेश्वरम् की स्थापना करते हैं । बृज के श्रीकृष्ण द्वारिका में अपना आवास बनाते हैं । बंगाल के चैतन्य बृज में आकर अपने इष्ट के लीला क्षेत्र को खोजते हैं । केरल में जन्मे शंकराचार्य चारों दिशाओं में चार धामों की स्थापना करके कश्मीर के सरस्वती मन्दिर के पट खोले बिना अपनी यात्रा पूर्ण नहीं मानते । वे अपना शरीर दक्षिण में नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्तराखण्ड में छोड़ना पसंद करते हैं । गंगोत्री का जल पिये बिना रामेश्वरम् की प्यास नहीं बुझती । उत्तराखण्ड के देवालयों के देवता दक्षिण के पुजारी माँगते हैं । भक्त को रामेश्वरम्, केदारनाथ, सोमनाथ, विश्वनाथ, पशुपतिनाथ, महाकालेश्वर, अमरनाथ आदि सभी जगह एक ही इष्ट के दर्शन होते हैं । वैष्णवदेवी से कन्याकुमारी तथा अम्बाजी (गुजरात) से कामाख्या (आसाम) तक एक ही मातृसत्ता को नमन किया जाता है ।

यह भाव भरी सांस्कृतिक चेतना ही उस कालजयी राष्ट्र को बनाती है जो 'भारत' कहलाता है । इस राष्ट्र का संगठन राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं से न कभी किया जा सका है और न कभी किया जा सकेगा । किन्तु सांस्कृतिक सूत्रों में बँधकर यह राष्ट्र सदैव विश्व मुकुट बना है और पुनः बनकर रहेगा । इसलिए राष्ट्रीय एकत्व का लक्ष्य अश्वमेध जैसे विराट यज्ञीय अनुष्ठानों द्वारा ही प्राप्त किया जाता रहा है, पुनः किया जाना है ।

अश्वमेध की दिग्विजय

अश्वमेध के साथ दिग्विजय यात्रा अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है । दिग्विजय यात्रा पूरी किये बिना अश्वमेध यज्ञ की आधार भूमि ही नहीं बनती है ।

विजय शब्द सुनते ही किसी युद्ध में विजय की कल्पना उभरती है । यह भी इसलिए है कि हमारा चिन्तन देवसंस्कृति की धारा से काफी दूर हो गया है । हमारे यहाँ तो आत्म विजय-मनोजय को ही सबसे श्रेष्ठ विजय माना गया है । जीवन को एक समर कहा गया है । उसमें आसुरी-पाशविक प्रवृत्तियों को पराजित करके दैवी प्रवृत्तियों को विजयी बनाया जाता है ।

अश्वमेध प्रकरण में सांस्कृतिक दिग्विजय का ही विधान है । समय के अनुरूप कुछ सांस्कृतिक अनुशासनों को अनिवार्य मानकर उनका विस्तार जन-जन तक किया जाता था । उन अनुशासनों - निर्धारणों को धातु की पट्टियों पर अंकित करके यज्ञाश्व पर स्थापित किया जाता था । अश्व सारे क्षेत्र में घूमता था । उस पर अंकित सूत्रों को पढ़कर लोग उस समय के लिए ऋषियों एवं शूरवीरों द्वारा घोषित अनिवार्य नियमों को जान लेते थे और उनका अनुसरण करने लगते थे । यह एक विशुद्ध सांस्कृतिक अभियान होता था । शक्ति के बल पर लोगों को पराधीन बनाने वाला व्यक्ति अश्वमेध करने के योग्य नहीं माना जाता था । निम्न पौराणिक आख्यानों से यह बात स्पष्ट हो जाती है-

स्कंद पुराण की कथा है- देवगुरु बृहस्पति इन्द्र से रुष्ट होकर अज्ञात स्थल पर जाकर तप करने लगे । इन्द्र दुखी होकर उन्हें खोजते फिरे । राज्य अस्तव्यस्त होने लगा । अवसर का लाभ उठाकर पाताल के राजा बलि ने आक्रमण करके स्वर्गलोक को जीत लिया । वे स्वर्ग का वैभव अपने राज्य में ले गये किन्तु लक्ष्मी सहित सभी दिव्य पदार्थ लुप्त हो गये । स्वर्ग सुखों के लुप्त हो जाने से दुखी राजा बलि गुरु शुक्राचार्य के पास गये । उन्होंने कहा 'बिना अश्वमेध यज्ञ किये तुम्हें स्वर्ग सुख प्राप्त नहीं हो सकते । एक सौ अश्वमेध अनुष्ठान पूर्ण करने पर तुम इन्द्र के समतुल्य होकर स्वर्गीय पदार्थों का भोग कर सकोगे ।''

इस आख्यान से बात बहुत साफ हो जाती है । बलि स्वर्ग को जीत कर लौकिक अर्थों में दिग्विजय कर चुके थे । किन्तु यह विजय उनके किसी काम नहीं आयी । यज्ञीय सद्भाव प्रेरित सांस्कृतिक यात्रा ही उन देव वृत्तियों को जन्म दे सकती है जिनके आधार पर स्वर्गीय पदार्थों की पात्रता सिद्ध होती है ।

महाभारत के आश्वमेधिक पर्व में भी ऐसा ही विवरण मिलता है । युधिष्ठिर ने यज्ञाश्व के साथ अर्जुन को भेजा और यह निर्देश दिया कि ''यदि कोई राजा अश्वमेध की घोषणाओं को स्वीकार न करे तो भी झगड़ा मत करना, उससे समय पर यज्ञ में पहुँचने का आग्रह करना ।'' उन्हें इस बाते का भरोसा था कि यदि कोई भ्रमवश असहमति प्रकट करता है, तो भी यज्ञीय वातावरण में, ऋषियों एवं वीर पुरुषों की सहमति के प्रभाव से वह भी सहमत हो जायेगा ।

अश्वमेध के अनुरूप दिग्विजय यात्रा भगवान बुद्ध के धर्मचक्र प्रर्वतन एवं आदि शंकराचार्य की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'शंकर दिग्विजय' को कहा जा सकता है । आज की परिस्थितियों में मनुष्य मात्र को उन सांस्कृतिक सूत्रों की खोज है जिनके आधार पर विग्रह मिटें और स्वर्गीय परिस्थितियों का निर्माण किया जा सके । ऋषियों की धरोहर-देव संस्कृति के समय के अनुकूल व्यावहारिक सूत्रों को जन-जन तक पहुँचाना आज की अनिवार्यता है । उसी आधार पर व्यक्तियों में देवत्व का विकास एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण संभव होगा । इसीलिए यह आश्वमेधिक अनुष्ठान प्रारंभ किया गया है ।

चार चरणों में सम्पन्न होने वाले अभिनव अश्वमेध यज्ञ

प्राचीन काल में अश्वमेध आयोजन से प्राय: एक वर्ष पूर्व एक घोड़ा छोड़ा जाता था जिसके माथे पर एक जयपत्र बाँधने की परम्परा थी । जिसका अर्थ होता था जो उन आदर्शों परम्पराओं से सहमत न हों जिनका अनुपालन एक सुसंस्कृत समाज करता है वे भी या तो बात मानें या युद्ध के लिए तैयार हों । यह एक प्रकार से दुष्प्रवृत्तियों के निवारण की शाक्त परम्परा थी । हिन्दू कुश से लेकर कन्याकुमारी तक और बंगाल की खाड़ी से उस छोर तक जहाँ इन दिनों पाकिस्तान का पश्चिमी भाग स्थित है समूचा देश एक जैसी सांस्कृतिक मान्यताओं में संगठित था । इतने विशाल भू-भाग में एक सी संस्कृति विश्व में कहीं भी देखने को नहीं मिलती । यह एक प्रकार से सामाजिक शांति और सुव्यवस्था का उपक्रम था जो कालान्तर में लगभग पूरी तरह ध्वस्त हो गया ।

इस युग की परिस्थितियाँ जहाँ एकदम उलटी-पुलटी हैं वहीं दो तथा बहुत अनुकूल और आशाजनक हैं (१) आज की अनियंत्रित भौतिक लिप्साओं ने जन जीवन को इतना अशांत और तनावग्रस्त कर दिया है जिससे हर कोई छुटकारा पाना चाहता है । (२) आज और कुछ हो या न हो पर विचार करने की मानवीय सामर्थ्य सुनिश्चित रूप से विकसित हुई है । देव संस्कृति के लिए यही दो परिस्थितियाँ सर्वथा पक्षधर हैं जिससे उसे घर-घर प्रतिष्ठित करने में कोई दिक्कत नहीं होगी । युग की परिस्थितियाँ उलटी हैं इसलिए व्यवस्था को भी उलट कर परिस्थितियों को सीधा करने का चार अध्यायों वाला कार्यक्रम निर्धारित किया गया है । पहले लोगों को आदर्शों पर चलने के लिए बलपूर्वक सहमत किया जाता था आज आने वाली पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य, पीड़ा और पतन के नाम पर वही कार्य करुणा जगाकर किया जाएगा ।

(१) पहला कार्य लोगों का ध्यान व्यक्ति परिवार और सामाजिक जीवन में व्याप्त बुराइयाँ, पीड़ा, और पतन की परिस्थितियों की ओर खींच कर उन्हें बुराइयाँ छोड़ने और सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिए सहमत करना है (२) सत्प्रवृत्तियों की फसल भविष्य में मुरझाने न पाए उसके लिए रचनात्मक उपायों का विस्तार करना (३) इन परिस्थितियों का नियमन नियंत्रण करने वाले समूचे तंत्र को जीवन्त बनाना (४) सत्प्रवृत्तियों पर औद्धत इस कारण जीतता है क्योंकि देवत्व संगठित नहीं होता इसलिए सुदृढ़ और संगठित शक्ति का प्रदर्शन । इन चारों तथ्यों की पूर्ति के लिए समूचा अश्वमेध तंत्र चार भागों में बाँटा गया है । इस समूची प्रक्रिया का नाम "देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान है" अश्वमेध यज्ञ तो उसका मात्र चौथा प्रदर्शन पूरक भाग है ।

(१) ग्राम प्रदक्षिणा - सर्वप्रथम जहाँ अश्वमेध होना है वहाँ उस क्षेत्र या प्रदेश के सभी मूर्धन्यों की गोष्ठी सम्पन्न की जाती है उन्हें ताल्लुका, तहसील स्तर अथवा पंचायत स्तर तक की क्षेत्रीय जिम्मेदारियाँ बाँटी जाती हैं । एक केन्द्रीय कार्यकारिणी बना दी जाती है जो समूची अश्वमेध व्यवस्था का संचालन करती है ।

जिन लोगों ने समयदान दिया होता है उन सब का इस कार्यक्रम में नियोजन किया जाता है । शांतिकुंज में प्रारम्भिक प्रशिक्षण के पश्चात् उन्हें इन क्षेत्रीय केन्द्रों पर आवश्यक विज्ञप्तियों तथा प्रचार सामग्री एवं उपकरणों सहित भेजा जाता है । स्थानीय लोग पहले से ही ग्राम प्रदक्षिणा के रूट और तिथियाँ निर्धारित कर लेते हैं, उसी के अनुसार यह परिव्राजक गाँव-गाँव पहुँच कर देवसंस्कृति की स्थापना का पावन कार्य सम्पन्न करते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थानीय समयदानी और शांतिकुंज से गये परिव्राजक चार-चार या पाँच-पाँच की टोलियों में विभक्त होकर साइकिलों से निकलते हैं । गीत गाते नारे लगाते हुए ये लोग एक दिन में एक दो या तीन गाँवों की प्रदक्षिणा करते हैं । पहले गाँव में गीत गाते हुए प्रदक्षिणा-लोगों को सायंकाल पूर्व निर्धारित स्थान पर सम्मिलित होकर दीपयज्ञ में भाग लेने और अश्वमेध का संदेश सुनने के लिए आमन्त्रित किया जाता है । फिर गाँव के किसी पवित्र स्थान पर मिट्टी पूजन करने का प्रावधान है । इसी स्थान से थोड़ी सी रज लेकर अश्वमेध यज्ञ के कुण्ड बनाने के लिए भेजी जाती है । इसी स्थान पर वृक्षारोपण होता है । गाँव वालों से यह प्रार्थना की जाती है, कि वे उस स्थान पर एक संस्कार चबूतरा या ग्राम देवता की स्थापना कर लें जहाँ पर्व त्योहार, सार्वजनिक उत्सव और बच्चों के संस्कार सम्पन्न कराने का क्रम प्रारम्भ किया जाय इससे संस्कारों के प्रचलन की एक व्यवस्थित श्रृंखला प्रारंभ हो जायेगी । वहाँ प्रज्ञा मंडल भी स्थापित होंगे ताकि यह संस्कार मात्र उत्सव होकर न रह जायें अपितु उनके द्वारा व्यक्तित्व परिष्कार के उद्देश्य पूरे किए जा सकें । आने वाली पीढ़ी को जीवन दर्शन का व्यावहारिक प्रशिक्षण मिलता रहे ।

सायंकाल दीप यज्ञ होता है । उसमें उपस्थित जन समुदाय से देव दक्षिणा माँगी जाती है । देवदक्षिणा अर्थात्- अपने जीवन की किसी एक बुराई का परित्याग और एक अच्छाई का वरण । यह संकल्प वे लिखित देते हैं ताकि पीछे उन्हें सतत् अनुपालन की प्रेरणा भी दी जाती रहे । इसी सभा में अश्वमेध के आमंत्रण भी दिए जाते हैं । ग्राम पूजन और दीपयज्ञ के बीच के खाली समय में देव स्थापनाएँ सम्पन्न होती है । देव स्थापना का उद्देश्य घरों में उपासना के माध्यम से श्रद्धा का बीजारोपण है । अपेक्षा यह की जाती है कि प्रत्येक गृहस्थ अपने घर में किसी पवित्र स्थान को उपासना स्थल बनावें, वहीं सद्ज्ञान, सद्विवेक की अधिष्ठात्री भगवती गायत्री का चित्र स्थापित करें । गायत्री उपासना व्यक्तिगत या सभी परिवारीय जन सामूहिक रूप से करें । मंत्र जप करने की स्थिति न हो तो चालीसा का पाठ किया जा सकता है वह भी न बन पड़े तो हर सद्गृहस्थ स्नान के बाद उस स्थान पर अगरबत्ती लगाकर गायत्री माता का नमन वंदन भर कर लिया करें यह क्रिया प्रतिदिन घर के छोटे बच्चे देखेंगे तो उनमें श्रद्धा का बीजारोपण होगा । श्रद्धा सामाजिक सुव्यवस्था का मूलाधार है । व्यक्तित्व को दर्शन की गहराईयों तक ले जाने में भी श्रद्धा ही समर्थ है । अतएव छोटा दिखाई देने वाला यह कार्यक्रम ही वस्तुतः अश्वमेध आयोजन का प्राण है । उनके दूरगामी परिणाम सुनिश्चित समझे जाने चाहिए, इसीलिए समयदान का अधिकांश नियोजन इस प्रदक्षिणा कार्यक्रम में किया गया है ।

(२) संस्कार महोत्सव - इस देश में महापुरुषों की एक लम्बी श्रृंखला प्राचीन काल से चली आ रही है उसका एक मात्र कारण हमारी देवसंस्कृति में संस्कारों का प्रचलन रहा है । सूक्ष्मदर्शी ऋषियों ने देखा, मनुष्य जीवन कितना समर्थ और विराट् है । अमेरिका के एक व्यक्ति ने मनुष्य शरीर पर पी. एच. डी. की है "मैन दि अननोन" नाम से छपी इस उपाधि में मनुष्य शरीर को प्रकृति की सर्वोष्कृष्ट कृति को निरूपित किया गया है । यह संभावना व्यक्त की गई है कि शरीर की समूची शक्तियों का जिस दिन पता चलेगा लोग यह देखेंगे, आश्चर्य करेंगे, इस पिंड में किस तरह परमात्मा ने समूचा ब्रह्माण्ड उतार दिया है । अपने ही भीतर सुरक्षित शक्तियों के अपार सागर से अनभिज्ञ मनुष्य कीड़े-मकोड़ों जैसा निरीह जीवन जीता है । यह जितना मनुष्य के लिए अपमान जनक है उससे अधिक परमात्मा के लिए ।

उसकी कृति कंलकित न हो जाए इसीलिए अपने ऋषियों ने मनुष्य जीवन पर गम्भीर दृष्टि डाली उसकी मनोवैज्ञानिक और तात्विक समीक्षा की, तो पता चला माँ के पेट में रजवीर्य की स्थापना से ले कर मृत्यु पर्यन्त जीवन में कुछ बहुत विशिष्ट मोड़ आते हैं । उन अवसरों पर उचित मार्गदर्शन और व्यवहार न मिलने से बच्चे दिग्भ्रान्त होते और जीवन लक्ष्य से भटक जाते हैं । शास्त्रकारों ने ऐसे ४० मोड़ों को तलाशा उनमें से १६ को प्रमुख

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

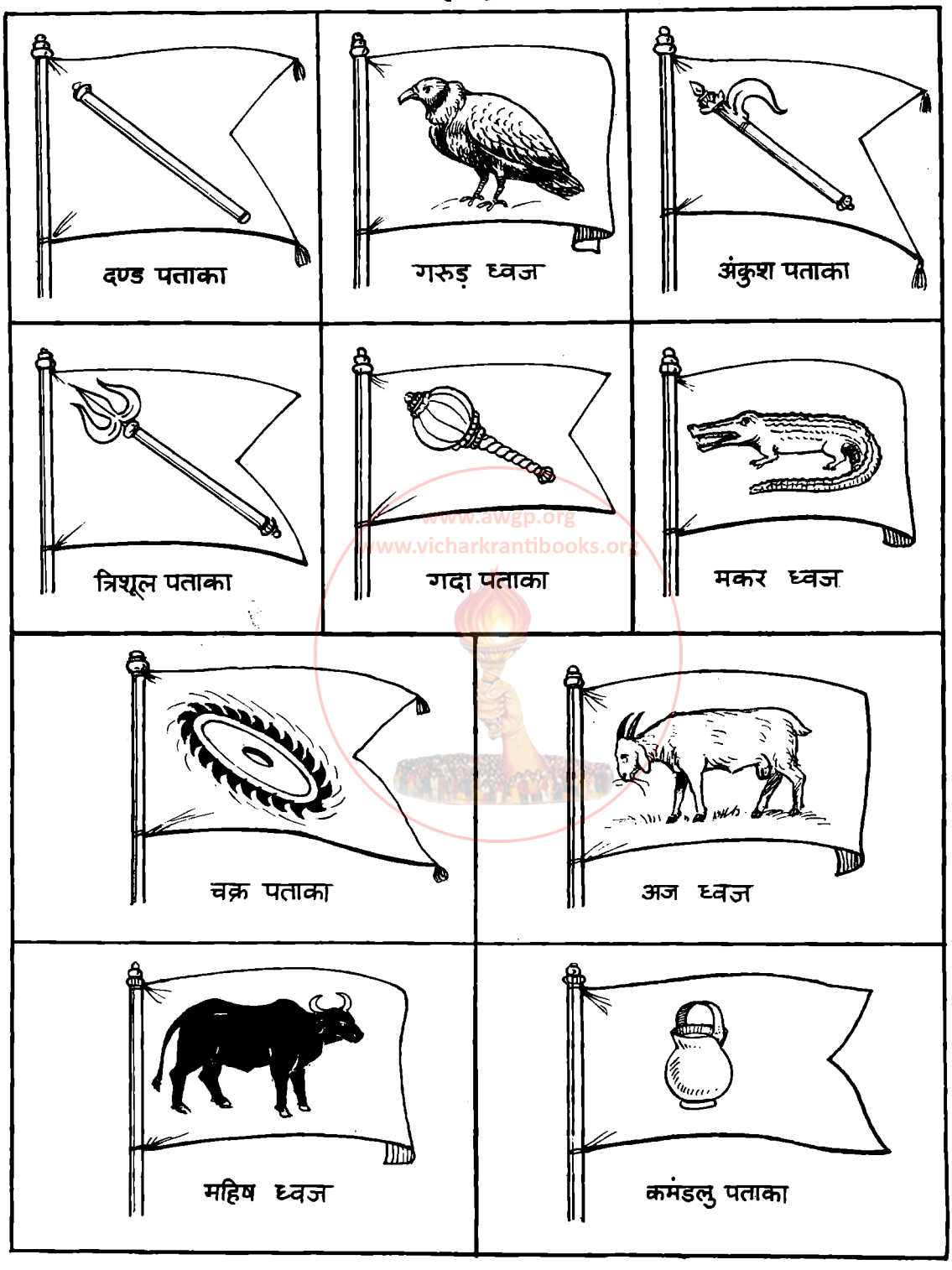
विविध प्रकार के आश्वमेधिक कुंड



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

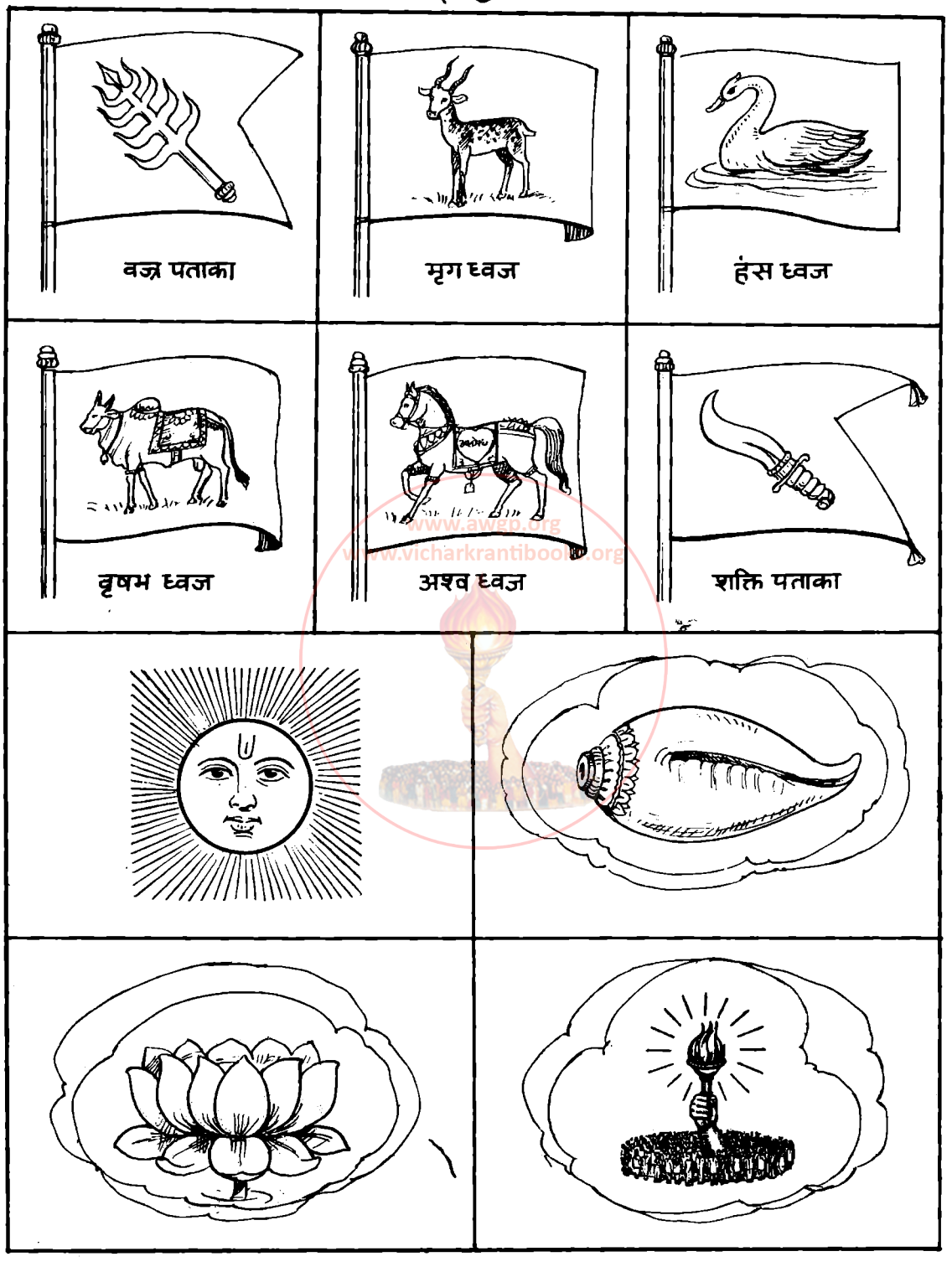
www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतीक चिह्न एवं पताकायें



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रतीक चिह्न एवं पताकायें



www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ॐ

भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानकर षोडश संस्कारों का प्रचलन किया । जिस तरह उपवन के पौधों और जंगली पेड़ों में एक मूलभूत अंतर होता है । उद्यान के वृक्ष स्वस्थ सुडौल और अधिक फल देते हैं, जब कि जंगली पेड़ों की डालें, तने सब अनगढ़ और अव्यवस्थित होते हैं । यह अंतर देखभाल करने वाले माली के पुरुषार्थ का प्रतिफल होता है । वह न केवल समय पर खाद पानी देता है, अपितु काट छाँट भी करता रहता है । संस्कार परम्परा भी व्यक्तित्व को निखारने की ऐसी ही स्वस्थ कला है । जो चिन्ह पूजा के रूप में चल तो आज भी रही है, पर उनसे जुड़े लोकशिक्षण ने अब मात्र कर्मकाण्ड या खाने पीने मौज मनाकर संस्कार सम्पन्न करने की कुरुचि का रूप धारण कर लिया है, अतएव उनका कुछ प्रतिफल नहीं निकल पाता है ।

परम पूज्य गुरुदेव ने संस्कारों को अति व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया है । गर्भाधान और जातवेद जैसे आज की परिस्थितियों में प्राय: असंभव संस्कारों को तो छोड़ दिया है पर जन्मदिन, विवाह दिवसोत्सव, दीक्षा एवं श्राद्ध संस्कार जोड़ दिये हैं । इससे प्राचीन काल की सभी अपेक्षित आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाती हैं । पाँच माह की अवस्था में भ्रूण का मस्तिष्क भाग बनना प्रारम्भ होता है । यह एक तरह का शरीर का राज्याभिषेक पर्व है । पाँच माह में पुंसवन मनाने की परम्परा इसीलिए पड़ी । बीज को संस्कारित कर देने से पौधे स्वस्थ होते हैं यही इनका उद्देश्य है । हिन्दू धर्म कोष के अनुसार गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन् जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध व विद्यारम्भ यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह संस्कार और अन्त्येष्टि यह सभी एक से एक बढ़कर महत्व आत्मसात किये हुये हैं । सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह सभी संस्कार उस आयु और अवस्था में सम्पन्न होते हैं जब उस तरह के विशेष मार्गदर्शन प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है । उदाहरण के लिए बच्चे के शरीर का ''हारमोनिक विकास ८ से १३ वर्ष की आयु में होता है । यह आयु जीवन का सबसे नाजुक मोड़ होती है । इसी आयु में अधिकांश बच्चे बिगड़ते हैं अतएव इसी आयु में यज्ञोपवीत या व्रत-बंध रखा गया । दीक्षा, शिखा स्थापन, जन्मदिन संस्कार एवं विवाह दिवसोत्सव पूज्य गुरुदेव ने इन्हें बहुत महत्व देने की दृष्टि से आज की परिस्थितियों में विशेष मार्गदर्शन के रूप में जोड़े । यह व्यक्तित्व को सशक्त, समर्थ और प्रखर बनाने के अभूतपूर्व प्रयोग हैं । इसी कारण इन्हें देवसंस्कृति दिग्विजय को एक प्रमुख रचनात्मक कदम के रूप में जोड़ा गया हैं ।

जहाँ अश्वमेध होते हैं वहीं दो-दो दिन के संस्कार महोत्सव सम्पन्न किये जाते हैं । यह प्रचार प्रधान और अश्वमेध से जुड़े हुए होंगे । इन के अधिकांश क्रिया कलाप ग्राम प्रदक्षिणा के समान ही होते हैं अन्तर केवल इतना होता है कि यह कस्बों व नगरों में सम्पन्न होते हैं । यहीं दोनों दिन प्रभात फेरी होती है । सत्प्रवृत्ति संवर्धन, दुष्प्रवृत्ति निवारण संकल्प, दीपयज्ञ यथावत् होते हैं । देवस्थापना थोड़ा भिन्न होती है । सामूहिक संस्कारों का प्रतिपादन प्रधान प्रदर्शन जुड़ा होने से इनका नाम संस्कार महोत्सव रखा गया है उद्देश्य यह रखा गया है कि संस्कारों की वैज्ञानिकता को लोग समझें भी अपनायें भी ।

(३) तीर्थ परिक्रमा- प्राचीन काल में हमारे तीर्थ और देवालय मानवीय मेधा को धर्मपरायण बनाये रखने का दायित्व निवाहते थे । वहाँ न केवल उपासना, कथा-कीर्तन सत्संग के प्रावधान नियत थे अपितु आरण्यक परम्परा की अन्तर्मुखी योग साधनाएँ भी कराई जाती थीं । इनका संचालन सिद्धों, समर्थों एवं विद्वान तत्वदर्शियों के हाथ हुआ करता था ।' 'अश्वमेध'' की एक परिभाषा-मानवीय बौद्धिक क्षमता को शक्तिशाली बनाए रखना भी होता है वह अध्यात्म से ही संभव है । सभी जानते हैं कि सूर, मीरा, नानकदेव, कबीर बहुत पढ़े नहीं थे । कबीर तो अनपढ़ थे पर उनके बोधात्मक साहित्य सृजन की व्याख्या करने में आज का योग्यतम बुद्धिकौशल भी समर्थ नहीं है । यह उनके आध्यात्मिक चिन्तन का ही प्रभाव था । यह कार्य प्राचीन काल में तीर्थों देवालयों द्वारा सम्पन्न होते थे । पर आज तो उनका स्वरूप मात्र व्यावसायिक रह गया है । कहीं-कहीं तो पंडाओं का आतंक इतना अधिक है, कि वहाँ एक बार हो आने वाला फिर कभी दुबारा उधर मुड़कर नहीं देखता । इतना ही नहीं वह उल्टा प्रचार भी करता है ताकि जिस संकट से वह गुजर कर आये हैं उस चंगुल में दूसरे लोग न पड़ें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थिति चिन्ताजनक है तथापि तीर्थों की उपयोगिता अपने स्थान पर यथावत स्थिर है । उन्हें अपनी दिशा बदलने के लिए सहमत करने के उद्देश्य से तीर्थ परिक्रमा कार्यक्रम को अश्वमेध के तीसरे चरण के रूप में समाविष्ट किया गया है । इस के लिए एक स्थान से तीन चार गाड़ियाँ गाते बजाते नारे लगाते चलती व तीर्थों में पहुँचती हैं । उनका पूजन करती हैं । अश्वमेध के लिए जल रज संग्रह करती हैं । रात में जहाँ विश्राम होता है, वहाँ दीपयज्ञ सम्पन्न होता है, और वहाँ उपस्थित लोगों को कथा कीर्तनों, प्रवचनों के माध्यम से तीर्थों का महत्व समझाया जाता है । उन्हें कुछ न कुछ रचनात्मक क्रियाकलाप चलाकर जन श्रद्धा का सम्मान करने के लिए सहमत किया जाता है । उल्लेखनीय है कि धर्मतंत्र आज भी साधनों की दृष्टि से इतना समर्थ है कि देश भर की शिक्षा, स्वास्थ्य की आवश्यकताओं को अकेले यही सम्पन्न कर सकता है । स्कूलों, अस्पतालों की परिपूर्ण संख्या चलाने की क्षमता इनके पास है । प्रयास यह किया जा रहा है कि देवालय अपनी गरिमा समझें और उसका निर्वाह भी करें ।

(४) सहस्त्रवेदीय अश्वमेध यज्ञ- इतना सब सम्पन्न होने के पश्चात् अश्वमेध यज्ञ होता है । इन यज्ञों का अनुशासन, संचालन, धार्मिक कर्मकाण्ड, स्थापनाएँ, सामग्री, संरचना कुंडों के आकार प्रकार सभी अन्य यज्ञों से भिन्न प्रकार के होते हैं । इनमें न केवल ग्रहविज्ञान, ज्योतिष अपितु तंत्र का भी गोपनीय समावेश रखा गया है । यह एक प्रकार से देवताओं की मिन्नत नहीं, उनसे माँगा जाने वाला कानूनी अधिकार है । उन्हें इसके लिए प्रसन्नतापूर्वक बाध्य करने का नाम अश्वमेध है । इन यज्ञों के सम्बन्ध में जितनी भी फलश्रुतियाँ गाई गई हैं वे अकाट्य हैं, पर ये कार्य उतने क्षमता एवं साधन साध्य भी हैं, इसलिए प्राचीन काल में यह आयोजन एक सौ राजा मिलकर करते थे । इस युग में प्रजा की संगठित शक्ति का नाम ही राजा है । यह संगठन शक्ति धर्म से जुड़कर सामर्थ्यवान् बन गई है । इसके कुछ विधान कहीं भी व्यक्त नहीं किए जा सकते इसलिए सम्पूर्ण नियंत्रण शांतिकुंज के तत्वधान में रखा गया है । इन दिनों एक आश्वमेधिक विभाग'' ही स्थापित किया गया है जो प्राचीन काल से लेकर अब तक की समूची व्यवस्थाओं का संकलन भी कर रहा है । प्रशिक्षण भी दे रहा है और समूची विधि व्यवस्था का संचालन भी कर रहा है । यज्ञकुंड भिन्न प्रकार के विनिर्मित किये जाते हैं । विशिष्ट अतिथियों, विशिष्ट साधनाऐं सम्पन्न करने वाले प्रयाजकों, इस समूचे अश्वमेध अभियान को सेवायें देने वाले परिजनों, उनके सम्बन्धियों तथा सामान्य महिला पुरुष याजकों, अनुयाजकों के लिए यज्ञकुंडों की प्रथक् व्यवस्था रखी गई हैं । देवपूजन के यजमान विशिष्ट व्यक्ति होते है इस सबके लिए आवश्यक जानकारियाँ परिपत्र, प्रवेशपत्र आदि के लिए शांतिकुंज हरिद्वार और अलग-अलग उन स्थानों से संपर्क साधा जा सकता हैं, जहाँ यह अश्वमेध सम्पन्न होने जा रहे हैं । चार चरणों में सम्पन्न होने वाला यह अश्वमेध अभियान धर्म, अर्थ काम, मोक्ष,-जीवन के इन चारों पुरुषार्थों से समूचे राष्ट्र को समर्थ बनायेगा, विश्व-विभीषकायें निरस्त होंगी और उज्जवल भविष्य की सुनिशिचित संभावना साकार होगी ।

काल के प्रवाह को उलटकर सतयुगी वातावरण को विनिर्मित करने वाले इन महायज्ञों की श्रृंखला याजकों की विहित कामनाओं को पूरा करने की दृष्टि से भी अद्भुत और अलौकिक है । कभी पृथु-अम्बरीष आदि लोकनायकों एवं विशिष्ट देवल आदि पुरोधाओं ने इस महान प्रयोग को सम्पन कर मानवों की कामनाओं को तृप्त कर उन्हें पूर्णकाम बनाया था । आज वही प्रयोग-विराट पैमाने पर युगान्तकारी शक्तियों द्वारा संचालित हो रहा है । सम्मिलित होने वाले याजक स्वयं को धन्य, कृतकृत्य अनुभव कर सकेंगे । इस यज्ञ से उनके जीवन में होते आश्चर्यकारी परिणाम उन्हें चिरकाल तक गुदगुदाते-पुलकित करते रहेंगे । 卐

* * *

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्व सुलभ यज्ञ प्रक्रिया-बलि वैश्व

गायत्री और यज्ञ का युग्म एक दूसरे का पूरक है । उन्हें आन्योन्याश्रित कहा गया है । पुरश्चरणों में दोनों को साथ लेकर ही चलना पड़ता है अन्यथा उन धर्मानुष्ठानों को अपूर्ण ही माना जायगा । सर्व विदित है कि गायत्री अनुष्ठानों की पूर्णता के लिए सतयुग में दशांस होम का विधान था और अब बदली हुई परिस्थितियों में शतांश का विधान है । आर्थिक-शारीरिक एवं परिस्थिति जन्य कठिनाइयों की स्थिति में भी ऋषि परम्परा यह है कि यज्ञ की न्यूनतम प्रतीक पूजा तो कर ही ली जानी चाहिए । यहाँ तक कि मात्र लकड़ी के टुकड़े ही घी या सामग्री का स्थानापन्न मानकर हवन किया जा सकता है । सर्वथा विवश होने पर ब्रह्मरूपी अग्नि में श्रद्धारूपी हविष्य होमने का ध्यान कर लेने से भी मानसिक यज्ञ हो सकता है । इन सब विधि परम्पराओं का उद्देश्य मात्र एक ही है कि प्रखर उपासना में यज्ञ प्रक्रिया को अनिवार्य रूप में सम्मिलित रखा जाय । भले ही उसका स्वरूप न्यूनतम ही क्यों न हो ।

दैनिक उपासना के सम्बन्ध में भी यही बात है । गायत्री को गुरुमन्त्र कहा गया है । वह वेद माता और भारतीय संस्कृति की जननी है । दैनिक उपासना को संध्या कहा गया है और संध्या का प्राण गायत्री है । शिखा रूप में मस्तिष्क की विचारणा पर उसी की सर्वोच्चता का ध्वज फहराया जाता है । यज्ञोपवीत के रूप में शरीर की कर्म प्रक्रिया पर उसी का अंकुश प्रतिष्ठापित किया जाता है । नित्य कर्म में गायत्री उपासना को जिस प्रकार जोड़कर रखा गया है ठीक उसी प्रकार यज्ञ की अनिवार्यता का भी प्रतिपादन है । भारतीय धर्म का पिता-पवित्रता और उदारता और समर्थता का सर्वतोमुखी समन्वय यज्ञ विज्ञान में कूट-कूट कर भरा है । गायत्री सद्बुद्धि की देवी अधिष्ठात्री है और यज्ञ सत्कर्म का प्रेरक प्रणेता । सावित्री और सविता की-गायत्री और ब्रह्मा की युग्म विवेचना उपनिषदकारों ने की है । यह सविता और ब्रह्मा प्रकारान्तर से यज्ञ ही है । इसलिए नित्य उपासना में नित्य ही यज्ञ कर्म भी जुड़ा हुआ है ।

सर्व साधारण के लिए जो विधान प्रचलित किये जाते हैं वे सरल होते हैं । कठिन और जटिल साधन तो विशिष्ट व्यक्तियों से ही बन पड़ते हैं । गायत्री का लघुत्तम स्वरूप पंचाक्षरी मन्त्र **ॐ भूर्भुवः स्वः** है । उसका संक्षिप्त पौराणिक संस्करण **हरि ॐ तत् सत्** है । अशिक्षित एवं बालक भी इस संक्षिप्त मन्त्र भाग को आसानी से अपना सकते हैं और गायत्री उपासना की परम्परा को असमर्थता रहते हुए भी अपनाये रह सकते हैं । ठीक यही बात यज्ञ के सम्बन्ध में भी है । अव्यवस्था और विसंगतियों के इस जमाने में भी यज्ञ प्रचलन को किसी न किसी रूप में अपनाये रहने का आग्रह यह बताता है कि सत् परम्परा के ध्वंसावशेष अभी मौजूद हैं और उपयुक्त समय आने पर उसके पुनरुद्धार की संभावना मौजूद है । होली सामूहिक रूप से भी चलती है और संक्षेप में उसकी चिह्न पूजा, 'घर होली' के रूप में भी होती है । प्रेत पितरों से लेकर देवी देवताओं की पूजा के लिए आग के अंगारे पर घी, शक्कर, लौंग आदि चढ़ाने और ज्योति जलाने के पीछे यज्ञ परम्परा का टूटा फूटा दर्शन है । धूप-लोवान-अगरबत्ती आदि जलाने के रूप में यज्ञ प्रक्रिया की स्मृति बनाये रहना ही उद्देश्य है । बच्चों के संस्कार जन्म दिन-पर्व त्यौहार शुभारंभ जब भी होते हैं तब यज्ञ का कोई न कोई छोटा बड़ा प्रतीक देखने को मिलता है । जीवन की पूर्णाहुति अत्येष्ठि यज्ञ-चिता के रूप में ही आयोजित की जाती है । यज्ञ भारतीय जन जीवन में इतना गुथा हुआ है कि उस प्रचलन को पिछड़े और समुन्नत स्तरों के सभी वर्गों ने किसी न किसी रूप में अपना कर ही रखा है ।

यज्ञ का अर्थ है-पुण्य, परमार्थ । उच्चकोटि का स्वार्थ ही परमार्थ है । उससे लोक कल्याण भी होता है और बदले में अपने को भी श्रेय सम्मान सहयोग आदि का लाभ होता है ।

गीताकार ने जीवन में यज्ञीय तत्वज्ञान के समावेश करने पर बहुत जोर दिया है और कहा है कि यज्ञ विधा की उपेक्षा करने पर न लोक बनता है न परलोक । जो यज्ञ से बचा हुआ खाते हैं, वे सब पापों से छूट जाते हैं और जो अपनी उपलब्धियों को अपने लिए ही खर्च कर लेते हैं, वे पाप खाते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिस प्रकार नित्य कर्मों में भोजन, शयन, स्नान, मल विसर्जन आदि को आवश्यक माना गया है, उसी प्रकार लोक मंगल के लिए श्रमदान, अंशदान की भी आवश्यकता है । इस सन्दर्भ में उपेक्षा बरती जाय तो समाज में दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ेंगी और उसका स्तर गिरेगा । मनुष्य सामाजिक प्राणी है । जिस समाज में वह रहता है उसके प्रभाव से बच नहीं सकता । इसलिए आत्म-कल्याण का प्रयोजन पूरा करने के लिए भी अपनी जीवनचर्या में यज्ञ विद्या को सम्मिलित रखकर चलना चाहिए और उसे यदा-कदा नहीं, नित्य नियमित रूप से करना चाहिए ।

दैनिक बलिवैश्व प्रक्रिया के पाँच विभागों को पाँच 'महायज्ञ' कहा गया है । विशाल आकार-प्रकार से अग्निहोत्रों को जहाँ मात्र 'यज्ञ' नाम से पुकारा गया है वहाँ कुछ मिनटों में पूरी हो जाने वाली क्रिया को जरासी सामग्री लगने वाली क्रिया को महायज्ञ क्यों कहा गया ? इसका सीधा-सा उत्तर है कि बलिवैश्व को मात्र कृत्य ही नहीं जीवन नीति का आवश्यक अंग माना गया है और उसे कभी भी न छोड़ने के लिए कहा गया है । जबकि विशाल यज्ञ जब कभी ही होते हैं और उनका प्रयोजन भी सामयिक समस्याओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होते हैं जब कि बलिवैश्व को आवश्यक कर्त्तव्यों की श्रेणी में गिना गया है और उन्हें कर लेने के उपरान्त तब भोजन ग्रहण करने का अनुशासन बनाया गया है । साथ ही उसकी परिणति का प्रतिफल भी बहुत आकर्षक बताया गया है ।

बलिवैश्व की गणना दैनिक अग्निहोत्र में की गयी है और हर व्यक्ति के लिए इसे अनिवार्य घोषित किया गया है । शास्त्रों के अनुसार-

दैनिक संध्यावन्दन की तरह प्रात: सायं जो आहुतियाँ दी जाती हैं उन्हें अग्निहोत्र कहते हैं । प्रात: यज्ञ को सूर्योपासन और सायङ्कालीन को अग्नि साधना कहा गया है ।

''अग्नये एवं सायं सूर्याय प्रात: एव ह वै अग्नि होत्रं जुहोति ।''

-शतपथ २/२/४/१५

प्रात: सूर्य के लिए और सायं अग्नि के लिए यजन किया जाता है । सूर्य को ज्ञान का और अग्नि को कर्म का प्रतीक माना गया है ।

'स यद्वैश्वदेवेन यजते । अग्निरेव तर्हि भवत्यग्नेरेव सायुज्य ७ सलोकतां जयति.....।

-शतपथ २/६/४/८

अर्थात्-जो भी व्यक्ति वैश्वदेव यज्ञ करता है, वह अग्नि ही हो जाता है और अग्नि के सायुज्य और सालोक्य को प्राप्त करता है ।

सायं प्रातर्वै श्वदेव: कर्त्तव्यो बलिकर्म च ।
अनश्नतापि कर्त्तव्यमन्यथा किल्विषी भवेत् ।।

प्रात:काल एवं सायंकाल भोजन से पहले बलिवैश्वदेव करना चाहिए । अन्यथा पाप भाजन बनना पड़ता है ।

श्रुति का निर्देश है कि भोजन बनाकर केवल अकेले खाने वाला पाप ही खाता है-

''केवलादो केवलाघो भवति ।'

- ऋग्वेद

बिना बलिवैश्व किए हुए अकेले भोजन करने वाला 'पाप' खाता है अर्थात् पाप का भागी बनता है ।

शास्त्र तो यहाँ तक कहता है कि वलिवैश्वदेव करने तक की असमर्थता हो तो मात्र जल से हवन कर लेना चाहिए ।

'जुहूयादम्बुनापि च ।'

बलिवैश्वदेव की इस शास्त्रीय परम्परा के पीछे एक ही तथ्य समझ में आता है कि समाज में बहुत से प्राणी ऐसे हैं जिन्हें अपने जीवन निर्वाह योग्य साधनों के लाले पड़े होते हैं । ऐसे प्राणियों की भोजन-व्यवस्था हेतु साधन-सम्पन्नों को उदारता बरतनी पड़ती है । बलिवैश्वदेव द्वारा ऐसे ही निरीह प्राणियों को पोषण प्राप्त होता है । हवन के सूक्ष्म प्राणयुक्त अंश से उन्हें पोषण मिलता है ।

बलिवैश्वदेव के पीछे उसके कर्त्ता के यही भाव दिखाई पड़ते हैं -

यषां न माता न पिता न बन्धु
नैवान्नसिद्धिर्न तथान्नमस्ति ।
तत् तृप्तयेऽन्नं भुवि दत्तमेतत् ,
प्रयान्तु तृप्ति मुदिता भवन्तु ।।

जिनके माता, पिता या बन्धु-बान्धव नहीं होते हैं, या अन्न की व्यवस्था नहीं है, उन सबकी तृप्ति के लिए मैं अन्न प्रदान करता हूँ-बलिवैश्वदेव करता हूँ ।

प्रतिदिन आहुतियाँ देकर इन कर्त्तव्यों की पूर्ति करते रहने की प्रतिज्ञा दुहराई जाती थी । पहले 'यज्ञ' परमार्थ पीछे निर्वाह स्वार्थ । यही रीति-नीति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारतीय धर्मानुयायियों की रही है । उसे विस्मृत न होने देने, नित्य, व्यवहार में लाने की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए भी यह दैनिक अग्निहोत्र की प्रथा-परम्परा है । उससे देव अनुग्रह और आत्म कल्याण का लाभ तो है ही ।

बलि वैश्व का तत्वदर्शन

बलि-वैश्व की पाँच आहुतियों के 'पंच महायज्ञ' क्यों कहा गया है ? बोल-चाल की भाषा में किसी शब्द के साथ महा शब्द लगा देने से उसका अर्थ बड़ा-बहुत बड़ा हो जाता है । 'यज्ञ' शब्द से भी सामूहिक अग्निहोत्र का बोध होता है फिर महा शब्द लगा देने का अर्थ यह होता है कि कोई विशालकाय आयोजन होना चाहिए । प्रायः १०० कुण्डी, २५ कुण्डी यज्ञ आयोजनों को 'महायज्ञ' की उपाधि से विभूषित किया जाता है । फिर आहार में से छोटे पाँच कण निकालकर आहुति दे देने मात्र की, दो मिनट में सम्पन्न हो जाने वाली क्रिया को 'महायज्ञ' नाम क्यों दिया गया ? इतना ही नहीं हर आहुति को महायज्ञ की संज्ञा दी गई ऐसा क्यों ? यदि बलि-वैश्व महायज्ञ नाम दिया जाता है तो कम से कम उससे इतना बोध तो होता कि पाँच आहुतियों वाला कोई बड़ा आयोजन है । पंच महायज्ञ नाम देने से तो यह अर्थ निकलता है कि अलग-अलग पाँच महायज्ञ का कोई सम्मिलित आयोजन हो रहा होगा । इसका तात्पर्य किसी अत्यधिक विशालकाय धर्मानुष्ठान जैसी व्यवस्था होने जैसा ही कुछ निकलता है । इतने छोटे कृत्य का नाम इतना बड़ा क्यों रखा गया ? यह वस्तुतः एक आश्चर्य का विषय है । नामकरण की यह विसंगत भूल ऋषियों ने कैसे कर डाली यह बात अनबूझ पहेली जैसी लगती है ।

वस्तुस्थिति का पर्यवेक्षण करने से तथ्य सामने आ जाते हैं और प्रकट होता है कि न कोई भूल हुई है और न विसंगति है । अन्तर इतना ही है कि कृत्य के स्थान पर तथ्य को प्रमुखता दी गई है । दृश्य के स्थान पर रहस्य को-प्रेरणा प्रकाश को-ध्यान में रखा गया है । साधारणतया दृश्य को कृत्य की प्रमुखता देते हुए नामकरण किया जाता है, किन्तु बलि-वैश्व की पाँच आहुतियों के पीछे जो प्रतिपादन जुड़े हुए हैं इन पाँचों को एक स्वतन्त्र यज्ञ नहीं-महायज्ञ माना गया है । स्पष्टीकरण की दृष्टि से हर आहुति को एक-एक स्वतन्त्र नाम भी दे दिया है ।

पाँच आहुतियों को जिन पाँच यज्ञों का नाम दिया गया है उनमें शास्त्रीय मतभेद पाया जाता है । एक ग्रन्थ में जो पाँच नाम गिनाये गये हैं दूसरे में उससे कुछ भिन्नता है । इन मतभेदों के मध्य अधिकांश की सहमति को ध्यान में रखा जाय तो इनके नाम (१) ब्रह्म यज्ञ (२) देव यज्ञ (३) ऋषि यज्ञ (४) नर यज्ञ (५) भूत यज्ञ ही प्रमुख रह जाते हैं । मोटी मान्यता यह है कि जिस देवता के नाम पर आहुति दी जाती है वे उसे मिलती है फलतः वह प्रसन्न होकर यज्ञकर्ता को सुख-शान्ति के लिए अभीष्ट वरदान प्रदान करते हैं । यहाँ देवता शब्द का तात्पर्य समझने में भूल होती रहती है । देवता किसी अदृश्य व्यक्ति जैसी सत्ता को माना जाता है पर वस्तुतः बात वैसी है नहीं । देवों का तात्पर्य किन्हीं भाव शक्तियों से है जो चेतना तरंगों की तरह इस संसार में एवं प्राणियों के अन्तराल में संव्याप्त रहती है । साधारणतया वे प्रसुप्त पड़ी रहती हैं और मनुष्य सत्शक्तियों से-सद्भावनाओं से और सत्प्रवृत्तियों से रहित दिखाई पड़ता है । इस प्रसुप्ति को जाग्रति में परिणत करने वाले प्रयासों को देवाराधन कहा जाता है । अनेकानेक धर्मानुष्ठान योग साधन-तप विधान, मंत्राराधन इन देव प्रवृत्तियों को प्रखर सक्रिय बनाने के लिए ही किये जाते हैं । जो प्रतीक के माध्यम से प्रेरणा प्रयोजन तक पहुँच जाते हैं, उन्हीं की देवपूजा सार्थक होती है । देव वृत्तियों के विकसित होने का अनुदान ही साधक को ऋद्धियों-सिद्धियों, सफलताओं, सुख-सम्पदाओं जैसी विभूतियों से सुसम्पन्न करता है । उन्हीं उपलब्धियों को देवता का वरदान माना जाता है । पूजा सामग्री खाकर देवता फूले नहीं समाते और तत्काल वरदान उगल देते हैं-जैसी बालबुद्धि तो उपाहासास्पद ही रहती है ।

पंच महायज्ञों में जिन ब्रह्म, देव, ऋषि आदि का उल्लेख है उनके निमित्त आहुति देने का अर्थ इन्हें अदृश्य व्यक्ति मानकर भोजन कराना नहीं, वरन् यह है कि इन शब्दों के पीछे जिन देव वृत्तियों का-सत्प्रवृत्तियों का संकेत है उनके अभिवर्धन के लिए अंश दान करने की तत्परता अपनाई जाय ।

(१) ब्रह्म यज्ञ का अर्थ है-ब्रह्म ज्ञान आत्म ज्ञान की प्रेरणा । ईश्वर और जीव के बीच चलने वाला पारस्परिक आदान - प्रदान है ।

(२) देव यज्ञ का उद्देश्य है-पशु से मनुष्य तक पहुँचाने वाले प्रगति क्रम को आगे बढ़ाना । देवत्व के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुरूप गुण कर्म स्वभाव का विकास विस्तार । पवित्रता और उदारता का अधिकाधिक सम्वर्धन ।

(३) ऋषि यज्ञ का तात्पर्य है-पिछड़ों को उठाने में संलग्न करुणार्द्र जीवन-नीति । सदाशयता सम्वर्धन की तपश्चर्या ।

(४) नर यज्ञ की प्रेरणा है-मानवी गरिमा के अनुरूप, वातावरण एवं समाज व्यवस्था का निर्माण । मानवी गरिमा का संरक्षण । नीति और व्यवस्था का परिपालन, नर में नारायण का उत्पादन । विश्व मानव का श्रेय साधन ।

(५) भूत यज्ञ की भावना है-प्राणि मात्र तक आत्मीयता का विस्तार । अन्यान्य जीवधारियों के प्रति सद्भावना पूर्ण व्यवहार । वृक्ष वनस्पतियों तक के विकास का प्रयास ।

इन पाँचों प्रवृत्तियों में व्यक्ति और समाज की सर्वतोमुखी प्रगति पवित्रता और सुव्यवस्था के सिद्धान्त जुड़े हुए हैं । उन्हें उदात्त जीवन नीति के सूत्र कह सकते हैं । जीवनचर्या और समाज व्यवस्था में इन सिद्धान्तों का जिस अनुपात से समावेश होता जायगा उसी क्रम से सुखद परिस्थितियों का निर्माण निर्धारित होता चला जायगा । बीज छोटा होता है किन्तु उसका फलितार्थ विशाल वृक्ष बनकर सामने आता है । चिनगारी छोटी होती है, अनुकूल अवसर मिलने पर वही दावानल का रूप धारण कर लेती है । गणित के सूत्र छोटे से होते हैं, पर उनसे जटिलतायें सरल होती चली जाती हैं । अणु-जीवाणु-शुक्राणु तनिक से होते हैं पर जब भी उन्हें अपना पराक्रम दिखाने का अवसर मिलता है चमत्कारी प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं ।

बलि-वैश्व की पाँच आहुतियों का दृश्य स्वरूप तो तनिक-सा है पर उनमें जिन पाँच प्रेरणा सूत्रों का समावेश है उन्हें व्यक्ति और समाज की सर्वतोमुखी प्रगति के आधारभूत सिद्धान्त कहा जा सकता है । इनका निरन्तर ध्यान रहे, इनके अनुरूप जीवन की नीति एवं समाज की व्यवस्था बनाने का प्रयत्न करता रहे, उसकी स्मृति हर रोज ताजी होती रहे इसके लिए पाँच आहुतियाँ देकर पाँच आदर्शों की प्रतीक पूजा को महत्वपूर्ण माना गया हैं । देवता-आदर्शों को ही कहते हैं । प्रस्तुत पाँच महायज्ञों के पाँच अधिष्ठाता देवता माने गये हैं । ब्रह्म यज्ञ के ब्रह्मा, देव यज्ञ के विष्णु, ऋषि यज्ञ के महेश, नर यज्ञ के अग्नि और भूत यज्ञ के वरुण देवता अधिपति हैं । पाँच आहुतियाँ इन्हीं पाँचों के लिए दी जाती है । इसलिए इस प्रक्रिया में पाँच देवों का पूजन अनुकूलन का भाव है । यज्ञ कर्त्ता बलि वैश्व कर्म करते हुए इन पाँचों के अनुग्रह वरदान की अपेक्षा करता है । यह आशा तब निस्संदेह पूरी हो सकती है जब आहुतियों के पीछे जो उद्देश्य सन्निहित है, उन्हें व्यवहार में उतारा जाय । इन्हीं उत्कृष्टताओं का व्यापक प्रचलन अवलम्बन इस पंच महायज्ञ प्रक्रिया का मूलभूत प्रयोजन है । बलि-वैश्व को इन्हीं देव प्रेरणाओं का प्रतीक प्रतिनिधि माना जा सकता है । कहना न होगा कि यह आदर्श जिस अनुपात से अपनाये जायेंगे उसी के अनुरूप व्यक्ति में देवत्व की मन:स्थिति और संसार में स्वर्गीय परिस्थिति का मंगलमय वातावरण दृष्टिगोचर होगा । युग परिवर्तन यही है । बलि-वैश्व की प्रेरणायें प्रकारान्तर से नवयुग की सुखद सम्भावनाओं का बीजारोपण करती हैं ।

बलि-वैश्व में जिन पाँच आदर्शों का प्रतिपादन पाँच महायज्ञों के रूप में किया गया है उन्हें मानवी गरिमा को समुन्नत बनाने वाले 'पंचशील' कह सकते हैं । बौद्ध धर्म में पंचशीलों का बहुत ही विस्तार पूर्वक वर्णन विवेचन किया गया है । उनका बहुत महत्व-माहात्म्य बताया गया है । इन पंचशीलों को जीवनचर्या एवं समाज व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में वर्गीकृत भी किया गया है । इस प्रकार पंचशीलों के वर्ग उपवर्ग प्रकारान्तर से व्यक्ति एवं विश्व की समस्त समस्याओं को सुलझाने-सर्वतोमुखी प्रगति का द्वार खोलने में महत्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न करते हैं ।

शरीर रक्षा के पंचशील हैं (१)सात्विक एवं सीमित आहार (२) स्वच्छ जल का पर्याप्त उपयोग (३) खुली वायु में गहरी साँस (४) समुचित श्रम (५) चिन्ता रहित रात्रि विश्राम ।

मानसिक स्वास्थ्य के पंचशील हैं-(१) खिलाड़ी जैसा दृष्टिकोण (२) अनवरत मुस्कान (३) इन्द्रिय निग्रह (४) काम में मनोयोग एवं गौरव (५) उपलब्धि में सन्तोष प्रगति में उत्साह । सामाजिक पंचशील हैं-(१) ईमानदारी (२) नागरिकता की जिम्मेदारी (३) नम्र, शिष्ट एवं मधुर व्यवहार (४) वचन का पालन (५) उदार सहयोग । पारिवारिक पंचशील हैं-(१) अभिभावकों के प्रति सहयोग,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कृतज्ञता, सेवा भावना (२) छोटों को दुलार सहयोग (३) दाम्पत्य सम्बन्धों में सघन मैत्री (४)सत्प्रवृत्तियों को सम्पन्नता मानना और उन्हें बढ़ाना (५) सन्तान संख्या न्यूनतम । धार्मिक पंचशील हैं-(१) सत्प्रवृत्तियों का समर्थन सम्वर्धन (२) दुष्प्रवृत्तियों से असहयोग, विरोध, संघर्ष (३) पीड़ा और पतन के निवारण में बढ़-चढ़कर अंशदान (४) उच्च स्तरीय आस्थाओं को दृढ़ता पूर्वक अपनाना (५) कर्तव्य पालन में तत्परता, अधिकार पाने में उदासीनता ।

सार्वभौम पंचशील हैं-(१) एकता (२) समता (३) संघवद्धता (४) सहिष्णुता (५) उदार निष्ठा । आध्यात्मिक पंचशील हैं-(१) ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था पर अटूट विश्वास (२) आत्मावलम्बन । (३) औसत भारतीय स्तर का जीवन, शेष उपलब्धियों का सत्प्रयोजनों में उपयोग (४) जीवन साधना में प्रखर तत्परता (५) आत्मीयता का चरम विस्तार ।

उपरोक्त वर्ग विभाजनों में जिन पंचशीलों की चर्चा की गई है वे देखने में एक दूसरे से प्रथक लगते हैं और उन्हें स्वतन्त्र आदर्श गिनने को मन करता है, पर गहराई से देखने पर प्रतीत होगा कि उनमें बलि-वैश्व में प्रतिपादित ब्रह्मयज्ञ-देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, नरयज्ञ और भूतयज्ञ में सन्निहित सद्भावनाओं और उत्कृष्ट मान्यताओं का ही परिस्थिति के अनुरूप विवेचन दिग्दर्शन मात्र है । मानवी प्रगति, सुव्यवस्था, सुरक्षा एवं सुख-शान्ति के समस्त तत्व इस पंचशील प्रक्रिया में पूरी तरह जुड़े हुए हैं जिन्हें पंचयज्ञों के नाम से पाँच आहुतियों के साथ रखा गया है ।

गायत्री माता के एक अलंकारिक चित्रण में उनके पाँच मुख दिखाये गये हैं । यह पाँच मुख पाँच देव हैं । पंचकोश, पंचतत्व, पंचगव्य, पंचामृत, पंच रत्न, न्याय पंच, जड़ी-बूटी पंचांग, आदि के कितने ही पंचक हैं । गायत्री माता के पाँच मुखों और बलि-वैश्व के पंच यज्ञों के साथ उनकी विवेचना की जाती है । प्राचीन भारत की गौरव गरिमा के आधार भूत कारण उन्हीं आदर्शों का परिपालन था । नवयुग के अवतरण एवं उज्ज्वल भविष्य के निर्धारण में इन्हीं को चरितार्थ करना पड़ेगा ।

परिवारों में धार्मिकता का वातावरण उज्ज्वल भविष्य की संरचना का एक अति महत्वपूर्ण कदम है । परिवार में जहाँ शिक्षा, स्वच्छता, सम्पन्नता, शिष्टता, सहकारिता और सद्गुणों की स्थापना की आवश्यकता है वहाँ यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि धार्मिकता का वातावरण इन सभी से अधिक महत्वपूर्ण है ।

अस्तु परिवार में धार्मिक वातावरण बनाने के लिए (१) गायत्री माता के चित्र का नमन वन्दन (२) सामूहिक आरती भजन कीर्तन (३) कथा कहानी (४) नित्य का प्रणाम अभिनन्दन जैसे छोटे उपचारों का कितना महत्व है यह विवाद से नहीं अनुभव से ही परखा जा सकता है । पाँचवां उपचार है-बलि-वैश्व । घर में इन प्रथाओं का निष्ठा पूर्वक परिपालन होता रहे और समय-समय पर यह समझाया जाता रहे कि आखिर इन सब धर्मकृत्यों के मूल प्रयोजन क्या हैं और उन प्रयोजनों को वर्तमान स्थिति में कौन किस प्रकार कर सकता है । यह शिक्षण यों सामान्य धर्मचर्चा जैसा लगेगा पर परोक्ष रूप से उससे उन आस्थाओं को सुदृढ़ बनाने में बहुत बल मिलेगा जो परिवार के सदस्य को सुसंस्कृत बनाती हैं, उनमें शालीनता बढ़ाती हैं । यह अभिवर्धन अन्ततः सबके लिए सब प्रकार श्रेयस्कर ही सिद्ध हो सकता है । बलि-वैश्व की गरिमा का मूल्यांकन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए ।

दैनिक उपासना में बलिवैश्व

दैनिक उपासना में अकेला गायत्री जप ही पर्याप्त नहीं । उसके लिए अग्नि होत्र भी साथ चलना चाहिए । यहाँ यह कठिनाई सामने आती है कि हवन में समय लगता है-वस्तुएँ भी अनेकों इकट्ठी करनी होती हैं । विधान से सभी अवगत नहीं होते, खर्च भी पड़ता है । इन चारों कठिनाइयों के लिए एक सुगम परम्परा बलि-वैश्व की चली आती है । उसे इन दिनों विस्मृत एवं उपेक्षित कर दिया गया है । आवश्यकता इसकी है कि उसका भी महत्व समझा जाय और गायत्री परिवार में उसे प्रचलित-पुनर्जीवित किया जाय ।

दीपक का आर्थिक मूल्य कितना ही स्वल्प क्यों न हो, रात्रि के सघन अन्धकार में बिना ठोकरें खाये निर्वाह करने तथा कुछ महत्व पूर्ण कृत्य कर सकने की क्षमता उसी आलोक से उपलब्ध होती है । दैनिक अग्निहोत्र की संक्षिप्ततम प्रक्रिया बलिवैश्व के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकता न होने पर भी रात्रि के आरम्भ में दीपक जलाने की परम्परा है । इसमें प्रकाश के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति का भाव है । ठीक इसी प्रकार बलिवैश्व के रूप में अग्निहोत्र का संक्षिप्त अभिवन्दन प्रचलन समझा जा सकता है । गायत्री जप की तरह ही बलिवैश्व को भी उपासना परक दैनिक धर्म कृत्य माना गया है और विधान है कि इन दोनों को करने के उपरान्त ही भोजन ग्रहण किया जाय । इस प्रकार के प्रतिबन्ध से एक तो नियम मर्यादा बनी रहती है, दूसरे यह अनुभव होता रहता है कि प्रस्तुत निर्धारण को भोजन जैसी अनिवार्य आवश्यकता से भी अधिक महत्वपूर्ण माना जाय । स्पष्ट है कि जिसका जितना महत्व समझा जाता है उसे उतना ही गहराई और बारीकी से समझने की चेष्टा की जाती है । जिसको मान मिलेगा, जिसका मूल्यांकन होगा उसे अपनाया भी जायगा । गायत्री रूपी सद्बुद्धि और यज्ञ रूपी सत्कर्म को जीवन क्रम में घुला लेने के उपरान्त सर्वतोमुखी प्रगति का द्वार-खुलना सुनिश्चित है । इन्हीं दो कदमों को उठाते हुए पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचना और बीच-बीच के विरामों पर एक से एक बढ़ी चढ़ी भौतिक एवं आत्मिक सफलताएँ-सिद्धियाँ प्राप्त करते चलना संभव हो सकता है ।

बलि-वैश्व में दैनिक भोजन से प्रथम आहुतियाँ अग्नि देव को दी जाती हैं । नमक मिर्च मसाले वाले पदार्थ नहीं होमे जाते । फीके मीठे पदार्थों के छोटे-छोटे चना मटर जैसे टुकड़े लेकर उनमें थोड़ा घी शक्कर मिलाकर आहुतियाँ दी जाती हैं । पुरानी परम्परा में तो कई आहुतियों का विधान और कई मन्त्रों के प्रयोग हैं । पर आज की स्थिति में पाँच बार गायत्री मन्त्र से पाँच आहुतियाँ देने से भी उस परम्परा का प्रतीक निर्वाह हो सकता है । बलि वैश्व को पंच महायज्ञ भी कहते हैं । पाँच यज्ञों में से एक-एक यज्ञ की प्रतीक एक-एक आहुति दी जा सकती है ।

यह अग्नि जमीन पर नहीं रखनी चाहिए । यज्ञ के लिए भूमि शुद्धि होनी चाहिए । इसीलिए कुण्ड की वेदी बनती है । यह भगवान की प्रतिष्ठा के अनुरूप विशिष्ट आसन या मंच होता है । उस वेदी पर किसी के पैर भी नहीं पड़ते और बुझने पर भस्म को झाड़ बुहार कर कूड़े कचरे में डाल देने की अवमानना भी नहीं होती । बुझने पर उस बलि वैश्व की अग्नि को कहीं पवित्र स्थान पर विसर्जित करने के लिए पहुँचा दिया जाता है । इस प्रयोजन के लिए मिट्टी के सकोरे काम में लाये जा सकते हैं । कुम्हार से इसी प्रयोजन के लिए कुण्ड आकृति के पात्र भी बनवाये जा सकते हैं । पीतल, ताबें के कुण्ड भी ऐसे बनाये जा सकते हैं जिनका ऊपर वाला हिस्सा छै इंच हो । गहराई ढाई इंच । बीच में दो मेखलाएँ हों तीसरी तो ऊपर होगी ही । इस कुण्ड पात्र में महिलाएँ चौके में भोजन परोसने के पूर्व बने हुए भोजन में से पाँच आहुतियों का अग्नि होत्र कर सकती है । साधना कर्ता स्वयं भी ऐसा नियम बना सकते हैं कि भोजन के समय अग्नि स्थापित करके परोसी हुई थाली में से खाद्य घी शक्कर मिले हुए खाद्य पदार्थों की पाँच आहुतियाँ दे लिया करें । इतने भर से बलिवैश्व परम्परा के अन्तर्गत दैनिक धर्म कृत्य में जिन पाँच यज्ञों का संक्षिप्त विधान सम्मिलित किया गया है, उसकी पूर्ति होती रह सकती है ।

संध्या वन्दन के रूप में गायत्री उपासना और दैनिक अग्नि होत्र के रूप में उपरोक्त पाँच आहुतियाँ हमारे समस्त परिवार में चल पड़नी चाहिए । हर परिवार में गायत्री उपासना का वातावरण रहे और बलि वैश्व के रूप में अग्नि होत्र होता रहे तो समझा जायगा कि गायत्री माता और यज्ञ पिता के युग्म का पूजा विधान ठीक तरह चल रहा है ।

दैनिक यज्ञ का विधान सामान्य भोजन की पाँच आहुतियाँ देने जैसा सरल कर देने पर भी उसके मूल तत्व ज्ञान में कोई अन्तर नहीं आता । हर कर्मकाण्ड के पीछे उच्चस्तरीय तत्वज्ञान का समावेश रहता है । बलि वैश्व दैनिक यज्ञ के पीछे भी एक दर्शन है । वह यह कि परमार्थ प्रयोजन को जीवन चर्चा में घुला कर रखा जाय । मात्र पेट के लिए ही न जिया जाय । अपने श्रम, समय, ज्ञान, मनोयोग जैसे साधन उतने ही निजी उपयोग में लिये जायँ जितना कि औसत भारतीय के निर्वाह में प्रयुक्त होता है । शेष को पिछड़ों को उठाने और सत्प्रयत्नों को आगे बढ़ाने में लगा दिया जाय । बलि वैश्व के दो पक्ष हैं एक पक्ष में सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन दूसरा पिछड़ों की सहायता । सहृदय सज्जनता के सामने यही दो उद्देश्य प्रधान रहते हैं । यही बलि वैश्य के भी हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भजन से देवत्व का सम्वर्धन और उसके फलस्वरूप सर्वतोमुखी प्रगति समृद्धि का उद्भव यही है वह दिशाधारा जो यज्ञ दर्शन के साथ जुड़ी हुई है । शास्त्रों में इसी का पग-पग पर प्रतिपादन मिलता है ।

सह यज्ञाः प्रजाः सृष्टवा पुरोवाच प्रजापति ।
जनेन प्रसविष्यध्वमेष वो ऽस्त्विष्टकामधुक ।

-गीता ३/१०

प्रजापति ने यज्ञ और प्रजा को साथ-साथ सृजा- प्रजा से कहा तुम यज्ञ की आराधना करो । यह तुम्हारी आवश्यकताएँ पूर्ण करेगा ।

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञ भाविताः
तैर्दत्तान प्रदायैभ्यो यो युक्ते स्तेन एव सः ।।

-३/१२

यज्ञ द्वारा प्रसन्न किये गये देवता तुम्हें इष्ट भोग प्रदान करेंगे । इन देव अनुदानों को जो उन्हें भेंट किये बिना ही भोगने लगे वह चोर है ।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्बिषैः ।
भुंजते ते त्वधं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ।।

-३/१३

यज्ञों में शेष बचे हुए अन्न को खाने वाले सज्जन पाप कर्मों से छूट जाते हैं । जो केवल अपने लिए ही कमाते खाते हैं वे पाप ही खाते हैं ।

नार्द्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाद्यो भवति केवलादी ।

- ऋग्वेद १०/११७/६

जो अपनी कमाई आप ही खाता उड़ाता है । अर्थात् धर्म विस्तार को एवं सखा-साथियों का पोषण नहीं करता वह पाप ही खाता है ।

यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवष्वा ततः, तमाहुतमशीमहि ।

-अथर्व १३/१/६०

मनुष्यों और देवताओं के बीच का सम्पर्क सूत्र यज्ञ ही है । उसको सुदृढ़ बनाने के लिए पहले हवन करें तब खायें ।

विघसासी भवेन्नित्यं नित्यंवामृत भोजनः ।
विघसी मुक्त शेषं तु यज्ञ शेषं तथामृतम् ।।

-मनु ३/२८५

धर्म धारणाओं का पोषण करने के उपरान्त बचा हुआ धान विघस कहलाता है । यज्ञ के बचे हुए को अमृत कहते हैं । मनुष्य को 'विघस' एवं अमृत का ही भोजन करना चाहिए ।

अघंस केवलमुक्तं यः पचत्यात्म कारणात् ।
यज्ञ शिष्टाशनं ह्रो तत्सतभिन्न विधीयते ।।

-मनु ३/११८

सज्जन यज्ञ से बचे हुए को ही खाते हैं । जो अपने लिए ही कमाता खाता है वह तो पाप ही खाता है ।

यह उदार परमार्थ परायणता जन-जन के मन-मन में बनी रहे । उस मानवी धर्म कर्तव्य का नित्य स्मरण बना रहे इसलिए नित्य उद्बोधन के रूप में बलिवैश्व करना होता है । जो करते हैं उनकी प्रशंसा और जो नहीं करते उनकी शास्त्रकारों ने निन्दा की है-

वैश्व देव विहीना ये आतिथ्येन बहिष्कृया ।
सर्वे ते नरकं यान्ति काक योनि व्रजन्ति च ।।

-पाराशर स्मृति १/५७

जो बलि वैश्व नहीं करते । अतिथि सत्कार से विमुख रहते हैं । वे नरक में पड़ते हैं और कौए की योनि में जन्म लेते हैं ।

बलि वैश्व संक्षिप्त नाम है । पूरा शब्द है- बलिवैश्व देव । इसमें तीन शब्दों का समावेश है । बलि-वैश्व-देव । इनका अर्थ इस प्रकार होता है । बलि-उपहार, अनुदान । वैश्व-सबके लिए । देव- दिव्य प्रयोजनों के लिए । तीनों को मिला कर बनता है-बलि वैश्व देव-उच्च उद्देश्यों के लिए सार्वजनिक हित साधना के लिए प्रस्तुत किया गया अनुदान ।

बलिवैश्व का सुविस्तृत विधि-विधान गृह्य सूत्रों में आता है । उसमें कई आहुतियों का तथा बलियों का वर्णन है । आहुतियाँ अग्नि में दी जाती हैं और बलि पदार्थ प्राणियों के लिए भेंट किये जाते हैं ।

विधान है कि-'**यद्भक्षं स्यास्ततोता दद्यात् वलिं भिक्षां च शक्तितः ।**' जो भोजन सामने है उसमें से यथाशक्ति बलि एवं भिक्षा देकर तदुपरान्त उसे ग्रहण करें ।

शांखायन, आश्वलायन, परासर, गोभिल, खादिर आदि गृह्य सूत्रों में तथा शतपथ, गोपथ, आदि ब्राह्मणों में बलिवैश्व की उपयोगिता एवं विधि व्यवस्था का निर्देश किया गया है । शाखायन, गृह्यसूत्र के अध्याय (२) काण्ड १७ सूत्र ४ में कहा गया है कि जो प्रातः-सायं वैश्व देव यज्ञ करते हैं वे लक्ष्मी, दीर्घजीवन, यश तथा सुसन्तति प्राप्त करते हैं ।

गायत्री के पाँच मुख हैं । प्रत्येक मुख में एक आहुति का विधान दैनिक पंचयज्ञ की प्रक्रिया में है । यह पाँच यज्ञ इस प्रकार गिनाये गये हैं-

ऋषि यज्ञं देव यज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा ।
नृ यज्ञं पितृ यज्ञं च यथा शक्ति न हापयेत् ।।

-मनु० ४/२१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऋषि यज्ञ, देव यज्ञ, भूत यज्ञ, मनुष्य यज्ञ और पितृ यज्ञ इन पाँचों को नित्य ही करना चाहिए । त्यागना नहीं चाहिए ।

यह पांच यज्ञ मात्र कर्मकाण्ड नहीं हैं । इन पाँचों के पीछे पाँच सत्प्रवृत्तियों का समावेश है । यहाँ यह पाँचों ही ऐसी हैं जिनका व्यक्ति और समाज के उत्कर्ष में असाधारण उपयोग रहता है ।

अध्यापनं ब्रह्म यज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणाम् ।
होमो दैवी बलिर्भूतो नृ यज्ञो अतिथि पूजनम् ।।

-मनु० ३/७०

अध्यापन-ब्रह्म यज्ञ (ऋषि यज्ञ) है, तर्पण पितृ यज्ञ । होम देव यज्ञ, बलि भूत यज्ञ और अतिथि सत्कार मनुष्य यज्ञ है ।

स्वाध्यायेनार्चयेद् ऋषीन् होमैर्देवान्यथा विधि ।
पितृन् श्राद्धैनृनन्नैर्भूतानि बलि कर्मथा ।।

-मनु० ३/८१

स्वाध्याय से ऋषियों को, हवन से देवताओं को, श्राद्ध से पितरों को, अन्न से मनुष्यों को, अनुदान से प्राणियों को सम्मानित करें ।

वेदाध्यायस्वधा स्वाहा वल्यन्नाद्यैर्यथोदयम् ।
देवर्षि पितृ भूतानि मद्रूपाण्यन्वहं यजेत् ।।

-श्रीमद् भागवत ११/१७/५०

गृहस्थ को चाहिए कि वेदाध्ययन (ऋषि यज्ञ) स्वधा (पितृ यज्ञ) स्वाहा (देव यज्ञ) बलिवैश्व (भूत यज्ञ) अन्नदान (मनुष्य यज्ञ) द्वारा मेरे ही रूप देवता, ऋषि, पितर, मनुष्य और अन्य समस्त प्राणियों का पूजन करता रहे ।

दैनिक यज्ञों में जिन सत्प्रवृत्तियों की ओर संकेत है उन्हें योगशास्त्र के अन्तर्गत पाँच यज्ञ और पाँच नियमों के रूप में व्यवहार एवं चिन्तन की विशिष्टताओं के रूप में गिना गया है । बौद्ध काल में इन्हें पंचशील नाम दिया गया था । शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, आध्यात्मिक इन पाँच वर्गों में मनुष्य जीवन बँटा हुआ है । इनमें से प्रत्येक में सज्जनता की ऐसी नीति मर्यादाओं का समन्वय है कि उनमें उत्कृष्टता का समुचित समावेश बना रहे । उन सब शीलों की गणना तो इन पंक्तियों में नहीं हो सकती पर संक्षेप में उनका तात्पर्य इतना ही समझा जाना चाहिए कि जीवन के हर क्षेत्र में श्रेष्ठता की परिपूर्ण मात्रा भरी रहे ।

दैनिक पंच यज्ञों में प्रायश्चित दर्शन का भी समावेश है । मनुष्य से जान-अनजान में दुष्कर्म बनते रहते हैं । इन्हें सस्ती क्षमा प्रार्थना एवं किसी पूजा प्रक्रिया से उनके प्रतिफल की निवृत्ति नहीं सोचनी चाहिए । दुष्कर्मों से समाज को क्षति पहुँची है । खोदी गई खाई को पाटने के लिए ऐसे सत्कर्म करने चाहिए जो हानि का संतुलन बनाकर क्षति पूर्ति कर सकें । यही प्रायश्चित विधान है । बलिवैश्व में प्रायश्चित दर्शन को ध्यान में रखने और अपने से बन पड़ने वाले कुकर्मों का सत्कर्मों से संतुलन पूरा करने का उपाय अपनाना चाहिए । गृहस्थ जीवन में बन पड़ने वाली सामान्य हिंसा का प्रायश्चित इस बलिवैश्व विधि के माध्यम से कराते हुए यह सुझाया गया है यही दृष्टि सर्वदा बनाये रखी जाय ।

पंचसूनागृहस्थस्य चुल्लीपेषण्युपस्करः
कंडनी चोर कुंभश्च वध्यते यास्तु वाहनम् ।।
तास्ता क्रमेण सर्वेषां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः ।
पंचक्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृह मेधिनाम् ।।

-मनु० ३/६८/६९

गृहस्थ में चूल्हा, चक्की, बुहारी, ओखली, जलकक्ष इन पाँचों के माध्यम से हिंसा होती रहती है । उन पापों का प्रायश्चित यही है कि बदले में प्राणियों का उपकार किया जाय । इसी प्रयोजन के लिए प्रायश्चित स्वरूप बलिवैश्व के पंच यज्ञ किये जाते हैं ।

बलि वैश्व की प्राचीन परम्परा में एक विधान बलि का भी है । यज्ञ में सत्कर्मों की सहायता का भाव है और बलि में पतन के निराकरण में उदारता बरतने का । बलि कृत्य में आहार का एक अंश अलग से निकाला जाता था और वह पिछड़ों की सहायता के लिए पहुँचाया जाता था इतना ही नहीं उस पिछड़े वर्ग के प्रति तिरस्कार का नहीं वरन् दरिद्र नारायण जैसी सम्मान वृत्ति रखकर नम्रतापूर्वक उस सहायता को प्रस्तुत किया जाता था । कहा है

शुनाञ्च पतितानाञ्च श्वपचा पाप कोगिवाम् ।
वायसानां कृमीणाञ्च शनकैर्निवद् यद् भुवि ।।

-मनु०

कुत्ता, पतित, चाण्डाल, पाप रोगी, कौआ, कीड़े-मकोड़े आदि के लिए अन्न भाग निकालने चाहिए । साथ ही उन्हें नमस्कार भी करना चाहिए । इसके लिए नमस्कार मन्त्र भी है-(१) श्वभ्योनमः (२) पतितेभ्यो नमः (३) स्वपभ्यो नमः (४) पापरोगिभ्यो नमः (५) वायसेभ्योनमः (६) कृमिभ्यो नमः ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

चिह्नपूजा के लिए अन्न के टुकड़े इधर-उधर छितरा देने की अपेक्षा आज की स्थिति में यही उपयुक्त है कि प्राप्त यज्ञ की प्रतीक पूजा के माध्यम से सत्कर्मों में सहयोग की प्रवृत्ति बढ़ायी जाय, वहीं पिछड़े वर्ग के प्रति उदार सहायता करने की भी उपेक्षा न की जाय ।

गायत्री उपासना के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा और सुना जाता रहा है । इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि उसी के समतुल्य अग्नि होत्र की उपेक्षा होती रही । जब कि दोनों का महत्व एक दूसरे के समान है-जब कि दोनों एक दूसरे के साथ अविछिन्न रूप से जुड़े हुए हैं । संभव है उसका कारण यह रहा हो कि अग्नि होत्र में कई प्रकार की वस्तुएँ-कई प्रकार की क्रियाएँ एवं कई तरह के मन्त्रोच्चार जैसे झंझट देख कर लोग उससे कतराने लगे हों । पर यह कठिनाई भी तब अनुभव होती है जब नैमित्तिक-विशिष्ट-यज्ञ किये जायें । नित्य हवन की परम्परा ऋषियों ने पहले से ही इतनी सरल बनाकर रखी है कि उसमें विधि विधान कर्मकाण्ड-मन्त्रोच्चार आदि को जाने बिना भी काम चल सकता है । बलिवैश्व प्रक्रिया ऐसी ही है जो संस्कृतज्ञ विद्वानों से लेकर नितान्त अनपढ़ों के लिए सरल है । पंडितों के लिए कर्मकाण्ड का विधान और मन्त्रोच्चार भी उसके साथ जुड़ा हुआ है । किन्तु वह विशिष्टों के लिए है । सर्व साधारण के लिए यह पूरी सुविधा है कि मात्र गायत्री मन्त्र से पाँच आहुतियाँ दे दें । आहुतियों के लिए विशेष हवन सामग्री की आवश्यकता पड़ती है पर बलिवैश्व में तो वही हविष्य है जो सामने थाली में प्रस्तुत है ।

बलिवैश्व का सरल संक्षिप्त विधान

बलिवैश्व का सरलतम सामान्य विधान इस प्रकार है-(१) मिट्टी या धातु पात्र को हवन वेदी की तरह प्रयुक्त करने के लिए पहले से ही तैयार रखा जाय । (२) चौके में पहली रोटी सिकने पर उसे आहुतियों के लिए प्रयुक्त किया जाय (३) चूल्हे में से अग्नि निकाल कर निर्धारित वेदी पर रखा जाय । वेदी को अग्नि स्थापना से पूर्व हर दिन स्वच्छ कर लेना आवश्यक है । अग्नि गाय के गोबर से बने उपले की हो सके तो सर्वोत्तम अन्यथा जैसी भी हो वैसी ली जा सकती है । धुँआ रहित होनी चाहिए (४) अग्नि पर तनिकसा घी डालकर चूल्हे की जलती आग से ज्योति प्रज्वलित करलें (५) रोटी, चावल, आदि जो भी नमक रहित पदार्थ चौके में बने हों उनमें से पाँच ग्रास निकाल कर-घी और शक्कर से संयुक्त किये जायँ इनका परिमाण चने के बराबर रहे तो ठीक है । (६) गायत्री मन्त्र सहित एक-एक ग्रास की आहुति जलती अग्नि पर डाली जाय । इस प्रकार पाँच ग्रासों से पाँच आहुतियाँ पूर्ण की जायँ (७) जल पात्र पहले से ही वेदी के समीप रखा जाय और उसमें से जल लेकर अग्नि के चारों ओर परिक्रमा की तरह घुमा दिया जाय । (८) अग्नि के ठण्डी हो जाने पर उसे किसी घड़े आदि में सुरक्षित रखते रहा जाय और सुविधानुसार उसे किसी पवित्र जलाशय में विसर्जित कर दिया जाय ।

कर्मकाण्डी अग्निहोत्र कर्त्ताओं के लिए कई मन्त्रों की, कई विधानों की भी व्यवस्था है पर सर्वसाधारण के लिए उतने से भी काम चल सकता है जितना कि ऊपर की पंक्तियों में उल्लेख किया गया है । स्मरण रखने योग्य बात इतनी ही है कि इस छोटे कृत्य के साथ भी पूर्ण यज्ञ जैसी श्रद्धा को समन्वित रखा जाय । बलिवैश्व की वेदी को यज्ञ कुण्ड की तरह ही पवित्र माना जाय, वह पैरों से टकराती न फिरे । इसलिए उसे अभीष्ट कृत्य के बाद किसी उपयुक्त स्थान पर रख दिया जाय । यही बात इस भस्म के बारे में भी है जमीन पर जहाँ तहाँ अग्नि होत्र नहीं किया जाना चाहिए और न ठण्डी होने पर उसकी भस्म जहाँ-तहाँ पैरों तले छितराती रहनी चाहिए । यह यज्ञ भगवान की प्रतिष्ठा का प्रश्न है । प्रतिष्ठापना ही नहीं प्रतिष्ठा भी आवश्यक है ।

गाय का थोड़ा सा गोबर लेकर उसकी छोटी-छोटी टिकिया बनाई जा सकती है । एक दिन के गाय के गोबर से कई महीनों के लिए यह टिकिया बन सकती है और धूप में सुखा कर सुरक्षित रखी जा सकती है । इसी प्रकार एक किलो गाय के दूध में से प्रायः एक छटांक घी निकल सकता है और वह भी कई महीने काम दे सकता है । दूध की जगह एक दिन मक्खन निकला दूध या छाछ लेकर घर का काम चल सकता है । सफेद शक्कर के

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थान पर गुड़ काम में लाया जाय तो अधिक लाभ है । यह सभी विशिष्टताएँ सम्पन्न कर लेना बहुत सरल है । प्रश्न मात्र इच्छा और तत्परता होने भर का है । इतने पर भी यदि यह न बन पड़े तो चूल्हे में जैसी भी कुछ आग हो-घी किसी भी पशु का हो, शक्कर जैसी भी हो-काम में लाई जा सकती है । न होने से होना अच्छा की नीति इस प्रयोजन के लिए भी अपनाई जा सकती है ।

महिलाएँ बलिवैश्व की प्रक्रिया बड़ी आसानी से चलाती रह सकती हैं । यज्ञावशिष्ठ परोसे जाने का अपना महत्व है । इसमें अपनी महान साँस्कृतिक परम्परा का निर्वाह होता है । साथ ही यज्ञ में बने हुए को ही खाने का तत्व दर्शन समझने-समझाने एवं हृदयंगम करने से व्यक्ति एवं समाज की सर्वतोमुखी सुख शान्ति-प्रगति समृद्धि का द्वार खुल सकता है । देकर खाने-मिल बाँट कर उपयोग करने की नीति को देववृत्ति कहते हैं । यह जहाँ भी-जितने अंश में भी प्रयुक्त होगी वहाँ उसी अनुपात से सदाशयता बढ़ेगी । कहना न होगा कि सदाशयता ही सर्वतोमुखी प्रगति की आधारशिला है । सतयुग की-स्वर्णिम युग की सुखद संभावनाओं का आशा केन्द्र उसी को समझा जा सकता है । बलिवैश्व के क्रिया कृत्य का स्वरूप कितना ही छोटा क्यों न हो उसके पीछे यही प्रेरणाऐं भरी पड़ी हैं जिन्हें अपनाने के कारण अपने देश के नागरिक देव मानव कहलाने का श्रेय सौभाग्य प्राप्त करते रहे हैं । कृत्य चलता रहे तो उसकी व्याख्या होने तथा अपनाये जाने की भी आज्ञा बनी रहेगी । अन्यथा जड़ कट जाने पर तो संभावनाएँ ही समाप्त होती हैं । घास गर्मियों में सूख जाती है पर जमीन में उसकी जड़ जमी रहती है । वर्षा होते ही वे सूखी जड़ें फिर हरी हो जाती हैं । बलिवैश्व परम्परा को यदि कृत्य रूप में भी बनाये रखा जाय तो प्रेरणाएँ सूखी जड़ों की तरह भी जीवन्त रह सकती हैं और समयानुसार उनकी हरीतिमा धरती पर छा जाने की अपेक्षा की जा सकती है । यह धर्म कृत्य यदि घर की महिलाओं को सोंपा जा सके-उसका पुण्य फल उन्हें समझाया जा सके तो यह विश्वास किया जा सकता है कि बलिवैश्व की विस्मृत परम्परा फिर से जीवन्त हो सकने में तनिक भी कठिनाई नहीं पड़ेगी ।

बलिवैश्व के लिए महिलाओं को प्रोत्साहन देने के प्रसंग में एक बात और भी जोड़कर रखी जा सकती है कि आँगन में तुलसी का विरवा लगाने की धर्म परम्परा को भी लगे हाथों पुनर्जीवित करने का काम हाथ में ले लिया जाय । छोटा सा कला पूर्ण थांवला बनाकर उस पर तुलसी का विरवा लगाया जाय । सूर्यार्घ्यदान का जल उसी में डाला जाय । थाँवले में दीपक रखने के लिए चारों तरफ छोटे झरोखे छोड़ दिये जायँ ताकि वर्षा या तेज हवा होने पर भी उनमें सायंकाल को घृत दीपक जलाकर रखा जा सके । घरों में गायत्री माता का चित्र स्थापित करने उसके सम्मुख नमन, वन्दन परम्परा चलाने से घर के वातावरण में, धार्मिकता की मात्रा बढ़ती है और उसका प्रभाव प्रकारान्तर से परिवार के सभी सदस्यों पर ऐसा पड़ता है जो उनके व्यक्तित्व और भविष्य में सुखद संभावनाओं वाले तत्वों का अनुपात बढ़ा सके । इसी शृंखला में तुलसी का विरवा लगाने की बात आती है । बलिवैश्व का प्रचलन जहाँ चल पड़े वहाँ तुलसी का विरवा लगाने-देव मन्दिर की तरह थाँवला बनाने का प्रचलन भी अग्रगामी बनाया जा सकता है ।

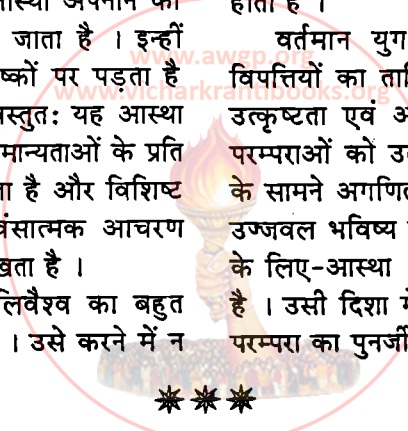
जिन घरों में चौके में बलिवैश्व न बन पड़े वहाँ व्यक्तिगत रूप से भी उसे किया जा सकता है । नैष्ठिक गायत्री उपासक उसे अपने नित्य नियम में सम्मिलित रख सकते हैं । धातु का बना छोटा हवन कुण्ड साथ रखा जाय । भोजन करते समय चूल्हे में से अग्नि मँगाली जाय अथवा हवन कुण्ड की तरह ही छोटी-छोटी समिधायें भी साथ रखी जायँ । उन्हें जला लिया जाय । भोजन में प्राय: घी और शक्कर का अंश कहीं न कहीं रहता ही है उसी भोजन में से पाँच ग्रास लेकर आहुतियाँ दी जा सकती हैं । जहाँ शक्कर मिलने की भी आशा न हो वहाँ यह वस्तुएँ साथ रखी जा सकती हैं । एक छोटी शीशी में घी, छोटी डिब्बी में थोड़ी सी समिधाएँ, दिया सलाई, यज्ञ कुण्ड यह सारा सामान टीन के छोटे से डिब्बे में समा सकते हैं । बाहर जाना हो तो यह डिब्बा भी साथ जा सकता है । घर रहना हो तो यह वस्तु व्यक्तिगत सामान के साथ संजोकर रखी जा सकती है । नैष्ठिक गायत्री उपासक जब घर से बाहर निकलते हैं तो साथ में माता का चित्र पंच पात्र, माला आदि पूजा उपकरण साथ लेकर चलते हैं । इसी प्रकार यदि गायत्री के साथ यज्ञ को भी समान श्रद्धास्पद माना जाय तो उनके साधन भी साथ लेकर चला जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रश्न साधन जुटाने का नहीं है मूल बात महत्व समझने और ध्यान देने की है । बालों को संभालने के लिए साबुन, तेल, कंघी, दर्पण आदि की आवश्यकता पड़ती है और उस साज सामान में समय भी लगता है । दैनिक हजामत बनाने में भी कई तरह के उपकरण इकट्ठे करने पड़ते हैं और समय तथा सतर्कता भी लगती है । इन दोनों कामों में कुछ न कुछ तो पैसा भी खर्च हो ही जाता है । बलिवैश्व में इन दोनों कामों से अधिक न तो समय लगेगा न साधन जुटाने होंगे और न खर्च ही पड़ेगा । अनख इसलिए नहीं लगता कि इनमें झंझट बहुत हैं । पर खर्च पड़ेगा । यह कहना महत्व न समझ पाने के कारण है । श्रद्धा का पलायन हो जाने से ही यह बहाने बाजी उत्पन्न होती है । आलस्य उसका मौन समर्थन करता है । आजकल नास्तिकता भी फैशन एवं प्रगति शीलता का एक अंग बन गई है । उच्छृंखलता अपनाने की तरह अनास्था अपनाने को भी बहादुरी की ही किस्म गिना जाता है । इन्हीं हवाओं का प्रभाव सामान्य मस्तिष्कों पर पड़ता है और अनास्था उत्पन्न होती है । वस्तुतः यह आस्था संकट ही है जो साधारणतया धर्म मान्यताओं के प्रति उपेक्षा के रूप में दृष्टि गोचर होता है और विशिष्ट स्थितियों में विद्रोह बन कर ध्वंसात्मक आचरण करने, अवज्ञा बरतने पर उतारू दीखता है ।

मोटी दृष्टि से देखने में बलिवैश्व का बहुत अधिक महत्व दिखाई नहीं पड़ता । उसे करने में न कोई बड़ा लाभ होता है और न करने पर किसी हानि की संभावना दिखाई नहीं पड़ती । पर यदि बारीकी से देखा जाय तो प्रतीक तुच्छ होते हुए भी उसके पीछे काम करने वाली प्रेरणा अति महान है । प्रश्न आस्था की प्रतिष्ठापना का है । धर्मकृत्य तो उसके प्रतीक भर होते हैं । इसलिए उसका नाम भी प्रतीक पूजा ही है । प्रतीक अर्थात् प्रतिनिधि देवताओं की आकृतियाँ एवं प्रतिमाऐं आँख से देखने पर कौतुक कौतूहल जैसी लगती हैं पर उनके पीछे श्रद्धा को जगाने और बढ़ाने वाले जो तत्व जुड़े हुए है उन्हीं को शास्त्रकारों ने प्राण प्रतिष्ठा कहा है । प्राण प्रतिष्ठा न होने से प्रतिमायें खिलौना भर रह जाती हैं । देवत्व तो श्रद्धा में ही सन्निहित है । बलिवैश्व को देव प्रतिमा उसके क्रिया कृत्य को देवाराधन माना जाय तो निश्चय ही उससे वही उद्देश्य पूरा होगा जो विशालकाय धर्मानुष्ठानों का होता है ।

वर्तमान युग में आस्था संकट ही समस्त विपत्तियों का तात्विक कारण है । अनास्था ने ही उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता की मान्यताओं और परम्पराओं को उलट दिया है, फलतः मनुष्य जाति के सामने अगणित विभीषिकाऐं उठ खड़ी हुई हैं । उज्जवल भविष्य की संरचना के लिए-युग परिवर्तन के लिए-आस्था संकट से जूझना ही प्रमुख कार्य है । उसी दिशा में एक रचनात्मक कदम बलिवैश्व परम्परा का पुनर्जीवन भी है ।



www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीप - यज्ञ

उद्देश्य और आधार

असाधारण परिस्थितियाँ सामने आने पर मनुष्य यथा संभव उनके निराकरण का प्रयत्न करता है । करना भी चाहिए; क्योंकि वह कर्तव्य है । किन्तु इतने भर से ही गुत्थियों का समुचित सुलझाव बन पड़ते देखा नहीं जाता; क्योंकि उनके कारण कई बार परोक्ष भी होते हैं । कठिनाईयाँ मात्र प्रत्यक्ष अव्यवस्थाओं से ही नहीं आतीं । कई बार उनका कारण वातावरण की अस्तव्यस्तता और प्रकृति की विपन्नता भी होती है । यह सूक्ष्म जगत में उत्पन्न होने वाले कारण हैं, जिनका आधार मनुष्य समुदाय का दूषित दृष्टिकोण एवं गर्हित क्रियाकलाप होता है । सूक्ष्म जगत में असंतुलन बनने का यही कारण है, और इसी आधार पर ऐसी विपत्तियाँ सामने आती हैं जो उसी स्तर का उपचार किए बिना सुलझती नहीं ।

प्रत्यक्ष पुरुषार्थ का अपना महत्व है । कठिनाईयों से निपटने और समृद्धि को बढ़ाने के लिए सभी अपने-अपने ढंग से काम करते हैं । पर साथ ही यह भी भुला नहीं दिया जाना चाहिए, कि सूक्ष्म जगत के परिशोधन के लिए ऐसे उपाय भी अपनाये जाने चाहिए, जिससे अनास्था-संकट टले, श्रद्धा संवर्धन को बल मिले और पुण्य परमार्थ की सत्प्रवृत्तियों को परिपोषण मिले । इन्हीं के समन्वय को अध्यात्म प्रयोग कहते हैं । अध्यात्म तत्वज्ञान और साधना परिकर का अवलम्बन; जितना साधक के लिए हितकर है, उतना ही सामूहिक संतुलन के लिए प्रभावशाली सिद्ध होता है ।

इन दिनों ऐसी ही परिस्थितियाँ हैं, जिनकी विकटता को देखते हुए प्रत्यक्ष उपायों के अतिरिक्त परोक्ष अध्यात्म स्तर के आधारों को भी अपनाया जाना चाहिए, कारण कि आपत्तियों के घटाटोप और प्रगति पथ के अवरोध में जितना व्यवधान प्रत्यक्ष भूल-चूकों से होता है, उससे कहीं अधिक समष्टि क्षेत्र का सूक्ष्म जगत-उसमें भरी हुई अनैतिकता बाधक बनती है ।

इन दिनों व्यापक रूप से जन-जीवन को संत्रस्त करने वाली कुछ प्रमुख कठिनाइयाँ यह हैं- (१) प्रकृति की विपन्नता, वर्षा का असंतुलन (२) चरम स्तर की मँहगाई (३) अनाचारी दुरात्माओं की अनैतिक आक्रामकता (४) साम्प्रदायिक तनाव (५) राजनैतिक उथल-पुथल । इन सभी का समन्वय मिल-जुलकर इतना त्रास-दायक हो जाता है कि व्यक्ति का निजी जीवन और समाज का संतुलन उससे बुरी तरह प्रभावित होता है, हो भी रहा है । ऐसी दशा में पुरुषार्थपरक प्रयास तो होना ही चाहिए । साथ ही आध्यात्मिक उपाय उपचारों का भी निर्धारण होना चाहिए, ताकि सूक्ष्म जगत की विकृतियों का समुचित समाधान हो सके ।

अध्यात्म उपचार में गायत्री की मंत्र शक्ति और यज्ञ की दिव्य ऊर्जा का अपना विशिष्ट स्थान है । शास्त्रकारों ने गायत्री को भारतीय संस्कृति की माता और यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता कहा है । इन दोनों का आश्रय ग्रहण करने पर सामयिक समस्याओं को सुलझाने में अतिरिक्त सहायता मिल सकती है । साथ ही आश्रय ग्रहण करने वाले का व्यक्तिगत उत्कर्ष-हित साधन भी हो सकता है ।

सभी लोगों तक अनुरोध पहुँचाना और उन्हें सहमत करना तो कठिन है; पर प्रज्ञा परिवार के परिजनों से तो ऐसा अनुरोध किया ही जा सकता है कि वे सार्वजनीन श्रेय साधना के निमित्त अपनी भाव श्रद्धा का परिचय दें ।

व्यक्तिगत साधना के लिए कहा गया है कि प्रातःकाल सूर्योदय के समय न्यूनतम दस मिनट गायत्री महामंत्र का, स्नान करने पर विधिवत् और वैसा न बन पड़ने पर मानसिक जप किया जाय,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ ही प्रभातकालीन सूर्य का नेत्र बंद करके ध्यान करते रहा जाय । भावना की जाय कि उससे बल, बुद्धि और सद्भाव की त्रिविध दैव अनुकम्पा का लाभ उसे मिल रहा है ।

यों उपासना कभी भी की जा सकती है; किन्तु एक निर्धारित समय में असंख्यों की संयुक्त शक्ति का समन्वय हो जाने पर उसका चमत्कारी प्रतिफल होता है । एक समय में असंख्यों की एक क्रिया का सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है- इस सिद्धान्त के अनुसार पुल पर सेना को कदम मिला कर नहीं चलने दिया जा सकता; क्योंकि पैरों की संयुक्त-शब्द-शक्ति पुल को गिरा देने का खतरा उत्पन्न कर सकती है । हानि की तरह वह चमत्कारी लाभ भी उत्पन्न कर सकती है । वातावरण का संशोधन करने वाली दिव्य शक्ति उत्पन्न कर सकती है । उससे प्रत्येक प्रयोक्ता को भी व्यक्तिगत लाभ तो मिलता ही है ।

दूसरा आधार है-यज्ञ । पिछले वर्ष यज्ञ आयोजनों और राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों की धूम रही थी और उससे विपत्ति के बादल किसी हद तक छँटे भी हैं । इस वर्ष पिछली साल की अपेक्षा उन आयोजनों के लिए और भी अधिक उत्साह था । तैयारी भी चल रही थी । इस हेतु प्रान्तों के सम्मेलन जुलाई-अगस्त में बुलाये गये थे, पर परिस्थितियों और संभावनाओं ने जिस प्रकार पलटा खाया है, इसे देखते हुए हिमालय से नया संदेश आया कि आयोजनों को समाप्त तो न किया जाय; पर छोटा अवश्य कर दिया जाय । आपत्तिकाल में ऐसे परिवर्तनों की पूर्व परम्परा भी है ।

याज्ञवल्क्य जी से राजा जनक जी ने पूछा, प्रकृति के अनुकूलन के लिये यज्ञीय भाव अनिवार्य हैं, उसके लिए अग्निहोत्र भी करना आवश्यक है । पदार्थों के अभाव की स्थिति में अग्निहोत्र कैसे किया जाय ? महर्षि ने उत्तर दिया "घृत न हो तो धान्य से, वह न हो तो वनस्पतियों से, वह भी न हो तो केवल काष्ठ से हवन कर लेना चाहिये । परन्तु यज्ञीय भावना का विकास-पोषण करने का क्रम चलाते रहना आवश्यक है ।" उक्त प्रसंग में यह संकेत है कि अभाव की स्थिति हो तो पूजा सामग्री में कटौती करते हुए भी आध्यात्मिक प्रयोग चलाते रहना चाहिये । इसीलिए प्रज्ञा अभियान के सूत्र संचालकों ने व्यापक युग चेतना उत्पन्न करने के लिये गायत्री यज्ञों को माध्यम बनाया है ।

यज्ञ की महिमा महत्ता-असाधारण है । ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में ही यज्ञाग्नि को पुरोहित स्तर की मान्यता दी गई है और कहा गया है कि वह यजनकर्ताओं को रत्नराशि के समतुल्य बहुमूल्य लाभ प्रदान करता है । अग्नि की प्रेरणा-प्रशिक्षण यह है कि वह चिनगारी तुल्य लघुकाय होते हुए भी दावानल सदृश विशालकाय बन जाने की क्षमता से भरी-पूरी होती है । ऊर्जा और आभा का निरंतर परिचय देती है । निकटवर्ती कुछ भी क्यों न हो; उसे अपने समतुल्य बना लेती है । यज्ञाग्नि की अभ्यर्थना इसीलिए की जाती है कि यह विशेषताएँ, विभूतियाँ याजक को भी उपलब्ध होती रहती हैं । इसलिए समय-समय पर प्रगति प्रयोजनों और अवरोधों के निराकरण के लिए छोटे-बड़े यज्ञ होते भी रहे हैं ।

असुरता का वर्चस्व मिटाने और सतयुग की वापसी का सरंजाम जुटाने के लिए रामराज्य की स्थापना हेतु भगवान राम ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे, जिनकी स्मृति में काशी - दशाश्वमेध घाट अभी भी साक्षी रूप में विद्यमान है । छिन्न - भिन्न, अस्तव्यस्त भारत को विशाल भारत बनाने के लिए महाभारत योजना सम्पन्न हुई । उस अवसर पर भगवान कृष्ण के तत्त्वावधान में पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ सम्पन्न किया था । उससे जन-जन को सदाशयता अपनाने की प्रेरणा भी मिली और अवांछनीयता को पनपने न देने वाले पराक्रम को अपनाने की क्षमता भी । राजतंत्र को सुव्यवस्थित रखने के लिए राजसूय यज्ञ और चरित्र एवं वर्चस्व को सक्षम बनाये रखने के लिए वाजपेय यज्ञों की परम्परा भी समय-समय पर अपनायी जाती रही है । उसमें याजकों के लिए अनेकानेक लाभ भी समाविष्ट हैं । वातावरण को प्रदूषण रहित बनाने के लिए यज्ञ परिशोधन और परिवर्धन की प्रक्रिया भी सम्पन्न करते है । यज्ञ से प्राण वर्षा होने की बात प्रसिद्ध है, जिससे जीव - जन्तु, वनस्पति - समुदाय एवं मानवी सशक्तता का अभिवर्धन भी होता है । संसार में सुख - शांति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का वातावरण भी बनता है । युग परिवर्तन की इस अति महत्वपूर्ण घड़ी में भी दैवी निर्देशन पर एक करोड़ याजकों द्वारा एक लाख दीपयज्ञों की योजना बनी है; ताकि इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य का अवतरण भली प्रकार हो सके । पिछले दिनों बन पड़े अनाचारों का परिशोधन भी इस संकल्प में नियोजित है । वायुमंडल का प्रदूषण और अदृश्य जगत की विषाक्तता का निवारण भी इसी के साथ समाहित है ।

कभी बहुत खर्चे से-बहुत साधनों से सम्पन्न होने वाले बड़े यज्ञ भी होते थे, पर आज की परिस्थितियों को देखते हुए उसका कलेवर छोटा कर दिया गया है, फिर भी भट्टी में प्रज्वलित बड़ी आग का गुण-धर्म छोटी चिनगारी में भी यथावत् पाया जाता है ।

यज्ञ में मात्र मंत्रों का उच्चारण तथा शाकल्य ही सब कुछ नहीं है । साथ ही अधिकाधिक संख्या में भावचेतना सम्पन्न याजकों का भी सम्मिलित होना आवश्यक है । प्राण-चेतना की बहुलता से ही मंगलमय वातावरण का सृजन होता है । शाकल्य को तो छोटे रूप में भी लिया जा सकता है । विशाल गंगा का जल छोटी शीशी में लेकर उस गंगाजली की भी घरों में पूजा होती है और श्रद्धा के अनुरूप उसका प्रतिफल भी मिलता है । सूर्य को अर्घ्य अंजुलि भर पानी से भी दिया जा सकता है । इसी प्रकार हवन सामग्री की भी आवश्यकता अगरबत्ती से और घृतआहुतियों का काम दीप प्रज्वलन से भी चल जाता है । इन दिनों मँहगाई, व्यस्तता और अश्रद्धा के वातावरण में दीपयज्ञों से ही वह काम भली प्रकार चल रहा है, जो किसी समय, सुसम्पन्नता के दिनों में प्रचुर साधन सामग्री जुटाने से हुआ करता था ।

यज्ञ के साथ शक्ति संचय भी जुड़ा हुआ है । विश्वामित्र ने युगपरिवर्तन के समय की अनेकों आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, वह यज्ञ किया था, जिसमें राम-लक्ष्मण को सुरक्षा हेतु बुलाया गया था । उनने युद्ध-कौशल तो सीखा ही, साथ ही बला और अतिबला विद्याओं का-गायत्री और सावित्री की शक्तियों का प्रयोग भी सीखा, जिसके आधार पर शिव धनुष तोड़ने, लंका के अनाचार केन्द्र को बिस्मार करने, अंगद, हनुमान, नल-नील जैसे सशक्तों का सहयोग पाने और रामराज्य को धर्मराज्य के रूप में स्थापना कर सकने की क्षमता उपलब्ध की । इससे मिलते-जुलते लाभ वे लोग भी उपलब्ध कर सकते हैं, जो दीपयज्ञों की क्रिया-प्रक्रिया के साथ किसी न किसी रूप में जुड़ते हैं ।

यज्ञ एक कृत्य ही नहीं है, उसके साथ उच्चस्तरीय सद्ज्ञान का प्रेरणा प्रकरण भी जुड़ा हुआ है । यज्ञ का शब्दार्थ है-पुण्य-परमार्थ । अपनी उपयोगी वस्तुओं को लोकहित के लिए वितरित कर देने की प्रक्रिया ही यज्ञ-कृत्य में अपनायी जाती है । उससे यह शिक्षा और प्रेरणा भी मिलती है कि हम स्वार्थी, कृपण, निष्ठुर, विलासी बन कर न रहें, वरन् सबके हित में अपना हित समझें ।

यज्ञशास्त्र के व्याख्याकारों ने उसे देव पूजन, दान और संगतिकरण का प्रतीक भी माना है । देवपूजन अर्थात् परमार्थपरायण प्रतिभाओं का संवर्धन, जैसा कि शांतिकुंज की सत्र-शिक्षण योजना के अंतर्गत चल रहा है । दान की नियमितता जैसे कि दो घंटे समय और दस पैसे नित्य के अनुदान निकालने का उपक्रम प्रज्ञापुत्रों द्वारा अपनाया जा रहा है । संगतिकरण अर्थात् संगठन । जैसा कि प्रज्ञामंडलों, प्रज्ञाकेन्द्र और यज्ञ आयोजनों के माध्यम से युगान्तरीय चेतना के आलोक वितरण के साथ - साथ इन दिनों तत्परता - पूर्वक चल रहा है ।

गायत्री और यज्ञ को माध्यम इसीलिए बनाया गया है कि इन दोनों उपचारों और निर्धारणों को विश्वव्यापी निर्धारणों के अनुरूप माना जा रहा है । गायत्री में सद्बुद्धि की अभ्यर्थना को है । इसी को विचारक्रांति कहा गया है-लोकमानस के परिशोधन की प्रक्रिया भी । गायत्री को माता के रूप में मान्यता दी गयी है और उसकी अभ्यर्थना को प्राथमिकता भी दी गयी है । इसका सीधा संकेत यह भी है-अगली शताब्दी मातृशक्ति की प्रमुखता लेकर आ रही है । इसे पिछड़ी हुई आधी जनसंख्या का अभ्युदय भी कह सकते हैं । सद्बुद्धि अर्थात् दूरदर्शी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विवेकशीलता । इसी को अपनाने से प्रस्तुत अनेकानेक मूढ़ मान्यताओं और दुष्प्रवृत्तियों का निराकरण भी होगा । अगले दिनों गायत्री को ही सबसे छोटा किन्तु सबसे सारगर्भित धर्मशास्त्र माना जाना है । इसके चौबीस अक्षरों में से प्रत्येक में उसी स्तर की प्रेरणाएँ और क्षमताएँ भरी पड़ी हैं । २४ अवतार अर्थात् गायत्री के २४ अक्षर । २४ देवता अर्थात् गायत्री में सन्निहित अलौकिक रहस्य । गायत्री के २४ अक्षर अर्थात् प्रमुख ऋषि-तपस्वी । इनमें से प्रत्येक के पास ऋद्धि-सिद्धियों के भण्डार भरे पड़े हैं । २४ देवियाँ अर्थात् गायत्री उपासना के साथ जुड़ी हुई अलौकिक विशेषताएँ । दीपयज्ञों में इसी गायत्री महाशक्ति से आकाश गुंजित किया जाता है और उसे व्यापकरूप से सर्वव्यापी बनाया जाता है ।

यज्ञ अर्थात् अग्नि की अभ्यर्थना -वह अभी भी किसी न किसी रूप में सभी प्रमुख धर्म-सम्प्रदायों में अपनायी एवं प्रयुक्त की जाती है । नयायुग यज्ञयुग होगा, अर्थात् हर व्यक्ति ऊर्जा सम्पन्न, अर्थात् ओजस्वी, तेजस्वी, साहसी होगा । प्रकाश अर्थात् शोभा, सुसंस्कारिता, यशस्वी गरिमा । याज्ञिकों में से प्रत्येक के मन-मानस में यह श्रद्धा उगाई जा रही है कि वे मात्र ऐसी रीति अपनाते हुए जीवन जियें, जिनकी चर्चा सुगन्धि-वितरण के रूप में सर्वत्र हो । यशस्वी बनें और अपने कर्तृत्व को-व्यक्तित्व को अनुकरणीय- अभिनन्दनीय बनाकर रहें ।

धर्म धारणा के तत्वदर्शन का प्रतिपादन, निर्धारण इसीलिए किया गया कि मनुष्य अपनी गरिमा और उसके साथ जुड़े कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों को अपना सके, उनका निर्वाह कर सके । पूजा उपचार, साधना जैसे प्रत्यक्ष क्रिया-कलाप और प्रचलन भी इसी उद्देश्य से रचे गये । यह सब प्रत्यक्ष दिखने से सर्वसाधारण इनसे प्रभावित ही होता रहा है । प्रतीक पूजा का प्रयोजन यही रहा है । जो दीख पड़ता है उसकी व्याख्या विवेचना भी सहज बन पड़ती है, और समझने समझाने में भी सुविधा रहती है । उपासना आदि कर्मकाण्ड इस उद्देश्य की पूर्ति करने पर ही सार्थक माने जाते हैं ।

पिछले दिनों कर्मकाण्डों की भरमार तो बहुत हुई है, पर उनका वह तत्वदर्शन समझने-समझाने का प्रयास बन्द हो गया, जो व्यक्ति और समाज को सम्मुन्नत, सुसंस्कृत बना सकता था । कहा और समझा जाने लगा कि उनसे देवता प्रसन्न होते हैं, मनोकामनाएँ पूरी करते हैं । पापों का प्रतिफल भोगने से छूट दिलाते हैं । इसी निमित्त पूजा-अर्चना का सारा सरंजाम इसी केन्द्र पर केन्द्रित हो गया है कि सर्वसाधारण को वस्तु स्थिति समझाई जाय, धर्म तत्व के मूलभूत उद्देश्य को पूरा करने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाया जाय, नहीं तो यह विद्या खो बैठेगी और उलटकर अन्धविश्वासों को जन्म देकर धर्म प्रयोजन को आहत ही करेगी ।

इसलिए कर्मकाण्डों के क्रियाकृत्यों को छोटा करने तथा उनके साथ जुड़ने वाली हर कड़ी का लम्बा एवं स्पष्ट विवेचन करने की आवश्यकता है । इस प्रयास को धर्मधारणा को नव जीवन प्रदान करना भी कहा जा सकता है । दीपयज्ञों का कृत्य तो अति सरल है । वह कम समय में भी पूरा हो जाता है, पर इस शृंखला के साथ जो दर्जनों कृत्य जुड़ते हैं, उन सभी की बड़ी उपयोगी तथा स्पष्ट विवेचना की जाती है । इस तरह वह समूचा कृत्य दृश्य श्रव्य के रूप में पूरी तरह लोक शिक्षण की आवश्यकता को पूरा करता है । एक घंटे का क्रिया-कृत्य प्रायः दो घंटे की विवेचना से भरा होता है । इस प्रकार छोटे-बड़े सभी दीप यज्ञ तीन घंटे में पूरे होते हैं । कर्म के साथ ज्ञान भी इस तरह जुड़ा रहता है, कि इन्हें दीप यज्ञ ही नहीं ज्ञान यज्ञ भी कहा जा सकता है । इसे धर्म तंत्र का पुनरुत्थान या काया कल्प कह सकते हैं ।

यह एक बड़ी क्रांति है । इसका पहला चरण राज्य क्रान्ति के रूप में पूरा हुआ । स्वराज्य तो मिला पर सुराज्य के लिए अभी बहुत कुछ करना है । आर्थिक प्रगति को पूरा करने के लिए अपव्यय एवं भ्रष्टाचार तो रोकना होगा । प्रगति की समग्रता तभी होगी जब अन्धविश्वासों को भी उखाड़ फेंका जाय ।

इस क्रान्ति की समग्रता नैतिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति के तीनों क्षेत्रों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूरा करने में है । इनको पूरा करे बगैर अन्य क्षेत्र अधूरे ही रहेंगे । अधूरेपन को पूरा करने के लिए ही दीपयज्ञों की प्रक्रिया आरम्भ हुई है । इसकी शुरूआत नवयुग की आरती उतारने जैसा कहा जा सकता है । जैसे-जैसे इस प्रयास से भावनाशीलों का समुदाय संगठित और समर्थ होता जाएगा, वैसे-वैसे समग्र परिवर्तन के बहुमुखी प्रयास चल पड़ेंगे, जिन्हें दूसरे शब्दों में, स्वस्थ शरीर-स्वच्छ मन और सभ्य समाज की संरचना कहा जा सकेगा । भूमि पूजन से ही भवन निर्माण का कार्य प्रारम्भ हो जाता है । शुभारम्भ के साथ ही निर्धारित गतिविधियाँ चल पड़ती हैं । दीप यज्ञ की श्रृंखला गतिशील होते ही व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के तीनों ही महान निर्धारण, क्षमता एवं परिस्थिति के अनुरूप सर्वत्र चल पड़ेंगे । उनकी प्रगति नवयुग की आधारशिला बनेगी । जरुरतों के मुताबिक अनेकों रचनात्मक योजनाएँ बनती और गतिशील होती रहेंगी ।

दीपयज्ञों का दार्शनिक तत्वज्ञान ऐसा है, जिसकी प्रभाव-प्रेरणा को यदि गंभीरतापूर्वक अपनाया जा सके, तो वैयक्तिक जीवन देवोपम दिशा अपनाने के लिए अग्रसर हो सकता है, जीवन यज्ञ के रूप में विकसित करने वाली संजीवनी विद्या को रीति-नीति से ओत-प्रोत कर सकता है । यज्ञ दर्शन में सामाजिक परम्पराओं, प्रथाओं एवं आचार-संहिताओं का ऐसा परिपालन हो सकता है, जिससे इसी धरती पर स्वर्ग उतरे और मनुष्य में देवत्व उभरता हुआ दृष्टिगोचर हो । दीपयज्ञ के साथ जुड़ी हुई दार्शनिकता दीपक की तरह ज्योति वितरण को केन्द्र बनाने के लिए हर किसी भावनाशील को प्रेरित करती है । यदि यही श्रद्धा अपनायी जा सके, तो समझना चाहिए कि तुच्छ समझे जाने वाले मनुष्य पर देवत्व की छाया उतरी, प्रतिभा उभरी । शक्ति-सत्ता के आधार पर उसकी समर्थता असंख्य गुनी बढ़ चली । इसे दैवी-सत्ता द्वारा की गयी अमृत वर्षा ही कह सकते हैं, जिसके आधार पर व्यक्ति और समाज को सर्वतोमुखी प्रगति का सुयोग मिल सकता है । प्रदूषण और विषाक्तता से जो अव्यवस्था सब ओर फैली है, उसका अन्त अब निकट आ गया है ।

दीपयज्ञ आयोजनों के साथ जुड़ने वाली गतिविधियाँ सर्वतोमुखी उत्कर्ष का वातावरण विनिर्मित करती हैं और सम्मिलित होने वालों का ऐसा पथ-प्रदर्शन करती हैं, जिससे वे नेतृत्व की-मार्ग-दर्शन की क्षमता हाथों-हाथ उपलब्ध कर सकें और साधारण समझे जाने वाले जनसमुदाय के बीच अपनी श्रम-साधना के कारण असाधारण समझे जाने लगें, समीपवर्ती क्षेत्र का प्रतिनिधित्व एवं मार्गदर्शन कर सकें, सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन एवं दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन में अपनी सामर्थ्य, गौरव-गरिमा का परिचय दे सकें ।

जहाँ एक दीपयज्ञ सम्पन्न होता है, वहाँ के लोग सरलता, सुगमता से उभरती हुई प्रेरणाओं का अवलम्बन लेते हुए अपने-अपने यहाँ वैसे ही आयोजन करने के लिए उल्लसित होते हैं-मिल जुलकर काम करने को भी । दो-दो रोटियाँ हर घर से लेने पर प्रीतिभोजों की एक ऐसी परिपाटी विकसित होती है, जिससे किसी भी सत्प्रयोजन के लिए सत्कार भरे सहभोज की व्यवस्था सहज ही बन जाती है और जाति - पाँति के नाम पर चलने वाली ऊँच-नीच मान्यताओं की जड़ों पर कुठाराघात होता है । विवाह-शादियों में होने वाले अपव्यय को अपने देश की दरिद्रता का मूल-कारण समझा जाता है । इस कुप्रथा को अपने परिकर में चरितार्थ न होने देने का संकल्प लेने वाले याजक पिछड़ेपन के प्रमुख कारण का बहिष्कार करने में अपनी दूरदर्शिता को उभारते हैं । इसी प्रकार नशेबाजी, अपव्यय का प्रमुख कारण समझी जाने वाली फैशन-परस्ती को भी छोड़ने के लिए बाधित होते हैं ।

दीपयज्ञ के माध्यम से विचारशीलों की जो एकजुटता उत्पन्न होती है, उसको दिशा देने के लिए "शिक्षा संवर्धन" का, विशेषतया प्रौढ़ शिक्षा का, साप्ताहिक सत्संगों का, जो शुभारम्भ चल पड़ता है, उसके यथावत् चलने रहने पर सामाजिक प्रगतिशीलता की झाँकी हर किसी को मिलती है । सर्वतोमुखी लोकशिक्षण का दूसरा प्रयोग ऐसा है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जिसे पिछड़ेपन के अन्त का सुनियोजित उपचार माना जा सकता है । ज्ञानरथ जब गली-मुहल्लों में घूमते हैं और अपने साथ जुड़े हुए टैपरिकार्डर, लाउडस्पीकर द्वारा जन-जन के मन तक प्रगतिशीलता की पक्षधर प्रेरणाएँ पहुँचाते हैं, तो उनके सहारे प्रखर-वक्तृता और मर्मस्पर्शी संगीत गायन के लाभ से रास्ते चलते लोगों का मन हुलसने लगता है । वातावरण में प्रखर-प्रेरणा भरने का उपचार कदाचित् ही अब तक कहीं किसी ने प्रयुक्त किया हो । इससे स्वाध्याय और सत्संग की दोनों ही प्राणवान प्रेरणाएँ बन पड़ती हैं । अलख जगाने की यह प्रक्रिया नवयुग की आधारशिला रखने में असाधारण रूप में सहायक होती है ।

दीप-यज्ञ देखने सुनने में एक छोटा-सा धार्मिक कर्मकाण्ड भर प्रतीत होता है, पर उसके साथ जो व्याख्या विवेचना, व्यवस्थाएँ क्रिया-प्रक्रियाएँ जुड़ी हुई हैं उन पर गंभीरतापूर्वक विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि इसमें व्यक्ति - निर्माण और समाज- निर्माण के सभी तथ्य पूरी तरह गूँथ दिये गये हैं । इस आयोजन को जहाँ कहीं भी सम्पन्न किया जायेगा, वहाँ लोगों में प्रगतिशीलता की ओर असाधारण रूप से आकर्षण बढ़ेगा और आन्दोलन से सहयोग करने के लिए परिचितों का ही नहीं, अपरिचितों का भी मन मचलेगा और देखते ही देखते सारी-विश्व-वसुन्धरा दीप यज्ञों की दीपमाला और ज्योति -ज्वाला से आलोकित हो उठेगी ।

महिमा और महत्ता

दीप और यज्ञ दोनों ही भारतीय देव संस्कृति के प्राण हैं । देव-पूजा में दीपक प्रज्वलन एक महत्वपूर्ण आधार है । देव पूजन में उसका सुनिश्चित स्थान होता है । मन्दिरों की सुबह शाम की आरती में उसका अनिवार्य रूप से समावेश रहता है । दीपावली इस विद्या का वार्षिकोत्सव है । प्रत्येक धर्म कृत्य में दीपक जलाया जाता है । किसी खुशी के अवसर पर उस उल्लास-आनन्द को दीपक के द्वारा ही प्रकट किया जाता है । दीपमाला का सरल माध्यम अब बिजली की बत्तियाँ जगमगाने के रूप में परिवर्तन होने लगा है ।

धार्मिक अनुष्ठानों के लिए अखण्ड दीपक जलाए जाते हैं । अखण्ड ज्योति उसी भाव संवेदना के प्रति अनन्य निष्ठा का चिह्न मानी जाती है । किसी के मरने की जगह पर वहाँ पर कुछ दिन दीपक जलाकर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत करने से लेकर सद्गति की प्रार्थना का समावेश रहता है ।

दीपक ज्ञान चेतना का प्रतीक है । उसमें पुण्य कार्यों के लिए आत्म बलिदान की भावना जुड़ी हुई है । यह स्वयं जलता है और दूसरों को रास्ता दिखाने का आधार बनता है । इसी प्रयोजन को बड़े रूप में पूरा करने वाले सूरज, चन्द्रमा, सितारे लोक श्रद्धा के आधार बनते और विभिन्न भाव संवेदनाओं के साथ जन-जन का अभिनन्दन प्राप्त करते हैं ।

आत्मा को दीप शिखा की उपमा दी गई है । त्राटक ध्यान में दीप ज्योति का सहारा लिया जाता है । इसे सद्ज्ञान का सहारा कह सकते हैं । भगवान की तरह ज्ञान भी दिखाई नहीं देता । भगवान की अनेक मूर्तियाँ बनाई और स्थापित की जाती हैं । इस सम्बन्ध में यह भी कहा जा सकता है कि भगवान का, मनुष्य के अन्तःकरण को छूनेवाला पक्ष सद्ज्ञान है । उसी का अधिक प्रभावशाली और सार्थक प्रतीक दीपक है । इसकी व्याख्या करते हुए न केवल भगवान का बल्कि भक्त का भी स्वरूप तथा स्तर सहज सुलभ रीति से बताया जा सकता है ।

जिनका आस्तिकता से कोई सीधा रिश्ता नहीं है, उनके लिए भी जीवन की सार्थकता और सफलता के तत्वज्ञान को समझाने के लिए दीप के साथ जुड़ा हुआ दर्शन और क्रम समझाया जा सकता है । अपने को प्रज्वलित एवं प्रकाशित करना बताया जा सकता है । इसी के साथ परमार्थ जुड़ता है । अपनी सामर्थ्य को लोकहित में समर्पित करने की भावना को दीपक का उदाहरण देते हुए लोगों को प्रेरित प्रभावित किया जा सकता है । कहा जा सकता है कि दीपक ने जितना खोया है उससे कहीं अधिक पाया है । वह जन-जन का श्रद्धा भाजन बनने के साथ गर्व गौरव का अधिकारी बनता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । इस तरह उसे संतोष जैसे परम सुख की प्राप्ति भी होती है । मनुष्य में यदि देव जीवन तक पहुँचने की ललक हो तो उसे भी यही करना चाहिए ।

संसार में सबसे बड़ी ताकत सद्ज्ञान की है । इसी से व्यक्ति समुन्नत बनता है । समाज और संसार का सर्वतोमुखी समाधान भी इसी से होता है । विचार क्रान्ति में सबसे ऊँची गरिमा ज्ञान-यज्ञ की है । दीपक को इसका प्रतीक बताते हुए सहज ढंग से समझाया जा सकता है । सारी समस्याओं का सुनिश्चित समाधान सद्ज्ञान पर आधारित है । यह दीपक की प्रतीक प्रेरणा के रूप में बताया जा सकता है । सूर्योदय को दीप प्रज्वलन से उपमा दी जा सकती है । उदय होता हुआ सूरज सभी जगह अभिनन्दित होता है । यह जड़ और चेतन का समन्वय है । दीपक में अग्नि के रूप में ऊर्जा आभा भी होती है और प्रकाश फैलाने की परमार्थ परायणता भी, जिसे चेतना के साथ जोड़ा जा सकता है ।

दीपयज्ञ का दूसरा पक्ष है-'यज्ञ' । यज्ञ देव संस्कृति का प्राण है । उसे अग्निहोत्र कर्मकाण्ड के रूप में प्रत्यक्ष देखा जाता है । इसमें कर्मकाण्ड के साथ मानवी गरिमा का पक्षधर तत्वदर्शन भी जोड़ा जाता है । इस तरह उसका उपयोग सुसंस्कारिता तथा भाव संवेदनाएँ उभारने के लिए किया जा सकता है । संक्षेप में इसी महान प्रयोजन की पूर्ति का सरल समाधान दीप यज्ञ के रूप में प्रस्तुत किया गया है । इसे पुरातन का नवीनतम संस्करण भी कहा जा सकता है । इस माध्यम से वे सभी जरूरतें पूरी होती हैं, जिसके लिए समय-समय पर तत्वज्ञानियों द्वारा धर्मतन्त्र का विशाल ढाँचा गढ़ा, विकसित तथा संशोधित किया जाता रहा है ।

यज्ञ तत्व की अपनी विशेषता और मान्यता है । देव संस्कृति के प्रत्येक संस्कार, पर्व एवं समारोहों के साथ यह अभिन्न रूप से जुड़ा रहता है । कर्मकाण्डों में उसका कोई न कोई छोटा-बड़ा स्वरूप सम्मिलित रहता है । सभी प्रमुख धार्मिक शिक्षाओं की यज्ञीय क्रिया कृत्यों के साथ संगति बिठाते हुये, उन्हें भली प्रकार प्रतिपादित एवं प्रस्तुत किया जा सकता है । इसके अतिरिक्त उसका सहारा लेकर सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन भी 'देव दक्षिणा' कृत्य के सहारे सम्पन्न किया कराया जा सकता है । यज्ञ अपने आप में धर्म धारणा का एक समग्र स्वरूप है । इसे मात्र कर्मकाण्ड ही नहीं मानना चाहिए, इसके पीछे उत्कृष्टता का पक्षधर दर्शन भी जुड़ता है । नेत्रयज्ञ, भूदानयज्ञ, श्रमदान यज्ञ, ज्ञान-यज्ञ, सेवा यज्ञ आदि शब्दों में यही ध्वनि निकलती है कि पुण्य परमार्थ प्रयोजन के साथ 'यज्ञ' शब्द जुड़ सकता है ।

इन दिनों अधिक समय, श्रम और साधन लगने वाले कर्मकाण्डों को क्रियान्वित करने की परिस्थितियाँ रह नहीं गई हैं । अश्रद्धा, व्यस्तता, दरिद्रता आदि कारणों से सर्व साधारण को खर्चीले और झंझट भरे उन कर्मकाण्डों के लिए सहमत नहीं किया जा सकता, जो कर्मकाण्डी पंडितों के सहारे ही सम्पन्न हो सके, जिनमें करने वालों की कोई ऐसी भूमिका न हो जो उनमें श्रद्धा और प्रगति के लिए उत्साह भर सके । ऐसी दशा में वही उपाय अपनाना उचित होगा, जो युग धर्म के रूप में अपनी सुलभता और उपयोगिता सिद्ध कर सके । इस कसौटी पर दीप यज्ञ की प्रक्रिया हर तरह खरी उतरती है ।

इसमें यज्ञ के सभी भाव-त्याग बलिदान, पुण्य-परमार्थ आदि समाए हुए हैं । इसमें सूर्य अर्घ्यदान का कृत्य अपने साधनों का लोकहित में समर्पित करने का प्रतीक ही है । इसे अग्निहोत्र प्रक्रिया के साथ भी जोड़ा जा सकता है ।

यज्ञ की अग्नि में प्रदूषण को नष्ट करने की सामर्थ्य है । दोष दुर्गुणों के परित्याग में भी अग्नि को साक्षी किया जाता है । अग्नि कृमि कीड़ों, सीलन-सड़न को नष्ट करती है । इस प्रकार यज्ञ को दुष्प्रवृत्तियों, दुर्भावनाओं, के परित्याग के संकल्प रूप में भी माध्यम बनाया जाता है । इसे अधर्म के साथ विरोध, संघर्ष असहयोग के लिए भी प्रतिपादित किया जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अग्नि की पाँच विशेषताएँ सभी जानते हैं- (१) उसका मस्तक सदा ऊँचा रहता है । कितना ही दबाव पड़ने पर वह अधोगमन स्वीकार नहीं करती । (२) जब तक उसका अस्तित्व रहता है, तब तक ऊर्जा, आभा, प्रतिभा, और श्रेष्ठता को अपनाए रहती है । प्रेरणा देती है कि वातावरण को गरम किए रखा जाय और उसमें प्रमाद पतन की जड़ता को पैर जमाने जैसा अवसर न दिया जाय । (३) सम्पर्क में जो भी भला-बुरा आता है, उसे अपने समान उच्चस्तरीय बनाने का सफल प्रयत्न करती है । (४) जो भी हाथ लगता है उसे व्यापकता के प्रति समर्पित करती है । अपने लिए इकट्ठी की हुई सम्पदा के रूप में कुछ भी बचाकर नहीं रखती । (५) बतलाती है कि दिखाई पड़ने वाला अस्तित्व अस्थिर है । इसका अन्त तो राख बन कर मिट्टी में मिल जाने जैसा ही है । इस पर घमंड न किया जाय । जो क्षण मिला है, उसका सार्थक उपयोग किया जाय । अग्निहोत्र में यज्ञाग्नि के साथ जुड़े हुए इन्हीं आदर्श आस्थाओं को अपनाए जाने के लिए प्रेरणा शक्ति प्राप्त होती है । यही तत्व दर्शन दीपक में प्रज्वलित रहने वाली ज्योति-शिखा के रूप में भी जोड़ा जा सकता है ।

यज्ञ पुण्य परमार्थ में जुड़ता है । अपने लिए पुण्य और दूसरों के लिए परमार्थ उसमें घुला मिला रहता है । अपने साधनों को वायुभूत बनाकर समूचे संसार को समर्पित करने की प्रक्रिया उसके साथ जुड़ी रहती है । दीपक के साथ जुड़ी रहने वाली यज्ञ भावना भी सर्वसाधारण के लिए यही प्रशिक्षण देती है । यज्ञ अग्निहोत्र रूप में भी दिखाई देता है, पर वह इतने तक ही सीमित नहीं है । प्रत्येक पुण्य-परमार्थ के साथ उसे जोड़ा जाता है । जैसे अन्न दान यज्ञ, ज्ञान दान यज्ञ आदि ।

इसके प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले लाभों में से कुछ को सभी जानते हैं । (१) स्वास्थ्य संरक्षण, रोग निवारण, (२) मानसिक स्वास्थ्य संतुलन और मेधा अभिवर्धन । (३) वायु प्रदूषण का निवारण । (४) वातावरण में देवत्व के पक्षधर उच्चस्तरीय तत्वों को बढ़ावा । (५) दैवी शक्तियों के अनुग्रह का बरसना । (६) विपत्तियों का निवारण । (७) सुविधा साधनों का परिपोषण । (८) प्राण तत्व की वर्षा से समूचे प्राणियों का हित । (९) वृक्ष वनस्पतियों में पोषण सामर्थ्य का बढ़ना । (१०) परिस्थितियों का अनुकूल होना ।

कथा पुराणों में ऐसे अनेक प्रसंगों का उल्लेख है, जिनसे लगता है कि यज्ञ करने का फल उसके करने वालों तथा सारे जन समुदाय को मिलता रहा है । दशरथ का पुत्र प्राप्ति यज्ञ प्रसिद्ध है, जिसके आधार पर उन्हें देवोपम सुसन्तानें उपलब्ध हुई थीं । विश्वामित्र के यज्ञ से ऐसी परिस्थितियाँ बनीं जिससे असुरों का नाश हुआ । रामराज्य में सतयुग की वापसी के लिए भगवान राम द्वारा अनेक अश्वमेध तथा वाजपेय यज्ञ किए गए । पाण्डवों द्वारा विशाल भारत के सुगठन के निमित्त महाभारत युद्ध की योजना बनी । द्रौपदी जैसी अद्भुत महिला का जन्म यज्ञ आयोजन से संभव हुआ । याज्ञवल्क्य द्वारा यज्ञ विज्ञान खोजा एवं सुसम्बद्ध किया गया । अनिष्ट निवारण के लिए जन्मेजय ने नाग यज्ञ की योजना बनाई । धनुष यज्ञ के माध्यम से सीता स्वयम्वर जैसी तमाम घटनाओं का विवरण उपलब्ध है, जिससे लगता है कि यज्ञ द्वारा अगणित भौतिक एवं आध्यात्मिक लाभों का प्राप्त किया जाना संभव होता रहा है ।

जरूरी नहीं बड़े यज्ञों का ही नियोजन होता रहे । परिस्थतियों की अनुकूलता न होने पर उन्हें छोटे रूप में भी सम्पन्न किया जा सकता है । जनक के प्रश्नों का उत्तर देते हुए याज्ञवल्क्य ने यही कहा है कि सभी जरूरी साधन न होने पर मात्र समिधाओं से भी अग्निहोत्र किया जा सकता है । और केवल भावना से भी यज्ञ रचा जा सकता है । छोड़ बैठने की जगह 'न कुछ से कुछ अच्छा' की नीति अपनाई जा सकती है । इन दिनों घोर मँहगाई, समय की व्यस्तता, अश्रद्धा, शुद्ध वस्तुओं का न मिलना जैसे अनेकों कारण हैं, जिनमें खर्चीले और अति श्रम साध्य लम्बे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय तक चलने वाले यज्ञों की व्यवस्था बन पड़ना अति कठिन हो गया है । ऐसी दशा में सर्वसुलभ 'दीप यज्ञ' प्रक्रिया को समय के अनुरूप और सभी के लिए अनुकूल कहा जा सकता है । फिर अपने दीपयज्ञों के साथ तो सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन की अनेकानेक दिशाधाराएँ भी जुड़ गई हैं । उन्हें नव निर्माण का मजबूत माध्यम भी तो बनाया गया है । ऐसी दशा में उनकी उपयोगिता में और भी असाधारण अभिवृद्धि होती है ।

दीप यज्ञों की रूप रेखा और पृष्ठभूमि

कोई समय था जब यह देश सुसम्पन्नता की चरम सीमा पर था । घी-दूध की नदियाँ बहती थीं । वन प्रदेश चन्दन वृक्षों से भरे थे । दिव्य वनौषधियाँ प्रचुर परिमाण में सर्वत्र उपलब्ध होती थीं । तब विशालकाय यज्ञों के करने में कहीं कोई कठिनाई नहीं आती थी । तपस्वी ऋषि स्तर के पुरोहित उपलब्ध थे । राज्याश्रय भी प्राप्त था । विशाल यज्ञों के विशाल प्रयोजन भी थे । राजसूय स्तर के यज्ञों में शासन-व्यवस्था को अधिक सुनियोजित करने के लिए विचार-विनिमय एवं निर्धारण होते थे । दूसरे वाजपेय यज्ञ, उनमें युग मनीषी सामयिक समाज व्यवस्था एवं जन मानस के उतार-चढ़ावों पर आवश्यक विचार-विनिमय करते थे । अश्वमेध जैसे विशाल आयोजनों में विश्व-व्यवस्था में सुसंस्कारिता संवर्धन की सामयिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता था । ऐसे ही पुण्य प्रयोजन बड़े यज्ञ प्रयोजनों के साथ जुड़े रहते थे ।

इन दिनों उन पुरातन प्रथाओं की लकीर भर पीटी जाती है । शृंगी ऋषि जैसे तपोधन और प्रखर ब्रह्मचारी अब खोजे नहीं मिलते, जो पुत्रेष्टि जैसे यज्ञ को अपने ब्रह्मतेज से सफल-सार्थक बना सकें । ऐसी दशा में यज्ञों की विशालता एक प्रकार से प्रदर्शन का ही एक अंग बन कर रह जाती है ।

बड़े आयोजनों में बड़ा खर्च पड़ता है । उसे सुसम्पन्न लोग ही चन्दे के रूप में बड़ी राशि देकर सम्पन्न कर सकते हैं । जो जितना अधिक पैसा दे, उसे उतना महत्व मिलना आज का प्रचलन है । देखा गया है यज्ञ वेदियों पर बैठने वाले यजमानों का स्थान भी लोग नीलामी जैसी बोली बोलकर खरीदते-बेचते हैं । ऐसी दशा में निर्धनों को दर्शक जैसा स्थान ही मिल सकता है । भले ही वह कितना ही श्रद्धालु क्यों न हो ? धर्म क्षेत्र में भी यदि केवल धनाढ्य महत्व पा सके तो, समझना चाहिए कि निर्धनों के लिए दुनिया में कहीं भी स्थान नहीं है । महत्व और सम्मान का इस प्रकार अवांछनीय वितरण होना पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष का निमित्त कारण ही बनता है और आयोजन समाप्त होते-होते चुनावी माहौल जैसी कटुता भड़क उठती है ।

बड़े एवं खर्चीले आयोजनों में एक बात और भी होती है कि आमतौर से हिसाब रखने के मामले में घपला होता रहता है । कुछ लोग सही हिसाब न रख कर गड़बड़ी करते हैं, शेष लोग उस क्षेत्र में प्रवेश करते रहने पर व्यर्थ बदनाम होते हैं । उँगली उठने लगने पर, किसी अच्छे-भले आदमी की भी साख गिरती है । इस जंजाल में अच्छे-भले व्यक्ति अपना सम्मान गँवाते जाते हैं । अविश्वास के वातावरण से आगे ऐसे कार्यक्रम हो सकने की संभावना चली जाती है ।

इन दिनों श्रद्धा का पक्षधर लोक मानस नहीं है, तार्किकता चरम सीमा पर पहुँची है । पूजा-पाठ तक को निरर्थक ठहराया जाता है । यज्ञ जैसे खर्चीले कार्यक्रम में एक अतिरिक्त बात यह भी जुड़ जाती है "यज्ञ में खाद्य पदार्थों को जलाया जाना" । मोटी समझ यही कहती है कि यह पैसा किन्हीं विपत्तिग्रस्तों को दे दिया जाता, तो कहीं अच्छा होता । सामान्य बुद्धि तो ऐसे तर्कों का कोई समाधान कारक उत्तर भी नहीं दे पाती । बात सहज ही विवादास्पद बन जाती है । नास्तिक स्तर के लोग तो, उसमें विघ्न खड़े करने तक से नहीं चूकते । कारण यह है, कि उन्हें उन आयोजनों में लोक-मंगल जैसे कोई प्रयोजन सधते दिखाई नहीं पड़ते, केवल समझने में न आने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाले कर्मकाण्ड ही चलते रहते हैं । उनमें कौतूहल के अतिरिक्त और कुछ दीखता भी नहीं । इतने पर भी शान्त प्रकृति के लोग यह सोच कर मूकदर्शक बने रहते हैं कि प्राचीन परम्पराओं के पीछे कोई सदुद्देश्य सन्निहित रहे हैं । प्रबल समर्थन करने के लिए उनके पास भी कोई सुबोध तर्क नहीं होते ।

इन सब परिस्थितियों को देखते हुए यही उचित समझा गया कि पुरातन तत्वज्ञान को, आर्ष प्रतिपादन को जीवित तो रखा जाय, पर उसमें से आक्षेप उत्पन्न करने वाला पक्ष हटा दिया जाय । साथ ही उसे इतना सरल-सुगम बना दिया जाय, कि किसी को भी अधिक दबाव अनुभव न हो । कर्मकाण्ड सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाय । साथ ही अधिकाधिक संख्या में नर-नारी, बिना जाति-पाँति, वंश के भेदभाव के उसमें सम्मिलित हो सकें । ऐसी सरलता, समता का नया वातावरण उत्पन्न करती है । श्रद्धालुओं को अधिक संख्या में एकत्र करने का अवसर भी मिलता है । न्यूनतम खर्च में, अधिक लोगों का सहयोग आकर्षित करने वाला कार्यक्रम दीपयज्ञ ही है । धर्म श्रद्धा का तनिक भी बीजांकुर होने पर बड़ी संख्या में सहज ही लोग एकत्रित होते हैं और उसे भागीदारी के साथ-साथ कितनी ही उपयोगी नयी प्रेरणाएँ साथ लेकर वापिस लौटते हैं ।

दीप यज्ञों का कार्यक्रम इतना सरल है कि कोई भी उत्साही व्यक्ति उसे सम्पन्न करने के लिए अपने बलबूते साहस कर सकता है । दो-चार उपयोगी साथी बना लेने पर, व्यवस्था ऐसी बन जाती है, जिसे सफलता के लक्ष्य तक पहुँचने में तनिक भी कठिनाई न पड़े । इसके लिए प्रमुख रूप से एक काम करना पड़ता है, कि दो-दो की टोलियाँ बनाकर समीपवर्ती क्षेत्र में आयोजन की सूचना, समय और स्थान का विवरण बताते हुए निकल पड़ें । जिससे मिलें, उनसे इस धर्मानुष्ठान की महत्ता इस आधार पर बताएँ कि उससे सत्प्रवृत्ति सम्वर्धन के निमित्त कुछ ठोस प्रयास बन पड़ेंगे । सर्वतोमुखी प्रगतिशीलता अपनाने के लिए जन-जन के मनों में श्रद्धा के अंकुर उगाए जायेंगे । उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में उस प्रयोजन से कितने ही आयाम जुड़ेंगे । घर परिवारों में नारियों की टोलियाँ ऐसे ही निमंत्रण देने के लिए निकल सकती हैं । निमंत्रण का प्रतीक पुराने समय में पीले अक्षत हुआ करते थे । उसी प्रक्रिया को इन आमंत्रणों में भी सम्मिलित किया जा सकता है । निमंत्रण देने के बाद जिस दिन समारोह हो, उससे एक दिन पहले फिर सभी निमंत्रित व्यक्तियों को स्मरण दिला दिया जाय, तो अच्छी उपस्थिति होने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रह जाता ।

थाली में एक दीपक, पाँच अगरबत्ती अपने-अपने घर से लेकर आना पर्याप्त होता है । इसमें कुछ पैसों का ही खर्च पड़ता है, जिसे वहन करने में किसी को भी कोई आपत्ति नहीं होती । महिलाओं की स्वाभाविक धर्म-परायणता इस प्रकार के आयोजनों में सम्मिलित होने के लिए तनिक से आग्रह या प्रोत्साहन देने पर सहज ही तैयार हो जाती देखी गयी है । समझदार पुरुषों को भी ऐसे प्रेरणाप्रद अवसर का लाभ उठाने के लिए प्रभावशाली लोग सहज ही सहमत कर सकते हैं । इस प्रकार न तो उपस्थिति में कमी रहती है और न किसी बड़े अर्थसंचय की आवश्यकता पड़ती है । हवन सामग्री का प्रतिनिधित्व अगरबत्तियाँ कर देती हैं और घृत हवन का भी प्रतीक स्थान दीपक ग्रहण कर लेता है ।

यज्ञ प्रक्रिया भारतीय संस्कृति की रीढ़ है । गायत्री मंत्र उसके साथ जुड़ जाने पर श्रद्धा और मेधा का भी समावेश हो जाता है। स्थान की सुसज्जा, बड़ी संख्या में धार्मिक रुचि के लोगों का एकत्रित होना, दीपकों की जगमगाहट, अगरबत्तियों की सुगंध, उपस्थित जनों का उल्लास, यह सब मिलकर ऐसा वातावरण बनाता है जिसका हृदयग्राही वातावरण देखते ही बनता है ।

पुरातन ढंग के कर्मकाण्ड में मात्र पंडितों का उच्चारण और मंत्र संचालन ही दीख पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीप यज्ञों की क्रिया पद्धति में हर विधि-विधान का विवेचन भी होता है और उस आधार पर किस प्रकार का चिन्तन उभरना चाहिए इसका तथ्य भरा प्रवचन प्रशिक्षण भी होता रहता है । इसे किसी प्रेरणाप्रद सत्संग से कम महत्व का नहीं समझा जा सकता । जब मंत्रोच्चार के साथ संगीत भी जुड़ जाता है, तो उसके सहारे आनन्द की एक नई लहर प्रवाहित होने लगती है ।

यज्ञ में सम्मिलित होने वालों में से प्रत्येक को एक बुराई छोड़ने और एक अच्छाई नए सिरे से आरम्भ करनी और बढ़ानी पड़ती है । प्रगति की दिशा में यही दो चरण उठाते हुए बढ़ते चलने का सुयोग बनता है । अनेकों वैयक्तिक और सामाजिक अवांछनीयतायें हर मनुष्य में पाई जाती हैं । इससे पीछा छुड़ाने और सदाशयता की दिशा में प्रगति करने में दीपयज्ञों के साथ जुड़ी हुई यह प्रक्रिया, हर दृष्टि से अतीव उपयोगी सिद्ध होती है । हर किसी को यह प्रकाश मिलता है कि अनौचित्य से पीछा छुड़ाने और श्रेय-पथ पर कदम बढ़ाने में ही कल्याण है ।

पिछले दिनों नर-नारी के बीच जाति-वंश के बीच, भेदभाव का प्रचलन चलता रहता है । उसे समाप्त करने में दीप यज्ञों में अपनाई जाने वाली समतावादी नीति एक प्रकार से क्रान्तिकारी उद्देश्य पूरा करने वाली सिद्ध होती है ।

श्रद्धा-भावना के उन्नयन में धर्मकृत्यों की असाधारण भूमिका होती है । उस प्रयोजन की पूर्ति में दीप यज्ञ सरलतम साधन हैं । पर उससे बनने वाला आकर्षक वातावरण किसी भी प्रकार कम प्रेरणाप्रद सिद्ध नहीं होता । सस्ते साधनों से भी आकर्षक मण्डप बनाए जा सकते हैं । चौक पूरने, थालियों के नीचे वेदियाँ बनाने, ध्वजा पताका फहराने, आदर्श वाक्यों के बैनर लगाने से स्थान शोभा-सज्जा अनायास ही बढ़ जाती है । खर्च भी कुछ विशेष नहीं पड़ता, पर आकर्षण बढ़ जाता है ।

संस्कार-त्योहार, व्रत, पर्व, जन्मदिन, विवाह दिन आदि के प्रसन्नता भरे प्रसंगों में कभी भी छोटे-बड़े यज्ञ आयोजन किए जा सकते हैं । उन्हें सहकारिता के साथ मिल-जुलकर किए गए मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न किया जा सके, तो उससे इस प्रक्रिया को सम्पन्न कराने का अनेकों को अभ्यास हो जाता है । इसके लिए किन्हीं पण्डितों-पुरोहितों का आश्रय नहीं तकना पड़ता । यह सरल, सुलभ, सस्ती और सहकारी धर्मविधा अगले दिनों असाधारण रूप से लोकप्रिय बनेगी-और व्यापक बनेगी, इसमें संदेह की गुँजाइश नहीं । अब तक के अनुभवों ने यही प्रमाणित किया है कि धर्म धारणा को सुविस्तृत बनाने में दीप-यज्ञों से बढ़ कर व्यावहारिक और कोई क्रिया-पद्धति नहीं बन सकी है ।

प्रातः दीप यज्ञ और रात को प्रज्ञा-सम्मेलन इन दोनों के समन्वय से भक्ति और ज्ञान का भली प्रकार सम्मिश्रण हो जाता है । प्रातः काम पर जाने और सायं काम से लौटने के उपरान्त का समय हर किसी के लिए थोड़े अवकाश का होता है । इसलिए प्रातः दीपयज्ञ और सायं ज्ञानयज्ञ की व्यवस्था रखी जाती है । सुगम संगीत, सामूहिक गान, तर्क, तथ्य, प्रमाण उदाहरण भरे प्रवचन, इन सब का संयुक्त प्रभाव ऐसा होता है, जिसके आधार पर प्रतिगामिता को हटाया, घटाया जा सके, प्रगतिशीलता का शुभारम्भ और अभिवर्धन किया जा सके । रात्रि के समय सम्पन्न होने वाले ज्ञान यज्ञ का यही स्वरूप रहता है । यज्ञ द्वारा उत्पन्न हुई श्रद्धा के साथ, जब युग धर्म के निर्वाह की प्रेरणाप्रद आधार शिला रखी जाती है, तो जन मानस में उच्च स्तर का प्रवाह उमड़ते देखा गया है । यही उज्ज्वल भविष्य की संरचना है ।

दीप यज्ञों की सफलता इस बात पर निर्भर नहीं है कि उनकी उपस्थिति अधिक हो और साज-सज्जा का बड़ा स्वरूप बन पड़े ; वरन् इसमें है कि सम्मिलित होने वालों में से कितने लोग व्रतशीलता अपना सके । आत्मपरिष्कार और लोकमंगल के लिए कुछ नियमित रूप से करते रहने का संकल्प कितनों में उभरा, इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए समयदान एवं अंशदान के रूप में कौन कितना योगदान प्रस्तुत करता है ? इसी आधार पर तो मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण संभव हो सकेगा ।

दीपयज्ञ के साथ जुड़े महान प्रयोजन

समय की माँग है कि दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन हेतु प्रचण्ड आन्दोलन चलाये जायँ । यदि वर्तमान वैचारिक भ्रष्टता और चारित्रिक दुष्टता यथावत् बनी रहे तो इसका दुष्परिणाम अगले दिनों और भी अधिक भयावह रूप में देखने को मिलेगा । व्यक्ति की महानता ही है जो सतयुग जैसा दिव्य वातावरण और प्रकृति अनुग्रह उपलब्ध कराती है । दुष्टता ही है जो मनुष्य की निजी दुर्गति तो कराती ही है, समाज में भी अनेकानेक विग्रह खड़े करती है । इतना ही नहीं, वह प्रकृति प्रकोपों को भी आमंत्रित करती है । चिन्तन की भ्रष्टता जब समष्टिगत होती है तो प्रतिक्रिया स्वरूप विधाता के प्रकोप के रूप में विभीषिकाओं का आगमन होने लगता है । सूखा, बाढ़, अकाल, महामारी, भूकम्प युद्ध जैसे अनेकों संकट अशुद्ध वातावरण के कारण ही उत्पन्न होते हैं । उनके प्रत्यक्ष उपचार तो किए ही जाते हैं साथ ही यह भी होना चाहिए कि सूक्ष्म जगत में आध्यात्मिकता की मात्रा बढ़ाने के लिए धर्मानुष्ठान एवं ज्ञान यज्ञ आयोजित किये जायँ । इन्हें प्रकृति संतुलन बनाने एवं उज्ज्वल भविष्य की संभावना प्रशस्त करने का राजमार्ग कह सकते हैं ।

गायत्री भारतीय संस्कृति की जननी है एवं उससे तात्पर्य है दूरदर्शी विवेकशीलता । यज्ञ को देव धर्म का पिता कहा जाता है । उसका सार तत्व है उदार सेवा साधना, गायत्री गरिमा के अनुरूप शालीनता का अभ्यास-विस्तार । ज्ञान और कर्म के समन्वय से ही व्यक्तित्व की प्रखरता निखरती है और उसी अवलम्बन को अपनाकर मनुष्य महान बनता है । विगत सतयुग में यही अवधारणा काम करती थी । भावी नवयुग में भी ज्ञान और कर्म की उत्कृष्टता ही प्रगति का माध्यम बनेगी । गायत्री और यज्ञ का सम्मिलित तत्वदर्शन इसी स्तर की पृष्ठभूमि विनिर्मित करता है । आवश्यकता है कि इन सांस्कृतिक अवधारणाओं एवं सामयिक आवश्यकताओं की प्रेरणा से जन-जन को अवगत कराया जाय । इनका प्रकाश घर-घर पहुँचाया जाय । प्रतिपादन यह है कि देवसंस्कृति के अनुयायियों में से प्रत्येक को अपनी जीवनचर्या में गायत्री के तत्वज्ञान का समावेश करना चाहिए और परिवार तथा समाज में यज्ञ अनुशासन के सहारे उदार सेवा साधना को प्रमुखता देने का प्रयत्न करना चाहिए ।

सभी भली-भाँति जानते हैं कि माँगलिक क्रिया-कलापों के प्रारम्भ में कोई धर्मानुष्ठान, देवपूजन, प्रार्थना, अभ्यर्थना करने की परम्परा है । इस प्रकार के निर्धारणों में अनेक प्रकार के पूजा उपचारों का प्रचलन है । उसमें हमारा विभेद ही परिलक्षित होता है । जबकि होना यह चाहिए कि अधिक लोगों की मान्यता, विचारणा एक केन्द्र पर केन्द्रित रहे । इस प्रकार का पर्यवेक्षण करने पर गायत्री व यज्ञ का सम्मिलित रूप दीपयज्ञ सबसे सरल, सस्ता और उद्देश्यों से ओत-प्रोत परिलक्षित होता है । इसे किसी भी शुभ प्रसंग के साथ जोड़ा जा सकता है । कम साधनों में, कम भागदौड़ से, कम समय में मंगलमय वातावरण बनाने के लिए यह एक सर्वसम्मत प्रभावशाली धर्मानुष्ठान सिद्ध होता है ।

दीप यज्ञ की एक वेदी एक थाली में बन जाती है । थाली में पाँच दीपक एवं पाँच अगरबत्ती स्टैण्ड सजाकर रखे जाते हैं । इसे ही दीप यज्ञ की वेदी या एक कुण्ड के समक्ष मान लिया जाता है । घरों में, जन्मदिन मनाने, पारिवारिक गोष्ठी करने, किसी भी शुभ प्रसंग में एक वेदिका का दीप यज्ञ किया जा सकता है । घरेलू एक वेदिका के यज्ञों के साथ सामूहिक सौ वेदी सौकुण्डीय दीप यज्ञ भी इसी तरह से किए जाते हैं । सौ दीपों द्वारा किये जाने वाले सामूहिक यज्ञों का अपना महत्व है । उससे वातावरण बनता है । उत्साह जगता है और उपस्थित जनों को यह अनुभूति होती है कि इनकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचारधारा के अनेक लोग हैं । इस आधार पर उनका विश्वास बढ़ता है और लगता है कि कुछ ही दिनों में समस्त जनता उनकी विचारणा का समर्थन करने लगेगी, यह उत्साह एक बड़ी उपलब्धि है ।

इन आयोजनों में सम्मिलित लोग भविष्य में सहयोगी, सहकर्मी के रूप में विकसित होते हैं । ये शतकुण्डीय यज्ञ पर्व त्यौहारों के दिनों में भी किये जा सकते थे; पर उनमें कठिनाई यह है कि कहीं कोई पर्व मनाया जाता है, कहीं कोई । इस कारण जहाँ एक वर्ग उत्साह दिखायेगा, वहीं दूसरा वर्ग उपेक्षा भी कर सकता है । इसलिए अच्छा यही समझा गया कि आश्विन और चैत्र की पूर्णिमा पर ऐसा निर्धारण रखा जाय ताकि मतैक्य रहे, साथ ही उल्लास उमंग भी ।

समुदाय को कोई प्रेरणा दिशा देने के लिये आवश्यक है कि उसकी मान्यताओं को स्पर्श करते हुए गाड़ी आगे बढ़ाई जाय । राजक्रान्तियाँ शासन तंत्र के महत्व को हृदयगंम कराये जाने पर ही संभव हुई हैं । आर्थिक क्रान्तियों के मूल में अर्थशास्त्र और सामाजिक परिवर्तनों के लिये जनमानस तैयार करने के लिए समाजशास्त्र की महत्ता से आन्दोलनकारियों को अवगत कराया जाता है । तत्वदर्शन ही सुधार परिवर्तन के लिए उत्साह एवं साहस उत्पन्न करता है । इसीलिए कोई कार्यक्रम देने के साथ, उसको किसी मार्ग दर्शन के साथ जोड़ने का प्रयत्न मार्ग दर्शकों-सूत्र संचालकों को करना पड़ता है । अपने देश में कितने ही सुधार, परिवर्तन एवं शुभारंभ किये जाने हैं । इसके लिए जनमानस को उपयुक्त पृष्ठभूमि पर खड़ा करना होगा ।

भारत की अपनी विशेष मनोभूमि है । देहातों में बसे हुए अशिक्षित समुदाय के लिये धार्मिकता ही चिरपरिचित है । वही परम्परागत भी हैं । अस्तु ! जो शुभारंभ इन दिनों किये जाने हैं, उनके लिये अभीष्ट उत्साह उत्पन्न करने के लिए धार्मिक आधार अपनाने की आवश्यकता पड़ेगी । स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, महात्मा गाँधी, संत विनोबा, महर्षि अरविंद आदि ने अपने ढंग से अपने-अपने प्रतिपादन तथा कार्य-क्रम प्रस्तुत किए, पर उनकी पृष्ठभूमि धार्मिकता पर आधारित थी । भले ही उनने समाज सुधार, राजनैतिक एवं आर्थिक परिवर्तन, सांस्कृतिक प्रतिपादन जैसे अलग-अलग काम किये हों । अपने देश के लोकमानस को देखते हुए यही सरल संभव प्रतीत होता है कि अभीष्ट सुधार शुभारंभों के लिए धार्मिकता का समन्वय - समावेश करके चला जाय ।

बहुमुखी मान्यताओं वाली जनता को एक मंच पर सरलता पूर्वक एकत्रित करने के लिए यह सरल और संभव प्रतीत होता है कि गायत्री और यज्ञ के प्रति परम्परागत मान्यताओं को सर्वसुलभ बनाने के साथ-साथ उनमें प्रगतिशीलता का पुट दिया जाय । यज्ञ परम्परा पिछले दिनों एक वर्ग विशेष के तत्त्वावधान में चलती रही व मँहगी भी रही है और श्रमसाध्य भी । इन कठिनाईयों के रहते वह सर्वजनीन नहीं बन सकती । यदि कुछ संपन्न लोगों तक ही उसका परिसीमन बना रहे तो फिर सर्वसाधारण के लिये उसे अपनाना कैसे संभव होगा? वह व्यापक कैसे बन सकेगा ? उसकी पृष्ठभूमि पर युग अवतरण के लिए आवश्यक आधार कैसे खड़े किये जा सकेंगे ?

अनेक दृष्टिकोण से विचार करने के उपरान्त यही उपयुक्त प्रतीत हुआ कि गायत्री यज्ञ की प्रक्रिया को समय के अनुरूप सर्वसुलभ बनाया जाय । इतनी सुगम कि जिसका सरंजाम जुटाना और कर्मकाण्ड पूरा करने में किसी भी स्तर के किसी भी समुदाय के व्यक्ति को कोई कठिनाई अनुभव न हो । इस प्रयोजन के लिए दीपयज्ञ रूपी अग्निहोत्र की प्रक्रिया अधिक प्रभावी व दोषरहित प्रतीत हुई । इसके आधार पर न केवल मध्यम स्तर की ज्ञान-गोष्ठियाँ चलाई जा सकती हैं, अपितु इस स्तर की श्रद्धा का समावेश भी किया जा सकता है, जिसके सहारे प्रगतिशीलता की दिशा में उपयुक्त साहस उत्पन्न किया जा सके ।

भारतीय धर्म में पर्व संस्कारों के शुभारंभ, देव पूजन आदि के अनेकानेक विधि - विधान हैं । उनकी क्रिया पद्धति, मंत्रपाठ रीतिरिवाज आदि में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भारी अंतर है । सर्वसाधारण की उन प्रयोगों में कोई पैठ नहीं है । जिनकी पैठ है, वे अपनी विशेषज्ञता का मुँह माँगा मोल वसूल करते हैं । ऐसी दशा में अनास्था और आर्थिक कठिनाई का मिल-जुल कर परिणाम यह होता है कि धार्मिक परम्पराओं की ओर से लोग मुँह मोड़कर चले जाते हैं । उनका क्रमशः समापन होता चला जाता है । इससे एक बड़ी हानि होती है कि धर्मतंत्र से लोक शिक्षण का जो अति महत्वपूर्ण उपक्रम चलता आ रहा है, उसका प्रेरणाप्रद प्रकाश सर्वसाधारण को मिलता था, वह भी बन्द होता जा रहा है । जातियों, उपजातियों, सम्प्रदायों के आधार पर कर्मकाण्डों की भी भिन्नता बन जाती है । इस बिखराव का एकीकरण करने का उपयुक्त मार्ग है कि सभी धार्मिक प्रयोजनों में मात्र दीपयज्ञ का उपयोग किया जाय । इसके सरल विधान से सभी शिक्षितों को अवगत अभ्यस्त रखा जाय । ऊँच-नीच जाति-पाँति का झंझट मिटाने, साम्प्रदायिक एकरूपता लाने का यह सर्वोत्कृष्ट उपाय है । महिलाएँ भी अपने समुदाय में इस प्रथा का प्रचलन कहीं अधिक आसानी से कर सकती हैं ।

अग्निहोत्र प्रक्रिया के साथ अनेकों आदर्श उद्देश्य जुड़े हैं । इसमें विश्व सेवा की भावना है । यज्ञ धूम्र उच्चारित मंत्र की ध्वनि प्रवाह के साथ मिलकर जन-जन की चेतना को स्पंदित करते हैं । रेडियो तरंगों की तरह उनका भी व्यापक प्रभाव होता है । इस प्रकार थोड़े से ही खर्च में समस्त विश्व के समस्त प्राणियों की यत्किंचित सेवा करने का अवसर मिलता है । उसका पुण्यफल प्राप्त करने का संतोष प्राप्त करता है । वसुधैव कुटुम्बकम् के आदर्श को व्यवहार रूप में परिणित करने का यह प्रेरणाप्रद उपचार है ।

दीपयज्ञ में प्रज्ज्वलित अग्नि को ऋग्वेद में ऋषि ने प्रत्यक्ष पुरोहित माना है । वह देवत्व का प्रतिनिधित्व करती है । अग्नि मौन तो रहती है, पर अपनी गतिविधियों से कई प्रकार की सांकेतिक शिक्षाएँ देती है। अग्नि जब तक जलती है, गरम और प्रकाशवान रहती है । याजकों को भी अपनी जीवनचर्या सक्रियता से भरी और आदर्शवादी प्रखरता से तेज़स्वी बनाये रखने का प्रयत्न करना चाहिए । अग्नि को जो भी मिलता है, उसे वह वायु - भूत बनाकर असीम में वितरित कर देती है । हम भी कृपण, संग्रही, स्वार्थी न बनें । उदारता की जीवन-नीति बनायें । अग्नि के सान्निध्य में जो भी वस्तु आती है उसे अपने समान बना लेती है । याजकों का दृष्टिकोण भी यही रहना चाहिए कि पिछड़ों को उठाकर कम से कम अपने समान तो सुविकसित बनाने का प्रयत्न करें ही । अग्निहोत्र पुरोहित की यह प्रेरणाएँ यदि जीवन का अंग बन सकें तो समझना चाहिए कि एक आत्मपरिष्कार और लोक मानस का समन्वित राजमार्ग खुल गया ।

लंका दहन के उपरांत वातावरण संशोधन के लिए भगवान राम को दस अश्वमेध यज्ञ करने पड़े थे । द्वापर का अनाचार, महाभारत युद्ध के माध्यम से मिटाया गया था, फिर भी वातावरण में अनुपयुक्तता भरी रही और उसका निराकरण भगवान कृष्ण के तत्वावधान में राजसूय यज्ञ द्वारा हुआ । यह युग परिवर्तन की वेला है । इन दिनों भी व्यापक क्षेत्र में वैसा ही वातावरण बनाने के लिए इस अग्निहोत्र प्रक्रिया को घर-घर पहुँचाने की अतीव आवश्यकता है ।

इन दिनों मँहगाई की चरम सीमा है । प्राकृतिक प्रकोपों ने जन जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है । ऐसी स्थिति में मिलजुल कर अधिक श्रम और साधन खर्च करके, बड़े आयोजन करने की मनः स्थिति लोगों की रह नहीं गई है । ऐसी दशा में प्रायः १०० रुपये की लागत से बन पड़ने वाला एक यज्ञ किसी के लिए भी भारी नहीं पड़ता । इससे तत्काल उत्साहवर्धक, आदर्शवादी, धर्मनिष्ठा को जागृत करने वाला वातावरण बनता है । संघ शक्ति का उदय होता है, जो सत्प्रवृत्ति संवर्धक और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन दोनों ही दृष्टि से अतीव महत्वपूर्ण है ।

देवताओं को मनुहार सुनने और उपहार में वस्तुएँ पाने की इच्छा नहीं रहती । वे तो भक्ति भावना की यथार्थता को दो कसौटियों पर ही कसते हैं । उनमें से एक है अभ्यस्त दुष्प्रवृत्तियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में से कम से कम एक का त्याग और दूसरी है जिन सत्स्वभावों का अभी उपयुक्त अभ्यास नहीं बन पड़ा है उनका शुभारंभ और, तत्परता पूर्वक अभिवर्धन । दीप - यज्ञ हो या बड़ा यज्ञ, दोनों में ही पूर्णाहुति के अवसर पर देव दक्षिणा अनिवार्य रूप से आवश्यक मानी गयी है ।

व्यक्तिगत जीवन में असंयम एवं संकीर्ण स्वार्थपरता रूपी दो दुष्प्रवृत्तियों का दीप यज्ञ के अवसर पर विचेचन होना चाहिए, लाभ-हानि समझाए जाने चाहिए और याजकों को व्यक्तिगत जीवन के परिष्कार हेतु कम से कम एक छोटा कदम उठाने के लिए कहना ही चाहिए । अन्य शब्दों में इसी को अणुव्रत भी कहा गया है । शिक्षा संवर्धन, स्वास्थ्य संरक्षण, खर्चीली शादियों जैसी कुरीतियों का उन्मूलन एवं हरीतिमा संवर्धन हेतु वृक्षारोपण इन चारों को समान सुधार की प्रगति चेतना का आवश्यक अंग माना गया है । याजकों में से प्रत्येक को इनमें से एक या कुछ को चुनना चाहिए और उनकी पूर्ति के लिए योजना बनाई जानी चाहिए, इसकी स्पष्ट रूप रेखा निर्धारित करनी चाहिए ।

इसी प्रसंग में एकता, समता का प्रचार विस्तार आता है । साम्प्रदायिकता, भाषा, क्षेत्र, जाति, लिंग के आधार पर इन दोनों में जो भेद-भाव दृष्टिगोचर होता है, उसके उन्मूलन की आवश्यकता है । सहिष्णुता अपनाई जानी चाहिए । अपना बड़प्पन और दूसरे पक्ष की हीनता मन में नहीं आने देना चाहिए । जाति वंश की समता, नर-नारी की बराबरी का भाव और व्यवहार अपनाया जाना चाहिए । दीपयज्ञ की देवदक्षिणा को इस संबंध में ली जाने वाली प्रतिज्ञा के रूप में माध्यम बनाया जा सकता है ।

ग्रहण और त्याग के संकल्प यों कभी भी किये जा सकते हैं; पर यदि उन्हें यज्ञाग्नि की साक्षी में किया गया है तो स्वभावत: उसकी गहरी छाप मन पर पड़नी चाहिए । विवाह यों कोई भी नर-नारी दृढ़ संकल्प के आधार पर परस्पर कर सकते हैं; पर जो परिपक्वता अग्नि की सात परिक्रमा फिरने के उपरांत संकल्पित होने पर आती है, वह पत्थर की लकीर जैसी सुदृढ़ हो जाती है एवं उसकी अमिट छाप जीवन भर बनी रहती है । सामान्य रूप से मनुष्य दोष दुर्गुण छोड़ नहीं पाता, सद्गुण निभा नहीं पाता । यज्ञीय वातावरण के प्रभाव से मन: स्थिति में प्रखरता आती है, संकल्पशीलता उभरती है, और किए गए संकल्प सहज ही निभ जाते हैं ।

प्रस्तुत धर्मानुष्ठान का विधि-विधान और मंत्रोच्चारण इतना सरल है कि एक बार भली प्रकार समझ और देख लेने भर से उसे करने-कराने की योग्यता हस्तगत हो जाती है । इस कर्मकाण्ड में प्रवीण होकर कोई भी व्यक्ति अपने क्षेत्र समुदाय में इस प्रचलन को आरम्भ करने, विस्तृत बनाने में सहज ही सफल हो सकता है । कोई भी प्रतिभावान दीपयज्ञ का संयोजक संचालक बन यश एवं पुण्य अर्जित कर सकता है ।

दीप यज्ञों की दीप मालिका और ज्योति ज्वाला

धूम-धाम वाले समारोहों द्वारा जन-साधारण की उत्साह-वृद्धि और चर्चा चलती रहने जैसे लाभों को देखते हुए भी, उन्हें नियंत्रित और सीमित बनाने की आवश्यकता पड़ेगी; क्योंकि बड़ी व्यवस्था में प्रमुख कार्यकताओं के व्यस्त हो जाने पर, जनसंगठन और निर्धारित कार्यक्रमों का क्रियान्वयन तो गौण ही पड़ जाता है । उस उद्देश्य की पूर्ति भी नहीं हो पाती जिसके लिए अपनी सृजन योजना को अग्रगामी बनाने के लिए ऐसे समारोहों की बात सोची जाती है ।

उपस्थित होने वाले लोगों का एक-दूसरे से परिचय बन पड़ना चाहिए । उनके बीच घनिष्ठता का बीजारोपण होना चाहिए । एक के उत्साह भरे कदम उठाये जाने का विवरण प्राप्त करके, दूसरे अन्यों में उसके अनुकरण का उत्साह उभरना चाहिए । प्रस्तुत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्यक्रमों को किस प्रकार सरल एवं सफल बनाया जा सकता है ? मार्ग में आती रहने वाली कठिनाईयों का किन परिस्थितियों में, किस प्रकार निराकरण किया जा सकता है ? ऐसी रचनात्मक चर्चायें ही किसी विचारपूर्ण आयोजन का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए ।

पर देखा गया है कि बड़े आयोजनों से अभीष्ट प्रयोजन पूरा हो सकने की दिशा में, कुछ ठोस कार्य नहीं के बराबर ही बन पड़ता है । अधिकांश समय जुलूस, प्रदर्शन, नारेबाजी में निकल जाता है । प्रवचनों में विषयान्तर ही भरा रहता है । विचारशीलता को अभीष्ट मार्गदर्शन के लिए अवसर नहीं मिलता और तथाकथित बड़े आदमी सभा-मंच पर घुड़सवारों की तरह चढ़ दौड़ते हैं । वे अपनी मान्यताओं के अनुरूप ऐसा कुछ बकते-झकते रहते हैं, जिसका अपने प्रचंड अभियान के साथ दूर का भी संबंध नहीं होता । वक्तृताएँ 'चूं-चूं का मुरब्बा' बन कर रह जाती हैं । बड़े आदमी, बड़े नेता, बड़े वेश विन्यास वालों को प्रवचन के लिए बटोर लेने भर से विचारों की अभिव्यक्ति एक प्रकार से बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो जाती है ।

भीड़-भाड़ तो रीछ बंदर नचाने वाले मदारी भी जमा कर लेते हैं । बाजीगर, नर्तक भी इस दृष्टि से सफल माने जा सकते हैं । पर्व-स्नान के अवसर पर तथाकथित तीर्थों में इतनी भीड़ जमा होती है और इतनी धकापेल रहती है कि यह सोचना और खोजना कठिन हो जाता है कि आखिर इतने लोग, इतना पैसा और इतना समय खर्च करके क्या मात्र पर्यटन का मनोरंजन करने के लिए ही जमा होते हैं ? मेले-ठेलों में भारी भीड़ तो जुटती है, पर उससे आगन्तुकों को-समाज को क्या कुछ लाभ हुआ ? हमें भीड़ जुटाने या मजा लूटने के बचकानेपन से बचना ही चाहिए ।

विदेशों में निर्धारित प्रयोजन के लिए , विषय में रुचि रखने वाले सीमित लोग ही समारोहों में जमा किये जाते हैं । इस निमित्त बने हालों में नियत स्तर के नियत लोग ही एकत्रित होते हैं । जो कहा जाता है; उसमें समाविष्ट कुछ महत्वपूर्ण जानकारी और प्रेरणा लेकर वे वापस लौटते हैं । जिन्हें लोगों का समय न बर्बाद करने की जिम्मेदारी का ज्ञान है, वे बेकार का हुल्लड़ जमा नहीं करते हैं । इस प्रकार की भीड़-भाड़, गंदगी और अस्त-व्यस्तता उत्पन्न करने के अतिरिक्त और कोई बड़ा प्रयोजन पूरा कर सकने में सफल नहीं होती । इस मखौल के लिए, विचारशीलों का मन तो नहीं ही मचलना चाहिए ।

झंझट से बचें-आगे बढ़ें

समारोहों का नेतृत्व अपने आप में एक बड़ा संकट है । उसमें महत्वाकांक्षियों के चेहरा चमकाने, मुँह मटकाने, ऊँचे तख्त पर जा बैठने और माइक पकड़कर कुछ भी बकने-झकने की विडम्बना प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से आपस में टकराती है । मनोमालिन्य उपजता है, पार्टीबन्दी खड़ी होती है और अन्ततः ऐसे कुचक्र चल पड़ते हैं, जिनके कारण आयोजन के मूल उद्देश्य का सर्वनाश होकर ही रहे । इस कटु सत्य को घटित होते हुए आये दिन हम देखते हैं । इसलिए इस निष्कर्ष पर पहुँचना ही पड़ता है, कि समारोह नियोजित करने से पूर्व हजार बार यह सोचना चाहिए, कि इनसे इस महापरिवर्तन की वेला में अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति में कितनी, किस स्तर की सफलता मिल सकती है । प्रस्तुत दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए हमें छोटे, व्यवस्थित और सारगर्भित आयोजनों तक ही अपने को सीमाबद्ध करना चाहिए ।

अनेक दृष्टियों से अनेक बार विचार करने के उपरान्त इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया है कि नव निर्माण योजना के अंतर्गत किये जाने वाले आयोजनों का स्वरूप 'दीपयज्ञ' स्तर का होना चाहिए । उनमें विचारशील लोगों को प्रवेश पत्र देते हुए आमंत्रित करना चाहिए । इतना ही नहीं उनके घरों पर टोली बनाकर जाना चाहिए और उपस्थित होने के लिए आग्रह - भरा अनुरोध करना चाहिए । समझ लेना चाहिए कि सफलता भीड़ जुटा लेने में नहीं, वरन् विचारशीलों की छोटी गोष्ठी संगठित कर लेना भी कम महत्व का काम नहीं है । किसी आन्दोलन या अभियान को सफलतापूर्वक चलाने में, सदा विचार - शीलों की मंडली ही कुछ उत्साहवर्धक परिणाम प्रस्तुत कर सकने में सफल हुई है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावनात्मक वातावरण बनाने, श्रद्धा उभारने और आयोजन में गंभीरता का पुट देने के लिए यदि उसका स्वरूप धार्मिकता के साथ जुड़ा हुआ रह सके, तो उसमें समझदारी और दूरदर्शिता का समुचित पुट होने की बात बनती है । आदर्शवादी शिक्षण, विचार-विनिमय को यदि धार्मिकता के वातावरण में सम्पन्न किया जाय, तो उसकी परिणति निश्चय ही अधिक गंभीर एवं अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है । इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को समझने और समझाने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए । दीपयज्ञ युक्त गोष्ठियों में यह प्रयोजन भली प्रकार पूरा होता देखा गया है ।

युगानुरूप सरल-सशक्त विधा

गायत्री मंत्र की महान महिमा और अग्निहोत्र से उत्पन्न ऊर्जा की गरिमा, शास्त्रकार और साधना क्षेत्र के अनुभवी आप्त जन बखानते हुए थकते नहीं । कभी-कभी विशिष्ट जन, प्रचुर साधन जुटाकर 'गायत्रीयज्ञ' आयोजनों को बड़े रूप में भी सम्पन्न किया करते थे । प्रीतिभोजों और दान-दक्षिणा का समावेश भी उनमें रहता था । उनके लिए श्रेयाधिकारी भी वरिष्ठ लोग ही बनते थे; पर अब परिस्थितियाँ सर्वथा दूसरी हैं । समय की दृष्टि से व्यस्त, साधनों की दृष्टि से अभावग्रस्त, अधिक्रांश लोगों को देखा जाता है । फिर धार्मिक कर्मकाण्डों के अत्याधिक झंझट भरे, खर्चीले और निहित स्वार्थों के व्यवसाय बन जाने के कारण, उस ओर उपेक्षा-अरुचि भी बड़े परिमाण में बढ़ गयी है । नयी पीढ़ी को तो ऐसे आयोजनों की कटु समीक्षा एवं निन्दा से लेकर विरोध तक व्यक्त करते देखा जाता है ।

ऐसे वातावरण में, धार्मिक कर्मकाण्डों के माध्यम से भाव-संवेदनाओं को जीवन्त रखे रहने वाला वातावरण बनाना जिन्हें भी अभीष्ट हो, उन्हें समय को देखते हुए सस्ता, सुगम, और सर्वसाधारण द्वारा सम्पन्न किये जा सकने योग्य स्तर का बनाना होगा । इस दृष्टि से 'दीप-यज्ञों' का उपक्रम हर कसौटी पर खरा उतरता है । धार्मिकता के वातावरण में, अग्निदेव की साक्षी में आदर्शवादी प्रतिपादन, व्रत-धारण कितनी अच्छी तरह फलित होते हैं, इसे कोई भी प्रयोग-अनुभव द्वारा जान सकता है और उपेक्षा को श्रद्धा में परिणत कर सकता है । समय की कमी, मँहगाई तथा क्रिया-कृत्यों की पेचीदगियों को देखते हुए, अपने समय में दीपयज्ञ से बढ़कर सस्ती, सुगम और सर्वोपयोगी धार्मिक विधा अन्य कोई हो नहीं सकती ।

गायत्री मंत्र सद्ज्ञान की प्रेरणा देता है । उसे सद्ज्ञान का प्रकाश-आलोक भी समझा जा सकता है । दीपकों की शृंखला में इस तत्वज्ञान की प्रतीक-प्रतिष्ठापना है । यज्ञों का दूसरा पक्ष है - मंत्र एवं सुगन्धित द्रव्यों से सदाशयता का वातावरण-निर्माण । इस विधा में, अग्निहोत्र की प्रतीक पूजा की बात भी सार संक्षेप में अगरबत्ती-प्रज्ज्वलन से बन जाती है । दीप यज्ञों में इन्हीं दोनों स्थापनाओं की प्रमुखता रहती है । उन्हें गायत्री यज्ञों का एक छोटा रूप माना जा सकता है और छोटी चिनगारी को जलती ज्वाल-माल का प्रतीक प्रतिनिधि माना जा सकता है । मंत्रोच्चारण, दीपक रूप में गायत्री और अग्नि-होत्र का प्रतिनिधि अगरबत्ती को समझा जा सकता है ।

ऐसा शास्त्रीय विधान भी है । मिट्टी के ढेले में कलावा लपेट कर गणेश जी की स्थापना का प्रयोजन पूरा किया जाता है । पंचोपचार में धूप, दीप, नैवेद्य, जल, अक्षत, आदि का प्रयोग होता है । यह पाँचों ही मनुष्य के उच्चस्तरीय सद्भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं । शिवलिंग का गोलक विश्व-ब्रह्माण्ड का, विश्वमानव का ही एक दृश्यमान रूप है । देशभक्ति का प्रतिनिधि राष्ट्रीय झण्डा माना और फहराया जाता है । इस दृष्टि से छोटे दीपयज्ञों को बड़े गायत्री यज्ञों की सुविस्तृत विधा का प्रतीक मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए ।

पिछले दिनों संस्कृत भाषा से परिचित पंडित-पुजारी ही धर्मकृत्यों की ठेकेदारी वहन करते रहे हैं । पर आज की स्थिति में यदि धर्मविधाओं को व्यापक एवं सार्वजनिक बनाना है, तो उनका रूप ऐसा विनिर्मित करना होगा, जो सामान्य शिक्षितों के लिए भी नितान्त सरल हो, जिसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए खर्चीली साधन-सामग्री जुटाने के लिए अर्थव्यवस्था बनाने और भाग-दौड़ करने की आवश्यकता न पड़े । जिसमें ढेरों समय न लगाना पड़े , जो अवकाश वाले सुविधा के समय ही सम्पन्न हो जाया करे । इन आधारों के सहारे ही धर्मचेतना का क्रिया-कृत्य, स्वरूप व्यापक बनाया और अक्षुण्ण रखा जा सकता है । दीपयज्ञ इस दृष्टि से सही, समग्र और सर्वसाधारण द्वारा अपनाये जाने योग्य सुगम दीखता है ।

चर्चों के कर्मकाण्ड ऐसे होते हैं जो सर्वसाधारण की पहुँच के भीतर हों । मस्जिदों की नमाज भी ऐसी है; जिसे सरलतापूर्वक सीखा और किसी के भी द्वारा अपनाया जा सकता है । बौद्ध, पारसी, यहूदी आदि की पूजा-अर्चाएँ भी स्वल्प समय और नगण्य से खर्च में पूरी हो जाने वाली हैं । भारतीय धर्म में भी शिवजी पर, या सूर्यनारायण को, एक लोटा जल चढ़ाने भर से बात बन जाती है । फिर खर्चीले, समय-साध्य और कुछ ही लोगों के माध्यम से बन पड़ने वाले कर्मकाण्डों का बोलबाला क्यों बना रहे ? दीपयज्ञों से ही समस्त क्रिया - काण्डों की आवश्यकता पूरी क्यों न कर ली जाय?

व्यापकता, एकता, समता आज की प्रमुख धाराएँ हैं । यह तीनों गायत्री दीपयज्ञों के साथ जुड़ी हुई विधाओं के माध्यम से, अपने संदेशों को संकेत रूप में भली प्रकार व्यक्त कर सकने में समर्थ हैं । इस माध्यम से, हर श्रद्धालु को धर्मकृत्य सम्पादित करने का श्रेय, बिना किसी जाति, वर्ण, लिंग का भेद-भाव किये, समान रूप से मिल जाता है और साथ ही उसके व्यापक बनने का भी द्वार खुल जाता है ।

नवयुग का स्वागत करें

अपना समय नवयुग के अरुणोदय का प्रभात-पर्व है । ऐसे अवसरों पर आमतौर से आरती सजायी जाती है । जब नया वर्ष दीवाली से आरंभ होता था, तब नव वर्षोत्सव दीपमालिका सजाकर, उस पुण्य-काल की अभ्यर्थना की जाती थी । आज नवीन संवत्सर की तरह नवयुग के अवतरण का पुण्य पर्व है । इसके स्वागत का सरंजाम दीप-दान के माध्यम से आरती उतारने का स्तर सम्पन्न किया जाय, यों यह उपयुक्त ही है । देवालयों में भी तो प्रातः काल की पूजा-अर्चा, दीप प्रज्ज्वलन और आरती विधान के साथ ही सम्पन्न होती है । नवयुग के प्रति अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति यदि दीप-यज्ञ के माध्यम से सम्पन्न करें, तो यह सर्वथा उचित एवं उपयुक्त ही होगा ।

भारत की सांस्कृतिक परम्परा में दीप प्रज्ज्वलन का अत्यधिक महत्व है । कुछ धार्मिक समारोह प्रायः वरिष्ठ जनों के हाथों दीप प्रज्ज्वलन की विधि-व्यवस्था द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं । अन्य धर्मावलम्बियों में कदाचित् ही कोई ऐसा हो जिसमें अगरबत्ती एवं दीपक प्रज्वलित करने पर मतभेद या विरोध व्यक्त किया जाता हो । इन्हें सार्वभौम एवं सार्वजनीन सहमति का प्रतीक भी माना जा सकता है । जहाँ मतभेद हो, वहाँ मौन-मानसिक रूप से अपनी मान्यता वाला मंत्र जप लेने या ध्यान करने की छूट दी जाती है । दीपयज्ञों का अधिष्ठाता सविता देव को माना गया है । सूर्य पूजा भी ऐसी है, जिसमें मतभेद की कम से कम ही गुंजाइश है । निराकारवादी-साकारवादी दोनों ही सूर्य का ध्यान या नमन् करते देखे जाते हैं । इस प्रकार विश्व-एकता की दिशा में बढ़ चलने की दृष्टि से भी दीप यज्ञों की उपयोगिता सार्वभौम स्तर की बन पड़ती है ।

यह विद्या मात्र कर्मकाण्ड नहीं है । उसके साथ लोकमानस के परिष्कार का, आदर्शवादी प्रचलनों का, विचार-विनिमयों का कार्यक्रम भी अनिवार्य रूप से जुड़ता है । दीपयज्ञ, मात्र पूजा विधान या उपासना स्तर का कर्मकाण्ड भर नहीं है । उसकी जहाँ भी व्यवस्था की जायेगी, वहाँ साथ में सदशयता का उद्बोधन, निरूपण-विवेचन भी जुड़ा रहेगा । आदर्शों के प्रति श्रद्धा-संवर्धन और मानवी गरिमा के अनुरूप चिन्तन, चरित्र एवं व्यवहार का निरूपण भी किया जायेगा । इसके बिना चिह्न पूजा से वह कृत्य पूरा नहीं होता । प्रचलन के अनुसार स्नान, दर्शन, नमन, स्तवन, उपहार, मनुहार जैसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ हलचल कर देने मात्र से काम कहाँ बनता है ? ऐसी निष्प्राण पूजा दीपयज्ञों को अपूर्ण ही करती रहेगी । उसे पूर्ण करने के लिए सहगान-कीर्तन एवं युगधर्म के प्रतिपादन युक्त काया-कल्प जैसे धर्म-कृत्य का उस के साथ सघन समावेश है ।

पर्व, त्यौहार, संस्कार एवं अन्य उत्साहवर्धक अवसरों पर कुछ न कुछ कहने-सुनने, समझने-समझाने का प्रसंग होता है । उन अवसरों पर छोटे बड़े दीपयज्ञ आयोजित करते रहना चाहिए । वार्षिकोत्सव भी इसी तरह सम्पन्न किये जा सकते हैं । जहाँ जो आयोजन सम्मिलित रूप से सम्पन्न किये जाते हैं, उनकी प्रेरणाओं से तालमेल बिठाते हुए, दीपयज्ञ की व्यवस्था सरलता पूर्वक बनायी जा सकती है और सर्वसाधारण को नवसृजन के लिए कुछ न कुछ करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता रह सकता है ।

जन्मदिन, साप्ताहिक सत्संग, पर्व संस्कार आदि कोई भी आयोजन दीपयज्ञ के साथ सहज ही सम्पन्न हो सकता है । पूजा वेदी पर श्रद्धा प्रतीकों के साथ इच्छित संख्या में दीपक एवं अगरबत्तियों की स्थापना की जाय । सामान्य - देव आवाहन के साथ दीपक एवं अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करके सामूहिक रूप से गायत्री मंत्र का गान किया जाय । आयोजन के उपयुक्त संदेशों एवं सहगान आदि को जोड़ा जाय । प्राणवान व्यक्ति समयानुरूप संकल्प करके अपने अन्तःकरण में ज्योति स्थापना होने दें । आशीर्वचन-शुभकामना-प्रसाद वितरण आदि के साथ कार्यक्रम का समापन कर दिया जाय ।

दीपयज्ञ की विधा अति सरल है । उसके लिए चिरकाल तक अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं पड़ती । दो-चार समीपवर्ती आयोजनों में सम्मिलित रहकर, उस विधा को सहज अभ्यास में उतारा जा सकता है । सहगान कीर्तन और सामूहिक गायत्री पाठ इसके प्रधान प्रसंग हैं । उन्हें याद किया जा सकता है अथवा पुस्तक आगे रखकर मधुर स्वर से बोला जा सकता है । जहाँ सम्भव हो, वहाँ वाद्य-यंत्रों का भी समन्वय किया जा सकता है । स्थान सज्जा के अतिरिक्त बड़ी बात एक ही रह जाती है कि इन आयोजनों में विचारशील स्तर के नर-नारियों को अधिक संख्या में एकत्रित करने के लिए, उनके यहाँ टोली बनाकर जाया जाय, और उपस्थित होने का सत्परिणाम उन्हें समझाया जाय, इतने भर से सफलता सुनिश्चित हो जाती है । आयोजनों के स्थान को जितना आकर्षक बनाया-सुसज्जित किया जा सके, उतना ही अधिक कलात्मक वातावरण बन पड़ेगा ।

एक प्रखर अध्यात्मोपचार

युगसंधि के शेष अगले दस वर्षों में वातावरण परिशोधन और लोकमानस परिष्कार के निमित्त एक सशक्त अध्यात्म उपचार की तरह, लाखों-करोड़ों की संख्या में छोटे-बड़े दीप यज्ञ आयोजन होने की संभावना सुनिश्चित है । इसकी पूर्व रूपरेखा बन चुकी है । उसके कार्यान्वयन में किसी प्रकार संदेह की गुंजाइश नहीं है । इसलिए आवश्यक है कि हर जगह ऐसे व्यक्तियों की सुनिश्चित टोलियाँ उभरें, जो अपने सम्पर्क क्षेत्र को दीपावली की तरह जगमगा सकें, सर्वत्र युग चेतना के आलोक वितरण की महती भूमिका निभा सकें । इसके लिए आवश्यक है कि आन्दोलन की सुनिश्चित रूप-रेखा एवं विधि-व्यवस्था समझने के लिए प्रतिभावान व्यक्ति, शांतिकुंज में निरन्तर चलने वाले नौ दिवसीय सत्रों में से कम से कम एक-दो में, समर्थ प्रशिक्षण प्राप्त कर लें, ताकि वे युग नेतृत्व की प्रतिभा अर्जित कर सकें और सतयुग की वापसी के गंगावतरण में, भागीरथी योगदान प्रस्तुत कर सकने में समर्थ सिद्ध हो सकें ।

कुछ समय पूर्व जहाँ बड़े दीपयज्ञ सम्पन्न होते थे, वहाँ शांतिकुंज के प्रचारकों-गायकों, वक्ताओं की जीप टोलियाँ आयोजन को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए भेजी जाया करती थीं, पर अब वह कार्यक्रम बदल दिया गया है । अब तक प्रायः ६ हिन्दी भाषी प्रान्तों में मिशन का विस्तार था; पर आगे तो उसे भारत के सभी प्रान्तों में प्रवेश कराना है और विश्व के कोने-कोने में समय की माँग को गुँजाने के लिए पहुँचाना है । इसलिए अनिवार्य हो गया है कि अब तक के विनिर्मित क्षेत्र एवं परिवार को - वहाँ की व्यस्क

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिभाएँ सँभालें और शांति कुंज को अन्यत्र आगे बढ़ चलने के लिए खुशी-खुशी चल पड़ने का अवसर प्रदान करें ।

सासाहिक आयोजन और विशिष्ट दीपयज्ञ आयोजन को सम्पन्न करने के लिए जिन्हें युग गायकों, इक्कीसवीं सदी के प्रवक्ताओं, उद्‌बोधकों, संगठकों और वातावरण विनिर्मित करने वालों की आवश्यकता पड़ेगी, उन्हें बड़ी संख्या में शांतिकुंज परिसर में ही प्रशिक्षित एवं परिपक्व किया जायेगा । अच्छा हो इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए समयदानी प्रतिभाएँ शांति कुंज पहुँचकर युग नेतृत्व की क्षमता अर्जित करें । हरिद्वार की प्रचार टोलियों को वहाँ जाने दें, जहाँ मिशन ने अब तक प्रवेश पाने में सफलता अर्जित नहीं की है । दीपयज्ञ अगले दिनों सार्वभौम धर्मानुष्ठान के रूप में सर्वत्र, निरन्तर बन पड़ने वाले छोटे-बड़े आयोजनों के रूप में विकसित होने जा रहे हैं । इस तथ्य को गाँठ बाँध लेना चाहिए । और उस संभावना को साकार होकर रहने वाली विधा के रूप में भी स्मरण रखते हुए उसके विस्तार के लिए प्रयत्न-शील होना चाहिए ।

दीप यज्ञों की विधि व्यवस्था

दीपयज्ञ के किस कृत्य के साथ क्या प्रतिपादन जोड़ा जाय यह लम्बा विषय है । इसके लिए एक स्वतंत्र पुस्तक लिखी जाने की आवश्यकता है, या फिर एक महीने के युग शिल्पी सत्र में सम्मिलित होकर शांति कुंज में वह सारा अभ्यास किया जा सकता है । संक्षेप में दीप यज्ञ के शुरू तथा अन्त में सम्पन्न होने वाले कृत्य ऐसे हैं; जिनका लोक शिक्षण के लिए परिपूर्ण प्रयोग किया जा सकता है । यह समूचा परिकर आत्म निर्माण के लिए प्रयुक्त सभी सत्प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालता है ।

जन रुचि की धर्मधारणा को आदर्शवादिता की ओर मोड़ने के लिए इन दृश्य-श्रव्य आयोजनों का वातावरण अति प्रेरणाप्रद होता है । उसमें कलाकारिता तथा सुव्यवस्था जोड़ देने पर उसका स्वरूप ऐसा बन पड़ता है कि धर्मतत्व को निरुपयोगी और नकारा समझे जाने की मान्यता बदल सकती है । इसमें सम्मिलित होने के लिए, साथ में जुड़ने के लिए क्रमशः अधिकाधिक लोग उत्सुक आतुर हो सकते हैं । इस सफलता के दूरगामी परिणाम होने निश्चित हैं । रुझान बदलने पर चिन्तन-चरित्र व्यवहार भी प्रभावित होता ही है । उस आधार पर गतिविधियों में भी हेर-फेर होता है । सत्प्रवृत्ति के सम्वर्धन का प्रतीक दीपक को और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन का माध्यम धूपबत्ती प्रज्वलन को माना जा सकता है । कछुआ छाप धूपबत्ती मच्छर भगाने के लिए प्रख्यात है । दीप यज्ञ की धूपबत्तियों का भी दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के लिए स्तम्भ बनाया जा सकता है ।

दीपयज्ञों में एक दिन पहले जलयात्रा का महिला जुलूस निकाला जाता है । पीले वस्त्र पहने, सिरों पर पीले कलश रखे हुए महिलाएँ प्रमुख मार्ग पर पंक्तिबद्ध निकलती हैं । साथ में गायन, उद्‌घोष तथा उद्देश्यों को मुखर करने वाले बैनर, बैण्ड बाजे के साथ चलते हैं, तो नगर में धूम मचती है । देखने वाले अन्यों से उत्साह भरी चर्चा करते हैं । विज्ञजनों में प्रचारित होता है कि नारी ने नवसृजन का मोर्चा संभाला है । उसने अपने ही नहीं समूचे समाज के पुनरुत्थान का बीड़ा उठाया है । यह जुलूस दूसरे दिन के आयोजन में अधिक जनसंख्या उपस्थित होने का आधार तो होता ही है, नारी जागरण की युग चेतना उभरने का भी सर्व साधारण को आभास मिलता है । विरोधी समर्थक बनते हैं और समर्थक सहयोगी के रूप में विकसित होते देखे जाते हैं । यह योजनाबद्ध कलश यात्रा का प्रत्यक्ष प्रभाव है । जो महिलाएँ इसमें सम्मिलित होती हैं, उन्हें अपने स्तर और कर्तव्य पर गर्व होता है । यह मनः स्थिति उन्हें नव जागरण की दिशा में अग्रसर करने के लिए अतीव प्रभावी सिद्ध होती है । आन्दोलन को अग्रगामी बनाने में इस उत्साह से समुचित सहायता मिलती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीपयज्ञों के साथ तीसरे पहर का महिला सम्मेलन सर्वत्र जुड़ा रहता है । उनकी सुविधा का समय भी यही है । जहाँ भी आयोजन हुए हैं वहाँ बड़ी संख्या में महिलाएँ उत्साह पूर्वक उपस्थित हुई हैं । इस आयोजन में नारी पुनरुत्थान के सभी आवश्यक तथ्य उदाहरणों एवं तर्कों के साथ हृदयंगम कराये जाते हैं । इसका प्रत्यक्ष परिणाम उसी समय यह देखा गया है कि स्थानीय महिलाएँ एक सुदृढ़ आधार बन जाती हैं । भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा संभालने और उसे क्रियान्वित करने की पृष्ठभूमि इसी आधार पर बन जाती है । यदि इस प्रयोजन में रुचि रखने वाले नर-नारी पीछे भी उस उत्साह को सींचते रहें तो निश्चित ही वहाँ महिला समाज के पुनरुत्थान का प्रवाह द्रुतगति से बहने लगता है और प्रगति के नित नूतन आधार होते हैं । इस परिवार निर्माण की प्रक्रिया के साथ जुड़े हुए अनेकों क्रिया-कलापों की शृंखला सहज ही गति पकड़ती चली जाती है ।

इन दिनों विचारशील जनता को किन्हीं प्रवचन समारोहों में एकत्रित करना कठिन हो रहा है । सत्ता क्षेत्र के समारोहों में भी उपस्थिति एक बड़ी समस्या है । इसके लिए उन्हें आकर्षणों के अनेकों खर्चीले सरंजाम जुटाने पड़ते हैं । साथ ही आग्रहों, दबावों की भी भरमार रहती है, तब कहीं इतनी संख्या में जनता एकत्रित हो पाती है कि उसे सन्तोषजनक कहा जा सके । इन दिनों वक्ताओं के व्यक्तित्व एवं संयोजकों के स्तर का आभास सभी को रहता है । इसीलिए उपस्थिति कम रहती है । दीपयज्ञों में उपस्थिति का तरीका कुछ दूसरा भी है । व्यक्ति, परिवार एवं समाज की अभिनव संरचना के उद्देश्य से किए जा रहे ये आयोजन कहीं भी हो सकते हैं । इसके साथ धर्म श्रद्धा जुड़ी रहने के कारण उपस्थिति भी रहती है तथा खर्च भी नहीं के बराबर होता है ।

इस आयोजन के माध्यम से कार्यकर्ताओं को जन सम्पर्क साधते रहने का अवसर मिलता है । जिसने जो सहयोग दिया था उसके लिए धन्यवाद देना और जो संकल्प किए थे-वचन दिए थे उन्हें पूरा करने के लिए सहयोग और परामर्श देने का एक अच्छा-खासा निमित्त हाथ लग जाता है । संपर्क योग्यता बढ़ाता है । इस प्रकार दीप यज्ञ परिवार एक ऐसा समर्थ "प्रज्ञा केन्द्र" बन जाता है, जो क्रमशः व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण की त्रिविध भूमिका अदा करता है ।

इस तरह दीप यज्ञ का कार्य जन सम्पर्क से आरंभ होता है । उसे पर्चे, पोस्टर बाँटकर, अखबारों में सूचना निकाल कर, लाउडस्पीकर से ऐलान करा कर पूरा नहीं किया जा सकता । इसके लिए घर-घर दो-दो की टोली बनाकर जाना चाहिए । आयोजन का स्थान एवं समय बताने के अलावा उसकी आवश्यकता, उपयोगिता भी समझाई जाय । इन दिनों धर्म कृत्यों में लोग निजी इच्छा पूर्ति और विपदा की आशंकाओं से छुटकारा पाने के लिए आकर्षित होते देखे जाते हैं । इस प्रक्रिया से जुड़ने वाले व्यक्तित्व का लाभ उस रूप में भी प्रकारान्तर से मिल सकता है, जैसा कि लोग आशा करते हैं । यह सब समझने-समझाने की प्रक्रिया पर निर्भर है । सम्पर्क साधने वालों को आयोजन का तत्व ज्ञान और लोगों की अभिरुचि के साथ ताल-मेल बिठाकर अपने न्योते को प्रभाव पूर्ण बनाना चाहिए ।

महिलायें इसके लिए आसानी से तैयार हो जाती हैं । घर का काम आगे-पीछे निपटाने की कोई व्यवस्था बना लेती हैं । पुरुषों के लिए भी आयोजन का सुबह शाम वाला समय बहुत असुविधा जनक नहीं है । उस सुबह शाम के दोनों समय में चाहें तो बिना काम धन्धे में हर्ज किए इस पुण्य प्रयोजन में शामिल होने का मन बना सकते हैं । इस तरह घरों में, दुकानों, दफ्तरों, फैक्टरियों, विद्यालयों आदि में जाकर यदि कुछ लोग भाव भरी मनः स्थिति लेकर आमंत्रण देने में जुट पड़ें तो निश्चय ही किसी भी आयोजन में अच्छी उपस्थिति हो सकती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शामिल होने वालों को कंधे पर पीला दुपट्टा डालकर आना आवश्यक हो । महिलायें अपनी साड़ियाँ पीले रंग में घर पर ही रंग सकती हैं । एक रूपता में अच्छी शोभा बनती है । घर से हर भागीदार को एक थाली, तीन अगरबत्ती, एक घी का दीपक साथ लेकर आना होता है । अगरबत्तियाँ यदि छोटी हैं तो एक के स्थान पर दो बत्तियाँ भी प्रयोग की जा सकती हैं ।

आयोजन स्थान पर थालियों के नीचे मिट्टी की, या ईंटों की छोटी वेदियाँ बना दी जानी चाहिए । वे लिपी-पुती, चौक पुरी हुई सुन्दर सज्जित हों तो और भी अधिक आकर्षक लगती हैं । यज्ञशाला में फर्श बिछाने की जगह आसनों या पट्टियों का उपयोग अधिक सुविधाजनक रहता है ।

दो तख्तों पर दो मंच बनाए जाने चाहिए । एक पूजा उपचार के लिए सुसज्जित और दूसरा वक्ता गायकों के लिए सुरक्षित हो । वक्ता के सामने माइक रहे । पूजा वेदी पर प्रधान तस्वीर, लाल मशाल की फोटो, कलश गुलदस्ते आदि से उसे सुशोभित किया जा सकता है । आयोजन स्थान पर झंडियों से, पत्ती की चमकीली लड़ियों से, पत्तों के बन्दनवारों से शोभा सज्जा की जा सकती है । दर्शकों के लिए बिछावट की व्यवस्था रहे । सुबह आत्म परिष्कार का, तीसरे पहर महिला सम्मेलन का, रात को सामाजिक समस्याओं के समाधान का कार्यक्रम रहे । इस तरह एक दिन में ही तीन दिनों में हो सकने वाला क्रिया-कलाप सम्पन्न हो सकता है । जहाँ एक से अधिक दिन इस प्रयास को चालू रखने का उत्साह है वहाँ उस प्रकार की व्यवस्था भी की जा सकती है ।

घरेलू दीप यज्ञ कार्यक्रम साप्ताहिक सत्संगों के रूप में भी रखे जा सकते हैं । वे छुट्टी के दिन रखे जायें तो अधिक उपस्थिति हो सकती है । पर्वों पर भी इन्हें किया जा सकता है । उनमें पड़ोस से पास के क्षेत्र के लोगों को यथा सम्भव अधिक से अधिक संख्या में इकठ्ठा किया जाय । अतिथि सत्कार को पूरी तरह बन्द रखा जाए; ताकि गरीब अमीर सभी के यहाँ, इन आयोजनों की संभावना बन सकें । देखा गया है कि घरेलू आयोजनों में उपस्थिति एक बार ही होती है । भले ही वह सुबह हो या रात में । दीपयज्ञ सुविधानुसार दोनों में किसी भी समय किए जा सकते हैं । उनमें रात या दिन का बन्धन नहीं है । सच तो यह है कि रात में दीप माला अधिक चमकने से शोभा और अधिक बन जाती है ।

दीपयज्ञ की वेदी सामान्य थाली होती है । उसमें एक दीपक तथा तीन-तीन अगरबत्तियों के पाँच गुच्छक सजाये जाते हैं । एक वेदी पर एक से चार व्यक्ति तक यजन के लिए बैठ सकते हैं । दीपक धातु के, मिट्टी या आटे के हो सकते हैं । इसी प्रकार अगरबत्तियाँ लगाने के लिए आटा, मिट्टी, फल, स्टैण्ड कुछ भी प्रयुक्त हो सकते हैं । यह सब चीजें तथा सामान्य पूजन सामग्री हर घर में होती हैं । कर्मकाण्ड का क्रम इतना सुगम है कि एक दो बार देख समझकर मिलजुलकर उसे सम्पन्न किया जा सकता है ।

दीपक में घी, अगरबत्तियों में हवन सामग्री की आहुति चलती रहती है । इन्हें सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति निवारण का प्रतीक भी कहा जा सकता है । पूर्णाहुति में प्रत्येक याजक भागीदार कम से कम एक बुराई छोड़ने या अच्छाई अपनाने का संकल्प करता है । अंत: करण में ज्योति जागे बिना दीपयज्ञ की पूर्णाहुति नहीं होती ।

घरेलू यज्ञों से आरम्भ होने वाला यह प्रचलन पूरे गाँव, नगर या मुहल्ले के सामूहिक आयोजनों में विकसित हो सकता है । पीछे और भी बड़े क्षेत्रीय आयोजन होते रह सकते हैं । बड़े आयोजनों में बड़ी व्यवस्था तो करनी पड़ती है; पर उसका प्रभाव भी लोगों पर उसी अनुपात में अधिक भी पड़ता है । प्रतिनिधि पहुँचते रहें तो क्षेत्रीय आयोजनों की बड़ी व्यवस्था भी बन सकती है । ऐसी दशा में बाहर से आने वालों के लिए भोजन एवं निवास का प्रबन्ध आवश्यक हो जाता है ।

यज्ञ में शामिल होने वालों में से जिनमें उत्साह उभरे, जिनमें प्रभावित होने के लक्षण उभरते दिखाई पड़ें, उनके यहाँ पीछे भी संयोजकों को पहुँचना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चाहिए और एक घन्टे का समयदान और न्यूनतम दस पैसे रोज का अंशदान देकर सुनिश्चित सदस्य बनने का आग्रह करना चाहिए । यही लोग हैं जिनका समयदान और अंशदान का सही उपयोग करते हुए सक्रिय कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं । दीपयज्ञों की सफलता इस आधार पर आँकी जानी चाहिए कि उनके माध्यम से कितने योगदान करने वाले कर्मठ सदस्य बने । इन्हीं की क्षमता का उपयोग करके अगले दिनों उन रचनात्मक, सुधारात्मक क्रिया कलापों को हाथ में लिया एवं बढ़ाया जाय, जिसके माध्यम से युग सृजन की आवश्यकताओं और समस्याओं के अनुरूप कुछ स्थायी एवं ठोस कार्य बन सकें, हल निकल सकें ।

दीपयज्ञों की व्यवस्था के लिए समुचित स्थान की, साधन सरंजाम की जरूरत तो है, साथ ही उस कर्मकाण्ड के सम्पन्न करने वाले, भाषण कर सकने वाले, गायन - वादन की आवश्यकता पूरी कर सकने वाले व्यक्ति भी चाहिए और व्यवस्था के लिए स्वयं सेवक भी । इन सब को समय से पहले ही बना लिया जाना चाहिए । अपने मंच से भाषण और गायन निर्धारित विषयों पर ही हो सकता है । उसके लिए अन्यान्य क्षेत्रीय स्तर के लोगों को मंच पर नहीं बिठाया जा सकता, अन्यथा जाने अनजाने विसंगतियाँ पैदा होने लगती हैं । यज्ञीय प्रवाह टूटने लगता है । इस हेतु शांति - कुंज में एक एक महीने के प्रशिक्षण सत्र चलते हैं, जिनमें कोई भी २५ वर्ष से अधिक आयु के पढ़े लिखे नर-नारी जरूरी शिक्षण पा सकते हैं । छोटे - बड़े आयोजनों की व्यवस्था में जिन प्रयासों की जरूरत पड़ती है उन्हें यथा समय कैसे जुटाया जाय, यह इस एक महीने के सत्रों में सरलता पूर्वक सीखा जा सकता है ।

जो लोग हरिद्वार सीखने के लिए आएँ उन्हें अपने साथी सहयोगी ढूँढ-ढूँढ कर उनके लिए वैसे ही शिक्षण सत्र अपने यहाँ तथा आस-पास लगाते रहना चाहिए; ताकि दीप यज्ञों के अगले दिनों होने वाली भारी बढ़ोत्तरी के लिए जितने अधिक कार्यकर्ताओं की जरूरत पड़े, उनकी पूर्ति स्थानीय क्षेत्र से ही पूरी होती रहे ।

प्रयोग में आने वाले लाउडस्पीकर, पूजा उपकरण, वाद्य - यंत्र आच्छादन, बिछावट आदि एक स्थान पर संकलित किए जा सकते हैं; ताकि उनका उपयोग स्थान-स्थान पर हो सके और अलग-अलग कार्यक्रमों को अलग-अलग कार्यकर्ता एवं व्यवस्थापक मिल सकें ।

घरेलू दीप यज्ञों में यदि दीप मालिका मनाई गई है तो प्रवचन, गायन, दक्षिणा आदि का कार्यक्रम उसी समय निपटा लेना चाहिए और रात को स्लाइड प्रोजेक्टर के माध्यम से चित्र प्रदर्शन का कार्यक्रम रखना चाहिए; ताकि यदि सुबह वाले लोग उपस्थित नहीं हो सकें तो समीपवर्ती लोग इस प्रवचन प्रक्रिया का लाभ ले सकें । टेपरिकार्डर कार्यक्रम के आधार पर भी सुविधानुसार भाषण एवं संगीत की आवश्यकता पूरी की जा सकती है ।

घरेलू आयोजन एक वेदी दीप यज्ञ से लेकर प्रायः २४ वेदी तक के होते रहते हैं । सामूहिक आयोजन १०० वेदी से आरम्भ होते हैं और विशाल आयोजन के रूप में वे एक हजार वेदी वाले तक भी हो जाते हैं । जहाँ अधिक उत्पादन और बड़ा संगठन है वहाँ १० हजार, २४ हजार आदि वेदी वाले भी होने लगे हैं । उन्हें एक दिवसीय न रहने देकर द्वि दिवसीय, तीन दिवसीय बनाने का उत्साह लोगों में उभरा और संयोजकों की भावना तथा प्रयास के अनुरूप उन सबको उत्साह-वर्धक सफलता भी मिली है ।

एक लाख व्यक्तियों को एक साथ जुटाना-उन्हें नव निर्माण की दिशा में सक्रिय करना, समर्थों के लिए भी कठिन है । परन्तु जन संपर्क करने वाले प्राणवान कार्यकर्ताओं की टोलियाँ छोटे-छोटे टुकड़ों में दीप यज्ञ के माध्यम से लाखों व्यक्तियों को इस धारा में लपेट सकती हैं । हजार - हजार की उपस्थिति वाले १०० कार्यक्रम किसी भी प्रतिभावान के लिए कठिन नहीं । साधन भी विशेष नहीं लगते, मुट्ठी मात्र के जन सहयोग मात्र से यह सब संभव हो जाता है । इस प्रकार दीप यज्ञ अत्यंत प्रभावशाली होते हुए भी न्यूनतम समय और साधनों द्वारा सम्पन्न होते हैं । इनकी विधि व्यवस्था कार्य पद्धति सर्वसुलभ और सर्वोपयोगी है । इन दीपयज्ञों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

में अगरबत्ती के पाँच गुच्छक और पाँच दीपकों की प्रतिष्ठापना होती है । इन्हें पंच देव, पंच तत्व, पंच प्राण, पंच कोष, पंचभूत समुदाय का प्रतीक प्रतिनिधि माना जाना चाहिए । जिस प्रकार एक ही जल कलश में समस्त देवों की स्थापना कर ली जाती है, उसी प्रकार पाँच स्तर के समस्त देवतत्वों की उपस्थिति इन पाँच गुच्छकों में मानी जानी चाहिए । चेतना-ऊर्जा और प्रेरणा की प्रतीक अग्नि है । उसी की उपस्थिति और साक्षी में अग्निहोत्र की क्रिया-प्रतिक्रिया चलती है, और पंच महायज्ञों की विधि व्यवस्था पूरी करती है ।

इन गुच्छकों को पंचशीलों- श्रमशीलता, सहकारिता, शिष्टता, मितव्ययता और सुव्यवस्था को, याजक में प्रतिष्ठापित करने का आधार माना जा सकता है । साथ ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी और समता-एकता का सद्भाव भी इन्हें माना जा सकता है । अग्निहोत्र के समय ज्ञान यज्ञ के रूप में यदि इन सूत्रों की- सद्गुणों की व्याख्या विवेचना की जा सके, तो व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के सभी तत्वों पर भली प्रकार प्रकाश डाला जा सकता है । जिन दुर्गुणों ने व्यक्तियों और जिन दुष्प्रवृत्तियों ने समाज को विपन्न बना रखा है, उनका खण्डन भी इसी विवेचना के अन्तर्गत हो सकता है । अविवेक, असंयम, लोभ, मोह और अहंकार यही पाँच महादैत्य हैं जिनके विरुद्ध पाण्डवों की तरह महाभारत छेड़ना चाहिए । अभाव, अज्ञान और अनाचार को महिषासुर, मधु, कैटभ और शुंभ-निशुंभ स्तर का दानव मानकर, इनके विरुद्ध संघ शक्ति द्वारा महाकाली स्तर का प्रहार होना चाहिए । अनैतिकता, अन्ध परम्परा, मूढ़ मान्यता, संकीर्ण स्वार्थपरता और बढ़ी-चढ़ी महत्वाकांक्षा का भी शमन होना चाहिए । यह सभी प्रेरणायें दीप - यज्ञों के स्वरूप और विधि -विधान के साथ उभरती हैं ।

दीप यज्ञ सामूहिक भी होंगे और घर-घर भी किये जाएँगे । घरेलू संस्कारों-जन्म दिनों के साथ-साथ परिवार निर्माण गोष्ठी के रूप में भी दीपयज्ञों का क्रम हर क्षेत्र में सतत् चलता रह सकता है । आश्विन और चैत्र पूर्णिमा पर तो हर शाखा में सामूहिक १०० वेदी वाले दीप यज्ञ किये ही जायेंगे । नये-नये, क्षेत्रों में, गाँवों में भी सामूहिक दीपयज्ञों के आयोजन किये जाने चाहिए । इसके लिए कोई भी सुविधा की तिथि चुनी जा सकती है । साप्ताहिक अवकाशों और अन्य छुट्टी के दिनों में ऐसे आयोजन विभिन्न गाँवों, मुहल्लों, कालोनियों में किए जाते रहें, ऐसी व्यवस्था प्रत्येक समर्थ शाखा या टोली को बनानी चाहिए ।

सामूहिक दीप यज्ञ गाँवों में सघन पेड़ों की छाया में, ऋतु के अनुसार खुले प्रांगण में भी किए जा सकते हैं । जहाँ बड़े हॉल मिल जायें वहाँ उनका भी उपयोग किया जाना चाहिए । झंडियों, तोरणों से सजावट अवश्य करें । सज्जा का अपना महत्व और आकर्षण होता है । जहाँ साधनों की कमी न हो वहाँ शामयाने, कपड़े की चाँदनी आदि से पंडाल भी बनाये जा सकते हैं ।

आश्विन और चैत्र पूर्णिमाओं पर किये जाने वाले सामूहिक दीपयज्ञों को यथा-संभव भव्य बनाना चाहिए । उन्हें मात्र प्रदर्शन, उत्सव मात्र न मानकर, कर्मठता संचार के यज्ञ-पर्व बनाना चाहिए । क्षेत्र के सभी कर्मठ परिजन उनमें इकट्ठे हों और अगले छः माह के लिए सामूहिक तथा घरेलू दीप यज्ञों की शृंखला की रूप रेखा बनायें । उपयुक्त व्यक्तियों को उपयुक्त उत्तरदायित्व सौंपे जायँ । जिनमें उत्साह हो उनमें योग्यता पैदा करने, योग्यता बढ़ाने की व्यवस्था बनायें और जिनमें योग्यता है उन्हें समय निकालने के लिए प्रोत्साहित किया जाय । इसके लिए उन पर स्नेह भरा दबाव डाला जाय ।

दीपयज्ञों की व्यवस्था बहुत सुगम है । थालियों-दीपकों की केन्द्रीय व्यवस्था न हो तो याजक अपनी-अपनी थाली तथा पाँच-पाँच दीपक साथ ला सकते हैं । दीपक धातु के न हों तो आटे के बनाए जा सकते हैं । अगरबत्ती स्टैण्ड के लिए मिट्टी के गोले बनाकर उनमें छेद करके रखे जा सकते हैं । वे गीले भी काम में आ जाते हैं । और सुखाकर या पकाकर भी रखे जा सकते हैं । उन्हें रंग कर सुन्दर भी बनाया जा सकता है । आसनों की व्यवस्था सामूहिक न बने, या किराये की

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिछावट साफ सुथरी न हो तो याजक अपने साथ एक-एक आसन भी ला सकते हैं । आसन सूत, ऊन, कुश किसी तरह की हो सकती है ।

पूजा चौकी-चित्र, कलश आदि सहज रूप से उपलब्ध हो जाते हैं । संचालन के लिए एक-दो तख्त, उस पर सादा बिछावट का प्रबन्ध हो जाता है । याजकों के अतिरिक्त दर्शकों, श्रद्धालुओं के लिए भी बैठने की व्यवस्था स्थिति के अनुरूप कर लेनी चाहिए । लाउडस्पीकर यदि शाखा के पास न हों तो किराये पर ले लेने चाहिए ।

दीपयज्ञ के लिए प्रातःकाल का समय अधिक उपयुक्त है । लगभग डेढ़ घंटे में यज्ञ तथा उसके बाद लगभग २ घंटे कीर्तन-प्रवचन का क्रम बनाना चाहिए । जहाँ संभव हो वहाँ ज्ञान यज्ञ संगीत प्रवचन का क्रम शाम को भी रखा जा सकता है । प्रातः कार्यक्रम समाप्ति पर याजकों के लिए भोजन-प्रसाद की भी व्यवस्था की जा सकती है । सहभोज से आयोजन का महत्व बढ़ता है । एक साथ बैठकर भोजन करने से आत्मीयता भी बढ़ती है । अमृताशन-दाल चावल आदि से काम चले तो ठीक अन्यथा पूड़ी - सब्जी की व्यवस्था भी की जा सकती है ।

सामूहिक १०० कुण्डीय दीपयज्ञ में घी, अगरवत्ती आदि का खर्चा १००-२०० रु० के अंदर ही बैठता है । इतना ही लाउडस्पीकर, बिछावट आदि में लगता है । छः सात सौ सहभोज पर भी लग सकता है । इस प्रकार एक हजार के लगभग खर्च में औसत स्तर का सौ कुण्डीय दीप यज्ञ सम्पन्न हो जाता है ।

समर्थ शाखायें यह शृंखला चलाने के लिए स्थाई सामान की व्यवस्था कर लें तो अच्छा है । १०० थालियाँ, जो दीपयज्ञ तथा सहभोज दोनों में काम आ सकती हैं । ५०० धातु के दीपक तथा ५०० अगरबत्ती स्टैण्ड तैयार रहें । आसन, बिछावट, आच्छादन, लाउडस्पीकर, सैट संगीत उपकरण आदि की स्थाई व्यवस्था रहने से भाग-दौड़ और खर्चे की पर्याप्त बचत होती है ।

इन छोटे आयोजनों में यथा शक्ति सार्वजनिक चन्दा न किया जाय । कुछ संरक्षक-यजमान बनाकर उनसे सौ-सौ, पचास-पचास, रुपये स्वेच्छा सहयोग लेकर, उसी से यह आयोजन कर लिए जायें । याजक यदि देना चाहें तो वे बाद में देव मंच पर या दान पात्र में श्रद्धा सहयोग चढ़ा दें । उसे अगले सामूहिक दीप यज्ञ के लिए सुरक्षित रख लिया जाय । इस प्रकार आर्थिक व्यवस्था का भी एक स्वचालित क्रम बन सकता है ।

याजक पहले से निर्धारित कर लिए जायें । वे धोती-कुर्ता या कमीज पहन कर आयें । पीला दुपट्टा कंधों पर हो । सब एक साथ मंत्र बोल सकें इसके लिए संक्षिप्त यज्ञ विधि की लगभग १०० पुस्तिकाएँ कवर चढ़ाकर रख लेना उचित है । समवेत स्वर से वातावरण बहुत प्रभावशाली बनता है ।

प्रयत्न यह होना चाहिए कि इस यज्ञीय वातावरण का लाभ उठाने, प्रकाश पाने के लिए अधिक से अधिक व्यक्ति आयोजन में सम्मिलित हों । इस उद्देश्य से टोलियाँ बनाकर, पीले चावल लेकर, घर-घर आमन्त्रण देने के लिए जाना चाहिए । इस अनास्था के माहौल में धार्मिक कृत्यों के प्रति सर्वसाधारण के मन में उत्साह रह नहीं गया है । इसलिए लोग, मात्र सूचना मिलने भर से उनमें सम्मिलित होने के लिये समय नहीं निकालते । इस कठिनाई से पार पाने के लिए एक ही सफल उपाय है कि जन सम्पर्क के लिए निकला जाय और अनुरोध आग्रह करते हुए सम्मिलित होने का महत्व समझाया जाय । हो सके तो आयोजन के दिन फिर से उन्हें उपस्थित होने का स्मरण दिलाने के लिए पहुँचा जाय ।

जिस थाली में दीपक, अगरबत्तियों के गुच्छक सजाये जाते हैं, उन्हें वेदी-कुण्ड माना गया है । एक कुण्ड पर कई व्यक्ति बैठ सकते हैं । एक थाली पर एक परिवार के तीन व्यक्ति तो आसानी से बैठ ही सकते हैं । पाँच भी बिठाये जा सकते हैं । इस प्रकार शत कुंडीय दीप यज्ञ में एक बार में १०० से ५०० तक व्यक्तियों को एक साथ बिठाया जा सकता है । जहाँ अधिक उत्साह हो वहाँ सुविधानुसार भिन्न-भिन्न तिथियों में, भिन्न-भिन्न स्थानों पर अलग-अलग आयोजन भी किये जा सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीप यज्ञ के याजकों को व्रतशील होना अनिवार्य है । देव दक्षिणा के रूप में दुष्प्रवृत्ति, त्याग और सत्प्रवृत्ति संवर्धन की बात पहले से ही स्पष्ट कर देनी चाहिए । याजकों का वरण भी इसी आधार पर किया जाता है । यों व्यक्तिगत दोष- आलस्य, कटुभाषण, अहंकार, अस्वच्छता, अशिष्टता, अपव्यय आदि के परित्याग की प्रतिज्ञाएँ भी दी जा सकती हैं । परन्तु समाज सेवा से संबंधित पीछे कहे गये चार कार्यों पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए ।

संकल्प छपे 'संकल्प पत्रों' पर या सादा कागज पर, साफ अक्षरों में लिखकर लिए जायें । संकल्पकर्ता का नाम, पता और लिए गये संकल्प का स्पष्ट उल्लेख हो । जैसे- (१) अमुक नशा छोड़ा, या कभी नशा न करुँगा और अमुक संख्या में व्यक्तियों से नशा छुड़वाऊँगा । (२) अमुक का विवाह आदर्श परम्परा में करुँगा, बर्बादी वाले विवाहों में शामिल नहीं होऊँगा, और अमुक संख्या में आदर्श विवाहों के संकल्प कराऊँगा (३) इतने निरक्षरों को साक्षर बनाऊँगा, इतने शिक्षितों को विद्या ऋण चुकाने के लिए न्यूनतम ५ व्यक्तियों को साक्षर बनाने के संकल्प कराऊँगा । बाल संस्कारशाला या प्रौढ़शाला की व्यवस्था हेतु अमुक मात्रा में समय साधन लगाऊँगा । (४) इतने वृक्ष, इतने घरों में पुष्प, शाकवाटिका, तुलसी स्थापना आदि कराऊँगा । (५) इतने व्यक्तियों को उपासक बनाऊँगा, इतने को नौ दिवसीय साधना सत्रों के लिए तैयार करुँगा आदि संकल्पों का ब्यौरा अपने पास भी नोट करके रखें और संकल्प पत्र शांतिकुंज भेज दें, ताकि संकल्प कर्ताओं को शक्ति, प्रेरणा दिलाने का क्रम चलता रह सके ।

इन सामूहिक शत कुंडीय दीप यज्ञों में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक याजक को न्यूनतम एक नये परिवार में एक कुंडीय दीप यज्ञ सम्पन्न कराने का उत्तरदायित्व सौंपना चाहिए । दीपयज्ञ कराने के माध्यम से उस परिवार की उलझनें सुलझने, उसमें प्रगतिशीलता का अधिकाधिक समावेश करने के लिए भरपूर प्रयास करना भी आवश्यक है ।

संक्षिप्त में निम्न बातों को, दीपयज्ञ आयोजन की विशेष सफलता के संदर्भ में अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिए-

-यज्ञ आयोजनों का महात्म्य शास्त्रकारों ने विस्तार पूर्वक बताया है । उससे वातावरण की शुद्धता एवं उज्ज्वल भविष्य की संभावना का आधार बनता है । दीपयज्ञों की विधा सरल-सस्ती और सर्वसाधारण द्वारा प्रयोग में लाये जाने योग्य है । इन्हें धर्म धारणा के साथ जोड़ने पर, प्रगतिशीलता का अभिवर्धन और भी अधिक सुगम हो जाता है ।

-इन यज्ञों का संकल्प शांतिकुंज जाकर लिया जाय तो उससे स्थितियों के अनुरूप परामर्श तो मिलता ही है, साथ ही इतना प्रकाश प्रवाह भी उपलब्ध होता है, जिसके सहारे सफलता में चार चाँद लग सकें ।

-दीपयज्ञ स्थानीय स्तर पर ही किए जा रहे हैं । क्षेत्रीय स्तर पर करने में कई नयी जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं । एक दिन का कार्यक्रम बढ़ाना पड़ता है । ठहराने की,भोजन-पानी आदि की अनेक सुविधायें जुटानी पड़ती हैं । वे न बन पड़े तो स्थानीय आयोजन की बात ही सोचनी चाहिए । दस - पाँच घनिष्ट लोगों को मेहमान की तरह बुलाया और अपने ही घरों में ठहराया जा सके, तो यह बात अलग है ।

-आयोजन का स्थान ऐसा चुनना चाहिए जो सड़क के किनारे साफ सुथरा और बिजली पहुँच सकने के उपयुक्त हो । उसी स्थान पर प्रातः यज्ञ और रात को सभा आयोजन रखा जा सकता है । यह यज्ञ प्रायः शीत ऋतु में ही होंगे, इसलिए ऊपर शामियाना न ताना जा सके, तो भी काम चल सकता है । पर नीचे बिछावट तो होनी ही चाहिए ।

-शामियाने की शोभा सजावट कागज की झंडियों, प्लास्टिक के हरे पल्लवों, फूलों , गुब्बारों, पन्नी की कतरनों आदि के सहारे भी की जा सकती है । यह सज्जा साधन एवं बिछावट आदि अपने पास में हों, तो उन्हें कई यज्ञों के लिए काम में लाया जा सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

-कितनी वेदियों का यज्ञ किया जाय, यह निश्चय करने से पूर्व यह देखना चाहिए कि याज्ञिक कितने होने की आशा है । हर वेदी पर तीन ओर, तीन व्यक्ति तक बिठाये जा सकते हैं । तीनों के बैठने में पाँच फुट लम्बाई चौड़ाई की जमीन से काम चल जाता है । इस अनुमान के आधार पर स्थान चयन करना चाहिए । यज्ञ स्थल के चारों ओर रस्से से बाड़ बना दी जाय, आगन्तुक निर्धारित द्वार से ही प्रवेश करें और वहीं होकर निकलें । इससे व्यवस्था भी बनी रहेगी और शोभा भी ।

- पण्डाल के एक सिरे पर पूजा की वेदी के लिए एक तख्त और प्रवचन कर्ता, गायकों के लिए दो तख्त रखने चाहिए । इन तीनों तख्तों को सुसज्जित करने का प्रबंध करना चाहिए । पूजा की वेदी को गायत्री माता के चित्र, कलश, आरती थाल, धूपदानी, दीपक, गुलदस्ता आदि से सुसज्जित किया जाय । प्रवचन मंच पर वक्ता गायकों के अतिरिक्त और किन्हीं को बैठने न दिया जाय ।

-लाउडस्पीकर का स्थानीय प्रबंध किया जाय । जहाँ प्रचार गाड़ियाँ भेजी जा रही हों, वहाँ तो लाउडस्पीकर भेजा जा सकता है, पर वह छोटा होने से अधिक से अधिक एक हजार व्यक्तियों तक ही आवाज पहुँचा सकता है । अधिक उपस्थिति की आशा हो तो बड़ी ताकत व अधिक चोगे वाले लाउडस्पीकर की पहले से ही व्यवस्था करके रखनी चाहिए ।

- नगर में एलान भी कराया जाय कि आयोजन किस उद्देश्य से, किस स्थान पर, किस समय हो रहा है । यज्ञ प्रक्रिया में घर-घर पीले चावलों का प्रतीक देकर आमंत्रण देने की पुरानी परम्परा है । कार्यकर्ताओं की टोलियाँ अपने नगर में घर-घर पीले चावल बाँटने और निमंत्रण देने पहुँचें । साथ में समझदार लोगों को अधिक संख्या में लाने के लिए भी कहें । जो स्वीकृति दें, उनकी संख्या को देखते हुए स्थान का, बैठने के बिछावन आदि का प्रबंध करना चाहिए ।

-जहाँ एक दिवसीय आयोजन हों, वहाँ प्रातः काल यज्ञ, मध्यान्ह को कार्यकर्ताओं की विचार गोष्ठी, रात्रि को सभा सम्मेलन रखा जाय । यदि दो दिन का आयोजन हो तो यह क्रम दोनों दिन अपनाया जाय ।

-जहाँ प्रबन्ध हो सके वहाँ यज्ञ से एक दिन पूर्व तीसरे प्रहर महिलाओं-कन्याओं की, कलश शोभा यात्रा निकाली जाय । सभी महिलाएँ पीत वस्त्र धारण करें । रंगे कलश का प्रबंध पहले ही कर लिया जाय । साथ में बैन्ड बाजा या शंख, घड़ियाल आदि देशी बाजों का भी प्रबंध रखा जा सकता है ।

-अपने यज्ञों में प्रीतिभोजों का आयोजन न किया जाय । उससे व्यवस्था तथा खर्च का बोझ बहुत बढ़ जाता है । प्रसाद में शुद्ध जल, तुलसी पत्र और तनिक सी चीनी का मिश्रण ही पर्याप्त है । किसी आन्दोलन को व्यापक बनाने के लिए उसे सर्वसाधारण की सहन शक्ति को देखते हुए सस्ता ही बनाया जाना चाहिए ।

-जूते चप्पलों की चोरियाँ न हों, इसके लिए टोकन देकर जूतों को क्रमबद्ध रूप से रखने की व्यवस्था की जाय । छोटे बच्चों को आयोजन में लेकर आने की मनाही रहनी चाहिए, वे रोते हैं तो सारा माहौल गड़बड़ा देते हैं । पीने के पानी का और पेशाब जाने की व्यवस्था भी जन संख्या के अनुसार बना लेनी चाहिए ।

-महिलाओं एवं पुरुषों को अलग-अलग बिठाने का प्रबन्ध व्यवस्थापकों को पहले से ही कर लेना चाहिए । अच्छा हो इसके लिए रस्सी बाँधकर स्थान का पहले से ही विभाजन कर दिया जाय ।

-याज्ञिक पीले वस्त्र पहने हुए हों तो उनकी उपस्थिति से श्रद्धा और शोभा में वृद्धि होती है । कुर्ता आसानी से रंगा जा सकता है । कम से कम इतना तो होना ही चाहिए कि कंधे पर डाला जाने वाला दुपट्टा तो पीला रहे ही । महिलाएँ पीली साड़ी पहनें । इसके लिए रँगाई की व्यवस्था आयोजन कर्ताओं की ओर से भी की जा सकती है ।

-याजक घर से थाली, तीन अगरबत्तियाँ एक दीपक साथ लेकर आ सकें तो सर्वोत्तम, पर जहाँ ऐसा प्रबन्ध न बन पड़े, वहाँ आयोजन कर्ताओं को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी व्यवस्था करनी चाहिए । थाली, दीपक, बाजार से किराये पर लिए जा सकते हैं । वैसा न बन पड़े तो मिट्टी के दीपक कुम्हार से भी बनवाए जा सकते हैं। उन्हें रात भर पानी में भीगने दिया जाय, तो फिर सबेरे प्रयोग में लाने पर अधिक घी नहीं पीते । दीपक भी पीले रँगे जा सकते हैं । अगरबत्ती खड़ी करने के लिए गीला आटा, गीली मिट्टी, या कटे हुए सब्जी के टुकड़े का प्रयोग किया जा सकता है ।

-शुद्ध अगरबत्तियों का उत्पादन हरिद्वार एवं मथुरा केन्द्रों में किया जा रहा है । वे वहाँ से मँगायी जा सकती हैं । उनके उत्पादन की विधि व्यवस्था सीख समझकर अपने क्षेत्र में भी उनका निर्माण किया जा सकता है ।

-जहाँ कुर्सी जमे हाल में दीपयज्ञ करना हो, वहाँ के लिए भिन्न प्रकार की व्यवस्था बनानी चाहिए । मात्र स्टेज पर कुछ थालियों में दीपक और अगरबत्तियाँ सजाकर मेजों पर रख दी जायें । मेजें भी पल्लवों से सजा दी जायें । इस प्रकार दीपक और अगरबत्ती स्टेज पर जलते रह सकते हैं और उपस्थित जन, अपने स्थान से मंत्रोच्चारण आदि करते रह सकते हैं । ऐसे यज्ञों में संगीत प्रवचन दीप यज्ञ सब एक ही क्रम में कर लेना चाहिए । संगीत प्रवचन लगभग डेढ़ घंटे तथा लगभग ५० मि० में दीपयज्ञ, कुल ढाई घंटे में आयोजन पूरा हो सकता है । यह व्यवस्था विशेष रूप से उन शहरों के लिए है जहाँ हॉल माँग कर ही अपना काम चलाना पड़ता है ।

-आयोजन की व्यय व्यवस्था का मोटा अनुमान लगा लिया जाय और इसी के आधार पर मिल जुलकर पैसे का प्रबंध कर लिया जाय । जिनसे पैसा मिला हो उन्हें पूरा हिसाब सुना दिया जाय; ताकि किसी को उंगली उठाने का अवसर न मिले ।

-यज्ञ के प्रारंभ में पवित्रीकरण, कलावा बाँधना, तिलक, देव पूजन स्वास्ति - वाचन आदि कृत्य करने होते हैं । अग्नि स्थापन मंत्रों के साथ-साथ दीपक जलाए जाते हैं । चौबीस बार गायत्री मंत्र का सामूहिक उच्चारण होता है । अन्त में शांति पाठ और नमस्कार । यह सब उपस्थित लोगों को याद हो तो सही उच्चारण में सहायता मिलेगी, और वे अगली बार उसी आधार पर अन्यत्र भी आयोजन कराने में समर्थ होंगे । इसके लिए एक छोटी पुस्तिका भी छपी है । उसे शिक्षित याज्ञिकों में आरंभ में ही बँटवा दिया जाय ।

-प्रवचनों के लिए निर्धारित विषय हैं -(१) दीपयज्ञों का स्वरूप और उद्देश्य (२) सतयुग की वापसी (३) आद्य शक्ति का अवतरण । जिनने इन तीनों विषयों को भली प्रकार समझा है, वे ही दीपयज्ञों के स्टेज पर प्रवचन करें । गायन के समय युग संगीत ही काम में लाए जाएँ । अप्रासंगिक गीतों से दिशा निर्धारण में बाधा पड़ती है । स्थानीय आयोजनों में वक्ता, गायकों को आवश्यक अभ्यास समय से पूर्व ही करा दिया जाना चाहिए ।

-समारोह के आरंभ और अंत में शंख एवं घड़ियालों का घोष हो । यह समय देवाह्वान और देव विसर्जन का है ।

-आयोजन के अवसर पर युग साहित्य का पुस्तकें बिक्री स्टाल अवश्य लगे । जिससे इच्छुकों को मिशन की विचार धारा जानने में सुविधा हो । पुस्तकों समय से पहले ही युग निर्माण योजना मथुरा अथवा शांतिकुंज हरिद्वार से मँगा लेनी चाहिए । डाक से मँगाने में पोस्टेज बहुत अधिक लगता है और रेल से मँगाने में समय लम्बा चाहिए । इसलिए समय रहते रेल से अथवा आते - जाते लोगों के हाथों साहित्य मँगाने का ध्यान रखना चाहिए ।

-आयोजन से पूर्व नगर के प्रमुख स्थानों को आदर्श वाक्य लिख कर सुसज्जित किया जाय; ताकि पूरा नगर आदर्शवादिता के वातावरण से शोभायमान लगे । घरों में आदर्श वाक्यों के स्टीकर लगाने का भी अभियान चलाया जाय ।

-प्रज्ञा मण्डल और महिला मण्डलों के पाँच - पाँच स्थानीय कार्यकर्ताओं को, अपना उत्तरदायित्व निर्वाह हेतु, आवश्यक प्रकाश प्राप्त करने के लिए, शांतिकुंज में चलने वाले किन्हीं सत्रों में सम्मिलित होने की तैयारी करनी चाहिए । एक महीने के सत्रों में जो न आ सकें वे दस-दस दिन वाले सत्रों से ही काम चलायें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

-दीपयज्ञों के साथ ही वहाँ के विचारशील लोगों के पाँच-पाँच सदस्यों वाले प्रज्ञा मण्डल गठित कर दिए जायँ । पाँच-पाँच शिक्षित महिलाओं के महिला मण्डल गठित हों । दोनों के लिए ही यह एक अनिवार्य कर्तव्य है कि उनके साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से चलते रहें । आरंभ में दोनों एक साथ भी चलते रह सकते हैं, पर जब महिला मंडल समर्थ होने लगे, पाँच से पच्चीस बनने का लक्ष्य पूरा कर लें तब दोनों के अलग-अलग साप्ताहिक आयोजन चलायें ।

-साप्ताहिक सत्संगों में आरम्भ में छोटा दीप यज्ञ हो; ताकि उस विधा से सभी अवगत हो जायँ और जहाँ आवश्यकता हो वहाँ उन्हें सरलता पूर्वक सम्पन्न कराते रहें । युग संगीत, सत्संकल्प का पाठ एवं स्थानीय कार्यक्रमों की रूप रेखा पर विचार विनिमय हो । दैनिक उपासना न बन पड़ने पर साप्ताहिक उपासना तो की ही जानी चाहिए । मुसलमानों में शुक्रवार, ईसाइयों में रविवार की उपासना चलती है । अपना भी कोई दिन होना ही चाहिए । गुरुवार या रविवार में से कोई एक दिन रखा जाय तो अच्छा है ।

-हर दिन एक घन्टा समयदान का जो प्रावधान है, उसे भी एक ही दिन ७ घंटे देकर पूरा कर लिया जाय । उस दिन प्रभात फेरी, सत्संग मंडल एवं झोला पुस्तकालय के तीनों कार्य साथ-साथ चल सकते हैं । सत्संग में आने वाले सदस्य अपने सम्पर्क वालों को पुस्तकें पढ़ाने ले जाया करें और अगले सप्ताह वापिस कर दिया करें । अंशदान वाले पैसों से नई पुस्तकें मँगाते रहें ।

-साप्ताहिक सत्संगों का आरम्भ में इतना ही क्रम चल पड़े तो पर्याप्त है । आगे चलकर उन कार्यों को सम्पन्न कराना होगा जिन पर सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन की अनेकानेक सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जानी है । देश और विदेशों में, सभी भाषाओं में लोकमानस के परिष्कार का बहुमुखी कार्य करना है । इन बड़ी योजनाओं में भी प्रतिभाशाली लोग हाथ बटाएँगे ही ।

-जन-जन में नव जीवन संचार करने के लिए जहाँ युग साहित्य का अधिकाधिक विस्तार होना आवश्यक है, वहाँ वह भी आवश्यक है कि प्रचार उपकरणों का सहारा लेकर, कार्य को और भी अधिक सरल, प्रभावी एवं व्यापक बनाया जाय । इन प्रयोजनों के लिए (१) लाउडस्पीकर (२) टेपरिकार्डर (३) ज्ञान रथ (४) बैटरी तथा चार्जर जैसे उपकरणों की आवश्यकता पड़ेगी । इसका प्रबंध मिलजुल कर या स्मारिका प्रकाशन योजना के अंतर्गत विज्ञापनों की बचत से की जा सकती है । दीपयज्ञों के अवसर पर भावनाशीलों से प्राप्त दान में से भी इन के लिए धन बचाया जा सकता है ।

- प्रयत्न यह होना चाहिए कि हर भावनाशील गाँव में, एक दीप यज्ञ सम्पन्न हो, फिर वही स्थान समीपवर्ती ग्रामों का एक प्रकाश केन्द्र बने । जल कणों की तरह उस क्षेत्र में सत्प्रवृत्तियों की हरियाली उगायें और जैनरेटरों की तरह ऊर्जा विस्तार की आवश्यकता पूरी करें । क्षेत्रीय प्रचार के लिए आवश्यक साधन एवं प्रशिक्षित कार्यकर्ता भी उनके पास हों जो समीपवर्ती क्षेत्रों में संपर्क साधें और युग चेतना का संचार करें ।

-इस आयोजन के दो प्रमुख लक्ष्य हैं । व्रतधारी प्रज्ञा पुत्रों के पाँच-पाँच सदस्यों वाले पुरुष तथा महिला मण्डल खड़े करना- यह रचनात्मक कार्य है । दूसरा सुधारात्मक जिसे दहेज विरोधी आन्दोलन कहा जा सकता है । इन दोनों को सफल बनाने के लिए हर जीवन्त को प्राण पण से प्रयत्न करना चाहिए । इनमें से प्रथम खादी आन्दोलन और दूसरा नमक सत्याग्रह की तरह जन-जन के मन में जमाया जा सके, इसके लिए सभी प्रज्ञा पुत्र अपनी सामर्थ्य भर सब कुछ करें । इन्हीं के सहारे यह आँका जा सकेगा कि उस क्षेत्र में प्रज्ञा प्रकाश की जड़ जमी ।

आदर्श वाक्य लेखन आन्दोलन को नऐ सिरे से नई गति दी जाय । स्टीकर चिपकाना सिनेमा में स्लाइड दिखाना भी इस प्रकार का एक प्रचार प्रयोजन है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

-आशा की गई है कि इस समुद्र मंथन से ऐसी प्रतिभाएँ उभरेंगी जो मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का स्वप्न साकार कर सकें । प्रतिभाओं को ढूँढना, निखारना, उभारना, खरादना और उन्हें बहुमूल्य हीरों की तरह यशस्वी बनाना, प्रस्तुत दीप यज्ञ का चरम लक्ष्य है । इक्कीसवीं सदी में वांछित महान परिवर्तन इन्हीं प्रयासों से संभव हो सकेगा ।

सरल एवं संक्षिप्त विधि-विधान

विधि-संक्षिप्त यज्ञों के अनुरूप ही हैं । सब याजक व्यवस्थित बैठें । थालियों में ५ दीपक एवं ५ अगरबत्ती स्टैण्ड सज्जा पूर्वक रखे जायें । एक अगरबत्ती स्टैण्ड में २ से ५ तक अगरबत्तियाँ लगाई जायें । पंचपात्र पर्याप्त संख्या में हों तो उनका उपयोग करें, अन्यथा सिंचन द्वारा पवित्रीकरण एवं भावनात्मक षट्कर्म करायें । देवमंच के पास एक याजक को पूजन आदि के लिए बिठा दिया जाय । रक्षाविधान तक का क्रम यथावत् चलाया जा सकता है । समय की कमी हो तो देव पूजन मंत्रों में कमी की जा सकती है । स्वस्तिवाचन के समय दर्शकों के हाथ में भी अक्षत पुष्प दिये जावें । अग्नि स्थापना के साथ प्रत्येक वेदी में एक दीपक जला दिया जाय । समय हो तो यन्मण्डलम् का गान करें । अग्नि प्रदीपन के साथ अगरबत्ती का एक गुच्छक जलायें । समिधाधान के साथ एक-एक कर के चार अगरबत्तियाँ प्रज्वलित करें । गायत्री मंत्र की आहुति के लिए स्वाहा सहित सस्वर पाठ किया जाय । २४, ५१, १०१ जितनी आहुति करना चाहें करें । आहुति प्रारम्भ करते ही सब दीपक एक साथ ही जलाये जा सकते हैं, तथा यदि उनमें घृत कम हो, तो एक दीपक पूर्ण होने लगे तब दूसरा प्रज्वलित कर दिया जाय । दीपक में घृत तथा अगरबत्ती से हवन सामग्री बराबर जलती रहती है । मंत्र के साथ स्वाहा कहते हुए उस ज्वलन प्रक्रिया के भावना और प्रेरणा का संयोग किया जाता है । दीपयज्ञ में यह प्रयोग अन्य यज्ञों से कम प्राणवान नहीं होता । मंत्र पाठ के साथ यज्ञ का पूरा क्रम शास्त्रीय ढंग से चलता है ।

आहुति पूरी होने पर स्विष्टिकृत छोड़कर पूर्णाहुति ही की जाती है । पहले याजकों को प्रतिज्ञाएँ स्मरण कराई जाएँ । विधिवत् संकल्प बोलकर उन्हें निभाने का वचन लिया जाय । तब पूर्णाहुति मंत्र के साथ संकल्प के अक्षत दीपवेदी पर चढ़वाये जायँ । इसके बाद आरती एक ही स्थान-देव मंच पर कर ली जाय । घृत हाथ में लगाये बिना ही सूर्य उपस्थान की तरह हथेलियाँ दीपयज्ञ वेदी की ओर करके घृत अवघ्राण मंत्र बोलें । शक्ति प्राप्ति का भाव करें । अगरबत्ती की भस्म से भस्मधारण कर लें । शेष क्रम हवन विधि के क्रम से आगे चलाया जा सकता है । समय की मर्यादा देखते हुए विवेकपूर्वक क्रम बढ़ाने-घटाने का निर्णय करना चाहिए । अन्त में सत्संकल्प पाठ अवश्य कराया जाय । सत्संकल्प के १८ वाक्य गीता के १८ अध्याय जैसे महत्वपूर्ण हैं । जीवन में उनके प्रवेश के साथ नया आलोक उभरता है ।

दीपयज्ञ के विधि - विधान को 'युगयज्ञ पद्धति' नाम दिया गया है । इसके निर्माण में श्लोक पद्धति और सूत्र पद्धति दोनों का उपयोग हुआ है । योग दर्शन, ब्रह्मसूत्र आदि ग्रंथ श्लोक पद्धति में नहीं सूत्र पद्धति में ही हैं । समय की माँग के अनुरूप युग यज्ञ पद्धति सूत्र प्रधान है । समझने, बोलने, दुहराये जाने में सुगम होने के कारण यह पद्धति देश - विदेश में बहुत लोकप्रिय हुई है । कोई भी सुशिक्षित लोकसेवी मानस के कार्यकर्ता, दो चार दिन के अभ्यास से ही इस विधि से यज्ञ संचालन की कुशलता प्राप्त कर सकते हैं । इसके माध्यम से जन मानस के परिष्कार के अभियान को तीव्रगति से व्यापक बनाया जाना संभव है । प्रक्रिया इस प्रकार है -

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१. पवित्रीकरण

१-१. प्रेरणा-

यज्ञ शुभ कार्य है, देव कार्य है । यज्ञ के प्रयोग में आने वाली हर वस्तु शुद्ध और पवित्र रखी जाती है । देवत्व से जुड़ने की पहली शर्त पवित्रता ही है । हम देवत्व से जुड़ने के लिए, देव कार्य करने योग्य बनने के लिए मंत्रों और प्रार्थना द्वारा भावना, विचारणा एवं आचरण को पवित्र बनाने की कामना करते हैं ।

१-२. क्रिया और भावना -

सभी लोग कमर सीधी करके बैठें । दोनों हाथ गोद में रखें । आँखें बंद करके ध्यान मुद्रा में बैठें ।

-अब मंत्रों सहित जल सिंचन होगा । भावना करें कि हम पर पवित्रता की वर्षा हो रही है ।

-हमारा शरीर धुल रहा है, आचरण पवित्र हो रहा हैं ।

-हमार मन धुल रहा है, विचार पवित्र हो रहे हैं ।

-हमारा हृदय धुल रहा है, भावनाएँ पवित्र हो रही हैं ।

१-३. (सिंचन करने वालों को संकेत करें तथा सिंचन मंत्र सूत्र खंड-खंड में दुहरवायें, विराम के स्थानों पर / चिह्न लगे हैं)

-ॐ पवित्रता मम/ मनःकाय / अन्तः करणेषु/ संविशेत् ।

(सब पर सिंचन होने तक पुनः पुनः उक्त वाक्य दुहरायें)

१-४. भावना करें कि हनें पवित्रता का अनुदान मिला, हम अंदर-बाहर पवित्र हो गये । हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें-

-पवित्रता हमें सन्मार्ग पर चलाये-**ॐ पवित्रता नः/ सन्मार्गं नयेत् ।**

-पवित्रता हमें महान् बनाये -**ॐ पवित्रता नः महत्तां प्रयच्छतु ।**

-पवित्रता हमें शांति प्रदान करे-**ॐ पवित्रता नः/ शान्तिं प्रददातु ।**

२. सूर्य ध्यान- प्राणायाम

२-१. प्रेरणा -

सूर्य से सारे विश्व में प्राण का संचार होता रहता है । वृक्ष- पशु आदि प्रकृति से सहज क्रम में सीमित प्राण शक्ति धारण करते रहते हैं । मनुष्य में यह क्षमता है कि वह भावनाओं के अनुरूप बड़ी मात्रा में प्राण शक्ति को आकर्षित कर सकता है, धारण कर सकता है । शरीर से सामान्य दिखने पर भी महाप्राण- महामानवों ने असाधारण कार्य किये हैं । हम भी उज्ज्वल भविष्य की दिशा में आगे बढ़ने के लिए विशेष प्राणशक्ति धारण करने का प्रयोग करते हैं ।

२-२. क्रिया और भावना-

कमर सीधी करके ध्यानमुद्रा में बैठें । ध्यान करें कि हमारे चारों ओर श्वेत बादलों की तरह दिव्य प्राण का समुद्र लहरा रहा है । हम प्रार्थना करते हैं:-

-हे विश्व के स्वामी-हे महाप्राण, हमें बुराईयों से छुड़ाइये,

श्रेष्ठताओं से जोड़िये ।

- ॐ विश्वानि देव सवितुः, दुरितानि परासुव, यद्भद्रं तन्न आसुव ।

(यह मंत्र दुहरवाने के बाद प्राणायाम करने का निर्देश करें ।)

क्रिया-

धीरे-धीरे दोनों नथुनों से श्वाँस खींचें, थोड़ा रोकें, धीरे से छोड़ें, थोड़ी देर बाहर रोकें । इस क्रिया के साथ भाव संकेत देते रहें ।

भाव निर्देश -

प्राणायाम के साथ भावना करें-

-हमारा रोम-रोम सविता का तेज सोख रहा है, हमारा शरीर प्राणवान बन रहा है ।

-हमारा मन सविता का तेज सोख रहा है, हमारा मन तेजस्वी हो रहा है ।

-हमारा हृदय सविता का तेज सोख रहा है, हमारा हृदय तेजोमय हो रहा है ।

-हम बाहर-भीतर से तेजोमय हो गये हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

३. तिलक

३-१ प्रेरणा-

तिलक श्रेष्ठ को किया जाता है । शरीर की सारी क्रियाओं का संचालन विचारों से-मस्तिष्क से होता है । शरीर विचारों से चलने वाला यंत्र है । विचारों में श्रेष्ठता का-देवत्व का संचार होता रहे, तो सारे क्रिया-कलाप श्रेष्ठ होते हैं और मनुष्य गौरव प्राप्त करता है । मस्तिष्क को देवत्व का स्पर्श देने के लिए हम तिलक करते हैं ।

३-२. क्रिया और भावना -

रोली या चंदन, सभी याजक अपनी अनामिका उँगली में लें । उसे सामने रखें तथा निगाह उसी पर टिकायें ।

प्रार्थना करें कि देव शक्तियाँ इस चन्दन-रोली के माध्यम से हमारे मस्तिष्क को सुसंस्कारित बनायें

प्रार्थनाएँ भावना पूर्वक सुनें, समझें और संस्कृत सूत्र दुहरायें:-

-हमारा मस्तिष्क शान्त रहे-

ॐ मस्तिष्कं/ शान्तं भूयात् ।

इसमें अनुचित आवेश प्रवेश न करने पायें-

ॐ अनुचितः आवेशः/ मा भूयात् ।

-हमारा मस्तक सदा ऊँचा रहे-

ॐ शीर्ष/ उन्नतं भूयात् ।

-इसमें विवेक सदैव बना रहे-

ॐ विवेकः / स्थिरी भूयात् ।

इस प्रकार प्रार्थना के बाद गायत्री मंत्र बोलते हुए भावनापूर्वक चंदन-रोली मस्तक पर लगा लें ।

४. संकल्प सूत्र धारण

४-१. प्रेरणा-

पूज्य गुरुदेव का कथन है " मनुष्य महान् है और उससे भी महान् है, उसका सृजेता" । इन दिनों मनुष्य मात्र पर समस्याओं के संकट के जो बादल छाये हुए हैं, उनका निवारण इस सृष्टि में केवल मनुष्य ही कर सकता है । यदि मनुष्य को उचित मार्ग न सूझ पड़े अथवा उसकी शक्ति कम पड़े, तो बचने का एक ही रास्ता रह जाता है कि सृजेता से अधिक प्रखर सूझबूझ एवं शक्ति प्राप्त की जाय । आज ऐसी ही स्थिति है, जब मनुष्य स्वयं पैदा किये संकटों के सामने अपने को लाचार अनुभव कर रहा है । ऐसे में परमात्मा से नयी सूझबूझ एवं सहायता अपेक्षित है ।

पूज्य गुरुदेव का वचन है कि सृजेता-परमात्मा, मनुष्यता पर छाये संकटों का निवारण करके, उज्ज्वल भविष्य की संरचना का संकल्प कर चुका है । सूक्ष्म जगत् में वह प्रवाह उमड़ पड़ा है । उसे स्थूल-दृश्य रूप देने के लिए शरीरधारी ईश्वरनिष्ठों की आवश्यकता है । ऐसे श्रद्धावान् व्यक्ति चाहिए, जो दैवी संकल्प का एक-एक, छोटा-छोटा अंश अपने जीवन में धारण करें, उसे आचरण में लाकर वातावरण बदलना प्रारम्भ करें ।

इसे यों भी कह सकते हैं कि उज्ज्वल भविष्य रचने के लिए महाकाल ने नैष्ठिकों को सक्रिय साझेदारी के लिए आमंत्रित किया है । इतिहास साक्षी है कि युग परिवर्तन करने वाली अवतार चेतना के साथ साझेदारी अनुपम सौभाग्य का आधार बनती है । रीछ, बानरों, गीध-गिलहरी, ग्वाल-पाण्डव, बुद्ध के चीवरधारी आदि ऐसे ही सौभाग्यशाली थे ।

वर्तमान परिवर्तन प्रवाह में, महाकाल के साथ साझेदारी के सूत्र हैं:- उपासना,साधना, आराधना ।

४-१-१. उपासना:-

(पास बैठना) अपनी चेतना को सांसारिक विषयों से समेट कर, परमात्म चेतना के निकट ले जाना, उससे भावनात्मक आदान-प्रदान करना, उससे एक होने का प्रयास करना ।

विधि:-

भावना की जाय कि जिस तरह उगते सूर्य का प्रकाश हमें चारों ओर से घेर लेता है, उसी प्रकार हमारे आवाहन से परमात्म चेतना हमारे सब ओर छा गयी है । गायत्री मंत्र के जप के माध्यम से हम उस दिव्य प्राण की धारा को अपने अंदर, शरीर, मन, अंत: करण में धारण कर रहे हैं । यह प्रयोग कम से कम पाँच मिनट नित्य किया जाय । अधिक हो सके तो अच्छा है ।

४-१-२. साधना:-

(अपने जीवन को ईश्वरीय अनुशासन के अनुरूप साधना) अंत:प्रेरणा, स्वाध्याय, सत्संग आदि माध्यमों से उज्ज्वल भविष्य के अनुरूप प्रवृत्तियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं अभ्यास डालने का प्रयास किया जाय । सत्प्रवृत्तियों, सद्गुणों , सत्प्रयासों को संकल्पपूर्वक अपनाया, जगाया और बढ़ाया जाय ।

विधिः-

महाकाल की प्रेरणा से पूज्य गुरुदेव ने उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ने योग्य, जीवन के हर पक्ष को अपनी तप साधना से सिद्ध करके, साहित्य के रूप में उसे सबके लिये सुलभ बना दिया है । युग साहित्य का अध्ययन, मनन-चिंतन नियमित करने से जीवन साधना का प्रखर क्रम चल पड़ता है । पूज्यवर के विचारों को आत्मसात् करने के लिए मिशन की पत्रिका या पुस्तिका का न्यूनतम एक लेख नित्य पढ़ें ।

४-१-३. आराधनाः-

(अपने पुरुषार्थ से परमात्मा की सेवा का प्रयास) परमात्मा अरूप-अशरीर है, उसे शरीरधारियों की सेवा की आवश्यकता नहीं है । किन्तु यह संसार उसका दृश्य रूप है, ऐसा मानकर उसके इस सुन्दर बगीचे को और अधिक सुन्दर बनाने का प्रयास करना ही सच्ची ईश्वर आराधना है ।

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जिसकी मूल आवश्यकताएँ बहुत कम हैं और क्षमताएँ बहुत बड़ी हैं । अपनी क्षमताओं का उपयोग केवल अपने लिए किया जाय, तो जीवन में व्यसन बढ़ाने होंगे । इसलिए मानवी क्षमताओं का भरपूर प्रयोग करने के इच्छुक समझदारों के लिए एक ही रास्ता रह जाता है कि अपनी शेष क्षमताओं का उपयोग ईश्वर आराधना, सेवा साधना के लिए ही करें । ऐसा न करने पर या तो क्षमताओं का जागरण ही नहीं होगा - अथवा दुरुपयोग होने लगेगा । जो व्यक्ति लोक सेवा के लिए अपनी क्षमताएँ लगाने का प्रयास करते हैं, उन्हें दैवी शक्ति प्रवाह मिलने लगता है, क्षमताएँ बढ़ती हैं और सुख-सौभाग्य का सृजन करके सार्थक कहलाती हैं ।

विधिः-

उज्ज्वल भविष्य की दिशा में बढ़ने के जो सूत्र अपने हाथ उपासना-साधना के माध्यम से आयें, उन्हें अपने परिचित परिजनों में, समाज में जन-जन तक प्रसारित करने का भाव भरा प्रयास करते रहें । उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना - गायत्री उपासना करने तथा मिशन के विचारों के अध्ययन की प्रेरणा दें ।

४-१-४. दो तपः-

उपासना, साधना, आराधना को जीवन में स्थान देने के लिए दो तप करने पड़ते हैं (१) समयदान (२) अंशदान ।

समयदानः-

समय मनुष्य की मूल सम्पदा है । समय समाप्त अर्थात् जीवन समाप्त । जब तक जीवन है, तब तक समय है । जो निर्जीव जीवन जीते हैं, उन्हें भगवान् के लिए समय खोजे नहीं मिलता; जबकि भगवान् ने सबको बिना भेद-भाव के प्रतिदिन २४ घंटे का समय दिया है ।

विधिः-

संकल्प करें कि २४ घंटे में से कम से कम एक घंटे का समय उपासना-साधना - आराधना के लिए निकालेंगे । मनुष्य की हर योग्यता हर विभूति उसके समय के साथ जुड़ी है । भगवान् की दी विभूतियाँ भगवान् के लिए लगानी हैं, तो समय भगवान् के लिए निकालना ही होगा ।

अंशदानः-

सारे पदार्थ, सारे साधन भगवान् के बनाये हुए हैं । मनुष्य अपने उपयोग के लिए उनमें थोड़ा हेर-फेर भर कर सकता है । परमात्मा के बनाये साधन, परमात्मा की दी विभूतियों के सहारे हमने अपने अधिकार में ले रखे हैं । उनका एक अंश भी भगवान् के निमित्त न निकाल पाना स्वयं अपने दुर्भाग्य को न्यौता देना है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विधिः-

संकल्प करें कि सत्साहित्य प्रसार के लिए न्यूनतम २० पैसा प्रतिदिन अवश्य निकालेंगे। जिनसे बन पड़े, वे एक दिन की आजीविका दें ।

४-२. क्रिया और भावनाः-

उज्ज्वल भविष्य की रचना के लिये महाकाल के साथ साझेदारी के लिए-उपासना, साधना, आराधना, समयदान एवं अंशदान के सम्बन्ध में जो भी व्रत लिये हैं, उनका संकल्प ग्रहण करना है ।

साझेदारी के इच्छुक व्यक्ति संकल्प सूत्र-कलावा बाँयें हाथ में लें, दाहिने से उसे ढँक लें । संकल्प करें :-

-हम ईश्वर का अनुशासन स्वीकार करते हैं- **ॐ ईशानुशासनम्-स्वीकरोमि ।**

-मर्यादाओं का पालन करेंगे- **ॐ मर्यादां/ चरिष्यामि ।**

-जो वर्जित हैं, वे आचरण नहीं करेंगे-**ॐ वर्ज्यं /नो चरिष्यामि ।**

संकल्प सूत्र मस्तक से लगायें और गायत्री मंत्र का एक साथ उच्चारण करते हुए परस्पर बाँध लें । अब हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-दुहरवायें-

हे महाकाल ! उज्ज्वल भविष्य की रचना के लिए, अपने संकल्पों को पूरा करने के लिए हमें उपयुक्त शक्ति, मनोवृत्ति तथा प्रेरणा दें । हे प्रभो ! हमारे संकल्प पूरे हों, हम सुख-सौभाग्य, श्रेय, पुण्य तथा आपकी कृपा के अधिकारी बनें । आपसे दिव्य अनुदान पाने और उन्हें जन-जन तक पहुँचाने की हमारी पात्रता बढ़ती रहे ।

निर्देशः-

व्रत निर्धारण अपने मन में भावनापूर्वक कर लें और उनका निष्ठापूर्वक निर्वाह करें ।

५. कलश स्थापन

५-१. प्रेरणाः-

परमात्मा की शक्तिधाराएँ, देवशक्तियाँ विश्व की व्यवस्थाएँ बनाने में जुटी रहती हैं । हम लोकमंगल के लिए यज्ञ कर रहे हैं । ऐसे कार्यों में देव शक्तियाँ अवश्य सहयोग करती हैं । हम उनका आवाहन करते हैं, ताकि वे हमें मार्गदर्शन दें, शक्ति दें ।

क्या हमारे बुलाने से देवशक्तियाँ आयेंगी ? हाँ! यदि हमारी श्रद्धा-भावना और श्रेष्ठ कर्म करने की ललक उनकी कसौटी पर खरी उतरती हैं, तो वे प्रार्थना स्वीकार करती हैं ।

सभी देव शक्तियों को हम कलश में स्थापित करते हैं । कलश ब्रह्माण्ड का प्रतीक है । इसमें धारण करने की क्षमता है-पात्रता है और श्रद्धा रूप जल है । विभिन्न प्रकार के देवता एक साथ सहयोगपूर्वक रह लेते हैं, इसीलिए देवता कहलाते हैं ।

५-२. क्रिया और भावनाः-

निर्धारित प्रतिनिधि कलश पूजन करें । मंत्रोच्चार के समय सब लोग हाथ जोड़कर मन ही मन प्रार्थना करें ।

हे देव ! हमारी श्रद्धा निखारें । हे देव! सत्कार्य करने की हमारी प्रवृत्ति उभरे । हे देव! भिन्न-भिन्न स्वभावों और भिन्न-भिन्न योग्यताओं को, सत्कार्यों के लिए एक जुट होना सिखायें ।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।। १।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।। २ ।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ।
अत्र गायत्री सावित्री शान्ति पुष्टिकरी सदा ।। ३।।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।। ४ ।।
आदित्याः वसवो रुद्राः विश्वेदेवा सपैतृकाः ।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।। ५ । ।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।। ६।।

६. गुरु वन्दना

६-१. प्रेरणाः-

परमात्म चेतना दो रूपों में कार्य करती है । एक रूप है- नियन्ता का, जो सारे विश्व को एक अनुशासन में चलाता है । सही चलने वालों को पारितोषिक तथा गलत चलने वालों को दण्ड देता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरा है- गुरुः जो विश्व व्यवस्था के अनुशासन समझाता है । उनको जीवन के अभ्यास क्रम में शामिल करने के लिये प्रेरणा, मार्गदर्शन, सहयोग देता है ।

हम यज्ञ के माध्यम से उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ने की दिशा, शक्ति और प्रवृत्ति चाहते हैं । इसलिए गुरुदेव का श्रद्धापूर्वक आवाहन-वन्दन करते हैं ।

६-२. क्रिया और भावनाः-

प्रतिनिधि देव मंच पर गुरुदेव के प्रतीक का पूजन करें । सभी लोग हाथ जोड़कर मंत्रोच्चारण के साथ भावना करें:- हे परम कृपालु ! हमें मार्गदर्शन और सहयोग देने के लिए अपनी उपस्थिति का बोध बराबर कराते रहें-हमें भटकने न दें, जगाते रहें- बढ़ाते रहें ।

ॐ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
ॐ यथा सूर्यस्य कान्तिस्तु श्री रामे विद्यते हि या ।
सर्वशक्तिस्वरूपायै देव्यै भगवत्यै नमः ।।
ॐ श्री गुरवे नमः आवाहयामि, स्थापयामि,पूजयामि ।

७. देव नमस्कार

७-१. प्रेरणाः-

नमन का अर्थ है-अभिवादन-प्रणाम । देव शक्तियों का अभिवादन अर्थात् उनका सम्मान करना, हमारे मन का झुकाव देवत्व की ओर होना चाहिए । प्रणाम नम्रता-शालीनता का भी प्रतीक है । जो विनम्र होता है, सो पाता है; इस उक्ति का अर्थ है कि सज्जन-शालीन को सब लोग कुछ देना चाहते हैं, उद्दण्ड अहंकारी को नहीं ।

हमारा अभ्यास देवत्व की ओर अग्रगमन का बने । देवत्व के नौ स्रोत-स्वरूप यहाँ दर्शाये गये हैं । जहाँ वे शक्तियाँ समाज में दिखें, वहीं झुकना कल्याणकारी है ।

७-२. क्रिया और भावनाः-

सभी लोग हाथ जोड़ें । जिस क्रम से कहा जाय, उसी क्रम से देव शक्तियों का स्मरण करें । उन्हें नमन करें । वे हमें सही मार्ग प्रदान करती रहें । प्रगति के लिए सहयोग प्रदान करती रहें । (हिन्दी के वचन सुनें, संस्कृत सूत्र दुहरायें)

१- जो सदा देती रहती हैं और देते रहने की प्रेरणा प्रदान करती हैं, उन देव शक्तियों को नमन ।

ॐ सर्वाभ्यो/ देवशक्तिभ्यो नमः ।

२-जिन्होंने अपने आप को दिव्य बनाया और हमारे लिए दिव्य वातावरण बनाने हेतु स्वयं को खपाया, उन देवपुरुषों को नमन ।

ॐ सर्वेभ्यो/ देवपुरुषेभ्यो नमः ।

३- जिन्होंने अपने आप को जीता और सत्प्रवृत्ति-सम्वर्धन में प्राणपण से संलग्न रहे, उन महाप्राणों को नमन ।

ॐ सर्वेभ्यो/ महारुद्रेभ्यो नमः ।

४- जो मूढ़ता और अनीति से जूझने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं, उन महारुद्रों को नमन ।

ॐ सर्वेभ्यो/ महा रुद्रेभ्यो नमः ।

५- अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले आदित्यों को नमन ।

ॐ सर्वेभ्योः/ आदित्येभ्यो नमः ।

६- ममता की मूर्ति, शुभ-सद्भाव जगाने वाली, कुपुत्रों को सुधारने वाली, सुपुत्रों को दुलारने वाली समस्त मातृशक्तियों को नमन ।

ॐ सर्वाभ्यो/ मातृशक्तिभ्यो नमः ।

७- जिनमें सुसंस्कारों की सुवास भरी है, जो हर संपर्क में आने वाले को पुण्य-प्रेरणा प्रदान करते हैं, उन दिव्य क्षेत्रों को नमन ।

ॐ सर्वेभ्यः/ तीर्थेभ्यो नमः ।

८- जिसके अभाव में मनुष्य अज्ञान-अंधकार में ही भटकता रह जाता है, उस महाविद्या को नमन ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ॐ महाविद्यायै नमः ।

९- जिसे दुर्बलता से लगाव नहीं - जो उद्दण्डता को सहन नहीं करता, उस महाकाल को नमन ।

ॐ एतत्कर्मप्रधान/श्रीमन्महाकालाय नमः ।

८- पंचोपचार पूजन

८-१. प्रेरणाः-

जिसके प्रति वास्तविक श्रद्धा हो, तो उसका पूजन करने का मन होता है । पूजन में सम्मान की भावना को क्रिया रूप में व्यक्त किया जाता है । श्रद्धा को सक्रिय बनाना ही पूजन का वास्तविक स्वरूप है ।

पूजन में कुछ अर्पित किया, चढ़ाया जाता है । जिसके प्रति हम श्रद्धा से नमन कर रहे हैं, उसका कार्य-प्रभाव क्षेत्र बढ़े, इसके लिए अपना योगदान देने के लिए मन आकुल - व्याकुल हो उठता है । यह श्रद्धा भरा सहयोग ही वास्तविक पूजन सामग्री है । पंचोपचार पूजन के पाँच प्रतीक हमारी पाँच प्रकार की सामर्थ्यों के प्रतीक हैं, जिन्हें हम देव शक्तियों के निमित्त अर्पित करते हैं ।

८-२. क्रिया और भावना-

देव मंच के पास नियुक्त प्रतिनिधि जल, गन्धाक्षत, पुष्प, धूप-दीप एवं नैवेद्य मंत्रोच्चार के साथ अर्पित करें । सभी लोग हाथ जोड़कर प्रार्थना सुनें - भावनाएँ अर्पित करें ।

-हे देव ! जल रूप में हमारी श्रद्धा को स्वीकार करें ।

-हे देव ! गन्ध-अक्षत के रूप में हमारे पुण्यकर्मों, हमारी अटूट निष्ठा को स्वीकारें ।

-हे देव ! पुष्प के रूप में हमारे अन्तः का उल्लास आपको अर्पित है ।

-हे देव! धूप-दीप के रूप में हमारी प्रतिभा और योग्यता को स्वीकार करें ।

-हे देव ! नैवेद्य के रूप में हमारे साधन-सम्पदा का एक अंश समर्पित है । इसे स्वीकार करें । मंत्र दुहरवायें:-

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः/ जलम्/ गन्धाक्षतम्/ पुष्पम्/ धूपम्/ दीपम्-नैवेद्यम्/ समर्पयामि ।।

अब हाथ जोड़कर नमस्कार करें:-

ॐ नमोऽस्त्वनताय सहस्त्रमूर्तयेसहस्त्रपादक्षिशिरोरुबाहवे सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटीयुगधारिणे नमः ।।

९. अग्नि स्थापना

९-१. प्रेरणाः- ऋग्वेद में अग्नि को आराध्य और पुरोहित कहा है । मनुष्य ने अग्नि-ऊर्जा का उपयोग जब से सीखा, तभी से उसकी प्रगति के अगणित मार्ग खुलते चले गये । अग्नि आराध्य तो है ही, किन्तु साथ ही उसे पुरोहित, प्रगतिशील हित का मार्गदर्शक भी स्वीकार करना होगा । उसकी शिक्षाओं से जीवन का कल्याणकारी उपयोग सम्भव है । यह शिक्षाएँ हैं:-

-अग्नि की गति ऊपर की ओर सहज ही है । अग्नि के सान्निध्य से मनुष्य ऊपर की ओर चलना सीख ले, तो पतन का प्रश्न ही न उठे ।

-अग्नि स्वयं प्रकाशित है । मनुष्य अपनी प्रज्ञा को जागृत रखे, तो अन्धकार-अज्ञान में भटकने की स्थिति ही न बने ।

-अग्नि से गर्मी-ऊर्जा निकलती है । मनुष्य अपने अन्दर प्रतिभा जागृत कर ले तो दीन-हीन क्यों रहें ?

-अग्नि में जाकर हर पदार्थ अग्नि रूप हो जाता है । हम भी ऊपर उठने, प्रकाश और ऊर्जा पैदा करने की प्रवृत्तियाँ अपने संसर्ग में आने वालों में पैदा कर सकते हैं ।

-अग्नि को जो कुछ प्राप्त होता है, वह सब में समान रूप से वितरित कर देते हैं- अपने लिए कुछ बचाकर रखने की प्रवृति अग्नि की नहीं है । हम भी संग्रह के स्थान पर वितरण की वृत्ति अपनाएँ ।

अग्नि स्थापना के साथ अपने अन्दर इन्हीं सत्-प्रवृत्तियों की स्थापना की प्रार्थना की जाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । दीपक-अगरबत्ती की तरह हम भी तेजस् को धारण करने में समर्थ हों ।

९-२. क्रिया और भावनाः-

मंत्रोच्चार के साथ दीपक अगरबत्ती जलायें । मंच पर स्वयं सेवक अगरबत्तियों को क्रमशः जलायें, ताकि अंत तक क्रम चलता रहे ।

यदि याजकों के पास थाली में दीपक-अगरबत्ती हैं, तो वे पहले एक दीपक और एक अगरबत्ती ही जलायें । दीपक में घृत डालते रहने अथवा एक के बाद दूसरे दीपक और अगरबत्ती को प्रज्वलित करते रहने का क्रम बनाये रखें । अग्नि स्थापना के समय भावना करें-

-हे अग्निदेव ! हमें ऊपर उठना सिखायें ।
-हमें प्रकाश से भर दें ।
-हमें शक्ति सम्पन्न बनायें ।
- हमें आपके अनुरूप बनने तथा दूसरों को अपने अनुरूप बनाने की क्षमता प्रदान करें ।
-हम भी आपकी तरह सुगन्धि और प्रकाश बाँटने लगें ।

ॐ अग्ने नय सुपथा राये, अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।

१०. गायत्री स्तवन

१०-१. प्रेरणाः- गायत्री महामंत्र का देवता है ''सविता'' । सविता प्रकाश, ऊर्जा, चेतना के आदि स्रोत को कहते हैं । भूमण्डल के लिए वह प्रत्यक्ष स्रोत सूर्य है, इसलिए सामान्य रूप से सविता से सूर्य की संगति बिठा ली जाती है । सविता को ज्योति पुंज, दिव्य मण्डल के रूप में ही जाना जा सकता है । परमात्मा को उच्चतम आदर्शों-शक्तियों का समन्वय-समुच्चय कहा जाता है । इस प्रकार परमात्मा के प्रकट-भासित होने वाले स्वरूप को ही सविता कहा गया है ।

गायत्री स्तवन में उसी प्राण के, शक्ति के, प्रकाश एवं ऊर्जा के आदि स्रोत चेतना युक्त दिव्य मंडल को संबोधित किया गया है । उसकी महानताओं, दिव्य क्षमताओं का स्मरण करते हुए उससे प्रार्थना की गयी है कि वह हमें पवित्र बनाये ।

वह ''सविता'' अनादि, स्वप्रकाशित, सभी लोकों का प्रकाशक, सभी तेजों का विशाल पुंज है । दुख-दारिद्रय, व्याधियों आदि को नष्ट करने वाला वह त्रैलोक्य में देवों, सिद्धों, ऋषियों सभी जनों से पूजित है । उसकी महिमा का गान वेदों, ज्ञानियों, सिद्धों, चारणों ने किया है । वह उत्पत्ति, पालन और प्रलय की शक्तियों से युक्त, काल का भी काल (महाकाल) अनादि रूप है । वही सब प्राणियों में विशुद्ध आत्मतत्व के रूप में स्थित होकर सबका पालन-नियंत्रण करता है । वह अगम्य है, ज्ञान का धन है, सूक्ष्म अन्तःकरण के योग से उसका बोध होता है । सिद्ध-योगीजन उस तक पहुँचने के लिए योग मार्ग का अनुसरण करते हैं । जिसका स्मरण वेदज्ञ, ब्रह्मज्ञ सदैव करते रहते हैं, उस दिव्य ज्ञान पुंज को नमन करते हुए हम उससे बार-बार उस पवित्रता की याचना करते हैं,जो हमें उसकी कृपा का पात्र बनाए रख सके ।

१०-२ क्रिया और भावना

सभी याजक गायत्री स्तवन सुनें- अन्तिम चरण ''पुनातु मां तत्सावेतुर्वरेण्यं'' स्वयं भी दुहरायें । मन से प्रार्थना करें कि हमारी भावना, विचारणा, स्वभाव को इतनी पवित्रता प्राप्त हो कि हम देव प्रयोजन में सक्रिय- सहयोगी बन सकें ।

ॐ यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालम्
रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम् ।
दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।। १ ।।
यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितम् ,
विप्रैः स्तुतं मानवमुक्तिकोविदम् ।
तं देवदेवं प्रणमामि भर्गं,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।२।।
यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं,
त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम् ।
समस्त तेजोमय दिव्य रूपम्,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।३।।
यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधम्,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् ।
यत् सर्वपापक्षयकारणं च,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।४।।
यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षम्
यदृग्यजुः सामसु साम्प्रगीतम् ।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।। ५ ।।
यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति,
गायन्ति यच्चारणसिद्धसंघाः,
यद्योगिनो योगजुषां च संघाः,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।। ६ ।।
यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं
ज्यातिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके ।
यत्कालकालादिमनादि रूपम् ,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।७।।
यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखास्यं,
यदक्षरं पापहरं जनानाम्।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।८।।
यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धं,
उत्पत्तिरक्षा प्रलयप्रगल्भम् ।
यस्मिन् जगत् संहरते ऽखिलं च,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।। ९ ।।
यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः,
आत्मा परं धाम विशुद्धतत्वम्
सूक्ष्मान्तरैर्योग पथानुगम्यं,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।१०।।
यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति,
गायन्ति यच्चारणसिद्धसंघाः ।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।११।।
यन्मण्डलं वेद विदोपगीतं,
यद्योगिनां योगपथानुगम्यम् ।
तत्सर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं,
पुनातु माम् तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।१२।।

गायत्री स्तवन (पद्यानुवाद)

शुभ ज्योति के पुंज, अनादि, अनुपम ।
ब्रह्माण्ड व्यापी आलोक कर्ता ।।
दारिद्रय, दुःख-भय से मुक्त कर दो ।
पावन बना दो हे देव सविता ।। १ ।।
ऋषि देवताओं से नित्य पूजित ।
हे भर्ग भव बन्धन-मुक्ति कर्ता ।।
स्वीकार कर लो वंदन हमारा । पावन० ।। २ ।।
हे ज्ञान के घन, त्रैलोक्य पूजित ।
पावन गुणों के विस्तार कर्ता ।
समस्त प्रतिभा के आदि कारण । पावन०।।३।।
हे गूढ़ अन्तःकरण में विराजित ।
तुम दोष-पापादि संहार कर्ता ।
शुभ धर्म का बोध हमको करा दो । पावन० ।।४।।
हे व्याधि नाशक, हे पुष्टि दाता ।
ऋग् साम्, यजु वेद संचार कर्ता ।।
हे भूर्भुवः स्वः में स्व प्रकाशित । पावन० ।। ५ ।।
सब वेदविद चारण, सिद्ध योगी ।
जिसके सदा से हैं गान कर्ता ।।
हे सिद्ध सन्तों के लक्ष्य शाश्वत । पावन० ।। ६ ।।
हे विश्व मानव से आदि पूजित ।
नश्वर जगत् में शुभ ज्योति कर्ता ।।
हे काल के काल-अनादि ईश्वर । पावन० ।। ७ ।।
हे विष्णु ब्रह्मादि द्वारा प्रचारित ।
हे भक्त पालक, हे पाप हर्ता ।।
हे काल-कल्पादि के आदि स्वामी । पावन० ।।८।।
हे विश्व मण्डल के आदि कारण ।
उत्पत्ति-पालन-संहार कर्ता।।
होता तुम्हीं में लय यह जगत् सब । पावन० ।।९।।
हे सर्वव्यापी, प्रेरक नियन्ता ।
विशुद्ध आत्मा, कल्याण कर्ता ।
शुभ योग पथ पर हमको चलाओ । पावन० ।।१०।।
हे ब्रह्मनिष्ठों से आदि पूजित ।
वेदज्ञ जिसके गुणगान कर्ता ।।
सद्भावना हम सब में जगा दो । पावन० ।।११।।
हे योगियों के शुभ मार्ग दर्शक ।
सद्ज्ञान के आदि संचार कर्ता ।
प्रणिपात स्वीकार लो हम सभी का । पावन० ।।१२।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

११. दीपयज्ञ

११.१. प्रेरणाः-

देव संस्कृति में यज्ञ बहुत व्यापक अर्थों में लिया जाता है । उच्च आदर्शों को जीवन में प्रयुक्त करने के लिए किये गये संकल्पबद्ध प्रयासों को यज्ञ कहा जाता रहा है । ज्ञान यज्ञ, भूदान यज्ञ, नेत्र दान यज्ञ आदि शब्दों के भाव से सभी परिचित हैं । इनमें कहीं अग्निहोत्र नहीं होता, फिर भी वे यज्ञ कहे जाते हैं ।

युग निर्माण अभियान के अन्तर्गत यही प्रयास किया जाता रहा है कि जन-जन को यज्ञीय-आदर्शनिष्ठ, परमार्थपरक पुरुषार्थ करते रहने की प्रेरणा दी जाय, उसका अभ्यास कराया जाय । इस अभियान में अग्निहोत्र को कम और जीवन यज्ञ प्रक्रिया को सदैव अधिक महत्व दिया जाता रहा है ।

प्रत्यक्ष यज्ञों के तीन पक्ष होते हैं । एक अग्निहोत्र, दूसरा मंच प्रयोग और तीसरा साधकों-याजकों की श्रद्धा भावना । इन तीनों के संयोग से ही यज्ञ बनता है ।

दीपयज्ञ में अग्निहोत्र को स्वचालित (ओटोमैटिक) प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है । दीपक में घी और अगरबत्तियों में हवन सामग्री की आहुति स्वचालित ढंग से चलती रहती है । उसके साथ जोड़ने होते हैं, मंत्र और श्रद्धा भावना । कुण्ड में हाथ से आहुति डालने की क्रिया पर ध्यान रखने के कारण मंत्र और भावनाओं पर पूरी एकाग्रता नहीं बन पाती । दीपयज्ञ में आहुतियाँ स्वचालित हो जाने से उधर ध्यान बँटाने की आवश्यकता नहीं रह जाती । साधक पूरे मनोयोग से मंत्र और भावना के साथ एकात्मता स्थापित कर सकते हैं । इसीलिए दीपयज्ञ अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो रहे हैं ।

११.२. क्रिया और भावना-

सभी याजक ध्यान मुद्रा में बैठें । एक जयकारा बुलवायें और नीचे लिखी प्रार्थना खण्ड-खण्ड करके दुहरवायें ।

-हे यज्ञदेव ! युगशक्ति-महाकाल के/महा संकल्प में/हम अपने स्नेह/और सद्भाव की आहुतियाँ श्रद्धापूर्वक दे रहे हैं ।

-इन आहुतियों की सुगन्धि से-प्रभाव से सूक्ष्म जगत् का शोधन होता चले नवयुग के अवतरण के लिए दिव्य वातावरण बने ।

'क्रिया और भावना' - यह प्रार्थना दुहराने के बाद सस्वर गायत्री मंत्र स्वाहा सहित एक साथ बोला जाय । **'इदं गायत्र्यै इदं न मम'** भी कहा जाय । २४ बार आहुतियाँ दी जायँ । भावना की जाय कि इस सामूहिक आध्यात्मिक प्रयोग से एक प्रचण्ड ऊर्जा पैदा हो रही है, जिससे सूक्ष्म जगत का शोधन हो रहा है । इस प्रयास में हम जो साधन-श्रद्धा लगा रहे हैं, वह सब परमात्मा की दी हुई हैं- उन्हीं के दिव्य अनुदान उन्हीं के लिए अर्पित किये जा रहे हैं ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं गायत्र्यै इदं न मम ।

१२. पूर्णाहुति

१२.१ प्रेरणा- परमात्मा अपने आप में पूर्ण है । प्रकृति जिस कार्य को प्रारंभ करती है, उसे पूर्णता तक पहुँचाती है । किसी कार्य को अपूर्ण छोड़ देना प्रकृति के नियमों का उल्लंघन करना है । यज्ञ जैसे आध्यात्मिक प्रयोगों को तो पूर्णता तक पहुँचाया ही जाना चाहिए ।

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है कि यह सृष्टि यज्ञमय बनायी गयी है । प्रकृति का हर पुरुषार्थ यज्ञीय भावना-परमार्थ प्रक्रिया के अनुशासन में ही चल रहा है । शरीर का प्रत्येक अंग 'पूर्ण' है, किन्तु शरीर का क्रम संयुक्त पुरुषार्थ से चलता है । जल, अग्नि, वायु सभी अपने आप में पूर्ण हैं, किन्तु इनके सहयोग संयोग से ही वृक्ष, वनस्पतियाँ, खेती आदि का चक्र चलता है, जीवन के विकास के लिए, पूर्णता के लिए, यज्ञीय प्रक्रिया अनिवार्य है ।

जीवन को यज्ञमय बनाना यज्ञ की पूर्णता है; किन्तु यज्ञ आधे-अधूरे मन से नहीं होता । दीपक अधूरा हो, पूर्ण न हो, तो ज्योति धारण नहीं कर सकता । अगरबत्ती से सभी घटक ठीक ढंग से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सँजोये न जायें, तो सतत जलते रह कर सुगंधि फैलाना उसके लिए संभव नहीं होगा । इसी प्रकार भावना, विचारणा के संयोग से संकल्प बने और कर्म-पुरुषार्थ उसे धारण करें, तभी जीवन में यज्ञीय ऊर्जा एवं सुगन्धि पैदा हो सकती है । दीपयज्ञ की पूर्णाहुति के अंतर्गत हम श्रेष्ठ संकल्प जागृत करके उन्हें अपने पुरुषार्थ से, जीवन प्रक्रिया से जोड़ते हैं- यही सच्ची पूर्णाहुति है ।

१२.२ क्रिया और भावना-

दाहिने हाथ में अक्षत-पुष्प लें । अक्षत अटूट निष्ठा के और पुष्प उल्लास के प्रतीक हैं ।

भावना करें कि हम दीपयज्ञ से जागृत दिव्य ऊर्जा को अपने अन्दर स्थापित कर रहे हैं । बाहर दीपकों से प्रकाश और अगरबत्तियों की सुगन्धि से वातावरण सुरम्य बन रहा है । हम अपने अन्दर संकल्प की अखण्ड ज्योति और सत्कर्मों की सुगन्धि स्थापित करें ।

अपने अन्दर जो दोष-दुर्गुण जड़ जमाये बैठे हैं, उनमें से किसी एक को देवशक्तियों की साक्षी में छोड़ने का संकल्प लें । संकल्प सूत्र धारण करते समय जिन अनुशासनों-अनुबन्धों को स्वीकार किया था, उनके न्यूनतम ही सही, नियमित प्रयोग का स्वरूप निश्चित करें । महाकाल की साक्षी में यज्ञीय दिव्य वातावरण में पूर्णाहुति संकल्प करें ।

(आगे दिया गया संकल्प **खण्ड-खण्ड** में सबसे दुहरवायें)

हम (अपना नाम लें), भगवान्-महाकाल की साक्षी में, यज्ञ की पूर्णाहुति के रूप में, यह संकल्प लेते हैं कि अपनी (बुराई का नाम लें) बुराई को आज से छोड़ दिया । नित्य गायत्री मंत्र की उपासना करेंगे । जप के समय भावना करेंगे कि हम अपने अंदर भगवान् के प्राण एवं प्रकाश धारण कर रहे हैं ।

अपने दुर्गुणों को हटाने, श्रेष्ठ गुणों को बढ़ाने, मन को साधने के लिए, युग साहित्य का स्वाध्याय, मनन, चिंतन, सत्संग, नियमित रूप से करेंगे ।

समाज में उत्तम कार्यों, उत्तम विचारों, और उत्तम भावनाओं का, प्रचार-प्रसार, ईश्वर की आराधना मानकर करेंगे ।

ईश्वर की साझेदारी के, इन अनुशासनों को, जीवन का अंग बनाते हैं । इनके लिए नित्य कम से कम समय, तथा- अंशदान, निकालते रहेंगे । यह अनुशासन जीवन भर पालेंगे ।

हे यज्ञ रूप प्रभो! हमारे अन्दर, सत्कर्मों की ऐसी सुगंधि पैदा करें, जिसके प्रभाव से आसपास के व्यक्तियों में भी, सत्कर्म करने की उमंगें उठें । इस प्रकार, दीप से दीप जलने लगें । भावनापूर्वक पूर्णाहुति मंत्र बोलें :-

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते स्वाहा।।
ॐ सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा ।।

(अक्षत -पुष्प दीपयज्ञ की थाली में छोड़ दें, अथवा स्वयंसेवक उन्हें एकत्रित करके देवमंच पर अर्पित करें) ।

१३. आरती

१३.१ प्रेरणा-

आरती, परमात्मा से-आर्तभाव से की गयी प्रार्थना है । आरती की ज्योति आत्मा की प्रतीक होती है । आत्मचेतना को परमात्म चेतना के प्रति समर्पित रहना चाहिए । अपने क्रिया-कलापों को परमात्मा के आस-पास, उनके अनुशासनों की मर्यादा में ही चलाना-घुमाना चाहिए ।

देवदूत, महापुरुष वही व्यक्ति होते हैं, जो अपनी जागृत प्रतिभा, आत्म ज्योति को ईश्वरीय अनुशासनों के अनुरूप ही चलाते रहते हैं । उन्हें परमात्मा की समीपता का अनुभव बराबर होता रहता है । श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ विचार एवं श्रेष्ठ आचरण के लिए शक्ति प्रवाह के रूप में उन्हें परमात्मा की अनुकम्पा सतत मिलती रहती है । हम भी अपनी प्रतिभा भगवान् को सौंप कर महान् बन सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१३.२ क्रिया और भावनाः-

आरती तैयार करें । प्रतिनिधि उसे लेकर देव मंच के पास पहुँचें । जिन याजकों के पास दीप यज्ञ की थालियाँ हैं, वे जलते दीपकों सहित उन्हें उठाकर बैठे-बैठे ही आरती करें । नीचे लिखे अनुसार भावना हृदय में धारण कर आरती बोलें :-

''हे ईश्वर ! हम महापुरुषों से प्रेरणा लेकर आपके प्रति समर्पित जीवन जीना सीखें । आपके अनुशासन में हमारा श्रम, समय, प्रभाव, ज्ञान, धन सभी चलें और धन्य बनें । हम भी महापुरुषों की तरह ऊपर उठें और आपकी समीपता का अनुभव करते रहें ।

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये ।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा, तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ।
ॐ यं ब्रह्मावरुणेन्द्र रुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै
र्वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगा : ।।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो, ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ।।

ईश्वर को समर्पित व्यक्तियों से प्रेरणा प्राप्त करने के भाव से आरती ली जाय, उसमें अपना सहयोग देने की भावना से अंशदान चढ़ाया जाता है । (आरती सबके पास घुमाते रहें, हिन्दी की आरती गाते रहें ।)

आरती गायत्री जी की

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन, जग पालन कर्त्री ।
दुःख शोक भय क्लेश कलह, दारिद्रय दैन्य हर्त्री ।।
जयति जय गायत्री माता ।
ब्रह्मरूपिणी, प्रणतपालिनी, जगत् धातृ अम्बे ।
भव-भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे ।।
जयति जय गायत्री माता ।
भयहारिणी भवतारिणी अनघे, अज आनन्द राशी ।
अविकारी अघहरी अविचलित, अमले अविनाशी ।
जयति जय गायत्री माता ।
कामधेनु सत् चित् आनन्दा, जय गंगा गीता ।
सविता की शाश्वती शक्ति , तुम सावित्री सीता ।।
जयति जय गायत्री माता ।
ऋग्, यजु, साम, अथर्व प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे ।
कुण्डलिनी सहस्त्रार सुषुम्ना, शोभा गुण गरिमे ।
जयति जय गायत्री माता ।
स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी, राधा, रुद्राणी ।
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला कल्याणी ।।
जयति जय गायत्री माता ।
जननी हम हैं दीन-हीन, दुख दारिद क्रे घेरे ।
यदपि कुटिल, कपटी कपूत तऊ, बालक हैं तेरे ।।
जयति जय गायत्री माता ।
स्नेहसनी करुणामयी माता, चरण-शरण दीजै ।
बिलख रहे हम शिशु-सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै ।।
जयति जय गायत्री माता ।
काम, क्रोध, मद, लोभ,दम्भ, दुर्भाव द्वेष हरिये ।
शुद्ध बुद्धि, निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये ।।
जयति जय गायत्री माता ।
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि पुष्टि त्राता ।
सत् मारग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता ।।
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ।।

यज्ञ देव की स्तुति

यज्ञ रूप प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये ।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए ।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों, मग्न सारे, शोक सागर से तरें ।।
अश्वमेधादि रचाएँ, यज्ञ पर - उपकार को ।
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें, संसार को ।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग-पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें ।।
कामना मिट जाय मन से, पाप अत्याचार की ।
भावनाएँ शुद्ध होवें, यज्ञ से नर नारि की ।।
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किये ।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, सत्य पथ विस्तार हो ।
'इदं न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हों ।।
हाथ जोड़ झुकाएँ मस्तक, वन्दना हम कर रहे ।
नाथ करुणा रूप ! करुणा, आपकी सब पर रहे ।।
यज्ञ रूप प्रभो ! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये ।।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिये ।।

१४. हमारा युग-निर्माण-सत्संकल्प

१४.१ प्रेरणाः-

सत्संकल्प हमारे मिशन के आधार भूत सिद्वान्तों और मान्यताओं का सार-संग्रह है । पूजा, जप आदि के अन्त में आप इसका पाठ नित्य किया करें । ऐसा करने से आपको न केवल श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा मिलती रहेगी, वरन् आप मिशन की आत्मा को पहचान कर उसके साथ एकरस भी हो सकेंगे । सत्संकल्प सामूहिक रूप से दुहराया जाय ।

१५. जय घोष

१५.१-प्रेरणाः-

जिनकी कृपा से ही हम सबका जीवन चल रहा है, उनकी जय जयकार करें । मातृभूमि के प्रति अपना कर्तव्य याद करें । विश्व मानव के कल्याण की कामना करें । जो मिशन हमारे-आपके जीवन को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहा है, उसके युग-निर्माणकारी सिद्वान्तों व मान्यताओं के प्रति अपनी निष्ठा को अभिव्यक्त करें तथा उसकी सफलता के लिए अपनी मंगल कामना का घोष करें ।

१६. विसर्जन

१६.१ प्रेरणाः-

जो दिव्य शक्तियाँ, दिव्य आत्मायें इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए कृपापूर्वक यहाँ आयीं, उन सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए हम उन्हें इसी प्रकार सत्पुरुषों के सत्प्रयासों की पुनः-पुनः सहायता करने के लिए विसर्जित करते हैं ।

पूजा मंच पर अक्षत छोड़ते हुए मंत्र बोलें । सभी याजक हाथ जोड़कर नमस्कार करें ।

ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकाम समृद्धयर्थं पुनरागमनाय च ।।

१७. शान्ति पाठ

१७.१ प्रेरणाः- दीपयज्ञ के इस आध्यात्मिक प्रयोग से जो प्रेरणा और अनुदान प्राप्त हुए हैं, वे स्थिर हों, फलित हों, सभी तरह के पापों का शमन हो, सभी को शान्ति प्राप्त हो । इस भावना के साथ शान्ति पाठ करें ।

जिन्हें मंत्र याद है, वे सभी हमारे साथ-साथ शान्ति पाठ करें । कार्यकर्तागण कलश का जल लेकर सब पर सिंचन करें ।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति : सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।
ॐ विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रम् तन्न आसुव ।। ॐ शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः !!! सर्वारिष्टासुशान्तिर्भवतु ।।

दीप-यज्ञों से जुड़े अनुशासन

लम्बी अवधि से चली आ रही सघन तमिस्रा के पलायन का यह समय है । निशाचर अपने-अपने कोतरों में छिपने जा रहे हैं । दूसरी ओर उषा-काल के अरुणोदय की भी ठीक यही वेला है । दोनों ही कार्य सरलतापूर्वक अनायास ही सम्पन्न होने वाले नहीं हैं । नवयुग की अगवानी हेतु इन दिनों उन्हें प्रबल प्रयत्न करने होंगे, जो जागरूक हैं, प्रतिभा-सम्पन्न हैं और जिन्हें आपत्तिकालीन युग-धर्म का ज्ञान है । यह प्रसव-काल जैसा दुहरी समस्याओं वाला समय है । इसमें प्राणवानों को दुहरे मोर्चे पर लड़ना होगा । ऐसे समय में निजी सुख-सुविधाओं की उपेक्षा भी की जाती है और अग्नि कांड, भूकम्प, बाढ़, महामारी जैसी आपत्ति-काल में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न समस्याओं से सभी भावनाशीलों को जूझना पड़ता है । समय की यही माँग भी है और महाकाल की मूर्धन्यों के लिए पुकार भी ।

इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य को साथ लेकर आ रही है । यह सतयुग की वापसी स्तर की है । दूसरी ओर जब चींटी मरने को होती है, तो पंख लगते हैं; बुझता हुआ दीपक पूरी शक्ति से लौ उछालता है । ऐसे दुहरे असमंजस के समय को 'युगसंधि' कहा गया है । यह सन् ९० से २००० तक का है । इसमें ध्वंस से निपटने और सृजन को समर्थ बनाने वाले दुहरे प्रयत्न करने हैं । नियति को दो मोर्चों पर जूझना है । योद्धाओं को दोनों हाथों से दुहरी तलवार चलानी है । देवसत्ता को अधिक सक्रिय और सहायक बनाने के लिए इन दिनों शांतिकुंज में युगसंधि महापुरश्चरण का आयोजन किया जा रहा है । इस केन्द्र को दैवी-सत्ता ने संधिकाल को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने का काम भी सौंपा है और तदनुरूप प्रेरणा और सामर्थ्य भी प्रदान की है । युग-संधि का, बहुमुखी प्रयोजनों से संबंधित यह विश्वव्यापी महान अभियान उसी के तत्वावधान में सम्पन्न हो रहा है । विदाई और स्वागत का दुहरा प्रयोजन पूर्ण करने वाला यह महान धर्मानुष्ठान सफलतापूर्वक सम्पन्न होकर रहेगा, यह भी सुनिश्चित है ।

युग-संधि की प्रभात वेला में-दिव्य-सत्ता के प्रबल समर्थन में- जो कार्य चल रहे हैं, उसी को युग-संधि महापुरश्चरण भी कह सकते हैं । शांतिकुंज में इस हेतु अनेकों संकल्प किये गये हैं और उनके ठीक समय से पूरे होने की प्रबल संभावना भी है । प्रस्तुत संकल्पों में जिन प्रयासों को अधिकाधिक महत्वपूर्ण माना जा सकता है, उनमें से एक है - एक लाख बड़े दीप यज्ञों का आयोजन और दूसरा इस हेतु एक करोड़ प्रज्ञा- पुत्रों को भागीदार बनाना । इन दोनों के सहारे ही भौतिक समस्याओं का समाधान एवं लोकमानस के परिष्कार स्तर का सतयुग की वापसी जैसा शक्ति-संचय हो सकेगा ।

एक लक्ष विशाल दीप यज्ञों में १ करोड़ भागीदार सम्मिलित करने की योजना शांतिकुंज से बनी थी और उसका किसी एक बड़े स्थान पर कुंभ पर्व से भी अनेक गुना बढ़ कर आयोजन करने की व्यवस्था बनाने का उपक्रम पूरे उत्साह के साथ चल रहा था । इसी अवधि में एक नयी दिव्य प्रेरणा और अनुबंध अन्तरिक्ष से उतरा है । वह यह कि एक स्थान पर हजार दीपक जला लेने की अपेक्षा यह कहीं अच्छा होगा कि हजार स्थानों पर हजार दीपक जला कर दीपावली जैसा ज्योति-पर्व मनाया जाय और उसकी जगमगाहट से सुविस्तृत क्षेत्र आलोकित किया जाय ।

नव-निर्देशक के अनुसार प्रक्रिया नये सिरे से चल पड़ी है कि प्रज्ञा परिवार में जहाँ भी कर्मठ कार्यकर्ता अथवा छोटे-बड़े संस्थान हैं, वहाँ यह उत्साह भरा जाय कि वे अपने - अपने यहाँ दीपयज्ञ आयोजन सम्पन्न करें । इस प्रकार एक स्थान पर एक हजार यज्ञ गुच्छक सम्पन्न होने की अपेक्षा वे एक लाख स्थानों पर सम्पन्न हों । हजारों परिजनों को सम्मिलित करने के लिए समय रहते इतना प्रचार कार्य हो कि नियत संख्या में सम्मिलित होने वाले याज्ञिकों की कमी न पड़े । नई योजना के अनुसार अब एक लाख प्रज्ञा केन्द्रों में इन पाँच वर्षों में आयोजन सम्पन्न होंगे । वे हर साल भी होते रह सकते हैं । जहाँ उतना न बन पड़े, वहाँ एक वर्ष बीच में छोड़ कर, हर तीसरे वर्ष आयोजन करें, साथ ही यह भी ध्यान रखें कि सम्मिलित होने वालों में उन्हीं की पुनरावृत्ति न होती रहे, कुछ नये नर-नारी भी सम्मिलित होते रहें; ताकि युग शिल्पियों की संख्या में निरन्तर अभिवृद्धि होती रहे । हर साल एक ही जगह आयोजन न बन पड़े, तो समीपवर्ती अन्य स्थानों में भी उन्हें संपन्न किये जाने की योजना बन सकती है; ताकि नये स्थानों में, नये लोगों में भी युग चेतना का आलोक प्रज्वलित होता रहे और विस्तार-क्रम में निरन्तर अभिवृद्धि होती चले ।

इसी माध्यम से छोटे-बड़े मंडलों का भी गठन होगा । जिन्हें मात्र दो घंटे जितने स्वल्प समयदान दे सकने का उत्साह ही उभरा हो, वे तो झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ, स्लाइड प्रोजेक्टर, प्रचार पेटिका जैसे माध्यमों की सहायता से स्थानीय लोगों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के साथ संपर्क साधते और उनमें प्राण-चेतना फूँकते रहें; पर जिन्हें ईश्वर ने अधिक साहसिकता, स्फूर्ति एवं उमंग भरी प्रतिभा प्रदान की है, उन्हें अपना कार्य - क्षेत्र समीपवर्ती मुहल्ले एवं गाँव-गाँव को जोड़ कर एक मंडल बना लेना चाहिए और उस समूचे परिकर में नव जीवन संचार करते रहने का उत्तरदायित्व वहन करते रहना चाहिए । प्रजातंत्र में जो कार्य जिलाधीश करते हैं, वही कार्यशैली अपने-अपने अधिकृत क्षेत्र के मंडलाधीशों को भी अपनानी चाहिए; ताकि इसी उपक्रम के सहारे देशव्यापी, विश्वव्यापी संगठन की शृंखला चल पड़े । हर कड़ी अपना-अपना काम करे, तो व्यापक संगठन बन जाने और उनकी संयुक्तशक्ति के सहारे नव सृजन की योजना व्यापक एवं समर्थ बनने में कोई कमी न रहे । मंडल कितना बड़ा हो, यह संयोजकों की अपनी क्षमता और दौड़-धूप के लिए अपनायी गयी स्फूर्ति पर निर्भर है ।

अगले दिनों राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक सुव्यवस्था के अनेकानेक कार्यों का अभिनव संचालन करना होगा, साथ ही फैली हुई अवांछनीयताओं से जूझने का भी क्रम चलेगा । उपरोक्त कार्यों को, जो अपने मंडलों में ठीक तरह संपन्न करता रहेगा, उसकी गोदी में नेतृत्व का श्रेय भी अनायास जा पहुँचेगा । व्यवस्था परिवर्तन के लिए देश भर में ऐसे लाखों लोग चाहिए, जो मंडलाधीशों की भूमिका निभा सकें । उस महान कार्य का शुभारंभ एक लाख यज्ञों की योजना को कार्यान्वित करते हुए कम से कम श्रम और खर्च में सरलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है । इसके लिए समुचित अनुदान-संग्रह करना पड़े, तो सहयोगियों के माध्यम से उदारशीलों से संपदा एकत्र कर यह किया जा सकता है । कम से कम खर्च की व्यवस्था बनायी जाय, तो प्रत्येक आयोजन से न्यूनतम दस हजार रुपये तो बचाये जा सकते हैं, जिनसे प्रचार उपकरण आदि खरीदे जा सकें । इतना बन पड़े, तो ही आयोजनों की सार्थकता है ।

बड़े और प्रभावशाली दीपयज्ञ उन्हें ही माना जायेगा, जिनमें एक हजार वेदी यज्ञों की योजना बनायी गई हो । उनके लिए शांतिकुंज से प्रभावशाली कार्यकर्ता भी सुसंचालन में सहायता करने के लिए भेजे जा सकते हैं । इसके लिए जीपों, मोटर साइकिलों, प्रचार साइकिलों का भी प्रबंध केन्द्र में किया गया है ।

सहस्रवेदी दीपयज्ञों का उद्देश्य जहाँ उस क्षेत्र में नवजीवन का, नव जागरण का बिगुल बजाना है, वहाँ यह भी है कि धर्मक्षेत्र के मंडलाधीशों की महती आवश्यकता की भी इन्हीं दिनों पूर्ति हो सके । जनजागरण और जननेतृत्व की प्रक्रिया को भी साथ लेकर चलना है, अन्यथा व्यापक क्षेत्र में जनजागरण का कार्य उतने उत्साह से हो नहीं सकेगा, जितनी कि इन्हीं दिनों आवश्यकता है ।

सहस्रवेदी यज्ञों के लिए सहयोगी जुटाने एवं धर्मक्षेत्र के मंडलाधीशों की जिम्मेदारी पूरी तरह निभाने के लिए प्रचार तंत्र और भी बड़ा एवं समर्थ होना चाहिए । इसके लिए (१) झोला- पुस्तकालय (२) ज्ञानरथ (३) स्लाइड प्रोजेक्टर (४) परिवार में नवचेतना भरने वाली प्रचार पेटी (५) दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन (६) घरों में स्टीकर चिपकाने जैसे क्रिया-कलापों की आवश्यकता रहेगी ही । साप्ताहिक सत्संगों के लिए लाउडस्पीकर एवं टेपरिकॉर्डर की व्यवस्था हुए बिना बात बनती नहीं । इसलिए इन सभी प्रचार-उपकरणों की व्यवस्था करने तथा उनका प्रयोजन जानने की भी आवश्यकता है । यह सब शांतिकुंज के पाँच दिवसीय सत्रों में सरलतापूर्वक सीखा जा सकता है । वैसे भी हर प्रज्ञा परिजनों को इन दस वर्षों के लिए यह अनुशासन बताया गया है कि वे वर्ष में एक बार शांतिकुंज की एक सत्र-साधना संपन्न कर लिया करें । यह बैटरी चार्ज कराने के समान है । बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार बदलते समाधानों, निर्देशों को भी इस आधार पर उपलब्ध किया जा सकता है । विशेषत: यहाँ भागीदारी करने वालों को उनकी प्रसुप्त प्रतिभा को खराद पर चढ़ाने की दृष्टि से एक बार शांतिकुंज होकर अवश्य आना चाहिए । जहाँ सहस्रवेदी दीप यज्ञ हों, वहाँ के संचालक भी प्रारंभ में संकल्प लेने आयें तथा समुचित शक्ति लेकर इस पुण्य- कार्य में जुटें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साइकिलों की तीर्थ यात्रा का अपना निजी महत्व है । एक छोटी मित्र मंडली अपने क्षेत्र में साइकिलों द्वारा पद यात्रा पर निकला करें और गाँव-गाँव अलख जगाने का प्रयोजन पूरा करें, तो इससे भी अभीष्ट परिवर्तन बनने में कम सहायता न मिलेगी ।

सहस्रवेदी दीपयज्ञों की योजना बनाने के लिए इन दिनों सभी प्रतिभाशाली परिजनों को विशेष रूप से प्रोत्साहन दिया जा रहा है, ताकि उनके क्षेत्र में अभिवर्धन-परिवर्तन के चिह्न हाथों-हाथ दीखने लगें । इसके लिए उपयुक्त स्थान चयन के अतिरिक्त बिछावट तथा छाया-आच्छादन का प्रबंध करना पड़ता है । पूजा-वेदी एवं प्रवचन प्रयोजन के लिए दो तख्त सजाने पड़ते हैं । व्यवस्था ठीक बनी रहे, इसके लिए अपनों में से ही कुछ को सभा-सेवकों का उत्तरदायित्व सँभालने के लिए कहा जाना चाहिए ।

शतवेदीय दीप यज्ञ तो मिल-जुलकर सदा ही अपने घरों में, मुहल्लों में करते रह सकते हैं । वे प्रायः दो घंटे में प्रातः या सायंकाल सुविधानुसार संपन्न हो सकते हैं; पर सहस्रवेदी यज्ञ में प्रायः पूरा एक दिन लगाने की आवश्यकता पड़ती है, ताकि न केवल पूरा कार्यक्रम हो, वरन् परस्पर परिचय तथा भविष्य के लिए कुछ करने का व्रत धारण अपनाने, प्रोत्साहन देने की अभीष्ट पृष्ठभूमि बन सके ।

दिन भर के लिए घर छोड़कर आने वालों को कम से कम एक समय की भोजन व्यवस्था भी होनी चाहिए । यों यह कार्य एक-दो दुकानें लगा देने और सस्ता-सही भोजन मिलने की व्यवस्था बना देने से भी पूरा हो सकता है । पर यदि अधिक उत्साह दृष्टिगोचर हो, तो यह भी हो सकता है कि आयोजन में सम्मिलित होने वाले अपने-अपने घरों से दो - दो रोटियाँ एक प्लास्टिक की थैली या पत्तल में लपेटकर ले आया करें और सब लोग उसी में से मिल बाँटकर एक समय की भोजन की आवश्यकता पूरी कर लिया करें । अमृताशन का प्रीतिभोज भी बिना कुछ अधिक खर्च किये मनोरंजन के वातावरण में सम्पन्न हो जाता है । साथ ही पारस्परिक घनिष्ठता की, जाँति-पाँति, ऊँच-नीच की भेद-भाव वाली मूढ़-मान्यता से निपटने का अवसर भी मिल जाता है । भोजन व्यवस्था का प्रावधान रखने की दृष्टि से ही परिजनों से इस बार अनुदान संग्रह हेतु कहा जा रहा है । यह व्यवस्था सहस्रवेदी एवं इससे बड़े यज्ञों के लिए ही है ।

रास्ते के गाँवों में सहगान कीर्तन, मिशन का परिचय कराते हुए दीवारों पर आदर्श-वाक्य लिखते हुए साइकिल टोलियाँ हरिद्वार के लिए तीर्थयात्रा पर प्रयाण कर सकती हैं । मथुरा पहुँच कर विश्राम, परामर्श और प्रेरणा प्राप्त कर सकती हैं और फिर पहले से भिन्न किसी दूसरे रास्ते से प्रचार कार्य करती हुई घर वापस लौट सकती हैं ।

समय दान तथा युगसाहित्य पठन-पाठन के लिए प्रत्येक सम्पर्क में आने वाले से कहा जाना चाहिए । यदि कुछ घंटे नित्य ही निकल सकें, तो उसका उपयोग स्थानीय प्रचार कार्य में हो सकता है, पर यदि योग्यता, स्फूर्ति, स्वस्थता, सेवा-साधना के साथ एक साल जितना निकाल सकना संभव हो, तो फिर उसे शान्ति कुंज के तत्ववाधान में बिताने की बात सोचनी चाहिए । इसे एक समर्थ योगाभ्यास एवं तपश्चर्या के समतुल्य समझा जा सकता है । युग देवता के प्रतिभा-परिवर्धन जैसे वरदान इसी आधार पर हाथों-हाथ उपलब्ध कर सकना संभव हो सकता है ।

स्मरण रहे, युग-सृजन की सक्रिय भागीदारी उपलब्ध करने के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि सर्वसाधारण की तुलना में अपने को अधिक प्रामाणिक, आदर्शवादी, अनुशासित, विनम्र एवं निष्ठावान होना चाहिए । इन्हीं विशेषताओं के आधार पर कोई प्रभावशाली सिद्ध हो सकने वाला विशिष्ट एवं वरिष्ठ बनता है । उन्हीं के द्वारा अपना, अपने परिकर का गौरव बढ़ा सकना संभव हो सकता है और उन्हीं के प्रभाव-परामर्श से दूसरे लोग अपने में ऐसा परिवर्तन कर सकते हैं; जिसे देखकर नवयुग की सुनिश्चित संभावना पर लोग सहज विश्वास कर सकें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीपयज्ञ की देव दक्षिणा

धार्मिक कर्मकाण्डों के माध्यम से लोकशिक्षण की प्रक्रिया सम्पन्न करना शास्त्रकारों का उद्देश्य रहा है । इसी कारण उन्हें प्रतीक उपासना कहा जाता है । मूर्तियों से लेकर अनेक धर्म कृत्य, सम्पर्क में आने वालों को यही दिखाते हैं कि उनका चिन्तन चरित्र एवं व्यवहार किस प्रकार ऊँचा होना चाहिए । उनकी जीवन पद्धति को किस प्रकार आदर्शवादिता के साथ जुड़ना चाहिए । प्रामाणिकता, उदारता एवं सेवा-साधना में उत्साह बढ़ाने के लिए धर्मकृत्यों को करते हुए उनकी व्याख्या-विवेचना की जाती है । ज्ञान और कर्म के समन्वय की यह पद्धति व्यक्ति और समाज को किस तरह शालीनता के साथ सम्बद्ध करे, इसे जानने के लिए विभिन्न धर्म-कृत्य किए जाते हैं ।

दीपयज्ञ के साथ दो माध्यम जुड़ते हैं । एक प्रकाश का प्रतीक दीपक, दूसरी अवाँछनीयताओं का निरोधक धूपबत्ती के रूप में प्रस्तुत किया जाने वाला यज्ञ । दोनों के मिलने से ही दीप-यज्ञ बनता है । यज्ञ की समग्रपूर्णता देवदक्षिणा के साथ सम्पन्न होती है जिसमें एक पक्ष सत्प्रवृत्ति संवर्धन से जुड़ा है, तो दूसरा दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन से ।

धर्मधारणा के अनेक व्याख्याताओं ने अनेक रूप में उसका विभाजन वर्गीकरण किया है । पर उनमें से इन दिनों दस को ही सामयिक माना जा सकता है । युग धर्म को इन्हीं के साथ समन्वित किया जाना चाहिए । वे हैं- (१) श्रमशीलता, (२) सज्जनता, (३) मितव्ययिता, (४) स्वच्छता-सुव्यवस्था, (५) सहकारिता, (६) उदारता, (७) दूरदर्शी-विवेकशीलता, (८) संयमशीलता, (९) समता, (१०) साहसिकता । इन्हें सत्प्रवृत्तियों के रूप में निरूपित किया जाय और उनमें से जो जितनी, जिस मात्रा में अपना सके, उसे उसके लिये देव दक्षिणा के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित प्रशिक्षित किया जाय । यह रचनात्मक पक्ष है ।

दूसरा पक्ष है निषेधात्मक, परित्याग करने के लिए दुष्प्रवृत्तियों के रूप में । उपरोक्त दस धर्म धारणाओं को यदि उलटा कर दिया जाय, तो वे ही दुष्प्रवृत्तियों के रूप में जानी जा सकती हैं । उनको पाप स्तर में निरूपित किया जा सकता है । उन्हें छोड़ने के लिए उपस्थित जनों से अनुरोध किया जा सकता है । (१) श्रमशीलता का उल्टा है- आलस्य और प्रमाद, (२) सज्जनता के विपरीत है- दुष्टता-उच्छृंखलता, (३) मितव्ययिता की विरोधी है फिजूलखर्ची ठाट-बाट का प्रदर्शन, (४) स्वच्छता - सुव्यवस्था का उलटा है अस्तव्यस्तता, अव्यवस्था, मर्यादाओं की अवहेलना, (५) सहकारिता के विपरीत पड़ता है एकाकीपन, आपाधापी, स्वार्थपरता, संकीर्णता (६) उदारता के विपरीत है निष्ठुरता, कृपणता, शोषण-तृष्णा उद्धत महत्वाकांक्षा, (७) दूरदर्शिता के विपरीत पड़ता है तात्कालिक लाभ के लिए भविष्य को अन्धकारमय बनाना, अनाचार अपनाना और कुकर्म करना, (८) संयमशीलता के विपरीत है, वासना, तृष्णा और अहंता को छूट देकर लिप्सा - लालसा के लिए कुछ भी कर डालने के लिए उद्धत हो जाना, (९) समता के प्रतिकूल है विषमता लिंग भेद, जाति भेद, देश भेद, वर्ग भेद के आधार पर विषमता उत्पन्न करना, आर्थिक असमानता के विष बीज बोना, (१०) साहसिकता के विपरीत है भीरुता, कायरता, अनीति सहना और गई गुजरी स्थिति से उभरने के लिए पुरुषार्थ से कतराना ।

ग्रहण और त्याग की यही सामान्य रूप रेखा है । ग्रहण करने योग्य और छोड़ने योग्य अन्य भी अनेकानेक बातें हैं; पर उपरोक्त दस विभाजनों में उन सब को किसी न किसी प्रकार समेटा जा सकता है । देव दक्षिणा के अवसर पर ऐसा भाव भरा विवेचन किया जा सकता है, जिसके आधार पर उपस्थित जन यह समझ सकें कि उनके भविष्य को उज्ज्वल और अन्धकारपूर्ण बनाने वाली सत्प्रवृत्तियाँ और दुष्प्रवृत्तियाँ कौन-कौन सी हैं । अब यह दीप यज्ञ में भागीदारों के ऊपर रह जाता है कि वे उस समय शुभारम्भ के रूप में किस एक को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बिठाने के लिए और किस एक का परित्याग के लिए चयन करे ।

यह व्यक्ति को प्रखर प्रामाणिक और प्रतिभावान बनाने की दिशा में किया जाने वाला मंगलाचरण है । अन्यान्य दीपयज्ञों के अवसर पर किन्हीं पर्व त्यौहार, जन्मदिन आदि के अवसर पर उन उभयपक्षीय राजमार्गों पर क्रमशः एक-एक कदम उठाते रहा जाय तो लम्बी मंजिल पूरी करने और आवश्यक जीवन लक्ष्य तक पहुँचने में सुगमता हो सकती है । यही व्यक्तित्वों के सुधार परिष्कार का मार्ग है और उन्हीं को आयोजक तथा शामिल होने वाले लोग अपनाने लगें तो समाज सुधार की, राष्ट्र या विश्व के निर्माण की प्रक्रिया अग्रगामी हो सकती है । आत्म निर्माण प्रारम्भिक विद्या है । उसी पर परिवार निर्माण और समाज निर्माण की आवश्यकताओं को ठीक तरह पूरी करते चलना अवलम्बित है । दीप यज्ञ की देव दक्षिणा, उसकी व्याख्या-विवेचना और भाव भरे वातावरण में अपनाई गई व्रतशीलता सुनिश्चित रूप से सभी प्रकार की प्रगतियों के द्वार खोलती है ।

अनुभव से सिद्ध हुआ है कि भावनापूर्वक देवाराधन सहित किये गये दीपयज्ञ में संकल्प के लिए दिशा और प्रेरणा के साथ-साथ शक्ति प्रवाह भी मिलता है । उसी के प्रभाव से सामान्य व्यक्ति भी महत्वपूर्ण संकल्प करते-निभाते और उस आधार पर सुख सौभाग्य के अधिकारी बनते देखे जाते हैं ।

धर्मधारणा का जीवन्त संतुलित सदुपयोग

आज समस्याओं से भरे युग में, उनसे छुटकारे के लिए हर पक्ष से सोचने समझने की आवश्यकता आ पड़ी है । धन, साधनों और सुविधाओं के सम्बन्ध में उठने वाली समस्याओं के समाधान के लिए राजनैतिक, आर्थिक तथा व्यवस्था सम्बन्धी आधार अपनाये जा सकते हैं । स्थूल कार्यक्रमों से उनके हल निकाले जा सकते हैं । परन्तु जहाँ तक आस्थाओं, मान्यताओं और भावनाओं का सम्बन्ध है, उसके लिए दार्शनिक, धार्मिक, आध्यात्मिक भावना को सुनियोजित करने वाली विधाएँ ही अपनानी पड़ती हैं । इनके बिना मनुष्य चतुर और सम्पन्न तो बन सकता है; पर सुसंस्कारिता के क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सकता है । यह रुकावट हटे बिना शालीनता और सद्भावना के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ा जा सकता । इस प्रगति के बिना व्यक्ति और समाज में मानवीय गरिमा को बनाये रखना और अपना चरितार्थ होते देखना संभव नहीं ।

भौतिक जानकारी और प्रगति के लिए राजनैतिक और आर्थिक मंच किसी प्रकार अपना काम चला भी रहे हैं फलस्वरूप मनुष्य की चतुरता और सम्पन्नता बढ़ भी रही है; किन्तु भावनात्मक सुसंस्कारिता न बढ़ पाने के कारण चिन्तन, चरित्र और व्यवहार का स्तर गिर रहा है । मानवीय आदर्शों की स्थिति दयनीय होती जा रही है । इस स्थिति के रहते न तो दुष्प्रवृत्तियाँ उखाड़ी जा सकती हैं, और न सत्प्रवृत्तियाँ पनप सकती हैं । इस समस्या का हल करने के लिए अध्यात्म चेतना को, धर्म धारणा को जीवन्त बनाना होगा । धर्म तंत्र से लोक शिक्षण की सतयुगी रीति-नीति को नये सिरे से अपनाना होगा ।

अपने देश की जनता का मानस भी कुछ ऐसा है कि व्यक्तित्वों को समाज में सत्प्रवृत्तियों की प्रतिष्ठा करने के लिए धर्म तत्व का सहारा लेना ही होगा । केवल नागरिक शास्त्र, समाज शास्त्र की बुद्धि परक विवेचनाएँ, सुधारवादी आन्दोलनों का आधार न बन सकेंगी । नव निर्माण की आधारशिला रखने के लिए, लोक शिक्षण का क्रम धर्म धारणा से जुड़ा रखना होगा ।

अपने देश में पहले भी इस प्रकार के आन्दोलन इसी तरह की पृष्ठभूमि अपनाने की माँग करते रहे हैं । गाँधी जी के आन्दोलन के साथ राम राज्य की संभावना, रामधुन और भक्ति भावना का समावेश बहुत बड़े आधार थे । ऋषि दयानन्द, विवेकानन्द,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विनोवा आदि की प्रतिष्ठित विचार क्रान्तियाँ, उनके संत स्वरूप पर ही टिकी रही । संत परम्परा की धर्मधारणा के अभाव में इन आंदोलनों को इतनी व्यापक सफलता न मिलती । अपने देश में तो यह आधार कम से कम एक शताब्दी तक तो बना ही रहेगा । इसलिए नव निर्माण के जन आन्दोलन को ऐसे केन्द्र पर केन्द्रित करना पड़ेगा; ताकि अधिकाधिक लोगों का भाव भरा सहयोग उसको प्राप्त हो सके ।

लोकमानस का परिष्कार अध्यात्म दर्शन के सहारे किया जाता रहा है । कथा-संगीत, प्रवचन-सत्संग, कर्मकाण्ड अनुष्ठानों जैसे जाने - माने प्रयोग इस संदर्भ में किये जाते रहे हैं । इन्हीं के सहारे समाज को सुसंस्कृत बनाने का क्रम चलता रहता था । परन्तु मध्य युग में परिस्थितियों के उलट फेर ने, सब उलट-पुलट डाला । धर्मतंत्र अनेक भागों में बाँट दिया गया । परस्पर विरोधी मान्यताओं,प्रथा परम्पराओं का बोल - बाला हो गया । जो अत्यंत उपयोगी था वह विसंगतियों के कारण अनुपयोगी बनकर रह गया । इसीलिए विचारशील लोग धर्म के नाम पर नाक भौं सिकोड़ने लगे । धर्म क्षेत्र से उच्चस्तरीय प्रचलनों का लोप और निहित स्वार्थों के प्रपंचों का बोल-बाला होता गया । आज ऐसा धर्ममंच नहीं दीख पड़ता जो मानवी गरिमा को उच्चस्तरीय बनाने में वरिष्ठ भूमिका निभा सके । भ्रान्तियों के जंजाल से धर्म धारणा को उबार कर सरल, सुलभ सर्वोपयोगी प्रतिपादन प्रस्तुत कर सकें ।

इस अभाव की पूर्ति अपने सीमित साधनों से शांति कुंज द्वारा की गयी है । धर्म तंत्र से लोक शिक्षण की, समय के अनुरूप तर्क, तथ्य, प्रमाण संगत सर्व सुलभ विधा का विकास किया गया है । उसका लम्बे समय तक परीक्षण प्रयोग किया गया है । फलतः युग धर्म का तत्व दर्शन, आचार, व्यवहार एवं कर्मकाण्ड इस स्तर का विनिर्मित करने में सफलता मिल गयी है, जिसे हर कसौटी पर सही और सार्थक कहा जा सके । वह पद्धति है ''दीपयज्ञ'' प्रक्रिया ।

यज्ञ, देव संस्कृति का आधार रहा है । परमार्थ, त्याग, बलि-दान, सद्भाव भरा सहयोग- इन सभी का संयुक्त क्रियान्वयन ''यज्ञ'' कहा जाता है । पदार्थ यज्ञ-अग्निहोत्र इन्हीं प्रवृत्तियों-परिपाटियों को पुष्ट बनाने के लिए व्यायाम, साधना के प्रयोग रूप में किए जाते रहे हैं । आज परिस्थितियाँ भिन्न हैं । दीपक सर्व सम्मत दिव्यता का प्रतीक है । उसी को क्रेन्द्र मानकर यज्ञीय वातावरण बनाकर जन मानस को संस्कारित करने का ऐसा सफल प्रयोग बन पड़ा है, जो हर दृष्टि से अद्भुत और विवेक सम्मत कहा जा रहा है ।

समय की माँग है कि जन-जन में सत्प्रवृत्तियों की स्थापना का विकास और दुष्प्रवृत्तियों, कुरीतियों आदि का उन्मूलन किया जाय । भगवान के अवतार के उद्देश्यों में धर्म की स्थापना, अधर्म के नाश का विधान भी इसे कह सकते हैं । आज की अगणित समस्याओं, कठिनाईयों, विपत्तियों का एक मात्र कारण है, मानवी भाव संवेदनाओं का गिर जाना, मानवी गरिमा को बनाये रखने वाली शालीनता की उपेक्षा होना । इनका निवारण भी एक ही है - व्यक्तित्व का चिंतन, चरित्र, व्यवहार का स्तर ऊँचा उठाया जाना । समस्त समस्याओं का यही चिरस्थायी समाधान है । धर्म अध्यात्म दर्शन, सत्संग कर्मकाण्डों का विशाल ढाँचा इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए खड़ा किया गया है ।

इन सभी प्रयोजनों की पूर्ति दीपयज्ञ के 'देव दक्षिणा' प्रसंग में की गई है । कर्मकाण्डों के साथ दैवी अनुकूलता की आकांक्षा काम करती है । लोगों को समझाया जाता है कि अपने अंदर देवत्व के अंश बढ़ाने से ही आमन्त्रित देवता प्रसन्न होते हैं । यज्ञीय भावना को जीवन में धारण किया जा सके तो समझना चाहिए कि दैवी अनुग्रह, वरदान के रूप में अवश्य प्राप्त होंगे ।

देव अनुग्रह तीन रूपों में ही आते हैं, -(१) आत्म-संतोष, (२) लोक सम्मान और (३) पुण्य सम्पदा-मनोकामनाएँ तो योग्यता, पात्रता और श्रम साधना के आधार पर ही पूरी होती हैं । पराक्रमी नास्तिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी सफल होता है और आलसी प्रमादी आस्तिक भी दुर्दिनों में पड़ा रहता है । उच्चस्तरीय धर्म कृत्यों से प्राप्त होने वाले वरदान ऊपर लिखे अनुसार हो सकते हैं । यज्ञीय वातावरण में यह प्रतिपादन याजकों के मन में प्रखर संकल्प उत्पन्न करते हैं । इसी आधार पर प्रत्यक्ष दिखता है कि धर्मानुष्ठानों के मूल प्रयोजनों की पूर्ति कितने अच्छे स्तर पर हो रही है ।

परम्परागत धर्मानुष्ठान इतने जटिल और समय साध्य बना दिए गये हैं कि वे जन स्तर पर प्रयुक्त हो ही नहीं पाते । विधि निषेध पुरोहितों की लम्बी दान दक्षिणा, विवेक सम्मत प्रतिपादनों का अभाव आदि जनसाधारण को उनसे दूर रखते हैं । पुरोहित और श्रद्धालु, दोनों पक्षों की अपनी - अपनी मजबूरी है । कराने वाले न तो कृत्यों की उपयोगिता समझा पा रहे हैं और न अपनी विशिष्टता का प्रमाण दे पा रहे हैं । इसी कारण परम्परावादी लकीर पीटने के अलावा कुछ उल्लेखनीय हो नहीं पा रहा है । जिनके पास समय और धन का अभाव नहीं है, वे भी धर्म कृत्यों के प्रति अपना उत्साह प्रकट नहीं कर पा रहे हैं ।

इन सब कठिनाईयों, असमंजसों का समाधान दीप यज्ञ में किया गया है । न अधिक दौड़ धूप, न अधिक सरंजाम और न अधिक स्थान तथा समय की आवश्यकता । पौरोहित्य इतना सरल कि मिल जुलकर पूरा कर लिया जाय । कम से कम समय और खर्च में परस्पर सहयोग के आधार पर दिव्यता की सघन अनुभूति होती है । यही कारण है कि यह प्रक्रिया दिनों दिन लोकप्रिय होती जा रही है । धार्मिकता के प्रति जन आकर्षण और उत्साह का एक ऐसा प्रयोग बन पड़ा है, जो प्राचीन परम्परा के साथ समय की माँग को जोड़ कर चल रहा है ।

यज्ञीय दिव्यता से ओत-प्रोत वातावरण में व्यक्ति निर्माण-आत्म परिष्कार, लोक मंगल के लिए किए गये देव दक्षिणा के संकल्प अपने आप में अनोखा प्रभाव पैदा करते हैं । कोर्ट में गंगाजली छूना और भावना पूर्वक गंगाजल में खड़े होकर किये गये संकल्पों में जमीन आसमान का अंतर होता है । शिष्टाचार पूरा करते हुए वर वधू के हाथ मिला देना कुछ और है, तथा यज्ञ की साक्षी में एकात्म होने की प्रतिज्ञा कुछ और ही है । दीप यज्ञ के वातावरण में हर भागीदार अपने को देवत्व से ओत-प्रोत अनुभव करता है । उस स्थिति में व्यक्तित्व निखारने की जो प्रखरता उभरती है, वह किसी और ढंग से उभरती नहीं देखी जाती ।

मनुष्य को, मानवी गरिमा-उच्च आदर्शों में स्थापित करने के लिए सनातन धार्मिक प्रयोगों का यह एक युगानुरूप अद्‌भुत संस्करण बन गया है । राजतंत्र और अर्थतंत्र के प्रयासों के साथ समर्थ परिष्कृत धर्मतंत्र का संयोग ऐसी त्रिवेणी प्रवाहित कर सकता है, जिसमें नहा कर मानवता सभी तापों अभिशापों से मुक्त हो सके, अपनी गरिमा के अनुरूप सुख-शांति सौभाग्य प्राप्त कर सके ।

दीपयज्ञ के साथ धर्मतंत्र का सुनियोजन

संसार के शक्तिशाली क्षेत्र दो हैं- एक राजतंत्र, दूसरा धर्मतंत्र । भौतिक क्षेत्र की सुव्यवस्था बनाना राजतंत्र का काम है । भाव चेतना का स्तर सुसंस्कारित कर इस क्षेत्र को ऊँचा उठाना धर्मतंत्र का काम है । अर्थतन्त्र इन दोनों की मध्यवर्ती उपज है । यद्यपि यह इन उपरोक्त दोनों की अपेक्षा अधिक आकर्षक और समर्थ लगता है । फिर भी यह निश्चित है कि बुद्धि कौशल और शासन व्यवस्था के निर्धारणों के बिना वह न तो प्रगति कर सकता है और न स्थिर रह सकता है ।

अर्थ साधनों का उपयोग उतना ही किया जाना उचित है जितना कि औसत नागरिक के हिस्से में आता है । इसमें ऊँची अमीरी और नीची गरीबी दोनों ही अवांछनीय है । मध्यवर्ती पुरुषार्थ से सभी अपना अर्थ सन्तुलन बनाए रह सकते हैं । इसलिए उसकी गणना शाश्वत साधनों के रूप में नहीं होती, भले ही आज उसका वर्चस्व कितना ही बढ़ा चढ़ा क्यों न हो । वस्तुतः राजतन्त्र और धर्मतन्त्र ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्व की दो प्रधान शक्तियाँ हैं और क्योंकि इन्हीं के आधार पर समाज और व्यक्ति का सुनियोजन होता है, राजतन्त्र-भौतिक एवं सामाजिक स्तर को सही रखने में समर्थ है । जबकि धर्मतन्त्र व्यक्तिगत चरित्र और चिन्तन को प्रभावित करता है । परिवार का सही सुनियोजन उसी आधार पर बन पड़ता है । चेतना धर्म धारणा से प्रभावित होती है और शासन सुविधा साधनों को बढ़ाता तथा अवांछनीयताओं को नियंत्रित करता है । यह दोनों अपने उद्देश्यों की पूर्ति में यदि सही रूप से संलग्न रहें तो अर्थ क्षेत्र की समस्यायें न तो पैदा हों और न ही उन पर नियंत्रण करने अथवा समाधान खोजने की आवश्यकता पड़े ।

इन दिनों शासन के हाथ में शक्ति का असाधारण केन्द्रीकरण हो रहा है । इस कारण भी धर्म अपनी उपयोगिता प्रामाणिकता खोता जा रहा है । उसका शाश्वत तत्वदर्शन लुप्त एवं विकृत होता चला जा रहा है । कर्मकाण्डों एवं प्रचलनों तक ही उसकी पहुँच है । परम्पराओं और पूर्वाग्रहों पर आधारित परम्परायें ही धार्मिक कहे जाने वाले लोगों के लिए सब कुछ बनकर रह गयीं हैं । देवताओं की-मनुहार इसीलिए की जाती है कि वे प्रसन्न होकर पूजा करने वाले की मनोकामना पूरी करें, विपत्तियों से बचायें, सफलता दिलाएँ और पाप कर्मों के दंड से बचाने का अनुग्रह करें । धर्म तत्त्व का बड़ा भाग इसी जंजाल में उलझ कर रह गया है । समुदाय के प्रचलनों का निर्वाह ही प्रायः धर्मपालन माना जाता है । इस कारण विभिन्न वर्गों में विग्रह खड़े होते हैं । हठवादिता और भ्रान्तियों से भरी पूरी मनोभूमि, द्वेष का अहसास कराती और घृणा के रूप में उभरती रहे तो यह विनाश खड़ा करती है । राजनीतिक क्षेत्रों में जिस प्रकार लोग हेर-फेर और आपस की उखाड़-पछाड़ करते रहते हैं, उसी तरह धर्मक्षेत्र में भी इन दिनों अपनी बात ऊँची और भिन्न मत वाले की बात नीची करने में ही शक्ति खपती रहती है । यह दोनों परिस्थितियाँ अवांछनीय हैं । दोनों ही क्षेत्रों को अधिक दूरदर्शिता और अधिक ऊँची शालीनता अपनाने की जरूरत है; तभी प्रगति शांति और प्रसन्नता की त्रिवेणी में स्नान करते सर्व साधारण को देखा जा सकता है ।

राजतंत्र के सम्बन्ध में इन पंक्तियों में प्रकाश डालना सम्भव नहीं । यहाँ धर्मतन्त्र की गरिमा, सम्भावना और प्रतिक्रिया पर ही जन साधारण का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है । चेतना प्रधान है, साधन गौण । चेतना के नाते धर्म प्रधान है, शाश्वत और सर्वांगीण भी । उसके कारण व्यक्ति ऊँचा उठता और देव मानव स्तर तक जा पहुँचता है । व्यक्ति की प्रामाणिकता और प्रतिभा उसे वरिष्ठता प्रदान करती है । ऐसा व्यक्ति राजनीति में प्रवेश करे तो भी धर्मनीति की तरह चमत्कार प्रस्तुत कर सकता है । इसके विपरीत धर्म रहित राजनीति अपनाने से रावण, कंस, दुर्योधन जैसे उदाहरण ही प्रस्तुत होते हैं । प्रधानता धर्म की है, क्योंकि वह सदा सर्वदा व्यक्ति के चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता का समावेश किए रहता है । राजनीति का दखल तो सर्वसाधारण के जीवन में एक सीमा तक ही रहता है ।

व्यक्ति का स्तर गिर जाना आज की सबसे बड़ी समस्या है । उसी के कारण अनेकानेक प्रकार के शोक संताप उत्पन्न हुए हैं । इस समस्या को सुलझाने के लिए धर्म के उस स्वरूप को निखारना और समर्थ बनाना होगा, जो दुष्प्रवृत्तियों से छुटकारा दिलाता है, सदाशयता की पक्षधर सत्प्रवृत्तियों को उभारता है । यहाँ उस धर्म की चर्चा नहीं हो रही जो निहित स्वार्थों का व्यवसाय बन कर रह गया है, जो भ्रान्तियों में उलझाता अन्धविश्वास पनपाता है । उसे तो युग चेतना का प्रकाश उगते ही अन्धकार की तरह अपने अस्तित्व से हाथ धोना पड़ेगा ।

धर्म का शाश्वत स्वरूप एवं दर्शन सर्वसाधारण द्वारा समझा-समझाया जाना चाहिए । यह कार्य समग्र रूप से किसी केन्द्र में योजना बद्ध रूप से आरम्भ नहीं किया गया है । दुराग्रहों के लिए बहुत कुछ सोचा किया और खर्चा जा रहा है । ऐसी दशा में उस महती आवश्यकता की पूर्ति कैसे हो सकेगी जो इस अवलम्बन के सहारे व्यक्तित्व को ऊँचा उठाती, आगे बढ़ाती और देव मानव स्तर तक पहुँचाती है । विश्व व्यापी अगणित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषमताओं को देखते हुए इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि जिस अवस्था के कारण उन अगणित विसंगतियों का जन्म हुआ है, उसे घटाया हटाया जाना चाहिए । यह क्रम धरती पर स्वर्ग के अवतरण की सम्भावनाओं से भरा-पूरा है ।

दीप यज्ञ के माध्यम से व्यक्ति, परिवार और समाज के नव निर्माण की जो दिशा धारा कार्यान्वित की जाती है, उसे इन तीनों क्षेत्रों में धर्म तंत्र का अभिनव प्रयास ही कह सकते हैं । इसे यों भी कहा जा सकता है कि शाश्वत धर्म तत्व का यह उन सभी क्षेत्रों में प्रवेश करने का प्रयास है जिसका समूची मानव जाति के साथ अविछिन्न सम्बन्ध जुड़ता है । देव दक्षिणा कृत्य के साथ मानव धर्म का एक ढाँचा खड़ा भी किया गया है और इस आन्दोलन के सम्पर्क में आने वालों के गले उतारा भी जा रहा है ।

इस अनास्था प्रधान युग में भी विकृत धर्म धारणा के आश्चर्यजनक प्रभाव और विस्तार का परिचय मिलता है । समय, श्रेय और साधन उसके निमित्त असाधारण मात्रा में अभी भी नियोजित रहते हैं । तीर्थ यात्रा, पर्व स्नान, धार्मिक मेले आदि के निमित्त होने वाली आवागमन पर विपुल धन राशि खर्च होती है । समय भी लगता है । इसका लेखा-जोखा लिया जाय तो प्रतीत होगा कि यह इतना अधिक है कि इससे देश की सरकार का अधिकांश खर्च चल सकता है । धार्मिक क्रिया-कृत्य भी कम साधनों से पूरे नहीं होते । आये दिन होते रहने वाले प्रवचन समारोह, कथा-कीर्तन, यज्ञ अनुष्ठान जैसे क्रिया-कृत्यों का यदि विवरण तैयार किया जाय तो प्रतीत होगा कि यह सब भी स्वल्प प्रयासों एवं कम साधनों से सम्पन्न नहीं होते । विवाहों और मृतक भोज जैसे उत्सवों को भी यदि धर्म परम्परा का एक अंग मान लिया जाय, तो उसमें भी अपने समाज का खरबों रुपया खर्च होता है । इन सबके साथ जन शक्ति, श्रमशक्ति का सुनिश्चित रूप से दुरुपयोग इतना विशद हो जाता है कि उन सबके समन्वय में एक पंचवर्षीय योजना चल सके । जनगणना के अनुसार देश में ६० लाख से अधिक साधु संत हैं । दान पर जीवित रहने वाले भिखारियों और पण्डे पुरोहितों की संख्या भी इससे कम नहीं है । यह परिकर भी धर्म धारणा के सहारे ही अपनी आजीविका अर्जित करता है । व्यक्तिगत रूप से पूजा अर्चा में जो समय लगता है, उसे भी धर्म के साथ जोड़कर देखा जा सकता है । उस सब का समन्वय करने पर हर दिन करोड़ो व्यक्तियों का समय इस निमित्त लगाते रहने का निष्कर्ष सामने आता है ।

धार्मिक इमारतों ने, मन्दिरों, स्मारकों, घाटों में जितनी जमीन घिरी है, जितनी पूँजी लगी है उसे इतना गिना जा सकता है जिसके सहारे लाखों लोगों का काम चलना सम्भव हो सकता है । मन्दिरों के सेवा कर्मी यदि मालियों, अध्यापकों की भूमिका निभा रहे होते तो उनने प्रौढ़ शिक्षा, हरीतिमा सम्वर्धन की समस्याओं को हल कर लिया होता । दान-पुण्य में व्यय होती रहने वाली राशि का वजन भी कम नहीं है । यह समूचे धर्म साधन यदि रचनात्मक सत्प्रवृत्तियों में लग सके होते तो उतने भर से नव निर्माण के सुविस्तृत स्वप्नों को साकार कर सकना निश्चित रूप से सम्भव हो गया होता । भक्ति भावना और स्वर्ग कल्पना में जितनी भाव संवेदनाओं, चिंतन चेतना का नियोजन होता है, यदि उतनी सफलता युग चेतना का आलोक लोक मानस में जमा सकने में मिल सकी होती, तो अपने देश में पुरातन संत परम्पराएँ अभी भी उसी रूप में दृष्टिगोचर हो रही होतीं । तब धरती पर स्वर्ग की झलक इन्हीं आँखों से देखी जा सकनी संभव हो गई होती ।

दीपयज्ञों का प्रमुख उद्देश्य सुविस्तृत समर्थ धर्मतंत्र को रचनात्मक प्रयोजनों के लिए मोड़ देना है । आरम्भ में यह प्रयास धीमी गति से चल सकता है, पर यदि वस्तु स्थिति को समझा सकने में सफलता मिल गई तो मानना चाहिए एक ऐसी नई सृजन शक्ति का उद्भव हुआ जो मनःस्थितियों और परिस्थितियों को समान उत्कर्ष के साथ जोड़ सकती है । नया दृश्य और नया परिवेश बना सकती है ।

इस प्रक्रिया के पीछे एक उद्देश्य यह भी है कि धर्मतंत्र के साथ प्रबुद्ध वर्ग का कटता हुआ सम्बन्ध फिर नए सिरे से जुड़ सके । अनेकानेक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्मकाण्डों को इस एक ही विधि व्यवस्था में केन्द्रित किया जा सके । सभी को यजमान बनने का, सभी को पुरोहित का दायित्व निभाने का अभ्यास हो सके । खर्चीले और समय साध्य झंझटों से धर्म धारणा को मुक्ति मिल सके । धर्म धारणा का तत्वज्ञान, माहात्म्य और सत्परिणाम जन-मानस में उतारना उतना कठिन नहीं है जितना कि धर्म कृत्यों को सस्ता - सरल और सर्वसुलभ बना सकना । अभी तो वह मात्र बाधाओं का अधिकार क्षेत्र बनकर रह गया है । झंझट भरा और खर्चीला भी है । उसे सर्वजनीन बना कर ही इस योग्य बनाया जा सकता कि हर किसी को धर्मकृत्य करने और उस आधार पर प्राणवान प्रेरणाएँ प्राप्त करने का अवसर मिल सके । इन सब को कुल मिलाकर धर्म क्षेत्र का पुनर्जीवन भी कह सकते हैं । इस परिवर्तन के साथ सुखद संभावनाओं का सुयोग पूरी तरह जुड़ा हुआ है । विभिन्न प्रयोजनों के लिए किये जाने वाले विभिन्न धर्म कृत्य यदि दीपयज्ञ के रूप में सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर देते हैं, तो उसे सार्वजनिक प्रचलन के रूप में परिणित होने में कोई कठिनाई शेष न रहेगी ।

दीपयज्ञ मात्र कर्मकाण्ड नहीं है । इसका मूलभूत उद्देश्य सार्वभौम एकता और समता है । साम्यवादियों द्वारा मजदूरों और गरीबों को एक हो जाने की आवाज उठाई जाती है । दीपयज्ञों द्वारा संसार के सभी विचारशीलों और भावनाशीलों को एकत्रित और संगठित होने के लिए कहा जा रहा है; ताकि दुष्प्रवृत्तियों के, कुप्रचलनों के विरोध में जिहाद बोला जा सके और उस नवयुग की स्थापना हो सके, जिसे कभी सतयुग के नाम से पुकारा जाता था, जिसमें मनुष्य में देवत्व और धरती पर स्वर्ग का अवतरण दृष्टिगोचर होता था ।

सार्वभौम एकता इक्कीसवीं सदी का लक्ष्य निर्धारण और संकल्प है । अगले दिनों सभी प्रकार के उन विलगावों का अन्त होना है, जो मनुष्य को मनुष्य से दूर रखते और विद्वेष के बीज बोते हैं । संसार भर के आदमियों की एक भाषा होनी चाहिए, ताकि विचारों के आदान-प्रदान का एक माध्यम सर्वत्र काम में आ सके । एक जाति-मनुष्य जाति । एक देश-समस्त विश्व । एक धर्म-मानव धर्म । एक व्यवस्था-पारिवारिकता की रीति नीति । इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दीपयज्ञ की शुरूआत हुई है । और वह अपनी मंजिल पर अगली ही शताब्दी में पहुँचकर रहेगा । न अमीर-गरीब का भेद रहेगा और न सम्प्रदाय अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग-अलग पकाते दिखाई देंगे । 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' के सिद्धान्तों को सार्व भौम मान्यता मिलेगी ।

दीपयज्ञों में बिना जाति-लिंग, धर्म सम्प्रदायों का भेद-भाव किए सभी लोग अपना श्रद्धा-भाव सहकार के साथ भाग लेते हैं । किसी को अपना पराया नहीं माना जाता । किसी को श्रेय नहीं दिया जाता, किसी को तुच्छ नहीं समझा जाता । समता और एकता की पृष्ठभूमि बनाने के लिए यह आवश्यक भी है । धर्म-धारणा का मूलभूत उद्देश्य भी यही है, जिसे समझने - अपनाने का अवसर मिलता है ।

प्रात:काल की गोष्ठी में आत्म निर्माण के आधारों को अपनाने की सुनिश्चित दिशा-धारा मिलती है । मध्यान्ह का महिला सम्मेलन और रात्रि का समाज सुधार समारोह तीनों मिलकर एक ही दिन में सर्वतोमुखी प्रगति का वातावरण बनाते हैं । प्रज्ञा केन्द्रों का एक अभिनव आधार खड़ा करते हैं । एक आयोजन से अन्य नए कार्यक्रम उभरते हैं । इस प्रकार कोई भी आयोजन अपना कृत्य पूरा करके समाप्त नहीं होता । वरन् एक से पाँच-पाँच से पच्चीस की गुणन पद्धति अपना कर व्यापक क्षेत्र में असाधारण विस्तार करता जाता है ।

बात मात्र लोक शिक्षण तक सीमित नहीं होती । वह प्रेरणा प्रक्रिया तो है पर उसकी प्रौढ़ता परिपक्वता इतने भर से ही नहीं होती, उसके लिए रचनात्मक और सुधारात्मक कार्यक्रमों का बीजारोपण अभिवर्धन भी आवश्यक है । ज्ञान की सार्थकता कार्य प्रक्रिया में परिणत होने पर हो सकती है । दीप यज्ञ की आरम्भिक प्रक्रिया दृश्य और श्रव्य माध्यमों से प्रचार प्रयोजन की पूर्ति करती है । किन्तु इतने भर में ही समाप्त नहीं हो जाती है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उससे प्रज्ञा परिवारों का सृजन, संगठन खड़ा होता है । उसके भावनाशील सदस्य हर दिन एक घंटा समय और एक मुट्ठी अन्न या दस पैसा निकालने का योगदान करने के लिए अपनी निष्ठा का प्रमाण परिचय प्रस्तुत करते हैं । इसी समयदान, अंशदान के आधार पर उन सृजन प्रयोजनों की विधि व्यवस्था चल पड़ती है । जिससे विचार-क्रान्ति अभियान को युग परिवर्तन लक्ष्य के लिए कार्यान्वयन होना है । शिक्षा सम्वर्धन, स्वास्थ्य संरक्षण, कुरीति उन्मूलन, नशा निषेध, हरीतिमा सम्वर्धन, सादा जीवन उच्च विचार, अल्प बचत जैसी सत्प्रवृत्तियों का सम्वर्धन चल पड़ता है । नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक सुधार परिवर्तन के लिए आवश्यक उत्तेजना मिलने का सरंजाम जुटता है ।

इन छोटे आयोजनों को संगठन की, परिष्कार की, परिवर्तन की, नव निर्माण की भूमिका समझा जा सकता है । उनमें जुटने के लिए प्रातः काल का और रात्रि का समय लगता रहे तो उतने भर से भी ऐसा माहौल बन सकता है, जिससे अन्धकार से विरत होने और प्रकाश पथ पर चल पड़ने का हर किसी को अवसर मिल सके । दीपयज्ञ एक प्रकार से बीजारोपण है । उसके जब अंकुर फूटकर नए पौधे बनते हैं और विशाल वृक्ष के स्तर तक पहुँच कर फल-फूलों से लदते हैं । उसकी कल्पना, सम्भावना और प्रतिक्रिया का अभी से सहज अनुमान लगाया जा सकता है । वह दिन दूर नहीं जब इसका प्रतिफल धन-धान्य से भरी - पूरी फसल के रूप में सामने होगा । बिखराव को एकता, समता और सशक्तता के रूप में विकसित होते देखा जा सकेगा ।

दीपयज्ञों के बड़े आयोजन के साथ ''राष्ट्रीय एकता सम्मेलन'' नाम भी जुड़ जाता है । यह एकता अनेकतावादियों, अलगाववादियों के सम्बन्ध में ही विचार प्रेरणा नहीं देती, वरन् उसका आधार शाश्वत है । क्षेत्रीय समस्याएँ तो उठती और समाप्त होती रहती हैं, पर व्यापक क्षेत्र में फैली हुई बिलगाव की, अलगाव की विभिन्नता और विषमता की दुष्प्रवृत्ति ऐसी हैं जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती हैं । फूट के बीज बोती है । विष वृक्ष बनती अनेकानेक दुष्परिणाम उत्पन्न करती हैं ।

ऐसी विषमताओं में क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, संग्रहवाद प्रमुख है । समता और एकता इन्हीं प्रमुख कारणों से क्षतिग्रस्त हुई है । इनमें सभी को निरस्त करने के लिए हर किसी को सदा - सर्वदा के लिए सहमत किया जाना चाहिए । आर्थिक विषमता इन सबसे ऊपर है । गरीबी और अमीरी दोनों को ही अभिशाप समझा जाना चाहिए । औसत नागरिक स्तर का निर्वाह अपनाने के लिए हर किसी को मानस बनाना चाहिए । अधिक उपार्जित तो किया जा सकता है, पर उसे निज वासना, तृष्णा, अहंता की पूर्ति में नहीं वरन् पुण्य प्रयोजनों में ही नियोजित किया जाना चाहिए । सर्वतोमुखी एकता समता के लिए उपरोक्त सभी क्षेत्रों में समता प्रतिष्ठित की जानी चाहिए । दीप यज्ञों की पृष्ठभूमि में यह तथ्य भी समाहित है ।

दीप यज्ञ के साथ जुड़े कुछ रचनात्मक कार्यक्रम

दीप यज्ञ के साथ परिवार निर्माण-गोष्ठी

एक कुण्डीय दीप यज्ञों का क्रम घर - घर चलाये जाने का अपना विशेष महत्व है । उसे पारिवारिक ज्ञान गोष्ठी का रूप दिया जाना चाहिए । सभी वयस्कों को दीपयज्ञ वेदी के निकट उसके इर्द - गिर्द बिठाया जाना चाहिए । बड़ा परिवार हो तो महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग वेदियाँ भी रखी जानी चाहिये । जो बालक समझदार हो चुके हैं उन्हें भी इस माहौल से संस्कारित-अनुप्राणित करने के लिए समीप बिठाना चाहिए ।

कुरीतियाँ अक्सर हमारे परिवारों में उसी तरह घुसी रहती हैं जैसे चूहे बिल में । प्रगतिशीलता की, सुधार की बात समझदार लोगों के मस्तिष्क में प्रवेश कर जाती है और वे अभीष्ट परिवर्तन का समर्थन भी करने लगते हैं । परन्तु घरों की महिलाओं का प्रगतिशील वातावरण से वास्ता कम ही पड़ता है । उनमें अशिक्षा का प्रतिशत भी अधिक है तथा विचारशीलता की अपेक्षा भावुकता के अधिक समीप होती हैं । उनकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भावुकता अधिकतर परम्पराओं से, रूढ़ियों से जुड़ी रहती है । इसलिए उनमें प्रतिगामिता अधिक दिखाई पड़ती है । समाज में प्रगतिशीलता लाने के लिए घरों में प्रवेश करके, महिलाओं को इस जंजाल से छुड़ाना और प्रगतिशीलता के सिद्धान्तों से परिचित कराना आवश्यक है ।

परिवार का वातावरण ही स्वर्ग-नरक की भूमिका निभाता है । उसी में नर- रत्न ढलते और अनगढ़ भी सुसंस्कारी बनते हैं । परिवार का स्तर और स्वरूप विनिर्मित करना ज्यादा करके घर की महिलाओं के हाथ में होता है । इसलिए उनके विचारों में प्रगतिशीलता का समावेश होना आवश्यक है; ताकि वे अपनी जिम्मेदारियों को समझ और निभा सकें । इस आवश्यकता की पूर्ति पारिवारिक दीपयज्ञों के साथ जुड़ी ज्ञान गोष्ठियों के माध्यम से, संकल्पों के क्रम से सहज ही की जा सकती है ।

पारिवारिक पंचशीलों में श्रमशीलता, सहकारिता, शिष्टता, सुव्यवस्था तथा उदार आत्मीयता की गणना होती है । यह गुण परिवार के सभी सदस्यों के अभ्यास में उतारे जाने चाहिए । प्रातः संक्षिप्त उपासना, सायंकाल कथा कहानियों के माध्यम से नैतिक और सामाजिक प्रवृत्तियों का शिक्षण चलाने का प्रयास हर परिवार में किया जाना चाहिए ।

घर के सभी सदस्यों को नित्य अभिवादन का अभ्यास कराया जाय । विनीत रहने और दूसरे को सम्मान-सहयोग देने की परम्परा चलायी जाय । ईश्वर उपासना का छोटा-बड़ा क्रम सभी अपनायें । जिन्हें गायत्री मंत्र न आता हो उन्हें उसका अभ्यास कराया जाय । पूरा मंत्र न बने तो मात्र 'ॐ भूः भुवः स्वः' से ही प्रारंभ करायें । प्रातः कालीन सूर्य का ध्यान करते हुए जप करने का सरल विधि-विधान सबको समझाया जाय । हर परिवार में यथा संभव घरेलू शाक वाटिका रहे । शाक वाटिका में कुपोषण से बचाने वाले शाक तो बिना मूल्य मिलते ही हैं, एक घरेलू उद्योग जैसा उसका महत्व है । इससे भी अधिक लाभ यह है कि परिजनों में इस माध्यम से रचनात्मक प्रवृत्तियों का उभार-अभ्यास होता रहता है ।

परिवार के सभी सदस्यों को सादगी का महत्व समझाया जाय । उन्हें सादा जीवन उच्चविचार के सिद्धान्त को हृदयंगम करने की स्थिति तक पहुँचाया जाय । हर प्रकार की फिजूलखर्ची से बचे रहने का लाभ समझाया जाय, एवं हर सदस्य को शिक्षित बनाने का दायित्व परिवार के शिक्षित व्यक्तियों को सौंपा जाय । निरक्षर किसी को न रहने दिया जाय । महिला-विकास, बाल -विकास के सिद्धान्तों को परिवार के बीच बैठकर ही समझाया जा सकता है । आहार-विहार में विचारशीलता का समावेश भी कराया जाना चाहिए । इन सब के लिए महिलाओं को विशेष रूप से सहमत प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, क्योंकि परिवार निर्माण में उन्हीं की प्रमुख भूमिका रहती है । परिवार निर्माण के और भी महत्वपूर्ण सूत्रों को दीपयज्ञों की ज्ञानयज्ञ प्रक्रिया द्वारा परिवारों में प्रविष्ट कराया जा सकता है । इस प्रकार देखने में सामान्य प्रतीत होने वाले पारिवारिक दीप-यज्ञ, घरों में स्वर्ग के अवतरण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ।

अंशदान एवं समय दान के संकल्प

नव निर्माण की प्रक्रिया सामूहिक प्रयत्नों से ही गतिशील हो सकती है । बड़े काम सदा से इसी आधार पर सफल होते रहे हैं । राम और कृष्ण जैसों ने भी महत्वपूर्ण कार्यों के लिए ग्वाल-बालों, रीछ-वानरों का सहयोग लिया था । बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन, गाँधी जी का सत्याग्रह भी सहयोग से ही चला और सफल हुआ । आज की अनेकानेक समस्याओं का समाधान और प्रगति का सर्वतोमुखी प्रयास भी इसी आधार पर सम्पन्न किया जा सकता है ।

इस पुण्य प्रयोजन के लिए हममें से प्रत्येक को अंशदान और समयदान प्रस्तुत करते रहने का व्रत लेना चाहिए । माह में एक दिन की कमाई नव निर्माण के लिए प्रस्तुत की जा सकती है । इतना न बन पड़े तो बीस पैसा नित्य जैसी छोटी राशि तो कोई भी बचा सकता है । इसके साथ ही समयदान, श्रमदान का भी उदार सहयोग दिया जाना चाहिए । निजी कार्यों में ही सारा दिन-रात न लगा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दें, समाज का ऋण चुकाने, पुण्य परमार्थ अर्जित करने के लिए दो- चार घंटे का समय तो निकाल ही लेना चाहिए । समय की सबसे बड़ी माँग है जनमानस का परिष्कार । युग निर्माण योजना के समस्त क्रिया-कलाप इसी हेतु बने हैं । यह समयदान, अंशदान भी उसी निमित्त अर्पित किया जाना चाहिए -

दीपयज्ञों, प्रचार उपकरणों, दीवाल लेखन जैसे अनोखे प्रयास, दीपयज्ञ आदि सभी में कुछ न कुछ खर्च तो लगता ही रहता है । समय, श्रम, प्रतिभा भी इनके लिए चाहिए ही । यह सब पूर्ति श्रद्धा भरे समयदान के सहारे ही पूरी होगी । भावनाशीलों को समयदान के लिए भी प्रेरणा दी जाय और दीपयज्ञों के साथ, घर-घर ज्ञान घट भी परमार्थ प्रयोजन के लिए स्थापित कराये जायें । शांति-कुंज से नमूने देखकर कहीं भी कुम्हार से मिट्टी के ज्ञान-घट बनवाकर, रंगवाकर बड़ी संख्या में स्थापित किए जा सकते हैं । समयदान, अंशदान का क्रम गति पकड़ ले तो समझो नव निर्माण का चक्र चल पड़ा ।

महान लक्ष्य - सुगम शुभारंभ

दीपयज्ञों का स्थानीय और सामयिक स्वरूप प्रचार प्रधान है । उनके साथ विचार क्रान्ति एवं ज्ञान यज्ञ की प्रक्रिया जुड़ी रहती है । इस आधार पर भावनाशीलों का संगठन भी बन पड़ता है । वातावरण के प्रभाव से कुछ और अधिक करने के लिए उत्साह भी उभरता है । इस उमंग को आत्म परिष्कार, परिवार निर्माण एवं समाज सुधार के क्षेत्रों में गति मिलनी चाहिए । दीप यज्ञों के साथ नारी जागरण अभियान अविच्छिन्न रूप से जुड़ा है । इसलिए महिलाओं के नेतृत्व को उन्हीं के लिए, रचनात्मक भूमिका निभा सकने में समर्थ बनाया जाना चाहिए । इसके लिए आवश्यक दिशा निर्धारण करना ही चाहिए, कार्यक्रम बनना ही चाहिए । यह उत्साह को जगाने का पहला कदम है । इसके अलावा युग सृजन के लिए और भी बहुत कुछ किया जाना चाहिए । ऐसा कुछ जिसके प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई दें और परिवर्तन की प्रक्रिया को आगे बढ़ते देखा जा सके, जिससे जन मानस और वातावरण प्रवाह में युगान्तरीय चेतना का उभार उभर सके ।

प्रचार की दिशा में बढ़ने के लिए सत्साहित्य प्रकाशन, चित्र प्रदर्शनी, स्टीकर, कलेन्डर आदि का उपयोग होना चाहिए । छोटे स्लाइड प्रोजेक्टरों से लेकर वीडियो फिल्मों और बड़े सिनेमा वाली फिल्मों के क्षेत्र में प्रवेश किया जाना चाहिए । उद्देश्यों के अनुरूप पत्र - पत्रिकाओं का प्रकाशन भी होना चाहिए । संगीत बड़े प्रचार माध्यमों में से एक है । इसका देहाती क्षेत्रों में सफल हो सकने वाला आधार खड़ा करना चाहिए । संगीत पाठशालाओं की स्थापना से लेकर संगीत मंडलियों के गठन तक पर ध्यान दिया जाना चाहिए । यह सभी कार्य दीप यज्ञ आयोजनों में शामिल होते रहने वाले प्रतिभावानों को सौंपे जा सकते हैं । वे अपने प्रभाव क्षेत्र में सम्पर्क साधकर इनके लिए आवश्यक तंत्र खड़ा करने और साधन जुटाने में सफल हो सकते हैं ।

दूध को गरम करने पर मलाई ऊपर आ जाती है । आशा की गई है कि भावनाशील वर्ग को दीप यज्ञों की ऊर्जा द्वारा उत्साहित, उत्तेजित एवं गरम किया जा सकेगा । उस गर्मी से समुद्र मन्थन की तरह ऐसे नर रत्न निकलेंगे जो धीमी गति से या छलाँग लगाकर सृजन शिल्पियों की आवश्यकता पूरी कर सकें । महामानवों का ऐसा समुदाय खड़ा हो सकेगा जो युग सृजेताओं के अभाव को भली प्रकार पूरा कर सके । इस उभार में जो नर रत्न आगे आयें उन्हें उनकी योग्यता के अनुरूप काम मिलने चाहिए ।

प्रचार तंत्र का एक अधिक विकसित स्वरूप धार्मिक मेलों का हो सकता है । वे होते तो अभी भी बड़ी संख्या में हैं, पर उनका ढाँचा व्यावसायिक, मनोरंजक एवं अन्ध विश्वासों की पूर्ति करने वाला बन कर रह गया है । जहाँ उनमें सुधार परिवर्तन संभव हो वहाँ वैसा प्रयत्न भी किया जा सकता है, पर इसमें प्रतिभाओं और प्रतिगामियों के बीच रस्सा कसी होने से शक्ति का अपव्यय होने की अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संभावना है । अधिक उपयुक्त यह है कि नए सिरों से दीप यज्ञों के बड़े आयोजनों के साथ जुड़े हुए ऐसे समारोह सम्पन्न हों जिन्हें धार्मिक मेलों का भी रूप मिल सकें ।

मेलों में हर वर्ग के, हर स्तर के नर-नारी सहज ही बड़ी संख्या में उपस्थित होते हैं, अपनी-अपनी रुचि की वस्तुएँ देखते और खरीदते हैं । इस अवसर का लाभ उठाकर लोक शिक्षण की बहुउद्देशीय प्रदर्शनियों का प्रबन्ध किया जा सकता है । सरकार मेले में प्रदर्शनियाँ तो लगाती है, पर उनका उद्देश्य सरकारी प्रयासों का जनता को परिचय कराना भर होता है, जबकि आवश्यकता इस बात की है व्यक्ति के, समाज के चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार में शालीनता, सद्भावना, नागरिकता-समाज -निष्ठा जैसे तत्वों का प्रभावशाली समावेश हो । इस प्रयोजन के लिए मात्र चित्र-प्रदर्शनियाँ ही काफी नहीं, अभिनय नाटक, संगीत सम्मेलनों, कठपुतली तमाशों जैसे प्रदर्शन भी शामिल रहें ।

ऐसे अवसरों पर बिना खर्च वाले सामूहिक विवाहों का भी आयोजन हो सकता है । विवाह योग्य लड़की-लड़कों की देखभाल एवं परिचय मिलने से निश्चय होने तक की बात सुविधा पूर्वक सम्पन्न होती रह सकती है । अपने समाज में सबसे बुरी और भयानक कुरीति विवाहों में होने वाली फिजूल खर्ची की है । दहेज, जेवर, बरात, ज्योनार, सज-धज, गाजे-बाजे इसी फिलूल खर्ची के अंग हैं इनके कारण सर्वसाधारण को दरिद्र और बेईमान बनना पड़ता है । कुरीति उन्मूलन के क्षेत्र में प्रवेश करते हुए हमें धूम-धाम वाले विवाहों का विरोध पूरी शक्ति के साथ करना होगा । इसके लिए बड़े आयोजन और विचार क्रान्ति से जुड़े मेलों की योजना बड़ी प्रभावशाली हो सकती है । बड़ी संख्या में लोक सेवी इन कार्यों में लगाये जा सकते हैं ।

लोकसेवी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण और उनके निवास-निर्वाह की समुचित व्यवस्था यदि बन सके तो उसके माध्यम से स्थिरता पूर्वक नव सृजन के लिए प्रतिभावान कार्यकर्ता मिल सकते हैं । गोखले की सर्वेन्ट्स आफ इन्डिया तथा लाजपत राय की पीपुल्स आफ इन्डिया सोसायटी ने प्रधान रूप से यही काम हाथ में लिया था । बौद्ध विहार इसी निमित्त बने थे । तक्षशिला और नालन्दा विश्व विद्यालय इसी आवश्यकता की पूर्ति करते रहे थे । प्राचीन काल के आश्रम गुरुकुल, तीर्थ, आरण्यक इसी प्रयास में निरंतर कार्यरत रहते थे । मन्दिरों, धर्म स्थानों की स्थापना के पीछे में यही उद्देश्य था । पर अब तो वह सब कुछ एक प्रकार से समाप्त ही हो गया । अज्ञान, अंधकार के युग में परिपाटियाँ कुछ की कुछ हो गयीं । उन्हें बदल सकना असाधारण झंझट का कार्य है, पर ऐसी नई स्थापनाएँ जगह-जगह स्थापित हो सकती हैं । आर्य समाज ने इसी प्रयोजन के लिए गुरुकुलों की स्थापना का कार्य हाथ में लिया था । मालवीय जी ने ऐसा ही कुछ सोचकर हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना की थी ।

अनुभव ने यह बताया है कि केवल बालकों पर निर्भर न रहकर वयस्क और समझदार लोगों में से जिनमें नव सृजन की उमंग परिपक्व हो गई, उनके शिक्षण और निर्वाह का प्रबन्ध बौद्ध मठों की शैली पर किया जाय । यह एक बड़ा काम है जिसे अपनी थोड़ी सामर्थ्य के अनुरूप शांति कुंज ने छोटे रूप में शुरू किया है । अनेक भाषाओं में, अनेक क्षेत्रों और अनेक संस्कृतियों में बँटे हुए सुविस्तृत क्षेत्र में, नव सृजेताओं की जरूरत पूरी करने के लिए ऐसे अनेकों धर्म केन्द्र खुलने चाहिए जिनमें लोकसेवी प्रतिभाएँ गढ़ी जायँ और वे अपनी-अपनी अभिरुचि और योग्यता के अनुरूप सर्वतोमुखी प्रगतिशीलता पैदा करने के काम में समर्पित भाव से जुट पड़ें । वंकिम बाबू ने अपने आनन्द मठ में एक ऐसी ही योजना को अपने ढंग से प्रस्तुत किया था । आज की परिस्थितियाँ अलग हैं । अब विदेशी सरकार से संघर्ष का अवसर चला गया । अब तो लोकमानस की धुलाई-सफाई आदर्शवादी चरित्र-निष्ठा का निर्धारण और क्रिया-कलापों में उत्कृष्टता का समावेश ही युग धर्म बनकर उभरा है ।

आर्थिक प्रगति की बात बहुत जोर-शोर से कही जाती है । उसके लिए बड़े उद्योगों का बढ़ाया जाना भी जरूरी है, पर कुटीर उद्योगों से बने माल की खपत को भी तो खादी आन्दोलन जैसा आश्रय मिलना चाहिए । नशेबाजी दुष्प्रवृत्तियों पर भी कुठाराघात होना चाहिए । फिजूल के दिखावे में जो विलासिता-वाला अपव्यय चल रहा है- उस पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी रोक थाम होनी चाहिए, नहीं तो आर्थिक प्रगति इन्हीं छेदों में से होकर बह जाएगी ।

राजनीति में सुधार परिवर्तन की बात को भी प्रमुखता मिल रही है । पर प्रजातंत्र में मतदाताओं को भी इतना प्रशिक्षित होना चाहिए कि वह चुनाव में सत्प्रयत्नों के लिए ही अपना मत प्रदान कर सकें । इस जड़ को सींचे बिना शासन सुधार के प्रयासों को असफलता ही मिलती रहेगी ।

शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वभाव, प्रचलन, आदत, आवास जैसे अनेकों क्षेत्र हैं, जिनमें स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप लोकसेवी अपनी भूमिकाएँ असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकते हैं और सर्वतोमुखी प्रगति के अग्रदूत बन सकते हैं ।

कोई देश केवल सम्पत्ति, मशीनों और विज्ञान के ही सहारे समर्थ नहीं बन सकता । जिस राष्ट्र के नागरिक अधिक निष्ठा वान चरित्रवान होंगे, वही अधिक समर्थ बन सकेगा । अन्यथा सम्पत्ति से शोषण को, मशीनों से बेकारी को और विज्ञान से ऐयाशी या विनाश को बढ़ावा मिल सकता है ।

दीपयज्ञों का प्राथमिक उद्देश्य नव निर्माण के लिए वातावरण गरमाने का है । वह तत्परता पूर्वक किया जाय,पर साथ ही यह भी समझा जाय कि यह शुरूआत है अन्त नहीं । पूर्णता तो तब आएगी जब "आत्मवत् सर्वभूतेषु वसुधैव कुटुम्बकम् " के आदर्शों को व्यवहार में उतारने वाली बात बन सके । एकता और समता का सुनिश्चित वातावरण बन सके । इसी लक्ष्य तक पहुँचने-पहुँचाने के लिए दीपयज्ञों के माध्यम से शुभारम्भ, श्री गणेश एवं मंगलाचरण किया जा रहा है । आशा की जानी चाहिए कि इन प्रयासों से प्रभावित व्यक्ति समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी से भरी पूरी विचारणा और गतिविधियाँ अपना सकेंगे । धरती पर स्वर्ग के अवतरण वाला स्वप्न साकार हो सकेगा ।

छोटी चिनगारी जो दावानल बनकर रहेगी

नव-निर्माण के लिए दूध औटकर मलाई और समुद्र मथकर रत्न निकालने की तरह सृजन शिल्पियों को उभारना, गढ़ा जाना एक अनिवार्य आवश्यकता है । यह कार्य पचास वर्षों से अखण्ड ज्योति परिवार द्वारा चलाया जा रहा है । अपने साथ जुड़े हुए जन समुदाय में सर्वतोमुखी उत्कृष्टता अपनाने के लिए भाव संवेदनाएँ उभारने के साथ, उन्हें इसके लिए प्रशिक्षित करने का क्रम भी चलाया जाता रहा है । खोज-खोज कर सुसंस्कारी व्यक्तियों को एक सूत्र में पिरोया गया है ।

बोये गये बीज हजार गुने होकर पकी फसल के रूप में फलित हुए हैं । पाँच सौ से प्रारंभ किया गया यह प्रयास अब पाँच लाख तक जा पहुँचा है । इस परिवार को ऐसे विचारशील वर्ग में गिना जा सकता है जो प्रगतिशीलता के दोनों महान-प्रयोजनों आत्म परिष्कार और जन कल्याण के साथ जुड़ गये हैं । खदान से निकले इन नर रत्नों पर खराद रखी जा रही है । दीपयज्ञ कार्यक्रम के पीछे प्राथमिक रूप से यही वर्ग सक्रिय है । उनके प्रयासों के परिणाम लोकसेवी कार्यकर्ताओं की एक समर्थ-बड़ी मंडली के रूप में, निखर कर निकल कर बाहर आ रहे हैं । इस चिकनाई युक्त दूध को, मूल्यवान घी में परिणित हुआ समझा जा सकता है ।

नव सृजन के लिए कई मोर्चे खोलने होंगे । दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन भी एक बड़ा कार्य है । लम्बे समय से इकट्ठे-फैले कूड़े कबाड़ को बुहार कर किसी ऐसे खड्ड में डालना होगा जहाँ से उसकी दुर्गन्ध वातावरण को फिर से न बिगाड़ सके । कटीली झाड़ियाँ काटना एक काम है और खाली की गयी भूमि को समतल करके, खाद पानी का प्रबन्ध करके, उसे उर्वर बनाना दूसरा काम है । उस उर्वर भूमि पर ही सुन्दर उद्यान लगाये और विकसित किए जा सकेंगे । इसे दो मोर्चों पर एक साथ, अविलम्ब लड़ने की व्यवस्था करने जैसा कठिन कार्य समझा जा सकता है । इसके लिए जुझारू योद्धा चाहिये ऐसे जुझारू जिनमें से प्राण और प्रण को एक कर देने की ललक फूट पड़ती हो ।

दीप यज्ञों के माध्यम से, इसी प्रकार की प्रचंड प्रेरणा-युग चेतना बनकर उभर रही है । उससे प्रभावित तो अनजान, अपरिचित और अनगढ़ लोग भी हुए हैं, परन्तु सुसंस्कारियों ने तो उसे उछल कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पकड़ लिया है । जिनमें पहले से ही जीवट था, जो बिगुल बजने- कूच बोले जाने के इन्तजार में बैठे थे, उनके लिए दीपयज्ञों ने युग धर्म के निर्वाह की नयी चुनौती प्रस्तुत की है । फलतः उनमें कुछ कर गुजरने का अदम्य उत्साह उभरा है । चरित्र निष्ठ और प्राणवान लोक सेवियों का एक नया वर्ग अभी-अभी उभर कर सामने आया है । एक वर्ष से चल रहे दीपयज्ञ आन्दोलन की यह एक नयी उपलब्धि है, जिसने सृजन शिल्पी नर-नारियों की एक सेना मैदान में ला खड़ी की है ।

इस उफान को उपयुक्त दिशा धारा देने की आवश्यकता समझी गयी है और उसका प्रबंध भी किया गया है । व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, और समाज निर्माण के तीन घोषित लक्ष्य हैं । स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज की संरचना ही युग धर्म है । इसलिए दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों का संवर्धन, साथ-साथ क्रियान्वित करने की आवश्यकता समझी गयी है । उसे पूरी करने के लिए इस तंत्र के संचालकों ने सुनिश्चित योजना बनायी है ।

कहा जाता है कि नव सृजन का उद्देश्य ठीक प्रकार सम्पन्न करने के लिए राजनीति को सुधारा जाना चाहिए, अधिक सही नीति अपनाने के लिए राजतंत्र पर दबाब डाला जाना चाहिए । इस सन्दर्भ में प्रज्ञा अभियान की मान्यता सुनिश्चित है । लोकतंत्र में शासन की असली मालिकी मतदाता के हाथ में होती है । उसे कर्तव्य और अधिकार का सही बोध न हो सका तो शासन सही हाथों में न पहुँच सकेगा । इसलिए यदि राजनीति को सर्वशक्ति सम्पन्न माना जाय, तो भी उसे सही हाथों में पहुँचाने के लिए लोकमानस के परिष्कार की अनिवार्य आवश्यकता रहेगी ही । कार्य-लक्ष्य कठिन और समय साध्य तो है, पर इसके अतिरिक्त और कोई उपाय ऐसा है नहीं, जो चिर स्थायी समाधान प्रस्तुत कर सके ।

दूसरे उत्साही लोग सामयिक राजनीति को ही सब कुछ मान लेते हैं, पर अपनी दृष्टि भूमि को उर्वर बनाने, उसमें सही बीज बोने और खाद पानी का समुचित प्रबन्ध करने की है । दूसरे लोग जादू की छड़ी घुमाकर चमत्कार दिखाने पर विश्वास कर सकते हैं, परन्तु अपना विश्वास तो लोक मानस में, जन जीवन में, चरित्र निष्ठा और समाज निष्ठा की जड़ें मजबूत करने पर ही है । इसलिए व्यक्तित्वों को प्रखर, प्रतिभावान और प्रामाणिक बनाने की आवश्यकता पूरी करनी पड़ेगी । साथ ही बहुमुखी समस्याओं के समाधान कर सकने वाले रचनात्मक प्रयासों को कार्यान्वित करना होगा । इसके लिए-नया वातावरण बनाने के लिए, समर्पित नर-नारियों की एक पीढ़ी, सृजन प्रयासों में जुटानी पड़ेगी । प्राचीन काल के साधु ब्राह्मणों की आवश्यकता की पूर्ति आज के यह युग शिल्पी करेंगे ।

आधी जनसंख्या का समग्र उत्थान, 'नारी जागरण' आज की एक बड़ी समस्या है । इसके अतिरिक्त उन खर्चीली शादियों का प्रचलन पूरी तरह समाप्त करना है, जो हमें दरिद्र और बेईमान बनाने के लिये पूरी तरह जिम्मेदार है । जाति-पाँति ऊँच-नीच की मान्यता भी प्रगति पथ में अड़ी एक बड़ी भारी चट्टान है । अशिक्षित जैसे ग्रामीण जीवन में प्रौढ़ शिक्षा के लिए योजनाबद्ध प्रयास चलाने हैं । स्वास्थ्य रक्षा से सम्बन्धित अनेक पक्षों की जानकारी जन-जन को कराने और उसके लिये नयी क्रिया-प्रक्रिया प्रारम्भ करना भी बहुत आवश्यक है । अपव्यय कराने वाले फैशन, जेवर, शृंगार और ठाठ-बाट की रोक थाम करके, बचत को गरीबी मिटाने के प्रयोजनों में लगाना है । नशे बाजी और बहु प्रजनन के दो रोग समाज को बुरी तरह खोखला कर रहे हैं । एकता और अखण्डता में बाधक बने हुए कारणों का समापन करना है । ऐसे-ऐसे अनेक क्रिया-कलाप हैं, जिन्हें नव सृजन के लिये अनिवार्य रूप से आवश्यक समझा जाना चाहिए ।

प्रक्रिया को आन्दोलन का रूप देने के लिए प्रचार से लेकर स्वयं सेवक जत्थे बनने की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनेक विधि व्यवस्थाएँ बन सकती हैं । स्थानीय जुलूसों से लेकर दूर - दूर तक पहुँचने वाली पद यात्राओं की व्यवस्था ही लोक मानस बनाने में असाधारण रूप में सहायक हो सकती है नव - निर्माण के योग्य जिनकी भी मन:स्थिति और परिस्थिति है, उन सभी को लक्ष्य पूर्ति का व्यवहारिक मार्ग-दर्शन कराने वाली सार्थक शिक्षा की व्यवस्था की जानी है । इसे वह मेरूदण्ड समझा जाना चाहिए जिसके ऊपर समग्र प्रगति का- युग क्रान्ति का समूचा ढाँचा खड़ा किया जाना है ।

जहाँ सत्साहित्य और आयोजनों के माध्यम से सृजन शिल्पियों की सेना खड़ी की गई है, वहीं उनमें कुशलता से काम सम्पन्न करने की योग्यता देने वाले प्रशिक्षण की भी व्यवस्था बनाई गई है । इसके लिए शांतिकुंज में ऐसा प्रबंध किया गया है, कि लोक सेवी स्तर के नर-नारी तीन-तीन माह के प्रशिक्षण में आत्म निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण के सभी पक्षों में प्रवीणता प्राप्त कर सकें । हर तीन माह में ढाई सौ कार्यकर्ता प्रशिक्षित हों तो एक वर्ष में उनकी एक संख्या हजार हो जाती है । प्रशिक्षित तेजस्वी कार्यकर्ता अपने-अपने यहाँ ऐसे ही प्रशिक्षण चला सकते हैं । गुणन चक्र के अनुसार बढ़ते हुए यह शिल्पी युगान्तरीय चेतना का विस्तार अपने क्षेत्र में, देश में करते हुए, निकट भविष्य में उसे विश्व के कोने-कोने तक पहुँचा सकेंगे ।

शांतिकुंज की प्रशिक्षण प्रक्रिया समय की इस महती माँग को पूरा करने में जुट गयी है । जिन प्रशिक्षार्थियों के पास समय कम है वे तीन की जगह एक माह में भी काम चलाऊ स्तर बना सकते हैं । जिन्हें सीखना नहीं, समझना भर है, वे दस दिन जैसे थोड़े से समय में भी इस विधा का आभास, अनुमान प्राप्त करके अपनी स्थिति के अनुरूप परामर्श प्राप्त करके वापिस लौट सकते हैं ।

आश्रम में स्थान सीमित है और इस प्रकार चेतना के सम्पर्क में आने की इच्छा स्वाभाविक रूप से लाखों परिजनों में उमड़ी है । ऐसी स्थिति में इच्छुकों को अपना पूरा परिचय भेजकर स्वीकृति प्राप्त करनी पड़ती है और अपनी पारी के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है । जो लोग मिशन के संपर्क में लम्बे समय से रहे हैं, अपनी प्रतिभा का परिचय दे चुके हैं, उन्हें प्राथमिकता दी जानी स्वाभाविक है ।

प्रशिक्षण में युग संगीत, प्रवचन सम्भाषण की विशिष्ट प्रक्रिया का अभ्यास कराया जाता है, सामान्य क्रम में और दीप यज्ञों के माध्यम से, कहाँ किन परिस्थितियों में सृजन प्रक्रिया किस प्रकार प्रारम्भ की जाय, आगे बढ़ाई जाय, इसकी रूप रेखा भी हृदयंगम कराई जाती है । अज्ञान निवारण के लिए सद्विचार प्रसार, अशक्ति निवारण के लिए संयम और स्वास्थ्य सम्बर्धन तथा अभाव मिटाने के लिए कुटीर उद्योगों के प्रशिक्षण की व्यवस्था रहती है । इन सभी धाराओं को दीप यज्ञों के माध्यम से भाव भरे वातावरण में जन-जन तक पहुँचाने के प्रयोग अद्भुत रूप से सफल हो रहे हैं ।

भावनात्मक, बौद्धिक एवं दार्शनिक प्रतिपादन यदि उपयोगिता और तर्क तथ्य के साथ जुड़ सकें तो समझना चाहिए कि मनुष्य के उल्टी दिशा से विरत होने और सदाशयता के साथ जुड़ने का सुयोग बन गया । भाव क्षेत्र में, धर्म क्षेत्र में ऐसा ही मोड़ लाने के लिए दीप यज्ञ की प्रक्रिया को चिनगारी स्तर का समझा जाना चाहिए, जो अनुकूलता मिलने पर ज्वलन्त ज्वाला का रूप धारण कर सकती है । जिस भाव श्रद्धा और प्रचण्ड तत्परता के साथ इस दिशा में बढ़ा जा रहा है उसे देखते हुए ऐसे उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना पर विश्वास किया जा सकता है, जो व्यक्ति और समाज का आशा जनक भविष्य उज्ज्वल कर सके , इक्कीसवीं सदी से आरम्भ होने वाले नवयुग की आधारशिला बन सके ।

दीपयज्ञ देखने में एक सामयिक धर्म कृत्य भर प्रतीत होता है, परन्तु उसके साथ इतने अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथ्य जुड़े हुए हैं कि उस छोटे प्रयास को राष्ट्र के समग्र विकास की एक सुनिश्चित रूप रेखा का शिलान्यास समझा जा सकता है । इतने थोड़े दिनों में ही दीप यज्ञ आयोजनों ने जो लोकप्रियता प्राप्त की है, व्यापकता अर्जित की है, नयी प्रतिभाओं को जिस तेजी से उभारा है, वह रोमांचक है । इससे यह सहज विश्वास किया जा सकता है कि नव सृजन के महायज्ञ में दीपयज्ञों के इस श्री गणेश ने अग्नि स्थापन जैसी भूमिका निभायी है । इस प्रयास की महान सम्भावनाओं की कल्पना करने भर से हर विचारशील सद्भावना सम्पन्न का हृदय हुलस उठता है ।

श्रद्धा सम्वर्धन एक महान उपलब्धि

पुण्य-परमार्थ के कार्य श्रद्धासिक्त मनोभूमि में ही बन सकते हैं । ऊसर भूमि में बीज नहीं जमते । इसी प्रकार जिन्हें मात्र स्वार्थ सिद्धि ही अभीष्ट है, उन्हें संयम साधना और परमार्थ परायणता में कोई अभिरुचि नहीं होती । यश कमाने के लिए तो वे अनाचार, अत्याचार कुछ भी अपनाते हैं; किन्तु परमार्थ में उन्हें प्रत्यक्ष घाटा ही दीखता है । संयम बरतना तो, उन्हें मन मारने की मूर्खता ही प्रतीत होती है । सदाशयता की दिशा में बढ़ने के लिए श्रद्धा के विकास का पूर्ण प्रयत्न करना होता है । उर्वर भूमि में बीज गलता है और क्रमशः अंकुर गुल्म, वृक्ष का रूप धारण करता है । संकल्प को मूर्तिवान होते इसी आधार पर देखा जाता है ।

प्रतिभा परिष्कार और प्रचलन में प्रगतिशीलता के समन्वय हेतु, लोक मानस में भाव-श्रद्धा की संवेदना उभारना है । अन्यथा प्रत्यक्षवादी बुद्धि वही सोचने और करने की छूट देगी, जिनमें तत्कालिक स्वार्थ-सिद्धि का लाभ हस्तगत होता है । आपाधापी के साथ पतन जुड़ा हुआ है और दुखदायी अनर्थ भी । संवेदनाओं का उभार ही उन उदार आदर्शवादी प्रयोजनों को अपनाने का साहस प्रदान करता है, जो दृष्टिकोण को उच्चस्तरीय और क्रिया-कलापों को लोक-मंगल के पक्षधर बना सकें ।

अगले दिनों जन साधारण को इसके लिए कटिबद्ध होना है, कि प्रस्तुत अवांछनीयता से जूझने और समग्र उत्थान के सरंजाम जुटाने में जुट पड़े । इसमें तात्कालिक घाटा दीख सकता है, भले ही भविष्य में उसका कितना ही व्यापक सत्परिणाम उपस्थित होने की संभावना क्यों न हों ? श्रेष्ठ कार्य सदा श्रद्धा के बल पर ही बन पड़ते हैं । परमार्थ की दिशा में कुछ भी कदम बढ़ा सकना इसके बिना संभव नहीं होता । समय की सर्वोपरि माँग यह है कि जन-जन में आदर्शवादी श्रद्धा का बीजारोपण एवं अभिवर्धन किया जाय । उसी गरम माहौल में लोगों के अन्तराल में युग धर्म के निर्वाह का संकल्प उभारा जाय । इसके उपरान्त ही आत्मशोधन और परमार्थ प्रयोजनों के लिए कुछ कारगर क्रियान्वयन बन पड़ना संभव है । जुताई और बुवाई का ठीक यही उपयुक्त समय है ।

दीप यज्ञ आयोजनों का व्यापक आन्दोलन सुगन्ध रूपी श्रद्धा और प्रकाश रूपी प्रज्ञा का उल्लास जन-जन के मनों में भरते हैं । गायत्री और यज्ञ इन्हीं दोनों महान प्रयोजनों के प्रतीक चिह्न हैं । बहुत विशाल प्रकार के यज्ञ आयोजन अब घोर मँहगाई के जमाने में सर्व साधारण के लिए संभव नहीं रहे । उनके लिए जितनी बड़ी राशि, व्यवस्था एवं साधन-सामग्री जुटानी होती है, उसका भार सुसम्पन्न लोग ही वहन कर सकते हैं । इसलिए आवश्यक समझा गया कि समय के अनुरूप उनका सुगम संस्करण विनिर्मित किया जाय । विराट् ब्रह्माण्ड का छोटा प्रतीक शिवलिंग या शालिग्राम के रूप में हो सकता है । पंचोपचार पूजा में धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत, पुष्प ही आत्म समर्पण और श्रद्धा विश्वास की सघनता के निमित्त कारण बन जाते हैं । जल, अर्घ्य बढ़ाकर शरणागति भाव को उल्लसित कर लिया जाता है । यह प्रतीक पूजा की अभिव्यक्ति ही यज्ञ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कृत्यों में की जाती है । गायत्री विवेकशीलता की देवी और यज्ञ कठोर कर्तव्य का प्रतिनिधि है । गायत्री यज्ञों में यजनकर्ता इन दोनों के अनुरूप अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने का व्रत लेते हैं ।

कभी प्रचुर मात्रा में गौ घृत और चन्दन काष्ठ होमे जा सकते थे । पर अब तो प्रतीक पूजन, दीपक और अगरबत्ती के रूप में ही उनका उपयोग कर सकना सर्व साधारण के लिए सुलभ हो सकता है । इसलिए दीप यज्ञ आयोजनों के माध्यम से विश्व के कोने-कोने को अध्यात्म ऊर्जा से अनुप्राणित करने का भावनात्मक प्रयोजन पूरा हो जाता है और युग सृजन के अनुरूप, अनुकूल वातावरण निर्मित हो सकता है ।

दीप यज्ञों में सम्मिलित होने के लिए गाँव-गाँव श्रद्धालु लोगों को आमंत्रित किया जाता है । इस देव कृत्य द्वारा देव-सान्निध्य श्रद्धा भाव उमगाया जाता है । साथ ही प्रयोजन की पूर्णता के लिए कुछ न कुछ व्रत लेने के लिए हर किसी को प्रोत्साहित किया जाता है । युग निर्माण का सत्संकल्प दुहराते हुए भी हर भावना शील को युग-धर्म का स्वरूप समझते और उसे दुहराते हुए अपने-अपने कर्तव्य धर्म का सामयिक स्मरण कराया जाता है । दीपयज्ञों के साथ जुड़े हुए अनेक विधि - विधानों की व्याख्या करते हुए भी युग धर्म के अनेकानेक पक्षों पर प्रकाश डाला जाता है । और उपस्थित जनों में से हर किसी को अपने चिन्तन चरित्र एवं व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन करने का अवसर मिलता चलता है । पूर्णाहुति के समय पर तो अपने समय, साधनों का एक अंश लोक मानस-परिष्कार हेतु लगाने का व्रत भी लेना पड़ता है । यदि उस संकल्प को जाग्रत रखने का भी आत्म बल हो, तो दीप यज्ञ का हर याजक अपनी श्रद्धा को उत्साहित, पुलकित, प्रफुल्लित कर लेता है । इसके बिना किसी धर्म-कृत्य का वास्तविक प्रयोजन पूरा नहीं होता । दीप यज्ञों के संदर्भ में इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जाय कि श्रद्धा की गंगोत्री ने गति पकड़ी या नहीं ?

मात्र बुद्धि के सहारे किसी से कोई उच्चस्तरीय, आदर्शवादी कार्य बन नहीं पड़ते । लोक बुद्धि सहज रूप से संकीर्ण स्वार्थ की ओर ही लुढ़कती हैं । उसकी कल्पना, रूपरेखा, एवं योजना यह बनती है कि किस प्रकार अधिक विलास, सुविधासाधन संग्रह करते बन पड़े । लोभ मोह और अहंकार का किस प्रकार अधिकाधिक परिपोषण हो । आमतौर से यह लिप्सा - लालसाएँ महत्वाकांक्षा बन कर जन साधारण पर छाई रहती है और इन्हीं प्रयोजनों के लिए समय, श्रम, पराक्रम, कौशल का नियोजन बन पड़ता है ।

ऐसे लोग दूसरों पर अपनी छाप छोड़ने के लिए धर्म चर्चा भी करते हैं और आदर्शवाद का-धर्म धारणा का- बढ़-चढ़कर समर्थन भी करते देखे गए हैं । पर जब स्वार्थ में कटौती करके परमार्थ के लिए कुछ करने का प्रसंग आता है, तो अपने को सर्वथा पीछे हटा लेते हैं, असमर्थता व्यक्त करने के हजार बहाने गढ़ लेते हैं । ऐसे लोग आत्म संतोष तक से वंचित रहते हैं, फिर उल्लास और आनन्द तो उभरेगा ही कैसे ? ऐसों से उत्कृष्टता अपनाने का-अपना और पराया हित साधन कर सकने का-सुयोग तो बनता ही नहीं ।

स्मरण रखने योग्य यह तथ्य है कि आत्म परिष्कार और पुण्य-परमार्थ की दिशा में कुछ कदम उठा सकना श्रद्धा संचित शक्ति के सहारे ही बन पड़ता है । इन दिनों सबसे बड़ी आवश्यकता इसकी पड़ रही है कि अवांछनीयताओं से निपटने और सर्वतोमुखी उत्कर्ष के लिए, कुछ कहने योग्य पुरुषार्थ करते बन पड़े । इससे युग समस्याओं का समाधान करते बन पड़ेगा । प्रगतिशीलता का वातावरण उसी आधार पर बन पड़ेगा । महान परिवर्तन के लिए जिस स्तर का त्याग बलिदान करने और साहस भरा पराक्रम दिखाने की आवश्यकता पड़ती है, उसके लिए भाव संवेदना एवं श्रद्धा की महती आवश्यकता है ।

संसार में जब भी, जितने भी परमार्थ परायण-लोक सेवी महानुभाव हुए हैं, उन सब में एक ही विशेष शक्ति उभरी हुई पायी गई है,वह है-श्रद्धा । आदर्शों के प्रति, उत्कृष्टता के प्रति, सदाशयता के प्रति, पुण्य-परमार्थ के प्रति अनन्य निष्ठा हो, उसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के बलबूते आत्म संयम सधता है । तप स्तर की कठिनाईयाँ सहते हुए भी चित्त अविचल एवं प्रसन्न रहता है । साधक चौगुने, सौगुने साहस के साथ ऐसी लगनशीलता अपनाते हैं, ताकि अनवरत रूप से ऊँचे उठ सकें और लक्ष्य से भी कहीं अधिक आगे जा पहुँचें ।

श्रद्धा के अतिरिक्त और कोई आधार ऐसा नहीं, जो लिप्सा-तृष्णा के दल-दल से उबार सके, सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने में जो प्रत्यक्ष घाटा दीखता है उसकी अपेक्षा कर सके, परमार्थ में उच्चस्तरीय स्वार्थ साधना का अनुभव कर सके । अत्यन्त प्रचण्ड प्रतिभाएँ, खरे सोने की तरह तप कर ही निखरी हैं । उस अग्नि का दूसरा नाम श्रद्धा है । अनुभवी आत्मवेत्ताओं ने सभी श्रेयार्थियों को इसी की अभ्यर्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया है । यज्ञ ही वह तत्व ज्ञान है । उस क्रिया-कृत्य द्वारा याजकों और किसी रूप में सम्मिलित होने वाले जनों को इसी अवधारणा से ओत-प्रोत होने के लिये नियोजित किया जाता है ।

किसी भी विषय के प्रवचन सभा- मंचों से भी किए जा सकते हैं । साहित्य और रंग मंच भी इसी निमित्त अपनी भूमिका निभा सकते हैं । पर उनका प्रभाव अन्तराल के मर्म स्थल तक न पहुँचने के कारण प्रभाव आंशिक एवं उथला ही होता है । यज्ञ स्तर की प्राण ऊर्जा का समावेश कर लेने पर कठिन संकल्प भी निभते हैं । विवाह काल की यज्ञाग्नि की सात परिक्रमा कर लेने भर से दोनों पक्ष यह अनुभव करते हैं कि वे दोनों जन्म-जन्मान्तरों के लिए एक सूत्र में बँध गए । अग्नि समेत अनेकानेक देव शक्तियों को साक्षी बनाकर जो स्वीकारा, अपनाया जाता है, वह असामान्य स्तर का होता है । उसके फलित होने की क्रियान्वित होने की संभावना कहीं अधिक रहती है । इसे श्रद्धा का फलितार्थ ही कहा जा सकता है । दीप यज्ञों के माध्यम से ऐसा ही श्रद्धासिक्त वातावरण विनिर्मित किया जाता है, जिससे अगले महत्वपूर्ण चरण सुविधापूर्वक उठा सकें, उठाए जा सकें ।

दीप यज्ञ से जुड़े अगले संदर्भ

सर्वसाधारण के लिए सार्वजनिक दीप यज्ञ कहीं भी विस्तृत जगह में फर्श बिछाकर किए जा सकते हैं । उनमें महिलाओं की संख्या अधिक रहती है । पुरुषों में शिक्षित और अशिक्षित वर्ग के दोनों ही पक्ष रहते हैं । इसलिए संचालकों-वक्ताओं को उनकी ग्रहण शक्ति का अनुमान लगाते हुए सुधार-परिष्कार संबंधी प्रवचन का ढाँचा अपनाना पड़ता है । देश में अशिक्षितों का बाहुल्य है । इसलिए सार्वजनिक यज्ञों में, लोकमानस को समुन्नत, सुसंस्कृत, प्रगतिशील बनाने के लिए उसी परिधि में रहना पड़ता है, जिसे वह सरलतापूर्वक अपना सके । इस स्तर के लोगों के लिए संगीत के साथ टिप्पणियाँ करते चलने की भजनोपदेशक शैली अधिक कारगर सिद्ध होती है ।

प्रवेश इससे ऊँचे वर्ग में भी करना है । विचार क्रान्ति का विस्तार करना बुद्धि प्रधान लोगों के बीच अभीष्ट है । सुशिक्षितों के गले श्रद्धा कम उतरती है । उन्हें इस स्तर के तर्क, तथ्य, प्रमाण अभीष्ट होते हैं जैसे कि न्यायालयों में दोनों पक्ष अपनी बात कानूनी पृष्ठभूमि पर वकीलों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं । बुद्धिवादी वर्ग न्यायाधीश स्तर का माना जा सकता है । वे बहु पठित और एक प्रकार से बहुश्रुत भी होते हैं । उनके गले कोई अपरिचित विचार धारा उतारना सरल नहीं पड़ता । इसलिए इस वर्ग के लिए पृथक् ज्ञान गोष्ठियाँ नियोजित करने की आवश्यकता होगी ।

दीप यज्ञ की एक शाखा बुद्धिवादियों-उच्च शिक्षितों के लिए अतिरिक्त रूप से होती है । इसके लिए स्थानीय प्रवचन हालों में प्रबंध करना पड़ता है । ऐसे छोटे-बड़े टाउन हॉल हर जगह बने होते हैं, जिनमें फर्नीचर लगे होने के कारण पैन्ट पहनने वालों को भी देर तक बैठने में असुविधा नहीं पड़ती । इनमें प्राय: ५०० व्यक्तियों के बैठने का स्थान भर होता है । सुरुचिपूर्ण व्यक्ति भी एक क्षेत्र में प्राय: इतने ही मिल पाते हैं । इन्हें छपा निमन्त्रण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पत्र दिये जाने पर, वे अनुभव करते हैं, कि हमें नाम के साथ स्मरण किया गया है और विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है । इतना मान दिए बिना, उनकी उपेक्षा पर काबू नहीं पाया जा सकता । इसलिए जहाँ हालों गले विशिष्ट प्रवचनों का प्रवन्ध किया जाय, वहाँ उस स्तर के लोगों को बुलाने के लिए निमंत्रण देने वाले भी प्राय: उसी स्तर के होने चाहिए, अन्यथा उनकी अरुचि-उपेक्षा को सरल-तरल नहीं बनाया जा सकता ।

हॉलों में नियोजित ज्ञान यज्ञों में दीप यज्ञों की कर्मकाण्ड प्रक्रिया को सरल करना पड़ता है । इसके लिए इतने से काम चल जाता है कि स्टेज पर दो मेजों पर, चौबीस दीपक और चौबीस अगरबत्ती गुच्छकों को सजा कर रख दिया जाय और उन्हें इस क्रम से जलाया जाय कि डेढ़-दो घंटे की अवधि तक वे सुगंधि एवं प्रकाश देते रहें ।

आरंभ में थोड़ा संगीत, फिर दीप यज्ञ विधि का संक्षिप्त रूप गायत्री मंत्र का सामूहिक उच्चारण आदि क्रिया-कलापों के माध्यम से उन्हें एकाग्र कर लिया जाय । फिर आज की परिस्थितियों में, समग्र विकास की संभावना जैसे किसी पूर्व घोषित रुचिकर विषय पर प्रवचन का तर्क एवं तथ्यों से भरा-पूरा उपक्रम चलाया जाय । इन आयोजनों के लिए प्रवक्ता ऐसे चाहिए, जिनका ज्ञान, अध्ययन, सुनने वालों की तुलना में किसी प्रकार कम न हो ।

उपरोक्त स्तर के विशेष कार्यक्रमों के लिए शांति - कुंज में विशिष्ट टोलियाँ निर्धारित हैं । उन्हें आवश्यक स्थानों पर समयानुसार भेजा जाता रहता है । ऐसे लोगों के लिए आमतौर से रविवार उपयुक्त समझा जाता है । किन्तु प्रवक्ता के लिए यह कठिन पड़ता है कि वह दूर स्थान में, जाकर एक दिन ही काम करके शेष छै दिन आने में लगाए, अथवा निरर्थक बैठा रहे । इस कठिनाई को समझते हुए हर हॉल आयोजन को रविवार के दिन ही किया जाय, यह आग्रह नहीं होना चाहिए । सुबह-शाम का समय आमतौर से खाली रहता है, उसी समय का उपयोग इन ज्ञान-गोष्ठियों के लिए कर लिया जाय । दो घंटे के लगभग का समय व्यस्त दिनों में भी निकाल सकना भारी नहीं पड़ता । प्रवक्ता के लिए इससे यह सुविधा पड़ती है कि वह लगातार एक के बाद दूसरे स्थान में पहुँच कर, सप्ताह में सात कार्यक्रम सात स्थानों में पूरे कर लेता है ।

व्यापारी वर्ग की यदि ज्ञान गोष्ठी सम्पन्न करनी हो, तो उन्हें इन आयोजनों की शिक्षाओं को अपने वर्ग में फैलाने के लिए एक स्मारिका प्रकाशित कराने की बात कही जा सकती है । उपस्थित लोग थोड़ा-थोड़ा योगदान दे दें, तो यह कार्य बड़ी सरलता पूर्वक सम्पन्न हो सकता है और उस विचार-धारा से दूर-दूर के अन्य लोग भी लाभ उठा सकते हैं ।

स्मारिका यदि अध्यापक, इन्जीनियर, आफिसर स्तर के लोगों की हो, तो वे स्वयं स्मारिका के लिए विज्ञापन न दे सकने पर अपने प्रभाव क्षेत्र से उन्हें स्वयं माँग कर पूरा कर सकते हैं । स्मारिका प्रकाशन को यदि ज्ञान गोष्ठियों की स्मृति, सफलता एवं उत्साह की अनुभूति समझा जाय, तो भी ठीक होगा । प्रतिभावानों में युग की विचार धारा का विस्तार करना आवश्यक है । यह कार्य होना तो, साहित्य के पठन-पाठन से भी संभव है, पर स्मारिका का प्रयोग ऐसा है, जिससे स्थानीय लोगों के उत्साह एवं पराक्रम का पता चलता है । उन्हें श्रेय भी मिलता है । इस प्रकार प्रबुद्ध जनों की ज्ञान गोष्ठियों का उपक्रम सार्वजनिक विशाल यज्ञ के समानान्तर अपने ढंग से स्वतंत्र रूप में चलते रह सकते हैं ।

विस्तार की गति है-एक से पाँच, पाँच से पच्चीस । आरम्भिक पाँच सदस्यों में से प्रत्येक यह प्रयत्न करें कि अपने स्तर के चार-चार अन्य व्यक्तियों को तद्विषयक जानकारी देते हुए इस संगठन में सम्मिलित किया जाय । ऐसा करने पर पाँच से पच्चीस बन जाने में कोई कठिनाई न पड़ेगी ।

पच्चीस पर एक मण्डल की पूर्णता मानी जाय । सभी सदस्य अपने प्रयास जारी रखें और एक से पाँच, पाँच से पच्चीस की नीति को अपने कर्तव्य, उत्तरदायित्व में भी सम्मिलित करें । इस प्रकार आरंभिक मण्डलों के पच्चीसों सदस्य स्वयं एक-एक केन्द्र बनकर, उसी विस्तार क्रम को आगे-आगे चला सकते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहना न होगा कि यह चक्रवृद्धि क्रम स्वयं को बढ़ाते हुए अपने क्षेत्र को, देश को, अपने संगठन की सीमा में समेट सकता है । इसका विश्व विस्तार भी हो सकता है ।

दीप यज्ञ जहाँ भी हो, वहाँ उनकी स्मृति में एक स्थानीय कार्य यह किया जाय, कि उपस्थित जनों में से ऐसे लोग ढूँढे जाँय, जो अपने अतिरिक्त चार अन्य अपने साथी-सहयोगी ढूँढकर एक प्रज्ञा मण्डल का गठन कर सकें। अभीष्ट प्रयोजनों के लिए पाँच व्यक्तियों का संगठन भी पर्याप्त है । अधिक बड़े संगठन में अहंकारी बड़प्पन और पद-लिप्सा जैसे अनेक दोष उभर आते हैं और खोज-बीन आरम्भ होने पर वे चल नहीं पाते । इन दिनों प्राय: यह प्रवृति सार्वजनिक क्षेत्र पर बुरी तरह हावी हुई देखी जा सकती है । इसलिए बड़ा जंजाल खड़ा करने की अपेक्षा यह उत्तम समझा गया है, कि प्रज्ञा परिवार की पाँच-पाँच भावनाशीलों की छोटी-छोटी इकाइयाँ गठित की जाँय । पुरुष प्रज्ञा मण्डलों की तरह महिलाओं के महिला मण्डल भी गठित किए जा सकते हैं । वे भी पाँच-पाँच से ही आरम्भ होने चाहिए ।

संगठन अपने युग की सबसे बड़ी शक्ति है । राम तक को रीछ-वानरों का संगठन बनाना पड़ा था । कृष्ण के सहयोगी ग्वाल-बाल थे । गाँधी के सत्याग्रही, बुद्ध के परिव्राजक ही अपनी सम्मिलित शक्ति से वे बड़े कार्य कर सके, जो कहने-सुनने तक में असंभव, आश्चर्यजनक लगते हैं । एक व्यक्ति कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो, वह एकाकी स्थिति में कुछ कहने लायक कार्य नहीं कर सकता । कहावत है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता । ढाई ईंट की मस्जिद नहीं चुनी जा सकती । डेढ़ चावल की खिचड़ी नहीं पकती । मिल जुलकर तो तिनके भी हाथी बाँधने वाला रस्सा बन सकते हैं । व्यवस्थित ईंट से ईंट मिलकर भव्य-भवन खड़ा करती हैं । संसार में जितने भी महान कार्य संभव हुए हैं, उनमें सहकारिता की संघशक्ति ही प्रधान रूप में काम करती है । देवताओं की सम्मिलित शक्ति से ही असुर निकन्दनी दुर्गा प्रकट हुई थीं । नव युग के निर्माण में भी इसकी अनिवार्य आवश्यकता पड़ेगी । उसका सुनियोजन इसी प्रकार होना चाहिए, कि छोटे-बड़े दीप यज्ञों में सम्मिलित हुए लोगों से प्रतिभावानों, भावनाशीलों को चुनकर पाँच-पाँच के प्रज्ञा मण्डल गठित कर लिए जायँ और उनके प्रत्येक सदस्य को चार नये साथी ढूँढने और संगठन से जोड़ने का काम सौंपा जाय । विश्वास किया जाना चाहिए कि यह उपक्रम चलता रहे, तो कुछ ही समय के भीतर सुविस्तृत जन-समुदाय को एक स्नेह सूत्र में मजबूती के साथ आबद्ध किया जा सकता है ।

प्रज्ञा मण्डल के प्रत्येक सदस्य को, नव सृजन के लिए न्यूनतम योगदान प्रस्तुत करते रहने की उदारता दिखानी चाहिए । प्रतिदिन दो-दो घंटे का समयदान, अपने संपर्क क्षेत्र में लोक मानस के परिष्कार हेतु नियमित रूप से लगाते रहना चाहिए । इस एक-एक बूँद का संचय, एक पूरे समुद्र के समकक्ष बन सकता है । शक्ति और साधन जुटाने का यह सरलतम मार्ग है । छोटा मकान बनाने तक में जब पर्याप्त शक्ति लगती है, तो संसार का समूचा ढाँचा, नए कलेवर में ढालने के लिए कितनी बड़ी शक्ति और सामग्री चाहिए, इसका सहज अनुमान लगया जा सकता है । इसे प्राप्त कैसे किया जाय ? धनाध्यक्षों के सामने गिड़गिड़ाने, उनकी रुचि को प्रमुखता देने से अभीष्ट लक्ष्य की दिशा में उन्मुक्त भाव से नहीं बढ़ा जा सकता है । सरकार पर अपने जिम्मे के काम ही बहुत हैं । ऐसी दशा में यदि कुबेर का खजाना हाथ नहीं लगता, तो दूसरा एक मात्र उपाय यही है कि प्रत्येक प्रज्ञा-परिजन को, अपने समय और साधन का एक अंश नियमित रूप से स्थानीय नवसृजन प्रयोजन के लिए नियोजित करते रहने का व्रत लेना चाहिए । इतने भर से ही वे सब आवश्यकताएँ पूरी होती रहेंगी, जो अभी अति विस्तृत एवं कठिन दिखाई पड़ती हैं ।

योजनाएँ अनेक बनती हैं, इच्छाएँ अनेक उठती हैं, आवश्यकताएँ अनेक रहती हैं, किन्तु वे सभी निष्फल या अधूरी इसलिए रह जाती हैं, कि उनके पीछे जन शक्ति और साधन शक्ति उस स्तर की-उतनी मात्रा में जुट नहीं पाती, जितनी की आवश्यकता रहती है । कहीं सुयोग्य और ईमानदार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्यकर्ता कम पड़ जाते हैं, कहीं साधन नहीं जुट पाते । जितने हैं, तो उनमें बेईमानी घुस पड़ती है । इन सभी संकटों से बचने का यही तरीका सर्वश्रेष्ठ है कि व्यक्ति अपनी आजीविका घर से, व्यवसाय से कमाए; किन्तु दो घंटे का समय और कुछ पैसे भी नियमित रूप से दे । इसमें चालाकी की गुंजाइश कदाचित् ही निकालें । पच्चीस आदमियों की मण्डली जिस काम को भी हाथ में लेगी, उसे सम्पन्न कर सकना निश्चित रूप से बन पड़ेगा, भले ही वह छोटे रूप में ही क्यों न हो । दीप यज्ञ आयोजनों के साथ यह संगठन और साधन संचय भी जुड़ा हुआ ही समझा जाना चाहिए ।

साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से चलें

मित्रता और शत्रुता तभी बनी रहती है, जब सम्पर्क की सघनता बनी रहे । अन्यथा वे घटती और टूटती जाती हैं । दीपयज्ञों का दूसरा चरण है- प्रज्ञा मण्डलों का गठन । समान विचार के लोग जब जुड़ते और घनिष्ट होते हैं, तो एक अभिनव शक्ति उभरती है । इसका प्रयोग जिस भी कार्य में किया जाय, उसमें प्रगति होती चली जाती है । अस्तु प्रज्ञा मण्डलों के क्रम में, एक से पाँच करने की बात चल रही हो या पाँच के पच्चीस होने की मंजिल पूरी की जा रही हो, हर हालत में आवश्यक यह है कि जो जुड़े हैं, वे अधिक घनिष्ट बनते चले जाँय । यह तभी संभव हो सकता है, जब नियमित रूप से मिलने जुलने का क्रम चलता रहे ।

हर दिन मिलना कठिन है । उसकी आवश्यकता भी नहीं है । सप्ताह में सभी सम्बद्ध व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण प्रयोजन के लिए परस्पर मिल-जुल लिया करें, तो इतने भर से काम चल सकता है । गिरिजाघरों में प्रत्येक रविवार के दिन ही भक्तजन एकत्रित होते हैं । मस्जिदों में भी शुक्रवार के दिन ही अधिक भीड़ रहती है । सामान्य रूप से श्रद्धालुजन मन्दिर भी सप्ताह में एक दिन ही पहुँच पाते हैं । विदेशों में बसे भारतीय तो इतना ही कर पाते हैं । व्यस्तता एवं उपेक्षा के माहौल में साप्ताहिक क्रम ही चल पायेंगे ।

सर्वविदित है कि सन् १९८९ से २,००० तक के बारह वर्ष युग संधि के हैं । इसमें सभी धर्म परायण अपने-अपने ढंग से विशेष पूजा उपासना करें; ताकि इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य की उक्ति को चरितार्थ होने में बल मिले ।

शांतिकुंज में इन बारह वर्षों में नियमित रूप से महापुरश्चरण चलता रहेगा । पर अन्यत्र सभी सम्बद्ध संगठनों से भी अपेक्षा की गई है, कि कम से कम साप्ताहिक रूप से तो उस उपक्रम की पूर्ति कर ही लिया करें । विनिर्मित प्रज्ञापीठें तो इस अनुशासन का निर्वाह कर ही रही हैं । अब नव गठित प्रज्ञा मण्डल भी नियमित रूप से साप्ताहिक सत्संग का क्रम चला रहे हैं । किसी सुनिश्चित स्थान पर प्रति सप्ताह एकत्रित होना भी ठीक है, अन्यथा यह भी किया जाता है कि बारी-बारी से सदस्यों के घरों पर साप्ताहिक सत्संग चले । इससे दो प्रयोजन सधते हैं । एक यह कि युग संधि में चलते रहने वाले पुरश्चरण में भागीदारी बनी रहे । दूसरा यह कि सदस्यगण आपसी घनिष्ठता को सुदृढ़ बनाते रहें और मिल-जुलकर अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति के लिए कार्यक्रम बनाते और चलाते रहें । समय प्रातःकाल का सर्वोत्तम है, अन्यथा उसे सूर्यास्त के उपरान्त भी किया जा सकता है । आमतौर से इतवार या गुरुवार ठीक माने गये हैं, पर जहाँ साप्ताहिक छुट्टी वाला अन्य कोई दिन उपयुक्त लगता हो, वहाँ वैसा निर्धारण भी हो सकता है । समय दो घंटे का निर्धारित रहे तो उतना पर्याप्त है ।

साप्ताहिक सत्संग को पाँच कार्यक्रमों में विभक्त किया गया है- १. गायत्री जप, २. दीप यज्ञ, ३. सामूहिक युग गान, ४. क्रिया-कलापों का सामयिक निर्धारण ५. चल पुस्तकालय का संचालन ।

नियत समय पर एकत्रित होने का सभी ध्यान रखें । पंक्तिबद्ध बैठकर गायत्री का मानसिक जप और उदीयमान सूर्य का ध्यान करें । अनुभव करें कि प्रज्ञा और श्रद्धा की दिव्य ऊर्जा अपने रोम-रोम में प्रवेश करके, ओजस्-तेजस्-वर्चस् प्रदान कर रही है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूजा चौकी पर छोटे जल कलश के आगे दीपक और अगरबत्ती गुच्छक प्रज्ज्वलित कर लें । सब लोग मिलकर २४ बार गायत्री गान करें । दीपक जैसा प्रकाशमान अपना जीवन बने एवं व्यापक वातावरण उभरे, ऐसी भावना करें ।

युग संगीत के कितने ही गायन प्रचलित हैं । उनमें से कुछ गीत इस प्रकार गाये जा सकते हैं कि एक व्यक्ति पहले उच्चारण करे, बाद में अन्य सभी लोग उसे दुहरायें । इन तीनों उपक्रमों को मिलाकर पूजा प्रयोजन का पूर्वार्द्ध पूरा हो जाता है ।

उत्तरार्ध में विचार-विनिमय की प्रधानता है । किसने पिछले सप्ताह लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ने के लिए क्या किया ? और अगले सप्ताह क्या करने की योजना है ? इसे सब लोग बारी-बारी से बतायें । अन्त में सामूहिक समीक्षा हो और अगले दिनों यह छोटा संगठन क्या कर सकता है, इस पर प्रकाश डाला जा सकता है । सत्संग पक्ष यही है ।

पाँचवा चरण है- चल पुस्तकालय । प्रज्ञा मंडल की पुस्तकें वहाँ उपलब्ध रहें और सदस्य अपने साथ आवश्यकतानुसार पुस्तकें व कैसेट ले जायें तथा उन्हें प्रभाव क्षेत्र में पढ़ाने-सुनाने और वापस लेने का क्रम चलायें । जो पुस्तकें इस सप्ताह ली गई हैं, उन्हें अगले सप्ताह सत्संग के अवसर पर वापस जमा कर दिया जाय । इस आधार पर सभी सदस्य अपने-अपने क्षेत्र में चल पुस्तकालय चलाने की प्रक्रिया पूरी करते रह सकते हैं । हर सप्ताह इस आधार पर सैकड़ों को युग चेतना के आलोक से लाभान्वित होने का अवसर मिलता रह सकता है ।

सत्संग में सत्कार के रूप में कुछ खर्चीली वस्तुएँ प्रस्तुत करने का निषेध है; ताकि गरीब अमीर सभी के घरों पर बिना कोई दवाब अनुभव किए, यह आयोजन सरलता पूर्वक सम्पन्न होते रहें । शीतल जल पिला देना पर्याप्त है । तुलसी पत्र सहित अभिमंत्रित जल का प्रसाद भी बाँटा जा सकता है । खर्चीले उपक्रम श्रद्धा के वातावरण में सम्पन्न नहीं किये जा सकते । ऐसा कुछ किया जा सकता है कि लोग अपने-अपने घरों से भुने चने जैसा कोई सूखा पदार्थ ले आया करें, उसे सम्मिलित करके प्रसाद के रूप में सब लोग मिल बाँट कर खा लिया करें ।

यह सजगता, सजीवता एवं क्रियाशीलता बनाये रखने का अनुशासन है । शुभारम्भ के रूप में तो यह ठीक है, पर इतने को ही पर्याप्त नहीं माना जा सकता । करना कुछ ऐसा ठोस काम भी है, जिसमें सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन की दिशा में कुछ कदम उठाने की प्रक्रिया चल पड़े, ज्ञान के साथ कर्म का समावेश अपना उत्साहवर्धक स्वरूप प्रस्तुत करने लगे ।

अपने देश में निरक्षरता एक बड़ा अभिशाप है । इससे गरीबी और गंदगी जैसी अनेकों पिछड़ेपन की निशानियाँ उभरती हैं । विशेषतया प्रौढ़ों की निरक्षरता और भी अधिक असहाय है । क्योंकि आज का समय उन्हीं के माध्यम से गतिशील है । बच्चे तो पढ़ लिख कर कहीं पन्द्रह बीस वर्ष बाद अपना पराक्रम दिखाने योग्य होंगे । तब तक का समय प्रतीक्षा में नहीं गँवाया जा सकता । होना यह चाहिए कि देश के एक तिहाई शिक्षित, शेष दो तिहाई अशिक्षितों को साक्षर बनाने का उत्तरदायित्व अपने कंधे पर उठायें और विद्या का ऋण चुकाने की अपने जिम्मेदारी निभायें । जिसके सम्पर्क क्षेत्र में जितने लोग अशिक्षित हैं, सदस्यगण उनकी गणना कर लें । उनसे सम्पर्क साध कर ऐसा ताल मेल बिठायें, कि पढ़ने -पढ़ाने का कोई समय निर्धारित किया जा सके और प्रशिक्षण का क्रम अनवरत रूप से चलता रहे ।

दो निरक्षरों को साक्षर बनाने का न्यूनतम संकल्प तो हर एक सुशिक्षित को पूरा करना चाहिए । इस प्रयास में सम्मिलित तो पड़ोसियों को भी किया जाय, पर अपने परिवार के सम्बन्ध में तो यह अनिवार्य ही समझा जाना चाहिए कि उस परिधि में कोई भी उपयुक्त व्यक्ति अशिक्षित न रहे । जो थोड़े पढ़े हैं, उन्हें अधिक पढ़ाने का प्रबंध करना चाहिए; ताकि वे मात्र साक्षर ही न बनें, वरन् इतनी योग्यता भी सम्पादित कर लें, कि महत्वपूर्ण पुस्तकें पढ़ने और समझने में अपने को असमर्थ न पायें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वस्तुतः इससे कम में साक्षरता मानी ही नहीं जा सकती । चिट्ठी-पत्री लिख पढ़ लेना ही पर्याप्त नहीं हो सकता । अक्षर ज्ञान की सार्थकता तभी है जब उसके उपरान्त ज्ञान वर्धक पुस्तकों को पढ़ने-पढ़ाने का सिलसिला अनवरत रूप से चलता रहे ।

अशिक्षा की दृष्टि से नारी वर्ग अधिक पिछड़ा हुआ है । वे इसकी उपयोगिता या आवश्यकता भी अनुभव नहीं करतीं । ऐसी स्थिति में उन्हें शिक्षा का लाभ बताना एवं उत्साह उत्पन्न करने का प्रयास करना और भी अधिक आवश्यक है । प्रज्ञा मंडल के सदस्यों को शिक्षा संवर्धन के कार्य में जुटे ही रहना चाहिए । निरक्षरों को साक्षर बनाना और साक्षर के हाथ में प्रेरणाप्रद पुस्तकें दिलाकर उन्हें अधिक विचारशील बनाना, अपने समय की सब से बड़ी सेवा हैं । यह कार्य सत्संग का ही एक अंग है । उसे सरल किन्तु पूर्ण परमार्थ कहना चाहिए ।

प्रज्ञा मंडल के सदस्य एक बार शांति कुंज आकर नौ दिन का, या एक महीने का सत्र पूरा करने का प्रयत्न करें । नव सृजन की यह उद्गम भूमि है । उसे सद्ज्ञान गंगोत्री भी कह सकते हैं, उपासना और अर्चना यों तो कहीं भी हो सकती है, पर इस भूमि का और वातावरण का अपना अलग महत्व है । बैटरी चार्ज करने के लिए उसे सशक्त चार्जर के साथ जोड़ना पड़ता है । यह उद्देश्य शांतिकुंज की सत्र साधना में संभव होता है । अपनी मनःस्थिति के अनुरूप आगे बढ़ने, ऊँचा उठने का जो सुयोग यहाँ मिलता है, उसे घर रहकर प्राप्त नहीं किया जा सकता । अस्तु प्रज्ञा परिजनों में से प्रत्येक को यह प्रयत्न करना चाहिए, कि एक सत्र शांति कुंज रहकर सम्पन्न करें । इसके लिए जब अवसर अवकाश हो, तब अपने आगमन का समय पत्र व्यवहार से निश्चित कर लेना चाहिए । बिना स्वीकृति प्राप्त किये, चाहे जब जा पहुँचने की छूट नहीं है । इच्छुक अधिक और स्थान सीमित होने के कारण स्वीकृति प्राप्त करने पर, अपनी बारी पर ही आने का अनुशासन अपनाना पड़ता है ।

सुसंस्कारिता संवर्धन की संस्कार परम्परा से लाभान्वित होने के लिए शांतिकुंज अपने ढंग का एक सशक्त केन्द्र है । बालकों के लिए अन्नप्राशन, मुण्डल, विद्यारंभ, किशोरों के यज्ञोपवीत, युवकों के विवाह, अधेड़ों के वानप्रस्थ संस्कार यहाँ विधिवत् निःशुल्क कराये जाने की व्यवस्था है । जन्मदिन और विवाह दिन मनाने के लिए भी अनेक लोग यहाँ आते रहते हैं । पितरों के तर्पण भी यहाँ हो जाते हैं । इन सभी संस्कारों का प्रचलन घर-घर में होने लगे, इसकी प्राचीन काल की ही तरह आज भी महती आवश्यकता है । शांतिकुंज में आने वालों के संस्कार कराने की व्यवस्था तो है ही, साथ ही एक मास के शिक्षण सत्रों में यह व्यवस्था भी है कि शिक्षार्थी इस संस्कार प्रक्रिया को सीख कर उसे क्षेत्रों में फैलाने के लिए भी आवश्यक योग्यता प्राप्त कर लें ।

साप्ताहिक सत्संगों द्वारा यह कार्यक्रम भी हाथ में लिया जाना चाहिए कि वे कुरीतियों, मूढ़मान्यताओं, अन्ध परम्पराओं को निरस्त करने के लिए भी प्रयत्न करें । जाति-पाँति और ऊँच-नीच की मान्यता, पर्दाप्रथा, मृतकभोज, पशुबलि, दहेज धूम-धाम वाली खर्चीली शादियों के विरुद्ध वातावरण तैयार करें । श्रमशीलता, शिष्टता, मितव्ययिता, सहकारिता, स्वच्छता जैसी प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने में कुछ उठा न रखें । आत्म निरीक्षण, आत्मसुधार, आत्मनिर्माण, आत्मविकास के चतुर्विध क्रिया-कलापों को हर व्यक्ति अपनाये और 'हम सुधरेगें युग सुधरेगा' के उद्घोष को कार्य रूप में परिणत कर दिखायें ।

बाल संस्कार शालाएँ

प्रज्ञा मण्डलों में कुछ क्रिया-कलाप ऐसे भी हों जो, सर्वसाधारण की दृष्टि में, प्रत्यक्ष लोक सेवा के रूप में भी अपना परिचय दे सकें । उपासना में भगवत् भक्ति का समावेश है। आत्म निर्माण के निमित्त अपनाई गई चरित्र निष्ठा शक्ति प्रदान करती है; किन्तु प्रगति परायणशक्ति उन्हीं प्रत्यक्ष क्रिया-कलापों से आती है, जो हर देखने वाली आँख को अपना प्रत्यक्ष परिचय दे सकें ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रज्ञा मंडल जब अपने पैरों खड़े होने और चलने की स्थिति में आ जाये, तो उन्हें एक सशक्त प्रवृत्ति चलानी चाहिए, वह है 'बाल संस्कार शाला' । इसकी इन दिनों आवश्यकता भी बहुत है, क्योंकि नई पीढ़ी के हाथ में ही उज्ज्वल भविष्य की संरचना का दायित्व है । उसे प्रतिभावान होना चाहिए और सद्गुण सम्पन्न भी । समर्थ व्यक्तित्व ही बड़े काम कर पाते हैं । इसलिए आवश्यक है कि नई पीढ़ी के दृष्टिकोण, चरित्र एवं व्यवहार में इस स्तर की शालीनता का समावेश किया जाय, कि वे प्रगतिशीलता की दिशा में अपनी नाव खे सकें और दूसरे अनेकों को उस पर बिठा कर पार लगा सकें ।

स्कूली पाठ्य पुस्तकों में जानकारियाँ तो बहुत प्रकार की दी जाती हैं, पर यह विषय प्रायः अधूरा ही रह जाता है कि व्यक्तित्व को प्रामाणिक, प्रखर और परिष्कृत कैसे बनाया जाय ? इस आवश्यकता की पूर्ति स्कूलों में प्रायः नहीं ही हो पाती है ।

इस अभाव की पूर्ति बाल संस्कार शालाओं के सुनियोजन से ही संभव हो सकती है । स्कूली बच्चों की पढ़ाई से बचे समय में से दो घंटे इस निजी प्रशिक्षण के लिए मिलते रह सकें, ऐसी व्यवस्था बनानी चाहिए । सर्दियों में दोपहर के स्कूल लगते हैं । सबेरे शाम का समय बच जाता है । गर्मियों में सबेरे से दोपहर तक की पढ़ाई होती है । दोपहर से शाम तक का समय बच जाता है । इसी बचे हुए समय का सदुपयोग बाल संस्कारशाला चलाने के लिए किया जाना चाहिए ।

इसके लिए शिक्षार्थी मिल जाना तनिक भी कठिन नहीं है । कारण यह है कि भारी भरकम पाठ्यक्रम को बच्चे स्कूल में पूरी तरह पढ़ समझ नहीं पाते । घर पर करने के लिए जो 'होम वर्क' मिलता है उसे एकाकी पूरा करने में मन उचटता है । खेलने और मनोरंजन के अन्य कार्यों में जी बहलाने की उनकी प्रवृत्ति होती है । ऐसी दशा में होम वर्क भी नहीं हो पाता । पढ़ाई कच्ची रह जाती है । ऐसी दशा में बच्चों के लिए उनके अभिभावकों के लिए सदा यह चिन्ता-आशंका ही बनी रहती है, कि कहीं असफल रहने पर भविष्य अन्धकारमय न बन जाय ।

जिसकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है वे तो मँहगे ट्यूशन लगाने का भी व्यय भार वहन कर लेते हैं, पर सर्वसाधारण की स्थिति ऐसी नहीं होती । अभिभावकों में से बहुत कम ऐसे होते हैं, जो अपने बच्चों को घर पर स्कूली पढ़ाई की कमी स्वयं पूरी करा सकें । इस सार्वजनिक असमंजस के बीच यह हल निकल सकता है, कि गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले बाल संस्कार शालाएँ स्थापित की जायें और उनके माध्यम से ट्यूशन पढ़ाने की आवश्यकता पूरी कराई जाय । इससे उनका अच्छे नम्बर से उत्तीर्ण होना निश्चित होता ही जायेगा । समझदार बच्चे इस सुविधा से लाभ उठाने के लिये प्रसन्नता पूर्वक सहमत होंगे । उनके अभिभावक भी इसके लिये पूरा सहयोग देंगे । इस प्रकार हर जगह बाल संस्कारशाला के लिये यह संकल्पित प्रयत्न, उत्साह भरे वातावरण में सरलता से चल सकता है ।

साथ ही यह भी प्रयत्न किया जाय कि स्थानीय शिक्षितों में, जो भी भावनाशील हों, उन्हें दो घंटा समय पढ़ाने के लिये परमार्थ भाव से देने के लिए राजी किया जाय । यह 'विद्या ऋण' है । उससे उऋण होने के लिये आवश्यक है कि दूसरों को पढ़ाकर अपना नैतिक कर्तव्य पालन किया जाय । ऋण लेकर मरने वाले की अन्ततः दुर्गति ही होती है । विद्या ऋण न चुकाने वाले के सम्बन्ध में भी यही कहा जा सकता है कि वे इस संबंध में उपेक्षा बरत कर घाटे में ही रहेंगे ।

स्थान दो घंटे के लिए चाहिए । वह किसी भी उदारचेता से उतने समय के लिए माँगा जा सकता है । रिटायर स्तर के शिक्षितों की यदि यह भाव संवेदना जगायी जा सके, तो वे भी ठाले बैठे समय काटने की अपेक्षा इस पुण्य परमार्थ का श्रेय ले सकते हैं । इस प्रकार बिना कोई पूँजी जुटाये भी यह कार्य मात्र दौड़-धूप के सहारे कोई भी उत्साह ही जन आसानी से खड़ा कर सकता है ।

जहाँ बिना पारिश्रमिक के अध्यापक न मिल सकें, वहाँ बच्चों से कुछ मासिक फीस लगा कर उससे अध्यापकों को कुछ पारिश्रमिक दिया जा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकता है । बाल सेवा में योगदान देने के लिए कम वेतन में भी वे सहमत किये जा सकते हैं ।

आरम्भिक व्यवस्था में दो वर्गों की पढाई आरम्भ की जाय । एक जूनियर वर्ग अर्थात् ३, ४, ५ । दूसरा सीनियर वर्ग अर्थात् कक्षा ६, ७, ८ । प्रारम्भ में इतनी ही व्यवस्था करनी चाहिए । इसके बाद यदि अधिक का काम बढ़ सकने का सुयोग बनता हो, तो इस प्रक्रिया को मैट्रिक तक बढ़ाया जा सकता है ।

दो घन्टे के समय में डेढ़ घन्टा 'होम वर्क ' करवाने के लिये ट्यूशन स्तर का कार्य भार निर्धारित किया जाय; ताकि स्कूली पढ़ाई में भी कमी रहती है, उसकी पूर्ति की जा सके और पढ़ने वाले बिना शक-संशय के उत्तीर्ण होकर भविष्य में उत्साह-पूर्वक इन कक्षाओं में शामिल हों ।

शेष आधा घन्टे में तीन विषय निर्धारित रखे जायँ १. बौद्धिक परिष्कृत जीवन के सिद्धान्त और व्यवहार; २. स्वास्थ्य संरक्षण-स्काउटिंग, खेलकूद, आहार-विहार सम्बधी विशिष्ट जागरूकता, ३.संगीत -मन और अन्त:करण को उल्लसित करने के लिये अति प्रभावशाली कला है । इन तीनों के लिये हर सप्ताह दो-दो दिन समय निश्चित कर लिया जाय ।

बौद्धिक खुराक पूरी करने के लिये अखण्ड-ज्योति, युग निर्माण योजना में से आवश्यक सामग्री चुन कर उसे छात्रों की मन:स्थिति से तालमेल बिठाते हुए पढ़ाया जा सकता है । प्रज्ञा पुराण की कथाएँ एवं युग निर्माण योजना द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भी इस प्रयोजन के लिये काम आ सकती हैं ।

स्वास्थ्य संवर्धन के लिये स्काउटिंग पद्धति सर्वोत्तम है । खेल-कूद, आहार-विहार सफाई, अनुशासन, शिष्टाचार जैसे विषय इसके लिए नियमित रखे जा सकते हैं । संयम का महत्व हृदयंगम कराया जा सके, तो समझना चाहिए कि स्वास्थ्य सही रहने का राजमार्ग मिल गया । आलस्य और प्रमाद से बचकर, परिश्रमी, स्फूर्तिवान और प्रसन्नचित्त मनुष्य आसानी से निरोग रह सकता है । समझदार अध्यापक इन विषयों के पाठ्यक्रम स्वयं बना सकते हैं ।

संगीत में स्वर ज्ञान, लय का अभ्यास एवं ताल वाद्यों का उपयोग बच्चों के लिए मनोरंजक भी होता है और उल्लासकारी भी । ढपली, मजीरा, घुँघरू, चिमटा, करताल जैसे सरल बाजे बच्चे बड़े उत्साह एवं मनोयोग पूर्वक सीख सकते हैं । भाव संवेदनाएँ जगाने और आदर्शवादिता का पक्षधर वातावरण बनाते रहने में वे बहुत हद तक सफल हो सकते हैं ।

समग्र शिक्षा के लिए तीन आधारों की आवश्यकता होती हैं । १. शिक्षार्थी का उत्साह, २. अध्यापक का मनोयोग, ३. अभिभावकों की इस प्रसंग में आवश्यक अभिरुचि । अच्छी पढ़ाई के फलस्वरूप, भावी सम्भावनाओं को उजागर करते हुए शिक्षार्थियों को समझाया और सहमत किया जा सकता है । यदि अध्यापकों को कक्षाओं में अन्यमनस्कता रहती हो, तो उसकी पूर्ति बाल संस्कार शाला में हो सकती है । तीसरा एक अछूता पक्ष है, जिसे इस प्रयास के सूत्र संचालकों को नये सिरे से उभारना पड़ेगा । देखा गया है कि अभिभावक बालकों को रोटी, कपड़ा, फीस, पुस्तक, कापी आदि की सुविधा तो कर देते हैं; पर इस ओर ध्यान नहीं देते कि बालकों के स्वास्थ्य स्वभाव एवं चरित्र में जिन विशेषताओं का अभिवर्धन होना चाहिए, वह हो रहा है या नहीं । वस्तुत: अभिभावक ही सच्चे शिक्षक हो सकते हैं, क्योंकि बच्चे पर परिवार वालों का अधिकार और दवाब भी रहता है । परिवार की पाठशाला ही वास्तविक प्रयोगशाला है, जिसमें नर रत्न ढाले और उभारे जा सकते हैं । अभिभावक मात्र खिलाने और जेब खर्च देने में ही अपने उत्तरदायित्व समाप्त मान लेते हैं । इस उपेक्षा का अब अन्त होना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सप्ताह में छह दिन बच्चों की पढ़ाई चले और एक दिन दो घंटे के लिए छात्रों के सभी अभिभावकों को बुलाकर उनकी गोष्ठी ली जाय । उन्हें यह समझाया जाय कि उनके निजी चरित्र की कितनी गहरी छाप बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ती है । इसका वे विशेष रूप से ध्यान रखें और अपने को ऐसा बढ़िया साँचा बनायें, जिसमें ढलते हुए न केवल बच्चे, वरन् परिवार पड़ोस और सम्बद्ध परिकर के अन्य लोग भी निरन्तर सुधरते और अधिक समुन्नत होते चलें ।

अभिभावकों में माता-पिता तो होते ही हैं, प्रयत्न यह होना चाहिए कि बच्चों के परिवार के अन्य लोग भी साप्ताहिक शिक्षा अधिवेशन में आवें । बन पड़े तो सम्बन्धी पड़ौसियों को भी साथ लायें; ताकि उन सब में अपने-अपने परिवारों में सुसंस्कृत परम्परा चलाने का व्यावहारिक मार्गदर्शन मिल सके । इन आयोजनों के सहारे ही शिक्षार्थी, अध्यापक और अभिभावक तीनों का त्रिवेणी संगम बनेगा और नयी पीढ़ी के साथ-साथ वर्तमान पीढ़ी को भी उत्कृष्टता अपनाने का अवसर मिलेगा ।

अभिभावक सम्मेलन भी बाल संस्कारशाला का महत्वपूर्ण अंग है । उसके लिए भी घरों पर जाने बुलाने और सम्मिलित होने के लिए प्रज्ञामंडल के संचालकों को इस निमित्त वैसी ही भाग दौड़ करनी पड़ेगी, जैसे कि बाल संस्कारशाला को स्थापित करने में करनी पड़ी थी । अभिभावक आयोजन के लिए प्रवक्ता ऐसे कुशल होने चाहिए, जो बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए, उनके विकास में अभिभावकों के योगदान की बात तो कहें ही, पर वस्तुतः वह सब भी बतावें जिसमें उपस्थित जन अपने को अधिकाधिक परिष्कृत सुनियोजित सुसंस्कृत बनने के लिए कटिबद्ध हो सकें । अभिभावकों के गले यह बात उतारी ही जानी चाहिए कि वे बच्चे पैदा करने के उत्तरदायित्व से इतने में ही मुक्त नहीं होते, कि रोटी कपड़े का निर्वाह का सरंजाम मात्र करें, अथवा बाद के लिए कोई बड़ी सम्पत्ति छोड़ मरें । वस्तुतः अभिभावक का उच्चस्तरीय अनुदान वही हो सकता है, कि वह संतान को और परिवार के अन्य सदस्यों को इस योग्य बनाये कि इक्कीसवीं सदी के लोकनायकों में अपनी भी गणना कर सकें । स्वयं बीज से वृक्ष बनें और अपनी ऊँचाई की ओर सब का ध्यान आकर्षित करें । अपने अनुदानों से अनेकों को अनेक प्रकार से उपकृत करें । अभिभावकों के साप्ताहिक आयोजन इस संदर्भ में महती भूमिका सम्पन्न कर सकते हैं, और वे बाल संस्कार शालाओं में भी अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं ।

दीप यज्ञ के बाद बढ़े कदम

प्रज्ञा मण्डलों को ऐसे क्रिया-कलाप भी आरम्भ करने चाहिए, जो साप्ताहिक-सत्संगों से उत्पन्न हुई ऊर्जा को, प्रत्यक्ष, रचनात्मक कार्यों में चरितार्थ कर सकें । स्मरण रखने योग्य बात एक ही है कि अपने मिशन का लक्ष्य-विचार क्रान्ति अर्थात् लोकमानस का आदर्शवादी परिष्कार है । प्रस्तुत विकृतियाँ, समस्याएँ और विभीषिकाएँ, भ्रष्ट-चिन्तन से ही उत्पन्न हुई हैं । अस्तु, चेचक की फुंसियों पर मलहम चुपड़ना ही पर्याप्त न मान कर, रक्त शोधन की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे विष वृक्ष के पत्ते तोड़ने की अपेक्षा उसकी जड़ काटने का ही उपाय बन पड़े । हमें ज्ञान यज्ञ पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए ।

व्यक्तिगत रूप से यह कार्य 'झोला पुस्तकालय' के माध्यम से सरलता पूर्वक बन पड़ता है । अपने समीपवर्ती क्षेत्र में भावनाशील शिक्षितों के साथ सम्पर्क साधा जाय । उनके पास युग साहित्य लेकर पहुँचा जाय । बिना मूल्य पढ़ने देने का सिलसिला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चलाया जाय । इस प्रकार जिन्हें युग साहित्य पढ़ने को मिलता रहेगा, वे युग चेतना से अवगत एवं प्रभावित होंगे, तदनुरूप अपना दृष्टिकोण एवं क्रिया कलाप बदलने और सुधारने लगेंगे । यह प्रवाह जितनी तेजी से बहेगा, उतना ही सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्धन होगा । इसके लिए झोला-पुस्तकालय की प्रक्रिया को गतिशील बनाना उच्च कोटि का पुण्य-परमार्थ है ।

इसे लोक सेवा का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाना चाहिए । बीस पैसा नित्य का अनुदान यदि युग साहित्य खरीदने में लगाया जाता रहे और दो घंटे का समय संपर्क साधने साहित्य पहुँचाने-वापिस लेने के लिए लगाया जाता रहे, तो इतने भर से एक बड़े क्षेत्र में आलोक वितरण का कार्य बन पड़ता रहेगा । जो पढ़े वे बिना पढ़ों को सुनायें, तो अशिक्षितों को भी नवयुग के अनुरूप अपना दृष्टिकोण परिष्कृत करने का अवसर मिलता रह सकता है । कोई व्यक्ति यदि इस छोटे कार्य को भी अनवरत रूप से करता रहे, तो उसे प्रतीत होगा कि एकाकी प्रयत्न भी कितने कारगर हो सकते हैं ।

एकाकी बन पड़ने वाले कार्यों में एक यह भी है कि दीवालों पर आदर्श वाक्य लिखते रहने का क्रम बनाया जाय । एक दो घंटे भी यह कार्य किया जाये, तो उतने ही समय में कितनी ही दीवालें लिखी जा सकती हैं । अच्छे अक्षर लिखने का अभ्यास कुछ दिन में घर पर ही प्रयत्न पूर्वक किया जा सकता है । उसे रास्ते निकालने वाले लोग सहज ही, उन्हें पढ़ते और प्रभावित होते हैं । अचेतन मन पर उन सभी बातों का अनुकूल प्रभाव पड़ता है, जो आँखों के आगे बार-बार आती रहती हैं । अश्लील चित्र मन को विचलित कर सकते हैं, तो कोई कारण नहीं कि सुन्दर अक्षरों में लिखे आदर्श वाक्य, पढ़ने वाले पर प्रभाव न छोड़े ?

आदर्श वाक्य-लेखन का ही एक सरल रूप है, 'स्टीकरों' का चिपकाया जाना । छोटे-बड़े साइज के स्टीकर, प्रज्ञा मण्डलों में मथुरा-हरिद्वार से मँगाये जाते रहते हैं । उन्हें लोगों के घरों पर, दरवाजों पर चिपकाया जाय और उनका पैसा उन्हीं से वसूल किया जाय, जिनके घर पर उन्हें चिपकाया गया है । जिन घरों में स्टीकर चिपके होते हैं, उन्हें उस परिवार के लोग और आगन्तुक बार-बार पढ़ते ही रहते हैं । इससे उनमें वाक्यों के अनुरूप उत्साह उमड़ता है । जिन घरों पर यह चिपके होते हैं, उन्हें लोग सहज ही आदर्शवादी मानने लगते हैं और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं । स्टीकरों को आमतौर से बेचा ही जाता है, पर जहाँ बन पड़े, वहाँ दानी लोगों की सहायता से बिना मूल्य या कम मूल्य में घर-घर लगाने का प्रयत्न चल सकता है । दीवालों पर बड़े आदर्श वाक्यों का लेखन तथा दुकानों, दरवाजों, दफ्तरों आदि पर स्टीकरों का चिपकाया जाना- उद्देश्य को अपने-अपने ढंग से पूरा करते हैं । प्रज्ञा परिजनों में से यह कार्य जिनसे जितना बन पड़े, उन्हें उसके लिये शक्ति भर प्रयत्न करना चाहिए ।

प्रज्ञा मंडल द्वारा स्लाइड प्रोजेक्टर और टेपरिकार्डर खरीदना बन पड़े, तो इन उपकरणों के माध्यम से थोड़े-थोड़े लोगों की गोष्ठियों एकत्रित करके, जन-जागरण का कार्य सरलता पूर्वक, किन्तु बड़े प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न किया जाता रह सकता है । टेपरिकार्डर पर सुनाये जा सकने योग्य संगीत तथा कथा-प्रवचनों के टेप हरिद्वार-मथुरा से प्राप्त किये जा सकते हैं । टेपरिकार्डर अपना खरीदा जा सकता है, या किसी से उपयोग के लिए माँगा जा सकता है । यह बिना वक्ता एवं गायक का प्रबंध किए, मात्र उपकरण के माध्यम से बन पड़ने वाली सभा व्यवस्था है; जिसे जहाँ भी अवसर मिले, वहाँ सम्पन्न करते रहा जा सकता है ।

स्लाइड-प्रोजेक्टर-घरेलू सिनेमा हैं । उसके चित्र चलते-फिरते तो नहीं पर किन्हीं महत्वपूर्ण घटनाओं, परिस्थितियों एवं व्यक्तित्वों को आँखों के सामने प्रस्तुत करते हैं । उनकी व्याख्या-विवेचना प्रचारक स्वयं करता रह सकता है । यदि उपस्थिति अधिक हो, तो लाउडस्पीकर के प्रयोग की आवश्यकता पड़ेगी । घरों में-मुहल्लों में इस प्रदर्शन की सूचना पाते ही लोग सहज ही एकत्रित हो जाते हैं और प्रचार कार्य अपने ढंग से चल पड़ता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

टेपरिकार्डर प्राय: ५००/- के आस पास मिल जाता है । लाउडस्पीकर की कीमत भी प्राय: इतनी ही होती है । स्लाउड-प्रोजेक्टर और स्लाइडों के कई सेट खरीदने के लिए भी प्राय: इतनी ही राशि चाहिए । डेढ़ हजार की पूँजी का प्रबंध हो सके तो कोई भी प्रज्ञा-मंडल उपरोक्त तीनों उपकरणों को खरीद सकता है और अपने प्रभाव क्षेत्र में इन माध्यमों द्वारा विचार-क्रान्ति का प्रसार-विस्तार करता रह सकता है । उपरोक्त उपकरणों का प्रयोग शांति-कुंज के किसी सत्र में सम्मिलित होकर सीखा जा सकता है । इनके द्वारा वक्ता और गायकों की एक अच्छी मंडली को सदा के लिए अपने यहाँ नियुक्त रखा जा सकता है और उसे जब चाहे-जहाँ चाहे, वहाँ इच्छानुरूप काम में लिया जा सकता है । स्लाइड प्रोजेक्टर की विवेचना करते-करते कोई व्यक्ति कुछ ही दिनों में एक अच्छा वक्ता बन सकता है । भाषण कला के अभ्यास के लिए भी यह उपकरण एक अच्छा माध्यम है ।

उपरोक्त उपकरणों के अतिरिक्त एक और भी सशक्त, प्रचार माध्यम है- ज्ञानरथ । साइकिल के चार पहियों वाली धकेल गाड़ी पर पुस्तकों से सुसज्जित मन्दिर बना लिया जाता है । इसमें युग साहित्य इस प्रकार सजाया जाता है कि उसे राह चलते लोग देख सकें और उसके सम्बन्ध में समीप आकर आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकें । जिन्हें रुचे, वे खरीद भी सकें । कहीं यदि गाड़ी रुकी है और वहाँ बैठने के लिए छाया भी है, तो दर्शक पुस्तकें लेकर वहाँ बैठकर पढ़ भी सकते हैं । निर्धारित दिन, निर्धारित क्षेत्र में पुस्तकें पढ़ने देने का क्रम अपनाकर ज्ञान रथ, झोलापुस्तकालय का भी काम दे सकता है ।

देवताओं में सबसे बड़ा है - सद्ज्ञान । गणेश को उसी का प्रतीक माना गया है । गायत्री मंत्र में सन्निहित प्रज्ञा भी उसी का प्रतिनिधित्व करती है । मिशन का लाल मशाल का चिह्न भी प्रकारान्तर से सद्ज्ञान का प्रतीक है । उसके मन्दिर में सद्साहित्य की ही प्रतिमा रखी जा सकती है । साधारण मन्दिर अचल होते हैं । जिन्हें वहाँ जाना है वे ही देवता का दर्शन कर सकते हैं; पर सद्ज्ञान के देवता को ज्ञानरथ द्वारा बाजार-मुहल्ले में घुमाते हुए हर किसी को देवाधिदेव गणेश रूपी सद्ज्ञान का अभिवन्दन कराया जा सकता है । प्रज्ञा मण्डल के सदस्य अपनी-अपनी वारी पर इसे घुमाने के लिये जनता के बीच ले जा सकते हैं । सुविधा होने पर कोई व्यक्ति स्थायी रूप से भी नियुक्त किया जा सकता है । इसका कलेवर देखने में अतीव सुन्दर लगता है और देखने वाले उसकी ओर सहज ही आकर्षित होते हैं ।

इसे और भी अधिक प्रभावोत्पादक बनाने का तरीका यह है कि उसी के एक कोने में टेपरिकॉर्डर और लाउडस्पीकर फिट कर दिया जाय । दोनों को चलाने के लिए मोटरों में काम आने वाली बैटरी का प्रयोग किया जाय । इस व्यवस्था से ऐसा लगता है मानो ज्ञानरथ में वाद्य यंत्रों समेत गायकों की एक मंडली बैठी है और एक वक्ता धारा प्रवाह वाणी में ऐसा भाषण करता है, जो सुनने वालों के मानस को बदलने में समर्थ हो सके । उसका बोलता-गाता स्वरूप इतना प्रभावी होता है कि जिधर से भी वह गुजरे, उधर से लोगों के कानों में अमृत बरसाता चले । इस आधार पर साहित्य की बिक्री भी असाधारण रूप से बड़ी मात्रा में होती है । प्रचार की दृष्टि से तो तहलका ही मच जाता है । बैटरी प्राय: पूरा दिन काम देने के उपरान्त चुक जाती है । उसे रात को चार्जर के साथ जोड़ देने पर सवेरा होते-होते फिर नयी शक्ति से भर जाती है । यह क्रम अनवरत चलता रहता है ।

चार पहियों वाली धकेल गाड़ी का मन्दिरनुमा ढाँचा प्राय: एक हजार में बन जाता है । पुस्तकों का फेर बनाये रहने के लिए एक हजार की पूँजी तो चाहिए ही । इस प्रकार ज्ञानरथ का ज्ञान मन्दिर प्राय: दो हजार में बन जाता है । पर इसे यदि प्राणवान बनाना हो, तो उसके लिए लाउडस्पीकर, टैपरिकार्डर बैटरी और चार्जर यह चार उपकरण अतिरिक्त रूप से चाहिए । इन चारों पर लागत ढाई हज़ार के करीब और बढ़ जाती है । इस प्रकार बोलता, गाता ज्ञानरथ कुल मिलाकर साढ़े चार हजार, पाँच हजार तक जा पहुँचता है । यदि प्रज्ञा मण्डल ने कुछ उपकरण पहले से ही खरीद रखे हों, तो नये सिरे से उन्हें लेने की आवश्यकता न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ेगी । अन्य प्रचार प्रयोजनों की तरह उन्हें ही ज्ञानरथ से भी जोड़ा जा सकेगा । उपरोक्त सभी सज्जा एकत्रित करने के लिए प्रायः सात हजार की राशि चाहिए । इसे मिल-जुलकर आसानी से एकत्रित किया जा सकता है । इतने में ही एक सैट संगीत मंडली के लिए वाद्य यंत्रों का भी बन जाता है, जिससे साप्ताहिक सत्संगों एवं अन्य अवसरों पर सहगान कीर्तन के लिये प्रयुक्त किया जा सके । अपने सभी कार्यक्रमों में सहगान कीर्तन भी तो जुड़ा रहता है । मिल-जुलकर किये जाने वाले गायन का प्रभाव सामान्य गायन की तुलना में कहीं अधिक होता है ।

दीपयज्ञों के उपरान्त प्रज्ञा मण्डल के गठन का दूसरा चरण उठना आवश्यक हो जाता है । संगठन और साप्ताहिक सत्संग का उपक्रम चल पड़ने के बाद, तीसरे चरण में विचार-क्रांति के लिए, प्रचार के लिए उपरोक्त सरंजाम जुटाने पड़ते हैं । इतना बन पड़े तो समझना चाहिए कि दीप यज्ञ का इतना संवर्धन हो गया, जिससे उसके स्थायित्व और प्रभाव का आश्चर्य भरा स्वरूप देखा जा सके । दीपयज्ञ होना और उससे सम्बन्धित गतिविधियों का चल पड़ना ऐसा है, जैसा कि बीज का अंकुर और अंकुर का विशालकाय वट वृक्ष बन जाना । आशा की जानी चाहिए कि जहाँ भी दीपयज्ञ होंगे, वहाँ मात्र एक दिन का प्रदर्शन ही होकर न रह सकेगा, वरन् उसके साथ जुड़ा हुआ यह सुविस्तृत परिवार एकत्रित होगा और नवयुग के साथ जुड़ी महती आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा ।

शुभारम्भ अपनों से

फसल पकने पर किसान अगली बार बीज बोने के लिए बड़े बीज वाले भुट्टे चुनकर अलग रख लेता है, क्योंकि बढ़िया बीज ही अच्छी फसल उगाने के काम आते हैं । शेष बीजों को खाने के काम में लेकर समाप्त कर दिया जाता है । दीपयज्ञ के प्रकाश में ऐसे ही वरिष्ठ बीज खोजे-सँजोये जा रहे हैं, जो उज्ज्वल भविष्य की संभावना को सार्थक बनाने के लक्ष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें । एक से पाँच, पाँच से पच्चीस बनते हुए समस्त संसार को अपने प्रभाव की परिधि में ले सकें ।

इन दिनों मिशन की पत्रिकाओं के पाँच लाख सदस्य हैं । हर पत्रिका न्यूनतम पाँच व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है । इस प्रकार अपना परिकर २५ लाख हो जाता है । दीपयज्ञ के माध्यम से खोजी-उभारी गई प्रतिभाएँ इसके अतिरिक्त हैं । इस समूचे परिकर को युग नेतृत्व के लिए भगवान ने विशेष रूप से बड़े बीज के रूप में चुना है । इस तथ्य पर विश्वास किया जाना चाहिए, कि जो दूसरों से कराना है, उसे सर्व प्रथम स्वयं करना आरम्भ कर देना चाहिए । अनुकरणप्रिय मानव स्वभाव को उत्कृष्टता की दिशा में उछालने के लिए, ऐसा ही करना आवश्यक है ।

जो दीप यज्ञ करा चुके हैं, उन्हें अपने क्षेत्र में ऐसे ही आयोजन, अपनी प्रभाव परिधि में कराने के लिए जुट जाना चाहिए, ताकि श्रद्धासिक्त प्रगतिशीलता का वातावरण बनाया और उसे तूफानी गति से आगे बढ़ाया जा सके । दीप यज्ञों के समुद्र मंथन से प्रज्ञा मण्डल निर्माण का नवनीत निकाला जाना चाहिए । उसके सदस्य, समयदान और अंशदान के रूप में अपनी उदात्त गरिमा का प्रत्यक्ष परिचय देते रहें, तो उतने भर से ही साप्ताहिक सत्संग का क्रम नियमित रूप से चलने लगेगा । साथ ही वे योजनाएँ कार्य रूप में परिणत होने लगेंगी, जिनसे विचार क्रांति का व्यावहारिक एवं स्पष्ट स्वरूप सामने प्रत्यक्ष लगने लगे ।

जो दूसरों से कराना है, उसे सर्वप्रथम स्वयं करके दिखाना होता है । इसके बिना कथनी - करनी के बीच रहने वाला अन्तर मात्र मजाक बनकर रह जाता है । उसे अपनाने और कर दिखाने जैसी कुछ बात बन ही नहीं पड़ती ।

झोला-पुस्तकालय-ज्ञानरथ जैसी, जन मानस परिष्कार की समर्थ योजना के लिये, अपने को प्रमुख रखने की प्रतिस्पर्धा चलानी चाहिए । सभी गतिविधियों को व्यवस्थित रूप से चलाना सीखने के लिए शांतिकुंज में चल रहे सत्रों में से किसी में सम्मिलित होने के लिये, नये सम्मिलित हुए सदस्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए; ताकि वे चाक पर बनाये गये मात्र कच्चे बर्तन न रहें, वरन् कुम्हार के आँवे में पक कर , सुन्दरता और सुदृढ़ता में कई गुनी वृद्धि कर सके ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बैटरी निरन्तर चार्ज होती रहे, इसलिये उसे चलते डायनेमो के साथ जोड़ना पड़ता है । यह कृत्य परिजन पाँच मिनट के मानसिक ध्यान द्वारा कर सकते हैं । प्रातः काल आँख खुलते ही यह मानसिक ध्यान पाँच मिनट में सम्पन्न कर लेना चाहिए । युग चेतना के उद्गम-शांतिकुंज पहुँचा जाये । समीपवर्ती गंगा में एक डुबकी लगा कर, अपनी बहिरंग और अन्तरंग मलीनता को शुद्ध किया जाये । गायत्री मंदिर का दर्शन, यज्ञशाला की परिक्रमा, अखण्ड दीपक के पास बैठकर पाँच बार गायत्री मन्त्र का जप, माताजी से भक्ति और गुरुदेव से शक्ति का अनुदान लेकर वापस अपने स्थान को लौट आने भर से यह ध्यान प्रक्रिया पूरी हो जाती है । इसमें कुल मिलाकर पाँच मिनट लगते हैं, किन्तु उतने भर से नवचेतना का संचार हुआ अनुभव होता है, जो दिन भर उत्साह बनाये रहता है । व्रत निर्वाह में भी उससे सहायता मिलती है ।

बाल संस्कारशाला में अपने बच्चों को भेजना ही चाहिए; ताकि दूसरों के बच्चे उनका अनुकरण करने लगें । अध्यापक की आवश्यकता पूरी करने के लिए भी प्रथम अपना समयदान प्रस्तुत करना चाहिए; ताकि अन्य शिक्षकों में भी उदारता उमगें और वे भी पढ़ाने के लिए समय देने लगें । संगीत, स्काउटिंग और बौद्धिक कक्षाओं में क्रमबद्ध सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम चलता रहे । इसके लिए सहयोगी तलाशने से पूर्व उतनी तैयारी करते रहना चाहिए, जो पढ़ाई के समय काम आती रहे । इस प्रकार पढ़ने और पढ़ाने के दोनों उपक्रम साथ-साथ चलते रहने पर सबसे अधिक अपना लाभ है । योग्यता बढ़ेगी, पुण्य परमार्थ संचित होगा और बच्चों समेत परिवार में रचनात्मक उत्साह क्रियान्वित होते दीख पड़ेगा । अनुकरण के लिए अपने क्रिया - कलाप को प्रस्तुत करना- दूसरों को प्रशिक्षण देने का ऐसा कारगर उपाय है, जो कदाचित् ही निष्फल जाता है ।

आत्मनिर्माण और परिवार निर्माण का लाभ उठाने में किसी को भी नहीं चूकना चाहिए । दैनिक उपासना को अनिवार्य और नियमित बनाया जाये उसमें अदृश्य सत्ता से सम्बन्ध जुड़ता है और दिव्यता की गंगा का प्रवाह अपने व्यक्तित्व पर बरसना आरम्भ कर देता है । आत्म निरीक्षण और आत्म सुधार का चिन्तन मनन समय मिलते ही कर लिया जाये । प्रातः काल नया जन्म और सोते समय मृत्यु का स्मरण कर लिया जाया करें, तो भटकने की आशंका घट जाती है । जीवन को श्रेष्ठतम बनने की चेष्टा इस आधार पर नियमित रूप से चलती रहती है ।

बच्चों की संख्या न बढ़ाने का व्रत लिया जाये । जो अपने या पराये घर में मौजूद हैं, उन्हें ही पर्याप्त मान लिया जाये और उन्हें सुयोग्य सुसंस्कृत बनाने का दायित्व निबाहा जाता रहे । बच्चों को पुस्तकीय जानकारी कोई भी करा सकता है; पर संगी साथियों को उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर करना हो तो उसके लिये अपना उदाहरण प्रस्तुत किये बिना काम नहीं चलता । इस दृष्टि से भी अपने को सामान्य जनों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ, वरिष्ठ बनाते चलने का क्रम अपनाना पड़ता है । वाणी में मधुरस, व्यवहार में नम्रता, दूसरों की प्रशंसा करने, सम्मान करने और उत्साह भरने की नीति ऐसी है, जिसे हर किसी के लिए प्रयुक्त करते रहना चाहिए । अपने शरीर, वस्त्र, घर, सामान आदि को स्वच्छ रखने पर दूसरों से यह कहते बन पड़ता है कि दरिद्रता की प्रतीक गंदगी, को हटाते रहा जाये । गंदगी, कुरुचि, पिछड़ापन एवं असभ्यता का चिह्न है ।

अपने प्रभाव क्षेत्र के हर लड़के का विवाह बिना दहेज का ही होना चाहिए । इसके लिए समय से पूर्व ही ताना बाना बुनते रहा जाये । लड़की के लिये लड़का और लड़के के लिए लड़की ऐसे परिवार से ढूँढ़ी जाए जो मिशन की विचारधारा से जुड़ चुका है । जो दहेज और जेवर सहित अनावश्यक धूमधाम को दुरुपयोग समझता हो और विवाह को सादगी के साथ घरेलू उत्सव की तरह करने के लिए सहमत हो । ऐसे परिवारों को यदि स्थानीय असहयोग या विरोध की आशंका हो, तो सुलभ उपाय यह है कि दोनों पक्षों के पाँच-पाँच, दस-दस, व्यक्ति शांतिकुंज चले आयें और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विवाह कृत्य बिना किसी खर्च के सम्पन्न करा ले जायें । दिव्य वातावरण में सम्पन्न हुआ विवाह अपेक्षाकृत सफल भी अधिक होता है । प्रज्ञा मण्डल के सदस्य यदि अपने प्रभाव क्षेत्र के संस्कार इसी प्रकार कराने लगे, तो उसका प्रभाव अन्यान्यों पर पड़े बिना न रहेगा और अनुकरण की परम्परा चल पड़ेगी ।

प्रज्ञा परिजनों को एक और काम आगे बढ़कर संपन्न करना है, वह यह कि अपने घर की-पड़ोस संबंध की प्रभाव क्षेत्र की महिलाओं को प्रगतिशील बनाने के लिये -प्रोत्साहन किया जाये । उन्हें अधिक शिक्षित बनाने और घर से बाहर निकल कर घर के पुरुषों का हाथ बँटाने और साथ ही समाज सेवा के कार्यों में भाग लेते रहने के लिए सहमत किया जाये ।

संसार भर में नारी जागरण और अभ्युदय की लहर तेजी से चल रही है । अगले दिनों तो उसे आँधी तूफान की तरह आगे बढ़ना है और समग्र परिवर्तन में अपना असाधारण योगदान देना है । इसके लिए अदृश्य शक्तियाँ उसके पक्ष में असाधारण वातावरण बना रही हैं; सुविधायें जुटाने और अनुकूलता खड़ी करने में कार्यरत हैं । विकसित देशों में तो नारी ने अपनी वरिष्ठता का बड़ा-चढ़ा परिचय देना आरम्भ कर दिया है, वे किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं । वह विश्वव्यापी हलचल अब अपने देश को भी आगे बढ़ने के लिए उभार रही है । इन्हीं दिनों ऐसे कानून बन रहे हैं, जिनमें नारी को राज काज में प्रवेश करने के लिए समुचित सुविधा प्रदान की जायेगी । शासन समितियों में उनके लिए बड़ी संख्या में स्थान सुरक्षित रहेंगे । औद्योगिक क्षेत्र में भी वे बड़े फार्मों, व्यवसायों, कारखानों का संचालन करती दिखाई देंगीं । कलाक्षेत्र में उनका प्रवेश तो पहले से ही हो चुका है; पर फिल्म आदि में उनका उपयोग हेय प्रयोजनों के लिए होने लगा है । अब उन्हें उस स्तर पर न रहने दिया जायेगा; वरन् उच्चस्तरीय कला-कौशल में उनकी प्रमुखता रहेगी । साहित्य सृजन में उनकी प्रतिभा इस तेजी से उभरेगी कि देखने वालों को आश्चर्य चकित रहना पड़ेगा । विदेशों में शिक्षा, चिकित्सा, समाज, कल्याण, उद्योग, व्यवसाय प्रबन्ध जैसे कार्य अभी उन्हें सौपें गये हैं, पर अपने देश में तो उन्हें अगले ही दिनों साहित्य शासन, नव -सृजन एवं समाज कल्याण में भी बढ़ा - चढ़ा पराक्रम दिखाने का अवसर मिलेगा ।

इस भवितव्यता में प्रज्ञा परिजनों का प्रयास यह होना चाहिए कि वे अपने प्रभाव क्षेत्र की महिलाओं को सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश करने के लिये आवश्यक प्रोत्साहन और प्रशिक्षण प्रदान करें । साथ ही यह भी करते रहें कि उनके ऊपर लगे रुढ़िवादी प्रतिबन्धों का दबाव घटे । वे निरन्तर व्यस्त रहने से कोल्हू में पिसते रहने से थोड़ा सांस ले सकने जितना अवसर भी प्राप्त करें और अपनी योग्यता एवं प्रतिभा का परिचय दे सकने में समर्थ सक्षम हो सकें ।

यह कार्य प्रज्ञा मण्डलों के सदस्यों-प्रज्ञा परिजनों को, अपने घर की उत्साही महिलाओं को साथ लेकर चलने के रूप में आरम्भ करना चाहिए । प्रज्ञा मण्डलों की तरह इन दिनों महिला मण्डलों का भी गठन हो रहा है । आरम्भ में तो दोनों के मिले - जुले साप्ताहिक सत्संग एवं अन्य प्रयास चलने देने चाहिए; ताकि उनकी झिझक छूटे और कुछ कर सकने में समर्थ होने का प्रारंभिक अवसर मिले । जैसे ही उनकी संख्या बढ़ने लगे वैसे ही एक अलग महिला मण्डल गठित कर देना चाहिए और उन्हें अपने समुदाय के साथ सम्पर्क साधने और साथ लेकर चलने का दायित्व सौंपना चाहिए । शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, कुरीति-निवारण लड़के-लड़कियों के बीच बरता जाने वाला भेद-भाव, अपने घरों से ही समाप्त करना चाहिए । दोनों को सम्मान, सहयोग एवं प्रोत्साहन मिले । अन्याय किये जाने का ढर्रा यदि पिछले दिनों से चलता आ रहा है, तो अब उसे बन्द करना चाहिए, भले ही इसमें अपनों या परायों का विरोध ही क्यों न सहना पड़ता हो । घूँघट निकालने की, सदा घर की चाहर दीवारी में बंद रखे जाने की प्रथा सर्वदा बंद होनी चाहिए । नर और नारी के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बीच असाधारण अन्तर करने वाले वस्त्र आभूषणों के साथ जुड़ने वाले फैशन को भी घटाना चाहिए । उत्तेजक आच्छादनों को तो विशेष रूप से निरस्त करना चाहिए । कामुकता भड़काने वाले, नर और नारी के बीच असाधारण अन्तर दिखाने वाले प्रचलनों का अन्त हो ही जाना चाहिए ।

अनेकों कुरीतियाँ समाज में प्रचलित हैं, जिनकी हानियाँ सभी जानते हैं । इसके कारण समय, श्रम और धन का बुरी तरह अपव्यय होता है । चिन्तन और दृष्टिकोण घटिया होने पर व्यवहार भी ऊटपटांग स्तर का ही बन पड़ता है । नव सृजन की दिशा में यदि ठोस कदम उठाने हैं, तो परम्पराओं के नाम पर चल रही कुरीतियों का भी अन्त होना ही चाहिए । इसके लिए दूसरों को रोकना-समझाना उचित ही है, पर आवश्यक यह भी है, कि जो करना है उसका शुभारम्भ अपने ही घर परिवार से किया जाये । बाहर के लोगों पर अपना प्रभाव-अधिकार कम होता है, इसलिए उनकी उपेक्षा तो समझ में आती है; पर अपने निज के स्वभाव को बदलने और परिवार वालों को समझाने में तो उतनी अड़चन नहीं ही आनी चाहिए । उचित के लिये यदि साथियों को भी सहमत न किया जा सके, तो असहयोग का कारगर उपाय काम में लाया जा सकता है । गाँधी जी का यह शस्त्र वहाँ प्रयुक्त किया ही जाना चाहिए, जहाँ अपनों की परिधि में आने वाले उचित परामर्श तक को स्वीकार करने के लिए सहमत न हों । रूढ़िवादिता की जड़ता का निवारण औचित्य के प्रति आग्रह और अनुचित के असहयोग के दबाव से ही संभव है । इस प्रयोग को भी विवेक पूर्वक लागू किया जा सकता है ।

यह प्रयास भी अनिवार्य

दीपक स्वयं जलता है और दूसरों के लिए मार्गदर्शन वाला प्रकाश उत्पन्न करता है । दीपयज्ञ की यही प्रेरणा उसमें सम्मिलित होने वाले दर्शकों तथा सहयोगियों को ग्रहण करनी चाहिए । यह घोर अंधकार का युग है । लोग शालीनता की उपेक्षा करते और अनौचित्य के अधेरे में पग-पग पर ठोकरें खाते देखे जाते हैं । इस अनौचित्य की तमिस्रा का निराकरण एक ही है, कि भावनाशील प्रतिभाएँ आगे बढ़े और अपने दृष्टिकोण तथा व्यवहार में दीपक स्तर की रीति-नीति का समावेश करें ।

इस हेतु यह जीवन नीति तो अपनानी ही होगी कि औसत नागरिक स्तर का निर्वाह अपना कर काम चलाया जाय । ब्राह्मण परम्परा यही है उदारचेता सदा,सादा जीवन उच्च विचार की रीति-नीति अपनाते रहे हैं । जिनकी निजी महत्वाकांक्षाएँ बढ़ी चढ़ी हैं, जो अहंकार की पूर्ति के लिए-सस्ती वाहवाही के लिए आतुर रहते हैं, जिनकी आवश्यकताएँ विलासी और अमीरों जैसी हैं; वे अपनी शक्ति और सामर्थ्य को अधिक कमाने अधिक खर्चने अथवा साधन बढ़ाने और संग्रह करने में ही लगाते हैं । मन पर जब लिप्सा लालसाओं का बोझ बेतरह चढ़ा हो, तो उसकी पूर्ति व्यवस्था से भी नहीं होती, अनाचार तक पर उतरना पड़ता है । लोकसेवा के कार्य में यह प्रधान कलंक है । जिसका समय और मन आजीविका की उधेड़ बुन में ही लगा रहता है, उसे पेट प्रजनन और अहंकार के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं । ऐसे में अपना ठोस आदर्श वे दूसरों के सम्मुख प्रस्तुत कर ही कैसे सकेंगे ? अस्तु सच्चे अनुयायियों से उन्हें वंचित ही रखना पड़ेगा ।

औसत नागरिक के स्तर का निर्वाह ही लोकसेवी का आचरण-अनुशासन होना चाहिए । इसके लिए जिन्हें रोज कुआँ खोदना और रोज पानी पीना पड़ता है, वे आठ घंटे कमाने, पाँच घंटे अन्यान्य कार्यों में लगायें । सात घंटे सोयें और शेष चार घंटे परमार्थ प्रयोजन के लिए सुरक्षित रखें । आजीविका का दसवाँ अंश परमार्थ के लिए रख कर, शेष नब्बे प्रतिशत में खर्च चलाने का अभ्यास आसानी से किया जा सकता है । इन दो अनुशासनों को स्वीकार कर लेने के उपरान्त व्यस्तता या अभावग्रस्त का बहाना बनाने की किसी को भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिनके पास पूर्व संचित या चल अचल सम्पदा है, वे उसे बेचकर बैंक में जमा कर सकते हैं और उसकी ब्याज से निर्वाह चला सकते हैं । घर के अन्य लोग यदि उपार्जन में समर्थ हैं, तो उन्हें व्यवस्था संभालनी चाहिए और घर पीछे एक व्यक्ति को सत्प्रयोजनों में निरत रहने की सुविधा देनी चाहिए । जिन्हें पेंशन मिलती है, उन्हें समझना चाहिए कि यह घर बैठे का लाभ मात्र इसीलिए है, कि वे निर्वाह की चिन्ता न करके शेष जीवन परमार्थ प्रयोजनों में खपायें । ऐसी रीति-नीति अपनाने के बाद सामान्य योग्यता के व्यक्ति भी इतना कुछ कर सकते हैं, जिसे आश्चर्यजनक कहा और मुक्त कंठ से सराहा जा सके ।

लोभ, मोह के अनावश्यक दबाव से उबार कर, किसी के लिए भी यह संभव हो सकता है कि वह इस घोर तमिस्रा की बेला में अपने को दीपक की तरह प्रज्ज्वलित करें और प्रकाश की ऐसी आभा जगायें, जिससे असंख्य भटके हुओं को मार्ग मिल सके।

यही ब्राह्मण परम्परा है । इसी को अपना कर संसार के महामानव कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर सकने में समर्थ हुए हैं । समय और साधनों की बचत ही वह सम्पदा है, जिसे तेल बाती की उपमा दी जा सकती है, परमार्थ परायणता की अग्नि का अन्तराल में उभार होते ही, किसी का भी जीवन दीपक के समतुल्य बन सकता है । सभी शुभ कार्यों में दीपक प्रज्ज्वलित किये जाते हैं, तभी उद्घाटन होते हैं, तभी दीपावली जैसे पुण्य पर्व मनते हैं । जन्म जयन्ती पर भी दीपक जलाये जाते हैं । इस प्रतीक पूजा का तात्पर्य इतना ही है, कि जीवन दीपक जैसी महानता का प्रतीक बने और उसके माध्यम से उज्ज्वल-भविष्य के नवप्रभात का आलोक उभरे । जो जीवन को इस स्तर का बना सके, समझना चाहिए कि उन्हीं की दीप पूजा सार्थक हुई । दीप यज्ञ की प्रेरणा तो यही है, कि हर आलोक के पुजारी को अपना व्यक्तित्व ऐसा बनाना चाहिए, जिससे अनेकों को दिव्यता का प्रकाश प्राप्त हो सके ।

जो साथी सहयोगी अपने प्रभाव क्षेत्र से जुड़ सकें उन्हें ऐसी ही प्रेरणा देते रहना चाहिए । मन और कर्म का समन्वय रखने वाले जुआरी, शराबी, व्यभिचारी तक अपने जैसे अनेकों विनिर्मित कर लेते हैं, फिर कोई कारण नहीं कि उच्च स्तरीय जीवन बिताने वाले अपने सहयोगी गण, समर्थकों और अनुयायियों से वंचित रहें । दीपयज्ञ इसी भावना से किये जाने चाहिए और सम्मिलित होने वालों के अन्दर ऐसी ही भाव संवेदना जगानी चाहिए ।

सामान्य क्षमता वालों का भी अपना महत्व है । मधुमक्खी तक कुछ-कुछ परमार्थ कर लेती हैं; पर बड़े कार्यों के लिए अधिक समर्थ प्रतिभाओं का साथ होना आवश्यक है । गाँधी जी के साथ कुछ उच्च स्तरीय प्रतिभायें जुड़ गईं तो प्रचंड पराक्रम से ऐसा तेज खड़ा हो गया, जो अंग्रेजों की समर्थ सेना तक को उलट देने में सक्षम हुआ । बड़ों को देखकर छोटे भी साथ चल देते हैं । इसलिए जहाँ सामान्य जनों का प्रतिभा परिष्कार होना चाहिए, वहाँ विशिष्टता सम्पन्न व्यक्तित्वों को भी कठोरता छोड़कर उदार बनने के लिए सहमत किया जाय । वैसे चला तो अकेले भी जा सकता है, पर यदि द्रुतगामी शक्ति सम्पन्न वाहन मिल सकें, तो यात्रा अधिक जल्दी और अधिक आसानी से संपन्न हो जाती है ।

स्वर और सौन्दर्य जिन्हें मिला है वे भी अपनी अभिव्यक्ति से जनसमुदाय को भाव तरंगित करते रहते हैं । साहित्यकार, चित्रकार, कवि, मनीषी भी अपनी विशिष्ट प्रतिभा से लोक मानस को मोड़ देने में समर्थ होते हैं । राजनीति में जिन की ऊँचे स्तर तक पकड़ और पहुँचें हैं, वे भी यदि चाहें तो बहुत हद तक अवांछनीयताओं के उन्मूलन और सदाशयता के संस्थापन में सफल हो सकते हैं । धन इन दिनों समस्त विभूतियों का आधार बना हुआ है । जिनके पास वह है, वे यदि उसे उच्च प्रयोजनों के लिए नियोजित कर सकें तो बड़ी मात्रा में ऐसा बहुत कुछ हो सकता है जिसकी इन दिनों आवश्यकता है । व्यवस्था तंत्र खड़े करने में कुशल व्यक्ति कहीं से भी प्रचुर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधन जुटा लेते हैं और राई से पर्वत बनाकर खड़ा कर देने में सफल हो जाते हैं । वो समय के अनुरूप सोचने और जो संभव है उसका मार्ग दर्शन करने में असाधारण रूप से सफल होते हैं । प्रतिभाएँ सामान्य जनों पर अपने वर्चस्व की गहरी छाप छोड़ती और प्रवाह को ऐच्छिक दिशा में मोड़ती देखी गई है । ओजस्वी, तेजस्वी, मनस्वी जहाँ भी दृष्टिगोचर हों, उनसे सम्पर्क साधने और उन्हें, नवसृजन की संभावना से अवगत कराने का प्रयत्न करना चाहिए । यदि उनका मानस मोड़ा और पराक्रम युगधर्म के साथ जोड़ा जा सके, तो उनके माध्यम से इतना कुछ बन पड़ सकता है, जिसे सामान्य स्तर का जन समुदाय बड़ी संख्या में होने पर भी बहुत देर में - थोड़ी मात्रा में ही कर पाता है । महान प्रयोजनों की पूर्ति में महान व्यक्तित्वों का समावेश भी चमत्कारी परिणाम प्रस्तुत कर सकने में समर्थ होता रहा है । इस मिशन में प्रयत्नशील हम सब को भी रहना चाहिए और जो बन पड़े उसे करने में कुछ उठा न रखना चाहिए । दीप यज्ञों का यह क्रम नव निर्माण का महान लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक अभूतपूर्व अध्यात्मोपचार सिद्ध होगा । इसके सहारे ऐसा कुछ बन पड़ेगा जिसे अत्यन्त उत्साह वर्धक कहा जा सके ।

''सर्वविदित है कि शांतिकुंज से इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल-भविष्य का जो असाधारण आन्दोलन देश के कोने-कोने में, विश्वभर में चलाया जा रहा है, उसकी सफलता के लिए शांतिकुंज में जहाँ शिक्षण-सत्र अनवरत रूप से चलने की परम्परा नयी योजना के साथ चल पड़ी हैं, वहाँ इस मिशन के सूत्र-संचालक ने विगत बसंत पर्व से एक अतिरिक्त तपश्चर्या आरम्भ की है । एकान्त सेवन के साथ अनेक कष्ट-साध्य व्रत-संकल्पों का निर्वाह हो रहा है । इसी के साथ यह संकल्प भी उभरा है कि युग-संधि के इन दस वर्षों में एक लाख दीपयज्ञ आयोजन करने सृजन संगठन-करने के साथ-साथ एक करोड़ प्रतिभाओं को इस महान प्रयोजन के लिए भागीदार बनाया जायेगा । आरम्भ में यह महान संकल्प वर्तमान केन्द्र में ही सम्पन्न किये जाने की योजना थी, पर अब नया निर्धारण यह उभरा है कि प्रत्येक प्रज्ञा केन्द्र में सहस्र वेदी दीपयज्ञों के माध्यम से यह उपक्रम व्यापक बनाया जाय । इस नव निर्धारण की प्रतिक्रिया पर विचार करने वाले एक स्वर से यह कहने लगे हैं कि देश का कोई कोना-भारत भूमि का कोई क्षेत्र, कोई व्यक्ति ऐसा न बचेगा, जो नवयुग के अनुरूप नवजीवन की-नवसृजन की प्रक्रिया के साथ जुड़ न जाय । इस प्रकार जहाँ भी दीपयज्ञ सम्पन्न हो रहे हैं, वहाँ एक प्रकार से इस अभूतपूर्व, ऐतिहासिक अनुपम प्रक्रिया को सफल सर्वांगपूर्ण बनाने के लिए साहस भरे उदार सहयोग प्रस्तुत करने का पुण्य लाभ अर्जित किया जा रहा है ।

ऐसी दशा में जहाँ भी, जिनने भी दीपयज्ञ सम्पन्न करने और उस शृंखला को आगे बढ़ाने का व्रत धारण किया है, उन्हें सच्चे अर्थों में युग चेतना के अग्रदूत कहा जा सकता है । इस समुदाय की जितनी प्रशंसा की जाय, उतनी ही कम है । 卐

* * *

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामूहिक यज्ञ योजना

यज्ञों की भौतिक और आध्यात्मिक महत्ता असाधारण है । भौतिक या आध्यात्मिक जिस क्षेत्र पर भी दृष्टि डालें उसी में यज्ञ की महत्वपूर्ण उपयोगिता दृष्टिगोचर होती है । वेद में ज्ञान, कर्म, उपासना तीन विषय हैं । कर्म का अभिप्राय-कर्मकाण्ड से है, कर्मकाण्ड यज्ञ को कहते हैं । वेदों का लगभग एक तिहाई मंत्र भाग यज्ञों से सम्बन्ध रखता है । यों तो सभी वेद मंत्र ऐसे हैं जिनकी शक्ति को प्रस्फुटित करने के लिए उनका उच्चारण करते हुए यज्ञ करने की आवश्यकता होती है ।

जिस प्रकार आजकल यन्त्रों (मशीनों) की सहायता से भौतिक जीवन के अनेकों सुख साधन उत्पन्न किये जाते हैं, उसी प्रकार प्राचीन काल में मन्त्रों के द्वारा मानव जीवन की सभी आवश्यकताओं को सरल करने का विज्ञान विकसित हुआ था । शब्द-विद्या एक बड़ी विद्या है। किस शब्द के बाद क्या शब्द कितने चढ़ाव उतार से बोला जाय तो उससे किस प्रकार की ध्वनि तरंगें निकलती हैं और उनका सूक्ष्म प्रकृति पर तथा मनुष्य की भीतरी चेतना पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसी रहस्य को जानने में ऋषियों ने हजारों वर्षों तक श्रम किया था और शब्द-विद्या के वैज्ञानिक तथ्यों को जानकर मन्त्र शास्त्र की रचना की थी ।

वेद मन्त्रों में यों शिक्षाऐं भी बड़ी महत्वपूर्ण हैं, पर उन अक्षरों में शक्ति के स्रोत भी दबे पड़े हैं । जिस प्रकार अमुक स्वर-विन्यास के शब्दों की रचना करने से अनेक राग रागिनियाँ बजती हैं और उनका प्रभाव सुनने वालों पर विभिन्न प्रकार का होता है, उसी प्रकार मन्त्रोच्चारण से भी एक प्रकार की ध्वनि तरंगें निकलती हैं और उनका भारी प्रभाव विश्वव्यापी प्रकृति पर सूक्ष्म जगत पर तथा प्राणियों के स्थूल तथा सूक्ष्म शरीरों पर पड़ता है ।

भारतीय तत्ववेत्ताओं ने कोयला, भाप, तेल, धातु आदि के आधार पर चलने वाले यन्त्रों को बहुत खर्चीला और जोखिम भरा जान लिया था । इसलिए इस ओर ध्यान न देकर शब्द विज्ञान के आधार पर मन्त्र विद्या का आविष्कार किया था और उनकी शक्ति से इस लोक के जड़ चेतन प्राणियों को ही नहीं, लोक लोकान्तरों के जीवों को सुखी बनाने का प्रयत्न किया था । खेद है कि हम पिछले तमसाछन्न युग में अपनी इन महत्वपूर्ण विद्याओं को खो बैठे । मन्त्र शास्त्र और यज्ञ विज्ञान को भली प्रकार समझने के लिए आज न तो अनुभवी विद्वान मौजूद हैं और न यवन काल के हम्माम गरम करने से उस विद्या के ग्रन्थ ही बच पाये हैं ।

फिर भी जो कुछ बचा है और ज्ञात है वह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है । यज्ञों की प्रक्रिया में जो थोड़ा-सा समय और पैसा खर्च होता है उसकी अपेक्षा अनेकों गुना लाभ प्राप्त होता है । खेती में थोड़ा-सा बीज बोने पर अनेक गुनी फसल पैदा होती है । यज्ञ में भी आकाश रूपी भूमि में, हवन सामग्री रूपी बीज बोने की खेती की जाती है और चूँकि पृथ्वी से आकाश तत्व की शक्ति हजारों गुनी अधिक मानी गई है, उसी अनुमान से इस यज्ञीय खेती की फसल में भी हजारों गुना अधिक लाभ होता है ।

यज्ञ के विशेष लाभ

(१) मनुष्य शरीर से निरन्तर निकलती रहने वाली गन्दगी के कारण जो वायु मण्डल दूषित होता रहता है, उसकी शुद्धि यज्ञ की सुगन्ध से होती है । हम मनुष्य शरीर धारण करके जितना दुर्गन्ध पैदा करते हैं उतनी ही सुगन्ध भी पैदा करें तो सार्वजनिक वायु-तत्व को दूषित करने के अपराध से छुटकारा प्राप्त करते हैं ।

(२) यज्ञ धूम्र आकाश में जाकर बादलों में मिलता है उससे वर्षा का अभाव दूर होता है । साथ ही यज्ञ धूम्र की शक्ति के कारण बादलों में प्राणशक्ति उसी प्रकार भर जाती है जिस प्रकार इन्जेक्शन की पिचकारी से थोड़ी-सी दवा भी शरीर में प्रवेश करा दी जाय तो उसका प्रभाव सारे शरीर पर पड़ता है । यज्ञ कुण्डों को इन्जेक्शन की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पिचकारी, मन्त्रों को सुई और आहुतियों को दवा मान कर आकाश में जो इन्जेक्शन लगाया जाता है उसका फल प्राणप्रद वर्षा के रूप में प्रकट होता है। ऐसी वर्षा से अन्न, घास पात, वनस्पतियां, जीव जन्तु सभी बलवान परिपुष्ट एवं शक्ति सम्पन्न बनते हैं ।

(३) यज्ञ के द्वारा जो शक्तिशाली तत्व वायु मण्डल में फैलाये जाते हैं उनसे हवा में घूमते हुए असंख्यों रोग कीटाणु सहज ही नष्ट होते हैं । डी.डी.टी., फिनायल आदि छिड़कने, बीमारियों से बचाव करने की दवाऐं या सुइयां लेने से भी कहीं अधिक कारगर उपाय यज्ञ करता है । साधारण रोगों एवं महामारियों से बचने का यज्ञ एक सामूहिक उपाय है । दवाओं में सीमित स्थान एवं सीमित व्यक्तियों को ही बीमारियों से बचाने की शक्ति है, पर यज्ञ की वायु तो सर्वत्र ही पहुँचती है और प्रयत्न करने वाले प्राणियों की भी सुरक्षा करती है । मनुष्यों की ही नहीं, पशु पक्षियों, कीटाणुओं एवं वृक्ष वनस्पतियों के आरोग्य की भी यज्ञ से रक्षा होती है ।

(४) यज्ञ द्वारा प्रथक-प्रथक रोगों की भी चिकित्सा हो सकती है । यज्ञ तत्व का ठीक प्रकार उपयोग करके अन्य चिकित्सा के मुकाबिले में अधिक मात्रा में और अधिक शीघ्रतापूर्वक लाभ प्राप्त किया जा सकता है ।

(५) यज्ञ द्वारा विश्वव्यापी पंच तत्वों की, तन्मात्रों की, तथा दिव्य शक्तियों की परिपुष्टि होती हैं। इसके क्षीण हो जाने पर दुखदायी असुरता संसार में बढ़ जाती है और मनुष्यों को नाना प्रकार के त्रास सहने पड़ते हैं । देवताओं का, सूक्ष्म जगत के उपयोगी देवतत्वों का भोजन यज्ञ है । जब उन्हें अपना आहार समुचित मात्रा में मिलता रहता है तो वे परिपुष्ट रहते हैं और असुरता को, दुख दारिद्र को दबाये रहते हैं । इस रहस्यमय तथ्य का गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं श्रीमुख से उद्घाटन किया है ।

(६) यज्ञ में जिन मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है उनकी शक्ति असंख्यों गुनी अधिक होकर संसार में फैल जाती है, और उस शक्ति का लाभ सारे विश्व को प्राप्त होता है । रेडियो ब्राडकास्ट करते समय वक्ता की वाणी को शक्तिशाली विद्युत धारा से शक्तिशाली बना देते हैं तो वह आवाज संसार भर में रेडियो यन्त्रों पर सुनी जाने योग्य हो जाती है । मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञाग्नि की शक्ति बिजली की बैटरी, जनरेटर डायनुमा का काम करती है और मन्त्रशक्ति को प्रचण्ड करके सारे आकाश में फैला देती है । गायत्री मंत्र की सद्बुद्धि शक्ति को यज्ञों के द्वारा जब आकाश में फैलाया जाता है तो उसका प्रभाव समस्त प्राणियों पर पड़ता है और वे सद्बुद्धि से, सद्भावना से, सत्प्रवृत्तियों से अनुप्राणित होते हैं । अगणित व्याख्यानों और अनेकों पुस्तकों से भी शुद्ध बुद्धि-सन्मार्गगामी बुद्धि की जितनी उत्पत्ति हो सकती है उससे असंख्यों गुनी सद्बुद्धि यज्ञों से उपजती है और सन्मार्गगामी, सद्बुद्धि से अनुप्राणित मनुष्य संसार में सुख शांति की स्थापना का प्रमुख आधार बनते हैं ।

(७) यज्ञ की ऊष्मा मनुष्य के अन्तःकरण पर देवत्व की छाप डालती है । जहां यज्ञ होते हैं वह भूमि एवं प्रदेश सुसंस्कारों की छाप अपने अन्दर धारण कर लेता है और वहां जाने वालों पर भी दीर्घ काल तक प्रभाव डालती रहती है । प्राचीन काल में तीर्थ वहीं बने हैं जहाँ बड़े-बड़े यज्ञ हुए थे। जिन घरों में जिन स्थानों में यज्ञ होते हैं वह भी एक प्रकार के तीर्थ बन जाते हैं और वहाँ जिनका आगमन रहता है उनकी मनोभूमि उच्च, सुविकसित एवं सुसंस्कृत बनती है । महिलाऐं, छोटे बालक एवं गर्भस्थ बालक विशेष रूप से यज्ञ शक्ति से अनुप्राणित होते हैं । उन्हें सुसंस्कारित बनाने के लिए यज्ञीय वातावरण की समीपता बड़ी उपयोगी सिद्ध होती है ।

(८) कुबुद्धि, कुविचार, दुर्गुण एवं दुष्कर्मों से व्यक्तियों की भी मनोभूमि में यज्ञ से भारी सुधार होता है । इसलिए यज्ञ को पाप नाशक कहा गया है। यज्ञीय प्रभाव से सुसंस्कृत हुई विवेकपूर्ण मनोभूमि का प्रतिफल जीवन के प्रत्येक क्षण को स्वर्गीय आनन्द से भर देता है, इसलिए यज्ञ को स्वर्ग देने वाला कहा गया है ।

(९) यज्ञों की शोध की जाय तो प्राचीन काल की भांति यज्ञ शक्ति से सम्पन्न अग्नेयास्त्र, वरुणास्त्र, सम्मोहनास्त्र, आदि अस्त्र-शस्त्र पुष्पक विमान जैसे यंत्र, बन सकते हैं, अनेकों ऋद्धि सिद्धियों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपलब्ध किया जा सकता है । लोक लोकान्तरों की यात्रा की जा सकती है । प्रखर बुद्धि, सुसंतति, निरोगता एवं सम्पन्नता प्राप्त की जा सकती है । प्राचीन काल की भाँति यज्ञीय लाभ पुनः प्राप्त हों इसकी शोध के लिए यह आवश्यक है कि जनसाधारण का ध्यान इधर आकर्षित हो और साधारण यज्ञ आयोजनों का प्रचार बढ़े ।

(१०) यज्ञीय धर्म प्रक्रियाओं में भाग लेने से आत्मा पर चढ़े हुए मल विक्षेप शुद्ध होते हैं । फलस्वरूप तेजी से उसमें ईश्वरीय प्रकाश आने लगता है । यज्ञ से आत्मा में ब्राह्मण तत्व, ऋषितत्व की वृद्धि दिन-दिन होती है और आत्मा को परमात्मा से मिलाने का परम-लक्ष बहुत सरल हो जाता है । आत्मा और परमात्मा को जोड़ देने का, बांध देने का कार्य यज्ञाग्नि द्वारा ऐसे ही होता है जैसे लोहे के दो टूटे हुए टुकड़ों को वैल्डिंग की अग्नि जोड़ देती है । ब्राह्मणत्व यज्ञ के द्वारा ही प्राप्त होता है । इसीलिए ब्राह्मण कर्तव्य में यज्ञ, विद्या, दान इन तीनों की प्रधआनता है । ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिए एक तिहाई जीवन यज्ञ कर्म के लिये अर्पित करना पड़ता है । लोगों के अन्तःकरणों में अंत्यज वृत्ति घटे और ब्राह्मण वृत्ति बढ़े इसके लिये वातावरण में यज्ञीय प्रभाव शक्ति भरना आवश्यक है ।

(११) यज्ञ त्यागमय जीवन के आदर्श का प्रतीक है । इदन्न मम-(यह मेरा नहीं सम्पूर्ण समाज का है) इन भावनाओं के विकास से ही हमारा सनातन आध्यात्मिक समाजवाद जीवित रह सकता है । अपनी प्रिय वस्तुऐं घृत, मिष्ठान्न, मेवा, ओषधियाँ, आदि हवन करके उन्हें सारे समाज के लिये बाँट देकर हम उसी प्राचीन आदर्श को मनोभूमि में प्रतिष्ठापित करते हैं । मनुष्य अपनी योग्यता, शक्ति, विद्या, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, प्रभाव पद आदि का उपयोग अपने सुख के लिये कम से कम करके समाज को उसका अधिकाधिक लाभ दे, यही आदर्श यज्ञ में सन्निहित है । यज्ञ की प्रतीक पूजा से उन भावनाओं को सारे समाज को हृदयंगम कराया जाता है ।

(१२) यज्ञ हमारा सर्वोत्तम शिक्षक है जो अपना आदर्श अपनी क्रिया से स्वयम् ही प्रकट करता रहता है । (१) अग्नि का स्वभाव है कि सदा उष्णता और प्रकाश धारण किये रहती है हम भी उत्साह, श्रमशीलता, स्फूर्ति, आशा एवं विवेक शीलता की गर्मी और रोशनी अपने में धारण किये रहें । (२) अग्नि में जो वस्तु पड़ती है उसे वह अपने समान बना लेती है, हम भी अपने निकटवर्ती लोगों को अपने समान सद्गुणी बनावें (३) अग्नि की ज्योति सदा ऊपर को ही उठती है, उलटने पर भी मुँह नीचे को नहीं करती, हम भी विषम परिस्थितियाँ आने पर भी अधोगामी न हों वरन् अपने आदर्श ऊँचे ही रखें । (४) अग्नि कोई वस्तु अपने पास नहीं रखती वरन् जो वस्तु मिली उसे सूक्ष्म बनाकर आकाश में फैला देती है, हम भी उपलब्ध वस्तुओं को अपने लिये ही न रखें वरन् उन्हें समाज के हित में वितरण करते रहें (५) अग्नि को ही यह शरीर भेंट किया जाने वाला है, इसलिये चिता का सदा स्मरण रखें, मृत्यु को सामने देखें, और सत्कर्मों में शीघ्रता करने एवं दुष्कर्मों से बचने को तत्पर रहें । इन भावनाओं के प्रतिनिधि रूप में यज्ञाग्नि की पूजा की जाती है ।

(१३) अपनी थोड़ी सी वस्तु को सूक्ष्म वायु रूप बना कर उन्हें समस्त जड़ चेतन प्राणियों को बिना किसी अपने पराये, मित्र शत्रु का भेद किये सांस द्वारा इस प्रकार गुप्तदान के रूप में खिला देना कि उन्हें पता भी न चले कि किस दानी ने हमें इतना पौष्टिक तत्व खिला दिया-सचमुच एक श्रेष्ठ ब्रह्मभोज का पुण्य प्राप्त करना है । कम खर्च में बहुत अधिक पुण्य प्राप्त करने का यज्ञ एक सर्वोत्तम उपाय है ।

(१४) यज्ञ सामूहिकता का प्रतीक है । अन्य उपासनाऐं या धर्म प्रक्रियाऐं ऐसी हैं जो अकेला कर या करा सकता है पर यज्ञ ऐसा कार्य है जिसमें अधिक जनता के सहयोग की जरूरत है । होली आदि बड़े यज्ञ तो सदा सामूहिक ही होते हैं । यज्ञ आयोजनों में सामूहिकता, सहकारिता और एकता की भावनाऐं विकसित होती हैं ।

(१५) आपत्ति काल में, अनिष्ट निवारण में, कुसमय में, रक्षात्मक शांति शक्ति के रूप में यज्ञों का बड़ा महत्व है । वर्तमान काल में एटम युद्ध जैसी सत्यानाशी आसुरी संहार लीलाओं की सम्भावनाऐं बढ़ती जा रही हैं । सन् ६२ में एक राशि पर ८ ग्रह आने का कुयोग भी अशुभ सूचक है । ऐसे कुसमय आने पर शान्ति आयोजनों के रूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

में यज्ञानुष्ठान को शास्त्रकारों ने सर्वोत्तम उपाय माना है । अरबों मनुष्यों और असंख्य जीव जन्तुओं की शान्ति और सुरक्षा के लिये यज्ञ आयोजनों की शृंखला बढ़ाने की आवश्यकता है ।

(१६) हिन्दू जाति का प्रत्येक शुभ कार्य, प्रत्येक पर्व, त्यौहार संस्कार यज्ञ के साथ सम्पन्न होता है । यज्ञ भारतीय संस्कृति का पिता है । यज्ञ भारत की सर्वमान्य एवं प्राचीनतम वैदिक उपासना है । बीच के अन्धकार युग में अनेक मतमतान्तर उपज पड़े और विघटनात्मक भारी मतभेद खड़े हो जाने से हिन्दू जाति विशृंखललित हो गई । धार्मिक एकता, एवं भावनात्मक एकता को लाने के लिये यज्ञ आयोजनों की सर्वमान्य साधना का आश्रय लेना सब प्रकार दूरदर्शिता पूर्ण है ।

(१७) यों यज्ञ सभी अच्छे हैं पर पृथक-पृथक यज्ञों के उद्देश्य और परिणाम भिन्न-भिन्न हैं । वर्षा का अभाव दूर करने के लिये विष्णुयज्ञ, विलासिता त्यागने और भक्ति भावना बढ़ाने के लिये रुद्र यज्ञ, बीमारियों को रोकने के लिये मृत्युञ्जय यज्ञ और लड़ाई के समय जनता में जोश भरने के लिये चण्डीयज्ञ कराये जाते हैं । पर जब मनुष्यों को कुमार्ग गामिता से बचाकर सन्मार्ग पर लाने का, विश्वव्यापी अशुभ को रोकने का प्रयोजन हो तो गायत्री यज्ञ ही एकमात्र अवलम्बन रह जाता है । आज की परिस्थितियों में गायत्री यज्ञ से बढ़ कर अधिक उपयुक्त अचूक एवम् रामबाण और कोई धर्मानुष्ठान हो नहीं सकता ।

सामूहिक यज्ञायोजनों की आवश्यकता एवं उपयोगिता

इन सब बातों पर गंभीरता पूर्वक विचार करने से यह आवश्यक हो जाता है कि गायत्री यज्ञों का अधिकाधिक विस्तार हो । इस भारत भूमि को एक बार फिर यज्ञमयी करा दिया जाय, जिससे यहाँ फैले हुये पाप-ताप जल जाँय और आत्मज्ञान, ऋतम्भरा प्रज्ञा, उच्च चरित्र, सत्कर्म, सद्भाव एवं आत्मबल की अखण्ड ज्योति का प्रकाश दशों दिशाओं में फैल जाय । भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान एवं युग निर्माण महान कार्य का शिलान्यास गायत्री महामंत्र की गगन भेदी ध्वनि और यज्ञों की प्रकाश ज्योति के साथ किया जाय ।

सभी सोसाइटियों का, मीटिंग कमेटियों का पश्चिमी तरीका खोखला सिद्ध हुआ है । अब जन संगठन और जागृति का कार्य यज्ञों के साथ सम्पन्न किया जाना चाहिये । भारतीय जनता की मनोभूमि धार्मिकता पर आधारित है, इसलिये नैतिकता एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण करने का कार्य धार्मिक आधार पर ही होना चाहिये । इस देश में अब तक केवल धार्मिक आन्दोलन ही पनपे और सफल हुये हैं । महात्मा गांधी के स्वराज्य आन्दोलन की सफलता का एक भारी मनोवैज्ञानिक रहस्य यह भी है कि उन्होंने अपने आन्दोलन में धर्म चर्चा को बहुत स्थान दिया था और स्वयं भी महात्मा थे । धर्म चर्चा न करने और स्वयं महात्मा न होने के अभाव में अन्य नेता गण वह स्थान और सफलता प्राप्त न कर सके जो महात्मा गांधी को प्राप्त हुई । हमें राष्ट्र का नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान करना है, अनेकों बुराइयों और कुरीतियों के फोड़ों से हमारे समाज शरीर की दुर्दशा हो रही है उसे निरोग बनाना है । इस निर्माण कार्य के लिये यज्ञ कुण्ड वैसी ही आध्यात्मिक भट्टियां सिद्ध होंगे जैसे इस्पात के कारखानों में लोहा गलाये और पकाने की भट्टियां लगाई जाती हैं ।

सामूहिक गायत्री यज्ञों का प्रसार अब सर्वत्र होना चाहिये । बड़े-बड़े प्रीतिभोज कराने में जिस प्रकार अब तक लोग अपना गौरव और पुण्य समझते रहे हैं अब लोगों को यह अनुभव कराना और समझाना होगा कि अन्नदान केवल समाज सेवा में दिन रात लगे हुये सत्पात्र ब्राह्मणों को या दीन-हीन असमर्थ लोगों को ही कराने पर पुण्य हो सकता है पात्र कुपात्र का भेद न करके अन्धा-धुन्ध भोजन कराने से किसी सत्परिणाम की आशा नहीं करनी चाहिये । इसलिये प्रीतिभोजों, ब्रह्मभोजों के स्थान पर सामूहिक यज्ञों की परम्परा को पुनर्जीवित करना चाहिए ।

गायत्री उपासकों के जी में कभी कोई बड़ा काम करने की इच्छा जागृत हो तो उन्हें एक बड़े यज्ञ की बात ही सोचनी चाहिए । एक व्यक्ति अपने खर्च से यज्ञ करें, कुछ लोगों को वेतन देकर यज्ञ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करने के लिए नियुक्त करें यह तरीका केवल उन्हीं लोगों के लिए ठीक हो सकता है जो जन सम्पर्क में आना अपनी हेटी तौहीन समझते हैं, या जनता जिनके पास जाने से दूर रहना चाहती है । जिनका जनता से परिचय है, जिन्हें आशा है कि उनके कहने से कुछ लोग उनके साथ हो सकते हैं, ऐसे लोगों को अपने जीवन में, अपने प्रयत्न से एक बड़ा सामूहिक गायत्री यज्ञ कराने की बात अवश्य सोचनी चाहिए ।

गायत्री यज्ञों का तरीका यह है कि यज्ञ की तिथि नियत करके उससे कुछ दिन पूर्व तैयारी में लग जाना चाहिए । यज्ञों के दो प्रकार हैं । (१) साधारण यज्ञ (२) यज्ञानुष्ठान । साधारण हवनों में यही पर्याप्त है कि जो लोग यज्ञ में बैठें उन्हें गायत्री मंत्र का शुद्ध उच्चारण आता हो, यज्ञ में सम्मिलित होने के दिनों में या उससे कम से कम तीन दिन पूर्व से ब्रह्मचर्य पूर्वक रहे हों, तथा यज्ञ में स्नान करके धुले हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर आवें । यज्ञ में सम्मिलित होने के लिये अधिकाधिक लोगों को पहले से ही तैयार करना चाहिए । उन्हें शुद्ध गायत्री मन्त्र उच्चारण तथा ब्रह्मचर्य की बात पहले से ही बता देना चाहिए ।

यज्ञानुष्ठानों में पहले नियत संख्या में जप कराया जाता है, जप पूरा होने पर उसका दशांश या शतांश हवन कराते हैं, यह सामूहिक अनुष्ठान कहलाता है । इसके लिए यज्ञ तिथि से कुछ दिन पूर्व से यज्ञ में सम्मिलित होने वाले भागीदार तैयार करने चाहिए । यह भागीदार अपनी सुविधानुसार प्रतिदिन कुछ नियत संख्या में जप किया करें । इस प्रकार अनेक भागीदारों को बाँट कर २४ लक्ष जप का महापुरश्चरण आसानी से कराया जा सकता है । ४० दिन पूर्व से जप आरम्भ कराये जायँ और प्रतिदिन एक घन्टा खर्च करके भागीदार १ माला भी नित्य करें तो ६० भागीदारों द्वारा २४ लक्ष जप पूरा हो सकता है । भागीदार कम हों या कम जप करना चाहें तो ४० दिन की अपेक्षा समय बढ़ाया जा सकता है । कोई भागीदार कम कोई अधिक जप करे ऐसा भी चल सकता है । पारिश्रमिक देकर किसी साधु ब्रह्मचारी को भी इसके लिये बिठाया जा सकता है । प्रतिदिन ६ घन्टा जप करने से ६० माला होती हैं । इतना परिश्रम एक पंडित आसानी से कर सकता है । भागीदारों से जितना जप कम पड़े वह इस प्रकार पारिश्रमिक देकर पूरा कराया जा सकता है ।

२४ लक्ष जप का शतांश २४ हजार आहुति होती हैं । ५ कुण्डों की यज्ञशाला में से ४ में दो-दो व्यक्ति चारों ओर और बीच की यज्ञशाला में दो व्यक्ति तीन ओर इस प्रकार ३८ व्यक्ति एक समय में बैठें तो ६३२ आहुतियों में २४ हजार पूरा हो जाता है । यदि हवन करने वाले अधिक हों तो कई पारी करके उतने-उतने व्यक्ति बिठाकर आहुतियां पूरी कर लेनी चाहिए । हवन में बैठने वाले कम हों तो आहुतियों की संख्या उसी हिसाब से बढ़ाई जा सकती है । एक घन्टे में मोटे तौर पर २४० आहुतियाँ हो जाती हैं । ६३२ आहुतियों में २।।-३ घन्टा लगता है । प्रारम्भिक देव पूजन और अन्त में पूर्णाहुति भी १।।-२ घन्टा ले जाते हैं । इस प्रकार कुल मिलाकर यह हवन ४-५ घन्टे में हो जाता है । प्रातः हवन सायंकाल भजन एवं प्रवचनों का क्रम रखना चाहिए ।

२४ हजार हवन १ दिन में पूरा हो जाता है । १। लक्ष हवन के लिए ९ कुण्डों की यज्ञशाला में तीन दिन लगते हैं । आहुतियों से सौ गुना १। करोड़ जप होना कठिन पड़ता है । इसलिए जप के लिए २४ लक्ष की संख्या ही पर्याप्त है । हवन २४ हजार के स्थान पर १। लक्ष कराया जा सकता है । ९ कुंडों की यज्ञशाला में यों आठ यज्ञशालाओं में आठ-आठ और बीच की में ६ इस प्रकार ७० होता एक साथ बैठ सकते हैं । पर यदि संख्या कम हो तो ८ पर चार और बीच की पर ६ इस प्रकार ३२+६=३८ होताओं से भी काम चल सकता है । प्रारम्भिक दिन में देव पूजन १-१।। घन्टा समय लेता है और अन्तिम दिन पूर्णाहुति इतना ही समय लेती है । इसलिये प्रारम्भिक और अन्तिम दिन कुछ कम और बीच के दिन कुछ अधिक आहुतियाँ करनी चाहिये । होताओं की संख्या के आधार पर पारी बदली जा सकती है । यदि केवल ३८ ही होता हों तो बीच में एक बार कुछ देर की छुट्टी कर लेनी चाहिए । होताओं की संख्या के आधार पर ही यह हिसाब लगाया जा सकता है कि १। लक्ष हवन के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिये कुल कितनी आहुतियाँ करनी हैं और उसमें से आरम्भ के बीच के और अन्त के दिन कितनी-कितनी आहुतियाँ करने से समय के घन्टे प्रतिदिन बराबर रह सकते हैं ।

आवश्यक जानकारियाँ

यज्ञशाला में पैर धोकर ही कोई प्रवेश करे । कम आयु के ऐसे बच्चे जो मल मूत्र त्याग के बारे में अनजान होते हैं यज्ञशाला में प्रवेश न किये जाँय । जिन स्त्री-पुरुषों को, बालक-बालिकाओं को शुद्ध गायत्री मन्त्र याद हो वे हवन कर सकते हैं । स्नान करके, धुले वस्त्र पहन कर ही यज्ञ पर बैठा जाय । जहाँ तक हो सके यज्ञ पर कम से कम कपड़े पहन कर बैठना चाहिए ताकि यज्ञ की ऊष्मा शरीर के रोम कूपों से प्रवेश करके अपना प्रभाव डाल सके । कसे हुये भारी, अधिक कपड़े पहन कर यज्ञ में बैठने से समुचित लाभ नहीं मिल पाता । पजामे, नेकर न पहन कर यज्ञ में धोती ही पहननी चाहिए । पंजाबिन बहिनों को पजामा पहन कर भी यज्ञ में बैठने की विशेष छूट दी जा सकती है ।

यज्ञशाला की सजावट जितनी नयनाभिराम हो सके उतनी ही उत्तम है । आदर्श वाक्य, चित्र, ध्वजा, पताका, झण्डी, पल्लव, बन्दनवार, केला के खम्भे, पत्ते रंगीन वस्त्र, पर्दे आदि की सहायता से जितनी अच्छी सजावट हो सके करनी चाहिए । जमीन को लीप पोतकर कलात्मक चौक पूरने चाहिए । सुरुचि पूर्ण शोभा, सजावट और श्रृंगार का कलात्मक प्रयत्न जितना अधिक हो सके करना चाहिये । सामान्य जनता का चित्त आकर्षित करने के लिए अन्य देव मन्दिरों की भांति यज्ञशाला को, यज्ञ-मन्दिर को भी पूरे उत्साह के साथ सुसज्जित किया जाना चाहिए ।

यज्ञ पात्र, कलश, चारों कोनों की वेदियाँ, बीच में सर्वतो भद्र वाली प्रधान वेदी, गायत्री माता और यज्ञ पिता के सुन्दर चित्रों की स्थापना, घृत दीप, अगरबत्ती शंख, घड़ियाल, रोली, अक्षत, कलावा, यज्ञोपवीत, पुष्प मालाऐं, नारियल आदि सभी पूजा उपकरण पहले से ही जमा कर लेने चाहिए ताकि समय पर उनकी ढूँढ खोज करने में समय बर्बाद न हो ।

यज्ञ से एक दिन पूर्व सायंकाल को जल यात्रा का आयोजन करना चाहिये । नगर के समीप किसी पवित्र जलाशय, नदी, तालाब, बगीचा आदि से यज्ञ के लिए जल लाया जाता है । यज्ञ से कई दिन पूर्व महिलाओं में जा-जाकर यह प्रयत्न करना चाहिए कि अधिक से अधिक महिलाऐं मंगल कलश लेने को तैयार हों । यज्ञ के लिये कलश भर कर लाना उन महिलाओं के लिए, उनके बच्चों तथा परिजनों के लिए परम मंगलमय होता है इसमें सुहागिनी, विधवा या कुमारी का भेद नहीं है । पन्द्रह वर्ष की आयु से अधिक आयु की सभी महिलाऐं मंगल कलश ले सकती हैं । कलश लेने वाली महिलाऐं धुले हुये पीले वस्त्र धारण किये हुये हों । पीले रंगे हुए, स्वास्तिक बने हुए, पुष्प, आदि से सजे हुए, पञ्च पल्लव एवं नारियलों से ढके हुए कलश यज्ञशाला से लेकर महिलाऐं गाजे बाजे के साथ मंगल गान करती हुए, लाइनें बना कर जुलूस की तरह जल लेने के लिए जाती हुई, बड़ी भली मालूम पड़ती हैं । जलाशय पर जाकर पंच कर्म, स्वस्तिवाचन, देव पूजन, वरण, तिलक, वरुण पूजन, शान्ति पाठ आदि कृत्य करके कलशों में थोड़ा-थोड़ा जल भर कर वापिस लौटना चाहिए और यज्ञशाला में प्रवेश करते समय कलशों की आरती करनी चाहिये तथा लाने वाली महिलाओं को तिलक, अक्षत, अभिसिंचन, प्रसाद के साथ आशीर्वाद देना चाहिये। कलशों की संख्या कम से कम १० और अधिक से अधिक १०८ या जितनी अधिक हो सके कर लेनी चाहिये । यह बड़ा ही सुहावना एवं प्रभावोत्पादक आयोजन है ।

हवन पर बैठने वाले जितने व्यक्ति हों उन सबके हाथ में हवन करने की पुस्तकें हों ताकि देव पूजन, स्वस्तिवाचन आदि के मन्त्रों को सब लोग साथ-साथ बोल सकें, लाउड स्पीकर की व्यवस्था जहाँ सम्भव हो, वहाँ उसकी व्यवस्था अवश्य कर लेनी चाहिये । गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ सब लोग एक साथ और एक ध्वनि में बोलें, इसके लिये हारमोनियम का आधार बड़ा अच्छा रहता है । एक अच्छे स्वर वाला व्यक्ति हारमोनियम पर गायत्री मन्त्र गावे और अन्य सब लोग उसके साथ गला मिला कर उच्चारण करें तो यह पद्धति बड़ी सुन्दर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहती है । जिन लोगों के यज्ञोपवीत नहीं हुये हैं- उन्हें यज्ञ के समय यज्ञोपवीत देने का प्रबन्ध भी करना चाहिए ।

अन्तिम दिन पूर्णाहुति एवं परिक्रमा करने के लिये उन लोगों को भी बुलाना चाहिये जो नियमित रूप से यज्ञ में शामिल नहीं हो सके हैं । जो लोग अपने घी भरे नारियल ला सकें उनके अतिरिक्त अन्य लोग साबित सुपाड़ी एवं सामग्री से पूर्णाहुति कर सकते हैं । पूर्णाहुति की आहुति, घृत अवधाय, आरती, भस्म धारण, क्षमा प्रार्थना, शुभ कामना, अभिसिंचन परिक्रमा आदि क्रियाओं में सभी लोग व्यवस्था पूर्वक भाग ले सकें इसके नियन्त्रण के लिए कुछ कार्यकर्ता और स्वयं सेवकों की नियुक्ति यथा स्थान कर देनी चाहिये । नियंत्रण और व्यवस्था का पूर्व प्रबन्ध न रहने से भीड़ की गड़बड़ी से सारे कार्यक्रम अव्यवस्थित हो जाते हैं । पूर्णाहुति के बाद प्रसाद बाँटना चाहिये । यदि सम्भव हो तो प्रयत्न यह भी करना चाहिये कि यज्ञ भस्म की तथा प्रसाद की एक-एक पुड़िया उन लोगों के घरों पर भी पहुँचाई जाय जो यज्ञ में भाग लेने नहीं आ सके हैं ।

यज्ञ में आये हुये अतिथियों की भोजन व्यवस्था आवश्यक है । गायत्री यज्ञों के अन्त में कन्या भोजन कराना चाहिये । गायत्री की प्रतिनिधि मानकर उन कन्याओं का समुचित स्वागत, सम्मान एवं अभिवादन किया जाय । चरण धोना, कलावा, तिलक, पुष्प माला, दक्षिणा, चरण स्पर्श जुलूस आदि के द्वारा कन्याओं का सार्वजनिक सम्मान करना चाहिये । कन्याओं की वेष भूषा, पीले रंग की एक जैसी हो तो और भी अच्छी है । मातृ शक्ति की जय के नारे लगाने चाहिये । यज्ञों के साथ बड़े-बड़े प्रीतिभोजों में जो भारी धन खर्च किया जाता है वह अपव्यय है । केवल बाहर से आने वाले अतिथि या आमन्त्रित सत्पुरुषों तक ही सात्विक भोजन की व्यवस्था सीमित रखनी चाहिये ।

यज्ञों में आमतौर से गायत्री माता की जय, यज्ञ भगवान की जय, वेद भगवान की जय, भारतीय संस्कृति की जय, सत्य सनातन धर्म की जय के नारे लगाये जाने चाहिये । 'नाश हो' किसी का भी नहीं कहना चाहिये क्योंकि इसमें दुर्भावना भरी हुई है । यज्ञ के समय हमें अपने विचार क्षेत्र में केवल सद्भावनाओं को ही स्थान देना चाहिये ।

चौबीस हजार आहुतियों के लिये हवन सामिग्री के रूप में २ मन सुगन्धित ओषधियाँ, २।। सेर जौ, ५ सेर चावल, ६।। सेर तिल तथा ५ सेर शक्कर मिलानी चाहिए । इस प्रकार ३ मन साकल्य पर्याप्त है । हवन सामग्री की शुद्धता की परीक्षा यह है कि उसमें तेल की चिकनाई नहीं होती । आज कल सड़े हुए गोले का या अन्य वस्तुओं का तेल मिलाकर सड़ी गली चीजें तथा लकड़ी का बुरादा इस ढंग से बना देते हैं कि ओषधियों का असली रूप ढक जाता है । सुगन्धि के नाम पर एक दो तेज गन्ध की चीज मिलाकर शेष सस्ता कूड़ा कचरा भर देते हैं । इसलिए जहाँ तक संभव हो शुद्ध ओषधियाँ लेकर कूट छान कर सामग्री बनानी चाहिए । उसका जो रूप बनेगा उसमें चिकनाई नाम को भी न होगी। बाजारू सामग्री तो यज्ञ का उद्देश्य पूरा न करके वैसी ही हानि पहुँचाती है जैसे दवा की शकल में बनी हुई कोई खराब चीज स्वास्थ्य को हानि पहुँचाती है । इसलिए हवन में शुद्ध ओषधियाँ ही पड़ें यह ध्यान रखने की बात है । जहाँ शुद्ध हवन सामग्री बनाने में असुविधा हो वहाँ तपोभूमि में नित्य हवन करने के लिए बनाई हुई सामग्री में से अपनी आवश्यकता के लिए मंगाई जा सकती हैं । वहाँ से बिना किसी मुनाफे के शुद्ध शास्त्रोक्त सामग्री यज्ञों की आवश्यकता के अनुसार बना कर भेज देने का प्रबन्ध कर दिया गया है ।

सवा लक्ष आहुतियों में इसी अनुपात से १० मन (३७.३२२४२ किलोग्राम) सुगन्धित द्रव्य और २।। मन तिल, जौ, चावल, शक्कर कुल १२।। मन हवन द्रव्य चाहिए । सामग्री सूखी जैसी न रहे इसलिये उसमें दूध तथा घी मिलाकर चिकना बना लेना चाहिए । २४ हजार आहुतियों में प्रायः १० सेर (९३३ ग्राम) और १। लक्ष आहुतियों में ३० सेर घी की जरूरत पड़ती है । पतली समिधाऐं व्यवस्थानुसार खर्च करने से २४ हजार में ४ मन और सवालक्ष में १५ मन के करीब लग जाती है । अधिक मोटी समिधाऐं रखी जाँय और उन्हें अधिक डाला जाय तो अधिक लकड़ी लग सकती है । इसलिए प्रबन्ध कुछ अधिक का ही रखना चाहिए । आम, ढाक, पीपल, बरगद, छोंकर आदि की जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लकड़ी जहाँ सुविधानुसार मिल सके उसका प्रबन्ध कर लेना चाहिए । समिधाऐं पतली चिरी हुई तथा सूखी हुई, बिना सड़ी घुनी हों । समिधाओं को पानी में धोकर धूप में सुखा कर रखना चाहिए ।

सामान्य गायत्री हवन की अपेक्षा बड़े सामूहिक यज्ञों में कुछ क्रिया काण्ड बढ़ जाता है । प्रयत्न यह करना चाहिए कि अपने क्षेत्र के किसी सुयोग्य व्यक्ति को १ महीने या इससे भी कम समय के लिए गायत्री तपोभूमि में भेजकर यज्ञों का पूरा विधान सिखा लिया जाय और वह ट्रेन्ड व्यक्ति उस क्षेत्र के यज्ञों की व्यवस्था ठीक प्रकार करा दिया करें । वैसा प्रबन्ध न हो सके तो तपोभूमि से यज्ञ संचालक तथा प्रवचन करने वाले धर्म प्रचारक बुलाये जा सकते हैं।

यज्ञों के साथ-साथ प्रवचनों का प्रबन्ध होना आवश्यक है । जनता में धार्मिकता, नैतिकता, मानवता, कर्तव्य परायणता, संगठन, समाज सुधार की भावनाऐं ऐसे अवसरों पर अवश्य भरी जानी चाहिए । इस कार्य के लिए युगधर्म को पहचानने वाले, प्रगतिशील एवं रचनात्मक विचार रखने वाले गायक या प्रवचनकर्ता उपयुक्त हो सकते हैं । यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि कोई व्यक्ति विद्वान या अमुक वेषधारी है, इस आधार पर प्रवचन का अधिकारी न मान लिया जाय । कई व्यक्ति शिक्षा की दृष्टि से विद्वान और वेष की दृष्टि से भिक्षु लगते हैं पर उनके विचार बड़े प्रतिगामी, अन्धकार युग के प्रतीक एवं जन-मानस में आलस्य अवसाद पैदा करने वाले होते हैं । यह लोग अमुक अवतार या अमुक देवता की कीर्ति सुनने-सुनाने से ही स्वर्ग या मुक्ति मिलने की बात कहते हैं और मानव जीवन के उत्कर्ष की व्यवहारिक समस्याओं को या तो समझते नहीं या उलझे विचार प्रकट करते हैं । ऐसे लोगों के प्रतिगामी विचारों का गायत्री यज्ञों की सद्बुद्धि को प्रेरणा देने वाली वेदियों से प्रसार न हो, इसलिए यह पूरा-पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए कि वक्ता के विचारों का पहले पता लगा लिया जाय । विभिन्न विचारों के परस्पर विरोधी विचारों के लोगों को एक वेदी पर एकत्रित कर देने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिये । कई बार ऐसे वक्ता एक ही वेदी पर एक दूसरे का खंडन-मंडन करना शुरू कर देते हैं और यज्ञ के साथ-साथ राष्ट्र का सांस्कृतिक पुनरुत्थान करने के महान उद्देश्य को भारी हानि पहुँचाते हैं। जहाँ प्रगतिशील विचारों के वक्ता न मिलें वहाँ अखण्ड ज्योति में से या गायत्री साहित्य में से कुछ पृष्ठ पढ़कर सुना कर धर्म प्रचार की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है ।

यज्ञ आयोजनों में सम्मिलित होने के लिए, उनमें सहयोग देने के लिए स्वभावतः सभी धर्म प्रेमियों को बड़ी प्रसन्नता होती है । परन्तु दक्षिणाजीवी पंडित पुरोहित हर जगह इनका विरोध करते हैं कोई न कोई त्रुटि इनमें ढूँढ़ते हैं, और लोगों को बहकाते हैं कि इनमें भाग न लें । इस विरोध का कारण आर्थिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक है । इन तथ्यों को भली प्रकार जाने बिना इस विरोध का कारण समझ में नहीं आता ।

बात यह है कि पिछले कई वर्षों से कई साधु सन्तों द्वारा बड़े-बड़े यज्ञों के आयोजन कराये गये हैं। इनमें हजारों लाखों रुपयों की बड़ी-बड़ी निधियाँ सेठ साहूकारों से एकत्रित की जाती रही हैं । इनमें केवल ब्राह्मण पण्डित ही हवन करने को नियुक्त किये जाते रहे हैं । साधारण हवन करने वालों को सौ-सौ, दो-दो सौ की और ब्रह्मा, आचार्य आदि बनने वालों को हजारों रुपयों की दक्षिणा तथा भारी सामान प्राप्त होता रहा है । मिठाई मलाई छनती रही है सो अलग । वही नक्शा इन पण्डितों के दिमाग पर जमा हुआ है । वे देखते हैं कि उनके नगर में यज्ञ हो रहा है पर लम्बी-चौड़ी दक्षिणा और मिठाई-मलाई का कोई जुगाड़ नहीं बैठ रहा है तो उन्हें स्वभावतः बड़ी जलन होती है । केवल ब्राह्मण ही हवन पर बैठे और उन्हें जातिगत सम्मान प्राप्त हो, इसके स्थान पर अन्य वर्णों के लोग भी यज्ञ करें और उनका बड़प्पन, सामान्य लोगों के बराबर रह जाय यह उन्हें अनुचित प्रतीत होता है । हवन कार्य कराने और मन्त्रोच्चारण कराने के लिए बाहर के आदमी आते हैं, या स्थानीय लोग ही मिल-जुलकर कर लेते हैं तो उन्हें लगता है कि हमारी आजीविका पर हमला हो रहा है । अभी तो यह लोग हवन कराने के हमारे एकाधिकार को छीनते हैं, पीछे कथा, विवाह आदि अन्य दान दक्षिणा के कार्यों को भी छीन लेंगे । ऐसे-ऐसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारणों को विचार करके उनके मन में विरोध भावना उठती है। अब तक दूसरे साधुओं द्वारा होने वाले यज्ञों में जितनी हवन सामग्री खर्च होती थी और उससे बीसियों गुना लड्डू माल पुये उड़ते रहते थे वैसे ब्रह्मभोजों की व्यवस्था इन यज्ञों में न देख कर उन्हें झुँझलाहट आती है । ग्राम पुरोहितों की सलाह पर जो बड़े पण्डित आचार्य दूर शहरों में बुलाये जाते हैं और जिन्हें हजारों रुपये का सामान तथा दक्षिणा मिलती है, उसमें एक बड़ा कमीशन भाग इन सलाहकार स्थानीय पण्डितों को भी मिलता है । गायत्री यज्ञों की जो प्रणाली है उसमें इस प्रकार की गुंजायश न होने से भी उन्हें निराशा होती है ।

ऐसे ही कारणों से अपनी आर्थिक तथा सम्मानात्मक हानि देखकर यह पंडित पुरोहित अड़ंगे लगाते हैं और ऊटपटांग जो जी में आता है सो आक्षेप लगाते हैं, त्रुटियां बताते हैं, और यज्ञों में शामिल होने वालों को चुपके-चुपके यह भी कहते हैं कि इस यज्ञ में सहयोग न करो नहीं तो तुम्हारी हानि हो जायगी ।

इन कठिनाइयों से हमें सजग रहना चाहिए । जहाँ आर्थिक और भोजन आदि के मामले में स्थानीय पंडितों को संतुष्ट करना संभव हो वहाँ वैसा कुछ प्रबन्ध करके झगड़े को शान्त कर लेना चाहिए। जहाँ वे न मनाये जा सकें वहाँ उनके विरोध की परवाह न करने की मनोभूमि पहले से ही बना लेनी चाहिए । चूंकि ऐसे लोगों की आत्मिक दुर्बलता उनमें कोई बल नहीं छोड़ती इसलिए उनके विरोध से डरने की जरा भी बात नहीं है । कोई प्रभावशाली व्यक्ति जरा मजबूती की भाषा में उन्हें समझादे तो जिजमानों के नाराज होने का भय उन्हें तुरन्त ही चुप भी करा देता है ।

चूँकि अपनी क्रिया पद्धति पूर्ण शास्त्रोक्त हैं । हजारों धर्म ग्रन्थों के अध्ययन के आधार पर सभी कार्यक्रम एवं विधान निर्धारित किये गये हैं । इसलिए इनके सम्बन्ध में शंका सन्देह में पड़ना व्यर्थ है । जो कार्य परमार्थ बुद्धि से, विश्व हित के लिए किये जा रहे हैं, उनमें वे बातें नहीं देखी जातीं जो व्यक्तिगत रूप से सकाम कामना के लिए किये जाने वालों में देखी जाती हैं । यज्ञ प्रत्येक हिन्दू का नित्यकर्म है जिस यज्ञ के बिना हिन्दू का कोई त्यौहार, कोई पर्व, कोई उत्सव, कोई संस्कार पूरा नहीं होता, जिस यज्ञ के बिना विवाह पूर्ण नहीं होता, जिस यज्ञ की गोदी में चिता बनाकर अंत्येष्टि संस्कार के रूप में प्रत्येक हिन्दू अपनी जीवन लीला समाप्त करता है, उस भारतीय धर्म के आदि पिता यज्ञ के सम्बन्ध में अड़ंगे लगाना और रोड़े अटकाना असुरता का ही एक कृत्य है । शुभ कार्य में कोई त्रुटि भी रहती हो तो उसका कभी कोई अशुभ परिणाम नहीं हो सकता ।

यज्ञों में बड़े-बड़े प्रीतिभोज करके बहुत धन व्यय करने से कोई धार्मिक लाभ नहीं हो सकता । आगन्तुकों को न्यूनाधिक प्रसाद देने की अतिथियों एवं विद्वानों को भोजन कराने की व्यवस्था होनी चाहिए पर हजारों रुपया लड्डू, मालपुओं में खर्च कर डालना बेकार है । ब्रह्मभोज की पूर्ति सत् साहित्य वितरण करके की जानी चाहिए । हर यज्ञ में गायत्री चालीसा, चित्र, आदर्श वाक्य या अन्य सस्ती गायत्री यज्ञ का महत्व बताने वाली पुस्तकें वितरण करने के लिए कुछ निधि अवश्य रखनी चाहिए । ज्ञान-दान का ब्रह्मदान का पुण्य अन्न दान से सौ गुना अधिक माना गया है । खाया हुआ अन्न कुछ ही देर बाद मल बनकर निकल जाता है पर सत् साहित्य द्वारा ज्ञान बीज जिन अन्त:करणों में बोया जाता है उनमें से दो-चार के भीतर भी वह बीज उग आवे तो उस आत्मा का ही नहीं, संसार के अनेक प्राणियों का भारी हित साधन हो सकता है । ज्ञान दान को, ब्रह्मदान को, गायत्री यज्ञों में ब्रह्मभोज का स्थान दिया जाना चाहिए । सामर्थ्यानुसार सत् साहित्य वितरण अवश्य किया जाय । खरीदने के लिए भी आगन्तुकों को प्रेरणा की जाय ।

वास्तविक रूप में गायत्री उपासना एक आध्यात्मिक व्यायाम है जिससे सूक्ष्म शरीर में छिपी हुई आत्मिक शक्तियां विकसित होती हैं । यज्ञ एक आध्यात्मिक उपचार है जिससे लौकिक एवं पारलौकिक सुख शान्ति का द्वार खुलता है । सामाजिक दृष्टि से गायत्री उच्च विचारधारा मस्तिष्कों में भरे रखने की प्रक्रिया है । यज्ञ को त्यागमय सत्कार्यों की क्रिया पद्धति या जीवन नीति कह सकते हैं । सादा जीवन उच्च विचार की उक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बहुत दिनों से प्रचलित है । पर भारतीय संस्कृति का आदर्श 'आदर्श पूर्ण उच्च विचार और स्नेहसिक्त त्याग मय व्यवहार' रहा है । गायत्री और यज्ञ ये दोनों ही आदर्शों की ध्वजा हैं । जिस प्रकार वेद भगवान की सवारी रथ या हाथी पर निकालने का सुरुचिपूर्ण प्रदर्शन इस बात का प्रेरक है कि हमें वेदों का अध्ययन एवं वैदिक आदर्शों का अनुगमन करना चाहिए, इसी प्रकार गायत्री यज्ञों का आदर्श जहाँ देव पूजा और पारलौकिक सुख है वहाँ यह भी है कि इन आयोजनों के द्वारा जनता में मानवोचित नैतिकता, कर्तव्य परायणता, सामाजिकता, सहकारिता, संयम एवं उदारता के भावों की अभिवृद्धि की जाय । इसके लिए यज्ञ में भाग लेने वालों को परस्पर विचार विनिमय, आत्म चिन्तन, कुछ बुराइयों को सुधारने और कुछ अच्छाइयों को बढ़ाने का व्रत लेने का भी प्रयत्न करना चाहिए । वैयक्तिक और सामूहिक रूप से सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने के लिए योजनाऐं बनानी चाहिये और उन पर चलने को तत्पर होना चाहिये । प्रवचनों की व्यवस्था अवश्य रखी जाय । आमतौर से पुराने विचारों के भक्त किन्हीं देवता या अवतारों की लीलाऐं सुनाते हैं और यह बताते हैं कि इन लीलाओं को सुनने मात्र से स्वर्ग मिल सकता है या अमुक देवता का नाम लेने या भक्ति करने से जीवन नौका पार हो सकती है । यह विचार मनोविनोद मात्र है । हमें जीवन की गतिविधियों को सुव्यवस्थित करने, उच्च नैतिक आदर्श अपनाने एवं संसार के सामने अपनी महानता प्रदर्शित करने की प्रेरणाप्रद शिक्षाओं का ही प्रवचनों में आयोजन करना चाहिये । इसके लिए प्रगतिशील और विवेकवान वक्ताओं को ही ढूँढ़ना चाहिये । इनके बिना यज्ञ का उद्देश्य अधूरा ही रह जायगा । यही बात भजनों कीर्तनों के सम्बन्ध में होनी चाहिये । देवताओं का गुण गाते रहने या उनका नाम लेते रहने की अपेक्षा देवताओं से सद्गुण देने, सत्प्रवृत्तियाँ जगाने की प्रार्थना करने वाले भजन कीर्तन गाने चाहिये, ताकि गायक और सुनने वाले कुछ प्रेरणा लेकर जावें ।

संगठन को मजबूत करने और बढ़ाने का हर सम्भव प्रयत्न इन यज्ञों में किया जाना चाहिए । इस युग में संगठन ही प्रधान शक्ति है । धार्मिक विचार के लोगों को संगठित होकर सांस्कृतिक पुनर्निर्माण में लगने की प्रवृत्ति पैदा करना इन यज्ञों का उद्देश्य होना चाहिए । जिस यज्ञ में विचारधाराऐं फैलाने का कार्य जितना अधिक हो उसे उतना ही सफल माना जाना चाहिये । हर सामूहिक यज्ञ के संयोजक को अपने मस्तिष्क में यह बात भली प्रकार जमा लेनी चाहिए और जितना समय और श्रम यज्ञ व्यवस्था में लगाया गया है उतना ही आगन्तुकों में उच्च प्रेरणाऐं भरने में भी लगाना चाहिये इस कार्य की उपेक्षा जरा भी न की जाय । जहाँ सम्भव हो वहाँ लाउडस्पीकर का प्रबन्ध अवश्य किया जाय ताकि सुनने वालों और वक्ताओं को सुविधा रहे ।

यज्ञ आयोजनों में अधिकाधिक लोगों से धन इकट्ठा किया जाय चाहे वह थोड़ा-थोड़ा ही क्यों न हो । थोड़े से लोगों से अधिक पैसा लेकर कार्य सम्पन्न करने की अपेक्षा अधिक लोगों से थोड़ा-थोड़ा पैसा लेना अच्छा है । कारण यह है कि पैसा इकट्ठा करने वाले को अपने कार्य की महत्ता उसे समझानी पड़ती है जो देता है । इसी प्रकार देने वाला भी उस कार्य के सम्बन्ध में अधिक दिलचस्पी लेता है तथा उसके प्रति अपना ममत्व जोड़ता है जिसके लिये उसने पैसा खर्च किया है । जनता को अपने कार्य का महत्व समझाने के लिये पर्चे, पोस्टर आदि छपाने और वितरण करने की बड़ी जरूरत है । जहाँ यज्ञ हो वहाँ के आस-पास के क्षेत्र में दीवारों पर गायत्री और यज्ञ की महत्ता बताने वाले सुन्दर अक्षरों में वाक्य भी लिखने चाहिये । कार्य की महत्ता समझने पर जनता अवश्य ही उस कार्य में सहयोग देती है ।

यज्ञों में धन-शक्ति के साथ ही जन शक्ति की भी बड़ी आवश्यकता रहती है । महिलाओं में धर्म भावना स्वभावतः बहुत अधिक होती है, यदि उन्हें यज्ञ के लाभ समझा दिये जाँय और घर वालों की रोक को ढीला करा दिया जाँय तो यज्ञ पर बैठने के लिये उनमें उत्साह फूट पड़ता है और यज्ञ कुण्डों पर उनकी पर्याप्त संख्या देखी जा सकती है । जहाँ महिलाऐं अधिक हों वहाँ उनके लिए कुछ कुण्ड अलग नियुक्त कर देने चाहिये । यज्ञशाला निर्माण तथा अन्यान्य कार्य व्यवस्थाओं के लिये भी लोगों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का सहयोग, समय एवं श्रम दान लेना चाहिये । समझदार लड़के बड़े उत्साह से सहयोग देते हैं । कुछ सज्जनों को यज्ञ के समय से कुछ दिन पूर्व ही पूरा समय यज्ञ व्यवस्था में लगाने को तैयार कर लेना चाहिये । बुद्धिमान सहयोगियों के बिना कोई कार्य भली प्रकार सफल नहीं हो पाता ।

सार्वजनिक धन की एक-एक पाई का हिसाब शीशे की तरह स्पष्ट रखना चाहिये । हिसाब रखने में थोड़ी भी उपेक्षा या असावधानी करने से अकारण बदनामी और कलंक उठाने का अवसर आ जाता है । पैसा या सामान उगाहने, जमा करने एवं खर्च करने के लिये कम से कम तीन आदमियों की कमेटी हो और प्रत्येक आय व्यय की जानकारी उस कमेटी के सभी सदस्यों को रहे । यज्ञ कार्य सम्पन्न होने के बाद जिन सदस्यों का पैसा था उनकी एक मीटिंग बुलाकर सारा हिसाब सुना देना चाहिये । हिसाब की पवित्रता रखना यज्ञों में अत्यन्त आवश्यक है । यों खर्च की परिस्थिति के अनुसार व्यवस्था बनती है पर साधारण २४ हजार का एक दिवसीय यज्ञ ढाई तीन सौ में और तीन दिवसीय १। लक्ष का यज्ञ सात आठ सौ रुपये में बड़ी अच्छी तरह हो सकता है । पुरुषार्थी व्यक्तियों के लिये इतनी व्यवस्था कर लेना कुछ अधिक कठिन नहीं है ।

नवरात्रियों में या विभिन्न पर्व उत्सवों पर ग्राम-ग्राम में नगर-नगर में यज्ञ होते रहने चाहिये । इसके लिए पंडाल बनाने की, सजावट की तथा यज्ञोपयोग की आवश्यक वस्तुएँ एक बार खरीद लानी चाहिये और उन्हें सुरक्षित रखना चाहिये ताकि बार-बार काम आती रहें । कई शाखा संगठन मिल कर इस प्रकार का एक संग्रह कर लिया जाय तो वस्तुऐं समय-समय पर इस क्षेत्र में होने वाले यज्ञों में काम आती रह सकती हैं और बार-बार का खर्च बच सकता है ।

यज्ञों के अन्त में दक्षिणा देने का नियम है । दक्षिणा देते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि लेने वाला इसका क्या उपयोग करेगा । जहाँ जितना उत्तम उपयोग होता है वहाँ उतनी ही दक्षिणा सफल मानी जाती है । गायत्री परिवारों का अखिल भारतीय संगठन तपोभूमि में है । यहाँ भेजा हुआ पैसा आश्रम के नित्य यज्ञ में तथा देशव्यापी गायत्री प्रचार में व्यय होता है, इसलिये प्रत्येक सामूहिक यज्ञ में तपोभूमि की आत्मा को ब्रह्मा या आचार्य मानकर सामर्थ्यानुसार दक्षिणा भेजनी चाहिए, जिससे संस्था का कार्यक्रम चलने में पैसे के अभाव से जो भारी कठिनाई रहती है, उसकी कुछ पूर्ति होती रहे ।

५ कुण्डों की यज्ञशाला निर्माण करने के लिये १६-१६ हाथ लम्बी चौड़ी यज्ञशाला चाहिए । ९ कुण्डों के लिये २० हाथ या २४ हाथ लम्बाई चौड़ाई की यज्ञशाला पर्याप्त है । जमीन से कुछ ऊँचा चबूतरा उठा कर यज्ञशाला बनाने में शोभा रहती है। १२ द्वार बनाने के लिये १२ बल्लियाँ लगानी चाहिये । ऊपर छाया का ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये जिसमें छाया भी रहे और धुँआ भी निकलता रहे ।

प्रतिगामी विचारधारा के लोग कहते देखे गये हैं कि यज्ञ पर केवल ब्राह्मण ही बैठें, स्त्रियाँ न बैठें, गायत्री मंत्र का उच्चारण न किया जाय, सुगन्धित पदार्थों की जगह केवल तिल, जौ, चावल से ही काम चला लिया जाय । यह चारों ही बातें अविवेकपूर्ण हैं । यज्ञ कुण्डों से निकलने वाली ऊष्मा एवं शक्ति का लाभ तथा दान दक्षिणा दोनों ही लाभ ब्राह्मणों को मिले यह अन्याय है । जिन्होंने इतनी श्रद्धा, तत्परता के साथ अपना खर्च करके यज्ञ कराया है उन लोगों को यज्ञ की आरोग्यकारी, सद्बुद्धि दायिनी तथा श्रेय साधक ऊष्मा से वंचित रखा जाय, इसमें कोई बुद्धिमानी नहीं है ।

स्त्रियों को पैर की जूती सामाजिक दर्जे में हीन, तिरस्कृत मानना, उनकी गणना पशुओं में करना और यह समझना कि उनके छूने से यज्ञ अपवित्र हो जायगा कोई विवेकपूर्ण बात नहीं है । यह भारतीय विचारधारा के सर्वथा प्रतिकूल-मध्य युग की कठोर एवं मानवता से रहित विचारधारा हैं । हम मातृ-शक्ति की प्रतिष्ठा, गौरव को समझने वाले लोग हैं । यहाँ नारी की पवित्रता और श्रेष्ठता नर की अपेक्षा भी अधिक मानी गई है । नारी को इतनी पतित मानना कि वह यज्ञ न करे या वेद मन्त्र न बोले कोई धार्मिक मनोवृत्ति नहीं हो सकती ।

मन्त्र उच्चारण के बिना वायु मण्डल में वे ध्वनि तरंगें कैसे उत्पन्न होंगी, जो असंख्यों मस्तिष्कों और अन्तःकरणों में प्रवेश करके सद्बुद्धि का संचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

करती हैं ? यज्ञाग्नि की विद्युत धारा का सम्मिश्रण होने से वेद मन्त्रों की शक्ति तरंगें सारे आकाश में उसी प्रकार फैलती हैं, जिस प्रकार रेडियो ट्रांसमीटर की बिजली को वक्ता की आवाज में जोड़कर आकाश में फेंक देते हैं और उसे सारे संसार में सुना जा सकता है । यदि चुपचाप बिना मंत्रोच्चार के हवन किया जाय तो उससे यह विचार एवं भाव फैलाने वाली मन्त्रों की शक्ति किस प्रकार प्रस्फुटित होगी ? चुपचाप तान्त्रिक मंत्रों का तो हवन करते हैं, पर वेद मंत्रों के ऊपर, गायत्री मंत्र के ऊपर ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं है ।

सुगन्धित एवं आरोग्य वर्धक औषधियाँ ही वायुशोधक एवं रोग निवारक होती हैं, उन्हें हटा कर केवल अन्न का, जौ, चावल आदि का हवन किया जाय तो वे आरोग्यवर्धक एवं वायुशोधक उद्देश्य कैसे पूरे होंगे ? थोड़ा हविष्यान्न (तिल, जौ, चावल) भी सामग्री में मिलाने का विधान है पर सबका सब केवल खाद्यान्न ही हवन करना, किफायत एवं सस्तेपन का कारण तो हो सकता है पर उससे वे लाभ कदापि प्राप्त नहीं हो सकते जो ओषधियों के हवन से पूरे होते हैं ।

चूँकि आम रिवाज यह है कि जो कुछ हमने देखा है वही सनातन धर्म है, वही उचित है । इसी आधार पर अब तक घोर बंधन में पड़ी हुई, पर्दे से जरा भी बाहर न निकलने वाली स्त्रियाँ, यज्ञों में बैठने जाती नहीं देखी गई तो वह हमारा न देखना धर्मशास्त्र बन गया । अन्य किसी वर्ण को गायत्री मन्त्र याद नहीं होता था, उन्हें बताया भी नहीं जाता था, दूसरे ब्राह्मणों की जीविका भी स्वयं हवन करने पर ही निर्भर थी, इसलिए अन्य वर्णों का हवन पर न बैठना भी सनातन धर्म हो गया । बहुत से ब्राह्मण भी ऐसे होते थे कि जो शुद्ध गायत्री मन्त्र या कोई और मन्त्र उच्चारण नहीं कर सकते उनसे भी वे यज्ञ की दक्षिणा का लाभ उठाना चाहते थे ऐसे लोगों की सुविधा के लिये यह बचत निकाली गई कि बिना मंत्रोच्चार के केवल स्वाहा कह कर हवन कर लिया जाय । अब वही बचत एक व्यवस्था के रूप में सामने रखी जाती है । जिजमान यज्ञ में जो खर्च करना चाहता है उसका बहुत थोड़ा अंश सस्ते जौ, चावल आदि होमने में खर्च हो और शेष सारा धन दक्षिणा देव पूजा, वस्त्र, यात्रा आदि के नाम पर पंडित जी को मिल जाय इसीलिये यह ढंग निकाला गया था । अब वही 'ढंग' एक नियम बताया जाता है । बुद्धि की कसौटी पर विवेक पूर्वक जरा भी इन बातों पर विचार किया जाय तो खरे खोटे की उचित अनुचित की परीक्षा सहज ही हो सकती है । हमें अविवेक पूर्ण रूढ़ियों का गुलाम नहीं विवेक का पुजारी बनना चाहिए ।

अपने आयोजित यज्ञों का संचालन ऐसे हाथों में न सोंपना चाहिए जो विवेक की उपेक्षा करके रूढ़ियों पर ही अड़ने की हठधर्मी करते हैं । कई स्थानों पर देखा गया है कि बड़े आयोजन करने की इच्छा करने वाले कार्यकर्ता उतना धन अपने बलबूते पर तो जुटाने का साहस नहीं करते, उस कार्य के लिए किसी धनी आदमी को आगे कर लेते हैं । वे धनी लोग विवेक को आधार न मान कर किसी बड़े तिलक वाले पंडित के प्रभाव में आ जाते हैं और सारी व्यवस्था को ही उलट देते हैं । वही उलटे विचारों का कार्य चल पड़ता है । गायत्री परिवार के उद्देश्य एक कोने पर उठाकर रख दिये जाते हैं । परिवार के सदस्यों को ऐसी स्थिति से सदा ही बचना चाहिए । बड़े न सही थोड़े-बहुत छोटे-सामूहिक हवन कर लिये जाँय पर सिद्धान्तों की हत्या न की जाय । यदि किन्हीं प्रभावशाली या धनी लोगों को धन संग्रह या व्यवस्था के लोभ से सम्मिलित किया जाय तो उपरोक्त चार तथ्यों के सम्बन्ध में भली प्रकार स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। आदर्श हीन आयोजन के लिए सहयोग लेना और देना दोनों ही व्यर्थ हैं ।

जहाँ बहुत बड़े-अधिक जनता को आमन्त्रित करने योग्य सार्वजनिक यज्ञों की व्यवस्था न हो सके, खर्च कम करना हो तो वहाँ छोटा सामूहिक यज्ञ करना चाहिए । इसे एक दो व्यक्ति ही मिलकर कर सकते हैं, अपने घर के आँगन में बांसों और रंगीन कपड़ों की सहायता से सुन्दर सुसज्जित मण्डप बना कर उसी में एक कुण्ड एक-एक फुट लम्बा-चौड़ा गहरा, तीन मेखलाओं सहित बना लेना चाहिए । कुण्ड में असुविधा हो तो एक हाथ लम्बी एक हाथ चौड़ी, चार अँगुल ऊँची वेदी बनाई जा सकती है । चार कोनों पर चार चौकियाँ रख कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कलश स्थापित करने चाहिए । बीच में प्रधान पूजा वेदी पर गायत्री माता का चित्र सजा लेना चाहिए ।

मुहल्ला पड़ौस के, नाते रिश्ते के, कुटुम्ब, परिचय के सभी नर-नारियों को आमन्त्रित किया जाय । जो आते जाँय वे हाथ-पैर धोकर लाइन से क्रमबद्ध बैठते जाँय । जो जप करना चाहें उन्हें मालाऐं और जो पाठ करना चाहे उन्हें गायत्री चालीसा या सहस्त्र नाम दे दिये जाँय । आगन्तुकों का जप और पाठ चालू रहे । हवन वेदी पर सब लोग बारी-बारी बैठते जाँय । जितने व्यक्तियों के आने की आशा हो, जितनी आहुतियाँ करनी हों, जितना समय लगाना हो, उस हिसाब से पारी बदलते रहें । पूर्णाहुति परिक्रमा आदि होने के बाद ही कीर्तन प्रवचन का कुछ कार्यक्रम भी अवश्य रख लिया जाय ।

ऐसे छोटे सामूहिक हवन प्रात:काल या सायंकाल आगन्तुकों की सुविधा के अनुसार रखे जा सकते हैं । प्रवचनों के बाद ही कीर्तन प्रवचन के लिए कम से कम दो घंटा समय रख लिया जाय । यदि कोई प्रभावशाली गायक या वक्ता हों और यह आशा हो कि पीछे भी लोग उत्साह पूर्वक इकट्ठे होंगे तो प्रात:काल हवन होने की दशा में शाम को प्रवचन रखे जा सकते हैं । आगन्तुकों को प्रसाद में साधारण-सी कोई मीठी चीज, फलों के टुकड़े, आदि खाने की वस्तु देने के अतिरिक्त कोई सस्ता सा गायत्री विषयक ज्ञानवर्धक साहित्य भी अवश्य देना चाहिए । अन्न दान से ज्ञान दान का पुण्य सौ गुना अधिक माना गया है । हवन के बाद कन्याओं का पूजन और भोजन भी कराया जाय ।

ऐसे सामूहिक हवन कुछ सौ रुपये के खर्च में ही बड़े आनन्द से हो जाते हैं । पारिवारिक सत्संग कभी इस उपासक के यहाँ, कभी उस उपासक के यहाँ होते रहने चाहिये । ऐसे यज्ञों में बहुत छोटा हवन भी किया जा सकता है जिसमें दो चार रुपया ही खर्च हों । प्रत्येक यज्ञ सामूहिक हो ताकि एक व्यक्ति पर अधिक बोझ न पड़े और अन्य लोग भी सामूहिकता एवं सहकारिता के महत्व को समझें । जहाँ खर्च की बहुत तंगी हो और अन्य कोई व्यवस्था न बन पड़े तो वहाँ एक सुसज्जित चौकी पर गायत्री माता का प्रतीक कलश और यज्ञ पिता का प्रतीक घृत दीप प्रतिष्ठापित करलें । उसकी रोली, अक्षत, पुष्प, जल आरती आदि से पूजा करके जप, पाठ, कीर्तन एवं प्रवचन का कार्यक्रम रखा जा सकता है। खर्च की कठिनाई पड़ने पर इस प्रकार के सस्ते आयोजन हो सकते हैं, पर उन्हें करना अवश्य चाहिये । यदि अपनी संस्कृति को पुन: जीवित एवम् जागृत करना हो तो सामूहिक यज्ञ कार्यक्रमों का पूरा-पूरा प्रसार होना चाहिए चाहे वे आयोजन खर्च और प्रदर्शन की दृष्टि से कितने ही छोटे क्यों न हों । एक बात हर संयोजक को ध्यान रखनी है कि केवल एक जाति को ही हवन करने देना, स्त्रियों का बहिष्कार करना, मंत्र न बोलना जैसे अविवेक पूर्ण प्रतिबन्ध लगने की बात पर जहाँ जोर दिया जाता हो, अपनी बात न चल पा रही हो तो उस आयोजन को करना ही व्यर्थ है । किसी प्रकार यज्ञ की लकीर पीट ली जाय, बड़ा हवन दिखाई पड़े, इसलिए किसी भी प्रकार कुछ कर लिया जाय-यह सोचना भूल है । गलत परम्परा डालने से, अविवेक के आगे झुक जाने से, तो उस कार्य को न करना ही उत्तम है ।

होली आदि त्यौहारों पर जहाँ सम्भव हो सामूहिक यज्ञ कराने का प्रयत्न करना चाहिये । विवाहों में पंडित लोग नाम मात्र की चिन्ह पूजा का जैसा हवन कराते हैं नामकरण, मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों में भी हवन की लकीर ही पिटती है। शरीर त्याग होने पर चिता में भी कपालक्रिया के समय थोड़ा-सा घी मात्र डाल देने की प्रथा है इन कार्यों में अधिक सुव्यवस्थित यज्ञ होने चाहिए । मृतक के तेरहेवें पर बहुत लड्डू पूड़ी बनवाने में कमी करके अंत्येष्टि संस्कार का यज्ञ, चिता पर विधिवत् किया जाय ऐसा प्रयत्न करना चाहिये । सामूहिक यज्ञों का विधाान 'गायत्री यज्ञ विधान' में छपा है । प्रत्येक संस्कार के यज्ञ के सरल विधान तपोभूमि द्वारा प्रकाशित 'संस्कार पद्धति' में छपे हैं । इन्हें कोई व्यक्ति एक दो महीने तपोभूमि में रहकर सीखले तो अपने क्षेत्र में इस प्रकार के यज्ञ आयोजनों द्वारा जनता की बड़ी सेवा कर सकता है।

रामायण पाठ, गीता पाठ, व्रत उद्यापन, कथा वार्ता कीर्तन आदि के आयोजन लोग करते रहते हैं। उनके साथ-साथ गायत्री यज्ञ की भी व्यवस्था जुड़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जाय ऐसा प्रयत्न करना चाहिए । अन्य लोगों के विविध धार्मिक आयोजनों में उत्साह पूर्वक भाग लेना चाहिए साथ ही यह भी प्रयत्न करना चाहिए कि कोई भी धर्म आयोजन गायत्री यज्ञ से रहित न रहने पाय ।

घर के सब लोगों का जन्म दिन मनाया जाय, जीवन का महत्व समझाया जाय और जिसका जन्म दिन हो वह आगे क्या करे यह सुझाव एवं आशीर्वाद देने, उपहारों से उसे प्रसन्न करने, जीवन का महत्व पहचानने के लिए प्रेरित करने का अवसर देने के लिये जन्म तिथियाँ अवश्य मनाई जाँय । इसी प्रकार परिवार के स्वर्गीय पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये उनके सद्गुणों से प्रेरणा लेने के लिये शिक्षात्मक श्राद्ध मनाये जाने चाहिये । इन दोनों आयोजनों में हवन को प्रधानता देकर सहज ही सुन्दर सा उत्सव आयोजन बन सकता है ।

भारतीय धर्म के आदि पिता यज्ञ को उसका स्वाभाविक सम्मान एवं महत्व प्राप्त होना ही चाहिए। आज अनेक दृष्टियों से सामूहिक गायत्री यज्ञों की बड़ी भारी आवश्यकता है । इसके लिये हमें शक्ति भर प्रयत्न करना चाहिये ।

★★★

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री यज्ञ-अभियान

गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता कहा गया है । यह दोनों ज्ञान और विज्ञान के अन्तरङ्ग और बहिरंग जीवन के समुत्नायक केन्द्र माने गये हैं । भारतीय तत्व-दर्शन, आचार शास्त्र, व दृष्टिकोण को समझने के लिये उपर्युक्त दोनों आधारों को गहराई तक समझना पड़ेगा ।

किसी समय यह देश तेतीस कोटि देवताओं का, दिव्य नागरिकों का देश था । यहाँ के निवासी जगद्गुरु-चक्रवर्ती, विज्ञानवेत्ता, एवं विभूतियों के अधिपति के रूप में विश्व के हर क्षेत्र का नेतृत्व करते थे । सर्वतोमुखी प्रगति का आधार क्या है, इसे जानने के लिए विश्व के कोने-कोने से जिज्ञासु यहाँ आते थे । वे अपने को, अपने क्षेत्र को प्रकाशवान बनाने के लिए जिस ज्ञान को समेट कर ले जाते थे, उसका सार-तत्व यदि दो शब्दों में कहना हो तो गायत्री और यज्ञ को ही कहा जा सकता है । जिस प्रकार ईंट और चूने से दीवार बनी होती है, उसी प्रकार भारतीय गरिमा के सम्बल यह गायत्री और यज्ञ ही हैं । इन दो सूत्रों की व्याख्या के लिये ही भारतीय अध्यात्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, का विशालकाय कलेवर खड़ा किया गया है ।

मोटी दृष्टि से देखने में गायत्री मंत्र चौबीस अक्षरों का संस्कृत भाषा में विनिर्मित छोटा-सा पद्य भर है, जिसे उपासना के समय जपा जाता है । मोटी दृष्टि से यज्ञ सुगन्धित वस्तुओं को अग्नि में यजन करके वायु मंडल में सुगन्धि फैलाने का एक छोटा सा कर्मकाण्ड मात्र प्रतीत होता है । यह इस रत्न-हार को रखने के लिए काम आने वाले डिब्बे का परिचय मात्र है । बहुमूल्य वस्तु इस आवरण के भीतर रहती है । चर्म-चक्षु उस डिब्बे के खोल को ही पूरी वस्तु मान लेते हैं और उसी की कीमत नगण्य जितनी आँकते हैं । यदि उन्हें वह आवरण खोलकर भीतर रखे बहुमूल्य आभूषणों को देखने का अवसर मिला होता, तो प्रतीत होता कि जितना समझा गया था, उसकी तुलना में वास्तविकता असंख्य गुनी महत्वपूर्ण है । गायत्री को जप-भजन का माध्यम माना अवश्य गया है, पर वह उतने तक ही सीमित नहीं है । यज्ञ से वायु शुद्धि भी होती है, पर उसे इतने छोटे दायरे तक सीमित कर देना यथार्थता के साथ अन्याय करना होगा । इन दोनों की महिमा असाधारण है । गायत्री का तत्व-ज्ञान समुद्र से अधिक गहरा है और यज्ञ का विस्तार क्षेत्र भूतल पर अवस्थिति पर्वतों से अधिक ऊँचा है । यही कारण है कि इन दोनों को भारतीय उपासना विज्ञान का, तत्व दर्शन का, आचार शास्त्र का अविच्छिन्न अंग माना गया । प्रत्येक धार्मिक क्रिया के साथ इन्हें जोड़ कर रखा गया है । ताकि कहीं मनुष्य में देवत्व का उदय कर सकने वाले, धरती पर स्वर्ग का वातावरण बना सकने वाले इन महान सूत्रों का कभी कोई विस्मरण न कर सकें ।

भारतीय धर्म, अध्यात्म एवं व्यवहार का मार्गदर्शन तत्वज्ञान ही वेद है, वेदों में ज्ञान भी भरा पड़ा है, विज्ञान भी । उसमें आत्मिक प्रगति और भौतिक उन्नति का समान पथ प्रदर्शन है ।

'वेद' किसी धर्म, सम्प्रदाय, जाति या देश के लिये नहीं, वरन् समस्त मानव जाति की सार्वभौम सम्पदा है । चूँकि यह अति प्राचीन हैं । विश्व-सभ्यता का उदय यहीं से हुआ, इसलिए इस भूमि पर उदय हुए दिव्य आलोक को भारतीय धर्म का नाम दे दिया गया । ऐवरेस्ट नामक व्यक्ति ने संसार की सबसे ऊँची गौरी शंकर चोटी का पता लगाया, इसलिए उस चोटी का नाम 'ऐवरेस्ट' रख दिया गया । ठीक इसी प्रकार विश्व-संस्कृति और विश्व-धर्म का उदय भारत में होने के कारण उनके साथ 'भारत' शब्द अनायास ही जुड़ गया, आवश्यकता समझा जाय तो इस नामकरण से 'भारत'शब्द हटा कर 'विश्व' शब्द भी जोड़ा जा सकता है । वस्तुतः भारतीय संस्कृति को, उसकी प्रतीक गायत्री को विश्व-संस्कृति ही समझा जाना चाहिए और भारतीय धर्म के उसके प्रतीक 'यज्ञ' को विश्व धर्म ही माना जाना चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पुराणों में कथा आती है, कि सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा ने गायत्री मन्त्र के आधार पर सौ वर्ष पर्यन्त ध्यान-तप किया । यह मन्त्र ज्ञान विभूति के रूप में उन्हें उपलब्ध हुआ । ज्ञान का ही दूसरा नाम वेद है । उपलब्ध दिव्य ज्ञान को उन्होंने सर्वसाधारण की सुविधा के लिये चार भागों में विभक्त करके धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साधन-रूप चार वेदों के रूप में विनिर्मित कर दिया, इस प्रकार गायत्री वेद जननी हुई । सृष्टि को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए पदार्थ की साधना की आवश्यकता पड़ी । ब्रह्मा जी ने दूसरी बार फिर तप किया । यह 'यज्ञ' रूप था । इससे विज्ञान से सम्बन्धित उपकरणों की उपलब्धि हुई । इस विभूति को सावित्री कहते हैं । पौराणिक उपाख्यान के आधार पर ब्रह्माजी की दो पत्नियाँ हैं । परमेश्वर की दो उत्क्रान्तियाँ हैं, एक गायत्री दूसरी सावित्री । एक ज्ञान विभूति, दूसरी विज्ञान सम्पदा । वेदों में इन्हीं दोनों का विवेचन, निरूपण और उपलब्धि-साधन का विस्तृत वर्णन है । एक ही ज्ञान धारा के दो प्रयोग हैं । गायत्री का तत्व दर्शन ही व्यवहार प्रकरण में पल्लवित होकर यज्ञ बना है । उपर्युक्त पौराणिक अलङ्कार में मनीषियों ने मानवी गरिमा और प्रगति के सार तत्व की ओर अंगुलि निर्देश किया है ।

वेद के गूढ़ रहस्यों को सर्वसाधारण को अधिक सुविधा और सरलता के साथ समझने के लिये शास्त्र बने । ब्राह्मण, आरण्यक, सूत्र, उपनिषद, पीछे अनेक धर्म स्मृतियाँ, पुराण आदि वेद तत्व का ही विवेचन हैं । रामायण, गीता, भागवत आदि प्रचलित धर्म-शास्त्रों को वेद का सरल विवेचन ही कहा जा सकता है । गायत्री को बीज मन्त्र कहा गया है । उसी की व्याख्या स्वरूप धर्म-शास्त्रों का विशालकाय वट वृक्ष अगणित प्रशाखाओं पत्र-पुष्पों, के रूप में लदा खड़ा है ।

जीवन यापन की भारतीय पद्धति को 'यज्ञ' कहा जा सकता है । आचार, व्यवहार, उपार्जन, उपयोग का समस्त क्रिया कलाप सूत्र रूप में समझना हो, तो 'यज्ञ' तत्व की गहराई में उतरना होगा, और भी आगे चलें तो भौतिक विज्ञान का अन्तराल यज्ञ रूप में समझना होगा । यन्त्रों द्वारा उत्पादित शक्ति मनुष्य की शारीरिक सामर्थ्य को कई गुना अधिक बढ़ा देती है । जितना कार्य शरीर कर सकता है, उससे कहीं ज्यादा काम, अपेक्षाकृत कम समय में यन्त्र कर देता है । इसी प्रकार मन्त्रों में वह सामर्थ्य रहती है, जो मानवी चेतना को, मानसिक शक्ति को अनेक गुना बढ़ा दे और वे कार्य सरल कर दें, जो सामान्य मनोबल द्वारा बहुत श्रम एवं बहुत समय में ही सफल होने सम्भव हैं । कहना न होगा कि मन्त्रों को सजग एवं समर्थ बनाने की शक्ति यज्ञ प्रक्रिया में सन्निहित रहती है । मशीनों के लिए जिस प्रकार तेल, कोयला, बिजली, भाप आदि ईंधनों की आवश्यकता पड़ती है, उसी प्रकार मन्त्रों का जप पाठ ही नहीं, सूक्ष्म शक्ति के उत्पादन अभिवर्द्धन में यज्ञ प्रक्रिया का प्रयोग भी अभीष्ट होता है । यज्ञ अपने आप में एक सर्वाङ्ग-पूर्ण विज्ञान है । भौतिक और आत्मिक सफलताओं का प्रचुरपथप्रशस्त करने की दिव्य क्षमता भरी पड़ी है । भारतीय तत्ववेत्ता, यज्ञ विज्ञान का प्रयोग आदि काल से ही करते चले आ रहे हैं ।

वेद, ज्ञान और विज्ञान के भण्डार हैं । प्रत्येक ऋचा दो सामर्थ्यों से भरी-पूरी है । वेद मन्त्रों का एक पथ है ज्ञान, दूसरा है विज्ञान । ज्ञान द्वारा नीति, धर्म, अध्यात्म, चिन्तन की उत्कृष्टता उपलब्ध की जाती है और विज्ञान द्वारा उस शक्ति का उपार्जन होता है, जिससे सर्वतोमुखी प्रगति का पथ प्रशस्त किया जा सके । आज भौतिक विज्ञान के अनेक आधार और उपकरण हैं, पर किसी समय केवल मानव शरीर और मस्तिष्क में, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर में ओत-प्रोत दिव्य ऊर्जा का उपयोग ही उन समस्त प्रयोजनों को पूरा कर देता था, जिन्हें आज अद्भुत यन्त्र उपकरण भी पूरा नहीं कर पाते । भारतीय विज्ञान का आधार था आत्मिक और भौतिकी ऊर्जाओं का समन्वय करके एक नई प्रचण्ड सामर्थ्य का उत्पन्न करना और उससे अभीष्ट उपलब्धियों को प्राप्त करना ।

वेद मन्त्रों में उच्चस्तरीय ज्ञान-ज्योति का आलोक सर्व विदित है । उनका विज्ञान परक प्रयोग साधना-तपश्चर्या से सम्बन्धित है । इस सन्दर्भ में यज्ञ विद्या उपयोग भी जुड़ा हुआ है । बौद्धिक कर्मकाण्डों में यज्ञीय प्रक्रिया अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऋषियों के आश्रमों में अखण्ड अग्नियाँ रहती थीं और धार्मिक नित्य कर्म में यज्ञ का अनिवार्य स्थान था । आत्मबल उपार्जन का साधनात्मक प्रयोग करने वाले साधक पंच अग्रियाँ, तीन अग्नियाँ घरों में स्थापित करते थे और सपत्नीक उनमें नित्य यजन करते थे । मन्त्रों का पाठ, विवेचन, जप, अनुष्ठान, ज्ञान पक्ष पूरा करते हैं । और अग्निहोत्र स्वाहाकार से उनकी भौतिक शक्ति का विस्तार होता है । दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि हम अतीत की, उन महान परम्पराओं को गवाँ बैठे, जिनके आधार पर कि यह देश किसी समय **'स्वर्गादपि गरीयसी'** परिस्थितियों में था । कहना न होगा कि गौरवशाली उत्कर्ष में सर्वतोमुखी आत्म-शक्ति ही झिलमिलाती थी, और उसे उपलब्ध करने में मन्त्रों का ज्ञान, विज्ञान परक चिन्तन और साधन समन्वित-पद्धति का पूरी तरह समावेश था । जप-ध्यान से लेकर अग्निहोत्र तक की प्रक्रिया इसी साधन-क्षेत्र में आती है ।

यज्ञ को सर्वसाधारण के दैनिक एवं सामयिक धर्म-कृत्यों में अनिवार्य रूप से जोड़ते हुए भारतीय संस्कृति का ढाँचा खड़ा किया गया है । संध्या का एक अंग ही अग्निहोत्र है । धर्म-शास्त्रों का निर्देश नित्य उपासना का सन्ध्या विधान पूरा करने के साथ-साथ अग्निहोत्र करने का भी है । अमावस्या पूर्णिमा को हर पन्द्रहवें दिन द्वादश, पौर्णमास्य यज्ञ करने का विधान है । जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त समय-समय पर हर व्यक्ति के जीवन में सम्पन्न किये जाते रहने वाले सोलह संस्कारों में हवन अनिवार्य है । प्रत्येक पर्व त्यौहार मनाने में यज्ञ आयोजन आवश्यक है । होली तो अधिक समारोह पूर्वक मनाया जाने वाला वार्षिक यज्ञ ही है । यज्ञीय भावना का व्यावहारिक स्वरूप है व्यवहार में आदर्शवादिता, विचारों में उत्कृष्टता, लक्ष्य की महानता, दिव्य मन:स्थिति, समाज परायण रीति-नीति । इस भाव चेतना को जाग्रत एवं प्रखर बनाए रखने के लिये, वैज्ञानिक उपचार है । यज्ञ ब्राह्मणत्व की उपलब्धि के लिये मनु आदि शास्त्रकारों ने कहा है-**महा-यज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मणीय क्रयते तनुः** । अर्थात् यज्ञ और महायज्ञों की सहायता से शरीरों को ब्राह्मण बनाया जाता है ।

यज्ञों का भौतिक सुविधा-संवर्धन के लिये भी उपयोग है । वायुमण्डल में प्राण प्रद तत्वों का अभिवर्धन, आरोग्य वृद्धि एवं रोग कृमियों से निवृत्ति, मनोविकारों का समाधान, जीवन-सम्पदा से भरी-पूरी वर्षा, सुसंतति की प्राप्ति, मनस्विता एवं तेजस्विता की उपलब्धि, विपत्तियों का निवारण, सौभाग्य-संवर्धन जैसे कितने ही भौतिक लाभ ऐसे हैं, जिन्हें प्राप्त कराने में यज्ञ-उपचार परोक्ष रूप में निश्चय पूर्वक सहायक होता है । आत्मिक और भौतिक, लौकिक और पारलौकिक, अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग जीवन में सुख-शान्ति की अभिवृद्धि के लिये यज्ञीय प्रक्रिया का सुनिश्चित उपयोगिता देखते हुये ही भारतीय धर्म ने उसे सर्वोपरि महत्वपूर्ण धर्म-कृत्य माना गया है । प्रथम वेद ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र- ' **'अग्नि मीले पुरोहितं''**..... यज्ञ की महत्ता, गरिमा, आवश्यकता और उपयोगिता बताने के लिये ही अवतरित हुआ है । भारतीय धर्मानुयायी को जीवन-यज्ञ की साधना के लिये जीना पड़ता है । उसे धर्म सूत्र यज्ञोपवीत'-यज्ञीय पवित्रता को जीवन का अविच्छिन्न अंग बनाकर व्रत बंध ग्रहण करना पड़ता है । उसके शरीर की अन्त्येष्टि यज्ञ पिता की गोदी में होती है । हिन्दुओं का मृतक संस्कार जिस चिता में जलाया जाता है, वह स्थूल रूप में यज्ञ 'विद्या' ही है ।

यज्ञ का अर्थ है, संयम, सेवा, पवित्रता, परमार्थ-परायणता, सामूहिकता; यह एक दर्शन, दृष्टिकोण एवं जीवन-यापन का तरीका है । अग्निहोत्र को एक प्रकार का पूर्वाभ्यास-रिहर्सल कह सकते हैं । उस कर्मकाण्ड के माध्यम से यह तथ्य हृदयंगम करने में सुविधा होती है, कि हमारा चिन्तन, कर्तृत्व और लक्ष्य क्या हो ?

अग्निहोत्र में अपनी मूल्यवान-आवश्यक, प्रिय एवं उपयोगी वस्तुऐं यजन की जाती हैं, ताकि वे वायु भूत होकर समस्त विश्व में वितरित हो सकें और व्यक्ति के उपार्जन अनुदान का लाभ सारा समाज उठा सके । यह सब श्रद्धा सद्भावना स्वेच्छा और प्रसन्नता पूर्वक किया जा रहा है, इसका प्रकटीकरण मन्त्रोच्चार के साथ 'स्वाहाकार' के साथ किया जाता है और विश्वास किया जाता है कि मन्त्र रूप सद्विचार और यजन रूप सत्य, जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने द्वारा किया जा रहा है, उसका लक्ष्य समस्त समाज को सुखी समुन्नत बनाना है, अपना समय, श्रम एवं धन इस कार्य में लग रहा है, उसकी क्षति वस्तुतः एक बीजारोपण है जिसका लाभ लोक-मङ्गल के रूप में समस्त विश्व को मिलेगा । यही है यज्ञीय तत्व-दर्शन, जिसे अग्निहोत्र के रूप में प्रतीक मानकर चलते हैं और इच्छा, विचारणा, क्रिया एवं सम्पदा का उपयोग इसी आधार पर किया जाना चाहिये । उत्पादन में पवित्रता और वितरण में समता का दृष्टिकोण रखकर हमारा समस्त क्रिया-कलाप गतिशील होना चाहिए । यदि यह लक्ष्य निर्धारित रहे, तो व्यक्ति का स्वरूप देवोपम और समाज में स्वर्गीय सतयुगी वातावरण बनने में तनिक भी सन्देह न रहे । यज्ञ का कर्मकाण्ड और तत्व दर्शन इसी प्रेरणा से ओत-प्रोत है ।

जो कुछ मिले उसे स्थूल से सूक्ष्म बनाकर व्यापक बना देना अग्नि का धर्म है । यह प्रक्रिया हमारे जीवन में भी चलनी चाहिए । अग्नि को कितना ही अधिक क्यों न दें, वह उसमें से अपने पास तनिक भी नहीं रखता, सब कुछ वितरण ही करता रहता है । अग्नि हमें याद दिलाती रहती है कि अन्त में केवल भस्मावशेष ही रह जाने वाला है । उसे मस्तष्क पर लगाया जाय । यज्ञ-भस्म को मस्तक पर लगाने का कृत्य इसी स्मरण के लिए है, कि हम मृत्यु को भूल न जाएँ, भौतिक उपलब्धियों पर अहङ्कार न करें । क्षणिक लिप्साओं के लिए अनर्थ न करें । यह याद रखें कि बालू की रेत से बना यह किला जादुई महल की तरह आज नहीं तो कल तिरोहित हो जाने वाला है । इसका सदुपयोग कर लेना ही दूरदर्शिता है । ऐसी ही अनेकों शिक्षाएँ-प्रेरणाएँ अग्निदेव द्वारा निरन्तर प्राप्त होती हैं ।

यज्ञ एक प्रकार से अग्नि-पूजा भी है । अग्नि की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं । उसे कितना ही दबाया, झुकाया जाय, उसकी लौ सदा ऊपर की ओर उठने का प्रयत्न कर रही होगी । मानव-जीवन के लिए उसकी शिक्षा है, कि लोभ के आकर्षण और भय की विभीषिका सामने रहते हुए भी आदर्शों से नीचे न गिरा जाय, अपना चिन्तन और कर्तृत्व ऊँचा ही रखा जाय । अग्नि के समान उष्णता युक्त क्रिया-कलाप अपनाया जाय । सदा कर्मठ, तत्पर, उत्साही, साहसी और निर्भीक रहा जाय ।

अग्नि में कुछ भी डाला जाय, वह अग्नि रूप ही हो जाता है । हमारे सम्पर्क में जो भी आवें उन्हें आत्मसात् करें, अपनी श्रेष्ठता से उन्हें भी सुसज्जित करें । समीपवर्तियों को दृढ़ता एवं तेजस्विता वितरित करें, वातावरण को ज्योतिर्मय बनावें । यज्ञ के याजकों को अग्नि की यह विशेषताएँ भी अपने आचरण में उतारनी चाहिये ।

गायत्री महाविद्या को ऋतम्भरा प्रज्ञा का नीर-क्षीर विवेक कर्त्री, विवेक बुद्धि का प्रतीक माना गया है । इसे दृष्टिकोण की परिष्कृत स्थिति एवं आत्माओं की, आकांक्षाओं की उत्कृष्टता भी कह सकते हैं । इस महामन्त्र के २४ अक्षरों में सूत्र रूप में मनः शास्त्र, नीति शास्त्र, समाज शास्त्र का, श्रेष्ठतम सार तत्व सन्निहित हैं । त्रिपदा गायत्री के तीन चरणों की उपनिषदीय वायाख्या **असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतंगमय** के रूप में प्रस्तुत हुई है । असत् की ओर नहीं, सत् की ओर, अंधकार की ओर नहीं, प्रकाश की और-मृत्यु की ओर नहीं अमृत की ओर चलने का निर्देश-संदेश गायत्री रूपी दिव्य वाणी के तारों से झंकृत हो रहा है । नैतिकता, मानवता, विवेकशीलता, उदारता, संयम-निष्ठा, एकता, कर्तव्य परायणता, समता, शुचिता, ममता की रागनियां इस महामन्त्र की स्वर-लहरी में निरन्तर झंकृत होती हैं । जो इस मानसरोवर में प्रवेश कर सका, वह हंस की तरह दिव्य होकर ही रहा है ।

गायत्री महामन्त्र का शब्दार्थ अति सरल है, साथ ही अति सारगर्भित भी । **भूः भुवः स्वः तीनों लोकों में अपने भीतर बाहर और दिग् दिगन्त में 'ॐ' (परमेश्वर) समाया हुआ है ।** इस विश्व-ब्रह्माण्ड में सर्वत्र प्रभु की ज्योति जगमगा रही है । वह सब में समाया हुआ है । यह आस्था गायत्री के शीर्ष **(ॐ भूर्भवः स्वः)** से व्यक्त होती है । इस विश्व को परमेश्वर का विराट् रूप माना जाय, उसे सुन्दर, समुन्नत, सुव्यवस्थित बनाने के लिए सद्भावनाओं और सद्प्रवृत्तियों के साथ तत्पर रहा जाय । सर्वत्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परमेश्वर को विद्यमान मानकर उनके न्याय दंड से डरा जाय और अपना अन्तरङ्ग-बहिरङ्ग जीवन उस तरह का रखा जाय, जैसा ईश्वर के राजकुमार, किसी महामानव का होना चाहिए । यह है सार-शिक्षा, शीर्ष भाग की ।

प्रथम चरण की शिक्षा भी ध्यान देने योग्य है । **'तत्'** (वह) ध्यान में रखा जाय । हर किसी की दृष्टि में आज के प्रत्यक्ष, तात्कालिक लाभ ही सब कुछ बने हुए हैं । 'वह' सबने भुला दिया है । भविष्य की, परोक्ष की, सूक्ष्म की ओर किसी का ध्यान नहीं । बहिरङ्ग की रंग-रेलियों में मस्त और व्यस्त अन्तरङ्ग की, आत्मा की, परलोक की, ईश्वर की बात सोचता ही नहीं और सुर-दुर्लभ मानव-जीवन की सार्थकता की बात एक प्रकार से विस्मृति के गर्त में ही धकेल चुका है । यह भूल समय रहते सुधारी जानी चाहिए ? समझा जाना चाहिए कि 'यह' ही सब कुछ नहीं है । दिव्य चेतना की पुकार है कि 'वह' अधिक मूल्यवान है, जो चर्म-चक्षुओं से तो नहीं दीखता, पर विवेक की बुद्धि बताती है, कि भविष्य को, अन्तरङ्ग को उज्ज्वल बनाना कम महत्व का नहीं है । यदि उसकी उपेक्षा की गई, तो अनन्त काल तक पश्चात्ताप करना ही शेष रह जायगा ।

ईश्वर के चार नाम ऐसे हैं, जिनमें सन्निहित गुणों को, संकेतों को अपनाये बिना तमसाछन्न जीवन में ज्योतिर्मय आलोक की झाँकी हो ही नहीं सकती । **सवितुः** (प्रकाशमान) **वरेण्यं** (वरण करने योग्य) **भर्गः** (भून डालने वाला तेजस्) **देवस्य** (दिव्य देव संज्ञक) यह चार ईश्वरीय गुण ऐसे हैं, जिन्हें यदि चिन्तन और कर्तृत्व में समाविष्ट कर लिया जाय, तो नर में नारायण की, पुरुष में पुरुषोत्तम की, आत्मा में परमात्मा की दिव्य ज्योति प्रदीप्त हो सकती है ।

हम दीप की तरह स्वयं जलकर दूसरों के लिए प्रकाशवान बनें । अपना जीवन-क्रम आदर्श और अनुकरणीय बनायें । ज्ञान और विवेक से अन्तः करण प्रकाशवान रखें । सविता देवता, सूर्य के समान निरन्तर कर्तव्य-निष्ठ रहें, यह प्रेरणा है- **'सवितुः'** शब्द की ।

वरेण्यं-समूह में से श्रेष्ठतम का चयन । हंस को तरह नीर-क्षीर विवेक, मोती ही चरने की नीति । परम्पराओं के घटाटोप में से केवल औचित्य की ही स्वीकृति । जन-संकुल द्वारा अपनाये जाने वाले उद्धत क्रिया-कलाप से अप्रभावित रहकर केवल उत्कृष्ट को ही अपनाने का साहस । गायत्री का वरेण्यं शब्द इन्हीं प्रेणाओं से भरा पूरा है ।

भर्ग-भूनना । अनौचित्य को, अवांछनीयता को, अनाचार को, अविवेक को, अन्याय को नष्ट करने की प्रवृत्ति का समर्थन । परमेश्वर का हर अवतार अधर्म के विनाश और धर्म की स्थापना के लिए हुआ । हर एक ने साधुता के परित्राण और दुष्कर्मों के विनाश के लिये प्रचण्ड संघर्ष किया और धर्मयुद्ध छेड़ा है । हर ईश्वरीय ज्योति के-आलोकित आत्मा के अवतरण का यही प्रयोजन हो सकता है । अपने व्यक्तिगत दोष दुर्गुण का, पारिवारिक अस्त-व्यस्तताओं का, सामाजिक अवांछनीयता का निराकरण किया ही जाना चाहिए और उसके लिये जोखिम उठाना हो, तो वह भी उठाया जाना चाहिए । असहयोग, विरोध, संघर्ष में से परिस्थिति के अनुसार जो भी कदम उठाया जा सके, अनीति-उन्मूलन के लिए उठाया ही जाना चाहिए ।

देवस्य-दिव्यता का जीवन-क्रम में समावेश । पवित्र, निर्मल, उदार-संयमी, स्नेहसिक्त अन्तःकरण वाली आत्माएँ देव कहलाती हैं । भूसुर पृथ्वी के देवता ऐसे ही महा-मानव कहलाते हैं, जिनमें निरन्तर देने की, सेवा की, परोपकार की, प्रेम-भरी सद्भावना सुरसरि की तरह उमड़ती रहती है । उन्हें देने में रस आता है, वे अपने ज्ञान का, व्यक्तित्व का, श्रम का, समय का, धन का उपयोग इस वसुधा को सुखी और समुन्नत बनाने में ही करते रहते हैं । लेने में निवृत्ति और देने में प्रवृत्ति, यही है महामना का सार, यही है मनुष्य की देवत्व में परिणति । गायत्री मन्त्र के प्रथम चरण में इन्हीं चार महान सूत्रों को अपनाने का संकेत है । ईश्वर के मानवोपयोगी श्रेष्ठतम चार गुणों से परमेश्वर को सम्बोधन किया गया है । **सवितुः, वरेण्यं, भर्ग, देवस्य** यह चार शब्द मात्र ईश्वर के उत्तम नाम ही नहीं हैं, वरन् वे निर्देश भी हैं, जो सच्चे ईश्वर भक्तों द्वारा अपनाये ही जाने चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

धीमहि-धारण करें । इस कान से सुनें उस कान निकालें, जानकारी भर बढ़ावें, वाक्-विलास और मनोविनोद के लिए, परोपदेश के लिए यदि धर्म- चर्चा का ऊहापोह होता रहे, तो उतने भर से किसी का कुछ बनने वाला नहीं है,धर्म और अध्यात्म का सृजन इसलिए हुआ है, कि उन्हें हृदयंगम किया जाय, आस्था में उतारा जाय और व्यावहारिक जीवन में कार्यान्वित किया जाय । गायत्री मन्त्र का **धीमहि'** शब्द आदर्शवाद के सिद्धान्तों को अन्तराल के गहन मर्मस्थल में इस प्रकार प्रतिष्ठापित करने का निर्देश देता है, कि वे निरन्तर कार्य रूप में परिणित होते रहें ।

गायत्री मन्त्र के अन्तिम चरण में अपनी निज की ही नहीं, समस्त समाज की यथार्थ प्रगति की कामना की गई है और परम सत्ता से प्रार्थना की गई है, कि सर्वतोमुखी प्रगति की आधारशिला सद्बुद्धि को हम सबके अन्तःकरण में प्रतिष्ठापित करें । ऋतम्भरा प्रज्ञा की शरण में हमारी अन्तः चेतना को नियोजित कर दें । वस्तुतः भगवान का सबसे बड़ा वरदान-अनुदान मनुष्य के लिए यही हो सकता है, कि उसे जीवन-लक्ष्य की दिशा में चल पड़ने में समर्थ आत्म बल मिले, पेट और प्रजनन के लिए मरने-खपने वाले वासना-तृष्णा के गुलाम नर-कीटकों से भिन्न प्रकार का देव-मार्ग अनुसरण कर सकने की साहसिकता ही मानव-जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है । उसी को प्राप्त करने के लिए उत्कृष्ट आकांक्षा, आतुरता एवं तत्परता की प्रार्थना की गई है । इससे बड़ी न कोई कामना हो सकती है और न इस दिशा में प्रगति से बढ़कर और सफलता संभव है ।

उपर्युक्त भावार्थ गायत्री मन्त्र का ऐसा है, जो जीवन के स्वरूप लक्ष्य, उपयोग और कर्तृत्व की दिशा-निर्धारण करने में पूरी तरह समर्थ है । इसके अतिरिक्त गायत्री-गीता, गायत्री-स्मृति,गायत्री-मंजरी, गायत्री-मन्त्रार्थ प्रभृति पुस्तकों में उन २४ अक्षरों के देश, काल, पात्र के अनुरूप, विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त किये जाने के लिये जो भाष्य किये हुए हैं, वे ऐसे हैं जिन्हें मिला कर एक विश्व-मानव की, एक समग्र धर्म-शास्त्र की, अध्यात्म संहिता की आवश्यकता पूरी हो जाती है । इन प्रेरणाओं और शिक्षाओं का यदि भली प्रकार अवगाहन किया जाय और उन्हें कार्य रूप में परिणित किया जाय, तो निस्सन्देह मनुष्य इसी जीवन में स्वर्ग और जीवन-मुक्ति का आनन्द-लाभ कर सकता है ।

गायत्री के ज्ञान की चर्चा ऊपर की जा चुकी है । इससे भी बढ़कर उसका विज्ञान-पक्ष है । महामन्त्र के इन २४ अक्षरों की विशेष विधि-विधान के साथ साधना की जाय, तो अन्तरङ्ग में प्रसुप्त पड़ी हुई उन शक्तियों का जागरण होता है, जिनकी प्रखरता सामान्य से मानव-प्राणी को असामान्य अद्भुत और असीम बना सकती है । कार्य-क्षमता में पशु-पक्षियों जितनी सामर्थ्य से भी पिछड़ा हुआ मनुष्य, सृष्टि का मुकुट-मणि इसी कारण बन सका है कि उसके भीतर दिव्य शक्तियों के समस्त बीज सूक्ष्म रूप में विद्यमान हैं । इन शक्ति-बीजों को अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित करने की आत्मविद्या से सम्बन्धित प्रक्रिया साधना कहलाती है । योगाभ्यास, तपश्चर्या पुरश्चरण-पद्धति, भक्ति-उपासना, ध्यान-धारणा आदि अनेक क्रियाकृत्य इसी साधना-प्रयोजन की पूर्ति के लिये बनाये गये हैं । गायत्री मन्त्र द्वारा यह प्रक्रिया सरलता पूर्वक सम्पन्न की जा सकती है ।

हमारे मुख से जो शब्द उच्चारित होते हैं, उनका उद्गम एवं प्रभाव शरीर के उन मर्मस्थलों तक होता है, जिन्हें उपत्यिका केन्द्र कहते हैं । शरीर शास्त्र के अनुरूप इन्हें हारमोन उत्पादक मर्मस्थल माना जाता है । सभी जानते हैं कि शरीर की संरचना, वृद्धि एवं परिपुष्टि में इन ग्रन्थियों का कितना अधिक महत्व है । गायत्री मन्त्र के शब्द जब मुख द्वारा उच्चारित किये जाते हैं, तब उनका प्रभाव इन केन्द्र-ग्रन्थियों पर पड़ता है और व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास का पथ प्रशस्त होता है । टाईप राईटर की कुंजियों को अंगुली से दबाने पर उनकी तीलियाँ उछलती हैं और कागज पर अभीष्ट अक्षर छप जाता है । ठीक इसी प्रकार गायत्री मन्त्र का प्रत्येक अक्षर जप-प्रक्रिया के साथ-साथ गुह्य मर्मस्थलों को जाग्रत करता रहता है । फलस्वरूप व्यक्तित्व में ऐसी विशेषताएँ उभरने लगती हैं, जिनके कारण अनेकों भौतिक एवं आत्मिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सफलताएँ प्राप्त कर सकना सरल बन जाय । यही गायत्री-उपासना द्वारा प्राप्त होने वाले अद्‌भुत लाभ परिणामों का मूलभूत कारण है ।

सितार के तारों को एक विशेष क्रम से बजाने पर उसका ध्वनि-प्रवाह विशिष्ट राग रागनियों के रूप में प्रस्फुटित होता है । गायत्री मन्त्र को भी एक प्रकार का सितार-वादन कह सकते हैं । काया में मेरुदण्ड एक प्रकार का दिव्य सितार है, उसमें इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना आदि सहस्रों नाड़ी-तन्तु नियोजित हैं । गायत्री मन्त्र का शब्द गुंफन इस प्रकार क्रमबद्ध रूप से हुआ है, कि उसके शब्दोच्चार सुव्यवस्थित शक्ति-प्रवाह उत्पन्न करें । इस लय झंकार से स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों की अविज्ञात विशेषताएँ सजग होती चली जाती हैं । वीणा की ध्वनि से सर्प, मृग आदि जीवों का अन्तःकरण भाव-विभोर हो उठता है । गायत्री का मन्त्रोच्चारण काय कलेवर के अन्तरंग तन्तुओं को झंकृत करके ऐसा मधुर ध्वनि-कम्पन उत्पन्न करता है, जिससे साधारण मनुष्य की असाधारण गरिमा के जाग्रत होने की विधि-व्यवस्था अनायास ही चल पड़े । कहना न होगा कि जीवन की प्रत्येक भली-बुरी उपलब्धि का कारण मनुष्य की आन्तरिक स्थिति ही होती है । जब अन्तरंग उभरे तो कोई कारण नहीं कि अनेक सिद्धियों, विभूतियों, सफलता और समृद्धियों को प्राप्त कर सकना सरल न हो सके।

समझा जाता है, कि अदृश्य लोकों के निवासी कोई दिव्य सत्ताधारी देवी देवता मन्त्र-साधना से प्रसन्न होकर वरदान प्रदान करते हैं, पर सचाई यह है कि अपनी ही अविज्ञात एवं प्रसुप्त स्थिति में पड़ी हुई दिव्य शक्तियाँ देवी-देवता हैं और यदि अपने आचार-विचार को अनुकूल बना लिया जाय, साधनात्मक अध्यात्म व्यायामों द्वारा सजग कर लिया जाय, तो मनुष्य देवोपम क्षमताएँ प्राप्त कर सकता है । गायत्री -उपासना द्वारा यही उद्देश्य पूरा होता है । फलतः मनुष्य अपने समीपवर्ती लोकों की अनेक भौतिक-आत्मिक कठिनाइयों का निराकरण कर सकने में समर्थ हो जाता है, अवरुद्ध प्रगति पथ को खोल सकना भी उसके लिए दुस्तर नहीं रहता । साधनात्मक पुरुषार्थ में उपलब्ध विभूतियों से न केवल आत्मोन्नति का पथ प्रशस्त होता है, वरन् दूसरे कष्ट-पीड़ितों को राहत देने, गिरों को उठाने और मंदगामियों को द्रुत गति सम्पन्न बना सकना भी सम्भव हो जाता है । तपस्वियों के आशीर्वाद वरदान से विपत्ति निवारण एवं सौभाग्य संवर्धन की जो अगणित प्राचीन-अर्वाचीन घटनाएँ देखने-सुनने को मिलती हैं, उनका यही कारण है । धन-सम्पदा की तरह कोई उदार व्यक्ति अपनी धन सम्पदा से दूसरों को लाभान्वित कर सके, यह संभव भी है और सरल भी । गायत्री मन्त्र की उपासना इस प्रकार की उपलब्धियों का द्वार प्रत्येक साधक के लिये खोलती है ।

गायत्री की उच्चस्तरीय साधना, षटचक्रों का जागरण और पंचकोषों का अनावरण करती है । आत्म-विद्या के ज्ञाता जानते हैं, कि जिस प्रकार स्थूल शरीर में मस्तिष्क, हृदय, फुप्फुस, आमाशय, यकृत, आँतें गुर्दे, आदि अवयव मुख्य हैं, उन्हीं के कारण जीवन-रथ आगे चलता है । उसी प्रकार सूक्ष्म शरीर में (१) मूलाधार चक्र (२) स्वाधिष्ठान चक्र (३) मणि चक्र (४) अनाहत चक्र (५) विशुद्धारक तथा (६) आज्ञा चक्र, यह छः शक्ति-चक्र, प्रचण्ड बिजली घर जैसी क्षमता अपने भीतर दबाये बैठे हैं । उन्हें बल देने वाला एक अत्यन्त सामर्थ्यवान कुण्डलिनी चक्र है । मस्तिष्क के ब्रह्म रन्ध्र में सहस्र दल कमल है । इन सब शक्ति केन्द्रों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं । यदि इन बन्द पड़े बिजली घरों को संचालित किया जा सके, तो साधक में अलौकिक विशेषताएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जिन्हें ऋद्धि-सिद्धियों के नाम से पुकारते हैं ।

सूक्ष्म शरीर के भीतर एक और आवरण है, जिसे कारण-शरीर कहते हैं, इसके पाँच दिव्य रत्न-भंडागार हैं । उन्हें पाँच कोष के नामों से जाना जाता है । (१) अन्नमय कोष (२) प्राणमय कोष (३) मनोमय कोष (४) विज्ञानमय कोष (५) आनन्दमय कोष । इन कोषों को खोल सकने की चाबी जिसके पास हो, उसे अपने भीतर ईश्वरीय उत्तराधिकार में मिले अजस्र वैभव का लाभ मिल सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बार-बार लगातार एक क्रिया-कलाप अपने से एक घर्षणात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है । उसे भौतिक विज्ञान के छात्र भली प्रकार जानते हैं । अध्यात्म विज्ञान में एक ही शब्दावली का एक ही चिन्तन और एक ही लक्ष्य के साथ-एक ही क्रम से उच्चारण करने की जप-प्रक्रिया भी ऐसा ही अद्‌भुत ब्रह्म तेजस से आत्म बल उत्पन्न करती है । गायत्री मन्त्र के जाप-अनुष्ठान का साधना-शास्त्रों ने एक स्वर से माहात्म्य गाया है और गायत्री को भूलोक की कामधेनु क्हा है । कल्प-वृक्ष जैसी मनोकामना पूर्ण करने वाली, पारस के समान जीवन का काया कल्प करने वाली तथा अमृत के समान अमरता का आत्म-ज्ञान प्रदान करने वाली भी कही गई है ।

यह महामन्त्र प्रत्येक भारतीय धर्मानुयायी का एक मात्र एवं अनिवार्य उपास्य मन्त्र है । इसी से उसे गुरु-मन्त्र कहते हैं । यज्ञोपवीत संस्कार के साथ दूसरा जन्म आरम्भ होता है और उपनयन में प्राण-प्रतिष्ठा गायत्री मन्त्र की ही है । इस अवसर पर उपास्य आधार हर हिन्दू को गायत्री ही स्वीकार करनी होती है । भारतीय धर्म के दो प्रतीक हैं, एक शिखा दूसरा यज्ञोपवीत । यह दोनों गायत्री-यज्ञ के प्रतीक संबल हैं । शिखा के स्वरूप में प्रत्येक हिन्दू के सिर पर गायत्री की ध्वजा फहराती है और यज्ञीय जीवन का व्रत-बन्ध कंधे पर जनेऊ के रूप में धारण करके रहना होता है । उपनयन में नौ धागे गायत्री के नौ शब्द हैं । तीन व्याहृतियाँ (भूः भुवः स्वः) तीन गाठें हैं और ॐ जनेऊ में लगी हुई बड़ी ब्रह्म-ग्रन्थि है । इस प्रकार गायत्री के एक-एक शब्द का प्रतीक त्रिपदा के तीन चरण तीन लड़ों से यज्ञोपवीत का स्वरूप विनिर्मित किया गया है । अन्यान्य देव-मन्त्रों, सम्प्रदाय- मन्त्रों के बारे में कहा गया है कि जिसे गायत्री न आती होगी, जो नित्य कर्म में गायत्री उपासना न करता होगा, उसके अन्य मन्त्र निष्फल चले जायेंगे । इस वचन का मन्तव्य यह है, कि कोई अन्य किसी मन्त्र की साधना भले ही करे पर गायत्री की उपेक्षा करके नहीं । संध्या वन्दन भारतीय उपासना की प्रामाणिक पद्धति है और स्पष्ट है कि संध्या-विधान का प्राण, गायत्री मन्त्र ही है । गायत्री उपासना की उपेक्षा करने वालों की धर्म शास्त्रों में कटु भर्त्सना की गई है ।

यह सब इसलिए किया गया है, कि प्रत्येक भारतीय धर्मानुयायी को आध्यात्मिक संपदा से लाभान्वित होने का अवसर अनिवार्य रूप से मिलता रहे । ज्ञान और विज्ञान की बहिरङ्ग और अन्तरङ्ग विभूतियों की उपलब्धि के लिये गायत्री महामन्त्र कितना उपयोगी है । इसका प्रयोग-परीक्षण सहस्रों वर्षों तक करने के उपरान्त ही ऋषियों ने उसे इतना उच्च स्तरीय सम्मान प्रदान किया है । तत्व दर्शन की दृष्टि से उसे नारीत्व की गरिमा, मानवता की अवस्था, आत्मा की महिमा, सत्कर्म की महत्ता के रूप में प्रतिपादित किया गया है । इतिहास-पुराणों से पता चलता है, कि भगवान् के समस्त अवतारों से लेकर ऋषियों, मनीषियों, साधु-ब्राह्मणों का एक मात्र उपास्य गायत्री मन्त्र ही रहा है । वही सार्वजनीन एवं सार्वभौम भी है । हर देश, धर्म, जाति, लिंग, आयु का व्यक्ति निर्बाध रूप से इसकी उपासना कर सकता है ।

एकता की दृष्टि से भाषा, वेष, भाव की एकता अभीष्ट होती है । हिन्दू धर्म में इन दिनों वर्ण-भेद का साम्प्रदायिक बिखराव बेहिसाब आया है । एकता के अभाव में ही देश को शताब्दियों तक पराधीनता के पाश में जकड़ा रहना पड़ा । राष्ट्रीय निर्माण के लिए सर्वतोमुखी एकता आवश्यक है । उसमें भावनात्मक-धार्मिक एकता का प्रयोजन तो गायत्री मन्त्र को उपास्य स्वीकार कर लेने से ही पूरा हो जाता है । मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, पारसी आदि विश्व के सभी प्रधान धर्मों का एक-एक निर्धारित उपासना-मन्त्र है । उस आधार पर उनकी सांस्कृतिक एकता को बल मिलता है । हिन्दू धर्म में पिछले दिनों जो धार्मिक अराजकता की बाढ़ आई, उसमें अगणित सम्प्रदाय, मत-मतान्तर बरसाती मेंढ़क की तरह उग पड़े और हर एक ने अपने-अपने अलग मन्त्र गढ़ लिये । और एक वैदिक धर्म को सत्रह सौ टुकड़ों में बाँट डाला । इस अराजकता का अन्त होना चाहिए ; इसका आरम्भ उपास्य की एकता से आरंभ किया जाय । इसलिये आवश्यक हैं कि प्रत्येक भारतीय मूल के धर्मानुयायियों को गायत्री मन्त्र को ही उपासना को आधार बनाना चाहिए । गम्भीरतापूर्वक देखा जाय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो उसमें विश्व का एक मात्र उपासना बन सकने की भी विशेषताएँ विद्यमान हैं । जब कभी एक विश्व-धर्म बनेगा और उस सन्दर्भ में जब भी किसी मन्त्र की खोज की जायेगी, तो निस्सन्देह तब गायत्री से बढ़ कर आधार प्राप्त न किया जा सकेगा ।

गायत्री मन्त्र की उपासना, प्रारम्भिक स्थिति में अति सरल है । स्नानादि से शुद्ध होकर प्रातःकाल पवित्र स्थान पर आसन लगाकर जलपात्र पास में रखें । सम्भव हो, तो अगरबत्ती या दिया जला लें और गायत्री मन्त्र का अथवा गायत्री माता का चित्र रखकर उसका चन्दन अथवा पुष्प से पूजन वंदन करें । तीन बार इसी मन्त्र से आचमन करें; मुख, नाक, नेत्र, भुजा, जाँघों का गायत्री मन्त्र के साथ जल-स्पर्श करें । इसी मन्त्र के मानसिक उच्चारण के साथ तीन बार गहरी साँस लें और छोड़ें । शिखा- स्थान पर जल-स्पर्श करें । उसके उपरान्त गायत्री मन्त्र का जप आरम्भ कर दिया जाय । पन्द्रह मिनट इसके लिये कम से कम नियत रहें । माला हो तो तीन माला अन्यथा घड़ी से भी समय का निर्धारण हो सकता है । शब्दोच्चारण ऐसा हो, जिसे पास में बैठा व्यक्ति सुन न सके, किन्तु होठ, कंठ और जीभ तीनों ही चलते रहें । जप के समय ध्यान करना चाहिए कि परमात्मा का सूर्य जैसा प्रकाश सामने उपस्थित है और उसकी किरणें शरीर में अंग प्रत्यंग में प्रवेश करती हुई आरोग्य प्रदान कर रही हैं । मस्तिष्क में प्रवेश करके सद्ज्ञान को प्रकाशित कर रही है और अन्तःकरण में घुसकर सद्भावनाएँ आलोकित कर रही हैं । अन्तरंग और बहिरंग का कण-कण, सत्-चित् और आनन्द से ज्योतिर्मय हो रहा है । जप और ध्यान की समन्वित प्रक्रिया पूरी होने पर समीप रखा हुआ जलपात्र सूर्य भगवान के सम्मुख चढ़ा देना चाहिए । रास्ता चलते, चारपाई पर सोते हुए, खाली समय में भी जप किया जा सकता है, पर ऐसी हालत में मुँह बन्द रख कर मानसिक जप ही करना चाहिए ।

यह सरलतम साधनाक्रम है, जिसे कोई भी बिना किसी हिचक और झिझक के अपना सकता है और लाभान्वित हो सकता है । यह उपासना ऐसी है कि विधि-विधान या उच्चारण में किसी प्रकार की त्रुटि रह जाय, तो भी उसमें कुछ दुष्परिणाम की तनिक भी आशंका नहीं है । इसके आगे की अधिक कठोर और अधिकतम तितिक्षा-युक्त योग साधनाएँ और तपश्चर्याएँ चलती हैं । उनके परिणाम भी उसी स्तर के होते हैं । इन विधि-विधानों का उल्लेख 'गायत्री महा विज्ञान' ग्रन्थ के तीनों खण्डों में विस्तारपूर्वक हो चुका है । विशिष्ट जिज्ञासु उन ग्रन्थों के आधार पर अपनी जिज्ञासा का समाधान कर सकते हैं । साधारणतः इतना ही जानना पर्याप्त है, कि गायत्री मन्त्र का अर्थ-चिन्तन अन्तःचेतना को सद्ज्ञान से ओत प्रोत करता है और इसकी जप-तप परक साधना में सिद्धियों और विभूतियों की सम्भावना विनिर्मित होती है । आन्तरिक अन्धकार, बाह्य जीवन का अभाव-अवरोध निरस्त करने में यह महामन्त्र अति सुखद परिणाम उत्पन्न करता है । विश्वास के लिये परीक्षा के रूप में कोई भी कुछ दिन इसका प्रयोग करके देख सकता है । इस सन्दर्भ में प्रयुक्त किया गया श्रम और मनोयोग कभी भी निष्फल जाता नहीं देखा गया ।

गायत्री की विशिष्ट उपासना करके प्राचीन काल में ऋषियों, मनीषियों, ब्रह्मवेत्ताओं, महामानवों ने कैसी अनुभूतियाँ प्राप्त कीं, इसके अगणित कथा-प्रकरण इतिहास-पुराणों में भरे पड़े हैं । सफल अध्यात्म साधकों में से पिछले दिनों में ऐसे अनेक व्यक्ति हुए हैं, जिनकी अलौकिकताएँ प्रमाणित करने वाले अभी भी अनेक साक्षी जीवित हैं । इन दिनों भी ऐसे ज्ञात और अविज्ञात गायत्री-उपासक मौजूद हैं, जिनकी विशेषताएँ अविश्वासियों में विश्वास और नास्तिकों में आस्तिकता उत्पन्न करती हैं । गायत्री तपोभूमि के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्री राम शर्मा, 'आचार्य' की गणना ऐसे ही लोगों में की जाती है । उनका सर्वतोमुखी अगाध ज्ञान भण्डार, तेजस्वी व्यक्तित्व, उज्जवलतम आदर्शचरित्र, बालकों जैसा निश्छल एवं मनोरम स्वभाव, हृदयस्पर्शी व्यक्तित्व, मर्मभेदी लेखनी, विश्व के भावनात्मक नव निर्माण के लिए सुसंचालित युग निर्माण अभियान, असंख्य व्यक्तियों को उभारने-उछालने की शक्ति, आपत्ति-ग्रस्तों को संकट से उबारते रहने का अजस्र अनुदान, भारतीय संस्कृति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का हृदयग्राही रूप से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास, भारतीय धर्म-शास्त्रों का आदि से अन्त तक सरल भाष्य, संपर्क के व्यक्तियों को विदित उनकी अतिमानवी विशेषताएँ देखकर कोई भी गायत्री-उपासना के सत्परिणाम की प्रामाणिकता स्वीकार करने को विवश हो सकता है । गायत्री-महापुरश्चरणों का उनकी पत्नी माता भगवती देवी की साधना-प्रक्रिया देखकर अभी भी उस युग का आभास प्राप्त किया जा सकता है, जिसमें साधना और सिद्धि की गरिमा सदैव असंदिग्ध रही है । इन दिनों ऋषि-तुल्य आचार्य जी अधिकतर गंगोत्री क्षेत्र में अपनी तप-साधना में संलग्न रहते हैं और यदा-कदा अपनी पत्नी, माता भगवती देवी के पास शान्ति कुंज, सप्त सरोवर हरिद्वार में विशेष प्रयोजन के लिए आते रहते हैं ।

गायत्री-यज्ञ-अभियान का प्रत्यक्ष प्रयोजन है, उत्कृष्ट चिन्तन एवं आदर्श कर्तत्व की विद्या को मानस में उतारना और सतयुगी वातावरण विनिर्मित करना । महामन्त्र के अक्षरों में सन्निहित शिक्षाओं और अग्निहोत्रीय कर्मकाण्ड में समन्वित प्रेरणाओं की व्याख्या करके श्रेष्ठतम पद्धति के साथ लोक-शिक्षण दिया जा सकता है । कहना न होगा कि समस्त विपत्तियाँ-विभीषिकाएँ, मात्र दुर्बुद्धि-दुष्प्रवृत्ति की उपज होती हैं । आज का लोक-समाज निकृष्टताओं से भर गया है, फलस्वरूप अगणित उलझनें और समस्याएँ सामने आ खड़ी हुई हैं । यदि सर्वनाश की ओर अग्रसर सामूहिक आत्म हत्या को समुद्यत, जन-समाज को बचाना है, तो भावनात्मक नव निर्माण के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं । अन्धकार में भटकने से विरत होकर प्रकाश की ओर चलने के लिए जो उपाय तत्काल किया जाना चाहिये, उसकी समग्र शिक्षा, गायत्री और यज्ञ माध्यमों को सामने रखकर जितनी अच्छी तरह की जा सकती है, उतनी और किसी तरह नहीं ।

इसके अतिरिक्त एक और भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और सार-गर्भित तथ्य यह है, कि इन महा तत्वों की साधनात्मक-कर्म काण्ड-परक प्रक्रिया सूक्ष्म जगत में ऐसी अद्‌भुत हलचल उत्पन्न करने में समर्थ है, जिससे अदृश्य वातावरण में भारी हेर-फेर होकर समाधान-कारक परिस्थितियाँ उत्पन्न हों । यज्ञ युक्त गायत्री का मन्त्रोच्चार अपनी रेडियो धर्मी किरण अदृश्य जगत में उत्पन्न करते हैं और उनसे न केवल मानवी मस्तिष्क, वरन् वातावरण भी परिष्कृत होता है । यह ऐसी उपलब्धि है, जिससे विश्व-शान्ति की सम्भावनाओं में महान योगदान मिल सकता है । आज की परिस्थितियाँ प्रचारात्मक, विनाशात्मक एवं संघर्षात्मक सुधार-प्रक्रिया के साथ-साथ और अध्यात्म-विज्ञान सम्मत अदृश्य शोधन का उपचार भी आवश्यक है । गायत्री-यज्ञों का अभियान दोनों प्रयोजनों को अपने ढंग से बड़ी खूबी के साथ पूरा करता है । कहना न होगा कि यदि चेतनात्मक वातावरण बदला जा सके, तो परिस्थिति में आशा-जनक परिवर्तन हो सकता है । उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएँ साकार हो सकती हैं ।

युग निर्माण योजना द्वारा संचालित गायत्री अभियान में व्यष्टि और समष्टि का उभय पक्षीय उत्कृष्ट उद्देश्य जुड़ा है । गायत्री मन्त्र व्यक्तिगत उत्कर्ष की और यज्ञ सामाजिक उन्नति की संभावनाएँ प्रस्तुत करता है । जिस प्रकार राष्ट्रीय ध्वज और भारत माता के भावनात्मक प्रतीकों से हमारी देश-भक्ति को बल मिलता है, उसी प्रकार गायत्री और यज्ञ आदर्शवादी उत्कृष्टता को अग्रगामी बनाते हैं । इन दूरदर्शितापूर्ण सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए इन दोनों महान आधारों को व्यक्तिगत रूप से नित्य कर्म में सम्मिलित किया गया है और सामूहिक आयोजनों के रूप में षोडश संस्कारों का त्यौहारों एवं विशिष्ट अवसरों पर विशाल आयोजन के रूप में उन्हें प्रयुक्त करने की धर्म-परम्परा स्थापित की गयी है ।

विश्व-व्यवस्था की दृष्टि से राज तन्त्र और धर्म-तन्त्र की ही प्रधानता है । भौतिक जगत पर राजतन्त्र का नियन्त्रण रहता है और मानवी चेतना को धर्म द्वारा व्यवस्थित किया जाता है । प्राचीन काल में जब राजतन्त्र में विकृतियां आती थीं, तब राजसूय यज्ञों के नाम से विशालकाय राजनीतिक नेता सम्मिलित होते थे और सामाजिक समस्याओं का समाधान करके राजसत्ता को निर्दोष बनाया जाता था । राजसूय यज्ञों में अश्वमेध-पद्धति की प्रधानता थी ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म-तन्त्र में विकृतियाँ आने पर वैसे ही विशालकाय बाजपेय यज्ञ सम्मेलन होते थे, जिनमें धर्म वेत्ता इकट्ठे होकर तत्कालीन धार्मिक परिस्थितियों को सँभालते थे । बाजपेय यज्ञों की एक उत्कृष्ट पद्धति गायत्री-यज्ञों को एक जन-आन्दोलन के रूप में चलाया जा रहा है । इसका उद्देश्य प्रगीतशील धर्मतन्त्र को पुनर्जवित करना और उसके आधार पर व्यक्ति और समाज का भावनात्मक एवं भौतिक स्तर ऊँचा करना है । युग निर्माण योजना इसी कार्य-पद्धति का नाम है । धर्म-तन्त्र के माध्यम से भावनात्मक नव निर्माण का उद्देश्य लेकर वह आगे बढ़ रही है । गायत्री यज्ञों के धर्मानुष्ठानों के साथ-साथ युग निर्माण सम्मेलन अनिवार्य रूप से जुड़े रहने का क्रिया-कलाप इसी दृष्टि से है ।

युग निर्माण-परिवार द्वारा संचालित गायत्री-यज्ञों के याज्ञिकों को अपने शारीरिक, मानसिक, सामाजिक दोष-दुर्गुणों में से कम से कम एक का त्याग करके और कम से कम एक नई सत्प्रवृत्ति अपनाकर यज्ञीय जीवन जीने का शुभारम्भ करना पड़ता है । इस शृंखला में आबद्ध होकर अब तक लाखों-करोड़ों व्यक्ति भावनात्मक नव निर्माण की ओर उत्साहवर्धक कदम उठा चुके हैं । प्रत्येक यज्ञ आयोजन की स्मृति में पुस्तकालय, वाचनालय, विद्यालय, रात्रि पाठशालाएँ, महिला पाठशालाएँ, व्यायामशालाएँ, शिशु-कल्याण केन्द्र, शाक वाटिकाएँ, फल-उद्यान, सुरक्षा दल, श्रमदान, कुरीति-निवारण अभियान, स्वच्छता-मण्डली, सृजनसेना शिक्षण, कुटीर-उद्योग जैसे अभिनव रचनात्मक प्रयोग प्रारम्भ किये जाते रहे हैं । नशा, जुआ, आलस्य, छल, अनाचार जैसी दुष्प्रवृत्तियों के त्याग के लिए हर युग निर्माण सम्मेलन ने उभार- उत्साह पैदा किया है । दहेज, मृत्युभोज, पर्दा प्रथा, भिक्षा-वृत्ति, जाति-पाँति के आधार पर नीच-ऊँच, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, पशुबलि जैसी कुरीतियों के उन्मूलन के लिये मात्र विरोध ही नहीं, स्थान-स्थान पर प्रचण्ड संघर्ष भी खड़े किये गये हैं, और उस प्रयास में आशातीत सफलता भी मिली है ।

यह सारे कार्यक्रम मात्र प्रदर्शनात्मक नहीं, वरन् ठोस आधार पर अवस्थित हैं । उन्हें किसी दबाव से थोपा नहीं गया और न किसी यश नामवरी जैसे छोटे स्वार्थ-पूर्ण दृष्टिकोण से वे किये जा रहे हैं । उनके पीछे उत्कृष्ट मानवीय दृष्टिकोण सन्निहित है । अन्तःकरण की प्रबल प्रेरणा के कारण उन्हें चालू किया जाता है । जो प्रखर विचारों की गहन प्रतिक्रिया स्वरूप जाग पड़ते हैं । किसी पर उपकार करने की दृष्टि से वह नहीं किये जाते, पर अपने अनिवार्य नागरिक कर्त्तव्य, सामाजिक ऋण की पूर्ति की शुद्ध भावना से उन्हें किया जाता है । इसलिए हर व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत साधना के रूप में उन्हें लेकर चलता है । किसी की आशा-निराशा, सफलता-असफलता से अप्रभावित अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने का एक अदम्य उत्साह सबमें रहता है ।

गायत्री-यज्ञों के साथ जुड़े युग निर्माण-सम्मेलनों में प्रयत्न पूर्वक उस क्षेत्र के प्रगतिशील धर्म-प्रेमी एकत्रित किये गये हैं और इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया गया है, कि धर्म के नाम पर प्रचलित अन्धविश्वास, शोषण, छल-छद्म एवम् प्रतिगामिता का अन्त कैसे कराया जाय ? जहाँ जिस प्रकार आवश्यक एवं सम्भव समझा गया है, वहाँ उसी प्रकार के ऐसे कदम उठाये गये हैं, जिनमें धर्म-तन्त्र को लोक-मंगल और जन-कल्याण का अविच्छिन्न आधार सिद्ध किया जा सके । इन प्रयासों का ही फल है, कि धर्म को निरन्तर कोसते रहने वालों ने भी एक स्वर से उसकी गरिमा एवं उपयोगिता स्वीकार की है । धर्म-तन्त्र को प्रगतिशील बनाने का प्रयास प्राचीन काल के वाजपेय यज्ञों की परिपाटी के आधार पर जिस प्रकार गायत्री-यज्ञों ने सम्भव किया है, उससे चिर प्राचीन और चिर नवीन एक सूत्र में बँधे चले हैं ।

प्रगतिशील गायत्री-यज्ञों का स्वरूप, पिछले दिनों की अविवेक युक्त रूढ़िवादिता से सर्वथा भिन्न है । इन दिनों अन्न की देश में कमी है; इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इन अग्निहोत्रों में अन्न का एक दाना भी नहीं होमा जाता, केवल सुगन्धित और गुणकारी जड़ी-बूटियों की आहुति दी जाती है । घी को भी अत्यन्त न्यून मात्रा में प्रतीक जितना ही होमा जाता है । जाति-लिंग का भेद किये बिना मानव मात्र को इन धर्मानुष्ठानों में सम्मिलित होने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रचलन धार्मिक क्षेत्र में एक क्रान्ति ही कही जा सकती है । इन आयोजनों के सहयोग भी सच्चे प्रतीक ही होते हैं, जिनमें अब तक एक जाति के लोग दूसरी जाति के साथ सम्मिलित नहीं होते थे । सामाजिक समता का जैसा भावपूर्ण स्नेह सिक्त वातावरण इन आयोजनों में देखा जाता है, इससे हर कोई यह आशा कर सकता है, कि इस मिशन का सार्वभौम एकता का स्वप्न साकार होकर रहेगा । एक धर्म, एक जाति, एक भाषा, एक राष्ट्र का स्वप्न यह प्रगति की ओर बढ़ते हुए चरण आज नहीं तो कल एक सच्चाई के रूप में सामने आवेंगे ।

त्याग और सहयोग की भावना का जागरण और विकास जिस कुशलता और तीव्रता से इस माध्यम से हो रहा है, वह कम उत्साहवर्द्धक नहीं । जिस क्षेत्र में यज्ञ किये जाते हैं, वहाँ के व्यक्तियों को लोकमङ्गल के लिये, भगवान के विराट स्वरूप की उपासना पूजा के लिये तैयार किया जाता है । धन, पद- वर्ग, जाति का भेद भुलाकर सभी लोग भ्रातृ-भाव से अपनी-अपनी शक्ति-सामर्थ्य एवं भावनानुसार काम में लग जाते हैं । अपने अनुदान उसमें नियोजित करते हैं । थोड़ा-थोड़ा सहयोग एकत्र करके विशाल कलेवर खड़ा कर देना, अपने समय श्रम तथा साधनों में ईश्वर का, समाज का, राष्ट्र का हक स्वीकार करना ऐसे तथ्य हैं, जो उच्च नागरिकों में सामाजिक दृष्टिकोण विकसित होने का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करते हैं ।

व्यक्तिगत जीवन में आदर्शवादिता और उत्कृष्टता की स्थापना के लिये गायत्री तत्व-दर्शन असंदिग्ध रूप से उपयोगी है । सामाजिक जीवन में न्याय विवेक और सहयोग की सत्प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने में यज्ञीय धर्मानुष्ठान की भूमिका निश्चित रूप से अति महत्वपूर्ण है । शताब्दियों के पिछड़ेपन से विरत होकर आज देश, धर्म, समाज और संस्कृति के पुनरुत्थान के लिये जो प्रयास किये जा रहे हैं, उनमें गायत्री और यज्ञ को आधार बनाया जा सके, तो भारतवर्ष की वर्तमान परिस्थितियाँ सर्वोपरि दूरदर्शितापूर्ण सिद्ध हो सकती हैं ।

प्राचीन काल में तत्वदर्शी ऋषियों ने अनेक आधारों, कारणों और सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता घोषित किया था और प्रत्येक भारतीय को उन्हें धर्म-प्रक्रिया का अविच्छिन्न अंग मानकर नित्य कर्म में अनिवार्य रूप से सम्मिलित रखने का आदेश किया था । आज परिस्थिति बदल गई है, तो भी यह उन दोनों महान आधारों की गरिमा यज्ञ, स्थान पर विद्यमान है । अन्धकार में भटकते हुए मानव-समाज का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिये गायत्री और यज्ञ का तत्व दर्शन आज भी उतना ही उपयोगी है । इस यथार्थ को सिद्ध करने के लिये युग निर्माण योजना द्वारा संचालित गायत्री यज्ञ अभियान अपने ढंग से प्रयत्नशील है । उसकी उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया स्पष्ट होती चली जा रही है । वह दिन दूर नहीं, जब इन्हीं आधारों के सहारे हम मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण होते हुए प्रत्यक्ष देख सकें ।

युग निर्माण योजना द्वारा चालित गायत्री एवं यज्ञ-अभियान सद्विचार और सत्कर्म के समन्वय को शाश्वत सिद्धान्त का नव युग संस्करण कहा जा सकता है । आज की परिस्थितियों में किस ढंग से भावनाओं को प्रखर बनाया जाये, उन क्षमताओं को विकसित किया जा सके, जिनके अभाव में सारे साधन, सारी योजनाएँ तथा सारी उत्कृष्ट आकांक्षायें नहीं के बराबर सिद्ध हो रही हैं । इन आयोजनों के सूक्ष्म दार्शनिक पक्ष से लेकर स्थूल कार्य-पद्धति तक में उन विशेषताओं का समावेश किया गया है, जिनके द्वारा आज के व्यक्ति समाज एवं वातावरण में इन श्रेष्ठतम सिद्धान्तों को व्यावहारिक बनाया जाना सम्भव हो सके । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण वर्तमान गतिविधियों में भी कम नहीं और भविष्य में तो और भी अधिक स्पष्ट ही होगा ।



Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ करने वाले इन बातों का ध्यान रखें

यज्ञ की सफलता के लिये यह आवश्यक है, कि उसके सब कार्य विधि-व्यवस्था पूर्ण हों । आग तापने या होली जलाने जैसा कौतूहल करने के लिये हवन करना व्यर्थ ही नहीं, हानिकारक भी है । कहा भी है- 'नास्ति यज्ञ समं रिपु' अविधि पूर्वक किया हुआ हवन, शत्रु के समान हानिकारक भी होता है, जबकि विधिपूर्वक किया हुआ हवन कामधेनु गौ एवं कल्पवृक्ष के समान हमारे सभी अभावों को दूर करने वाला सिद्ध हो सकता है ।

यज्ञ एक प्रकार की वैज्ञानिक प्रक्रिया है । जो वैज्ञानिक प्रक्रिया जितनी शक्तिशाली होती है, उसमें उतनी ही सावधानी बरतनी पड़ती है । बढ़िया बारूद बनाने के कारखाने में यदि रासायनिक पदार्थों के सम्मिश्रण में लापरवाही होने लगे, तो वहां रद्दी बारूद बनेगी, और जब उसका बन्दूक में उपयोग किया जायगा, तो लक्ष्य वेध में सफलता न मिलेगी, इसलिये उस बरूद के कारखाने के व्यवस्थापक पूरी सावधानी से यह देखभाल करते रहते हैं, कि कारखाने का हर कार्य पूर्ण रूपेण नियम पूर्वक हो । यदि बारूद पीसने वाले या कारतूस भरने वाले कर्मचारी ढील-पोल की नीति से काम करें, लापरवाही बरतें, बीड़ी पीकर चिनगारी बखेर दें, तो सारे कारखाने का ही स्वाहा कर सकते हैं । घटिया कार्यों में लापरवाही चल सकती है, पर जो कार्य जिम्मेदारी के हैं उनमें पूर्ण जागरूकता एवं पूर्ण व्यवस्था की ही आवश्यकता रहती है । यज्ञ में ऐसी ही विधि-व्यवस्था बरती जानी चाहिए ।

ब्रह्मा, अध्वर्यु, उद्गाता, ऋत्वक्, आचार्य आदि कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियाँ पहले से ही बाँट दी गई हैं, कि वे अपने विभाग की सुव्यवस्था रखें और करवावें । यों हवन का काम मामूली सा है, एक सुपरवाइजर बड़े-बड़े मिलों का इतंजाम कर सकता है, तो छोटे से हवन के लिए भी एक मैनेजर का काफी होना चाहिये । पर वस्तुतः यज्ञ बहुत गंभीर बात है, उसकी प्रत्येक गतिविधि पर पूर्ण मनोयोग के साथ ध्यान रखना सामान्य मस्तिष्क के एक आदमी का काम नहीं है, इसलिए यज्ञ के प्रत्येक कार्य में पूरी सावधानी रखने के लिये कई कार्यकर्ता विभागाध्यक्ष नियुक्त करते हैं । आचार्यादि, वरण- की यही प्रक्रिया है । यह लोग पूरे जिम्मेदार, पूर्ण श्रद्धालु और अपनी जिम्मेदारी को निबाहने के लिये भरपूर परिश्रम करने वाले होने चाहिये । देखा जाता है, कि दक्षिणा-लोभी किंतु भीतर से श्रद्धालु पंडित, आचार्यादि तो बन जाते है, पर समय काटने वाले, बला टालने की नीति बरतते हुये अपनी जिम्मेदारी की उपेक्षा करते रहते हैं, कार्य अविधि पूर्वक होता रहता है, यह अनुचित है । उपयुक्त कार्यकर्ताओं की व्यवस्था पहले होनी चाहिये, हवन कुण्ड या ठेके की रचनाएँ निर्धारित नाप तोल का, यथोचित आहुति बढ़ाने का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिये । गोला बारी करने से जो महत्व ताप या बन्दूक की नाल का, वही महत्व हवन कुण्ड की रचना का है । हवन कुंड रूपी तोप में आहुति रूप कारतूस डालकर अन्तरिक्ष में अवस्थित, अनिष्ट, आलाप, पाप, असुर आदि शत्रुओं पर गोलावारी की जाती है, इसलिये नाल का मुख ठीक प्रकार से ही बना हुआ होना चाहिये । कम दूर, चक्कर से घूमती हुई गोलियाँ छोड़ने के लिये अलग-अलग विधान से बन्दूकों की नालें बनाई जाती हैं, हवन कुंडों के निर्माण का आधार भी वही है । चाहे जैसे मनमाना गड्ढा खोदकर हवन-सामग्री की भट्टी जलाते रहना बुद्धिमत्ता नहीं हैं ।

आवश्यक सामान पहले से ही संग्रह कर लेना चाहिए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर बीच-बीच में काम बन्द न करना पड़े, पूजा के सभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उपकरण एकत्रित हो गये हैं या नहीं, वह एक दृष्टि से पहले ही देख लेना उचित है । सभी वस्तुओं की शुद्धता पर पूरा ध्यान रखा जाय ।

सड़ी - गली, नकली गन्दी, सस्ती चीजें, प्राय: पंसारी लोग हवन-पूजा आदि के लिये सुरक्षित रख लेते हैं । खरीदने वाले भी सोचते हैं, यह चीजें हमें खानी थोड़े ही है, सस्ती चीजें लेकर काम क्यों नहीं चला लें । यह उपेक्षा बुरी है । जब हम अपने साधारण मित्र, अतिथि या रिश्तेदार को अपने उपयोग की अपेक्षा कुछ चीजें प्रस्तुत करते हैं, तो देवताओं को, पितरों को यज्ञ भगवान को, सड़ी-गली चीजें भेंट करना किस प्रकार उचित हो सकता है ।

दवात-कलम, कागज, स्याही आदि ठीक न हों, तो अच्छा लेख लिख सकना असम्भव, इसी प्रकार यज्ञीय उपकरणों का ठीक होना आवश्यक है । स्रुवा, स्रुचि, प्रणीता, प्रोक्षणी, स्थल, चरुस्थाली, आज्यस्थाली, आदि यज्ञ पात्र, निर्धारित वृक्षों की लकड़ियों से निर्धारित नाप-तोल से बने होने चाहिए । इस पात्र रचना में वैज्ञानिक तथ्य भरे हुए हैं । तांबे के बर्तन में रखा हुआ दूध थोड़े ही समय में विषैला हो जाता है । दूध पीने के लिए मिट्टी या चांदी का पात्र उपयुक्त माना गया है, गीली खटाई भी किसी धातु के बर्तन में बहुत जल्दी खराब हो जाती है, किन्तु अमुक प्रकार के पात्रों में नहीं बिगड़ती । इसी प्रकार यज्ञ-सामग्री, हवि, चरु, आज्य, जल आदि के लिये जिन काष्ठों के, जिस आकार के पात्रों का निर्धारण किया गया है, वह परम्परा सूक्ष्म विद्वान पर अवलंबित है । उसकी उपेक्षा न की जानी चाहिए ।

समिधाएँ सब वृक्षों की काम में नहीं ली जा सकती हैं । जिनमें काष्ठों में उपयोगी सूक्ष्म शक्ति मिली है, उनको यज्ञ में ग्राह्य माना गया है । बड़ पीपल, गूलर, आम, शमी, ढाक, छोंकर, आदि की समिधाएँ प्रयोजनीय हैं । इमली, नीम, अवूल आदि निषिद्ध ठहराये गये हैं । समिधाऐं उस वृक्ष के लेनी चाहिये, जो मरघट, कसाई खाना, पखाना, आदि घृणित स्थानों पर अवस्थित न होकर, पूजा-उपासना के क्षेत्र से समीप हों । दक्षिण दिशा की ओर झुकी हुई गिद्ध-चील आदि की विष्ठा से सनी हुई शाखाऐं हवन के लिए उपयुक्त नहीं । सड़ी- घुनी, नीली, आधार से अधिक मोटी या पतली समिधाऐं ठीक नहीं । समिधाऐं को धोकर धूप में सुखा देना चाहिए, शुद्ध समिधाऐं ही प्रयोजनीय हैं ।

हवन सामग्री का विषय अत्यन्त ही महत्वपूर्ण सूक्ष्म विचारणीय एवं सावधानी रखने योग्य है । हवन में जौ, चावल, तिल आदि हविष्यान्न प्रयुक्त होते हैं । खीर, हलुआ, मोदक आदि का चरु बनाया जाता है । किशमिस, मुनक्का, छुहारा, शक्कर, मधु आदि मिष्ट पदार्थ हो जाते हैं । चन्दन देवदारु अगर, तगर, छारछबीला, गूगल आदि सुगन्धित फैलाने वाले पदार्थ काम में लाये जाते हैं । दालचीनी, बच, ब्राह्मी, शतावर, जावित्री आदि औषधियां हवन की जाती है । घृत इन सब का अनुपान है ; घृत इनमें से प्रत्येक वर्ग के साथ रहता है । तांत्रिक उपचारों मे जहाँ गोल मिर्च, अपामार्ग, आक, नखलोम आदि का हवन करते हैं । वहाँ भेड़, गधी, ऊँट आदि के दूध का घी या सरसों या सत्यानाशी आदि का तेल प्रयुक्त होता है ।

किस संकल्प के साथ किस उद्देश्य से, किस सामर्थ्य का मनुष्य कैसा हवन कर रहा है, उसे भली प्रकार समझ लेने के बाद ही हवन-सामग्रियों का निर्धारण करना उचित है । आयुर्वेद शास्त्र के निघण्टु भाग में प्रत्येक ओषधि के गुणों का चूर्ण है । यदि आरोग्य के लिये हवन किया गया है, तो सामने उपस्थित बीमारी के उपयुक्त हवन-सामग्रियों का चुनाव होना चाहिये । यों साधारण हवन में, सभी सामग्रियाँ लगभग समान भाग मिला लेने से काम चल जाता है, पर विशेष परिस्थिति में उनकी मात्रा में न्यूनाधिकता करनी ही पड़ेगी । रोगी के शरीर में वात, पित्त, कफ किस की प्रधानता है । कौन सा दोष मंद और कौन सा रोग प्रबल है । ज्वर, खाँसी, अतिसार आदि कई रोगों का संमिश्रण हो, तो उनमें से कौन अधिक और कौन मंद हैं, इसका अनुपात देखते हुए उन रोगों की ओषधियों के नाम तथा मात्रा निर्धारित करनी होगी । पुत्रेष्टि यज्ञ करना हो, तो देखना होगा कि पुरुष में क्या और स्त्री में क्या दोष है एवं अभाव है । उसके उपयुक्त चिकित्सा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का हवन ही सफलता प्रदान करेगा । आरोग्य वर्धक हवनों के आचार्य को आयुर्वेद का गम्भीर ज्ञान होना आवश्यक है ।

मानसिक संस्कार के लिए किये गये हवनों की सामग्री का चयन करते समय अमुक पदार्थों के अन्दर छिपे हुए चेतना तत्वों का ज्ञान होना चाहिए । जैसे तुलसी और करंज में आयुर्वेद की दृष्टि से कृमि नाशक गुण लगभग समान हैं । फिर भी ''चेतना विज्ञान'' की दृष्टि से तुलसी में सात्त्विकता और करंज में तमोगुण की प्रधानता स्पष्ट अनुभव की जा सकती है । प्याज और लहसुन में आरोग्य की दृष्टि से कोई बुराई नहीं है, पर चेतना विज्ञान उनमें तमोगुण की प्रधानता बताता है । इस के सेवन से स्वास्थ्य चाहे सुधरे पर सेवन करने वाले के मनन क्षेत्र में तमोगुण अवश्य बढ़ेगा । इसी प्रकार प्रत्येक हविष्यान्न, चरु, हवि, आज्य, ओषधि में कुछ विशेष चेतना तत्व छिपे होते हैं, वे अपना प्रभाव बौद्धिक जगत में उत्पन्न करते हैं । व्यक्तिगत रूप से काम, क्रोध, लोभ, आवेश, चिन्ता, शोक, भय, उन्माद आदि की निवृत्ति के लिए तथा समष्टि रूप में व्यापक वायुमण्डल में फैले हुए स्वार्थ परता, युद्धोन्माद आदि को शान्त करने के लिए ऐसी हवियों को चुनना पड़ेगा, जिनकी सूक्ष्म चेतना शक्ति अभीष्ट प्रयोजन के लिए उपयुक्त हो । धन प्राप्ति, आरोग्य लाभ, शत्रुता निवारण, आरोग्य वृद्धि, सुसंतति, बुद्धि वृद्धि, अनिष्ट शान्ति आदि काम्य प्रयोजनों के लिए जिस प्रकार आहुतियों के मंत्र अलग-अलग हैं, उसी प्रकार हवनीय सामग्रियाँ और उनकी मात्रा भी अलग होती है । उनका चुनाव करना आवश्यक है । पदार्थों की सूक्ष्म शक्ति को जानना आयुर्वेद शास्त्र से ऊपर की विद्या है । प्राचीन काल में इस विद्या को, अध्यात्म तत्व ज्ञान के आचार्य भली प्रकार जानते थे । अब इस विद्या के ज्ञाता दृष्टिगोचर नहीं होते, फिर भी प्रयत्न करने पर उस विज्ञान को ढूँढ निकालना कठिन नहीं ।

प्राचीन काल में हवनीय सम्पूर्ण पदार्थों का संस्कार करके उनमें वह सूक्ष्म शक्तियाँ पैदा की जाती थीं । जो अभीष्ट उद्देश्य के लिए आवश्यक होती थीं । हवन में काम आने वाली ओषधियाँ अमुक प्रकार के क्षेत्र में, अमुक नक्षत्र में, अमुक मंत्रों के साथ बोई जाती थीं, उन्हें अमुक प्रकार के जल से सींचा जाता था और उनमें अमुक खाद दिये जाते थे । अमुक मुहुर्त में उन्हें तोड़ा जाता था और अमुक मंत्रों से संस्कार करके उन्हें हवन के योग्य बनाया जाता था । जिन गौओं का घृत उपयोग में लेना होता था, उन्हें अमुक प्रकार की घास अमुक अन्न, अमुक प्रकार का जल दिया जाता था, उनके अमुक मंत्रों से अभिषिक्त और पूजित किया जाता है । उनका दूध अमुक प्रकार के पात्र में दुह कर अमुक लकड़ी की रई से बिलोकर घृत निकाला जात था । उसी प्रकार समिधाएँ, चरु, आज्य, आदि को संस्कारित करते थे । यज्ञ के आचार्य आदि को तथा यजमान को अमुक प्रकार के रहन - सहन एवं नियमों का पालन करना होता था, इस प्रकार संकल्प करने से उन सब में अमुक प्रकार की सूक्ष्म चेतना उत्पन्न होती थी और उस चेतनामय वातावरण को हवन द्वारा उत्तेजित करके, आकाश को अभीष्ट तत्वों से परिपूर्ण कर दिया जाता था यह परिपूर्णता ही भौतिक या आध्यात्मिक मनोकामनाओं को पूर्ण करने का हेतु बनती थी ।

सात प्रतिबन्ध - जिनका यज्ञ आयोजनों के समय भविष्य में कड़ाई के साथ पालन किया जाय

अपने सामने लम्बे समय से चल रहे गायत्री-यज्ञों के साथ जुड़े हुए युग-निर्माण आन्दोलन में कुछ विकृतियाँ हम देखते रहे हैं । मानवीय दुर्बलता हमारे हटते ही इन विकृतियों को और भी अधिक फँसा सकती है और अभियान का मूल प्रयोजन ही नष्ट कर सकती हैं । इसलिए कुछ प्रतिबन्ध लगाये जा रहे है । इन्हें न तो कोई परिजन तोड़े ओर न तोड़ने वाले का सहयोग करे ।

(१) युग निर्माण आन्दोलन के हर सदस्य और हर शाखा का सीधा सम्बन्ध शांतिकुंज हरिद्वार एवं केन्द्र से रहे । क्षेत्रीय प्रान्तीय संगठन अलग से खड़े न किये जायें, परस्पर सहयोग करना दूसरी बात है पर ऐसे मध्यवर्ती संगठन आमतौर से व्यक्तिगत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महत्वाकांक्षा की पूर्ति और केन्द्र से प्रतिद्वन्द्वता करने के लिये ही बनते हैं । इन प्रयासों को पूर्णतया निरुत्साहित किया जाय । केन्द्र को हम इतना समर्थ बनाने जा रहे हैं और भविष्य में बनाते रहेंगे कि वह भारत का ही नहीं, समस्त विश्व का एक स्थान से समुचित सूत्र-संचालन कर सके ।

(२) समर्थ गुरु दीक्षा दे सकने योग्य अभी कोई अपना अनुचर हम नहीं छोड़ सके हैं । असमर्थ व्यक्ति यह महान उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठायेगें तो उनकी कमर टूट जायगी और जो उनका आश्रय लेगा वह डूब जायगा । इसलिये भविष्य में गायत्री मंत्र की गुरु दीक्षा लेनी आवश्यक हो, तो लाल मशाल के प्रतीक को ही गुरु बनाया जाय । उस संस्कार-संकल्प को कोई भी व्यक्ति करा सकेगा पर वह स्वयं गुरु न बनेगा ।

(३) युग-निर्माण सम्मेलन कितने ही विशाल क्यों न किये जायँ,पर उनके साथ जुड़े हुए गायत्री यज्ञ आमतौर से ९ कुण्ड से बड़े न किये जाने चाहिए । जहाँ कोई विशेषकारण हो ओर अधिक बड़ा यज्ञ करना अनिवार्य ही हो गया, तो उसे माता भगवती देवी की विशेष स्वीकृति से ही किया जाय । बड़े यज्ञों के जहाँ बड़े लाभ है, वहाँ उनमें बड़ी गड़बड़ियाँ भी देखी गई हैं । इसलिये यह थोड़े कुण्ड़ों का मध्यवर्ती मार्ग अपनाना ही दूरदर्शितापूर्ण है ।

(४) यज्ञाचार्यों का अलग पद न रहे । युग-निर्माण सम्मेलनों सहित जो यज्ञ होंगे, उनका सूक्ष्म रूप में हम संरक्षण करेंगे । फिर इसके लिये किसी यज्ञाचार्य-ब्रह्मा आदि की जरूरत न रहेगी । जिन्हें विधि-विधान ठीक तरह आते हों, उनमें से कोई भी उस कृत्य को प्रसन्नतापूर्वक करा सकता है ।

(५) जल यात्रा, विसर्जन आदि के जुलूसों में गायत्री माता एवं लाल मशाल के प्रतीकों को ही सुसज्जा के साथ निकाला जाय । व्यक्तियों का जुलूस न निकले । इस प्रतिबन्ध से अनावश्यक अहंकार एवं ईर्ष्या, द्वेष को प्रश्रय न मिलेगा ।

(६) आशीर्वाद-वरदान देने-माँगने का सिलसिला व्यक्तिगत रूप से न चलाया जाय । ईश्वर और व्यक्ति के बीच में कोई मध्यस्थ न बने । जिनमें सामर्थ्य नहीं है, वे यदि वरदान, आशीर्वाद का सिलसिला चलाते हैं तो यह एक ठगी ही होगी । हमारे अनुयायियों में से कोई ऐसा मिथ्या प्रलोभन लोगों को देकर उन्हें भ्रमित करने का प्रयत्न न करें ।

(७) व्यक्तिगत रूप से कोई दान-दक्षिणा न ले । जिन्हें आवश्यकता है वे संघ के माध्यम से लें और जिन्हें देना हो वे व्यक्ति को न देकर संघ को दें । इस प्रथा से भिक्षा वृत्ति, परिग्रह, दीनता, तंगी आदि अनेक दुष्प्रवृत्तियाँ पनपने से रुक जायेंगी ।

हमारे अन्य काम इनसे अधिक है । चूँकि इन छः कामों को हम भी करते रहे हैं, इसलिये अनुयायी भी करें यह उचित न होगा । हनुमान जी से ब्रह्मचर्य धर्मरक्षा के लिये आत्म-समर्पण जैसे गुण ही सीखने चाहिये । समुद्र लांघने और पर्वत उठाने जैसे विशेष कार्यों की नकल करने का दुस्साहस हर किसी को नहीं करना चाहिये ।

गायत्री यज्ञों का तत्वदर्शन सभी को समझाएँ

गायत्री, भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ, भारतीय धर्म का पिता है । हमें अपने माता-पिता का तात्विक स्वरूप और धार्मिक महत्व समझना ही चाहिए ।

यज्ञीय परम्परा भारतीय धर्म का मेरुदण्ड है । उसके भौतिक और अध्यात्मिक पक्ष एक दूसरे से अधिक महत्वपूर्ण हैं । लौकिक सुख समृद्धि से लौकिक पारलौकिक शांति एवं प्रगति तक इन दोनों की उतनी ही महत्ता है, जितनी शरीर में हाथ-पैरों की । इन दोनों आधारों की गरिमा यदि ठीक तरह समझी जा सकें, उन्हें निष्ठापूर्वक हृदयंगम किया जा सके, तो मानव जीवन की सर्वांगीण सफलता का लक्ष्य सरलता पूर्वक प्राप्त किया जा सकता है ।

अतीत की गौरवमयी परम्पराओं को विस्मृति के गर्त से निकाल कर अब उन्हें पुनः उनके उच्च सिंहासन पर प्रतिष्ठापित करने का समय आ गंया है । अतएव यह आवश्यक है कि भारतीय तत्व दर्शन के प्राण, गायत्री एवं यज्ञ की गरिमा से सर्वसाधारण को अवगत कराया जाय ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री महामंत्र की महत्ता के कुछ मार्मिक पहलू अगले अंकों में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे, इन पंक्तियों में यज्ञ की महत्ता की ओर कुछ अंगुलि-निर्देश किया जा रहा है । इन दिनों गायत्री-यज्ञों का आन्दोलनात्मक रूप दिया जा रहा है इसलिए इस प्रकार का परिचय और भी अधिक आवश्यक है ।

यज्ञ का अर्थ सामान्यतया 'गायत्री यज्ञ' से ही समझा जाना चाहिए । विशेष प्रयोजनों के लिए-विशेष व्यक्तियों द्वारा विशेष प्रकार के यज्ञ भी किये जा सकते हैं, पर उनकी उपयोगिता सामयिक है । सनातन परम्परा में, सर्वकालीन ओर सर्वजनीन यज्ञानुष्ठान की जब कभी भी जहाँ कहीं भी-चर्चा की जायेगी तब उसका प्रयोजन गायत्री यज्ञ से ही होगा, क्योंकि इन दोनों के युग्म से ही भारतीय धर्म और तत्व दर्शन की उत्पत्ति हुई है । आर्ष परम्पराओं में ब्रह्म विद्या की ज्ञान-गंगा का उद्‌भव जिस गंगोत्री से होता है, उसे अध्यात्मवादियों द्वारा सदा यज्ञ विद्या ही कहा जाता रहा है । वेदों का सृजन इसी महान रहस्य का उद्‌घाटन करने के निमित्त हुआ है ।

भारतीय धर्मानुयायी का जीवनारंभ गर्भाधान के साथ होता है, उस धर्मानुष्ठान में यज्ञ प्रक्रिया मुख्य है । धरती पर पैर रखने से पूर्व उस पुंसवन और सीमान्त संस्कारों के साथ जुड़ी हुई यज्ञ-विधि द्वारा परिष्कृत-परिमार्जित करने का विधान है । पृथ्वी पर चरण रखते ही जात कर्म का विधान उसे सुसंस्कारी बनने के लिए किया जाता है । इसके बाद, अन्न प्राशन, चूड़ा कर्म, विद्यारम्भ, उपनयन, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ आदि सभी संस्कार यज्ञ द्वारा सम्पन्न होते हैं । प्राणान्त के उपरान्त हिन्दू की काया अन्त्येष्टि संस्कार के साथ यज्ञ पिता की गोद में समर्पित की जाती है । मृतक का अग्नि संस्कार विशुद्ध रूप से यज्ञ-प्रक्रिया ही है । इस प्रकार हर भारतीय धर्मानुयायी को जन्म से लेकर मरण पर्यन्त सोलह बार यज्ञीय अग्नि संस्कारों में अपने जन्म जन्मान्तरों के कषाय विदग्ध करके देव-जीवन में प्रवेश करना होता है । पशु प्रवृत्तियों का निराकरण करके देव सत्ता में प्रवेश पाने की अति महत्वपूर्ण प्रक्रिया यज्ञ संस्कार द्वारा ही सम्पन्न होती है । द्विजत्व का प्रतीक यज्ञोपवीत ही तो माना गया है । यज्ञोपवीत अर्थात् यज्ञीय परम्पराओं का अन्तरंग और बहिरंग जीवन में ओत - प्रोत करने का व्रत बंध ।

व्यक्तिगत सत्ता के परिष्कृत करने निखारने के लिए जिस प्रकार संस्कारों के रूप में यज्ञाग्नि का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार समष्टि सत्ता की सामाजिक चेतना में उत्कृष्टता की मात्रा बढ़ाने के लिए पर्व त्यौहारों की क्रम-व्यवस्था है । इन सभी में यज्ञ अनिवार्य है । होली सामूहिक यज्ञ है । जिसे ग्राम स्तर पर, मुहल्ला स्तर पर, परिवार स्तर पर अपने देश में घर-घर मनाया जाता है । मात्र होली में ही नहीं, शास्त्रीय निर्देशों के अनुसार दिवाली, गीता जयन्ती, गंगा दशहरा; गुरु पूर्णिमा, श्रावणी, जन्माष्टमी, विजय दशमी, शरद पूर्णिमा आदि सभी पर्वों पर अनिवार्य रूप से यज्ञानुष्ठान किये जाने चाहिए । हर अमावस्या, पूर्णमासी को दर्शन पौर्णमास्य यज्ञ करने का विधान है । दैनिक नित्य कर्म से संध्यावंदन के साथ बलि वैश्व यज्ञ भी जुड़ा हुआ है । समय-समय पर ग्रह-प्रवेश, अनिष्ट-शान्ति, उद्यापन आदि विशेष धर्मकृत्य किये जायँ तो उनमें भी या आवश्यक माना गया है । भारतीय धर्मानुयायी का कोई भी हर्षोत्सव-शुभारम्भ यज्ञ के बिना नहीं हो सकता । यह पुनीत परम्परा अकारण नहीं है । उसे रूढ़िवादिता नहीं माना जाना चाहिए । यह प्रचलन नितान्त तथ्य पूर्ण है । सत्परिणामों को ध्यान में रखकर ही यह प्रचलन आरम्भ किया गया है ।

मध्यकालीन अज्ञानान्धकार-युग की धार्मिक अराजकता ने यज्ञों का भी स्वरूप विकृत कर डाला परिणामस्वरूप उसे उपेक्षा और तिरस्कार का सामना करना पड़ा । तांत्रिक वाम मार्ग जिन दिनों प्रौढ़ावस्था में था, उन दिनों भी यज्ञायोजनों के लिए उत्साह तो पूरा रहा, पर उनकी आड़ में हिंसा को प्रश्रय दिया जाने लगा । पशु बलि जैसी घृणित प्रथा को जब यज्ञ का एक अंग बनाया गया, तो सहज ही विवेकवानों को उस संदर्भ में अश्रद्धा होनी चाहिए । यज्ञ वेदियों पर नर-नारी की जननन्द्रियों का आकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बनाया जाने लगा योनि कृपण की मेखला मध्य में स्थापना का कुकृत्य ऐसी ही धृष्टता थी, जिसने यज्ञ गौरव को आकाश से उठाकर पाताल में पटक दिया । दूध में मक्खी गिर जाने से वह अपेय हो जाता है । पशु बलि, योनि अंकन जैसे भ्रष्ट कुकृत्यों ने यज्ञ को भी अवांछनीय कृत्यों में सम्मिलित कर दिया; फलतः बौद्ध, जैन जैसे सम्प्रदायों ने उसका खुला विरोध करना आरम्भ कर दिया । यह सब होते हुए भी यज्ञीय परम्परा की जड़ें इतनी गहरी हैं, जितनी कि भारतीय तत्व ज्ञान की । अस्तु, वह किसी रूप में जीवित बना ही रहा और हमारे पर्व संस्कारों में धर्मानुष्ठानों में किसी प्रकार वह सम्मिलित होता रहता चला आ रहा है ।

विशेष अवसरों पर यदा-कदा, विशेष लोगों द्वारा देवी देवताओं के नाम पर अलग से भी यज्ञ कर लिये जाते हैं, पर उनकी कोई आर्ष परम्परा नहीं है । दुर्गा यज्ञ, कुण्डी यज्ञ, विष्णु यज्ञ, गणेश यज्ञ, मरुत यज्ञ, दत्तात्रेय यज्ञ, सरस्वती यज्ञ, लक्ष्मी यज्ञ, रामायण यज्ञ, हनुमान चालीसा यज्ञ, जैसे कितने ही प्रकार के यज्ञ-प्रकरण गढ़ लिए गये । उन देवताओं, ग्रन्थों अथवा मंत्रों ने भक्तों के अपने उत्साह का परिचय के साथ जोड़ कर किसी रूप में कार्यन्वित किया , पर वह उनका सीमित प्रयास ही माना जाता रहा । भारतीय धर्म की सर्वजनीन आस्था से सनातन गायत्री यज्ञ प्रक्रिया को ही स्थान मिलता रहा । कहीं-कहीं किसी एक या कई वेदों के यज्ञ भी किये गये पर यह विस्मरण कर दिया गया कि वेदों में अनेक मंत्र अनेक प्रयोजनों के लिए निर्धारित हैं, उन्हें एक साथ प्रयुक्त नहीं किया जाना चाहिए । विवाह और अन्त्येष्टि के लिए निर्धारित मंत्रों को एक साथ मिला कर बोला जाय तो यह अति उत्साह का चिन्तन हीन प्रयोग ही कहा जायगा ।

यज्ञीय परम्परा में निश्चित रूप से गायत्री यज्ञ का ही स्थान है । व्यक्ति-कल्याण और समाज-कल्याण के समस्त तत्व इसमें विद्यमान हैं । अस्तु, यह परम्परा अपने स्थान पर सुदृढ़ और सुनिश्चित ही बनी रही कि यज्ञ आयोजन की जब कभी आवश्यकता पड़े, तब उसे गायत्री यज्ञ के रूप में ही समझा-किया जाय ।

समय आ गया कि यज्ञ की परम्परा के स्वरूप, प्रयोजन एवं परिणाम से प्रत्येक व्यक्ति को परिचित कराया जाय । इसके लिए धर्म शास्त्रों की, इतिहास पुराणों की प्रचुर परिणाम में साक्षियाँ मौजूद हैं । बुद्धि और विवेक का ऐसा प्रतिपादन मौजूद है, जो तार्किकों और अनास्थावानों को भी प्रभावित कर सके । ऐसे तथ्य इस पुण्य परम्परा के पक्ष में भरे पड़े हैं । विज्ञान की कसौटी पर यह प्रयोग वातावरण की शुद्धि से लेकर व्यक्ति और समाज की सर्वतोमुखी प्रगति करने वाला ही सिद्ध होता है । इसमें जितना समय, श्रम और धन लगता है, उसकी तुलना में प्राप्त होने वाली उपलब्धियाँ इतनी अधिक हैं कि बड़ा बीज बोकर सहस्त्र गुनी फसल उगाने वाले कृषि-कर्म से उसकी तुलना सहज ही की जा सकती है । इस अंक में अगले पृष्ठों पर पाठक उसी की चर्चा पढ़ेंगे ।

आवश्यकता इस बात की है कि हम यज्ञ विज्ञान की गरिमा से सर्वसाधारण को परिचित करायें, और उसके लिए आवश्यक उत्साह पैदा करें । साथ ही उन तथ्यों को भी ध्यान में रखें जिनके कारण बुद्धि जीवी वर्ग का इस प्रक्रिया को असहयोग एवं विरोध सहन करना पड़ता है । इन दिनों खाद्य पदार्थों की भारी कमी है । प्राचीन काल की तरह अब अन्न के भण्डार कहीं भी नहीं हैं और न घी दूध की नदियाँ बहती हैं । इन दिनों जन साधारण को काफी कष्ट सहन करना पड़ता है और विदेशों का दरवाजा खटखटाना पड़ता है । युग-धर्म की माँग है कि इन परिस्थितियों में अन्न और घृत की तनिक भी बर्बादी न होने दी जाय, यज्ञ के नाम पर भी नहीं ।

दूसरे, यज्ञोत्साही इस तथ्य को ध्यान में न रख कर तिल-जौ-चावलों से ही हवन करते हैं और घृत के कनस्तर अग्नि में होम देते हैं । स्वभावतः यह अत्युत्साह विवेकशील लोगों की आँखों में खटकेगा और विरोध सामने आयेगा । युग निर्माण परिवार ने आरम्भ से ही इस युग धर्म को समझा है और अपने अग्निहोत्री में एक दाना भी अन्न का न होमने का निश्चय किया है । मात्र सुगन्धित और गुणकारी जड़ी बूटियों की ही आहुतियाँ दी जाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, घृत का निषेध तो नहीं किया गया है, पर आहुतियों में उसकी मात्रा इतनी कम कर दी है कि वह किसी को भी अखरने वाली प्रतीत न होगी ।

यह भी इसलिए रखा गया है कि गो रस, गो घृत, पंचामृत, पंचगव्य की प्रतिष्ठा अपने धर्मानुष्ठानों में बनी रहे और हर भारतीय गो रक्षा के गो संवर्धन के प्रश्न को आर्थिक ही नही, धार्मिक आवश्यकता के रूप में भी अंगीकार करें, उसके लिये हर धर्मानुष्ठान के साथ जन मानस को झकझोरा जाता रहे । होम में घृत के अभाव में दूध की या खीर की भी आहुतियाँ दी जा सकती है । आज जैसे आपत्ति काल के लिये ऐसी किफायत, शास्त्र भावना के सर्वथा अनुकूल ही है । मात्रा भले कितनी ही घटा दी जाय, पर गो प्रतिनिधित्व तो घृत के रूप में रहना ही चाहिए ।

एक बार राजा जनक ने महर्षि याज्ञवल्क्य से पूछा, दुर्भिक्ष की स्थिति में घृत मिलना दुस्साहस हो सकता है । वैसी दशा में अनिवार्य माना जाने वाला दैनिक अग्नि होम कैसे किया जाय ? महर्षि ने कहा-तब दूध से भी हवन किया जा सकता है । राजा ने पूछा, संभव है, दूध भी न मिले ? कुछ खाने को मिले उस अन्न से ही आहुति दे लें । राजा ने फिर पूछा- अन्न की न्यूनता हो तो ? याज्ञवल्क्य बोले, जड़ी - बूटियों से भी आहुतियाँ देना पर्याप्त होगा । जनक बोले- और ग्रीष्म आतप में जड़ी बूटियाँ भी न मिलें तब क्या किया जाय ? महर्षि बोले तब केवल यज्ञीय वृक्षों की लकड़ियों से ही हवन किया जा सकता है ।

उपरोक्त प्रसंग में अग्निहोत्र में वस्तुओं के यजन को उतना महत्व नहीं दिया गया । जितना यज्ञीय भावनाओं को प्रखर करने के लिए उस कर्मकाण्ड को किसी रूप में सुप्रतिष्ठित किये रहने की बात पर बल दिया गया है । आज भी समय की वैसी ही माँग है । श्रमदान द्वारा हम मिल-जुल कर समीपवर्ती क्षेत्र से सुगंधित वनस्पतियाँ एकत्रित कर सकते हैं और बिना खर्च भी अग्निहोत्र की व्यवस्था जुटा सकते हैं । यदि घृत का घोर अभाव है तो दुग्ध में थोड़ा गो घृत मिलाकर भी काम चलाया जा सकता है ।

पडितों की लूट-खसोट और धर्म पर एकाधिकार की बात समाप्त होनी ही चाहिए । जाति-पांति के आधार पर किसी भारतीय नागरिक को धर्म-कृत्यों के अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए । उपासना-विधान किसी वर्ग विशेष तक सीमित नहीं रहने देना चाहिए । उसकी जानकारी हम सभी को रहनी चाहिए और धर्मायोजन सस्ते भी रहने चाहिए । इन बातों को ध्यान में रखते हुए युग निर्माण परिवार द्वारा संचालित गायत्री यज्ञ, जनता द्वारा ही संचालित होते हैं । प्रत्येक शुद्ध मंत्रोच्चारण कर सकने वाला व्यक्ति उस क्रिया कलाप का संचालन कर सकता है । जिन्हें पारिश्रामिक देकर बुलाना हो उन्हें खुशी से बुलाया और दिया जाय, पर यह अधिकार केवल अमुक वर्ग को ही है और मुँह माँगी दक्षिणा मिलनी ही चाहिए, यह मान्यता व्यर्थ है । अपने यज्ञो में इस प्रकार की स्वार्थपरता के लिए कोई स्थान नहीं है । यही कारण है कि इन आयोजनों में क्रान्ति के बीज देखे गये हैं और बुद्धि जीवी वर्ग में उसका समुचित स्वागत हुआ है । यज्ञ का नाम सुनते ही जो भड़कते थे, उनने जब समीप आकर अपने आयोजनों का स्वरूप देखा तो उनका विरोध तत्काल तिरोहित हो गया और वे पक्के समर्थक सहयोगी बन गये । दाल - चावल रोटी जैसे 'करने में जनो' को बिना जाति पांति के भेदभाव के किए जाना इस देश में संभव नहीं दीखता था पर वह अपने आयोजनों में भली प्रकार सम्पन्न हो रहा है । प्रत्येक याज्ञिक को अपनी शारीरिक, मानसिक सामाजिक बुराइयों में से एक को अनिवार्य रूप से छोड़ना और एक नये सद्गुण का शुभारम्भ करना ऐसा कदम है, जिसमें नैतिक, बौद्धक और सामाजिक क्रान्ति की दिशा में बढ़ने के लिए लोक-मानस में प्रचण्ड उत्साह जगाया जा सकता है । प्रस्तुत यज्ञायोजन में यही सब कर रहे हैं और नव निर्माण की महत्व पूर्ण भूमिका विनिर्मित हो रही है । जो थोड़ा ही खर्च इन आयोजनों में करना पड़ता है, उसकी तुलना में वे आध्यात्मिक और भौतिक दिव्य लाभ असंख्य गुने महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें इन धर्मानुष्ठानों द्वारा प्राप्त किया जाता है । यदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

नैतिक, बौद्धिक ओर सामाजिक क्रान्ति की सामयिक आवश्यकता की पूर्ति का लाभ भी देखा जाय तो इस कसौटी पर भी अपने गायत्री यज्ञ शत-प्रतिशत खरे उतरते हैं और सिद्ध करते हैं कि उपलब्ध परिणाम की तुलना में जो कुछ लगता है, अत्यन्त स्वल्प है ।

प्राचीन काल में विश्रंखलित राजसत्ता को सुसंगठित ओर सुव्यवस्थित और सुनियोजित बनाने के लिये राजनीति के नेता राजसूय-अश्वमेध जैसे यज्ञ-आयोजन करते थे । उनमें विभिन्न क्षेत्रों के राजनेता एकत्रित होकर सामयिक विकृतियों का उपाय निकालते थे । ठीक इसी प्रकार धर्म नेताओं द्वारा वैयक्तिक सामाजिक विकृतियों के निराकरण और स्वस्थ परम्पराओं के प्रचलन का लक्ष्य रखकर बाजपेय व गायत्री यज्ञ आयोजित किये जाते थे । उनमें धर्म-प्रेमी, विचारशील एकत्रित होकर यह प्रयास करते थे, जिसमें तत्कालीन दुष्प्रवृत्तियों का समाधान हो सके । अपने गायत्री यज्ञ सर्वथा उसी स्तर के हैं । वे जन साधारण की आवश्यकता पूरी कर रहे हैं । अग्नि होम के साथ जुड़ा हुआ ज्ञान यज्ञ लोक मानस का भावनात्मक नव निर्माण करने में आशाजनक सफलता प्राप्त कर रहा है । रचनात्मक और संघर्षात्मक अनेक सत्प्रवृत्तियों का सूत्रपात इन आयोजनों के साथ आशातीत तत्परता सहित गतिशील हो रहा है । यदि दिव्य लाभों की बात छोड़ भी दी जाय तो व्यक्ति और समाज की अभिनव संरचना का अभियान अपने आप में ऐसा है कि उसका संचालन करने वाले इन गायत्री यज्ञों को सर्वथा सार्थक ही कहा जा सकता है ।

युग परिवर्तन की इस पुण्य वेला में, गायत्री यज्ञों की धर्म प्रक्रिया के साथ जिस सतयुगी संरचना का शुभारम्भ हो रहा है, उसे हर दृष्टि से एक ऐसी ऐतिहासिक घटना माना जाना चाहिए, जो अपने आप में अनोखी है । गायत्री यज्ञ-आन्दोलन अपनी अद्‌भुत विशेषताओं और संभावनाओं के साथ जिस दिशा में जिस गति से बढ़ रहा है, उसे देखते हुए यही कहा जा सकता है कि मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का लक्ष्य निकट भविष्य में ही पूरा होकर रहेगा ।

इन कार्यक्रमों की उपयोगिता युग निर्माण परिवार के हर परिजन को भली प्रकार समझ लेनी चाहिए । इतने उपयोगी कार्य के लिए अपने जीवन का समय, श्रम, साधन नियोजित करने के लिए किसी भी प्रकार का किन्तु - परन्तु मन में आने का अर्थ अपनी समझ अथवा अपने साहस की कमी ही हो सकती है । साधनात्मक जीवन पर आरूढ़ युग निर्माण योजना के प्रखर जीवन यापन करने वाले मनस्वियों के लिए ऐसी कोई समस्या उठनी नहीं चाहिए और यदि यह गौरवमय स्थिति बनाये रखी जाये तो इसी सत्र में सारी तैयारी और सम्यक् व्यवस्था युक्त यज्ञों में सारे वातावरण को अनुप्राणित किया जा सकने में किसी प्रकार का शक नहीं रह जाना चाहिए । युग प्रवाह में हमारी श्रद्धा की बूंदें भी अवश्य पड़नी चाहिएँ ।

दूध को गरम करने से, दही को मथने से गर्मी उनका घृत अंश उभारकर ऊपर ले आती है । गर्मी पहुँचाएँ बिना यह उभार ऊपर नहीं आ सकता, जिसे घृत की मधुर उपलब्धि कहते हैं । गायत्री यज्ञों के धर्मानुष्ठान से जन मानस की प्रसुप्त श्रद्धा को ऊपर उठाया और आगे बढ़ाया जा सकता है । इसे नव युग के निर्माण का आधार भूत तथ्य माना गया है । युग परिवर्तन में आदर्शों पर छाये हुए अनास्था के संकट को हटाया जायगा और उसके स्थान पर उत्कृष्टता की प्रतिष्ठापना की जायगी । इतना हेर-फेर ही युग परिवर्तन का केन्द्र बिन्दु है । यह जब, जितना, जहाँ संभव हो सकेगा, वहाँ उसी अनुपात से नवयुग के अनुरूप सत्प्रवृत्तियों और सुखद परिस्थितियों का प्रत्यक्ष दर्शन होने लगेगा ।

समुद्र में गहरे उतर कर मोती बीनने पड़ते हैं । उद्यान में फूलों का टोकरा नहीं रखा होता, डाली-डाली पर चक्कर काट कर उनमें से जो खिले होते हैं, उन्हें तोड़ना पड़ता है । झाड़ियों तक में हर जगह नहीं, जहाँ-तहाँ ही बेर लगे मिलते हैं । चिकित्सक वन-वन भटकने के बाद उपयोगी जड़ी बूटियाँ खोज पाते हैं । प्रतिभाओं की तलाश संसार के कोने-कोने में रहती है । ठीक ऐसी ही खोज युग देवता के गले में हीरक हार पहनाने के लिए नर रत्नों की है । इस प्रयोजन में श्रद्धा ही सम्पदा है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैभववान नहीं, प्रतिभाशाली नहीं, श्रद्धासिक्त आत्माएँ ही नव युग के अवतरण में उपयुक्त भूमिका का सम्पादन कर सकेंगी । तलाश उन्हीं की है, आवश्यकता उन्हीं की है । प्रगति-रथ उन्हीं के श्रम सीकर न मिल सकने के कारण रुका पड़ा है । बुद्धिमान और सम्पत्तिवान भौतिक उन्नति के आधार खड़े कर सकते हैं, किन्तु जहाँ भावनात्मक परिष्कार का, आस्थाओं के उत्पादन-अभिवर्धन का प्रश्न है, वहाँ वह कार्य मात्र उन्हीं से बन पड़ेगा जिनके पास आस्थाओं की पूँजी पर्याप्त मात्रा में मौजूद है । धनिकों, समर्थों, वलिष्ठों के दरवाजे पर सभी घूमते हैं, हमें आस्थावानों का द्वार खटखटाना होगा और बताना होगा कि जाग्रत आत्माओं के लिए महाकाल का युग निमंत्रण आया है; उसे स्वीकार करने में ही उनकी दूरदर्शिता है । इन दिनों यही अलख जगाना और आस्थाओं की दृष्टि से जीवन्त प्राणवानों को खोज निकालना सबसे बड़ा काम है । यह पूंजी हाथ में होगी तो कठिन और बड़े दीखने वाले सृजन कृत्य सहज ही पूरे होते चले जायेंगे ।

प्रस्तुत गायत्री महायज्ञों का प्रधान लक्ष्य उस समूचे क्षेत्र को सम्पर्क साधना के सहारे मथ डालना है और उससे जो उपलब्धियाँ-विभूतियाँ हस्तगत हों उन्हें महान लक्ष्य की यात्रा में साथी सहयोगी बना लेना है । इन पक्षों में जन सहयोग का संग्रह ही प्रधान कृत्य है । वह जितना, जिस रूप में, जहाँ भी मिले उसे सींचने, बढ़ाने के प्रयत्नों में लग पड़ना अपना अगला कदम है । एक पैर उठने से ही रथ नहीं चलेगा । दोनों पैर समान क्रम और समान गति से बढ़ने चाहिए । खोज और उपयोग दोनों का समन्वय बन सके, तो ही कुछ ऐसा बन पड़ेगा जिसे महान कहा जा सके । श्रद्धा की खोज यज्ञ महायोग के आवहान का प्रत्युत्तर कहाँ से मिल रहा है, यह देखकर की जा सकती हैं । उसका भावी उपयोग ही वह चरण है, जिसके आधार पर नव युग के अवतरण की संभावनाएँ साकार हो सकती है ।

जिन दिनों यज्ञ-आयोजन चल रहे हों, उन दिनों आयोजन कर्ता, अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को उस संदर्भ के क्रियाकलापों को उत्तरदायित्व देकर यह देखे कि सत्प्रयोजनों का रुझान ही नहीं उत्साह और साहस भी किस-किस में है । जिम्मेदारी और समझदारी की, ईमानदारी और सज्जनता की मात्रा इन लोगों में से किस में उतनी है । इस परख की कसौटी पर जो खरे उतरें, उनसे मिशन की घनिष्टता बढ़ती ही चलनी चाहिए । उन्हें अधिक प्रोत्साहित किया जाय और अधिक उत्तरदायित्व सौंपा जाय । आयोजन समाप्त होते-होते उन्हें आग्रह-पूर्वक मिशन का सदस्य बना लिया जाय ।

इन, नये संपर्क के लोगों को दस-दस की टोली के अंतर्गत गठित कर दिया जाय । टोली नायक पुराने अनुभवी कार्यकर्त्ताओं को बनाया जाय और उन्हें दस-दस की संख्या में इस संपर्क में आए लोगों से जोड़ दिया जाय । मिशन का साहित्य पढ़ाने, जन्म दिन मनाने और साधना में रुचि बढ़ाने के तीन आधार उनकी घनिष्टता बढ़ाते चलेगें । वर्ष में पाँच आयोजन होते हैं । इनमें उन्हें बार - बार बुलाते रहने का काम सौंपते रहने से उनका उत्साह और अनुभव बढ़ेगा ही । इस उपाय को अपनाने पर हर आयोजन के सहारे नये सैकड़ों कार्यकर्ता उपलब्ध होते रहेंगे और वर्ष में इस आधार पर हजारों की संख्या पार करके एक लाख तक नये परिजन अपने परिवार में सम्मिलित होकर उसकी शक्ति-सामर्थ्य को अनेक गुना बढ़ा सकेंगे ।

अपना यज्ञ कार्य बहुमुखी है, उसमें प्रवृत्ति और मान्यताओं की भिन्नता से कुछ अन्तर ही नहीं पड़ता । अपनी रुचि के काम हर वर्ग के व्यक्ति को मिल सकते हैं । देव, दक्षिणा, संचय में नशाबन्दी, परिवार नियोजन, लिंग और जाति की समानता, दहेज, मृतक भोज, भिक्षा-व्यवसाय जैसी कुरीतियों का निवारण सम्मिलित है । जो जप हवन नहीं करना चाहते,वे देव-दक्षिणा को उभारने में संलग्न रह सकते हैं । सामूहिकता-श्रमदान प्रयोजनों में स्वेच्छा सहयोग, स्वच्छता कला, सतर्कता, अनुशासन जैसे वे तत्व इन आयोजनों में पूरी तरह घुले हुए हैं, जिन्हें व्यक्ति के श्रेष्ठ और समर्थ बनने का प्रमुख आधार माना जा सकता है । लोक-सेवा को, समाज निर्माण को, व्यक्ति निर्माण को जो लोग महत्व देते हैं, वे जप हवन करते हुए भी इन सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन की इस प्रयास में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूरी-पूरी संभावना देख सकते हैं और उस पक्ष को संभालने में भी अपना योगदान दे सकते हैं । आस्तिकता और उसे बढ़ाने वाले सत्प्रयत्नों को यदि दुष्ट-दुरभिसंधिओं से बचाये रखा जा सके तो अन्ततः सुख-शांति में उससे सहायता ही मिल सकती है ।

यज्ञ-आयोजनों पर यह आक्षेप बहुत लगाया जाता रहा है कि उनमें खाद्य पदार्थ जलाये जाते हैं- निहित स्वार्थ दान-दक्षिणा के नाम पर लूट-खसोट करते हैं । अन्ध श्रद्धा और प्रतिगामिता का वातावरण बनता है । यह तीनों आक्षेप इसी से मिलते - जुलते अन्य आयोजन-कर्ताओं पर लागू होते हैं । युग निर्माण मिशन का हर कदम दूरदर्शिता और उपयोगिता को ध्यान में रखकर उठता है, इसलिए उसमें अनुपयोगी प्रचलनों की काट छाँट आरम्भ से ही कर दी जाती है । उदाहरण के लिए अपने यज्ञों में अन्न का एक दाना भी नहीं जलाया जाता । मात्र उपयोगी जड़ी - बूटियों की आहुतियाँ देने की ही परम्परा है । घृत भी इतनी न्यूनतम मात्रा में खर्च होता है, जिसे प्रतीक-पूजा ही कहा जा सकता है । रुपये - पैसे में उसका ब्यौरा लिया जाय तो वह राशि उतनी स्वल्प बैठेगी कि उस पर चर्चा या विवाद करना उपहासास्पद ही प्रतीत होगा ।

निहित स्वार्थों की लूट-खसोट की इन आयोजनों में कहीं कोई गुजांइश नहीं है । ऐसे सारे छेद पहले से ही बंद करके रखे गये हैं । स्वयं सेवक की प्रवृत्ति से सभी लोग यज्ञ कृत्य सम्पन्न करते हैं । दान-दक्षिणा के नाम पर व्यक्तिगत रूप से कोई कुछ नहीं लेता, उसी प्रकार अन्ध विश्वासों और प्रतिगामिता के लिए भी इनमें कहीं कोई गुंजाइश नहीं है । सच तो यह है कि उनमें आदि से अन्त तक ऐसी प्रगतिशीलता ही भरी पड़ी है, जिनसे सृजन प्रयोजनों में आशातीत सहायता मिल सके । जाति और लिंग की असमानता दूर करने में इन आयोजनों की असाधारण भूमिका रही है । यज्ञों पर एक ही वर्ग का स्वत्वाधिकार माना जाता था । अब सभी नर-नारी उनमें समान रूप से भाग लेते हैं । सभी यज्ञोपवीत धारण करते हैं । सहभोज में यह खाई और भी अच्छी तरह पट जाती है । देव दक्षिणा में व्यक्ति की चरित्रनिष्ठा और समाज की प्रगतिशीलता के सारे तत्व भरे पड़े हैं । यज्ञ कृत्यों के स्वरूप की व्याख्या करते हुए वह सब कुछ कहा-समझाया जाता है, जो युग क्रान्ति के लिए आवश्यक है । इन तथ्यों को देखते हुए इस अभियान में विचारशील वर्ग को भी आकर्षित प्रभावित और सम्मिलित किया जा सकता है । वही हमें करना भी चाहिए ।

यज्ञायोजनों में इन तथ्यों को भी ध्यान में रखें

(१) अग्नि से सुरक्षा

भगवान ने हमें बुद्धि रूपी मूल्यवान सम्पत्ति प्रदान करके इस संसार रूपी समुद्र में डाल दिया है और निरन्तर परीक्षा लेता रहता है कि संसार में सभी प्रकार के तत्व-भले और बुरे हैं, उनमें से अपनी इच्छानुसार चुन लो । यह मनुष्य की बुद्धिमत्ता है कि वह भले तत्वों की ओर आकर्षित हो और बुरे तत्वों से घृणा करके उनसे दूर रहे । यदि वह अपने वास्वविक हानि-लाभ को समझ सकता है, तो वह सुखी रहेगा । ऐसे मनुष्य को सावधान और चैतन्य कहा जायगा ।

इस चैतन्यता को निरन्तर जागृत रखना चाहिए, क्योंकि संसार में ऐसी बहुत सी वस्तुएँ हैं, जिनका विवेकपूर्ण उपयोग किया जाय तो वह लाभदायक सिद्ध होती है और अविवेकपूर्वक प्रयोग किया जाय तो हानि पहुँचाती हैं । एक ही वस्तु हमारे लिए मित्र-शत्रु दोनों बन सकती हैं अग्नि एक व्यापक तत्व है । वह हमारे अनेकों काम आती है । इसके बिना संसार में बहुत अव्यवस्था फैल सकती है । उसकी अतीव आवश्यकता अनुभव करते हुए ही हम उसकी पूजा करते हैं । इतना होते हुए भी यदि हम उसे छू लें तो वह अवश्य जला देगी । केवल अग्नि से ही असावधान रहने की बात नहीं है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्य किसी भी कार्य में असावधानी बरतने से हानि होना स्वाभाविक है । खाने-पीने में असंयम होने से पेट बिगड़ जाता है । जीवन के हर एक क्षेत्र में हमें सावधानी के साथ काम लेना चाहिए, नहीं तो उसका कुफल हमें भुगतना ही पड़ेगा ।

सामूहिक बड़े यज्ञों में तो अग्नि से विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए और यज्ञशाला की छत को १० फुट ऊँचा ही बनाना चाहिए । मौसम के अनुसार ही छाया का प्रबन्ध करना चाहिए । वर्षा काल में तो हरी घास या फूँस छा कर काम चला लेना ठीक है, परन्तु गर्मियों में जब वायु का वेग तीव्र होता है, घास फूँस से छाया नहीं बनानी चाहिए क्योंकि किसी भी समय कोई चिनगारी घास में जाकर अग्नि लगा सकती है । ऐसे समय में तो हल्के पीले रंग का कपड़ा ही लगाना ठीक रहता है । इसे भी १० फुट ऊँचा रखना चाहिए । मध्य कुण्ड के ऊपर तो गुम्बज बना कर उसे और ऊँचा बनाना चाहिए । इसी गुम्बज के नीचे धुआँ निकलने के लिए जगह रखना अच्छा रहता है ।

यज्ञ की पूर्णाहुति के समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए । यज्ञशाला में यदि घूँघट वाली स्त्रियाँ बैठी हों तो उन्हें सावधान करते रहना चाहिए । भस्म-धारण और घृत-अवघ्राण के समय हर एक व्यक्ति को यह वस्तुएँ स्वयं नहीं लेने देना चाहिए, वरन् प्रत्येक कुण्ड के याज्ञिकों में से एक याज्ञिक को ही इस कार्य के लिए नियुक्त कर देना चाहिए ।

महिलाएँ कभी-कभी कुण्डों के आस-पास परिक्रमा करने लगती हैं । उससे भी आग लगने का भय रहता है । इसलिए यज्ञशाला के बाहर ही परिक्रमा करानी चाहिए । पूर्णाहुति के समय जब लोगों को गोला, नारियल आदि होमने की जल्दी होती है, तो कुण्डों की उठती हुई ज्वालाओं से अग्नि हो सकती है । इसलिए यज्ञाचार्य को चाहिए, कि वह व्यवस्था को अपने नियन्त्रण में रखे । जितने याज्ञिक यज्ञशाला में आसानी से आ सकते हों, एक बार में उतने ही याज्ञिकों की पूर्णाहुति करानी चाहिए । जिनकी पूर्णाहुति हो चुकी हो, उन्हें बाहर निकाल कर शेष को दूसरी बारी में करवानी चाहिए । आने व जाने के मार्ग भिन्न हो । गोले डालते समय ऐसे व्यक्ति नियुक्त रहने चाहिए जो यह देखते रहें कि अग्नि की लपटें अधिक ऊँची तो नहीं उठ रही हैं । यदि उठ रही हों तो दूध के छींटे देते रहना चाहिए, ताकि अग्नि अधिक तेज न हो जाए ।

हमारी थोड़ी सी असावधानी के कारण ही आसुरी प्रवृत्ति के व्यक्तियों को अवसर मिल जाता है, और वह मुहूर्त आदि तरह -तरह के दोष यज्ञों में बताया करते हैं जिनका कोई सिर पैर नहीं होता है । यह केवल हमारी असावधानी के कारण ही होता है ।

हवन कुण्ड की अग्नि की लपटों की तरह ही दीपक, आरती आदि के समय आसावधानी न रखने से कभी-कभी आग दूसरी वस्तुओं को पकड़ लेती है और कुछ चीजें जल जाती हैं । ऐसी दशा में उसे अपशकुन या गायत्री माता की नाराजी आदि की बात सोच कर दुखी होते हैं । वस्तुतः ऐसी कोई बात नहीं होती । यह सम्बद्ध व्यक्तियों की असावधानी का दण्ड मात्र है । इसलिए यज्ञ प्रबन्धकों को पहले से ही पूरी सावधानी बरतनी चाहिए और प्रत्येक याज्ञिक को सावधान कर देना चाहिए ।

(१) यज्ञशाला की छत इतनी ऊँची बनानी चाहिए कि पूर्णाहुति के समय गोले जलने के कारण उठती हुई ऊँची लपटों की गर्मी से उसमें आग न लग जाय ।

(२) आरती करते समय दीपक को धुँऐं से बचाना चाहिए और तेजी से न घुमाना चाहिए अन्यथा वह बुझ जायगा । इसी प्रकार कपड़ों से भी उसे बचाया जाना चाहिए ।

(३) पूर्णाहुति के समय अग्नि बहुत प्रचण्ड हो जाती है, उस समय आस-पास रखे हुए कलश, यज्ञ-पात्र आदि दूर हटा देने चाहिए । यदि साबुत नारियल पूर्णाहुति में चढ़ाने हों, तो उनमें कील से छेद कर लेना चाहिए नहीं तो गैस भरने पर उनकी फटने और पास खड़े लोगों के जलने की संभावना रहती है । इसलिए अच्छा यह है कि गोले ही हवन किये जायँ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

(४) यज्ञ समाप्त हो जाने पर भी कुण्डों में आग जलती रहती है और उससे चिनगारी उड़कर आस-पास की वस्तुओं को जला सकती है, इसलिए जब तक अग्नि पूरी तरह शान्त न हो जाय, तब तक उसकी चौकीदारी रखनी चाहिए ।

(२) कार्यकर्ता-स्वयं सेवक

(१) हर आयोजन के क्रिया कृत्य का प्रधान संचालक एक व्यक्ति हो, शेष उनके संकेतानुसार व्यवस्था में सहयोग करें । अपने आयोजन सामूहिक सम्मिलित सहयोग पर निर्धारित हैं, इसलिए इनमें कोई ब्रह्मा, आचार्य, पुरोहित आदि नहीं होता और जिनमें सामूहिक पैसा लगा हो, उनमें किसी को यजमान आदि का पद नहीं दिया जाता । सभी की स्थिति समान समझी जाय । इनमें कोई अतिरिक्त श्रेय लेने का प्रयत्न न करें ।

(२) क्रिया-कुशल लोगों को आगे आकर उस विधान को सम्पन्न कराने में सहयोग करने के लिए कहा जाय । प्रयत्न यह करें कि अधिक लोग मन्त्रोच्चार आदि कृत्यों में भाग लें और आगे चल कर वे स्वयं भी उस तरह के आयोजनों के संचालन में अनुभवी सिद्ध हो सकें ।

(३) आरती, पूजा-चढ़ावा आदि में कोई धन आवे तो वह क्रिया कृत्य कराने वाले किसी व्यक्ति का न समझा जाय उसे शाखा संगठन में जमा किया जाय । यदि किसी कार्यकर्ता को कुछ पारिश्रामिक, मार्ग व्यय आदि देना हो तो वह शाखा-संगठन की ओर से दिया जाय । कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को पौरोहित्य आदि प्रयोजन के लिए न तो सीधी दक्षिणा दे और न वह स्वीकार करे ।

(४) यज्ञ की छोटी या बड़ी व्यवस्था के अनुरूप स्वयं सेवकों की संख्या पहले से ही निर्धारित कर लेनी चाहिए और उन्हें समय से पहले ही ड्यूटी सोंप देनी चाहिए, ताकि वे कुण्डों की अग्नि संभालें, समिधाएँ सामग्री आदि की कमी न पड़ने दें, जो लोग गलत ढंग से आहुतियाँ दे रहे हों, उन्हें समझाते सिखाते रहें ।

(५) आयोजन के सभी कार्यकर्ताओं के सीने पर बिल्ले जरूर लगे रहने चाहिए । पीला दुपट्टा धर्मानुष्ठानों का महत्वपूर्ण प्रतीक है । इसकी व्यवस्था करके आने की पूर्व सूचना दे देनी चाहिए । कुछ पीले दुपट्टे शाखा में भी धुले-रंगे तैयार रहा करें, ताकि ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों को जो दुपट्टे नहीं लाये हैं, वे धारण कराये जा सकें ।

(६) यज्ञ के अन्त में आरती सब उपस्थित लोगों को दी जाती है । यज्ञ-भस्म भी सभी लोग लगाते हैं और अवघ्राण का घृत भी हाथों में मलने और अग्नि की ओर हाथ करके सभी तपाते हैं । यदि उपस्थिति थोड़ी है, तब तो एक पात्र से ही काम चल जाता है, पर अधिक भीड़ हो तो एक पात्र के कारण बहुत समय नष्ट होता है । ऐसी दशा में कई पात्र रखे जायें और कई स्वयं सेवक अलग-अलग पात्रों में आरती के दीप, यज्ञ भस्म और टपकाया हुआ घृत लेकर सब के पास धूम जायें । इसी प्रकार समय की बहुत बचत हो सकती है । शान्ति-कलश के जल के छींटे देने में भी यही बात है । भीड़ के अनुपात से कम या अधिक जल पात्र तथा छींटे देने वाले स्वयं सेवकों की व्यवस्था रखी जाये । यह कार्य भी महिलाओं में महिला स्वयं सेविकाएँ और पुरुषों में पुरुष स्वयं सेवक सम्पन्न करें । जहाँ हाथ में कलावा बाँधने या तिलक करने की आवश्यकता पड़े, वहाँ भी महिला और पुरुष स्वयं सेवकों को अपने-अपने वर्ग में काम करने दिया जाय ।

(३) याज्ञिक

यज्ञ में भाग लेने तथा उसकी सफलता के लिए स्थानीय नागरिकों से विशेष गायत्री-उपासना कराने की अपनी परिपाटी है । लोग उसे भावनापूर्वक निभाते भी हैं । गायत्री-उपासना सिखाने, समझाने का क्रम पहले से चलाया जाना चाहिए । इसी संदर्भ में पू० गुरुदेव, वंदनीया माता जी एवं गायत्री माता के चित्रों की स्थापना का क्रम भी अपनाया जा सकता है । यज्ञायोजन में भाग लेने के लिए आत्मिक और मानसिक पवित्रता तथा पात्रता के विकास में चित्र-स्थापना और नियमित उपासना का क्रम बहुत सहायक बन सकता है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञायोजनों की व्यवस्था और प्रबंध में यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि कार्यक्रम आद्योपांत सरल, सुन्दर, आकर्षक, कम खर्च में सम्पन्न किये जायें । इसके लिए मण्डप-निर्माण से लेकर अन्य आवश्यक कार्यों तक सुन्दरता, सादगी और मितव्ययिता का ध्यान रखा जाय ।

(४) मंडप-निर्माण

(१) मंडप को आकर्षक बनाने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया जाय । आम, जामुन, अशोक आदि के जल्दी न कुम्हलाने वाले पल्लव, केले के खम्भे, पत्तों के बन्दनवार उपलब्ध ऋतु फल, रंग बिरंगे छोटे-छोटे फूल आदि सूझ-बूझ के साथ लगाये जायें, तो उस प्राकृतिक सम्पदा से भी मंडप को असाधारण शोभा सज्जा के साथ सजाया जा सकता है । श्रम दान से ये वस्तुएँ आसानी से इकट्ठी की जा सकती हैं । भिन्न आकृति के कई वृक्षों के पत्ते क्रम बद्ध लगाये जायें तो वे भी नयनाभिराम लगते हैं । केले के पेड़ न मिलने पर उनके पत्ते भी काम दे जाते हैं । कमल के, अरबी के बड़े पत्ते भी शोभा देते हैं । सिंघाड़े, बेर, अमरूद, करेला, टमाटर, परबल, छोटी ककड़ी जैसी वस्तुओं को यदि पत्तों के बीच गूँथना आता है, तो मण्डप बहुत ही सुसज्जित बन जाता है ।

(२) शहरों में जहाँ वन-सम्पदा मिलनी कठिन है, यह सब वस्तुएँ रंगीन कपड़ों की छाया, झल्लर द्वार, बाँस बल्लियों पर कपड़े की लपेट से बन सकते हैं । झण्डियों, बेल, फूल-पत्ते आदि कागज को काटकर बनाना आता हो तो वह भी अपने ढंग की सुन्दरता से भरा-पूरा होता है । जहाँ - तहाँ शीशे में मढ़े चित्र- कपड़े पर लिखे आदर्श वाक्य यदि क्रम बद्ध रूप से लगे हों तो उससे शोभा में भी अधिक वृद्धि हो जाती है ।

(३) यज्ञ वेदी के चारों ओर कई रंगों से मिलाकर कई डिजायन के चौक पूरे जाते हैं । पिसा सोफ्ट स्टोन (सेलखड़ी) रंग कर कितने ही रंग बन जाते है । ड्राइंग-उपकरणों की सहायता से सधे हुए हाथ ऐसे बढ़िया चौक पूरते हैं कि उस कलाकारिता को देखकर सबका जी प्रसन्न होता है । महाराष्ट्र के साँचों द्वारा रंगोली काढ़ने का ढंग भी सुगम और आकर्षक है ।

(४) यज्ञ मंडप ही नहीं, जहाँ आयोजन हो रहा हो उस स्थल को झण्डियों, तोरणों से सजाया जाना चाहिए ।

(५) लम्बी बल्लियों पर बड़े आकार के अपने झण्डे लगाये जाने चाहिए । लाल मशाल के टीन से बने छोटे-बड़े स्टेन्सिल हर शाखा के पास रहने चाहिए, ताकि झण्डों का रंग फीका पड़ जाने पर दुबारा झण्डा रंगने के साथ-साथ उस पर लाल मशाल भी दुबारा अंकित की जा सके ।

(६) यज्ञ-मंडप की भूमि पहले से ही समतल और लीप पोतकर सही बना लेनी चाहिए । यदि संभव हो तो मंडप की भूमि को छः इंच या नौ इंच ऊँचा उठाने का प्रयत्न किया जाय ।

(७) यज्ञ-कुण्ड जमीन में खोदने की आवश्यकता नहीं । उन्हें जमीन पर ही बनाया जाय । जमीन से लेकर मेखलाओं की ऊँचाई तक की जगह हवन-सामिग्री के लिए पर्याप्त है ।

(८) सही माप एवं आकार के कुण्ड बनाने का काम लकड़ी के साँचों से जल्दी और सुन्दर ढंग से ही हो जाता है । मिस्त्री जानकार न हो तो कुण्ड अक्सर वेसाइज ओर बेतुके हो जाते हैं । इसलिए हर शाखा के पास कुण्ड बनाने के साँचे रहने चाहिए ।

(९) यज्ञ-शाला के चारों ओर रस्सियों की या बाँसों की बाढ़ बना देनी चाहिए, जिसमें होकर कुत्ते भीतर न आ सकें । जब यज्ञ बन्द रहे तब के लिए उसमें एक छोटा बाँस का दरवाजा भी रहे, जिसे बन्द करने से भीतर की सुरक्षा बनी रहे ।

(१०) एक कुण्ड की यज्ञशाला के लिए स्थान आठ फुट चौड़े और आठ फुट लम्बे से कम नहीं होना चाहिए, एक दो फुट सुविधानुसार उसे बढ़ाया भी जा सकता है । एक कुण्ड की यज्ञ शाला के चारों खंभे पर्याप्त है । नीचे ऊपर पकड़ कसी रहने से वह हिलने-डुलने नहीं पाती । कपड़े की छाया, कपड़ा लगाने से वह सुन्दर बन जाती है । यह आवश्यकता पल्लवों से भी पूरी की जा सकती है । पाँच कुण्डों नौ कुण्डी यज्ञ शाला का साइज बड़ा होता है । बाहर १२ खम्भे और बीच में ४, इस प्रकार १६ खम्भे लगाने पड़ते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पाँच कुण्डों की यज्ञशाला सामान्य रूप से १८×१८ फुट और ९ कुण्डों की २४×२४ फुट स्थान लेती है । बीच में ४ खम्भे ६×६ या ८×८फुट पर गाड़े जावें, मंडप की ऊँचाई ९ फुट से १५ फुट तक रखनी उचित है ।

(११) यज्ञशाला के चारों ओर गमलों में उगाई हुई गेहूँ, जौ, रिजका, मैंथी आदि की समान ऊँचाई की घनी हरियाली बहुत ही शोभायमान लगती हैं । यदि आयोजन से १०-१५ दिन पूर्व कुछ गमले इस तरह के बो दिये जायँ और उन्हें यज्ञशाला से सटाकर लगाया जाय तो वह हरियाली की किंकिणी पहने हुए बहुत आकर्षक लगेगी । यदि छोटे फूल के पौधों के गमले हों, तो वह भी बहुत सुन्दर लगते हैं ।

(१२) कुण्डों की संख्या बढ़ाने की प्रतिस्पर्धा नहीं की जानी चाहिए । साधारण आयोजनों में एक कुण्ड पर्याप्त है । यदि उपस्थिति अधिक हो तो पाँच कुण्ड या अधिक से अधिक नौ कुण्डों की यज्ञशाला बनाई जा सकती है । बहुत अधिक कुण्डों के यज्ञ नहीं किये जाने चाहिएँ ।

(१३) तीनों मेखलाएँ तीन रंगों से रंग लेनी चाहिए । नीचे की काली, बीच की लाल तथा ऊपर की सफेद रंगनी चाहिए । तीनों मेखलाएँ समान ऊँचाई-चौड़ाई की होनी चाहिए । एक फुट लम्बा और एक फुट चौड़ा भीतरी भाग रहना पर्याप्त है । इसके लिए औसतन दो-दो इंच ऊँचाई-चौड़ाई की प्रत्येक मेखला से सटी हुई एक नाली पानी भरने के लिए बरतनी चाहिए ।

(१४) संस्कारों के लिए एक कुण्डी यज्ञ के लिए काम में आने वाला मंडप बनाया और ठीक समय सजाया जाना चाहिए । चिह्न पूजा की तरह ऐसे ही आंगन में बिठाकर पूजा-पत्री की लकीर पीट देने से वह वातावरण बनता ही नहीं जो अभीष्ट प्रयोजन के लिए आवश्यक है, इसी लिए सुसज्जा का ध्यान पूरा-पूरा रखा जाय ।

संस्कारों में जो वस्तुएँ अतिरिक्त रूप से चाहिए, उन्हें पहले से ही कर्मकाण्ड विधान पर दृष्टि डालकर इकट्ठी कर लेना चाहिए ।

(१५) सभी पर्वों में प्रायः एक जैसा ही विधान है । प्रधान देव की एक सुन्दर झाँकी किसी ऊँची चौकी पर सजानी चाहिए । उस प्रधान वेदी को कलात्मक सुसज्जा युक्त इस सूझ-बूझ के साथ बनाना चाहिए की हर आगन्तुक को उसे देखकर प्रसन्नता हो ।

जहाँ किसी विशेष प्रयोजन के लिए सामाजिक यज्ञ होते हैं, वहाँ भी यथासम्भव उसके लिए भव्य मण्डप का ध्यान रखा जाता है । अधिक कुण्डों की यज्ञशालायें भी उसी अनुपात में विशाल रखी जाती हैं और उन्हें अधिक शोभायमान बनाने के लिए राशि भी अधिक खर्च की जाती है और अधिक आहुतियों के लिए कुण्ड-व्यवस्था आवश्यक होती है, ताकि अग्नि हवा से उड़ कर इधर-उधर न फैले । किन्तु जहाँ कम आहुतियों का यज्ञ करना है, वहाँ वेदी बनाकर ही काम चला लिया जाता है । इसमें समिधाएँ कम लगने और धुँआ न होने की सुविधा रहती है ।

आमतौर से जन्मदिवसोत्सव संस्कारों में एक कुण्ड का हवन होता है । और पर्व-त्योहारों तथा आयोजनों के अवसर का कुण्डों के अग्निहोत्र का प्रयत्न है । इससे हवन करने वाले उपयुक्त होता भी मिल जाते हैं और निर्माण कार्य में भी बहुत समय या झंझट नहीं रहता ।

चूँकि युग-सन्धि के दिनों एक लाख गायत्री-यज्ञ- करने का संकल्प है, इसकी पूर्ति एक कुण्डी जन्मदिवसोत्सवों ओर पाँच कुण्डी पर्व-त्यौहारों एवं प्रज्ञा-आयोजनों के समय होने वाले अग्निहोत्र के माध्यम से होगी । कुण्डों के स्थान पर चौबीस-चौबीस अंगुल ऊँची, लम्बी, चोड़ी तथा तीन अंगुल मोटी शुद्ध मिट्टी या बालू से वेदियाँ विनिर्मित कर दी जाती हैं । पानी छिड़क देने और गोबर से लीप देने, रंग बिरंगे चौक पूर देने से यज्ञ स्थान शोभायमान बन जाता है । एक वेदी के यज्ञ के लिए आठ फुट ऊँचा और छह फुट चौड़ा मण्डप पर्याप्त है । पाँच वेदियों के लिए ऊँचाई आठ फुट, किन्तु लम्बाई-चौड़ाई भी न्यूनतम बारह-बारह फुट चाहिए । ऊँचाई के लिए तो आठ फुट बाँस आसानी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से मिल जाते हैं । चौड़ाई के लिए ऊपर फ्रेम बाँधने हेतु भी इससे कुछ अधिक बड़ा बाँस ही चाहिए । शाखाओं को ऐसे बाँसों का प्रबन्ध पहले से ही अपने यहाँ बनाकर रखना चाहिए, ताकि एक कुण्डी या पाँच कुण्डी यज्ञ के लिए सरंजाम जुटाने में अनावश्यक भागदौड़ करने और सामान जुटाने में समय नष्ट न हो । सामयिक मण्डपों की शोभा, आम, जामुन आदि की टहनियाँ बाँधकर बनाई जा सकती हैं । पत्तों की हरियाली एक या दो दिन से अधिक नहीं ठहरती, पर इसकी लागात कम आती है ।

किन्तु यदि स्थाई प्रबन्ध हो तो पतले कन्ड्यूट पाइप के खंभे और फ्रेम बन सकते हैं । ऊपर छत तथा चारों ओर झल्लर पीले कपड़े की तरह लगाई जा सकती है । पाइप पतले होने पर कुरूप से लगते हैं, इसलिए चारों पायों पर पीले कपड़े का पाजामा जैसा भी पहनाया जा सकता है या पत्तों से, प्लास्टिक की पन्नियों से उसे मोटा बनाया जा सकता है । ऐसी यज्ञशालाओं का समर्थ शाखाओं से पूर्व से ही प्रबन्ध करके रखना चाहिए । ऐसे यज्ञशालाएँ शांतिकुंज में तैयार भी मिल जाती है ।

यज्ञ-व्यवस्था में बहुत से कार्य ऐसे होते हैं, जो पहले से ध्यान में रहें तो बहुत सुगमता से हो जाते हैं, अन्यथा बिगड़ते हुए काम पर खीझ तो उठती है पर वह संभल नहीं पाता । कुछ कार्य दूर से कठिन लगते हैं, किन्तु उनके क्रमिक चरण ध्यान में रहें-उन्हीं के अनुसार चला जाय तो कठिनाई नहीं होती । यज्ञ व्यवस्था के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित तथ्य तथा ढंग क्रमिक रूप से उद्धृत किए जाते हैं।

(५) जल-यात्रा

जलयात्रा के लिए मिट्टी के कलश रंग कर तैयार किये जाते हैं । इन्हें रंगने के लिए कुछ लोग वार्निश का उपयोग भी करते हैं । यह रंग होता तो बहुत पक्का है, किन्तु मँहगा पड़ता है । सादा पानी का रंग बहुत जल्दी खराब होता है । इस रंग को पक्का करने के लिए गोंद का घोल अथवा सरेस का घोल मिला दिया जाता है । सरेस को पानी में डालकर गर्म करना पड़ता है, तब वह घुलता है । फिर उसमें तैयार किया हुआ रंग काफी टिकाऊ हो जाता है ।

घड़े पीले रंग से रंगे जाते हैं । अच्छा रंग लाने के लिए २-३ अस्तर लगाने पड़ते हैं । एक बार का रंग सूख जाने पर दुबारा रंग किया जाय, अन्यथा सफाई नहीं आती । उस पर लाल रंग से 'ॐ', स्वस्तिक ज्योति आदि के चिह्न बनाये जाने चाहिए । यह रंग भी उसी ढंग से तैयार किया जाता है इसके लिए मोटे कागज पर काटे गये स्टैंसिल का उपयोग सुविधा-पूर्वक किया जा सकता है ।

घड़े रखने के लिये इडलियों की व्यवस्था अवश्य कर लेनी चाहिए । अन्यथा यात्रा के समय सिर पर तथा यज्ञ-शाला में जमीन पर उनके बार-बार लुढ़कने का भय बना ही रहता है ।

घड़ों का रंग खराब न हो, उस दृष्टि से उन्हें जल में डुबोकर नहीं भरना चाहिए । किसी अन्य पात्र से उनमें जल भर देना उचित है । महिलाओं को अधिक वजन न उठाना पड़े, इसलिए घड़े छोटे आकार के लेने चाहिए । यात्रा के समय घटों को जल से पूरा भरना भी आवश्यक नहीं होता । थोड़ा जल भर के उन्हें यज्ञ-शाला तक ले आया जाय, बाद में उन्हें पूरा भर दिया जाय ।

(६) हवन-कुण्ड

कुण्ड बनाने के लिए गड्ढा खोदने की आवश्यकता नहीं, समतल जमीन पर ही मेखलायें बना देना पर्याप्त है ।

मेखलाएँ साँचे के सहारे बहुत जल्दी तथा सुन्दर बन जाती हैं । खर्च भी कम लगता है । स्वयं सेवक लोग ही उसे बना सकते हैं । ईंट-गारे से बनाने के लिए कारीगर लगाना पड़ता है तथा समय भी बहुत लग जाता है । सांचा रखकर उसमें गीली मिट्टी भर, पीटकर समतल तथा मजबूत करें और सांचा सावधानी से ऊपर खींच लें । बाद में मिट्टी के गारे के द्वारा सँवारा जा सकता है ।

यदि बिना साँचे के केवल मिट्टी से मेखला बनानी हो तो पूरी मेखला एक ही प्रयास में नहीं बनानी चाहिए । गीली मिट्टी एक ओर से संभाली जाय, तब तक अपने ही वजन से दूसरी ओर फैलने लगती है । बहुत मेहनत करने पर भी सही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आकार नहीं आता । पहले मेखला का प्रारम्भिक रूप तैयार करके कुछ समय मिट्टी को शुष्क होने का समय देना चाहिए । उसके बाद दूसरे या तीसरे हाथ में ठीक आकार का कुण्ड बन जाता है, समय की भी बचत हो जाती है ।

मेखलाएँ रंगने के लिए सादा खड़िया, गेरू तथा काला रंग प्रयोग में लाये जाते हैं । रंग ऊपर की मेखला से करना प्रारम्भ किया जाय, अन्यथा ऊपर का रंग बहकर नीचे की मेखला का रंग बिगाड़ देगा ।

(७) पंच वेदियाँ

सर्वतोभंद्र तथा तत्व वेदियों के लिए प्रारम्भ में लकड़ी की चौकियों पर पीला कपड़ा बिछाकर उसे चारों ओर से धागे या सुतली से बाँध देना चाहिए । ताकि वह खिसके नहीं । कपड़े पर पैंसिल ठीक से नहीं चलती, उस पर कोण अथवा वर्ग बनाने के लिए मोटा धागा तथा हल्दी अथवा कोई भी सादा रंग प्रयोग में लाते हैं । कपड़े पर इच्छित आकार बनाने के लिए सही निशान लगा लिए जायें । फिर धागे पर हल्दी या रंग गाढ़ा घुला हुआ लगा लें । बिन्दुओं के मध्य रेखा खींचनी हैं, उन पर तने हुए धागे को दबा कर उसका बीच का हिस्सा छोड़ देने से रंगा हुआ धागा कपड़े पर टकराता है और रंग की तरफ सीधी रेखा उस पर अंकित हो जाती है । चौखटे अथवा षट्कोण इसी ढंग से आसानी से बन जाते हैं । स्केल तथा दरजी द्वारा कपड़े पर चिह्न लगाने की रंगीन चाक से भी यह आकार बनाये जा सकते हैं ।

उन आकारों में रंगीन चावल भरे जाते हैं । चावल रंगने के लिए उन्हें रंग में भिगोकर सुखा लेते हैं । ऐसा करने में चावल अधिक देर तक पानी में नहीं रहने देना चाहिए, अन्यथा सूखने पर वह हट जाते हैं । चावल तुरन्त तथा सफाई से रंगने का एक ढंग और है । चावलों पर थोड़ा तेल या घी डालकर हलके हाथ से मल कर उन्हें चिकना बना दें । फिर सूखा ही रंग उन पर भुरक कर हल्के हाथ से उन्हें मल दें तो बहुत अच्छा रंग ऊपर चढ़ जाता है । इस प्रकार चावल रंगते समय एक रंग लगाने के बाद हाथ साबुन से धोये जायें तब दूसरे रंग से रंगें । अन्यथा हाथों में लगा पहले वाला रंग अपना प्रभाव दूसरे रंग के साथ दिखाने लगता है ।

(८) समिधाएँ

समिधाएँ कुण्ड के हिसाब से कटी हुई रहनी चाहिए । कुण्ड की लम्बाई-चौड़ाई से उन्हें थोड़ा छोटा ही होना चाहिए । बड़ी होने पर व कुण्ड में आड़ी-तिरछी डालनी पड़ती हैं । यह शोभा और सुरक्षा दोनों दृष्टियों से उचित नहीं ।

हवन-कुण्ड में समिधा लगाने का ढंग यह है कि समिधायें आस-पास कुण्ड के किनारे लगायी जायें तथा बीच में आहुतियाँ पड़ती रहें । अग्नि तेज करने के लिए छोटी-छोटी छिपटें बीच-बीच में आवश्यकतानुसार कुण्ड के मध्य में भी डाली जा सकती हैं । अग्नि की तीव्रता पड़ने वाली आहुतियों के हिसाब से बनाये रखनी चाहिए । अधिक आहुतियाँ एक साथ पड़ रही हों, तो अग्नि तीव्र रखी जानी चाहिए । समिधा इस हिसाब से डाल देनी चाहिए कि पहले वाली समिधा की लौ समाप्त होने के पहले नयी समिधा लौ पकड़ ले । अन्यथा लौ समाप्त होने से धुंआ होने लगता है और बहुत कठिनाई होती है । ऐसा प्रसंग आ पड़े तो किसी दूसरे कुण्ड की जलती हुई समिधा उस कुण्ड में लगायी जा सकती है । पंखे से तेज हवा करके लौ पैदा करने में कई बार धुँआ सारी यज्ञशाला में फैल जाता है । समिधा यदि बिल्कुल सूखी तथा पतली है, तो वह डालते ही एक दो मिनट में लौ पकड़ लेती है । यदि समिधा अपेक्षा कृत मोटी अथवा गीली है, तो उसे लौ पकड़ने में समय अधिक लगता है । समिधा की स्थिति देखकर उसके अनुसार उसे कुण्ड में लगाने की बात स्वयं सेवकों को भली प्रकार समझा देनी चाहिए ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(९) उच्चारण और निर्देश-

यज्ञ के समय मंत्रोच्चार और निर्देश सही ढंग से करने का बड़ा अच्छा प्रभाव लोगों पर पड़ता है । हवन करने वालों से सही ढंग से कार्य करा लेना तथा उनके मन में यज्ञीय सिद्धान्त बिठा देना इस दौरान संभव होता है । निर्देश टिप्पणियाँ छोटी, सुबोध तथा सही बनाने के लिए कार्यकर्ताओं को परस्पर मिल बैठ कर अभ्यास कर लेना चाहिए । इसके लिए अनेक स्वयं सेवक प्रशिक्षित कर लेने चाहिए ।

मंत्रोच्चार में भूलें न हों, स्वर न बिगड़े इसके लिए समान स्वर से मंत्र बोलने वाले एक से अधिक व्यक्ति माइक पर मंत्रोच्चार करें तो अधिक अच्छा स्वर भरता है । टिप्पणयाँ उनमें से कोई एक ही करता चले । व्यवस्था तथा सहयोग के लिए प्रशिक्षित स्वयं सेवक हर कुण्ड पर रहें, जो हर क्रिया को शुद्ध करने में होताओं की मदद को स्वयं भी करके दिखायें ।

(१०) चौक रंगोली -

यज्ञ शाला को चौक पूर कर रंगोली निकाल कर सुन्दर बनाया जा सकता है । इसके लिए महिलाओं में विशेष उत्साह भरे देने से नित्य प्रातः यज्ञ-कुण्डों तथा प्रधान वेदी के चारों ओर नयी - नयी चित्रकारी देखने को मिल सकती है । जहाँ रांगोली के ठप्पे मिल सकें वहाँ उनका उपयोग भी किया जाय ।

पक्की चित्रकारी पानी में घुली हुई गेरू तथा खड़िया में रंग मिला कर की जा सकती है । यज्ञशाला के चारों ओर तत्व-वेदियों, प्रधानवेदी, तथा यज्ञ-कुडों के चारों ओर यह चित्रकारी हर बार कर दी जाय तो ४ दिन तक यह शोभा रह सकती है ।

(११) यज्ञायोजन

अन्य आयोजनों की अपेक्षा काफी महत्व रखते हैं । यज्ञ व्यवस्था के विभिन्न चरण, उसके उपयुक्त व्यक्ति तथा साधन सामग्री पहले से तैयार रखना आवश्यक है । हर क्षेत्र में कुछ कार्यकर्ता इन विषयों में सिद्ध हस्त हैं, किन्तु यह आयोजन लगभग एक साथ सभी जगह होंगे

इसलिए हर स्थान पर स्वतंत्र व्यवस्था खड़ी करनी होगी । इस दृष्टि से आवश्यक चरण तथा वस्तुओं की विस्तृत जानकारी इन पृष्ठों पर दी जा रही है ।

आवश्यक सामान की सूचियाँ नीचे वर्गीकृत क्रम से दी जा रही हैं ।

यज्ञशाला-निर्माण

१.- एक कुण्ड की यज्ञ शाला के लिये ४ या ५ और ९ कुण्ड की यज्ञशाला के लिये १२ मझोले तथा ४ बड़े खम्भे लगाये जाते हैं । उसी पर नीचे छत बनाई जाती है ताकि, धुआँ निकलने की सुविधा बनी रहे ।

२- इन खम्भों को आपस में बाँध कर मजबूत ढाँचा खड़ा करने के लिए बाँस जितने आवश्यक हों ।

३- रंगीन कपड़ा यज्ञशाला की बड़ी वाली नीची तथा छोटी छत पर तानने के लिए ।

४-कपड़े की झल्लर चारों ओर लटकाने के लिये ।

५-रंगीन कपड़ा बाँसों से लपेटने के लिए ।

६- दरवाजों पर मेहराव बनाने के लिये बाँसों की खपच्चियाँ तथा उनके कोने सजाने तथा उनके कोने सजाने के लिये कपड़ा कागज या फूल पत्ते ।

७- कुण्ड बनाने के लिए लकड़ी का सांचा ।

८- गोबर, पीली मिट्टी यज्ञशाला लीपने के लिए

९- कन्नी-वसूली, मेखला सुडौल करने के लिए, फुटा नापने के लिए ।

१०-काला , लाल और सफेद रंग मेखलाएँ रंगने के लिये

११-बाँस, यज्ञशाला के बाहर घेरा बनाने के लिये । आवश्यक संख्या में ।

१२- परिक्रमा के बाहर घेरा बनाने के लिये रस्सियाँ तथा छोटे-डंडे ।

१३-फूलों के गमले, चारों ओर बोने के लिए जौ रिजका आदि के बीज ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१४- झण्डियों के लिये रंगीन कागज पतली पत्तियों तथा फूलों के बंदनवार, खम्भों के साथ लगाने के लिए यदि केले के पेड़ या पत्ते मिल सकते हों तो वह भी ।

पाँच वेदियों का सामान

१-चार चौकियाँ चार कोनों की डेढ़ फुट लम्बी-चौड़ी । एक चौकी बीच की दो-दो फुट लम्बी चौड़ी ।

२-दीपक को हवा से बुझने न देने के लिए शीशा लगा हुआ चौकोर डिब्बा उसके नीचे रखने का छोटा-पटला । धातु का दीपक । बत्ती के लिए रुई ।

३-पाँचों चौकियों तथा दीपक के पटले पर बिछाने के लिये पीले रंग के कपड़े, इतने बड़े कि आस-पास थोड़े लटकते भी रहें ।

४- पाँचों वेदियों पर देवस्थापन तथा षट्कोण बनाने के लिये चावल एक किलो । उन्हें रंगने के लिये काला, पीला, हरा रंग ।

५- पाँच कलश पाँचों वेदियों के लिये । पीले रंगे-चिते हुए तथा उनके ढक्कन । जल-यात्रा के लिये उतने कलश जितनी महिलाओं की सम्भावना हो ।

६-कलशों के ऊपर रखने के लिये पाँच नारियल । नारियलों पर लपेटने के लिये लाल रंग के छोटे-छोटे कपड़े ।

पूजा एवं यज्ञ

१-चावल
२-रोली
३-चन्दन एवं घिसने का पत्थर
४-कलावा
५ -यज्ञोपवीत
६-फूल आधा किलो
७-बताशे या किशमिश आदि नैवेद्य
८-अगरबत्ती के पैकिट
९-दियासलाई की डिब्बी
१०-कलशों के मुख में लगाने के आम के पत्ते तथा दूर्वा
११-कुशायें
१२-सुपाड़ी साबुत १०
१३-जल छोड़ने के लिए 'तस्ला 'चौड़ी कटोरी
१४-छोटा जल-कलश धातु का
१५-आरती के लिये शंख घड़ियाल, मजीरे आदि । आरती का दीपक घी या कपूर का जैसा भी प्रयुक्त करना है ।
१६-पञ्चपात्र, आचमनी एक देव-पूजा के लिये तथा हवन के लिये जितने व्यक्ति बैठने वाले हों, उन सब के लिए एक-एक ।
१७- छोटी थालियाँ हवन-सामग्री के लिये जितने व्यक्ति बैठने वाले हों, उतनी ।
१८- घृत-पात्र हर कुण्ड पर एक एक ।
१९-स्रुवा-स्रुचि, प्रणीता, पोक्षणी, स्फय यह पाँचों लकड़ी के यज्ञपात्र, प्रत्येक कुण्ड पर पाँचों का एक-एक सैट
२०- पंखा, अग्नि प्रज्ज्वलित करने के लिये, प्रत्येक कुण्ड पर एक-एक ।
२१-चिमटा, अग्नि सम्भालने के लिए प्रत्येक कुण्ड पर एक-एक ।
२२-आसन या चटाइयाँ याज्ञिकों के बैठने के लिए आवश्यकतानुसार ।
२३-गायत्री माता का छोटा चित्र प्रधान वेदी पर स्थापना के लिए । बड़ा चित्र मुख्यासन के लिए ।
२४- पंचामृत, गो-दुग्ध, गो-घृत, शहद, तुलसी -पत्र सबको देने के लिए ।
२५-स्विष्टकृत होम के लिए थोड़ा मेवा या मिष्ठान्न
२६-अन्त में वितरण करने के लिए प्रसाद ।
२७-हवन सामग्री प्रति ३०० आहुतियों के लिए १ किलो के हिसाब से ।
२८-अब यज्ञों में केवल आज्याहुति, पूर्णाहुति तथा वसोधारा घी की आहुति दी जायेगी, इसलिए प्रति कुण्ड पर १०० ग्राम पर्याप्त होगा ।
२९-पूर्णाहुति तथा वसोधारा को एक किलो घी अलग, यदि पाँच या नौ कुण्ड हों तो एक कुण्ड के लिए एक पाव घी पर्याप्त है ।
३०- पूर्णाहुति के लिए नारियल का गोला, जिसमें छेद करके थोड़ा घी डाल दियां जाय ।
३१-समिधाऐं आम, पीपल, गूलर, बरगद, छोंकर आदि पवित्र वृक्षों की लेनी चाहिए । वे सूखी हुई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुण्डों के साइज में टुकड़े की हुई धोकर सुखाई हुई, कीड़े-मकोड़े से रहित होनी चाहिए । एक हजार आहुतियों के लिए १५ किलो लकड़ी का हिसाब आता है, पर कहीं-कहीं अधिक तीव्र अग्नि जलाने या अधिक मात्रा में लकड़ी लगा देने से अधिक भी खर्च हो सकती है । किफायत से सावधानी पूर्वक काम चलाया जाय,तो यह खर्च दस किलो से भी कम रह सकता है ।

इनमें अनेक वस्तुऐं-उपकरण ऐसे हैं, जो एक शाखा से दूसरी शाखा को भेजे जा सकते हैं । कई शाखाऐं मिलजुल कर व्यवस्था कर लें अथवा एक समर्थ शाखा अपने क्षेत्र की शाखाओं को टूट-फूट-घिसाई का उचित व्यय लेकर देने की व्यवस्था बना लेने से बहुत सुविधा हो सकती है । हवन के काष्ठ पात्र, आचमनी, आसन जैसी चीजें हर शाखा अपना औसत आवश्यकता की खरीद लें तथा आयोजनों में उन्हें एकत्रित करने का काम चलाया जाय, यह व्यवस्था भी व्यवहार्य है ।

जो सामान इस तरह से सामूहिक व्यवस्था के अन्तर्गत तैयार किया जा सकता है, उसकी सूची यहाँ सुविधा की दृष्टि से दी जा रही है ।

१-यज्ञशाला के आच्छादन, झालरें तथा अन्य सजावट । परिक्रमा का घेरा बनाने तथा सभाओं में बैठने की व्यवस्था की सीमाएँ बनाने के लिए रस्सियाँ आदि ।

२-आचमनी- पंचपात्र, घृत-पात्र, हवन-सामग्री की तश्तरियाँ, आसन, हवन-काष्ठ-पात्र आदि ।

३-हवन-कुण्ड बनाने के साँचे

४-पंचवेदी स्थापना की चौकियाँ, इन्हें यदि फोल्डिग बनाया जाय तो और भी सुविधा जनक रहेंगी ।

५-मुख्य पूजा मंत्र के लिए गायत्री माता पू० गुरुदेव तथा मशाल आदि के चित्र तथा अन्य साज सज्जा ।

६-कपड़ों पर लिखे सद्वाक्य (बैनर) मशाल वाले झण्डे, पंडाल की सजावट के लिए आदर्श वाक्यों की तख्तियाँ ।

७- मसनद, गलीचे, चादरें आदि ।

८-शंख, झालर, झांझ आदि ।

९-प्रचार-उपकरण वाद्य यंत्र, यदि हो सके तो ।

यह सब सूचियाँ सांकेतिक हैं । अपनी आवश्यकता तथा परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन इनमें स्वाभाविक है । किन्तु हर हालत में पूर्व व्यवस्था के लिए इन्हें ध्यान में रखना आवश्यक है ।

(१२) विशेष

(१) आयोजन के प्रधान द्वार पर नव निर्माण साहित्य की पुस्तकों की प्रचार-सामग्री की दुकान रहे और उस पर ऐसा क्रिया-कुशल व्यक्ति बिठाया जाय, जो उसकी उपयोगिता बताकर लोगों को लेने के लिए उत्साहित कर सके ।

(२) यज्ञ का प्रसाद, युग निर्माण परिवार में पंचामृत है । गाय का दूध, दही, घी, शक्कर, तुलसी-पत्र, इन पाँचों को मिलाने से पंचामृत बनता है । यह प्रसाद सस्ता पड़ता है, गौ-गरिमा का स्मरण दिलाता है और सतोगुणी प्रभाव से युक्त है । हर धनी-निर्धन सरलता-पूर्वक इसकी व्यवस्था कर सकता है । इसलिए प्रसार में हलुआ आदि मँहगी चीजों की अपेक्षा सर्वत्र इसी का प्रचलन किया जाय ।

(३) पंचामृत हथेली पर लेने और पीने से हाथ चिपचिपा हो जाता है, इसके लिए पानी भरे गंगासागर हाथ धोने के लिए और तौलिया हाथ पोंछने के लिए भी तैयार रखनी चाहिए । यदि पानी फैलाने से स्थान गंदा होने का भय हो तो, इसके लिए एक टब, बाल्टी, भगौने आदि का भी प्रबन्ध करके रखा जाय ।

(४) मंत्र-पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में हों । जो शुद्ध उच्चारण कर सकते हों, उन्हें पुस्तक दी जायें । सारे मंत्र मिल - जुलकर बोले जाया करें । एक स्वर से, एक साथ बोलने की हिदायत आरम्भ में ही कर दी जाय । प्रधान मंत्रोच्चार-कर्ता के साथ-साथ सबका स्वर चले । यह अभ्यास आरम्भ में ही दो-चार बार उच्चारण करके करा लेना चाहिए, ताकि बीच में गड़बड़ी होने पर टोक-टाक न करनी पड़े ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(५) स्वस्ति-वाचन आदि के उपरान्त देव-पूजन के अक्षत पुष्प आदि जमीन पर जहाँ तहाँ नहीं फेंके जाने चाहिए । थालियाँ, तश्तरियाँ, दोने आदि स्वयं सेवक सबके पासे जायें और वस्तुएँ इकट्ठी कर लें, पीछे उन्हें किसी पवित्र जगह में विसर्जित कर दिया जाय, पूजा की वस्तुएँ पैरों तले कुचलती नहीं फिरनी चाहिए ।

(६) हाथ में कलावा बाँधने तथा तिलक लगाने का प्रयोजन पुरुषों के लिए पुरुष स्वयं सेवक महिलाओं के लिए महिला स्वयं सेविकाएँ पूरा करें ।

(७)आगन्तुकों के स्वागत के लिये प्रधान प्रवेश द्वार पर अपने कार्यकर्ता उपस्थित रहें । हर व्यक्ति को यथा स्थान बिठाएँ । पुरुषों और महिलाओं के क्रमबद्ध बैठने की व्यवस्था अलग-अलग की जाय और हर आगन्तुक को यथा-स्थान बिठाने की ड्यूटी अपने स्वयं सेवकों को सौंपी जाय । यह भी एक लोक-शिक्षण है । लाइन में खड़े होकर, भीड़ प्रयोजनों के करारे काम करने की तरह बैठना क्रम-बद्ध रूप सें जनता को सिखाया जाय, वह नागरिक कर्तव्य पालन का आरम्भिक और व्यावहारिक पाठ है ।

(८) पंसारियों के यहाँ आजकल लकड़ी के बुरादे में दुकान का कूड़ा0-कबाड़ा पीस कर और सड़े हुए गिरी के गोले या दूसरी घटिया चिकनाई मिला कर हवन-सामिग्री बना दी जाती है ।

ऐसी सामग्री खरीदने की अपेक्षा अपने समीपवर्ती जंगलों में से सुगन्धित तथा पौष्टिक गुणकारी जड़ी-बूटियों की एक लिस्ट दी जा रही है । इनमें से जो सुविधापूर्वक मिल सके, उतनी ही लेकर काम चलाया जा सकता है ।

रासायनिक पाउडरों से बनी चीनी की अपेक्षा देशी खांड या गुड़-सामग्री में सेर पीछे एक छटांक के अनुपात से मिला सकते हैं ।

पूर्णाहुति के लिए साबुत सुपाड़ी या गिरी का गोला लेना चाहिए । वसोधारा-इसके लिए निर्धारित पात्र भर के घी से ही करनी चाहिए । अधिक की आवश्यकता नहीं है ।

(९) समिधाएँ-आम, पीपल, गूलर, बरगद, छोंकर, ढाक, चंदन, देवदारु, अगर, तगर, आदि की लेनी चाहिए । नीम और बबूल की लकड़ी प्रयुक्त नहीं की जाती ।

समिधाएँ पानी में धोकर कुछ पहले ही सुखा लेनी चाहिए । गीली नहीं होनी चाहिए । कीड़े मकोड़े न हों, सड़ी घुनी न हो, इसका ध्यान रखना चाहिये । पतली फाड़कर एक फुट से भी छोटी बना लेनी चाहिए, ताकि कुण्ड से बाहर न निकलती रहें । १०८ आहुतियों के लिये प्रति कुण्ड ५ किलो सामिधाओं की जरूरत पड़ती है ।

तिल, जौ, चावल आदि धान्य अब देश में कम है । सुगन्धित जड़ी बूटियों की तुलना में उनका गुण भी स्वल्प है । इसलिये अपने यज्ञों की हवन-सामिग्री मे अन्न नहीं डाले जाने चाहिये ।

हवन में काम आने वाली प्रमुख ओषधियाँ यह हैं - (१) छार छबीला (२) तालीस पत्र (३) शीतल चीनी (४) कपूर कचरी (५) देवदारू (६) अगर (७) तगर (८) इन्द्र जौ (९) गूगल (१०) चन्दन चूरा (११) जायफल (१२) पोहकर मूल(१३) मजीठ (१४) दाल चीनी (१५) तेजपात(१६) चिरायता (१७) खस (१८) गोखरू बड़ा(१९) मोचरस (२०) तालपर्णी (२१) पृष्ठपर्णी(२२) वायविडंग (२३) नागरमोथा (२४) शतावर (२५) ब्राह्मी (२६) गोरखमुंडी (२७) बच (२८) शंख पुष्पी (२९) लौंग (३०) तोमर के बीज (३१) गुलाब के फूल (३२) पद्माख (३३) जटामाँसा(३४) नेत्रवाला (३५) बड़ी इलायची (३६) उन्नाव (३७) नागकेशर (३८) असगन्ध(३९) बालछड़(४०) ताल मखाना(४१) पित्त पापड़ा (४२) चित्रक (४३) भारंगी (४४) सौंफ(४५) मुलहटी(४६) लाल चन्दन (४७) काकड़ा सिंगी (४८) अतीस (४९) दारू हल्दी (५०) कोंच के बीज(५१) भोज पत्र (५२) आंवला(५३) बहेड़ा(५४) हरड़ सोंठ (५५) (५६) पटोपलत्र (५७) प्रियंगु (५८) शतावर (५९) लाजवंती ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इनकी मात्रा सुविधानुसार न्यूनाधिक भी रखी जा सकती है । प्रयत्न यह करना चाहिए कि अपने समीपवर्ती जंगल में इनमें से जो जड़ी - बूटी आसानी से मिल सके । उन्हें श्रमदान से खोदा, सुखाया, कूटा जाय । यह सामग्री सर्वोत्तम है । यदि यह न मिले तो डेढ़ रुपया किलो के भाव से शुद्ध सामग्री गायत्री तपोभूमि मथुरा से मँगा लेनी चाहिए ।

यदि आठ व्यक्ति सामग्री होमने वाले और एक घी की आहुति देने वाला हो, और १०८ आहुतियों को वे लोग हवन करें, तो ये ९७७ आहुतियाँ हुईं। चार आहुति और बढ़ा दी जायें तो यह १००० आहुति का हवन माना जायगा । इतने में ढाई किलो सामग्री, ३०० ग्राम घी तथा ८ किलो सामिधा लगेगी । उपस्थिति अधिक हो, तो सामग्री उसी अनुपात से और बढ़ सकती है । अधिक कुण्ड या अधिक आहुति हों, तो उसका खर्च इसी हिसाब से फैला लेना चाहिए ।

(१०) यज्ञ-कार्य में घृत के उपयोग का प्रावधान है, पर वह न मिले तो गौ दुग्ध भी काम में लाया जा सकता है । तेलों तथा हानिकारक रसायनों से बने घृत की शक्ल वाले बेजीटेबल घी के प्रयोग की अपेक्षा से तो यही अच्छा है कि शुद्ध गौ दुग्ध का प्रयोग कर लिया जाय । समिधाओं में अनेक प्रयोजनों के लिए विभिन्न काष्ठों के उपयोग का प्रावधान बताया गया है, पर यदि वैसा उपलब्ध न हों तो आम, पीपल ,चन्दन, देवदारु आदि के काष्ठ भी प्रयुक्त हो सकते है ।

अतिथि

बड़े सम्मेलन आयोजनों में यदि बाहर के अतिथि पधारे हों, तो उनके लिए दाल, चावल, शाक जैसा कच्चा समझा जाने वाला भोजन ही बनाना चाहिए । छूत - छात के कारण पूड़ी पकवान ही ग्रहण करने के ढकोसले को तोड़ने के लिए और अनावश्यक लोगों के स्वादिष्ट भोजन के लिए भोजन-शाला में घुस पड़ने की प्रथा को रोकना ही उचित है ।

प्रसाद और भोजन

पंचामृत युग निर्माण परिवार का मान्य प्रसाद है । यज्ञीय आयोजन के अन्त में पंचामृत वितरण के लिए आवश्यक वस्तुओं के प्रबन्ध की बात अभी से ध्यान में रखनी चाहिए । चिपचिपे हुए हाथों की सफाई के लिए पानी के बर्तन आदि आवश्यक उपकरणों को प्रबन्ध पहले से ही कर लेना सुविधाप्रद रहता है ।

स्थानीय कार्यकर्ताओं को अपने भोजन की व्यवस्था घर पर ही करने बात ध्यान में रखी जाये । बाहर के अतिथियों और परिजनों के लिए सामूहिक भोजन की व्यवस्था ही ठीक रहती है । दाल, चावल, रोटी और सब्जियों का सादा सात्विक भोजन ही तैयार किया जाय । छूतछात, स्वागत और स्वाद की दृष्टि से पूरी-कचौड़ी तथा पकवान्नों में व्यर्थ में पैसा बर्बाद न करने की बात को ध्यान में रखकर कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए ।

साहित्य स्टॉल-आयोजन स्थल के प्रधान द्वार पर नव निर्माण साहित्य के विक्रय की व्यवस्था की जानी चाहिए । आवश्यक साहित्य और प्रचार सामिग्री समय से पूर्व ही मंगवा कर रख लेना चाहिए । कार्यकुशल स्वयं सेवकों की व्यवस्था का प्रबन्ध भी पहले से ही कर लेना चाहिए ।

वर्तमान स्थिति और हमारे यज्ञायोजन

अपनी मर्यादाओं के प्रति हम अधिक जागरूक रहें

गायत्री-यज्ञों के साथ जुड़े हुए युग निर्माण सम्मेलन अपने प्रचार-कार्य के विशेष माध्यम है । प्रभात फेरियाँ, प्रचार फेरियाँ और दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन, जन - जनों के साथ जुड़े रहते हैं । इनके द्वारा जन-साधारण की धर्मश्रद्धा को प्रगतिशील प्रयोजनों के लिये मोड़ देने का उद्देश्य आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हो सका है ।

इन आयोजनों के संदर्भ में जहाँ-तहाँ सरकारी अधिकारियों द्वारा अब पूछताछ होने लगी है । वर्तमान स्थिति में आजकल हर क्षेत्र में सतर्कता बरती जा रही है । अस्तु, इस प्रकार के प्रचार अभियानों के संबध में अधिक जानना और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वस्तुस्थिति को समझना अधिकारियों का कर्तव्य है । इस पूछताछ से कहीं किसी को परेशान होने की जरूरत नहीं है ; यह जागरूकता और सर्तकता का चिह्न है, इसका स्वागत किया जाना चाहिए और वस्तुस्थिति समझने में अधिकारियों का पूरा सहयोग करना चाहिए । उपरोक्त पंक्तियों में मिशन के उद्देश्य एवं स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी दे दी गयी है ।

वर्तमान स्थिति का क्या प्रभाव अपने कार्यक्रमों पर पड़ता है ? क्यों हमें अपनी गतिविधियों में कोई हेर-फेर करना चाहिए , ऐसे पत्र प्रायः रोज ही आते हैं । इनका उत्तर एक ही है कि हमारे रचनात्मक क्रिया-कलापों पर वर्तमान प्रतिबन्धों का कोई असर नहीं पड़ता । हम न तो राजनैतिक तोड़-फोड़ में संलग्न है और न आर्थिक-सामाजिक भ्रष्टाचार फैलाते है । वर्तमान स्थिति में जिन प्रवृत्तियों पर अंकुश लगता है, उनसे हमारा दूर का भी सम्बन्ध नहीं है । अस्तु, हमें अपने सभी कार्यो को पूर्ववत् उसी उत्साह से जारी रखना चाहिए । आयोजनों के अवसर पर स्थानीय अधिकारियों से मिल लेना चाहिए । वे यदि कुछ फेर बदल करने के लिये सतर्कता बरतने का आश्वासन देने के लिए कहें, तो उनके परामर्श को मान्यता देनी चाहिए और सहयोग करना चाहिए ।

अनुशासन के हम पूरे समर्थक हैं । वैयक्तिक और सामाजिक प्रगति के लिए उसकी उपयोगिता पर हम सदा से बल देते रहे हैं और उच्छृखंलता की भर्त्सना करते रहे हैं । अर्थिक भ्रष्टाचार, कामचोरी, हरामखोरी, गुण्डागर्दी पर अंकुश लगाये बिना कोई देश प्रगति नहीं कर सकता । इनके निवारण के प्रयास सामाजिक स्तर पर हो या राजनैतिक स्तर पर, दोनों ही अपनी दृष्टि में समान महत्व रखते हैं । वर्तमान स्थिति की घोषणा के साथ-साथ इन दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध जो अभियान चलाया गया है, उसमें सरकारी प्रयासों के साथ जन सहयोग का जुड़ना भी लाभप्रद है ।

गायत्री-यज्ञों सहित युग निर्माण-सम्मेलनों के अवसर पर प्रायः सरकारी अधिकारियों द्वारा पूछताछ के प्रसंग अधिक आते हैं । अपने यज्ञों की रूपरेखा भी यदि उन्हें मिशन के स्वरूप की तरह ही समझा दी जाय, तो इस सफाई से कठिनाई बढ़ने और उलझनें उत्पन्न होने का अवसर ही न आयेगा वरन् सहयोग का ही पथ-प्रशस्त होगा ।

अपने मिशन द्वारा आयोजित गायत्री यज्ञों में आरम्भ से ही अनाज का एक दाना भी न जलाये जाने का प्रावधान है । जबकि पुराने ढर्रे के यज्ञों में तिल, जौ, चावल जैसे खाद्यान्न प्रचुर परिमाण में होमे जाते हैं । हर समझदार आदमी जानता है कि अपने देश में अनाज की कितनी कमी है । अन्न का एक -एक दाना बचाया जाना चाहिए । हवन जड़ी-बूटियों से पूर्ण शास्त्रीय विधि-विधान के साथ हो सकता है, तो हम अन्न क्यों जलायें ? अपने यज्ञों में जो शाकल्य होमा जाता है, वह स्थानीय लोगों द्वारा समीपवर्ती क्षेत्र से सुगधित बलवर्धक और रोग निवारक वनस्पतियों को श्रमदान द्वारा एकत्रित करके तैयार किया जाता है । समिधाएँ भी प्रायः इसी प्रकार इकट्ठी होती है । श्रमदान की सामूहिक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना हमें सब प्रकार अभीष्ट है । यज्ञ में प्रयुक्त होने वाला जल भी महिलाएँ किसी पवित्र जलाशय से लाने के लिए श्रमदान करती हैं और उसके लिए कलश-यात्रा जुलूस निकालती हैं । बहुत कम अवसर ऐसे होते हैं, जिनमें हवन-शाकल्य बाजार में पैसा देकर खरीदना पड़ता है । यज्ञशालाएँ बनाने का काम भी मजूरों से कम और सेवाभावी स्वयंसेवकों के श्रम से ही अधिक होता है ।

घी भी आवश्यक खाद्य पदार्थ है । आज अपने देश में दूध घी की भारी कमी है । बच्चों और बीमारों के लिए भी वह पदार्थ दुर्लभ हो रहे हैं । फिर पुरातन पंथियों की तरह यज्ञ-प्रयोजन के लिए उसका प्रचुर प्रयोग करने की छूट विवेकशीलता नहीं दे सकती । गोरक्षा और पशु-पालन को श्रेय देने के लिए घृत को यज्ञ-कृत्य का एक आवश्यक अंग माना जरूर है, इसके लिए कुछ घृत आहुतियों का शास्त्रीय विधान भी है । विधान का निर्वाह हो जाय तो घी का अपव्यय न होने पाये । इसके लिए एक मध्यवर्ती मार्ग निकाल लिया गया है । प्रत्येक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुण्ड पर एक दिन में ५० ग्राम से अधिक घी न होमने का अपना नया प्रावधान है । पाँच कुण्ड का गायत्री यज्ञ कहीं हो रहा और वह तीन दिन चले तो समझना चाहिए कि उसमें ५०×५×३=७५० ग्राम अर्थात् लगभग पौन किलो अधिक से अधिक एक किलो घी का खर्च होगा । यह प्रतीक मात्र है । इतनी छोटी मात्रा में राष्ट्रीय अपव्यय जैसी संज्ञा नहीं दी जा सकती । फिर अपने यज्ञों द्वारा जो जनसाधारण की प्रेरणा दी जाती है, उसे देखते हुए तो इतना खर्च हर दृष्टि से इतना नगण्य माना जायगा कि उसे चर्चा का विषय बनाना तिल का पहाड़ अपने अज्ञान या विद्वेष का परिचय देना ही कहा जायेगा ।

हमारे गायत्री यज्ञों के साथ -साथ दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से जोड़कर रखी गयी है । इसी से उनकी उपयोगिता और गरिमा में चार चाँद लगे हैं । आहुतियाँ देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आवाहन किये गये देवताओं को देव दक्षिणा देनी पड़ती है । देवता पाप का त्याग और पुण्य का ग्रहण चाहते हैं । ऐसे साहस को देखकर प्रसन्न होते हैं । अस्तु, यज्ञ में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक होता को अनिवार्य रूप से अपना एक दोष छोड़ने और एक गुण बढ़ाने की प्रतिज्ञा अग्निदेव की साक्षी में लेनी होती है । जो इसके लिए तैयार हों उन्हीं को यज्ञ में सम्मिलित होने की आज्ञा मिलती है ।

देव-दक्षिणा में छोड़ी जाने वाली बुराइयाँ प्रमुख हैं (१) नशेबाजी (२) आलस्य (३) क्रोध कटुवचन (४) बेईमानी, अनीति, उपार्जन, मुफ्तखोरी (५) जमाखोरी, मुफ्तखोरी, मुनाफाखोरी, कर चोरी, मिलावट कम नाप-तौल (६) रिश्वत देना और लेना (७) दहेज लेना और देना(८) मृतक भोज एवं बड़े भोज करना (९) जाति- पाँति के नाम पर ऊँच - नीच (१०) स्त्रियों का दर्जा पुरुषों से नीचा मानना, पर्दा प्रथा (११) बाल विवाह – अनमेल विवाह (१२) जुआ खेलना(१३) अशिष्टता, उद्दण्डता (१४) फिजूल खर्च(१५) अन्न की बर्बादी-थाली में जूठन छोड़ना(१६) भिक्षा व्यवसाय (१७)व्यभिचार (१८) नागरिक-कर्तव्यों की अवहेलना (१९) वैयक्तिक और सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन (२०) राष्ट्र की गरिमा, व्यवस्था एवं प्रगति में कमी करने वाला कोई काम । इनमें जो दोष जिनके अंदर हों, उसे वह त्यागना चाहिए । इन दोषों के विपरीत स्थिति में सत्प्रवृत्तियों के जो गुण बनते हैं, उन्हें ग्रहण करना और आजीवन निष्ठापूर्वक पालना व्रत-धारण है । इस देव-दक्षिणा एवं व्रतधारण की प्रक्रिया को यज्ञ में बैठने वाले संकल्पपूर्वक दोहराते हैं, घोषणा करते हैं और यज्ञवेदी पर अक्षत पुष्प चढ़ाते हुए उस व्रत-धारण का सदा निष्ठापूर्वक अपनाये रहने का वचन देते हैं । अब तक छोटे-बड़े हजारों यज्ञ हो चुके हैं और उनके लाखों व्यक्तियों ने अपने दोष-दुर्गुणों का परित्याग करके क्रमशः अधिकाधिक परिष्कृत जीवन जीने का व्रत लिया है । इन सबकी पीछे खोज-खबर ली जाती रहती है । अधिकांश को अपने व्रत पर अटल पाया जाता है । जो शिथिलता बरतते हैं, उन्हें फिर स्मरण दिला कर उनके व्रत पर आरूढ़ कराया जाता है । इस प्रक्रिया के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अभियान के संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने और समाज के स्तर को ऊँचा उठाने में उत्साहपूर्वक प्रयत्नशील दिखाई पड़ता है । नव निर्माण की दिशा में इसे एक अति महत्वपूर्ण कदम कहा जाय तो उसमें तनिक भी अत्युक्ति न होगी ।

अपने यज्ञ-आयोजनों मे जाति - पांति का भेदभाव नहीं रखा जाता । पुरातन पंथियों के अनुसार यज्ञ में केवल ब्राह्मण ही होता होते थे, अन्य वर्ण वालों एवं स्त्रियों को उनमें सम्मिलित होने का अधिकार नहीं था । उन प्रतिगामी बन्धनों को तोड़कर प्रत्येक मनुष्य बिना किसी भेदभाव के इन आयोजनों में समान रूप से भाग लेता है । जिन पर प्रतिबन्ध लगे थे, उन्होंने इस परिवर्तन का अति उत्साह पूर्वक स्वागत किया है । यही कारण है कि अपने आयोजनों में महिला वर्ग को पूरे उत्साह के साथ भाग लेते हुए देखा जा सकता है । इसी प्रकार जाति-पांति के नाम पर प्रतिबन्धित पुरुष वर्ग को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुरातन पंथियों की तुलना में कहीं अधिक संख्या में भाग लेते हुए पाया जाता है ।

इसके अतिरिक्त अपने आयोजनों में एक और भी विशेषता है कि भोजन सम्बन्धी पुरातन पंथी मान्यताओं का पूर्णतया बहिष्कार करके दाल-भात, रोटी-शाक की कच्ची कही जाने वाली छूत लगने वाली रसोई ही उपस्थित लोगों को परसी जाती है । परम्परानुसार लोग ब्राह्मण या अपनी ही जाति वालों के हाथ की कच्ची रसोई ग्रहण कर सकते हैं । प्रस्तुत यज्ञ- आयोजनों में इस संकीर्णता को हटा दिया गया है । सहोदर भाई और स्वजनों की तरह इसी कच्ची रसोई को बिना किसी भेदभाव के पकाते, परोसते, और खाते हैं, इससे पिछले दिनों जिस 'सहभोज' को बड़ा सुधारवादी माना जाता था । अब वह सार्वजनीन बन गया है और उस क्षेत्र में चल रहा भेदभाव लाखों करोड़ों लोग के मन से इन्हीं आयोजनों द्वारा हट गया है । इस परिवर्तन के दूरगामी परिणाम हुए हैं और मनुष्य-मनुष्य के बीच मुद्दतों से चल रही ऊँच-नीच की भावना का उत्साह वर्धक निराकरण हुआ है ।

यज्ञों में दान, चढ़ावा, आरती आदि माध्यमों से जो भी पैसा आता है, वह विशुद्ध सार्वजनिक सम्पत्ति होती है । वह स्थानीय यज्ञ-समिति की सम्पत्ति रहती है । यज्ञ-खर्च काटकर यदि कुछ बचता है, तो उससे शाखा के प्रचार-साधन बढ़ाने में अथवा आवश्यकतानुसार अन्य रचनात्मक कार्यों में लगा दिया जाता है । प्रचार-साधनों में संगीत के वाद्य-यंत्र, स्लाइड प्रोजेक्टर, लाडउस्पीकर, टेप रिकॉर्डर, यज्ञ उपकरण, फर्श, मंच-पण्डाल बनाने के आच्छादन, आदर्श वाक्य, पोस्टर आदि खरीद लिये जाते हैं, जिनके सहारे स्थानीय एवं समीपवर्ती क्षेत्रों के कार्यक्रमों की सरलता पूर्वक व्यवस्था हो सके । प्रौढ़ पाठशाला, व्यायाम शाला, ज्ञान मन्दिर निर्माण, दान-उपकरण जैसे साधनों के लिए खर्च कर दिया जाता हैं । बाहर से आये वक्ता-प्रचारकों का मार्ग व्यय आदि भी इसी बची राशि में से दिया जाता है ।

अधिक कुण्डों के यज्ञ करने पर कहीं भी जोर न दिया जाय । युग निर्माण सम्मेलनों में पहले में भी राज-नीति सम्बन्धी कोई विषय नहीं छुए जाते फिर भी हलका - फुलका प्रसंग कभी-कभी निकल भी आता था । अब इन दिनों वर्तमान स्थिति की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए अपने मूल विषय से थोड़ा भी विषयान्तर होने देकर राजनीतिक चर्चा पर कड़ी पाबंदी रखनी चाहिए । वैयक्तिक एवं सामाजिक कर्तव्य पालन, राष्ट्रीय अनुशासन का प्रतिपादन अपने आप में इतना सर्वांगपूर्ण हैं, कि यदि उसे जनमानस में उतारा जा सके तो सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में जिस राष्ट्रीय प्रगति की अपेक्षा की जा रही है, उसका आधार भली प्रकार बनता और जमता है । हम पहले भी अपनी सीमा-मर्यादाओं का ध्यान समझते रहे हैं । वर्तमान स्थिति में तो हमें इस संदर्भ में और भी सजग सतर्क रहना चाहिये ।

यज्ञों की पूर्णाहुति और वृक्षारोपण

वृक्ष, वनस्पति और मनुष्य का जीवन परस्पर गुंथा हुआ है । दोनों एक-दूसरे पर निर्भर हैं । मनुष्य की साँस कार्बन डाइ ऑक्साइड छोड़ती है और आक्सीजन ग्रहण करती है । इसके ठीक विपरीत वृक्ष कार्बन डाउ आक्साइड खातें और आक्सीजन उगलते हैं । प्राणि घास - पात खाकर निर्वाह करते हैं । उस आहार का मल-मूत्र वनस्पतियों के लिए खाद बनकर काम आता है ।

भूमि-संरक्षण और वर्षा का आकर्षण, यह पेड़-पौधों का काम है । इन्हीं के सहारे मनुष्य का काम चलता है । यदि वनस्पति न रहे, तो मनुष्यों तथा अन्यान्य प्राणियों का निर्वाह भी असम्भव है ।

वायु, पृथ्वी, जल, तो उनसे अनुग्रहीत हैं ही । अग्नि-प्रज्ज्वलन में भी उन्हीं की लकड़ी काम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आती है । आकाश में जो धुआँ, धूलि आदि का जो प्रदूषण बढ़ता है, उसे भी वृक्षों की सत्ता का शमन करती है ।

इसलिए वृक्षारोपण भी पंच तत्वों- देवों की- पूजा का प्रत्यक्ष उपचार है । यज्ञ-आन्दोलन के साथ हमें वृक्षारोपण का आन्दोलन भी साथ मिलाकर चलना चाहिए । प्रयत्न यह करना चाहिए कि जहाँ अग्नि होत्र हो, वहाँ वृक्ष-वनस्पति के आरोपण का भी कुछ न कुछ प्रयत्न अवश्य किया जाना चाहिए ।

शास्त्रों के श्राद्ध प्रकरण में आता है कि पितरों की सद्गति के लिए वृक्षों का आरोपण किया जाय । यह एक प्रकार की धर्मशाला बनाने जैसा पुण्य है । उसकी तुलना सदावर्त लगाने से भी की गई है ।

वृक्षों की छाया में मनुष्य, पशु विश्राम करते है । पक्षी उन पर घोंसले बनाते हैं, और भी कितनी ही जीव-जन्तु उनका आश्रय ग्रहण करते हैं । आहार भी अनेकों को मिलता है । पत्तों को पशु चर लेते हैं । फल-फूलों के लिए इच्छुक, आतुर तो अनेकों ही रहते हैं । उनका उपयोग ओषधियों के रूप में भी होता है ।

ऊँचे वृक्षों की सघनता एक प्रकार की विद्युत शक्ति लिए हुए होती है । उसमें चुम्बक के गुण पाये जाते हैं । उसका प्रभाव और संकेत बादलों को वृक्षों को ओर खिसकने का होता है । फलतः सघन वृक्षों वाले इलाकों में वर्षा अधिक होती है । यह सबसे सस्ता और सरल उपाय है कि जिस क्षेत्र में अधिक पानी बरसने की आवश्यकता अनुभव की जाय, वहाँ अधिक लम्बाई वाले देवदारु स्तर के पेड़ बहुलता के साथ लगाए जाँय । छोटे गुल्मों और पौधों में यह कार्य नहीं होता , क्योंकि उनकी निज की आकर्षण शक्ति पृथ्वी के इर्द-गिर्द ही बिखरी रहती है । वह ऊपर की दिशा में अधिक दूरी तक अपना प्रभाव नहीं फेंक पाते । वृक्ष वर्षा बुलाते हैं, यह मान्यता लौकिक कथाओं से लेकर वैज्ञानिक परीक्षणों तक से सिद्ध होती रही है ।

जहाँ यज्ञ हो, वहाँ उनकी स्मृति स्वरूप एक भवन बनाना चाहिए । यज्ञ देवालय भी है । वृक्ष को यज्ञ का स्मारक देवालय भी माना जा सकता है । इसलिए जहाँ भी यज्ञ हो, वहाँ उपयुक्त जमीन खोजकर छोटे-बड़े, सुगन्धित, पौष्टिक रोगनाशक गुण वाली चिरस्थायी वनस्पति लगानी चाहिए । इसके लिए कहाँ, भूमि की कैसी व्यवस्था है, यह देखना आवश्यक है ।

अशोक, पीपल, बरगद, आम जैसे बड़े वृक्षों कि लिए बड़ी जमीन चाहिए और उनकी सिंचाई, रखवाली के लिए भी लम्बे समय तक उत्तरदायित्व उठाने पड़ते हैं । जो ऐसी व्यवस्था कर सकें वे बड़े वृक्ष भी लगा सकते हैं, किन्तु जिनके पास जमीन नहीं है या काम हैं, वे फूलदार चिरस्थायी पौधे लगा सकते हैं । अगर, तगर, हारसिंगार श्रावणी, गुड़हल स्तर के पौधे सुगन्धित पुष्प देते हैं । जगह भी कम घेरते हैं और दीर्घजीवी भी होते हैं । उन्हें आसानी से घर-आँगन में भी लगाया जा सकता है । जहाँ भी खाली जगह हो, वहाँ उस भूमि के मालिक से पूछकर आरोपण किया जा सकता है । उन्हें इतना विश्वास दिला देना काफी है कि इस बहाने तुम्हारी भूमि पर कब्जा नहीं किया जा रहा है । भूमि ही नहीं, वृक्ष भी तुम्हारी सम्पदा होगी । मात्र उसको हम तो देव-प्रतिमा की तरह स्थापित करेंगे और पूजते रहेंगे ।

शिवजी की प्रतिमा पत्थर की एवं खुले में बन सकती है । तुलसी के गमले भी वृक्ष-भगवान की प्रतिमा हैं । इसी मान्यता को इन दिनों नया प्रोत्साहन देने की भी आवश्यकता है । क्योंकि वायु-प्रदूषण पर्यावरण-प्रदूषण की जिस निवृत्ति के लिए एक लाख यज्ञों का संकल्प है, वहाँ उनके आयोजाक, होताओं, यजमानों को उसकी पूर्णाहुति का स्मारक-पुष्पवाटिका अथवा छोटे-बड़े उद्यान के रूप में विनिर्मित करने ही चाहिए । गुलाब, गिलोय जैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पौधे ऐसे भी हैं, जो भविष्य में यज्ञ-आयोजनों के लिए हविष्य के रूप में भी काम आ सकते हैं हरीतिमा-संवर्धन भी एक अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है । वृक्ष वनस्पतियों की, मनुष्य के जीवन में प्रत्यक्ष-परोक्ष महत्वपूर्ण भूमिका है । उन्हीं से शाक, फल, फूल, पशुओं का चारा, अन्न आदि प्राप्त होते हैं । वायुमण्डल में व्याप्त विषाक्तता को वे सोखते हैं और प्राण वायु बढ़ाते हैं । भूमि क्षरण रोकने, वर्षा लाने, वातावरण के अनुकूलन आदि में भी उनकी उपयोगी भूमिका रहती है । तुलसी, पुष्पवाटिका, शाक वाटिकाएँ, सार्वजनिक स्थानों पर वृक्षारोपण उनका पोषण करना ऐसे कार्य हैं, जिनसे आर्थिक लाभ, मानसिक शान्ति और पुण्य-लाभ के विविध उद्देश्य पूरे होते हैं ।

गायत्री यज्ञों और युग-निर्माण सम्मेलनों की सुविस्तृत शृंखला

व्यक्ति और समाज को सुव्यवस्थित बनाये रखने के लिये दो ही प्रक्रिया काम करती हैं- एक धर्म, दूसरा शासन । धर्म की दार्शनिक आस्थाओं के आधार पर व्यक्ति को उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता का दृष्टिकोण अपनाने और रीति-नीति निर्धारित करने की प्रेरणा मिलती है । सदाचार, संयम, अनुशासन, परमार्थ जैसी सत्प्रवृत्तियों के लिए उत्साह और साहस, धर्म- मान्यताओं से ही मिलता है । यह बाँध टूटा जाय तो व्यक्ति 'ऋणं कृत्वा सुरां पिवेत्' के निकृष्ट स्तर पर उतर आता है । व्यक्ति का भावनात्मक स्तर गिर जाय तो फिर वह पशु और पिशाचों को भी पीछे छोड़कर इतना जघन्य हो सकता है कि अपने अस्तित्व के विष से प्यापक क्षेत्र को विषैला करके असंख्यों के लिए जीवन-मरण की समस्या उत्पन्न कर दे ।

संसार में जितनी भी शोक, संताप, अभाव, दारिद्रय और क्लेश-कलह दिखाई पड़ते हैं, वे सभी मानवीय विचारणा में निकृष्टता के तत्व घुस पड़ने के ही परिणाम हैं । घृणित स्तर पर विचार करने वाला मनुष्य निरन्तर विग्रह हो दुखी करता है । इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्राचीन काल के साधु और ब्राह्मण अपना जीवन इस एक ही प्रयोजन के लिए समर्पित करते थे कि जन-साधारण की विचारणा का स्तर ऊँचा उठा रहे । इसी प्रयोजन के लिए खड़ा किया गया कलेवर धर्म कहलाता है । धर्म की स्थिरता से मानवीय सुख-शांति और प्रगति का अविछिन्न सम्बन्ध है । इसलिए धर्म प्रवृत्ति की रक्षा के लिए ब्राह्मण-संस्था निरन्तर प्रयत्नशील रहती थी ।

इस क्षेत्र में जब कभी विकृति आती थी, अव्यवस्था फैलती थी, तब उसके निराकरण का समाधान ढूँढने के लिये धर्म-प्रेमियों को एकत्रित किया जाता था और उन उपायों का निर्धारण किया जाता था, जिनसे धर्म-आस्थाओं में उत्पन्न हुए विग्रह को रोका जा सके । ऐसे आयोजन को बाजपेय यज्ञ कहते थे । बाजपेय यज्ञों में गायत्री यज्ञों का स्थान मूर्धन्य है । समय-समय पर धर्म-विकृतियों के परिष्कार के लिये गायत्री-यज्ञों के माध्यम को एक व्यापक विधि-व्यवस्था के रूप में प्रयुक्त किया जाता रहा है । आज भी जनमानस के अन्तरंग में धर्म-निष्ठा दुर्बल पड़ गई है और उसके भयानक परिणाम सामने आ रहें हैं । इस सुधार के लिये फिर बाजपेय आयोजकों की, गायत्री यज्ञ आयोजनों की आवश्यकता अनुभव की गई और उसे एक आन्दोलन का रूप दिया गया है ।

राज-विकृतियों के समय पर उसी प्रकार राजसूय यज्ञ प्राचीन काल में होते थे । राजसूय यज्ञों में अश्वमेध का स्थान भी यही है, जो बाजपेय यज्ञों में गायत्री यज्ञ का । यों राजविकृतियाँ भी कम नहीं है । और उनके सुधार के लिए सर्व तन्त्रीय राजनीतिक आयोजनों आन्दोलनों की फिर जरूरत है, भले ही उनका नाम अश्वमेध न रखकर दूसरा कुछ और रखा जा सकता है । अपना कार्य-क्षेत्र धर्म है । इसलिये हम धर्म, विकृति का हल प्रस्तुत करने के लिये धर्म-प्रेमियों से मंत्रणा करने और सर्वसाधारण को धर्म-प्रवृत्तियों का महत्व समझाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिए गायत्री यज्ञों के ऐसे आयोजन बड़े परिमाण में कर रहे हैं, जिनके साथ युग-निष्ठा सम्मेलन अनिवार्य रूप से जुड़े रहें ।

भारतीय धर्म और संस्कृति के वर्तमान बिखराव को दूर का उसे एक केन्द्र बिन्दु पर संगठित करने के लिये हमें भावनात्मक एकता की धुरी का आश्रय लेना पड़ेगा । भारतीय धर्म के अन्तरंग समस्त सम्प्रदाय, गायत्री और यज्ञ की महत्ता को एक स्वर से स्वीकार करते हैं । भारतीय धर्म के सर्वमान्य आधार वेद है और वेदों का बीज 'गायत्री' है । इसी प्रकार हर हिन्दू यज्ञ पूजक है । ब्राह्मण से लेकर चाण्डाल तक किसी का भी विवाह बिना हवन के नहीं होता और कोई भी भारतीय धर्मानुयायी बिना यज्ञाग्नि (चिता) के अपना अस्तित्व समाप्त नहीं करता । होली सामूहिक यज्ञ का सर्वमान्य त्यौहार है । और भी अनेक कारण हैं, जिनसे गायत्री और यज्ञ के प्रति हर सम्प्रदाय के व्यक्ति की मान्य निष्ठा चिर अतीत से चली आती है । इन आधारों को केन्द्र-बिन्दु बनाकर भारतीय समाज का केन्द्रीकरण एवं संगठन किया जा सकता है और बिखराव में उत्पन्न उस जातीय दुर्बलता से छुटकारा पाया जा सकता हैं, जिसके कारण हमें हजार वर्ष तक गुलाम रहना पड़ा और आज भी नारंगी की भीतरी फाँकों की तरह हजारों टुकड़ों में बँटे दिन-दिन दुर्बल होते जा रहे हैं ।

दूरदर्शिता और विवेकशीलता का तकाजा है कि हम संगठित समाज की तरह बलिष्ठ एवं प्रगतिशील बनने के लिये अपने केन्द्र-बिन्दु के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो जाँय और एक सूत्र में पिरोये हुए एक विचारणा, एक विश्व और एक प्रक्रिया अपना कर खोई हुई समर्थता पुनः प्राप्त करें । इस प्रयोजन के लिए गायत्री मंत्र से उपयुक्त और कोई माध्यम नहीं हो सकता । उपासना की दृष्टि से यह सर्व सुलभ और सर्व सम्मत अति प्राचीन माध्यम है । इसके अतिरिक्त इस महामंत्र के २४ अक्षरों की व्याख्या की जाय तो उसमें नीति, धर्म, कर्तव्य-पालन, उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता के सभी तत्व मौजूद हैं, उत्कृष्ट व्यक्तित्व और समर्थ समाज के निर्माण में जिन मान्यताओं और आस्थाओं का समावेश किया जाना आवश्यक है वे सभी गायत्री मंत्र के अक्षरों में विद्यमान हैं । धर्म के नाम पर प्रचलित विडम्बनाओं और मूढ़ मान्यताओं का उन्मूलन कर सच्ची आस्तिकता और धार्मिकता की प्रतिष्ठापना के लिये यह तत्व-दर्शन प्राचीनता और नवीनता को ठीक तरह मिला सकने का उपयुक्त माध्यम एवं पुल सिद्ध हो सकता है । शिखा वस्तुतः गायत्री की ध्वजा ही है । यज्ञोपवीत के नौ धागे गायत्री के नौ शब्द, तीन खण्ड, गायत्री के तीन चरण और ब्रह्म ग्रन्थि प्रणव ही है । इस प्रकार शिखा और यज्ञोपवीत हिन्दू धर्म के मान्य प्रतीक गायत्री के ही स्वरूप हैं । इस तथ्य को यदि ठीक तरह समझा जा सके, तो भारतीय समाज के संगठन में उत्पन्न समस्त संसार को भावनात्मक प्रगति की ओर अग्रसर किया जा सकता है ।

यज्ञ यों अग्निहोत्र की एक धार्मिक कर्मकाण्डात्मक प्रक्रिया भी है और उसके वैज्ञानिक लाभ भी हैं । वायु-शुद्धि, अन्तरिक्ष में रोग-निरोधक ऊर्जा का उत्पादन, मानसिक रुग्णता का उपचार, प्रकृति की ऋतु-स्थिरता, वर्षा आदि का सन्तुलन, प्राण-तत्व के व्यापक अभिवर्धन में समग्र बलिष्ठता, सुसन्तति का सफल उपचार, सूक्ष्म जगत में संव्याप्त दुर्भावनाओं का समाधान, देव तत्वों के परिपुष्टि आदि अनेक ऐसे आधार भी है, जिनका समस्त विश्व की सुख-शान्ति से गहरा सम्बन्ध है । साथ ही उनके भावनात्मक लाभ भी कम नहीं है । यज्ञ एक उत्कृष्ट तत्व ज्ञान है, जिसका तात्पर्य है--समय, परमार्थ, समूहवाद, उदार एवं उत्कृष्ट जीवनयापन-सेवा, सहायता एवं लोक मंगल के लिये अधिकाधिक त्याग बलिदान का उल्लास । जीवन को यज्ञ जैसा पवित्र, सुगन्धित, प्रकाशवान् एवं प्रखर बनाने की प्रेरणा इस कर्मकाण्ड के पीछे सन्निहित तत्व-ज्ञान में कूट-कूटकर भरी है । यज्ञ आयोजनों द्वारा, उसके कर्मकाण्डों की व्याख्या-विवेचन करते हुए व्यक्ति एवं समाज की मान्यताओं एवं गतिविधियों को महत्वपूर्ण मोड़ दिया जा सकता है और आदर्शवादिता अपनाने पर समग्र प्रखरता, समर्थता, समृद्धि, उत्कृष्टता एवं सुख-शांति की दिशा में तेजी से आगे बढ़ा जा सकता है । यज्ञीय जीवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीने की शिक्षा तथा यज्ञीय दृष्टिकोण अपनाने की रीति-नीति ही संसार की वर्तमान उलझनों का सुलझा सकने में समर्थ हो सकती है । इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यज्ञीय कर्मकाण्ड के माध्यम से यज्ञीय तत्व-ज्ञान का व्यापक प्रसार करने में गायत्री परिवार तत्परता पूर्वक संलग्न है ।

पिछले दिनों अपने देश की धार्मिक आस्था का अधिकांश भाग प्रतिगामी दिग्भ्रान्त संकीर्ण, स्वार्थी एवं अदूरदर्शी लोगों द्वारा हथिया लिया गया है । अ० भा० गायत्री परिवार ने धर्म-क्षेत्र को प्रतिगामिता के चंगुल से छुड़ाकर प्रगतिशीलता की ओर जन-मानस को मोड़ा है और विवेकवान् प्रबुद्ध वर्ग का देश का धार्मिक नेतृत्व करने के लिये आवाहन किया है । इसका परिणाम आशाजनक दिखाई पड़ रहा है । संगठन की ४ हजार शाखाओं में बँटे हुए ५० लाख सदस्यों द्वारा नैतिकता एवं सामाजिक अभिवर्द्धन करने के लिये जो शतसूत्री रचनात्मक कार्यक्रम अपनाया है, उससे समग्र प्रगति की दिशा में भारी योगदान मिला है और यह आशा बँध चली है, कि अगले दिनों देश का धर्म-मंच प्रतिगामी, एवं प्रगति-विरोधी न रहकर नव निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण सहायता देगा । गायत्री यज्ञों के सुव्यवस्थित स्थित आयोजन इस प्रयोजन की पूर्ति में अत्यधिक सहायक सिद्ध हो रहे हैं ।

अपनी यज्ञ-परम्परा अन्य प्रतिगामी लोगों के प्रवंचना एवं मूढ़ता भरे आडम्बरों से सर्वथा भिन्न है । गायत्री परिवार राष्ट्र के भावनात्मक नव-निर्माण के लिये विशाल यज्ञ-आयोजनों को माध्यम बनाता है । इन धर्म-कृत्यों में भाग लेने वाले हर व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत चरित्र-दुर्बलताओं को सामाजिक अवांछनीयताओं में से कम से कम एक-एक तो अनिवार्य रूप से छोड़नी ही पड़ती हैं । नव - निर्माण के लिये रचनात्मक कार्यों में योगदान देते रहने के लिये कुछ तो संकल्प लेना ही पड़ता है । अपने यज्ञों में राष्ट्रीय अपव्यय की दिशा में पूरी सतर्कता बरती जाती है । सुगन्धित वनस्पतियों से ही अपने हवन होते हैं । अन्न का तिल, जौ, चावल आदि का एक दाना भी नहीं होमा जाता । धर्म परम्पराओं की रक्षा करते हुए भी घी की न्यूनतम मात्रा ही प्रयुक्त की जाती है । युग-धर्म का हमें पूरा ज्ञान है, इसलिये किसी को यह अवसर नहीं दिया जाता कि राष्ट्रीय अपव्यय-कर्ताओं की पंक्ति में हमें खड़ा किया जा सके । जन-मानस को प्रभावित करने एवं धर्म-भावनाओं की प्रगति की ओर मोड़ देने के लिये जितना नितान्त आवश्यक है, उतना ही न्यूनतम व्यय कर्मकाण्डों पर किया जाता है । प्रमुखता 'ज्ञान-यज्ञ की रहती है जिसका अर्थ है, निकृष्टता एवं मूढ़ता भरी मान्यताओं का उन्मूलन और उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता के प्रखर जीवन-दर्शन का अभिवर्धन । हमारे विशालकाय धर्म-आयोजन इसी विचार क्रान्ति के इर्द-गिर्द घूमते हैं, इसलिए प्रबुद्ध वर्ग ने सदा उसे सहयोग, समर्थन एवं प्रोत्साहन ही दिया है ।

भारतवर्ष गाँवों में फैला हुआ तथा ८० प्रतिशत अशिक्षित देश है । यहाँ परम्परागत धर्म-मान्यताओं को समझ सकने की ही मनोदशा है । राष्ट्रीय प्रगति के लिये नितान्त आवश्यक 'विवेकशीलता' का अभिवर्धन यहाँ धार्मिक आधार पर जितना सरलता एवं सफलता के साथ हो सकता है, उतना और किसी प्रकार नहीं । इस देश में राज-तंत्र की अपेक्षा धर्म-तंत्र अधिक समर्थ है । धर्म-क्षेत्र में ५६ लाख व्यक्ति पूरी आजीविका-उपार्जन करते हैं । अरबों रुपया धर्म के नाम पर दान किया जाता है और अरबों रुपयों की स्थिर सम्पत्ति नियोजित है । इस भावनात्मक एवं भौतिक शक्ति को प्रगतिशीलता एवं रचनात्मक दिशा में मोड़ा जा सके, तो राज-तंत्र के द्वारा जो किया जा सकता है, उससे बहुत अधिक कार्य धर्म-तंत्र करके दिखा सकता है । उस संभावना को मूर्तिमान बनाने के लिये गायत्री परिवार द्वारा बहुमुखी कार्यक्रम सफलता पूर्वक गतिशील हो रहे हैं । इन्हीं कार्यक्रमों में विशाल-जन समूह को अनुप्राणित करने वाले युग-निर्माण सम्मेलन भी है, जो आम तौर से बड़े गायत्री महायज्ञ के साथ जुड़े रहते हैं । ये, ऐसे प्रयोग हैं जिन्हें समीप से देखने और सम्मिलित होने पर हर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देश भक्त एवं प्रगति प्रेमी को हर्ष और संतोष ही होता है ।

यों गायत्री और यज्ञ का अपना-अपना विशिष्ट आध्यात्मिक महत्त्व भी है । इनकी साधना व्यक्ति और समाज की पवित्रता एवं प्रगति में सब प्रकार सहायक ही सिद्ध होती है । इसीलिये इन दोंनो को भारतीय धर्म में अति उच्च भाव भरा स्थान दिया गया है ।

'गायत्री' को भारतीय संस्कृति की जननी और 'यज्ञ' को भारतीय धर्म का जनक माना गया है । जिस प्रकार शरीर को जन्म देने वाले माता-पिता की सेवा-पूजा करना आवश्यक माना जाता है, उसी प्रकार अपने धर्म और संस्कृति के उद्गम - आत्मा को सशक्त एवं प्रकाशवान बनाने के आधार, गायत्री और यज्ञ को भी अपना सांस्कृतिक आध्यात्मिक माता-पिता माना गया है और चिर अतीत से उनकी उपासना दैनिक जीवन का एक अनिवार्य अंग रही है ।

गायत्री महामंत्र की शक्ति अद्भुत है । उसकी उपासना मानव-जीवन की भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख-शांति श्री, समृद्धि, प्रगति एवं सफलता का द्वार खोलती है । अन्त:करण पर चढ़े हुए मल-आवरण उस उपासना में खुलते हैं और व्यक्ति की प्रवृत्ति अनायास ही धर्म, सदाचार कर्तव्य एवं परमार्थ की ओर मुड़ती है । अनाचार से घृणा और विरति बढ़ते जाने से साधक दिन-दिन निर्मल, संयमशील, स्फूर्तिवान, मृदुल एवं उदात्त बनता चला जाता है । कहना न होगा कि प्रतिभावान आकर्षक व्यक्तित्व हर दिशा से श्रद्धा, सम्मान एवं सहयोग प्राप्त करते हैं और वे जिस भी दिशा में चल पड़ें सफलता पर सफलता प्राप्त करते चले जाते हैं । गायत्री-उपासकों में से अगणित ऐसे देखे गये हैं, जिन्होंने अपना असाधारण आत्म-बल बढ़ाया और आशातीत भौतिक सफलताएँ पाईं । मानवीय अन्तरंग में छिपी हुई अगणित रहस्यमय दिव्य शक्तियों को जगाने में और तुच्छ को महान् बनाने में गायत्री की विधिवत् की गई उपासना जादू जैसा चमत्कार प्रस्तुत करती है ।

गायत्री विवेक और सद्बुद्धि की सद्भावना और सत्प्रवृत्ति की गंगोत्री है । इससे इस उपासना का प्रभाव मनुष्य के अन्त:करण पर असाधारण रूप से पड़ता है और वह निकृष्ट स्तर की विचारणा का परित्याग कर उत्कृष्ट आदर्शवादिता अपनाने के लिये साहस पूर्वक अग्रसर होता है । ऐसा व्यक्ति कितनी ही हेय परिस्थितियों में पड़ा हो महामानव बनने की दिशा में अग्रसरता प्राप्त करता है और जीवन को धन्य बनाने वाली महानता को दैवी अनुग्रह की तरह अन्त:करण में विकसित होता देखता है । जीवनोद्देश्य को सफल बनाने की प्रेरणा देना गायत्री महाशक्ति का महत्वपूर्ण चमत्कार है । हमारे पूर्व पुरुष इसी शक्ति का आश्रय लेकर जगद्गुरु, चक्रवर्ती शासक, स्वर्ण-सम्पदाओं के स्वामी और धरती के देवता बने थे और श्रेष्ठ गतिविधियों के द्वारा उन्होंने इस धरती पर स्वर्ग अवतरित किया था ।

व्यक्तिगत सुख-शांति और समृद्धि के लिये आन्तरिक पवित्रता, आत्म-बल की अभिवृद्धि एवं ईश्वर-प्राप्ति के लिये गायत्री महामंत्र की उपासना सर्वोपरि आधार है । भगवान राम, कृष्ण, विष्णु, महेश एवं समस्त ऋषि-ब्राह्मणों की ही नहीं अनादि काल से हर भारतीय धर्मानुयायी की उपासना-पद्धति एकमात्र गायत्री ही रही है । इस महामंत्र में भरी हुई शिक्षा, शक्ति एवं प्रेरणा का लाभ उठाकर हम चिरकाल तक देवोपम प्रखर जीवन जीते रहे हैं । अपना और दूसरों का हित साधन करते रहें हैं । अब समय आया है कि इस महान् आत्म-शक्ति का सहारा लेकर हम व्यक्ति और समाज के उत्कर्ष में महत्वपूर्ण सहायता प्राप्त करें और राष्ट्रीय-जागरण, व्यक्ति-निर्माण एवं युग-परिवर्तन का प्रयोजन पूर्ण करें ।

सर्वविदित है कि गायत्री भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ भारतीय धर्म का पिता है । शरीर जन्म देने वाले माता-पिता की तरह आत्म-बल एवं आन्तरिक महानता एवं आदर्शवादी उत्कृष्ट जीवन प्रदान करने वाले यह गायत्री और यज्ञ भी हमारे आध्यात्मिक माता-पिता हैं और उनकी पूजा-सेवा भी सांसारिक माता-पिता की तरह ही निष्ठा पूर्वक करनी चाहिये । यज्ञ भारतीय धर्म का अविछिन्न अंग है । सोलह संस्कारों में से प्रत्येक में अनिवार्य हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञोपवीत-विवाह जैसे संस्कार यज्ञ के बिना हो नहीं सकते । हिन्दू धर्मानुयायी का शरीर यज्ञाग्नि में ही होगा, मृतक की चिता जलाने, अग्नि संस्कार करने की प्रथा वस्तुतः यज्ञ-आयोजन का ही अस्त-व्यस्त रूप है । होली का त्यौहार प्रतिवर्ष अनिवार्य रूप से गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले में किये जाने वाले सामूहिक यज्ञ का ही ध्वंसाविशेष है । प्राचीन काल में यह सब विधिवत् किया जाता था, अब केवल लकीर पीट ली जाती है । नई फसल का अन्न कोई तब तक मुँह में न डालता था, जब तक कि यज्ञ भगवान को उसे खिला न लिया जाय ।

यज्ञ के प्रति भारतीय धर्म की इतनी प्रगाढ़ निष्ठा अकारण ही नहीं है । उनके वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दोनों ही कारण है । मनुष्य निरन्तर अपने शरीर के छिद्रों द्वारा गन्दी वायु निकालता रहता है, जिससे आकाश में गन्दगी बढ़ने से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं । यज्ञ द्वारा इसकी स्वच्छता सम्पन्न होती है । गन्दगी फैलाने वाले का कर्तव्य है कि वह स्वच्छता का भी प्रबन्ध करे । इस दृष्टि से यज्ञ हर व्यक्ति का एक ऐसा आवश्यक उत्तरदायित्व है, जिसे निबाहा ही जाना चाहिए, यदि इसके लिये कुछ खर्च करना पड़ता है, तो कपड़े धोने, मकान पुताने की तरह उसे भी करना चाहिये । यज्ञ-धूम्र में असंख्य रोगों के कीटाणु मारने की अद्भुत शक्ति है । मनुष्य और पशुओं में बढ़ती हुई बीमारियों पर नियन्त्रण करने के लिये यज्ञ की चिकित्सा पद्धति ऐसी है, जिससे कम से कम खर्च में अधिक से अधिक सार्वजनिक स्वास्थ्य का संरक्षण एवं संवर्धन हो सकता है । मनोविकारों के कारण मनुष्य को शरीर-विकारों से भी अधिक कष्ट सहना पड़ता है । प्रगति के सारे द्वार ये मनोविकार ही रोकते हैं । आवेश, उद्वेग, कामुकता, कृपणता संकीर्णता, अदूरदर्शिता चिन्ता, भय, आलस्य, अवसाद आदि मानसिक रोग ही व्यक्ति की अधोगति के मूल कारण हैं । यज्ञ एक ऐसी सूक्ष्म चिकित्सा पद्धति है, जिसके द्वारा उपरोक्त सभी अवरोधों को हटाया जा सकता है और व्यक्ति के मनोबल, आत्म - बल, सद्गुण एवं सद्भावनाओं सत्प्रवृत्तियों और स्वर्गीय वातावरण का अवतरण होता है । यह लाभ ऐसे हैं, जिनकी तुलना में यज्ञ-प्रयोजन के लिये होने वाला खर्च नगण्य है । प्रकृति को सन्तुलित रखने समय पर सर्दी, गर्मी वर्षा उचित मात्रा में बनी रहने के लिये यज्ञ से बढ़कर और कोई उपचार नहीं । भगवान के मुख में प्रत्यक्ष ग्रास देने और उनके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से पूजा ग्रहण किये जाने की यह एक अद्भुत प्रणाली है । दशरथ जी ने जिस तरह पुत्रेष्टि यज्ञ से सुसन्तान पाई थी, उस तरह के लाभ अभी भी प्राप्त किये जा सकते हैं । यज्ञ-नारायण का पूजन-यजन किसी भी देवता के पूजन-यजन से अधिक लाभप्रद होता है ।

यज्ञ का तत्व-दर्शन– सर्व साधारण को प्रेम, परोपकार और संयम-सदाचार की शिक्षा देता है ।'अग्नि की तरह प्रकाशवान, ज्वलन्त बनाने, सम्पर्क में आने वालों को अपने में आत्मसात् कर लेने सदा प्रकाशवान और प्रखर रहने के लिए जो उपलब्ध है उसे लोकमंगल के लिये बिखेर देने, विषम परिस्थितियों से सिर नीचा कराने वाले घटिया आचरण न करने की प्रेरणा, अग्नि के क्रिया-कलाप से मिलते हैं । इसलिये यज्ञाग्नि को ईश्वर स्वरूप मानकर हम पूजते हैं । इस पूजा का प्रयोजन उपरोक्त आदर्शों को जीवन में घुला लेना भी है । जीवन को यज्ञ जैसा सुगन्धित और मंगलमय बना लेने की प्रेरणा यज्ञ-आयोजन से मिलती है । यह प्रेरणाएँ जितनी अधिक व्यापक बन सकें, उतना ही व्यक्ति एवं समाज का कल्याण एवं उत्थान होगा ।

गायत्री-यज्ञ का आयोजन भारतीय धर्म-संस्कृति की उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता के अभिवर्धन का एक महत्वपूर्ण उपचार है । इससे आध्यात्मिक, भौतिक एवं सामाजिक अगणित लाभ हैं । नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुथान के लिये इस देश में समय-समय पर ऐसे आयोजन होते रहे हैं । उस लुप्त परम्परा का अब पुनरुत्थान किया जाना चाहिये । ताकि हम प्राचीन काल जैसी गौरवपूर्ण परिस्थितियों एवं सुख-शांति का आनन्द पुनः ले सकें ।

* * *

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ क्यों करना चाहिए ?

यज्ञ भारतीय संस्कृति का प्रतीक है । हिन्दू धर्म में जितना महत्व यज्ञ को दिया गया है उतना और किसी को नहीं दिया गया । हमारा कोई भी शुभ अशुभ धर्म कार्य इसके बिना पूरा नहीं होता । जन्म से मृत्यु तक सभी संस्कारों में यज्ञ आवश्यक है । हमारे धर्म में वेदों का जो महत्व है वही महत्व यज्ञों को भी प्राप्त है क्योंकि वेदों का प्रधान विषय ही यज्ञ है । वेदों में यज्ञ के वर्णन पर जितने मंत्र हैं उतने अन्य किसी विषय पर नहीं । यदि यह कहा जाये कि यज्ञ वैदिक धर्म का प्राण है तो इसमें भी अत्युक्ति नहीं । वैदिक धर्म यज्ञ प्रधान धर्म है । यज्ञ को निकाल दें तो वैदिक धर्म निष्प्राण हो जायेगा । यज्ञ से ही समस्त सृष्टि उत्पन्न हुई ।

भगवान स्वयं यज्ञ रूप हैं और तदुत्पन्न सम्पूर्ण सृष्टि भी यज्ञ रूप है तो यज्ञ के अतिरिक्त संसार में कुछ है ही नहीं । चारों वेद भी इस यज्ञ रूप भगवान से उत्पन्न हुए है, अत: यह भी यज्ञ रूप है और उनमें जो कुछ भी है वह भी यज्ञ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है । ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में प्रश्न पूछा है कि "मैं तुमसे पूछता हूँ कि सम्पूर्ण जगत को बांधने वाली वस्तु कौन है ? इसका उत्तर दिया है कि "यज्ञ ही इस विश्व ब्रह्माण्ड को बांधने वाला है ।"

हमारे पूर्वज भली प्रकार जानते थे कि-

स्वास्थ्य सुख सम्पत्ति दाता, दु:ख हारी यज्ञ है ।
भूलोक से ले "सूर्य" तक, शुभ परम पावन यज्ञ है ।।
सर्व भूतों के सभी विध, दुख नसावन यज्ञ है ।

इसलिए प्राचीन काल में घर-घर में यज्ञ होते थे और इस पुण्य भूमि में इतने यज्ञ होते रहे कि हमारा देश ही यज्ञिय देश कहलाया गया । पहले बड़े-बड़े राजा महाराजा भी यज्ञ के रहस्य को भली प्रकार समझते थे और बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन किया करते थे । महाराजा रघु ने दिग्विजय के उपरान्त विश्वजित नामक यज्ञ में समस्त खजाना खाली कर दिया था । उनके पास धातु का एक पात्र तक नहीं बचा था । पाण्डवों ने भगवान कृष्ण की अनुमति से महाभारत के बाद राजसूय यज्ञ कराया था । भगवान राम ने अश्वमेघादि बहुत बड़े-बड़े यज्ञ कराये थे । दैत्यराज बलि ने इतना बड़ा यज्ञ कराया था कि यज्ञ की शक्ति से सम्पन्न होकर उसने इन्द्र को स्वर्गलोक से निकाल दिया था । जिस पर उदिति की तपस्या करने पर, इन्द्र को इन्द्रासन वापिस दिलाने के लिये विवश होकर भगवान को स्वयं वामन रूप में उपस्थित होना पड़ा । इन्द्र ने यज्ञों के बल पर ही इन्द्रासन प्राप्त किया था ।

रावण यज्ञ की शक्ति से ही सब देवताओं को कैद करने में समर्थ हुआ था अर्थात् उसे सूक्ष्म शक्तियाँ प्राप्त हुईं । महाभारत के शांति पर्व में अश्वजित के पुत्र का अश्वमेध, दुष्यन्त के पुत्र भरत के एक सहस्त्र अश्वमेध, भागीरथ के अनेक अश्वमेध, दिलीप के एक सौ अश्वमेध इत्यादि का वर्णन मिलता है केकय पुत्र महाराजा अश्वपति ने ऋषियों को सम्बोधित करते हुए कहा 'हे - महाश्रोत्रियो ! मेरे राज्य में कोई चोर, कृपण, शराबी विद्यमान नहीं है । ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जो प्रतिदिन यज्ञ न करता हो । मेरे राष्ट्र में कोई भी व्यक्ति व्यभिचारी नहीं है !"

तीर्थों की स्थापना का आधार यज्ञ ही थे । जहां प्रचुर मात्रा में बड़े बड़े यज्ञ होते थे उसी स्थान को तीर्थ मान लिया जाता था । प्रयाग, काशी, रामेश्वरम्, कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य आदि सभी क्षेत्रों में तीर्थों का उद्भव यज्ञों से ही हुआ है ।

हमारे वेद शास्त्रों का पन्ना-पन्ना यज्ञ की महिमा से भरा पड़ा है । देखिये ऋग्वेद में 'विश्व शान्ति का सर्वश्रेष्ठ आधार यज्ञ ही हैं, (१०।६६।२) . . . . यज्ञ को आगे करके कार्य आरम्भ करो, यज्ञ के साथ आरम्भ किये हुये कार्य सफल होते हैं (१०। १०१ । २) .. . . . . यज्ञ से परमात्मा प्रसन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

होते हैं । (१।१४।४). . .. . . मुक्ति के अधिकारी याज्ञेय देव हैं, सचमुच यज्ञ के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती (४।४५।२) . . . . यह यज्ञ देव (परमात्मा) तक ले जाने वाला है, यह पवित्र है और पवित्र करने वाला है ।'' यजुर्वेद में यज्ञ की महत्ता पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया हैं ''यज्ञ तप का स्वरूप है (४।२।२६). . , . यज्ञ में दी हुई आहुतियां कल्याण कारक होती हैं, जिन्हें कल्याण की इच्छा हो वह यज्ञ में आहुतियां दें (१५।३८) . . . जो असुर प्राण इस पृथ्वी पर असुर रूप से विचरण करते रहते हैं वह यज्ञ की अग्नि द्वारा शरीर में से निकाल बाहर किये जाते हैं (२।३०) . . . जो यज्ञ को छोड़ता है, उसे यज्ञ रूप परमात्मा भी छोड़ देता है (२।२३). . . . यज्ञ ही मुख्य धर्म है (३१।६). . . . . मन, वाणी, बुद्धि की उन्नति तब होगी जब यज्ञ एवं यज्ञपति की उपासना की जाये । (३०।१). . . . . यज्ञ से सब दिशायें अनुकूल बन जाती है (१३। ५). . . . . यह अग्नि सहस्त्रों संख्यावाले, बल का स्वामी है । धनों का मुख्य दाता और क्रान्ति दर्शक है (१५।२१) . . . . अग्नि विश्व का प्रेरक है (१५।३३)'' अथर्ववेद का कथन है ''यज्ञ करने वाले को स्वर्ग सुख प्राप्त होता है, जिन्हें स्वर्गीय सुख प्राप्त करना अभीष्ट हो वे यज्ञ किया करें (१८ । ४ । २). . . . . .

यज्ञ न करने वाले का तेज नष्ट हो जाता है अथवा अपनी तेजस्विता स्थिर रखने के लिये यज्ञ किया कीजिये . . . . . जो इस अग्नि के चारों ओर बैठकर दिव्य उद्देश्य से हवि चढ़ाते हैं, उनके हृदय में परमात्मा का तेज प्रकाशित होता है । (६ । ७५)'' ब्राह्मण ग्रंथों में देखिये ''यज्ञ का पुण्य फल कभी नष्ट नहीं होता,बुद्धिमानी पूर्वक यज्ञ का अक्षय पुण्य संचित करते रहो (तै० ब्र० ११४ । ९)'' यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है । . . . . यह अग्नि होम निश्चय ही स्वर्ग सुख प्राप्त कराने वाली विशेष नौका है । . . . . यज्ञ ही विष्णु है, यज्ञ ही प्रजापति है, यज्ञ ही सूर्य है । (शतपथ) गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है ''मैं ही यज्ञ हूँ'' और कई स्थलों पर उपदेश देते हुये बताया ''यज्ञ न करने वाले को यह लोक और परलोक कुछ भी प्राप्त नहीं होता . . . . यज्ञ के निमित्त किये गये कर्मो के सिवाय दूसरे कर्मो के करने से यह मनुष्य कर्म बन्धन में बंधता है. . . . . यज्ञ से बचे हुये अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूटते हैं । . . . . . हवन क्रिया ब्रह्म है, हवि ब्रह्म है, ब्रह्म रूप अग्नि में हवन किया जाता है और ब्रह्म ही हवन कर्ता है । इस प्रकार जिस की बुद्धि में सभी कर्म ब्रह्म हो जाते हैं, वह ब्रह्म को ही प्राप्त होता है. . . . . यज्ञ करने योग्य कर्म है ।''

मनुजी ने लिखा है ''महायज्ञ और यज्ञ करने से ही यह शरीर ब्रह्ममी या ब्राह्मण बनता है ।'' पुराणों में इस प्रकार उल्लेख है ।'' अग्नि होम (यज्ञ) से बढ़कर और कोई धर्म नहीं, यज्ञ करने वाला ही सच्चा धर्मात्मा है । (कूर्म पुराण) यज्ञ ही कल्याण का हेतु है । (विष्णु पुराण) यज्ञों में सारा संसार प्रतिहित है । पृथ्वी यज्ञ से धारण की हुई है । यज्ञ ही प्रजा को तारता है (कालिका पुराण) । अग्नि होम से बढ़कर कोई पवित्र कर्म नहीं है । इन से अन्त:करण पवित्र होता है (पद्म पुराण) । यज्ञ से देवता तथा पितृ जीते हैं (विष्णु धर्मोत्तर पुराण)''

कठोपनिषद् में यमराज नचिकेता से कहते हैं 'इसअग्नि का शास्त्रोक्त रीति से तीन बार अनुष्ठान करने वाला पुरुष ऋग्, यजु० साम-तीनों वेदों के साथ सम्बन्ध जोड़कर यज्ञ दान, तप-रूप तीनों कर्मों को करता रहने वाला मनुष्य जन्म मृत्यु से तर जाता है । अग्नि स्वर्ग के प्राप्त करने का, अनन्त जीवन का और सम्पूर्ण संसार के स्थिर होने के कारण है । (क्योंकि सूर्य की आकर्षण शक्ति से जगत स्थिर है) । ' प्रश्नोपनिषद् में यज्ञ को देवताओं, पितरों और ऋषियों का जीवन-प्राण बताया गया है । मुण्डकोपनिषद् का कथन है 'अग्नि होत्री को यह आहुतियां सूर्य की किरणें बनकर उस स्वर्ग लोक में पहुंचा देती हैं, जहां देवताओं का एकमात्र पति निवास करता है ' (द्वितीय खण्ड श्लोक ५) । छांदोग्योपनिषद् में उदकोशल नामक एक ब्रह्मचारी को, जो सत्यकाम जावाल के यहां ब्रह्म विद्या सीखने गया

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था, अग्नियों द्वारा ब्रह्म विद्या का उपदेश मिलने का वर्णन मिलता है, क्योंकि उसने बारह वर्षों तक अग्नियों की सेवा की थी ।

रामायण में भी यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है । भगवान राम का जन्म यज्ञ द्वारा हुआ अथवा वह अपने अवतार का श्रेय यज्ञ को ही देते हैं । सीताजी का विवाह एक विशाल यज्ञ द्वारा सम्पन्न हुआ । महर्षि विश्वामित्र जी ने एक महायज्ञ किया था, जिसमें राक्षसों से रक्षार्थ राम और लक्ष्मण को मांग कर ले गये थे, चूंकि यज्ञ में दैवीतत्व बलवान होते हैं और असुरता का नाश होता है, इसलिये रावण ने राक्षसों को आदेश दिया था कि "जहां जहां भी यज्ञ होते दिखाई दें उन्हें नष्ट करने का प्रयत्न करो ।" रावण को जब अपनी हार दीखती है तो वह यज्ञ का ही सहारा लेता है और अपने पुत्र मेघनाथ को एक बड़ा तांत्रिक यज्ञ करके अजेय शक्ति को प्राप्त करने का आदेश देता है । यदि मेघनाथ इस यज्ञ को पूर्ण कर लेता तो वह अजेय हो जाता परन्तु विभीषण और लक्ष्मण जी ने इस यज्ञ को निष्फल कर दिया था ।

भगवान राम ने बनवास से वापिस लौटने पर प्रजा के लिये, समस्त संसार के लिये, समस्त प्राणी-मात्र के लिये बड़े से बड़े यज्ञों के आयोजन किये थे । यज्ञ को महत्वपूर्ण धर्मकार्य समझ कर उन्होंने प्रतिवर्ष अश्वमेध दश सहस्त्र वर्ष तक किए और सहस्त्र वर्ष के पीछे वाजपेय यज्ञ किया ।

भागवत में भी यज्ञ की महिमा अकथनीय है । ऋषि राजा वेन को समझाते हैं "हे राजन् ! सर्व लोक और देवता यज्ञ में निवास करते हैं, उन वेदत्रयीमय, दिव्यमय एवं तपोमय ईश्वर को विप्रगण आपके कल्याण तथा प्रजा की समृद्धि के लिए नाना विधि विधानों से, चित्र, विचित्र यज्ञों द्वारा यजन करते हैं ।" राजा पृथु ने एक सौ अश्वमेध यज्ञ किये थे । इस के फलस्वरूप उनके राज्य में किसी तरह का अभाव न था । क्षीर, दधि, गोरस तथा अन्य रसों की उनके राज्य में सरितायें बह चलीं । विशालकाय तरुवरो में मधु श्रावि असंख्य फल देते ही रहते । सिन्धुओं ने अपार धन राशि प्रदान की । राजा पृथु के सौ अश्वमेध समाप्त होने पर इन्द्र को इन्द्रासन छिन जाने की आशंका हुई और उसने दो बार घोड़ा चुराया । पहली बार उसका पुत्र घोड़ा छुड़ा लाया परन्तु दूसरी बार पृथु को क्रोध आ गया । जिस पर उसने धनुष पर भयंकर बाण चढ़ा कर इन्द्र का नाश करने की ठानी । ऋषियों ने पृथु को रोक कर कहा कि इससे तो इन्द्र सहित सारे देवलोक का ही नाश हो जायेगा अतः उस अनर्थकारी, ईर्षालु और अभिमानी इन्द्र को यज्ञ के सार पूर्ण मंत्रों द्वारा आवाहन करके इस यज्ञ अग्नि में होम कर देंगे ।" राजा पृथु के यज्ञों से इतनी शक्ति उत्पन्न हो गई थी कि उसके एक बाण से ही सारा देवलोक नाश हो सकता था । ऋषियों को वेद मंत्रों तथा यज्ञ की शक्ति पर इतना दृढ़ विश्वास था कि उनके लिये इन्द्र का आवाहन करना कुछ असम्भव नहीं था और वस्तुतः हुआ भी ऐसा ही ।

भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत, जिसके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष हुआ, ने यज्ञों द्वारा ही इस देश की तपोभूमि विश्वब्रह्माण्ड का सर्वश्रेष्ठ भाग बना दिया था । उन्होंने सौ-सौ बार अश्वमेध यज्ञ किये थे । वह सदा ही ऐसे यज्ञों का अनुष्ठान करते रहते थे । इसलिये उस समय किसी पुरुष की दूसरे पुरुष से अपने लिवे स्वप्न में भी कुछ भी प्रार्थना करने की इच्छा नहीं होती थी और कोई दूसरे की वस्तु पर लोभ दृष्टि नहीं करता था । सभी में सदा स्नेह और शील का उद्रेक होता था । राजर्षि और प्रसिद्ध भक्त अम्बरीष अनेक अश्वमेधादि महायज्ञों द्वारा यज्ञपति भगवान की आराधना किया करते थे । यज्ञाराधन में तल्लीन रहने के कारण उनके पलक भी नहीं गिरते थे । यज्ञ द्वारा उत्पादित पवित्रता के प्रवाह से अम्बरीष की प्रजा में भी स्वर्ग सुख भोग की वासना नहीं रह गई थी । सभी केवल निष्काम भाव से यज्ञ द्वारा यज्ञेश्वर भगवान की अर्चना, पूजा, भक्ति और गान एवं ध्यान में प्रवृत्त रहते थे ।

राजा बलि ने विश्व विजय यज्ञ किया था । उस अग्नि में से स्वर्ण के पट से बंधा एक रथ, इन्द्र के घोड़ों के समान हरित वर्ण के घोड़े, स्वर्ण के बन्दों से बंधा हुआ दिव्य धनुष, अक्षय बाणी से पूर्ण दो तूण और दिव्य कवच, ये वस्तुयें निकली । यज्ञ से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्ति प्राप्त करके उस रथ पर बैठ कर दिव्य अस्त्र शस्त्रादि एवं सैन्य लेकर बलि ने इन्द्रलोक पर आक्रमण कर दिया । सभी देवगण घबड़ा उठे और बृहस्पति के पास गये । उन्होंने कहा ''बिना लड़ाई किये हट जाने में ही भलाई है क्योंकि बलि देवों से अधिक शक्तिशाली है ।'' यज्ञ से उत्पन्न हुई शक्ति का इससे अधिक और क्या प्रमाण मिल सकता है ।

परीक्षित के सर्प से काटे जाने पर क्रोधित होकर राजा जनमेजय ने सर्प यज्ञ किया था, जिसमें विश्व के कोने-कोने से सर्प आ आकर यज्ञाग्नि में भस्म हो रहे थे । यज्ञ में महान् शक्ति का यह कितना ज्वलन्त प्रमाण है । एक बार शौनक आदि ८८००० ऋषियों ने स्वर्ग प्राप्ति के हेतु नैमिषारण्य के पवित्र क्षेत्र में दस हजार वर्ष तक लगातार एक दीर्घ महायज्ञ करने का संकल्प किया । इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया था जिसके कारण उसे ब्रह्महत्या लगी । उसी के निवारणार्थ इन्द्र ने अश्वमेध यज्ञ किया था । युधिष्ठिर संध्या आदि के पश्चात् नित्य अग्नि होत्र करते थे ।

भगवान कृष्ण की दिनचर्या का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि वह प्रतिदिन विधिपूर्वक संध्या उपासना, गायत्री जाप आदि कर्म करने के उपरांत अग्निहोत्र करते थे । भगवान कृष्ण भक्तराज उद्धव को वर्णाश्रम धर्म का निरूपण करते हुये बतलाते हैं कि 'गृहस्थ आश्रम में यज्ञ करना, पढ़ना और दान देना यह धर्म तो सभी द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य) के लिये विहित हैं ।'' और आगे चलकर क्रिया योग का वर्णन करते हुये अग्निहोत्र को नित्यप्रति करने का आवश्यक धर्म कृत्य बतलाते हैं । सूर्यग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में आये हुये वसुदेव जी ऋषियों से यह पूछते हैं कि ''जिन कर्मों का विधिवत् आचरण करने से मोक्ष मार्ग के प्रतिबन्धन कर्मों का परिहार किया जा सकता है वह आप हमें सुनाइये ।'' उन मुनीश्वरों ने वसुदेव जी को इस प्रकार उत्तर दिया ''कर्म द्वारा कर्म-निरास करने का उपाय सबसे अच्छा यही बताया गया है कि यज्ञ आदि द्वारा सर्वयज्ञपति भगवान का पूजन करे । विद्वानों ने शास्त्र दृष्टि से यही चित्त की शान्ति का उपाय, सुगम मोक्ष साधन और चित्त को प्रसन्न करने वाला धर्म बतलाया है । अपने न्यायार्जित धन से श्रद्धापूर्वक पुरुषोत्तम भगवान का यजन करना यही सद् गृहस्थ के लिये कल्याणकारी मार्ग है ।''

राजा परीक्षित ने कलियुग को सम्बोधित करते हुए कहा ''हे अधर्म के मित्र! धर्म और सत्य के रहने योग्य स्थान इस ब्रह्मवर्त देश में तू न रहना, क्योंकि यहाँ यज्ञ विधि के जानने वाले महात्मागण यज्ञों द्वारा भगवान यज्ञ पुरुष की आराधना किया करते हैं । इस देश में यज्ञ मूर्ति भगवान श्रीहरि यज्ञों द्वारा पूजित होकर याजकों का कल्याण करते हैं ।' याजकों की महत्ता प्रगट करते हुये महामुनि शमीक अपने पुत्र से, जिसने परीक्षित को शमीक के गले में सर्प डालने के अपराध में शाप दिया था, कहा था कि ''परीक्षित अश्वमेधों द्वारा यजन करने वाले परम भागवत भक्त हैं ।''

नारद पुराण में आया है कि ''महाराजा बाहू ने सातोंद्वीपों में सात अश्वमेध यज्ञ किये थे । उन्होंने चोर डाकुओं को यथेष्ट दण्ड देकर शासन में रखा और दूसरों का सन्ताप दूर करके अपने को कृतार्थ माना । उसके राज्य काल में यज्ञों की महिमा से पृथ्वी पर बिना जोते-बोये अन्न पैदा होता था और वह फल-फूलों से भरी रहती थी । देवराज इन्द्र उनके राज्य की भूमि पर समयानुसार वर्षा करते थे और पापाचारियों का अन्त हो जाने के कारण वहाँ की प्रजा धर्म से सुरक्षित थी ।'' भविष्य पुराण में च्यवन ऋषि का अश्विनी कुमारों का यज्ञ करके देवलोक में सुरदुर्लभ ऐश्वर्य प्राप्त करने का वर्णन मिलता है । स्कन्दपुराण में आया है कि ''इन्द्रद्युम्न ने सहस्त्रों यज्ञ किये और वह इन यज्ञों के साथ-साथ परम पुनीत दिव्यता को प्राप्त करता गया ।''

महाभारत में जाजलि और तुलाधार के संवाद में तुलाधार जाजलि से कहता है 'हे महामुने ! जो बुद्धिमान विप्रश्रेष्ठ सदा यज्ञ करते हैं, वे यज्ञ करने से ही देवलोक को प्राप्त होते हैं ।'' भीष्म पितामह यज्ञ को आवश्यक कर्तव्य बतलाते हैं और चेतावनी देते हैं कि ''जो यज्ञ नहीं करते वे उस लोक अर्थात् परलोक को नहीं प्राप्त करते ।'' ''कोई भी व्यक्ति चाहे वह चोर हो, पापी हो, पाप करने वालों में भी सबसे नीच हो, यदि वह यज्ञ करना चाहता है तो वह सज्जन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही है । यज्ञों से संतुष्ट हुये देवता संसार का कल्याण करते हैं । यज्ञ द्वारा लोक परलोक का सुख प्राप्त होता है । यज्ञ से स्वर्ण की प्राप्ति होती है । यज्ञ के समान कोई दान नहीं, यज्ञ के समान कोई विधि-विधान नहीं । यज्ञ में ही सब धर्मों का उद्देश्य समाया हुआ है । असुर और सुर सभी पुण्य के मूल हेतु यज्ञ के लिए प्रयत्न करते हैं । सत्पुरुषों को सदा यज्ञ परायण होना चाहिए । यज्ञों से ही बहुत से सत्पुरुष देवता बने हैं । पापियों की शुद्धि यज्ञादि से हो जाती है ।'' -

-महाभारत

यज्ञ के लाभ

यज्ञ से आत्म साक्षात्कार, स्वर्ग सुख, बन्धन मुक्ति, मनः शुद्धि, पाप प्रायश्चित होता है और ऋद्धि सिद्धियां मिलती हैं, अनेक प्रकार के आध्यात्मिक एवं भौतिक शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं । अनेकों मानसिक दुर्बलताऐं दूर हो सकती हैं । यज्ञ से प्रसन्न हुए देवता मनुष्य को धन, सौभाग्य, वैभव तथा सुख साधन प्रदान करते हैं । यज्ञ करने वाला कभी दरिद्री नहीं रह सकता । यज्ञ करने वालों की सन्तान बलवान, बुद्धिमान, सुन्दर और दीर्घजीवी होती हैं । यज्ञ को सर्वकामना पूर्ण करने वाली कामधेनु और स्वर्ग की सीढ़ी कहा गया है । यज्ञ से अमृतमयी वर्षा होती है, जिससे अन्न, वनस्पति दूध, खनिज पदार्थों की प्रचुर मात्रा में उत्पत्ति होती है, जिससे प्राणियों का पालन होता है । यज्ञ से सद्भावना पूर्ण वातावरण की उत्पत्ति होने से आकाश में फैले हुए चिन्ता, कलह, क्लेश, शोक, ईर्ष्या, द्वेष, अन्याय, लोभ व अत्याचार के भाव नष्ट होते हैं, । यज्ञ से वायु शुद्ध होती है । यज्ञ से शत्रु मित्र बन जाते हैं, पापों का नाश होता है, आत्मा का मैल दूर होता है और लोक के सब दुष्कर्म नाश होते हैं । यज्ञकर्ता भय रहित हो जाते हैं । यज्ञ से मल विक्षेप व कुसंस्कारों का निर्वाण होता है, मन, वाणी एवं बुद्धि की उन्नति होती है, पवित्र आचरण करने की शक्ति प्राप्त होती है और शान्तिमय वातावरण की उत्पत्ति होती है । यज्ञ करने वाले को माया नहीं सता सकती, उसकी आयु बढ़ती है ।

जिस-जिस कामना से जो यज्ञ करता है उसकी वह सभी कामनाऐं पूर्ण हो जाती हैं । निष्काम भाव से करने वाले को निश्चय ही परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति होती है । पुत्रार्थी को पुत्र लाभ होता है । शरीर, मन तथा आत्मा पवित्र होते हैं । दुःखों से छुटकारा मिलता है । यज्ञ के द्वारा मनुष्य देवता बन सकते हैं, अपनी आसुरी प्रवृत्तियों का शमन कर सकते हैं । यज्ञ से बुद्धि शुद्ध और तीव्र होती है, इन्द्रिय शक्तियाँ बढ़ती हैं । यज्ञकर्ता कष्टों कठिनाईयों से छूटकर सुख शांति को प्राप्त करता है । यज्ञ प्रसन्नता का स्त्रोत है, इससे मानसिक शक्तियों का विकास होता है । यज्ञ मनुष्य के अंदर त्याग, समर्पण, परोपकार, आन्तरिक शत्रुओं का दमन, संगठन आदि भावनाओं का संचार करता है । यज्ञ से राजयक्ष्मा (टी.बी.) जैसे रोग ठीक हो सकते हैं ।

''यज्ञ से ज्ञान बुद्धि और बल की वृद्धि होती है । (१।१३।२) यज्ञ सुखों की वर्षा करने वाला है । (१।१६।१।१). . . . . यज्ञ से सब तरह का कल्याण होता है । (५ । ४ । ७) जो यज्ञ करता है वह धन ऐश्वर्य से, तेज से यश और कीर्ति से मनुष्यों में चमकता है और अन्त में आत्मज्ञानी होकर अमर हो जाता है । (६ । ५ । ५५) . . . . . हे वेदपाठ के देवता ! उठो देवताओं को यज्ञ का संदेश सुनाओ । आयु, प्राण, प्रजा, पशु और कीर्ति से बढ़ाओ । यज्ञ कर्ता को हर प्रकार बढ़ाओ । (१० । १६४ । २)'' (ऋग्वेद)

''यज्ञ से अशुद्ध तत्वों का नाश होता है । (१ । १३) यज्ञ से आरोग्यता प्राप्त होती है । (१ । १४,४ । १५) यज्ञ से दिव्य वातावरण की उत्पत्ति होती है । (१ । १५) . . . यज्ञ से आन्तरिक शत्रुओं का नाश होता है । (१ । १७). . . . यज्ञ नेत्र रक्षक है । (२ । १६) . . . यज्ञ से असुरों का नाश होता है । (२ । ३०) . . . यज्ञ सुखों का संचय करने वाला है । (३ । ४८,४ । ९) यज्ञ निश्चय कल्याणकारी है, वह दीर्घ आयु उत्तम अन्न ऐश्वर्य समृद्धि, सुसंतति व बल पराक्रम प्रदान करता है । (३।६३) . . . यज्ञ वीरता दायक और कायरता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विनाशक है । (४।३७) . . . यज्ञ ऋषियों के हृदय को पवित्र करने वाला है । (३।४) यज्ञ बन्धन का साधन है । (५।३०) . . . यज्ञ देवताओं, मनुष्यों, पितृजनों और अपने प्रति किये गये, जाने यज्ञ अनजाने किए गये पापों से बचाने वाला है । (८।१३) . . . यज्ञ करने वाले के लिए वायु और नदियां मधुर रस बहाती हैं । (१३।२७) . . . यज्ञ से आत्मबल की वृद्धि होती है । (१७।६५). . . मन, आत्मा, वाणी, प्राण, ज्ञान ज्योति, श्री, वेद, आयु, नेत्र, से संपन्न होते हैं । (१८।२९) . . . यज्ञ से ब्रह्म वर्चस् की प्राप्ति होती है । (१९।१९) . . . . यज्ञ से सद्बुद्धि की प्राप्ति होती है । (२०।८५) . . . यज्ञ से तीनों छन्दों (तीनों लोकों) जगति, त्रिष्टुए में और गायत्री में कल्याण होता है । (२।२५,५।१३,३८। १८)'' (यजुर्वेद)

यजुर्वेद के अठारहवें अध्याय में यज्ञ से अनन्त 'मेरा अन्न, ऐश्वर्य प्रयत्न, ध्यान, प्रज्ञा, स्वर, प्रशंसा, कीर्ति, ज्ञान, सुख, प्राण, चित्त, विचार, वाणी, मन, चक्षु, चातुर्य, बल, ओज, साहस, स्वामित्व, मानसकोप, क्रोध, उद्वेग, सौम्यभाव, उदारभाव, दीर्घजीवन, लोक, धन धान्य वृद्धि, समृद्धि, सत्य, श्रद्धा, तेज, व्यवहार, हर्ष, सुंदर वचन, श्रेष्ठकर्म, ज्ञान, अमर स्वरूप, आरोग्य, स्वास्थ्य, शत्रु रहित्य निर्भयता, संयम शक्ति, धारण-शक्ति धैर्य, प्रेरणा, कल्याण, कामना, प्रसन्नता, भूत और भविष्य, सुमार्ग और सुपथ्य, समर्थ और शक्ति उद्देश्य यज्ञ से सुसम्पन्न हो । ''

''यदि रोगी अपनी जीवनी शक्ति को खो भी चुका हो, निराशा जनक स्थिति को पहुंच गया हो, मरण काल भी समीप आ पहुँचा हो तो भी यज्ञ उसे मृत्यु के चंगुल से बचा लेता है और सौ वर्ष जीवित रहने के लिये पुनः बलवान कर देता है । (अथर्व, ३।११।२)''

''गर्भाधान, जातकर्म, चूड़ाकर्म और मौञ्जा बंधन संस्कार करने के समय हवन करने से वीर्य और गर्भ की त्रुटियों और दोनों की परिशुद्धि हो जाती है । (मनु)'' । ''यज्ञ से जनता का कल्याण होता है और उनके बल तथा बुद्धि की शक्ति बढ़ती है'' (ऐतरेय ब्राह्मण ३।२।१।४)'' । ''यज्ञ करने से अपने कर्तव्य का पालन करते हुये प्राणी-मात्र का जो अप्रत्याशित उपकार होता है, उस से स्वर्ग (सुख विशेष) की प्राप्ति होती है (मीमांसा)'' । ''आरोग्य प्राप्त करने की इच्छा करने वालों को विधिवत् हवन करना चाहिए । (चरक ऋति)'' । ''यज्ञ करने वाले को गृह-पीड़ा, बन्धुनाश, धन, क्षय,पापरोग बन्धन आदि की पीड़ा नहीं सहनी पड़ती (कोटि होम पद्धति)'' ।

ब्रह्माण्ड की सूक्ष्म दिव्य शक्तियों में गड़बड़ी होने पर ही भूकम्प, दुर्भिक्ष, तूफान, अति वृष्टि, अनावृष्टि, रोग, महामारी आदि सामूहिक विद्वेश, विक्षोभ, युद्ध, भय, शोक सामने आते रहतें हैं । यदि इन देव शक्तियों की तुष्टि पुष्टि होती जाया करे, इनका संतुलन बराबर रहे तो कोई कारण नहीं कि इन शक्तियों के ताण्डव को सह कर हम दुखी हों । ऋग्वेद (१।१६४।३६) की घोषणा है कि 'यज्ञ सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकी नाभि है - बांधने वाला है ।'' अथर्ववेद (९। १०। १४) भी इसका समर्थन करता है देखिये ''यज्ञ ही से समस्त विश्व ब्रह्माण्ड का केन्द्र मूल है ।'' क्योंकि यज्ञ से देव शक्तियों को बल मिलता है, जिससे वह संचालन कार्य बड़ी तत्परता से करती रहती हैं, उसमें कोई गड़बड़ी होने का भय नहीं रहता । इतिहास बताता है कि जब बड़े यज्ञ हुआ करते थे तो दुर्भिक्ष, भूकम्प, अतिवृष्टि आदि के दर्शन बड़े दुर्लभ होते थे देखिये''जब गंधर्वों ने उपदेश दिया तब राजा पुरुरवा अपने नगर में जाकर अग्नि उपासना में तत्पर हुये । धर्म के द्वारा प्रजा का पालन करते हुये बहुत यज्ञों द्वारा यजन किया । सैकड़ों अश्वमेध, हजारों बाजपेय अतिरात्रि, द्वादशाह यज्ञों द्वारा बार-बार यजन करके सप्त द्वीप समुद्रों वाली पृथ्वी का चक्रवर्ती राजा हुआ, अमानुसिक बल से उसने सम्पूर्ण महीतल को जीता । दुर्भिक्ष, अकाल मरण, व्याधि यह राजा पुरुरवा के राज्य में कहीं भी किसी को नहीं हुआ । उनके राज्य में सभी अपने धर्म में तत्पर रहते थे, सभी मनुष्य सुखी रहते थे । *(वि० ध० पु० अ० १३७) ।*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञों के न होने से देवताओं का कोप होता है, उससे देश में अकाल, युद्ध, महायुद्ध, उनके कारण महघाती-पिशाची का प्रकाण्ड ताण्डव हुआ करता है । देवताओं के कोप से अतिवृष्टि व अनावृष्टि, अतिशीत, अतिग्रीष्म, अतिवायु हुआ करते हैं, जिनसे अकाल की कराल ज्वालाऐं फैलती हैं । देवताओं के कोप द्वारा बुद्धियां नाश होती हैं, जिससे छल, कपट, स्वार्थ, पाप, अत्याचार, ईर्ष्या, द्वेष, लोभ आदि दुख, शोक और चिन्ता मूलक भावों की वृद्धि होती है । बुद्धि के नाश होने से सर्वनाश हो जाता है, विवेक शक्ति क्षीण हो जाती है, कोई अच्छा कार्य नहीं बन पाता, बुरे कामों की ओर झुकाव अधिक होता है, जिसका परिणाम सर्वदा दुखदायी हुआ करता है । कूर्म पुराण में कहा है. "नास्तिकता से अथवा आलस्य से जो अग्नि को धारण नहीं करना चाहता अथवा यज्ञ से जो परमात्मा का भजन नहीं करता वह अनेकों नरकों को प्राप्त करता है ।" शंख ऋषि ने भी ऐसे ही भाव प्रगट किये हैं, वे कहते हैं यज्ञ न करने वाला मनुष्य लौकिक और पारलौकिक सुखों से वंचित हो जाता है । यज्ञ न करने वाले की आत्मा पवित्र नहीं होती और वह पेड़ से छूटे हुये पत्ते की तरह नष्ट हो जाता है ।"

भागवत में आया है कि राजा वेन ने अपने राज्य में ढिंढोरा पिटवा दिया था कि "मेरे राज्य में कोई यज्ञ न करे । राजा में सर्व देवों का वास होता है अत: केवल मेरा भजन व पूजन करो !" ऋषियों के समझाने पर भी वह न माना और यज्ञ बंद करने के अपने दुराग्रह पर अड़ा रहा तो ऋषियों ने शाप देकर राजा वेन को मार डाला । कंस ने यज्ञों का विरोध किया था उसका परिणाम क्या हुआ वह सबके सामने है ।

सारांश यह है कि यज्ञ से सूक्ष्म दिव्य शक्तियां (देवता) बलवान होती हैं, उनकी तुष्टि पुष्टि होती है, जिससे प्राणी मात्र को विशेष लाभ होते हैं । यदि यज्ञ विद्या का लोप होता जाये तो सृष्टि में जो सूक्ष्म आध्यात्मिक धाराओं का प्रवाह चल रहा है वह धीरे-धीरे मध्यम से मध्यम तर होता चला जाये, तो लोगों में पाशविक वृत्तियों का आधिपत्य होने लगेगा । आकार में मनुष्य होते हुये भी वह पशुवत् कार्य करेंगे । आज यज्ञ के अभाव में ऐसा ही हो रहा है । एटम बम और हाइड्रोजन बमों से पृथ्वी को नष्ट करने की तैयारियाँ हो रही हैं । सूक्ष्म जगत में आसुरी शक्तियों की तीव्र गति से वृद्धि ही इसका मूल कारण है । इन आसुरी शक्तियों को नष्ट भ्रष्ट करने के लिये देवशक्तियों को बलवान बनाने की आवश्यकता है । देवशक्तियों को बल देने का साधन है यज्ञ । यदि शान्तिमय वातावरण की उत्पत्ति करना चाहते हैं तो हमे बड़े-बड़े यज्ञ करने चाहिये ।

यज्ञ का वैज्ञानिक आधार

आज का युग विज्ञान और बुद्धिवाद का युग है, हर एक बात को विज्ञान और बुद्धि की कसौटी से तोला जाता है, क्यों और कैसे का उत्तर पूछा जाता है । आज का बुद्धिशील मानव केवल विश्वास और श्रद्धा के ही आधार पर किसी कार्य को करने के लिये तैयार नहीं है । वह बुद्धि और विज्ञान पर परखने के पश्चात् ही उस पर आस्था रखना अधिक पसंद करता है । यज्ञ के सम्बन्ध में भी यही बात है । प्राय: यह सुना जाता है कि यज्ञों में सहस्त्रों रुपयों का घी और सामग्री होमी जाती है, जिसका कोई लाभ नहीं होता । लोगों को घी खाने को नहीं मिलता, यह बेकार में इसे नष्ट कर देते हैं । जितना यज्ञों में व्यय होता है, इतने धन से अनेकों की आवश्यकता पूर्ति हो सकती है, भिखारियों को भोजन आदि खिला कर पुण्य कमाया जा सकता है । ऐसी धारणाओं का हमारे मन:क्षेत्र में प्रवेश करना ही स्वाभाविक है, क्योंकि हम यज्ञ के विज्ञान से बिल्कुल परिचित नहीं हैं ।

यज्ञ कोई अन्धविश्वास पर आधारित परम्परा नहीं चली आ रही है, यज्ञ करना बुद्धि व विज्ञान रहित नहीं है बल्कि इसका श्री गणेश बहुत लम्बे समय की वैज्ञानिक खोज के पश्चात् ही किया गया था । हमारे प्राचीन ऋषि व महात्मा भौतिक वादी नहीं थे, वे अध्यात्म व सूक्ष्मवादी थे । वे इस तत्व को भली भांति जानते थे कि स्थूल की अपेक्षा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूक्ष्म का महत्व अत्यधिक होता है, क्योंकि स्थूल, सूक्ष्म पर ही आधारित होता है । सूक्ष्म का गुण गतिशीलता है, स्थूल गति रहित है । स्थूल की गति सूक्ष्म के बिना होना असम्भव है ।

शरीर और प्राण का उदाहरण ले लीजिये, यदि प्राण है तो खाना-पीना, उठना-बैठना, चलना-फिरना, लिखना आदि सब क्रियायें होती रहती हैं । प्राण के शरीर से निकल जाने के पश्चात् शरीर अपने आप एक सैकिंड के लिए भी कोई कार्य नहीं कर सकता । प्राण के बिना शरीर का कोई महत्व नहीं है । प्राणों के संचार के बिना शरीर में गति होना असंभव है । प्राणशक्ति की निर्बलता से ही रोग उत्पन्न होते हैं । प्राण शक्ति के निर्बल होने से ही शरीर क्षीण होने लगता है । प्राण में शक्ति आने से शरीर में शक्ति आती है । ऐसा होना असम्भव है कि शरीर में शक्ति आने से प्राण में शक्ति आती हो । इसलिये कहा जाता है कि प्राणायाम (वह क्रिया- जिससे प्राणों का व्यायाम होता है और जिससे प्राण बलवान होते हैं) से आयु बढ़ती है और ऋषि मुनि इसके द्वारा अपनी इच्छानुसार आयु बढ़ा लेते थे ।

सूक्ष्म में महान् शक्ति है । सिंह और हाथी में शारीरिक शक्ति अधिक होती है, पर मनुष्य अपनी सूक्ष्म बुद्धि-शक्ति के सहारे उन्हें अपना गुलाम बना लेता है । ऋषियों के शाप-वरदान सूक्ष्म शक्ति के ही चमत्कार होते थे । सृष्टि संचालन-प्रक्रिया पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि सूक्ष्म शक्तियों के सहारे ही करोड़ों, अरबों, खरबों मनों की पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगा रही है । कहने का तात्पर्य यह है कि सूक्ष्म शक्ति स्थूल से अति अधिक होती है । जितना-जितना किसी वस्तु का स्थूलत्व कम होता जाता है, उतनी ही उसमें शक्ति बढ़ती जाती है ।

ध्वंस ही सृष्टि का मुख्य कारण है । रगड़ से बिजली पैदा होती है । आप देखते हैं कि बादाम को घिसने से उसकी शक्ति बहुत बढ़ जाती है । कुछ औषधियों को मिलाकर जब सुरमा बनाते हैं तो उसे बहुत बारीक किया जाता है, क्योंकि उसका स्थूलत्व जितना कम होता जाता है उतनी ही उसमें आरोग्यशक्ति बढ़ती जाती है । आयुर्वेदिक चिकित्सा में भस्म व कुश्तों को बहुत शक्ति वर्धक बताया जाता है । उनका विज्ञान भी यही है कि ओषधियों के स्थूलत्व को बहुत कम करने की चेष्टा की जाती है । रोटी के ग्रास यदि खूब चबा-चबा कर खाये जायें तो वह बहुत लाभदायक होते हैं । जल स्थूल है, जल में उतनी शक्ति नहीं जितनी कि उसके स्थूलत्व को कम करके 'भाप' में होती है । आप देखते हैं कि जल का स्थूलत्व कम होकर इसमें इतनी शक्ति आ जाती है कि हजारों मनो के रेलगाड़ी के डिब्बों को तीव्र गति से खींचकर ले जाता है । होमियोपैथिक ओषधि बनाने का भी यही विज्ञान है । वह ओषधि के स्थूलत्व को बिल्कुल नष्ट कर देते हैं जिससे वह ओषधि बहुत शक्तिशाली बन जाती है । यज्ञ का भी यही विज्ञान है ।

ओषधियों के स्थूलत्व को नष्ट करके सूक्ष्म बनाकर उनकी शक्ति को सहस्त्र गुण बढ़ा दिया जाता है । यज्ञ में होमा हुआ घी और औषधियां व्यर्थ नहीं जातीं बल्कि उनका महत्व बहुत बढ़ जाता है । वेद भी इसका साक्षी है । यजुर्वेद (१७।२१) में आया है "शांति कर्ता अग्नि हव्य को नष्ट नहीं करता बल्कि वायु आदि देवताओं में विस्तार कर देता है ।" आधुनिक विज्ञान भी इस तथ्य को मानता है कि संसार में कोई वस्तु नष्ट नहीं होती, केवल उसका रूप बदल जाता है । यज्ञ स्थूल वस्तुओं को सूक्ष्म बनाने वाला शक्तिशाली यंत्र है । एक सेर घृत को हजार सेर कर देता है । यह एक ऐसी अद्भुत विज्ञान सम्मत कला है जिससे एक रू० की वस्तु को एक हजार रु० मूल्य की बना दी जाती है । डायनुमा बिजली उत्पन्न करता है, यज्ञ हजारों गुणा शक्ति बढ़ाने वाला महान् शक्तिशाली डायनुमा है ।

दूसरी बात यह है कि हमारे पूज्य ऋषियों ने जब ध्यानावस्था में देखा कि जब तक आकाशी संसार, पृथ्वी वाले संसार और मनुष्य के शरीर वाले संसार में सामंजस्य न हो जाये तब तक मनुष्य परम सुख को प्राप्त नहीं कर सकता । जब तक तीनों संसारों में एक जैसी बात न हो रही हो, मनुष्य का सुखी रहना असम्भव है, क्योंकि जो कुछ आकाश में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है, वह इस संसार में है, और जो इस संसार में है, वह इस शरीर में है । तो शरीर वाले संसार को ठीक रखने के लिये आवश्यक है कि पृथ्वी वाला संसार ठीक हो और पृथ्वी वाले संसार को ठीक रखने के लिये आवश्यक है कि आकाशी संसार ठीक हो । इससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि यदि आकाशी संसार ठीक हो तो पृथ्वी व मनुष्य के शरीर वाले दोनों संसार अपने आप ठीक हो जाते हैं ।

सामंजस्य का यह नियम प्रकृति का अटल नियम है । आप देखते हैं कि जब तक दो मनुष्यों के विचारों में समता नहीं होती तब तक उनमें मित्रता कदापि नहीं हो सकती । यदि होती भी है तो अस्थायी, स्थायी नहीं रहती । क्या कभी गँवार और फिलास्फर का, नम्र व अहंकारी का, अमीर से गरीब का, सदाचारी व संयमी पुरुष का कपटी,- पाखण्डी, व्यसनी और दुराचारी से और श्रेष्ठ का नीच से मेल हो सकता है ? नहीं क्योंकि यहां समता का नियम भंग हो जाता है । समता एक ऐसी अद्‌भुत आकर्षण शक्ति है जो दोनों को एक दूसरे की ओर खींच कर रखती है ।

यदि मनुष्य सुखी रहना चाहता है, यदि वह चाहता है कि सूर्य, चन्द्रमा, वायु, जल, पृथ्वी आदि उसे शक्ति प्रदान कर ऊपर उठावें, यदि वह चाहता है कि सूक्ष्म प्रकृति के अन्तराल में काम करने वाली अदृश्य दिव्य शक्तियों, जिन्हें देवता कहते हैं, को अनुकूल बना कर और उनसे घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करके, दिव्य गुणों और शक्तियों को धारण करके सुख और शांति को प्राप्त करे तो उसे यज्ञ करना होगा, आकाशी संसार को ठीक रखना होगा । चूँकि यह दिव्य शक्तियां सूक्ष्म हैं, इसलिये इन तक पहुँचने के लिये सूक्ष्म की ही आवश्यकता है । यज्ञ स्थूल वस्तुओं को सूक्ष्म बना देता है । यज्ञ इन तीनों संसारों अर्थात् आकाश, पृथ्वी और शरीर में समन्वय करता है और यह समन्वय परिणाम में सुख और शांति का साम्राज्य स्थापित करता है ।

आयुर्वेद शास्त्र इसी समन्वय के नियम पर आधारित है । आयुर्वेद का सिद्धान्त यह है कि जिस प्रकार समस्त विश्व भगवान ने पंचतत्व (अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी) से बनाया उसी प्रकार मनुष्य का शरीर भी इन पंचतत्वों का समन्वय है, जिससे वात, पित्त कफ तीन तत्व बनते हैं । इनकी सम अवस्था में रहने से कोई रोग नहीं होता । तीनों की विकृत अवस्था ही रोग का कारण है और इस विकृत अवस्था को समता में लाना ही निरोगता है । सूक्ष्म का ही प्रभाव पड़ता है, इसी पर होमियोपैथी विज्ञान का आधार है । उनके मतानुसार रोग सूक्ष्म जीवनी शक्ति को होता है, शरीर को नहीं, क्योंकि जड़ शरीर में कोई शक्ति नहीं होती, जब तक सूक्ष्म जीवनी शक्ति उसमें गति न ला दे । उस सूक्ष्म जीवनी शक्ति तक पहुँचने और सूक्ष्म रोग को ठीक करने के लिये आवश्यक है कि ओषधि भी सूक्ष्म हो, क्योंकि स्थूल ओषधि स्थूल शरीर पर ही प्रभाव डाल सकती है, सूक्ष्म रोग तक उसकी पहुंच कदापि नहीं हो सकती । इसीलिये होमियोपैथिक ओषधियां सूक्ष्म होती हैं । उनमें स्थूलत्व बिल्कुल समाप्त हो जाता है । इसी आधार पर होमियोपैथिक डाक्टर कहते हैं कि ऐलोपैथिक आदि स्थूल ओषधियाँ सूक्ष्म जीवनी शक्ति को हुए सूक्ष्म रोग तक न पहुंचने के कारण उसे दबा देती हैं ।

होम्योपैथिक विज्ञान के अनुसार यदि रोग और ओषधि के लक्षणों में समता न हो तो ओषधि सूक्ष्म होते हुये भी उसे ठीक नहीं कर सकती क्योंकि समता का नियम भंग होने से आरोग्य शक्ति क्षीण हो जाती है । समता में बहुत शक्ति है । यह मिलाने, जोड़ने, योग सिद्ध करने और मोक्ष दिलाने वाली महान शक्ति है । संयोग अर्थात् पदार्थों का परस्पर संगतिकरण ही संसार की स्थिति का कारण है और वियोग विनाश का हेतु । एक दूसरे में प्रेम, एकता, सहयोग और सद्‌भावों का आविर्भाव तभी होता है जब उनमें समता हो, इसी समता के अटल सिद्धान्त को लेकर ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने यज्ञ का महान् आविष्कार किया होगा ।

अग्नि के मुख में जो आहुतियाँ दी जाती हैं वह सब देवताओं को प्राप्त होती हैं, जिससे देवता प्रसन्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

होते हैं और बदले में हमें उससे अधिक देते हैं । गीता में भी कहा है"इस यज्ञ के द्वारा देवताओं को उन्नत करो और वह देवगण तुम लोगों को उन्नत करें । परस्पर उन्नति करते हुये श्रेय को प्राप्त होंगे । " "अग्नि में हवि देने से देवताओं की तृप्ति होती है, वह देवता तृप्त होकर उस मनुष्य को इच्छित समृद्धि के द्वारा संतुष्ट करते हैं ।" (विष्णु धर्मोत्तर पु०) "यज्ञों से देवता संतुष्ट होते हैं ।" (कालिका पुराण) "यज्ञ के द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति देवताओं को सबल बनाती है और उसी से परिपुष्ट होकर वह सृष्टि रचना से लेकर विश्व कल्याण के समस्त कर्मो का आयोजन करते हैं ।" (पद्म पुराण) "यज्ञ से देवों की प्राप्ति होती है ।" (मत्स्य पु०) "यज्ञादि शुभ कर्मों से देवताओं को प्रसन्न करके मनुष्य शक्ति, सुख और सम्पदाऐं प्राप्त करता है ।" (अङ्गिरा) ।

इनका अभिप्राय यह है कि जब हम अग्नि के मुख में आहुतियां डालते हैं तो अग्नि उन्हें सूक्ष्म बना कर अदृश्य लोकों में भेज देती है, जहाँ सूक्ष्म दिव्य शक्तियों का वास होता है । यह स्थूल से सूक्ष्म बनी हुई आहुतियां उन सूक्ष्म दिव्य शक्तियों को बलवान बनाती हैं । जैसे कूएँ में आवाज देने से वह टकराकर वापिस आती है, दीवार पर गेंद फेंकने से वह और अधिक शक्ति से हमारी ओर आती है, जैसा व्यवहार किया जाता है, वह वैसा ही करने की कोशिश करता है, प्रेम प्रेम को खींच लाता है, ईर्ष्या, द्वेष से ईर्ष्या, द्वेष बढ़ते हैं, परमार्थ से दूसरों से अधिक अपना कल्याण होता है, जैसे अच्छे या बुरे काम करते हैं वैसे ही परिणाम भोग लेते हैं, वैसे ही वह सूक्ष्म शक्तियां जिनको हम बलवान बनाने की चेष्टा करते हैं प्रतिक्रिया में हमें सब प्रकार के लाभों से लाभान्वित करती हैं, हमारे सूक्ष्म शरीर को बलवान बनाती हैं, क्योंकि सूक्ष्म का ही सूक्ष्म पर प्रभाव पड़ सकता है, स्थूल का नहीं ।

सूक्ष्म शरीर के बलवान होने से मनुष्य चरित्रवान, परमार्थी , सदाचारी, निर्मल, नम्र, शान्त, प्रेमी, साहसी, निर्लोभी, संयमी, चतुर, पराक्रमी, सत्यवान, ईमानदार, दयावान, शीलवान, भाग्यवान, तेजस्वी, देवता, न्यायी, सहनशील, उदार, सन्तोषी, निश्चिन्त, कर्तव्यपरायण, विवेकी, निरोगी, निर्भय और श्रेष्ठ बन जाता है । उसका मन शुद्ध व पवित्र हो जाता है । वह जितना सूक्ष्म बनता जाता है उतना ही मोक्ष की ओर कदम बढ़ाता जाता है, क्योंकि सूक्ष्म में प्रवेश करने के लिये सूक्ष्म बनना होगा ।

पुत्रेष्टि यज्ञ से सुसन्तति की प्राप्ति का भी यही रहस्य है कि स्त्री और पुरुष के रजवीर्य में जो सूक्ष्म दोष होते हैं उनका निवारण यज्ञ से उत्पन्न सूक्ष्म शक्ति से समता के आधार पर हो जाता है । गर्भाशय व वीर्य रोगों की शुद्धि में यज्ञ विशेष रूप से सहायक होता है । पुरुष अग्नितत्व प्रधान है और स्त्री चन्द्र (सोम) तत्व प्रधान । इन तत्वों के अभाव से ही सन्तान उत्पत्ति में बाधा पड़ती है । यह तत्व सूक्ष्म होते हैं ।

आवश्यकतानुसार सोम व अग्नितत्व प्रधान औषधियां होमी जाती हैं । वह सूक्ष्म बनकर इन सूक्ष्म अभावों को दूर करके अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होती हैं । यज्ञ से आरोग्य का भी यही सिद्धांत है कि सूक्ष्म पर सूक्ष्म का ही प्रभाव पड़ सकता हैं । होम्योपैथिक विज्ञान के अनुसार रोग सूक्ष्म होते हैं, स्थूल नहीं, रोग सूक्ष्म जीवनी शक्ति को होते हैं, शरीर को नहीं । सूक्ष्म जीवनी शक्ति तक पहुंचने और उसे रोग से छुड़ाने के लिये सूक्ष्म शक्ति का होना आवश्यक है । यज्ञ से स्थूल वस्तुऐं सूक्ष्म बनती हैं और समता के सिद्धान्त पर सूक्ष्म जीवनी शक्ति को सूक्ष्म रोग से छुड़ाती है ।

इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुये महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है कि "यज्ञ में दी हुई आहुति के दो रूप बन जाते हैं, वह दो भागों में विभक्त हो जाती है । एक रूप पृथ्वी, आकाश, वायु, जल को शुद्ध करता है, उन्हें शक्ति प्रदान करके मनुष्य के लिये लाभकारी बनाता है । दूसरा भाग मनुष्य के शरीर में प्रवेश करके सूक्ष्म शरीर को निवास स्थान बनाता है । जीवन के अंत में सूक्ष्म शरीर में लिपटा हुआ आत्मा जब इस शरीर से बाहर निकलता है तो यह आहुतियाँ सूक्ष्म शरीर को लपेटकर उसे ऊपर उठाकर उस लोक में ले जाती हैं, जिसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इच्छा से ये डाली गयी थीं । इन आहुतियों के इस रूप का शक्तिशाली होना इच्छाशक्ति की प्रबलता, श्रद्धा और विश्वास की दृढ़ता पर निर्भर है ।''

आज का समाज काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, स्वार्थ, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, राग, बैर, तृष्णा, असहनशीलता आदि के विचारों से गूंज रहा है । विज्ञान कहता है कि विचार कभी नष्ट नहीं होते । वह सूक्ष्म होने के कारण मस्तिष्क से निकल कर आकाश व्यापी ईश्वर तत्व में प्रवेश करके सारे विश्व में फैल जाते हैं । दूषित विचार वातावरण को दूषित करते हैं । इसलिये केवल अपने मस्तिष्क में बुरे विचार लाना भी महापाप है, क्योंकि जब कोई व्यक्ति ऐसे ही विचार करता है तो वह आकाश व्यापी विचार समता के सिद्धान्त पर आकर्षित होते हैं और उस व्यक्ति के विचारों को उत्तेजित व परिपुष्ट करते हैं जिससे वह उस मार्ग में शीघ्रातिशीघ्र बढ़ने लगता है । तो बुरा सोचना भी दूसरों से बुरा करना है और सद्विचारों का आवाहन करना परमार्थ है क्योंकि यह विचार ऐसे ही विचार करने वालों को आगे बढ़ने में सहायक होते हैं । समाज में फैले हुए दुर्गुणों, दुर्विचारों, और दु:स्वभावों को दूर करने के लिये आकाश व्यापी दूषित विचारों को नष्ट करने की आवश्यकता है, जिसका सरल और अमोघ साधन यज्ञ है ।

यज्ञ से मानो हजारों और लाखों सतोगुण के प्रतीक सूक्ष्म सैनिक आकाश में फैलकर तमोगुण प्रतीक शत्रुओं का नाश करना आरम्भ कर देते हैं । यज्ञ का जितना अधिक प्रचार होगा और जितने बड़े-बड़े यज्ञ होंगे उतनी ही मात्रा में यह शत्रु नाश होते जायेंगे । शास्त्रों में देव असुर संग्राम का वर्णन आता है । यज्ञ से देवता शक्तिशाली बनते हैं और देव-असुर संग्राम का आरम्भ हो जाता है (सद्-विचारों और दूषित विचारों में संघर्ष ही देव-असुर संग्राम है ।) असुर शान्ति को भंग करते हैं । यज्ञ असुरों का नाश करके सुख और शांति की स्थापना करते हैं । इस संग्राम के दोनों दर्जे सूक्ष्म होते हैं । इसलिये एक दूसरे पर प्रहार करने की क्षमता रखते हैं । यज्ञ से उत्पन्न हुये शुद्ध और पवित्र सूक्ष्म वातावरण का प्रभाव हमारे सूक्ष्म विचारों पर पड़ता है और वह शुद्ध तथा पवित्र हो जाते हैं । यज्ञ में दूषित विचारधारा को बदलने की अपूर्व शक्ति है । पहले बताया जा चुका हैं कि सूक्ष्म स्थूल में गति करता है । विचार सूक्ष्म होते है, शरीर स्थूल है । शरीर वैसे ही कार्यों में प्रवृत्त रहता है जैसे विचार होते हैं । दूषित विचारों से पाप, अत्याचार, स्वार्थ, व्यभिचार और वैर जैसे कार्य सधते हैं, जिनका भयानक परिणाम होना अनिवार्य है । सद्विचारों संकल्पों और भावनाओं से परमार्थ ईमानदारी, भलाई, मित्रता, सहायता, दया, सहानुभूति, सत्य, प्रेम, संतोष और प्रसन्नता की प्राप्ति होती है और मनुष्य साधारण से असाधारण, पुण्यात्मा, महान् आत्मा, महात्मा बन जाता है ।

ऊपर की पंक्तियों से प्रतीत होता है कि अग्नि अपने भेदक गुणों के कारण स्थूल वस्तुओं को सूक्ष्म बना देती है जिससे सृष्टि संचालन करने वाली ईश्वर की शक्तियों की, जिन्हें देवता नाम से पुकारा जाता है और जिनका सारे संसार की विभिन्न समस्याओं से तथा मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन की सुख समृद्धि, उन्नति अवन्नति, हानि लाभ, रोग शोक आदि से घनिष्ठ सम्बन्ध है । हम हवि देते हैं, इसके बदले में वह हमें अति अधिक लाभ पहुँचाते हैं जो आपने पिछले पृष्ठों पर पढ़े हैं । उनसे आपको मालूम हो गया होगा कि यज्ञ में होम घृत और सामग्री नष्ट नहीं होती, और जैसी धारणायें आजकल लोगों में जड़ जमाये बैठी हैं, वह ठीक नहीं हैं ।

स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर

आज हम दुखी क्यों हैं ? कलह, क्लेश, चिन्ता और शोक क्यों हर समय हमें घेरे रहते हैं ? अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये दूसरे का बड़े से बड़ा अहित करने के लिये क्यों तैयार रहते हैं ? केवल धन को एकत्रित करने के लिये क्यों चौबीसों घन्टे घूमते रहते हैं और उसकी प्राप्ति में महान् से महान् पाप और अत्याचार (यह जानते हुए भी कि बुरे काम का बुरा ही परिणाम होता है और वह अवश्य भोगना ही पड़ेगा, छुटकारा नहीं है) करने में भी संकोच नहीं करते । छल, कपट और धोखेबाजी को अपनाते हुये तनिक भी नहीं हिचकिचाते, बल्कि इसमें अपनी चतुराई का परिमाण देकर बहुत प्रसन्न होते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कामान्ध लोग मानवता को पीटते हुये क्यों दिखाई देते हैं ? लोभ के वशीभूत होकर नरक का द्वार क्यों खटखटाते हैं ? मोह की जंजीर से अपने आपको जकड़ने की क्यों चेष्टा करते रहते हैं ? ईर्ष्या द्वेष की अग्नि में जल-जल कर क्यों अपने आप को भस्म करते जा रहे हैं ? अहंकार के चंगुल मे फंसकर क्यों अपनी जीवन नैया में पत्थर भर कर उसे डुबोने की कोशिश कर रहे हैं ? कुबुद्धि को अपने राज्य में प्रवेश की आज्ञा देकर क्यों अविवेक पूर्ण कार्य करते हैं ? इन्द्रियों और मन का सेवक बनकर क्यों त्रास सह रहे हैं ? मनचले नवयुवक बाजार में जाती हुई शरीफ लड़कियों पर कुदृष्टि डालकर, अपने विचारों को दूषित करके और वातावरण को अशुद्ध व अपवित्र कर के मनुष्यता को क्यों कलंकित करते हैं ? आजकल के युवक काले रंग की सद्गुण सम्पन्न युवती को क्यों घृणा की दृष्टि से देखते हैं और दूषित विचार की गोरे चमड़े वाली से विवाह करके क्यों आनन्द का अनुभव करते हैं ? यदि किसी काले चमड़े वाली से विवाह हो भी गया तो क्यों उसे निकृष्ट समझ कर नाना प्रकार के कष्ट देते रहते हैं और कभी-कभी तो घर से निकाल भी देते हैं ? क्यों केवल इस नाशवान शरीर का पालन पोषण करके, इन्द्रियों को नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजनों से तृप्त करके, शरीर को बहुमूल्य वस्त्रों से सजाकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं और क्यों अपने परम लक्ष्य को भूले हुए हैं ? केवल अपने शरीर को ही स्वस्थ, हृष्ट - पुष्ट बना कर, पेट पालने के लिये थोड़ी सी कला या विद्या सीख कर ही क्यों संतुष्ट हो जाते हैं ? क्यों नहीं सत्य, प्रेम, न्याय, दया, क्षमा, सहानुभूति, उदारता, सहयोग, संयम, शान्ति, संतोष, सदाचार, ईमानदारी आदि दैवी गुणों का भी विकास करते हैं ?

भाई-भाई का शत्रु क्यों हो रहा है ? चोरी और डकैती का बाजार क्यों गर्म है? घूंस लेकर क्यूँ कर्तव्यच्युत के आसन पर बैठते हैं ? सिनेमाओं में क्यों हजारों लोग चरित्रहीन बनने और अपना सर्वस्व खोने के लिये धक्के खाते फिरते हैं और क्यों नहीं सत्संगों के सद्विचार व सद्भावना पूर्ण वातावरण में जाकर चरित्रवान बनकर सुख और शान्ति की अपार निधि को प्राप्त करते हैं ? वेश्याओं के पैरों में पड़कर क्यों अपने धन, सम्पत्ति, स्वास्थ्य और चरित्र का विध्वंस करते हैं ? विवाह पर रुपया पानी की तरह बहाया जाता है परन्तु क्यों यज्ञ आदि परमार्थमय कार्यों के लिए हाथ रुक जाता हैं ? अपने संबंधी की मृत्यु होने पर क्यों रोने धोने लगते हैं ? किसी वस्तु के खो जाने टूट-जाने पर क्यों शोक के समुद्र में डुबकी लगाने के लिए व्याकुल हो जाते हैं ? अंधेरे में, जंगल में चोर डाकुओं से सर्प-बिच्छु आदि से क्यों भयभीत रहते हैं ? पति-पत्नी, सास-बहू, पिता पुत्र के सम्बन्ध क्यों शिथिल होते जा रहे हैं ?

इन सब प्रश्नों का उत्तर केवल एक ही है और यह है कि हम स्थूल को सूक्ष्म से अधिक महत्व देने लगे हैं हालांकि स्थूल सूक्ष्म के सामने तुच्छ है, स्थूल सूक्ष्म पर ही अवलम्बित है । सूक्ष्म न हो तो स्थूल का कोई महत्व नहीं । स्थूल की गति सूक्ष्म की गति से ही होती है क्योंकि स्थूल जड़ होता है और सूक्ष्म चैतन्य । स्थूल से सूक्ष्म के पृथक होने का दूसरा नाम मृत्यु है या यूँ कहिये कि स्थूल मृत्यु है और सूक्ष्म अमृत । स्थूल का चिन्तन करने वाले स्थूलता, जड़ता, मृत्यु और अंधकार की ओर जाते हैं और सूक्ष्म का चिंतन करने वाले चैतन्यता, सूक्ष्मता, अमृत और प्रकाश की ओर बढ़ते हैं । स्थूल को अधिक महत्व देने वाले ही प्रायः दुःखी और चिन्तित देखे जाते हैं, कलह, क्लेश उन्हीं के घर को अखाड़ा बनाने का साहस करता है, वह ही केवल इस स्थूल, नाशवान शरीर को सुखी बनाने के लिये तरह-तरह के षडयंत्र रचते हैं, छल-कपट-झूठ, धोखेबाजी और पाखण्ड को अपनाते हैं ।

स्थूल धन को इकट्ठा करने में सब तरह के पाप, अत्याचार करते हैं चाहे उसका परिणाम कुछ भी क्यों न हो । लड़की के चुनाव में स्थूल शरीर को ही देखा जाता है, उसके सूक्ष्म गुणों को नहीं । स्थूल शरीर के नष्ट होने पर रोने चिल्लाने लगते हैं, स्थूल के खो जाने, फट जाने पर दुःखी होते हैं, स्थूल के लिये जीते हैं, स्थूल के लिये मरते हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हम अज्ञान अन्धकार की सीमा को लांघे जा रहे हैं । जिस पर स्थूल आधारित है उसको कोई महत्व नहीं दिया जाता । दिन प्रतिदिन स्थूल बनते जा रहे हैं । सूक्ष्म पर अज्ञानता के पर्त के ऊपर पर्त चढ़ाकर उसे अपने से बहुत दूरकर रहे हैं । इससे न लोक बनता है न परलोक । अशान्ति और असन्तोष की अग्नि में झुलसते जा रहे हैं ।

इसके विपरीत जो स्थूल और सूक्ष्म का भेद जानता है, वह स्थूल से अधिक सूक्ष्म को महत्व देता है । वह गोरे चमड़े की सजावट को देखकर अपने मन में तूफान खड़ा करके अशान्त नहीं होता । वह भली प्रकार जानता है कि आज इसकी सुबह है, शाम आने पर यह फूल मुरझा जायेगा, वह केवल स्थूल धन को एकत्रित करके अपने गृहस्थ का पालन-पोषण करके ही संतुष्ट नहीं रहता । वह स्थूल से अधिक सूक्ष्म धन को एकत्रित करने की कोशिश करता है । वह अपने विचारों, संकल्पों और भावनाओं को शुद्ध रखता है, मन को विचलित नहीं होने देता बल्कि उस पर नियन्त्रण रखता है । सत्य, प्रेम, दया, न्याय, क्षमा, ईमानदारी, उदारता, सन्तोष, शान्ति, पराक्रम, साहस, विवेक, सद्बुद्धि जैसे दैवी गुणों को विकसित करता है । स्थूल धन के लिये वह छल, कपट, पाखण्ड को अपना कर अपना सर्वस्व नाश करना नहीं चाहता । लोक-परलोक को बिगाड़ना नहीं चाहता, स्थूल वस्तुओं के नष्ट होने, खो जाने पर वह आंखें फाड़ फाड़ कर रोता नहीं, संबन्धी की मृत्यु होने पर समझता है कि वह नहीं मरा, उसने केवल चोला ही बदला है । वह वेश्याओं के पास न जाकर महात्माओं के दर्शन लाभ करता है, अपने समय का मूल्य जानकर उसका सदुपयोग करता है, प्रभु के दरबार में जाकर आनंद और शान्ति की हिलोरें खाता है, काम-क्रोध लोभ-मोह-अहंकार ईर्ष्या-द्वेष को, जो स्थूल को महत्व देने से ही उत्पन्न होते हैं, को पास फटकने नहीं देता । इसलिये हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि वह कभी दुःखी चिन्तित नहीं रहता, सदा प्रसन्न रहता है । यह है स्थूल और सूक्ष्म को महत्व देने का भेद !

दोनों में पृथ्वी और आकाश का अन्तर है । एक राम बनने की चेष्टा करता है तो दूसरा रावण । रावण को स्थूल को महत्व देने का क्या परिणाम हुआ वह आपके सामने है । यदि लोग इस महत्व को समझ कर अपने हृदय पट पर अंकित कर लें तो समाज में फैले हुये सब दुर्विचारों, दुर्गुणों, दुःस्वाभावों और होने वाले पाप-अत्याचारों का अन्त हो सकता है । आज मानवता जो रो रही है, खिलखिला उठेगी । आज मानव जो दानव बन गया है, मानव बनकर स्वार्थ को हित का साधन न समझ कर परमार्थ को अपनायेगा, जिससे प्रभु उसके लिये प्रसन्नता का स्त्रोत खोल देंगे । भागीरथ गंगा को पृथ्वी पर लाये थे वह स्वर्ग को पृथ्वी पर ले आवेंगें। रामराज्य की ध्वनि सुनाई देगी । शत्रुता, बैर, छल, कपट, पाखण्ड, धोखेबाजी, चोरी, डकैती अन्याय आदि की चीत्कारें सुनाई देंगी और प्रेम, ईमानदारी, सद्व्यवहार, न्याय और सत्य की तरंगे आकाश में उड़ती दिखाई देंगीं ।

परन्तु खेद है कि स्थूल को अधिक महत्व देने से हमारा सूक्ष्म शरीर क्षीण होता जा रहा है । हम बुरे को बुरा जानते हुए भी उसे छोड़ नहीं सकते और अच्छे को अच्छा समझते हुए भी उस पर आचरण नहीं कर सकते । सूक्ष्म शरीर को सबल बनाने का साधन है यज्ञ । ज्यों-ज्यों हमारा सूक्ष्म शरीर बलवान होता जाता है त्यों-त्यों हमारी स्थूलत्व की विचार-धारणाऐं सूक्ष्मत्व में परिवर्तित होती जाती हैं । हर समय उचित या अनुचित किसी भी तरीके से स्थूल धन को इकट्ठा करने वाले अधिक समय सूक्ष्म धन, सद्वृत्तियों, सद्विचारों और सद्भावनाओं को इकट्ठा करने में लगायेंगें, जो कभी नष्ट नहीं होता, जिस को चोर-डाकू नहीं ले जा सकते । सारे जीवन की लूट की कमाई अपने साथ ले जाने में असमर्थ होने के कारण मृत्यु समय मुहम्मद गौरी परेशान था और अपने को देखकर आंखें फाड़-फाड़ कर रोता था कि "हाय ! मैंने अपना सारा मूल्यवान जीवन इस स्थूल धन के एकत्रित करने में बिता दिया जो मेरे किसी काम नहीं आ रहा है, जिसको मैं अपने साथ नहीं ले जा सकता ।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ हमें स्थूलता अर्थात् अज्ञानता से सूक्ष्मता अर्थात् ज्ञान की ओर ले जाता है । वह हम पर स्थूल और सूक्ष्म का भेद भली प्रकार प्रकट कर देता है और सूक्ष्म के महत्व की ऐसी गहरी छाप लगा देता है जो कभी मिटने में नहीं आती । वह ऐसा अनुभव करा देता है कि तुम शरीर नहीं, वरन् आत्मा हो । ऐसा अनुभव करके मनुष्य आत्मा के गुणों के अनुकूल ही कार्य करता है, जो उसे बहुत ऊँचा उठा ले जाते हैं, सूक्ष्म बना देते हैं या यूँ कहिये कि नश्वरता की सीमा से उठाकर अमृत की भूमिका में जाग्रत कर देते हैं । यज्ञ दिव्य दृष्टि खोल देता है, आत्म-विश्वास का प्रादुर्भाव करता है, 'मैं अविनाशी आत्मा हूँ' का दृढ़ विश्वास कराकर रोग, मृत्यु, दुर्घटना, शत्रु, विपत्ति और विपत्ति के भयों से जो प्रति दिन मनुष्य को चिन्तित और दुःखी बनाये रहते हैं मुक्त कर देता है ।

यज्ञ करने वाले का दृष्टिकोण महात्मा और देवताओं जैसा हो पाता है । वह परिस्थितियों के वश में न होकर इधर-उधर नाचता नहीं फिरता वरन् अपने लिये एक नये संसार का निर्माण करता है । वह समझता है कि जीवन अखण्ड है, शरीर बदल जायेगें पर जीवन नहीं बदलेगा । उसे कोई नाश नहीं कर सकता । वह अजर, अमर, अविनाशी और अखण्ड आत्मा है, जिससे वह निर्भयता,स्वतन्त्रता, प्रसन्नता, प्रफुल्लता एवं स्वर्गीय आनन्द की ओर बढ़ता है । यह जागरण सूक्ष्म के सूक्ष्म पर ही प्रभाव पड़ने के सिद्धान्त पर होता है ।

यज्ञ की सफलता मन्त्र पर निर्भर है

यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले सभी तत्वों में मंत्र की शक्ति सर्वोपरि है । यज्ञ में सन्निहित शक्ति का आधार मंत्र ही है । मन्त्र यज्ञ की आत्मा है । यज्ञ की सत्ता मन्त्र में है यूँ भी कहा जा सकता है । मन्त्र की शक्ति महान् है । इसलिये इसे वज्र या ब्रह्मास्त्र भी कहते हैं । मंत्रों का गठन ऐसे चमत्कारी ढंग से हुआ है कि उनके विधिपूर्वक शुद्ध आचरण से आकाश में विशेष प्रकार के कम्पन्न पैदा होते हैं जो अपनी देह के शक्ति केन्द्रों में झंकार उत्पन्न करते हैं और सूक्ष्म प्रकृति की देव शक्तियों से शरीरस्थ देव शक्तियों का सम्बन्ध स्थापित करती है । यह सम्बन्ध ही शक्तियों के उद्भव का कारण है ।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है मंत्र के चुनाव का । इसका उत्तर हम अपने प्राचीन अनुभवी, तपस्वी, त्यागी पूज्य ऋषियों से ही लेंगे क्योंकि उनका ज्ञान केवल सुना हुआ ही नहीं होता अपितु समाधि अवस्था में जाकर साक्षात्कार किया हुआ होता है । अतएव उनका एक-एक शब्द पूरी श्रद्धा से स्वीकार करने और तदनुकूल आचरण करने योग्य होता है । ऋषियों का अनुभव यही बतलाता है कि गायत्री मन्त्र जिसे गुरु मन्त्र भी कहते हैं और जो आदि काल से समस्त ऋषि मुनियों की साधना का आधार चला आ रहा है, जिसे मंत्रों का मुकुटमणि कहते हैं, जिसे कामधेनु, कल्पवृक्ष और पारसमणि भी कहा जाता है, जिसे भगवान राम कृष्ण व शिव ने जपा है, जिसका मुक्त कण्ठ से सभी धर्मशास्त्र गुणगान करते हैं, जो चारों वेदों का सार है, जिससे परे कोई जप नहीं है, । जिससे परे कोई हवन नहीं है, यही सर्वोपरि है । इसका गुन्थन ऐसे विलक्षण एवं वैज्ञानिक ढंग द्वारा हुआ है कि उच्चारण काल में इसके चौबीस अक्षर सूक्ष्म शरीर में स्थित चौबीस ग्रन्थियों अर्थात् सूक्ष्म शक्ति केन्द्रों पर आघात करते हैं जिससे वह शक्ति केन्द्र जाग्रत होकर साधक को विशेष प्रकार से लाभान्वित करते हैं । इस की श्रेष्ठता निम्न ऋषि वाक्यों से स्पष्ट होती है:-

महर्षि विश्वामित्र जिन्होंने गायत्री तत्व की असाधारण मंत्र की तन्मयता के साथ उपासना की और फलस्वरूप गायत्री के मंत्र दृष्टा बने, कहते हैं चारों वेदों में गायत्री के समान कोई मन्त्र नहीं है । "मुनि लोग कहते हैं कि गायत्री की एक कला के समान सर्ववेद सर्व यज्ञ, सर्व दान और सर्व तपस्याऐं नहीं हैं ।" पराशर मुनि का कहना है "सब प्रकार के जपों में गायत्री जप श्रेष्ठ है । सब जप सूक्तों में ऋग्, यजु, साम वेदों और एकानरादि मंत्रों में गायत्री परम जप है । गायत्री परम तत्व व परमगति है ।" योगीराज याज्ञवल्क्य का मत है "गायत्री को एक ओर षट् अंगों समेत वेदों को दूसरी ओर रखकर तराजू में तोला गया तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री का पल्ला भारी निकला । गायत्री वेदों की जननी है पापों का नाश करने वाली है, इससे अधिक पवित्र करने वाला मंत्र स्वर्ग और पृथ्वी पर नहीं है । गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, केशव भगवान से परे कोई देवता नहीं है, गायत्री से परे कोई जप न हुआ है न होगा ।'' मनु जी कहते हैं ''गायत्री से बढ़कर पवित्र करने वाला और कोई मन्त्र नहीं है । जो मनुष्य बिना आलस्य के तीन वर्ष निरन्तर गायत्री का जाप करता है, मरने के पश्चात् पवन रूप पवित्र और आकाश रूप होकर परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है । ॐ से आरम्भ होने वाली कठिन महा व्यवहृतियों वाली और तीन पाद वाली गायत्री को वेद का मुख जानना चाहिये । गायत्री से बढ़कर कुछ नहीं है । नित्य एक हजार जप करने वाला पापों से वैसे ही छूट जाता है जैसे केंचुली से सर्प ।'' महर्षि वशिष्ठ कहते हैं ''गायत्री वेदों की जननी है, गायत्री पापों का नाश करने वाली है, गायत्री से बड़ा और कोई पवित्र मन्त्र स्वर्ग तथा पृथ्वी पर नहीं है ।'' शंख ऋषि ने कहा है ''इस लोक तथा परलोक में पवित्र करने वाला गायत्री से परे कोई मन्त्र नहीं है, क्योंकि नरक रूपी समुद्र में गिरते हुये को यह गायत्री हाथ पकड़कर बचा लेती है ।'' समर्वत्त ऋषि लिखते हैं ''गायत्री की उपासना से परे पाप कर्मों को शोधन करने के लिये कोई मन्त्र नहीं है । अतः प्रणव तथा महा व्यवहृतियों सहित गायत्री का जप करो ।'' जगद्गुरु शंकराचार्य लिखते हैं-''गायत्री जीवात्मा और ब्रह्म की बोधक है । इसकी महिमा का वर्णन करना मनुष्य एकता का की समर्थ के बाहर हैं ।

बुद्धि का शुद्ध होना इतना बड़ा कार्य है जिसकी समता संसार के अन्य किसी कार्य से नहीं हो सकती । आत्म बल प्राप्त करने की दिव्य दृष्टि शुद्ध बुद्धि से प्राप्त होती है, उसका प्रेरक गायत्री मन्त्र है । सम्पूर्ण छन्दों में गायत्री छन्द ही प्रधान भूत है, उसके गाने वाले का त्राण करने के कारण यह गायत्री है ।'' भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं ''छन्दों में गायत्री, छन्द मैं स्वयं हूँ ।'' भगवान शिव माता पार्वती से कहते हैं ''गायत्री वेदमाता है पृथ्वी पर वह आद्या शक्ति कहलाती है । वही संसार की माता है । मैं उसी की उपासना करता हूँ । विद्वानों ने समस्त यौगिक साधनाओं की मूलाधार गायत्री ही को माना है । उन्होंने गायत्री को भूलोक की कामधेनु माना है । संसार इसका आश्रय लेकर सब कुछ प्राप्त कर सकता है । गायत्री तप है, योग है, साधन है और यह भी सिद्धियों की माता मानी गई है । इस गायत्री से बढ़कर अन्य कोई वस्तु नहीं है ।''

शौनक ऋषि का मत है ''गायत्री से बढ़कर लोक तथा परलोक के लिए दूसरी वस्तु नहीं है ।'' महर्षि व्यास का कथन है ''जिस प्रकार समस्त पुष्पों का सार शहद, दूध का सार घृत है उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री है । जो गायत्री को छोड़कर अन्य उपासनाऐं करता है, वह पकवान छोड़कर भिक्षा मांगने वाले के समान मूर्ख है । काम्य सफलता तथा तप की सिद्धि के लिये गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है ।'' भारद्वाज ऋषि का कहना है ''ब्रह्मा आदि देवता भी गायत्री का जप करते हैं ।'' गौतम ऋषि का विचार है ''योग का मूल आधार गायत्री है । गायत्री से ही सम्पूर्ण योगों की साधना होती है ।'' देव गुरु वृहस्पति का कथन है ''देवत्व और अमृतत्व की आदि जननी गायत्री है । इसे प्राप्त करने के पश्चात् और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता ।'' श्रृंगी ऋषि का मत है ''ज्ञान विज्ञान का आदि स्रोत गायत्री है । जो इसमें है उससे अधिक संसार में और कुछ नहीं है ।''

वर्तमान काल के ऋषि, मुनि, महात्माओं और दार्शनिकों ने भी गायत्री की महान् महत्ता को स्वीकार किया है । उनमें से महात्मा गाँधी, लोकमान्य तिलक, महामना मदन मोहन मालवीय, रवीन्द्रनाथ टैगोर, योगी अरविन्द घोष, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि रमण, स्वामी शिवानन्द, काली कमली वाले बाबा विशुद्धानन्द, दक्षिण भारत के प्रसिद्ध आत्म ज्ञानी टी० सुब्बारावे स्वामी कृपाजी, सर राधाकृष्णन्, स्वामी दयानन्द के नाम उल्लेखनीय हैं ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायत्री मन्त्र में कुछ ऐसी विलक्षण शक्ति है कि साधना आरम्भ करते ही साधक के आन्तरिक क्षेत्र में अद्‌भुत हलचल सी मच जाती है । बुरे विचार, भाव और स्वभाव घटने लगते हैं और सत्य, प्रेम, न्याय, क्षमा, ईमानदारी, संतोष, शान्ति, पवित्रता,नम्रता, संयम, सेवाभाव और उदारता आदि जैसे सद्‌गुण बढ़ने लगते हैं । मन:क्षेत्र प्रभावित होने से विवेक, दूरदर्शिता, तत्वज्ञान और बुद्धि की प्राप्ति होती है, जिससे दुखों का कटना और सुख शांति का प्राप्त होना अनिवार्य परिणाम है । गायत्री अधर्म को धर्मात्मा, चरित्रहीन को चरित्रवान, स्वार्थी को परमार्थी और त्यागी, दानव को मानव, दुष्ट और पाखण्डी को सदाचारी, पापी को निर्मल, अहंकारी को नम्र, दु:खी को सुखी, क्रोधी को शान्त, बैरी को प्रेमी, नीच को महान्, दरिद्र को धनवान, कायर को साहसी, लोभी को निर्लोभी, रोते को प्रसन्न, कामी और व्यसनी को संयमी, मूर्ख को चतुर, नास्तिक को आस्तिक, आलसी को पराक्रमी, कपटी को सत्यवान, बेईमान को ईमानदार, निर्बल को शक्तिवान, साधारण को असाधारण, तमोगुणी को सतोगुणी, अज्ञानी को ज्ञानी, भाग्यहीन को भाग्यवान, अपवित्र को पवित्र, तेजहीन को तेजस्वी, मन के गुलाम को मन का शासक, असुर को देव, दुर्गुणी को सद्‌गुणी, असंतोषी को संतोषी, शत्रु को मित्र, असहनशील को सहनशील, कंजूस को उदार, कर्तव्यच्युत को कर्तव्य परायण, रोगी को निरोगी, भयभीत को निर्भय बनाती है । असत् को सत्, अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमृत, निराशा से आशा, सीमित से असीम, शिथिलता से दृढ़ता, नरक से स्वर्ग, तुच्छता से श्रेष्ठता और कुबुद्धि से सद्‌बुद्धि की ओर ले जाती है । समय और धन का सदुपयोग सिखाती है, दूषित विचारों, संकल्पों और भावनाओं को शुद्ध करती है, आत्मबल बढ़ाती है, अनेक कठिनाईयों को दूर करती है, कामनाओं को पूर्ण करती हैं, परिवार में हुए कलह क्लेशों से छुटकारा दिलाती है, प्रेत बाधा को दूर करती है, प्राणों की रक्षा करती है, लोक और परलोक दोनों का सुधार कर देती है, दिव्य दृष्टि देती है, जीवन विज्ञान सिखाती है, कण-कण में भगवान के दर्शन कराती है, महान् आचरण शक्ति से ओतप्रोत कर देती है, मोह और तृष्णा का निवारण करती है, समदर्शी बनाती है, आत्मलाभ, आत्मअनुभव, आत्मकल्याण और आत्मदर्शन कराती है ।

इसलिये सब का आधार इसी सर्वश्रेष्ठ और शक्तिशाली मन्त्र को ही बनाना चाहिये । महामन्त्र गायत्री और यज्ञ का संयोग हो जाने से तो सोने में सुगन्धि वाली बात चरितार्थ है । शंख ध्वनि का भी यही मत है कि "यदि गायत्री मन्त्र के उच्चारण के साथ अग्नि में आहुतियाँ भी दी जायें तो मनुष्य के सब पापों को नष्ट करके गायत्री उस होता के समस्त मनोरथों को पूरा करती है ।"

यज्ञ भावनामय होना चाहिये

भावना शक्तियों का भण्डार है । भावना से शक्तियों का उदय होता है । इसलिये जो जैसी भावना करता है वह वैसी ही शक्तियों को प्राप्त करता है, वैसा ही बन जाता है । स्थूल की गति का कारण सूक्ष्म है । शरीर स्थूल है, भावना सूक्ष्म । जैसी भावना होगी वैसे ही कार्य में शरीर प्रवृत रहेगा । भावना का निर्मल, पवित्र, प्रबल, और परमार्थमय होना ही आध्यात्मिक क्षेत्र में ऊंचा उठने का अथवा स्थूल से सूक्ष्म की ओर गति करने का चिन्ह है । केवल व्यक्तिगत रूप में ही नहीं वरन् हर क्षेत्र, हर कार्य में प्रबल और पवित्र भावना सफलता लाने में समर्थ होती है । भावना सोई हुई शक्तियों को जगा देती है । उसमें गति उत्पन्न करती है । भावना से फलीभूत होने का तात्पर्य शक्तियों का गतिवान् होना ही है ।

भावना पारसमणि है । लोहे को सोना बना देती है । कम मूल्य की वस्तु को अधिक मूल्य की बना देती है । इस विषय में कुछ विचारकों के अनुभव देखिये । चार्ल्स डिक्सन कहते हैं "जिस मनुष्य की जैसी आन्तरिक भावनायें होंगी उसकी बाह्यरूप रेखा वैसी ही बन जायेगी ।" वक्सटन का कथन है "विश्वासों के आधार पर जीवन का स्थूल रूप तैयार होता है ।" महर्षि वशिष्ठ का मत है "बीज की जाति का ही पौदा उगता है और संकल्पों की जाति की परिस्थिति पैदा होती हैं-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्मा जैसी- जैसी भावना करती है वह शीघ्र वैसी ही हो जाती है और इसी प्रकार शक्ति से पूर्ण हो जाती है ।'' हम देखते हैं कि जिसकी भावना भीतर से भलाई, सच्चाई, प्रेम, सहानुभूति,करुणा, शील, वात्सल्य और सद्भावों से ओत-प्रोत होती है वह सदा सुखी रहता है क्योंकि प्रतिक्रिया से उसमें दैवी गुणों का बाहुल्य हो जाता है ।

जो सदा स्वार्थ, ईर्ष्या, धोखेबाजी, लोभ, छल, कपट, काम, क्रोध, अहंकार, दूसरों को हानि पहुँचाने के भाव रखता है उसमें यह दुर्गुण दिन-दिन बढ़ते जाते हैं और पाप अत्याचार की ओर उसकी प्रवृत्ति भी बढ़ती जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप वह नाना प्रकार के कष्ट उठाता है । सुख-दुःख, उन्नति अवनति, बन्धु मोक्ष हमारी भावनाओं पर आधारित हैं । जो अपने को अयोग्य, असमर्थ, अभागा और अशक्त मानता है वह वैसा ही बन जाता है । इसके विपरीत जो अपने को योग्य, समर्थ, भाग्यवान और शक्तिवान समझता है वह भी वैसा ही बन जाता है । अपने आपको नीच या महान, सुखी या दुःखी, साधारण या असाधारण, पवित्र या अपवित्र, सदाचारी या दुराचारी, पापी या पुण्यात्मा, चतुर या मूर्ख, निर्बल या शक्तिवान, भाग्यहीन या भाग्यवान बनाना भावना के ही खेल हैं । जो जैसी भावना करता है वह वैसा ही बन जाता है ।

महात्मा गाँधी ने कहा है ''अपने को निर्बल समझने वाला ही निर्बल है ।'' जीवन रेखा को लिखना भावना के अधिकार में है । भाग्य को बनाना भावना शक्ति के हाथ में है । वह इसको जिधर चाहे मोड़ लेती है । होम्योपैथिक विज्ञान के जन्मदाता डा० हैनीमैन ने अपनी पुस्तक 'अर्गिनन् आफ मैडीसन' में लिखा है कि ''भावनाओं से रोग उत्पन्न भी किये जा सकते हैं और अच्छे भी ।'' यदि किसी को आप विश्वास दिलाते रहें कि वह निर्बल होता जा रहा है तो वस्तुतः थोड़े दिनों में वह निर्बल होता चला जायेगा । यदि किसी को उसके स्वास्थ्य के निखरने का आश्वासन दिलाऐं तो उसका स्वास्थ्य निखरेगा । किसी को निर्बल, असमर्थ और नालायक कहना पाप है अथवा शक्तिवान जताना, प्रशंसा करना (खुशामद नहीं) योग्य बताना पुण्य ।

सार यह है कि भावना की शक्ति महान् है । इस भावना शक्ति ने मीरा को दिये हुए विष को अमृत में बदल दिया था । उसी भावना शक्ति से धन्ना भक्त ने पत्थर को भगवान बना लिया था । यह भावना शक्ति ही थी कि ''रूक्मणी ने एक तुलसी दल से तौला प्रभु गिरधर को ।'' सुदामा के कच्चे चावलों में भावना का समावेश होने से उनमें कितनी मिठास आ गई थी कि भगवान कृष्ण ने उनको इतने चाव से खाया था । शबरी के भावना मय बेरों की मिठास का क्या ठिकाना है ।

यदि इस भावना की महाशक्ति का यज्ञ में आहुति देते समय मन्त्र शक्ति के साथ समावेश कर लिया जाये तो यज्ञ से उत्पन्न होने वाली शक्ति में अति अधिक वृद्धि की जा सकती है, जैसे बिजली का पंखा वायु में तीव्र गति उत्पन्न कर देता है उसी प्रकार से अग्नि में दी गई आहुति को भावना अधिक सूक्ष्म बना कर अधिक शक्तिशाली बना देती है , जिसका परिणाम अधिक कल्याणकारी होता है । यह कहना भी अत्युक्ति न होगा कि जिस प्रकार से अणु का विस्फोट करके उससे महान् विनाशक शक्ति उत्पन्न की जा सकती है उसी प्रकार से अग्नि में मन्त्र शक्ति द्वारा दी गई आहुति को भावना की महान् शक्ति की सहायता से विस्फोट किया जा सकता है और उसके स्थूल रूप को अत्यधिक सूक्ष्म बनाकर महान् शक्तिशाली बनाया जा सकता है ।

जिस तीव्र गति से मन्त्र सहित भावना शक्ति आहुतियों के सूक्ष्म रूप की पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक तक पहुँचा सकती है उस गति से भौतिक विज्ञानियों के तीव्र से तीव्र गति से चलने वाले यन्त्र नहीं पहुँच सकते बल्कि वह तो वहाँ तक पहुँच भी नहीं सकते जहाँ तक भावना शक्ति आहुतियों को पहुँचा देती है । इसलिये यज्ञ में आहुति देते समय इसका विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये कि आहुति के साथ भावना का समावेश है या नहीं क्योंकि भावना जितनी प्रबल,पवित्र और दृढ़ होगी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उतनी ही सफलता अधिक होगी । उदाहरण के रूप में दारिद्रता, रोग काम, क्रोध, लोभ, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार आदि दोषों को छोड़ने के इच्छुक यदि यह भावना करें कि वह दोष उनके सम्पूर्ण शरीर से निकल कर हाथ में आ गए हैं और वह यज्ञ अग्नि में स्वाहा के साथ स्वाहा ही हो रहे हैं तो वस्तुतः ऐसा ही होगा । हाथ कंगन को आरसी क्या, करके देख लीजिये । भगवान रहित यज्ञ को, चाहे उसमें कितना ही धन व्यय क्यों न हुआ हो, सफल यज्ञ नहीं कहा जा सकता ।

वेद भगवान की आज्ञा का पालन कीजिये

वेद आज्ञा देता है "यज्ञानुष्ठान की महान् उपासना बन्द न करो क्योंकि बन्द कर देने से मनुष्य के कल्याण का मार्ग बन्द हो जाता है । ऋग्वेद २ । ३० । ७ ।" "हे विद्वानो ! संसार में यज्ञ का प्रचार करो क्योंकि विश्व शांति का सर्वश्रेष्ठ आधार यज्ञ ही है । ऋग्वेद १० । ६६ । २ ।" "हे मनुष्यो ! यज्ञ द्वारा इस यज्ञाग्नि को खूब करो और उत्तम हवियों द्वारा श्रद्धा, भक्ति, उदारता से इस यज्ञाग्नि का भजन करो । ऋग्वेद ।" "हे ब्रह्मणास्पते ! चारों वेदों के विद्वानी तू अब उठ खड़ा हो, आलस्य मत कर, उठ और यज्ञों द्वारा विश्व की दैवी शक्तियों को जाग्रत हुई दैवी शक्तियों के द्वारा जहाँ यजमान के सब प्रकार से सुखमय साधनों से बढ़ा, वहाँ प्राणी मात्र की आयु, जीवन, जीवन-शक्ति, उत्तम प्रजा, अच्छे पशु और यश तथा कीर्ति को भी बढ़ा । अ० १९ । ६ १ । १ ।" "पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक के प्रगतिशील तत्वों के लिए यज्ञ हो । यजु० १३ । ६ । " अग्नि, सौम्यगुण औषधियों, जलों, सूर्य, वायु व्यापक विद्युत, आकाश और जीव मात्र के लिये यज्ञ हो । यजु० २२ । ६ ।" "प्राण, अपान, व्यान, नेत्रों, श्रोतों, वाणी और मन के लिये यज्ञ हो । यजु० २२।२३।" "सब दिशाओं के लिये यज्ञ हो, यजु० २२।२४।" "सुख साधक, सुखस्वरूप, अत्यन्त सुखदायक, ध्यान साधन, मेधातत्व, मननसाधन, चेतनासाधन, सर्वसाक्षी, चित, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, आकाश प्रकाश, वेद, वाणी व व्यापक अग्नि के लिये यज्ञ हो । यजु० २२।२०।" इस तरह से यजुर्वेद में और भी कई स्थानों पर आया है कि अग्नि, सोम, इन्द्र, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, दिशाओं, उपदिशाओं, नक्षत्रों, नक्षत्र समूहों, अहोरात्रियों, अर्द्धमासों, सब महीनों, ऋतुओं, ऋतुजन्य पदार्थों सूर्य राशियों, वसुओं, रुद्रों वनस्पतियों, पुष्पों, फलों, औषधियों, जलों, चराचरों, प्राणों, जीवात्मा, व्यापक वायु, गर्मी की कान्ति व पालक, दुष्टों, तिरस्कर्ता, बल, विद्युत, मेघ, अन्न, सुख, मूर्ध, वीर्य, ओज, शारीरिक तेज मन के लिये यज्ञ हो ।

ऊपर लिखी वेद की आज्ञाओं का गम्भीरता पूर्वक चिन्तन व मनन करने से पता चलेगा कि यज्ञ के अनन्त लाभ हैं । यज्ञ के लाभों की कोई सीमा नहीं है । यज्ञ में महान् शक्ति है । तनिक विचार तो कीजिये कि पृथ्वी, अन्तरिक्ष, व द्युलोक का कितना बड़ा क्षेत्र है केवल पृथ्वी पर ही सहस्त्रों मीलों में फैले हुए बड़े-बड़े देश भारत, इंगलैंड, अमेरिका, एशिया, जापान,चीन, जर्मनी आदि हिमालय जैसा पर्वत, सहस्त्र मीलों में फैले हुए समुद्र इसकी विशालता का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं । परन्तु इतनी विशाल दीखने वाली पृथ्वी की अपेक्षा एक साधारण सा गोला है, क्योंकि सूर्य पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा है । इस विशाल सूर्य से जिसमें १३ लाख पृथ्वियाँ समा सकती हैं, बड़ा अगस्त तारा है जो सूर्य से १ करोड़ गुना बड़ा है । अगस्त तारे से भी बड़ा एक तारा जेठा है, इससे भी बड़ा 'पर जेठा' है । सृष्टि की विशालता पर विचार करने से मस्तिष्क चकरा जाता है । इतने विशालकाय क्षेत्र में यज्ञ से उत्पन्न हुई शक्ति का प्रभाव पड़ना और कल्याणकारी परिणाम उपस्थित करना क्या आश्चर्यजनक नहीं है । इससे प्रत्यक्ष है यज्ञ सबसे बड़ा परमार्थ मय कार्य है, क्योंकि यज्ञ करने वाला पक्षपात रहित पृथ्वी अन्तरिक्ष व द्युलोक के सब प्राणियों के लिये कल्याण का मार्ग बनाता है, इससे उसका अपना भी कल्याण होता है ।

देखिये वेद की वाणी "तुम मुझे दो मैं तुम्हें दूंगा । यजु० ३ । ५० ।" गीता में भगवान कृष्ण भी इसका समर्थन करते हैं "यज्ञ के द्वारा देवताओं की उन्नति करो और वह देवगण तुम लोगों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन्नति करें । परस्पर उन्नति के करते हुये श्रेय को प्राप्त होओगे ।'' यजुर्वेद में ऐसी ही प्रार्थना आई है ''हे देवि! तुष्टोतव्य द्रव्य से परिपूर्ण होकर ऊपर जाओ और वहाँ से भली भाँति पूर्ण होकर पुन: हमारे पास लौट आओ । हे सूर्य ! जैसे कोई मूल्य के माध्यम से कोई वस्तु खरीदते और बेचते हैं उसी भाँति हम लोग इस यज्ञकर्म में आहुति क्रिया द्वारा अन्न और रस, भोजन और पुष्टि, शक्ति और आनन्द का विनिमय आदान-प्रदान किया करते हैं,यजु० ३।४९।'' मनोविज्ञान के अनुसार यदि हम किसी के हृदय रूपी दिवाल पर प्रेम रूपी गेंद फेंकते हैं तो वह अधिक वेग व शक्ति से हमारी ओर आयेंगी अर्थात् प्रेम की सूक्ष्म तरंगें हमारी ओर आयेगी और हमारे प्रेम को और बढ़ा देंगी । यदि हम किसी के साथ भलाई करते हैं तो हमारी भलाई उससे अधिक होती है । ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, वैर, स्वार्थ, छल, कपट, धोखेबाजी, झूठ, फरेब आदि के सूक्ष्म बाण छोड़ने पर अपने ही हृदय को छलनी कर देते हैं । इसके विपरीत दूसरों पर परमार्थमय कल्याणकारी बाण छोड़ने पर उनसे अधिक अपने को लाभ होता है ।

वेद भी इस सिद्धान्त की पुष्टि करता है ''हे अग्ने! हम तुम्हें चमकाते रहें और अपने आप को पुष्ट करते रहें । अथर्व० १।५५।३।'' चूंकि यज्ञ से बड़ा कोई परमार्थमय कर्म संसार में नहीं हैं, इसलिये अपने कल्याण का सर्वश्रेष्ठ मार्ग यज्ञ ही है । तुलसीदास जी ने कहा है-''परहित सरिस धर्म नहीं भाई'' ब्रह्मपुराण में भी आया है ''उसी का जीवन सफल माना जाता है जो नित्य परोपकार में प्रवृत्त रहता है ।'' श्रुति का भी आदेश है ''एक दूसरे का पोषण करते हुए तुम परम कल्याण को पाओ ।'' ''परमार्थ को ही जिस मनुष्य ने अपना स्वार्थ बना लिया है वह सब सत्पुरुषों में श्रेष्ठ है (भर्तृहरि)।'' शास्त्र का कथन है कि परोपकार ही ईश्वर की सच्ची पूजा है'' जहाँ सदा अपने मन को ही सुख मिलता है, वह स्वर्ग भी नरक के समान है, अत: साधु पुरुष दूसरों के सुख से ही सुखी होते हैं । (पद्मपुराण) अंगराज के शब्दों में--

''परहित करना आत्म त्याग है,
आर्यजनों की रीति सनातन ।
इस नश्वर जग में मर कर भी,
रहते अमर इसी, विधि सज्जन ।।''

महर्षि दधीचि को देखिए उन्होंने, वज्र बनाने के लिये इन्द्र को अपनी हड्डियां ही दे दी थीं, जिससे उसने असुरों को परास्त किया था । राजा विशिव ने कबूतर के लिये अपने शरीर का मांस काट काट कर दे दिया था । राजा रन्तिदेव ने ४८ दिन के भूखे होते हुए भी ब्राह्मण, शूद्र और चाण्डाल अतिथि के आने पर अपना भोजन और जल उन्हें दे दिया था । वह कहते थे कि ''परमात्मा से अणिमा आदि आठ सिद्धियों से युक्त उत्तम गति या मुक्ति नहीं चाहता । मैं केवल यही चाहता हूँ कि मैं ही सब प्राणियों के अन्तकरण में स्थित होकर उनका दु:ख भोग करूं जिससे उन लोगों का दुख दूर हो जाये ।'' नारद हर समय परहित में ही लगे रहते थे, इसलिए इन्हें देवर्षि का पद मिला ।

बुद्ध की परमार्थ भावना की कल्पना कीजिये उन्होंने शरीर त्यागते समय कहा था '' मैं मुक्ति नहीं चाहता, जब तक संसार में एक भी पीड़ित व्यक्ति है तब तक मैं जन्म लेता ही रहूँगा ।'' स्वामी शंकराचार्य शरीर में नासूर का घाव होते हुये भी परहित में लगे रहते थे । चैतन्य महाप्रभु ने जघाई और मघाई दो भाइयों के उद्धार के निमित्त उन्हें गंगा में खड़ा करवा कर कहा था कि ''इस जन्म में तथा पिछले कोटि जन्मों में तुम दोनों ने जितने भी पाप किये हैं उन सब को मुझे दान कर दो ।'' प्रकृति माता स्वयं हमें यही शिक्षा दे रही है । पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, फल, फूल, वृक्ष, मेघ आदि को लीजिए, सभी परहित में लगे हुये हैं । परहित ही परम कल्याण का मार्ग है, यही प्रसन्नता, आनन्द, शांति और सुख का उद्गम केन्द्र है ।'' प्रसन्नता का सच्चा स्रोत परोपकार है । जो सदैव भलाई और सहानुभूति से भरा पूरा रहता है । वह सदा प्रसन्न रहता है (गाडनिन) ।

मनोविज्ञान का सिद्धान्त है कि विचार कभी नष्ट नहीं होते, वह आकाश में घूमते रहते हैं । विचार कीजिए यदि आपके पड़ोसी, मित्र या आफिस में काम करने वाले व्यक्ति दु:ख, चिन्ता, कलह, क्लेश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की अग्नि में जलते रहते हैं तो इनके मस्तिष्क में से ऐसे ही विचार निकल निकल कर आकाश में घूमते रहेंगे । यदि तनिक भी कभी आपने ऐसे विचार किए तो यह आप पर टूट पड़ेंगे और आपके उन विचारों को बल देकर उस ओर अधिक बढ़ा देंगे जिससे आप का अहित ही होगा । इसलिये अपना कल्याण करने के लिये दूसरों का कल्याण करना आवश्यक है । 'जैसी करनी वैसी भरनी (जैसा बोओगे वैसा काटोगे' 'जो जस करइ सो तस फलु चाखा' । (तुलसी) आज जो कुछ भी भोग रहें हैं वह हमारे कर्मों का फल है । जिन्होंने अच्छे कर्म किये हैं वह स्वर्ग सुख भोग रहे हैं । जिन्होंने पाप अत्याचारों की गठरी को सिर पर बांध रखा है वह नारकीय दुःख भोग रहे हैं । जिसने जैसा किया है वह वैसा पा रहा है ।

यह ईश्वरीय शासन शक्ति का अटल सिद्धान्त है । 'जो जिस वस्तु का दुरुपयोग करके अपने आपको अयोग्य प्रमाणित करता है वह वस्तु उससे छीन ली जाती है । इसके विपरीत जो जिस वस्तु का सदुपयोग करता है उसको वह वस्तु अधिक मात्रा में दी जाती है ।" ईश्वर अधिकारी को ही देता है, अनाधिकारी को कदापि नहीं । आज कल की तरह घूंस देकर ईश्वर से कोई वस्तु अनाधिकारी को नहीं दिलाई जा सकती । जो व्यक्ति बुद्धि, शरीर, वाणी, नेत्र, कान, इन्द्रियों और अपनी प्राप्त शक्तियों का दुरुपयोग करता है, उससे वह छीनकर उसको दी जाती है जो इनका सदुपयोग करता है । आपको अन्धे, लूले, लंगड़े, गूंगे, बहरे रोगी जितने भी दीख रहे हैं वह उनके भिन्न भिन्न अंगों के दुरुपयोग का ही परिणाम है ।

जो गुप्त अंगों का दुरुपयोग करता है उसको नपुंसक बनाया जाता है । जो धन को बुरे कामों में पानी की तरह व्यय करता है उससे धन छीनकर उसे कंगाल बना दिया जाता है । जो दूसरों का माँस खाते हैं उनको पशु योनि में भेजकर उनका माँस दूसरों को खिलाया जाता है । जो विद्वान अपने ज्ञान से दूसरों का अहित करता है उससे विद्या छीनकर उसे गंवार विद्याहीन बनाया जाता है । इसी तरह से किसी वस्तु, अंग, इन्द्रिय, धन आदि के दुरुपयोग के परिणाम को समझा जा सकता है । मनु जी ने भी मनुस्मृति में खुले शब्दों में लिख दिया हैं शारीरिक कर्म दोष से मनुष्य स्थावरता (निर्जीव योनियों) को, वाचिक कर्म दोष से पशु पक्षी की योनियों को और मानसिक दोषों से चंडाल आदि की नीच मनुष्य योनियों को प्राप्त होता है ।"

थोड़ा धन होते हुये भी जो इसका सदुपयोग करके यज्ञ आदि सर्वश्रेष्ठ कर्मों में व्यय करता है उसको और अधिक दिया जाता है क्योंकि इस प्रकार से वह अपने आप को परमात्मा के दिये हुये धन को सुरक्षित रखने और उसे ठीक रीति से प्रयोग में लाने का अधिकारी बनता है । शतपथ ब्राह्मण का वचन है कि "संसार मे जितने भी श्रेष्ठ कर्म हो सकते हैं उन सब में से सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ है, क्योंकि यज्ञ से समस्त संसार के प्राणियों का कल्याण होता है । इसलिये आदरणीय पाठक ! आप स्वयं यज्ञ करें और दूसरों को इसकी ओर प्रवृत करें क्योंकि यज्ञ में ही मनुष्य की सुख और शांति का रहस्य छिपा हुआ है । देखिये गीता में भगवान स्पष्ट शब्दों में कहते हैं "यज्ञ के निर्मित किये गये कर्मो के सिवाय दूसरे कर्मो को करने से यह मनुष्य बन्धन में बंधता है ३। ९। और यज्ञ से रहित जो पुरुष हैं उन्हें तो यह (मनुष्य) लोक भी सुखदायक नहीं है फिर परलोक की तो बात ही क्या ?"

यज्ञ न करने वालों की शास्त्रों में बहुत निन्दा की गई है । भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं कि "जो देवी के अर्थात् विश्व की दिव्य शक्तियों के लिये पदार्थो को बिना उनके अर्पण किये भोग करता है वह चोर है, ३ । १२, यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से छूटते हैं और जो पापी लोग अपने ही शरीर पोषण के लिये पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं । ३ । १२। " इसलिये हमें चाहिए कि हम वेद भगवान की आज्ञाओं का पालन करते हुये यज्ञ किया करें ।

अथर्ववेद (७।१०३।१) पूछता है कि "यज्ञ की चिन्ता रखने वाला कौन है ? उस यज्ञ को पूरा करने की फिक्र किसे है ?" क्योंकि ऋग्वेद ने चेतावनी दे दी है कि "यज्ञानुष्ठान की महान् उपासना बन्द न करो क्योंकि यज्ञ बन्द कर देने से मनुष्य के कल्याण का मार्ग बन्द हो जाता है ।"

✱ ✱ ✱

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ आयोजनों की उपयोगिता और आवश्यकता

जिस प्रकार आकाश में वायु भरी रहती है और वह वायु पृथ्वी पर के मल-मूत्र आदि दूषित पदार्थों से दूषित तथा पुण्य आदि के द्वारा शुद्ध होती रहती है, उसी प्रकार अदृश्य जगत में एक महाप्राण नामक तत्व भरा पड़ा रहता है और वह प्राणियों के शुभ-अशुभ कार्यों द्वारा शान्त और कुपित होता रहता है । जैसे अशुद्ध पदार्थों की अधिकता से दूषित हुई वायु प्राणियों के लिए अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करती है उसी प्रकार कुविचारों और दुष्कर्मों द्वारा दूषित हुआ महाप्राण मनुष्यों के मन: क्षेत्र में नाना प्रकार के उद्वेग उत्पन्न करके अवांछनीय कार्य करने और अनुचित विचार करने की स्थिति पैदा कर देता है, फलस्वरूप संसार में सर्वत्र शोक, क्रोध, चिन्ता, भय, पाप, द्वेष, संघर्ष का वातावरण बनने लगता है ।

जैसे मनुष्यों के शरीरों में से वायु को शुद्ध करने वाले पदार्थ कम और दूषित करने वाले अधिक निकलते रहते हैं, उसी प्रकार यह भी देखा गया है कि अधिकांश अपने विचार और कार्यों द्वारा महाप्राण की सूक्ष्म चेतना को शान्त करने की अपेक्षा उद्वेग ही अधिक उत्पन्न करते हैं क्योंकि सन्मार्ग पर चलने वाले कम और कुमार्ग पर चलने वाले अधिक होते हैं । सद्विचारों की अपेक्षा कुविचारों की तरंगें मन: क्षेत्र में से अधिक मात्रा में निकालने वाले मनुष्य ही अधिक हैं, इस प्रकार स्वभावत: वायु मंडल और प्राण मंडल दोनों के धीर-धीरे दूषित होते चलने पर दूषण घातक परिणाम उत्पन्न करने वाला बन जाता है । दूसरे कारण अनेक प्रकार के दैवी उपद्रव उत्पन्न होते हैं । महामारी, दुर्भिक्ष, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, तूफान, महायुद्ध आदि त्रास दायक घटनाओं का प्रधान कारण यह 'अन्तरिक्ष का दूषित होना' ही होता है । यह गतिविधि बढ़ती रहे तो धीरे-धीरे सर्वनाश की परिस्थिति सामने आ जाती है ।

दुर्गन्धित स्थानों की सफाई उस स्थान को पानी से धोकर, 'डी.डी.टी.', 'फिनाइल' आदि छिड़क कर की जाती है, वायु को शुद्ध करने के लिए पेड़, पौधे, पुष्प लगाये जाते हैं, उसी प्रकार शनै-शनै दूषित होते रहने वाले महाप्राण को शुद्ध करने के लिए महर्षियों ने अपनी अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और अमोघ उपाय ढूंढ़ा था- 'यज्ञ' जिस प्रकार शरीर, वस्त्र, बिस्तर, घर, सड़क पर गन्दगी फैलाने के कारण हमारा कर्तव्य उन्हें साफ करने का हो जाता है, उसी प्रकार अपने विचारों और कुकर्मों के द्वारा महाप्राण को दूषित करने के बदले उसे शुद्ध करने की जिम्मेदारी भी हर मनुष्य की है । अतएव यज्ञ हर मनुष्य का एक परम पुनीत कर्तव्य माना गया है । जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हमारे सभी व्रत, उत्सव, पर्व, त्यौहार, संस्कार, यज्ञ आयोजनों से भरे रहते हैं । धर्म में रुचि रखने वाले-व्यक्ति तो संध्या की भाँति अग्नि होत्र को भी अपना आवश्यक नित्य कर्म मानते हैं । क्योंकि वे जानते हैं कि इस कार्य में थोड़ा समय, श्रम और धन खर्च हो जाने पर भी जो लाभ अपने शरीर, और मन के लिए, अपने परिवार के लिए, अपने नगर और ग्राम के लिए तथा समस्त विश्व के लिए होते हैं वे इस त्याग की तुलना में असंख्यों गुने अधिक मूल्यवान हैं ।

इस व्यापक दृष्टि कोण के कारण किसी समय यह यज्ञीय देश था, यहाँ घर-घर यज्ञ होते रहते थे । विशालकाय यज्ञों की श्रृंखला तो चलती ही रहती थी, श्रीमन्त लोग, शासकगण, समाज और प्रजा की भलाई के लिये इतने बड़े यज्ञ करते थे कि उनका सारा खजाना ही चला जाय, सर्वस्व दान हो जाय, अमीर से गरीब बन जाँय । पेट भरते समय एक आनन्द आता है ठीक है पर मल त्याग करके जो हलकापन शरीर में आता है उसका भी एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आनन्द है । यज्ञ में सर्वस्व दान करके निर्धन बनने वाले व्यक्ति अमीरी का आनन्द उठाते रहते थे साथ-साथ फकीरी का आनन्द भी लेते थे और इस प्रकार दोनों हाथ लड्डू की उक्ति उनके लिए चरितार्थ होती थी । प्रजा तो पर्व और त्यौहारों पर सामूहिक विशालकाय यज्ञ करती ही रहती थी । इस प्रकार यज्ञीय परम्परा के द्वारा इस देश के निवासियों ने अपने आपको 'भू-सुर' पृथ्वी का देवता बनाने की स्थिति तक ही नहीं पहुँचाया था वरन् संसार की सुख-शान्ति की भी लाखों-करोड़ों वर्षों तक सुरक्षा तथा अभिवृद्धि की थी ।

युद्धों, महायुद्धों के बाद तो अत्यन्त विशालकाय यज्ञों का करना अनिवार्य रूप से आवश्यक हो जाता था, कारण यह है कि हथियारों द्वारा मारे-काटे, घायल किये अनेक व्यक्ति आकाश में एक भारी चीत्कार भरी वेदना भरते और उनके आश्रितों को बहुत समय तक करुण क्रन्दन करना पड़ता है । बारूद के धुएँ से वायु दूषित होती है, छल कपट, द्वेष, घृणा, विश्वासघात, कूटनीति का मिथ्या प्रचार कराकर, पराजितों की दीन व्यथा, विजेताओं का हर्षोन्माद आदि अनेक तथ्य मिलकर आकाश के महाप्राण को दूषित करके संसार के लिए भयंकर विपत्तियाँ उत्पन्न करने के हेतु बन जाते हैं । इस भयंकर स्थिति को निरस्त करने के लिए प्राचीन काल में हर युद्ध के बाद विशाल यज्ञों के आयोजन होते थे । लंका युद्ध के बाद भगवान राम को अश्वमेध यज्ञ करना आवश्यक हो गया था । महाभारत के बाद पाण्डवों को भी विशाल राजसूय यज्ञ आयोजित करना पड़ा था । हमारा इतिहास साक्षी है कि यहाँ एक भी युद्ध ऐसा नहीं हुआ जिसके प्रायश्चित स्वरूप अनिष्ट शान्ति के लिए बड़े यज्ञ आयोजन न हुए हों ।

विदेशी शासन काल के अन्तर्गत भारत की धार्मिक परम्पराएँ छिन्न-भिन्न हो गईं, साथ ही यज्ञों की महत्ता को भी लोग भूल गये । कुछ कुकर्मी लोगों ने यज्ञों के साथ पशु बलिदानों की घृणित प्रक्रिया जोड़कर उसे और बदनाम कर दिया, भारी दान-दक्षिणाओं की आवश्यकतायें जोड़कर पंडितों ने अपनी स्वार्थ-पूर्ति का माध्यम बनाकर उसे सर्व साधारण के लिए दुरुह कर दिया । बौद्ध काल में यज्ञों की अनैतिकता का विरोध भी हुआ । जो लोग इस विषय के श्रद्धालु थे वे तर्क और प्रमाण द्वारा यह सिद्ध न कर सके कि यज्ञ में जलाई हुई वस्तुओं की अपेक्षा प्राप्त होने वाला लाभ अधिक है । इन सब कारणों ने मिलकर यज्ञ परम्पराओं को नष्ट प्रायः कर दिया । पिछले अज्ञानान्धकार के मध्य काल में विद्वानों ऋषियों-तथा तत्व-दर्शियों का अभाव हो गया और नाना प्रकार के मतमतान्तर, पंथ, सम्प्रदाय वर्षाती कीट, पतंगों की तरह उपज पड़े और अपनी खुराक प्राप्त करने के लिए आर्य-संस्कृति के अविभाज्य अंग यज्ञों की उपेक्षा ही नहीं विरोध भी करने लगे । धर्म और विज्ञान को आगे रखकर चलने वाली नई पीढ़ी को इस महाविज्ञान की उपयोगिता, समझाने वाले न मिले अतएव उसने उसका मजाक उड़ाया । भारत स्वतंत्र होने पर आर्ष तत्वज्ञान की पुनः प्रतिष्ठापना की जो आशा की जा रही थी वह भी धर्म निरपेक्ष सरकार की स्थापना से धूमिल हो गई । यह सब कारण मिलकर यज्ञ के श्रेष्ठतम धर्म कार्य की उपेक्षा और उपहास के गर्त में ही पटकते हैं ।

आज संसार में मानव जीवन में अनेकों गुत्थियाँ उलझी हुई हैं, अनेक कठिनाइयाँ, और परेशानियाँ सामने उपस्थित हैं, अनेक चिन्ताओं, भय, आपत्तियों, अभावों और पीड़ाओं से मनुष्य दुखित है, उसके प्रत्यक्ष रूप से अनेक कारण दिखाई पड़ते हैं । इन कारणों को दूर करने और शान्ति मय स्थिति प्राप्त करने के लिए अनेकों व्यक्तियों, संस्थाओं और सरकारों द्वारा अनेक प्रकार के उपाय एवं प्रयत्न किये जा रहे हैं, यह सब प्रयत्न सराहनीय हैं पर साथ ही यह भी स्मरण रखने की बात है कि संसार में सब कुछ वही नहीं है जो आँखों से दिखायी पड़ता है, इससे ऊपर भी कोई शक्ति है और इतनी प्रबल है कि प्रयत्नों के सफल और असफल होने में आश्चर्य-जनक प्रभाव डालती है । विश्व की वर्तमान कालीन असंख्य कठिनाइयों का अशक्तियों का एक प्रधान कारण यह है कि पिछले लम्बे अर्से से जहाँ महाप्राण साधारण प्रक्रिया से ही नहीं महायुद्धों तथा अन्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रचण्ड दुष्कृत्यों द्वारा दूषित किया जाता रहा है वहाँ उसकी शुद्धि के लिए यज्ञों जैसी महान प्रक्रिया नहीं अपनाई गई ।

वेद भारतीय धर्म का फल है । वेद का प्रधान विषय यज्ञ है । यज्ञ के प्रकाश के लिए वेदों का आविर्भाव हुआ ऐसा शास्त्रों में उल्लेख मिलता है । 'सतपथ-ब्राह्मण' में यज्ञ को साक्षात परमात्मा कहा गया है । भगवान के दश अवतारों में एक अवतार यज्ञ-पुरुष का भी है । इन प्रसंगों से प्रगट है कि भारतीय तत्व दर्शियों ने यज्ञ को मानव जीवन की सर्वोपरि आवश्यकता माना है । यज्ञ देव- शक्तियों का भोजन है, इस आदर के बिना वे दुर्बल हो जाती हैं और जिस प्रकार टैक्स प्राप्त न होने पर राज्य-कोष समाप्त हो जाने के कारण सरकार लड़खड़ा जाती है और प्रजा की सुविधा तथा सुरक्षा नष्ट हो जाती है वैसे ही देव शक्तियों का आहार यज्ञ जब बन्द हो जाता है तो संसार की वैसी ही दुर्गति होती है जैसी आज हो रही है । इस महान सत्य को भारतीय धर्मग्रन्थों में पग-पग पर प्रतिष्ठित किया गया है ।

विश्व में प्राणियों के अभावों, कष्टों तथा भावी आपत्तियों के निवारण करने के लिए जिन उपायों की आवश्यकता है उनमें यज्ञ सर्वोपरि है क्योंकि सूक्ष्म जगत में व्याप्त महाप्राण के परिशोधन के लिए इससे अधिक सरल मार्ग और दूसरा नहीं है । अध्यात्म जगत के तत्वदर्शी महापुरुषों की प्रेरणा के अनुसार गायत्री तपोभूमि द्वारा जो विश्वव्यापी यज्ञ आयोजन आरम्भ किया गया है, उसके पीछे यही लक्ष्य है । इस कार्यक्रम के पीछे असंख्य प्राणियों का हित, सुरक्षा और भविष्य निर्भर है । यह साधारण नहीं असाधारण महत्व की प्रक्रिया है । इस गम्भीरतम आवश्यकता की पूर्ति के लिए-इस लक्ष्य की पूर्ति पर इतना जोर दिया जा रहा है । जो लोग इस मार्ग में सहयोग कर रहे हैं वे सचमुच एक ऐसा कार्य कर रहे हैं जिसकी तुलना अन्य साधारण सत्कर्मों की अपेक्षा असंख्य गुनी अधिक है ।

धार्मिक प्रवृत्ति के सत्पुरुषों को इस दिशा में आज सबसे अधिक ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि यह समय की पुकार युग धर्म, आपत्ति कालीन आवश्यकता है । इसे सब काम छोड़कर करना ही चाहिए ।

युग-क्रान्ति में गायत्री यज्ञों की भूमिका

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए-भले ही व्यक्तिगत हो, अथवा सामूहिक, केवल चिन्तन भी एकांगी है और केवल कर्म भी अपूर्ण । उसके लिए चिंतन और कर्म दोनों का ही समन्वित स्वरूप संपूर्ण होता है । बिजली के दोनों तार अलग-अलग हों तो विद्युत धारा का प्रवाह उत्पन्न नहीं होता है । दोनों तारों के जुड़ने पर ही विद्युत धारा प्रवाहित होना सम्भव है ।

इसके साथ ही यह स्मरण रखना चाहिए कि संसार में जब कोई बड़े परिवर्तन होना अभीष्ट होते हैं तो उसमें ईश्वरीय शक्तियाँ मानवी चेतना के रूप में ही सक्रिय भाग लेती हैं । अकेले राम ने लंका विजय, आसुरी आतंक की समाप्ति और दिव्य सत्प्रवृत्तियों की स्थापना नहीं की थी, उसके लिए रीछ-बानरों का सहयोग संगठित किया था । कंस के संहार, कौरव-अनीति के उन्मूलन में भी अकेले कृष्ण ने ही भाग नहीं लिया था बल्कि उसके लिए ग्वाल - वालों को संगठित किया था । वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन अभीष्ट है-यह स्पष्ट है । उसकी दिव्य चेतना युगशक्ति के रूप में अवतरित हुई है-यह भी अनुभव किया जा सकता है । उसके लिए रीछ बानरों की तरह ग्वाल-बालों की तरह सामान्य व्यक्ति किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं यह समझना और समझाया जाना चाहिए ।

युग-परिवर्तन का प्रयोजन सामूहिक सहयोग से ही पूरा किया जाना चाहिए । इसके लिए गायत्री साधना के द्वारा चिन्तन परिष्कार और यज्ञ अभियान के द्वारा कर्मशोधन की प्रक्रियाको जन-जन तक पहुँचाना चाहिए । युग शक्ति के रूप में जिस गायत्री चेतना के अवतरण की बात कही जाती रही है उसके दो रूप हैं । पहला है परोक्ष, जिसे चिन्तन परक कहा जा सकता है । तथा दूसरा है प्रत्यक्ष जिसे कर्म परक कहा जाना चाहिए । परोक्ष स्वरूप में जप, ध्यान धारणा, लय तथा तत्वज्ञान, योगाभ्यास

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का समावेश किया गया है तथा कर्म-परक-प्रत्यक्ष अभियान में यज्ञ आन्दोलन का ।

इस तरह के प्रयास व्यक्तिगत रूप से तो लम्बे समय से किये जाते रहे हैं-परन्तु अब इनमें सामूहिकता का समावेश किया गया है, जिसे अपने युग की नवीनता और विशेषता कहा जा सकता है । गायत्री और यज्ञ का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है । दोनों एक दूसरे के पूरक हैं । बिजली के दोनों तारों की तरह दोनों का सम्मिलित समन्वित स्वरूप ही अभीष्ट युग चेतना उत्पन्न करने में समर्थ हो सकेगा । गायत्री और यज्ञ को भारतीय संस्कृति का माता पिता कहा गया है इसका भी यही अर्थ है कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं ।

अभी से नहीं अनादिकाल से ही यह सम्बन्ध चला आ रहा है । शास्त्रों में द्विजों के लिए संध्यावंदन के साथ नित्य यज्ञ का भी निर्देश दिया गया है । प्रत्येक व्यक्ति के लिए वह सम्भव नहीं रहा तो बलि वैश्वदेव का विधान किया गया । बलिवैश्वदेव अर्थात् भोजन से पहले पाँच ग्रासों की अग्नि में आहुति ।

नित्य कर्मों में गायत्री और यज्ञ को इस रूप में सम्मिलित करने के अतिरिक्त शक्ति अर्जन के लिए किये जाने वाले अनुष्ठानों की पूर्णाहुति में यज्ञ अनिवार्य है । भारतीय धर्मानुयायी के जीवन की कोई भी महत्वपूर्ण घटना गायत्री और यज्ञ के बिना आयोजित नहीं की जाती । बालक का विद्यारम्भ संस्कार कराते समय उसे यज्ञ भगवान की साक्षी में गुरुमन्त्र के रूप में गायत्री मन्त्र दिया जाता है । सिर पर शिखा स्थापन के समय ऋतम्भरा प्रज्ञा की ही प्रतिष्ठापना की जाती है और सत्कर्मों की प्रतिमा धारण करने के रूप में यज्ञोपवीत, संस्कार कराया जाता है । इन संस्कारों में भी गायत्री यज्ञ किये जाते हैं तथा गायत्री और यज्ञ को प्रतीक रूप में अपने शरीर पर धारण किया जाता है, उन्हें जीवन क्रम में सम्मिलित करने का संकल्प लिया जाता है ।

षोड्श संस्कारों में कोई भी संस्कार सम्पन्न किया जाता है तो उसमें यज्ञ अनिवार्य रूप से आयोजित किया जाता है । गर्भाधान पुंसवन सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, विवाह, समावर्तन, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि में से एक भी संस्कार यज्ञ के बिना पूरा नहीं किया जाता ।

यही नहीं सार्वजनिक पर्व-आयोजनों में भी यज्ञ की प्रधानता रहती है । होली तो सामूहिक रूप से किया जाने वाला यज्ञ ही है । आज उसका चाहे जो स्वरूप बन गया है पर नवधान्न सस्योष्टि के रूप में नयी फसल आने पर उसका उपयोग आरम्भ करने से पूर्व उसे यज्ञसंस्कारित करने की ही परम्परा विशुद्ध रूप में बनी और चली है । युगान्तरीय चेतना के व्यापक विस्तार में गायत्री उपासना की तरह यज्ञ आयोजनों का भी व्यापक प्रचलन किया जाना चाहिए । गायत्री साधना में जिस प्रकार सामूहिक जप का अभिनव प्रयोग है उसी प्रकार यज्ञ आयोजनों में भी सामूहिक सहयोग की, सामूहिकता की नीति अपनायी जानी चाहिए ।

पहले कोई एक व्यक्ति अपने स्वयं के व्यय और प्रयासों से छोटे-बड़े यज्ञ कराते रहे हैं । पर युग शक्ति के विस्तार में सामूहिक यज्ञों की पद्धति ही अपनायी जानी चाहिए । इससे जन साधारण में भी आयोजन के प्रति अपनेपन का भाव रहेगा, क्योंकि उनमें उसका भी सहयोग रहता है । सामूहिक जप से, जैसे वातावरण की आवश्यकता पूरी होती है वैसे ही सामूहिक यज्ञों से जनमानस के परिष्कार की । अपने यज्ञों के साथ जुड़े हुए लोक शिक्षण के कार्यक्रम-जिन्हें युग-निर्माण सम्मेलन भी कहा जाता है इसी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं और इसमें सामूहिक सहयोग जुटाया ही जाना चाहिए । सामूहिकता का यह समावेश भी अपने आप में लोक शिक्षण का एक प्रभावशाली कार्यक्रम बन जाता है ।

सामूहिक श्रमदान से यज्ञ शाला का निर्माण, प्रचार व्यवस्था आदि कार्य किये जाते हैं । इनसे उत्पन्न हुई समस्वरता, अनुशासन की भावना नवयुग में भौतिक प्रगति के मूलभूत आधार हैं । युग शक्ति के अवतरण में सृजन सेनानियों को अपनी भूमिका सामूहिक जप में भाग लेकर उसकी अंश आहुति के लिए सामूहिक यज्ञों में करनी चाहिए तथा इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिए कुण्ड निर्माण से लेकर व्यवस्था, आयोजन, कार्यक्रम सबमें सामूहिकता, समस्वरता, अनुशासन का परिचय देना चाहिए ।

वैसे भी महायज्ञ जैसे बड़े कार्यक्रम एकाकी प्रयासों से असम्भव हैं, उनका व्यय भार भले ही कोई एक व्यक्ति ग्रहण कर ले पर यज्ञशाला, कुण्ड निर्माण, समिधा चयन के लिए तो दूसरों का सहयोग प्राप्त करना ही होगा । माना कि यह कार्य भी स्वयं संपन्न कर लिए गये पर यजमान, यजमान पत्नी, अध्वर्यु, उद्गाता, ब्रह्मा, आचार्य आदि की नियुक्ति के लिए तो दूसरों का सहयोग प्राप्त करना ही पड़ेगा । इसके बिना काम चलाना तो किसी भी प्रकार सम्भव नहीं है ।

महायज्ञों में समस्वरता और एकरूपता बनाये रखने के लिए ब्रह्मा, आचार्य की नियुक्ति की जाती है । अस्तव्यस्तता को निरस्त करने वाले सतर्कता अधिकारी के रूप में ब्रह्मा, आचार्य अपना दायित्व निवाहते हैं । सब लोग समवेत स्वरों में मंत्र पाठ करें, एक साथ आहुतियाँ डालें, एक समान वेश हो, किसी के पास कोई सामग्री कम तो नहीं पड़ रही है आदि बातों की देखरेख के लिए इस प्रकार के कार्यकर्ता नियुक्त करने चाहिए । यह सारी व्यवस्थायें यज्ञ करने वालों को और प्रदक्षिणा करने वालों को अनुशासन की शिक्षा देती है । कर्मकाण्डों की एक रूपता रखने की एक ही प्रेरणा है-अनुशासन ।

यज्ञ शब्द के तीन अर्थ हैं-(१) दान, उद्गाता (२) संगतिकरण, संगठन (३) देव-पूजन उत्कृष्टता का वरण समर्थन । इन तीनों सत्प्रवृत्तियों को अपनाया जायगा वहाँ सज्जनता और महानता के चिह्न उभरते चले जायेंगे और समस्याओं के सुलझते देर न लगेगी । मनुष्य में देवत्व के उदय के लिए इन तीन धाराओं की गङ्गा-यमुना और सरस्वती की उपमा दी जा सकती है और उनके संगम को त्रिवेणी कहा जा सकता है । रामायण के अनुसार इस संगम में स्नान अवगाहन करने वालों का आन्तरिक काया-कल्प होता है । रामायण में कहा गया है-

'मज्जन फल देखिय तत्काला ।
काक होहिं पिक-बकहु मराला ।।'

इसी स्तर का आन्तरिक परिष्कार ही युग-परिवर्तन का आधार माना गया है । अस्तु यज्ञ की व्याख्या विवेचन करते हुए-उस तत्व ज्ञान का स्वरूप, प्रयोग और परिणाम समझाते हुए यह मार्ग दर्शन भली प्रकार किया जा सकता है जो युग परिवर्तन की समग्र आवश्यकता को पूरा करने के लिए आवश्यक है । स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों राष्ट्रीय झण्डे के तीन रंगों की व्याख्या करते हुए स्वाधीनता के तीन उद्देश्य और तीन कार्यक्रम समझाये जाते थे । ठीक उसी प्रकार व्यक्ति परिवार और समाज का, बौद्धिक नैतिक एवं सामाजिक क्रान्ति का, भाव-ज्ञान एवं कर्म के परिष्कार का सर्वतोमुखी प्रगतिशील लोक-शिक्षण भली प्रकार सम्भव हो सकता है । जीवन में यज्ञीय आस्थाएँ और समाज में यज्ञीय परम्परा प्रतिष्ठापना के लिए आवश्यक सभी सूत्र यज्ञ के तत्व ज्ञान में बीज रूप में मौजूद हैं । धर्म परम्पराओं के आधार पर प्रगतिशीलता का प्रशिक्षण करने की प्रक्रिया कितनी हृदयग्राही और कितनी सफल हो सकती है इसका अनुभव प्राचीन काल की तरह ही इन दिनों भी किया जा सकता है । वही किया भी जा रहा है ।

यज्ञ कृत्य के अन्तर्गत कितने ही छोटे-छोटे विधि-विधान आते हैं । इन सबके पीछे वे सभी दृष्टिकोण सन्निहित हैं जिन्हें अपनाने से व्यक्ति और समाज का-नवयुग का-उत्कृष्टता सम्पन्न ढाँचा खड़ा किया जाता है । उन सभी कृत्यों की-प्रयुक्त होने वाले मन्त्रों की-विधि-विधानों की साथ-साथ व्याख्या भी होती चलें तो यज्ञ आयोजन से बहुमुखी लोक-शिक्षण की उच्चस्तरीय आवश्यकता भली प्रकार पूरी होती रह सकती है । यज्ञाग्नि के रूप में युग क्रान्ति की प्राणवान प्रतिभा की स्थापना-अभ्यर्थना का भाव-भरा उपक्रम ऐसा है जिसके सहारे जन भावना को अवांछनीयता के उन्मूलन एवं शालीनता के पुनर्जीवन के लिए उभारा और जुटाया जा सकता है ।

यज्ञ का अपना विज्ञान है । उसमें मन्त्र शक्ति का, विशिष्ट शाकल्य का, रहस्य विधि-विधान का, संयुक्त सत्प्रयत्नों की परिणति प्रतिक्रिया का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सम्मिलित प्रभाव ऐसा होता है जिससे सूक्ष्म जगत में उपयोगी हलचलें होने लगती हैं । इन उद्‌भूत दिव्य तरंगों के फलस्वरूप रुग्णता का निवारण-मनोविकारों का निराकरण-कुसंस्कारों का उन्मूलन सम्भव होता है शास्त्रकारों ने यज्ञ से पर्जन्य की उत्पत्ति होने की बात कही है और पर्जन्य को समृद्धि बरसाने वाला कहा गया है । यह मात्र बादलों से पानी बरसने जैसी सामान्य बात नहीं है । पर्जन्य का तात्पर्य है-प्राण वर्षा । प्राण अर्थात् समर्थता । यह जल, वायु, ऊर्जा, पृथ्वी आदि पर आकाश से बरसती है और प्राणियों तथा पदार्थों का स्तर ऊँचा उठाती है । पर्जन्य को सर्वतोमुखी प्रगति का सशक्त आधार माना गया है यज्ञ प्रक्रिया से उसी की उत्पत्ति और वर्षा होती है । संक्षेप में इसे सूक्ष्म जगत में बनने और बढ़ने वाली उपयोगी अनुकूलन कह सकते हैं । इसी से पर्जन्य को सर्वतोमुखी सुख-शान्ति का आधार माना गया है । यज्ञ इस विभूति का जनक होने के कारण श्रेष्ठतम सत्कर्म माना गया है और उसे यज्ञ पुरुष कह कर दृश्यमान विष्णु का सम्मान दिया गया है ।

मनु ने यज्ञ कर्ता के शरीर से ब्राह्मणत्व के उत्पन्न होने की बात कही है । उसी को युग परिवर्तन प्रक्रिया के अन्तर्गत मनुष्य में देवत्व का उदय कहा गया है । पर्जन्य के सहारे बरसने वाली समृद्धि को सतयुगी सुख-शान्ति का उद्‌गम कहा गया है । यज्ञ प्रक्रिया द्वारा सूक्ष्म जगत का परिशोधन करने और इस प्रयोजन के लिए दिव्य शक्तियों का सहयोग प्राप्त करने का ऐसा आधार बनाया जा सकता है जो सामान्य भौतिक प्रयत्नों से सम्भव नहीं हो सकता । नव-निर्माण के लिए ये आवश्यकता तो भौतिक शक्तियों और साधनों को भी पड़ेगी, पर चूँकि वह सारा क्षेत्र चेतना के परिष्कृत करने का है इसलिए उसमें सूक्ष्म शक्तियों का-देव शक्तियों का उपयोग ही प्रधान भूमिका सम्पादित करेगा । गायत्री यज्ञों से उसी आवश्यकता की पूर्ति होती है ।

प्रस्तुत गायत्री यज्ञों के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई प्रक्रिया 'देव दक्षिणा' की है जिसका अर्थ होता है दुष्प्रवृत्तियों के परित्याग और सत्प्रवृत्तियों के ग्रहण का अग्निदेव की साक्षी में लिया गया संकल्प । युग निर्माण योजना द्वारा आयोजित सभी यज्ञों में हवन करने वाले को कुछ न कुछ देव दक्षिणा देनी पड़ती है और उसका संकल्प पत्र भरना होता है । यह दक्षिणा पैसे की नहीं वरन् आत्म-परिष्कार की होती है, जिसका तात्पर्य है अपनी वर्तमान बुरी आदतों में से कम से कम एक का परित्याग और एक सत्प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए विशेष रूप से प्रयत्न । वैयक्तिक अनैतिकताएँ, प्रचलित मूढ़ मान्यताएँ, सामाजिक कुप्रथाएं मिलकर दुष्प्रवृत्तियाँ बनती हैं । इनमें से प्रत्येक वर्ग की अवांछनीयता का परित्याग करना और विवेक सम्मत औचित्य को अपनाया जाना यही है देव दक्षिणा अभियान का प्रयोजन । इसे युग निर्माण का आधार और युग शक्ति के अवतरण का मूलभूत प्रयोजन कहा जा सकता है । धर्म की स्थापना और अधर्म का विनाश, अवतार का एक मात्र उद्‌देश्य रहा है । गायत्री यज्ञ की पुण्य प्रक्रिया में यों आदि से अन्त तक यही चिन्तन और कर्तृत्व भरा पड़ा है । यज्ञ के देव दक्षिणा पक्ष को तो स्पष्टतया उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्यरत समझा जा सकता है ।

यज्ञ के ज्ञान और विज्ञान पक्ष के अपने लाभ हैं । यह अवश्य अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि सूक्ष्म जगत के परिशोधन में यज्ञों का असाधारण महत्व है और युग क्रान्ति में-युगशक्ति के अवतरण में, उसके विस्तार में यज्ञ के ज्ञान तथा विज्ञान पक्ष का उपयोग अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए ।

गायत्री यज्ञों से विश्व शांति

प्राचीन काल में विभिन्न यज्ञ, विभिन्न प्रयोजनों के लिए सामाजिक परिस्थितियों की आवश्यकता के अनुसार किये जाया करते हैं । वर्षा की कमी दूर करने के लिए इन्द्र-यज्ञ, धन समृद्धि के लिए विष्णु-यज्ञ, शत्रु संहार के लिए चण्डी-यज्ञ, रोग निवारण के लिए रुद्र-यज्ञ किये जाते हैं । छोटे-छोटे राजाओं की उच्छृङ्खलता बढ़ने पर किसी बड़े चक्रवर्ती राज्य के नीचे इन्हें नियन्त्रित करने के लिए अश्वमेध होते थे । जनता में फैले हुये कुविचार अनाचार के विरुद्ध प्रतिज्ञा-आन्दोलन के रूप में गौ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मेध यज्ञों का आयोजन होता था । ब्राह्मणों और ऋषियों की सम्मिलित मन्त्रणा के लिए वाजपेय और राज्याधिकारियों की पारस्परिक मन्त्रणाओं के लिए राजसूय यज्ञ किये जाते थे ।

यज्ञों की सूक्ष्म शक्ति विख्यात है । उनके कारण अदृश्य वातावरण में ऐसी ऊर्जा उत्पन्न होती है जिससे मनुष्य को अपने लिये अभीष्ट परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकना संभव हो जाता है । रोगों का निवारण, वायु मण्डल की शुद्धि, संतुलित वर्षा, सुसंतति की प्राप्ति, सद्भावनाओं की वृद्धि, देवताओं की प्रसन्नता आदि विख्यात लाभ तो सामान्य यज्ञों के हैं ही, विशेष प्रयोजनों के लिए विशेष यज्ञ करने पड़ते हैं ।

आज संसार में सबसे बड़ा सङ्कट दुर्बुद्धि की वृद्धि का है । कुविचारों और दुर्भावनाओं ने अगणित प्रकार की दुष्प्रवृत्तियों को जन्म दिया है और उनके कारण शोक-संताप एवं दुःख दारिद्र से जनता को अनेकों विपत्तियों में फँसना पड़ रहा है । विज्ञान की उन्नति और शिक्षा की अभिवृद्धि ने मानवीय सुख साधनों की भारी वृद्धि की है पर दुर्बुद्धि ने उन सब लाभों को गौण बनाकर नये-नये प्रकार की विपत्तियों का सृजन कर दिया है । फलस्वरुप दिन-दिन संकट ही बढ़ते चले जा रहे हैं और लगता है कि यही स्थिति बनी रही तो कुछ ही दिनों में सर्वनाश की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जावेंगी ।

इस विभीषिका से बचने से हमें बढ़ती हुई दुर्बुद्धि का शमन करना होगा उसके लिए ज्ञान-यज्ञों की आवश्यकता है और सूक्ष्म अध्यात्म विज्ञान पर आधारित अग्नि होत्रों की भी । वर्तमान स्थिति में गायत्री यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो सकते हैं । सद्बुद्धि की देवी गायत्री का यज्ञानुष्ठान ही जन साधारण की दुर्बुद्धि का शमन करके उन्हें सद्भावना सम्पन्न बना सकता है । इस अभाव की पूर्ति होने पर सभी कठिनाइयों का हल निकल सकता है और विश्व-शांति की समस्या सहज ही हल हो सकती है ।

वर्तमान परिस्थितियों में गायत्री यज्ञ की महत्ता, आवश्यकता एवं उपयोगिता ही सबसे अधिक है । इसलिए प्रत्येक धर्म प्रेमी का कर्तव्य है कि विश्व-शान्ति की समस्या को सुलझाने एवं अपना पराया सबका कल्याण करने के लिये गायत्री यज्ञों के अधिकाधिक आयोजन कराने का प्रयत्न करें ।

युग-निर्माण योजना की विचार-धारा का प्रसार करने के लिए, उन्हें जन-मानस में हृदयङ्गम कराने के लिये धार्मिक वातावरण का होना भी आवश्यक है । ऐसे वातावरण में परिशोधित अन्तःकरण इन भावनाओं को अधिक सरलतापूर्वक हृदयङ्गम कर सकते हैं । इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये भी गायत्री यज्ञों का आयोजन आवश्यक है । जीवन को यज्ञमय बनाने की प्रेरणा तथा बलिदान के रूप में दुर्गुणों एवं दुर्भावों का त्याग उस माध्यम से जितना अच्छी तरह बन पड़ता है उतना और किसी प्रकार नहीं ।

इन सब बातों पर विचार करते हुए गायत्री यज्ञ का प्रसार एक महत्वपूर्ण सामयिक आवश्यकता है । इनकी व्यवस्था के लिये सर्वत्र शक्ति भर प्रयास किया जाना चाहिए । इस पुस्तक में इसका सरल विधान भली प्रकार समझा दिया गया है कोई बात समझने में कठिनाई हो तो मथुरा आकर उसका व्यवहारिक प्रशिक्षण क्रियात्मक रूप से भी प्राप्त किया जा सकता है ।

नव निर्माण और गायत्री यज्ञ-

युग निर्माण योजना के लिए गायत्री यज्ञों का व्यापक प्रसार आवश्यक है । सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति के बिना हमारा उत्थान संभव नहीं । राजनैतिक एवं आर्थिक क्रान्ति अधूरी ही मानी जायगी । राजनैतिक स्वतन्त्रता मिल गई, आर्थिक उत्कर्ष के लिए प्रयत्न हो रहे हैं, यह दोनों कार्य राजनैतिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के हैं । बौद्धिक क्रान्ति का उत्तरदायित्व धार्मिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं पर है । उसे सम्पन्न करने के लिए हमें ऐसे प्रयास करने चाहिए जिससे जनता की धर्म भावना जागृत हो-साथ ही वह अपने नैतिक एवं सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो सके ।

यह प्रक्रिया व्यापक प्रचार की अपेक्षा रखती है और वह प्रचार भारतवर्ष जैसे देश में सभा,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोसाइटियों, मीटिंगों, लेखों, कलेन्डरों में नहीं वरन् धार्मिक वातावरण में प्रस्तुत की हुई प्रेरणाओं द्वारा ही संभव हो सकता है । इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए गायत्री यज्ञों की व्यापक योजना सब से अधिक सस्ती, प्रभावशाली एवं सार्थक सिद्ध हो सकती है । हमारे निज के जीवन के अनुभव का निष्कर्ष यह है कि यदि विचारपूर्वक गायत्री यज्ञों की सुव्यवस्थित और सुनियोजित योजना कार्यान्वित की जाय तो उस से राष्ट्रीय नव-निर्माण का प्रयोजन पूर्ण करने में, जन-जागृति का उद्देश्य पूरा करने में आशाजनक सफलता मिल सकती है । यज्ञों के आध्यात्मिक लाभ तो हैं ही, उनसे धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप सत्परिणाम तो मिलते ही हैं, साथ ही बौद्धिक क्रान्ति का प्रयोजन भी पूर्ण होता है । अस्तु हमें गायत्री यज्ञों के प्रचार में अधिक अभिरुचि लेनी ही चाहिए ।

***

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है । परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है । परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी मां शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है । उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया । आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानी गणों के, वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है ।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगें किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देख सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये । इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबा कर लिखा गया हो । हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता मन को, विचारों को बदलता चला जाता है । लाखों करोड़ों के मनों के अंत:स्थल को छू कर उसने उनका कायाकल्प कर दिया । रूसो के प्रजातंत्र की, कार्ल मार्क्स के साम्यवाद की क्रांति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है । उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्‌बोधन से एक विराट गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े रहते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाय, कैसे छन्दबद्ध, लिपिबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को ।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता । वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता-श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आसपास के दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्‌भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंत:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था । साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा । जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे । छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे । किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुत: अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी । जाति-पाँति का कोई भेद नहीं । जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवाकर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय, अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय, यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में संपन्न क्रिया कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषि सत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महा- पुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रांति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि ''प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरु सत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गई, संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।''

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने तोड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख सुन कर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भी गये । छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई । जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटे । आसन- सोल जेल में वे श्री जवाहर लाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से-मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना । यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश ।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जन आक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रांतिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था । नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं । बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये । जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये । उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्त जी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किये गये । बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए । कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुज में सम्मानित किया । उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधान मंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर दीं । वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है ?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरु हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये । सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया । प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अत: पुन: सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमश: उनके अध्यवसाय घर-घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है ।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ. स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे । पुस्तकों का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंत: स्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही । साथ देने आ गयीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी । उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुखी था-पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं । यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रांति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी ।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ । गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परम वंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी । धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है । १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है । १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५८ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया । कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देश भर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं । संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था । तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की अपनी रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं । हिमालय से लौटते ही उनमें महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूल थाती को पुनर्जीवन दिया । परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञान सम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं ।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ । तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तपःपूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था । तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों, यज्ञायोजनों के द्वारा विचार क्रांति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए । स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों में विशेष कार्य भार सौंप, परम वंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़ कर स्वयं हिमालय चले गये । एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया पद्धति बतायी । ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्त्तन संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये ।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे । इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट् परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक । इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी बूटी, यज्ञविज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञान सम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युग शिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता, आस्तिकता संवर्धन एवं जन जागृति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान - शक्तिपीठ-प्रज्ञामण्डल-स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तप साधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी को दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नव निर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरु सत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युगसंधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेघ महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नव निर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति के निमित्त सौर ऊर्जा के दोहन द्वारा विशिष्ट प्रयोगों के माध्यम से विशिष्ट मंत्राहुतियों द्वारा सम्पन्न किये गये इन अश्वमेधों ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस. ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु संपन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी जा रही है। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो सत्तर खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हो रहा है। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जायेंगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़ चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेंगे' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२
(सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे—

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

Complete Work of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Digital Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org